Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

INDIA TODAY

JUL-AUG 1991

G K V LIB
HARDWAR

Gurukul Kangri Collection

078635

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

COMPILED

078635

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RT-01261

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

15 जून 1991 9 रुपए

इंडिया टुडे

विशेषांक

"मैं नौजवान हूं. मेरा भी एक सपना है..."

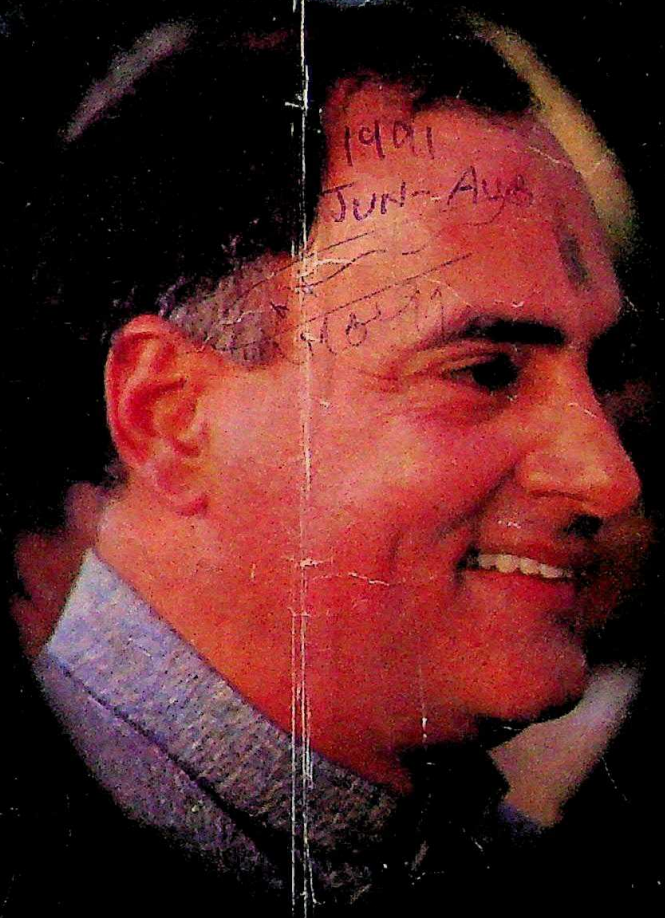

राजीव गांधी

(1944—1991)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंदर की गर्मी ये मिटाता...

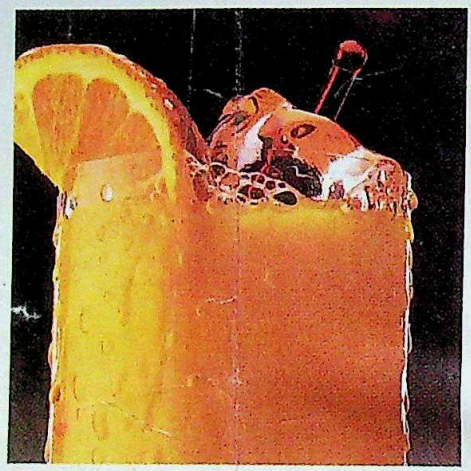

बाहर की ये दूर भगाता।

COOLERS FROM LIBERTY

लिबर्टी

शान की शान और बेहद आराम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

MEGA CORP/B/91 HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दून स्कूल में मैं राजीव गांधी का सहपाठी था लेकिन उनसे मेरी मित्रता नहीं रही. हम एक दूसरे को जानते भर थे. न तो कक्षा में और न ही खेल के मैदान में वे कभी दूसरे छात्रों के आकर्षण के केंद्र थे. उन दिनों यह बात मायने नहीं रखती थी कि कौन किसका बेटा है या किसका नाती. फिर मैं उनसे 25 वर्ष बाद तब मिला जब 'इंडिया टुडे' ने राजनीति में उनके चमत्कारी ढंग से उभरने का वृतांत छापना शुरू किया. अपने इस शर्मीले और आत्मकेंद्रित सहपाठी का रूपांतरण शासन करने के लिहाज से विश्व के सबसे कठिन देश के ऊर्जावान और करिश्माई नेता के रूप में हुआ देखकर मैं अभिभूत था.

मुझे यह स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं है कि जब उन्होंने प्रधानमंत्री का पदभार संभाला तो मैं देश के भविष्य के परिवर्तन की संभावना देख आंदोलित हो उठा था. इस हद तक कि पत्रिका ने अपने इतिहास में पहली बार एक राजनीतिक के प्रति स्पष्ट रूप से अपना समर्थन व्यक्त किया. मैंने 30 नवंबर 1984 को लिखा, "हालांकि त्रासद परिस्थितियों के चलते वे ऊपर उठे हैं लेकिन उनकी युवा, स्वच्छ छवि, और बोझ बन जाने वाले राजनैतिक अतीत से उनका मुक्त रहना ऐसे कारण हैं जिनसे यह उम्मीद जगती है कि जल्द ही और बेहतर बदलाव होंगे. उन्हें एक मौका दिया जाना चाहिए." सत्ता में उनका पहला वर्ष अत्यंत आह्लादक और रोमांचकारी था. बीते 15 वर्षों में मेरा यह पहला अनुभव था. उनकी उपलब्धियां बढ़ने के साथ राजनीति के मैदान में उनका कद भी बढ़ता चला गया.

1985 में दून स्कूल में 1960 के सहपाठियों के साथ राजीव

अक्तूबर 1985 के उन गौरवशाली दिनों में दून स्कूल के स्वर्ण जयंती के अवसर पर भी मेरी उनसे मुलाकात हुई थी. वे अपने स्कूल के परिधान में थे. वे बेहद खुश, मित्रवत और स्कूल में मिल रहे दुलार से स्वाभाविक ही आह्लादित थे. इस अवसर पर 1960 के जमाने की कक्षा के सहपाठियों के साथ राजीव की तस्वीर खींची गई. मैं किनारे खड़ा था और फोटोग्राफर ने मुझे कैमरे की सीमा में न पाकर बीच में आकर राजीव के आगे बैठ जाने को कहा. मेरे वहां बैठते ही राजीव ने मजाक किया, "देखो, प्रेस मेरे पैरों में पड़ा है." और ठहाके गूंज उठे.

वे उनके स्वर्णिम दिन थे. कुछ महीने बाद ही इसमें खटास आने लगी थी. पंजाब समझौता नाकारा साबित हुआ. मुस्लिम महिला विधेयक पर खासा हंगामा खड़ा हो गया. हरियाणा में इंका साफ हो गई और बोफोर्स की गर्जना सुनाई पड़ने लगी यानी ऊंट पहाड़ के नीचे आने लगा था. तब लगने लगा, प्रेस उनके पैरों तले से उठकर उनका गला पकड़ने लगा है.

और जैसे-जैसे उन पर संकट गहराने लगा, वे प्रेस से भयाक्रांत होते गए. केंद्रीय मंत्रिमंडल से विश्वनाथ प्रताप सिंह के इस्तीफे के बाद अप्रैल 1987 में मैंने उनसे साक्षात्कार किया. वे बोफोर्स भुगतान की अपनी निरंतर, बदलती व्याख्याओं से उस मकड़जाले में अभी प्रवेश ही कर रहे थे. मुझे लगा, उनमें हताशा घर कर रही है कि लोग उन पर विश्वास क्यों नहीं करते. जितनी उन्होंने इस बारे में सफाई देने की कोशिश की, उतना ही वे उलझते चले गए. तब से उन्होंने और उनके सहयोगियों ने प्रेस को अपना कट्टर दुश्मन मान लिया. उनकी अंतरंग मंडली में इसका खौफ दिनोदिन बढ़ता गया. उनके सभी दोषों के लिए प्रेस को बलि का बकरा बनाया जाने लगा. प्रेस से उनका संबंध न्यूनतम रह गया. दूरदर्शन का मनमाना दुरुपयोग होने लगा और विवादास्पद मानहानि विधेयक लाने की चेष्टा की गई.

यह सब पतन का ही संकेत था. मुझे यह देखकर दुख हुआ कि जिस राजीव ने इस घटाटोप व्यवस्था में उम्मीद की झलक दिखाई थी, वे आज हास्यास्पद बनते जा रहे हैं. इस तरह एक मायने में मेरी पूरी पीढ़ी जैसे विफल हो रही थी. जन्म के संयोग और एक त्रासद घटना के कारण राजीव एक पूरी पीढ़ी को फलांगकर देश की व्यवस्था के केंद्र में पहुंच गए थे. मैं सोचा करता था कि ऐसा अविश्वसनीय मौका फिर जीवन में नहीं आएगा.

उस अवधि में मेरी उनसे मुलाकात सरकारी कार्यक्रमों में होती रही, जहां सिर्फ अभिवादन भर का ही मौका होता है. मुझे यह देखकर विस्मय होता था कि इस संकट की घड़ी में भी वे कितने शांत-संयत और खूबसूरत लगते थे. मुझे कोई ऐसा नहीं मिला जो तनाव चुपचाप झेल जाता हो. प्रेस से उनकी दूरी 1989 के चुनावों में भारी पराजय के बाद भी बनी रही. मार्च 1991 में चुनावों की घोषणा के बाद ही वे फिर प्रेस से खुलने लगे थे.

1987 के बाद मेरी उनसे बातचीत नहीं हुई थी लेकिन अचानक इस साल अप्रैल-मई में मैं उनसे चार बार मिला, ज्यादातर छोटी-मोटी बैठकों में, जहां वे हर किसी के हर विषय पर सवाल का जवाब दिया करते. लगा, पुराने मित्रवत, स्पष्टवादी राजीव की वापसी हो रही है. 7 मई को उनसे आखिरी मुलाकात मुझे हमेशा याद रहेगी. उनके चुनाव प्रचार के दौरान बिहार के धूल-धूसरित इलाके में रात 10 बजे हम एक सड़कछाप ढाबे में चाय पीने के लिए बैठे थे. इसी दौरान एक ग्रामीण युवक राजीव को बता रहा था कि गरीबों के लिए आज तक कुछ नहीं किया गया और राजीव—सत्ता से बाहर कर दिया गया युवराज—एक गरीब का दुख शांत-चित्त होकर सुन रहे थे. यही राजीव का असली रूप था—एक करुणावान, सौम्य व्यक्ति. यह युवराज अगर राजा बनता तो अपनी मां की वजह से नहीं, अपने गुणों के बल पर.

अरुण पुरी

वर्ष 5, अंक 15; 1-15 जून 1991
कॉपीराइट 1987 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. सामग्री का किसी भी रूप में पुनर्मुद्रण प्रतिबंधित. लिविंग मीडिया इंडिया लि. के लिए अरुण पुरी द्वारा प्रकाशित और थॉमसन प्रेस, फरीदाबाद से मुद्रित

आवरण: प्रमोद पुष्करणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झनक झनक पाय

गुरू और शिष्य. ताल का तरसावा. राग का बैराग. बीपीएल-सॉन्यो के संग. इस उस्ताद को संगीत देती सॉन्यो टेक्नॉलॉजी. अ

कैसेट रिकार्डर, कम्पोनेन्ट सिस्टम, मोनो और स्टीरियो टू-इन-वन. धूम मचाते डिटेचेबल स्पीकर, हाईस्पीड डबिंग और संगीत क

चाहिये जो. है सब वो. आयें, नाचे-गायें, बीपीएल-सॉन्यो के संग धूम मचायें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BPL · SANYO

पायल बाजे

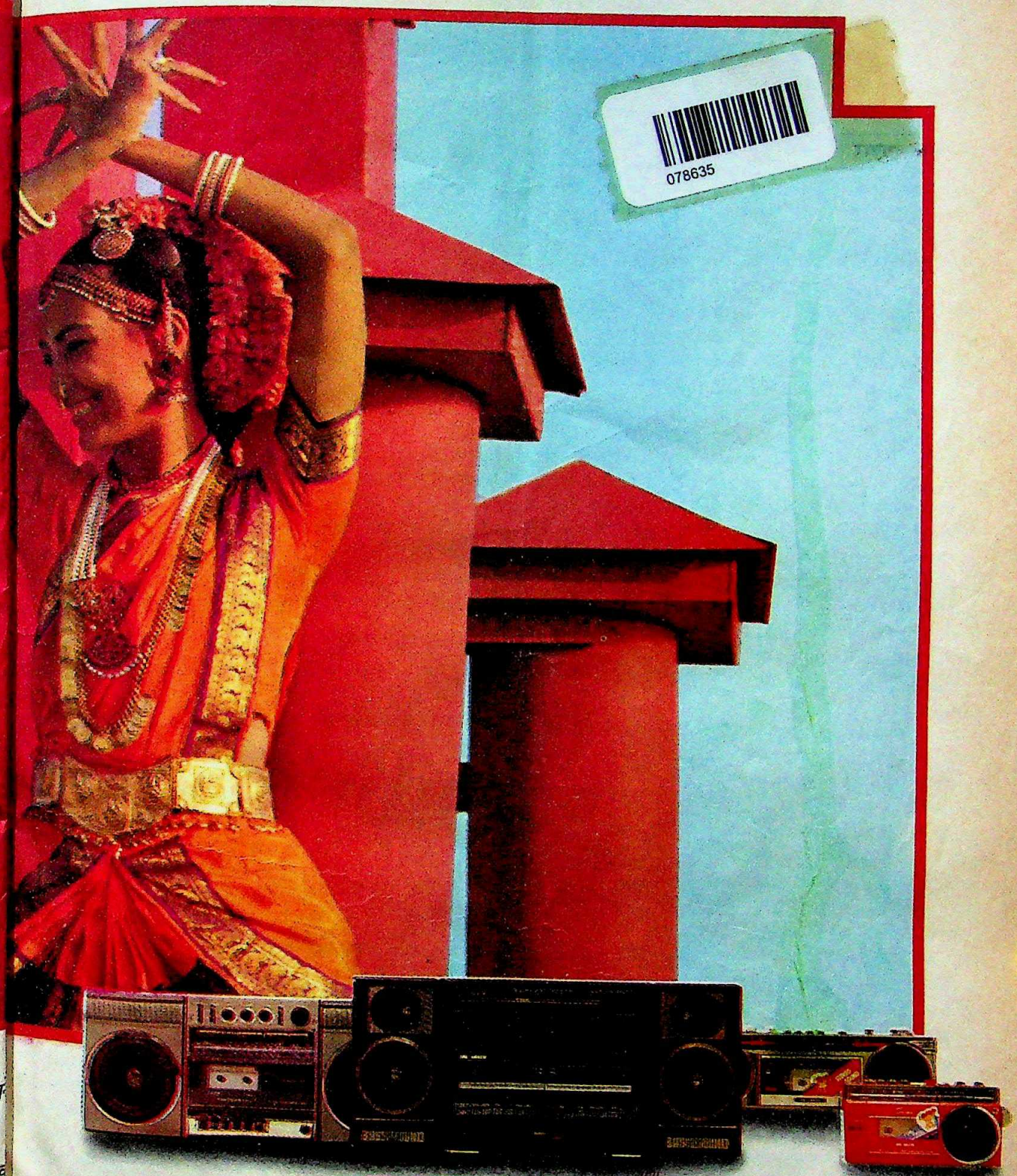

BPL · SANYO

Two-in-Ones

बरसों संग मधुर तरंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Mudra:Blr:BPL:346:91:HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिश्चय के अंधे मोड़ पर

—इंद्रजीत बधवार

भारतीय समाज भाग्य और भविष्यबोध पर जीने वाला समाज रहा है. यह एक के बाद एक सदमे झेलता है और हर सदमे के बाद आत्मनिरीक्षण करता है, हाहाकार करता है, निराश होता है, और कभी-कभी व्यापक बहस में उलझ जाता है. राजीव गांधी की मौत इन्हीं सदमों की ताजा कड़ी है. यह सदमा सिर्फ इसलिए नहीं है कि एक युवा नेता की उसके जीवन के चरमोत्कर्ष के दौर में ही हत्या कर दी गई, बल्कि इसलिए भी है कि पूरा देश अनिश्चय की स्थिति में है. एक बार फिर वही हाहाकार, हताशा और व्यापक बहस का माहौल है. भविष्य को लेकर तरह-तरह की आशंकाएं भी हैं और विधाता के विधान से सब कुछ ठीक हो जाने की हल्की उम्मीद भी.

नेहरू वंश की बैसाखियां, जिनके सहारे यह देश पिछले 40 वर्षों से घिसटता रहा है, अचानक टूट गई हैं. यह वंश देश की ऐसी महत्वपूर्ण टेक था जो एक राष्ट्रीय प्रतीक भी बन गया था—चाहे उसका समर्थन होता रहा हो या विरोध. यह भारत के राजनैतिक अस्तित्व की पहचान बन गया था. यह कांग्रेस पार्टी का सुरक्षा कवच भी था. राजीव भारत की असंख्य, अपरिमित समस्याओं को सुलझाने में समर्थ असाधारण नेता भले ही न रहे हों लेकिन वे कांग्रेस की धुरी थे, इसमें कोई संदेह नहीं है.

उनकी मौत से देश की मध्यमार्गी राजनीति पर आए संकट की ओर लोगों का ध्यान केंद्रित हो गया है. इस देश पर शासन के अपने लंबे इतिहास में मध्यमार्गी राजनीति ने (जिसका प्रतीक बन गई थी कांग्रेस) आम राय, धर्म-निरपेक्षता, आर्थिक संरक्षणवाद और न्यायोचित वितरण व्यवस्था के लिए राज्य व्यवस्था द्वारा असीमित हस्तक्षेप का प्रतिनिधित्व किया था.

जो भी पार्टी सत्ता में आएगी उसे इस वास्तविकता का सामना करना पड़ेगा कि यह देश उग्र, अनुशासनहीन और दुर्दमनीय बनता जा रहा है क्योंकि सरकार के अवयवों का धीरे-धीरे क्षय या राजनीतिकरण हो गया है

जवाहरलाल नेहरू के शासनकाल में यह व्यवस्था अपने शैशव काल में थी. और शायद उपयुक्त भी दिख रही थी, क्योंकि संसाधनों के अभाव और अशिक्षा वाले इस देश में राज्य-व्यवस्था को ही सामाजिक और आर्थिक विकास के उत्प्रेरक के रूप में देखा गया था. लेकिन धीरे-धीरे यह व्यवस्था हजार फनों वाले जहरीले नाग का रूप लेती गई और उसने राष्ट्र की मानवीय गतिविधि के हर क्षेत्र में जहर घोलना शुरू कर दिया. इंदिरा गांधी के दौर में लोकलुभावन नारों और उपायों के तहत राष्ट्रीय संसाधन—मसलन बैंक—राज्य-व्यवस्था के नियंत्रण में आ गए. यही नहीं, संरक्षण के राष्ट्रीय तंत्र में, जो कैंसर की तरह अपनी जड़ें गहरे जमाता चला गया, राष्ट्रीय संसाधन शासक दल और उसकी राजनैतिक ताकत के स्रोत भी बन गए.

इंदिरा गांधी की विरासत ने भारतीय राजनीति में एक नए तत्व के समावेश की शुरुआत भी की. 1978 में उन्होंने पार्टी अध्यक्ष और प्रधानमंत्री दोनों पदों को अपने पास रख लिया. उनके इस कदम से सरकार और पार्टी के बीच का भेद ही मिट गया. यह व्यवस्था पार्टी के आंतरिक लोकतंत्र के लिए घातक तो थी ही, इसने पार्टी हितों को सरकार के हितों से भी ज्यादा महत्वपूर्ण बना दिया. इसका व्यावहारिक अर्थ यह हुआ कि यदि पार्टी के हित कारगर, समाधानोन्मुखी शासन की जरूरत से मेल न खाते हों तो पार्टी के हितों को तरजीह दो. यही नहीं, काम की जगह नारों पर ही धीरे-धीरे जोर बढ़ने लगा.

राजीव को विरासत में यही व्यवस्था मिली थी. वे एक ऐसी पार्टी का नेतृत्व कर रहे थे जो पिछले दो दशकों से धीरे-धीरे टूट रही थी. उन्होंने व्यवस्था को बदलने की कोशिश तो की लेकिन अंततः वे उसी व्यवस्था के दलदल में धंसते गए. हालांकि वे व्यवस्था के इस दलदल से उबरने के लिए हाथ-पैर भी मारते रहे. उनकी मौत से इंका के पूरी तरह से ढह जाने की आशंका है क्योंकि उस वंश की सुविधाजनक छत्रछाया में जनाधार वाला कोई नेता राष्ट्रीय स्तर पर उभर नहीं पाया.

राजनैतिक पर्यवेक्षकों को आशंका है, और यह आशंका शायद सही भी है, कि इससे देश की राजनीति में एक खतरनाक शून्य उभर आएगा क्योंकि इंका मध्यमार्गी राजनीति की रीढ़ रही है. दूसरी तरफ राष्ट्र का राजनैतिक परिदृश्य भी पूरी तरह से बदल गया है.

हालांकि इंका उत्तर भारत के ज्यादातर हिस्सों पर अपनी पकड़ पहले ही खो चुकी है और दक्षिण में भी उसकी स्थिति पहले के मुकाबले काफी कमजोर हो गई है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि राजनैतिक रिक्तता या देश के रसातल में चले जाने को लेकर चिंतित और निराश हुआ जाए.

आज देश के राजनैतिक मंच पर नए नेता उभर आए हैं और नई पार्टियां उभर आई हैं जिनका विकास इंका के पतन के कारण हुआ है. इस बार अंतर सिर्फ यह है कि ये पार्टियां केवल कांग्रेस विरोधी मोर्चों की साझीदार के रूप में अपनी पहचान नहीं बना रही हैं बल्कि अपने कार्यक्रमों और अपने राष्ट्रीय नेताओं की करिश्माई छवि से अपनी पहचान बना रही हैं. आप धर्मनिरपेक्षता या सामाजिक न्याय की उनकी परिभाषाओं में विश्वास करें या न करें लेकिन सचाई यह है कि वे देश की राजनैतिक सत्ता में अपने हिस्से के मजबूत दावेदार हैं. वे अपेक्षाकृत व्यवस्थित लोकतांत्रिक प्रक्रिया से भी उभरकर आगे आए हैं. यह प्रक्रिया बार-बार सफल रही है, भविष्य के लिए अनिष्ट की आशंकाएं व्यक्त करने वाले चाहे कुछ भी कहते रहें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशांत पत्रियार

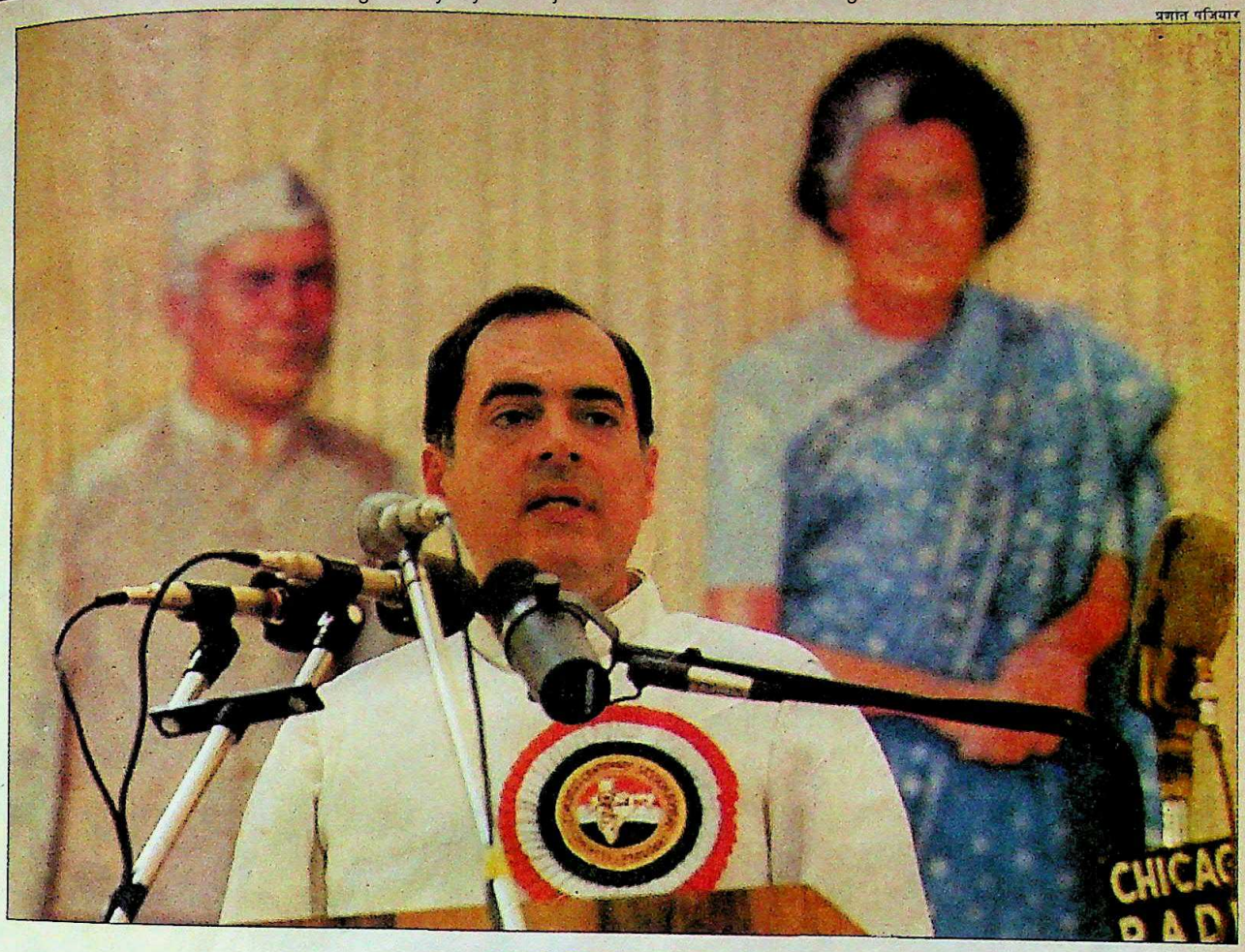

वक्त की मांग यह है कि एक नई राष्ट्रीय आम सहमति बनाई जाए जिसमें राज्य-व्यवस्था कानून के शासन का ज्यादा कारगर औजार बने, न्याय दे और सभी लोगों के लिए अवसरों का सृजन करे. वक्त की इस मांग को पूरा करने वाला ही दीपस्तंभ बनेगा

अगर जातीय या क्षेत्रीय अपीलों के कारण वोट बैंक बंट गए और संसद में किसी को पूर्ण बहुमत नहीं मिला तो सरकार बनाने की प्रक्रिया बातचीत, समझौतों और मेल-मिलाप से ही शुरू होगी जो कि लोकतांत्रिक आचार-व्यवहार के ही अंग हैं. और शासन करने वाली किसी भी साझा सरकार के लिए मध्यमार्गी आम सहमति सिर्फ वैचारिक रूप से ही नहीं बल्कि व्यावहारिक रूप से भी जरूरी है. भारत जैसे विविधता में एकता वाले देश पर शासन करने के लिए अलगाववाद का चोला उतार फेंकना होगा और एक राष्ट्रीय चोला धारण करना होगा ताकि सभी शासित वर्ग राहत महसूस करें.

बदली हुई राजनैतिक परिस्थितियां इंका को भीतर से इस कदर झकझोर भी सकती हैं जो किसी भी संगठन में ऐसे आमूल-चूल सुधार लाने के लिए आवश्यक प्रेरक तत्व बन जाए. और तब शायद पार्टी में ज्यादा लोकतांत्रिक तरीके से कामकाज हो और एक नया, जनाधार वाला नेतृत्व उभरे. उसे चौकड़ी की गिरफ्त से छुटकारा पाने का भी मौका मिला है.

जो भी पार्टी सत्ता में आएगी उसे इस वास्तविकता का सामना करना पड़ेगा कि यह देश उग्र, अनुशासनहीन और दुर्दमनीय बनता जा रहा है क्योंकि सरकार के अवयवों और राष्ट्रीय संस्थाओं का धीरे-धीरे क्षय या राजनीतिकरण हो गया है. हालांकि नियमित चुनाव इस व्यवस्था को साफ-सुथरा और ज्यादा जिम्मेदार बना सकते हैं लेकिन इस देश के लोगों में राज्य-व्यवस्था और सरकार के प्रति अविश्वास और अरुचि पैदा हो गई है क्योंकि उनका मानना है कि सरकार उनके हितों की जगह सत्ता में बैठी पार्टी के हितों का पोषण करती है.

इस दलदल से राष्ट्र को निकालने के लिए उसकी संस्थाओं में तुरंत बड़े पैमाने पर सुधार की जरूरत है. सत्ता और अधिकारों के कारगर बंटवारे, नौकरशाही और न्यायपालिका को राजनीति से मुक्त करने, अर्थव्यवस्था को उदार बनाने और राज्यों में केंद्रीय हस्तक्षेप को रोकने के लिए संविधान में संशोधन की भी जरूरत पड़ सकती है. राजीव की हत्या ने देश को अतीत की गलतियों से सीखने का नया मौका दे दिया है. विडंबना यह है कि यह उनके प्रति श्रद्धांजलि भी होगी क्योंकि वे खुद एक विद्रोही थे.

वक्त की मांग यह है कि एक नई राष्ट्रीय आम सहमति बनाई जाए जिसमें राज्य-व्यवस्था कानून के शासन का ज्यादा कारगर औजार बने, न्याय दे, और सभी लोगों के लिए अवसरों का सृजन करे. जो पार्टी या नेता वक्त की इस मांग को पूरा करेगा वही भविष्य का दीपस्तंभ बन जाएगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सफर जो अचानक खत्म हो गया

दमकता चेहरा, मुस्कराती आंखें. पर अब क्षत-विक्षत लाशों के बीच पड़ा शरीर, दुपट्टे में मुंह छिपाए सुबकती पत्नी, एक-दूसरे को सांत्वना देते पुत्र-पुत्री. चिता को अपने आगोश में लेती लपटें और शोक धुन बजाते बिगुल वादक. एक-दूसरे को सहारा देते सोनिया, राहुल और प्रियंका.

यह हकीकत थी. 24 मई 1991 की शाम 5.26 बजे जो हो रहा था, वह दुखद तो था लेकिन यथार्थ था. चिता की ऊंची उठती लपटों ने भारत के परिवर्तन के एक और दौर के अंत की याद दिला दी. व्यथित लेकिन ऊपर से संयत बने राहुल पिता को मुखाग्नि देने के बाद पीछे हटकर मां के कंधे पर हाथ रखते हैं. 'राजीव गांधी अमर रहे' के नारे वातावरण में गूंज उठते हैं. विभिन्न देशों के राज्याध्यक्ष और विदेशी राजनीतिक—डान क्वेल, नवाज शरीफ, प्रिंस चार्ल्स, बेनजीर भुट्टो. ऊंची उठती लपटों के सामने थकी-हारी सोनिया बेटे के कंधे पर सिर टिका देती हैं.

राजीव गांधी अब नहीं रहे और पूरा देश इस खबर से स्तब्ध है. सबकी नजरें अपने टीवी सेट पर टिकी हैं. राहुल अर्थी से बंधी उस चादर को खोलते हैं, जिसमें राजीव का शव लिपटा है. प्रियंका संयत दिख रही हैं लेकिन बालों को पीछे झटकने के तरीके से और मां को अपनी बांहों के घेरे में लेने से उनके मन का विषाद झलकता है. सोनिया की चश्मे के पीछे छिपी आंखों से आंसू बह रहे हैं. वे

प्रमोद पुष्करणा

दिवंगत नेता की अंतिम या कभी उनके न

नेहरू की विरासत छिन्न-भिन्न हो गई है, नेहरूवा अपने बाधाओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद पुष्करणा

अंतिम यात्रा कभी उनके नाना का आवास रहे तीन मूर्ति से शुरू हुई, जहां राजीव ने बचपन गुजारा था

नेहरूवादी अपने बाधाओं से घिर गए हैं, उनकी बेटी और नातियों को काल के क्रूर पंजों ने असमय ही जकड़ लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रास से क्षत-विक्षत शव दिल्ली पहुंचा, सोनिया के आंसू नहीं थम रहे थे, बेटी प्रियंका ने ढ

सोनिया, राजीव के राजनीति प्रवेश के सदा विरुद्ध रहीं, मानो उनकी आशंका सही साबित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्याम टेकवानी

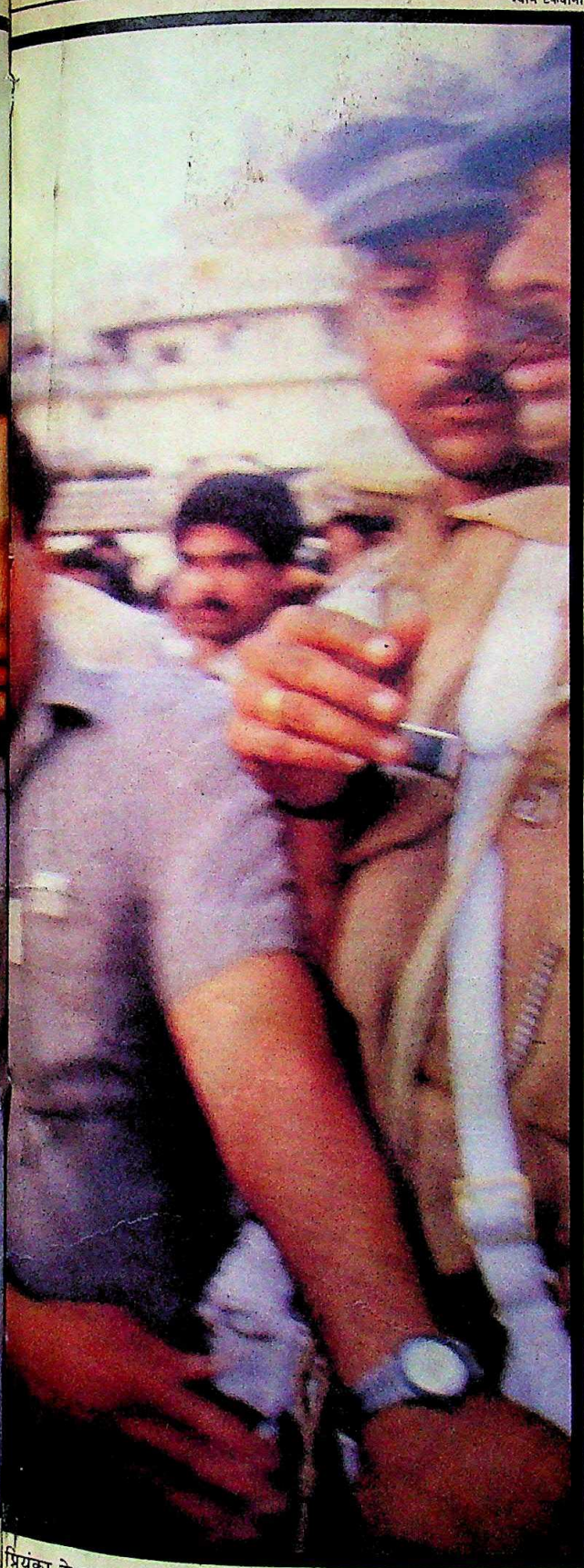

प्रियंका ने ढाढस बंधाया

साथ खड़े गौतम कौल की ओर मुड़कर कहती हैं, "कृपया राहुल की मदद कीजिए."

सिर्फ साढ़े छह वर्ष पहले की बात है. पिता को दादी का अंतिम संस्कार करते देख 14 वर्षीय राहुल सुबक पड़ा था. और आज वही अपनी बहन के साथ पिता की चिता पर चंदन की लकड़ियां टिका रहे हैं. लकड़ियों से ढके शव पर घी डालने के बाद चिता की सात परिक्रमा कर अंततः उसे आग देते हैं.

22 मई को सुबह देश की जनता को राजीव की मृत्यु की खबर मिलती है तो उन्हें इसका यकीन ही नहीं आता. उनका सवाल है, उन्हें किसने मारा? क्यों मारा? अब तो राजीव सत्ता में भी नहीं थे. हाल ही में किसी तरह की उत्तेजक घटना भी नहीं हुई थी. इस तरह उनका अविश्वास भय और निराशा में बदल जाता है.

राजीव के सरकारी निवास 10, जनपथ पर अधिकारियों को बम विस्फोट की खबर हादसे के 15 मिनट बाद रात 10.30 बजे मिल जाती है. लेकिन मौत की खबर की पुष्टि नहीं हो पाती. राजीव के सचिव विन्सेंट जॉर्ज बम विस्फोट की खबर सोनिया को देते हैं. राजीव के पायलट को, जो उनके किंगएअर हेलिकॉप्टर को विशाखापत्तनम से मद्रास लाए थे, ही वह हेलिकॉप्टर वापस ले जाने का दुखद काम सौंपा जाता है.

10, जनपथ पर जॉर्ज, माखनलाल फोतेदार और सतीश शर्मा पहुंच चुके हैं. तकरीबन आधी रात को वे प्रियंका को राजीव की मौत की खबर देते हैं और प्रियंका सोनिया को. यह दुखद समाचार सोनिया को सबसे आखिर में तकरीबन 11.35 पर मिलता है. इसके बाद प्रियंका घर की जिम्मेदारी संभाल लेती हैं और किसी को सोनिया के कमरे में नहीं जाने देतीं. इसी कमरे में सोनिया के आंसुओं का बांध टूट जाता है. कमरे से बाहर आकर वे अपनी सूजी आंखों पर काला चश्मा चढ़ा लेती हैं.

उसी सुबह सोनिया चुनाव प्रचार के बाद अमेठी से लौटी थीं. लौटकर उन्होंने फोन पर राजीव से बात की थी. सोनिया मद्रास

शरद सक्सेना

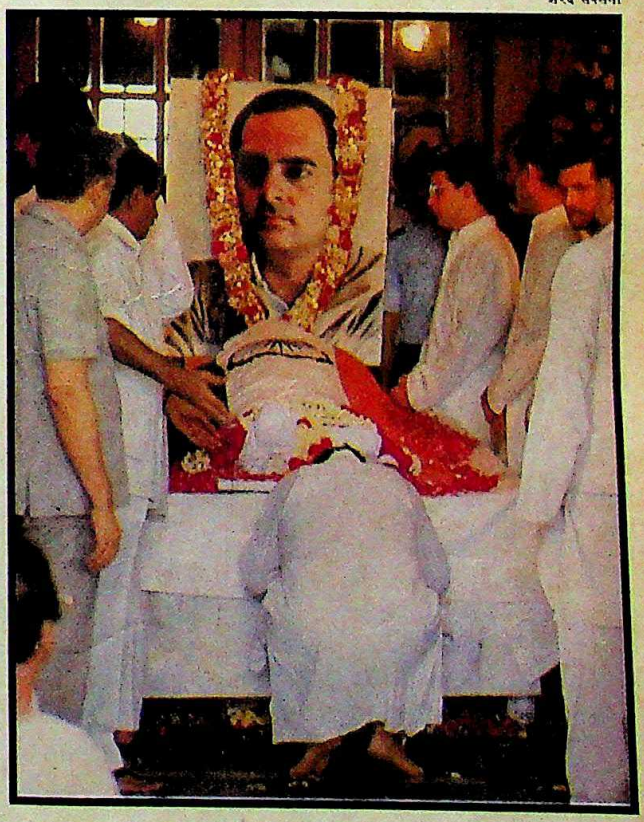

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने को तैयार हो जाती हैं. ऐसे समय जब उनके पति का शव जनरल अस्पताल में रखा है, और डॉक्टर उस क्षत-विक्षत शव को ठीक करने में जी-जान से जुटे हैं, वे उनके पास रहना चाहती हैं.

अस्पताल के शवगृह के रजिस्टर में लिखा है, "क्रम संख्या 390, राजीव गांधी, बम विस्फोट, पोस्टमार्टम रात 1.30 बजे किया गया." गांधी परिवार इस प्रबंध पर खुश नहीं है. डॉक्टर भी हैरान हैं कि राजीव का शव सरकारी अस्पताल में कैसे लाया गया जहां सिर्फ एक बल्ब की रोशनी में उनका पोस्टमार्टम किया गया.

मद्रास में पोस्टमार्टम हो रहा था और सोनिया, प्रियंका और राजेंद्र कुमार धवन वायुसेना के हवाई जहाज में वहां के लिए रवाना हो रहे थे. 10, जनपथ के बाहर भीड़ जमा हो चुकी थी. उन्होंने पहले सीआईए को कोसा, फिर चंद्रशेखर, वी.पी. सिंह और लालकृष्ण आडवाणी के खिलाफ भद्दे नारे लगाने लगे. फोटोग्राफरों को पीटा गया. राष्ट्रपति की कार पर पत्थर फेंके गए. भीड़ में कोई चिल्लाया, "भाजपा का दफ्तर जला दो." तकरीबन 200 लोगों की भीड़ अशोक रोड की तरफ चल पड़ी लेकिन रास्ते में रामविलास पासवान का घर देख उनके अतिथि गृह को आग लगा दी.

वायुसेना का विशेष विमान मीनमबक्कम हवाई अड्डे पर सुबह 4.20 पर पहुंचा, सोनिया बुरी तरह सुबक रही थीं, और प्रियंका की आंखों से आंसू बह रहे थे. उनकी अगवानी सुमन दुबे ने की. दुबे बम विस्फोट के समय राजीव से बीस कदम ही पीछे थे. इस विस्फोट को बाकी लोगों की तरह उन्होंने भी पटाखे की आवाज समझा. राजीव के साथ उन्हीं की कार में श्रीपेरुंबुदूर पहुंची 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' की संवाददाता बारबरा क्रोसेट ने जब उन्हें बताया कि यह बम हो सकता है तो वे रुके. अब वे उस दृश्य को यादकर बताते हैं, "मुझे वह दृश्य स्लो मोशन फिल्म की तरह लगा. लोगों के शरीर और उनके अंग यहां-वहां उड़ रहे थे. इसके बाद सब कुछ धुएं से भरा नजर आने लगा."

दुबे अपने दोस्त को खोजते हुए शवों के बीच गए. उन्हें उम्मीद थी कि राजीव मंच तक पहुंचकर इस हादसे से बच गए होंगे. पर वहां उन्हें न पाकर दुबे ने सोचा कि उनके सुरक्षा अधिकारी उन्हें वहां से हटा ले गए होंगे. पर राज्यसभा सदस्य जयंती नटराजन ने उन्हें वापस बुला लिया. वे झुकी हुई कुछ खोज रही थीं. उन्होंने राजीव के शव को उनके सिर के पिछले हिस्से और उनके सफेद लोट्टो जूतों से पहचाना.

अब शव को बाकायदा ताबूत में डालकर जहाज में सोनिया और प्रियंका के पास रख दिया गया. जार-जार रोती हुई सोनिया ने अपने पति के ताबूत पर सफेद फूलों की माला चढ़ाई और सफेद दुपट्टे में मुंह छिपाकर फफक पड़ीं. दुबे और प्रियंका उन्हें सांत्वना देने की कोशिश कर रहे थे. सूरज की पहली किरण ने मद्रास की धरती को स्पर्श किया और विमान ने उड़ान भरनी शुरू कर दी. इसी के साथ सोनिया ने आंखें मूंद लीं जैसे अतीत की यादों में खो गई हों. अब तक प्रियंका अपनी मां को संभाले हुए थीं पर अब वे भी पिता के ताबूत को बांहों में भरकर फूट-फूटकर रोने लगीं. मां-बेटी पर्दे से घिरे हिस्से में बैठी थीं ताकि औरों की नजरों से दूर रहकर मन हल्का कर सकें.

सारा देश शोक में डूब गया. जन-जीवन थम-सा गया. पान-बीड़ी, चाय तक की दुकानें बंद हो गईं. इंदिरा गांधी की हत्या के बाद हुए दंगों की याद से राजधानी में दहशत फैल गई. सिख घरों से बाहर नहीं निकले. बहुत से दूसरों ने भी यही किया. कोई नहीं जानता था कि क्या होगा.

देश भर में अपने आप ही बंद हो गया. राज्यों में पुलिस मुस्तैद हो गई. कानून और व्यवस्था पर काबू रखने के लिए हर राज्य में कड़े इंतजाम किए गए. राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात के कुछ हिस्सों में इंका और भाजपा कार्यकर्ताओं में मुठभेड़ें हुईं. इंका के लोगों ने भाजपा के पोस्टर-बैनर फाड़ दिए. मद्रास में हत्याकांड के अगले दिन उत्तेजित भीड़ सड़कों पर निकल आई और सार्वजनिक

ओडीसा

अशुभ और अमंगल

शगुन-अपशगुन, अंधविश्वास और भाग्य पर हद से ज्यादा भरोसा करने वालों को कोसने वाले लोग भी इस विचित्र संयोग पर हैरान रह जाएंगे. पंडित जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी तीनों अपनी मौत से कुछ ही पहले ओडीसा के दौरे पर गए थे. इंदिरा और राजीव ने तो अपने जीवन का अंतिम दिन महानगरों के शोरगुल से दूर इस शांत राज्य में ही बिताया. इस तरह नेहरू-गांधी परिवार के लिए तो पूर्वी भारत का पुराने मंदिरों और खूबसूरत समुद्रतट वाला यह राज्य मनहूस ही बन गया है.

राजीव ओडीसा के कोरापुट जिले के वनवासी क्षेत्र गुनपुर में एक जनसभा को सबोधित करने के आठ घंटे बाद ही मारे गए. रात भर वे राज्य की राजधानी भुवनेश्वर के सरकारी गेस्ट हाउस में रुके थे. और उस दिन के चुनाव अभियान—जिसका अंत उस दिन श्रीपेरंबुदूर में उनकी मौत से हुआ—की शुरुआत भी उन्होंने यहीं से की थी.

उनकी मां इंदिरा गांधी भी 31 अक्तूबर 1984 को अपने सुरक्षा गार्डों द्वारा गोली मारे जाने से महज एक दिन पहले ओडीसा के दौरे पर आई थीं. राज्य की राजधानी भुवनेश्वर में परेड ग्राउंड में उन्होंने एक विशाल रैली को संबोधित किया था. उनकी मृत्यु के बाद इस जगह का नाम इंदिरा गांधी पार्क रख दिया गया. इसी जगह शायद उन्हें अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था और उन्होंने कहा था, "खून बहाने के बजाए नफरत को मिटाइए. यदि मैं मर भी जाऊं तो मेरे खून की एक-एक बूंद भारत को मजबूत करने में ही सहायक होगी."

राजीव और इंदिरा की तरह देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर-लाल नेहरू ने भी मौत से थोड़े दिन पहले ओडीसा का दौरा किया था. मई 1964 में भुवनेश्वर में हुए कांग्रेस अधिवेशन में शामिल होने के लिए वे आए और इसी दौरान बीमार पड़े. उसके बाद वे कभी स्वस्थ नहीं हुए. इसके थोड़े ही दिन बाद उनकी मौत हो गई थी.

इतने संयोगों के बाद यह अंधविश्वास मजबूत होता जा रहा है कि ओडीसा गांधी-नेहरू के लिए अशुभ है.

—रुबेन बनर्जी

■ पंडित नेहरू मई 1964 में भुवनेश्वर में बीमार हो गए. बाद में नई दिल्ली में उनका निधन हो गया.

■ 30 अक्तूबर 1984 को इंदिरा गांधी ने भुवनेश्वर में एक रैली को संबोधित किया. अगले दिन दिल्ली में उनका शरीर गोलियों से छलनी कर दिया गया.

■ राजीव ओडीसा के गुनपुर में 21 मई को प्रचार अभियान में जुटे हुए थे. आठ घंटे बाद उनकी हत्या हो गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशांत पत्रियार

मुखाग्नि देते वक्त राहुल के चेहरे पर त्रासदी के भाव स्पष्ट दिख रहे थे

एक और हत्या, एक और नेता, देश के सामने एक ओर शून्य मुंह बांए खड़ा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद सक्सेना

वैदिक मंत्रोच्चार और शोक संतप्त वातावरण में सोनिया, राहुल और प्रियंका ने पूरे सम्मान के साथ अंतिम संस्कार पूरा किया

अपनी पत्नी, बच्चों से राजीव को सुख और शांति मिला करती, उनके लिए वे सबसे महत्वपूर्ण थे

संपत्ति को नुकसान पहुंचाना शुरू कर दिया. वहां दंगों में आठ लोग मारे गए. द्रमुक के अखबार 'मुरासोली' पर भी हल्ला बोला गया. हैदराबाद में गुस्सैल भीड़ ने कुछ बसों को आग लगा दी, एक सिनेमा हॉल और एन.टी. रामराव के परिवार की संपत्ति पर हमला बोल दिया. इसके विपरीत राजीव के जन्मस्थान मुंबई में शांति थी. एक गृहिणी की टिप्पणी थी, "दिन भर सिर्फ कौवों की कांव-कांव ही सुनाई दे रही थी."

अमेठी के लोग भी जड़ सन्नाटे में थे. उन्हें इस खबर पर विश्वास ही नहीं हो रहा था. जगदीशपुर के ट्रक ड्राइवर छब्बन ने खबर सुनी. वह एक ही बात बार-बार दोहरा रहा था, "जगदीशपुर बेवा हो गया." हुजूम में बैठे हुए लोगों के चेहरे उतरे हुए थे. उनके मुंह से सिर्फ दो ही शब्द निकल रहे थे, "हे भगवान! हे भगवान!"

पार्थिव शरीर को लाने वाला वायुसेना का विमान सुबह 8.20 बजे दिल्ली पहुंचा. सिर्फ सोनिया ही नहीं रो रही थीं. ताबूत जब विमान से उतारा जा रहा था तो राष्ट्रपति आर. वेंकटरामन और उनकी पत्नी की आंखों में भी आंसू आ गए. राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति द्वारा शव पर पुष्प गुच्छ रखने के बाद सोनिया और प्रियंका एंबुलेंस में सवार हो गईं. शव सीधा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने राजीव का

प्रशांत पंजियार

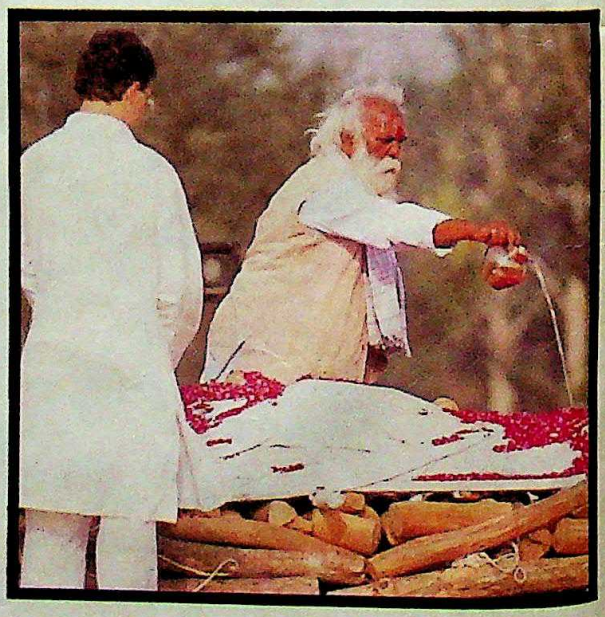

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओरिएण्टल

एक पहचान

हमारा ध्येय

ग्राहकों की आवश्यकताओं की पूर्ति

अधिकांश कम्पनियों का ध्येय होता है ज्यादा से ज्यादा मुनाफा। इस दृष्टि से देखें तो पिछले एक दशक, बल्कि और पहले से ही, हमारी उपलब्धियां बराबर बढ़ती रही हैं। फिर भी—'ओरिएण्टल' का नज़रिया औरों से कुछ अलग है।

हमारा ध्येय है, अपने पॉलिसी-धारकों की जरूरतों को पूरा करने का सतत् प्रयास, यानि कि वे जो, चाहें उन्हें मिलता रहे। और हम अपने पॉलिसी-धारकों की विशिष्ट और भिन्न-भिन्न आवश्कताओं के अनुरूप अपनी सेवाओं को ढालते रहें, तराशते रहें। वास्तव में हमारा ध्येय प्रत्येक ग्राहक की सन्तुष्टि है। खासतौर पर, दावों के निपटान के प्रति हमारे दृष्टिकोण से हमारे इन प्रयासों का संकेत मिलता है। वैसे तो रोज़ाना ही हम दावों का निपटान करते हैं लेकिन दावों के निपटान तथा पॉलिसी-धारकों की शिकायतों के निवारण के लिए हम विशेष अभियान भी चलाते हैं। और इस दिशा में हमारे प्रयास निरन्तर चलते रहते हैं।

प्रिय ग्राहकगण आपके लिए कार्यरत हैं, हमारे शिकायत निवारण, ग्राहक परामर्श और सुरक्षा व्यवस्था संबंधित हमारी विशेष सेवाएं और आपकी सेवा में तत्पर हैं हमारा समस्त कर्मचारी-वर्ग—18000 का विशाल समुदाय। और उपलब्ध है—हमारी समस्त सेवाएँ देश भर में हमारे करीब 1000 कार्यालयों द्वारा!

ग्राहकों की संतुष्टि का हमारा ध्येय पीढ़ियों से हमारी परम्परा की कहानी रही है। हमारे पॉलिसी-धारकों का हम पर भरपूर विश्वास ही इसकी असली पहचान है।

दि
ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड
(जनरल इंश्योरेंस कॉरपोरेशन आफ इंडिया की सहायक कम्पनी)

ग्राहकों से सौजन्य–
ओरिएण्टल की परम्परा

Sista's-OIC-616R HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशांत पंजियार

तीन मूर्ति भवन में राजीव को अंतिम विदाई देती एक शोकाकुल महिला जहां उनके पार्थिव शरीर के दर्शन के लिए लाखों जुट आए थे

दुख और क्षोभ इससे और बढ़ गया कि शायद उन्हें सत्ता में दूसरे मौके से महरूम कर दिया गया

चेहरा प्लास्टर ऑफ पेरिस से ठीकठाक करने की भरपूर कोशिश की लेकिन नाकाम रहे क्योंकि चेहरे की जगह सिर्फ एक डरावना छेद दिख रहा था जिसमें उन्होंने रुई भर दी और पट्टियां बांध दीं.

दो घंटे बाद शव को घर ले जाया गया. शोक संतप्त सोनिया सफेद साड़ी में शव के सिरहाने घुटनों पर हाथ बांधे गमगीन हो बैठ गईं. एक बजे जब शव को तीन मूर्ति भवन ले जाया जाने लगा तो सोनिया ने अनुरोध किया कि वे कुछ देर अकेली रहना चाहती हैं. तब धवन ने लोगों से बाहर जाने का अनुरोध किया.

उस तीन मूर्ति भवन में जहां राजीव ने अपना ज्यादातर बचपन गुजारा था, जिसके बगीचे में वे खेले और लोटे थे, वहीं अब उनकी लाश पड़ी थी. बगल में सोनिया बैठी थीं. हर बार जब और बर्फ डालने के लिए चादर हटाई जाती तो वे सिहर उठतीं. उनके दर्द भरे चेहरे पर जैसे यह भाव रहता कि "देखो उन्हें तकलीफ न पहुंचाओ." लगता था उन्हें वहां बैठकर ही शांति मिल रही हो. शायद ही वे आराम के लिए घर जाने उठी हों, बस कभी किसी ने काफी पकड़ाई तो पी ली. चार दिन तक उन्होंने अन्न का एक दाना भी नहीं लिया. बहुत जोर डालने पर कभी पानी, नींबू पानी या काफी से गला तर कर लिया बस.

घर के चूल्हे में अंत्येष्टि तक आग नहीं जली. बाद में घर को व्यवस्थित करने का जिम्मा प्रियंका ने संभाला ताकि वह उजाड़ जैसा न लगे. उन्होंने जिस तरह से सारी जिम्मेदारी संभाली उससे लोगों को इंदिरा गांधी की याद हो आई. वे अमिताभ बच्चन के साथ राहुल को लेने के लिए हवाई अड्डे गईं और इसके बाद अंत्येष्टि की तैयारी देखने शक्ति स्थल पहुंच गईं.

राहुल सीधे हावर्ड से आए. वहां वे अंतरराष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन कर रहे हैं. अपने पिता के पास ज्यादा समय वही बैठे रहे. और जब तीन मूर्ति भवन से शक्ति स्थल की अंतिम यात्रा शुरू हुई तो हर तरफ नारे लग रहे थे, "राहुल, प्रियंका तुम मत घबराना, तुम्हारे पीछे है सारा जमाना." शवयात्रा शहर की उन सड़कों पर निकल पड़ी जिनकी दीवारों पर राजीव के मुस्कराते चेहरे वाले पोस्टर अभी चस्पां थे.

अपने पति को अपनी अंतिम भेंट तुलसी की माला चढ़ाकर सोनिया और उनके बच्चे शक्ति स्थल से लौट पड़े. चिता को अग्नि दी जाते ही कई लोग चिता स्थल पर चढ़ गए थे. लोगों ने उन्हें घेर लिया. राजीव को उनकी मां की समाधि के पास ही छोड़कर सोनिया भारी कदमों से चली गईं.

—हरिंदर बवेजा और आनंद विश्वनाथन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

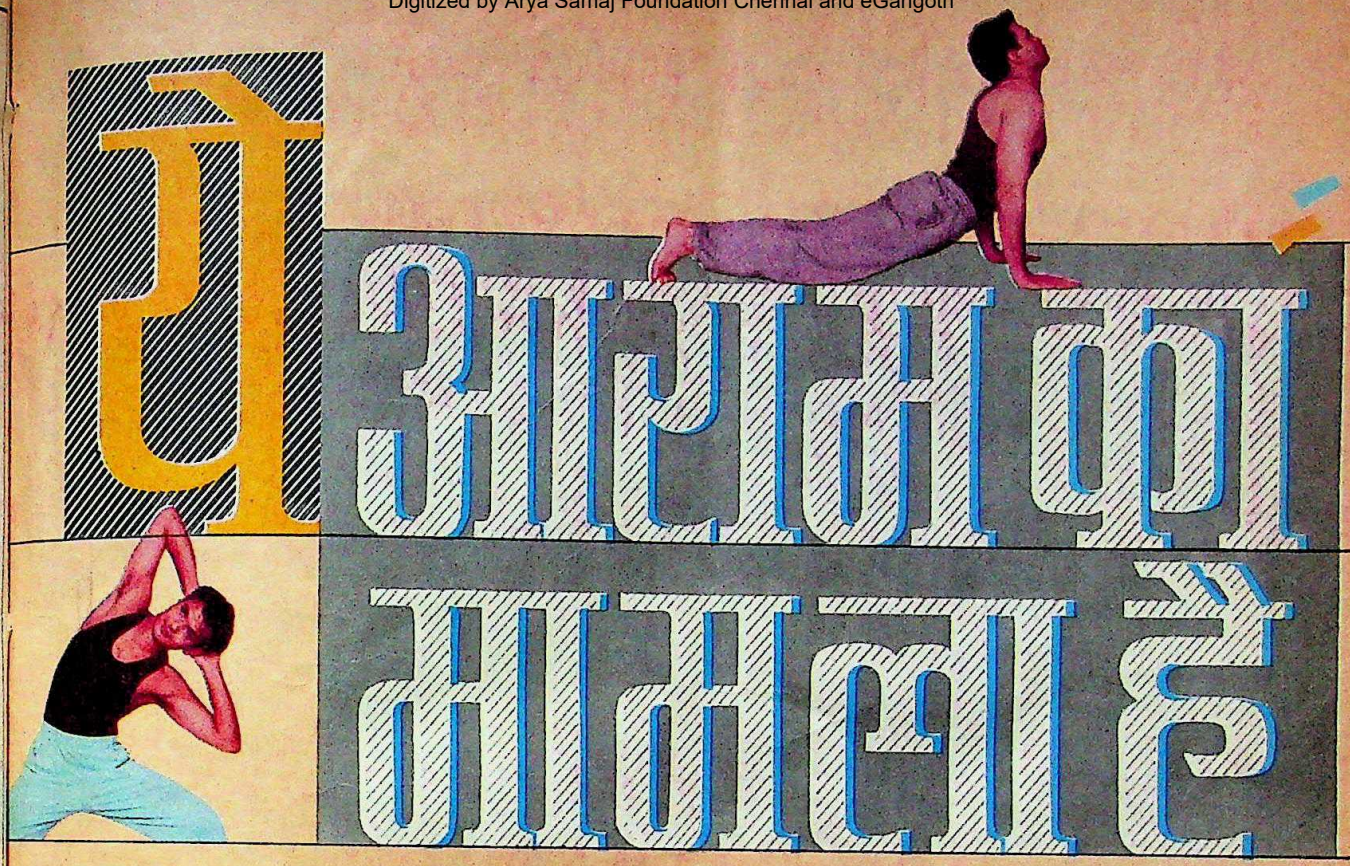

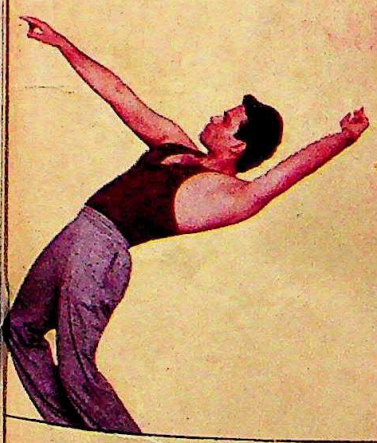

बेहद मुलायम व शत-प्रतिशत
सूती धागे से बने. चुना हुआ
इम्पोर्टेड रबर का इलास्टिक.
उच्च तकनीक की बेहतरीन सिलाई.
शाही अहसास. मर्दाना अंदाज़.
आकर्षक रंगों में.
विस्मृति, कुछ पहनने की.

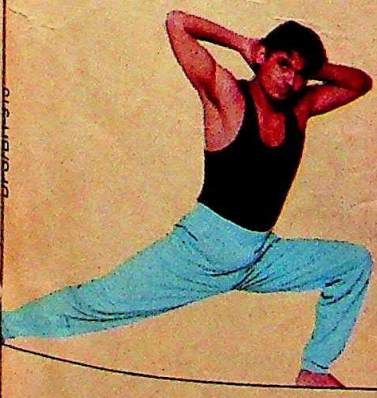

RUPA®
Frontline

जांघिया व बनियान

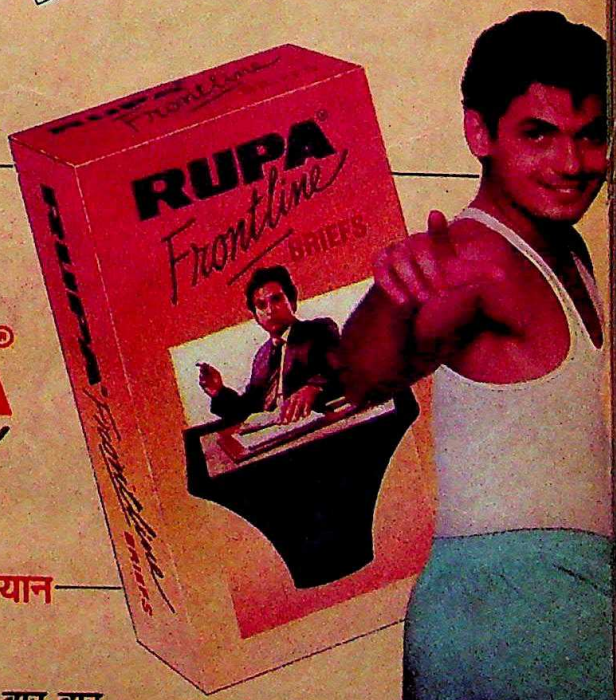

विनोद होसियारी
कलकत्ता ७०० ००७ का उत्कृष्ट उत्पादन

रुपा - लाखों परिवार पहनें बार बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खतरनाक साजिश का भयावह नतीजा

राजीव का क्षत-विक्षत शरीर देखकर इंका नेता जी.के. मूपन

कई लोग रो रहे थे, कई प्रार्थना कर रहे थे, हादसे के बाद के पह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अगर कोई अमेरिका के राष्ट्रपति को मार डालने पर आमादा हो ही जाए, तो यह कोई बहुत मुश्किल काम नहीं... जिस दिन भी कोई हत्यारा अपनी जान की परवाह किए बिना मुझ पर हमला कर देगा, मैं जीवित नहीं बचूंगा."

-जॉन फिट्जेराल्ड केनेडी, अपनी हत्या से कुछ ही देर पहले.

राजीव गांधी की जिंदगी का सौदा उसी क्षण तय हो गया था जब बेल्ट का आखिरी बक्कल भी कस लिया गया. छोटे, पर गठीले कद वाली गहरे सांवले रंग की वह चश्माधारी

एम.ए. पार्थसारथी/आनंद विकेतन

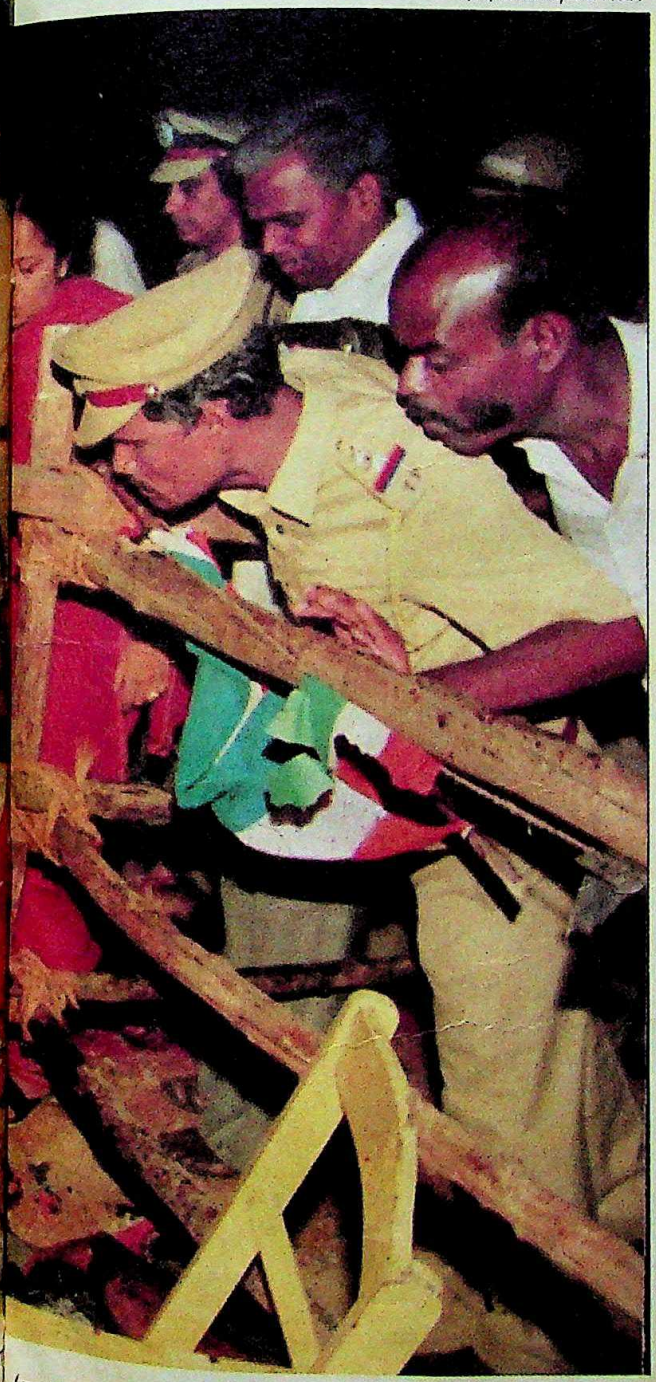

(बाएं से दूसरे) और जयंती नटराजन फूट पड़े

घंटे में तो अफरातफरी मची रही

औरत 30 से 40 की आयु के दरम्यान की थी. तमिलनाडु की किसी भी चुनाव सभा की भीड़ में वह औरत आसानी से घुलमिल जाती. लेकिन एक फर्क था-उसने सलवार-कमीज पहन रखी थी. पर अब तो कितनी ही तमिल महिलाओं ने इस आरामदेह पहनावे को अपना लिया है. लिहाजा मद्रास से महज 50 किमी दूर स्थित श्रीपेरुंबुदूर में पुलिस के लिए सलवार-कमीज वाली औरत से आशंकित होने का कोई कारण नहीं था. मगर महज 12 घंटे बाद दो कटी टांगों, फटे हुए सिर, नीली जींस (डेनिम) वाले कपड़े के कुछ टुकड़ों और वेल्क्रो बेल्ट (पीठ को सहारा देने वाला बेल्ट), बम को सक्रिय करने वाले स्विच और बैटरी जैसे कुछ सबूतों को सामने रखकर देश के चोटी के अपराध विश्लेषक, वैज्ञानिक और विस्फोटक पदार्थों के विशेषज्ञ बाकी की उन गुत्थियों को सुलझाने में जुटे थे जिनका रहस्य उस 'मानव बम' की शिनाख्त में छिपा है. वैसे पिछले पखवाड़े के आखिर में एक श्रीलंकाई महिला वासंती को हत्यारिन की सहयोगी होने के संदेह में कुड्डलूर में गिरफ्तार किया. हालांकि पुलिस ने इसका खंडन किया.

समूचा घटनाक्रम किसी नाटक के चरमोत्कर्ष की तरह एकदम से घटित हो गया, जिसमें सभी अभिनेता पीछे की ओर ढुलक कर चुपचाप एक-दूसरे पर सो गए. इन्हीं में वह 46 वर्षीय निष्प्राण रक्तरंजित शरीर भी था जिसकी सत्ता में वापसी की अदम्य कोशिश को बर्बरतापूर्वक खत्म कर दिया गया. उनकी इस अंतिम यात्रा में दिल्ली पुलिस के सब-इंस्पेक्टर प्रदीप गुप्ता ने भी सच्चा साथ निभाया. उन्होंने सिर्फ तीन हफ्ते पहले ही कलकत्ता में 'इंडिया टुडे' से सगर्व कहा था कि उन्हें राजीव पर मंडराते खतरे का बखूबी एहसास है पर "हम सावधान हैं. फिर भी अगर राजीव के साथ कोई घटना घटती है तो वह मेरी लाश गिरने के बाद ही संभव है." साथ में 16 और लोग मारे गए. इनमें चेंगलपुट जिले के पुलिस अधीक्षक मुहम्मद इकबाल, अनेक कांग्रेसी कार्यकर्ता और महिलाएं शामिल हैं.

जो लोग बच गए वे एक नाउम्मीद-सी उम्मीद कर रहे थे कि शायद राजीव विस्फोट से पहले ही खतरे की सीमा से निकल चुके हों. लेकिन सफेद कुर्ते-पायजामे में लिपटा बुरी तरह क्षत-विक्षत शरीर, सिर का लहूलुहान, साबूत बचा पिछला हिस्सा और लोट्टो जूते इस बात का प्रमाण थे कि 1991 की चुनावी दौड़ में औरों से आगे चल रहे नेता को बीच राह में ही हमेशा के लिए रोक दिया गया है. इंका नेता जयंती नटराजन और जी.के. मूपनार ने ही सबसे पहले राजीव के शरीर को पहचाना. फिर एक पुलिस अधिकारी और तब मूपनार ने झुककर यह पता करने की कोशिश की कि क्या उनमें प्राण हैं. पर उनकी हालत देखकर वे सन्न रह गए. मूपनार बताते हैं, "जहां भी छुआ, खून और मांस ही हाथ लगा."

श्रीलंका के उग्रवादियों के लिए आत्मघाती प्रयास नए नहीं हैं. श्रीलंका में रहकर आए अधिकतर भारतीय जवानों के पास दिल दहलाने वाले कई किस्से हैं. मसलन, एलटीटीई के सक्रिय सदस्य किस तरह अपने सीने पर बारूद बांधकर गाड़ियों के सामने कूद पड़ते या फिर छोटी किश्तियों में बारूद भरकर कैसे उन्हें सैनिक नौकाओं से टकरा दिया जाता. लेकिन ऐसी वारदातें तो औरों के मुल्क में, यहां से बहुत दूर हुईं. अपने देश में, मद्रास से 50 किमी की दूरी पर ऐसा होगा यह किसने सोचा था. घटना के आधे घंटे बाद तक तो वहां पूरी तरह अफरा-तफरी रही. पुलिस ने जब तक होश संभाला, तब तक तो हत्या में शामिल रहा कोई भी अन्य जीवित व्यक्ति या तो भाग चुका होगा, मद्रास महानगर के किसी कोने में जा छिपा होगा या फिर समुद्र तट पर पहुंचकर पाक जलडमरू मध्य के रास्ते सही सलामत जाफना पहुंच गया होगा. यहां तक कि राजीव जिस कार से मद्रास आए उसका ड्राइवर भी घटनास्थल से भाग खड़ा हुआ था. मूपनार और जयंती नटराजन सहित इंका के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द हिंदू के सौजन्य से

1 कोकिला और लता के साथ संदिग्ध महिला (बीच में)

नेता तो फूट पड़े. राजीव के सहयोगी और मित्र सुमन दुबे मायूसी के बावजूद संयम से काम ले रहे थे. उन्होंने ही सबसे पहले जाना कि सारा खेल समाप्त हो चुका है. राजीव के शरीर को या जो कुछ बचा था, उसे पुलिस वैन में डालकर मद्रास ले जाया गया.

तकरीबन 2,000 किमी दूर दिल्ली में राष्ट्रपति भवन के द्वार पर स्थित ब्रासी एवेन्यू पर तैनात सेना के जवान भी विशिष्ट लोगों की गाड़ियों के काफिले को संभालने में बुरी तरह व्यस्त हो चले थे. पार्किंग स्थल जल्दी ही सफेद एंबेसेडर कारों से भर गया और देश के चोटी के अधिकारी कैबिनेट सचिवालय के उस कक्ष की ओर बढ़ चले जहां संकट के समय अहम फैसले किए जाते हैं.

रात 10.50 बजे केंद्रीय गृह सचिव आर. के. भार्गव घर लौटे तो फोन को लगातार बजता पाया. गृह मंत्रालय के एक अधिकारी ने उन्हें बम विस्फोट की खबर दी. ठीक उसी समय ओडीसा में गए प्रधानमंत्री चंद्रशेखर को और गृह राज्यमंत्री सुबोधकांत सहाय को रांची में सूचना दी गई (देखें साक्षात्कार).

मध्यरात्रि के आसपास जब कैबिनेट सचिव को राष्ट्रपति भवन बुलाया गया, तब तक सेना बुलाने का फैसला किया जा चुका था.

2 राजीव के सामने कोकिला, प्रतीक्षारत संदिग्ध महिला

रेखाचित्र: अजीत नैनन और मनोजित दत्त

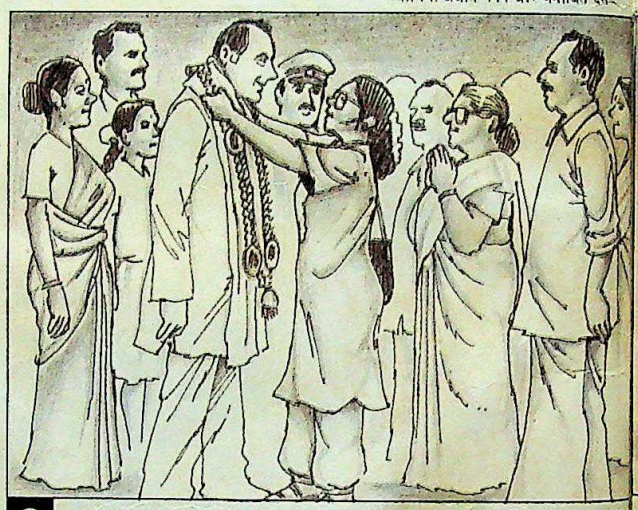

3 राजीव को माला पहनाती संदिग्ध महिला, फिर झुककर

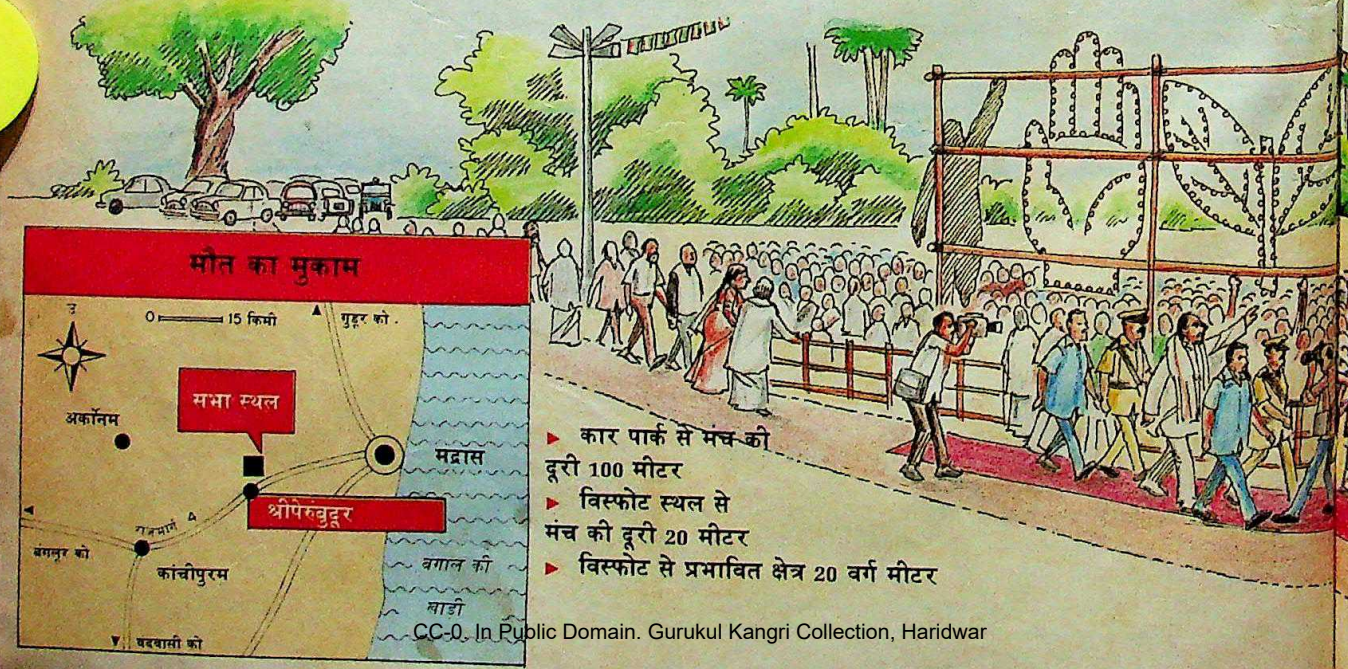

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृह मंत्रालय का नियंत्रण कक्ष संभाल रहे संयुक्त सचिव को निर्देश दिया गया कि वे सभी राज्यों के मुख्य सचिवों से सुरक्षा बलों को 'रेड अलर्ट' के लिए कह दें. 1984 के खूनी दंगों का केंद्रबिंदु रही दिल्ली में सेना की 20 टुकड़ियां तत्काल तैनात की गईं और उनके साथ अर्द्धसैनिक बलों की 25 और टुकडियां लगा दी गईं. एलटीटीई का हाथ होने की अपुष्ट खबरों के साथ ही करोलबाग के 'वेस्ट एक्सटेंशन एरिया' के आसपास सुरक्षा बलों की गश्त बढ़ा दी गई क्योंकि वहां बड़ी मात्रा में तमिल रहते हैं. राजधानी में सुबह होते ही इस त्रासदी की खबर फैलने लगी लेकिन लोगों को आश्वस्त करने के लिए सेना के 'शक्तिमान' ट्रक सड़कों पर उतर चुके थे.

दिन चढ़ने के साथ ही राजधानी के प्रसिद्ध जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम के साथ लगे सीजीओ कांप्लेक्स स्थित सीबीआई के मुख्यालय में गतिविधियां तेज हो उठीं. दिल्ली पुलिस के पूर्व आयुक्त और सीबीआई के महानिदेशक विजय करण जांच दल में शामिल करने के लिए उपलब्ध अधिकारियों के रिकॉर्डों का अध्ययन करने लगे. लेकिन सीबीआई जांच दल की रवानगी से पहले ही तमिलनाडु पुलिस और मद्रास स्थित अपराध विज्ञान

6 अंगों के टुकड़े जोड़कर बना संदिग्ध महिला का शव

एम. ए. पार्थसारथि/आनंद विकेतन

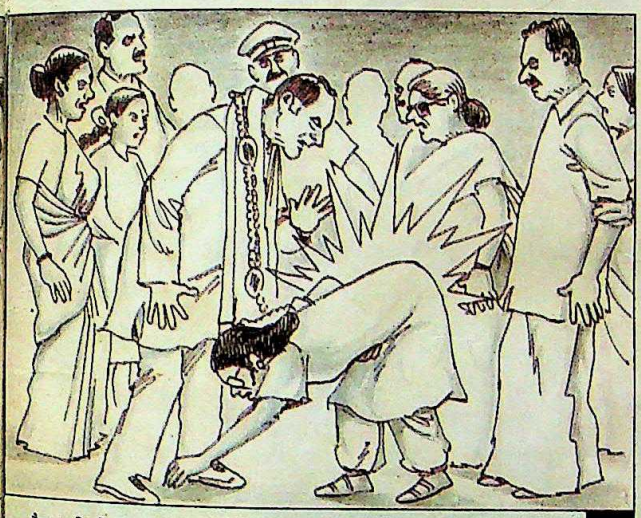

पैर छूने के बहाने विस्फोटक बेल्ट का बटन दबाती **4**

5 राजीव का ध्वस्त शरीर

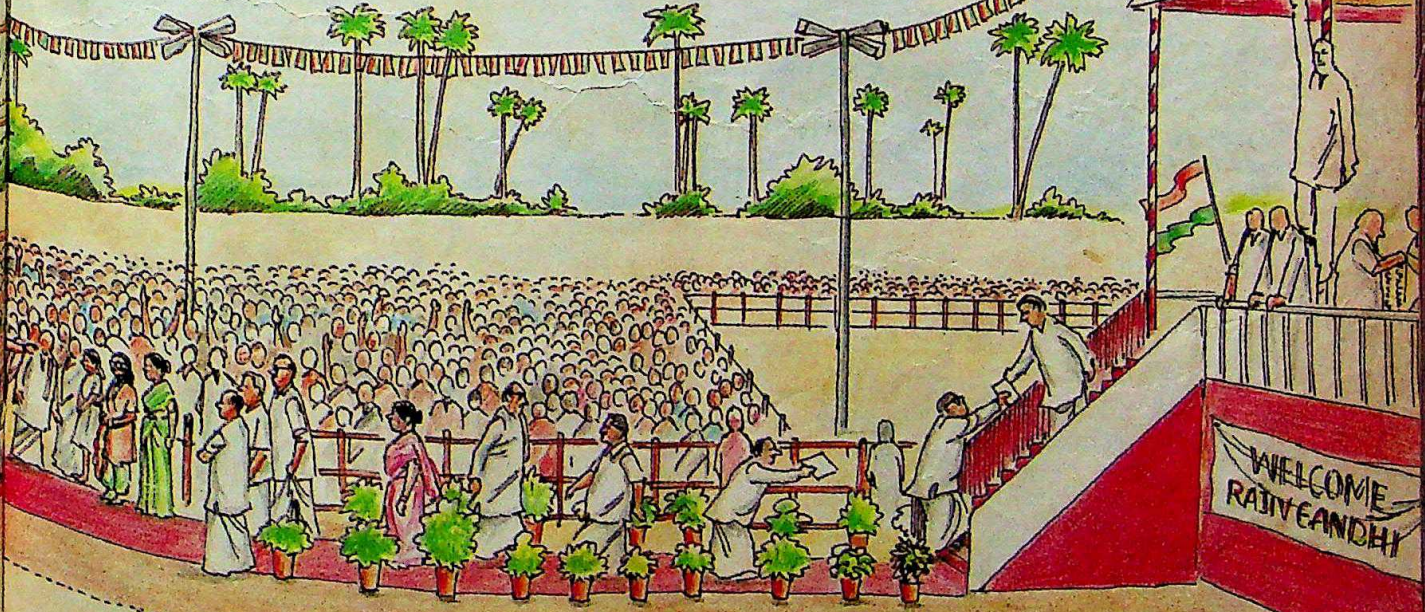

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोगशाला के निदेशक पी. चंद्रशेखरन के नेतृत्व में अपराध विशेषज्ञों का दल महत्वपूर्ण सुराग ढूंढ़ने में जुट गया था.

एक सुराग कांचीपुरम के अस्पताल के सड़ांध भरे मुर्दाघर में फॉर्मलडीहाइड द्रव के विशाल टब में तैर रहा था. इस दुर्गंधयुक्त रसायन का प्रयोग संग्रहालयों में जानवरों के नमूने सुरक्षित रखने में किया जाता है. ऊपरी हिस्से से कटी दो भारी-भरकम टांगें और एक विक्षत सिर भयानक दृश्य उत्पन्न कर रहा था.

कैसे बीते अंतिम क्षण

- **रात 8.30 बजे: मद्रास में उतरकर राजीव बिना किसी सुरक्षा के संवाददाताओं के साथ बातचीत करते हैं.**
- **9.15 बजे: काठीपाड़ा जंक्शन पर रुककर जवाहरलाल नेहरू की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हैं.**
- **9.30 बजे: करीब 100 लोगों की हंगामा-भरी भीड़ को बिना पूर्व-निर्धारित कार्यक्रम के संबोधित करते हैं.**
- **10.10 बजे: श्रीपेरुंबुदूर पहुंचकर इंदिरा गांधी की प्रतिमा पर माला चढ़ाते हैं.**
- **10.20 बजे: कार से उतरकर आखिरी कदम चलते हैं.**

इस महिला ने शरीर के किस हिस्से में बम छिपा रखा होगा इसका पहला सुराग इन्हीं निष्प्राण अंगों से मिला. और इन्हीं के आधार पर चंद्रशेखरन बाकी सभी धारणाओं को नकार देते हैं. चंद्रशेखरन कहते हैं, "इस महिला ने बेल्ट जैसे बम से हत्या की." सबूत के तौर पर वे ये मुद्दे भी गिनाते हैं:

- इस लाश को पहचानने या लेने वाला कोई नहीं आया.
- केवल इसी शरीर के टुकड़े-टुकड़े उड़ गए जबकि बाकी सबों के कुछ भाग ही क्षत-विक्षत हुए. इससे यही साबित होता है कि इसी शरीर पर विस्फोटक पदार्थ बंधा था. धड़ के किसी भाग के नहीं मिलने से भी यही लगता है कि बम उसी पर बंधा था.
- सिर का पिछला हिस्सा फटकर आगे चेहरे की तरफ झूल गया है जिससे लगता है कि विस्फोटक शरीर पर पीछे बंधा था.
- इसके अलावा बेल्ट के हिस्से, बैटरी और स्विच भी बेल्ट-बम की ओर ही इशारा करते हैं.

लेकिन कुछ दूसरी धारणाओं को अब तक नकारा नहीं गया है. इनमें एक यह है कि बम फूलों के गुलदस्ते में छिपाकर लाया गया होगा और एक अन्य महिला इसे राजीव को भेंटकर विस्फोट से कुछ सेकंड पहले वहां से हट गई होगी. लेकिन दो तथ्य इस धारणा को सिरे नहीं चढ़ने देते. एक तो यह कि पुलिस ने मेटल डिटेक्टर से सभी गुलदस्तों की अच्छी तरह जांच की थी और इस बात की संभावना नहीं है कि हजारों लोहे के छर्रे भरा बम गुलदस्ते में छिपाकर ले जाया गया हो. जमीन या फूलदान में बम छिपे होने की संभावना की भी पुष्टि नहीं होती. विस्फोट में मारे गए ज्यादातर लोगों के शरीर के ऊपरी हिस्से में चोटें आई हैं. फिर जमीन में न कोई गड्ढा हुआ न ही जलने का निशान पड़ा.

चंद्रशेखरन का दल इस नतीजे पर पहुंचा है कि विस्फोट के लिए

मारक अस्त्र

काले पाउडर जैसे आरडीएक्स में मधुमक्खी का मोम मिलाने से प्लास्टिसिन जैसी चीज बनती है. इसका विस्फोट कराने के लिए पारे का थोड़ा-सा विस्फोटक और बैटरी से जुड़ी उच्च प्रतिरोध क्षमता वाली तार की जरूरत पड़ती है. तार में करंट दौड़ते ही यह चमक के साथ जलने लगती है और विस्फोटक फट पड़ता है और आरडीएक्स में 10,000 मीटर प्रति सेकंड की गति से तरंग भेजता है और इसमें विस्फोट कर देता है. आरडीएक्स में छिपे छर्रे घातक बुलेट की तरह उड़ने लगते हैं. श्रीपेरुंबुदूर में इस्तेमाल किए गए आधा किलो आरडीएक्स की मारक क्षमता इस तथ्य से जाहिर होती है कि जिस 25 पाउंड के तोप के गोले से बिखरे छर्रे 200 मीटर के दायरे में तबाही मचा सकते हैं उसमें एक किलोग्राम आरडीएक्स पाउडर होता है.

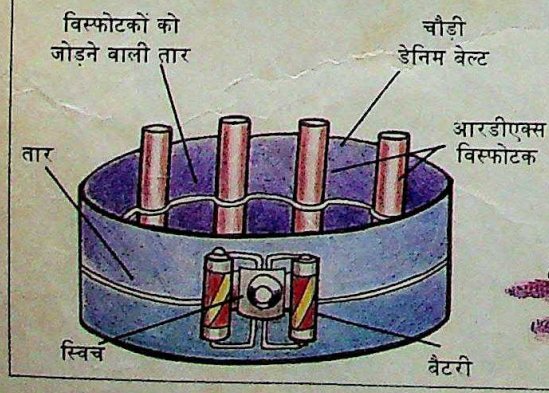

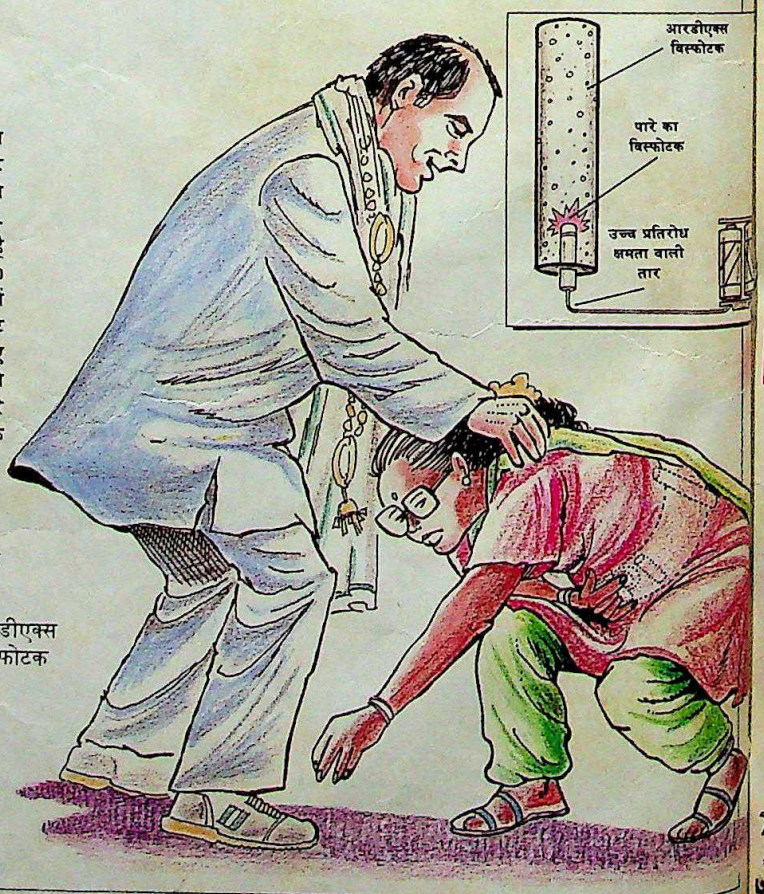

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काजरिया पेश करते हैं, 8x10 वॉल टाइल्स की बेजोड़ श्रंखला

सोलैरिस सीरीज़

सोलैरिस ग्रे

सोलैरिस मैरून

सोलैरिस एरिना

028635
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

फ्लेम सीरीज़

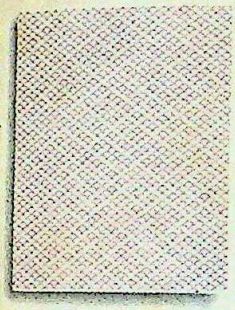

फ्लेम ग्रे

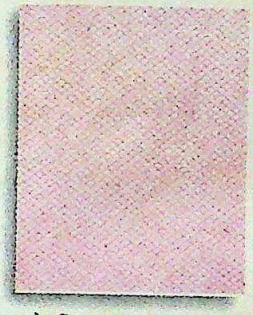

फ्लेम पिंक

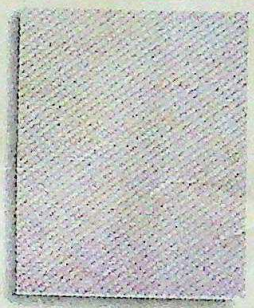

फ्लेम ब्लू

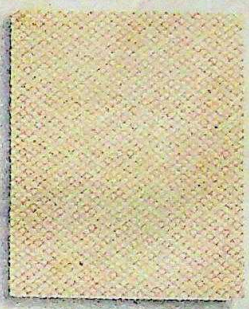

फ्लेम येलो

फ्लेम ब्लैक

टोस्काना सीरीज़

टोस्काना ग्रे

टोस्काना पिंक

टोस्काना ब्लैक

ज़ोडिएको सीरीज़

ज़ोडिएको ग्रे

ज़ोडिएको पिंक

TODAGRES स्पेन के तकनीकी सहयोग से

Kajaria
काजरिया सिरैमिक्स लिमिटेड

* रंगों और डिज़ायनों की व्यापक रेंज * 24 घंटे में तैयार * टिकाऊ * रख-रखाव की चिंता नहीं * सफाई में आसानी * वाजिब लागत

कार्पोरेट ऑफिस: सी-7 ईस्ट ऑफ कैलाश, **नई दिल्ली**-110065. फोन: 6837833, 6830533, 6836433. फैक्स: 011-6841772. टेलेक्स: 031-61053 काज इन।
क्षेत्रीय कार्यालय: 11 होमी मोदी स्ट्रीट, दूसरी मंज़िल, कमरा नं. 24, फोर्ट, **बंबई**-400 023. फोन: 277119. फैक्स: 022-274428. टेलेक्स: 011-82577 काज इन।
2/6 सरत बोस रोड, सेंट्रल प्लाज़ा, कमरा नं. 203. **कलकत्ता**-700 020. फोन: 754820, 748012. टेलेक्स: 021-4842 काज इन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Systems/1001/91.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्लास्टिक विस्फोटक का इस्तेमाल किया गया. सी-1, सी-2, सी-3 संरचना वाले इस विस्फोटक का इस्तेमाल सेनाओं के विध्वंसक दस्तों द्वारा दुनिया भर में किया जाता है. इसका मुख्य घटक अत्यधिक विध्वंसक रासायनिक आरडीएक्स (साइक्लोट्रिमेथिलिन ट्रिनिट्रेमाइन) होता है. एक विशेषज्ञ बताते हैं कि 'यह गुथे हुए आटे जैसा होता है.' इस वजह से इसे किसी भी आकार में ढाला जा सकता है. और इसमें लोहे के हजारों छर्रे भर दिए जाते हैं. विस्फोटक के दबाव से 5,000 मीटर प्रति सेकंड या 18,000 किमी प्रति घंटे की गति से चलने वाले इस्पात के छर्रे विस्फोट के कारण अत्यंत मारक हो जाते हैं. इसे 'क्लेमोर इफेक्ट' कहा जाता है क्योंकि हर छर्रा जानलेवा गोली बन जाता है. इस कांड में काले रंग का आरडीएक्स विस्फोटक इस्तेमाल किया गया, जो कि भारत में खुफिया एजेंसियों द्वारा अक्सर इस्तेमाल किए जाने वाले पीले आरडीएक्स से एकदम अलग है. चंद्रशेखरन का कहना है कि "यह भयंकर विस्फोटक चारों तरफ प्रक्षेपास्त्र फेंकने की क्षमता रखता था."

यदि चंद्रशेखरन का कहना ठीक है तो हादसे के वक्त ऐसा ही हुआ. वह औरत राजीव के पैर छूने के बहाने नीचे झुकी और पेट के आसपास लगी बैटरी का बटन दबा दिया. छोटे, दो मिमी आकार के छर्रे संहारक गोलियों में बदल गए और उन्होंने राजीव और उनके आसपास खड़े लोगों के धड़ों का ऊपरी भाग उड़ा दिया.

विस्फोट से हत्यारिन की कमर पर लगी बेल्ट के बीच का भाग तो जल गया है लेकिन इसके सिरे नष्ट होने से बच गए हैं. जिस महिला पर राजीव की हत्या का संदेह है उसके शरीर पर बेल्ट के कुछ टुकड़े बंधे पाए गए. उस महिला के हरे और नारंगी सूट का ज्यादातर हिस्सा बेल्ट से चिपका पाया गया. एक जांच विशेषज्ञ की राय में उनका दल इस निष्कर्ष पर पहुंच चुका है कि विस्फोट बिजली के दो स्विचों से किया गया. एक स्विच तो विस्फोटक को सक्रिय करने के लिए था और दूसरा विस्फोट करने के लिए. अपराध विज्ञान के विशेषज्ञ अब उस महिला के कपड़ों और बेल्ट के टुकड़ों को जोड़कर देख रहे हैं.

इस अस्त्र को जरूरत के हिसाब से तैयार किया गया था और इसकी तकनीक उस तकनीक से मिलती-जुलती है, जिससे इस फरवरी में कोलंबो में श्रीलंका के रक्षामंत्री रंजन विजेरत्ने की

दोस्ती-दुश्मनी का घातक खेल

श्रीलंका के तमिल पृथकतावादी आंदोलन के साथ इंदिरा गांधी और राजीव की आंखमिचौली का अंजाम जानलेवा साबित हुआ है. ईलम के लिए लड़ रहे उग्रवादियों को पहले हथियार और प्रशिक्षण से लैस किया गया और फिर श्रीलंका सरकार के साथ एक समझौते के तहत भारतीय शांति सेना ही तमिल लड़ाकों के साथ भिड़ंत के लिए भेजी गई. दोस्ती दुश्मनी में तब्दील हो गई और सहयोगी विरोधी बन गए, और इंदिरा गांधी के समय में प्रशिक्षण पाए लोग ही अंततः राजीव के हत्यारे बन बैठे. इंदिरा भी क्रूर विडंबना का शिकार हुई थीं, जब उन्हीं की सरपरस्ती में परवान चढ़े उग्रवादी अंत में उनकी ही जान के दुश्मन बन गए.

एम.ए. पार्थसारथि/आनंद विकेतन

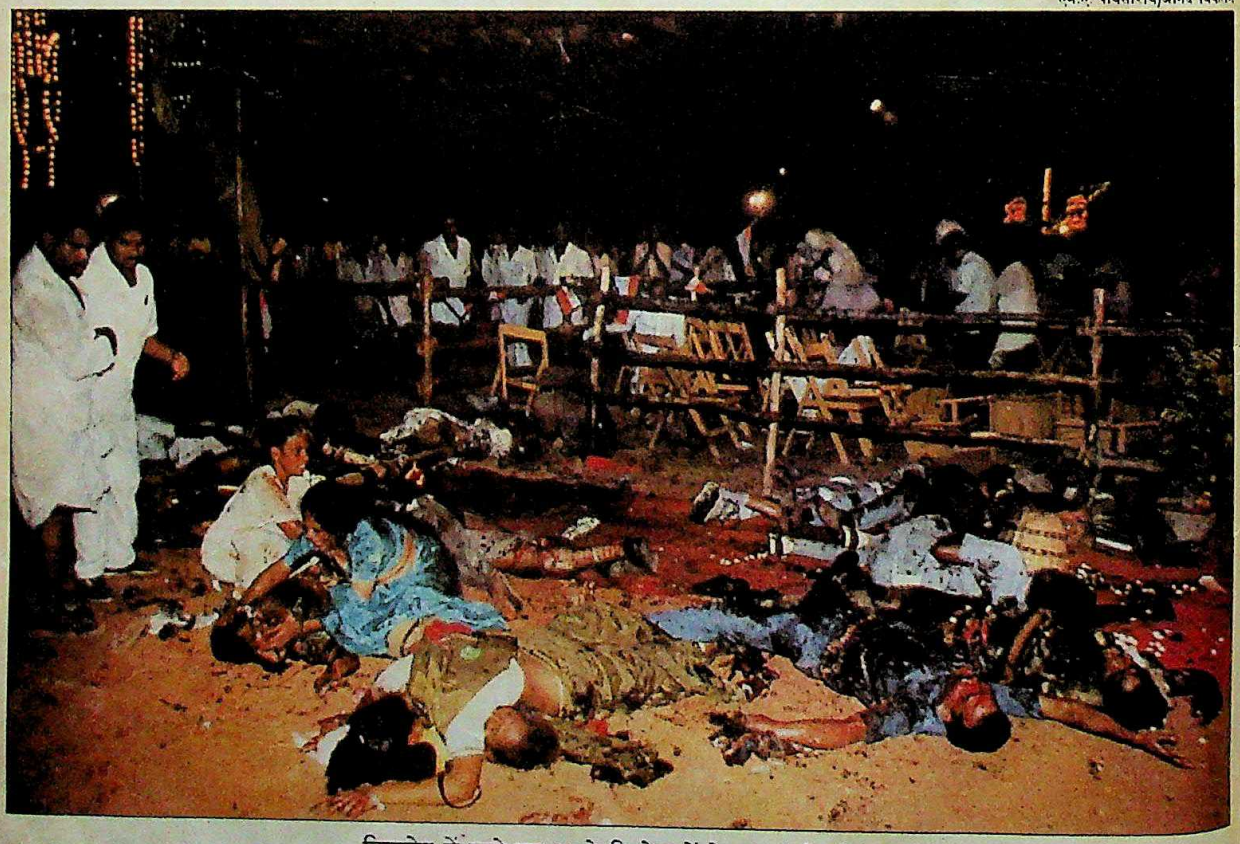

विस्फोट में मारे गए अपने रिश्तेदारों के शव ढूंढते लोग

शवों के छितरा जाने से यह प्रमाणित होता है कि विस्फोटक छोटा था लेकिन उसकी मारक क्षमता अधिक थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

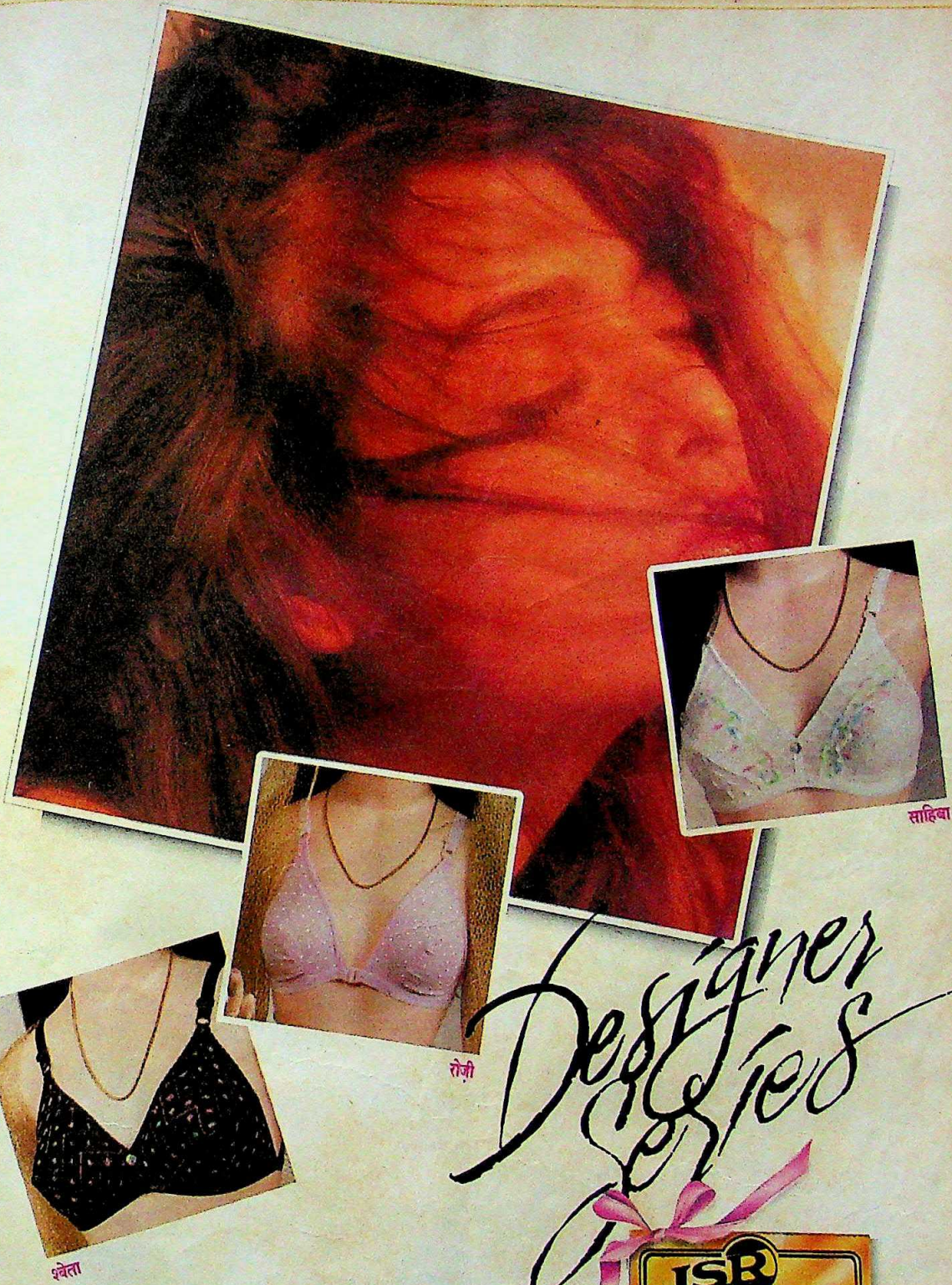

जे.एस.आर. ईन्टरप्राइजेज 1109-ए, गली नं. 1, ओरीयलान्ट प्लाय रोड, नई दिल्ली-110 005, फोन : 776365, 516909, 528819

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पक्की जासूसनी थी वह.
अंदर आते ही
कमरे की एक-एक चीज़ ताड़ ली!

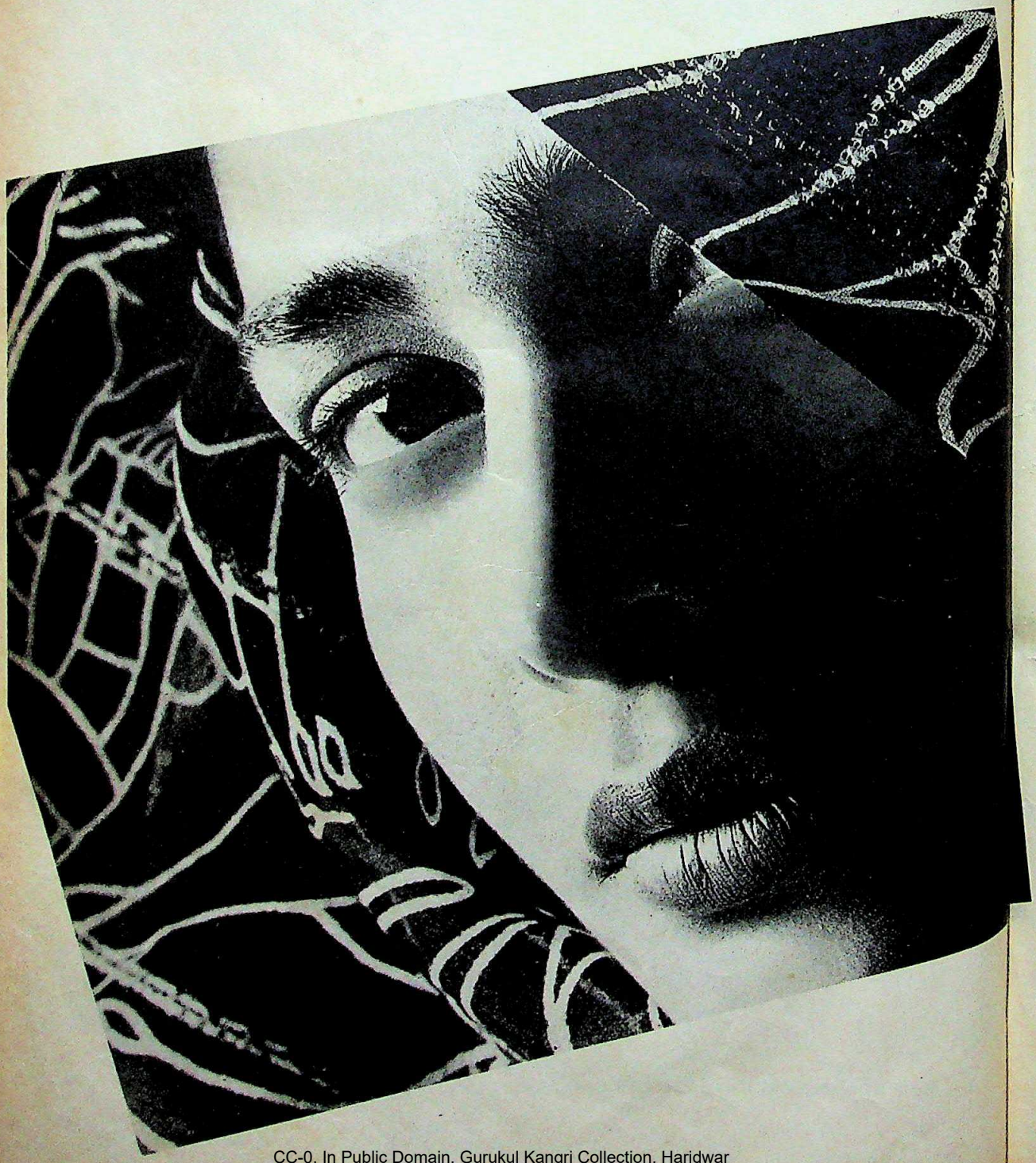

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

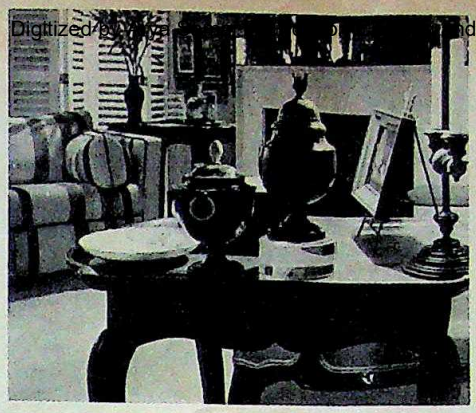

कुछ भी तो नहीं छूटा उसकी तेज़ नज़र से! आँखों ही आँखों में पूरा कमरा उसने जाँच लिया, एक-एक चीज़ याद करती गई।

फिर उसकी नज़र छत की तरफ़ उठी।

"हूँ... यह पंखे," वह बोली, "किसकी पसंद हैं?"

"मेरी," मैंने बताया, "जिस दिन यह फ़्लैट ख़रीदा था, उसी दिन पंखे भी लिए थे। क्यों, कुछ गड़बड़ है क्या?"

(पंखे तो उषा के क्लासिक कलैक्शन के ही थे, पर मैंने औपचारिकता के नाते कह दिया।)

एक विचित्र सी मुस्कुराहट उसके चेहरे पर उभरी। वह बोली — "नहीं, कुछ नहीं। लेकिन मैं बाक़ी फ़्लैट भी देखना चाहूँगी — अगर आपको एतराज़ न हो..."

मुझे भला क्या एतराज़ हो सकता था? चुपचाप मैंने बाक़ी फ़्लैट भी दिखा दिया।

(हाँ, रसोई के पास उसे न जाने दिया क्योंकि वह तो रोज़ की तरह औंधी-सीधी पड़ी थी।)

एक-एक कर उसने सभी कमरों का मुआयना किया। अपनी पैनी दृष्टि से उसने हर चीज़ आँकी, जाँची, बहुत ही बारीकी से।

(दादा जी की दी हुई ऐंटीक रोलटॉप डेस्क में भी उसने उतनी ही दिलचस्पी दिखाई जितनी पंखों में दिखाई थी।)

दस मिनट बाद हम फिर ड्रॉइंग रूम में खड़े थे। वह धीरे से मेरी ओर मुड़ी और मुस्करा दी — "आप पास हो गए। मम्मी ने ठीक ही कहा था — मेरी बहन के लिए आप योग्य वर साबित होंगे। बधाई हो!" मैंने चैन की साँस ली।

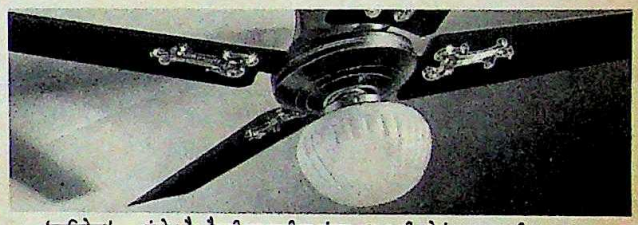

'ल्युमिनेयर' — पंखे और रौशनी का सजीला संगम, मख़मली भूरे रंग पर सुनहरी सज-धज।

'स्टैला' — उत्कृष्ट सुरुचिपूर्ण डिज़ाइन, आईवरी सफ़ेद व भूरे रंगों में।

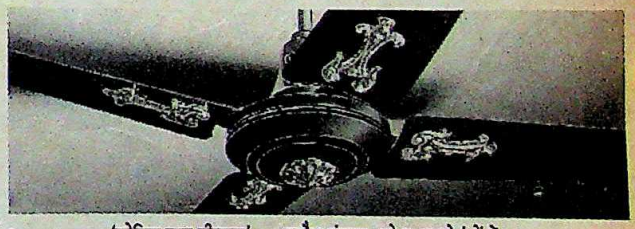

'कोहिनूर सुपर डीलक्स' — सुडौल सुंदरता, भूरे व सुनहरे रंगों में।

उषा

क्लासिक

क लै क्श न

पंखे जो आपके बारे में बहुत कुछ बताते हैं.

60 से अधिक देशों को निर्यात • 40 वर्षों की उत्तमता • भारत के सर्वाधिक बिकने वाले पंखे

Contract JEW-24115 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हत्या की गई. तब विस्फोट रिमोट कंट्रोल से किया गया था. श्रीलंका सरकार के विदेश नीति सलाहकार ब्रैडमन वीराकून ने बताया, "यह एलटीटीई द्वारा इस्तेमाल की गई तकनीकों से मिलती-जुलती है. जांच में हमने हर संभव सहयोग देने की पेशकश की है." एलटीटीई के खंडन का कोई महत्व नहीं है. न ही इस दावे का कि एलटीटीई ने राजीव से वार्तालाप का रास्ता खोल दिया था (जिसका कि इंका प्रवक्ता प्रणव मुकर्जी ने खंडन किया है) क्योंकि एलटीटीई ने टीयूएलएफ नेता अमृतलिंगम के साथ सौहार्दपूर्ण बातचीत के कुछ दिन बाद ही उनकी हत्या कर दी थी. मद्रास स्थित एक संवाददाता से एलटीटीई के नेता अक्सर कहा करते थे कि "राजीव ने जो किया उसके लिए तमिल उन्हें कभी माफ नहीं करेंगे." राजीव की सत्ता में वापसी की संभावना को लेकर वे चिंतित तो होंगे. लेकिन अब जबकि भारतीय शांति सेना की कार्रवाई इतिहास की बात बन चुकी है, राजीव को मारकर एलटीटीई को क्या फायदा होगा? इसके अलावा ऐसे नेता की, जो दक्षिण भारत में बेहद लोकप्रिय हो, हत्या एलटीटीई के लिए भी आत्मघात से कम नहीं. शांति सेना की कार्रवाई के कारण परिवार में किसी व्यक्ति की मौत के बाद किसी ने राजीव से वैर साध लिया हो, इस संभावना पर भी विचार किया जा रहा है.

हत्या में एलटीटीई शामिल हो या न हो, श्रीलंकाई हाथ होना तो तय दिखता है. विस्फोट से थोड़ी देर पहले की वीडियो फिल्म में एक लड़की और एक महिला एस. कोकिला और लता कण्णन के साथ 'मानव बम' बनी उस संदिग्ध महिला की शिनाख्त कर ली गई है. ये दोनों भी मारी गईं. यह लड़की और महिला मार्गथम चंद्रशेखर की परिचित बताई जाती हैं. श्रीमती चंद्रशेखर के बेटे विजय की शादी श्रीलंकाई लड़की से हुई है. उनके परिवार ने खंडन किया है कि ये दोनों उनकी परिचित थीं. जांचकर्ता दो महत्वपूर्ण सूत्रों की जांच कर रहे हैं. एक यह कि

पुर्जा-पुर्जा कट गिरा

राजीव गांधी के बिलकुल करीब फटे बम ने उनके शरीर को इतना क्षत-विक्षत कर दिया कि उसे पहचानना भी कठिन था. विस्फोट का सबसे ज्यादा असर शरीर के ऊपरी हिस्से पर पड़ा. उस मुस्कराते व्यक्तित्व का कुछ शेष था तो बस उनका दायां भाग, थोड़ी-सी नाक और दायां कान.

इस भीषण बम विस्फोट से राजीव औंधे मुंह जमीन पर गिर पड़े. उनकी खोपड़ी उड़ गई और मस्तिष्क निकलकर उनके निजी सुरक्षा अधिकारी प्रदीप कुमार गुप्ता के पैर पर गिर पड़ा. गुप्ता भी राजीव के साथ ही मारे गए. राजीव का जिगर, गुर्दे और आंतें भी बाहर निकल आईं. ढेर सारी लाशों के बीच राजीव का शव ढूंढ़ने में उनके सहयोगियों को काफी मेहनत करनी पड़ी. गंजा सिर और सफेद लोटो जूते ही अब उस शख्सियत की एकमात्र पहचान थे जिसे चंद मिनट पहले ही पार्टी कार्यकर्ता हार पहना रहे थे. जब स्ट्रेचर लाया गया तो जल्दी-जल्दी उनके शव के टुकड़े जोड़कर उस पर लाद दिए गए. शरीर को मद्रास के सरकारी जनरल अस्पताल में जोड़-जोड़कर ठीक किया गया.

वायुसेना के विशेष विमान द्वारा जैसे ही राजीव का शव पालम हवाई अड्डे पर उतरा उसे दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान लाया गया, जहां डॉक्टरों ने प्लास्टर ऑफ पेरिस से उनके चेहरे को बनाने की कोशिश की लेकिन जब कामयाब नहीं हुए तो उस छिद्र में रुई और पट्टियों की पैडिंग लगा दी गई. संलेपन के बाद उनके शरीर को तिरंगे झंडे से ढककर पहले उनके निवास 10, जनपथ, फिर तीन मूर्ति भवन लाया गया, जहां इसे दो दिन तक बर्फ पर रखा गया और 24 मई को अंतिम संस्कार किया गया.

"लोगों में भगदड़ मच गई. मैंने बिखरे हुए शव देखे. प्रदीप गुप्ता अभी जीवित थे. उन्होंने हमारी ओर देखा, कुछ बुदबुदाए, और चल बसे. मानो वे किसी जानकार की राह देख रहे थे, जो राजीव के शव को संभाल ले. मैंने उनका सिर उठाने की कोशिश की लेकिन मेरे हाथ सिर्फ खून और मांस ही लगा. मैंने उन पर एक तौलिया डाल दिया."

जी.के. मूपनार
इंका नेता

"अचानक लगा जहां राजीव हैं, वहां जैसे पटाखे छूट रहे हों. घूमकर मैंने देखा तो लोगों के क्षत-विक्षत शरीर स्लो मोशन में लहराते गिर रहे थे. मैं मंच की ओर भागा. मैं सफेद रंग खोज रहा था क्योंकि राजीव सफेद कपड़े पहनते थे. पर मुझे, ज्यादातर काला ही काला दिख रहा था. मैं खोजता रहा. याद नहीं, कब तक."

सुमन दुबे
राजीव के सहायक

"सभी अधिकारी भाग खड़े हुए थे. मैंने शवों को देखा. उम्मीद नहीं थी राजीव भी उनमें होंगे. प्रदीप गुप्ता पीठ के बल पड़े थे. उनकी आंखें खुली थीं, सांस चल रही थी. मैंने पूछा, 'आप ठीक तो हैं न?' अगले क्षण उनकी मृत्यु हो गई. तभी मैंने उनके घुटनों पर पड़े एक सिर को देखा और बोल पड़ी, हे भगवान! यह तो राजीव लगते हैं."

जयंती नटराजन
इंका सांसद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्याम टेकवानी

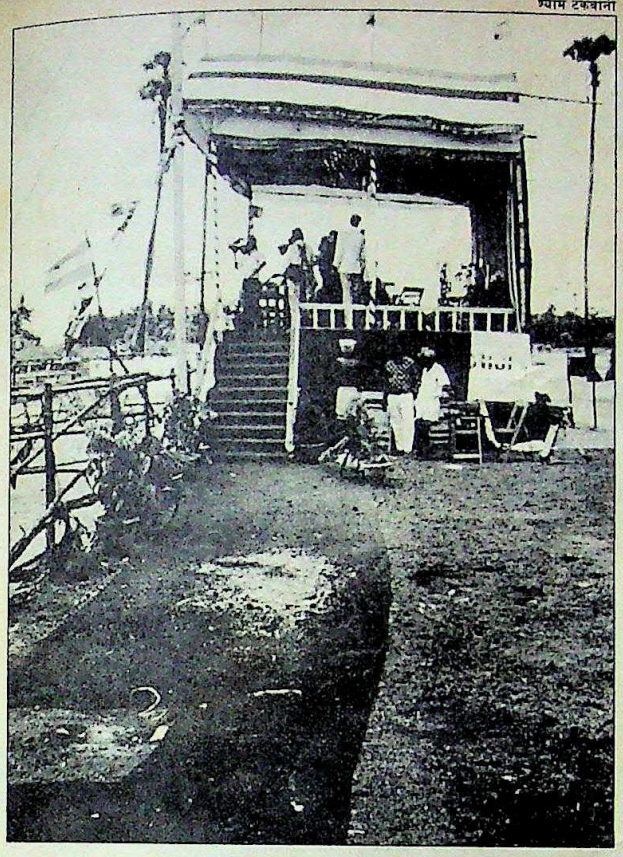

मंच के निकट वह जगह जहां राजीव मारे गए

कथित हत्यारिन चंद्रशेखर के निवास पर देखी गई. दूसरे कोकिला ने घटना के एक दिन पहले ही अपनी 'श्रीलंकाई मित्र को उपहार देने के लिए' वैसी ही सलवार-कमीज खरीदी थी.

श्रीपेरुंबुदूर समुद्र तट से बहुत दूर है. इसलिए एलटीटीई के लोगों के छिपने के लिए यह जगह बहुत उपयुक्त नहीं है. लेकिन पुलिस का कहना है कि यह श्रीलंकाई गिरोह यहां सक्रिय था. स्थानीय लोग याद करते हैं कि कभी-कभी श्रीलंकाई शरणार्थी यहां नजर आते तो कई दुकानदारों का कहना है कि शरणार्थी होने का दावा करने वाले कई श्रीलंकाई अक्सर यहां आते थे और दुकान-दुकान घूमकर पैसा मांगते थे. अंतिम बार किसी 'जाफना की महिला' को इस हादसे से पांच दिन पहले इलाके में देखा गया था. मद्रास में अधिकारियों का कहना है कि पुलिस इन खबरों की भी जांच कर रही है कि एक हफ्ते पहले तीन श्रीलंकाई तमिल महिलाएं रेड हिल इलाके में शरणार्थियों के लिए बने शिविर की लचर सुरक्षा व्यवस्था तोड़ वहां से भाग निकली थीं.

अन्य दूसरी संभावनाओं पर भी विचार किया जा रहा है. जांचकर्ता इस बात पर भी गौर कर रहे हैं कि विस्फोट में काले रंग का आरडीएक्स इस्तेमाल किया गया है. जबकि भारत में ज्यादातर पीला आरडीएक्स ही इस्तेमाल होता है. काला आरडीएक्स सिख आतंकवादियों द्वारा ही इस्तेमाल होता रहा है. अधिकारी बताते हैं, "यह तो हर तरह के पूर्वाग्रह से मुक्त जांच है. किसी को भी बख्शा नहीं गया है लेकिन श्रीलंका के तमिल गुटों पर ज्यादा संदेह है. राज्य के सुरक्षा संगठनों और राज्य पुलिस की आपसी खींचतान के बाद अपराध विज्ञान और विस्फोटक पदार्थों के विशेषज्ञों के इस 25 सदस्यीय दल ने अपना काम शुरू कर दिया है.

जांच में लगे अपराध विज्ञानियों के लिए तो यह मामला एक बड़ी चुनौती है क्योंकि ये लोग कितने ही अनुभवी और बुद्धिमान क्यों न हों, उन्हें वैसी सुविधाएं हासिल नहीं जो पश्चिमी देशों में

विस्फोटक को जरूरत के अनुसार ढाल लिया गया था

"मैंने अभी-अभी कार में राजीव से इंटरव्यू किया था. कुछ ही दूरी पर मुझे पटाखों की आवाज सुनाई दी. एकाएक पिट-पिट की आवाज हुई जैसे कुछ रह-रहकर जल रहा हो और फिर एक बड़ा धमाका हुआ. मैं न्यूयॉर्क टाइम्स की बारबारा क्रोसेट के साथ भागी और जिस कार में राजीव आए थे उसी से हमें वापस मद्रास ले जाया गया."

नीना गोपाल
'गल्फ न्यूज' संवाददाता

"एकाएक मुझे एक धमाका सुनाई दिया. आग की लपटें और दमघोंटू धुआं फैल गया. मेरा संतुलन गड़बड़ा गया और मेरे ऊपर चार शव आ गिरे. मैंने बहुत हाथ-पांव मारे लेकिन निकल न पाया. क्योंकि बड़ी तेजी से मेरा खून बह रहा था. अपने आसपास मुझे रणभूमि-सी दिख रही थी जहां क्षत-विक्षत शव पड़े थे और लोग कराह रहे थे."

डी. पांडियन
मद्रास से यूसीपीआई के प्रत्याशी

"मुझे राजीव पर फूल बरसाने थे. लेकिन जैसे ही मैं उनके नजदीक पहुंची मार्गथम ने मुझे धकेल दिया. मेरी बहन सरोजा अभी भी वहीं थी. तभी जोर का धमाका हुआ. मेरी जांघों में इस्पात के छर्रे घुस गए. लेकिन मैं किसी तरह मंच के पास तक पहुंच गई और अपनी बहन को मृत पाया. सुबह 4.30 बजे तक कोई भी मेरी मदद को नहीं आया."

के. शांता कुमारी
महिला कांग्रेस नेता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल जाती हैं. यदि किसी पश्चिमी देश में ऐसा कोई हादसा हुआ होता तो अपराध विज्ञानी विभिन्न संभावनाओं की परख के लिए अब तक ऐसी ही विस्फोटक तकनीकों का परीक्षण राजीव तथा दूसरे लोगों के आदमकद पुतले बनाकर उन पर कर रहे होते. शरीर के विभिन्न अंगों के मिलान के लिए टिश्यू तकनीक भी इस्तेमाल में लाई जाती (इसमें किसी अंग की कोशिकाओं का मिलान शरीर के दूसरे अंग से किया जाता है). यहां अपराध विज्ञानियों को ऐसे शवों की पड़ताल करनी पड़ी जिनको अति शीतल वातावरण में भी नही रखा गया क्योंकि कांचीपुरम के शवगृह में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी. एक विशेषज्ञ का कहना था कि 21 वीं सदी के अपराध की जांच 19 वीं सदी की सुविधाओं से चल रही है.

जांच का काम आगे बढ़ता रहेगा लेकिन इस त्रासदी की भयावह छाया भारत में सार्वजनिक लोगों के जीवन पर मंडराती रहेगी. यह सांत्वना भी कि आतंकवाद की गिरफ्त में सिर्फ पंजाब, कश्मीर या असम ही हैं, अब नहीं रही. श्रीपेरुंबुदूर का हादसा यही साबित करता है कि देश का कोई भी हिस्सा आतंकवाद से अछूता नहीं है.

—शेखर गुप्ता, कविता शेट्टी और आनंद विश्वनाथन

सुरक्षा में सुराख

असावधानी का खामियाजा

अति विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा की जिम्मेवारी संभालने वाले अधिकारियों की जबान से अक्सर यह सुना जाता है, "हमें प्रत्येक दिन भाग्यशाली रहना पड़ता है. लेकिन हत्यारे का भाग्य एक दिन ही खुल जाए तो वह सफल हो जाता है." यह वाक्य खास तौर से तब तो सच दिखता ही है जब सुरक्षा बनी-बनाई लीक से हटकर केवल उस एक दिन थोड़ी ढील बरत ले.

लगता है श्रीपेरुंबुदूर में कुछ ऐसा ही हुआ (देखें रेखाचित्र). कुछ सावधानियां जरूर बरती गईं, मसलन पुलिस सुपरिटेंडेंट नंजिल कुमारन ने, जो अभी गंभीर रूप से घायल हैं, स्थान की तलाशी ली थी, गुलदस्तों और भारी-भरकम मालाओं की मेटल-डिटेक्टर से जांच की गई थी और राजीव के चारों ओर सुरक्षा घेरा बनाया गया था. लेकिन समूचे दायरे की घेराबंदी, आवागमन पर कड़ी रोक और सभा स्थल का घेराव तथा रोशनी की व्यवस्था जैसी बुनियादी बातों पर ध्यान नहीं दिया गया. सुरक्षा पास लेकर आने वाले लोगों के आने-जाने वाले रास्ते पर भी कोई कड़ाई नहीं थी. नतीजतन, अंजाम समूचे देश के लिए त्रासद रहा.

हालांकि राज्य सरकार सुरक्षा व्यवस्था की चौकसी से संतुष्ट है. तमिलनाडु के राज्यपाल भीष्म नारायण सिंह के शब्दों में, "राजीव के नजदीक के घेरे में जितने पुलिसकर्मी मारे गए हैं उससे यह साफ है कि कोई कोताही नहीं बरती गई." लेकिन इंदिरा गांधी की हत्या की तरह ही इस मामले में भी अगर अति विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा के वास्ते बनी 'ब्लू बुक' (नीली किताब) में दर्ज बुनियादी सावधानियों पर ध्यान दिया गया होता तो हादसा टाला जा सकता था. आवागमन में रोकटोक और राजीव के पास जाने वाले लोगों के शरीर की तलाशी से खतरा टल सकता था. मगर इस मामले में सुरक्षा को इस कदर गैरजरूरी माना गया कि राजीव के रात दस बजे श्रीपेरुंबुदूर पहुंचने के समय तक उनके रात्रि विश्राम की जगह तक तय नहीं थी. एक सुझाव तो यह भी था कि राजीव श्रीपेरुंबुदूर में ही एक पुराने और खस्ताहाल पर्यटक बंगले में रात गुजार लें.

समस्या यह भी थी कि राजीव सुरक्षा संबंधी सावधानियों को बहुत गंभीरता से नहीं ले रहे थे. अक्सर वे सुरक्षाकर्मियों को परे कर भीड़ में घुसने लगे थे और तब उनके चेहरे पर वर्षों के कमांडो के पहरे से मुक्ति का भाव साफ नजर आता था. जाहिर है उनकी

लोगों से खुलकर मिलते राजी

राजीव ने इस बार तमाम चेतावनियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतावनियां

लापरवाही और अनदेखी की कहानी

इस मामले में खुफिया एजेंसियों पर ज्यादा दोषारोपण नहीं किया जा सकता, क्योंकि खुफिया ब्यूरो समय-समय पर सभी राज्यों को लिखित रूप में आगाह करता रहा है. इसके कुछ उदाहरण:

▸ पिछले वर्ष खुफिया ब्यूरो ने सभी राज्यों को 'विशिष्ट लोगों की सुरक्षा' पर जो दस्तावेज भेजा था, उसमें चेतावनी दर्ज थी— "श्रीलंका के तमिल उग्रवादी, खासकर एलटीटीई के लोग, तमिलनाडु में काफी बड़ी तादाद में हैं. एलटीटीई नेतृत्व पूर्व प्रधानमंत्री की श्रीलंका नीति से नाराज है." ईपीआरएलएफ और ईएनडीएलएफ जैसे संगठन भी नाखुश हैं.

▸ दस्तावेज में राज्यों से अपनी खुफिया एजेंसियों को सावधान करने और 'विभिन्न प्रकार के विस्फोटकों का पता लगाने तथा उन्हें नष्ट करने की कला में महारत हासिल करने' का सुझाव दिया गया.

एक जमाना यह भी था जब वे ऐसे घिरे होते थे

3 फरवरी 1990 को खुफिया ब्यूरो द्वारा भेजे गए दूसरे निर्देश में राजीव की सुरक्षा के लिए स्पष्ट उपायों का सुझाव दिया गया, जिसमें सुरक्षा गाड़ी की व्यवस्था और 'तकनीकी उपकरणों तथा खोजी कुत्तों के दस्तों द्वारा' उनकी हर सभा में संभावित विस्फोटकों की कड़ी जांच करना शामिल था. 23 अप्रैल 1991 को गृह मंत्रालय के पुलिस विभाग के संयुक्त सचिव एन.के. सिंह ने राजीव की सुरक्षा व्यवस्था को और कड़ा करने की आवश्यकता दोहराई.

जाहिर है इन चेतावनियों को गंभीरता से नहीं लिया गया. और इस कांड की काफी हद तक जिम्मेदारी खुद राजीव द्वारा सुरक्षा के मसले को नजरअंदाज करना भी है. —कंवर संधू

शरद सक्सेना

मानो बंधन से नई आजादी मिली हो

नजरअंदाज करके सुरक्षा की कीमत पर मुक्ति का आनंद लेना तय कर लिया था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसोई में आपका साथी

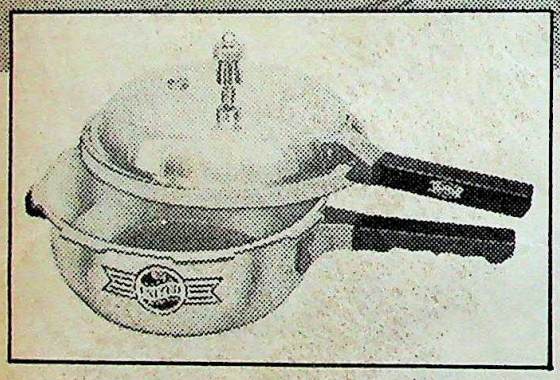

यूनाइटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

अधिकृत विक्रेता

मध्यप्रदेश

☐ **बिलासपुर:** मै० रूप जनरल स्टोरज़, गोल बाज़ार, ● मै० न्यू राम एण्ड श्याम मेटल स्टोरज़, गोल बाज़ार, ● मै० अग्रवाल स्टोरज़, गोल बाज़ार. ☐ **भोपाल:** मै० रामचन्द ग्लास स्टोरज़ पी.ओ. बैरगढ़, ● मै० लक्की सेन्टर, लालूवानी रोड, ☐ **छिंदवाड़ा:** मै० प्रभात जनरल स्टोरज़ बुधवारी बाज़ार, ☐ **छतरपुर:** मै० हज़ारी लाल नारायण दास, चौक बाज़ार, ☐ **दुर्ग:** मै० सुभाश मेटलज़, जवाहर चौक, ● मै० पारस मेटलज़, जवाहर चौक, ● मैं० जैन एलुमिनियम, धीमारपारा, ● मै० मारुति ब्रादर्ज़, इन्दिरा मार्केट, ☐ **ग्वालियर:** मै० पाहू राम पेशु राम, टोपी बाज़ार, ● मै० स्टील पैलेस, जमुना लाल मार्केट, सराफा बाज़ार, ● मै० श्रीकृष्ण प्रभु दयाल अग्रवाल, सराफा बाज़ार, लश्कर, ● मै० कुकर सेल्ज़ कार्पोरेशन, फालका की गोद, लश्कर, ☐ **इंदौर:** मै० बम्बे इलेक्ट्रिक हाऊस, 6/5, खातीपुरा, एम.जी. रोड, ● मै० कुमार डिपार्टमेंटल स्टोरज़, एम.जी. रोड, (कृष्णपुरा), ● मै० रामचन्द गोविंद राम, 2, कसेरा बाजार, ● मै० छोइत राम एण्ड सन्ज़, 23, श्री महावीर मार्ग, ● मै० रामचंद एण्ड सन्ज़, कसेरा बाज़ार, ● घनश्याम ब्रादर्ज़, 31, श्री महावीर मार्ग, ☐ **जबलपुर:** मै० सिटीज़न सेन्टर, 24-25 आशीर्वाद मार्केट, गांजीपुरा चौक, ● मै० नेशनल स्टोरज़, जवाहरगंज, ● मै० आशीर्वाद स्टील एम्पोरियम, 18 आशीर्वाद मार्केट, लार्डगंज, ● मै० परफैक्ट ट्रेडर्ज़, कोतवाली बाज़ार, ● मै० नारायण ब्रादर्ज, 631, खटीक मोहल्ला, सराफा बाज़ार, ☐ **कोरबा:** मै० श्री रामगोपाल राधेश्याम अग्रवाल, मेन रोड, ☐ **कटनी:** मै० भारत स्टीलज़, शालीमार मार्केट, ● मै० राधास्वामी बर्तन भण्डार, माधव नगर, ● मै० गुरु नानक क्रोकरी स्टोर, गोल बाज़ार,☐ **रायपुर:** मै० बम्बे टॉयज़ सेन्टर, बनजारी रोड, ● मै० मनमोहन चंद जैन, सदर बाज़ार, ● मै० सुराना ब्रादर्ज़, पो.बॉक्स नं. 27/59, मालविया रोड, ● मै० अभिनव ट्रेडर्ज़, 19, अशोक मार्केट, नया पाड़ा, ● मै० जे.एम. डग्गा मेटल मार्ट, बुढ़ापुरा, ● मै० इंडियन गिफ्ट हाऊस, 4/5, शदानी मार्केट, बनजारी रोड, ● मै० सुरेश ब्रादर्ज़, पो. बॉक्स नं. 53, मालविया रोड., ☐ **रीवा:** मै० विजय क्रॉकरी स्टोरज़, वेंकट रोड, ● मै० राज इलैक्ट्रीकल, 8, वेंकट मार्केट, ☐ **रतलाम:** मै० नंदन एजेंसीज़, 10/A, डालू मोदी बाज़ार, ● मै० हकीमुद्दीन एण्ड सन्ज़, मानक चौक, ☐ **सतना:** मै० गिफ्टो स्टील सेन्टर, पन्नीलाल चौक, ● मै० बुद्धू लाल गोविन्द प्रसाद, चांदनी टाकीज़ के पीछे, ☐ **सागर:** मै० जैना स्टील, कटरा बाज़ार, ● मै० शोभा राम सुरेश चंद, चक्र घाट, ☐ **उज्जैन:** मै० अली मोहम्मद, गुलाम हुसैन, गोपाल मंदिर मार्ग, चौक बाज़ार, ● मै० महालक्ष्मी पात्र भण्डार, 125, पाटनी बाज़ार

बिहार

☐ **पटना:** मै० अजन्ता कमर्शियल कं० एक्ज़ेबिशन रोड.

हिमाचल प्रदेश

☐ **कुल्लू:** मै० कक्कर एण्ड लाम्बा जनरल स्टोर्स, अखेरा बाजार, ☐ **मंडी:** मै० हिमाचल जनरल स्टोर्स, गांधी चौक, ☐ **मनाली:** मै० थामस स्टोर्स, दी माल, ● मै० हिम जनरल स्टोर्स, दी माल, ☐ **पारवानु:** मै० हिमाचल होलसेल सिंडिकेट, S.C.F-27, सेक्टर-1, ☐ **रामपुर बुशहर:** मै० राम किशन जीवा राम, मैन बाजार, ● मै० श्याम सिंह एण्ड ब्रदर्स, मेन बाजार, ● मै० राजेश ब्रदर्स, मेन बाजार, ☐ **शिमला:** मै० संत लाल इंदर सेन अग्रवाल, 31 लोवर बाजार, ● मै० जानेश्वर लाल राजेश्वर लाल, लोवर बाजार, ● मै० बंगाल क्रोकरी हाउस, एग मार्किट, ☐ **तापड़ी:** मै० ज्ञान चन्द यश पाल, वी एवं पी ओ :

पश्चिमी बंगाल

☐ **बर्द्धवान:** मै० वैस्ट बंगाल स्टोर, 185 बी०बी० घोष रोड, तेनतुलनला, ☐ **सिलीगुड़ी:** मै० सरिया टी कं०, चौधरी कटरा, महाबीरस्थान।

मनिपुर

☐ **इम्फाल:** मै० देवदूत इन्टरप्राईजिज़, थंगल बाज़ार, पो.ओ.

असम

☐ **गुव्हाटी:** मै० प्रिया नाथ कार, देवन पेटी रोड, फैंसी बाज़ार.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृति से अपनी मां की नृशंस हत्या की तस्वीरें धुंधला गई थीं और वे संभवतः मानने लगे थे कि सुरक्षा के कारण ही वे लोगों से दूर होते-होते अंततः सत्ता से बाहर हो गए थे.

तमाम एहतियात को ताक पर रखकर राजीव ने इस बात को मुद्दा बना रखा था कि उनके और सड़क पर कतार बांधे खड़ी भीड़ के दरम्यान पुलिस न आए. हवाई जहाज से उतरते ही वे खुली जीप में सवार हो जाते और उनके इर्दगिर्द केवल दो सुरक्षाकर्मी खड़े रहते. भीड़ जीप को घेर लेती और पुलिस भीड़ पर लाठी बरसाने लगती. तब राजीव ऊंची आवाज में नाराजगी से कहते, "मत रोको लोगों को. आने दो."

राजीव लोगों से अपनी दूरी और संवादहीनता की अपनी 'गलती' के प्रति इस हद तक सचेत हो चुके थे कि जब वे भाषण नहीं दे रहे होते थे या फिर ऑटोग्राफ देने या हाथ हिला-हिलाकर माला फेंकने में व्यस्त नहीं होते थे तो पुलिसवालों को ही धकेलते नजर आते थे. अक्सर वे तब तक आगे बढ़ने से इनकार कर देते, जब तक पुलिसवाले पीछे न हट जाते.

कई दफा तो राजीव अपनी जीप में बिना किसी सुरक्षाकर्मी के अकेले खड़े होते क्योंकि निजी सुरक्षाकर्मी स्थानीय पुलिसवालों को खदेड़ने में व्यस्त रहा करते थे. और साथ रहने पर भी उनके दोनों हाथ व्यस्त रहते क्योंकि उन्हें राजीव को भीड़ से बचाना भी होता था. राजीव अक्सर उनमें से एक को भेजकर गाड़ी से माला मंगवाते क्योंकि भीड़ में महिलाओं और बच्चों पर माला फेंकना उन्हें बेहद पसंद था.

सुरक्षा से चिढ़ ही जैसे 1991 के उनके चुनाव प्रचार का एक अहम हिस्सा थी. समाचार जगत इस बात से वाकिफ था और उसने इसकी चर्चा भी की. यह बात भी मशहूर हो चली थी कि राजीव पर खतरा मंडरा रहा है. सबसे गड़बड़ बात तो यह थी कि उनके दौरे के कार्यक्रम किसी से छिपे हुए नहीं थे. नई दिल्ली इंका कार्यालय या फिर राज्य के किसी कार्यालय में फोन कर उनका पूरा कार्यक्रम मालूम किया जा सकता था.

सुरक्षा व्यवस्था में लगी एजेंसियां भी चिंतित थीं और खुफिया ब्यूरो की नियमित बैठकों में यह मसला बार-बार उठाया जाता रहा. इस सबके मद्देनजर गृह राज्यमंत्री सुबोधकांत सहाय (देखें इंटरव्यू) और प्रधानमंत्री चंद्रशेखर दोनों ने ही चिट्ठियां लिखकर सुरक्षा के बारे में उन्हें आगाह किया था. इनमें से आखिरी पत्र 18 मई को बाहरी दिल्ली चुनाव क्षेत्र से इंका प्रत्याशी सज्जन कुमार पर हुए हमले के बाद लिखा गया था. खुफिया ब्यूरो के निदेशक ने खुद उन्हें सचेत किया था पर उन्होंने एक नहीं सुनी.

राजधानी में ही सेना के एक जनरल की बेटी के विवाह के मौके पर राजीव ने केंद्रीय गृह सचिव का यह कहकर मजाक उड़ाया कि वे मंत्रियों को 'कह-

कहां-कहां हुई चूक

रेखांकन: बी.के. शर्मा

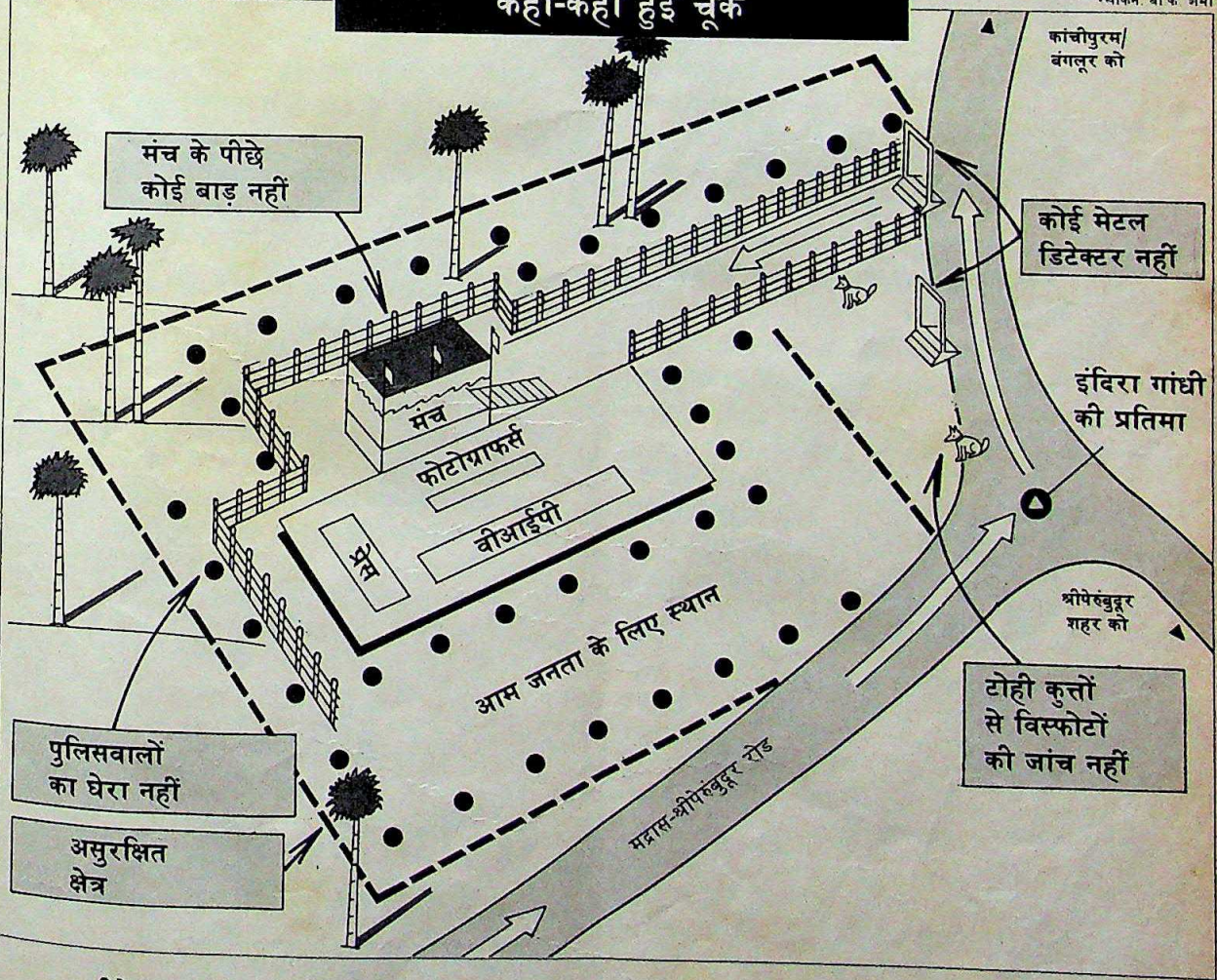

श्रीपेरुंबुदूर में सुरक्षा के वे मामूली इंतजाम भी नहीं थे जिनका जिक्र गृह मंत्रालय की उस 'ब्लू बुक' में है जो विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा उपायों के नियम गिनाती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैपिटलगेन की क़ीमत बढ़ जाए? निवेश ऐसा जो बेघरों को घर दिलाए.

NHB (एनएचबी) कैपिटल बॉण्ड्स

- **कैपिटल गेन सौ प्रतिशत कर मुक्त**
- **9% ब्याज का सालाना अग्रिम भुगतान. ***
- **बेघरों को घर दिलाने में सहायक इस बात का संतोष.**

प्रमुख आवास वित्तिय संस्थान होने के नाते हमारा फ़र्ज़ है अधिक से अधिक लोगों को मकान उपलब्ध कराना. एक ऐसा मकान जिसे वे अपना कह सकें. इस काम के लिए हमें अधिक-से-अधिक धन इकट्ठा करना है.

इसलिए आप अपनी दीर्घकालीन संपत्ति– ज़मीन, मकान, शेयर, सेक्योरिटिज़, आभूषण आदि– की बिक्री से प्राप्त पूंजी को एनएचबी 9% कैपिटल ब्रॉण्ड्स में लगाइए और पाइए, करमूक्ति के साथ-साथ कई और आकर्षक लाभ– एक ऐसा अवसर जो देश की आवास समस्या को सुलझाने में भी मदद करे.

- लगायी गयी पूंजी पर आपको सालाना 9% ब्याज मिलता है, जिसे आप अर्धवार्षिक आधार पर प्राप्त कर सकते हैं.
- *या, अगर आप चाहें तो बॉण्ड्स खरीदने की तारीख़ से तीन महीने बाद, 9% सालाना की दर से पूरे तीन साल का अग्रिम ब्याज, कमीशन काटकर प्रति 1000 रु. की पंजी पर 240 रु. के हिसाब से प्राप्त कर सकते हैं. इसमें बीच के 3 महीने का भी ब्याज शामिल है– इस प्रकार आपको एक दिन के भी ब्याज का नुकसान नहीं होता.

NATIONAL HOUSING BANK
YOU GAIN THE NATION GAINS
9% CAPITAL BONDS

- आयकर अधिनियम 54E 1961 के तहत कैपिटल गेन कर मुक्त.
- ब्याज उपार्जन के स्रोतों पर कोई कर कटौती नहीं.
- धारा (1) (xvie) के तहत 5 लाख रु. तक की छूट, जिसमें संपत्ति कर 5(1A) के तहत अन्य 6 इलिजिबल एसेट्स भी शामिल हैं.
- आयकर अधिनियम 80L के तहत ब्याज कर मुक्त.
- पैसा भेजने का खर्चा एनएचबी उठाएगा.
- 150 से भी अधिक केंद्रों पर सालोंभर सममूल्य पर उपलब्ध.

नीचे लिखे पते पर आवेदन पत्र उपलब्ध हैं और यहीं पर स्वीकार भी किए जाते हैं.

राष्ट्रीय आवास बैंक (बंबई तथा दिल्ली)

- कैनफ़िना कार्यालय
- इश्यू संबंधी इन 9 बैंकों की 142 शाखाएं 51 केन्द्रों पर–इलाहाबाद बैंक, आंध्र बैंक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, कनारा बैंक, सिटी बैंक (साखर भवन बंबई), फ़ेयरग्रोथ फ़ाइनांशियल सर्विसेज़, इंडियन बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक ऑफ़ मैसूर, दि वैश्य बैंक लिमिटेड.

राष्ट्रीय आवास बैंक

(भारतीय रिज़र्व बैंक के पूर्ण स्वामीत्व में)

निजी आवास का सुनहरा विश्वास

तीसरा माला, बंबई लाइफ़ बिल्डिंग, अकबर अलीज़ के ऊपर, 45 वीर नरिमन रोड, बंबई 400 023 फ़ोनः 222702, 224347.
छठा माला, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, 18-20, कस्तुर्बा गांधी मार्ग, नई दिल्ली 110 001. फ़ोनः 3712016, 3712036.

FORTUNE 42 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहकर' उस तरह के पत्र लिखवा रहे हैं. गृह मंत्रालय के सूत्रों का तो यह भी कहना है कि राजीव और इंका के दबाव के कारण उत्तर प्रदेश सरकार ने कुछ पुलिस अफसरों के तबादले केवल इसी बात पर कर दिए थे कि उन्होंने अत्यधिक सुरक्षा का इंतजाम कर राजीव की नाराजगी मोल ली थी. धीरे-धीरे सुरक्षाकर्मी भी यह बात मानने लगे थे कि वे राजीव की इस नई प्रवृत्ति को रोकने के लिए कुछ खास नहीं कर सकते. एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, "सुरक्षा का संबंध ऊपर से नीचे तक होता है. अगर कोई व्यक्ति खुद ढिलाई बरतने पर आमादा हो जाए तो सुरक्षाकर्मियों पर भी असर पड़ता ही है."

इस त्रासदी के कारणों की व्यापक खोजबीन तो होगी ही और सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जे.एस. वर्मा की अध्यक्षता में गठित जांच आयोग सुरक्षा में कोताही के सवाल पर भी गौर करेगा. लेकिन इस घटना के बाद यह महत्वपूर्ण सवाल उभरता है कि देश के किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति की सुरक्षा के सवाल पर क्या खुद वही व्यक्ति अंतिम निर्णय लेगा जैसा कि राजीव अपने आखिरी दिनों में बेलौस करते रहे. वरिष्ठ अधिकारियों और केंद्रीय मंत्रिमंडल के सदस्यों ने इस पर बहस करने के बाद यही निर्णय किया है कि भविष्य में इसकी अनुमति नहीं दी जाएगी.

इस हत्याकांड के बाद अति विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा के

सुबोधकांत सहाय

'यह राजनीति का दुर्भाग्यपूर्ण पहलू है'

केंद्रीय गृह राज्यमंत्री, 40 वर्षीय सुबोधकांत सहाय को रात 10.50 बजे खुफिया ब्यूरो के सूत्रों से जब राजीव गांधी की हत्या का समाचार मिला तो वे अपनी चुनावी नैया पार लगाने की उधेड़बुन में व्यस्त थे. उसके बाद से वे और उनका मंत्रालय हत्या की जांच, 1984 जैसे दंगों की पुनरावृत्ति को रोकने तथा चुनावी प्रक्रिया को चलाए रखने में दिन-रात लगे हैं. सहाय ने हत्या और कानून व व्यवस्था के बारे में फीचर संपादक ***शेखर गुप्ता*** *से बातचीत की. कुछ अंश:*

शरद सक्सेना

● ***हत्या की खबर मिलने के बाद आपको परेशानी हुई?***

मुझे आघात लगा. लेकिन हम समझते थे ऐसी स्थिति में क्या किया जाना चाहिए. प्रधानमंत्री को भुवनेश्वर में सूचना दी गई जबकि कैबिनेट सचिव और खुफिया ब्यूरो के निदेशक राष्ट्रपति को हालात की जानकारी देने के लिए तत्काल राष्ट्रपति भवन पहुंचे. रात 11.16 बजे तक जब हत्या का समाचार दूरदर्शन पर प्रसारित हुआ, सभी राज्य सरकारों को हिंसा के प्रति चौकस रहने के संदेश भेजे जा चुके थे.

● ***क्या आपको सिख उग्रवादियों पर भी संदेह हुआ?***

हर बात संभव थी, पर हम तैयार थे. 1 नवंबर 1984 को चंद्रशेखर और मैं दिल्ली के दंगाग्रस्त भोगल में शांति मार्च निकालने वालों में थे और लोग हमें मार देना चाहते थे. हम उस की पुनरावृत्ति नहीं होने देना चाहते थे. सो, प्रधानमंत्री ने अधिकारियों को दृढ़ संकेत भेजे कि लापरवाही सहन नहीं की जाएगी. इस बार सही संकेत भेजे गए इसलिए सरकार की दृढ़ता की झलक प्रशासन के काम में दिखाई दी.

● ***क्या आप राजीव को मिली धमकियों से अवगत थे?***

दरअसल, 18 मई को दिल्ली में सज्जन कुमार पर हुए हमले के बाद हमने एक उच्चस्तरीय बैठक में राजीव को दी गई सुरक्षा की पूरी तरह समीक्षा की थी. राजीव खुद सुरक्षा के प्रति एहतियात नहीं बरतते थे. मैंने भी कई बार उन्हें इसके प्रति सचेत रहने के लिए लिखा. खुफिया ब्यूरो के निदेशक ने भी उन्हें आगाह किया.

● ***क्या सुरक्षा व्यवस्था नाकाम हो गई थी?***

हम इसकी गहराई में जाना चाहते हैं. इसीलिए हमने जांच आयोग नियुक्त किया है. अगर हम आत्मघाती दस्ते वाली बात मानकर चलें तो लगता है उस महिला को सुरक्षाकर्मियों ने आगे जाने की अनुमति नहीं दी थी. उसके पास सुरक्षा बैज नहीं था. लेकिन वह महिला होने का लाभ उठाते हुए आगे चली गई.

● ***क्या आप एलटीटीई को इसका जिम्मेदार मानते हैं?***

यह काम सीधे उनका हो या नहीं पर यह तमिलनाडु में एलटीटीई की हिंसक कार्रवाइयों का नतीजा ही है. वे गुटीय लड़ाइयों के लिए हथियार अक्सर लाते रहे हैं. हमने उनसे दर्जनों वायरलेस सेट बरामद किए हैं.

● ***क्या एलटीटीई ने राज्य को बंधक बना रखा था?***

उस समय तो वे राज्य सरकार का कामकाज ही चला रहे थे. अगर ऐसा कुछ नहीं था तो हमने उनकी इतनी सामग्री कैसे जब्त कर ली?

● ***क्या राज्य में पिछली सरकारें भी एलटीटीई को संरक्षण नहीं देती आई हैं?***

यह भारतीय राजनीति का दुर्भाग्यपूर्ण पहलू है. कमजोर राजनैतिक नेता हिंसक आंदोलनों को संरक्षण देते हैं. तमिलनाडु में एलटीटीई वालों की पूजा की जाती थी. कुछ नेताओं ने उनकी पूरी मदद की. हमें क्या मिला? अनेक अफसर और जवान मारे गए, सदाशयता का नाश हुआ और अब एक नेता खो बैठे.

● ***क्या द्रमुक एलटीटीई की साझेदार थी?***

देखिए, दो मौके ऐसे आए जब बतौर गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद खुद हालात का जायजा लेने तमिलनाडु के दौरे पर जाना चाहते थे. हर बार करुणानिधि ने इस्तीफे की धमकी देकर उन्हें रोक दिया. एक बार तो विमान पर चढ़ते समय वी.पी. सिंह ने उन्हें रोक लिया.

● ***कानून व व्यवस्था की कुल मिलाकर स्थिति के बारे में आप क्या कहेंगे?***

यह नियंत्रण में है. असम में हत्याएं नहीं हो रहीं. पंजाब में बहुत-से गुट राजनीति की मुख्यधारा में शामिल हुए हैं जबकि कई दूसरे चुनावों का विरोध करने की ठाने हुए हैं. पर कई बार मुझे हैरत होती है कि पिछले साल मैं कितनी मौतें देख चुका हूं. क्या मुर्दे गिनते-गिनते ही जवानी निकल जाएगी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

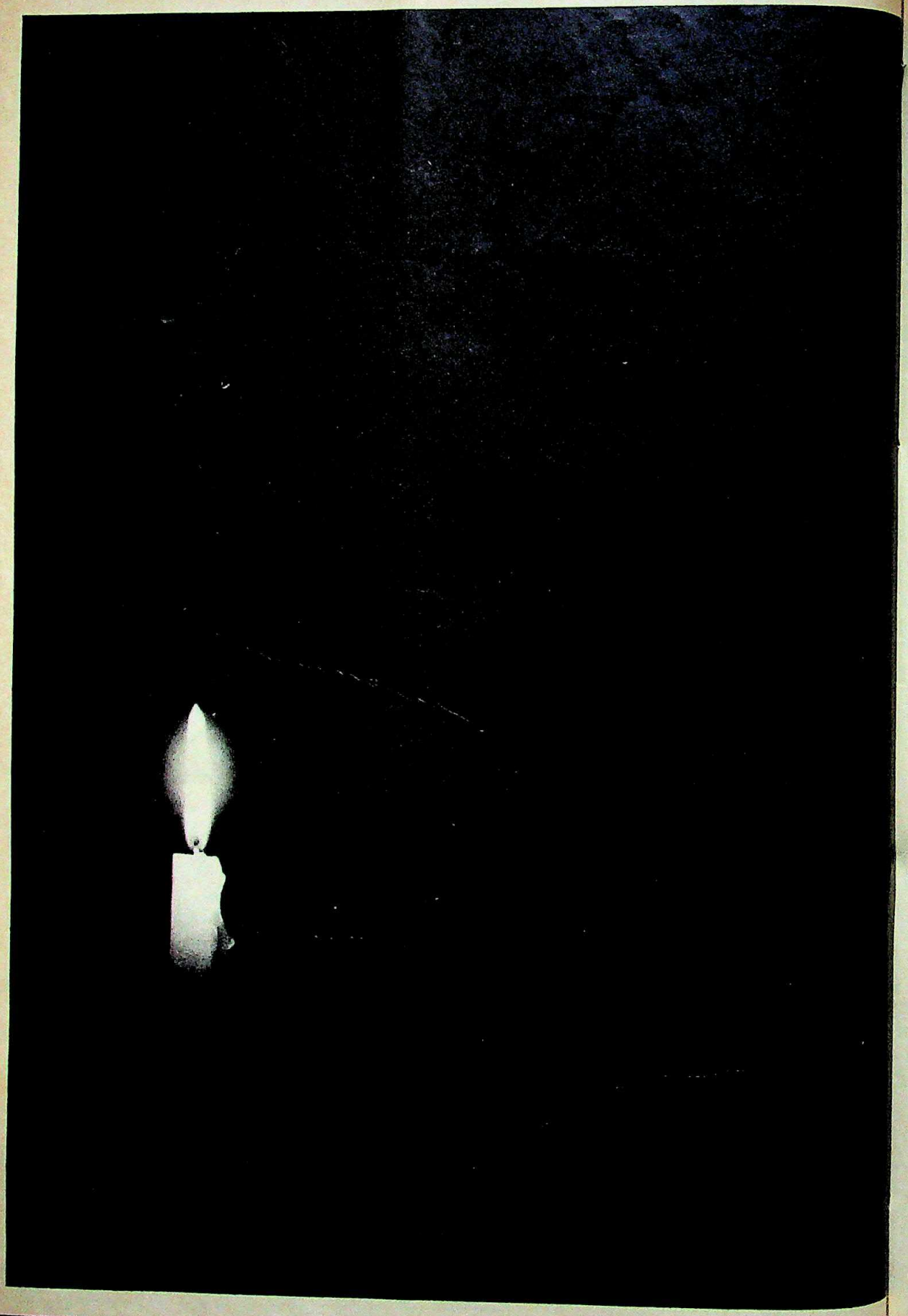

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पूरी तरह व्यवस्थित डिपार्टमेन्टल स्टोर, एक शाम बिजली गुल होने पर.

गुल हुई बिजली सिर्फ़ अंधेरा ही नहीं लाती. अपने साथ लाती है कई तरह के नुक़सान. इसके गुल होने से छोटी मोटी चीज़ों के ग़ायब होने और चोरी होने का डर भी बढ़ जाता है.

ऐसी हालत में कारोबार चौपट हो सकता है. ज़िसका असर घर पर भी पड़ सकता है.

इसलिए गुल होती बिजली से होशियार रहिए. सुरक्षा के लिए श्रीराम हौंडा के बुलडॉग की पहरेदारी रखिए.

ये एक जेनसेट से ज़्यादा आपके कारोबार का साथी है. ईंधन कम इस्तेमाल करता है, पोर्टेबल है और आवाज़ करता है नहीं के बराबर.

और इसे चलाना बस एक डोर को झटकने जैसा आसान है.
बुलडॉग की पहरेदारी श्रीराम हौंडा की देन. इसके होने से ऐसी तस्वीरें भी प्रकाश में आती हैं.

SHRIRAM HONDA
PORTABLE GENSETS
गुलबंग सुरक्षा

श्रीराम हौंडा पावर इक्विपमेंट लिमिटेड, कीर्ति महल, पांचवी मंज़िल, १९, राजेंद्र प्लेस, नई दिल्ली-११०००८. फ़ोन : ५७३९१०३/०४/०५

LINTAS (DELHI) RC HON 8 2886 PA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मसले पर हुई सभी उच्चस्तरीय बैठकों में यह बात बार-बार दोहराई गई है कि आसानी से तैयार होने वाले विस्फोटकों और आत्मघाती दस्तों के युग में कोई भी व्यवस्था पूरी तरह सुरक्षित नहीं कही जा सकती और कड़ी जवाबी कार्रवाई जैसी बातें ही इस दिशा में कारगर कदम हो सकती हैं. केंद्रीय मंत्रिमंडल का रुख वाणिज्य और कानूनमंत्री सुब्रह्मण्यम स्वामी की इस बात से ही स्पष्ट हो जाता है कि, "हमें फौरन जवाबी कार्रवाई करनी ही चाहिए. चाहे दुनिया के किसी भी कोने में क्यों न जाना पड़े. एक बार अगर पता चल जाए कि दोषी कौन है तो हमारा जवाब ऐसा होना चाहिए कि कोई भी हत्यारा किसी नेता पर निशाना साधने से पहले कम-से-कम 20,000 बार सोचे." विसंगति यही है कि आज के माहौल की दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति में खौफजदा लोकतंत्र को आतंक का सहारा लेने पर सोचना पड़ रहा है.

—**शेखर गुप्ता**, साथ में **हरिंदर बवेजा** और **आनंद विश्वनाथन**

तमिलनाडु

चीतों की चपेट में

राजीव हत्याकांड के सिलसिले में जब तमिल चीतों (एलटीटीई) का नाम पहली बार आया तो मद्रास में यह कहने वालों की कोई कमी नहीं थी, "देखा, मैंने क्या कहा था." पुलिस और नौकरशाही के आला अफसर खुलेआम कह रहे थे कि तमिल चीतों की मनमानियां जिस तरह बढ़ रही थीं उसे कोई बड़ी वारदात तो होनी ही थी. इसमें असहायता का भाव भी था, सिर्फ इसलिए नहीं कि यह संगठन तमिलनाडु को आधार बनाकर श्रीलंका के खिलाफ लड़ाई लड़ रहा था बल्कि इसलिए भी कि यह राज्य कई वर्षों से उन तमिल चीतों की मदद कर रहा था जो भस्मासुर बन चुके हैं. आला अफसर मानते हैं कि ऐसी स्थिति में उनके खिलाफ कोई मुकदमा दर्ज कर पाना काफी मुश्किल था.

और हर कोई जानता है कि तमिल राजनीति के धुरंधरों—एम.करुणानिधि और एमजीआर—ने नियम- कायदों को ताक पर रखकर तमिल चीतों की मदद की. इसकी एक वजह तो बिरादराना है और दूसरी वजह यह है कि तमिल चीतों का मकसद बड़ा लोक-लुभावन है और तमिलनाडु में राजनैतिक ताकत चाहने वाली कोई भी पार्टी उन्हें नजरअंदाज नहीं कर सकती. राज्य की राजनीति और नौकरशाही की लगाम काफी हद तक तमिल चीतों के हाथों में आ गई थी. और राष्ट्रपति शासन लागू होने के बाद भी कई अधिकारियों ने स्वीकार किया कि वे उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करेंगे. एक वरिष्ठ अधिकारी के शब्दों में, "क्या फायदा है? जल्द ही निर्वाचित सरकार बन जाएगी और ज्यादा संभावना है कि यह तमिल चीतों की समर्थक होगी. और तब आपको अपना काम करने की सजा भुगतनी पड़ेगी."

श्रीलंका में 1981-82 में तमिल उग्रवादियों का आंदोलन

श्याम टेकवानी

गले में सायनाइड के कैप्सूल लटकाए एलटीटीई उग्रवादी

द्रमुक और अन्ना द्रमुक दोनों ने राजनैतिक मकसद के लिए इन लोगों का इस्तेमाल किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्यवाद...

आप का विश्वास

और टी.टी. का साथ

उत्तम चुनाव का प्रतीक

आपके आराम को बेहतर समझे

T.T.

अन्डरगारमैन्ट्स

अन्डरवियर • बनियान • ब्रा • पैन्टी • जुराबें • टी. शर्ट

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच निकलने देने की मिसालें

जब से श्रीलंकाई तमिल संगठन तमिलनाडु में सक्रिय हुए हैं तब से राज्य में हिंसा की कई वारदातें हो चुकी हैं. ऐसे ज्यादातर मामलों की जांच का काम आगे नहीं बढ़ पाया और जहां बढ़ा वहां भी संदिग्ध व्यक्ति को गिरफ्तारी के बाद जमानत पर छोड़ दिया गया.

मद्रास में मारे गए ईपीआरएलएफ नेताओं के ताबूत

उग्रवादियों ने तमाम नियमों की खुल्लमखुल्ला अवहेलना की

मद्रास हवाई अड्डे पर विस्फोट, 2 अगस्त 1984: इस वारदात में 30 लोग मारे गए और 37 घायल हुए. तमिल ईलम आर्मी (टीईए) को इसके लिए जिम्मेदार पाया गया. इसके नेता थंबीपिल्लै महेश्वरन को गैर-जमानती वारंट पर गिरफ्तार किया गया लेकिन बाद में अन्य आरोपियों के साथ जमानत पर छोड़ दिया गया.

रॉकफोर्ट एक्सप्रेस विस्फोट, 15 मार्च 1987: मद्रास से त्रिची जाने वाली यह गाड़ी पुल उड़ाकर गिरा दी गई जिससे 25 लोगों की जानें गईं और 139 घायल हुए. हालांकि इसकी जिम्मेदारी तमिलनाडु विदुतलै पडै ने ली लेकिन माना जाता है कि इसके लिए विशेषज्ञता महेश्वरन ने उपलब्ध करवाई.

बम फैक्टरी का सुराग, 17 जनवरी 1986: मद्रास में बम फैक्टरी चलाने के लिए पीएलओटीई के छह लोग पकड़े गए.

ईपीईआरएलएफ के नेता पद्मनाभ और उनके साथियों की हत्या, 19 जून 1990: पद्मनाभ और उनके 19 साथियों को एलटीटीई के लोगों ने मार डाला. करुणानिधि सरकार से एलटीटीई के नजदीकी रिश्तों की वजह से पूर्व सावधानियां नहीं बरती गई थीं.

बिखरने के बाद ज्यादातर संगठनों ने तमिलनाडु की शरण ले ली थी. शुरू में अगर उग्रवादी गतिविधियां धीमी थीं तो जुलाई 1983 में श्रीलंका में हुए नरसंहार के बाद ये तेज हो गईं. शरणार्थियों के साथ ही छापामार युवक भी आए जिन्होंने राज्य और केंद्र सरकार की मदद से जल्द ही अपना उग्रवादी आधार कायम कर लिया. एमजीआर का समर्थन पाए तमिल चीतों को उनकी मृत्यु के बाद करुणानिधि का भी समर्थन हासिल हो गया.

द्रमुक सरकार ने कई बार तमिल चीतों को संकट से उबारा. 14 अगस्त 1990 को चार अफसरों ने एलटीटीई के कथित पांच उग्रवादियों के जमानत पत्र पर दस्तखत किए. ये उग्रवादी तंजावुर तट से श्रीलंका जाते समय गिरफ्तार किए गए थे. उनके खिलाफ फौजदारी मुकदमा (1990 का एम.पी. 2784) दर्ज था. उन्होंने वहां अपनी मारुति कार में धरना देने का नाटक किया और करुणानिधि के अलावा किसी से भी बात करने से इनकार कर दिया. उन्होंने धमकी दी कि अगर ताकत का इस्तेमाल किया गया तो वे सायनाइड खा लेंगे. अधिकारी और रिजर्व पुलिस की एक कंपनी असहाय होकर सब कुछ देखती रही.

जमानत देन वाले दो अफसर—24 वर्षीय इस्माइल कैनि और 35 वर्षीय देसमुथु—राज्य के हथकरघामंत्री एस. थंगावेलु के कार्यालय में काम कर रहे थे. बाकी दो अफसरों में एक 29 वर्षीय अरुल राज राज्य के सूचनामंत्री के.एन. नेहरू के दफ्तर में और दूसरे 27 वर्षीय कलै सेलवन आदि द्रविड़ार कल्याण संस्था के प्रभारी पोन्नरी सुंदरी के साथ काम कर रहे थे. सलवन ने राज्यसभा सदस्य वी. गोपालसामी का पता लिखवाया था.

गोपालसामी ने भी स्वीकार किया, "यह सब गड़बड़ घोटाला था." उन्होंने बताया कि उन्होंने तो अपने एक सहायक से जमानत की व्यवस्था करने को कहा था. लेकिन उस सहायक ने मंत्री की जानकारी के बगैर उनके निजी स्टाफ को ही जमानत लेने को कह दिया. दस्तखत करने वालों को बाद में बरखास्त कर दिया गया.

चंद्रशेखर की सरकार बनने के बाद जब द्रमुक सरकार पर दबाव पड़ा तो उसने 86 तमिल चीतों और 100 अन्य उग्रवादियों को पकड़ा. एडमिरल एल. रामदास के अनुसार नौसेना ने जिन 100 तमिल चीतों को सौंपा था उन्हें सरकार ने छोड़ दिया.

तमिल चीतों को अन्य क्षेत्रों से भी समर्थन मिलता है. त्रिची और तंजावुर के नर्सिंग होम भी तमिल चीतों के अड्डे हैं जहां युद्ध में घायल उनके साथियों का उपचार होता है. तमिलनाडु के तटों पर उनका इलाज करवाकर उन्हें जाफना तक सुरक्षित पहुंचाने का काम गोपालसामी देखते हैं. उनका कहना है कि वे तमिल चीतों की मदद इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वे कठिन दौर से गुजर रहे हैं. वे मानते हैं कि जेनेवा समझौता दुश्मन देश के सैनिकों के उपचार की इजाजत देता है इसलिए "मैं उनकी मदद के लिए अपनी औकात भर और उससे भी ज्यादा मदद कर रहा हूं."

मुख्य सचिव टी.वी. एंथनी ने बताया कि पिछले दो महीनों में 100 उग्रवादियों को गिरफ्तार किया गया और राज्यपाल भीष्म नारायण सिंह के अनुसार इस त्रासदी के बाद "एलटीटीई के खिलाफ कड़ा अभियान चलाया जाएगा." राज्य इंका अध्यक्ष वी. राममूर्ति राज्य से श्रीलंकाइयों को निकाले जाने की मांग करने लगे हैं और जयललिता के स्वरों में भी धमकी का भाव था. पर द्रमुक के करुणानिधि ने कहा, "हत्या के लिए तमिल चीतों पर इंका का आरोप महज पाखंड है जबकि कुछ ही महीने पहले राजीव इसके सदस्यों से मिले थे." लेकिन उनकी हत्या के बाद लोगों में जिस तरह एलटीटीई के खिलाफ गुस्सा बना है उसके चलते फिलहाल तो तमिल चीतों को अपने प्रिय पनाहगाह में विचरने में ही कठिनाई होगी.

—आनंद विश्वनाथन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोदरेज
आपके लिए लाए हैं

आयुर्वेदिक हेअर ऑइल. जानी-मानी और
जांची-परखी जड़ी-बूटियां से बना. जो आपके सर की त्वचा और बालों
को नया जीवन दे. बालों को झड़ने से रोके.

निर्माता - **एस. गोपालकृष्णन नायर**
आर्शिक हर्बल रेमडीज़ (इंडिया), वानचियूर, त्रिवेन्द्रम, पिन ६९५०३५ केरल.

वितरक - **गोदरेज सोप्स लिमिटेड,** बम्बई ४०० ०७९.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारत-भर के प्रमुख शहरों में उपलब्ध.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूके मौकों की दर्दीली दास्तां

पंडित जवाहरलाल नेहरू अक्सर अंग्रेज कवि रॉबर्ट फ्रॉस्ट की वे पंक्तियां दोहराया करते थे कि उन्हें सोने से पहले मीलों का सफर तय करना है. उनके नाती राजीव गांधी ने अपनी आंतरिक इच्छा किसी कविता की पंक्तियों में तो व्यक्त नहीं की मगर अपनी शैली में वे अक्सर कहा करते थे कि उन्हें 'दूसरा मौका' मिलेगा. वे मानते थे कि अवसर दो बार दस्तक देता है. यह उनकी अपनी आस्था ही थी कि वे सत्ता में अपने पुनरागमन के प्रति आशान्वित थे. अपनी मां और अपने भाई संजय की खातिर उन्होंने अंततः राजनैतिक बाना धारण कर लिया था. क्योंकि वे मानते थे कि विरासत और विधाता ने उन्हें नेता बनाना तय कर दिया था.

रेखांकन: प्रणव दत्त

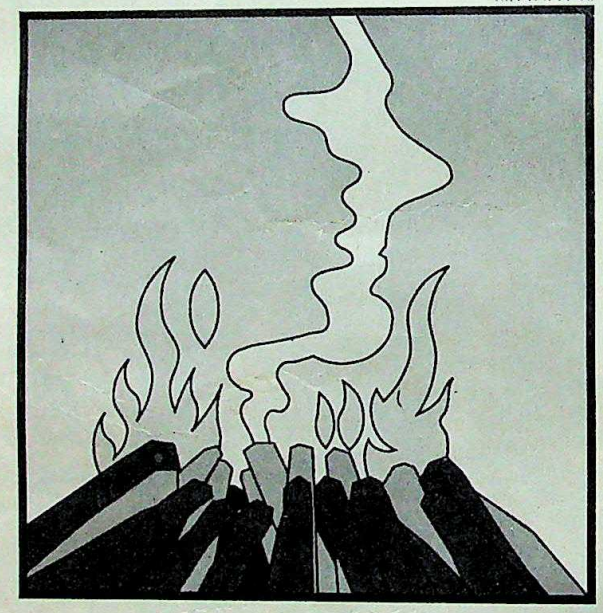

1989 में पार्टी की करारी हार के कुछ ही दिनों बाद उन्होंने बड़े विश्वास से भविष्यवाणी की थी कि हम फिर लौटेंगे. और यह मंत्र वे अपने दोस्तों और नेताओं के बीच अक्सर दोहराया करते थे. वे स्वीकार करते थे कि हां, हमने कई गलतियां कीं. लेकिन वे यह भी मानते थे कि कई अधूरे कामों को पूरा करना है. उनका मानना था कि गैर-कांग्रेसी सरकारों का बनना शायद इसलिए जरूरी है ताकि लोग उन दलों को वोट देने की निरर्थकता समझ जाएं जिनके पास कांग्रेस विरोध के सिवा देने को कुछ भी नहीं. इन सरकारों की तुलना में राजीव का पहला कार्यकाल कहीं ज्यादा चमकदार नजर आता था.

इस हिसाब से—भाग्यवादी आधार पर कहिए या वैज्ञानिक आधार पर—इस चुनाव में राजीव और उनकी पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिलना चाहिए था. 'दूसरे मौके' की शुरुआत अभी होनी थी. लेकिन मतदान के पहले दौर के बाद और राजीव की हत्या के ठीक पहले तक ऐसा नहीं लगता था कि पार्टी को कामचलाऊ बहुमत भी मिल पाएगा.

राजीव का 1985 वाला जादू टूट चुका था. वे परीकथा के उस पात्र जैसे नजर आते थे जिसकी सारी शक्तियां किसी जादू के कारण समाप्त हो गई हों. मतदाता उन्हें दूसरा मौका देने के मूड में नहीं दिख रहे थे. वे इसका मतलब नहीं ही समझते लग रहे थे. उनके अधूरे काम अधूरे ही रह जाने वाले लग रहे थे. स्थायित्व का नारा मतदाताओं में प्रगति और समृद्धि की उम्मीदें नहीं जगा पा रहा था.

इसकी वजहें बहुत अस्पष्ट भी नहीं हैं. सरकार और राष्ट्र पर राजीव की विरासत के आकलन से दिमाग में जो चित्र उभरता है वह एक ऐसी जबरदस्त चिनगारी का है जो ऊर्जा के चमकदार विस्फोट में तब्दील नहीं हो पाई. अंतिम पांच वर्ष तो—वे अब चाहे पुराने दौर की बात लगें—काले बादलों जैसे दिखते हैं.

वे काले बादल क्रूर यथार्थ के रूप में भले ही हावी होते हों लेकिन राजीव से उम्मीदें रखने वाले लोगों को इन बादलों के ऊपर उभरती किरणें भी नजर आती थीं. इन किरणों ने उनके शुरुआती दौर में स्पष्ट और सशक्त संकेत दिए थे. वह यह कि कांग्रेस पार्टी, इसके निहित स्वार्थ, इसका तंत्र, इसके चापलूस और चाटुकार भारत की प्रगति के रास्ते में सबसे बड़े रोड़े हैं. राजीव के लिए रास्ता यही था कि वे इस पतन को रोकने का प्रयास करते.

उन्होंने इसकी कोशिश की और फिर हार मान बैठे. शायद उन्हें यह साफ पता नहीं था कि मौजूदा व्यवस्था की जगह क्या आगे लाना है. संभव है वे उस व्यक्ति की निजी पीड़ा से गुजरे हों जो यह जानता है कि क्या करना चाहिए मगर अपनी सदिच्छाओं पर अमल नहीं कर पाता. चुनाव प्रचार के अपने अंतिम दिनों में भी वे अपनी असफलताओं की खुलकर चर्चा किया करते थे और यह कहा करते थे कि अब उन्होंने व्यवस्था को अच्छी तरह समझ लिया है और अब वे अलग तरह से काम करेंगे. अपने चुनाव अभियान के दौरान उन्होंने इसके लिए प्रयत्न करना भी शुरू कर दिया था. प्रधानमंत्रित्व काल में उन पर लोगों से अलग-थलग जा पड़ने का आरोप लगता था. अब वे लोगों से खुलकर मिल रहे थे. सूरज की उन रुपहली किरणों को हासिल करने के लिए वे दूसरे मौके की उम्मीद कर रहे थे. बियाबान में पड़े रहकर शायद उन्होंने कुछ सीखा हो. लेकिन शायद यह हम अब नहीं जान पाएंगे.

—इंद्रजीत बधवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़िन्दगी को बिठाएं सर आँखों पर!

रेमण्ड
शर्टिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजे के मौके

शू... शाः... हाः
कैंपस की आपाधापी हो या डिस्को की धमाधम या फिर अपनी महबूबा के साथ एकांत के क्षण. ऐसे तमाम मौकों पर असली आनंद के लिए, असली सनसनी के लिए और पूरी शान के लिए इन जूतों में ही सजिये. एक्शन शैली के साथ इन क्षणों का मजा उठाइए.

action®

*स्नूकर *नाइस टाइम *फ्रीलाइन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

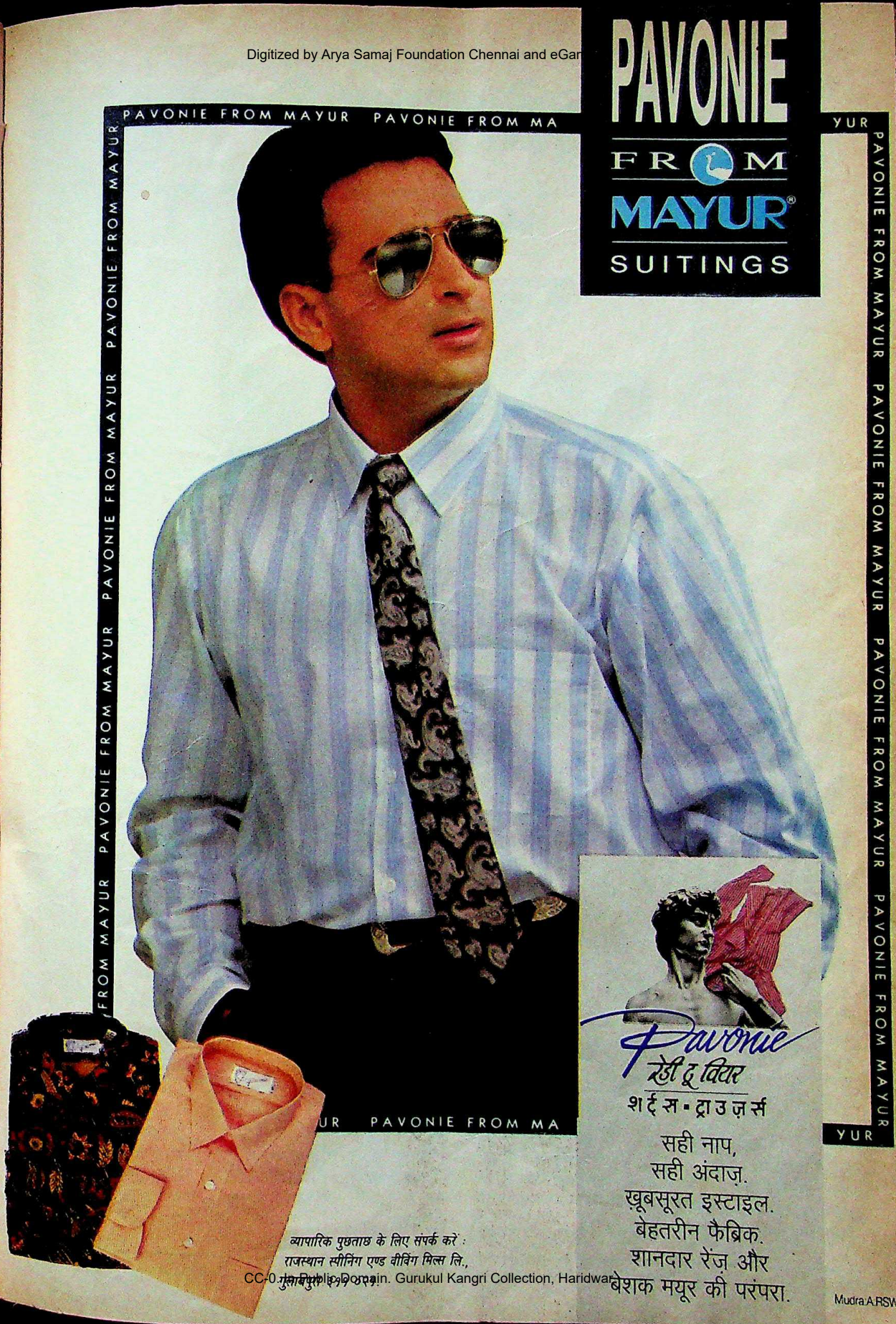

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिच्छा से रास थामने वाला स्वप्नदर्शी

करीब छह साल पहले राजीव गांधी ने कहा था, "मेरा एक सपना है." ये गरमी के दिन थे. और ये राजीव गांधी के दिन थे.

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर-लाल नेहरू के बाद शायद ही किसी नेता ने देश में इतनी चमक और उम्मीद पैदा की थी. इक्कीसवीं संदी का सपना तब कितना सच लग रहा था! यह केवल उनकी उम्र का या उनके व्यक्तित्व के आकर्षण का करिश्मा नहीं था. न ही यह उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि का असर था. कुछ ऐसी खास बात थी जो उनके साथ जुड़ गई थी और जिसने उनके ऊपर जिम्मेदारी का इतना बड़ा बोझ डाल दिया था. एक त्रासदी से एक तेज उत्पन्न हुआ था.

रघु राय

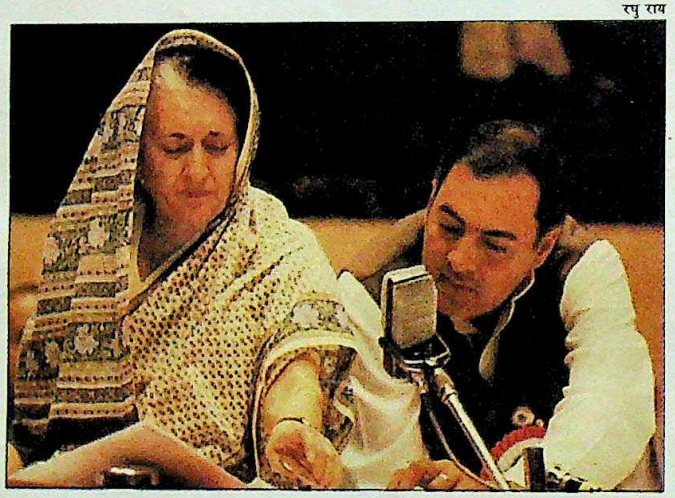

पार्टी में प्रवेश, अपने राजनैतिक गुरु के साथ राजीव

पारिवारिक किस्म के व्यक्ति का सार्वजनिक जीवन में उतरना

यह उन दिनों की बात है जब दुनिया उनकी ओर उम्मीद से देख रही थी और लोग उनका एक ऐसे नेता के रूप में स्वागत कर रहे थे जो उत्साह और उमंग पैदा करने की संभावनाएं दिखा रहा था. और सबसे बढ़कर बदलाव की संभावनाएं. लेकिन सब कुछ इतिहास के पलक झपकते ही एक त्रासदी में बदल गया. यह त्रासदी इसलिए भी और ज्यादा गहरी नजर आती है क्योंकि उन्होंने असीम संभावनाओं की झलक दिखाई थी. कहीं आधी रात में ही वह सपना टूट गया और हम सब थोड़े-थोड़े टूट गए. इतिहास एक क्रूर न्यायकर्ता भी होता है. जब सब कुछ समाप्त हो चुका होगा और उनकी अस्थियां भारत की पवित्र नदियों में प्रवाहित कर दी गई होंगी तब भी शायद वह पूरा न्याय न कर पाए. दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के सबसे युवा नेता के रूप में उनके जीवन और कार्यों का आकलन करते हुए उनकी असफलताएं बार-बार सामने आ सकती हैं. और उन्होंने जो कुछ अच्छा किया उसे विस्मृत किया जा सकता है.

उनके भीतर बहुत कुछ ऐसा था जिसे शुभ, सुंदर और सम्मानजनक कहा जा सकता है. इन्हीं विशेषताओं के कारण वे करोड़ों लोगों के प्रिय हो गए थे. उनके जैसा आकर्षक और करिश्माई व्यक्तित्व कुछ ही नेताओं को मिलता है. उनमें दोनों चीजें थीं और इसके ऊपर वह ताजगी थी जो देश के बदनाम हो चुके नेतृत्व वर्ग के संदर्भ में एक पीढ़ीगत बदलाव का प्रतीक थी. वे नई राजनैतिक संस्कृति के प्रणेता भी माने जा सकते हैं. शायद हमने बहुत कुछ देखा और उनसे बहुत उम्मीदें बांधीं. डूबता हुआ व्यक्ति जैसे किसी तिनके को भी सहारा मान लेता है उसी तरह भारत ने राजीव को भी सहारा मान लिया था. और उन्हें इतनी ऊंचाई पर स्थापित कर दिया था जिसे छूना असंभव होता है.

अब उनकी जघन्य हत्या से एक वंश परंपरा की मृत्यु हो गई है. लेकिन इसके साथ ही भारत को भारी नुकसान भी हुआ है. नुकसान राजीव के नेतृत्व के अंतिम स्वरूप के संदर्भ में नहीं बल्कि उन बातों के संदर्भ में जिनके वे प्रतीक बन गए थे. इस

बागडोर थामने की हिचक

- *मैं राजनीति के बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानता. मैं बस इतना जानता हूं कि मम्मी की किसी तरह मदद करना जरूरी है.*
- *वह (सोनिया) राजनीति में मेरे प्रवेश के सख्त खिलाफ हैं.*
- *लोगों की उम्मीदें डराने वाली हैं.*
- *मेरे लिए सबसे मुश्किल बात यह है कि लोग हमेशा मेरी तुलना मेरा नाना और मेरी मां से करते हैं.*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघु राय

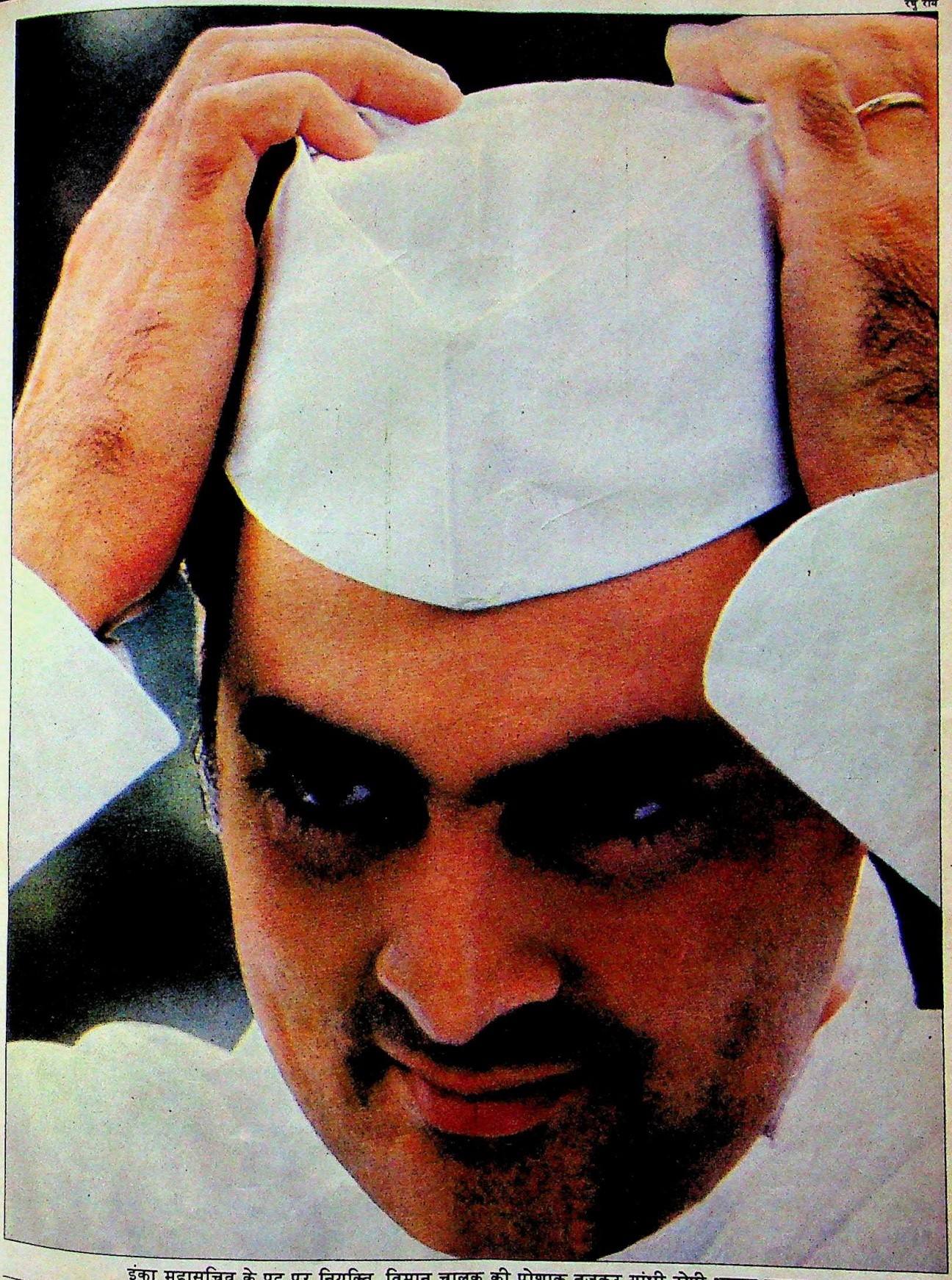

इंका महासचिव के पद पर नियुक्ति, विमान चालक की पोशाक तजकर गांधी टोपी धारण करना

राजनीति का नौसिखुआ धीरे-धीरे पारंपरिक दरबार व्यवस्था का सहर्ष बंधक बन जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: भवान सिंह

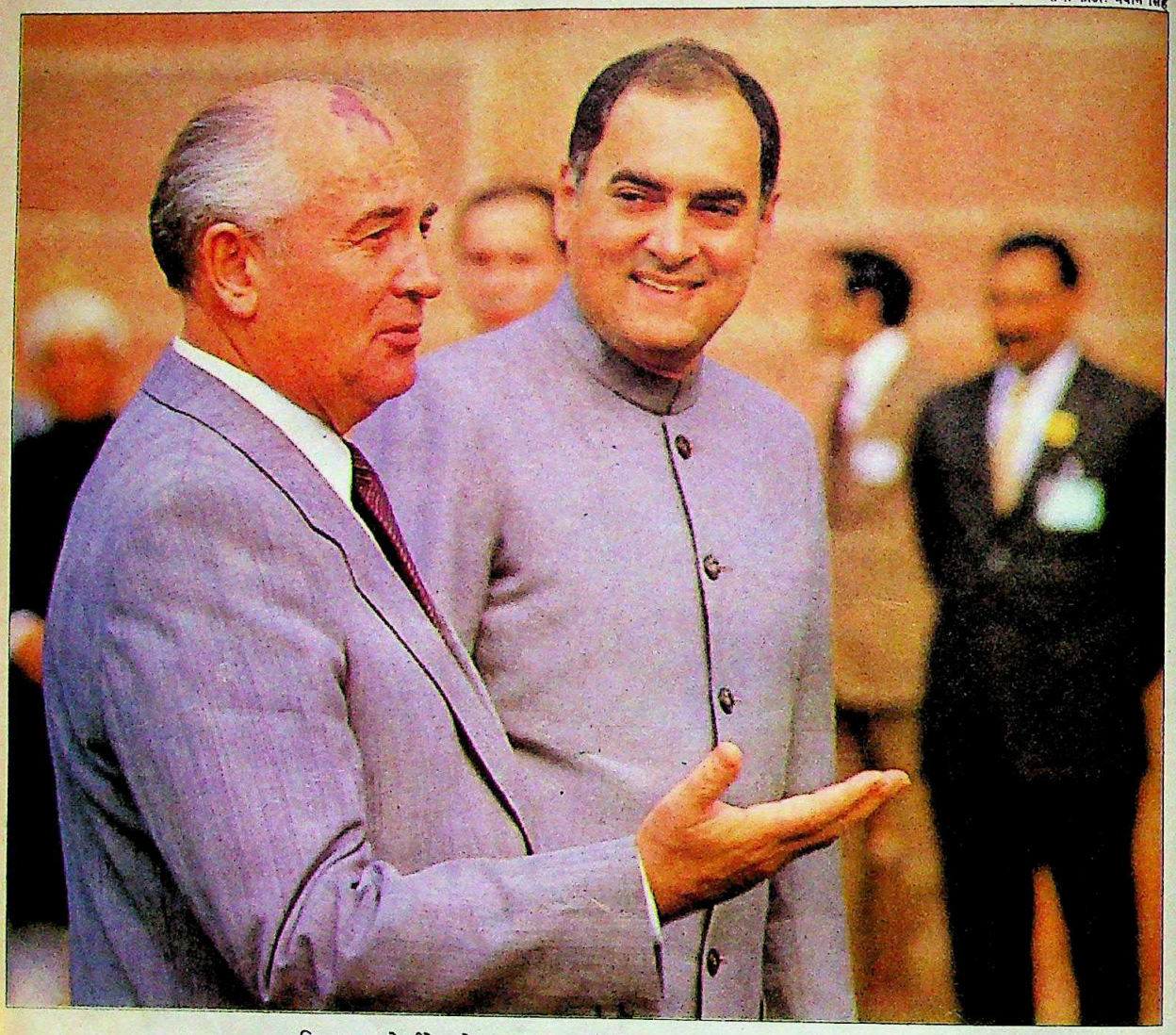

मिखाइल गोर्बाचेव के साथ, अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी पहचान

अंतरराष्ट्रीय संबंध उनकी बड़ी पूंजी थी और वे विदेश के बड़े नेताओं के चहेते थे

उपमहाद्वीप का मानस वंशवाद को मान्यता देता है. राजीव के मामले में भावनात्मक उभार को इसलिए भी बल मिलता है कि उनके परिवार ने आजादी के 44 में से 37 वर्षों तक इस देश पर राज किया. राजीव को लोकप्रियता उनकी इस छवि के कारण भी मिली कि वे राजनीति में कूदने के अनिच्छुक थे. लेकिन एक बेहद पारिवारिक व्यक्ति और खुशनुमा विमान चालक राजीव ने भाई संजय की मृत्यु के बाद पैदा हुए शून्य को खुशी-खुशी भर दिया. तब उन्होंने तर्क दिया था कि "मम्मी की मदद के लिए किसी को आगे आना ही था." बाद में राजीव में जो आमूलचूल परिवर्तन हुआ, उसने उन्हें कई चेहरों वाला व्यक्ति सिद्ध कर दिया जिससे उनका उक्त तर्क खोखला ही नजर आया.

राजीव गांधी का एक चेहरा तो पश्चिम में पले-बढ़े उदार-पंथी व्यक्ति का था जो भारतीय राजनीति में कूदने से झिझकता था. उन्होंने बड़ी ईमानदारी से कहा था, "राजनीति मुझे गंदी लगती है. कुछ पता नहीं चलता इसमें कि कौन क्या और क्यों कह रहा है." लेकिन यही राजीव अपने मित्रों की छत्रछाया में राजनीति में उतरे और उन्हें लगा कि वे परिवर्तन के सूत्रधार बन

राजनेता का रूप

- *मैं एक ऐसे भारत का सपना देखता हूं जो मजबूत, आजाद, आत्मनिर्भर और दुनिया के देशों में आगे हो.*
- *40 वर्षों की आजादी ने जाहिर कर दिया है कि यह देश इतना बड़ा नहीं है कि इस पर शासन न किया जा सके बल्कि यह कि यहां के लोग इतने आजाद हैं कि वे कुशासन को कबूल नहीं करते.*
- *नेता के सामने बड़ी चुनौतियां, बड़ी सफलताएं और बड़ी विफलताएं होती हैं. जब नेतृत्व कारगर होता है तो यह अच्छा लगता है वरना यह और भी चुनौती भरा होता है.*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तान की पूर्व प्रधानमंत्री बेनज़ीर भुट्टो के साथ, विरासत में मिली राजनीति

दक्षिण एशियाई सहयोग को मजबूत करने की उनकी कोशिशों को क्षेत्रीय दादागीरी माना गया

सकते हैं. वे विजेता की तरह दिखने भी लगे थे.

मां की मृत्यु के बाद उन्हें जो अभूतपूर्व जनादेश मिला उसने उनकी यह छवि और पुष्ट कर दी. तकदीर ने भारत को एक युवा, गतिशील और आधुनिक दृष्टि वाला नेता दे दिया था जिसकी उसे तलाश थी. भारत को इक्कीसवीं सदी में पहुंचाने के उनके इरादों को कमजोर करने वाली कोई राजनैतिक बाधा उनके सामने नहीं थी लेकिन उनमें अपने नाना जैसी दूरदृष्टि और समझदारी तथा अपनी मां जैसी राजनैतिक सूझबूझ की कमी थी. लेकिन वे 'मिस्टर क्लीन' थे. उसके अलावा आदर्शवाद, उम्मीदें और साफ-सुथरेपन के विशेषण भी उनसे जुड़े थे.

शुरुआती दौर में वे देश में आधुनिकता के वाहक माने जाने लगे थे. उन्होंने देश में उदारवाद, उपभोक्तावाद, कंप्यूटर संस्कृति, नियम-कानून की जकड़न से मुक्ति, और एक नई राजनैतिक शब्दावली का सूत्रपात किया. दलबदल विरोधी कानून, नई आर्थिक नीति, राजनैतिक सुधार आदि-आदि. इस तरह उन्होंने एक सशक्त शुरुआत की थी. मुंबई में कांग्रेस के शताब्दी समारोह में उन्होंने सत्ता के दलालों के खिलाफ जिस तरह आवाज उठाई, वह राजनैतिक नारेबाजी की जगह सचमुच कुछ करने की इच्छा का परिचायक थी. लेकिन किसने सोचा था, उनके वे ही शब्द एक दिन उनकी राजनैतिक कब्र के शिलालेख बन जाएंगे. यह इस बात का प्रमाण है कि राजीव उन बुराइयों से लड़ने में विफल रहे जिन्होंने उनकी पार्टी और उनकी सरकार को जकड़ लिया था.

पर शुरू के 15 महीनों में सारी कलई उतर गई. एक निष्ठावान राजनेता के रूप में राजीव का स्थापित हो जाना एक कुदरती प्रक्रिया लगती थी. पंजाब, मिजोरम और असम समस्याओं के हल के लिए तुरत-फुरत हुए समझौतों और विदेशी मोर्चे पर मिली चकाचौंध भरी सफलता ने इसकी जमीन तैयार की थी. उन्होंने तुरंत ही गोर्बाचेव से व्यक्तिगत रिश्ता कायम कर लिया. रोनाल्ड रेगन के अमेरिका का दिल जीत लिया. तकरीबन रातोरात उन्होंने विश्व परिदृश्य पर भारत की छवि बदल दी. पर पानी के इन बुलबुलों की उम्र ज्यादा नहीं रही.

उनके पास जनादेश था, मौका था पर बदकिस्मती से सब कुछ जैसे उनके हाथों से फिसल गया. राजीव अब एक दिग्भ्रमित शख्स रह गए थे. महल की दुरभिसंधियों ने अपना रंग दिखाया. विश्वसनीय दोस्तों की अनदेखी होने लगी. मिलजुलकर अच्छा काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

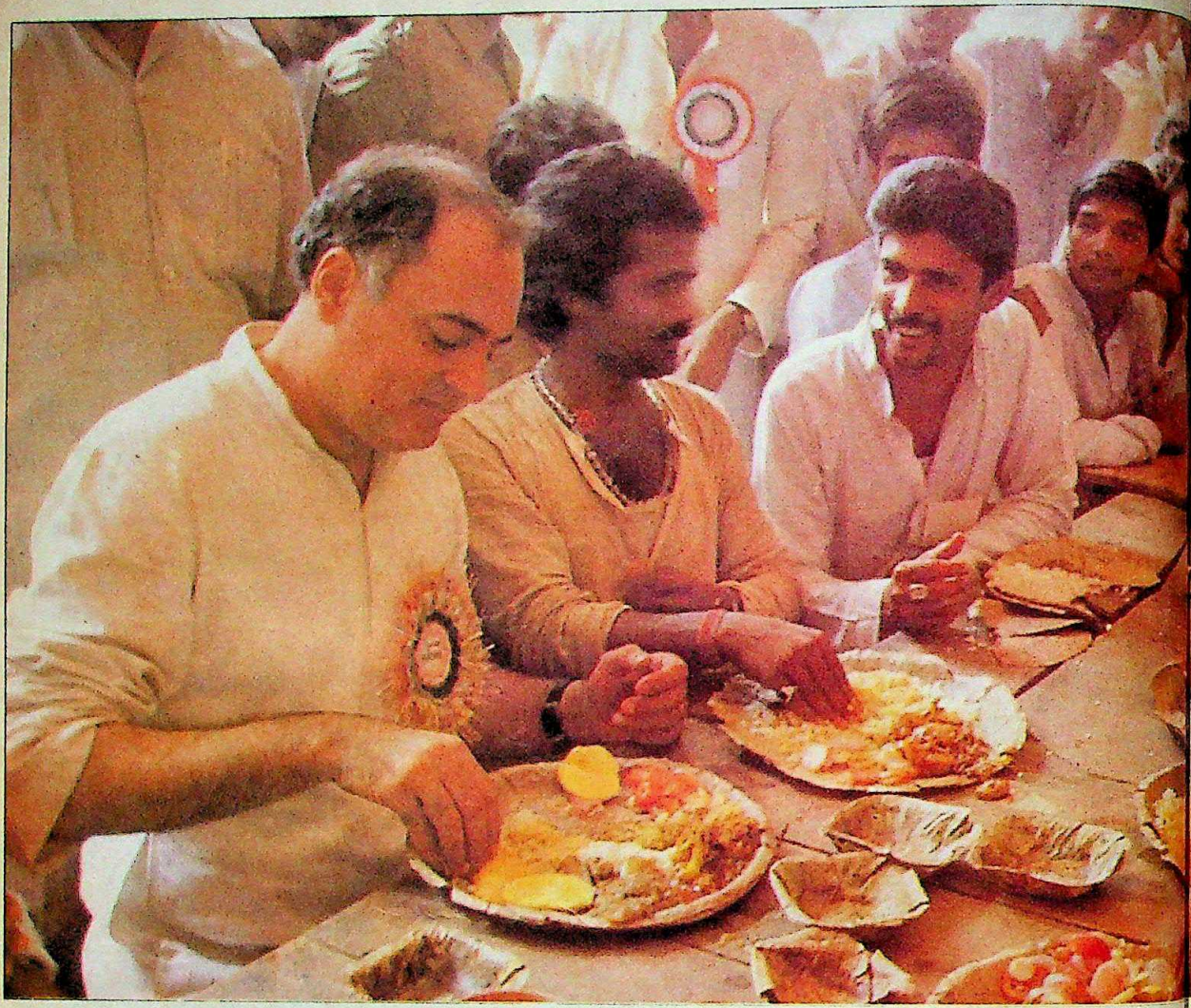

जून 1990 में बिहार के दौरे में इंका कार्यकताओं और स्थानीय नेताओं से घिरे राजीव

जनादेश की अवधि के मध्य में अलग-थलग, असुरक्षित राजीव जननेता की अपनी छवि बना

करने वाले वी.पी. सिंह, अरुण नेहरू, अरुण सिंह, अर्जुन सिंह जैसे लोग दरकिनार कर दिए गए. उनकी जगह चापलूसों और मक्कारों ने ले ली. कथनी और करनी में खाई बढ़ने लगी. शाहबानो का मामला, पंजाब समझौते पर घपलेबाजी, चंडीगढ़ के हस्तांतरण के सवाल पर रद्दी सलाहों ने उनकी इच्छाशक्ति मार दी. पेट्रोल की कीमतें बढ़ा दी गईं और फिर कुछ ही दिन बाद उन्हें कम भी करना पड़ा. लगने लगा कि राजीव गांधी दो जबानों से बोल रहे हैं—एक अपनी, एक किसी और की.

ये नए राजीव थे—लल्लू राजीव, एक ऐसा आदमी जो बदलाव के लिए उतावला तो था मगर अपने ही बिछाए जाल में फंसा हुआ था. अब वे दलाल ही राजीव की पीठ पर सवार अपने वारे-न्यारे कर रहे थे. नौकरशाही का सफेद हाथी बरकरार था. बदलाव की उनकी कोशिशों का उस पर कोई असर नहीं पड़ा था. बाद में उन्होंने स्वीकार भी किया, "मैं बाधाओं, निहित स्वार्थों के खिलाफ खड़ा हुआ. पर मैं उन्हें तोड़ नहीं सका." जनादेश अब भी उनके पास था और मंजिल भी थी. पर अब उनकी चाल बदल गई थी.

अंततः जो बदलाव हुआ उसकी कोई व्याख्या नहीं हो सकती. राजीव दुनिया के उन्हीं नेताओं की तरह थे जिनका साथ उन्हें भाता था. बाहरी दुनिया में वे खबरों में बने रहे, जहां वे अपने हास्यबोध और अंतरराष्ट्रीय मामलों पर अपनी पकड़ का प्रदर्शन कर रहे थे. इसके विपरीत उनकी अपनी प्राचीन पार्टी के सदस्य किसी दूसरे ग्रह के विचित्र जीवों-से लगते थे.

विदेश सचिव को सार्वजनिक तौर पर निकाले जाने की घटना ने उनके गुब्बारे की हवा निकाल दी और साफ-सुथरे राजीव निर्दयी राजीव नजर आने लगे. नए राजीव काफी हद तक अपनी मां के ही अवतार थे—एक अक्खड़ नेता जो लगातार कुचक्रों में जुटता गया और साथ ही भयग्रस्त होता गया. राजीव सरकार के आर्थिक उदारवाद और भ्रष्टाचार विरोध के प्रतीक वी.पी. सिंह पहले दरकिनार किए गए और अंततः निकाल दिए गए. राजीव को उनके सपनों के भारत से दूर करने की कोशिश करने में षड्यंत्रकारी तत्व ताकतवर होते गए.

और अब असुरक्षित राजीव का अवतार हुआ. अब वे षड्यंत्रों और विदेशी हाथ की बात करते थे मगर अपनी गलतियों और खामियों का हल्का एहसास भी उन्हें था. परंतु उनकी मंडली उन्हें समझाती रही कि दोष किसी और का है. वे कहते, "षड्यंत्र रचे जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैबल दास

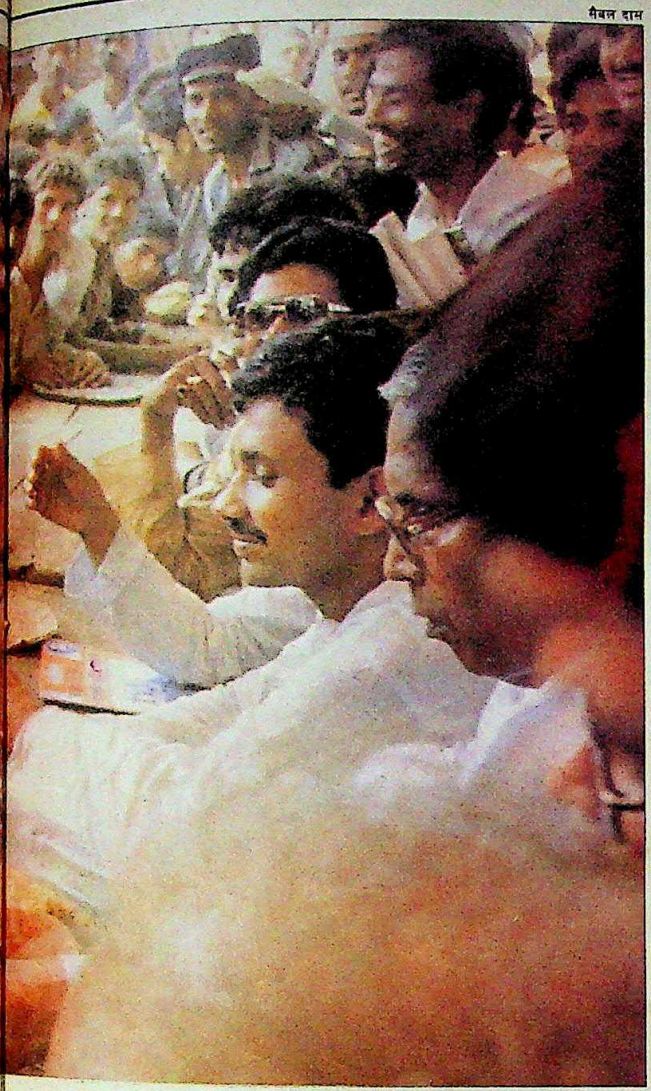

सड़क के किनारे ढाबे में भोजन

गए मील के ये पत्थर अब नाकामियों के चिह्न बन गए थे. अल्पकालिक फायदे के लिए अब वे तुरत-फुरत समाधान निकालते थे. दीर्घकालिक, समझदारी भरा रवैया अपनाने की कोशिश नहीं होती थी. अब राजीव को यह आसान लगने लगा था कि दूसरे ही उनके लिए सोचें. उनकी छवि नष्ट हो रही थी, उनका जनादेश बिखर रहा था.

नतीजा यह कि राजीव लापरवाह हो गए. श्रीलंका समझौता उनके इस नए रुख का सबसे अच्छा उदाहरण था— बिना विचारे समाधान के लिए निकल पड़ना. दूसरा उदाहरण कश्मीर समझौता था जिसके नतीजे में तबाही ही हाथ आई पर शायद संकुचित राजनैतिक लाभ के लिए उन्हें इसकी जरूरत थी. अब पूरी की पूरी नीति सर्वशक्तिमान प्रधानमंत्री कार्यालय में बनती थी. और वहां बैठे नौकरशाहों ने राजीव को असली भारत की समस्याओं से और दूर कर दिया.

सुरक्षा घेरे में घिरे, जनता से कटे, संकटों से बेखबर राजीव अब नेता के तौर पर अपनी अपरिपक्वता का प्रदर्शन ही कर रहे थे. बदमिजाजी, क्षुद्रता, असुरक्षाबोध और इन सबके ऊपर गलत इरादे और मंशा रखने वाले दोस्तों की जमात से घिरे रहना. राजीव की छवि अब पूरी तरह व्यवस्था पोषक की छवि में बदल गई थी.

जनादेश की अवधि के मध्य तक आते-आते सपना टूट गया था. घोटाले के आरोपों से घिरकर उनका स्वाभाविक खुलापन तिरोहित होने लगा और वे विपक्ष, प्रेस और विदेशी ताकतों पर बरसने लगे. राजीव के राजनैतिक जीवन में बोफोर्स महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ. 'मिस्टर क्लीन' अब 'मिस्टर उपेक्षित' बन गए. व्यक्ति और प्रधानमंत्री के तौर पर राजीव के लिए सबसे ज्यादा नुकसानदेह अगर कोई घटना साबित हुई तो वह बोफोर्स घोटाला था. यह इतना विध्वंसकारी झटका था कि वे उससे कभी उबर नहीं पाए. जरूरत यह थी कि वे इस विवाद में साफ-सुथरे होकर उभरते और यह साबित कर दिखाते कि वे कुछ भी छिपाना नहीं चाहते. लेकिन उन्होंने किनाराकशी का रास्ता चुना और सीधे सवालों से मुंह चुराते रहे. यह दुराव-छिपाव राजीव के व्यक्तित्व के इतना विपरीत था कि इस अकेली घटना ने उन्हें जनता की नजर में हमेशा के लिए गिरा दिया.

बचाव के लिए उन्होंने जिन हथियारों को चुना, वे उनके लिए घातक ही सिद्ध हुए. उस विवादास्पद अवमानना विधेयक को फौरन ही वापस लेना पड़ा जो अखबारों में नुकसानदेह रहस्योद्घाटनों को रोकने का एक अनगढ़ प्रयास था. मुस्लिम महिला विधेयक ने उनकी धर्मनिरपेक्ष छवि को चौपट कर ही दिया था. और 'जनता को सत्ता' सौंपने का पंचायती राज कानून तो राजनैतिक हताशा ही माना गया.

हालांकि राजीव का पुराना स्वभाव जब-तब उभरकर सामने आता रहा. व्यक्तिगत बातचीत में उनका मधुर व्यवहार खुल जाता और वे कहते कि उन्हें नहीं लगता कि वे प्रधानमंत्री की कुर्सी पर विराजमान हैं.

रखने में मुश्किल महसूस कर रहे थे

रहे हैं जिनके आका कहीं और बैठे हैं. हम उन्हें नानी याद दिला देंगे." ये उस राजीव के सद्वचन थे जो अपनी मां के नक्शेकदम पर मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों को ताश के पत्तों की तरह बदल रहे थे. जो अपने ही भय के शिकार थे और शक-ओ-शुबहे में अलग-थलग पड़ गए थे. एक समय के तेजतर्रार नेता का साहस जवाब दे चुका था. अपनी सरकार के जटिल संकटों को सुलझाने में वे नाकाम हो रहे थे. श्रीलंका, पंजाब, असम, कश्मीर आदि-आदि. कभी कामयाबियों के प्रतीक माने

खालिस नेता का रूप

- *विपक्ष अलग-अलग विचारों वाले नेताओं की खिचड़ी है.*
- *यह राष्ट्रीय मोर्चा नहीं राष्ट्रीय शर्म है.*
- *वी.पी. सिंह देश को इस हद तक बांट देना चाहते हैं जितना अंग्रेज भी नहीं बांट पाए.*
- *क्या मुझसे भौंकने वाले हर कुत्ते को जवाब देने की उम्मीद रखी जाती है?*
- *हमारे ऊपर बोफोर्स को लेकर बहुत मार पड़ी. इस घोटाले में मेरी सरकार का कोई आदमी शामिल नहीं है.*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशांत पंजियार

मिजोरम के दौरे में स्थानीय बच्चों के साथ हल्के-फुल्के क्षण

राजीव का यह रूप धीरे-धीरे ओझल होता जा रहा था

उनका हंसमुख तथा दुस्साहसिक स्वभाव गाहे-बगाहे उजागर हो ही जाता. मसलन, डॉल्फिन मछली को बचाने के लिए कूद पड़ने वाले छुट्टियों के दिन, जनपथ पर 'रन फॉर माई कंट्री' तमाशा, पैराशूट लगाकर हवाई जहाज से कूदना और अपने विमान को उड़ाने तथा कार चलाने में बच्चों जैसे कौतुहल के अनुभव वगैरह. समस्याओं से परिचित होने के बावजूद उनका सपना बरकरार रहा. जाहिर है, सैम पित्रोदा के नेतृत्व में टेक्नॉलोजी मिशन का निर्माण अफसरशाही के जाल को तोड़ने की ही कोशिश थी. लेकिन उनकी राय और स्वाभाविक चेतना काफी बदल चुकी थी. एक सीमा तोड़ी जा चुकी थी. पीछे लौटना संभव नहीं था.

और हुआ यह कि धवन और फोतेदार जैसे लोगों की वापसी हुई जिन्हें वे पहले ही खारिज कर चुके थे. वे चापलूसों से घिर गए थे. वे खुद को देश के सबसे बड़े राजनैतिक दल के सर्वोच्च नेता के रूप में पेश करने लगे और प्रमुख प्रतिद्वंद्वियों को उसी निर्ममता तथा अवहेलना से कुचलते जो इंदिरा गांधी की याद

विनोदी रूप

- *मैं अपने परिवार को पूरा समय नहीं दे पाता. उनके साथ बाहर नहीं निकलता क्योंकि इतना तमाशा हो जाता है कि यह सब असंभव है.*
- *मैं जब-तब छुट्टी की चाहत रखता हूं. मेरे खयाल से यह अधिक मानवीय है.*
- *मैं अब भी उड़ना चाहता हूं क्योंकि यह सुकून देता है.*
- *पता नहीं हमें कंप्यूटर ब्वॉय, कलर टेलीविजन वाला वगैरह कैसे मान लिया गया. मेरे पास कभी भी गुक्की जूते नहीं रहे.*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

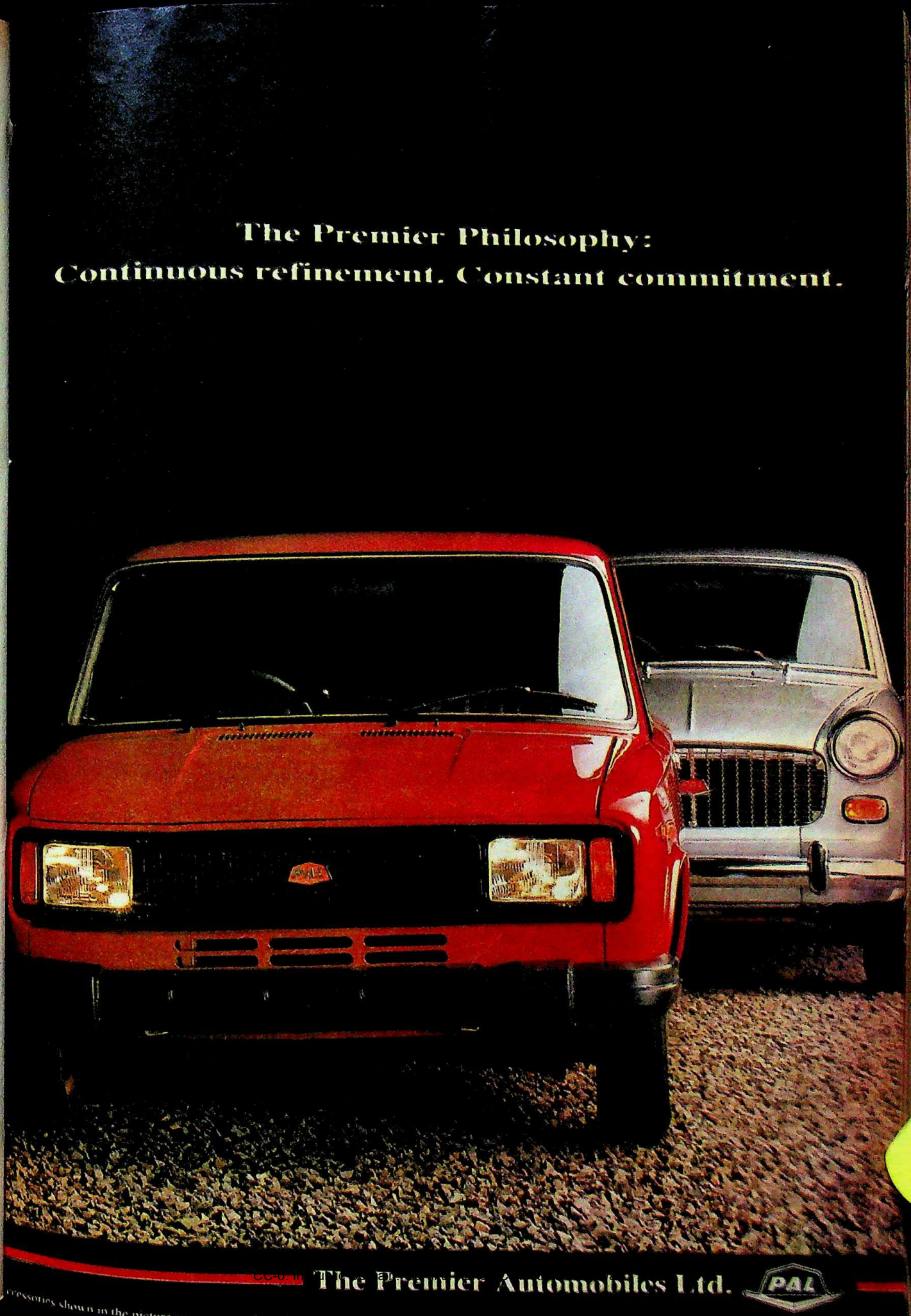
The Premier Philosophy:
Continuous refinement. Constant commitment.
The Premier Automobiles Ltd.
PAL

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिलाते थे. नौसिखुआ अब मास्टर बन गया था, साजिश और जोड़-तोड़ का माहिर. शायद उन्हें एहसास नहीं था कि जो राह उन्होंने चुनी है वह आगे कहीं नहीं ले जाती. सत्ता ने भ्रष्ट बना दिया और निरंकुश सत्ता ने पूरी तरह भ्रष्ट बना दिया था. इसकी राजनैतिक परिणति तो अवश्यंभावी थी. विडंबना से बचा नहीं जा सकता था. 1984 में जिस व्यक्ति को 'मिस्टर क्लीन' होने के नाते ऐतिहासिक जनादेश मिला था, उसे पांच साल बाद सत्ता से हटा दिया गया. और उत्तराधिकारी कौन बने? वही जिन्हें उन्होंने कभी भरोसेमंद माना और फिर तिरस्कृत कर दिया था.

अब राजीव विपक्ष के नेता के रूप में अवतरित हुए. वे औरों से अलग, अधिक विनम्र और संयत लगे. दूरदर्शन पर उनके विदाई भाषण में उनके पुराने दिनों की यादें ताजा हो गईं, "हम पूरी विनम्रता के साथ लोगों के फैसले को स्वीकार करते हैं. हम नई सरकार को रचनात्मक समर्थन देने का वादा करते हैं." लगा कि इस व्यक्ति को गहरा एहसास हो गया है कि उससे भारी भूल हुई है और यह भी कि यह भूल कब और कहां हुई.

असलियत में कुछ ज्यादा अंतर नहीं दिखा. यह परंपरावादी अटूट कांग्रेस संस्कृति की ही कृपा के कारण हुआ. अंतःपुर के गुट भी वैसे ही बने रहे. यह गुट उनकी गलतियों को छिपाता रहा और उन्हें यकीन दिलाता रहा कि कुछ दिनों में वे फिर प्रधानमंत्री की कुर्सी पर होंगे. फिर वह ढिठाई लौट आई और साथ ही परदे के पीछे की साजिशें और जोड़-तोड़ भी शुरू हो गईं. राजीव के दबाव में करुणानिधि सरकार की बरखास्तगी इसका सबूत है.

चुनावों की अचानक घोषणा से लगा कि राजीव की पुरानी बैटरियों को फिर चार्ज कर दिया गया. सत्ता से उनके हटने के 19 महीने बाद ही चुनाव हो रहे थे. इस एहसास के साथ कि जनता से उनका संपर्क टूट गया है, वे भीड़ में घुलने-मिलने की कोशिश करने लगे. राजीव अथक प्रयास कर रहे थे. जिस व्यक्ति को कभी लोगों से ऊर्जा—और सत्ता—मिली थी, वह फिर पूरे दमखम से प्रचार में जुटा था और इस दौरान वह दो घंटे से ज्यादा की नींद नहीं लेता था. लगा कि राजीव का पुनर्जन्म हो गया है. वे लोगों को हंसाते-हंसते, महिलाओं पर फूलमालाएं फेंकते, लोगों को दूर रखने के लिए सुरक्षाकर्मियों को झिड़कते. लगा कि आखिरकार राजीव अब अपने असली रूप में आ गए हैं.

घोटाले, नाकामियां, अनियमितताएं और अकुशलताएं भुला दी गईं. लोग भी यह स्वीकारते हुए लगने लगे कि राजीव बदल गए हैं, शायद अपने पुराने स्वभाव में लौट आए हैं. चापलूसों और दरबारियों से परे राजीव बदले हुए व्यक्ति थे, एक जननायक. फिर समय का चक्र वहीं पहुंच गया था. फिर वह अप्रत्याशित चमक दिखने लगी थी. मगर यह चमक क्या रहेगी? या वह फिर उसी व्यवस्था के हाथों मलिन कर दी जाएगी जिसने पहले भी उनके साथ वही किया था? इस सवाल का जवाब अब कभी नहीं मिल पाएगा.

— दिलीप बॉब

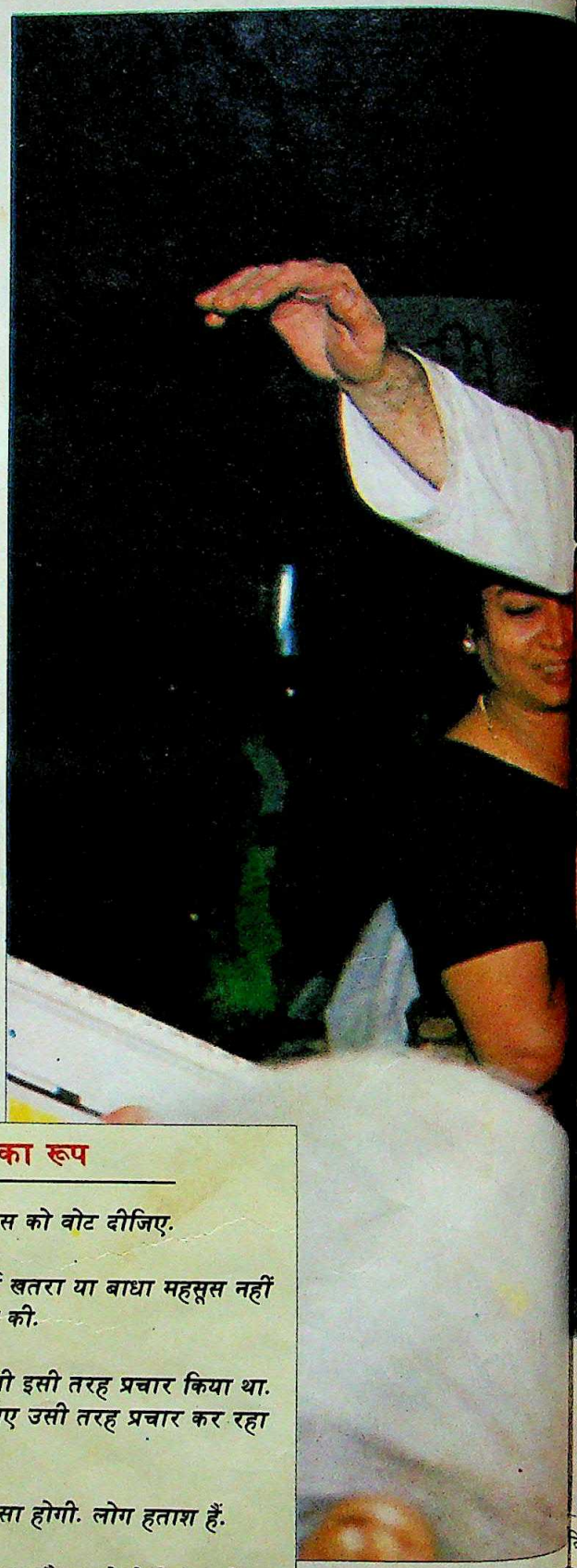

प्रचारक का रूप

- *रामराज्य चाहते हैं तो कांग्रेस को वोट दीजिए.*
- *मैंने कहीं आने जाने में कोई खतरा या बाधा महसूस नहीं की. मैंने कभी उनकी परवाह न की.*
- *मैं जब प्रधानमंत्री था तब भी इसी तरह प्रचार किया था. मैं अब प्रधानमंत्री नहीं हूं इसलिए उसी तरह प्रचार कर रहा हूं.*
- *इस बार चुनाव में भारी हिंसा होगी. लोग हताश हैं.*
- *मैं कह सकता हूं कि मेरा दूसरा दौर पहले से बेहतर होगा.*

18 महीनों त

जनता से चुहलबाजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपक्ष का नेता रहने के बाद चुनाव के मैदान में

फिर से लोकप्रियता हासिल करने का हौसला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पेज को मोड़ मरोड़ कर
अपनी मुट्ठी में
कस कर दबाइए.
ऐसा ही ज़बर्दस्त नियंत्रण
आप पायेंगे
सिएट
रेडियल्स की बदौलत.

आरपीजी
एन्टरप्राइजेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिएट फ़ार्मूला-I रेडियल्स एक अलग ही दर्ज़े का टायर है. डिज़ाइन अलग. बनावट अलग.

इनमें मौजूद ख़ासियतों की वजह से ही आप पाते हैं कार पर लाजवाब नियंत्रण.

टायर की परिधि के साथ खड़ी या रेडियल दिशा में बुने प्लाई-कॉर्ड जहां टायर का लचीलापन बढ़ाते हैं वहां उसे चोट-धक्के बर्दाश्त करने में ज़्यादा सक्षम भी बनाते हैं.

परिणाम : आरामदेह सफ़र.

ख़ास टेक्स्टाइल बेल्ट ट्रेड को और मज़बूत बनाता है. साथ ही ट्रेड का संपर्क सड़क से बराबर बनाए रखता है.

परिणाम : बेहतर पकड़ के साथ-साथ बेहतरीन ट्रैक्शन, भरोसेमंद ब्रेकिंग और सुनियंत्रित स्टीयरिंग.

इन्हीं ख़ासियतों के कारण टायर ज़्यादा दिन चले, पेट्रोल ख़र्च में कमी आए और पंचर होने की नौबत भी कम आए.

जी हां. और इन सबसे बढ़कर है कार पर बेहतर नियंत्रण.

यही तो है जापान की योकोहामा रबर कम्पनी की विकसित तकनीक अपनाने का फ़ायदा.

सिएट फ़ार्मूला-I रेडियल्स. शानदार ड्राइविंग का अनोखा आनन्द.

फ़ार्मूला-I रेडियल्स

कार पर बेहतर नियंत्रण

HTA 1783

CEAT

बॉर्न टफ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Because you know exactly what you want

Dwarka Men's Wear New Delhi-110031. Tel : 2201782-83, 2213886

Dealers/Distributors sought from unrepresented areas.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिखरते मुद्दे, बदलते समीकरण

जैसे कहर बरपा हो गया. पहली प्रतिक्रिया ऐसी ही थी. फिर हकीकत से सामना हुआ यानी राजीव गांधी के बगैर इंका और एक संभावित प्रधानमंत्री के उठ जाने के बाद खाली राजनैतिक मैदान. हादसे से जैसे राजनैतिक रिक्तता आ गई. लगा कि 1984 की तरह इंका को सहानुभूति लहर का लाभ मिल सकता है

भारतीय जनता पार्टी, राष्ट्रीय मोर्चा-वामपंथी गठजोड़ और सजपा को उम्मीद है कि ऐसा नहीं होगा. 306 लोकसभा सीटों का चुनाव मध्य जून तक आगे बढ़ा दिए जाने से भी उनकी आशाओं को बल मिला.

भाजपा ने मौके का तुरंत फायदा उठाया और राम, रोटी, इंसाफ के साथ स्थिरता का मुद्दा भी जोड़ लिया. रामो-वामपंथी गठजोड़ को अभी भी मंडल का जादू चलने की आशा है और सजपा को लगता है कि किसी दल को बहुमत न मिलने की स्थिति में वह अहम रोल अदा कर सकती है.

भाजपा

पैंतरे में परिवर्तन

चुनावों के अगले दौर में राजीव कहीं राम को न हरा दें, इस आशंका से ग्रस्त भाजपा सत्ता पर कब्जा करने के लिए इंका के कलहग्रस्त नेतृत्व और अपने संशोधित चुनाव अभियान पर आस बांधे हुए है. लोकसभा में 'स्पष्ट बहुमत' पाने के पार्टी अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी के दावे के बावजूद भाजपा सहानुभूति लहर को लेकर काफी चिंतित है. इसलिए उसने अपनी चुनावी रणनीति में कई तब्दीलियां कर डालीं.

उसने चुनाव प्रचार से राजीव गांधी और उनके कथित कुकृत्यों की तमाम चर्चाओं को निकाल देने का फैसला किया है. पार्टी के पूर्व अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी बताते हैं, "अब राजीव का उल्लेख नहीं होगा. इसकी जगह बहस अब कांग्रेस और उसकी ओर से देश को नेतृत्व देने के सवाल पर केंद्रित होगी."

यह मुद्दा भी उठेगा कि एलटीटीई के साथ कांग्रेस के मधुर संबंधों की कीमत देश को चुकानी पड़ी है. और यह भी कि पार्टी नेताओं के दावे के अनुसार भाजपा तमिलनाडु में एलटीटीई की मौजूदगी का विरोध करने वाली पहली पार्टी है. पर यह स्पष्ट नहीं कि राजीव का जिक्र किए बगैर यह मुद्दा बनेगा कैसे.

इसके अलावा, भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने वरिष्ठ पार्टी नेता अटल बिहारी वाजपेयी को मुसलमान वोट बटोरने के लिए आगे लाने का भी चुपचाप फैसला किया है. वे मुसलमान मतदाताओं से सीधा संवाद कायम करने के लिए देशव्यापी दौरे करेंगे. कार्यकर्ताओं को भी आदेश दिए जा चुके हैं कि वे अल्पसंख्यक विरोधी नारों का इस्तेमाल कम कर दें. साध्वी ऋतंभरा सरीखे कट्टर हिंदूपरस्तों को 'भाजपा के नहीं, विहिप के कार्यकर्ता' बताकर भी पार्टी कंधा झाड़ लेगी. पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ और विपक्ष की नेता बेनज़ीर भुट्टो से आडवाणी और वाजपेयी की भेंट को प्रचारित करके वह दावा करेगी कि वह मुसलमान विरोधी नहीं है. इस सबका मतलब यह नहीं कि पार्टी, खासकर हिंदी क्षेत्र में, रामराज लाने के अपने वादे में कोई नरमी लाएगी. अयोध्या को वस्तुतः ब्रह्मांड के केंद्र के रूप में और पार्टी को उन भारतीय मूल्यों की संरक्षक के रूप में पेश किया जाएगा जिनके प्रतीक भगवान राम थे.

शरद सक्सेना

वाजपेयी, जोशी और आडवाणीः लाभ की उम्मीद

जानकारों का कहना है कि यदि सोनिया इंका अध्यक्ष बनना मान लेतीं तो पूरी संभावना थी कि भाजपा इस 'विदेशी महिला' के खिलाफ जहरीला अभियान छेड़कर उन्हें भारतीय मूल्यों के उलट बताती ताकि इंका को नुकसान पहुंचाया जा सके. अब भाजपा के प्रचार का मुद्दा यह होगा कि विचारधारा विहीन पार्टी नेतृत्व विहीन हो गई है.

—साहनाज अंकलेसरिया अय्यर

जनता दल

सन्निपात की सी स्थिति

राजीव की हत्या की खबर सुनकर विश्वनाथ प्रताप सिंह की पहली प्रतिक्रिया थी, "यह तो वज्रपात है." इससे उनकी गहरी संवेदना तो प्रकट होती ही है पर शायद यह उनकी उस आशंका का भी परिचायक है कि अब इंका के पक्ष में सहानुभूति लहर से राष्ट्रीय मोर्चा-वामपंथी दलों के गठजोड़ की चुनावी उम्मीदों पर भी गाज गिर सकती है.

मगर पार्टी के नेता ऐसी बातों का खंडन करते हैं. जनता दल के प्रवक्ता एस. जयपाल रेड्डी कहते हैं, "हम नहीं मानते कि सहानुभूति लहर चलेगी क्योंकि इस बार शोकाकुल परिवार और देश के बीच कोई संबंध नहीं ढूंढा जा सकता." बहरहाल, इस गठजोड़ के नेता राजीव की हत्या के एक दिन बाद अपनी रणनीति तय करने बैठे. और उन्होंने अपनी बेचैनी छिपाने की भरसक कोशिश की. बेचैनी तो जायज थी, क्योंकि इस पखवाड़े लोकसभा की जिन 306 सीटों के लिए मतदान होने हैं, उनमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादातर पर इस गठजोड़ और इंका के बीच सीधी टक्कर है. तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में, जहां भाजपा कोई खास असर नहीं रखती, सहानुभूति लहर चलने की पूरी संभावना है. तमिलनाडु में इसे सबसे बड़ा झटका लग सकता है. एलटीटीई के साथ द्रमुक नेता एम. करुणानिधि का खुला सहयोग राज्य में पार्टी को भारी पड़ सकता है. राजीव की हत्या के पहले ही इंका-अन्ना द्रमुक गठजोड़ हावी होता दिख रहा था.

राष्ट्रीय मोर्चा-वाम गठजोड़ के लिए दिलासे की बात यह है कि उत्तर में उसकी स्थिति बेहतर होगी. वजह यह है कि उत्तर प्रदेश में बाकी 43 और बिहार में 18 सीटों पर लड़ाई जनता दल के मंडल और भाजपा के मंदिर के मुद्दों बीच है.

सहानुभूति लहर से निबटने के लिए जनता दल का नया चुनावी नारा, बकौल एक वरिष्ठ नेता, 'इंका की अलोकतांत्रिक कार्यशैली' होगा. उदाहरण यह पेश किया जाएगा कि इंका में राजीव के उत्तराधिकारी का चयन आसानी से नहीं हो पाया. जनता दल पिछड़ों के वोटों की खातिर मंडल व मस्जिद मुद्दे तथा आंबेडकर को अपना मुख्य संबल बनाए रखेगा. राष्ट्रीय गठजोड़ चुनावों के बाद 'मध्यमार्गी ताकतों के ध्रुवीकरण' की संभावनाओं की भी हल्की चर्चा करेगा. भाजपा से कोई संबंध नहीं रखेगा.

इससे हवा राष्ट्रीय मोर्चा गठजोड़ बनाम भाजपा की बन सकती है. लेकिन इससे इंका की चुनौती का जवाब नहीं निकलता. हालांकि नेताओं का कहना है कि वे मतदान टाले जाने से खुश हैं क्योंकि देर होने से कथित सहानुभूति लहर कमजोर पड़ सकती है बावजूद इसके, इंका की संभावित हवा से इन नेताओं को कंपकंपी छूट रही है.

—जफर आगा

श्याम टेकवानी

द्रमुक रैली में करुणानिधि और वी.पी. सिंह: क्षीण आशा

सजपा

गठजोड़ के खयाली पुलाव

तीन महीने पहले जब समाजवादी जनता पार्टी और इंका ने एक-दूसरे के खिलाफ आस्तीनें चढ़ाई थीं तो लगता था कि अब वे फिर कभी नहीं मिल सकेंगे. पर राजनीति में कोई हमेशा के लिए अछूत नहीं होता. राजीव गांधी की हत्या के बाद जब अफरातफरी में चुनावी चिंतन शुरू हुआ तो सजपा में इंका से विलय का विचार चलने लगा. पार्टी नेता सुब्रह्मण्यम स्वामी के अनुसार, "अगर इंका को बहुमत नहीं मिला तो सजपा उससे गठजोड़ करेगी."

सजपा के सोच के पीछे तीन इच्छाएं हैं. इंका की भारी ताकत के भरोसे सत्ता में पहुंचना, प्रधानमंत्री बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना और भाजपा तथा वामपंथियों को किनारे रखना. भाजपा के सत्ता में आने का खतरा उन्हें इतना ज्यादा परेशान कर रहा है कि वे चंद्रशेखर को इंका-सजपा गठबंधन के नेता के रूप में पेश करने का खयाल छोड़ने और जनता दल से मतभेद भुलाने तक को तैयार हैं. इसके पीछे धारणा यह है कि इंका सहानुभूति लहर के कारण सत्ता में नहीं आ सकेगी लेकिन वह 240 सीटें हासिल कर लेगी जो पूर्ण बहुमत से 30 कम है. इस स्थिति में सरकार बनाने के लिए इंका को बाहरी समर्थन की जरूरत होगी. इस जरूरत को सजपा पूरा करेगी.

राजीव के निधन के खबर आते ही सजपा के कुछ नेता इंका से समीकरण भिड़ाने में जुट गए. वे इंका के कुछ उम्मीदवारों के समर्थन में अपने कुछ उम्मीदवारों को हटाने को भी तैयार हो गए. स्वामी ने चुनाव बाद के गठजोड़ पर जोर दिया.

पर इंका में जिस तरह से देवीलाल और चौटाला विरोधी भावनाएं हैं, क्या उनके रहते यह मुमकिन होगा? पार्टी के लोगों का कहना है कि इन दोनों से पीछा छुड़ाने पर कार्यकर्ताओं को कोई फर्क नहीं पड़ेगा पर चंद्रशेखर अपनी गहरी दोस्ती को इतनी आसानी से नहीं छोड़ सकते.

और जब सोनिया गांधी ने इंका अध्यक्ष बनने से साफ-साफ इनकार कर दिया तो सजपा की गठजोड़ की आकांक्षा एक बार फिर बलवती हो उठी. एक मौके पर तो इंका के क्षत्रप शरद पवार ने चंद्रशेखर को उम्मीदवार बनाने का सुझाव भी पेश कर दिया पर बात आगे नहीं बढ़ पाई. अब सजपा नेता इंका के नेतृत्व का सवाल हल हो जाने पर ही हलचल करेंगे. पर अहम सवाल यह है कि क्या इंका में भी उनके प्रति उतना ही उत्साह होगा?

—वाहेगुरुपाल सिंह सिद्धू

प्रशांत पंजियार

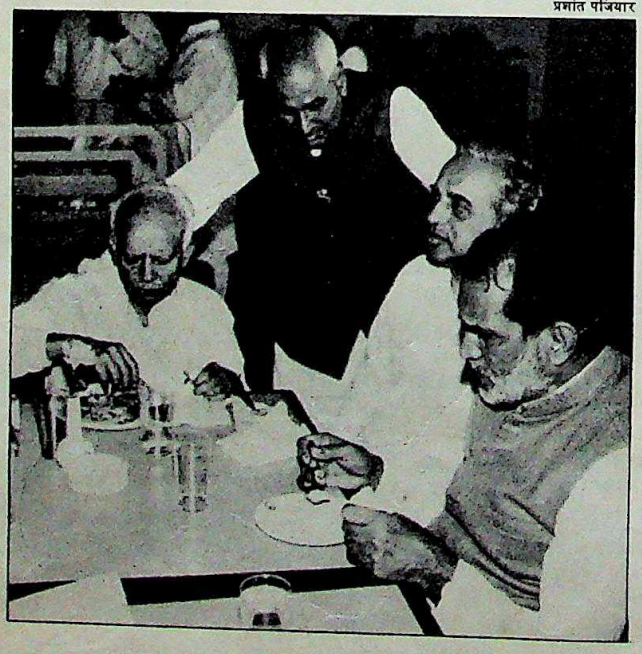

चौटाला, सुब्रह्मण्यम स्वामी और चंद्रशेखर: गठजोड़ की उम्मीद में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब बात पुर्ज़े बदलने की आए, तो वही अपनाएं जो जाने-माने निर्माता काम में लाएं.

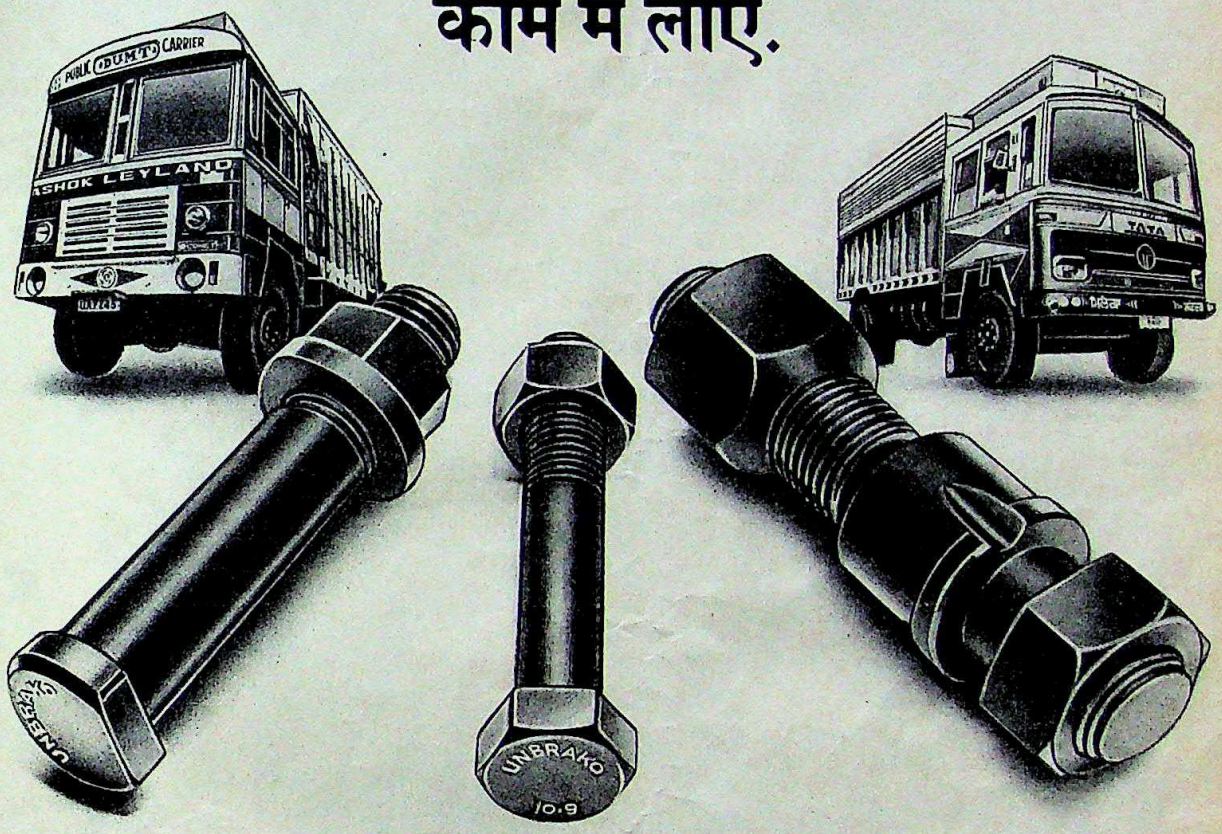

अनब्रेको
हाई-टेन्साईल ऑटोमोबाइल नट और बोल्ट

घटिया नट और बोल्ट अपनाकर आप थोड़े बहुत पैसे ज़रूर बचा लेते हैं, लेकिन अपने वाहन की उम्र भी कम कर लेते हैं. इसीलिए तो भारत के अग्रणी वाहन निर्माता अपने इंजन स्टड, ब्रेक बोल्ट, व्हील बोल्ट और नट आदि के लिए ख़ास तौर पर पसंद करते हैं – अनब्रेको नट और बोल्ट.

तो अबकी बार जब आप अपने वाहन की मरम्मत करें तो अपनाएं वही नाम, जो मूल निर्माताओं के लिए भरोसे की पहचान.

अनब्रेको. फ़िट हों बेहतर. फ़िट हों कसकर.

Unbrako

प्रिसीशन फ़ास्टनर्स लिमिटेड,
न्यू इंडिया सेंटर, 17, कूपरेज रोड, बम्बई -400 039.
फ़ोन: 202 5163. टेलेक्स: 011-4974.

25 YEARS OF QUALITY & SERVICE 1965 1990 Unbrako

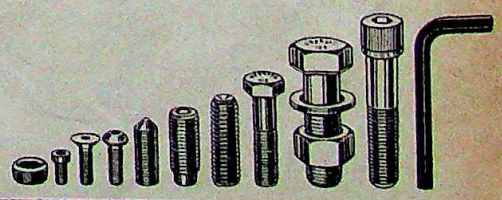

CONTOUR-PFL-288/90 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

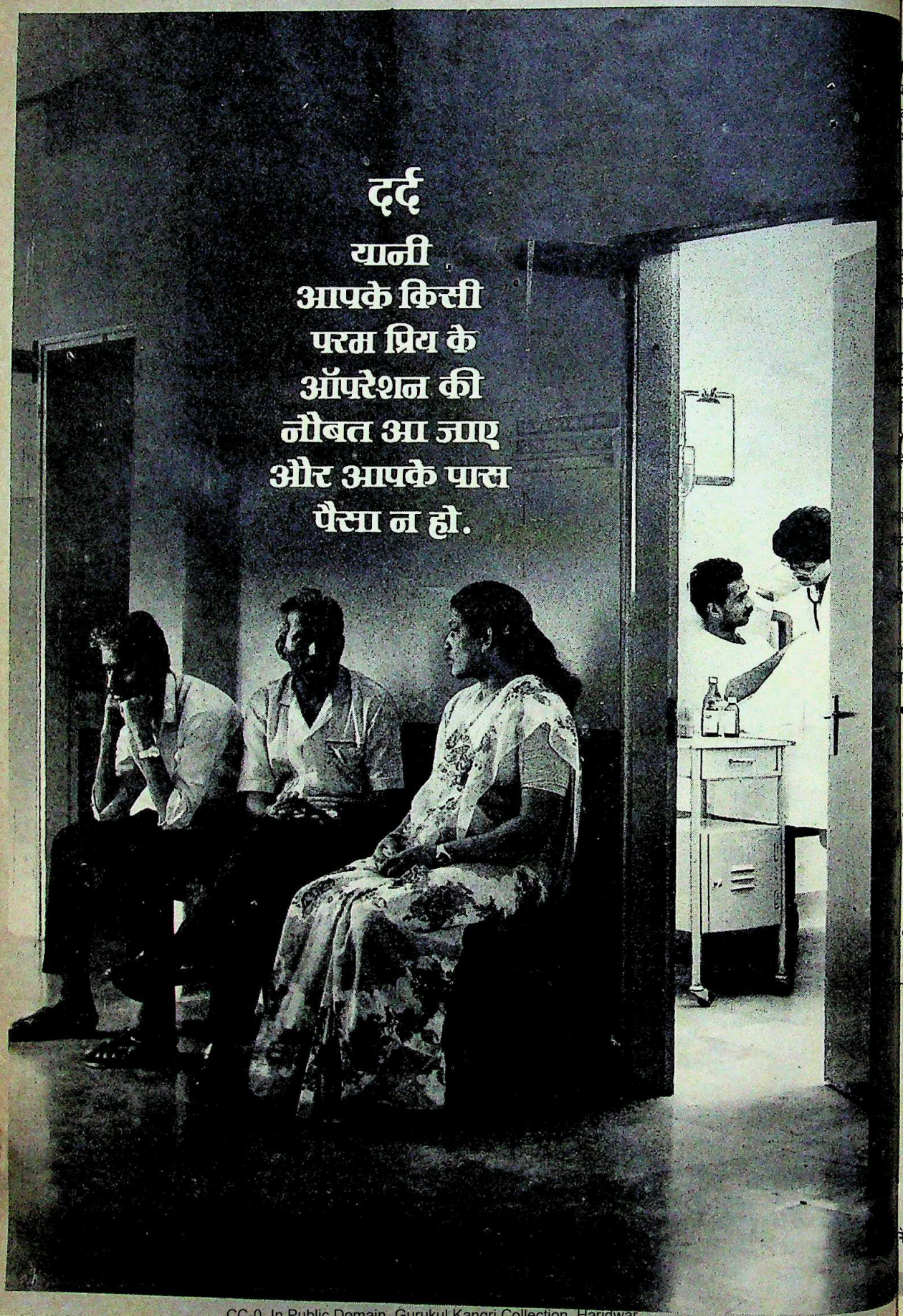

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चाई का डटकर मुकाबला कीजिए. डॉक्टरी इलाज या अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत कब, किसे आ पड़ेगी, कौन कह सकता है? यह मुसीबत कभी आप पर आ जाए तो बिल चुकाने से बच तो नहीं सकेंगे न आप, फिर भले ही आप इस स्थिति में हों या न हों.

इस समस्या का बेहतरीन इलाज है – मेडिक्लेम

मेडिक्लेम – सख्त जरूरत के वक़्त आपका सच्चा साथी

वार्षिक प्रीमियम अदा कर देने भर से मेडिक्लेम बीमा, अस्पताल में भर्ती रहने का आपका खर्च, घर में अस्पताली इलाज का खर्च, इंटेंसिव केयर (सघन चिकित्सा), किसी तरह के ऑपरेशन और इसी तरह के अन्य संबंधित खर्च उठा लेता है.

मेडिक्लेम में आप दो तरह की योजनाओं में से कोई सी भी चुन सकते हैं. स्कीम ए में नियमित मेडिक्लेम तो है ही, साथ हैं व्यक्तिगत दुर्घटना हो जाने पर आपको मिलने वाले लाभ. स्कीम बी में केवल मेडिक्लेम के ही लाभ शामिल हैं.

आप जितना प्रीमियम देना चाहें, उसके मुताबिक आपके लिए खुले हैं लाभ के 6 विभिन्न स्तर. जिसे चाहें, चुन लें.

प्रीमियम हैं रु. 200 से लेकर रु. 1500 तक. मेडिक्लेम के अंतर्गत मिलने वाले लाभ की अधिकतम सीमा है रु. 96,500 व्यक्तिगत दुर्घटना होने पर मिलने वाली अधिकतम राशि है रु. 1,50,000. (कृपया साथ ही दी गई तालिका देखें).

मेडिक्लेम – अब पहले से कहीं ज़्यादा लाभ.

1 अप्रैल 1991 से लागू होने वाली मेडिक्लेम बीमा योजना में कहीं ज़्यादा लाभ जोड़ दिए गए हैं लेकिन प्रीमियम जरा भी बढ़ाया नहीं गया है.

- जिन बीमाधारकों के पास मेडिक्लेम पॉलिसी पहले से है, वे चाहें तो उसे नए लाभों वाली इस योजना में बदलवा सकते हैं बशर्ते कि 31 मार्च 1991 तक उन्होंने खर्च का कोई दावा न किया हो.
- अस्पताल के कमरे की किराया सीमा में वृद्धि.
- इंटेंसिव केयर (सघन चिकित्सा) और घर में कराए जाने वाले अस्पताली इलाज संबंधी बेहतर लाभ.
- लाभ की पहले से कहीं आसान श्रेणियां.
- डॉक्टरी जांच पड़ताल के खर्च की 75% तक वापसी.

लाभ तथा वार्षिक प्रीमियम तालिका (रुपयों में)

विवरण	श्रेणियां					
	I	II	III	IV	V	VI
लाभ : प्रतिव्यक्ति						
1. अस्पताल में भर्ती होने पर						
i. प्रतिदिन, अधिकतम :						
(अ) कमरा, खानापीना, नर्सिंग	750	550	350	250	150	100
(आ) इंटेंसिव केयर, खानापीना, नर्सिंग	1500	1100	700	500	300	200
(अ) तथा (आ) की संयुक्त सीमा	33000	24000	15500	11000	6600	4500
ii. सर्जन अनेस्थेटिस्ट, मेडिकल प्रैक्टिशनर, कंसल्टेंट, स्पेशलिस्ट.	22000	13200	9200	7000	3000	2600
अनेस्थीसिया, खून, ओटी दवाइयां, रेडियोथेरेपी वगैरह	28000	16800	12800	9000	5000	3400
2. घर में अस्पताली इलाज : (नॉन सर्जिकल)						
मेडिकल प्रेक्टिशनर, कंसल्टेंट, स्पेशलिस्ट,	6000	3500	2500	1600	1400	1400
खून, आक्सीजन, जांच पड़ताल का सामान, नर्सें तथा अन्य संबंधित खर्च	7500	4500	3000	2000	1700	1700
3. व्यक्तिगत दुर्घटना :						
मृत्यु अथवा व्यक्तिगत विकलांगता	150000	100000	7500			
वार्षिक प्रीमियम :						
स्कीम ए						
मेडिक्लेम तथा व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा	1500	950	700			
स्कीम बी						
मेडिक्लेम	1300	840	600	350	250	200

नोट : 1. यह सिर्फ़ सूचक तालिका है. पूर्ण विवरण के लिए देखिए – मेडिक्लेम पॉलिसी.
2. पहले से चल रही उन बीमारियों का विशिष्ट उल्लेख जिनका, बीमा कराने वाले व्यक्ति को पॉलिसी लेते समय पता है.

करों में छूट : चैक द्वारा दिए जाने वाले रु. 3000 तक के प्रीमियम पर आयकर अधिनियम की धारा 80D के अंतर्गत आयकर से छूट मिलती है.

आपके लिए उपयोगी कुछ अन्य पारिवारिक/व्यक्तिगत बीमा योजनाएं:
- भविष्य आरोग्य • समुद्र पारीय मेडिक्लेम • गृहस्वामी व्यापक बीमा • व्यावसायिक क्षतिपूर्ति
- व्यक्तिगत दुर्घटना

अब पहले से भी कहीं बेहतर!

मे डि + क्ले म

आज की एक विशिष्ट जरूरत

आज-कल रहिएगी

भारतीय साधारण बीमा निगम

अधिक जानकारी के लिए लिखें : जी.आई.सी., पो.ऑ.बैग नं. 10032 जी.पी.ओ, बम्बई 400 001
या हमारी ऑपरेटिंग कंपनियों के किसी भी कार्यालय से संपर्क करें.

R K SWAMY/BBDO GIC 783 HN

नेशनल इन्श्योरेंस कंपनी लिमिटेड | दी न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड | दी ओरिएण्टल इन्श्योरेंस कंपनी लिमिटेड | युनाइटेड इंडिया इन्श्योरेंस कंपनी लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तराधिकार की जंग

अभूतपूर्व एकता का प्रदर्शन करते हुए इंका कार्य-समिति समेत हजारों पार्टी कार्यकर्ताओं ने उस विशेष रेलगाड़ी से इलाहाबाद तक की यात्रा की जिसमें दिवंगत राजीव गांधी की अस्थियों को संगम में प्रवाहित करने के लिए ले जाया गया. यह यात्रा एक दिवंगत नेता के अवशेषों को अंतिम विदाई से कहीं अधिक थी. रास्ते में जगह-जगह लोगों ने जिस तरह अपने नेता की अस्थियों के दर्शन किए वह एक मायने में श्रद्धांजलि से कहीं अधिक चुनाव प्रचार अभियान के दूसरे दौर जैसा ही लगा.

पार्टी नेताओं का इरादा यहीं से एक ऐसी सहानुभूति लहर पैदा करना था जो आने वाले चुनाव में वोटों की झड़ी लगा दे. लेकिन राजीव की हत्या और सोनिया के इनकार के कई दिन बाद भी पार्टी न तो अपने नेता का चुनाव कर पाई और न एकता का प्रदर्शन ही कर पाई. आलाकमान केवल यही बात प्रचारित कर पाया कि पी.वी. नरसिंह राव आम सहमति के आधार पर पार्टी के संभावित नेता हो सकते हैं.

राजीव की हत्या के बाद पार्टी के सामने सबसे पहला काम यही था कि वह लोगों को अपनी भीतरी एकता का गलतफहमी भरा दिलासा दे सके. लेकिन इंका के 'यतीम' नेता जिस तरह एक-दूसरे की टांग खींचने के शर्मनाक खेल खेल रहे थे और उत्तराधिकार की लड़ाई लड़ रहे थे, वैसे दुर्भाग्यपूर्ण दृश्य 1969 के विभाजन के बाद कभी देखने में नहीं आए थे.

इस बार भी सोनिया को अध्यक्ष पद पर लाने के अभियान की कमान सफारी सूट वाले आर. के. धवन ने संभाली और इसमें उनका साथ वही 'चौकड़ी' दे रही थी जिन्हें राजीव का मित्र माना जाता रहा है. ज्यों ही धवन को एक पत्रकार मित्र से राजीव की हत्या की खबर मिली, उन्होंने पूरे मंच की कमान अपने हाथ में ले ली. सरकारी अफसरों और राजनेताओं की मदद से चलाए गए इस अभियान में उन्होंने जो महारत दिखाई उसे देखकर लग रहा था मानो वे इसी काम के लिए प्रशिक्षित किए गए हैं. इंदिरा गांधी की हत्या के समय धवन ही थे जिन्होंने राष्ट्रपति जैल सिंह को संकेत दिया था कि राजीव को ही अपनी मां के स्थान पर प्रधानमंत्री बनाया जाना चाहिए. इस बार भी हत्या की अगली दोपहर उन्होंने सतीश शर्मा, माखनलाल फोतेदार, विंसेंट जॉर्ज, जगदीश टाइटलर और गुलाम नबी आजाद को अपने साथ लगा लिया. केवल आधे घंटे में ही उन्होंने तय कर लिया कि पार्टी अध्यक्ष पद पर सोनिया को बिठा दिया जाए.

टाइटलर और आजाद को छोड़ चारों लोग खुद कभी पार्टी के किसी पद के लिए चुने नहीं गए थे. वे पिछले प्रधानमंत्री के ऐसे व्यक्तिगत सहायक थे जिनका निजी स्तर पर कोई राजनैतिक आधार नहीं था. लेकिन इसके बावजूद 14 सदस्यीय कार्यसमिति में पहले-पहल तो वही हुआ जो वे चाहते थे क्योंकि समिति उत्तराधिकार के सवाल पर किसी एक नाम पर सहमत नहीं हो पाई. यह उस पार्टी में हुआ जिसके पीछे 106 साल का इतिहास है.

रेखाचित्र: अजीत नैनन

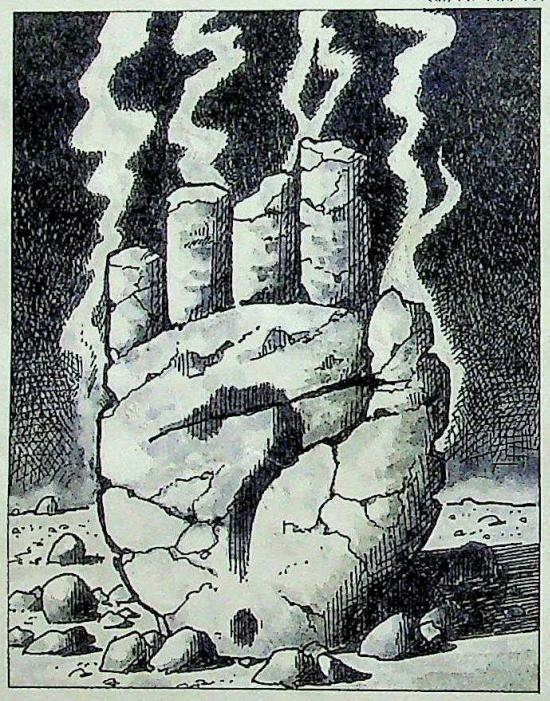

लोगों के सामने कांग्रेस अपनी एकता दिखाने की कोशिश कर रही थी जबकि इसके नेता आपसी उठापटक की लड़ाई में जुटे हुए थे

इस प्रस्ताव को पेश करने की पहल मध्य प्रदेश इंका अध्यक्ष अर्जुन सिंह ने की. समिति के सदस्यों से उनका कहना था कि "कांग्रेस और देश दोनों ही टूट जाएंगे. अगर इन दोनों को बचाना है तो यह काम सोनिया जी के अलावा कोई और नहीं कर सकता. इसलिए हम सबको चाहिए कि उनसे यह जिम्मेदारी संभालने का आग्रह करें." बैठक में मौजूद कई लोगों के लिए यह एकदम अप्रत्याशित था लेकिन उनमें से बहुत कम ऐसे थे जिनमें इस नाम का विरोध कर पाने का साहस था.

विरोध का स्वर उठाने वालों में प्रमुख शरद पवार, माधव सिंह सोलंकी, पी. शिवशंकर और के. करुणाकरन थे. करुणाकरन ने सोनिया ब्रिगेड से सीधा सवाल किया, "पार्टी अध्यक्ष चुनने की इतनी जल्दी क्या है. बेहतर होगा कि और लोगों से भी सलाह की जाए और इस मामले को दाह संस्कार के बाद उठाया जाए." उनका यह विरोध इतना सोनिया के विरुद्ध नहीं था जितना उसे उठाए जाने के तरीके के विरुद्ध था. पवार की टिप्पणी और भी सटीक थी. उन्होंने पूछा, "इस समय चुनाव का दूसरा दौर चल रहा है. अगर हम इस समय अध्यक्ष का चुनाव करते हैं तो प्रधानमंत्री पद के लिए हमारा उम्मीदवार कौन होगा? क्या हम इस बारे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवान सिंह

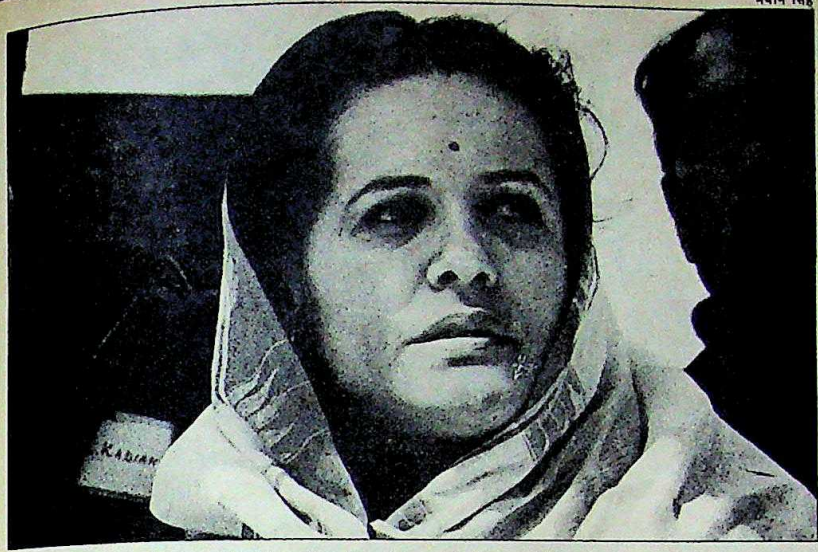

सोनिया के समर्थन में जुटी चौकड़ी का कोई राजनैतिक आधार नहीं है

राजीव-सोनिया के वफादार

आर.के. धवनः 53 वर्ष. राज्यसभा सांसद. इंदिरा के वफादार रहे पर राजीव ने सत्ता में आकर उन्हें बाहर का रास्ता दिखाया. फिर राजीव मंडली में बहाल. अपना राजनैतिक आधार नहीं. पार्टी में निर्वाचित पद कभी नहीं पाए. अपने अस्तित्व के लिए अध्यक्ष पद के लिए सोनिया का नाम उछाला.

अर्जुन सिंहः 61 वर्ष. म. प्र. इंका अध्यक्ष. म.प्र. के तिकड़मी ठाकुर. एक समय राजीव के कृपापात्र रहे पर बाद में बाहर कर दिए गए. राजीव-लोंगोवाल समझौते में प्रमुख भूमिका निभाई. अध्यक्ष पद के लिए सोनिया का नाम उछालने के पीछे मकसद उनकी कृपा से इस गद्दी को हथियाना था.

माखनलाल फोतेदारः 58 वर्ष. राज्यसभा सांसद. नेहरू-गांधी परिवार के स्थायी वफादार. धवन पर नजर रखने के लिए श्रीमती गांधी की मंडली में शामिल किए गए थे. कोई राजनैतिक आधार नहीं. सोनिया के लिए अति उत्साह दिखाने का असली उद्देश्य अपना प्रभाव बनाए रखना था.

गुलाम नबी आजादः 46 वर्ष. संजय गांधी की मंडली में रहे. अपना आधार नहीं. राजीव के चाटुकार और अंतरंग मंडली में शामिल. मुस्लिम छवि रखने वाले. इंका के महासचिव. गांधी परिवार से निकटता के चलते अपना अस्तित्व होने के कारण सोनिया को समर्थन दिया.

सतीश शर्माः 43 वर्ष. राज्यसभा सांसद. राजीव के विवादास्पद पायलट मित्र. अपना आधार नहीं. सोनिया और उनके बच्चों के प्रति पारिवारिक वफादारी और अपने राजनैतिक अस्तित्व के दो पाटों में फंसे हुए. सोनिया का नाम सिर्फ इसलिए आगे बढ़ाया कि राज दरबार में दबदबा बना रहे.

इसी समय कोई फैसला कर सकते हैं?" तभी धवन और उनके साथी भी अंदर आ गए. आखिर नरसिंह राव को कहना ही पड़ा कि पवार सही सवाल उठा रहे हैं.

पवार अकेले ऐसे नेता थे जिनकी निगाहें चुनाव के बाद के परिदृश्य पर टिकी हुई थीं. वे सोनिया के बजाए नरसिंह राव का समर्थन कर रहे थे ताकि मौका आने पर वे मुख्यमंत्री पद का इस्तेमाल पार्टी को अपने हक में लाने के लिए कर सकें. उन्होंने पी. चिदंबरम, रंगराजन कुमारमंगलम और एम.जे. अकबर जैसे उन युवा सांसदों के साथ तालमेल बिठाने के प्रयास भी शुरू कर दिए जिन्हें राजीव का वफादार तो माना जाता है लेकिन जो सोनिया को अध्यक्ष बनाए जाने के पक्ष में नहीं हैं.

इस बारे में एक महत्वपूर्ण बात यह रही कि 10, जनपथ पर राज करने वाली इस चौकड़ी ने इंका कार्यसमिति की बैठक में खुद को निमंत्रित करके उसकी संरचना को बदलने की भी कोशिश की. कार्यसमिति के मामलों के इंचार्ज और पार्टी महासचिव हरकिशनलाल भगत ने फोतेदार, जीतेंद्र प्रसाद और विंसेंट जॉर्ज को कार्यसमिति की बैठक में आने की तो अनुमति दी जबकि उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री नारायणदत्त तिवारी को दिल्ली में होने के बावजूद बैठक में आमंत्रित नहीं किया गया.

कार्यसमिति की इस बैठक में यह एकदम स्पष्ट हो गया कि ऐसे लोग जिन्हें राजीव ने उनकी गांधी परिवार के प्रति निष्ठा की वजह से अपने साथ लिया था, अब पार्टी नेतृत्व को अपने नियंत्रण में रखना चाह रहे थे और वंशवाद को बनाए रखने का प्रयास कर रहे थे. इस तरह 'ऑपरेशन धवन' जिसे गुलाम नबी आजाद, सीताराम केसरी, बलराम जाखड़ और मीरा कुमार जैसे लोगों का समर्थन प्राप्त था, पहले दौर की बाजी मार ले गया.

लेकिन इस चौकड़ी को तब मुंह की खानी पड़ी जब लगातार 15 घंटे तक सोनिया को मनाने के प्रयासों के बावजूद सोनिया ने अध्यक्ष पद स्वीकार करने से इनकार कर दिया. सोनिया गांधी को अमिताभ बच्चन तथा उनके अन्य मित्र बार-बार यही समझाते थे कि वे राजनीति में न कूदें. इन मित्रों को सबसे अधिक चिंता उनकी और उनके बच्चों की सुरक्षा की थी. उनकी दलीलों में कई और मुद्दे भी थे. जैसे:

- सत्ता के भूखे कांग्रेसी उन्हें फौरी राजनैतिक हितों के लिए इस्तेमाल करेंगे और चुनाव के बाद उन्हें भूल जाएंगे.
- उन पर घटिया किस्म के राजनैतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशांत पोजियार

पार्टी को संकट से उबारने के लिए वरिष्ठ नेताओं ने नरसिंह राव का समर्थन किया

नरसिंह राव के प्रस्तावक

माधव सिंह सोलंकी: 64 वर्ष. गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री. इंदिरा के वफादार. अन्य पिछड़ी जातियों में मजबूत आधार. राजीव के साथ कोई खास अंतरंगता नहीं थी. संगठन तथा मुख्यमंत्री पद से हटाए जाने के सवाल पर चौकड़ी से बदला चुकाने के वास्ते नरसिंह राव का समर्थन.

शरद पवार: 51 वर्ष. महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री. राजीव ने हमेशा उन्हें शक की निगाह से देखा और इनका खौफ खाया. मजबूत स्थानीय आधार. नरसिंह राव को समर्थन देने के पीछे राष्ट्रीय स्तर पर सत्ता के दांव खेलने के इरादे. प्रधानमंत्री पद के भी दावेदार हो सकते हैं.

पी. शिवशंकर: 61 वर्ष. राज्यसभा सांसद. इंदिरा के वफादार. राजीव के मंत्रिमंडल में रहे. अपना कोई आधार नहीं. नरसिंह राव को समर्थन के पीछे अपने राज्य में उन कांग्रेसियों से दो-दो हाथ करने की इच्छा जिन्होंने उन्हें राजीव की खास चौकड़ी से दूर हटाया.

प्रहार किए जाएंगे. भाजपा और जनता दल उनके खिलाफ विदेशी रिश्तों समेत ऐसे हर सौदे का इस्तेमाल करेंगे जिनसे राजीव के संबंध रहे हों. चुनाव मैदान में सोनिया के कूदने के बाद उनके विरोधी बोफोर्स, एच.बी.जे. पाइपलाइन, उर्वरक संयंत्र और इतालवी व्यापारिक रिश्तों जैसे घोटालों को उछालने लगेंगे जिससे उन्हें बदनाम किया जा सके.

► आतंकवाद के विरुद्ध कड़ा रवैया अपनाना ही पड़ेगा. इससे उनकी और बच्चों की जान खतरे में पड़ जाएगी.

► अपनी इन राजनैतिक कोशिशों के बावजूद पार्टी इस चुनाव के रास्ते सत्ता में नहीं आ पाई तो उन्हें अपमान भी सहना पड़ेगा और वे महत्वहीन भी हो जाएंगी.

पार्टी नेताओं को लिखे गए अपने एक भावुक पत्र में सोनिया ने विनम्रता से अध्यक्ष पद के प्रस्ताव को ठुकरा दिया. लेकिन 'ऑपरेशन धवन' अभी भी ठंडा नहीं पड़ा बल्कि उसकी गति और बढ़ा दी गई. अब कांग्रेस संसदीय दल को सक्रिय किया गया. आम तौर पर इस दल की बैठक अध्यक्ष या फिर उसकी अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष बुलाता है. इसलिए इसे या तो प्रोफेसर एन.जी. रंगा बुलाते या राज्यसभा में पार्टी नेता पी. शिवशंकर. लेकिन इनके बजाए संसदीय दल की बैठक धवन के एक वफादार चंद्रशेखर रेड्डी ने बुलाई जो पार्टी सचिव हैं.

दल की बैठक के एजेंडा में एक प्रस्ताव का मसौदा था जिसमें से इस तथ्य को जान-बूझकर बाहर कर दिया गया कि सोनिया को अध्यक्ष पद की पहले ही पेशकश की जा चुकी है. शिवशंकर ने इस मसौदे में भारी फेरबदल कर डाले. लेकिन इससे पहले कि वह इसे पेश करते पार्टी के 'हुल्लड़ ब्रिगेड' ने उन्हें घेर लिया. बिहार के राज्यसभा सांसद एस.एस. अहलूवालिया का साथ देने के लिए राज्यसभा सांसद विश्वजीत सिंह के अलावा अर्जुन सिंह के दो वफादार सुरेश पचौरी और रत्नाकर पांडेय कूदकर सामने आ गए. ये सब मांग कर रहे थे कि संसदीय दल प्रस्ताव पारित कर सोनिया को पार्टी अध्यक्ष नियुक्त किए जाने का स्वागत करे. लेकिन शिवशंकर ने स्वीकृत नियमों से बाहर जाने से इनकार कर दिया और अहलूवालिया तथा उनके गिरोह को बताया कि इस सभा में कांग्रेस अध्यक्ष की नियुक्ति नहीं की जा सकती.

इस चौकड़ी के लिए सबसे ज्यादा कठिनाई सोनिया की जिद ने पैदा की. लेकिन 'ऑपरेशन धवन' की गाड़ी का ईंधन अभी खत्म नहीं हुआ था. कार्यसमिति की अगली बैठक बुलाने के बजाए केंद्रीय चुनाव समन्वय समिति की बैठक बुला ली गई. लेकिन यह बैठक भी बिना कोई फैसला लिए समाप्त हो गई.

अब तक कई पूर्व मंत्री और वरिष्ठ नेता इस बात से बहुत खफा हो चुके थे कि पार्टी अध्यक्ष के बारे में कोई फैसला नहीं हो सका है जो पार्टी के लिए आत्मघाती हो सकता है. वसंत साठे ने नरसिंह राव के नाम का प्रस्ताव रखा. एक अन्य पूर्व केंद्रीय मंत्री दिनेश सिंह की मांग थी, "कार्यसमिति अभी और बिना अधिक देरी किए पार्टी के कार्यवाहक अध्यक्ष के नाम का फैसला करे ताकि पार्टी को हुए नुकसान की भरपाई हो सके. सोनिया गांधी का नाम पार्टी की कमान संभालने के लिए इतनी जल्दबाजी के साथ रखा गया कि इस बात की भी चिंता नहीं की गई कि उनके पति का क्षत-विक्षत शव उनके सामने पड़ा हुआ था."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवान सिंह

समर्थकों की राय में तिवारी चुनाव के बाद प्रधानमंत्री पद के दावेदार होंगे

नारायणदत्त तिवारी के समर्थक

राजेंद्र कुमारी वाजपेयी: 66 वर्ष. उत्तर प्रदेश इंका अध्यक्ष रहीं. इंदिरा की वफादार. विशेष आधार नहीं. राजीव के मंत्रिमंडल में रहीं पर खास प्रभाव नहीं था. उत्तर प्रदेश में ब्राह्मणों के बिखरते आधार को बचाए रखने के लिए तिवारी का समर्थन.

जगन्नाथ मिश्र: 54 वर्ष. राज्यसभा सांसद. राजीव के अविश्वासपात्र. मजदूर संगठनों और मुसलमानों में ठोस आधार. तिवारी को ठोस समर्थन देने के पीछे यह आशा कि तिवारी उन्हें फिर से स्थापित कर देंगे और कांग्रेस को हिंदी क्षेत्र में फिर से जमाकर बिहार में कांग्रेस की हालत सुधार देंगे.

श्यामाचरण शुक्ल: 65 वर्ष. मध्य प्रदेश में विपक्ष के नेता. केंद्र में कोई भूमिका नहीं. छत्तीसगढ़ के वनवासियों में अच्छा आधार. नारायणदत्त तिवारी को ब्राह्मण होने के कारण तथा अपने घोषित राजनैतिक शत्रु अर्जुन सिंह की जड़ें काटने के लिए समर्थन दिया.

ये शब्द बहुत कड़वे थे लेकिन इसके बावजूद चौकड़ी ने हार नहीं मानी. कुछ इंका नेताओं का मानना है कि अर्जुन सिंह ने सोनिया का नाम इसीलिए पेश किया था कि उनके इनकार की हालत में उनका अपना नाम सोनिया की ओर से उठाया जा सके या फिर इसका सबसे अधिक लाभ उन्हें ही मिले.

लेकिन शरद पवार और नारायणदत्त तिवारी ने इसका विरोध किया. आखिरकार पवार ने नरसिंह राव को चुनावों तक अस्थाई नेता के रूप में स्वीकार करने की हामी भर दी. तिवारी के नाम को उत्तर के ब्राह्मण गुट का समर्थन मिला जिसका मानना था कि जिन 323 सीटों के लिए मतदान होना है उनमें उत्तर की करीब 100 सीटों पर तिवारी ही नतीजों को प्रभावित कर सकते हैं. तिवारी के पक्ष में एक दलील यह भी दी गई कि गैर-कांग्रेसी नेताओं में वी.पी. सिंह और चंद्रशेखर ठाकुर हैं इसलिए इंका की ओर से उनका मुकाबला कोई ब्राह्मण ही कर सकता है.

लेकिन अभी पार्टी की इस भीतरी लड़ाई के लिए मोर्चेबंदी शुरू ही हुई थी कि अर्जुन सिंह कलाबाजी दिखा गए. यह देखते हुए कि अध्यक्ष पद की इस लड़ाई में उनकी दाल नहीं गलने वाली, अर्जुन सिंह ने भविष्य में अपने मुकाबले आने वाले तिवारी को पटखनी खिलाने के लिए नरसिंह राव का समर्थन करने की घोषणा कर दी और यह भी कह दिया कि वे खुद इस पद के दावेदार नहीं हैं.

बेचारे तिवारी, जिन्होंने अभी-अभी अपने लिए कुछ समर्थन जुटाने में सफलता पाई थी, मन मसोसकर रह गए. हथियार डालते हुए उन्हें आखिर नरसिंह राव के समर्थन की घोषणा करनी ही पड़ी. इस ऊहापोह और कलह के बीच नरसिंह राव ही ऐसे व्यक्ति निकले जिनके नाम पर आम सहमति थी. चौकड़ी ने भी उन्हें स्वीकार कर लिया. चौकड़ी को यह भरोसा था कि नरसिंह राव में सत्ता से किसी भी कीमत पर चिपके रहने की चाह नहीं है. लिहाजा, वे चौकड़ी के लिए खतरा सिद्ध नहीं होंगे. पिछले दिनों चली इस आंतरिक लड़ाई से एक बात तो स्पष्ट हो गई है कि अब कोई भी नेता एक साथ पार्टी अध्यक्ष और प्रधानमंत्री पद पर बैठने की हिमाकत नहीं करेगा. शायद यही कारण था कि उत्तराधिकार की इस लड़ाई में उस तरह की मारकाट नहीं मची जिसकी कल्पना की जा सकती थी. अब पार्टी अध्यक्ष बनने का अर्थ यह नहीं रहा कि पार्टी की सारी सत्ता उसी व्यक्ति के हाथ में चली जाएगी. यही नहीं अब तो नारायणदत्त तिवारी के कई समर्थक यह मानकर चल रहे हैं कि चुनावों के बाद संसद में पार्टी नेतृत्व पर उनका दावा और मजबूत हो जाएगा.

उधर, पवार ने भी अपने वक्तव्य में यह स्पष्ट कर दिया है कि पार्टी अध्यक्ष का प्रधानमंत्री भी होना जरूरी नहीं है. उन्होंने पार्टी में साझे नेतृत्व के विचार का भी समर्थन किया है. देखने-सुनने में ऐसी बातें भले ही बहुत आकर्षक लगें पर एक ऐसी पार्टी में, जिसमें पिछले चार दशक से एक ही परिवार का राज चलता आया हो, इन्हें लागू कर पाना बहुत आसान नहीं होगा. जिस तरह से कांग्रेस पार्टी जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी जैसे चमत्कारी नामों से अभिभूत रही है इस परंपरा को देखते हुए अब एक नया चमत्कार ही इस पार्टी को ज्यादा समझदार और स्वस्थ तरीके से चलने वाली पार्टी बना सकता है.

—प्रभु चावला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डगमगाती नैया को खेवैया की तलाश

कांग्रेस (इ) 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के हादसे से जल्द ही उबर गई थी. लेकिन उनके बेटे की मौत ने पार्टी को गहरे संकट में धकेल दिया है. पिछले हफ्ते इस पार्टी के भीतर जो कुछ हुआ, उससे उसकी छवि का कोई अच्छा प्रदर्शन नहीं होता. गौरवमय इतिहास (कम-से-कम हाल तक तो) वाली इस पार्टी की हालत राजीव गांधी के बिना लहरों में बहकर तट पर आ गई व्हेल मछली जैसी हो गई है. केरल से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक इंका नेता इस कड़वी सचाई को कबूलने की जद्दोजहद करते रहे कि अब अपना संबल उन्हें खुद ही बनना पड़ेगा.

ये नेता इतने दिग्भ्रमित थे कि नेता की मौत के हफ्ते भर तक चुनाव के दूसरे दौर के लिए नई रणनीति भी तय नहीं कर पाए. न उन्हें कोई दिशा निर्देश देने वाला था, न ही उनमें आत्मविश्वास का संचार करने के लिए कोई आगे आया. जो एकमात्र 'नया विचार' उन्हें सूझा, वह था सोनिया गांधी को मतदाताओं के आगे कर सहानुभूति के वोट बटोरना.

पार्टी की कमजोरी एकदम उभरकर सामने आ गई. राजीव की मौत से इंका कितनी असहाय हो गई थी, यह इसी से जाहिर हो जाता है कि न तो वरिष्ठ इंका नेताओं की बैठक बुलाई गई, न ही प्रदेश इंका अध्यक्षों की. 1984 में विभिन्न प्रदेशों के इंका पदाधिकारियों को नई दिल्ली बुलाया गया था और वे पार्टी की चुनावी रणनीति तैयार करने में शामिल थे. इस बार तो कांग्रेस कार्यसमिति की विस्तृत बैठक बुलाने के विचार को भी तरजीह नहीं दी गई, उसे मानने की बात तो छोड़ ही दीजिए. जैसा कि इंका कार्यसमिति के एक पदाधिकारी ने कबूल किया, "दुर्भाग्य से हमारे पास एक भी ऐसा नेता नहीं है जिसे देश भर में पार्टी का समर्थन प्राप्त हो."

राजीव के उत्तराधिकारी का चयन करते वक्त इंका की असहायता चरम पर दिखी. प्रधानमंत्री पद के लिए अपने उम्मीदवार के चयन पर इंका पहली बार बचाव की मुद्रा में नजर आई. इससे पहले कभी ऐसा मौका नहीं आया, जब पार्टी नेता के बिना चुनाव के मैदान में उतरी हो. एक इंका प्रवक्ता की कैफियत थी, "ये लोग (भाजपा और राष्ट्रीय मोर्चा) हमारे नेता के बारे में क्यों पूछ रहे हैं? क्या उन्होंने प्रधानमंत्री पद के लिए अपने उम्मीदवार की घोषणा कर दी है?"

विडंबना तो यह है कि कांग्रेस में प्रतिभाशाली नेताओं की कमी नहीं रही. लेकिन जिस भी व्यक्ति में नेतृत्व की प्रतिभा दिखाई दी, पार्टी ने उसे ही दबा दिया. शरद पवार से लेकर नारायणदत्त तिवारी तक हर नेता के पर राष्ट्रीय स्तर पर उभरने से पहले ही कतर दिए गए. नतीजतन, जैसे ही 10, जनपथ से आदेश आने बंद हुए, पार्टी की प्राणवायु ही चुक गई. जैसा कि सीताराम केसरी की टिप्पणी थी, "इसमें कोई शक नहीं कि राजीव इंका के पर्याय थे. नेहरू-गांधी परिवार के नेतृत्व के बिना हम पार्टी की कल्पना ही नहीं कर सकते."

कांग्रेस के भीतर प्रतिभाशाली नेताओं की कमी नहीं रही लेकिन जिसने भी नेतृत्व की प्रतिभा दिखाई उसे दबा दिया गया

अजीत नैनन और अनिल शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशांत पंजियार

एक परिवार के प्रति स्वामीभक्ति की इस मानसिकता ने ही इस पार्टी कमजोर किया है. और आज इस कमजोरी को बखूबी देखा जा सकता है. दक्षिण में हालांकि पार्टी का व्यापक आधार है लेकिन दक्षिण से कोई भी ऐसा नेता नहीं है, जो ऐसे नाजुक मौके पर पार्टी की बागडोर संभाल ले. उत्तर भारत से कई बड़े नेता हैं लेकिन उनका आधार सिमटा हुआ है.

ये नेता इतने दिग्भ्रमित थे कि नेता की मौत के हफ्ते भर तक चुनाव के दूसरे दौर की रणनीति भी तय नहीं कर पाए. न उन्हें दिशा निर्देश देने वाला कोई था

राजीव और इंदिरा दोनों ने पार्टी अध्यक्ष और प्रधानमंत्री पद एक साथ संभालकर किसी नेता के उभरने की संभावना खत्म कर दी थी. मध्यम दर्जे के नेताओं को उनकी औकात बता देने की प्रवृत्ति को राजीव राज में तब और बढ़ावा ही मिला जब 1982-84 में पार्टी के महासचिव और बाद में प्रधानमंत्री के रूप में राजीव ने पुराने अनुभवी लोगों के मुकाबले युवा सांसदों को मौका देना शुरू किया. गुलाम नबी आजाद, दिग्विजय सिंह, ऑस्कर फर्नांडीस, बीरेंद्र सिंह, अशोक गहलोत, बलराम सिंह यादव और तारिक अनवर जैसे युवाओं को या तो इंका महासचिव बनाया गया या प्रदेश इंका की कमान सौंपी गई.

इन युवा नेताओं में पुराने नेताओं वाला अनुभव और सूझबूझ नहीं थी इसलिए वे वैसा संगठन नहीं बना पाए, जैसी कि राजीव को उम्मीद थी. सो, हैरत की बात नही कि वे जल्द ही हटा भी दिए गए. पुराने नेताओं को दरकिनार कर दिया गया था और नयों ने काबिलियत नहीं दिखाई इसलिए पार्टी के भीतर नेतृत्व-शून्यता आ गई.

जिस सुनियोजित तरीके से राज्य स्तर के नेताओं का सफाया किया गया, उससे पार्टी की समस्याएं ही उजागर होती हैं. पिछले हफ्ते जब इंका के सभी मुख्यमंत्री और प्रदेश इंका अध्यक्ष राजीव की अंत्येष्टि पर जमा हुए तो वे पहले से ज्यादा असुरक्षित नजर आ रहे थे. मसलन कर्नाटक के मुख्यमंत्री एस. बंगारप्पा की घबराहट साफ देखी जा सकती थी क्योंकि आलाकमान ने एक तरह से उन्हें राज्य पर थोप रखा था. इसी तरह आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री जनार्दन रेड्डी भी घबराए हुए थे. एकमात्र मुख्यमंत्री जिनमें अपनी कुर्सी बचाए रखने का आत्मविश्वास नजर आया, वे थे शरद पवार. हालांकि प्रदेश इंका अध्यक्ष की उनकी कुर्सी भी डांवाडोल लग रही है.

अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि पार्टी की कमान कौन संभालेगा? तमिलनाडु का राममूर्ति-मूपनार गुट या महाराष्ट्र का शरद पवार-गाडगिल गुट? या फिर दिल्ली की भगत-टाइटलर ब्रिगेड? यदि इनमें से किसी एक के हाथ में नेतृत्व आ जाता है तो क्या वे 'फूट डालो और राज करो' की नीति पर अमल करेंगे? एक बड़ी मुसीबत यह भी है कि कांग्रेसी खुशामदी और लोभी स्वभाव के लिए बदनाम हैं. उन्हें हरदम ऐसे नेता का सहारा चाहिए जो उन्हें सत्ता से मिलने वाले फायदे मुहैया कराता रहे. एक बार जब इन लोगों को यह एहसास हो जाए कि इन तथाकथित नेताओं में से एक भी उन्हें थोड़े बहुत सत्ता सुख की गारंटी नहीं दे सकता तो किसी भी नेता या गुट को पार्टी को जोड़े रखने में बहुत दिक्कतें पेश आएंगी.

लेकिन इस मामले का दूसरा पहलू भी है. और इस पहलू से पार्टी के लिए आशा की जो किरण जगती है वह यह कि यहां भी चंद्रशेखर की तरह ऐसा कोई नेता उभर सकता है, जिसे पार्टी की निरंतर उपेक्षा ने हाशिये पर धकेल दिया था. संभव है मौका मिलने पर वह अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर अनपेक्षित ऊंचाइयों को छू ले. और इंका के पास क्षेत्रीय नेताओं की ऐसी बड़ी जमात है जिनका व्यापक जनाधार है. लेकिन इंदिरा गांधी और राजीव ने उन्हें कभी ऊपर नहीं उठने दिया. इन नेताओं की वाजिब जगह राजेंद्र कुमार धवन और माखनलाल फोतेदार जैसे 'आधारविहीन' नेताओं ने हथियाई हुई है.

अब नेहरू-गांधी परिवार की छत्रछाया उठ जाने से क्षेत्रीय दिग्गज मसलन, नारायणदत्त तिवारी, अर्जुन सिंह, जगन्नाथ मिश्र और माधवराव सिंधिया (हिंदीभाषी क्षेत्र से), माधव सिंह सोलंकी और शरद पवार (पश्चिम से), जी.के. मूपनार, के. करुणाकरन और कुमारमंगलम (दक्षिण से) आगे आ सकते हैं, और कालांतर में राष्ट्रीय नेता वाली प्रतिभा दिखा सकते हैं. ऐसे में नाटकीय बदलाव भी आ सकता है. भीषण संकट और परीक्षण की घड़ी में इंका बिखरने की जगह परिपक्वता का प्रदर्शन कर सकती है, जो कि बहुत पहले हो जाना चाहिए था.

—प्रभु चावला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब सहानुभूति का सहारा

राजीव गांधी नहीं रहे. उनके हत्याकांड की छाया अब आगामी चुनावों पर पड़ रही है. राजनीति अब मुद्दों से हटकर सहानुभूति लहर पर आ टिकी है. अब मामला इंका की राजीव लहर बनाम भाजपा की मंदिर तथा राष्ट्रीय मोर्चे की मंडल लहर का रह गया है. यदि सहानुभूति लहर बहती है तो इंका को नाटकीय लाभ मिलेगा. पर सवाल यह है कि क्या सहानुभूति लहर बहेगी भी?

ऐसी किसी लहर का कोई तर्कसम्मत पूर्व संकेत नहीं मिला करता. मगर फिलहाल संकेत तो यही हैं कि राजीव गांधी की हत्या से इंका के प्रचंड विरोधियों का भी दिल नरम हो गया है. लेकिन क्या आम आदमी की प्रतिक्रिया उसी तरह जाहिर होगी, जैसी 1984 में इंका के पक्ष में सहानुभूति लहर के रूप में प्रकट हुई थी? इस बार इस पर लोग एकमत नहीं हैं. इंका के नेतागण भरोसे से कहते हैं, "राजीव जी का बलिदान बेकार नहीं जाएगा." हालांकि विपक्षी नेताओं का तर्क है कि सहानुभूति लहर तो बह सकती है पर उसका कोई दावेदार भी होना चाहिए.

माहौल में निराशा व्याप्त है. हिंसा से निजात पाने की इच्छा ही प्रबल है. इंका ने आगे के प्रचार के लिए राष्ट्रीय मोर्चे की 'विघटनकारी राजनीति' और भाजपा की 'सांप्रदायिक राजनीति' पर हल्ला बोलकर इस भावना को भुनाने का फैसला किया है.

इंका दक्षिण में बेहद आक्रामक अभियान चलाएगी जहां लोकसभा की बाकी बची 306 में से 100 सीटों पर चुनाव होना है. महाराष्ट्र, राजस्थान, ओडीसा और गुजरात के कुछ हिस्सों में भी सहानुभूति लहर पैदा हो सकती है, जहां इंदिरा गांधी और राजीव लोकप्रिय रहे. हालांकि उत्तर प्रदेश और बिहार में पार्टी को कठिनाई हो सकती है जहां मंदिर और मंडल के मुद्दे लोगों में घर कर चुके हैं. लेकिन इन इलाकों में भी महिलाएं और ग्रामीण जनता भावनाओं में बह सकती है.

सहानुभूति लहर बहने के डर से हर पार्टी अपनी चुनावी रणनीति को नया रूप दे रही है (देखें गैर-इंका पार्टियों पर लेख). इंका की मार्गरेट अल्वा बताती हैं, "अब जोर राष्ट्रीय एकता और अखंडता पर होगा." राजीव की मुस्कराती तस्वीरों वाले पोस्टर को चारों ओर लगाया जाएगा जिनमें नारा लिखा होगा, "मां-बेटे का यह बलिदान, याद करेगा हिंदुस्तान." राजीव के अलीगढ़ के भाषण के कैसेट भी बजाए जाएंगे जिसके बारे में कहा जाता है कि इसमें उन्होंने अपनी मृत्यु का पूर्वाभास व्यक्त किया था.

राज्यों से मिलने वाली खबरों के मुताबिक ज्यादातर स्थानों पर सहानुभूति लहर बनती दिख रही है. अब यह इंका के नेताओं पर है कि वे क्या करते हैं. अगर वे भावनाओं को उभारने में कामयाब रहते हैं तो राजीव के रहते पार्टी को जितने वोट मिलते, उनके न रहने से उससे अधिक वोट हासिल हो सकते हैं.

उत्तर

बढ़ते समर्थन से पार्टी को संबल

मध्य प्रदेश—कुल सीटें: 40, मतदान बाकी: 12 सीटों पर. राजीव की हत्या के बाद सहानुभूति की हवा से अब लस्त-पस्त इंका को थोड़ा सहारा मिला है. लेकिन बहुत कुछ इस पर निर्भर होगा कि पार्टी के नेता अभियान को किस तरह चला पाते हैं और प्रचार में राजीव के परिवार के लोगों की शिरकत कितनी होती है. पार्टी के हलकों में पी.वी. नरसिंहराव के पार्टी अध्यक्ष बनने की संभावना से खुशी है.

राजीव की मृत्यु के बाद बंद के दौरान भाजपा समर्थकों के घर और व्यापारिक प्रतिष्ठानों पर लोगों के गुस्से की गाज गिरी. अनेक स्थानों पर पार्टी के पोस्टर, बैनर, पर्चे भी तहस-नहस कर दिए गए जिससे उसे बचाव पर उतरना पड़ा. मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा ने कहा, "हत्या से राजनैतिक लाभ लेने की इंका की कोशिश सफल नहीं होगी."

इस राज्य में इंका को अपने पक्ष में हवा बनाने के लिए सिर्फ 5 फीसदी मतदाताओं के झुकाव की जरूरत है. सो, भाजपा नेताओं की चिंता वाजिब है, खासकर इसलिए भी कि वे राजीव विरोधी प्रचार पर जोर नहीं दे सकते. भाजपा के लिए सौभाग्य से उसके मजबूत गढ़ मध्य भारत क्षेत्र में चुनाव हो चुका है. इंका छत्तीसगढ़ और महाकौशल क्षेत्रों में पहले ही आगे दिखती है. साथ ही धार, मंदसौर और दुर्ग इलाकों में सहानुभूति लहर इसकी संभावना बढ़ा सकती है जहां भाजपा कड़ी टक्कर दे रही है.

राजस्थान—कुल सीटें: 25, मतदान बाकी: 10 सीटों पर. राज्य में इंका के पक्ष में 1984 जैसी सहानुभूति लहर बह रही है और उदयपुर और जोधपुर संभागों की 10 सीटों में से वह ज्यादातर जीत सकती है. पांच सीटों वाले जोधपुर संभाग को इंका का गढ़ माना जाता है जबकि उदयपुर को भाजपा का. सहानुभूति लहर के प्रारंभिक संकेत राज्य में स्वत:स्फूर्त बंद और कई जगहों पर भाजपा के पोस्टरों तथा कटआउटों को नष्ट करने से ही लगता है. पार्टी के आत्मविश्वास को जाहिर करते हुए इंका नेता हरिदेव जोशी ने कहा, "राजीव जी का बलिदान बेकार नहीं जाएगा." भाजपा के लिए यह सब अशुभ संकेत ही है क्योंकि प्रचार के आखिरी दौर में उसने अपना खोया आधार कुछ हद तक वापस पा लिया था.

उत्तर प्रदेश—कुल सीटें: 85, मतदान बाकी: 40 सीटों पर. राज्य की लोकसभा की 40 और विधानसभा की 125 सीटों के लिए प्रचार का दूसरा दौर शुरू हुआ तो इंका के शोक-संतप्त नेता आत्मविश्वास से भरे दिख रहे थे. पार्टी के सौभाग्य से ये सीटें मुस्लिम-बहुल रुहेलखंड क्षेत्र और पूर्वी, मध्य तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में हैं. इन पर भाजपा की मजबूत पकड़ है और यहीं सहानुभूति लहर का असर पड़ेगा. इंका के रमेश दीक्षित ने कहा, "कृतज्ञ राष्ट्र निश्चित ही राजीव की पार्टी को अपार बहुमत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जिताकर उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेगा.'' लेकिन पार्टी में नरसिंहराव को राज्य के नेता नारायणदत्त तिवारी के ऊपर बढ़त से पार्टी की संभावनाओं पर बुरा असर पड़ेगा.

भाजपा ने तो इंका पर तीखा हमला पहले ही शुरू कर दिया है. राजीव के न रहने से स्थायित्व का नारा अब बेदम लग सकता है. मुख्यमंत्री पद के दावेदार भाजपाई नेता कल्याण सिंह ने कहा, "सोनिया को पार्टी अध्यक्ष बनाने की पेशकश करके इंका ने अपना दिवालियापन जाहिर कर दिया है.'' लेकिन इंका के नेता ऐसा नहीं मानते. दीक्षित ने कहा, ''पार्टी और देश की एकता बरकरार रखने के लिए नेहरू-गांधी वंश परंपरा को जारी रखना जरूरी है.''

जनता दल के नेताओं का मानना है कि वे फायदे में रहेंगे. सहानुभूति लहर चाहे जितनी प्रबल हो, इससे सिर्फ ब्राह्मण मतदाताओं का झुकाव भाजपा के बदले इंका की ओर हो जाएगा और जनता दल मजबूत होकर उभरेगा.

दक्षिण

दो राज्यों में एकतरफा लहर

कर्नाटक—कुल सीटें: 28, मतदान बाकी: 27 सीटों पर. राजीव के स्पष्ट उत्तराधिकारी के अभाव में यहां इंका को सहानुभूति लहर का फायदा नहीं मिलेगा. राजीव ने वीरेंद्र पाटील को जिस तरह बेआबरू करके हटाया, वह आज भी लोगों को याद है. उत्तरी कर्नाटक में लिंगायत समुदाय पर पूर्व प्रधानमंत्री की मौत का खास असर नहीं पड़ सकता. तटवर्ती क्षेत्रों में भाजपा फायदे में रह सकती है. हालांकि 1989 में इंका ने 28 में से 27 सीटें जीत ली थीं पर इस बार उसे झटका लग सकता है. इस बार 20 या उससे अधिक सीटें हथियाने के लिए उसे सहानुभूति लहर की सख्त जरूरत है.

आंध्र प्रदेश—कुल सीटें: 42, मतदान बाकी: 25. इंदिरा गांधी की हत्या ने 1984 के चुनावों में यहां इंका की संभावनाएं नहीं बढ़ाई थीं. लेकिन राजीव गांधी की हत्या से राज्य में भावनात्मक उभार इसके लिए कारगर साबित होगा. तेलुगु देशम के नेता भी मानते हैं कि इंका को बढ़त मिल गई है. नंदमूरि तारक रामराव भले ही राजीव की हत्या के बाद भड़की हिंसा और पार्टी के सदस्यों की संपत्ति नष्ट करने की घटनाओं पर काफी हो-हल्ला कर रहे हों पर इससे उत्तरी तेलंगाना, रायलसीमा और उत्तर के तटवर्ती जिलों में इंका की संभावनाओं पर फर्क पड़ने की कम ही उम्मीद है.

तमिलनाडु—कुल सीटें: 39, मतदान बाकी: 39 सीटों पर. चूंकि राजीव गांधी की हत्या यहीं हुई और इस निर्मम घटना की याद अभी ताजा है इसलिए पार्टी यहां सहानुभूति लहर पर सवार होगी ही. इंका-अन्ना द्रमुक गठजोड़ सभी 39 संसदीय सीटों पर अपार जीत तो दर्ज करेगा ही, विधानसभा चुनाव में भी इसकी संभावना बढ़ जाने की पूरी उम्मीद है. राजीव की हत्या में तमिल चीतों का हाथ होने के संदेह के कारण इंका यह उम्मीद कर सकती है कि उसे तमिल चीतों की समर्थक मानी जाने वाली द्रमुक के खिलाफ लोगों की नाराजगी का भरपूर लाभ मिलेगा. हालांकि सोनिया को पार्टी का नेता बनाया जाना लोगों को पसंद आता पर नरसिंहराव का स्वागत होगा. राव को गैर-विवादास्पद व्यक्ति भी माना जाता है और राज्य में पार्टी नेताओं के साथ उनके संबंध मधुर भी हैं.

केरल— कुल सीटें: 20, मतदान बाकी: 20 सीटों पर. राजीव की हत्या के बाद हवा का रुख इंका की अगुआई वाले संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे के पक्ष में निश्चित ही रहेगा. नरसिंहराव के अध्यक्ष बन जाने से इसका असर और तेज होगा. इंकाई सूत्र सहानुभूति लहर के पक्ष में अंतिम संस्कार के दिन राज्य में स्वतःस्फूर्त बंद का हवाला देते हैं. लेकिन वाम मोर्चे के मुताबिक इसका सीमित असर होगा.

नक्शा: बी.के. शर्मा

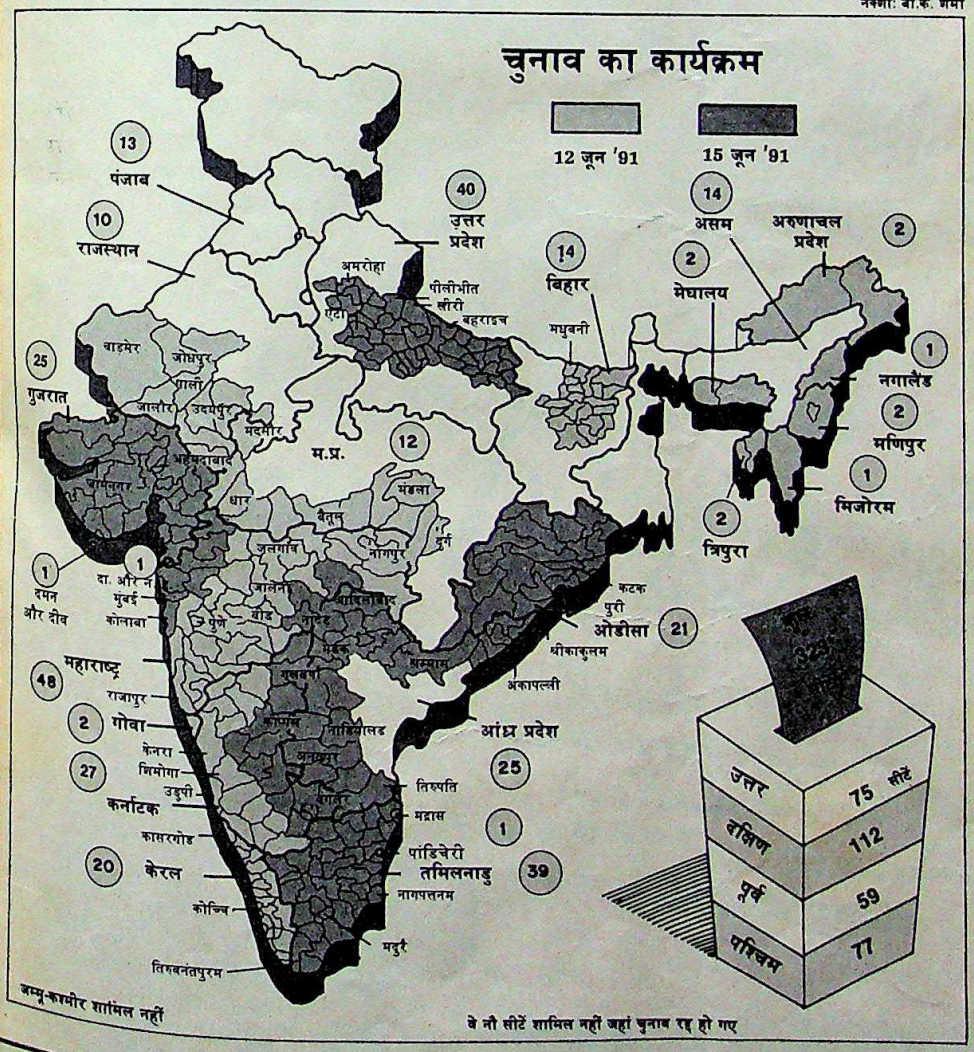

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- जनता से सरकार तक
- राष्ट्रीय चेतना का सजग प्रहरी
- एकमात्र निर्भीक पत्रिका
- राष्ट्रीय शक्ति का लेखा जोखा

देश का सबसे चर्चित हिन्दी साप्ताहिक
वार्षिक ग्राहक शुल्क : रु० १२०/-
पुस्तकालयों के लिए
५०% की विशेष छूट

हॉकर से मांगें या लिखें :
भारत प्रकाशन (दिल्ली) लि०,
२९ रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-११००५५

पाञ्चजन्य
साप्ताहिक

कदम कदम पर आराम का वादा
चलें ज़्यादा से ज़्यादा

REXONA® HAWAI

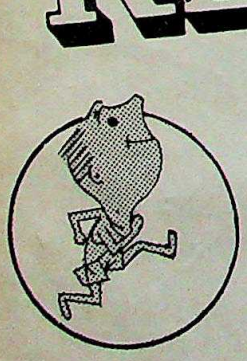

उत्कृष्ट क्वालिटी के मैटीरियल से
निर्मित यह चप्पलें वज़न में हल्की और
हर पांव के लिये आरामदेह है.
रैक्सोना हवाई चप्पलें हर मौसम में
हर जगह. आपका साथ निभाती हैं

रैक्सोना हवाई चप्पल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरब

सिर्फ ओडीसा और उत्तर-पूर्वी राज्यों में असर

ओडीसा—कुल सीटें: 21, मतदान बाकी: 21 सीटों पर. राजीव का दुखद अंत इंका की जान बचा लेगा. कई शहरों में स्वतःस्फूर्त बंद से अगर कोई संकेत मिलता है तो यही कि अगले चुनाव में 1984 की पुनरावृत्ति होगी जब जानकीबल्लभ पटनायक की बदनाम सरकार भी सत्ता में वापस आ गई थी. यहां कुल 21 संसदीय सीटों में इंका सिर्फ आठ या नौ सीटों पर टक्कर देने की हालत में थी. लेकिन अब कटक, ढेंकानाल, संबलपुर और पुरी जैसी 'कम उम्मीद वाली' सीटें भी इसके पक्ष में जा सकती हैं. राव के अध्यक्ष बनने से सहानुभूति लहर कम न होगी.

बिहार—कुल सीटें: 54, मतदान बाकी: 14 सीटों पर. राजीव की मौत से इंका को फायदा मिलने की जगह संभावनाएं कम हो गई हैं. नरसिंहराव ब्राह्मण हैं और उन्हें अध्यक्ष बनाए जाने से इस पिछड़ा-बहुल राज्य में नुकसान हो सकता है. पिछड़े जनता दल के साथ ही बने हुए हैं, हालांकि इंका को उन जगहों पर बढ़त मिल रही है जहां पहले भाजपा आगे थी. यानी सहानुभूति वोट अगड़ों से ही मिलेगा जो भाजपा समर्थक हैं.

प्रभात पजियार

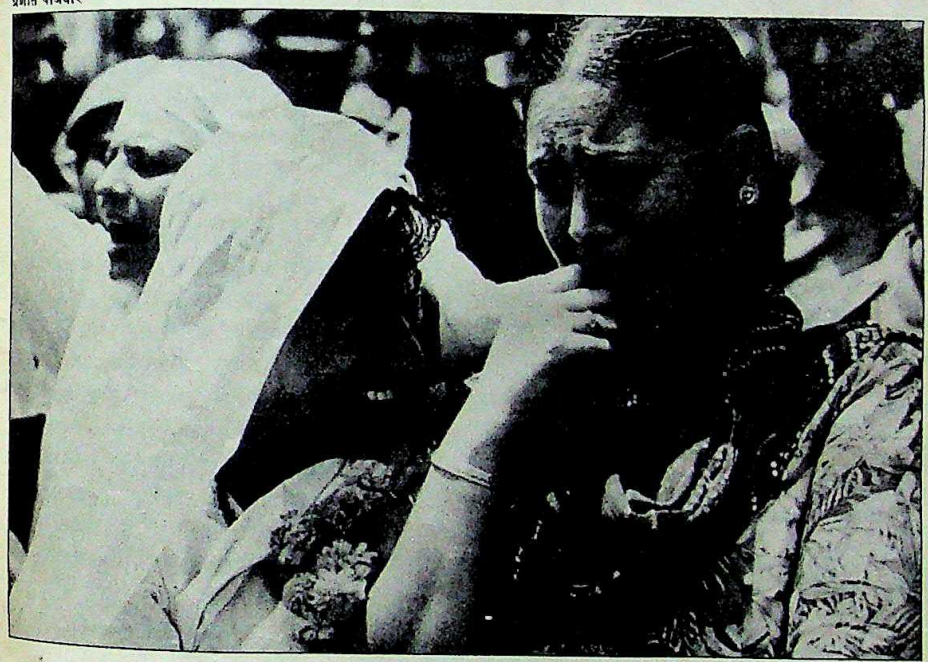

राजीव गांधी की मौत पर दुखी महिलाएं

हत्या से महिला और ग्रामीण मतदाताओं में सहानुभूति उपजने की संभावना है

असम—कुल सीटें: 14, मतदान बाकी: 14 सीटों पर. यहां सहानुभूति का नामोनिशान नहीं है. जब राजीव का अंतिम संस्कार किया जा रहा था तब भी 'आसू' राज्य से राष्ट्रीय सुरक्षा कानून हटाने के लिए प्रदर्शन कर रही थी. पहले इंका को अगप में टूट से लोकसभा की 14 और विधानसभा की 125 सीटों में से आधे पर जीत की उम्मीद थी. वैसे इंका 'उल्फा' और तमिल चीतों के कथित संबंध को उछालकर फायदे में रह सकती है पर असमियों की नाराजगी के डर से वह शायद ऐसा नहीं करेगी.

उत्तर-पूर्वी राज्य—कुल सीटें: 11, मतदान बाकी: 10 सीटों पर. इंका इन सीटों पर पकड़ बनाए रखेगी जिन पर 1989 में उसने जीत हासिल की थी. वनवासी और गैर-वनवासी दोनों ही इस क्षेत्र के लिए राजीव के प्रेम से प्रभावित हैं.

पश्चिम

त्रासदी से कोई खास असर नहीं

महाराष्ट्र—कुल सीटें: 48, मतदान बाकी: 48 सीटों पर. सहानुभूति लहर का पता तो प्रचार शुरू होने के बाद ही चलेगा. लेकिन जिन क्षेत्रों में इंकाई दिग्गजों, जैसे मुंबई में मुरली देवड़ा और पुणे में विट्ठल नरहरि गाडगिल को भाजपा से कड़ी टक्कर मिल रही है उनमें एक हल्की लहर भी उनकी जीत पक्की कर सकती है. विपक्षी नेताओं को राजीव की हत्या के असर की आशंका तो है पर भाजपा प्रदेश महासचिव धर्मचंद चोरडिया ने कहा, "कैसी सहानुभूति लहर? यहां तो सिर्फ शून्य है जिसे हम ही भर सकते हैं." लेकिन राजनैतिक परिदृश्य में नाटकीय परिवर्तन आ गया है. मुख्यमंत्री शरद पवार के विरोधी विट्ठल गाडगिल जैसे नेता और दूसरे असंतुष्टों की स्थिति डांवाडोल हो गई है. राजीव के न रहने से उन्हें पार्टी आलाकमान से समर्थन की अब और उम्मीद नहीं रही. नरसिंहराव के नेतृत्व संभालने के बावजूद राज्य में मुख्यमंत्री शरद पवार की ही चलेगी.

गुजरात—कुल सीटें: 26, मतदान बाकी: 25 सीटों पर. इंका की लहर का कोई संकेत नहीं है. यों तो राज्य में बंद रहा पर राजीव की हत्या पर कोई विशेष प्रतिक्रिया नहीं हुई. भाजपा के अभियान से प्रभावित मतदाताओं के अचानक मन बदलने की उम्मीद नहीं है. उन क्षेत्रों में सहानुभूति लहर का मामूली असर हो सकता है जहां इंका-जनता दल (गुजरात) के उम्मीदवारों की भाजपा से कांटे की टक्कर है. पर 15 जून तक यह असर भी न्यूनतम सीमा तक पहुंच सकता है.

इंका और उसके सहयोगियों को उम्मीद है कि अब ग्रामीणों और महिलाओं का रुख उनकी ओर मुड़ जाएगा. उधर, भाजपा ने भी अपनी चुनावी रणनीति बदलने में तत्परता दिखाई है. अब इसका मुख्य नारा होगा—स्थिर और मजबूत केंद्र ही आतंकवाद की चुनौती से निबट सकता है. पार्टी यह भी कहेगी कि नेताविहीन इंका के हाथों में देश सुरक्षित नहीं रहेगा. लेकिन भाजपा को वह हथियार नहीं मिल पाया जो उसे सोनिया गांधी के इंका अध्यक्ष बनने से मिल जाता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंसुओं और संवेदनाओं में भीगी यात्रा

दिवंगत नेता की यह अंतिम यात्रा थी—आंसुओं और अवसाद में भीगी हुई. पवित्र नदियों के संगम में विसर्जित करने के लिए अस्थियां विशेष रेलगाड़ी के सफेद रंग के डिब्बे में रखकर ले जाई जा रही थीं. जैसे-जैसे यह कारवां देश के हृदयस्थल से गुजरता गया, संवेदनाओं और शोक की लकीरें खिंचती चली गईं. 1,000 किमी के पूरे रास्ते में अस्थियों के दर्शन के लिए भीड़ उमड़ी पड़ रही थी. लोग उस परिवार को भी देखना चाहते थे जिसने इस हृदयविदारक त्रासदी को अद्भुत धैर्य और संयम से झेल लिया था.

राजीव गांधी की हत्या के पांच दिन बाद 'अस्थि कलश स्पेशल' जब स्टेशन दर स्टेशन होती हुई इलाहाबाद की ओर चली तो श्रद्धांजलि देने वालों की भीड़ हर कोने से उमड़ पड़ी.

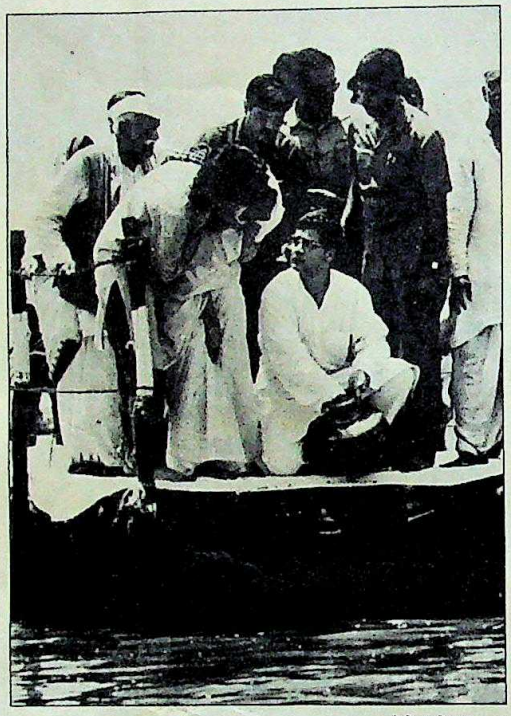

फोटो: प्रमोद पुष्करणा

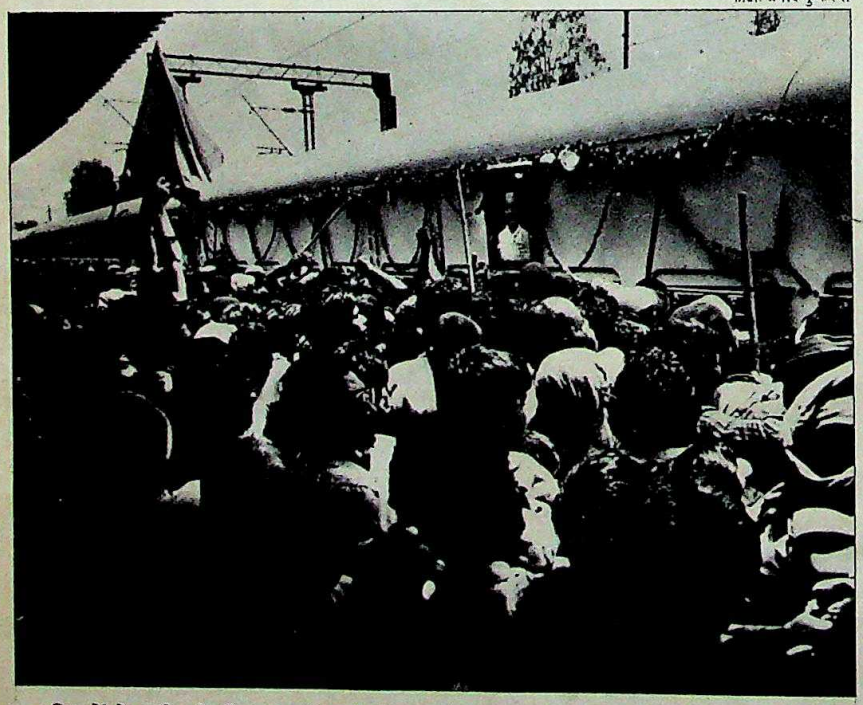

अस्थियों के दर्शन के लिए उमड़ी हुई भीड़; और (ऊपर) अंतिम रस्म पूरी करते राहुल

इलाहाबाद में नेहरू परिवार की परंपरा के मुताबिक अंतिम बिदाई

सोनिया ने भी उनकी संवेदनाओं को हल्की हुंकारी या नमस्ते से स्वीकार किया. राहुल और प्रियंका ने भी जान लिया कि इस मौके पर कैसा व्यवहार करना चाहिए. वे अपने डिब्बों में दोनों हाथ जोड़े झुककर बैठ गए ताकि उनके चेहरे लोगों को दिख सकें.

सुबह साढ़े तीन बजे रेलगाड़ी अमेठी पहुंची. लोगों का हुजूम वहां बड़ी बेताबी से इंतजार कर रहा था. पूरी यात्रा में पहली बार सोनिया खिड़की पर आईं और लोगों से बातचीत की. लोग उस शख्स को आंसुओं भरी श्रद्धांजलि देना चाहते थे जिसे उन्होंने वोट दिए थे और जिस पर उन्हें गर्व था.

नेहरू खानदान के पुश्तैनी शहर इलाहाबाद में लोग सड़कों के दोनों ओर कतारें बांधे खड़े थे. आनंद भवन की उदासी तो और भी गहरी थी. लंबे-चौड़े इतिहास और ढेर सारी यादों से जुड़े इस भवन में अब परिवार के एक और सदस्य की अस्थियां लाई गई थीं. जिस रास्ते से सोनिया और उनके बच्चे अपने रिश्तेदारों के साथ संगम की ओर गए वह नेहरू परिवार का जाना-पहचाना रास्ता था. हर बार जब परिवार के किसी सदस्य का निधन होता है तो लोग अकबर के किले के नीचे से नाव पर सवार होते हैं और गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के पवित्र संगम पर जाते हैं.

साधारण-सी रस्म पांच मिनट में ही खत्म हो गई. सोनिया और बाकी लोग विशेष रूप से बनाए गए मंच पर गए जहां से राहुल ने अपने पिता की अस्थियां विसर्जित कर दीं. उनको वापस आनंद भवन ले जा रही मोटर बोट ने जैसे ही गति पकड़ी, सोनिया और बच्चों ने किनारे की ओर तथा राजीव के बगैर अपने आगत भविष्य की ओर मुंह घुमाने से पहले सहज भाव से अपने हाथ पानी में डाल दिए.

—भास्कर राव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोलेस्टेरोल घटाना चाहते हों तो खाइए ये बादाम-गोलियां

असलियत तो यह है कि बादाम आपके खून में कोलेस्टेरोल की मात्रा घटा देते हैं. इनमें हाइ-मोनो अनसैच्युरेटेड फैट्स होते हैं जो दिल की बीमारी के खतरों को काफी हद तक कम कर देते हैं.

ब्लू डायमंड आमंड ग्रोअर्स, सेक्रेमेंटो, कैलिफोर्निया व्दारा जनहित के उद्देश्य से प्रकाशित

BLUE DIAMOND

जानकारी स्रोत: यू.एस.डी.ए. कंटीन्यूइंग सर्वे ऑफ फूड इनटेक्स बाइ इंडिविज्युअल्स 1986.

TSA-B/TPL/15691/HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गणित फर्क का

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

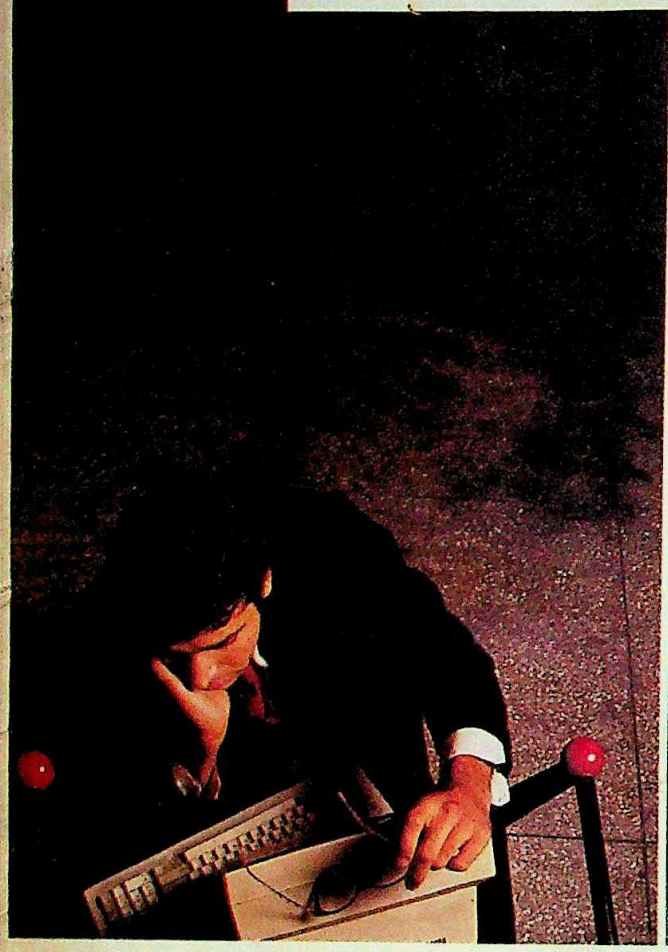

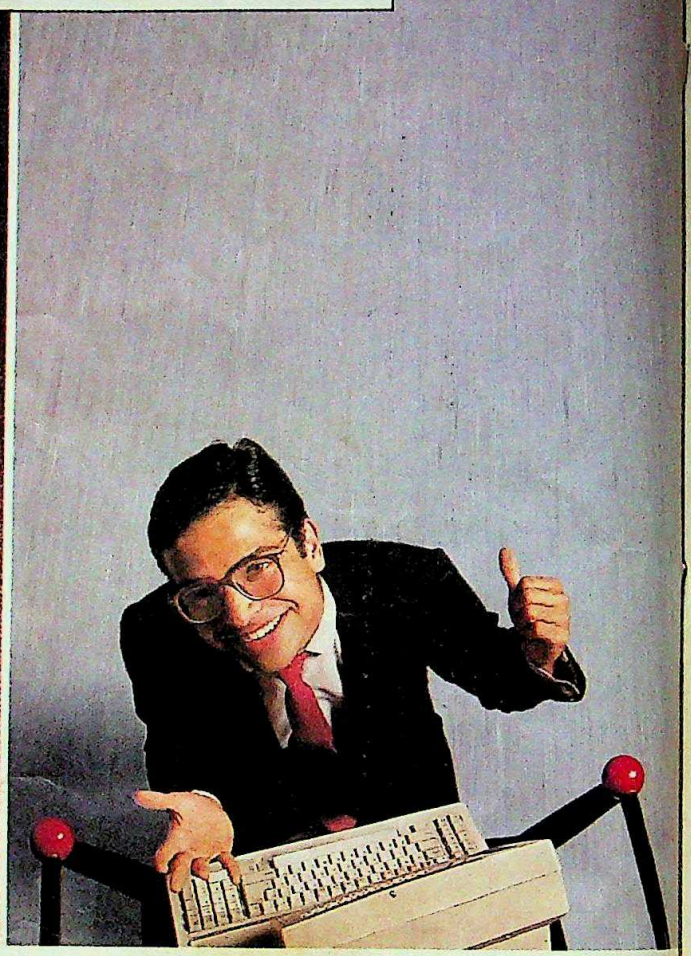

1360 रुपए का अंतर*

फायदे भी इतने सारे! दिखने में साफ-सुथरा और कामकाजी + सख्त और मजबूत (न टूटनेवाला) + स्वास्थ्यप्रद – कमरे को साफ रखे + बिछाने में आसान और जोड़ भी कम + टिकाऊ जर्मन प्रौद्योगिकी = मुनासिब सौदा, आपके फर्श के लिए। आपकी हर कसौटी (जरूरत) पर खरा।

WONDERFLOOR

VINYL FLOORING

आज ही वंडरफ्लोर खरीदिए।

और अंतर खुद ही परखिये।

टाइल आकार में भी उपलब्ध

(लगभग 171 रुपए प्रति वर्ग मीटर)

दर में उत्पाद कर शामिल है। अन्य कर और बिछाने का खर्च अलग से।

PREMIER VINYL FLOORING LTD

IN TECHNICAL COLLABORATION WITH proflan GERMANY

EXCELLENCE THROUGH INNOVATION & QUALITY

SAIENS COMMIT D • 1239

Sales Offices :

New Delhi : C 4 Commercial Centre, Safdarjung Dev. Area, New Delhi 110 016. Phone : 6864190. **Baroda :** No. 6, Kailash Park Society, Behind Central Bank, Race Course Rd., Ellora Park, Baroda 390 071. Phone : 321471. **Bangalore :** 190/1, 4th Floor, Kota Shopping Complex, Brigade Road, Bangalore 560 001. Phone : 571178. **Bombay :** 328, Kaliandas Udyog Bhavan, Behind Century Bazar, Worli, Bombay 400 025. Phone : 4300289/4228839. **Calcutta :** 3rd Floor No. 3, Netaji Subhash Rd., Calcutta 700 001. Phone : 281702/281703. **Chandigarh :** Gulshan Complex, Sector 17 B, Chandigarh 160 019. Phone : 43482. **Hyderabad :** Emerald Complex, 3rd Floor, Adj Park Lane, P.O. 2029, Sarojini Devi Road, Secunderabad 500 003. Phone : 844804. **Lucknow :** 20 Rana Pratap Marg, Lucknow 226 001. Phone : 234318. **Patna :** Shiva Dham, Kadam Kuan, Nala Road, Patna 800 003. Phone : 59342. **Bhubaneshwar :** Unit III, 113 Station Square, Bhubaneshwar 1. Phone : 408795. **Madras :** 5/39, CPWD Quarters, Indira Nagar, Madras 600 020. Phone : 6413272. **Pune :** Phone : 443300. **Cochin :** Phone : 346020. **Ahmedabad :** Phone : 409528. **Guwahati :** Phone : 60089.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

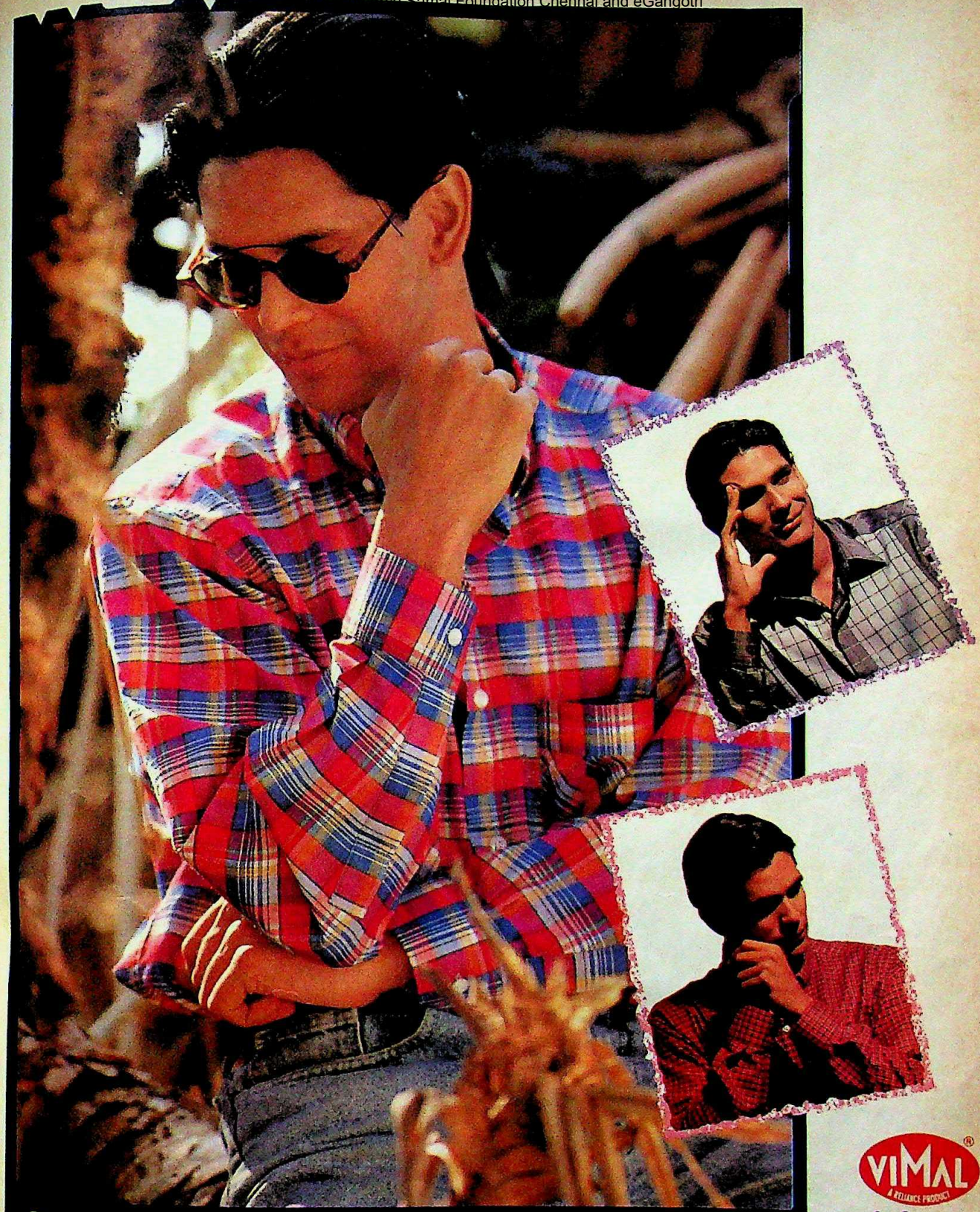

VIMAL
A RELIANCE PRODUCT
प्री मि य म
श र्टिं ग्स

विमल शर्टिंग्स. चाल पर चाल. चेक पर चेक. बड़े छोटे. भारी हल्के. 350 से भी ज़्यादा शानदार दाँव. हर महीने. तो अब अपनी चाल चलिए... यह चेक... और यह हुई बाज़ी आपकी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Mudra:A:RIL:5589 Hin.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तारीखों पर तीखी तकरार

जरा गरम मिजाज और अक्खड मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन को तनाव के वैसे क्षणों में कुछ खास ही मजा आता है जिन क्षणों में दूसरे लोग उलझन और सकते में पड़ जाते हैं. देश जबकि राजीव गांधी की हत्या से सदमे में था, शेषन ने 23 और 26 मई को होने वाले चुनावों की तारीखें बढ़ाकर 12 और 15 जून करके एक और विवाद को जन्म दे दिया. इस बार आश्चर्य की बात यह हुई कि उनके इस फैसले से सबसे ज्यादा शिकायत कांग्रेस को ही थी.

20 मई को मतदान के पहले चरण में देश के विभिन्न भागों में व्यापक हिंसा हुई और पचास से ज्यादा लोग मारे गए. चुनाव आयोग ने पहले ही तैयारी कर ली थी इसलिए हिंसा थोड़ी नियंत्रित रही. आयोग ने चुनाव से पूर्व सर्वेक्षणों में गड़बड़ी की आशंका वाले चुनाव क्षेत्रों की पहचान कर ली थी और राज्य सरकारों की सलाह से सुरक्षा की कड़ी व्यवस्था कर ली थी.

चुनावों में सुरक्षा सैनिकों की व्यापक तैनाती से केंद्र तथा राज्य सरकारों के पास रिजर्व सुरक्षाकर्मियों की कमी पड़ गई थी. इसलिए सात दिन के राष्ट्रीय शोक के दौरान चुनाव न कराने का शिष्टाचार तो बरतना ही था, हत्या के बाद गड़बड़ी की आशंकाओं के मद्देनजर कानून और व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी भी निभानी थी.

22 मई को शेषन ने चुनावों की नई तारीखों की घोषणा की ही थी कि पूरा देश जैसे चुनावी माहौल में पहुंच गया. इस फैसले के खिलाफ चारों तरफ से शिकायतें उठने लगीं. सभी पार्टियों ने अपना असंतोष जाहिर किया. शेषन के आक्रामक व्यक्तित्व के साथ उनकी पक्षपाती छवि ने चुनावों की तारीखें आगे बढ़ाने के फैसले के तटस्थ विश्लेषण में बाधा पहुंचाई.

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा

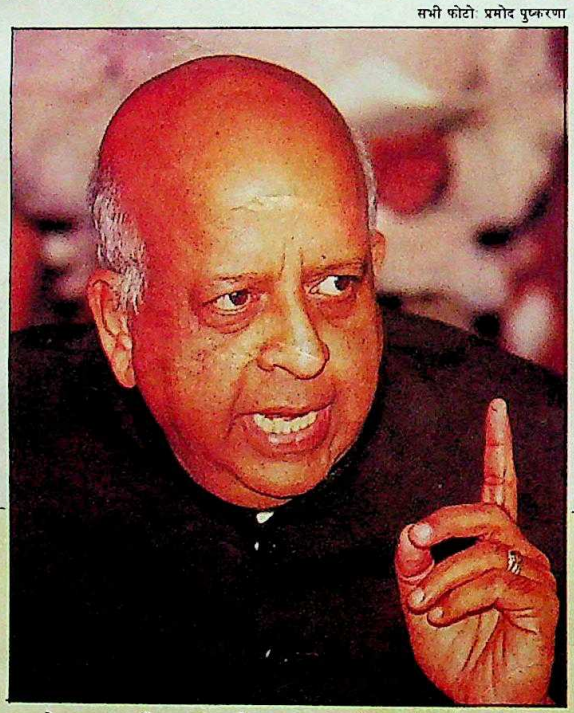

शेषन ने यह फैसला राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति आर. वेंकटरामन के साथ मंत्रिमंडल सचिव नरेशचंद्र की उपस्थिति में विचार-विमर्श के बाद किया. खबर है कि शेषन ने चुनावों को असम में 6 और 8 जून को होने वाले चुनाव के बाद कराने का फैसला पहले ही कर लिया था. इस मामले में उनमें और नरेशचंद्र में गंभीर मतभेद भी थे. नरेशचंद्र के मुताबिक परिस्थितियां ऐसी हैं कि चुनाव नई तारीखों से पहले भी कराए जा सकते थे.

पांच विवादास्पद मुद्दे

मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन अपनी दुस्साहसिक कार्रवाइयों से विवादों को जन्म देते रहे हैं. संवैधानिक प्रावधानों को हथियार बनाते हुए वे राजनैतिक हलके को चुनौती देते रहे हैं. आम चुनाव के संदर्भ में उनके निम्नलिखित पांच फैसलों ने उन्हें हमेशा सुर्खियों में रखा:

भाजपा के चुनाव चिह्न का फैसला: चुनाव से ठीक पहले भाजपा के अपने चुनाव चिह्न के दुरुपयोग के खिलाफ दायर याचिका की सुनवाई की तारीखें तय करके और इस पर यह फैसला देकर कि किसी राजनैतिक दल के पंजीकरण का मामला कोई तीसरी पार्टी भी उठा सकती है, उन्होंने पार्टी को नाराज कर दिया. भारी विरोध के बाद उन्होंने सुनवाई स्थगित कर दी.

अधिकारियों के तबादले: चुनावों से पहले बड़ी संख्या में अधिकारियों के तबादले के लिए शेषन ने पांच राज्यों की सरकारों को बुरी तरह फटकार लगाई.

गैस और फोन के कनेक्शन: केंद्रीय मंत्रियों द्वारा गैस और फोन के कनेक्शन मनमाने ढंग से जारी किए जाने पर उन्होंने आपत्ति की. इस पर संबंधित मंत्रियों ने गुस्सा जाहिर किया और प्रधानमंत्री को बीच-बचाव करके उन्हें शांत करना पड़ा.

बिहार में गड़बड़ी: बिहार में कानून और व्यवस्था की खराब स्थिति के बहाने उन्होंने वहां चुनाव टालना चाहा. इस पर उनकी आलोचना हुई कि वे राष्ट्रीय मोर्चे को नुकसान पहुंचाना चाहते हैं. अंततः उन्हें घोषित कार्यक्रम के अनुसार वहां चुनाव की मंजूरी देनी पड़ी.

चुनाव रद्द करना: व्यापक पैमाने पर धांधली का उदाहरण देते हुए शेषन ने बिहार और उत्तर प्रदेश के पांच चुनाव क्षेत्रों के चुनाव रद्द कर दिए. राष्ट्रीय मोर्चा ने इस कार्रवाई को पक्षपातपूर्ण बताया.

—आलोक तिवारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं

ओनिडा टी वी से ईर्षा न कीजिए. खरीद लीजिए.

ओनिडा २१

पड़ोसियों की जल जान. आपकी बढ़े शान.

Avenues.O.627.91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रपति भवन में एक और बैठक 22 मई की तड़के सुबह हुई जिसमें प्रधानमंत्री चंद्रशेखर, जो दो बजे रात में दिल्ली लौटने के बाद सीधे राष्ट्रपति भवन पहुंचे थे, कानूनमंत्री सुब्रह्मण्यम स्वामी और राष्ट्रपति मौजूद थे. इस बैठक में शेषन और नरेशचंद्र भी शरीक हुए. सात दिन का राष्ट्रीय शोक मनाने का फैसला भी संभवत: इसी बैठक में किया गया. स्वामी के अनुसार कानून और व्यवस्था का मसला सबसे ऊपर था. हिंसा की आशंका 10, जनपथ पर हुई उस घटना से नजर आ रही थी जिसमें भीड़ ने राष्ट्रपति की गाड़ी को राजीव गांधी के निवास के अंदर नहीं जाने दिया. राष्ट्रपति सोनिया गांधी से मिलकर उन्हें अपनी शोक संवेदना देना चाहते थे. उस बैठक में ये आशंकाएं जाहिर की गईं कि राजीव के निधन से किस कदर जटिल हालात पैदा होंगे.

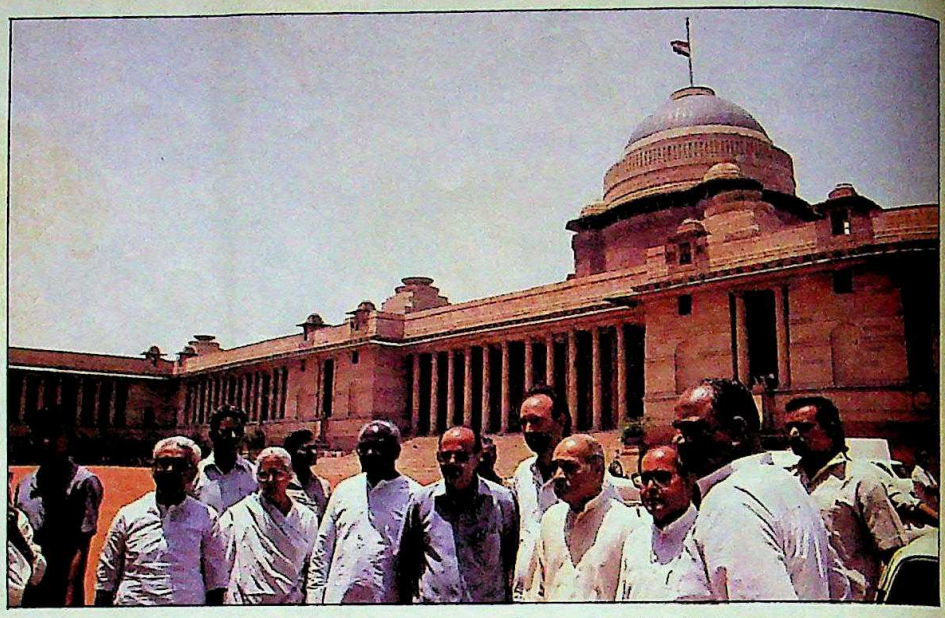

राष्ट्रपति वेंकटरामन से मिलकर लौटता इंका प्रतिनिधिमंडल

चुनाव की तारीखें आगे बढ़ाए जाने के फैसले से इंका भी नाराज

स्वामी के मुताबिक इस बैठक में ये विचार सामने आए— चुनाव अगर शोक की अवधि की समाप्ति के ठीक बाद 31 मई को कराए गए तो असम में होने वाले चुनावों के लिए वहां सुरक्षाकर्मियों के भेजने के लिए बहुत कम समय मिल पाएगा. असम के चुनाव में देरी की गई तो वहां मानसून शुरू हो जाएगा. असम में

CC-0. In Public Domain. Gur[illegible] Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आम तौर पर देश के बाकी हिस्सों से पहले ही मानसून शुरू हो जाता है. इसलिए संसदीय चुनाव के लिए 12 और 15 जून ही सबसे नजदीक की तारीखें हो सकती थीं ताकि असम से सुरक्षाकर्मियों को बाहर भेजने के लिए भी पर्याप्त समय मिले. इस विश्लेषण में दम नजर आता है.

गृह मंत्रालय के एक बड़े अधिकारी के मुताबिक चुनाव 29 मई को बिना किसी परेशानी के कराए जा सकते थे. पर उनका आगे कहना है, "लेकिन मतदान का दूसरा और तीसरा चरण 31 मई से आगे नहीं बढ़ाया जा सकता था क्योंकि इससे असम के चुनाव भी प्रभावित होते."

इसके बावजूद चुनावों को तीन हफ्ते टालने के फैसले ने काफी गरमी पैदा की. फैसले से ज्यादा शेषन की आलोचना हुई. उन्होंने खुद ही फैसला किया और बिना किसी राजनैतिक नेता या बड़े अधिकारी की सलाह किए टेलीविजन पर उसकी घोषणा कर दी. जिस नई लोकसभा को 5 जून तक गठित हो जाना चाहिए था वह अब 18 जून तक ही गठित हो पाएगी.

सबसे पहले आलोचना करने वालों में गैर-कांग्रेसी दलों के नेता थे. जनता दल के प्रवक्ता एस. जयपाल रेड्डी ने शिकायत की, "हमें अफसोस से कहना पड़ता है कि इस फैसले के बारे में हमसे कोई बात नहीं की गई. इससे गलत परंपरा की शुरुआत होगी." भारतीय जनता पार्टी ने भी फैसले की तीव्र आलोचना की. वह चाहती थी कि 12 जून को होने वाला मतदान किसी और दिन कराया जाए क्योंकि उस दिन अमावस्या है और बहुत-सी हिंदू औरतें उपवास रखती हैं. इसलिए वे मतदान के लिए नहीं जा सकती हैं.

उधर, राज्य सरकारों की चिंता यह थी कि उन्हें अपने पुलिस वालों को तीन और हफ्ते तक दूरदराज के क्षेत्रों में तैनात रखना पड़ेगा. जून के पहले हफ्ते में मानसून के आगमन की आशंका ने इन चिंताओं को और बढ़ा दिया. गुजरात, गोवा, महाराष्ट्र, कर्नाटक और ओडीसा जैसे तटवर्ती राज्यों ने भी मानसून को लेकर चिंता जाहिर की और चुनाव पहले कराने की मांग की. कांग्रेस के साथ शेषन के रिश्तों को याद करके आलोचकों ने तुरंत शक किया कि यह फैसला कांग्रेस को लाभ पहुंचाने के लिए किया गया है ताकि वह सदमे से उबरने की मोहलत पा सके.

लेकिन हुआ यह कि कांग्रेस ही इस फैसले से ज्यादा परेशान नजर आई. पार्टी के महासचिव गुलाम नबी आजाद ने शेषन को चिट्ठी लिखकर मांग की कि चुनाव की तारीखें पहले रखी जाएं. उन्हें शायद चिंता यह थी कि तीन हफ्तों में सहानुभूति लहर हो सकता है कमजोर पड़ जाए. कांग्रेस इस लहर का तुरंत और अधिकतम लाभ उठा लेना चाहती है. लेकिन दूसरों के विचार इससे भिन्न थे. राष्ट्रीय मोर्चा और वामपंथी दलों के गठजोड़ ने चुनाव आयोग से भेंटकर यह मांग की कि तारीखों में कोई परिवर्तन न किया जाए. और ओडीसा के मुख्यमंत्री बीजू पटनायक ने भी पैंतरा बदलकर इस मांग का समर्थन किया.

भाजपा भी इसके पक्ष में बोली. भाजपा अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी ने कहा, "अब अगर तारीखें बदली जाती हैं तो यह चुनाव का मखौल बनाना ही होगा."

और शेषन भी अचानक अपना रुख बदलते नजर आए. उन्होंने यह संकेत दिया कि चुनाव की तारीखें बदली जा सकती हैं. उन्होंने कांग्रेसी मुख्यमंत्रियों के एक प्रतिनिधिमंडल को यह आश्वासन भी दिया कि वे उनकी मांग पर विचार कर सकते हैं. अब अगर वे कांग्रेस की मांग को मान लेते हैं तो जाहिर है विवादों का मजा लेने में दिलचस्पी रखने वाले शेषन एक और विवाद को जन्म दे देंगे.

—आलोक तिवारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LEAVES YOU WITH NO *CHOICE*

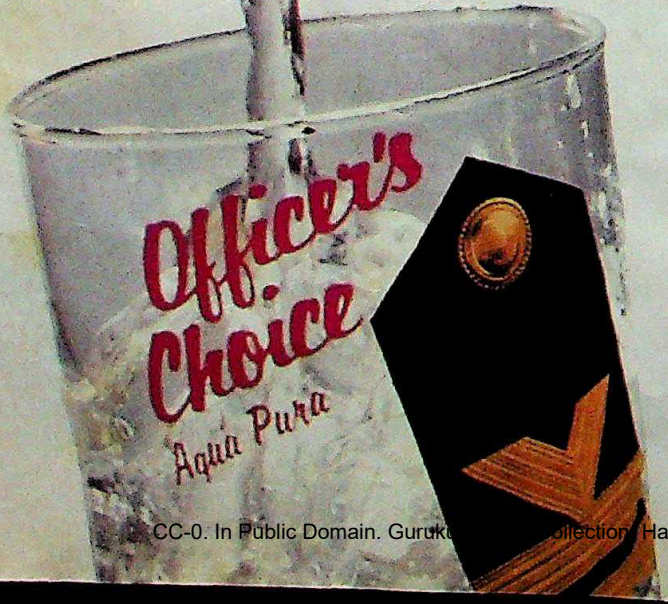

ATUL/RDP/1992

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

NAUGHTY, BUT NICE.

Tiny Tots
FROM

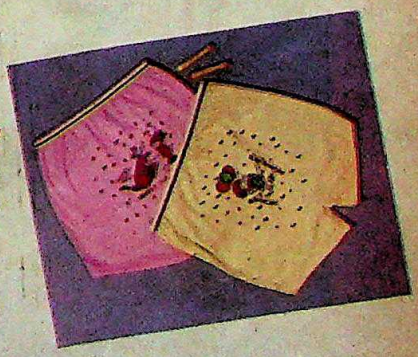

Lyril®

2000 SERIES OF UNDERGARMENTS

ATUL/RDP/1992

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म्यूज़िक टुडे

की नई पेशकश

सी 91016

महाराजापुरम संथानम *(गायन)*

करी समकुरु ; राम नीनू नामिन्ना ; हिमगिरि नैये/पदसनति मुनिजना : एहि अन्नपूर्णे ; शनमुखम भजः

सी 91015

एम बालमुरली कृष्ण *(गायन)*

नीदैया रादा ; वेगमय

बृहदीस्वरा : ओंकारा ; तिल्लाना

ए 91001

बिस्मिल्लाह ख़ान *(शहनाई)*

राग रागेश्वरी/राग शिवरंजनी

ए 91008

हरिप्रसाद चौरसिया *(बांसुरी)*

राग ललित/राग भूपाली

MAESTRO'S

हिन्दुस्तानी एवम् कर्नाटकीय

पहली बार.... भारतीय संगीत के चोटी के उस्तादों के स्वर में हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के खज़ाने में से उन्हीं की रूचि के रागों का बेहतरीन गुलदस्ता. हर संगीतकार की अपनी पहचान की महक वाले इन रागों और कृतियों का चुनाव उन्होंने स्वयं किया है. यही कारण है कि डिजिटल पद्धति से आपके लिए खास तौर से रिकार्ड किए गए ये कैसेट आपको अनूठी संगीत लहरियों में झुला कर मस्त कर देंगे.

उस्तादों की पसंद – आपके लिए संगीत का ऐसा खजाना जो भारतीय संगीत विरासत के मौजूदा प्रतिनिधियों की महारत का आइना है. चुनींदा दुकानों में उपलब्ध 17 कैसेटों का अनूठा सेट डाक या कूरियर सेवा के रास्ते आपके घर के दरवाज़े पर उपलब्ध.

ए 91009

राम नारायण *(सारंगी)*

मारवा/मिश्र देस और मिश्र भैरवी

ए 91005

गंगूबाई हंगल *(गायन)*

राग बिहाग/राग बागेश्री

सी 91017

टी एन कृष्णन *(वायलिन)*

महा गणपतिम ; मारि वेरे ; रघुवमसा सुधा/ सारसाक्षा ; [illegible]

सी 91014

वी दुरैस्वामी आयंगर *(वीणा)*

वैंकटासैल विहार ; चिंतैया मकंदा घन रागमलिका तानम ; तिल्लाना

MUSIC TODAY

इंडिया टुडे प्रस्तुति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ए 91003
रवि शंकर *(सितार)*
राग आसा भैरव
कौसी कान्हरा और मिश्र गारा धुन

ए 91004
भीमसेन जोशी *(गायन)*
राग रामकली/राग शुद्ध कल्याण

ए 91002
मल्लिकार्जुन मंसूर *(गायन)*
राग शुक्ल बिलावल/राग रईसा कान्हरा और राग आडंबरी केदार

ए 91006
किशोरी अमोनकर *(गायन)*
राग अहीर भैरव/राग संपूर्ण मालकौस

ए 91007
पंडित जसराज *(गायन)*
राग बैरागी भैरव/राग दरबारी कान्हरा

ए 91010
शिव कुमार शर्मा *(संतूर)*
राग भूपाल तोड़ी/राग कीरवाणी

CHOICE

कर्नाटकीय संगीत

ए 91013
ला रक्खा और ज़ाकिर हुसैन *(तबला)*
मत्त ताल/जय ताल और पश्तो

ए 91012
असद अली ख़ान *(रुद्र वीणा)*
राग आसावरी/राग मालकौस

ए 91011
ज़हीरुद्दीन और वसीफुद्दीन डागर *(ध्रुपद)*
राग ललित/राग कामबोझी

प्रति कैसेट 48 रु. (कर सहित). 1 से 4 कैसेट के आर्डर पर पैकिंग और वितरण शुल्क के रूप में 10 रु. अतिरिक्त. 5 या अधिक कैसेट के आर्डर पर पैकिंग और वितरण शुल्क नहीं लगेगा.

कृपया ध्यान दें

- दिल्ली से बाहर के चैकों पर 10 रु. अधिक जोड़ें.
- मुंबई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली से भेजे गए चैक/ड्राफ्ट का एम आई सी आर होना ज़रूरी है.
- केवल पूरी कीमत मिलने पर ही रजिस्टर्ड डाक या कूरियर से कैसेट भेजे जाएंगे.
- कृपया आर्डर के बाद डिलीवरी के लिए कम से कम 3-4 सप्ताह तक प्रतीक्षा करें.
- उपहार भेजने के लिए संलग्न आर्डर-फार्म का प्रयोग करें.
- अपने चैक/ड्राफ्ट और अन्य भुगतान 'म्यूज़िक टुडे' के नाम पर इस पते पर भेजें : – म्यूज़िक टुडे, पो बा. 29, नई दिल्ली- 110001.
- उपरोक्त आफर और कीमतें केवल भारत में लागू होंगी.
- यदि छपा हुआ आर्डर फार्म आप तक न पहुँचे तो कृपया सादे कागज़ पर अपना नाम, पता लिखकर अपने भुगतान के साथ इस पते पर भेजें :– म्यूज़िक टुडे, पो बा 29, नई दिल्ली- 110001

चुनींदा दुकानों मे भी उपलब्ध

मेल-आर्डर फार्म

कोड सं.	कैसेटों की संख्या
ए 91001	_____
ए 91002	_____
ए 91003	_____
ए 91004	_____
ए 91005	_____
ए 91006	_____
ए 91007	_____
ए 91008	_____
ए 91009	_____
ए 91010	_____
ए 91011	_____
ए 91012	_____
ए 91013	_____
सी 91014	_____
सी 91015	_____
सी 91016	_____
सी 91017	_____

हाँ, मैं 'म्यूज़िक टुडे' के कैसेट 48 रु. प्रति कैसेट की दर से खरीदना चाहता/चाहती हूँ. (कृपया 1 से 4 कैसेट तक के आर्डर पर पैकिंग और वितरण शुल्क के लिए 10 रु. अतिरिक्त भेजें). मुझे ये कैसेट

अपने लिए ☐ उपहार देने के लिए ☐

चाहिए. विवरण नीचे है.

इसके लिए 'म्यूज़िक टुडे' के नाम पर रु. _____ का क्रास किया हुआ चेक/डिमांड ड्राफ्ट संलग्न है (दिल्ली से बाहर वाले चैक पर 10 रु. अतिरिक्त जोड़ें)

कुल देय राशि रु. _____

मेरा नाम _____

पता _____

_____ पिन _____ फोन _____

उपहार पाने वाले का नाम _____

पता _____

_____ पिन _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रेम कहानी का त्रासद अंत

राजीव गांधी और सोनिया गांधी की प्रेमकथा मानो एरिक सीगल की बहुचर्चित पुस्तक 'लव स्टोरी' की पुनरावृत्ति ही थी. उनकी प्रेमकथा का अंत भी उतना ही हृदय विदारक, मर्मस्पर्शी रहा. अंतर सिर्फ यह है कि यह प्रेमकथा 23 वर्षों तक चली. और दो प्यारे, समझदार, व्यवहारकुशल पात्र सुरक्षा बंदिशों के घेरे में जीवन जीते रहे.

कैंब्रिज विश्वविद्यालय के रेस्तरां के ग्रीक मालिक ने इस प्रेम की भविष्यवाणी पहले ही कर दी थी. इसी रेस्तरां में राजीव की आंख सोनिया से लड़ी थी और वे उन्हें अपना दिल दे बैठे थे. राजीव ने रेस्तरां के मालिक चार्ल्स एंटोनी से मिन्नतें कीं कि वह उन्हें उस खूबसूरत इतालवी बाला के साथ बैठा दे ताकि वे उसे अच्छी त[illegible] समझ सकें. एंटोनी ने भी भले ग्रीक व्यवसायी की तरह कहा [illegible] इसके लिए उन्हें दोगुना बिल चुकाना होगा. जैसा कि बाद [illegible] एंटोनी ने राजीव पर सिमी ग्रेवाल की फिल्म में कहा है, "इस[illegible] पहले मैंने प्रेम में आकंठ डूबे किसी व्यक्ति को नहीं देखा था. [illegible] प्रेम के बारे में सिर्फ किताबों में पढ़ा था."

यह प्रेमकथा अंत तक जारी रही. राजीव लोगों के बीच अप[illegible] पत्नी की भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे और उसे दुनिया की 'स[illegible] खूबसूरत औरत' कहते थे. और इसमें कोई शक नहीं कि सोनि[illegible] उनकी जीवन में आने वाली एकमात्र महिला थीं, हालांकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघु राय

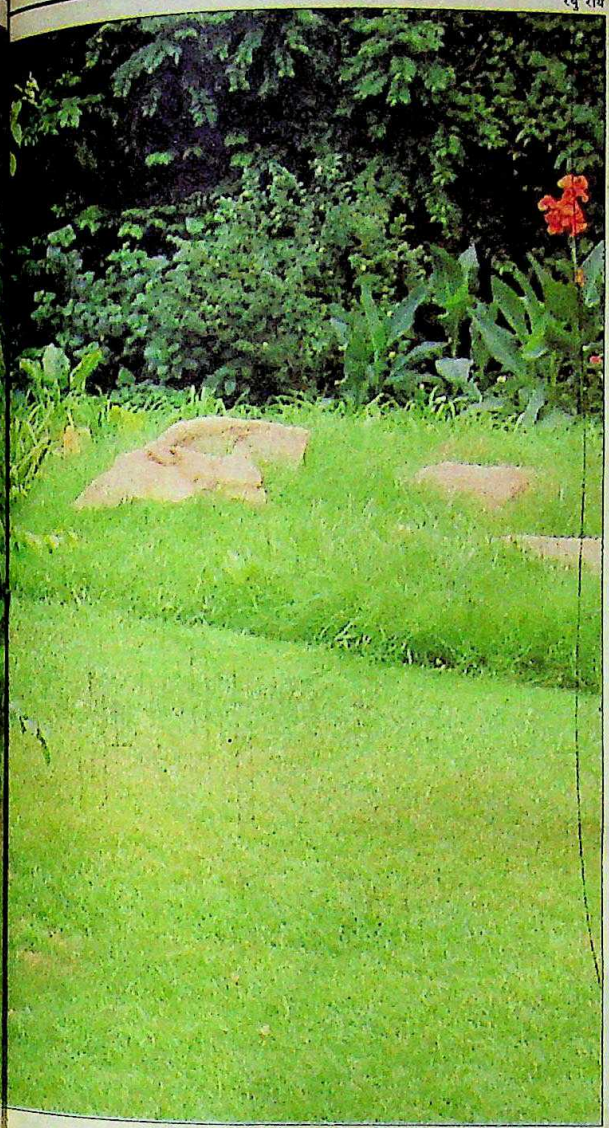

प्रेम कहानी अंत तक जारी रही. राजीव हमेशा अपनी पत्नी की प्रशंसा करते और कहते, "मेरे लिए यह दुनिया की सबसे खूबसूरत औरत है." वे प्रायः सोनिया का हाथ पकड़े रहते और अपना प्रेम प्रदर्शन करते. बिलाशक सोनिया उनके जीवन में आने वाली एकमात्र महिला थीं

सोनिया की मौजूदगी में सुंदर महिलाओं से दिल्लगी करने में चूकते नहीं थे. इस पर सोनिया झूठ-मूठ का गुस्सा दिखाते हुए राजीव की ओर कनखियों से देखने लगतीं. करीबी दोस्तों के बीच भी वे अपनी पत्नी से अलग नहीं होते थे. वे हमेशा सोनिया की बगल में बैठते और या तो उनका हाथ थामे रहते या फिर उनकी कमर में हाथ डाले रहते. हालत यह थी कि उनके दोस्त उन्हें 'चिपकू' कहते थे. राजीव ने एक बार माना भी था, "जब मैंने पहली बार सोनिया को देखा तो मुझे लगा कि हम एक-दूजे के लिए ही बने हैं. मैंने सोनिया को स्पष्टवादी और मुखर पाया."

राजीव खुद पूरी तरह से पारिवारिक व्यक्ति थे. बार-बार कही जाने वाली यह बात कि राजीव गांधी भारत के प्रधानमंत्री तो क्या राजनेता भी कभी नहीं बनना चाहते थे, पूरी तरह से सच थी. वे विमान चालक बनकर ही खुश थे. वे 5,000 रु. महीना पाते थे और उसी से घर का खर्च चलाते थे. वे अपने काम को बोझ नहीं, हॉबी मानते थे. उनके लिए परिवार पहले था. सोनिया और बच्चों के लिए उनके पास हमेशा समय होता था. वे उनके साथ खेल के मैदानों या पहाड़ों पर जाते या पुष्कर या जैसलमेर जाते. अपने कुत्तों से खेलने का समय भी उनके पास था. वे मेकैनिकल या इलेक्ट्रॉनिक चीजों की मरम्मत में भी दिलचस्पी लेते थे.

लगता है, राजीव और संजय को यह प्रतिभा अपने पिता फिरोज गांधी से विरासत में मिली थी. राजीव के पास औजारों आदि का एक शानदार संग्रह था जिसमें हर तरह के पेंचकस वगैरह अपनी जगह पर होते थे. वे कंप्यूटर प्रेमी, बहुत अच्छे इंजीनियर और संगीत प्रेमी भी थे. राजीव बीटल्स की जगह रोलिंग स्टोंस को ज्यादा पसंद करते थे.

जहां तक सोनिया की बात है, वे शर्मीली और अंतर्मुखी महिला हैं और राजनीति की चकाचौंध व प्रचार से घृणा करती हैं और अपने परिवार के प्रति ही पूरी तरह समर्पित रहीं.

सोनिया गांधी को कठोर, भ्रष्ट, राजनैतिक महत्वाकांक्षी और लोभी महिला कहा जाता था. यह भी कि उन्होंने अपने पति पर अपने असर का इस्तेमाल सरकारी नीतियों को प्रभावित करने और इटली में अपने रिश्तेदारों को फायदा पहुंचाने में किया. यह कभी साबित नहीं किया जा सका पर स्नैमप्रोगेती के स्थानीय प्रतिनिधि ओक्टिबिया क्वात्रोची से उनकी दोस्ती विवाद का स्रोत जरूर बनी. राजीव सरकार पर यह आरोप भी लगा कि इस इतावली उर्वरक बहुराष्ट्रीय कंपनी और उसके सहयोगियों को उर्वरक परियोजनाओं के ठेके दिए गए. आयकर दाताओं के पैसों पर कुछ छुटियां मनाने का भी आरोप लगा. राजीव के मित्र और सोनिया के संबंधी सरकारी विमान से लक्षद्वीप के मनोरम स्थानों पर गए. राजीव ने सोनिया के इतालवी संबंधों को नकारने की कोशिश की पर वे बचाव की मुद्रा में रहे.

लेकिन यह भी सच है कि सोनिया राजनीति या स्थानीय समाज से अलग-थलग ही बनी रहीं.

सोनिया ने राजीव के राजनैतिक सहयोगियों, सरकारी अफसरों या बड़े व्यवसायियों से संवाद बनाने से एकदम इनकार कर दिया था. राजीव के करीबी सहयोगी रहे मणिशंकर अय्यर कहते हैं, "सोनिया ने निजी और सार्वजनिक जीवन के बीच स्पष्ट बंटवारा कर रखा था. उन्होंने अपने को राजीव के सार्वजनिक जीवन के अंग के रूप में कभी नहीं देखा."

सोनिया के किसी भी मित्र ने एक क्षण को भी यह विश्वास नहीं किया कि वे राजीव की मृत्यु पर इंका का अध्यक्ष पद स्वीकार करेंगी. यह उस समय एकदम स्पष्ट हो गया जब सोनिया ने तीन मूर्ति भवन में अपने पति के शव के पास बैठे नगा प्रतिनिधिमंडल के एक सदस्य के ऐसे सुझाव को लगभग गुस्से में नकार दिया. सोनिया के मित्रों का भी विश्वास है कि वे भारत नहीं छोड़ेंगी. वे इतनी भारतीय हो गई हैं कि कहीं और नहीं रह सकतीं.

सोनिया के बारे में गलत धारणाएं इसलिए बनीं कि उन्हें इक्के-दुक्के लोग ही अच्छी तरह जानते हैं. सो, वे एकदम पहेली बनी रहीं. वे इस बात का पूरा ध्यान रखती थीं कि उनका घर लोगों की नजरों से दूर, गोपनीय बना रहे. मणिशंकर अय्यर, सैम पित्रोदा या पी. चिदंबरम जैसे करीबी सहयोगियों को भी उनके घर के अंतःपुर में जाने का सौभाग्य कभी नहीं मिला, साथ खाना खाने की बात तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचमुच बेजोड़

Amul COMFY

बनियान • ड्रावर
अंडरवियर

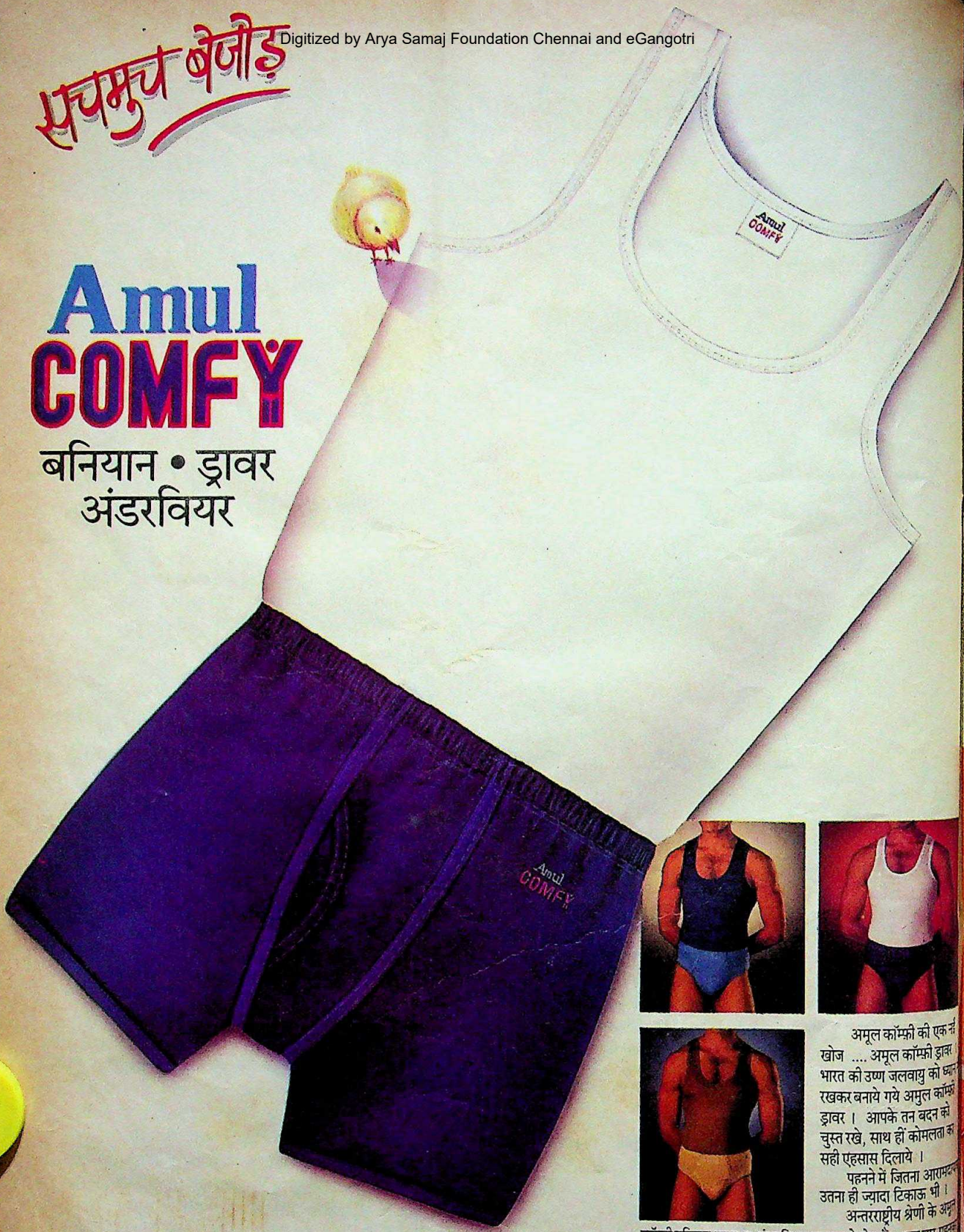

अमूल कॉम्फ़ी की एक नई खोज .... अमूल कॉम्फ़ी ड्रावर। भारत की उष्ण जलवायु को ध्यान में रखकर बनाये गये अमुल कॉम्फ़ी ड्रावर। आपके तन बदन को चुस्त रखे, साथ हीं कोमलता का सही एहसास दिलाये।

पहनने में जितना आरामदेह उतना ही ज़्यादा टिकाऊ भी।

अन्तरराष्ट्रीय श्रेणी के अमूल कॉम्फ़ी बनियान, ड्रावर व अंडरवियर सचमुच बेजोड़ हैं। एक बार पहनकर देखिए — फिर तो आपको दूसरा कोई जँचेगा ही नहीं।

अमूल कॉम्फ़ी

बनियान • ड्रावर • अंडरवियर

निर्माता जे. जी. इन्डस्ट्रीज़, तिरुपुर • कलकत्ता

STUAD/JG/2/91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहादुरों के लिए रेड एण्ड व्हाइट पुरस्कार

अपनी बहादुरी की सच्ची घटनाएं जल्द भेजें

अगर आपने कभी दूसरों के लिए अपनी जान का ख़तरा मोल लिया हो—एक जीवन बचाने के लिए बाढ़ या आग से जूझें हों- या बहादुरी का कोई भी शानदार काम किया हो... तब रेड एण्ड व्हाइट आपको '१९९१ रेड एण्ड व्हाइट बहादुरी पुरस्कार' से सम्मानित करना चाहता है।

यह पुरस्कार **राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश एवं दिल्ली** के बहादुरों को अलग-अलग राज्यों के आधार पर दिया जायेगा।

निर्णय कौन करेगा?

श्री एच.आर. खन्ना, सुप्रीम कोर्ट के भूतपूर्व न्यायाधीश **लेफ्टिनेंट जनरल के.पी. कैंडेथ**, पी.वी.एस.एम. (रिटायर्ड) **श्री अरुण भगत**, दिल्ली के पुलिस कमिश्नर, **श्री अब्बास अली बेग**, भूतपूर्व टेस्ट क्रिकेट खिलाड़ी। इनका ही निर्णय मान्य होगा।

अपना किस्सा शीघ्र भेजें !

आपको सिर्फ़ यह लिख कर भेजना है कि घटना कैसे घटी। कैसे संकट आया। इसमें क्या-क्या ख़तरे थे। और आपने कैसे किसी व्यक्ति या अमूल्य चीज़ का बचाव किया।

याद रखिये, यह घटना पिछले एक साल यानि '१९९० के दौरान घटी होनी चाहिए। अपनी घटना किसी सरकारी अथवा पुलिस अधिकारी से सत्यापित एवं हस्ताक्षरित करवा कर हमें इस पते पर भेजें :

'बहादुरी पुरस्कार', गोडफ़्रे फ़िलिप्स इण्डिया लिमिटेड, ४९, कम्यूनिटी सेन्टर, न्यू फ़्रेन्ड्स कॉलोनी, नई दिल्ली-११००६५.
आख़िरी तारीख: १४ जुलाई '९१.

इसके साथ अपनी एक पासपोर्ट साइज़ की फ़ोटो भी भेंजें जिसके पीछे आपका नाम व पूरा पता साफ़-साफ़ लिखा हो।

और हाँ, अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हों जो इस पुरस्कार के काबिल हो तो आप उससे इस पुरस्कार के लिए आवेदन अवश्य करा दें।

प्रत्येक राज्य के लिये पुरस्कार :

प्रथम पुरस्कार	: रुपये २०,०००/- +स्वर्ण पदक
द्वितीय पुरस्कार	: रुपये १०,०००/- +रजत पदक
तृतीय पुरस्कार	: रुपये ७,०००/- +कांस्य पदक

तथा प्रत्येक सत्यापित आवेदन पत्र को बहादुरी प्रमाणपत्र दिया जायेगा। सभी विजेताओं को नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में सम्मानित किया जायेगा, जिसकी पूर्व सूचना उन्हें डाक द्वारा दे दी जाएगी। **क्योंकि रेड एण्ड व्हाइट का यह विश्वास है कि सच्ची बहादुरी की विशेष पहचान होनी चाहिए।**

रेड एण्ड व्हाइट
सच्चे लोग सच्चा आनन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशांत पंजियार

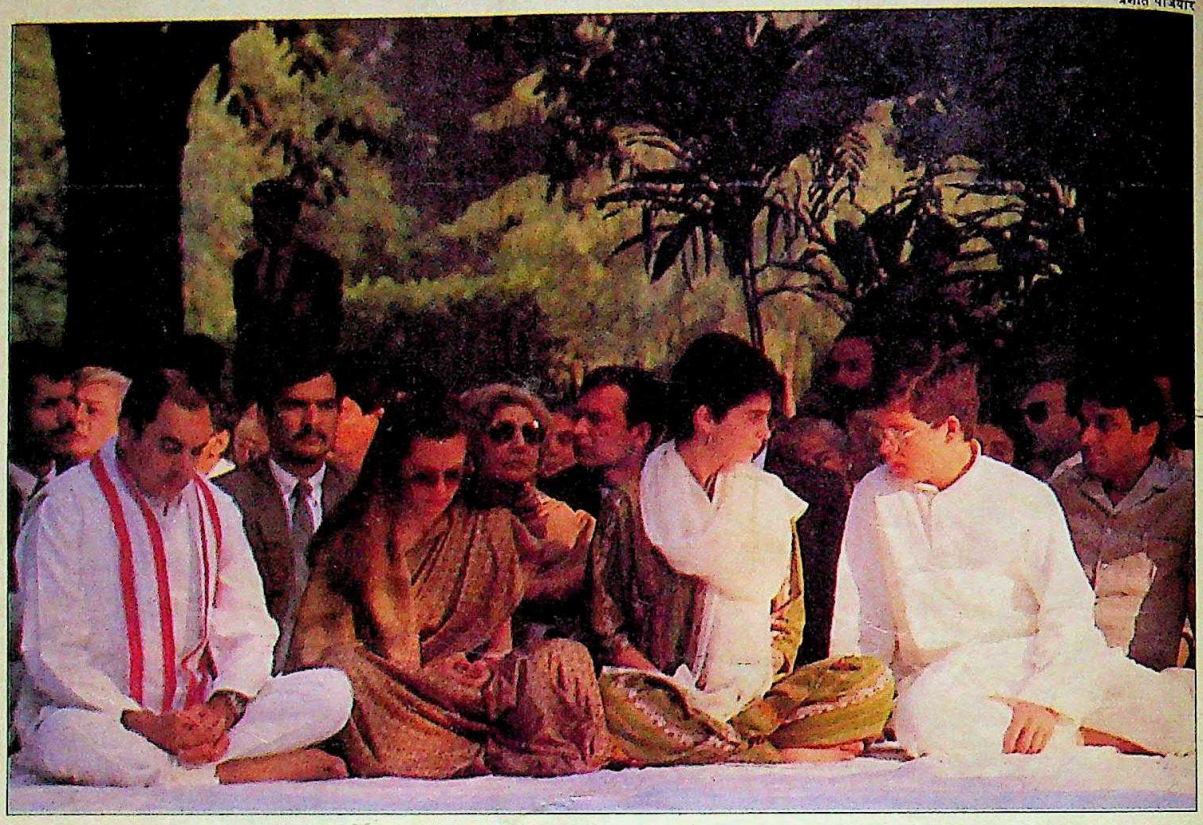

छोड़ ही दीजिए.

यह तथ्य है कि सोनिया कभी नहीं चाहती थीं कि राजीव राजनीति में शामिल हों. इंदिरा गांधी ने एक बार एक साक्षात्कार कर्ता से कहा था कि यदि राजीव राजनीति में आए तो मेरी बहू उन्हें तलाक दे देगी. यह भी उतना ही सच है कि राजीव ने सोनिया से राजनीति में न आने का वादा किया था. सोनिया को डर था कि यदि वे राजनीति में गए तो परिवार के लिए समय नहीं निकाल पाएंगे. उनका डर सही साबित हुआ. राजीव का राजनीति में आना उनके लिए दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुआ.

राहुल और प्रियंका अपने मां-बाप के संभ्रांत आचार-विचार के स्वाभाविक वारिस हैं. इस अपार विपदा में भी उनमें गजब का धैर्य दिखाई दिया. उन्हें हमेशा से यही सिखाया गया है कि वे किसी त्रासदी में धैर्य न खोएं और लोगों के बीच मर्यादित व्यवहार ही करें

संजय गांधी की मौत के बाद राजीव दो पाटन के बीच फंस गए. एक तरफ बिलखती हुई पत्नी के प्रति वफादारी थी तो दूसरी तरफ आंखों में आंसू लिए मां थीं जो बार-बार कह रही थीं कि उन्हें किसी और पर भरोसा नहीं है और संकट की इस घड़ी में उन्हें बेटे के सहारे की जरूरत है. सोनिया अपने कमरे में चली गईं और चार दिन तक रोती रहीं. उनकी आंखें धंस गईं, वजन कम हो गया. जब राजीव राजनीति में प्रवेश की घोषणा करने वाले थे, तब भी वे फूट-फूटकर रो रही थीं और उनसे अपना वादा निभाने को कह रही थीं. लेकिन जीत मां की हुई.

शुरू में इस युवा इतालवी लड़की को देश के प्रथम परिवार के तौर-तरीकों को अपनाने में काफी दिक्कत हुई. लेकिन जल्दी ही वे अपनी विशिष्ट सास की दुलारी और अंततः गांधी परिवार की स्तंभ बन गईं. इंदिरा गांधी ने उनमें बेटी का रूप देखा जिसकी उन्हें हमेशा से चाह थी. बदले में सोनिया भी श्रीमती गांधी से बहुत प्रभावित हुईं. इमरजेंसी बाद के कठिन वर्षों के दौरान जब श्रीमती गांधी और संजय को थोड़े समय के लिए जेल में डाल दिया गया था तब सोनिया का साहस और उनका संकल्प और भी उभरा. सो, उन पर श्रीमती गांधी की निर्भरता भी बढ़ गई. और जब श्रीमती गांधी को गोलियों से भून दिया गया तो एंबेसेडर कार में सोनिया ही उनका सिर अपनी गोद में रखकर अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान ले गई थीं. राजीव उस समय पश्चिम बंगाल के एक देहाती इलाके में थे. इस त्रासदी से उबरने में सोनिया को दो साल लगे. लेकिन, बकौल उनके एक मित्र के, "उस अनुभव ने उन्हें अंदर से फौलाद बना दिया."

राजीव हर काम को पूरी सफाई से करने में यकीन रखते थे. अपनी जगह से कोई भी चीज हट जाए, चाहे वह परदा हो, कपड़ा हो या पेंसिल, तो वे उसे खुद व्यवस्थित कर देते. कुछ साल पहले की बात है. राजकुमार चार्ल्स उनके घर दोपहर के भोजन पर आने वाले थे. हाल ही में घर में एक चित्र टांगा गया था जो ठीक नहीं बैठा था. राजीव ने नौकर-चाकरों के होते हुए भी खुद कील ठोंकी और उसे ठीक किया. लेकिन पेंट के ताजा होने के कारण खराब गंध आ रही थी. तत्काल कोई एयर फ्रेशनर न मिला तो राजीव ने अपना कीमती आफ्टर शेव लोशन निकाला और पूरे कमरे में छिड़क दिया.

राजीव तकनीकी क्षेत्र से राजनीति में आए और अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पहले मैं सोचता था अपना घर बनाने के लिए अमीर होना ज़रूरी है।"

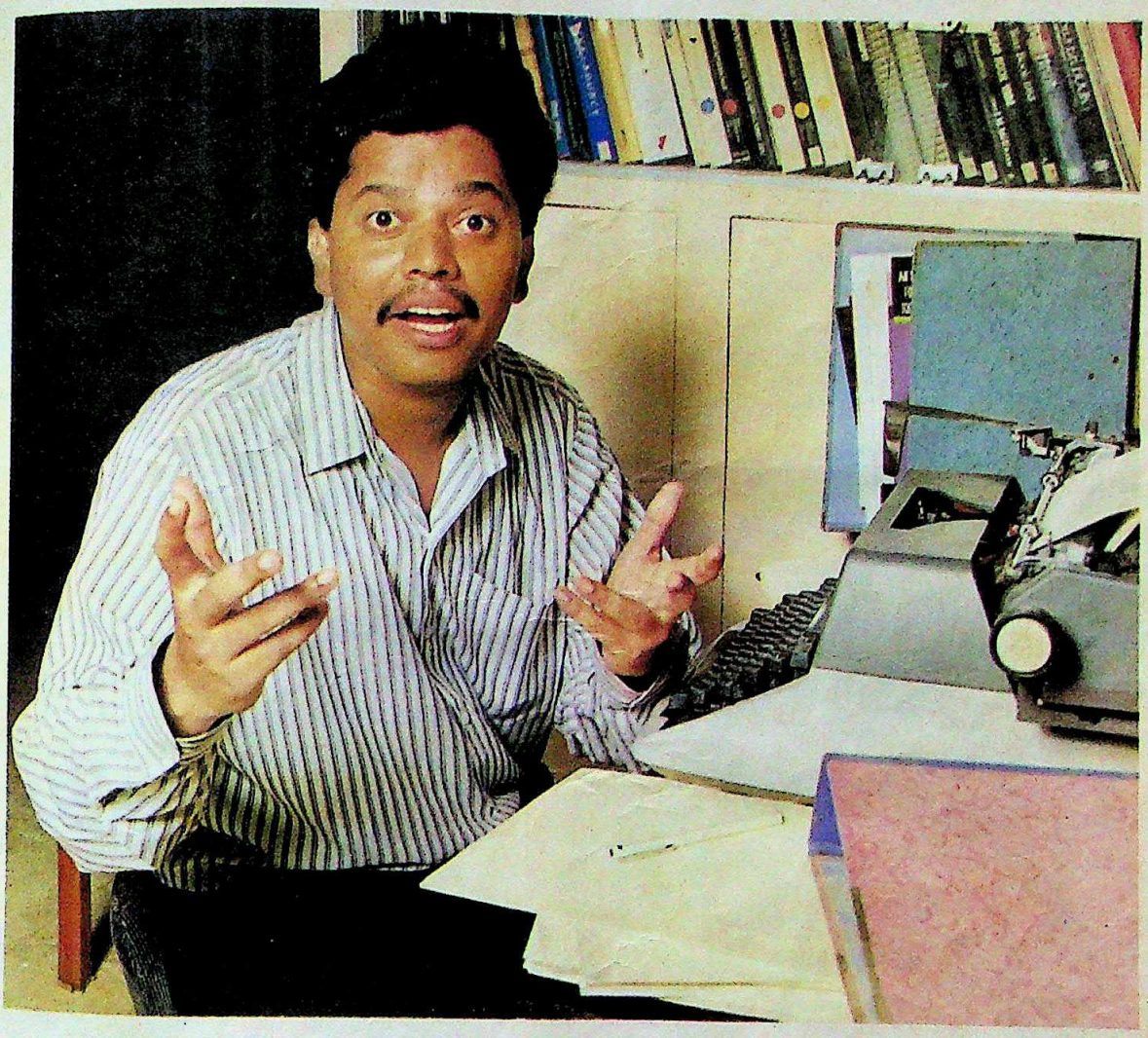

"लेकिन तब मैंने गृह ऋण खाता स्कीम का नाम ही नहीं सुना था।"

जी हाँ, इनकी तरह आप भी गृह ऋण खाता स्कीम की मदद से अपना घर बना सकते हैं। चाहे आज आपके पास पर्याप्त राशि न भी हो।

गृह ऋण खाता स्कीम बचत से जुड़ी एक विशेष योजना है जो आपको गृह ऋण लेने योग्य बनाती है। यह स्कीम इतनी आसान और सुविधाजनक है कि इससे वेतन-भोगी, दिहाड़ी पर काम करने वाले मज़दूर, व्यावसायिक, व्यापारी तथा किसान को भी फ़ायदा हो सकता है। इसके अतिरिक्त इस स्कीम में कर छूट का आकर्षण भी है।

गृह ऋण खाता स्कीम एक राष्ट्रीय योजना है। देश-भर में किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक या कई अन्य अधिसूचित बैंकों की नज़दीकी शाखा से सम्पर्क कीजिए, और आज ही अपना गृह ऋण खाता खोलिए।

राष्ट्रीय आवास बैंक
NATIONAL HOUSING BANK
(भारतीय रिज़र्व बैंक के पूर्ण स्वामित्व में)
हिन्दुस्तान टाइम्स हाऊस, छठी मंज़िल,
18-20, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली- 110 001.
बॉम्बे लाइफ़ बिल्डिंग, तीसरी मंज़िल,
45, वीर नरीमन रोड, फोर्ट, मुम्बई- 400 023.

हमारा लक्ष्य : सबके लिए आवास

Chaitra-D NHB 1690 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यक्षमता में वृद्धि. आधुनिक उद्य

Philips Lighting

PHILIPS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निउद्योग में.

फ़िलिप्स रोशनी का कमाल.

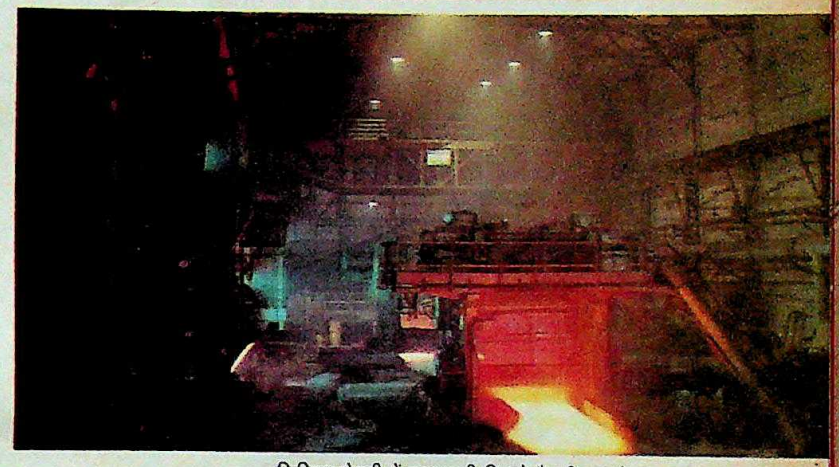

फ़िलिप्स रोशनी में जगमगाती टिस्को फ़ैक्ट्री, जमशेदपुर.

मशीनों की घर-घर तथा कामगारों के शोर-शराबे के ऊपर जगमगाती तेज़ रोशनी. प्रगति-पहियों को गति देती.. उत्पादन में बढ़ोतरी करती... मुनाफ़े की रेखा को नयी बुलंदियों तक पहुंचाती... फ़िलिप्स रोशनी.

फ़िलिप्स औद्योगिक रोशनी: बेहतर उत्पादन का एक और कारण.

हर जगह और हर ज़रूरत के लिए, कामकाज का आदर्श माहौल पेश करती है फ़िलिप्स रोशनी. अधिक सुरक्षा दे कर. काम में आराम पहुँचा कर. उत्पादन सीमा को और आगे बढ़ा कर. और सबसे महत्वपूर्ण... बिजली खर्च घटा कर.

जी हां. क्योंकि फ़िलिप्स के पास अधिकतम प्रकाश-क्षमता के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किये गये बिजली बचानेवाले प्रकाश साधनों व ल्युमिनेयरों की सबसे बड़ी मालिका है.

जैसे, जमेशदपुर के टिस्को कारखाने में, फ़िलिप्स इंडिया ने सॉन लैम्प के लिए विशेष हाई-बे ल्युमिनेयरों को विकसित किया है. परिणाम? रोशनी में पाँचगुनी वृद्धि तथा बिजली खपत में 51% की बचत.

सफलता के अन्य उदाहरण हैं: बंगलूर की टीवीएस-सुज़ुकी फ़ैक्ट्री; सुराजपुर की एस्कॉर्ट-यामहा फ़ैक्ट्री और मद्रास की केसीपी फ़ैक्ट्री और कलकत्ता के पास का हिन्दुस्तान मोटर्स.

हर एक जगमगाता उदाहरण है फ़िलिप्स रोशनी के कमाल का... फ़िलिप्स लिडेक (एलआइडीईसी) के तकनीकी उत्कर्ष का. लाइटिंग डिज़ाइन और इंजीनियरिंग सेंटर. औद्योगिक प्रकाश व्यवस्था में नये कीर्तिमान क़ायम करते हुए, हमेशा एक क़दम आगे.

औद्योगिक रोशनी में अग्रणी.
सारे संसार में

PHILIPS

HTA 2901

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

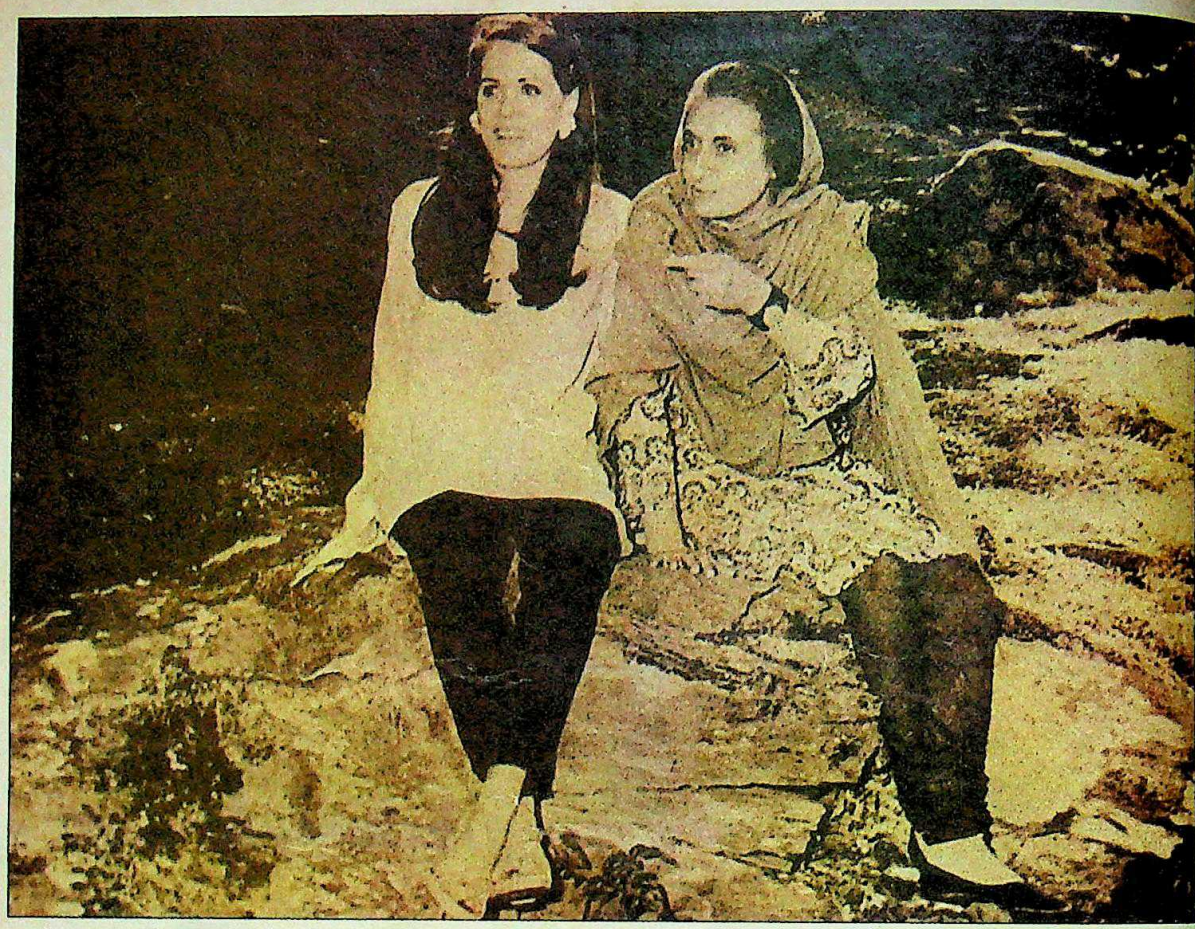

नजरिया बनाने में लग गए. फिर से चुने जाने के लिए उन्होंने अभियान में जैसे खुद को झोंक दिया. वह उनकी असीम शक्ति का प्रमाण था. साथ ही वे आत्म-संशय से भी ग्रस्त थे. वे प्रायः सोचते कि अपनी पार्टी की संदिग्ध मंशा वाले लोगों को सत्ता में लाना क्या ठीक है. उन्होंने हाल ही में अपने एक मित्र से कहा था, "मैं किसके लिए अभियान में इतना पसीना बहा रहा हूं. क्या मतलबी और लालची लोगों के उसी समूह को सत्ता में लाने के लिए?" सोनिया से अपना वादा तोड़ने पर भी उन्हें अपराध बोध हुआ था. राजीव ने स्वीकार किया था, "लोग काम में इतने मशगूल हो जाते हैं कि अपने परिवार और घर की उपेक्षा करने लगते हैं. हम भूल जाते हैं कि पत्नियां भी मनुष्य होती हैं और उनके साथ मनुष्यवत व्यवहार ही होना चाहिए."

जब वे विपक्ष में थे तो परिवार के लिए ज्यादा समय निकाला करते थे, अपने महरौली फार्म जाया करते थे और ऐसे काम किया करते थे जिनमें सामान्य लोगों को मजा आता है. मसलन, वे अचानक घनिष्ठ दोस्तों के घर पहुंच जाते थे और प्यास बुझाने के लिए ठंडा नींबू-पानी मांगते थे. मणिशंकर अय्यर कहते हैं, "यह स्पष्ट था कि सोनिया और राजीव दो जिस्म एक जान थे. राजीव सोनिया का बेहद सम्मान करते थे और उनसे विशिष्ट मुद्दों पर सलाह की जगह नैतिक समर्थन मांगा करते थे. और सोनिया ने जीवन के हर मोड़ पर उन्हें पूरा समर्थन दिया."

इस इतालवी लड़की को शुरू में देश के प्रथम परिवार के माफिक ढलने में काफी दिक्कत हुई. लेकिन बाद में अपनी सास से उनके घनिष्ठ रिश्ते बन गए. इंदिरा ने सोनिया के रूप में एक बेटी पा ली जिसकी उन्हें हमेशा से चाह थी. सोनिया भी उनसे प्रभावित हुईं

ऐसे कई क्षेत्र थे जिनमें राजीव की सोच सोनिया से प्रभावित थी लेकिन राजनीति के क्षेत्र में नहीं. एक प्रमुख चिंता महिलाओं के दर्जे को लेकर थी. राजीव महिलाओं को समाज में प्रतिष्ठित करने और उनकी क्षमता के इस्तेमाल के लिए प्रतिबद्ध थे. ऐसा माना जाता था कि सोनिया ने सांस्कृतिक मामलों में भी उनकी दिलचस्पी को प्रभावित किया.

लेकिन सोनिया एक सीमा से बाहर जाने से इनकार कर देती थीं. मिसाल के तौर पर, सिमी ग्रेवाल राजीव पर अपने वृत्तचित्र में सोनिया को शामिल करना चाहती थीं. राजीव इसके लिए दो महीने तक सोनिया को मनाते रहे. लेकिन जब सोनिया नहीं मानीं तो राजीव ने सिमी से माफी मांग ली. यहां तक कि बच्चों को भी, जो बिना किसी परेशानी के यदा-कदा एक रेस्तरां में जाया करते थे, फिल्म में दिखाए जाने पर अतिरिक्त सुरक्षा खतरा पैदा हो जाता. राजीव ने कहा, "आखिर बच्चे क्या करें? उनका सामान्य जीवन रह ही नहीं गया है. यहां तक कि सुरक्षा समस्याओं के कारण उनकी शिक्षा भी ठीक से नहीं हो पा रही है. यदि कोई कुर्बानी दे रहा है तो वे बच्चे हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

SONY

अब नए वी एच एस वीडियो कैसेट रिकॉर्डर्स में सोनी आप के लिए लेकर आए हैं एक नई अनुपम सुविधा: ड्यूअल मोड शटल रिंग। ताकि वीडियो चलाना अत्यन्त सरल हो जाए। अलग-अलग बटन दबाने का अब झंझट ही नहीं, केवल सोनी के नए शटल रिंग को घुमाएं और टेप को मनचाही स्थिति में ले आएं: प्ले, फॉरवर्ड या रिवर्स धीमी स्पीड, सामान्य स्पीड,

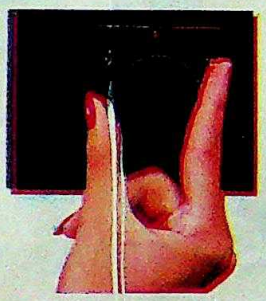

डबल स्पीड, क्यू/रिव्यू, एफ आर पिक्चर सर्च... आश्चर्यजनक! जी हाँ! लेकिन साथ ही उतना सरल भी! यही नहीं, सोनी के इन दोनों वी सी आर में ऐसी और भी अनेक नवीनतम सुविधाएं हैं, जिनकी आपको सोनी जैसी विख्यात कम्पनी से उम्मीद रहती है। इसलिए आज ही अपने लिए ये वीसीआर ले आएं और स्वयं ही देख लें कि हर कोई सोनी वीएचएस का इतना दीवाना क्यों है!

VHS

नए आधुनिकतम "ड्यूअल मोड शटल" रिंग के साथ

SLV-X 50

●2-सिस्टम (PALMESECAM) ●एक सेकेंड से भी कम समय में स्टील पर पिक्चर के लिए सुपर ऐक्सेस मैकेनिज़्म ●साफ स्टिल और स्लो मोशन के लिए DA Pro 4 ●HQ ●यूनी कमांडर (SLVX550 की स्लैक ट्रैकिंग को कंट्रोल करता है) ●1 माह/ 8 इवेन्ट टाइमर ●ऑटो मेनू ●डिजिटल ऑटो ट्रैकिंग ●FR पिक्चर सर्च ●हाई स्पीड रिवाइंड ●ऑटो हेड क्लीनर ●ऑटो वोल्ट

SLV-X 30

●2-सिस्टम (PALMESECAM) ●ड्यूअल मोड शटल रिंग ●सुपर ऐक्सेस मैकेनिज़्म ●हाई स्पीड रिवाइंड ●पिक्चर क्वालिटी में सुधार के लिए ट्वो पिक्चर ●डिजिटल ऑटो ट्रैकिंग ●ऑटो मेनू ●1 माह/8 इवेन्ट टाइमर ●स्टिल और स्लो मोशन ●FR पिक्चर सर्च ●ऑटो हेड क्लीनर ●ऑटो वोल्ट ●HQ ●यूनी कमांडर (SLVX300 की स्लैक ट्रैकिंग, दोनों को कंट्रोल करें)

VHS वीडियो कैसेट टेप, नए और बेहतर हाई रिज़ोल्यूशन वाले "वाई बैक्स" टेप
E-180V 180 मिनट की अवधि
E-120V 120 मिनट की अवधि

SAY YES TO SONY VHS

SONY SERVICE

भारत में सोनी अधिकृत सर्विस सेंटर: ऑलिम्पिया सर्विस सेंटर 555-ए, किदवई नगर, आबाद अपार्टमेंट के बगल में, डीज़ल रोड, नई दिल्ली-110016 फोन: 686494? ● ऑलिम्पिया सर्विस सेंटर, अलख नगर, ग्राउंड फ्लोर, एस-2223, [illegible] रोड, [illegible] फोन- [illegible]829 ● ऑलिम्पिया सर्विस सेंटर, 6 सी, मिडलटन स्ट्रीट, कलकत्ता-700071, फोन-296601, 297545 ● स्टीरियो विज़न, 846 ए, माउंट रोड इंडिया मिल्क [illegible] Dolphin [illegible] बिल्डिंग्स, जे. सी. रोड, बंगलौर-560002 फोन-220164 ● मानू इलेक्ट्रॉनिक्स, 5-8-602, दुकान नं. 8, मुशीरा बाजार, [illegible] रोड, हैदराबाद-500001 फोन- 23131 ● कॉस्मिस सर्विस सेंटर, एम. जी. रोड इर्नाकुलम, कोचिन- 682016 फोन- 369422

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एनआईबी

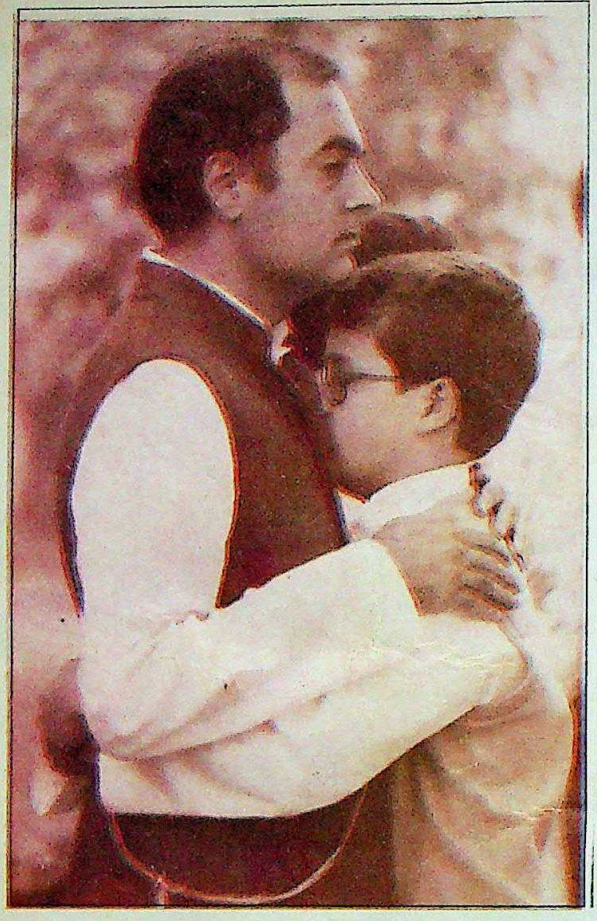

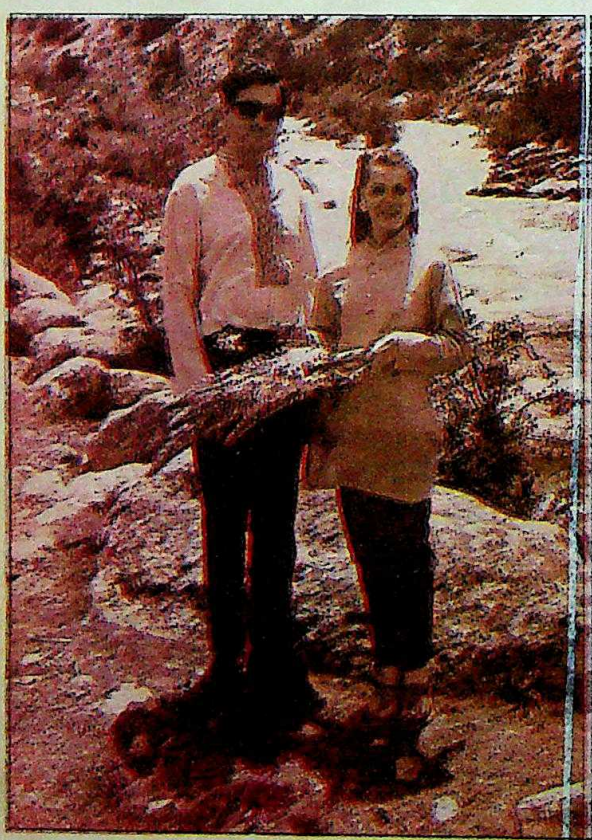

प्रेसवालों को भी राजीव के घर के आंगन के आगे जाने की इजाजत कभी नहीं मिली. कुछ चुनिंदा दंपतियों से ही राजीव और सोनिया मिलते थे. उनमें भी ज्यादातर राजीव के कैंब्रिज और दून स्कूल के दोस्त या पुराने सखा हुआ करते थे. उन्हें राजीव के काम से कोई मतलब नहीं होता था. उनमें से कई लोगों ने राजीव से अपने संबंधों का लाभ भी नहीं उठाया. अमिताभ और जया बच्चन, सुमन और मंजू दुबे, मोहन और मिमलन थाडानी, माइकल और उषा अल्बुकर्क, सुनीता और रमेश कोहली, दीपा कौल और रोमी चोपड़ा, और शुरू में अरुण और नीता सिंह उनके बेहद करीबी मित्रों में थे. क्वात्रोची और सतीश शर्मा जैसे कुछ दूसरे लोग भी उनके करीबी थे. इन मित्रों के साथ राजीव परिवार भोजन पर गपशप करता था.

राजीव के घर का रेफ्रिजरेटर भी नहीं भरा होता था. उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद का एक रोचक किस्सा है. हुआ यह कि एक दिन उन्हें भूख लगी और वे घर में खाना ढूंढने लगे. जब कुछ नहीं मिला तो उन्होंने शिकायत की, "घर में खाने के लिए क्या एक केला तक नहीं है?" राजीव ज्यादा खाने वाले व्यक्ति नहीं थे. लेकिन वे भरवां परांठों के बहुत शौकीन थे. प्रधानमंत्री बनने के पहले वे मौर्या शेरटन होटल के 'बुखारा' में

राजीव पूरी तरह से पारिवारिक व्यक्ति थे. उनके लिए परिवार सबसे पहले था. सोनिया और बच्चों के लिए उनके पास हमेशा समय होता था. वे उन्हें खेल के मैदानों, पहाड़ों पर ले जाते, पुष्कर या जैसलमेर घुमाने ले जाते. अपने कुत्तों के साथ खेलने के लिए भी उनके पास समय होता था

जाया करते थे और अपने लिए कुरकुरा पुदीना परांठा बनवाया करते थे. सोनिया आइसक्रीम की शौकीन हैं. वे और राजीव जब अमिताभ और रेमोला से मिलने महरौली के फार्म हाउस पर जाते तो रेमोला पहले ही अपने फ्रिज को कई तरह के आइसक्रीम से भर लेती थी जिन्हें सोनिया बड़े चाव से खाती थीं.

राजीव को मिठाइयां भी पसंद थीं, खास तौर पर जलेबी, फिरनी, गुलाब जामुन और चॉकलेट. लेकिन बढ़िया तैराक होने के बावजूद किसी तरह की कसरत न करने के कारण वे कुछ मोटे हो गए थे. इससे उनकी असीम ऊर्जा में कोई कमी नहीं दिखी. इसका प्रमाण था उनका चुनाव अभियान. वे बहुत कम सोने के बावजूद जब सुबह उठते तो एकदम तरोताजा दिखते.

राजीव जीवन की अच्छी चीजों को पसंद करते थे. उनका परिवार बहुत संभ्रांत है और उनके घर, लालन-पालन और जीवन शैली से नफासत झलकती थी. यह बात कई पीढ़ियों की समृद्धि, शिक्षा और रुचि से आती है. लेकिन इस परिवार में सादगी भी है जो भारतीय परिस्थितियों के प्रति उसकी अचर्चित संवेदनशीलता को दर्शाती है. जब देश के कई भागों में सूखा पड़ा तो इस परिवार ने कई महीनों तक गोश्त नहीं खाया था. यह एक मामूली, अनिमंत्रित लेकिन अर्थपूर्ण कार्य था.

सोनिया को श्रीमती गांधी से आधुनिकता की तरफ बढ़ने वाले शहरी जनता के आडंबरपूर्ण समाज से सख्त नफरत करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पफ़ का एक और चमत्कार !

कम्पैक्ट डबल डोर

गोदरेज 230 लीटर डबल डोर. अनोखा 'एक में दो' रेफ्रिजरेटर. आकार, ठीक आपकी ज़रूरत अनुसार.

मिनी कोल्ड स्टोरेज

ज़्यादा बड़े 65 लीटर डीप फ्रीज़र के लिए अलग से दरवाज़ा. फ्रीज़र का तापक्रम इतना कम रहता है कि खाद्य पदार्थ कहीं ज़्यादा दिनों तक सुरक्षित रखे जा सकते हैं. इतना ही नहीं, चाहें तो फ्रीज़र में का एक रैक हटाइए और ज़रूरत मुताबिक जगह का लीजिए.

और 'एक में अनेक' रेफ्रिजरेटर.

नीचे का दरवाज़ा खोलिए और सामने पायेंगे 'एक में अनेक' 165 लीटर रेफ्रिजरेटर का कम्पार्टमेंट. ज़रूरत मुताबिक शेल्फों को ऊपर-नीचे सरकाइए और मनपसंद डिज़ाइन का रेफ्रिजरेटर तैयार. इसमें है एक अनोखा साइकलिक डिफ्रॉस्ट सिस्टम के साथ है पानी अपने आप निकल जाने की सुविधा. गोदरेज डबल डोर आता है भीतरी रंग सज्जा सोने से लेकर खाते विशेष आकर्षक रंगों में. एपॉक्सी पाउडर कोटेड फिनिश के साथ. और इन सब के साथ पफ़ की शक्ति तो है ही.

कम्पैक्ट गोदरेज डबल डोर.
ख़ास आकार. ख़ास डिज़ाइन.

Godrej®

230 लीटर
डबल डोर
COLD GOLD
सोना....असली सोना.

Puf सहित

HTA 1764 R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरासत में मिला था. सोनिया जब भी देहाती इलाकों—में, अमेठी, बस्तर या नगालैंड के वनवासी इलाकों में जातीं तो जीवन से भर उठतीं.

एक बार राजीव और सोनिया ओडीसा के एक गांव के दौरे पर गए. वे एक झोंपड़ी में गए तो देखा कि मां की गोद में पड़े एक शिशु की आंखों पर ढेर सारी मक्खियां भिनभिना रही हैं. राजीव कुछ बातें कर आगे बढ़ गए लेकिन सोनिया खड़ी रहीं और अपने निजी चिकित्सक डॉ. सहाय को बुलवा भेजा. डॉक्टर ने शिशु की आंखों में दवा की कुछ बूंदें डाल दीं.. सोनिया ने शिशु का नाम पूछा. 'सोनिया', शिशु की मां का जवाब था.

राहुल और प्रियंका अपने माता-पिता के संभ्रांत आचार-विचार के स्वाभाविक वारिस हैं. यही वजह है कि इन लोगों ने इस त्रासदी में भी अपना धैर्य नहीं खोया. श्रीमती गांधी राजीव और सोनिया को एक किस्सा बार-बार सुनाया करती थीं. वह यह कि आजादी की लड़ाई के दौरान जवाहरलाल नेहरू जब जेल में थे तो पारिवारिक मित्र बी.के. नेहरू और उनकी हंगेरियाई पत्नी उनसे मिलने गए. नेहरू की दशा देखकर बी.के. नेहरू की पत्नी रोने लगीं. इस पर नेहरू ने उनसे कहा, "एक बात हमेशा याद रखो. हम नेहरू, लोगों के बीच कभी नहीं सुबकते." इसकी पूरी संभावना है कि यह पुश्तैनी संदेश राहुल और प्रियंका को भी दिया गया होगा.

19 वर्षीय राहुल की अपने पिता की तरह यांत्रिकी में दिलचस्पी है और वे बहिर्मुखी होने के साथ-साथ संवेदनशील हैं. गम में डूबे होने के बावजूद उन्होंने राजीव को श्रद्धांजलि देने आए एक वृद्ध के जूते के फीते बांधे क्योंकि उस व्यक्ति को फीते बांधने में परेशानी हो रही थी. दूसरी तरफ दृढ़ और पक्के इरादों वाली 21 वर्षीया प्रियंका अपनी दादी इंदिरा का अवतार लगीं. उन्होंने बिना विचलित हुए स्थिति को अच्छी तरह संभाला. उन्होंने अंत्येष्टि की जगह का चयन किया, हवाई अड्डे पर अपने भाई को लेने गईं, अपनी मां के लिए कॉफी और नींबू पानी की व्यवस्था की और शोक मनाने आए परिवारों और दोस्तों के लिए पूरा घर खोल दिया, सिवाय अपनी मां के कमरे के.

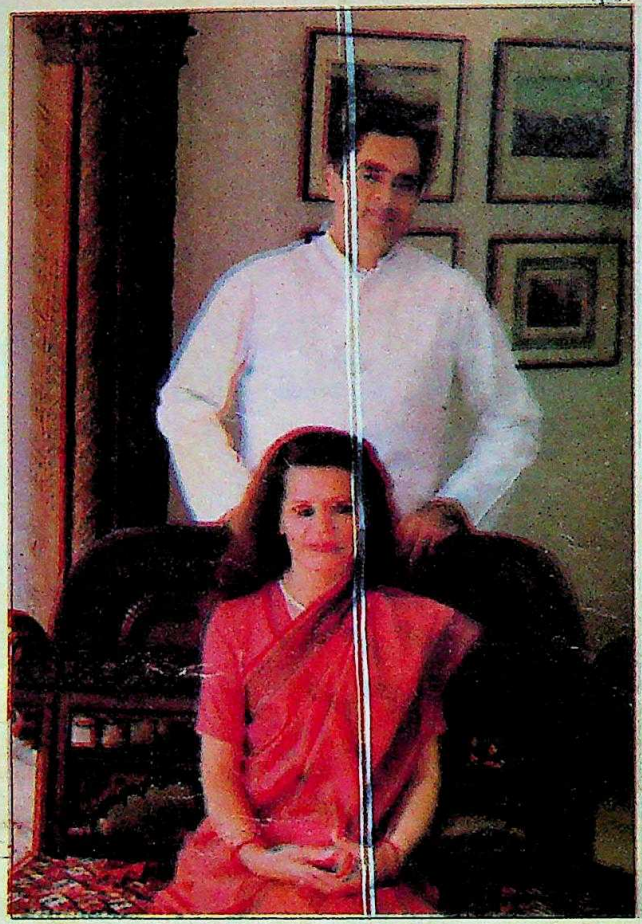

रघु राय

सोनिया के मित्रों का कहना है कि वे कभी सरकारी कामकाज में हस्तक्षेप नहीं करती थीं. हालांकि उनके पास मौका भरपूर था. वैसे, उन्होंने राजीव को महिलाओं के मुद्दों और सांस्कृतिक मामलों में जरूर प्रभावित किया

यह परिवार हमेशा बड़ी नफासत से साज-शृंगार करता था. इंदिरा गांधी के मरने के एक दिन पहले उनकी एक करीबी मित्र ने उनके बारे में एक विचित्र चीज देखी. वे मुड़ी-तुड़ी साड़ी पहने घर से निकल रही थीं. यह उनके स्वभाव के विपरीत था. जब भी घर से बाहर जाना होता था या मेहमानों की अगवानी करनी होती थी तो वे सलीके के कपड़े पहनती थीं. जब उनकी मित्र ने उनसे मुड़ी-तुड़ी साड़ी पहनने के बारे में पूछा तो श्रीमती गांधी का जवाब था, "अब इन सबका कोई मतलब नहीं है."

राजीव भी नफासत से कपड़े पहनना, ठीक से दाढ़ी बनाना और अच्छे इत्र लगाना पसंद करते थे. लेकिन हाल ही में चंडीगढ़ की यात्रा के दौरान इसी पारिवारिक मित्र ने राजीव को अस्त-व्यस्त देखा. उनका कुर्ता-पायजामा मुड़ा-तुड़ा और गंदा था. उस मित्र ने एक और बात पर गौर किया. शादी के बाद राजीव ने पहली बार अपनी शादी की अंगूठी नहीं पहनी थी. उस मित्र के 'क्यों' पूछने पर राजीव ने उसे अपने हाथ दिखाए. गर्मी और लगातार अभियान से उनकी उंगलियां सूज गई थीं. अंगूठी उंगली में जाती ही नहीं थी. इसके अतिरिक्त धब्बों और एलर्जी से उनकी त्वचा का रंग हो गई थी. वह मित्र राजीव को बचपन से जानती थी और जब भी उनकी सुंदर त्वचा और रंग की प्रशंसा करती, श्रीमती गांधी गर्व से कहतीं, "आखिरकार, वह प्यार का पहला फूल जो है." श्रीमती गांधी ने उस मित्र से कहा था कि उन्हें राजीव की त्वचा का रंग इतना भाता है कि वह जब बच्चे थे और अपने कमरे में गहरी नींद में होते थे तो वे चुपके से जाकर उनके चेहरे को प्यार से थपथपाया करतीं.

वह मित्र यह कहानी बताते हुए फूट-फूटकर रोने लगती है क्योंकि उसके दिमाग में राजीव का विस्फोट में चीथड़े हो गया शरीर, जो एक शवपेटिका के एक कोने में पड़ा हुआ था, कौंध जाता है.

—अरुण चावरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTRATION NO. R.N.I. 62236
REGISTERED No. L-RW/FBD/45/87
D—(C) 1498

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह मा रा ब जा ज

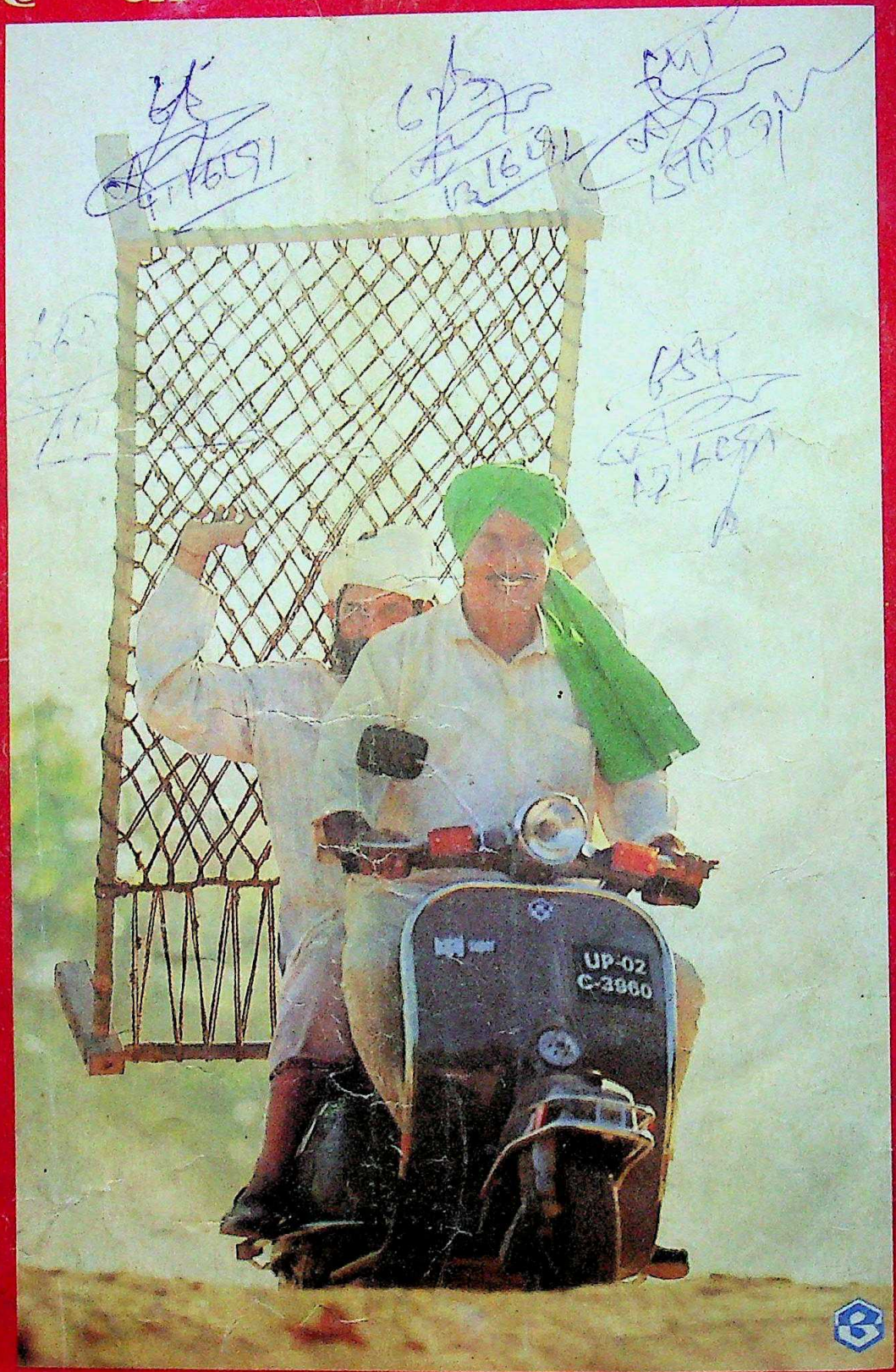

फ़ा
की
ब र स
सा

bajaj
आकुडी, पु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

30 जून 1991 9 रुपए

इंडिया टुडे

मानेका गांधी: आधा-अधूरा जीवन

गद्दी के दावेदार

तर्क-वितर्क: नियंत्रणों को नकार

राजीव हत्याकांड

सुरागों से उभरते संकेत

साजिश में शरीक कुछ प्रमुख लोगों की गिरफ्तारी से गुत्थी कुछ-कुछ सुलझती नजर आ रही है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरिए

यह कूपन और अपनी चहेती आवाज़ सुनिए: बच्चे की खिलखिलाहट

ख़ुश होते . . . मौज मस्ती करते बच्चों को देखना आपको ख़ुश करने के लिए काफ़ी है. बच्चों के लिए जितने ज़रूरी हैं खाना-पीना और हवा उतनी ही ज़रूरी है हंसी-ख़ुशी . . . मौज-मस्ती. और डिस्नी टुडे लेकर आया है यही मस्ती . . . यही मज़े. एकदम वैसी ही कॉमिक पत्रिका जो हर बच्चे के विकास के लिए ज़रूरी है. आख़िर डिस्नी गैंग के सदस्य दुनिया भर के अरबों बच्चों के चहेते हैं . . . मनपसंद हैं.

बस तो फिर यह कूपन भर दीजिए और हर एक को ख़ुश कर दीजिए.

यही है अद्भुत तरीका बच्चों को यह जताने का कि वे आपकी ज़िंदगी में सदा-सदा सबसे महत्वपूर्ण रहेंगे. सबसे बढ़िया बात यह कि घर भर में गूंज उठे आपकी चहेती आवाज़.

आपके बच्चे की खिलखिलाहट.

आज ही सबस्क्रिपशन भेजिए और आकर्षक छूट का लाभ उठाईये.

कूपन निम्नलिखित पते पर भेजें :
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पोस्ट बाक्स न. : 706
फरीदाबाद-121007 (हरियाणा)

LM COMICS

डिस्नी टुडे

अब उपलब्ध हर पखवाड़े हिंदी और अंग्रेज़ी में.

मुझे अपने बच्चे के लिए सबस्क्रिपशन चाहिए। यह रहा मेरा सालाना सबस्क्रिपशन ☐ हिन्दी रु 96 ☐ अंग्रेजी रु 115 प्रति के लिए. मैं भुगतान चैक*/डिमांड ड्राफ्ट* न. ..... द्वारा कर रहा हूं. (दिल्ली से बाहर के चैक पर रु 10 और जमा करें) कृपया प्रति निम्नलिखित नाम व पते पर भेजें :

नाम _____

उम्र _____ लिंग _____

डाक-पता _____

_____

_____

कृपया भुगतान लिविंग मीडिया इंडिया लि. के नाम पर बनाएं
दरें और पेशकश केवल भारत में लागू
*दिल्ली, बम्बई, मद्रास व कलकत्ता के ड्राफ्ट/चैक केवल एम.आई.सी.आर. होने चाहिए

© 1987 THE WALT DISNEY CO., USA.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरागों से उभरते संकेत

हाल के वर्षों के सबसे पेचीदा हत्याकांड की गुत्थी सुलझाने में गुप्तचरों और विशेषज्ञों का एक बड़ा दल लगा है. राजीव गांधी के हत्यारों का सुराग पाना हालांकि बहुत जटिल काम रहा, लेकिन कुछ महत्वपूर्ण तथ्य सीबीआई के गुप्तचरों के हाथ लगे हैं.

आवरण कथा 14

गद्दी की दावेदारी

राजीव गांधी की हत्या से चुनावों के बीच ही चुनावी रणनीति में बदलाव लाना जरूरी हो गया. भाजपा ने 'राम राज्य' के नारे को धीमा किया, तो जनता दल ने भी अपनी आलोचना की संगीनों के मुंह कांग्रेस से हटाकर भाजापा की तरफ मोड़ दिए.

चुनाव विशेष.....24

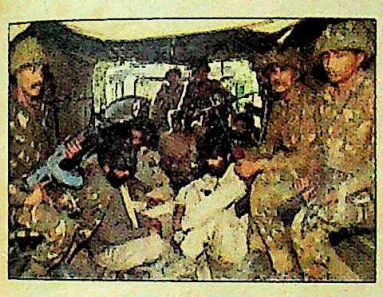

दिखावटी अमन-चैन

ऊपर से तो यही आभास होता है कि श्रीनगर सामान्य हो गया है, लेकिन कश्मीर के हालात का यह सही रूप नहीं है. सीमा के इस संकटग्रस्त राज्य में पाकिस्तान समर्थक तत्व एक बार फिर सक्रिय होकर हत्याओं और अपहरणों से आंतक फैला रहे हैं.

खास रपट.....35

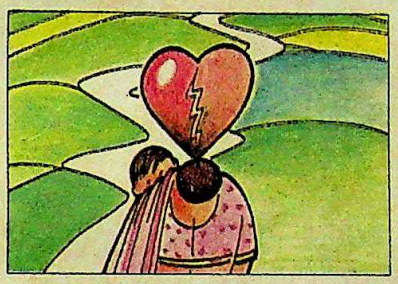

हमराही बदल गए

वैवाहिक बंधन को अब सिर्फ जीवन-मरण का बंधन नहीं माना जाता. लिहाजा दूसरी शादी को मान्यता मिलने लगी है. पहली शादी नाकाम रहने पर स्त्री-पुरुष जीवन से हार नहीं मान बैठते. वे विकल्प चुनते हैं. इसका अनुभव भी अलग-अलग ही होता है.

विशेष लेख.....72

आधा-अधूरा जीवन

राजीव गांधी की नृशंस हत्या के बाद सोनिया के जीवन में बड़ा शून्य पैदा हो गया है. सांत्वना पत्रों को संभालते, राजीव के प्रशंसकों से मिलते सोनिया, राहुल और प्रियंका राजीव के बिना जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं.

विशेष लेख.....82

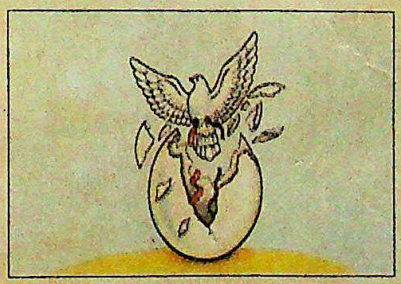

नियंत्रणों का नकार

इस बार 'तर्क-वितर्क' में प्रणब मुकर्जी, बिमल जालान, आर.एन. मल्होत्रा, जे.एन. सप्रू, एल.एम. थापर, एल.सी. जैन, बी.एस. मिन्हास, कौशिक बसु, जय दुबाशी, टी.एन. नैनन, वी कृष्णमूर्ति और रमेश चौहान उदार अर्थनीति पर विचार व्यक्त कर रहे हैं.

उदार अर्थनीति.....66

अगले पन्नों पर

कसौटी.....7
तेवर.....10
राजरंग.....11
हिंदोस्तां हमारा.....12
आवरण कथा
राजीव हत्याकांड:
सुरागों से उभरते संकेत.....14
चुनाव विशेष
कांग्रेस (इ): गद्दी की दावेदारी.....24
भाजपा: नई तैयारी.....28
सजपा: चमत्कार की आस.....29
टी.एन. शेषन:
खतरनाक परंपरा के सूत्रधार.....32
खास रपट
कश्मीर: दिखावटी अमन-चैन.....35
पंजाब: वोट पर बंदूकों को चोट.....42
आजकल
भारत यात्रा न्यास:
विस्तारवादी हौसले.....45
गुजरात: लू की लपेट.....46
मध्य प्रदेश: बादशाह बंदी.....47
पंजाब: असंतोष उभरा.....48
रामराव: लहर के लिए.....49
कटाक्ष/सनद रहे.....50
व्यापार चक्र.....51
कारोबार
उ.प्र. सीमेंट निगम:
सिर मुंडाते ओले पड़े.....52
शेयर बाजार.....53
पास-पड़ोस
नेपाल: चुनौतियां से दो-चार.....56
तर्क-वितर्क
अर्थव्यवस्था: नियंत्रणों का नकार.....65
विशेष लेख
दूसरी शादी: हमराही बदल गए.....72
अपराधी
दिल्ली: बुजुर्गों से बर्बरता.....75
धर्म
जैन समुदाय:
संन्यास लेने का शाही अंदाज.....76
विशेष लेख
सोनिया गांधी: आधा-अधूरा जीवन.....82
आरपार.....85
विधि-विधान
मुनिरा गांधी: हक के लिए हिम्मत.....87
कहानी.....88
किताबें.....92
परदे के उस पार.....94
चर्चित चेहरे.....96

आवरण सज्जा: प्रणब दत्ता
बी.के. शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडिया टुडे प्रस्तुत म्यूज़िक टुडे.

भोर से अर्धरात्रि तक के राग

दिन से रात तक के रंगों की अनूठी संगीत यात्रा. एक-एक घंटे के 16 ऑडियो कैसेटों पर प्रतिष्ठित संगीतकारों के चुनिंदा राग उनके विशिष्ट अंदाज़ में, विशुद्ध स्वर की पकड़ डिजिटल पद्धति से तैयार कैसेटों पर

और आपके घर डाक अथवा कूरियर से पाने की सुविधा.

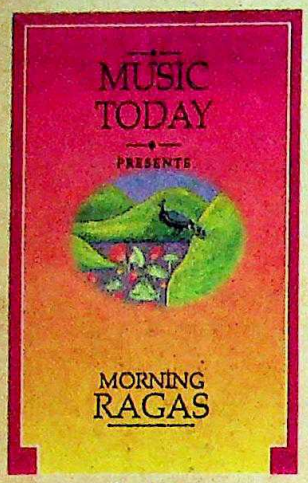

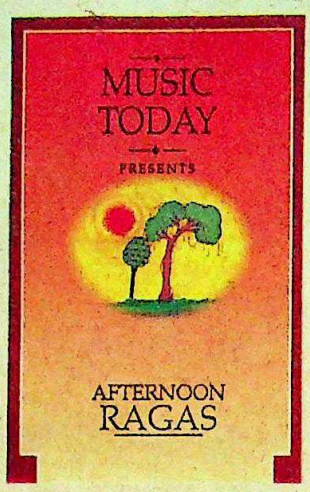

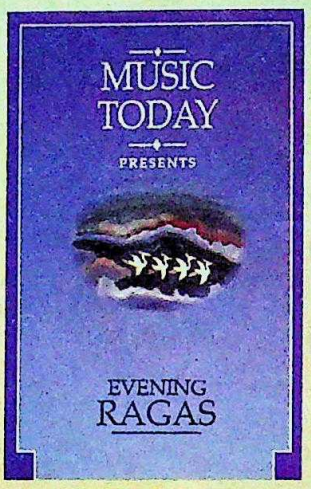

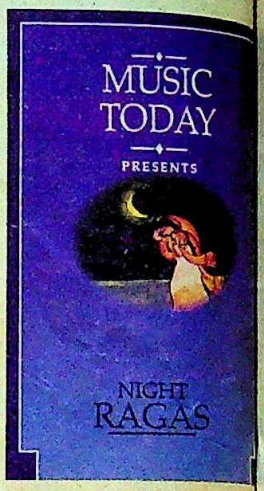

भोर के राग

भाग-1 (कोड ए 90001)
ललित
राजन और साजन मिश्र (गायन)
भैरव
शाहिद परवेज़ (सितार)
अहीर भैरव
श्रुति सदोलिकर (गायन)

भाग-2 (कोड ए 90002)
मियां की तोड़ी
अमजद अली खां (सरोद)
भटियार
पंडित जसराज (गायन)
विभास
श्रुति सदोलिकर (गायन)

भाग-3 (कोड ए 90003)
जौनपुरी
पद्मा तलवलकर (गायन)
बिलासखानी तोड़ी
अमजद अली खां (सरोद)
देसी तोड़ी
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)

भाग-4 (कोड ए 90004)
कुकुभ बिलावल
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
देशकार
शाहिद परवेज़ (सितार)
भैरवी
पद्मा तलवलकर (गायन)

दोपहर के राग

भाग-1 (कोड ए 90005)
शुद्ध सारंग
अमजद अली खां (सरोद)
सुघराई
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
गौड़ सारंग
पद्मा तलवलकर (गायन)

भाग-2 (कोड ए 90006)
बृंदावनी सारंग
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
मधमद सारंग
पंडित जसराज (गायन)
धनी
शाहिद परवेज़ (सितार)

भाग-3 (कोड ए 90007)
भीमपलासी
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
पटदीप
श्रुति सदोलिकर (गायन)
मांड
शाहिद परवेज़ (सितार)

भाग-4 (कोड ए 90008)
मुल्तानी
राजन और साजन मिश्र (गायन)
मधुवंती
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
पीलू
अमजद अली खां (सरोद)

सांध्य के राग

भाग-1 (कोड ए 90009)
मारवा
पंडित जसराज (गायन)
श्री
श्रुति सदोलिकर (गायन)
हंसध्वनि
शाहिद परवेज़ (सितार)

भाग-2 (कोड ए 90010)
पूरिया
राजन और साजन मिश्र (गायन)
श्याम कल्याण
अमजद अली खां (सरोद)
नंद
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)

भाग-3 (कोड ए 90011)
शुद्ध कल्याण
पद्मा तलवलकर (गायन)
मांझ खमाज
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
दुर्गा
राजन और साजन मिश्र (गायन)

भाग-4 (कोड ए 90012)
यमन
शाहिद परवेज़ (सितार)
शंकरा
पंडित जसराज (गायन)
मिश्र धारा
श्रुति सदोलिकर (गायन)

रात्रि के राग

भाग-1 (कोड ए 90013)
शुद्ध नट
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
केदार
पद्मा तलवलकर (गायन)
झिंझोटी
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)

भाग-2 (कोड ए 90014)
बागेश्वरी
पंडित जसराज (गायन)
हमीर
पद्मा तलवलकर (गायन)
तिलक कामोद
शाहिद परवेज़ (सितार)

भाग-3 (कोड ए 90015)
मालकौंस
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
मारु विहाग
श्रुति सदोलिकर (गायन)
जैजैवंती
राजन और साजन मिश्र (गायन)

भाग-4 (कोड ए 90016)
नायकी कान्हड़ा
श्रुति सदोलिकर (गायन)
देश
पंडित जसराज (गायन)
दरबारी
अमजद अली खां (सरोद)

मूल्य
(टैक्स पैकिंग और भेजना शामिल) @ 45 रु. प्रति कैसेट

कृपया ध्यान दें
- दिल्ली से बाहर के स्थानों के चेकों के साथ 10 रु. की अतिरिक्त राशि आवश्यक.
- मुंबई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली के चेक/डिमांड ड्राफ्टों का एमआईसीआर होना आवश्यक.
- कैसेट आपके घर रजिस्टर्ड डाक या कूरियर से पहुंचाए जाएंगे.
- डिलीवरी के लिए कृपया कम से कम 3-4 सप्ताह का समय दें.
- उपहार देने के लिए कृपया उपहार पाने वाले का नाम और पता संलग्न ऑर्डर फार्म पर लिखकर भेजें.
- देय राशि 'म्यूज़िक टुडे' के नाम करें और 'म्यूज़िक टुडे', पोस्ट बॉक्स 29, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजें.
- कृपया ऑर्डर फॉर्म कम्प्यूटर प्रोसेसिंग सुविधा हेतु अंग्रेजी में ही भरें.
- अगर संलग्न ऑर्डर फार्म न मिले तो अपना ऑर्डर अपने नाम, पता और देय राशि के साथ 'म्यूज़िक टुडे' पोस्ट बॉक्स 29, नई दिल्ली-110001 को भेज दें.
- दर व पेशकश सिर्फ भारत में ही लागू है.

ऑर्डर फॉर्म

कोड नं.	कैसेटों की संख्या
ए 90001	_____
ए 90002	_____
ए 90003	_____
ए 90004	_____
ए 90005	_____
ए 90006	_____
ए 90007	_____
ए 90008	_____
ए 90009	_____
ए 90010	_____
ए 90011	_____
ए 90012	_____
ए 90013	_____
ए 90014	_____
ए 90015	_____
ए 90016	_____

मैं 'म्यूज़िक टुडे' कैसेटों के लिए नीचे लिखे विवरण के अनुसार 45 रु. प्रति कैसेट की दर से (टैक्स, पैकिंग और भेजना शामिल) ऑर्डर देना चाहता/चाहती हूं।

मेरे लिए ☐ उपहार ☐

म्यूज़िक टुडे को देय _____ रु. का रेखांकित चेक (दिल्ली से बाहर के ऑर्डरों के लिए 10 रु. और जोड़ें)/डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर रहा/रही हूं।

आर्डर किए कैसेटों की संख्या _____

कुल देय राशि _____

My Name _____

Address _____

_____ Pin _____ Phone No. _____

Gift for _____

Address _____

_____ Pin _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ज़िन्दगी की कई खुशियां हैं हमारे पास।

सिवाय एक घर के, जिसे अपना कह सकें।'

बढ़िया नौकरी, अच्छा वेतन, सुखी परिवार, फ्रिज, कलर टी०वी०, वी०सी०आर०, वाशिंग मशीन, और टू० व्हीलर जैसी सुविधाएं।

यह सभी कुछ है हमारे पास, सपना है तो एक अपने घर का। एक दिन बातों ही बातों में एक मित्र ने मुझे गृह ऋण खाता स्कीम के बारे में बताया। उसकी सलाह पर मैंने एक राष्ट्रीयकृत बैंक में अपना गृह ऋण खाता खोला और रकम जोड़ने लगा। अब वह दिन दूर नहीं जब मैं ऋण के लिए आवेदन पत्र देकर अपना सपना साकार कर सकूंगा।

गृह ऋण खाता स्कीम बचत से जुड़ी एक विशेष योजना है जो आपको गृह ऋण लेने योग्य बनाती है। यह स्कीम विशेष रूप से अपनी सहायता स्वयं करने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए बनाई गई है और इतनी सरल व सुविधाजनक है कि इससे वेतन भोगी, दैनिक मज़दूरी पाने वाले, व्यावसायिक, व्यापारी तथा किसान को भी लाभ हो सकता है। इसके अतिरिक्त इस स्कीम में आकर्षक कर छूट भी है।

गृह ऋण खाता स्कीम एक राष्ट्रीय योजना है। देश भर में किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक या कई अन्य अधिसूचित बैंकों की नजदीकी शाखा से सम्पर्क कीजिए, और आज ही अपना गृह ऋण खाता खोलिए।

राष्ट्रीय
आवास बैंक
NATIONAL
HOUSING BANK
(भारतीय रिज़र्व बैंक के पूर्ण स्वामित्व में)
हिन्दुस्तान टाइम्स हाऊस, छठी मंज़िल,
18-20, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली -110 001.
बॉम्बे लाइफ़ बिल्डिंग, तीसरी मंज़िल,
45, वीर नरीमन रोड, फ़ोर्ट, मुम्बई 400 023.

हमारा लक्ष्य : सबके लिए आवास

Chaitra-D NHB 1890 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुक्र है, घर में डेटॉल साबुन रहता है!

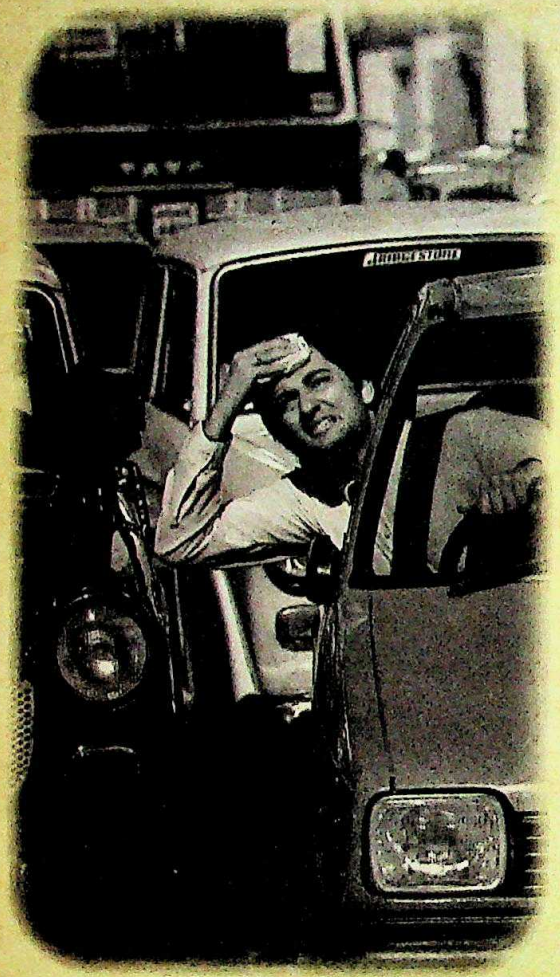

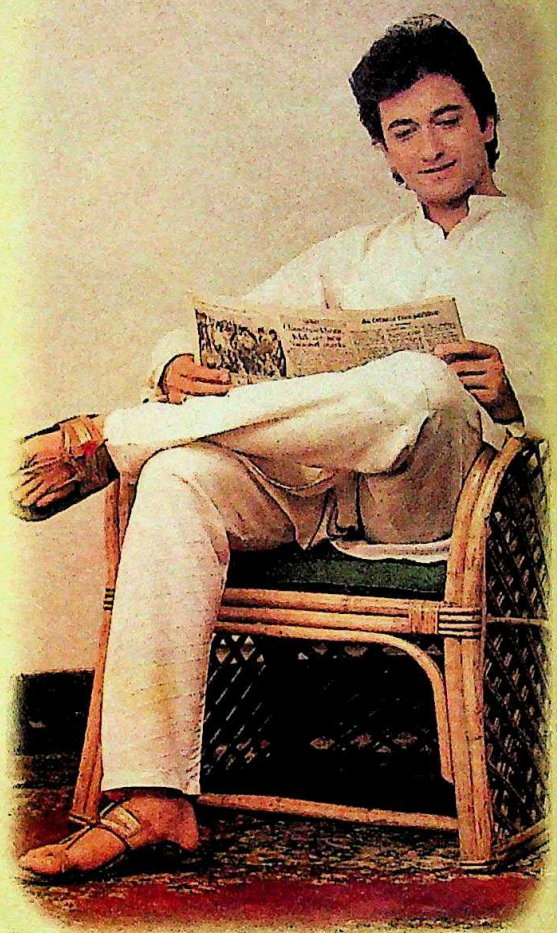

१००% सम्पूर्ण स्नान

– मैल और छिपे कीटाणुओं को दूर करने के लिये

जब साधारण स्नान से न बने बात!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

KAL/RCI/183/97

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रासद अंत

राजीव गांधी पर विशेषांक (15 जून) बहुत मर्मस्पर्शी रहा. इतने सौम्य, शिष्ट और हसमुख नेता का इतना क्रूर अंत भारत ही नहीं, पूरे विश्व के लिए त्रासद घटना है.

खैर (उ.प्र.) **सुनीता शर्मा**

बड़ी कीमत

'ये नजदीकियां, लेकिन दूरियां भी' (31 मई) पढ़कर आंखें नम हो गईं. भीड़ से नजदीकियां कायम करने की बहुत बड़ी कीमत राष्ट्र को चुकानी पड़ी है.

सेंधवा (म.प्र.) **अविनाश वावीकर**

बदला परिदृश्य

जब तक आपका 'जनमत सर्वेक्षण' वाला अंक (31 मई) मिला तब तक पूरा माहौल शोकाकुल हो चुका था, दृश्य बदल चुका था. एक और नेता आतंकवाद और हिंसा की भेंट चढ़ गया.

छपरा (बिहार) **माधवेंद्र तिवारी**

पूर्वाग्रह से ग्रस्त

'सुलगते सवाल के सूत्रों की समझ' (31 मई) के अंतर्गत आरक्षण पर तर्क-वितर्क की श्रृंखला सराहनीय कदम है. दरअसल, हमारे राजनीतिक आरक्षण को लेकर पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं. एक ओर जातिवाद और असमानता को दूर करने की बात की जाती है तो दूसरी ओर आरक्षण के द्वारा इन्हें बढ़ावा दिया जा रहा है.

दतिया (म.प्र.) **अनूप कुमार तिवारी**

■ मंडल आयोग में चाहे जो भी खामियां हों, पर यह आयोग का ही प्रभाव है कि आज सभी पार्टियां इसका साफ विरोध नहीं कर सकतीं. ये ही पार्टियां आज चुनावों में पिछड़े वर्गों के ज्यादा उम्मीदवारों को खड़ा कर रही हैं.

समस्तीपुर (बिहार) **मोहन प्रसाद**

■ आरक्षण पर बहस अच्छी व सार्थक लगी. सवाल यह नहीं है कि चूंकि पिछड़े वर्गों को आगे नहीं बढ़ने दिया जाता, मात्र इसलिए उन्हें आरक्षण की सुविधा मिलनी चाहिए, वरन यह है कि कैसे उन्हें शैक्षणिक व आर्थिक सुविधाएं ईमानदारी से मुहैया कराई जाएं.

लखनऊ (उ.प्र.) **करुणाकर अदीब**

सिमटती साख

'कहीं स्वागत कहीं निराशा' (31 मई) वी.पी. सिंह की घटती लोकप्रियता का ही

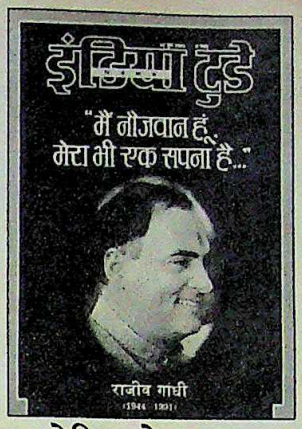

सोनिया ने अध्यक्ष पद नामंजूर कर ठीक ही किया क्योंकि अपने हितों के लिए उनका इस्तेमाल करने वालों की इंका में कमी नहीं.

मुजफ्फरपुर, (बिहार) **उपमा श्रुति**

पहले इंदिरा गांधी और अब राजीव की हत्या से यही साबित होता है कि हमारी सुरक्षा व्यवस्था कितनी कमजोर है.

अलीगढ़ (उ.प्र.) **गिरिराज सिंघल**

वर्ष: 5, अंक 16,
16-30 जून 1991

● **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 3315801-4. टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ● **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कैपिटेल हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ● **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, मुंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, मुंबई. ● **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016. फोन: 225398, 221922, टेलेक्स: 21-7138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कैपिटेल हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थामसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

पैमाना है. जनता में किसी राष्ट्रीय स्तर की पार्टी के प्रति कितनी ही नफरत क्यों न हो, उसके शीर्ष नेता की जनसभा में 5 से 10 हजार की भीड़ जुट ही जाती है. वी.पी. सिंह की पार्टी में 500 लोगों की मौजूदगी दर्शाती है कि जनता उन्हें कतई नहीं चाहती और अब वे कुछ जाति और संप्रदाय के नेता ही रह गए हैं.

टूंडला (उ.प्र.) **अखिलेश श्रोत्रिय**

■ वी.पी. सिंह ने साक्षात्कार में कहा कि भाजपा को अभी तक राम मंदिर की याद क्यों नहीं आई थी. वही सवाल उनसे भी है कि उन्हें अचानक पिछड़े वर्ग, दलितों और सामाजिक न्याय का ध्यान कैसे आ गया. जब वे मुख्यमंत्री थे, केंद्र में मंत्री थे तब मंडल आयोग व शोषित वर्ग के कल्याण के लिए आवाज उन्होंने क्यों नहीं उठाई.

रायपुर (म.प्र.) **डॉ. जयेश कावड़िया**

बेचैनी स्वाभाविक

आवरण कथा 'बुलंद मंसूबे' (15 मई) पढ़ी. निस्संदेह भारतीय जनता पार्टी एक विकल्प के रूप में सामने आई है, साथ ही इसकी नीति सुस्पष्ट एवं छवि अन्य दलों की बनिस्बत स्वच्छ है. बुनियादी मुद्दों को भी यह प्रभावी तरीके से उठाती रही है. कोई आश्चर्य नहीं यदि इन चुनावों में यह सबसे बड़े दल के रूप में उभरे.

इंदौर (म.प्र) **डॉ. रेखा गांधी**

■ भाजपा का सत्ता के प्रति इतना बेचैन होना स्वाभाविक ही है क्योंकि बड़ी पार्टियों की श्रेणी में भाजपा ही एक ऐसी पार्टी रह गई है जिसने कभी भी सत्ता नहीं संभाली. रही बात भाजपा द्वारा हिंदू हितों की पैरवी की, तो क्या वी.पी. सिंह आरक्षण द्वारा जाति प्रथा को बढ़ावा नहीं दे रहे. भाजपा मात्र वादों की बानगी नहीं देना चाहती बल्कि स्वच्छ प्रशासन देना चाहती है.

हिंडौन सिटी (राजस्थान) **रिंकू गर्ग**

अब भूमिका बदलें

'अब नया अवतार' (15 मई) अमिताभ बच्चन के नए रूप से परिचय करा गया. राष्ट्रीय पुरस्कार मिलने से उनका फिल्मी जीवन तो सार्थक हुआ ही, व्यावसायिक सिनेमा को भी प्रतिष्ठा मिली है. अब उन्हें उछलकूद की भूमिकाएं छोड़, गंभीर प्रौढ़ भूमिकाएं करनी चाहिए जो उनकी उम्र के अनुरूप हों.

जयपुर (राजस्थान) **अजय अग्रवाल**

उम्मीद छोड़ चुके

'जम्हूरियत का जनाजा' (15 मई) पढ़ा. बिहार में जिस तेजी से राजनीति का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराधीकरण हो रहा है उससे तो ऐसा लगता है मानो बिहार में लोकतंत्र की अर्थी उठ गई है. जिस राज्य के मुख्यमंत्री से लेकर सांसद तक अपराधियों को शरण देते हैं और शस्त्र रखते हैं, वहां निष्पक्ष चुनाव की आशा रखना फिजूल है.

अजमेर (राजस्थान) **शोभा जैन**

कहां हैं ईमानदार?

'कसौटी' के 'प्रत्याशियों की परख जरूरी' (15 मई) में आपने जिन प्रश्नों को उठाया है, उनका उत्तर वर्तमान संदर्भ में संभवतः असंभव है. जाति, धर्म एवं समुदाय के संकीर्ण पाश में आज का समाज जिस तरह फंस गया है, वैसे में 'ईमानदार' प्रत्याशियों को ही वोट देने की कल्पना व्यर्थ है. इन बंधनों में फंसकर बुद्धिजीवी भी मतिभ्रष्ट हो गए हैं.

पटना (बिहार) **संजीव कुमार सज्जन**

विकृति का फल

धर्मनिरपेक्षता पर बहस 'कैसा स्वरूप, कैसी भूमिका' (15 मई) पढ़ा. मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए हमारी सरकार क्या नहीं करती. 130 करोड़ रु. वह वक्फ बोर्ड को देती है जो तलाकशुदा मुस्लिम औरतों को मुआवजे के रूप में दिया जाता है. हज यात्रा के लिए वह लगभग 50 करोड़ रु. देती है जबकि पुष्कर तीर्थ में हिंदू यात्रियों पर कर लगाया जाता है.

महिदपुर (म. प्र.) **विश्वास डोसी 'निलेश'**

■ धर्मनिरपेक्षता का सीधा संबंध विभिन्न धर्मों के लोगों के मानसिक भय से है और यह भय वोट बैंक के रूप में अल्पसंख्यकों का इस्तेमाल करने वाली राजनैतिक पार्टियों की देन है. आजादी के बाद से ही 'तुम्हारा अस्तित्व हमारे अस्तित्व से है' जैसी भावना फैलाकर इन राजनीतिक पार्टियों ने धर्मनिरपेक्षता का स्वरूप विकृत कर दिया है.

ग्वालियर (म.प्र.) **अश्विनी कुमार सूद**

■ जब धर्मनिरपेक्षता की सटीक परिभाषा ही न हो तब तर्क-वितर्क का क्या लाभ? स्वतंत्रता के इन 44 वर्षों में धर्मनिरपेक्षता की परिभाषा यही रही है कि बहुसंख्यक को दबाया जाए और अल्पसंख्यक को उभारा जाए. नतीजतन, यहीं पैदा हुए, पले-बढ़े मुसलमानों की सहानुभूति दूसरे देशों से है. भारत में पाकिस्तान का झंडा फहराया जाता है. खेलों में पाकिस्तान के हारने पर दंगा-फसाद होता है. उसके जीतने पर खुशियां मनाई जाती हैं. ऐसा क्यों? जब तक मुसलमानों की यह मानसिकता समाप्त नहीं होती, भारत धर्मनिरपेक्ष कभी नहीं हो सकता.

पानीपत (हरियाणा) **ओमप्रकाश जैन**

जीवन साथी चुनने से पहले इकरार, तब प्यार इसी बात की पुष्टि करता है कि नौकरी करने, घर से बाहर निकलने से लड़कियों की झिझक

दूर हुई है और उनमें एक नया आत्मविश्वास आया है.

पटना (बिहार) **अंजनी कुमार**

सच पूछा जाए तो डेटिंग और प्रेम का किसी वर्ग विशेष से संबंध नहीं है. अब ज्यादा से ज्यादा महिलाएं नौकरी करने लगी हैं और कमाने वाले की स्वतंत्रता स्वतः ही बढ़ जाती है. जाहिर है, इसी स्वतंत्रता के चलते लड़कियां भी रोमांस के लिए उतावली हो रही हैं. पश्चिमी संस्कृति की यह खुल्लमखुल्ला नकल भारतीय समाज के लिए घातक हो सकती है.

बुरहानपुर (म.प्र.) **लीलाधर देशमुख**

■ खुशवंत सिंह एक तरफ तो भाजपा को,जो हिंदू राष्ट्र के सिद्धांत को मानती है, गाली देते हैं और दूसरी ही सांस में इस सत्य को भी स्वीकारते हैं कि यह देश बहुसंख्यक हिंदुओं के कारण ही धर्मनिरपेक्ष है और मुसलमान हिंदुओं के बराबर होते तो इस देश को इस्लामी देश घोषित कर देते. यह विरोधाभास क्यों? यदि यह देश धर्मनिरपेक्ष बना हुआ है तो यह स्वतः ही हिंदू राष्ट्र हुआ या नहीं?

भागलपुर (बिहार) **दिगंबर प्रसाद दिवाकर**

■ धर्मनिरपेक्षता को राजनैतिक दलों द्वारा नहीं वरन आम आदमी द्वारा परिभाषित किया जाना चाहिए. गत कसैले अनुभवों से यह सिद्ध हो गया है कि राजनैतिक दलों की तथाकथित धर्मनिरपेक्षता की नीति वस्तुतः स्वार्थ सापेक्षता, सत्ता सापेक्षता, वोट सापेक्षता का ही पर्याय रही है.

खंडवा (म.प्र.) **सुधीर कुमार चौधरी**

■ धर्मनिरपेक्षता, आरक्षण, आर्थिक स्थिति और संघीय व्यवस्था जैसे गंभीर मसलों पर क्रम से एक साथ इतने विद्वानों के उपयोगी विचार, जिनकी हमें उत्सुकता से प्रतीक्षा रहती है, जानने को मिल रहे हैं. वक्ताओं ने निश्चित रूप से अपने वैचारिक उत्तराधिकारियों के लिए अनेक वैचारिक बिंदु छोड़े हैं.

कानपुर (उ.प्र.) **राघवेंद्र नाथ ठाकुर**

कुंठाएं न हावी हों

'प्यार से पहले इकरार' (15 मई) दरअसल हमारी पुरानी मानसिकताओं की तिलांजलि की कड़ी मात्र है. युवा सेक्स अपराध मानसिक कुंठाओं के कारण करता है. यदि उसे समाज सीमाओं के उल्लंघन की चेतावनी देकर स्वस्थ संबंधों की छूट दे तो युवा मन ताजगी महसूस करेगा और बुजुर्गों के विचारों का सम्मान भी करेगा.

रायपुर (म.प्र.) **सुरेंद्रपाल हंसपाल**

■ भारतीय समाज में निश्चय ही प्रेम को स्वीकृति मिलनी शुरू हो चुकी है. लेकिन उस दिन का इंतजार है जब ऐसे लेख लिखते हुए लेखिका को युवा प्रेमियों के वास्तविक नाम लिखने की छूट होगी.

नैनीताल (उ.प्र.) **नवीन रावत**

भूल सुधार

पिछले अंक (1-15 जून 1991) में पृष्ठ 96 पर राजीव गांधी के पुत्र राहुल की उम्र 19 वर्ष और बेटी प्रियंका की उम्र 21 वर्ष छपी है. दरअसल राहुल की उम्र 21 वर्ष और प्रियंका की 19 वर्ष है. भूल के लिए खेद है. —**संपादक**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जांच को आंच न आए

रेखांकन: अजीत नैनन

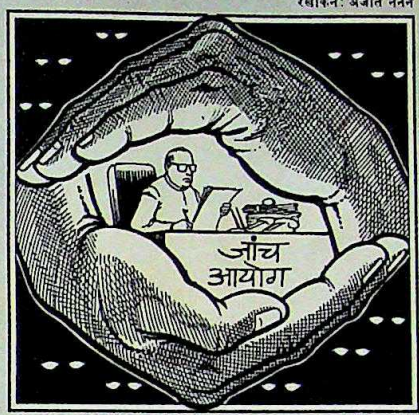

राजीव गांधी की हत्या के बाद पूरा देश स्तब्ध और आशंकित था. मगर राहत की बात यह हुई कि नवंबर 1984 वाली हिंसा की पुनरावृति नहीं हुई. संयोग से अधिकांश नेताओं ने संयम बरता. लेकिन चुनाव प्रचार का अंतिम चरण शुरू होते ही वरिष्ठ नेताओं ने इस हत्याकांड से फायदा उठाने की भद्दी कोशिशें शुरू कर दीं. बेबुनियाद आरोप उछाले जाने लगे.

सबसे गंदा आरोप इंका के एक राज्यसभा सदस्य ने लगाया. उन्होंने राजीव की हत्या के लिए कार्यवाहक प्रधानमंत्री चंद्रशेखर को दोषी ठहराया. दूसरे वरिष्ठ इंका नेतागण और उनके सहयोगी सीआइए से लेकर द्रमुक, आरएसएस और तरह-तरह के राष्ट्र विरोधी तत्वों को इसके लिए जिम्मेदार बताने लगे. इन लोगों ने यह भी कहा कि राजीव की सुरक्षा में जानबूझकर ढील बरती गई.

इस तरह की छिछली बातों से एक खतरा यह है कि हत्याकांड की जांच का राजनीतिकरण हो सकता है और इंदिरा गांधी की हत्या की जांच के लिए गठित ठक्कर आयोग में जो अराजकता फैली थी वह इस जांच-पड़ताल में भी फैल सकती है. सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जे.एस. वर्मा की अध्यक्षता वाले इस जांच आयोग की शर्तें इंका के दबाव पर व्यापक बनाई गई हैं. इससे पहले सीधी-सी व्यवस्था यह थी कि वर्मा सुरक्षा में हुई चूकों की जांच करेंगे, और सीबीआई हत्याकांड की जांच करेगी. यह व्यवस्था इसलिए की गई थी कि ठक्कर आयोग वाली गड़बड़ी इस बार न हो. ठक्कर आयोग की कार्रवाई एक ऐसा हथियार बन गई थी जिसके सहारे जानकारियों को जानबूझकर प्रचारित करके लोगों को बदनाम किया जाता था. उस आयोग का उपसंहार भी विचित्र हुआ. आयोग ने आर.के. धवन को दोषी ठहराया जबकि विशेष जांच दल ने उन्हें बरी कर दिया था. जांच आयोग या पुलिस जांच दल की कार्य शर्तें तय करने के बाद उन्हें बदलना निर्देश प्रक्रिया को उलझाना और जोड़-तोड़ को बढ़ावा देने जैसा ही होता है.

किसी राष्ट्रीय नेता की हत्या की जांच को राजनैतिक दखलंदाजी या दबाव से मुक्त ही रखा जाना चाहिए. सभी दलों के नेताओं को चाहिए कि वे पूरा संयम बरतें ताकि जांच निष्पक्षता से हो सके. उन्हें इसका इस्तेमाल अपने राजनैतिक विरोधियों को तंग करने, बेकसूर लोगों को बदनाम करने और नफरत फैलाने में नहीं करना चाहिए.

सुधारों की जरूरत बरकरार

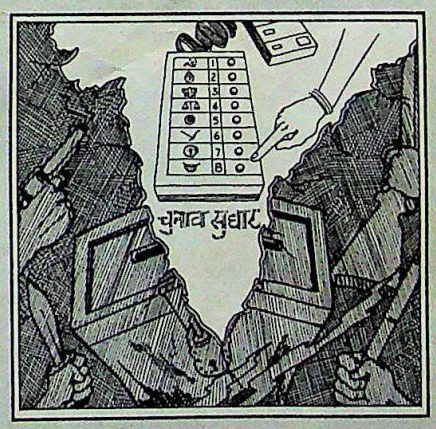

प्रत्येक चुनाव की रगड़ झेलने के बाद यह यह देश यह सोचकर खुश हो लेता है कि दुनिया के इस सबसे बड़े लोकतंत्र ने एक बार फिर तमाम आशंकाओं को गलत साबित करते हुए नई संसद को चुन लिया है. मगर यह देश चुनाव पद्धति की खामियों—प्रक्रिया संबंधी अड़चनों और लालफीताशाही, बूथ कब्जों, वित्तीय गड़बड़ियों आदि—को लेकर चिंतित भी होता रहा है. इन खामियों को कुछ हद तक दूर करने के कई अल्पकालिक उपाय किए जा सकते हैं. मगर चुनाव पद्धति में सुधार की कोई गंभीर कोशिश नहीं की गई.

वक्त आ गया है कि मतदान मशीन का उपयोग शुरू किया जाए. इनका परीक्षण किया जा चुका है और इन्हें कामयाब पाया गया. कागज के खर्च में कमी, चुनाव चिह्नों की स्पष्ट पहचान, चुनाव नतीजे शीघ्र हासिल करने की सुविधा और चुनाव प्रक्रिया में कम लोगों को लगाने जैसी बातें इसके साथ जुड़ी हैं.

पार्टियों के चुनावी खर्च में कंपनियों की हिस्सेदारी से संबंधित नियम अस्पष्ट हैं. कानून ने प्रत्येक उम्मीदवार के चुनावी खर्च की सीमा डेढ़ लाख रुपए तय की है जो कि एक मजाक ही है. चुनाव में काले धन और कंपनियों के चंदे के खेल को कानून से रोकना संभव नहीं है. यथार्थवादी नजरिया तो यह होगा कि पार्टियों के कोषों का सार्वजनिक लेखा परीक्षण किया जाए और उम्मीदवारों के खर्च की सीमा बढ़ाई जाए.

इसी तरह चुनाव में धांधली भी कानून से रोकी नहीं जा सकती. लेकिन कुछ उपाय तो किए ही जा सकते हैं. ग्रामीण इलाकों में मतदान केंद्र दबंग जातियों के प्रभाव वाले इलाकों से हटाकर तटस्थ जगह पर बनाए जा सकते हैं मतदाताओं को पहचान पत्र दिए जा सकते हैं. मतदान केंद्रों पर संचार सुविधाएं मुहैया कराई जा सकती हैं.

निर्दलीय उम्मीदवारों की बढ़ती संख्या के कारण मतपत्रों पर खर्च बढ़ रहे हैं. लेकिन इससे भी गंभीर बात यह है कि कोई आतंकवादी या अपराधी उनमें से किसी एक की हत्या करके वहां चुनाव ही स्थगित करवा सकता है. इसलिए जमानती रकम बढ़ाकर या उम्मीदवारी के परचे में कुछ और शर्तें जोड़कर कानून इस समस्या को कम कर सकता है.

इन उपायों से चुनाव पद्धति की सारी खामियां तो दूर नहीं होंगी बल्कि दुनिया के इस सबसे बड़े लोकतंत्र में चुनाव ज्यादा सहज तरीके से कराने में सुविधा हो सकती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचानक एक धमाका-सा हुआ,
एक चीख़ सुनाई दी और कांच टूटने की छनछनाहट,
फिर पूरे कमरे में अंधेरा छा गया...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

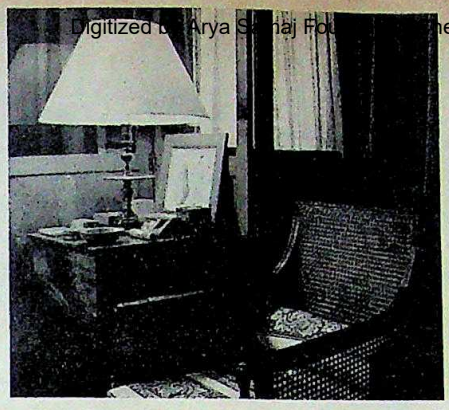

घुप्प अंधेरा! पार्टी का रंग भंग हो गया। मेहमानों में अफ़रा-तफ़री मच गई। संगीत की जगह हड़बड़ाई आवाज़ें उभरने लगीं, झाड़-फ़ानूसों की जगह माचिस की तीलियाँ टिमटिमाने लगीं और मेरे क्लासिक उषा पंखों के रुकते ही सब गर्मी से बेचैन हो उठे।

"क्या हुआ?" मैंने बैरा से पूछा।

"साब, एक मेमसाब मुझसे टकराईं ओर हड़बड़ाकर चिल्ला पड़ीं। मेरे हाथ से ट्रे छूटकर स्टीरियो पर गिर पड़ी। लगता है फ़्यूज़ उड़ गया है– और वह मेमसाब भी बेहोश हो गई हैं।"

मैं फ़ौरन इंतज़ाम में लग गया। फ़्यूज़ बना, बत्तियाँ जलीं, और सबसे बढ़कर, उषा के पंखे फिर से चलने लगे। सबने चैन की साँस ली।

जो साहिबा बेहोश हो गई थीं, उन्हें गेस्ट रूम में ले जाकर आराम से लिटाया गया। मैंने खुद खिड़कियाँ खोलीं और पंखा चलाया। उषा पंखे के पर हिले और तेज़ी से घूमने लगे। वही सुहानी हवा, वही तेज़ रफ़्तार, हमेशा की तरह बेखटका, बेआवाज़...

उन साहिबा की आँखें धीरे से खुलीं, मेरी आँखों से मिलीं।

उन्होंने राज़दारी से कहा – "कब से मौक़ा ढूँढ रही थी कि एक मिनट आपसे अकेले में बात हो। पर इतने सारे लोग थे वहाँ...और कोई तरीक़ा भी तो नहीं था –"

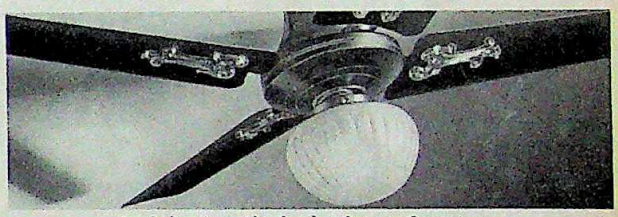

'ल्युमिनेयर' – पंखे और रौशनी का सजीला संगम, मख़मली भूरे रंग पर सुनहरी सज-धज

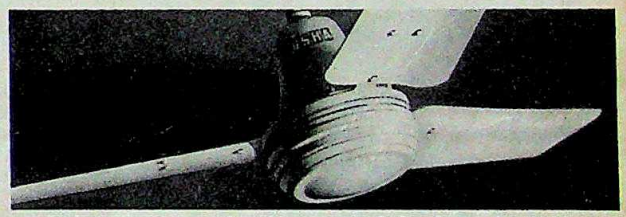

'स्टैला' – उत्कृष्ट सुरुचिपूर्ण डिज़ाइन, आईवरी सफ़ेद व भूरे रंगों में

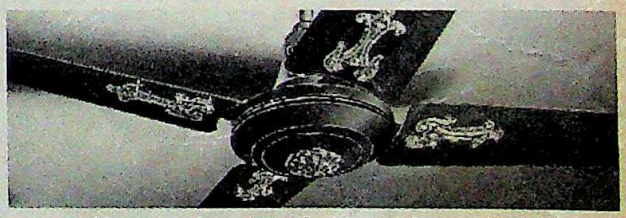

'कोहिनूर सुपर डीलक्स' – सुडौल सुंदरता, भूरे व सुनहरे रंगों में

उषा

क्लासिक

क लै क्श न

पंखे जो आपके बारे में बहुत कुछ बताते हैं.

60 से अधिक देशों को निर्यात ❋ 40 वर्षों की उत्तमता ❋ भारत के सर्वाधिक बिकने वाले पंखे

Contract.JEW.24165 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SEE BETWEEN THE LINES

Even after
you've heard about it all
and read about it all – see it all
on India's first newsmagazine on
video cassette – ***NEWSTRACK***
Press the play button and you're
on the ringside seat –
to people, places, events, issues –
incisively covered like on no
other medium ever before.

▶ **ONLY ON NEWSTRACK** ◀

SPECIAL OFFERS

SINGLE CASSETTE
- Current Issue Rs. 145/- for a single cassette.
- Back Issues Rs. 135/- each.

SUBSCRIPTION
- Annual Rs. 1380/- and a free ***INDIA TODAY ADDRESS BOOK.****

* This offer is valid upto August 31, 1991. Address Books will be delivered at your given address within 4-6 weeks of receipt of order.

Mail a DD/Cheque favouring
Living Media India Limited to P.O. Box No.29,
New Delhi – 110 001.

Cheques/ Demand Drafts payable at Delhi, Bombay, Calcutta and Madras must be MICR only.

For more details contact
Delhi: 3320689. Bombay : 2027867.
Madras : 479163.
Calcutta : 445398. Bangalore : 210834.

Home delivered by courier or Registered Post

India Today Presents
NEWSTRACK
▶The newsmagazine to watch◀

MILESTONES/IT/236

सुशील गोस्वामी, राजस्थान पत्रिका

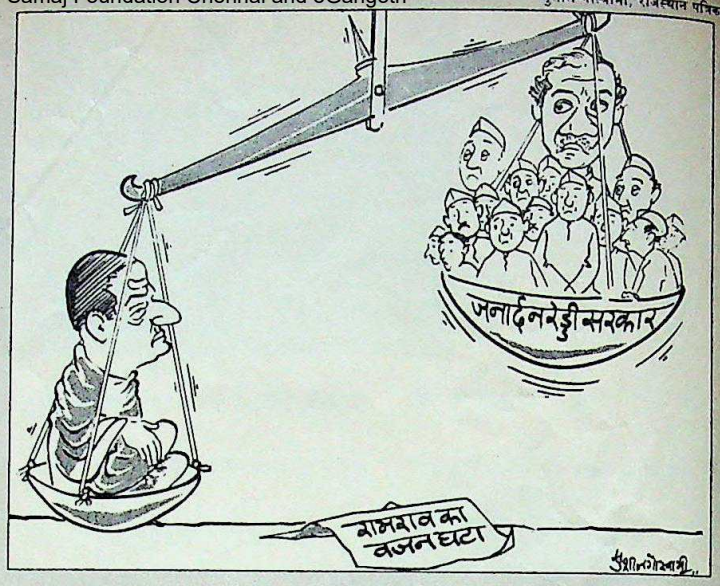

● पता नहीं कांग्रेस के लोग क्या कहेंगे.
■ **चंद्रशेखर** (कांग्रेस में शरीक होने के सवाल पर), *राजस्थान पत्रिका*

● कांग्रेस के लिए स्थिरता दूसरों से उधार लिया गया मंत्र नहीं है.
■ **पी.वी. नरसिंहराव,** *दैनिक ट्रिब्यून*

● धीरे-धीरे मेरा मंच ऊंचा होता जा रहा है और मैं जनता से दूर होता जा रहा हूं.
■ **अटल बिहारी वाजपेयी** (सुरक्षा प्रबंधों पर), *स्वतंत्र भारत*

● नहीं...एकदम नहीं. मैं प्रधानमंत्री पद की दौड़ में नहीं हूं.
■ **प्रणव मुकर्जी,** *नवभारत टाइम्स*

● कांग्रेस ने अपनी सोच-समझ को एक परिवार के यहां गिरवी रख दिया था. अब श्री राव के अध्यक्ष बनने से इसमें रातोरात परिवर्तन हो नहीं सकता.
■ **अजित सिंह,** *जनसत्ता*

● अब तो लोग हमसे कहने लगे हैं कि अब तो आप ही हैं.
■ **लालकृष्ण आडवाणी,** *संडे ऑबजर्वर.*

● राष्ट्रीय सरकार राष्ट्रपति के मन का शगूफा है. क्या अब तक की सरकारें अराष्ट्रीय रही हैं?
■ **जनेश्वर मिश्र,** *दैनिक जागरण*

● मान की बयानबाजी पंथ को तबाही के कगार की तरफ ले जा रही है. ऐसा लगता है कि जैसे वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठा है.
■ **जसबीर सिंह रोडे,** *दैनिक ट्रिब्यून*

● राजा (वी.पी. सिंह) का क्या है. वो अपना स्वार्थ साधने के लिए किसी को भी अपना निशाना बना सकते हैं.
■ **रामधन,** *नई दुनिया*

● आजकल गेंदबाजी ने मेरे दिमाग को कंप्यूटराइज्ड कर दिया है.
■ **कपिलदेव,** *आज*

● इस इंडस्ट्री के लोग गिद्ध हैं. वे आपके खून की आखिरी बूंद तक पी जाना चाहते हैं.
■ **गोविंदा,** *स्टारडस्ट*

● मैं उस तरह की लड़की नहीं हूं जो मन बहलाने के लिए किसी के साथ समय बिताए.
■ **माधुरी दीक्षित,** *सिने ब्लिट्ज*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलाओं पर मेहरबानी

● विदेश मंत्रालय में मध्यम दर्जे के कई पुरुष अधिकारी इन दिनों खासे असंतुष्ट हैं क्योंकि उनके हिसाब से महिला अधिकारियों पर अधिक कृपा

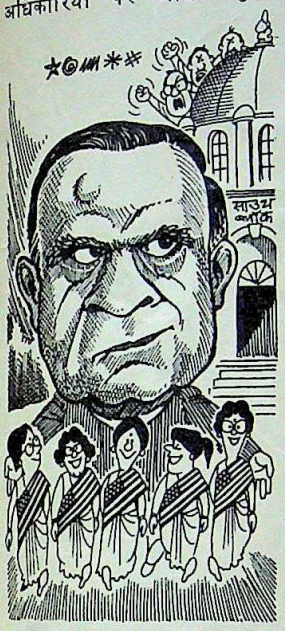

बरस रही है. पुरुष वर्ग की यह शिकायत वाशिंगटन डी.सी. जैसे प्रतिष्ठित स्थान पर भारतीय दूतावास में पांच महिला आइएफएस अधिकारियों की नियुक्ति को लेकर है.

वाशिंगटन में दो महिला अधिकारी पहले से ही हैं और अगर विदेश सचिव मुचकुंद दुबे की मेहरबानी रही तो काउंसेलर और उससे ऊपर के पदों के लिए तीन और महिलाएं रवाना होंगी. पुरुष वर्ग इस बात से सबसे ज्यादा खिन्न है कि अधिकतर महिला अधिकारी लगातार दूसरी बार सुपर 'ए' समझे जाने वाले स्थान पर भेजी जा रही हैं. यानी वे हनोई, प्योंग्यांग या रंगून जैसे कालापानी सरीखे स्थानों पर नहीं भेजी गईं, जबकि उनके समान पदों पर काम कर रहे पुरुष अधिकारी वैसी जगहों से हो आए हैं. वाशिंगटन जाने के लिए तैयार बैठीं तीनों महिलाएं फिलहाल स्वदेश में ही हैं और इस नियुक्ति को संकट वाला नहीं माना जाता.

विदेश सचिव विद्रोह के इन अस्फुट स्वरों से अनभिज्ञ नहीं हैं और उन्होंने हाल ही में विदेश सेवा संघ के साथ एक बैठक में इस बात का आश्वासन दिया कि वे नियुक्ति और तबादले के मामलों में पूरा न्याय बरतेंगे. लेकिन जहां तक वाशिंगटन का सवाल है, वे अपनी टेक पर बाकायदे कायम हैं.

चकमा देने की चतुराई

● चाहे आप उनसे सहमत हों या नहीं, बातचीत के उनके दोटूक लहजे को पसंद करते हों या नापसंद, पर टी.एन. शेषन ने मुख्य चुनाव आयुक्त के रूप में पत्रकारों के लिए भरपूर मसाला जुटाया है.

हालांकि मध्यावधि चुनाव की गतिविधियों के बारे में रोजाना होने वाले संवाददाता सम्मेलनों में शेषन पूरी तरह छाये रहे हैं, पर विशेष भेंट के पत्रकारों के आग्रह को वे पूरी चतुराई के साथ टालते रहे हैं. लगता है एक व्यक्ति के साथ आमने-सामने की बातचीत संभवतः उन्हें पसंद नहीं.

किसी भी मसले की जानकारी के लिए या फिर किसी मसले के बारे में स्पष्टीकरण के लिए जब भी परेशान पत्रकार उनके घर टेलीफोन करते हैं, एक गुरु-गंभीर आवाज (जवाब देने वाली मशीन

सभी कार्टून: अजीत नैनन

नहीं) विशिष्ट दक्षिण भारतीय शैली में उत्तर देती है "श्री शेषन घर पर नहीं हैं." और सवाल पूछा जाए कि वे कब आएंगे? तो जवाब मिलेगा, "पता नहीं."

यह किसकी आवाज है? इस बारे में बहुत माथापच्ची की जरूरत नहीं. क्योंकि पिछले तीन महीनों से रोजाना उनकी बात सुनने के आदी पत्रकार दावे के साथ कहते हैं कि स्वयं शेषन ही दूसरी ओर से बोल रहे होते हैं.

ललक नहीं छूटती

● कांग्रेसी नेता, बाहर से चाहे जितने पवित्र और निष्काम दिखने की कोशिश करें, पर जीवन की बेहतर सुविधाओं के प्रति उनकी ललक कभी कम होती दिखाई नहीं

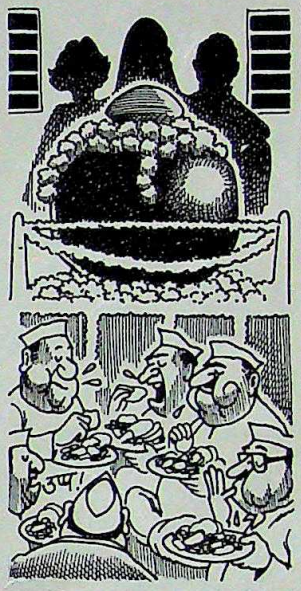

देती. खासकर भोजन और स्वाद मामले में तो वे कोई समझौता करना नहीं पसंद करते. इलाहाबाद में राजीव गांधी की अस्थियों के विसर्जन के लिए की गई रेलयात्रा में यह तथ्य खुलकर सामने आया.

नई दिल्ली से इलाहाबाद को रवाना हुई 'अस्थि स्पेशल' ट्रेन में पत्रकारों सहित सभी आम लोगों को संसद की कैंटीन के डिब्बाबंद भोजन से ही संतोष करना पड़ा. मगर दूसरे डिब्बों में सफर कर रहे इंका के वीआईपी नेताओं ने किसी और ही जगह के लजीज भोजन पर हाथ फेरें.

लिहाजा, बाकी दूसरे लोगों के लिए तो दाल-चावल की व्यवस्था थी, पर शोकाकुल कांग्रेसियों के लिए मलाई कोफ्ता, शाही पनीर और आइसक्रीम का शानदार प्रबंध था.

इलाहाबाद स्टेशन के प्लेटफार्म पर हजारों लोग अस्थिकलश की प्रतीक्षा में खड़े थे. स्टेशन से संगम तक के रास्ते में हजारों लोग दिवंगत नेता के अस्थिकलश के अंतिम दर्शन के लिए खड़े थे. ट्रेन से आए कई नेताओं ने भीड़ की तरफ हाथ हिला-हिलाकर अपनी मौजूदगी जतानी चाही लेकिन लोगों पर इन इशारों का कोई असर नहीं हुआ और वे अस्थिकलश ले जा रही गाड़ी पर ही निगाह टिकाए रहे.

पहरेदारी में तैनात

● आर.के. धवन अपने लायक काम ढूंढ़ ही लेते हैं. इंदिरा गांधी के समय वे महज खासमखास न होकर ऐसे सशक्त अधिकारी की भूमिका में भी थे जिसकी इच्छा के बगैर कोई भी इंदिरा गांधी तक नहीं पहुंच सकता था. इसी तरह वे राजीव गांधी के दरवाजे पर भी तैनात रहे.

और अब जबकि राजीव नहीं रहे, धवन को हाल में ही कांग्रेस अध्यक्ष पी.वी. नरसिंहराव के लिए जी-हुजूरी करते और पहरेदारी करते देखा गया.

नई कुर्सी पर बैठने के बाद नरसिंहराव के पहले संवाददाता सम्मेलन में कई फोटोग्राफर कांग्रेस अध्यक्ष के बिलकुल नजदीक जमा हो गए और नतीजतन पीछे के लोगों से नरसिंहराव की दूरी बढ़ गई.

तभी, कांग्रेस अध्यक्ष ने हुक्म दिया, "धवन, इनको हटाओ." और 'धवन जी' (राजीव इसी संबोधन से उन्हें बुलाते रहे) तत्काल हरकत में आ गए. उन्होंने फटाफट सब को पीछे खदेड़ दिया. लेकिन खाली जगह में अपने प्रिय संवाददाताओं को आसीन कराने से वे नहीं चूके. और फिर पूरे समय उनके कान अपने नए नेता के किसी और आदेश के इंतजार में खुले रहे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दूजे के लिए

■ चुनाव अभियान के दौरान कुछ मामले ऐसे भी रहे जिनमें आपसी राजनैतिक विरोध न सिर्फ शालीनता के साथ बल्कि आपसी रजामंदी से भी हुआ.

किस्सा मध्य प्रदेश के खजुराहो लोकसभा क्षेत्र का है.मतदाता यह देखकर हैरान हुए कि दो निर्दलीय उम्मीदवार एक ही जीप पर सवार होकर अपना-अपना प्रचार अभियान चला रहे हैं. जीप के अगले भाग में मोटरकार चिह्न वाला झंडा और पीछे अलमारी वाला झंडा लगाए ये उम्मीदवार बारी-बारी से पर भाषण भी दे रहे थे और दोनों में से किसी एक का चुनाव

सभी कार्टून: जयंतो

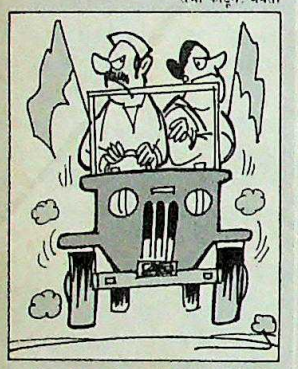

करने की अपील भी कर रहे थे. मतदाताओं के सामने स्थिति तब स्पष्ट हुई जब पता चला कि दोनों उम्मीदवार पति-पत्नी हैं और एक-दूसरे के खिलाफ मिलजुलकर चुनाव लड़ रहे हैं.

चलती-फिरती मधुशाला

■ मधुशाला और उसके प्रेमियों का रिश्ता जन्म-जन्मांतर का है. मद्यनिषेध को उतावली सरकारें भले ही इस रिश्ते को 'अवैध' घोषित कर दें, इन दीवानों को अपनी प्रेयसी की बाहों से परे रखने की भले ही लाख कोशिशें चलती रहें लेकिन ये दीवाने भी प्रेम मिलन का कोई-न-कोई रास्ता निकाल ही लेते हैं. कुछ इलाकों में तो अंधेरी गलियों में चलने वाली गुमनाम मधुशालाएं अपनी बाहें खोलकर इन प्रेमियों को मोक्ष दिलाती हैं. लेकिन पिछले कुछ समय से गुजरात के कुछ फेरीवालों ने अपने यहां मद्यनिषेध से निबटने का जो नायाब नुस्खा ढूंढ़ निकाला है उसने मधुशाला प्रेमियों को कृत-कृत्य कर डाला है.

इस बार लोग यह देखकर कुछ हैरान थे कि गर्मियां पूरी तरह शुरू होने से पहले ही बर्फ के गोले बेचने वाले कई फेरीवालों का धंधा अपने यौवन पर आ गया. देखने वालों के लिए यह बात भी नई थी कि बर्फ की चुस्कियां लेकर चटखारे भरने वालों में बड़ी उम्र के लोगों की संख्या बच्चों से कहीं अधिक है. गोले की इस अचानक बढ़ी हुई लोकप्रियता का राज शायद कुछ ज्यादा देर तक राज ही रहता लेकिन गोला चूसने के बाद बहकने वाले मधु प्रेमियों ने धंधे की कलई खोल दी. अब यह बात आम हो चुकी है कि बर्फ के गोले बेचने वाले कुछ दुकानदार अपने पास ऐसी बर्फ भी रखते हैं जिसे पानी के बदले दारू जमाकर बनाया जाता है. बाद में रंदे से छीलकर बने इस बर्फ के गोले का राज या तो दुकानदार को पता होता है या गोला चूसकर बहके दीवानों को देखने वालों को.

फंस गया शिकारी

■ कभी-कभी शिकारी खुद ही शिकार बन जाता है. कलकत्ता के एक फेरीवाले के साथ यही हुआ जो स्टेनलेस स्टील के बरतन बेचता था.

पिछले दिनों एक दोपहर एक महिला ने उसे बरतन दिखवाने के लिए रोक लिया. महिला ने कपड़ों का एक ढेर उसके सामने लगा दिया और दोनों में मोल-भाव शुरू हो गया. मगर फेरीवाले का दिल महिला के गले में लटक रही लंबी चमकदार चेन में अटक गया. बस फिर क्या था उसने महिला के गले से वह चेन झपटी और अपने बरतन वहीं छोड़ रफूचक्कर हो गया.

चेन झपटे जाने के सदमे से उबरने के बाद महिला ने मुस्कराते हुए बरतनों की टोकरी अपनी रसोई में सजा ली. पीतल की चेन के बदले सौदा महंगा नहीं था.

हार में भी फायदा

■ चुनाव लड़ना हर हिंदुस्तानी का मौलिक अधिकार है. शायद इसीलिए इस बार इतने उम्मीदवारों ने मैदान में कूदने का फैसला किया कि नए-पुराने सभी रिकार्ड टूट गए. यह तो तय

है कि इनमें से अधिकांश उम्मीदावार हारेंगे और शायद जमानत भी जब्त कराएंगे. लेकिन कुछ ऐसे उम्मीदवार भी हैं जिन्हें जमानत जब्त कराने के बाद भी नकद फायदा होने जा रहा है. ऐसे कुछ उम्मीदवार गाजियाबाद और आसपास के हैं इनमें से अधिकांश वहां के रईस उद्योगपति या व्यवसायी हैं. कुछ बड़े पार्टी उम्मीदवारों और अपराधी गुटों की ओर से बार-बार चुनाव फंड की मांग से ये लोग इतने तंग आ गए कि आखिर इससे बचने का यही रास्ता बचा कि वे खुद चुनाव में खड़े हो जाएं और चंदा मांगने वालों से ही चंदे का आग्रह कर दें. तरकीब ने काम किया. उम्मीद है कि कुल नुकसान सिर्फ जमानती रकम का ही होगा.

टिकट बदल गया

■ सत्ता का आकर्षण ही कुछ ऐसा है कि लोग कुछ भी त्याग करने को तैयार हो जाते हैं. मगर सत्ता के लिए दीवानगी के इस माहौल में ऐसे समझदारों की भी कमी नहीं है जो हाथ में आए चुनाव टिकट की जगह डाक में आए नौकरी के नियुक्ति पत्र को ज्यादा महत्व देते हैं.

ऐसे ही एक हैं सी.के. कुमारन जिन्हें भारतीय जनता पार्टी की ओर से कुट्टनाड विधानसभा सीट का टिकट मिला था. बेरोजगार कुमारन अपना नामांकन भरने की तैयारी कर ही रहे थे कि डाकिये ने उन्हें एक और विकल्प थमा दिया. तेल और प्राकृतिक गैस आयोग ने इस भूविज्ञानी को अपने यहां नौकरी के लिए बुला भेजा था. कुमारन ने चुनाव टिकट लेने की जगह रेलगाड़ी से देहरादून का टिकट कटवा लिया, शायद यह सोचकर कि चुनाव लड़ने का मौका हर दूसरे-पांचवें साल मिलता ही रहेगा. और पार्टी को नए उम्मीदवार के लिए फिर से दौड़-धूप करनी पड़ी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखी संसार के सपने हमारे

उसके नैनों में सुनहरी चमक.

और मेरे पास अरमानों की दौलत.

कुछ पाने की तमन्ना थी दिल में,

पर निराशा के बादल छाये हुए थे.

आज खुशी से नाच उठा मन,

और हल्के फुल्के मेरे कदम.

यूं लग रहा है निराशा बन गई है आशा.

SIYARAM SUITINGS

COME HOME TO

THE PREMIUM SUITING BLENDS

Siyaram's

® Regd. Trade Mark of Siyaram Silk Mills Ltd., Bombay-11.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव हत्याकांड

सुरागों से उभरते संकेत

—शेखर गुप्ता, आनंद विश्वनाथन
और कविता शेट्टी के साथ

हत्यारों की तलाश का इतना सघन और व्यापक अभियान इस उपमहाद्वीप में पहले कभी नहीं चलाया गया था. राजीव गांधी के हत्याकांड की गुत्थी सुलझाने के लिए भारत के 200 सबसे कुशल जासूस, अपराध और विस्फोट विशेषज्ञ हफ्तों से रोजाना 20-20 घंटे काम कर रहे हैं.

इस षड्यंत्र का जाल देश की सीमा से बाहर तक फैला है. इसीलिए इसका ओर-छोर भी आसानी से हाथ नहीं आ रहा है. केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने जांच में मदद के लिए इंटरपोल से भी सहयोग मांगा. अटकलों और आरोपों के कारण जांच में बाधा पड़ रही है. सीबीआई द्वारा गठित विशेष जांच दल को पिछले पखवाड़े मद्रास, कोलंबो और वावुनिया (उत्तरी श्रीलंका में) जो महत्वपूर्ण सुराग मिले उनसे इस अंदेशे की पुष्टि हुई कि हत्या तमिल उग्रवादी संगठन एलटीटीई ने करवाई है. दल ने हत्यारिन का पता लगा लिया है. इसका नाम शालिनी उर्फ शाल उर्फ तनु था जो एलटीटीई के आत्मघाती दस्ते 'शैडो' की सदस्या थी. हत्याकांड में जो तरीके इस्तेमाल किए गए वे एलटीटीई की

ත්‍යාග — ඉන්දියානු රු. 5,00,000/-

வெகுமதி — இந்திய ரூபா 5,00,000/-

REWARD — Indian Rs. 500,000/-

ඉන්දියාවේ හිටපු අගමැති රජිව් ගාන්ධි මහතා ඝාතනය සම්බන්ධයෙන් සැකකරනු ලබන ඡායාරූපයන් හි දක්වෙන අය පිළිබඳව ප්‍රයෝජනවත් ආරංචියක් සපයන අයෙකුට ඉන්දියානු රුපියල් 5,00,000 (රු. ලක්ෂ 5) ත්‍යාගයක් ඉන්දීය රජය මගින් පිරිනමනු ලැබේ. සියලුම ආරංචි රහස්‍ය සේ සලකනු ලබන අතර පහත සඳහන් දුරකථනයන්ට ආරංචි සැපයිය යුතුය :

ශ්‍රී ලංකාවේ ඉන්දියානු මහ කොමිසාරිස් කාර්යාලය
දුරකථන අංකයන් : 421605, 422787

මදුරාසි පොලීසිය දුරකථන අංකයන් : 839001, 839095

ශ්‍රී ලංකාවේ අපරාධ පරීක්ෂණ දෙපාර්තමේන්තුව
දුරකථන අංකයන් : 20141 සිට 20145, 422176

முன்னைய இந்தியப் பிரதமர் ராஜிவ் காந்தியின் மரணத்திற்குப் புகைப்படத்தில் உள்ள இரு நபர்கள் காரணமாக இருப்பதினால் இவர்களைக் காட்டிக் கொடுத்தாலோ அல்லது தகவல் கொடுத்தாலோ இந்திய அரசாங்கம் இந்திய ரூபா 5,00,000/- சன்மானம் வழங்கும். இது தொடர்பான தகவல்களுக்குத் தொலைபேசி மூலம் தொடர்பு கொள்ளவும்.

இந்திய உயர்ஸ்தானிகர் காரியாலயம், இலங்கை :
தொலைபேசி இல. 421605, 422787
இலங்கை குற்றவியல் புலனாய்வுத் திணைக்களம் :
தொலைபேசி இல. 20141—20145, 422176
மதுரை பொலிஸ் : 839001, 839095

Indian Authorities has offered a Reward of Indian Rs. 500,000/- for any information leading to the identification of anyone of the persons appearing in the photograph, whom they suspect to have been involved in the assassination of Mr. Rajiv Gandhi, former Prime Minister of India.

All information will be kept strictly confidential and such information may be furnished to the following telephone numbers.

Indian High Commission in Sri Lanka :
Telephone Nos. : 421605, 422787
C.I.D., Sri Lanka : 20141 to 20145, 422176
Madras Police : 839001, 839095

जांचकर्ताओं की पहुंच से दूर उत्तर-पूर्व श्रीलंका पर विमान से हजारों पर्चे गिराने से उन्हें कई बहुत ही महत्वपूर्ण सुराग मिले हैं जो राजीव गांधी हत्याकांड में तमिल उग्रवादी संगठन एलटीटीई की भागीदारी के संदेह को पुष्ट करते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही खासियतें हैं—आत्मघाती दस्ते का इस्तेमाल, पीछे कोई भी प्रमाण न छोड़ना.

जांच-पड़ताल
छंटनी के जरिए पहचान

मल्लिगई. दक्षिण मद्रास के ग्रीनवेज रोड के किनारे बनी एक भव्य इमारत ही जांचकर्ताओं का अड्डा है. श्रीपेरुंबुदूर में दायर केस नं. 329/91 की हर बात अपूर्व है—हत्या का तरीका, हत्यारे का सुराग देने वाले के लिए घोषित इनाम की राशि और फिर जांच में जुटी टीम का आकार और इसमें शामिल लोगों की योग्यता तथा क्षमता सब कुछ.

जांच का तरीका भी अभूतपूर्व ही है. यह लगातार बजने वाले तीन टेलीफोनों के माध्यम से संचालित हो रही है. 839067,839001 और 839227 नंबर के इन टेलीफोनों पर आने वाले संदेश लेने और देने के लिए सीबीआई के करीब दर्जन भर अधिकारी 24 घंटे इनके सामने बैठे रहते हैं. मद्रास से 800 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक अन्य हॉल में लगे दर्जन भर टेलीफोन भी इसी तत्परता से सुने जाते हैं. सीबीआई के अतिरिक्त निदेशक एस.के. दत्ता, जो ताज समुद्र होटल के 759 नंबर कमरे में रह रहे हैं, एक छोटी-सी सूचना या सुराग मिलने पर ही सक्रिय हो जाते हैं.

जांच में कोई भी कसर नहीं रहने दी जा रही है. मालदीव में तख्तापलट के दौरान गिरफ्तार किए गए पीपुल्स लिबरेशन आर्गेनाइजेशन ऑफ तमिल ईलम (प्लॉट) के करीब तीन दर्जन लोगों को पिछले हफ्ते छोड़ दिया गया और उन्हें हथियार देकर पूर्वोत्तर श्रीलंका भेजा गया जहां वे ईपीआरएलएफ के करीब 40 सशस्त्र लोगों के साथ मिलकर राजीव हत्याकांड का सुराग ढूंढ़ने की कोशिश करेंगे. ईपीआरएलएफ और प्लॉट तमिल अलगाववादी संगठन हैं और एलटीटीई के जानी दुश्मन भी, जिसने इन दोनों संगठनों को करीब-करीब समाप्त ही कर दिया है.

'काना उस्ताद'
पहला बहुत ही अहम सुराग

जब जांचकर्ताओं ने संदिग्ध हत्यारिन का, जिसके शरीर में बम बंधा था और जिसकी एक तरफ कांग्रेसी लता कन्नन और दूसरी ओर उनकी बेटी कोकिला खड़ी थीं, पहला फोटो जारी किया तो उन्होंने जानबूझकर इसी तस्वीर में किनारे खड़े एक युवक की तस्वीर काटकर निकाल दी थी. छोटे, मजबूत कद-काठी का यह नौजवान

पीटीआई

सुधा (बाएं); नलिनीः हत्याकांड के आत्मघाती दस्ते की सहयोगी

महत्वपूर्ण सुराग

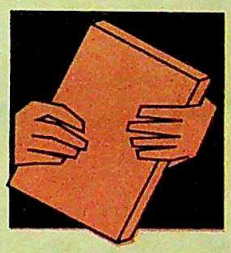

चौथा व्यक्तिः नोटबुक लिए व्यक्ति की पहचान हो गई है. यह एलटीटीई का जाना-माना उग्रवादी रघुअप्पा उर्फ मतिमगन है. हत्या के रहस्य का असली सूत्र वही है. लेकिन एलटीटीई के लोग इसकी हत्या कर दे सकते हैं या वह जांचकर्ताओं के दायरे से दूर जाफना में जाकर कहीं छिप जा सकता है.

मानव बमः इसे एलटीटीई की महिला शाखा की सदस्या बताया जाता है जो वावुनिया में साइकिल चलाया करती थी और उस पर 'नलयिनी' लिखा होता था. लेकिन जब तक उसके असली नाम का पता नहीं चल जाता तब तक इस सूचना के सहारे आगे नहीं बढ़ा जा सकता.

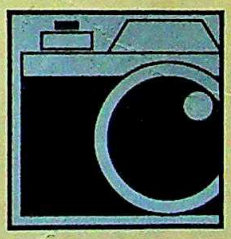

हरिबाबूः जांचकर्ताओं का कहना है कि एलटीटीई से इसके संबंध थे. लेकिन संभवतः हत्यारों ने इसे ढाल के रूप में इस्तेमाल किया हो क्योंकि इसे फोटोग्राफर का अनुमति-पत्र हासिल था. इसके बारे में अन्य जानकारियों से कुछ और सुराग मिल सकते हैं लेकिन एलटीटीई के पुराने रिकॉर्ड यह संकेत देते हैं कि यह सिर्फ ढाल ही रहा हो और उसे ऑपरेशन की कोई जानकारी ही न हो

आरडीएक्स वाला रिश्ताः सीबीआई ने उन दो हथगोलों की फिर से जांच की जो पिछले साल मद्रास में हुई ईपीआरएलएफ नेता पद्मनाभ की हत्या की जगह सही सलामत मिले थे. इनमें सी-4 ग्रेड का आरडीएक्स उपयोग हुआ है जो श्रीपेरूंबुदूर विस्फोट में भी उपयोग किया गया. विशेषज्ञों का निष्कर्ष है कि दोनों एक ही खेप के हैं, जो एलटीटीई से आयी होगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुर्ता-पाजामा और सोने की जंजीर पहने है और इसके हाथ में एक राइटिंग पैड है. जब जांचकर्ताओं ने तस्वीर को बारीकी से देखा तो उन्हें लगा कि यह आदमी पत्रकार नहीं है. विशेष तरह के कैमरे से इस तस्वीर को बड़े आकार का बनाया गया तो मालूम हुआ कि उसकी कमर के पास का हिस्सा कुछ विशेष चीज पहने होने के कारण फूला हुआ था. शायद यह बेल्ट बम हो.

कुछ ही दिनों के भीतर तमिलनाडु के तट पर अक्सर माल लाने ले जाने वाले एक सामान्य एलटीटीई कार्यकर्ता को नागपट्टिनम में गिरफ्तार किया गया. उसने यह फोटो देखकर बताया कि यह चौथा आदमी एलटीटीई का एक महत्वपूर्ण कार्यकर्ता है. उसकी एक आंख एक विस्फोट में खराब हो गई थी जिसे उसने शीशे का बनवा लिया है. उसे एलटीटीई के लोग 'वन-आइड जैक' कहा करते हैं.

यह सूचना मिलते ही कोलंबो स्थित एलटीटीई विरोधी तमिल हलके में हलचल शुरू हो गई. लेकिन सूचनाएं और जगहों से भी आईं और जांचकर्ता आश्वस्त हो गए कि यह शख्स कोई और नहीं, रघुअप्पा उर्फ मतिमगन ही है. यह अभी भी स्पष्ट नहीं है कि उसका मूल नाम क्या है और छद्म नाम क्या. लेकिन माना जाता है कि मद्रास में ईपीआरएलएफ के नेता के. पद्मनाभ की हत्या में उसी का हाथ था और माना जा रहा है कि वह मध्य प्रदेश के दंडकारण्य में छिपे ईपीआरएलएफ के नए प्रमुख पेरुमल की हत्या का षडयंत्र भी रच रहा था.

लेकिन हो सकता है कि इस सुराग से भी कुछ खास हाथ न लगे. अगर पहले 48 घंटों की अफरा-तफरी का लाभ लेते हुए यह शख्स श्रीलंका पहुंच गया हो तब क्या किया जा सकता है? श्रीपेरुंबुदूर से समुद्र तट तक मात्र छह घंटे में पहुंचा जा सकता है और वहां से तमिल चीते उसे तेज नौका से दो घंटे के अंदर ही जाफना पहुंचा सकते हैं. पूरे प्रकरण के बारे में सारी जानकारियां उसे ही हैं. और यह भी संभव है कि गिरफ्तार हो जाने पर वह सारा कुछ जाहिर न कर दे यह सोचकर एलटीटीई के लोग ही उसे खत्म कर दें. इस सुराग की पूरी तफतीश के लिए सीबीआई में इतनी बेचैनी थी कि जांच दल का नेतृत्व करने वाले आईजी के. कार्तिकेयन ने खुद जाफना जाने की पेशकश भी की. लेकिन श्रीलंका के अधिकारियों ने उन्हें आने से यह कहकर मना कर दिया कि वे "उनकी हत्या के कारण नहीं बनना चाहते."

मुख्य तस्वीर

- **पोशाक से अंदाज लगता है कि उस पुरुष और महिला ने कोई बाहरी, महत्वपूर्ण व्यक्ति दिखने की कोशिश की ताकि राजीव के नजदीक पहुंचने में सहूलियत हो.**
- **उस व्यक्ति द्वारा अनभ्यस्त तरीके से हाथ में कोई नोटबुक पकड़ना और कोई कलम न होने से संदेह होता है.**
- **कमर के पास उसका कुर्ता फूला-सा लगता है. इससे संकेत मिलता है कि वह एक और विस्फोटक बेल्ट पहने था.**
- **हत्यारिन का बैग बाद में लता कन्नन (एकदम बाएं) के पास मिला. इसका मतलब है कि राजीव के पास पहुंचने के पहले बैग उसे दे दिया गया था.**

साइकिल वाली लड़की
सारे रहस्य की कुंजी?

जिस लड़की के हत्यारिन होने का शक जाहिर किया जा रहा है उसे मात्र सिर और तीन अंगों से पहचान पाना भी मुश्किल हो रहा है. लेकिन यह गुत्थी भी सुलझती लग रही है. प्लॉट के कुछ सदस्यों ने, जिनमें एक मां और उसकी बेटी शामिल है और जिन्हें कभी एलटीटीई ने पकड़ा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साजिश

ढीली पड़ती पेंचीदा गुत्थी

मद्रास में बीपीएल ऑलराउंड स्टेशनर्स, लेटर्स ऐंड बाइंड्स नामक छापाखाने के मालिक, 25 वर्षीय एस. भाग्यनाथ और उसकी 49 वर्षीया मां पद्मा की गिरफ्तारी से इस हत्याकांड के पेचीदे रहस्य के सूत्र मिलने शुरू हो गए हैं. इस सूत्र के मुताबिक एलटीटीई पर आरोप पुख्ता होता जा रहा है. मानव बम बनी उस महिला की पहचान भी हो गई है. उसका नाम शालिनी उर्फ शालू उर्फ तनु है. वह एलटीटीई के आत्मघाती दस्ते 'शैडो' की सक्रिय सदस्या थी.

खुफिया सूत्रों का कहना है कि साजिश से जुड़े कम-से-कम नौ लोगों की पहचान कर ली गई है. तनु और कुर्ता-पाजामा पहने शख्स का एक और नाम शिवरासन पता चला है. हरिबाबू, नलिनी तथा शुभा, भाग्यनाथ और पद्मा तथा दो अन्य व्यक्ति भी इसमें शामिल बताए जाते हैं जिनके नाम अज्ञात हैं.

यह रहस्योद्घाटन तब हुआ जब स्वतंत्र फोटोग्राफर रविशंकर ने, जिससे हरिबाबू ने कैमरा उधार लिया था, सीबीआई को बताया कि मद्रास में शुभम फोटो एजेंसी एलटीटीई की गतिविधियों का केंद्र रही है.

इस एजेंसी के मालिक शुभम सुंदरम से गुप्तचरों ने बात उगलवा ली और भाग्यनाथ तक पहुंच गए. यह भी पता चला कि भाग्यनाथ का छापाखाना बेनामी था. और उसका असली मालिक प्रभाकरन का करीबी सहयोगी बालसुब्रह्मण्यम उर्फ बेबी है. छापाखाने में एलटीटीई का साहित्य छपा करता था. खुफिया सूत्र इन तथ्यों पर भी पहुंचे:

- हत्यारिन और रघु उर्फ शिवरासन 40 दिन तक भाग्यनाथ के विल्वक्कम वाले घर में ठहरे थे.
- उनके दो और सहयोगी नलिनी और शुभा, जिनकी तस्वीरें जारी की गई हैं, इस घर में ठहरे थे. भाग्यनाथ ने हरिबाबू द्वारा ली गई तस्वीर में से उन्हें पहचाना.

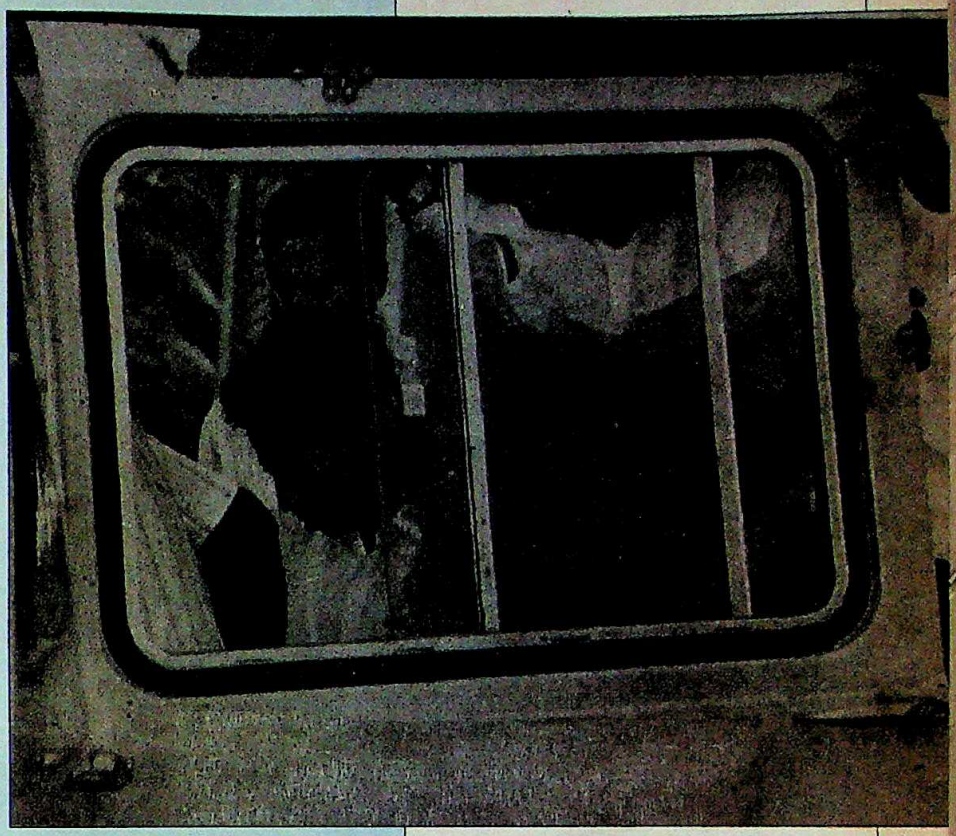

हिरासत में भाग्यनाथः शक के दायरे में

- हरिबाबू का इसमें शामिल होना मात्र संयोग नहीं था. जाहिर है ये तस्वीरें हत्या का रिकॉर्ड रखने के लिए खींची गई थी जैसी एलटीटीई की कार्यशैली रही है.
- रविशंकर की शादी के एलबम में भाग्यनाथ, नलिनी और एलटीटीई के दूसरे लोगों की तस्वीरें हैं.

विशेष जांच दल ने करीब 35 लोगों को पूछताछ के लिए पकड़ा है. इनमें त्रिची का वकील और एलटीटीई का समर्थक मधुर नायकम भी है. संदेह है कि दो व्यक्तियों ने उसे 'कार्रवाई' की सफलता की जानकारी दी और यह भी कि उसके पास कोई चिकित्सा के लिए आ सकता है.

एक महत्वपूर्ण सुराग मद्रास में ईपीआरएलएफ के प्रमुख के. पद्मनाभ की हत्या की जगह से मिले दो साबुत गोलों की जांच से मिला है. इन गोलों में सी-4 कोटि का आरडीएक्स पाया गया जो श्रीपेरुंबुदूर में भी इस्तेमाल किया गया.

—**अनिरुद्ध मित्र**, मद्रास में

कहा कि इस तरह की एक औरत ने उसे तब पूछताछ की थी जब वे वावुनिया में उनकी हिरासत में थे. ईपीआरएलएफ और प्लॉट के दूसरे लोगों ने भी इस बात की पुष्टि की है कि उसे वावुनिया में उस साइकिल पर घूमते देखा गया था जिसके मडगार्ड पर नलयिनी नाम लिखा था. जांच में मदद कर रहे श्रीलंकाइयों का मानना है कि यह भी छद्म नाम ही होगा.

अफवाह यह थी कि कथित हत्यारिन चश्मा पहने थी. पर यह सच नहीं है. घटनास्थल से मिले चश्मे का पावर बहुत ही कम है. अन्य संदेह भी जल्दी ही मिट गए. मृत महिला के कान में बाली नहीं थी जबकि तस्वीर में थी. पर असल में पोस्ट मार्टम के समय इन्हें उतार लिया गया था. और अभी ये जांचकर्ताओं के पास हैं. मृत महिला के माथे पर बिंदी दिख रही है जबकि तस्वीर में नहीं है जो कि कैमरे के कोण की वजह से हुआ. एक और बात शक पैदा करती है कि जो हैंडबैग कुछ मिनट पहले ही ली गई तस्वीर में इस महिला के कंधे से लटकता दिख रहा है वही लता कन्नन की लाश से लिपटा पाया गया. इससे लगता है कि दोनों एक दूसरे को जानते थे.

विस्फोट के तुरंत बाद भागदौड़ को देखते हुए तो यही लगता है कि सीबीआई के सौभाग्य से ही इस महिला के अंग ठीकठाक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष जांच दल

जबरदस्त जिम्मेदारी

नया विशेष जांच दल महानिरिक्षक डी.आर. कार्तिकेयन के नेतृत्व में सीबीआई के एक सेल के रूप में काम कर रहा है और वह सीबीआई के निदेशक विजय करण और इसमें एक अतिरिक्त निदेशक एस.के. दत्ता की देखरेख में है. दल के सभी खास सदस्य सीबीआई के ही हैं. कार्तिकेयन और वरिष्ठ सुपरिंटेंडेंट आर.वी. राजू को क्रमशः सीआरपीएफ और जम्मू-कश्मीर पुलिस से सीबीआई में ले लिया गया है. दल में बेहतरीन अपराध अनुसंधान विशेषज्ञ शामिल हैं. एक अधिकारी ने कहा कि विशेष मामलों में कार्यरत सीबीआई के लगभग हर दक्ष तमिलभाषी अधिकारी इस मामले पर काम कर रहे हैं. रॉ अंतरराष्ट्रीय सूत्रों को भी टटोल रहा है, मसलन इस संभावना की कि आरडीएक्स विस्फोटक सिंगापुर से लाया गया था.

दल का गठन 22 मई को सीबीआई निदेशक विजय करण ने दूसरे अधिकारियों से विचार-विमर्श करके किया. पहली कसौटी यह थी कि अधिकारियों को आतंकवादी मामलों का अनुभव और तमिलनाडु और दूसरे राज्यों के एलटीटीई पीड़ित समुद्रतटीय जिलों की विस्तृत जानकारी हो. दल के प्रमुख सदस्य ये हैं:

- कर्नाटक काडर के 1964 बैच के डी.आर. कार्तिकेयन विशेष जांच दल में शामिल किए जाने पहले तक हैदराबाद में सीआरपी के आईजी (दक्षिण) थे.
- आमोद कंठ ने दिल्ली पुलिस में रहते ट्रांजिस्टर बम कांडों के रहस्य पर से परदा हटाकर प्रसिद्धि पाई थी.
- अमित वर्मा 1998 बैच के तमिलनाडु काडर के सीबीआई में एसपी हैं. उन्हें सीबीआई के कुछ सफल खुफिया अधिकारियों में गिना जाता है. वर्मा तमिलनाडु के कन्याकुमारी और तूतीकोरिन में एसपी रहे हैं.

(ऊपर से)
कार्तिकेयन, आमोद कंठ और वर्मा: सक्षम टीम को कठिन चुनौती

उनके विभाग ने कई मामलों के सुराग ढूंढ़ निकाले जिनमें एचडीडब्ल्यू सौदे से संबंधित देवीलाल की फर्जी चिट्ठी का मामला भी था.

वर्मा को विशेष जांच दल में उनकी तमिल भाषा पर अच्छी पकड़ और तमिलनाडु के तटीय जिलों की जानकारी के आधार पर रखा गया. तमिल उग्रवादियों से पटे इलाकों में आज भी उनके अच्छे संपर्क हैं.

- राधाविनोद राजू 1975 बैच के जम्मू-कश्मीर काडर के आईपीएस हैं और अनंतनाग में डीआईजी रह चुके हैं. उन्हें हत्याकांड के दो दिन बाद सीबीआई में लाया गया ताकि उन्हें विशेष दल में शामिल किया जा सके.
- पुरुषोत्तम डीएसपी है और इस मामले में अधिकृत जांच अधिकारी हैं. उन्होंने बंगलूर में रशीद हत्या के चर्चित मामले को सुलझाया था.

जांच दल के केंद्रीय गुट की मदद सीबीआई के आतंकवाद विरोधी सेल में एलटीटीई विरोधी विभाग करेगा. इसमें डीआईजी एस. रमानी, एसपी वी. बालसुब्रह्मण्यम, एसपी सलीम अली और एसपी बालाजी हैं. आलोचक मानेंगे कि सीबीआई ने सबसे बेहतरीन दल जुटाया है और इस दल में विशेषज्ञता के साथ अंजाम देने की इच्छाशक्ति भी है. बस, थोड़े सौभाग्य की जरूरत है.

—अनिरुद्ध मित्र

हालत में रह गए. इन्हें बोरियों में रखा गया था और इन पर बर्फ के टुकड़े भी डाले गए थे. कुछ घंटों की देरी हो जाती तो ये एकदम सड़ जाते. और तब प्रमाण इकट्ठा कर पाना असंभव हो जाता.

मद्रास मेडिकल कॉलेज के दंत चिकित्सकों ने इस महिला के दांतों के आधार पर इसकी उम्र 25 वर्ष बताई है. एक नृतत्वशास्त्री ने उसके चेहरे की माप ली है. वे इसकी तुलना विभिन्न जातीय समूह के लोगों से करेंगे. विशेषज्ञों का मानना है कि उसका शरीर ही विस्फोट का केंद्र था. सिर्फ एक सवाल अनुत्तरित रह गया है कि क्या उसे वहां नशे की हालत में लाया गया था. उसकी बांई तलहथी मिल गई है सो उंगलियों के निशान ले लिए गए हैं. लेकिन दुर्भाग्य से उंगलियों के निशान के 1986 के वे रिकॉर्ड नहीं मिल रहे हैं जब एमजीआर ने अचानक अपने राज्य में मौजूद सारे श्रीलंकाई तमिल उग्रवादियों को गिरफ्तार कराया था.

स्वतंत्र छायाकार:

अनजाने में ही चपेट में?

मद्रास के उपनगर वेस्ट सियाडपेट का हर भिखमंगा भी छायाकार हरिबाबू का घर जान गया है. 23 वर्षीय हरिबाबू अक्सर कहा करता था कि एक दिन जरूर वह नामी फोटोग्राफर बनेगा. नामी तो वह बन गया लेकिन मृत्यु के बाद. एक अन्य स्वतंत्र छायाकार रविशंकर से उधार लिए पेंटेक्स कैमरे से उसने श्रीपेंरुबुदूर में जो आठ तस्वीरें खींची वही इस हत्याकांड के सबसे बढ़िया सबूत हैं.

परिवार के जिस सदस्य को घरवालों ने भविष्य का सहारा माना था वही अब संदेहास्पद स्थितियों में मर चुका है. उसकी मां रुक्मिणी कहती हैं, "मेरा बाबू निर्दोष था. कुछ लोगों ने उसे इसमें फंसाया."

जांचकर्ताओं का मानना है कि उनकी बात सही भी हो सकती है और गलत भी. वे कहते हैं कि हरिबाबू का एलटीटीई के सदस्यों जैसे लोगों से निश्चित रूप से मेलजोल था. लेकिन संभव है कि उसे एलटीटीई वालों की असली मंशा का पता न रहा हो. हो सकता है कि कुर्ता-पाजामा वाले शख्स ने उसका उसी वक्त के लिए आड़ के रूप में उपयोग भर किया. एक और राय यह व्यक्त की जा रही है कि हरिबाबू उनका सक्रिय साथी था और भागने का शायद पर्याप्त समय न मिल पाने की वजह से विस्फोट की चपेट में आ गया और मारा गया.

विशेष जांच दल के सूत्रों के अनुसार नए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोटोग्राफर हरिबाबू की मां इस बात का खंडन करती है कि एलटीटीई से उसके किसी तरह के संबंध थे. लेकिन जांचकर्ताओं को इस पर यकीन नहीं होता

सुरागों से इस मामले के सूत्र पकड़ने में मदद मिली है. कुर्ता-पाजामा वाले शख्स ने विस्फोट के समय हरिबाबू को आड़ के रूप में इस्तेमाल किया जबकि हत्यारिन ने स्थानीय कांग्रेसी लता कन्नन और उनकी बेटी से परिचय का उपयोग सुरक्षा के घेरे को तोड़कर राजीव तक जाने के लिए किया. सुरक्षा घेरे में खामियां थीं ही. अगर मेटल डिटेक्टर लगे होते तो आधा किलो छर्रे, बैटरी और तार लपेटे कोई औरत नहीं निकल पाती. हां, यह नहीं समझ में आता है कि एलटीटीई ने राजीव की हत्या किस मकसद से की होगी.

काशी आनंदन:

शांति दूत या महज एक शोशा?

श्रीलंका के तमिल हलकों में काशी आनंदन को कभी भी गंभीर राजनैतिक नेता नहीं माना गया. तमिल संयुक्त मुक्ति मोर्चा (तुल्फ) के पूर्व सदस्य आनंदन आजकल एलटीटीई की केंद्रीय समिति में हैं और अच्छी कविताएं लिखने के लिए ही प्रसिद्ध हैं.

जब 'हिंदू' अखबार समूह के मालिकों के परिवार के एक प्रमुख आदमी से आनंदन ने संपर्क करके कहा कि वे उनकी भेंट भारतीय राजनेताओं से करा दें तो उस आदमी को अचरज हुआ. राजीव गांधी तुरंत सहमत हो गए. भाजपा और जनता दल के नेता उनसे नहीं मिले. वे 5 मार्च को सिर्फ राजीव गांधी से मिले. दोनों के बीच क्या बात हुई यह रहस्य है.

एलटीटीई समर्थकों का तो यह कहना है कि राजीव ने वी. प्रभाकरन को 'दोस्ताना सलाम' भेजा और उनसे अपनी लड़ाई जारी रखने को कहा. अगर बैठक में ऐसी बातें हुई थीं तब क्या संभव है कि एलटीटीई ने उनकी हत्या कराई होगी?

श्रीलंका सरकार के प्रवक्ता का कहना है कि नई दिल्ली में तैनात उनके उप-उच्चायुक्त की राजीव से भेंट 10 मार्च को एक आयोजन में हुई. और जब बातचीत रंजन विजेरत्ने की हत्या पर आई तो राजीव ने कहा कि यह करतूत एलटीटीई की होगी जो "कपटी लोगों का गिरोह है." उप-उच्चायुक्त ने विदेशमंत्री बर्नार्ड तिलकरत्ने को इस बातचीत के बारे में केबल संदेश भेजा (केबल न.222,10 मार्च). अगर आनंदन से मुलाकात इतनी ही मधुर रही थी तो राजीव एलटीटीई के लिए इतने कड़वे शब्दों का प्रयोग न करते और वह भी श्रीलंका के राजनयिक से बातचीत में?

श्याम टेकवानी

आनंदन (बाएं), महात्या (बीच में) और एलटीटीई नेताओं के साथ

मार्च में राजीव गांधी से एलटीटीई के आनंदन की भेंट शायद इस उद्देश्य से कराई गई कि हत्या के बाद पाक-साफ दिखा जा सके

एलटीटीई के इरादे

भविष्य पर नजर

भारतीय जांचकर्ता धीरे-धीरे श्रीलंका के अधिकारियों की इस बात पर विश्वास करते जा रहे हैं कि राजीव से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंदन की भेंट एक शोशा भर ही थी. संभव है यह मुलाकात राजीव को निरुत्तर करने और हत्या के बाद अपने को पाक-साफ बताने के मकसद से भी की गई हो.

श्रीलंकाई तमिलों समेत अनेक विश्लेषक मानते हैं कि संभव है यह हत्या दोहरे उद्देश्य से की गई हो. 1987 में जिस तरह प्रभाकरन को दिल्ली लाकर करीब-करीब जबरदस्ती उनसे शांति समझौते पर दस्तखत करा लिए गए थे उससे उन्होंने खुद को अपमानित महसूस किया होगा. ब्लैक कैट कमांडो की निगरानी में उन्हें जिस होटल में रखा गया था, वहां से उन्होंने अपने एक मित्र को शायद कहा था, "इस आदमी (राजीव) को सबक सिखाना पड़ेगा." पर शायद इससे भी बड़ी बात यह हो सकती है कि एलटीटीई यह मानता हो कि जब तक भारत एक रहेगा तमिल ईलम का सपना पूरा नहीं हो सकता. संभव है राजीव उसे एकमात्र ऐसे नेता लग रहे हों जो उत्तर-दक्षिण को एक रख सकते थे. उनके रहते ईलम का गठन लंबे समय तक टलता रहेगा. एलटीटीई ने यह माना होगा कि इस हत्या से तमिलनाडु में उठी सहानुभूति लहर से उसे भले ही थोड़ा नुकसान हो, दीर्घकालिक फायदे कहीं ज्यादा हो सकते हैं.

एलटीटीई

जांबाजी का जौहर

इस तमिल चीते के मुंह खून 19 वर्ष में ही लग गया था. 27 जुलाई 1973 को उसने जाफना के तमिल महापौर ए. दुरैअप्पा को बिना हिचके गोली का निशाना बनाया था. और इस तरह एक खूंखार छापामार का जीवन शुरू हुआ था. और एक ऐसे मजबूत उग्रवादी संगठन एलटीटीई की नींव पड़ी थी जिसके करीब 10,000 हथियारबंद सदस्य आज केवल एक व्यक्ति के प्रति पूर्णतया समर्पित हैं. अपने 37 वर्षीय कमांडर के प्रति तमिल चीतों की निष्ठा इस हद तक अटूट है कि वे गिरफ्तार होने की जगह सायनाइड निगल लेना बेहतर समझते हैं.

जाफना प्रायद्वीप में तस्करों का गांव समझे जाने वाले वेलवेत्तितुरै में पिछड़ी जाति करैवरार में एक मछुआरे के घर जन्मे प्रभाकरन को बचपन से ही तमिल इतिहास के स्वर्णिम दौर की वीर गाथाएं सुनने को मिलीं और वह इन कहानियों से इ

मृत्यु वरण की तैयारी

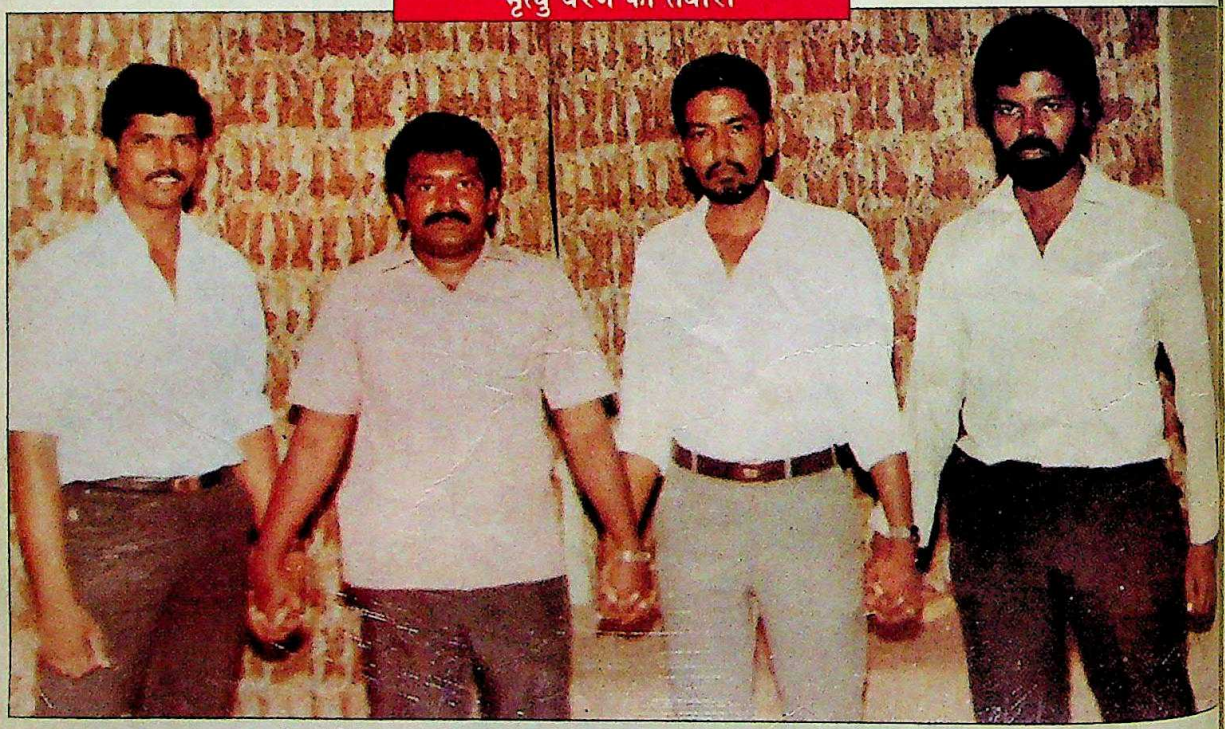

(बाएं से) सबरत्नम, प्रभाकरन, बालाकुमार और पद्मनाभः दिखावे की दोस्ती

दिखावटी एकता के बाद प्रभाकरन ने अपने प्रतिद्वंद्वियों 'टेलो' के सबरत्नम और ईपीआरएलएफ के पद्मनाभ की हत्या करवा दी. 'इरोस' के बालाकुमार जाफना में एलटीटीई के बंदी बताए जाते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिला एलटीटीई कार्यकर्ताः बेहिचक हत्या के लिए प्रशिक्षित

एलटीटीई की 3000सदस्यों वाली महिला शाखा में भी पुरुष सहयोगियों जैसी प्रतिबद्धता, शक्ति और संकल्प दिखता है. वे छापामार अभियान में पुरुषों से बराबर की हिस्सेदारी करती हैं

कदर प्रभावित हुआ कि बाद में अपनी तुलना चोल राजा करिकलान से करने लगा. 16 वर्ष की उम्र में उसने स्कूल छोड़कर 'तमिल न्यू टाइगर्स' (टीएनटी) की शुरुआत की. इसी टाइगर (चीते) नाम ने अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद की अंधेरी दुनिया को सबसे खतरनाक बारूद विशेषज्ञ दिए हैं.

टीएनटी से आरडीएक्स तक की यात्रा का तमिल चीतों का इतिहास रक्त से सना है. करीब आठ वर्ष पहले तमिल गुटों के बीच वर्चस्व की लड़ाई शुरू हुई थी. इस दौर में तमिलों की हत्याएं हुईं. इस संघर्ष में प्रभाकरन के लोगों ने दूसरे सभी तमिल संगठनों के नेतृत्व को तहस-नहस करने में सफलता पाई और नतीजतन, जाफना प्रायद्वीप के कुछ उन हिस्सों को छोड़कर, जहां श्रीलंकाई सेना का कब्जा है, बाकी सभी जगहों पर इन्हीं का राज है.

तमिल चीतों की अटूट प्रतिबद्धता का स्पष्ट कारण ढूंढना कठिन है क्योंकि उनके आंदोलन के पीछे धार्मिक या आदर्शवादी भावनाएं कतई नहीं हैं. वास्तविकता तो यह है कि अलगाववादी भावनाओं को हवा सबसे पहले ईसाई धर्म प्रचारकों ने दी. जहां तक आदर्श का सवाल है, सचाई यह है कि तमिल गुटों ने शुरुआत वामपंथियों के रूप में की थी. मगर समय के साथ-साथ इन संगठनों ने अद्भुत व्यावहारिकता का परिचय दिया है. वर्षों तक एलटीटीई के खिलाफ खूनी लड़ाई लड़ने वाले श्रीलंका के पूर्व रक्षामंत्री ललित अतुलतमुदली मानते हैं कि प्रभाकरन के इस सूक्ति वाक्य 'नांगल तमिलार' (हम तमिल हैं) ने तमिलों में एक किस्म का गौरव भाव जगाया.

प्रभाकरन कच्ची उम्र वालों को ही रंगरूट चुन लेते हैं, विशेष तौर पर 12-13 के आयुवर्ग के. शुरू में ही उन्हें कठोर प्रशिक्षण दिया जाता है और श्रीलंकाई सेना के जुल्मों की कहानियां सुनाई जाती हैं. प्रशिक्षण की समाप्ति पर शपथ ग्रहण का कार्यक्रम होता है जिसमें नया रंगरूट प्रभाकरन के प्रति व्यक्तिगत निष्ठा का प्रण लेता है और फिर उसे प्रभाकरन की ओर से एक सायनाइड कैप्सूल उपहारस्वरूप दिया जाता है.

प्रभाकरन खुद प्रचार आदि से भागते रहे हैं और कभी-कभार ही शोधार्थियों या पत्रकारों के सामने आए हैं. लेकिन उन्होंने सायनाइड संस्कृति की दीक्षा 1974 में ली जब एक युवा तमिल कार्यकर्ता शिवकुमारन ने गिरफ्तार होने के बदले जहर निगल लिया. उसके बाद से मृत्यु पूजा ही जैसे एलटीटीई की कसौटी बन गई. और अब तो दुश्मन या खुद में से एक की मौत एक अनिवार्य शर्त के रूप में स्वीकृत हो चली है.

इसी तरह 3,000 महिला सदस्यों वाली एलटीटीई की शाखा भी उतनी ही प्रतिबद्ध है. आमने-सामने की लड़ाई में माहिर महिलाओं की टोली आत्मघाती दस्ते 'ब्लैक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेखर गुप्ता

"एलटीटीई अब क्रांतिकारी संगठन नहीं रहा. यह अब एक माफिया गिरोह जैसा बन गया है"

धर्मलिंगम सीतानंदन
प्लॉट नेता

टाइगर्स' का महत्वपूर्ण अंग है. एलटीटीई के नीति-नियंता एंटन बालासिंघम की 41 वर्षीया आस्ट्रेलियाई पत्नी एडेल ही महिला दस्ते की प्रधान मानी जाती हैं. एलटीटीई के मुखपत्र 'वायस ऑफ टाइगर्स'का संपादन भी उन्हीं के जिम्मे है.

एलटीटीई की कार्यप्रणाली काफी गुप्त है. इसीलिए इसके आकार-प्रकार या काम करने के तरीकों के बारे में बहुत थोड़ी जानकारी ही उपलब्ध होती है. दूसरी ओर यह बात भी मायने रखती है कि प्रभाकरन सहित इसके तकरीबन सभी वरिष्ठ नेता वेलवेत्तितुरै के ही रहने वाले हैं और इसीलिए इस संगठन को एक 'माफिया' गिरोह के रूप में भी देखा जाने लगा है. हालांकि एलटीटीई की एक केंद्रीय समिति है, पर प्रभाकरन सलाह-मशविरे के लिए अपने खासमखास लोगों के एक छोटे गुट पर ही भरोसा करते हैं. इस तरह के कई लोगों के बारे में बाहर की दुनिया शायद ही जान पाती है.

हथियारों के लिए धन का जुगाड़ नशीली दवाओं की तस्करी, हवाला, अपहरण-फिरौती और विदेशों में बसे तमिलों के चंदे से होता है. कहा जाता है कि एलटीटीई के पास तीन बड़े जहाजों वाली एक बेनामी जहाज कंपनी है. हथियार अक्सर यूरोप में खरीदे जाते हैं और ताइवान या हांगकांग के व्यापारियों के जरिए जहाज द्वारा सिंगापुर लाए जाते हैं. वहां हथियारों को अलग-अलग पेटियों में डालकर छोटी कश्तियों से श्रीलंका भेजा जाता है.

पिछले साल इंटरपोल की जांच-पड़ताल के अनुसार विदेशों में नशीले पदार्थों की तस्करी के लिए गिरफ्तार किए गए श्रीलंकाई नागरिकों में से 80 फीसदी तमिल हैं. 'वाशिंगटन पोस्ट' और बोगोटा के स्पैनिश अखबार 'एल-तिएम्पो' ने रहस्योद्घाटन किया कि तमिल चीतों का कोलंबिया के कुख्यात मेडेलिन कार्टेल (व्यापार संघ) के साथ संबंध है. और दोनों के बीच समझौता है कि यूरोप के नशीले पदार्थ पहुंचाने में कार्टेल की मदद के बदले में एलटीटीई के लोगों को कैरीबि[illegible] में एंटीगुआ स्थित एक सैनिक प्रशिक्ष[illegible] संस्थान में प्रशिक्षण दिया जाए[illegible] एलटीटीई के लोगों को प्रशिक्षित करने [illegible] जिम्मा इज्राएली सेना के [illegible] अवकाशप्राप्त कर्नल यायिर क्लेन को दि[illegible] गया था. क्लेन के अनुसार इज्राएल [illegible] श्रीलंकाई सैनिकों को और तमिल चीतों [illegible] भी प्रशिक्षण दिया जाता है. उसके अनुसा[illegible] तमिल चीतों को बारूदी सुरंगें विद्ध[illegible] इज्राएली विशेषज्ञों ने सिखाया. और फि[illegible] भारतीय विशेषज्ञों ने 80 के दशक [illegible] प्रशिक्षण के साथ-साथ तमिल चीतों [illegible]

भारतीय शांति सेना

बाकी हैं डरावनी यादें

दो वर्षों तक चली छोटे स्तर की लड़ाई में 4000 सैनिक गंवाने वाली कोई भी सेना अपना अनुभव भूल नहीं सकती. आज भी श्रीलंका से मिले सबक सैनिकों को प्रशिक्षण में पढ़ाए जा रहे हैं. बारूदी सुरंगों आदि में तमिल चीतों की विशेषज्ञता जाहिर होने के बाद यह तथ्य सामने आया कि 60 फीसदी मौतें तो बारूदी विस्फोटों के द्वारा ही हुईं. तमिल चीतों ने जाफना की ओर आने वाले रास्तों को बारूद से पाट रखा था और इसी से उनके तकनीकी ज्ञान और युद्धकौशल की झलक मिलती है.

बारूदी सुरंगों को आमतौर पर प्लास्टिक के विस्फोटकों के साथ प्लास्टिक के डिब्बों या नारियल पेड़ के खोखले तनों में लपेट दिया जाता था. शांति सेना के एक अधिकारी बताते हैं,"धातु तो कहीं होती ही नहीं थी कि मेटल डिटेक्टर से पता चल पाता." फिर भी विस्फोट इतने जबरदस्त होते कि टी-72 टैंकों की 15 टन भारी तोपें तक उड़ जाती थीं.

अक्सर एलटीटीई के लोग आधे काफिले के गुजर जाने का इंतजार करते या फिर काफिले की हथियारबंद गाड़ी के लक्ष्य तक आने की प्रतीक्षा करते. फिर बारूद को उड़ाने के लिए पास के किसी घर में बैठा कोई सदस्य बड़े आराम से स्विच दबा देता. बारूदी सुरंगों को बिजली के तारों से जोड़ा जाता, जो कभी-कभार एक किलोमीटर दूर के किसी घर तक जाते थे—लिहाजा, शांति सेना एलटीटीई के लोगों को न तो पकड़ पाती और न ही बारूद को फटने से रोक पाती.

इसी तरह जानलेवा क्लेमोर बारूदी सुरं[illegible] सैनिकों के आने-जाने वाले रास्ते [illegible] इर्दगिर्द पड़ने वाले मकानों की दीवारों [illegible] लगा दी जातीं. इनमें भी विस्फोट क[illegible]

शेखर गुप्ता

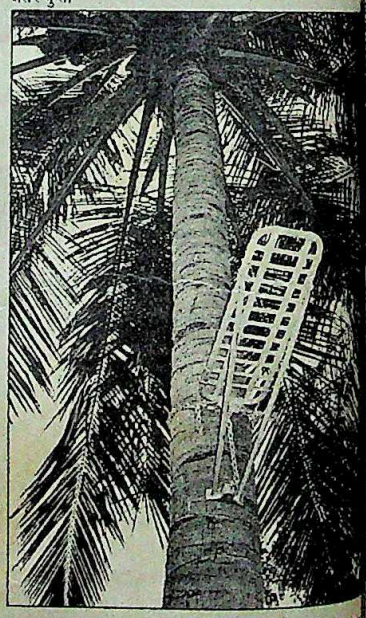

काम कहीं दूर बैठा कोई तमिल चीता क[illegible] देता. गोरखा रेजिमेंट के एक अधिका[illegible] बताते हैं कि कैसे उन्होंने अपने साथ[illegible] मेजर अनिल दीपक गार्डनर के पूरे पा[illegible] को ऐसे ही एक क्लेमोर विस्फोट के बा[illegible] उड़ते हुए देखा. एक वरिष्ठ अधिका[illegible] कहते हैं, "हमने पूरी कोशिश की, प[illegible] बारूदी सुरंगों की कोई काट नहीं सो[illegible] सके. अंत में हमने पूरे प्रायद्वीप की बिजल[illegible] ही काट देने का फैसला कर लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी मात्रा में हथियार भी दिए.

जाफना में तमिल चीते किसी सरकार की तरह ही करों की उगाही करते हैं. हवाला के जरिए भी उन्हें मोटी आमदनी होती है. दुनिया भर में फैले श्रीलंकाई मूल के लाखों तमिल विदेशों से धन एलटीटीई के सूत्रों के जरिए ही स्वदेश भेजना पसंद करते हैं. एलटीटीई विदेशी मुद्रा अपने पास रखकर उतनी ही देसी मुद्रा का भुगतान संबंधित व्यक्ति को कर देता है. एक प्रतिद्वंद्वी गुट के नेता ने अफसोस के लहजे में स्वीकार किया कि, "संगठन के लिहाज से तो वे बेदाग हैं. शराब, सिगरेट, सेक्स, जुआ वगैरह कुछ नहीं. मार्ग से भटकने वाले को मौत दे दी जाती है."

बहरहाल, एक तर्क तो यह है कि अगर श्रीलंका की घोर नस्लवादी सरकार अपना कट्टर और असंवेदनशील रवैया बदल डालती, तो तमिल चीतों की हिंस्र संस्कृति कभी पनपने न पाती. एक दशक से भी अधिक समय से श्रीलंका की सेना किसी मतवाली भीड़ जैसा रुख अपनाती आई है. तमिलों की मुश्किलों को वैसे भी इस वर्ष सरकार द्वारा की गई आर्थिक नाकेबंदी ने बहुत ज्यादा बढ़ा दिया. पिछले सप्ताह जाफना में पेट्रोल 800 रु. प्रति लीटर के भाव से बिका. तमिलों का मनोबल तोड़ने और उन्हें नीचा दिखाने के लिए श्रीलंकाई वायुसेना चीन में निर्मित वाई-12 परिवहन विमानों के जरिए जाफना पर मल-मूत्र की वर्षा भी करवाती रही है. इसलिए एलटीटीई में हर रोज नए रंगरूटों की संख्या बढ़ रही है क्योंकि तमिलों को अब यही संगठन रक्षक नजर आने लगा है.

लेकिन एलटीटीई के सामने अब एक दूसरी चुनौती उठ खड़ी हुई है. दो दशकों की खूनी लड़ाई के दौरान प्रायद्वीप के तकरीबन 40 फीसदी तमिल भारत, कोलंबो या फिर पश्चिम की ओर पलायन कर गए हैं. और एलटीटीई में लोगों की संख्या घट रही है. तमिल चीते पलायन को रोकने की कोशिश कर रहे हैं—कभी-कभार बलपूर्वक या फिर 'विदेश यात्रा शुल्क' के नाम पर 2,000 रु. का दंड ठोककर.

पारंपरिक नजरिए से बुद्धिमानी तो यही होगी कि तमिल चीते समझौते की ओर बढ़ें. वैसे, एलटीटीई के प्रमुख नेता इसी बात पर कायम हैं कि ईलम तो बस स्थापित होने ही वाला है. शायद इसीलिए बालासिंघम ने हाल में इस महत्वपूर्ण सवाल के जवाब में, कि तमिलों की दुर्गति के बावजूद चीते अभी भी लड़ाई क्यों जारी रखे हुए हैं, कहा कि, "हम साथी तमिलों के बारे में नहीं सोच रहे. हम तो अगली पीढ़ी की फिक्र कर रहे हैं."

—**शेखर गुप्ता**, कोलंबो में और **पी. जयराम, कविता शेट्टी** व **आनंद विश्वनाथन** के साथ

श्याम टेकवानी

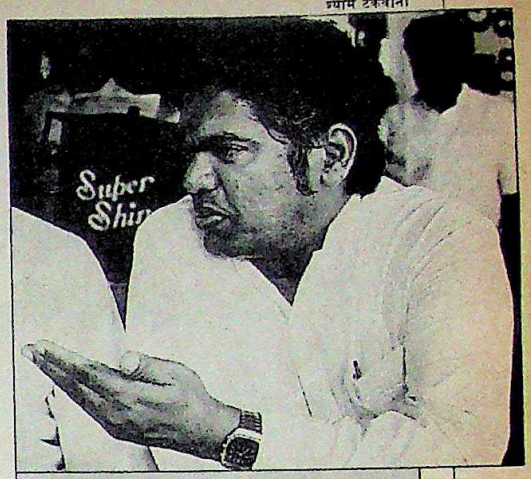

"हम नाराज होते हैं तो चांटा मार सकते हैं एलटीटीई वाले तो हत्या कर देते हैं"

ललित अतुलतमुदाली
पूर्व रक्षामंत्री

विस्फोटों का क्रम एकदम से कम हो गया."

लेकिन हमेशा के लिए बिजली काटे रखना भी संभव नहीं था और इसीलिए तमिल चीतों ने शांति सेना के साथ खूनी लड़ाई जारी रखी. उन्होंने पहले इस बात पर गौर किया कि किसी पुलिया को पार करने से पहले शांति सेना एक दस्ते को आगे भेजकर उसके नीचे बारूदी सुरंगों की खोज करता. तमिल चीते बड़ी चालाकी से मील के पत्थर को खरोंच कर धुंधला कर देते. क्षेत्र से अनभिज्ञ शांति सेना के जवानों को परेशानी में देखकर स्क्वैड कमांडर या फिर काफिले का कोई एकमात्र तमिलभाषी व्यक्ति आगे बढ़ता ताकि पत्थर को पढ़ सके. ऐन उसी वक्त विस्फोट होता. इसके बाद काफिला या तो बिना अधिकारी के हो जाता या फिर बिना अनुवादक के.

शेखर गुप्ता

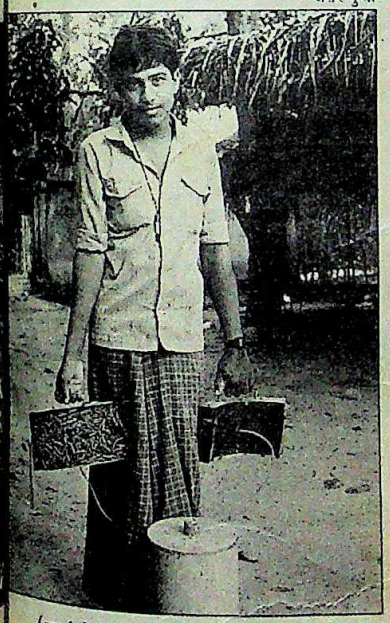

(बाएं से) छापामारों का अड्डा, और क्लेमोर बारूदी सुरंगें: घातक

शांति सेना के काफिलों से अधिकारियों को चुनकर बाहर निकालने की कला निश्चित ही उन्हें भारतीय सेना के प्रशिक्षकों ने ही अतीत के दोस्ताना दिनों में सिखाई थी. अधिकारीगण बताते हैं कि फिर उन्होंने एहतियात बरतना शुरू किया—पद के चिह्न आदि नहीं पहनना, टोपी बदल लेना, भार लेकर चलना आदि. इस पर तमिल चीते 'रेडियो मैन' को निशाना बनाते जो रेडियो एंटीना के कारण छिप नहीं सकता था.

कई बार तमिल चीते ऊंचे-ऊंचे ताड़ के पेड़ों पर चढ़ कर वहां से गोलियां दागते. इस तरह शांति सेना के लिए गोलियों की दिशा का अंदाजा लगाना मुश्किल होता और वे किसी को देख भी नहीं पाते. एक तमिल चीता भी पूरे काफिले पर एक-एक कर निशाना साधता जाता और सभी गुस्से के सिवा कुछ नहीं कर पाते. एक सैनिक अधिकारी ने बताया, "हमने नगा, मिजो और स्वर्णमंदिर के सिखों के खिलाफ लड़ाई लड़ी. पर तमिल चीतों की दिलेरी और होशियारी के सामने ये लोग बिलकुल फीके लगते हैं."

लड़ाई के पहले दौर में भाग ले चुका कोई भी अधिकारी मेजर वी. वर्गीज को नहीं भूल सकता, जो एक रेजिमेंट में एकमात्र तमिलभाषी थे. डरी-सहमी महिलाओं के एक समूह को सांत्वना देने के लिए वे जैसे ही उनके मकान में घुसे, एक बूढ़ी महिला ने पिस्तौल निकालकर उन्हें गोली मार दी. उसके बाद भारतीय सेना ने कभी भी उत्तर पूर्वी श्रीलंका में किसी महिला को कमजोर नहीं समझा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय राजनीति

एक बार फिर अस्पष्ट जनादेश

मगर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में कांग्रेस के ही सरकार बनाने की संभावना

आखिर वही हुआ, जिसकी आशंका या उम्मीद थी. चुनावों की गरमी से पिघलकर जो नतीजा सामने आया है वह यह है कि संसद में किसी भी राजनैतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला है. 510 सदस्यों वाली लोकसभा में किसी दल को 255 सीट नहीं मिल पाई. और सबकी निगाहें कांग्रेस की ओर लग गई जो 200 से ज्यादा सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी.

महत्वपूर्ण बात यह है कि इस चुनाव में कोई लहर नहीं थी—न राम के नाम पर भाजपा की भगवा लहर, न मंडल रिपोर्ट या आरक्षण के मुद्दे पर जनता दल की लहर और न राजीव गांधी की हत्या से कांग्रेस के पक्ष में सहानुभूति लहर. वैसे, अनुमान लगाया जा रहा था कि मई में चुनाव का पहला दौर शुरू होने से पहले भगवा या मंडल लहर उठेगी या फिर राजीव की हत्या के बाद दूसरे दौर में सहानुभूति लहर चल पड़ेगी.

लेकिन मतदाताओं ने किसी पार्टी को स्पष्ट बहुमत न देने का जैसे फैसला कर लिया था. हालांकि पार्टियों ने विभिन्न मुद्दों पर उनकी भावनाओं को उभारने की भरपूर कोशिशें की. नतीजा यह कि देश एक बार फिर गठबंधन सरकार के दौर में पहुंच गया है. सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह हुई है कि हिंदी क्षेत्र—उत्तर प्रदेश और बिहार—से कांग्रेस का लगभग सफाया हो गया है जहां 139 लोकसभा सीटों का फैसला होता है. उत्तर प्रदेश तो कांग्रेस का पारंपरिक गढ़ रहा है. संकीर्ण धार्मिक और जातिवादी भावनाओं को उभारने की सबसे ज्यादा कोशिश इन्हीं दो राज्यों में हुई और इसका फायदा भी मिला. बिहार में जनता दल ने मंडल का लाभ उठाया, तो उत्तर प्रदेश में भाजपा ने राम का. और दोनों अलग-अलग ताकत के रूप में उभरीं.

दूसरे राज्यों में स्थानीय सरकारों के विरोध में पड़े वोटों से कांग्रेस को अप्रत्याशित फायदे हुए. भाजपा शासित राज्यों—मध्य प्रदेश, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश—में कांग्रेस को ऐसे ही वोटों का लाभ मिला. ऐसा ही लाभ उसे ओडीशा में भी मिला जहां लोग बीजू पटनायक के नेतृत्व वाली जनता दल सरकार से असंतुष्ट थे. इसी तरह केरल में वामपंथी लोकतांत्रिक मोर्चा सरकार से नाराज मतदाताओं ने लोकसभा और विधानसभा सीटों पर उसे करारी हार झेलने पर मजबूर कर दिया. 1989 के चुनाव के बाद कांग्रेस दक्षिण भारत की पार्टी होकर रह गई थी उसे मिली कुल 195 में से 108 सीटें दक्षिण से ही थीं. मगर इस बार उसने दक्षिण में दबदबा बनाए ही रखा, उत्तर के मध्य प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान में अपनी मजबूती फिर कायम की.

इसमें कोई संदेह नहीं है कि मतदाता और नेतागण एक और चुनाव नहीं चाहते इसलिए अब नई गठबंधन सरकार कांग्रेस के नेतृत्व में ही बनेगी. इस बार फर्क इतना है कि उत्तर और बिहार में उसकी स्थिति बेहद कमजोर होने के कारण नेता हिंदी क्षेत्र

शरद मल्लिक

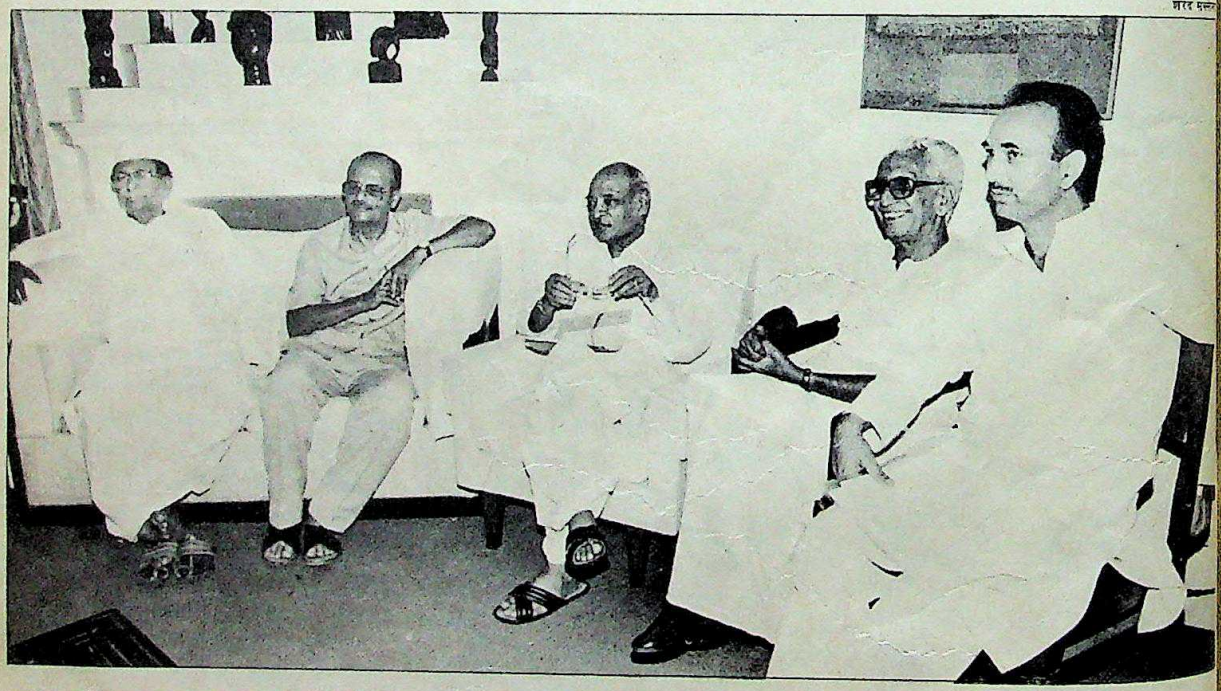

नतीजों के बाद कांग्रेस संसदीय दल की बैठकः आगे की रणनीति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से नहीं बल्कि दक्षिण से चुना जाएगा. और शायद यह इस चुनाव की एक महत्वपूर्ण बात होगी.

एक चमत्कारी संयोग से हिंदी क्षेत्र राष्ट्रीय मुख्य धारा से दरकिनार सा हो गया है. इसलिए अब जो नई सरकार बनेगी उसमें भाजपा और जनता दल, जिन्होंने बिहार और उत्तर प्रदेश में जबरदस्त जीत हासिल की है, केंद्र में कोई सक्रिय भूमिका नहीं निभा पाएगा.

लेकिन यह कांग्रेस के लिए बहुत उत्साह की बात नहीं है. उत्तर प्रदेश से सफाए की उसने कल्पना भी नहीं की होगी. अब इन दो राज्यों में अपना पैर जमाने में उसे भारी मुश्किल पड़ सकती है. दरअसल दसवें आम चुनाव के नतीजों से किसी पार्टी को बहुत खुश होने वजह नहीं नजर आती क्योंकि इसने दूसरी बार अस्पष्ट जनादेश वाली संसद को चुना है. फिर भी यह मध्यावधि चुनाव इतिहास में एक परिवर्तनकारी चुनाव के रूप में याद किया जाएगा.

यह पहला मौका है जब मध्यमार्गी पार्टियों को दक्षिणपंथी पार्टी की ओर से जबरदस्त चुनौती मिली. इससे पहले जनसंघ या भाजपा खुद को एक ऐसी अखिल भारतीय पार्टी के रूप में स्थापित नहीं कर पाई थी जो केंद्र में भी शासन संभालने की क्षमता रखती हो.

मगर भाजपा ने जिस तरह से अपना चुनाव प्रचार चलाया था उससे जाहिर हो गया था कि राजनैतिक समीकरण बदल रहे हैं. इस बार भाजपा ने अकेले ही चुनाव लड़ा जबकि 1989 में वह कांग्रेस विरोधी मोर्चे के साथ थी. भाजपा ने 1989 वाली अपनी स्थिति बनाए रखी है तो इसकी एक वजह यह है कि राजीव के नेतृत्व वाली कांग्रेस जनता के मूड को समझ नहीं पाई और उसने आत्मविश्लेषण भी ठीक से नहीं किया. उसमें कई फैसले राजनैतिक रूप से आत्मघाती रहे. उसके प्रवक्ता प्रणब मुकर्जी अब स्वीकार भी करते है, "उ.प्र. में मुलायम सिंह यादव सरकार का समर्थन करना हमारी भारी गलती थी." महासचिव रघुनंदन लाल भाटिया भी कहते है कि "गुजरात में बदनाम हो चुके चिमनभाई पटेल का साथ हमारे लिए भारी नुकसादेह साबित हुआ."

भाजपा ने मध्यमार्गी दलों की अवसरवादी प्रवृत्तियों को भी खूब भुनाया. राम मंदिर के सवाल पर उसने इन पार्टियों की कथित 'छद्म धर्मनिरपेक्षता' पर कड़ा प्रहार किया. कांग्रेस और जनता दल के भीतरी मतभेदों ने भी मतदाताओं का रुख भाजपा की ओर कर दिया. इस चुनाव में

उत्तर प्रदेश

भगवा लहर का असर

उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी ने अपने दावों को सच कर दिखाया है. राज्य में जोरदार भगवा लहर ने दूसरी पार्टियों को चारों खाने चित कर दिया. इस लहर के आगे जनता दल ही थोड़ा टिक पाया. कांग्रेस तो लगभग साफ ही हो गई. और मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव का तो यह हाल हुआ कि चुनाव के शुरुआती नतीजे आने के साथ ही वे लापता हो गए. मुलायम सिंह ने इस चुनाव को अपनी इज्जत का सवाल बना लिया था.

कांग्रेस को बुरी तरह मुंह की खानी पड़ी. उसकी हालत यह थी कि तीसरे स्थान के लिए उसे बहुजन समाज पार्टी से मुकाबला करना पड़ रहा था. लेकिन जनता दल के लिए खुशी की बात यह है कि तमाम भविष्यवाणियों को गलत साबित करते हुए वह प्रमुख विपक्षी पार्टी के रूप में उभरा.

इसमें संदेह नहीं कि पिछले अक्तूबर में राम जन्मभूमि आंदोलन और कार सेवा के दौरान मुलायम सिंह सरकार ने जो दमन किया उसके कारण भाजपा को इतनी बड़ी सफलता मिली. लेकिन इतना ही महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि भाजपा विरोधी पार्टियों के बीच कोई तालमेल नहीं हो सका. दूसरे राज्यों के विपरीत यहां इन पार्टियों के नेताओं के बीच इतने भारी मतभेद थे कि वे भाजपा के खिलाफ किसी समझौते पर नहीं पहुंच सके. भाजपा के प्रदेश महासचिव कलराज मिश्र इससे सहमत नहीं हैं. वे कहते हैं, "हमारी जीत जनता के सकारात्मक वोट से हुई है क्योंकि जनता ने महसूस किया कि अब आगे और यह सब नहीं चल सकता."

बहरहाल 'जय श्रीराम' के नारे के साथ सुनियोजित प्रचार अभियान चला कर जबरदस्त सफलता हासिल करने वाली भाजपा को अब आगे की चुनौतियों से निबटना पड़ेगा. भाजपा के उग्र नेता कल्याण सिंह का, जो कि पिछड़ी जाति (कुर्मी) के हैं, मुख्यमंत्री बनना लगभग तय है. अब उनके सामने नारों को अमली जामा पहनाने की चुनौती होगी. सांप्रदायिक लहर से प्रभावित इस राज्य के मुख्यमंत्री को मुस्कराहटों और तल्ख बयानों से आगे भी जाकर कुछ कर दिखाना होगा. लोग राम-राज्य की उम्मीद तो उससे नहीं करेंगे लेकिन उससे स्वच्छ और सक्षम सरकार जरूर चाहेंगे.

कल्याण सिंह (बाएं); राम अभियान

प्रमोद पुष्करणा

सबसे जटिल सवाल तो राम मंदिर के निर्माण का होगा. भाजपा ने इस मसले पर सावधानी से चलने का संकेत कर दिया है. इसके शीर्षस्थ नेताओं के बयानों से यही संकेत मिलता है. लेकिन उसने मंदिर निर्माण के विश्व हिंदू परिषद और आरएसएस के प्रयासों की ओर से आंखें मूंद ली तो वह गंभीर संकट में पड़ सकती है. और तब इसे रोने वाला भी कोई नहीं मिलेगा.

—दिलीप अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यमार्गी पार्टियों की ओर से कांग्रेस को मिलने वाली चुनौती चुनाव अभियान शुरू होने के पहले ही समाप्त हो गई थी. विश्वनाथ प्रताप सिंह का जनता दल चंद्रशेखर सरकार के हाथों अपने करीब आधा सांसदों को गंवा कर कोई कड़ी चुनौती देने की या खुद को एक विकल्प के रूप में पेश करने की स्थिति में नहीं रह गया था.

दूसरी ओर भाजपा अपनी रथ यात्रा की सफलता के कारण आत्मविश्वास और उत्साह में भरी हुई थी. परंतु इसका यह आत्मविश्वास धोखा ही साबित हुआ. विभिन्न राज्यों से चुनाव नतीजों के शुरुआती संकेत मिलने लगे तो यह जाहिर हो गया कि धार्मिक मुद्दे को उठाने या धर्म को राजनीति से जोड़ने की कोशिश असफल साबित हुई. भाजपा यह समझने में असफल रही कि मूलतः सांप्रदायिक मुद्दे को जरूरत से ज्यादा उछालना उलटा भी पड़ सकता है. आग उगलने वाली साध्वी ऋतंभरा की सभाओं में तो भारी भीड़ इकट्ठा होती रही मगर उनके मुस्लिम विरोधी भाषणों का हिंदुओं पर भी प्रतिकूल असर पड़ा.

राजीव गांधी की हत्या के बाद भी भाजपा के प्रचार का रूप बदला नहीं. इसके नीचे के स्तर के कार्यकर्ता सोनिया गांधी के खिलाफ अपमानजनक प्रचार भी करते पाए गए. भाजपा के बड़े नेता अब मानते हैं कि राजीव गांधी के हत्या के बाद प्रचार का तेवर बदलना चाहिए था. भाजपा के सिद्धांतविद जय दुबाशी कहते है, "हत्याकांड के बाद प्रचार का रूप बदल जाना चाहिए था. लेकिन एक बार जब कोई चीज गति पकड़ लेती है तो उसे रोकना मुश्किल होता है." लेकिन भाजपा उसकी सहयोगी शिव सेना के अध्यक्ष बाल ठाकरे का वह बयान भारी पड़ा जिसमें उन्होंने महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे की प्रशंसा की थी.

कांग्रेस ने इसे तुरंत भुनाने की कोशिश की और महात्मा गांधी और राजीव गांधी के हत्याकांडों में समानता दिखाने की कोशिश की गई. महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पवार ने कहा, "भाजपा अब राम से नाथूराम की ओर बढ़ रही है." दुर्भाग्य से भाजपा ने ठाकरे के उस बयान की निंदा नहीं की. भाजपा नेता अब यह महसूस करते हैं कि गलती हो गई. महासचिव गोविंदाचार्य कहते है, "इस गलती का लाभ महाराष्ट्र में ही नहीं, दूसरी जगहों पर भी उठाया गया."

दिलचस्प तथ्य यह है कि चुनाव नतीजों के आने से पहले ही भाजपा विरोधी मोर्चा आकार लेने लगा था. विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अपनी आलोचनाओं का निशाना कांग्रेस की जगह भाजपा को बनाया. और जब यह लगने लगा कि कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलेगा तब पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बसु जैसे माकपा के बड़े नेता यह संकेत देने लगे कि वामपंथी पार्टियां दूसरा चुनाव टालने के लिए कांग्रेस को समर्थन दे सकती हैं. भाजपा के खिलाफ लगभग सभी पार्टियां एकजुट होती नजर आईं.

भाजपा के लिए यह चुनाव एक सपने की मौत जैसा ही रहा. रामराज्य का उसका वादा राज्यों में उसकी सरकारों के कामकाज से कहीं मेल नहीं खाता. इसी वजह से उसे मध्य प्रदेश, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश में करारी मात खानी पड़ी हालांकि इन राज्यों में उसकी सरकारें हैं. नई दिल्ली चुनाव क्षेत्र से बड़ी किस्मत से जीतने वाले भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी को शायद यह एहसास हो गया हो कि सत्ता तक पहुंचने के लिए रथ उपयुक्त वाहन नहीं हो सकता.

—भास्कर रॉ

दावेदारों का लेखा-जोखा

पी.वी. नरसिंह राव

आम राय का आसरा

दावे की मजबूती: नेहरू-गांधी परिवार के साथ करीबी रिश्ते के कारण कांग्रेस का हर गुट उन्हें बुजुर्ग नेता मानता है. राजीव गांधी उनसे अक्सर सलाह लिया करते थे. चूंकि कांग्रेस को दक्षिण से ज्यादा सीटें मिली हैं इसलिए दक्षिण के नेता के रूप में उनका दावा मजबूत होता है. यथास्थितिवादी पुराने नेताओं का भी उन्हें पूरा समर्थन प्राप्त है. वामपंथी दलों को भी वे पसंद आ सकते हैं क्योंकि वे नेहरूवादी परंपरा पर जोर देते रहे हैं. कांग्रेस सरकार बनाने के लिए वामपंथी दलों की ओर देख रही है. हिंदी सहित कई भाषाओं पर उनका अच्छा अधिकार है. आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में और केंद्रीय मंत्रिमंडल में वित्त विभाग को छोड़ लगभग सभी प्रमुख विभागों के मंत्री के रूप में प्रशासन का भी उन्हें खासा अनुभव प्राप्त है.

प्रशांत पंजियार

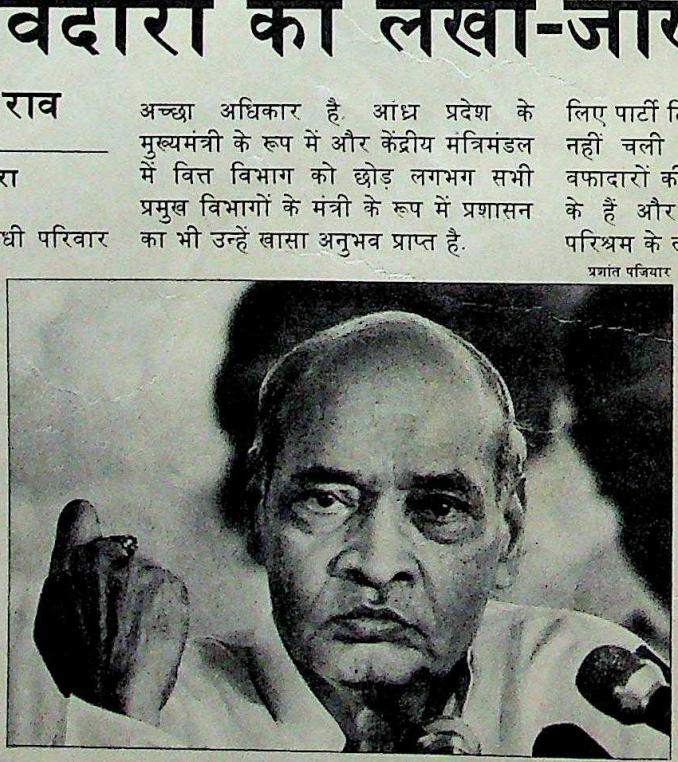

कमजोरियां: अपने दक्षिण भारत क्षेत्र में भी उनका कोई आधार नहीं है. चुनाव के लिए पार्टी टिकटों के बंटवारे में उनकी कुछ नहीं चली और पार्टी के भीतर उनके वफादारों की कोई फौज नहीं. वे 70 साल के हैं और उनका स्वास्थ्य भी कठिन परिश्रम के लायक नहीं है.

संभावित परिदृश्य: वामपंथी पार्टियां दूसरे दावेदारों के मुकाबले उन्हें अधिक पसंद करेंगी. कांग्रेस ने अगर सरकार बनाने के लिए राष्ट्रीय मोर्चा का समर्थन मांगा तो मोर्चा के अध्यक्ष, दक्षिण के ही नंदमूरि तारक रामराव भी नरसिंह राव का समर्थन कर सकते हैं. किंतु विषम परिस्थितियों में कांग्रेस की आम सहमति से, अस्थायी तौर पर ही सही, एक नेता के पीछे एकजुट होना होगा जो बाहरी समर्थन हासिल करने में सक्षम हो. ऐसी स्थिति में नरसिंह राव फायदे में रह सकते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्जुन सिंह

सौदेबाजी का सहारा

दावे की मजबूती: आधुनिक चाणक्य माने जाने वाले अर्जुन सिंह को जोड़-तोड़-तिकड़म और दांवपेंच की राजनीति का गुरु माना जाता है. मध्य प्रदेश पर उनकी पकड़ अच्छी है. अपने राज्य के मुख्यमंत्री, केंद्रीय संचारमंत्री और पंजाब के राज्यपाल के रूप में उन्होंने एक सफल प्रशासक की साख बनाई है. प्रचार आदि में माहिर माने जाने वाले अर्जुन सिंह पत्रकारों को भी खुश रखने के लिए विख्यात हैं. शरद पवार की तरह चंदा उगाहने में भी वे माहिर माने जाते हैं. और इस बार दूसरे तथा तीसरे दौर के चुनाव के लिए उन्होंने अपने राज्य के बाहर के उम्मीदवारों को भी आर्थिक मदद दी. उद्योगपतियों से भी उनके मधुर संबंध बताए जाते हैं. इसके अलावा अल्पसंख्यकों में भी उन्हें अच्छी लोकप्रियता प्राप्त है. इन चुनावों में मध्य प्रदेश में भाजपा ने उन्हें अपना मुख्य निशाना बनाया था.

कमजोरियां: राज्य में और बाहर भी उनके दुश्मनों की कमी नहीं है. माधवराव सिंधिया और शुक्ल बंधु तो उनके पुराने प्रतिद्वंद्वी रहे ही हैं. उनकी छवि एक ऐसे नेता की रही है जो लोगों का इस्तेमाल करके खारिज कर देता है. इसलिए उनके दोस्तों की संख्या न के बराबर है—मामला चाहे नई दिल्ली का हो या भोपाल का. नई दिल्ली में उन्हें हरकिशनलाल भगत और सीताराम केसरी जैसे अपने कट्टर प्रतिद्वंद्वियों से लोहा लेना होगा क्योंकि पांच वर्ष पहले पार्टी के उपाध्यक्ष पद की होड़ के दौरान उन्होंने इन लोगों को नाराज कर लिया था. लेकिन उनके पक्ष में राजीव के इर्द-गिर्द रही मंडली का समर्थन होगा क्योंकि उनके साथ इस मंडली की निभ सकती है. उनके ऊपर चुरहट लॉटरी कांड का कलंक भी लगा है.

प्रशांत पंजियार

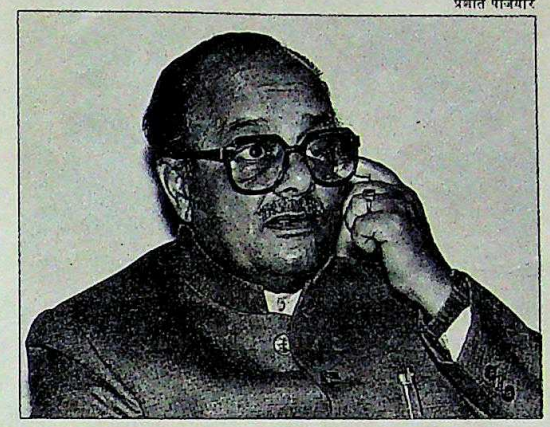

संभावित परिदृश्य: दक्षिण में उनकी साख एकदम नहीं है. उत्तर के क्षत्रपों का भी उन्हें पूरा समर्थन मिलने की आशा नहीं है. बहरहाल, वे दो-तीन दर्जन से ज्यादा पार्टी सांसदों का समर्थन नहीं जुटा सकते. लेकिन प्रतिद्वंद्वियों से सौदेबाजी करके वे अपनी ताकत बढ़ा सकते हैं. बहरहाल, मध्य प्रदेश की राजनीति पर अपनी पकड़ के चलते वे 'किंग मेकर' की भूमिका तो निभा सकते हैं, लेकिन पुराने कांग्रेसी नेताओं को खुश किए बिना 'किंग' नहीं बन सकते. ■

शरद पवार

मजबूत आधार

दावे की मजबूती: पचास वर्षीय पवार राजीव गांधी के बाद गद्दी के सबसे कम उम्र के दावेदार हैं. उनके पीछे कांग्रेस संस्कृति की विरासत जैसी कोई चीज नहीं जुड़ी है. महाराष्ट्र में उनका बहुत ही मजबूत आधार है. दक्षिणी राज्यों में भी उन्हें खासा समर्थन प्राप्त है, जहां वे पवार-चेन्ना रेड्डी-वीरेंद्र पाटील गठजोड़ के नेता माने जाते हैं. पवार ने दक्षिण, गुजरात और हिंदी क्षेत्र के भी कुछ संसदीय उम्मीदवारों को आर्थिक मदद दी है. अब अब्दुल रहमान अंतुले जैसे उनके प्रतिद्वंद्वी भी उनका लोहा मानते हैं और उनकी अधीनता स्वीकारते हैं. उनके व्यावहारिक नजरिए के कारण बड़े उद्योगपतियों की एक असरदार लॉबी भी उनके साथ है. वे कुशल प्रशासक भी माने जाते हैं. शिवसेना से भी उन्हें कुछ समर्थन हासिल है. कांग्रेस के कई युवा तुर्क नेता उनके लिए जोड़-तोड़ करते रहे हैं. माधवराव सिंधिया भी उनकी तरफदारी कर सकते हैं. 1984 के विपक्षी एकता वाले दौर में उन्होंने चंद्रशेखर, रामकृष्ण हेगड़े, रामराव और जॉर्ज फर्नांडीस जैसे विपक्षी नेताओं से जो अच्छे संबंध बनाए थे वे अभी भी कायम हैं. तब पवार कांग्रेस (स) के नेता और विपक्ष के एक स्तंभ हुआ करते थे.

कमजोरियां: हिंदी क्षेत्र में उनका कोई खास आधार नहीं है. उनके साथ नेहरू-गांधी परंपरा वाले कांग्रेसी नेता की छवि नहीं जुड़ी है. पुराने कांग्रेसी नेता उनका जमकर विरोध करेंगे क्योंकि पवार के उभरने से उनका असर कम हो जाएगा. वामपंथी दलों को भी वे आसानी से मंजूर नहीं होंगे. पुराने कांग्रेसी नेता उनके खिलाफ यह प्रचारित कर सकते हैं कि राजीव गांधी उन्हें नापसंद करते थे इसीलिए सोनिया गांधी नहीं चाहेंगी कि किसी हालत में वे उभरें.

नमस भोजानी

संभावित परिदृश्य: महाराष्ट्र में कांग्रेस ने जबरदस्त सफलता हासिल की है. इस कारण कांग्रेस संसदीय दल में उनके पक्ष में आवाज उठाने वाले सांसदों की संख्या बढ़ जाएगी. इस तरह वे हिंदी क्षेत्र के नेताओं की दावेदारी का मुकाबला बखूबी कर सकते हैं. खासकर उत्तर प्रदेश और बिहार में कांग्रेस के लगभग साफ हो जाने से वे और असरदार हो गए हैं. उन्हें दक्षिण भारत के हितों की रखवाली करने वाला माना जा सकता है. वैसे, उनके कुछ करीबी मित्रों ने सलाह दी है कि वे एक साल और इंतजार करके अपनी स्थिति मजबूत करें तथा हिंदी और अंग्रेजी में अपनी काबिलियत बढ़ाएं. ऐसी स्थिति में पवार का गुट एक ऐसे सर्वसम्मत नेता को समर्थन दे सकता है जो स्वास्थ्य के कारण या राष्ट्रपति पद खाली होने पर उसका दावेदार बनने की वजह से गद्दी खाली कर सकता है. लेकिन पवार के खेमे में ये शंकाएं भी व्यक्त की जा रही हैं कि नरसिंह राव प्रधानमंत्री बन गए तो क्या वे गद्दी छोड़ देंगे. अगर नेता पद के लिए चुनाव कराना पड़ा तो पवार के लोग गुप्त मतदान की मांग करेंगे क्योंकि तब पवार अपने लिए काफी समर्थन जुटा सकते हैं. ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस (इ)

भीतर खलबली

एकजुटता का बस दिखावा भर

आशंकाएं जाहिर की जा रही थीं कि राजीव गांधी के बिना कांग्रेस टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी, दिशाहीनता की शिकार तो हो ही जाएगी. लेकिन चुनाव प्रचार के अंतिम दौर में पी.वी. नरसिंह राव, अर्जुन सिंह, माधवराव सिंधिया, शरद पवार और नारायणदत्त तिवारी ने देश भर में चुनाव सभाओं को संबोधित करके सबों को चकित कर दिया.

गुजरात में प्रचार करते नरसिंह राव

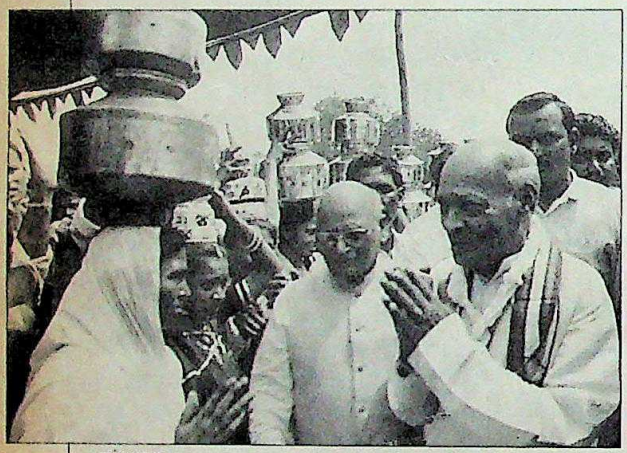

जावेद राजा

लेकिन भीतर काफी खलबली भी मची थी. बाहर से दिखने वाली एकजुटता के पीछे पार्टी के क्षत्रप अपने लिए ऐसी जमीन तैयार करने की जी-तोड़ कोशिश में लगे थे जो उन्हें चुनाव के बाद नेतृत्व के चयन के समय पर्याप्त सहायक हो.

प्रधानमंत्री पद के लिए मारकाट उसी क्षण शुरू हो गई जब सोनिया ने इंका कार्यसमिति का प्रस्ताव मानने से मना कर दिया. 'सिंडीकेट' ने अपनी कोशिशें शुरू कर दीं. राजेंद्र कुमार धवन, माखनलाल फोतेदार, सतीश शर्मा, वी. जॉर्ज और सीताराम केसरी ने सबसे पहले चालें चलीं. उन्होंने पार्टी पर अपनी पकड़ बनाए रखने के लिए अर्जुन सिंह को उपाध्यक्ष बनाने की कोशिश की. पवार और तिवारी सिंडीकेट के फिर से हावी होने के खिलाफ थे और उन्होंने मिलकर यह बात उछाली कि प्रत्येक प्रांत का प्रतिनिधित्व करने के लिए चार उपाध्यक्ष होने चाहिए.

साथ ही साथ तिवारी, पवार और अर्जुन सिंह ने प्रधानमंत्री पद के लिए खुलकर जोड़-तोड़ शुरू कर दी. तिवारी ने नई दिल्ली के जंतर-मंतर रोड स्थित अपने निवास स्थान पर देर रात तक 'दरबार' लगाया. उन्होंने जगन्नाथ मिश्र से भेंट की और उत्तर भारत के सभी ब्राह्मण गुटों को मिलाना चाहा.

पवार भी कुछ कम सक्रिय नहीं थे. वे इस बात के संकेत देते रहे हैं कि वे भी दौड़ में शामिल हैं. उन्होंने दक्षिण की तिकड़ी—केरल के के. करुणाकरन, कर्नाटक के वीरेंद्र पाटील और आंध्र प्रदेश के चेन्ना रेड्डी—को अपनी तरफ करने और अर्जुन सिंह को अच्छा पद दिलाने का वादा करके फुसलाने की कोशिश की.

इंका संसदीय दल के राज्यसभा सदस्यों का समर्थन जुटाने के लिए पवार ने कलमाडी को लगाया. और कलमाडी आजादी बाद उभरे उन कांग्रेसी नेताओं को मोहने की कोशिश में लगे हुए हैं जिन्हें युवा तुर्क कहा जाता है.

अब राजीव के बाद के दौर में पार्टी, अर्जुन सिंह और तिवारी के अनुसार 'लोकतांत्रिक और सामूहिक कार्य प्रणाली' विकसित करने का प्रयत्न कर रही है. ऐसे में अहम सवाल यह है कि परिवर्तन की यह प्रक्रिया क्या जोड़-तोड़ और उठापटक की दबी-छिपी कोशिशों से बेदाग बच पाएगी.

—जफर आगा

भाजपा

नई तैयारी

हत्याकांड के बाद बदली नीतियां

देश जबकि राजीव गांधी की हत्या से सन्न था, भाजपा के नेता अपने कार्यकर्ताओं को इस तरह इधर-उधर भेज रहे थे जैसे युद्धभूमि में सेना के जनरल अपने सैनिकों को महत्वपूर्ण मोर्चों पर तैनात करते हैं.

पार्टी के महासचिव और नीति-नियंता गोविंदाचार्य का कहना है कि दिखने में भले ही यह संवेदनहीनता लगे लेकिन इस हत्याकांड से चुनावी लाभ उठाने की संभावना पर विचार-विमर्श 24 मई को ही शुरू हो गया था. चार दिन के भीतर ही पार्टी इकाइयों की रिपोर्ट आ गई कि इस के पक्ष में 'सहानुभूति लहर या हवा जैसी कोई बात नहीं है. अब भाजपा का काम को एकमात्र ऐसी पार्टी के रूप में प्रस्तु करना था जो देश के सामने खड़ी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो.

इसलिए पार्टी ने अपना सारा ध्यान पुराने गढ़ों—राजस्थान और मध्य प्रदेश—

आडवाणी: रणनीति बदली

में केंद्रित किया. पार्टी ने उत्तर प्रदेश के उ निर्वाचन क्षेत्रों की ओर भी ध्यान लगाया जहां उसकी स्थिति कमजोर है. दक्षिण के बारे में फैसला किया गया कि राजीव हत्याकांड के बाद की स्थितियों का अंदाजा लगाए बिना कुछ नहीं किया जा सकता.

पार्टी ने अपने चुनावी नारों का भी न सिरे से परीक्षण किया और यह फैसला किया कि राजीव की हत्या का जिक्र नहीं किया जाएगा. 'सामाजिक तनाव' न उभरे इसलिए 'रामराज्य' के नारे को न उछालने का भी फैसला हुआ.

इसके नेताओं ने चुनाव के बाद के कार्यक्रम भी तय कर लिए. वह किसी के साथ मिलकर अल्पमत वाली सरकार नहीं बनाएगी. विपक्षी दल के रूप में भाजपा अयोध्या मुद्दे को फिर उठाएगी और वाराणसी और मथुरा में विवादास्पद स्थलों पर बने मंदिरों के पुनरुद्धार की मांग करेगी. आर्थिक मुद्दों पर ज्यादा गहराई से ध्यान केंद्रित करेगी. और अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे बनाने, त्रिभाषा फार्मूला और नदी के जल के बंटवारे के वायदों से दक्षिण को लुभाने की कोशिश करेगी.

—शहनाज अंकलेसरिया अब्बास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णमुरारी किशन

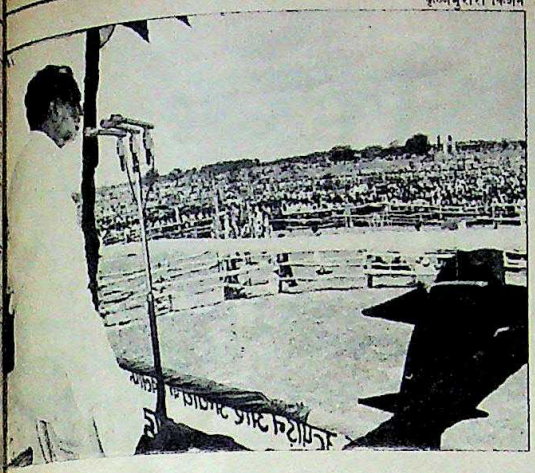

समाजवादी जनता पार्टी

चमत्कार की आस

चुनाव बाद गोटी बैठाने की फिराक में

अपनी नाव डूबने के निश्चित खतरे से जूझती समाजवादी जनता पार्टी (सजपा) के सामने सवाल यह नहीं है कि इंका से गठजोड़ किया जाए या नहीं, बल्कि यह है कि अपने इस मकसद को कैसे अंजाम दिया जाए.

इस दिशा में पहल योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोहन धारिया ने की. इंका के नवनियुक्त अध्यक्ष पी.वी. नरसिंह राव के नाम उन्होंने एक चिट्ठी लिखी जिसके बारे में कहा जाता है कि वह प्रधानमंत्री चंद्रशेखर की जानकारी में नहीं थी. इस पत्र में धारिया ने सलाह दी थी कि दोनों पार्टियों को हाथ मिला लेना चाहिए. जब पहल उलटी पड़ती दिखी तो पार्टी ने इस अपील से खुद को बेखबर बता डाला.

इसके बाद सजपा अध्यक्ष देवीलाल ने एक शगूफा छोड़ा. गुजरात में उन्होंने एक सजपा उम्मीदवार की जगह जनता दल (गुजरात) के उम्मीदवार को विजयी बनाने की अपील की. मजेदार बात यह है कि जनता दल (गुजरात) के मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल ने ही राजीव से सुब्रह्मण्यम स्वामी और चंद्रशेखर की पहली भेंट करवाई थी. जानकारों का मानना है कि देवीलाल की मंशा चिमनभाई को खुश करके उन्हें इंका से तालमेल के लिए इस्तेमाल करने की है.

उधर, राजीव के करीबी रहे स्वामी ने सोनिया गांधी और राजीव के कुछ वफादारों से संपर्क साध लिया है. अगर दोनों पार्टियों के बीच गठजोड़ हो जाता है तो उनकी भूमिका क्या होगी? उनका

चंद्रशेखर: गांठ जोड़ने के चक्कर में

जवाब था, "सोनिया गांधी और राजीव के वफादारों का समर्थन हासिल करने के लिए ही मैं सक्रिय होऊंगा."

इस बीच, चंद्रशेखर खुद शरद पवार और चिमनभाई से रिश्ते सुधारने में जुट गए हैं. वैसे, पिछले कुछ हफ्तों में सजपा ने इस मामले में कुछ पृष्ठभूमि तैयार की है. इसने ऐसे सूत्रों को पकड़ना शुरू कर दिया है जो चुनाव के बाद इसका काम बना सकें. इसके लिए यही होगा कि इंका को बहुमत से कम सीटें मिलें. तब वह सौदेबाजी का इंतजार करेगी. वह स्थिति सिर्फ गठजोड़ के लिए ही नहीं, बल्कि चंद्रशेखर के लिए प्रधानमंत्री पद के दावेदार के रूप में अपने को पेश करने के लिए भी उपयुक्त होगी. लगता है पार्टी इसी आदर्श स्थिति की आस में है.

—वाहेगुरु पाल सिंह सिद्धू

जनता दल

समीकरणों की तलाश

इंका के प्रति वी.पी. सिंह का रवैया नरम पड़ा

राजीव गांधी के न रहने से देश में जो राजनैतिक माहौल बना है उसने वी.पी. सिंह के लिए संभावनाओं के कई द्वार खोल दिए हैं. यह साफ है कि उनकी रणनीति में बदलाव आया है.

सबसे गौरतलब बात यह थी कि उन्होंने मंडल की माला जपना बिलकुल बंद कर दिया. साथ ही उन्होंने इंका पर छोड़े जाने वाले अपने व्यंग्यबाणों को भी रोक लिया. इन सबके बदले वे इंका के नेतृत्व-संकट की चर्चा करते रहे और निशाना भाजपा को बनाते रहे.

इंका पर कटाक्षों से बचने की उनकी नीति सोची-समझी लगती है. चुनाव बाद के समीकरणों में वे इंका के साथ मिलकर भाजपा के खिलाफ मोर्चा तैयार करने मे नहीं हिचकेंगे. और शायद इंका से समर्थन हासिल कर नेतृत्व की बागडोर थामने की कोशिश भी करेंगे.

चुनाव प्रचार के आरंभिक दौर में तो यही लग रहा था कि जनता दल वी.पी. सिंह के काबू से बाहर हो चला है और विभिन्न क्षेत्रीय नेता महत्वपूर्ण जगहों पर काबिज होने लगे हैं. मिसाल के तौर पर ओडीसा के मुख्यमंत्री बीजू पटनायक ने वी.पी. सिंह को ओडीसा में प्रचार के लिए आने से मना कर दिया था.

मगर प्रचार के दूसरे चरण में वी.पी. सिंह अपने ही दल के अपने प्रतिद्वंद्वियों से काफी आगे निकल गए लगते हैं. अजित सिंह पहले वी.पी. सिंह के लिए चुनौती जरूर थे. लेकिन अपने गढ़ पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भाजपा की ओर जाटों के झुकाव के कारण अजित की स्थिति कमजोर हो गई है. अंततः अगर पार्टी पर अजित सिंह की पकड़ कमजोर पड़ती है तो मुलायम सिंह यादव के साथ समझौता करने की वी.पी. सिंह की मुराद पूरी हो जाएगी.

अब केवल दो ऐसे नेता बचते हैं जो वी.पी. सिंह के साथ साये की तरह हैं— रामविलास पासवान और लालू प्रसाद यादव. जनता दल के एक नेता के अनुसार, "वी.पी. सिंह के बाद प्रचार कार्यों के लिए पासवान की सर्वाधिक पूछ होती है." भविष्य में जनता दल में वी.पी. सिंह और लालू की स्थिति और मजबूत होने की उम्मीद है.

आर.के. गुप्ता

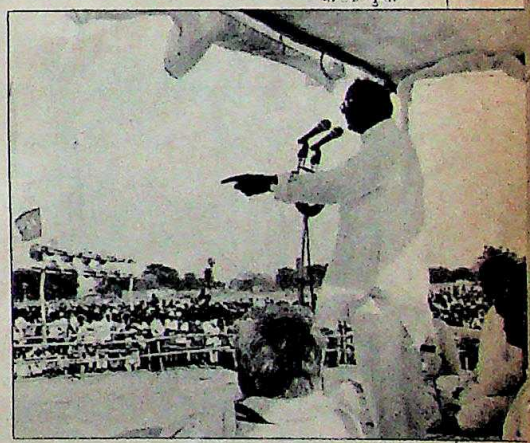

वी.पी. सिंह: नई रणनीति

राष्ट्रीय मोर्चा-वामपंथी दलों के गठबंधन को लगता है कि किसी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला तो उसके हाथ में आए करीब 140 सांसद महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे. वैसे, जाहिर है कि वी.पी. सिंह भाजपा विरोधी किसी भी संभावित मंच का नेतृत्व हथियाने के लिए प्रयासरत हैं.

—भास्कर रॉय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस (इ)

सूरमाओं के समीकरण

राजीव गांधी की हत्या के सदमे से उबरकर कांग्रेस फिर चुनाव अभियान में लग गई है. लेकिन अपनी प्रचार सभाओं में वह मतदाताओं से जो वादे कर रही है उससे कहीं ज्यादा दिलचस्प और महत्वपूर्ण है इस पार्टी के भीतर नेतृत्व की कमान थामने के लिए चल रही जोड़-तोड़ और उठापटक. इस घमासान में कुछ क्षत्रप पार्टी संगठन में अपनी जमीन और पक्की करने में जुटे हैं तो कई जनाधार विहीन नेता अपने अस्तित्व के लिए जूझ रहे हैं. जाहिर है, आगे के मुश्किल दौर में पार्टी के कामकाज और इसके नेतृत्व के विवादास्पद सवाल का हल पार्टी के प्रमुख घटकों के बीच सत्ता के नाजुक संतुलन के आधार पर ही तय होगा.

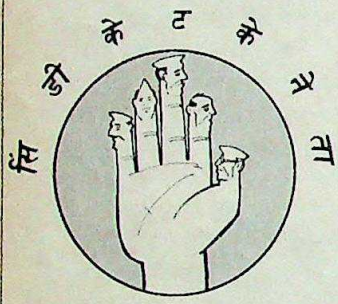

यथास्थितिवादी, जो नरसिंह राव के पक्षधर हैं

सिंडीकेट यानी पुराने लोगों की इस मंडली में वे कांग्रेसी ही शामिल हैं जो मात्र नेहरू-गांधी परिवार से मिलने वाले ऑक्सीजन के सहारे जिंदा रहे हैं. अनेक स्वार्थों से संचालित ये सारे लोग अब 70 वर्षीय **नरसिंह राव** के पीछे एकजुट हो गए हैं. पार्टी संगठन पर और पार्टी के सत्तासीन होने की स्थिति में भी यह मंडली काफी असर रखती है. चूंकि इनमें से किसी का भी अपना कोई जनाधार नहीं है इसलिए ये चाहते हैं कि दरबारी राजनीति न सिर्फ जारी रहे, बल्कि मजबूत भी बने ताकि उनका असर कम न हो.

मसलन, नेहरू परिवार के 'भक्त' रहे 58 वर्षीय **माखनलाल फोतेदार** और 53 वर्षीय **राजेंद्र कुमार धवन** ने सोनिया गांधी को राजनीति में उतरने को राजी कर लेने की उम्मीद नहीं छोड़ी है. वैसे, अभी ये दोनों नरसिंह राव को समर्थन दे रहे हैं. **पी. शिवशंकर, हरकिशनलाल भगत** और **गुलाम नबी आजाद** जैसे लोग भी प्रमुखता पाने के लिए नेहरू परिवार की दया पर ही निर्भर रहे हैं. 56 वर्षीय **प्रणब मुकर्जी** इस परिवार से झगड़ा मोल लेकर अपनी औकात जानने के बाद इस चुनाव के पहले राजीव की दयादृष्टि पाने में सफल रहे थे. 71 वर्षीय **सीताराम केसरी** और 67 वर्षीय **बलराम जाखड़** का भी अपना कोई आधार नहीं है. लेकिन निरंतर कोषाध्यक्ष रहने की वजह से केसरी ने और पार्टी की गुटबंदी में पंच बनकर जाखड़ ने संगठन में कुछ घुसपैठ जरूर कर ली है.

नेहरू-गांधी परिवार से जुड़ी पुरानी डोर टूटने के डर से ही ये लोग नारायणदत्त तिवारी या शरद पवार जैसे शक्तिशाली नेताओं की जगह सोनिया गांधी को किसी भी तरह राजनीति में उतरने के लिए राजी करना चाहते हैं. तिवारी का उत्तर प्रदेश और उससे बाहर भी अच्छा आधार है. साथ ही वे कांग्रेस संसदीय दल का नेता पद लेने को उत्सुक भी हैं. लेकिन यह दरबारी मंडली महाराष्ट्र के धाकड़ नेता शरद पवार को नहीं चाहती क्योंकि वे दरबारी राजनीति और वंशवाद के विरोधी हैं.

लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि यह पुरानी मंडली अपना अस्तित्व बचाने के लिए आखिरी क्षण तक भी किसी तरह का समझौता नहीं करेगी.

माखनलाल फोतेदार

गुलाम नबी आजाद

पी.वी. नरसिंह राव

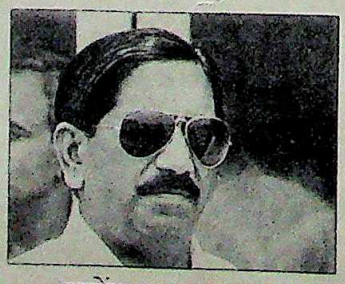
राजेंद्र कुमार धवन

प्रणब मुकर्जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

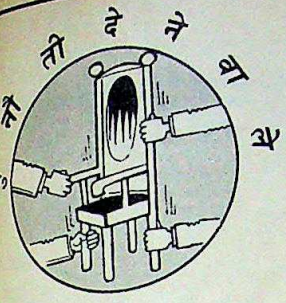

क्षेत्रीय सूरमा, जो दरबारी मंडली के खिलाफ हैं

इन सूरमाओं की उभरती मंडली का खास गुण है वंशवाद का विरोध करना. चुनौती देने वाले ये क्षेत्रीय सूरमा हैं. 50 वर्षीय **शरद पवार** महाराष्ट्र में मजबूत हैं, तो 67 वर्षीय **नारायणदत्त तिवारी** उत्तर प्रदेश में. पवार तो इंका के साथ ही विपक्षी दलों द्वारा भी नेता के रूप मे स्वीकार किए जा सकते हैं. उदाहरण के लिए गुजरात के 64 वर्षीय **माधव सिंह सोलंकी** पार्टी नेतृत्व के किसी भी चुनाव मे पवार का पक्ष लेंगे. तिवारी दूसरे ऐसे अनुभवी राजनेता हैं जो पवार की इस बात से सहमत हैं कि सोनिया को राजनीति में नही लाया जाना चाहिए. अगर कोई भी चुनाव हुआ तो तिवारी बिहार के 54 वर्षीय नेता **जगन्नाथ मिश्र** के समर्थन की उम्मीद कर सकते है. ये सारे लोग भले ही महत्वाकाक्षी हों लेकिन अपनी महत्वाकांक्षा पर ये पार्टी की बलि नही चढ़ा सकते. इस मंडली के दो अन्य क्षेत्रीय सूरमा हैं--मध्य प्रदेश के **अर्जुन सिंह,** जो सोनिया गांधी की दया से नेता पद के दावेदार हैं और केरल के **के. करुणाकरन,** जो अभी तो नरसिंह राव के पक्ष में हैं. परंतु प्रदेश में अगर इंका न जीती तो केंद्रीय राजनीति में आना चाहते हैं.

नारायणदत्त तिवारी

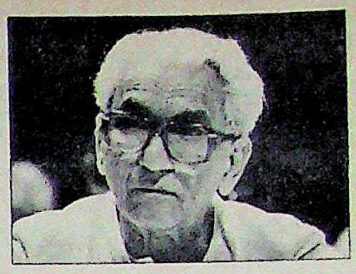

के. करूणाकरन

शरद पवार

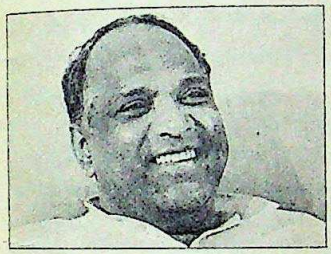

अर्जुन सिंह

राजीव की विरासत के प्रति निष्ठावान मंडली

नेतृत्व की दौड़ में भिन्न-भिन्न नेता का पक्ष लेने वाले ये युवा नेता इस राय पर एकमत हैं कि राजीव की विरासत खासकर उनकी आर्थिक नीतियो को बनाए रखना है. यह मडली अभी बहुत सगठित तो नही है पर राजीव की मौत के बाद एकजुट हो उठी है. इनमे से कुछ के पास न संगठन का आधार है, न ससद की सदस्यता. फिर भी ये अपने नेताओ के लिए हाथ-पाव मार रहे है. इस समूह के सबसे सक्रिय सदस्यों में एक है 44 वर्षीय **सुरेश कलमाडी,** जो अभी अपने नेता शरद पवार के लिए समर्थन जुटा रहे है. 46 वर्षीय **माधवराव सिंधिया** अपना प्रभाव क्षेत्र तो बढ़ाना चाहते हैं लेकिन उन दोस्तो से बच रहे हैं जो उन्हे प्रधानमत्री पद की दौड़ में दावेदार बनाना चाहते है. **आनंद शर्मा** और **सलमान खुर्शीद** भी अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं. 39 वर्षीय **सुरेश पचौरी** अभी अर्जुन सिंह के लिए समर्थन जुटाने में लगे हैं जिनसे कभी उनकी एकदम नही बनती थी. वैचारिक रूप से ये युवा नेता राजीव गाधी की विरासत से खुद को जुड़ा मानते है जो उनके अनुसार खुली अर्थव्यवस्था का पक्ष लेने और साप्रदायिकता से लडने का सदेश देती है.

सुरेश कलमाडी

सुरेश पचौरी

माधवराव सिंधिया

आनंद शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टी.एन. शेषन

खतरनाक परंपरा के सूत्रधार

मुख्य चुनाव आयुक्त की कार्यशैली की आलोचना की जा सकती है, मंशा की नहीं

आलोक तिवारी

पिछले दिसंबर में जब टी.एन. शेषन ने मुख्य चुनाव आयुक्त का पदभार संभाला था तब कहा जा रहा था कि वे अक्खड़मिजाज और तीखी जबान वाले शख्स हैं. राजीव गांधी के करीबी माने-जाने के कारण उन्हें विवादास्पद माना जाता था. तब किसी ने नहीं सोचा था कि वे खतरनाक भी हो सकते हैं. लेकिन अब जबकि भारतीय लोकतंत्र के इतिहास का सबसे लंबा और उबाऊ चुनावी दौर खत्म होने को है, कई लोग यह सोचकर चिंतित हैं कि वे पता नहीं कितनी खतरनाक परपराएं छोड़ जाएंगे.

भारतीय परंपरा और ही रही है. प्रथम मुख्य चुनाव आयुक्त सुकुमार सेन ने एक ऐसी संस्था विकसित की थी जो 50 और 60 के दशक में नए आजाद हुए देशों के लिए एक मिसाल बन गई थी. बाद के मुख्य चुनाव आयुक्तों का कामकाज भी पाक-साफ रहा.

कार्टून: अजीत मेनन

राजनैतिक आचार-व्यवहार का पतन तो होता गया पर चुनाव मशीनरी कुल मिलाकर गैर-विवादास्पद बनी रही. लेकिन शेषन के आने के साथ ही सब कुछ बदल गया है.

शेषन ने एकदम बेदाग चुनाव कराने का इरादा व्यक्त किया और चुनाव प्रक्रिया में उलझ पड़े. उनके पक्के इरादे के बारे में तो किसी को संदेह नहीं रह गया है, मगर बेदाग चुनाव कराने के उनके दावे को सही नहीं माना जा रहा है. जाहिर है, तुरत-फुरत फैसले करने की उनकी प्रवृत्ति और उनकी खरी-खोटी बातों ने विरोध को जन्म दे दिया है.

चुनाव की घोषणा के आसपास ही राज्य सरकारों ने अपनी-अपनी पसंद के अधिकारियों को 'उपयुक्त' जगहों पर बैठाने का जो सिलसिला शुरू किया उससे पूरा देश स्तब्ध रह गया. शेषन ने बिहार, उत्तर प्रदेश सहित पांच राज्य सरकारों को इन तबादलों को रद्द करने का आदेश दिया. इससे उन्हें वाहवाही भी मिली. हालांकि उन्होंने अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर काम किया.

बहरहाल, एक परंपरा तो शुरू हो गई. पिछले कुछ महीनों में उन्होंने जो कदम उठाए उन्हें जल्दबाजी भरा और पक्षपातपूर्ण कहा जा सकता है. भाजपा के चुनाव चिह्न पर उठे विवाद की सुनवाई और फिर विरोध उठने के बाद सुनवाई को टालने में उनके फैसले को इसी का एक उदाहरण माना जा सकता है. भाजपा प्रवक्ता के.आर. मल्काणी ने कहा, "उन्हें सिर्फ हमें परेशान करने के लिए लाया गया."

लेकिन जनता दल के नेता इससे असहमत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकते हैं और कह सकते हैं कि शेषन का एकमात्र उद्देश्य उनके दल को परेशान करना है. इस बारे में वे जनता दल शासित बिहार की कानून और व्यवस्था की स्थिति पर शेषन की आशंकाओं और उत्तर प्रदेश तथा बिहार के उन चुनाव क्षेत्रों के चुनाव रद्द करने के उनके फैसले के उदाहरण देते हैं जहां दल मुकाबले में था. ऐसा ही एक चुनाव क्षेत्र पटना का है. वहां जनता दल के उम्मीदवार इंद्र कुमार गुजराल का कहना है, "उनके इरादे संदेहास्पद रहे. शेषन बदला निकाल रहे हैं क्योंकि उनके मंत्रिमंडल ने उन्हें कैबिनेट सचिव के पद से हटा दिया था."

लेकिन इंका के विचार उनके प्रति कुछ उदार ही हैं. इंका प्रवक्ता प्रणब मुकर्जी लंबी चुनाव प्रक्रिया, हिंसा, राजीव की हत्या आदि का उदाहरण देते हुए कहते हैं, "यह चुनाव कुछ अलग ही किस्म का है. इसलिए शेषन के कामकाज की तुलना पिछले चुनाव आयुक्तों से नहीं की जानी चाहिए." मुकर्जी कहते हैं कि उनकी पार्टी चुनाव को लंबे समय तक टालने के फैसले से नाराज है.

शेषन ने कानूनी मामलों में भी पैर फैलाने की कोशिश की. उन्होंने पांच चुनाव क्षेत्रों के मतदान रद्द करने के बाद यह दावा किया कि चुनाव आयोग को अपने फैसले पर पुनर्विचार का भी अधिकार है. उन्होंने दावा किया कि मेरठ और बुलंदशहर के मामलों पर पुनर्विचार करने के बाद उन्हें लगा कि चुनाव रद्द करने का फैसला ठीक था. शेषन ने अपने चुनाव अधिकारियों की ईमानदारी पर शक भी खुलकर जाहिर किया. मेरठ वाले मामले में उन्होंने अधिकारी की आलोचना भी की. सुप्रीम कोर्ट के वकील राजीव धवन कहते हैं, "चुनाव रद्द करने का फैसला निर्वाचन अधिकारियों के अधिकारों का उल्लंघन करने जैसा ही है. कानून में इस तरह का कोई प्रावधान नहीं है." साफ है कि शेषन के फैसले के तरीकों ने कानूनविदों को परेशान कर दिया. लेकिन शेषन ने अपने फैसले की समीक्षा करके अपनी गलती को और बढ़ाया है. धवन कहते हैं, "चुनाव रद्द करना सदन को भंग करने जैसा ही होता है. इस फैसले को पलटा नहीं जा सकता. इस तरह की गलती करने की इजाजत चुनाव आयोग को नहीं दी जा सकती."

शेषन की कार्यशैली की आलोचना में दम तो है मगर उनके इरादों पर शक करना ठीक नहीं लगता. कई मामलों में शेषन के पास धांधली के सबूत हैं. हालांकि सरकारी रिपोर्ट में कुछ और ही कहा गया था. कुछ चुनाव क्षेत्रों से मतपत्र तक उनके पास लाए गए.

इसी तरह शेषन ने नियमों का अक्षरशः पालन भले न किया हो मगर उन्होंने धांधली करने वाले को यह चेतावनी जरूर दी कि मनमानी नहीं करने दी जाएगी. इसी तरह उन्होंने राजीव हत्याकांड के बाद चुनावों को टालने के अपने फैसले की आलोचनाओं को चुपचाप सहा. लेकिन अंततः वे यह रहस्योद्घाटन करने पर मजबूर हुए कि चुनाव की तारीखें उन्होंने सरकार की सलाह पर ही तय की थीं.

उन्होंने लीक से हटकर काम करने की जो शैली चलाई उससे राजनैतिक पार्टियों ने चुनाव आयोग में सुधार की जरूरत समझी. गुजराल कहते हैं कि उनकी पार्टी का विचार है कि बहुसदस्यीय चुनाव आयोग का गठन सरकारी प्रभाव से मुक्त समिति के द्वारा किया जाना चाहिए. भाजपा के उपाध्यक्ष जे.पी. माथुर कहते हैं कि बेहतर यही होगा कि अवकाशप्राप्त नौकरशाहों को मुख्य चुनाव आयुक्त न बनाया जाए और उनकी नियुक्ति विपक्षी दलों की सलाह से की जाए. इंका सिर्फ बहुसदस्यीय चुनाव आयोग चाहती है जिसका संविधान में भी प्रावधान है.

शेषन ने अपने फैसले चाहे जितनी जल्दबाजी में किए हों, उनसे उनके साहस का ही परिचय मिलता है. चुनावों में हिंसा बढ़ती जा रही है और शेषन के तरीके धांधली करने वालों में दहशत तो पैदा करते ही हैं. और यह फैसला इतिहास ही करेगा कि उन्होंने चुनाव आयोग की विश्वसनीयता को आंच पहुंचाई है या उसे एक निष्पक्ष, और सतर्क संस्था का रूप दिया है. उनके कार्यकाल की यादों के रूप में दो चीजें रह जाएंगी. एक तो उनकी अक्खड़ छवि और दूसरी यह धारणा कि चुनाव आयोग भी गैर-विवादास्पद नहीं रहा.

चुनाव की तारीखें

सवालिया फैसला

अब विवाद इस सवाल पर उठा है कि चुनाव की नई तारीखों का फैसला किसने किया. लेकिन यह विवाद दरअसल संवाद में गड़बड़ी और जिम्मेदारी से बचने की सरकार की कोशिशों का ही नतीजा है.

मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन ने दूरदर्शन के फोकस कार्यक्रम में 9 जून को दरअसल यह कहा कि "तारीखों का फैसला सरकारी नजरिए को ध्यान में रखकर किया गया." इससे यह धारणा बनी कि चुनाव आयोग ने अपनी जिम्मेदारी से बचने की कोशिश की. और दूसरे दिन ही यह बयान अखबारों की सुर्खियों में छा गया. लेकिन शेषन ने उक्त कार्यक्रम में आगे यह भी कहा था कि तारीखों के बारे में केवल 'सलाह' दी गई थी. उन्होंने कहा, "सरकार को जो सूचनाएं मिली थीं उनके आधार पर उसने मुझे यह सलाह दी कि मध्य जून से पहले चुनाव कराना ठीक नहीं होगा."

लेकिन सरकार अपनी जिम्मेदारी से जिस तरह बचने की कोशिश कर रही है वह आश्चर्यजनक थी. कानूनमंत्री सुब्रह्मण्यम स्वामी ने 'इंडिया टुडे' से दो हफ्ते पहले ही कहा था कि तारीखों का फैसला चुनाव आयुक्त ने 22 मई की सुबह राष्ट्रपति भवन में किया था. स्वामी ने यह भी बताया कि यह फैसला राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, कैबिनेट सचिव, मुख्य चुनाव आयुक्त और खुद स्वामी की मौजूदगी में किया गया. तर्क यह दिया गया था कि 7 दिन के शोक के कारण चुनाव 29 मई के बाद ही हो सकते थे. यानी अगर इसके दो दिन बाद ही चुनाव कराए जाते तो 31 मई और 3 जून की तारीखें रखी जा सकती थीं. ऐसे में सुरक्षा बलों को असम भेजने के लिए पूरा समय नहीं मिल पाता. और असम के चुनाव नहीं टाले जा सकते थे. इसलिए मध्य जून में ही चुनाव कराए जा सकते थे.

यह विवाद दरअसल अफरा-तफरी, संवाद में गड़बड़ी और जिम्मेदारी से बचने की सरकार की कोशिशों का ही नतीजा लगता है

ये तर्क दमदार हैं. इसलिए सरकार का रवैया आश्चर्यजनक लगता है. शेषन ने अपने बयान में 'सरकारी नजरिए' का जिक्र किया, शायद इसीलिए सरकार परेशान नजर आती है. सरकार को यह समझना चाहिए कि शेषन ने यह नहीं कहा कि तारीखें सरकार के निर्देश पर तय की गईं बल्कि यह कहा कि "सरकारी नजरिए को ध्यान में रखकर तय की गईं." दोनों बयानों में बहुत महीन अंतर है. मगर यह अंतर भी महत्वपूर्ण है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसोई में आपका साथी

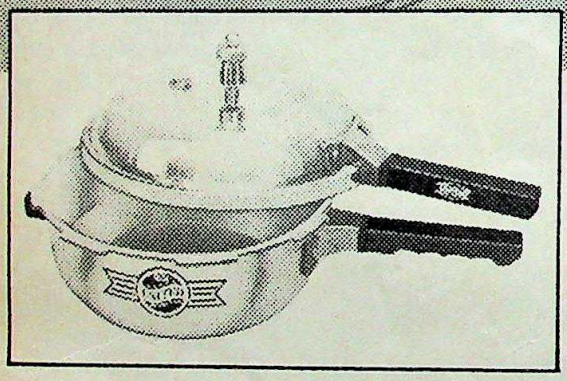

यूनाईटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

अधिकृत विक्रेता

उत्तर प्रदेश

☐ **इलाहाबाद:** मै० गुर प्रसाद हीरा लाल जैन, जैन भवन चौक, ● मै० नावल्टी हाउस, 6-C, कमला नेहरू रोड, ● मै० अल्का इंटरप्राइसिस, 30 एम०जी० रोड, सिविल लाईन, ● मै० जैन ट्रेडिंग कं०, 1143, कटरा क्रौसिंग, ● मै० एस० नसीम अहमद एण्ड कं०, 144, चौक ☐ **आगरा:** मै० आगरा बर्तन भंडार, 30 113, आजाद गली, कसेरथ बाजार, ● मै० आहूजा बर्तन भंडार, कसेरथ बाजार, ● मै० ओसवाल बर्तन भंडार, दौलत मार्किट, जौहरी बाजार, ☐ **अनपारा:** मै० मोती रेडियो सेन्टर, ☐ **अलीगढ़:** मै० जय दीपक बर्तन भंडार, महावीर गंज, ● मै० दीपक बर्तन भंडार, सुभाष बाजार, रेलवे रोड, ☐ **बेहराइच:** मै० श्याम लाल एण्ड सन्स, चौक बाजार, ☐ **बान्दा:** मै० बंगाल क्रोकरी हाउस, गसी गंज, ☐ **बलिया:** मै० विजय गन हाउस, स्टेशन रोड ☐ **बस्ती:** मै० सुशील कुमार बर्तन मरचेन्ट, मगल बाजार, ☐ **देवरिया:** मै० ओम स्टोर्स, समीप कोतवाली, मोती लाल रोड, ☐ **देहरादून:** मै० सत्य प्रकाश एण्ड कं०, 70/5, पलटन बाजार, ● मै० कैपिटल स्टोर्स, 99 पलटन बाजार, ● मै० दाता राम, विनोद कुमार, धनवाला, ☐ **फरुखाबाद:** मै० राज ग्लास एण्ड क्रोकरी स्टोर्स, नेहरू रोड, ● मै० सालिग राम भोला नाथ बर्तन स्टोर्स, चौक बाजार, ☐ **गोरखपुर:** मै० अमर क्रोकरी सेंटर, माया बाजार कोतवाली रोड, ● मै० गणेशी लाल राम निवास अजेंसिस, गोल घर, ● मै० मॉर्डन क्रोकरी मुजियम, 18 वाटर वर्क्स बिल्डिंग, गोल घर, ● मै० फैन्सी बर्तन स्टोर्स, रेती चौक, ● मै० विजय अजेसिंस, 16, 17 टाउन हाल मार्किट, ● मै० गणेशी लाल एण्ड सन्स, सिनेमा रोड, ● मै० श्री गणेश इंटरप्राइसिस, 16 वाटर वर्क्स बिल्डिंग, ☐ **हरदोई:** मै० श्याम लाल एण्ड सन्स, रेलवे गंज, ● मै० काशी राम बनवारी लाल, रेलवे गंज, ☐ **हलद्वानी:** मै० सरदार क्रोकरी हाउस, नैनीताल रोड, ☐ **हापुड़:** मै० क्रोकरी सेन्टर, रेलवे रोड, ☐ **झांसी:** मै० काशी प्रसाद मिथेले शरण, शराफा बाजार, ● मै० बम्बई स्टील एम्पोरियम, 175 जवाहर चौक ☐ **जौनपुर:** मै० ग्लास स्टोर्स, हर लालका रोड, ☐ **कानपुर:** मै० एशिया लाईट हाउस, मैस्टन रोड, ● मै० एस०एम० रशीद एण्ड सन्स, 43/205, मैस्टन रोड, ● मै० गोपी लाल गुप्ता एण्ड कं०, 46/63, हटीया, ● मै० लक्ष्मी बर्तन स्टोर्स, 108/130 सीसामऊ बाजार, ● मै० नफीस क्रोकरी हाउस, मूलगंज, ● मै० कुमार फैंसी स्टोर्स, 114 नवीन मार्किट, ● मै० मौ० हनीफ मो० अनीस, मैस्टन रोड, ● मै० कृष्णा कुमार, उमेश चन्द्र, 68/10 भूसा टोली, ● मै० रस्तोगी स्टील सैंटर, 67/5 हुला गंज, ☐ **लखनऊ** मै० कन्हैया लाल, पराग दास, पीली कोठी, याहिया गंज, ● मै० इंदर चन्द जैन एण्ड सन्स, अमिनाबाद, ● मै० राम सरन एण्ड कं०, अमीनाबाद, ● मै० संसार एजेंसिस, मुमताज मार्किट, ● मै० चमन लाल अग्रवाल एण्ड सन्स, नजीराबाद, ☐ **लखीम पुर खेरी:** मै० अम्बर लाल, राधे श्याम, चंपा भवन मैन बाजार, ☐ **मेरठ:** मै० शकुन बर्तन भंडार, बेगम पुल, ● मै० दाता राम गुप्ता एण्ड सन्स, बेली बाजार, ● मै० कृष्णा क्रोकरी एण्ड डिपार्टमेंटल स्टोर्स, सदर बाजार, ● मै० सोना इलेक्ट्रीक एजेंसी, 184 सदर बाजार, ☐ **नजीबाबाद:** मै० श्याम लाल एण्ड सन्स, चौक, ☐ **मुजफ्फर नगर:** मै० मित्तल इंटरप्राइसिस, 101 भगत सिंह रोड, ☐ **रामपुर:** मै० अग्रवाल क्रोकरी हाउस, मिस्टन गंज, ● मै० सेलक्शन एम्पोरियम, साफदर गंज, ☐ **रायबरेली:** मै० गुप्ता ट्रेडर्स, कापर गंज, ● मै० राधे श्याम घनश्याम दास गुप्ता, मलखाना, ● मै० राज बर्तन मिलन सिनेमा रोड, ☐ **रुपायधिया:** मै० राम दूत स्टोर्स, पो०ओ० रुपायधिया, ● मै० श्री राम स्टोर्स, पो०ओ० रुपायधिया, ☐ **सहारनपुर:** मै० निहाल चन्द हरबंस लाल, 15 नेहरू मार्किट, ● मै० जसवंत राय नरेन्द्र कुमार, लक्ष्मी मार्किट, ☐ **शाहजहांपुर:** मै० सहगल गिफ्ट सेन्टर, गोविन्द गंज, ● मै० सहगल क्रोकरीज, सदर बाजार, ☐ **शामली:** मै० सुगन चन्द सोहन लाल बड़ा बाजार, ☐ **सुल्तान पुर:** मै० कमाली चन्द हाउस, शाह गंज, ● मै० दशरथ लाल एण्ड सन्स, चौक घंटाघर, ☐ **वाराणसी:** मै० भारत ग्लास स्टोर्स, दाल मंडी, ● मै० आइडियल ग्लास हाउस, दाल मंडी, ● मै० मित्तल ट्रेडर्स, D-11/8 कोतवाल पुरा, बांस फाटक, ● मै० गिरधर दास एण्ड सन्स, बांस फाटक, ● मै० मोहन लाल कृष्ण चन्द्र, D-10/15 विश्नाथ गली, ● मै० स्टेनलेस स्टील सेन्टर, बांस फाटक, ● मै० ग्लास एण्ड प्लाईवुड सेन्टर, CK 39/9, दाल मंडी, ☐ **मुरादाबाद:** मै० नवीन ग्लास एजेंसी, कटरा पूरन जाट, सदर बाजार, ☐ **गोंडा:** मै० पारस स्टील एम्पोरियम, उतरौली रोड

कलकत्ता

☐ **कलकत्ता:** मै० कृष्णा ट्रेडिंग कं०, P-11, चितपुर स्ट्रीट

भुवनेश्वर (उड़ीसा)

☐ **भुवनेश्वर :** मै० जी० पी० सर्विसेज़, 28 बापु जी नगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीर

दिखावटी अमन-चैन

सभी फोटो प्रमोद पुष्करणा

श्रीनगर जबकि सामान्य होने का आभास दे रहा है, पाकिस्तान समर्थक उग्रवादी गुटों के पैर भी मजबूत होते जा रहे हैं

—वाहेगुरु पाल सिंह सिद्धू

आज के श्रीनगर को देखकर कोई भी इसे सामान्य भारतीय शहर मान ले सकता है. स्कूल, दुकानें और बैंक खुले हैं. संकरी सडकों पर बसों और ट्रकों के काफिलों के कारण काफी चहल-पहल है. शाम के वक्त बच्चे मैदान में इकट्ठा फुटबाल खेलते देखे जा सकते हैं. लेकिन इन सबके बावजूद श्रीनगर तो श्रीनगर ही है. कुछ समय पहले तक इस शहर का माहौल पूरी तरह खौफजदा था. चारों ओर सुरक्षा बलों के जवानों की भरमार थी. लेकिन 1991 का यह ग्रीष्मकाल जम्मू-कश्मीर की राजधानी में हालात की बेहतरी का संकेत देता है.

लेकिन यह अमन-चैन एक धोखा भी हो सकता है. सुरक्षा बलों और उग्रवादियों के बीच मुठभेड़, वास्तविक नियंत्रण रेखा के उस पार से हथियारों से लैस उग्रवादी गुटों की निरंतर आमद और समूचे राज्य में पाकिस्तान समर्थक कई संगठनों की संख्या में वृद्धि कुछ और ही कहानी कहती है. पाकिस्तान समर्थक उग्रवादी एक के बाद एक कई जघन्य हत्याएं और अपहरण की नाटकीय वारदातें करके काफी ऊंचा मनोबल रखने लगे हैं. दूसरी ओर

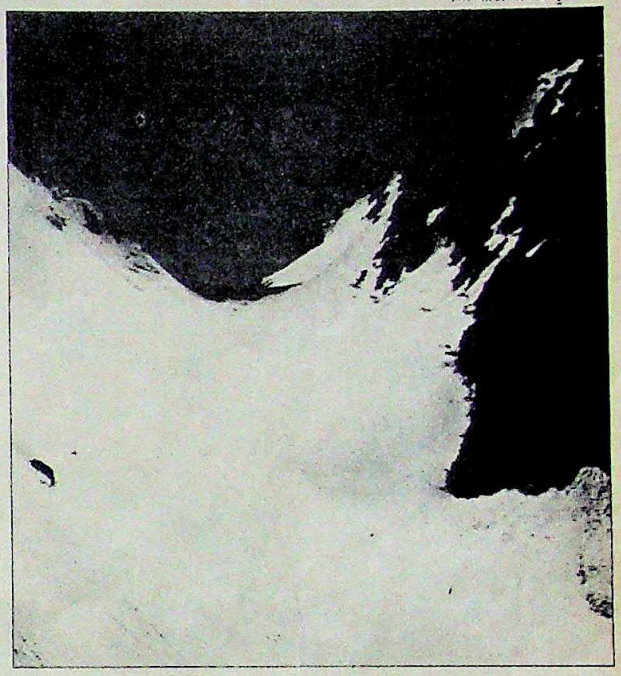

ईगल दर्रे में घुसपैठियों के पैरों के निशान

सशस्त्र जत्थे दुर्गम रास्तों से घुसपैठ कर रहे हैं

भारत-पाक सीमा पर सेना के साथ मुठभेड में पकडे गए उग्रवादी

सुरक्षा बलों ने सिर्फ 30 फीसदी प्रशिक्षित उग्रवादियों को गिरफ्तार किया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजादी की मांग करने वाला संगठन जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जेकेएलएफ) अब अपने पाकिस्तानी सरमायेदारों का चहेता नहीं रहा है, इसलिए पाकिस्तान समर्थक उग्रवादी सगठन, खासकर हिजबुल मुजाहिदीन ही आजकल सबसे सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं.

पाकिस्तान समर्थक संगठनों की भरसक कोशिश रही है कि जेकेएलएफ को पूरी तरह दरकिनार कर दें. उधर, जेकेएलएफ के अधिकतर नेता या तो मारे जा चुके हैं या सलाखों के पीछे हैं. लिहाजा, वह इस चुनौती का सामना करने की स्थिति में अभी नहीं है. जेकेएलएफ और पाकिस्तान समर्थक उग्रवादियों के बीच मनमुटाव अप्रैल के अंत में जेकेएलएफ और नेशनल कॉन्फ्रेंस द्वारा आयोजित कई पाकिस्तान विरोधी प्रदर्शनों के दौरान खुलकर सामने आया. हिजबुल और मुस्लिम जांबाज फोर्स (मुजांफो) ने प्रतिक्रियास्वरूप कई पाकिस्तान समर्थक प्रदर्शनों का आयोजन किया.

कश्मीर मसले के अधिकतर जानकार लोगों का मानना है कि दिलेरी दिखाने के अलावा जेकेएलएफ सचमुच अपना वजूद कायम रखने का संघर्ष कर रहा है. खुफिया अधिकारियों का भी मानना है कि पाकिस्तान से मिलने वाले हथियारों में काफी कटौती कर दी गई है क्योंकि जेकेएलएफ जमात और पाकिस्तान विरोधी आलोचना का रुख अख्तियार करता रहा है. इसका फायदा हिजबुल को मिला है. एक अनुमान के अनुसार हिजबुल को 1,500 एके-47 राइफलें मिली हैं. राज्यपाल गिरीशचंद्र सक्सेना कहते हैं, "पाकिस्तानी एजेंसियां जेकेएलएफ के आखिरी आदमी तक उनसे सुरक्षा बलों का मुकाबला करवाना चाहती हैं और इसके बाद उनकी मंशा हिजबुल को सामने करने की है."

साथ ही दूसरे पाकिस्तान समर्थक संगठन अब राजनैतिक

भारतीय सेना

आने वाले दिन और भी कठिन

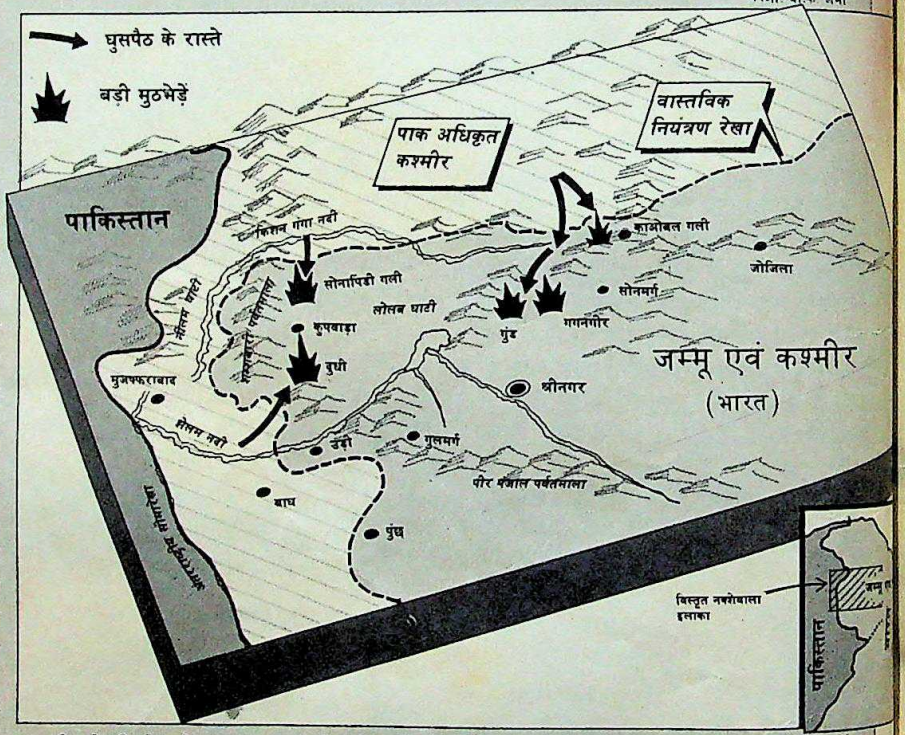

पांच मई की सुबह असम राइफल्स के नायब सूबेदार पी. बी. छेत्री अपनी टुकड़ी को लेकर तंगधार सेक्टर के दुधी में गए तो उनका खयाल था कि वहां उन्हें खाली झोंपड़ी और उन पर घुटनों-घुटनों जमी बर्फ के अलावा कुछ नहीं मिलेगा. लेकिन उनके जवानों को वहां उग्रवादियों का हथियारबंद गिरोह मिला जो 14,000 फुट ऊंचे ईगल दर्रे को पारकर वहां चुपचाप आराम कर रहा था.

जवानों ने जब उन्हें ललकारा तो उन्होंने गोलियां चला दीं. छेत्री के दो जवान घायल हो गए. लेकिन छेत्री ने चौकी बल के सैनिक ठिकाने से मदद के लिए संपर्क साधा और जवानों को मुकाबला करने का आदेश दिया. 10,500 फुट की ऊंचाई पर हो रहे इस मुकाबले के लिए छह घंटे के बाद मदद पहुंच पाई.

नायब सूबेदार के जवान बाकायदा डटे रहे. मुठभेड़ 72 घंटे चली. असल में वास्तविक नियंत्रण रेखा पार करके आने वाले प्रशिक्षित उग्रवादियों के खिलाफ चलाए गए 'ऑपरेशन रक्षक' अभियान में यह अब तक की सबसे लंबी मुठभेड़ थी. इसमें 73 उग्रवादी मारे गए. 15 को गिरफ्तार किया गया. लेकिन 84 भाग निकले. सेना को दो राइफलमैन गंवाने पड़े और एक घायल हुआ.

इस अभियान में उग्रवादियों पर अब तक दस बार धावे बोले गए हैं और उनमें से सिर्फ चार में (दुधी में हुए उक्त मुकाबले समेत) औसतन 50 उग्रवादी या तो मारे गए या गिरफ्तार किए गए. दूसरे मुकाबले गंड, गगनगीर, सोनापांदी, गली और तलेल घाटी में हुए हैं. अभियान के सात महीनों में सेना ने 14,000 से ज्यादा उग्रवादी गिरफ्तार किए हैं और 422 या तो मुठभेड़ में मारे गए या खराब मौसम की वजह से मर गए. सेना को अपने 36 जवानों से हाथ धोना पड़ा और 77 घायल हुए. 12,000 से ज्यादा एके-47 राइफलें बरामद की गईं जो कि भारतीय सेना की एक रेजिमेंट के लिए काफी हैं. लेकिन जैसा कि अधिकारियों ने कबूल किया, वास्तविक नियंत्रण रेखा के उस पार से आने वाले उग्रवादियों का यह महज 30 फीसदी ही है. क्योंकि सेना उस पार से आने वाले 72 रास्तों में से सिर्फ 50 के बारे में ही जानती है.

भारतीय चौकियों पर पाकिस्तानी सेना की नियमित गोलीबारी को देखते हुए सेना अधिकारियों का खयाल है कि आने वाले महीने उनके लिए बहुत मुश्किल के होंगे. क्योंकि इस मार्च के आखिर में बुगीना में सिख इन्फैंट्री के चार जवान हमले में मारे गए थे. अब और भी कड़े दिन आएंगे.

—**वाहेगुरु पाल सिंह सिद्धू**, वास्तविक नियंत्रण रेखा से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

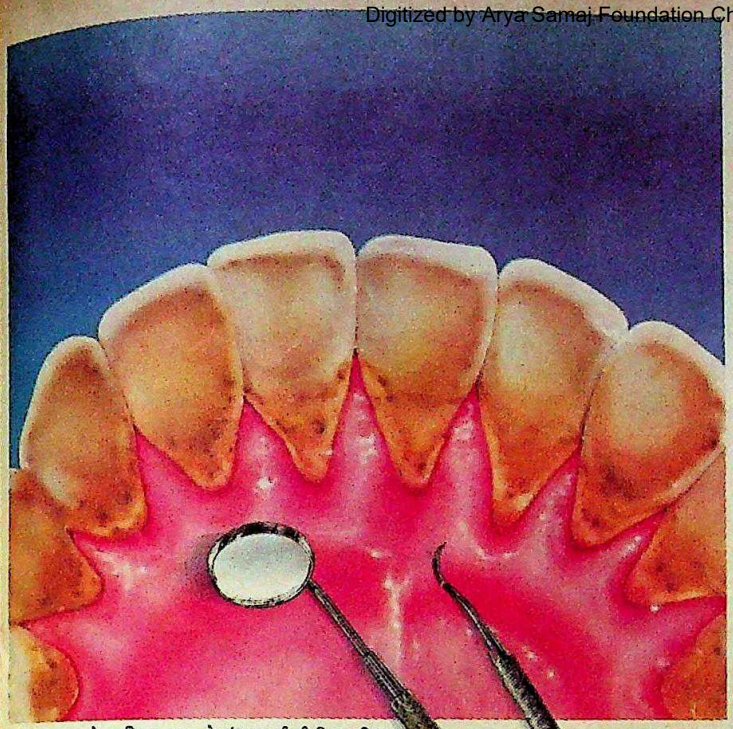

टारटर को दर्शाने वाला आपके मुंह का भीतरी विस्तृत चित्र.

अभी अपने दांतों पर जीभ फिराकर देखिए... आपके लिए कोई गंभीर समस्या हो सकती है !

ये है मैल की परत.

इसे टारटर कहते हैं. दांतों पर, मसूढ़ों के पास आप अपनी जीभ से एक धब्बेदार पीली (कई बार सफ़ेद) सीमेंट जैसी खुरदुरी परत को आसानी से महसूस कर सकते हैं. एक बार इसके जमने पर, आम तौर से इसे हटाने के लिए दांतों के डॉक्टर की सहायता लेनी पड़ती है. लेकिन ये दोबारा फिर जम जाती है. यदि इस पर ध्यान न दिया जाए तो इस टारटर के कारण आपके दांत न केवल भद्दे और बदसूरत नज़र आने लगते हैं बल्कि इससे मसूढ़ों की गंभीर समस्या भी पैदा हो सकती है. यहां तक कि आपके दांत सड़ भी सकते हैं. सबसे बुरी बात तो यह है कि भारत के ९०% वयस्कों की दांतों संबंधी बीमारियों का प्रमुख कारण है - यही टारटर.

केवल चुने हुए शहरों में उपलब्ध.

परीक्षणों द्वारा मान्य टारटर नियंत्रक.

टारटर बनता कैसे है?

सामान्यतया लार में मौजूद कैल्शियम लवण और ऑरथोफ़ॉस्फ़ेट की परस्पर प्रतिक्रिया द्वारा कणों के रूप में हायड्रॉक्सीएपेटाइट तैयार होता है. दरअसल, टारटर का मूल बीज या असली कारण भी यही है. जिसे डॉक्टर कैलक्युलस कहते हैं. धीरे-धीरे कैल्शियम लवण के और भी कण इस बीज पर जमा होते जाते हैं और टारटर की एक परत सी बन जाती है. ऐसा इसलिए होता है क्योंकि इन बीजों में ख़ास गुण होते हैं, जिससे इन पर कैल्शियम लवण अपने आप जमा होते जाते हैं.

नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला. टारटर को रोकने वाला परीक्षणों द्वारा मान्य टूथपेस्ट.

नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला टूथपेस्ट परीक्षणों द्वारा मान्य भारत का सबसे पहला और एकमात्र टूथपेस्ट है जो टारटर को बनने से रोकता है और इससे होने वाली बीमारी की संभावना को कम करता है.

नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला कैसे असर दिखाता है?

नये कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूले में घुलनशील पायरोफ़ॉस्फ़ेट होता है, जो लार में मौजूद कैल्शियम के साथ मिल जाता है और इस कैल्शियम को फ़ॉस्फ़ेट के साथ मिलने से रोकता है. यह नया मिश्रण आसानी से सख़्त नहीं होता. इस तरह टारटर बनने की क्रिया भी कम होती है. यही नहीं, पायरोफ़ॉस्फ़ेट पहले ही बन चुके टारटर को और अधिक बढ़ने से भी रोकता है. यह मौजूदा टारटर के बीजों के साथ मिलकर, दांतों पर एक कवच सा तैयार कर देता है तथा और अधिक टारटर की जमावट को रोकता है.

टारटर को रोकने में बेजोड़.

अमेरिका के फ़ॉरसिथ डेंटल सेंटर में किए गए एक तुलनात्मक सर्वेक्षण के अनुसार, दांतों के इलाज के लिए आए एक समूह की निगरानी के दौरान नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला टारटर की जमावट को रोकने में औसतन ४७.६% तक सफल सिद्ध हुआ.

टारटर का करें नियंत्रण - तीन सुनहरे नियम.

१. दांत के डॉक्टर से दांतों की सफ़ाई करवाएं.
२. दांतों को दिन में दो बार कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला टूथपेस्ट से साफ़ करें.
३. नियमित समय पर दांत के डॉक्टर के पास जाएं.

"कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूले से मसूढ़े के ऊपरी हिस्से पर टारटर का बनना तो निश्चित रूप से कम हुआ, लेकिन दांतों संबंधी बीमारी पर कोई औषधीय प्रभाव नहीं दिखाई दिया."

काउंसिल ऑन डेंटल थेरोपेटिक्स अमेरिकन डेंटल एसोसिएशन.*

Proven to fight Tartar build-up

NEW! Colgate Dental Cream

Tartar Control Formula

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Rediffusion/CP/91/182b HN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथप्रदर्शक रोशनी. जन-रक्षा के लिए.

Philips Lighting

PHILIPS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

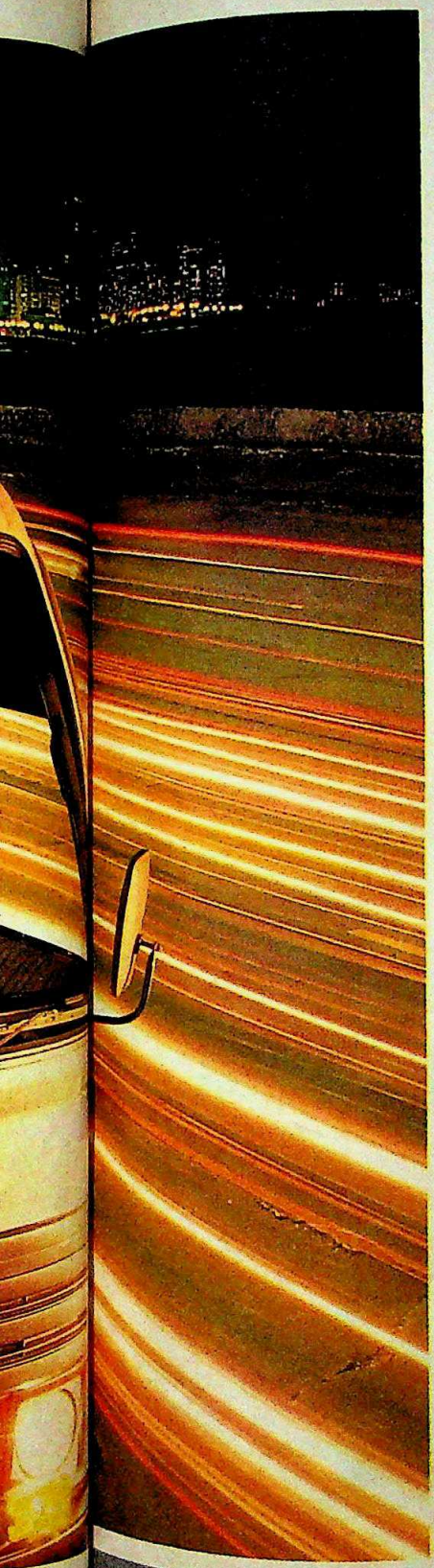

फ़िलिप्स रोशनी का कमाल.

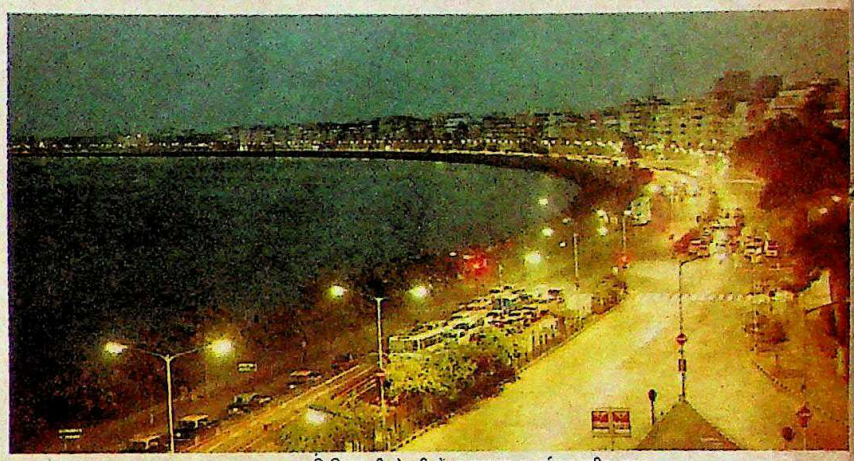

फ़िलिप्स की रोशनी में जगमगाता मुम्बई का मरीन ड्राइव

आधी रात बाद घर की ओर गाड़ी चलाते हुए... शाम के झुटपुटे में परिवार के साथ टहलते हुए... व्यस्त राज पथ पर तेज़ रफ़्तार के बीच रात में गुज़रते हुए... लेकिन हर हाल में पूरी तरह सुरक्षित. क्योंकि आपको रास्ता दिखाती है फ़िलिप्स रोशनी.

फ़िलिप्स जनोपयोगी रोशनीः जन-रक्षा के लिए.

जनोपयोगी प्रकाश व्यवस्था प्रस्तुत करने के लिए फ़िलिप्स आज दुनिया भर में एक जानेमाने विशेषज्ञ के रूप में प्रसिद्ध हैं. अपनी आधुनिकतम तकनीक तथा कम्प्यूटर द्वारा डिज़ाइन प्रकाश व्यवस्था के फलस्वरूप फ़िलिप्स आपके लिए प्रस्तुत करते हैं सर्वोत्तम जगमगाती रोशनी! साथ ही बिजली की खपत में अच्छी-ख़ासी बचत.

दर असल, केवल फ़िलिप्स ही पेश करते हैं क्रांतिकारी 'पॉट' प्रकाश उपकरण. इस प्रकार ट्यूबाकार सोडियम लैम्प तथा 'पॉट' ल्युमिनेयर की बदौलत सड़कों पर लगाये जानेवाले सामान्य ल्युमिनेयरों की संख्या काफ़ी कम हो जाती है... 30% तक! ज़रा सोचिए, बिजली की कितनी बचत होती है... हज़ारों किलोवाट प्रति घंटा!

फ़िलिप्स इंडिया अपने देश में दूर-दूर तक बिछी सड़कों के जाल को भली-भांति आलोकित करते हैं - जैसे कि, मुम्बई के मरीन ड्राइव पर क्वीन्स नेकलेस. नयी दिल्ली की रिंग रोड. मद्रास का मरीना बीच. और कलकत्ता का ईस्टर्न मेट्रोपॉलिटन बाइपास.

प्रत्येक एक जगमगाता उदाहरण है फ़िलिप्स लिडेक (लाइटिंग डिज़ाइन ऐंड इंजीनियरिंग सेंटर) के तकनीकी कमाल का जो जान व माल की हिफ़ाज़त के लिए सही प्रकाश व्यवस्था प्रस्तुत करने में हमेशा ज़माने से आगे रहते हैं.

जनोपयोगी रोशनी में अग्रणी. सारे संसार में.

PHILIPS

HTA 2899

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

काजरिया पेश करते हैं, 8x10 वॉल टाइल्स की बेजोड़ श्रृंखला.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़सीनो सीरीज़

फ़सीनो ग्रे

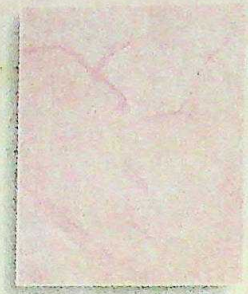
फ़सीनो पिंक

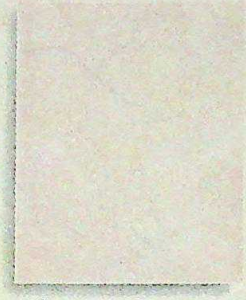
फ़सीनो ऑयस्टर

फ़सीनो ब्लैक

मेजोर्का सीरीज़

मेजोर्का ग्रे

मेजोर्का पिंक

मेजोर्का कॉफी

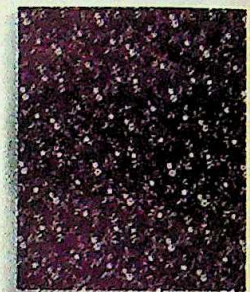
मेजोर्का ब्लैक

ज़फ़ीरो सीरीज़

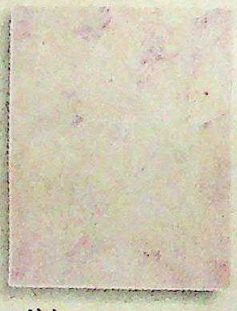
ज़फ़ीरो ग्रे

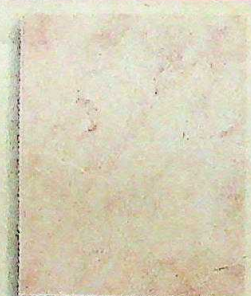
ज़फ़ीरो पिंक

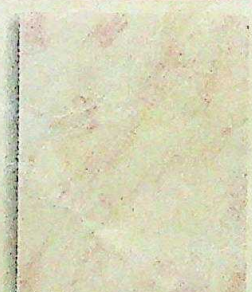
ज़फ़ीरो कॉफ़ी

ज़फ़ीरो ब्लैक

ज़फ़ीरो प्रीमियम सीरीज़

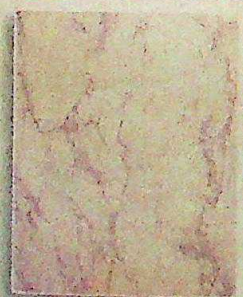
ज़फ़ीरो प्रीमियम ग्रे

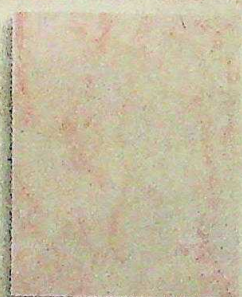
ज़फ़ीरो प्रीमियम पिंक

ज़फ़ीरो प्रीमियम ब्लैक

TODAGRES स्पेन के सहयोग से

Kajaria
काजरिया सिरेमिक्स लिमिटेड

* रंगों और डिज़ायन की व्यापक रेंज * 24 घंटे में तैयार * मजबूत और टिकाऊ * रख-रखाव पर कोई खर्च नहीं * सफाई में आसान * खर्चा भी कम

कॉर्पोरेट ऑफिसः सी-7, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-110065. फोनः 6837833, 6830533, 6836433. फैक्सः 011-6841772. टैलेक्सः 031-61053 KAST IN
रिजनल ऑफिसः 11, होमी मोदी स्ट्रीट, दूसरी मंजिल, कमरा नं. 24, फोर्ट, बम्बई-400023. फोनः 277119. फैक्सः 022-274428. टैलेक्सः 011-82577 KAST IN
2/6 शरत बोस रोड, सेंट्रल प्लाजा, कमरा नं. 203, कलकत्ता-700 020. फोनः 754820, 748012. टैलेक्सः 021-4842 KAST IN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेताओं को अपना निशाना बनाने लगे हैं. एक संगठन ने पिछले महीने पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला के संबंधी शेख सादिक की हत्या कर दी. श्रीनगर में पाकिस्तान विरोधी प्रदर्शनों का आयोजन करने वाले नेशनल कॉन्फ्रेंस के कार्यकर्ता गुलाम मुहम्मद बंदे को भी मौत के घाट उतार दिया गया और जी.एम. शाह मंत्रिमंडल के पूर्व मंत्री हिसामुद्दीन बंदे को भी मार डाला गया.

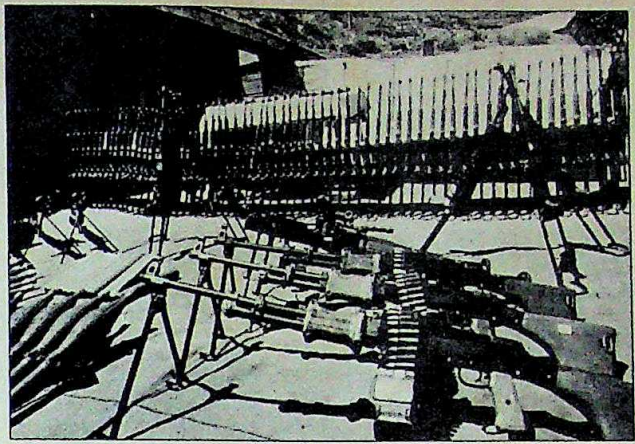

जब्त किए गए आधुनिकतम हथियार

उग्रवादियों को हथियारों की सप्लाई में वृद्धि

उग्रवादी संगठनों में एक और महत्वपूर्ण बदलाव यह आया है कि जम्मू-कश्मीर स्टुडेंट्स लिबरेशन फ्रंट (जेकेएसएलएफ) का नाम बदलकर इखवान-ए-मुसलमीन रख दिया गया है. श्रीनगर में अपने अज्ञातवास में रह रहे हिलाल बेग ने, जिन्होंने रुबाइया और नाहिदा के अपहरणों की पूरी योजना तय की थी, 'इंडिया टुडे' को बताया कि, "हमारे हर काम का सेहरा पहले जेकेएलएफ को जाया करता था. और जेकेएलएफ के अध्यक्ष धर्मनिरपेक्ष प्रवृत्ति वाले व्यक्ति हैं. लेकिन हम ऐसे नहीं हैं. हम केवल अल्ला के कानून में यकीन रखते हैं."

फिलहाल सभी अपने पाकिस्तानी आकाओं के बताए रास्ते पर चल रहे हैं. कथित आजादी की लड़ाई की आड़ में बुने गए मंसूबों के रास्ते में आने वाली हर बाधा को पाकिस्तान दूर करता जा रहा है.

वास्तविक नियंत्रण रेखा पर गोलियों की बौछार पहले कभी-कभी ही सुनी जाती थी लेकिन अब यह रोजमर्रा की बात है. फिर पहले गोलीबारी का दायरा कुछ खास इलाकों तक सीमित होता था लेकिन अब पुंछ, रजौरी, कारगिल और कुपवाड़ा तक फैली 640 किलोमीटर लंबी वास्तविक नियंत्रण रेखा पर धमाके सुने जा सकते हैं.

इस तरह की कार्रवाई के दो मकसद हैं. पहला यह कि घाटी के उग्रवादियों को अपने समर्थन का यकीन दिलाए रखना और पाक अधिकृत कश्मीर में प्रशिक्षित उग्रवादियों की कश्मीर में घुसपैठ पक्की करने के लिए उन्हें गोलियों की बौछार की आड़ देना. तकरीबन पांच हजार उग्रवादी घुसपैठ करने में सफल हो गए हैं.

भारतीय सेना इस घुसपैठ को रोक पाने में अभी अधिक सफल नहीं हो पाई है. सेना के एक वरिष्ठ अधिकारी कहते हैं, "पाकिस्तान के साथ लगी सीमा को पूरी तरह सील करना असंभव है. हमारे पास इतने अधिक सैनिक नहीं हैं. और फिर सीमा पार से आने वाले उग्रवादी बेहतर तरीके से प्रशिक्षित व अत्याधुनिक हथियारों से लैस होते हैं."

सीमा पार से प्रशिक्षित और समर्पित उग्रवादियों की घुसपैठ के मद्देनजर स्थानीय अधिकारी रोकथाम के उपायों पर विचार कर रहे हैं. राज्यपाल गिरीशचंद्र सक्सेना हिंसा पर बहुत हद तक काबू करके संतुष्ट हैं. हाल ही में खनयार में सीआरपीएफ की एक टुकड़ी द्वारा बेतहाशा गोलियां चलाए जाने से 16 लोगों की जानें गई थीं. इस घटना से प्रशासन की साख को काफी धक्का लगा. इस घटना ने पिछले साल मीरवाइज़ मौलवी फारूक के जनाजे में शामिल शोकग्रस्त लोगों पर अंधाधुंध गोलियां चलाए जाने की याद भी ताजा कर दी. उस घटना में 57 लोग मारे गए थे और जगमोहन को राज्यपाल पद से हाथ धोना पड़ा था. इस बार की घटना के बाद जनता ने खनयार गोलीकांड की सरकारी जांच का बहिष्कार करना बेहतर समझा और जम्मू-कश्मीर उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश बहुद्दीन फारूकी द्वारा की गई गैर-सरकारी जांच को पूरा समर्थन दिया.

आने वाले महीनों में प्रशासन को हथियारों से लैस और प्रशिक्षित उग्रवादियों की चुनौतियों का सामना करना है. अगर यह दौर निकल गया तो अनर्थ टल सकता है. लेकिन अगर ऐसा नहीं हुआ तो विनाश की शुरुआत हो सकती है.

मेराजुद्दीन

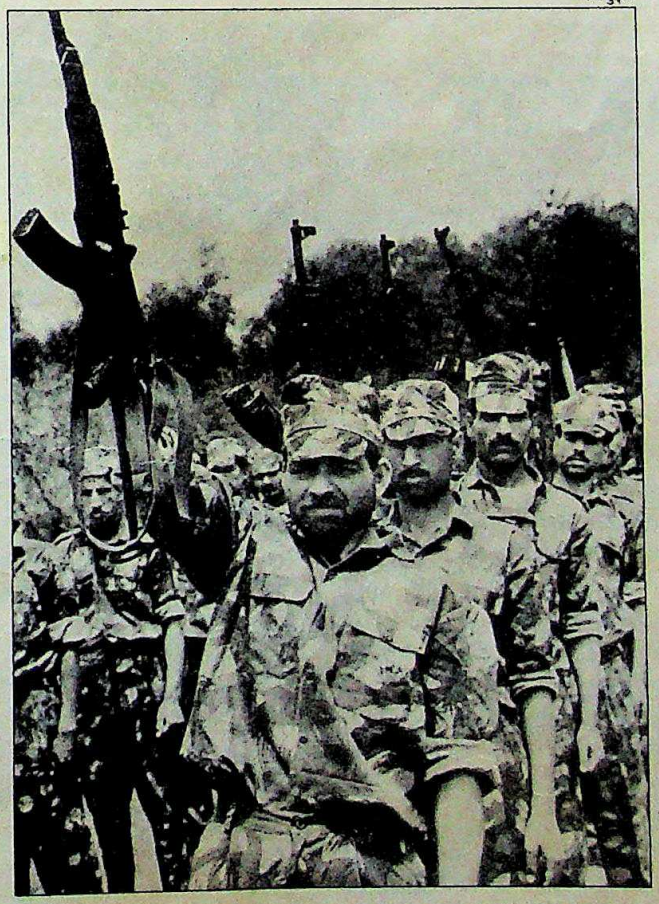

घाटी में प्रशिक्षण पाते जेकेएलएफ के लोग

जेकेएलएफ की स्थिति कमजोर पड़ती जा रही है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: राम जसपाल सिंह

गांवों में सेना और पुलिस की गश्त के बावजूद उग्रवादियों की दहशत कायम

पंजाब

वोट पर बंदूकों की चोट

चुनाव को बेमानी करने की उग्रवादी कार्रवाइयों से पार्टियां और मतदाता सभी परेशान

—कंवर संधु

स्वतंत्र भारत में पहली बार किसी प्रदेश में उग्रवादियों के एके-47 राइफलों के साये तले चुनाव हो रहे हैं.

और 7 जून को लुधियाना में केंद्रीय गृह राज्यमंत्री सुबोधकांत सहाय पर जान लेने की नीयत से हुए असफल हमले से बेहतर उदाहरण पंजाब की मौजूदा स्थिति के बारे में कुछ और नहीं हो सकता. लुधियाना से उनके चुनाव लड़ने के फैसले के बाद से उग्रवादी उनको निशाना बनाना चाहते थे, जबकि सहाय पंजाब में चुनाव कराने के समाजवादी जनता पार्टी सरकार के फैसले को सही ठहराने के प्रतीक स्वरूप खुद चुनाव लड़ रहे हैं (देखें बॉक्स). प्रचार के दौरान गिल गांव के निकट रिमोट कंट्रोल से संचालित एक शक्तिशाली बम उनकी बुलेटप्रूफ कार के निकट फटा. सौभाग्य से सहाय बाल-बाल बच गए.

चुनाव प्रक्रिया में अड़चन डालने के लिए उग्रवादी प्रायः हर दिन एक उम्मीदवार की हत्या कर रहे हैं जिससे उसके क्षेत्र का चुनाव रद्द हो जाता है. 14 जून तक इस तरह मारे गए उम्मीदवारों की संख्या 21 तक पहुंच गई थी जिसमें दो उम्मीदवार लोकसभा के थे.

सुबोधकांत सहाय

कड़ी चुनौती

पिछले पखवाड़े लुधियाना में गृह राज्यमंत्री सुबोधकांत सहाय ने कहा, "मैं उन बिहारी मजदूरों में से ही एक हूं जो आपके खेतों में काम करके खुशहाली बटोरने आते हैं." वे शांति प्रयासों में कितने सफल हो पाते हैं यह तो दीगर बात है पर उनकी उम्मीदवारी और उनकी हत्या के प्रयास ने लुधियाना लोकसभा सीट के लिए मुकाबले में गरमी ला दी है.

राज्य में चुनाव कराने और उग्रवादियों से बातचीत करने की अपनी सरकार की पहल को ही सहाय ज्यादा प्रचारित कर रहे हैं. साथ ही वे स्थानीय लोगों से मिलने-जुलने की कोशिश भी कर रहे हैं. वे अपने भाषणों की शुरुआत 'वाहेगुरु जी का खालसा' से करते हैं और फिर गुरु गोविंद सिंह और पटना (जो कि सहाय के गृह राज्य में है) के संबंधों का जिक्र करते हैं. लोगों की भावनाओं को छूने के लिए वे सभाओं में बोलते हैं, "आप लोगों में से अनेक लोगों की तरह ही मुझे भी पुलिस की लाठियां खानी पड़ी हैं."

लेकिन 55 फीसदी सिख मतदाताओं वाले क्षेत्र में उनका काम काफी कठिन है. जाहिर है, ये मतदाता अकाली उम्मीदवारों में बंट सकते हैं. अकालियों में मान के करीबी कमीकार सिंह, सिख छात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

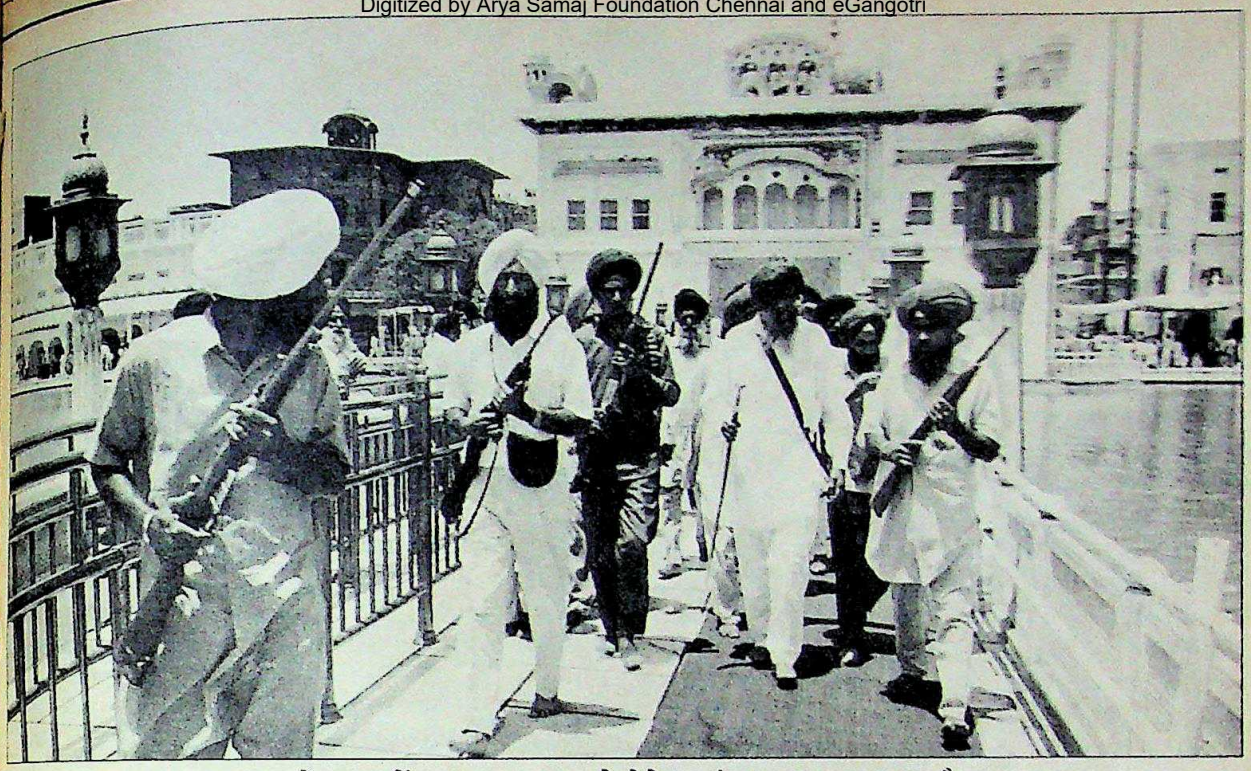

1989 के चुनाव में कामयाब हुए मान के खेमे का तंबू इस बार उखड़ रहा है

उग्रवादियों के इरादे नाकाम करने के ख्याल से अधिकारियों ने चुनाव मैदान में उतरे 2,000 से अधिक उम्मीदवारों में से करीब 550 ऐसे उम्मीदवारों की सूची बनाई है जिन्हें उग्रवादियों से खतरा हो सकता है. ऐसे उम्मीदवारों को तो सुरक्षा गाड़ियां दी गई हैं पर यों ही लड़ रहे उम्मीदवारों को गेस्ट हाउसों या थानों में 'बंद-सा' कर दिया गया है.

तमाम उपायों के बावजूद उग्रवादियों की हिंसा बढ़ी है. हर कोई आशंकित है कि चुनाव तय कार्यक्रम से हो पाएंगे या नहीं. अकाली दल और उनके उग्रपंथी धड़े भी हिंसा से नहीं बच सके हैं. सिमरनजीत सिंह मान और प्रकाश सिंह बादल ने चुनाव नहीं लड़ने का फैसला किया है.

भाकपा, माकपा और जनता दल ने तीन हफ्ते के लिए चुनाव टालने की जो मांग की है उसमें एक कारण यह कि अर्द्धसैनिक बलों की तैनाती का काम समय पर पूरा नहीं हो रहा है. लेकिन चुनाव आयोग ने इसके बावजूद उस एक लोकसभा सीट और 11 विधानसभा सीटों के लिए फिर से चुनाव का कार्यक्रम भी घोषित कर डाला जहां चुनाव रद्द हुए थे.

अपनी चुनावी संभावनाओं को देखकर ही पार्टियों ने चुनाव में भाग लेने या न लेने के फैसले किए हैं. यहां इंका एकदम बिखरी हुई है. परिणाम हुआ कि शहरी और हिंदूबहुल क्षेत्रों में भाजपा की जीत की उम्मीदें बढ़ गईं. दिलचस्प बात यह है कि इस बार सिख वोट एकजुट नहीं हैं. पंजाब विधानसभा की 117 सीटों में से करीब 75 ग्रामीण और सिखबहुल क्षेत्रों में हैं. 1989 में लोगों ने उग्रवादियों द्वारा समर्थित उम्मीदवारों को वोट दिया था. ऐसे

टी.एस. बेदी

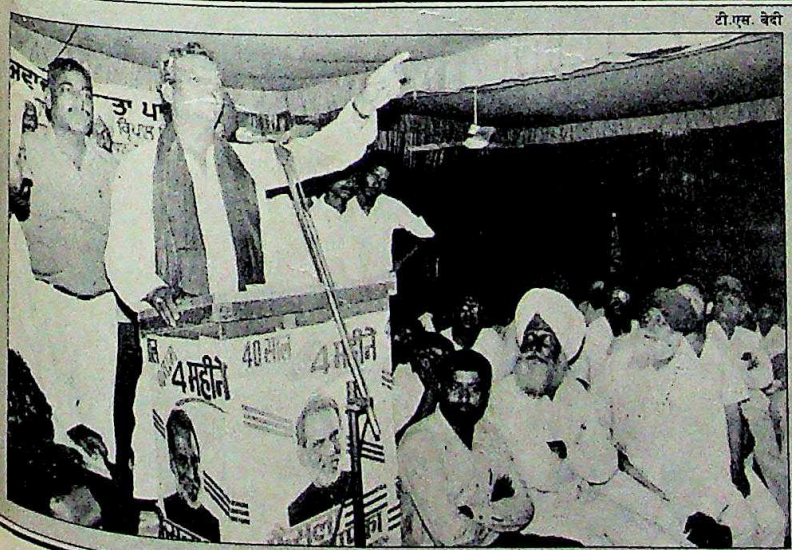

लुधियाना में प्रचार करते सहाय

संघ (मंजीत गुट) के निर्मल सिंह ढिल्लों मैदान में हैं. ढिल्लों अभी लोंगोवाल हत्याकांड के सिलसिले में जेल में बंद हैं. सहाय को निश्चित रूप से उत्तर प्रदेश और बिहार के प्रवासी मजदूरों के वोट का बहुलांश मिलेगा, हालांकि उनके लिए भाजपा ही बाधा बनेगी.

सहाय सभी पार्टियों की आंख की किरकिरी हैं. भाजपा उन पर उग्रवादियों से 'सांठगांठ' का आरोप लगाती है, और अकाली उन्हें दमन का प्रतीक मानते हैं. उनके इर्द-गिर्द जरूरी सुरक्षा का घेरा भी उनके लिए प्रतिकूलता ही पैदा करता है.

—कंवर संधु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उम्मीदवार 13 में से 10 लोकसभा सीटों पर जीत गए थे. इस बार ग्रामीण मतदाता अकाली राजनीति की गुटबाजियों से ऊब गए हैं.

मान की जिस चमक ने 1989 के चुनाव में सबको फीका कर दिया था, वह अब खुद ही फीकी पड़ गई है. पिछले चुनाव में उनका साथ देने वाला सिख छात्र संघ अलग हो चुका है. मान का भटकाव भी उन्हें महंगा पड़ेगा. अब वे सिखों को एक ऐसा काल्पनिक पंथिक राष्ट्र देने का वादा करते हैं जो पाकिस्तान, अफगानिस्तान और ईरान से मुक्त व्यापार संबंध रखेगा. लेकिन इतनी मुश्किलें झेल रहे लोगों के लिए ऐसी हवाई बातें खास वजन नहीं रखतीं.

ग्रामीण इलाकों की चुनाव सभाओं में अब पुरानी रंगत नहीं रही

पहले अकालियों का मुख्य काम केंद्र को कोसना होता था, अब वे एक-दूसरे को कोसने में ही जुटे हैं. मान अन्य सभी धड़ों को केंद्र का दलाल बताते हैं. बादल कहते फिर रहे हैं कि मान सिख कौम के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे. और मंजीत सिंह मान पर 1989 के चुनाव में जमा पैसे के गोलमाल का आरोप लगाते हैं.

इस बार के चुनाव परिणाम 1985 में हुए विधानसभा चुनाव से एकदम अलग होंगे. तब अकाली दल ने 73 सीटें जीती थीं. कांग्रेस (इ) को 32 और भाजपा को छह स्थान मिले थे. इस बार स्थानीय असर और पहुंच रखने वाले उम्मीदवार ही जीतेंगे, चाहे वे जिस पार्टी के हों. चुनाव के बाद अकाली धड़ों में मेलमिलाप की संभावना भी प्रबल लगती है. लेकिन अमन के बारे में कोई भी दांव लगाने को तैयार नहीं है.

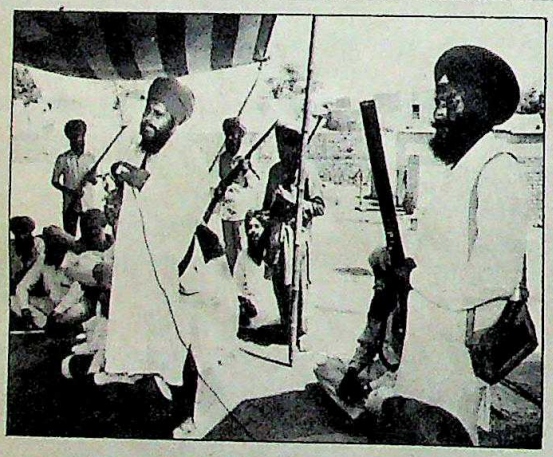

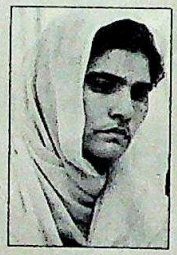

(बाएं से) मंजीत सिंह; बिमल खालसा; सुरिंदर कौर और सांघा: मैदान में

उग्रवादियों के प्रत्याशी

हिस्सेदारी की हवस

करीब दो महीने पहले कुछ शक्तिशाली उग्रवादी गुटों के सदस्य चुनाव में हिस्सेदारी के सवाल पर विचार करने के लिए किसी पनाहगाह में जुटे. एक ने चुनाव का पक्ष लेते हुए कहा, "पकी फसल को काट लेने का यही सही समय है."

बाद में इस मुद्दे पर काफी विवाद छिड़ गया. लेकिन शुरू में तो उग्रवादियों और उनके रिश्तेदारों में पार्टी टिकट पाने की होड़ लग गई थी. कई ने निर्दलीय उम्मीदवारों के रूप में पर्चे भरे. करीब 200 उम्मीदवार उग्रवादी आंदोलन से जुड़े हुए हैं. 40 तो जाने-माने उग्रवादी हैं और 21 जेल में हैं. पुलिस ने जबरन पैसा वसूलने और दूसरे अपराधों के लिए दूसरे सात उम्मीदवारों को गिरफ्तार किया है.

कुछ प्रमुख उम्मीदवार ये हैं:

▸ इंदिरा गांधी के हत्यारे बेअंत सिंह की विधवा बिमल कौर खालसा रोपड़ से निर्दलीय उम्मीदवार हैं. उनके खिलाफ उनके देवर शमशेर सिंह खड़े हैं.

▸ मनोछल गुट के कट्टर उग्रवादी रेशम सिंह तरनतारन से लोकसभा के उम्मीदवार हैं.

▸ सिख छात्र संघ (मंजीत गुट) के अध्यक्ष मंजीत सिंह तरन तारन के निकट के बलतोहा क्षेत्र से लड़ रहे हैं. बड़े उग्रवादियों में वे ही चुनाव में हिस्सेदारी कर रहे हैं.

▸ करमजीत सिंह राजघाट पर राजीव गांधी की हत्या के प्रयास में जेल में बंद हैं. वे पटियाला संसदीय क्षेत्र से खड़े हैं.

▸ मारे गए उग्रवादी सुखविंदर सिंह के भाई बलविंदर सिंह सांघा का तरनतारन विधानसभा सीट पर सुखदेव सिंह से मुकाबला है.

—कंवर संधु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा

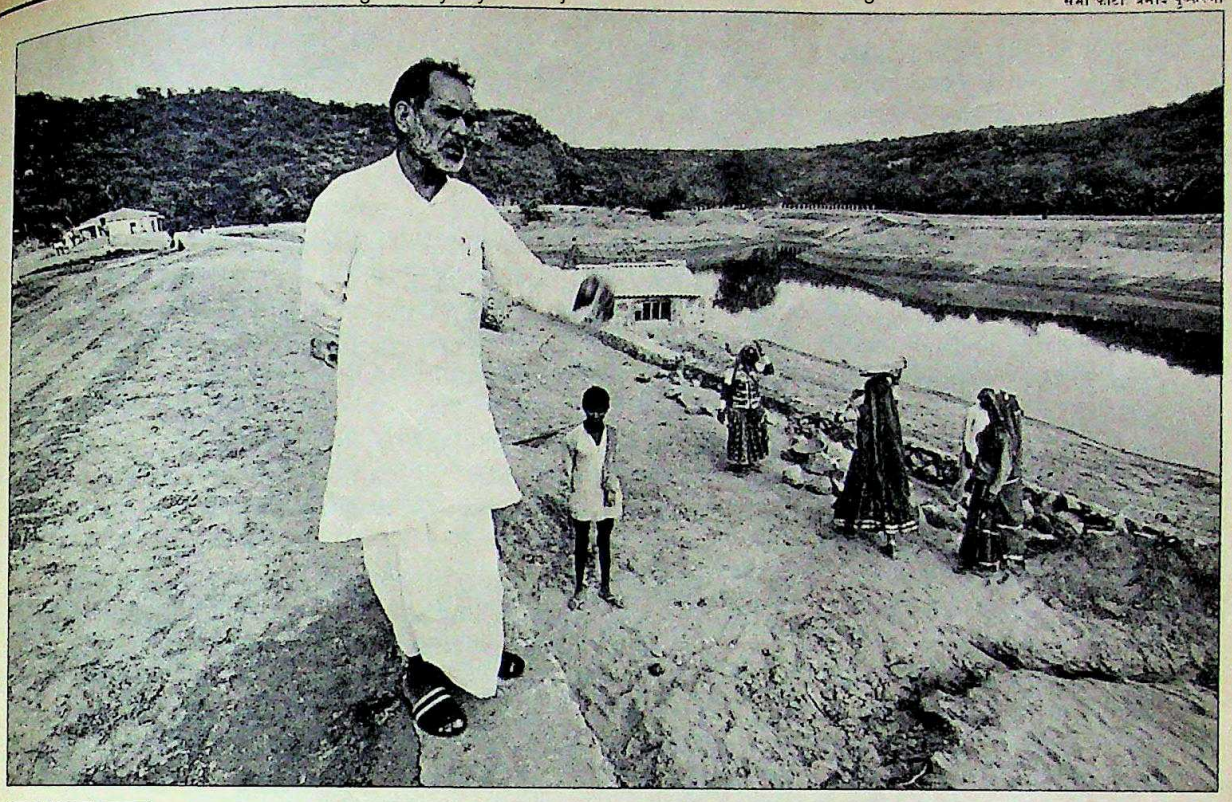

भारत यात्रा न्यास

विस्तारवादी हौसले

चंद्रशेखर की कृपा से न्यास की जायदाद में इजाफे की कोशिशें

कार्यवाहक प्रधानमंत्री चंद्रशेखर अपनी जिम्मेदारियों को कुछ ज्यादा ही गंभीरता से ले रहे हैं. अपने 'भारत यात्रा न्यास' की जायदाद के विस्तार के मामले में वे खास तौर से सक्रिय हैं. स्वयं चंद्रशेखर द्वारा 1983 में स्थापित यह परमार्थ संस्था 13 केंद्रों का संचालन करती है जो शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से ग्रामीण विकास का काम चलाते हैं. लेकिन और अधिक केंद्रों के वास्ते ज्यादा जमीन हासिल करने की अनथक कोशिशों के कारण इस न्यास और केंद्रीय पर्यावरण और वन मंत्रालय के बीच सीधी टक्कर की स्थिति बन गई है.

न्यास के वर्तमान 13 केंद्रों के लिए जमीन संबद्ध राज्य सरकारों से प्राप्त हुई थी. मिसाल के तौर पर, हरियाणा में भोंडसी में बना केंद्र 17 एकड़ में फैला हुआ है. न्यास के उद्देश्य के नाम पर वहां केवल एक दवाखाना भर है.

भोंडसी आश्रम में चंद्रशेखर (ऊपर); करोंदी आश्रम: विवादास्पद

न्यास अब मध्य प्रदेश के जबलपुर में करोंदी गांव में 56.6 हेक्टेयर (136 एकड़) जमीन हासिल करने की कोशिश कर रहा है. इसके लिए मई 1990 में आवेदन तब किया गया जब चंद्रशेखर प्रधानमंत्री नहीं थे. मध्य प्रदेश सरकार ने पड़ताल में पाया कि संबद्ध जमीन 'बड़े झाड़ का जंगल' श्रेणी में आती है. लिहाजा, इस जमीन का इस्तेमाल जंगल के अलावा किसी और तरह से करने के लिए पर्यावरण और वन मंत्रालय से पूर्वानुमति लेने की शर्त रखी गई.

मंत्रालय ने 31 अगस्त 1990 को निरीक्षण करवाया और इस नतीजे पर पहुंचा कि इस जमीन के एक हिस्से पर न्यास का एक प्रतिनिधि पहले से ही काबिज है और वहां स्थानीय बच्चों के लिए एक स्कूल भी चल रहा है तथा एक झोंपड़ी भी खड़ी है. ये तमाम बातें 1980 के वन संरक्षण कानून के खिलाफ हैं.

लेकिन चंद्रशेखर इन बातों से हतोत्साहित नहीं हुए और वे न्यास के लिए जमीन हासिल करने के लिए मध्य प्रदेश सरकार के पीछे लगे रहे. पर्यावरण और वन मंत्रालय के अधिकारियों के नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पत्र में चंद्रशेखर ने इस बात पर जोर दिया है कि इस जमीन पर महज 408 बड़े पेड़ ही हैं, न कि मंत्रालय के दावे के अनुसार 8,000 से भी ज्यादा पेड़. साथ ही उन्होंने मंत्रालय को इस बात का आश्वासन भी दिया है कि न्यास इस जमीन पर 'हजारों पेड़' लगाएगा.

चंद्रशेखर के इन वादों के बावजूद मंत्रालय ने यही निर्णय किया कि बड़े झाड के जंगल को वन संरक्षण कानून, 1980 के तहत वन ही माना जाएगा इसलिए इसका उपयोग वन के सिवा किसी और काम के लिए नहीं किया जा सकता.

इस बीच चंद्रशेखर प्रधानमंत्री बन बैठे. वैसे, न्यास के सचिव पी.एस. प्रसाद दृढ़ शब्दों में कहते हैं कि चंद्रशेखर ने सत्ता संभालने के बाद कभी भी मंत्रालय पर दबाव नही डाला. मगर इस मामले में चंद्रशेखर की दिलचस्पी मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा के इसी साल फरवरी में उनको लिखे पत्र से जाहिर होती है. पत्र में पटवा ने इस मसले पर हुए 'विचार-विमर्श' की चर्चा यह कहते हुए की है कि यह जमीन केंद्र की अनुमति मिलते ही न्यास को दे दी जाएगी.

उधर, पर्यावरण और वन मंत्रालय के अधिकारी भी बताते हैं कि उन पर दबाव बना रहा. हालांकि राज्यमंत्री मेनका गांधी ने मंत्रालय के दृष्टिकोण पर डटे रहना चाहा, पर उन्हें इस बात का एहसास था कि मामला उनके हाथ से निकल चुका है.

न्यास ने अपनी कोशिशें नहीं छोड़ी हैं. पी. एस. प्रसाद ने 'इंडिया टुडे' को बताया कि पटवा मंत्रालय के साथ बातचीत चल रही है और बहुत संभव है कि न्यास को जंगल लगाने की शर्त पर यह जमीन दे दी जाए. वैसे लग यही रहा है कि न्यास निर्माण कार्य के लिए जितनी जमीन लेगा उसके दोगुने क्षेत्र पर जंगल लगा देगा. गौरतलब बात यह है कि कुल 56.6 हेक्टेयर भूमि के छोटे-से हिस्से पर ही इमारतें आदि बनेंगी. इन सब के मद्देनजर न्यास को जमीन मिलने में बहुत संदेह की गुंजाइश नहीं लगती.

इस बीच 'इंडिया टुडे' को मिली जानकारी के अनुसार मध्य प्रदेश के अधिकारियों द्वारा इस बात की कोशिश चल रही है कि केंद्र की अनुमति के बिना ही जमीन दे दी जाए. इसके लिए राज्य सरकार यह तर्क दे सकती है कि बड़े झाड़ों का जंगल कानूनन वनों के अंतर्गत नहीं आता और इसलिए राज्य सरकार इस जमीन को किसी उपयुक्त न्यास या व्यक्ति को दे सकती है.

—आलोक तिवारी

गुजरात

लू की लपेट

अहमदाबाद में कई मौतें

सूर्य देवता पिछले दिनों उत्तर भारत खासकर गुजरात से कुछ ज्यादा ही कुपित नजर आए. पिछले पखवाड़े गुजरात में तापमान इतना ऊंचा चला गया कि कई लोगों की जानें चली गईं. ऐसा पिछले कई दशकों में नहीं हुआ था. अहमदाबाद में तापमान 46.6 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया जो कि एक रिकॉर्ड ही बन गया. मगर इससे भी ज्यादा कहर की बात यह रही कि करीब एक सप्ताह तक तापमान 45 डिग्री के इर्द-गिर्द मंडराता रहा.

भारतीय मौसम विभाग के महानिदेशक डॉक्टर एस.एम. कुलश्रेष्ठ कहते हैं कि वर्ष के इन दिनों में गुजरात के कुछ हिस्सों में आम तौर पर लू चलती है. लेकिन इस बार तापमान में असामान्य वृद्धि की वजह यह है कोई अंधड़ या तूफान आदि नहीं आया.

तापमान बढ़ने के साथ ही अहमदाबाद में प्रतिदिन मौतों की संख्या 75 से बढ़कर 125 तक पहुंच गई. 2 से 6 जून के बीच शहर में 670 लोग मरे. मरने वालों में एक व्यापारी ईश्वरभाई पटेल के चाचा भी थे. ईश्वरभाई कहते हैं, "यह लू नहीं गरम हवा की आंधी जैसी थी. पूरे एक हफ्ते तक लगा जैसे कोई भट्टी जल रही हो."

और करेले पर नीम यह चढ़ा कि शहर के नगरपालिका अधिकारी इस स्थिति से निबटने में अक्षम दिखे. अहमदाबाद नगर निगम के महापौर प्रफुल्ल बारोट कहते हैं, "हम लोग अचानक ही फंस गए. लेकिन बाद में हमने स्थिति संभाल ली." दमकल के 19 एंबुलेंस दिन-रात दौड़ते ही रहे. अस्पतालों में चिकित्सा के इंतजाम भी रोगियों की संख्या के आगे अपर्याप्त साबित हुए. लू से बीमार कई रोगी नगर निगम के वी. एस. अस्पताल के बरामदों में पड़े नजर आए.

शहर के 8 शवदाह गृहों में मृतकों की अंतिम क्रिया के लिए परिवारजनों को घंटों लाइन लगानी पड़ी. नगर निगम द्वारा संचालित कई शवदाह गृहों में लकड़ी का अभाव हो गया. अंत्येष्टि के लिए जगह की इतनी कमी पड़ गई कि लोगों को इन गृहों के बाहर भी अंतिम क्रिया करने पर मजबूर होना पड़ा. जमालपुर के सप्तर्षि शवदाह गृह में तो कूड़े के ढेर के पास अंतिम क्रिया करनी पड़ी.

जावेद राजा

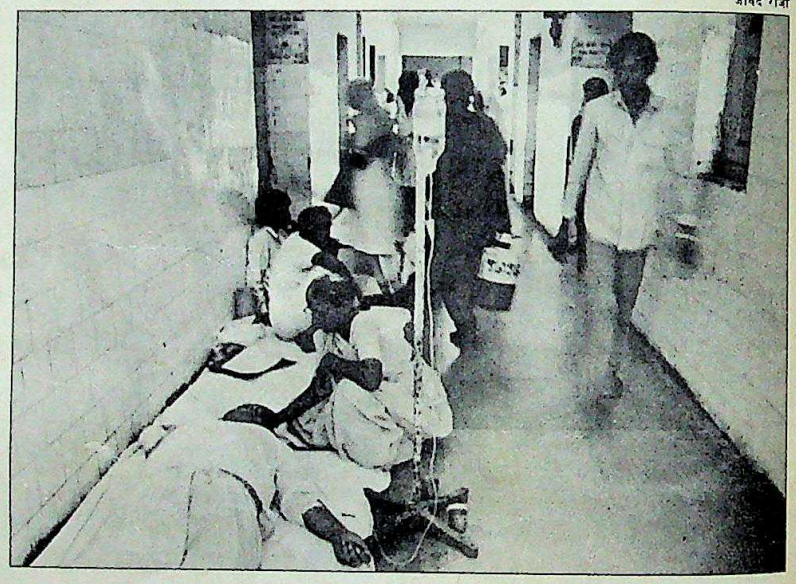

अहमदाबाद नगर निगम के के. वी. एस. अस्पताल में रोगी: जगह की कमी

एक विद्युत शवदाह गृह में लगातार बिना रुके तीन दिनों तक शवदाह होते रहे. नतीजा यह कि व्यवस्था ही जवाब दे गई. एलिस ब्रिज विद्युत शवदाह गृह के प्रभारी रसिकभाई पटेल ने कहा कि दस वर्षों में मैंने 1989 की विमान दुर्घटना को छोड़ यहां इतनी भीड़ नहीं देखी थी.

लू के थपेड़े 8 जून से कुछ कमजोर पड़े. अहमदाबाद के लोग अब इंद्र देवता की कृपा की बेसबरी से प्रतीक्षा कर रहे हैं.

—उदय माहूरकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य प्रदेश

बादशाह बंदी

नटवरलाल फिर गिरफ्त में

पिछले पांच दशक से ठगी के पर्याय के रूप में अगर कोई नाम लिया जाता रहा है तो वह है नटवरलाल का. ठगी के इस बेताज बादशाह की तलाश पुलिस को आठ राज्यों में दर्ज 100 से भी अधिक आपराधिक मामलों के सिलसिले में रही है. विभिन्न अदालतों ने उसे कुल 113 वर्षों के कारावास की सजा सुना रखी है. मगर आज तक नटवरलाल जेल के दरवाजों से बड़े आराम से निकल जाता रहा है.

लेकिन अब लगता है कि 77 वर्षीय, मिथिलेश कुमार श्रीवास्तव उर्फ नटवरलाल पर उम्र का असर होने लगा है. पिछले पखवाड़े भोपाल पुलिस की गिरफ्त में फंसा नटवरलाल दयनीय दिख रहा था. छड़ी के सहारे के बिना वह चल नहीं पाता और चेहरा तो झुर्रियों से भर गया है. बहुत से दांत टूट चुके हैं और आवाज भी कांपती है. उसके अनुसार, "मुझे पता है कि अब मेरे पास बहुत कम वक्त बचा है."

लेकिन नटवरलाल ने अपने समय का 'भरपूर इस्तेमाल' किया. इसकी ताजा मिसाल पिछले पखवाड़े मिली. भोपाल में उसने एक घड़ी की दुकान में जाकर खुद को मध्य प्रदेश विधानसभा का एक अधिकारी बताया और 'कर्मचारियों में वितरण के लिए' कुल 28,000 रु. कीमत की 55 कलाई घड़ियों का ऑर्डर दे डाला. हमेशा की तरह उसने रकम का भुगतान बैंक ड्राफ्ट से करने की पेशकश की.

लेकिन जाली बैंक ड्राफ्ट में ऐसी भूलें थीं कि दुकानदार ने उसे लेने से इनकार कर दिया. शरारतपूर्ण मुस्कान के साथ नटवरलाल ने बताया, "उसकी छपाई इतनी घटिया थी कि मैं खुद भी यही सोच रहा था कि क्या कोई इसे स्वीकार भी करेगा." पुलिस ने फौरन ही उस ऑटोरिक्शा को पकड़ लिया जिसमें नटवरलाल जा रहा था. उसकी पहचान 'इंडिया टुडे' (30 नवंबर 1987) में छपे उसके चित्रों के द्वारा हुई. भोपाल के पुलिस अधीक्षक पन्नालाल के शब्दों में, "वह अब सठिया गया है. वरना कोई सड़कछाप ठग भी एक ही चाल बार-बार नहीं चला करता."

इसके बावजूद हनुमानगंज थाने के बाहर उसके सैकड़ों प्रशंसक उसके साथ फोटो खिंचाने के लिए बेताब खड़े थे. नटवरलाल जेल में भी अपनी शालीनता बनाए रखता है और पुलिसवाले भी उसके साथ बदसलूकी नहीं करते. हिरासत में भी छुटभैये ठग एकाध गुर सीखने के लिए उसके आसपास मंडराते रहते हैं.

पुलिस गिरफ्त से फरार होने के अपने किस्सों की चर्चा करते समय उसकी आंखें चमक उठती हैं. बिहार के रविया बंगरा गांव के एक धनी जमींदार के दो पुत्रों में ज्येष्ठ इस ठग के दोनों बेटों का काफी पहले देहांत हो गया था और पत्नी भी तीन वर्ष पहले चल बसीं. उसके खिलाफ सबसे पहला मामला कलकत्ता पुलिस ने 1937 में नौ टन लोहा चुराने के लिए दर्ज किया था. तब से अब तक की जिंदगी के बारे में वह कहता है, "मैंने अपनी जिंदगी में काफी मौज किया है, ऐशो-आराम से रहा हूं और ढेर सारे रुपए कमाए हैं."

नटवरलाल विभिन्न जेलों से अब तक आठ बार फरार हो चुका है. उसके शब्दों में, "कोई भी जेल मुझे अधिक समय तक नहीं रख सकती. मैं कोई अपराधी नहीं हूं. मैं तो एक कलाकार हूं और अपने दिमाग के बूते कायम हूं."

नटवरलाल के अतीत को देखते हुए तो यही लगता है कि अगर उसका शरीर साथ दे तो वह आगे भी लोगों को ठगता रहेगा.

—नरेंद्र कुमार सिंह

आर.सी. साहू

नटवरलालः कोई मलाल नहीं

बिहार

न्याय में देरी

12 वर्ष बाद रिहा युवक उलझन में

आजीवन कारावास से मिली आजादी पर तो 24 वर्षीय आदिवासी युवक करमपाल रौतिया को बेहद खुश होना चाहिए था. मगर बिहार के नरक जैसे जेल में 12 वर्ष बिताकर पिछले पखवाड़े बाहर आया रौतिया परेशान था. बिहार के जेलमंत्री उदय नारायण चौधरी के घर के बाहर बनी झोंपड़ी के सामने बैठा वह इस बात का इंतजार कर रहा था कि 400 किमी दूर उसके घर तक पहुंचने के लिए कोई उसके साथ चले.

वह एकदम चकराया हुआ था. 12 वर्ष की ही उम्र में रौतिया को आजीवन कारावास की सजा मिली थी और फिर उसने बिहार के नरक जैसे जेलों में अपना आधा जीवन गुजार दिया. बाल न्याय कानून में बच्चों को आजीवन कारावास और जेल देने की मनाही के बावजूद ऐसा हुआ. उनके लिए सिर्फ सुधार गृह का प्रावधान है. पक्के अपराधियों के बीच ही

ललन कुमार

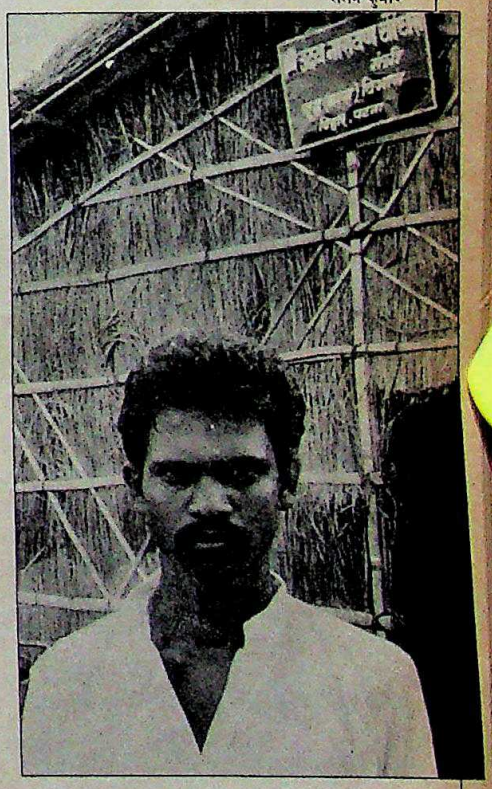

रौतियाः अब कहां जाएं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े हुए रौतिया को किसी और दुनिया का पता ही नहीं है. भिन्न माहौल में अपने को टिका पाने की जतन कर रहा रौतिया कहता है, "मुझे अपने गांव बसाई टोला (थानपुर प्रखंड) जाने का रास्ता नहीं मालूम. यह कहां है यह भी मुझे नहीं मालूम."

लेकिन कैद होने से पहले की घटनाएं उसे पूरी तरह याद हैं. तब उसका एक चाचा भुजाली लेकर उसके पूरे परिवार को काट डालने के उद्देश्य से घर में घुसा था. उसने, जिसका नाम अब रौतिया को याद भी नहीं है, उस पर ही सबसे पहले हमला किया. रौतिया ने पलटकर उस पर वार किया. वह कहता है, "उसकी भुजाली गिर पड़ी. मैंने झट से उसे उठा लिया और चाचा पर हमला किया. मुझे नहीं मालूम मैंने कितने वार किए लेकिन बाद में वह मुझे मरा मिला."

यही वारदात है जिसे रौतिया ने अदालत को भी सुनाया था. लेकिन कानून के कर्ता-धर्ता लोगों पर इसका प्रभाव नहीं पड़ा. उसे जेल भेज दिया गया.

1983 में उसे रांची जेल से हटाकर उत्तर बिहार के मुजफ्फरपुर जेल में रख दिया गया, जहां उसने अगले आठ साल पक्के अपराधियों के बीच गुजारे. इस अंतर्मुखी और मेहनती लड़के ने जेल में पढ़ाई शुरू की और वहीं से 10वीं की परीक्षा पास की.

पिछले महीने आखिरकार उसके दिन फिरे. जेलमंत्री चौधरी जब उसकी जेल में घूमने आए तो उसकी कहानी और जेल रिकॉर्ड ने चौधरी को आश्वस्त कर दिया कि वह निर्दोष है. चौधरी कहते हैं, "कैदी के व्यवहार के आधार पर अधिक से अधिक दो महीने की सजा माफ करने का अधिकार है." रिकॉर्डों से पता चला कि मात्र एक महीने की सजा ही रह गई है. सो, चौधरी ने उसे मुक्त करवा दिया.

लेकिन इतनी सहानुभूति से भी रौतिया आश्चर्यचकित था. चौधरी कहते हैं, "पूरा बचपन जेल में गुजारने के कारण वह जेल का ही अंग बन चुका था. वह बाहर जाना नहीं चाहता था." सो, अब उसने कहा कि वह कहां जाए यह उसे मालूम नहीं तो चौधरी उसे अपने साथ ही घर ले आए और वहां की झोंपड़ी में उसे रखा. साथ ही उन्होंने उसे घर पहुंचवाने की व्यवस्था की.

अब रौतिया अपनी बिखरी जिंदगी को संवारने के जतन में लगा है लेकिन देर से मिले इस न्याय का मतलब न्याय न मिल पाना भी माना जा सकता है.

—फरजंद अहमद

पंजाब

असंतोष अभी भी बरकरार

आईपीएस अधिकारियों को मलाल

भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) में भीतर ही भीतर खदबदा रहा असंतोष अब सतह पर आ चुका है. कार्यवाहक प्रधानमंत्री चंद्रशेखर ने एक अप्रत्याशित कदम उठाते हुए राज्य और केंद्र में आईपीएस अधिकारियों का दर्जा बढ़ाने के मकसद से वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों की स्थिति की गहन समीक्षा के आदेश दिए हैं. इस समीक्षा का उद्देश्य उन्हें आईएएस अधिकारियों के स्तर पर लाना है, क्योंकि आईएएस अधिकारियों का रौब हमेशा ही आईपीएस अधिकारियों की आंख की किरकिरी रहा है.

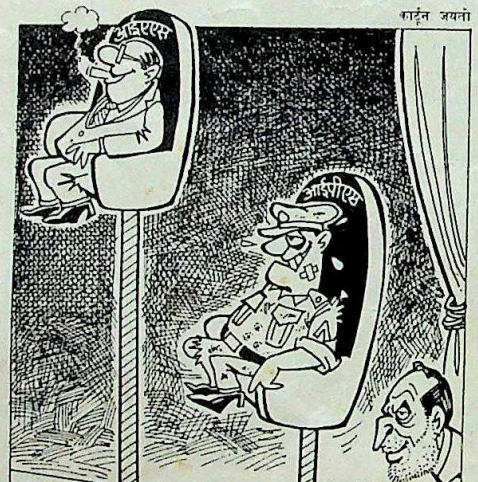

कार्टून जयंतो

प्रधानमंत्री ने 17 मई को एक पत्र गृह मंत्रालय और सभी राज्यों को भेजा, जिसमें केंद्रीय सेवा के प्रथम श्रेणी के अधिकारियों की तुलना में उनके समतुल्य दर्जे के आईपीएस अधिकारियों की प्रोन्नति के ठहराव पर चिंता व्यक्त की गई है.

आईएएस अधिकारियों के महत्व को कबूलते हुए उन्होंने मामले की समीक्षा का आग्रह किया. उन्होंने उदाहरण दिया कि आईएएस अधिकारियों को 5,900—6,700 रु. वेतनमान (संयुक्त सचिव, पुलिस महानिरीक्षक के समकक्ष) तक पहुंचने में 17 से 19 वर्ष लगते हैं. लेकिन एक आईपीएस अधिकारी को इस दर्जे तक पहुंचने में 20 से भी ज्यादा वर्ष लग जाते हैं. राजस्थान, ओडीसा, पश्चिम बंगाल और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में तो आईपीएस अधिकारियों को महानिरीक्षक बनने में 26 वर्ष लग जाते हैं.

दरअसल, कुछ महीने पहले चंद्रशेखर सरकार ने उप-महानिरीक्षक श्रेणी तक पहुंचने की समय सीमा 16 से घटाकर 14 वर्ष और महानिरीक्षक के लिए 21 से घटाकर 17 वर्ष कर दी थी. यदि इन बदलावों पर अमल किया गया तो एक-तिहाई से लेकर आधे आईपीएस अधिकारी तक महानिरीक्षक की श्रेणी के योग्य होंगे. पंजाब में ही 103 में से 50 आईपीएस अधिकारी इस पद के योग्य होंगे. नाम न छापने की शर्त पर एक अधिकारी ने बताया, "यदि यह योजना लागू की गई तो पुलिस सेवा में उप-महानिरीक्षकों से ज्यादा संख्या महानिरीक्षकों की हो जाएगी, जो कि बहुत अव्यावहारिक होगा."

एक मूलभूत समस्या यह है कि आईपीएस अधिकारियों के लिए उच्च स्तर की बहुत नौकरियां मौजूद भी नहीं हैं. न ही उन्हें आईएएस अधिकारियों की तरह सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठान या विदेशों में काम करने के मौके ही नसीब होते हैं. पुलिस अधिकारी इस व्यवस्था को बदलना चाहते हैं. लेकिन आईएएस अधिकारी इसका इस तर्क के साथ विरोध करते हैं कि पुलिस अधिकारी अच्छे प्रशासक नहीं हुआ करते.

प्रधानमंत्री ने न्यूनतम सेवा योग्यता की समीक्षा और इसमें कटौती करने का जो सुझाव दिया है उस पर भी आईएएस अधिकारियों ने प्रतिक्रिया व्यक्त की है. गृह मंत्रालय के अधिकारियों का मानना है कि इस समीक्षा में कई समस्याएं होंगी. बड़ी समस्या तो यही होगी कि आईएएस अधिकारियों के द्वारा महानिरीक्षक पद का दावा करने से इस पद की महत्ता घटेगी. फिर, कार्यवाहक सरकार बदलाव नहीं कर सकती. इसलिए अल्पकालिक समाधान ही संभव हैं. लिहाजा, आईपीएस अधिकारियों को जश्न मनाने के लिए अभी इंतजार करना होगा.

—कंवर संधु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंदमूरि तारक रामराव

लहर के लिए

लेकिन नाटकबाजी बहुत सफल नहीं

तेलुगुदेशम नेता नंदमूरि तारक रामराव को राजनैतिक नाटकबाजी करने का एक मौका और मिल गया. राजीव गांधी की हत्या के बाद राज्य में इंका के पक्ष में सहानुभूति लहर को निष्प्रभावी करने के लिए पूर्व मुख्यमंत्री रामराव ने पिछले पखवाड़े अनशन और मौन व्रत रखा. दरअसल वे इस हत्याकांड के बाद यहां हुई हिंसा और तोडफोड से नुकसान के मुआवजे की मांग कर रहे थे. लेकिन अनशन के सहारे अपने पक्ष में लहर पैदा करने की उनकी यह चाल उनके लिए उलटी भी पड़ सकती है.

हैदराबाद में अनशन पर बैठकर उन्होंने सोचा होगा कि वे अपनी पार्टी के लिए समर्थन जुटा सकेंगे. दरअसल शुरू में उनके अनशन स्थल तक महिलाओं और बच्चों की भारी भीड़ भी देखी गई. भगवा वस्त्रधारी रामराव तपती धूप में एक सुराही के साथ बैठे थे. इस सुराही का तुलसी जल पीने का सौभाग्य केवल जनता दल अध्यक्ष एस.आर. बोम्मई और विश्वनाथ प्रताप सिंह को मिला.

राजीव गांधी की हत्या के बाद राज्य में हुई हिंसा की न्यायिक जांच कराने की रामराव की मांग सरकार ने मान ली. उसके बाद भी उन्होंने अनशन जारी रखा. इस तरह उन्हें जो भी सहानुभूति मिली होगी वह तुरत ही बेअसर हो गई. रामराव की अन्य मांगें ये थीं—हिंसा से हुए नुकसान के लिए पूरे मुआवजे का भुगतान, सभी दोषियों को सजा जिनमें हिंसा उकसाने वाले इंका विधायक भी हैं.

रामराव के अनशन से जब मुख्यमंत्री जनार्दन रेड्डी ने बात बिगड़ती देखी तब उन्होंने तुरंत कार्रवाई की. मधुमेह के रोगी रामराव के रक्त में चीनी का अनुपात खतरनाक ढंग से कम होता जा रहा था. सो, उनके अनशन की तीसरी रात रेड्डी ने उन्हें जबरन निजाम इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के सघन चिकित्सा कक्ष में भर्ती करवा दिया और उनके खिलाफ आत्महत्या का मामला दर्ज कराया. हालांकि पुलिस की यह कार्रवाई अनुचित थी लेकिन तेलुगुदेशम के कुछ कार्यकर्ताओं को छोड़ किसी ने इसका विरोध नहीं किया.

रामराव ने जब दो दिन और अनशन जारी रखने की जिद की तो डॉक्टरों ने मजिस्ट्रेट के आदेश पर उनके शरीर में जबरन तरल पदार्थ प्रवेश कराया. रामराव ने कहा, "सरकार कहती है कि मैं आत्महत्या करना चाहता था. इसका मतलब तो यह है कि गांधी जी जब-जब सत्याग्रह करते थे तब-तब वे आत्महत्या करना चाहते थे." और इसी के बाद रामराव चुनाव प्रचार में जुट गए. बढ़ी हुई दाढ़ी और जिस साधु वेश में वे अनशन पर बैठे थे, उसी वेश में उन्होंने चुनाव सभाओं को संबोधित किया और सरकार की ज्यादतियों की निंदा की. उन्होंने बार-बार कहा कि उनका अनशन जबरन तोड़ा गया. लेकिन इन सभाओं के जरिए वे पूरी सहानुभूति बटोरने में असफल ही रहे. लोग उनकी बातों को सुनने में ज्यादा दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं. आम धारणा यह थी कि रामराव ने अपने परिवार के सदस्यों, अपनी कामा जाति के लोगों और अपनी पार्टी के विधायकों की संपत्ति को हुए नुकसान का मुआवजा पाने के लिए यह नाटक किया. हैदराबाद में रामराव परिवार के सिनेमाघर इंका विधायकों पी. सुधीर कुमार और एम. मुकेश की मौजूदगी में जला दिए गए थे.

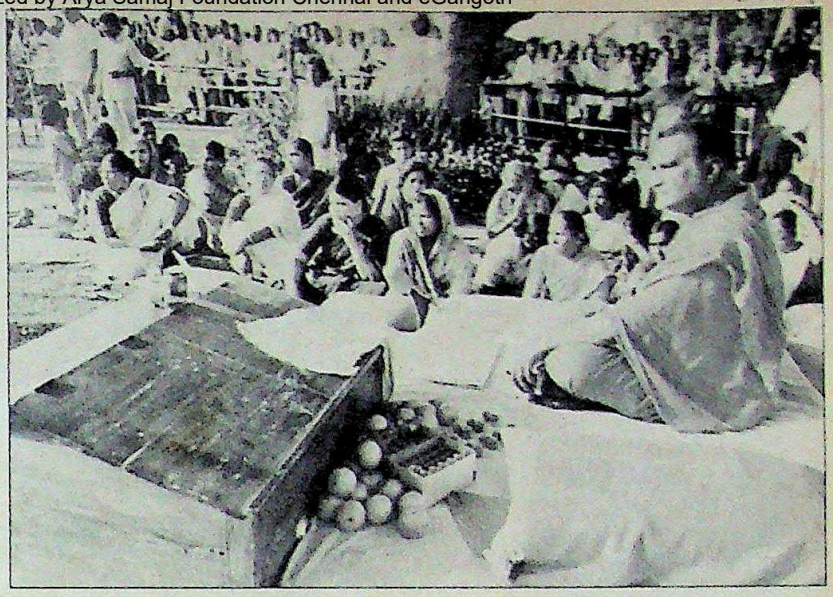

स्नैप्स इंडिया

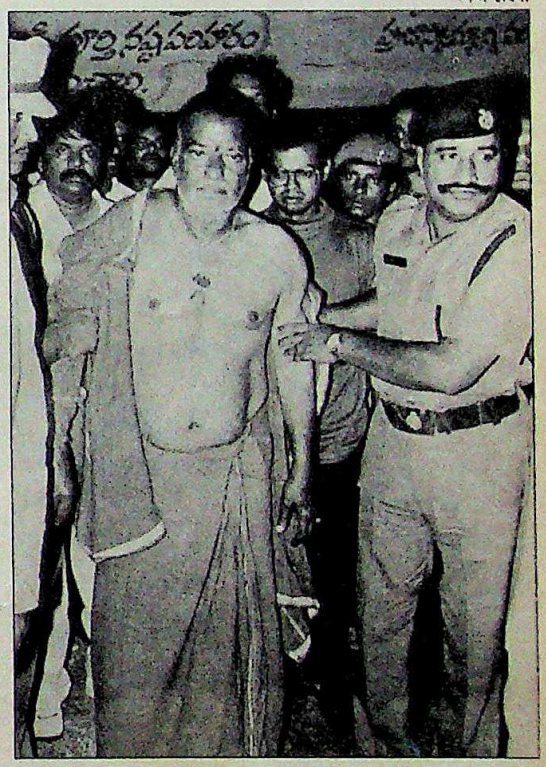

अनशन पर रामराव; और (नीचे) गिरफ्तारी

बहरहाल, उनके पार्टी के लोगों को विश्वास है कि इस अनशन का उन्हें फायदा मिलेगा. हालांकि रामराव इसका खंडन करते हैं. उनके मुताबिक अनशन फायदे के लिए नहीं, न्याय की खातिर किया गया था. लेकिन तेलुगुदेशम सांसद रेणुका चौधरी ने कहा, "देखते रहिए, महिलाएं हमें भारी समर्थन देंगी." लेकिन राज्य की राजनीति में अप्रभावी हो जाने के बाद अब फिर से हावी होने के लिए रामराव को ऐसी नौटंकियों के अलावा भी कुछ करना पड़ेगा. —अमरनाथ के. मेनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

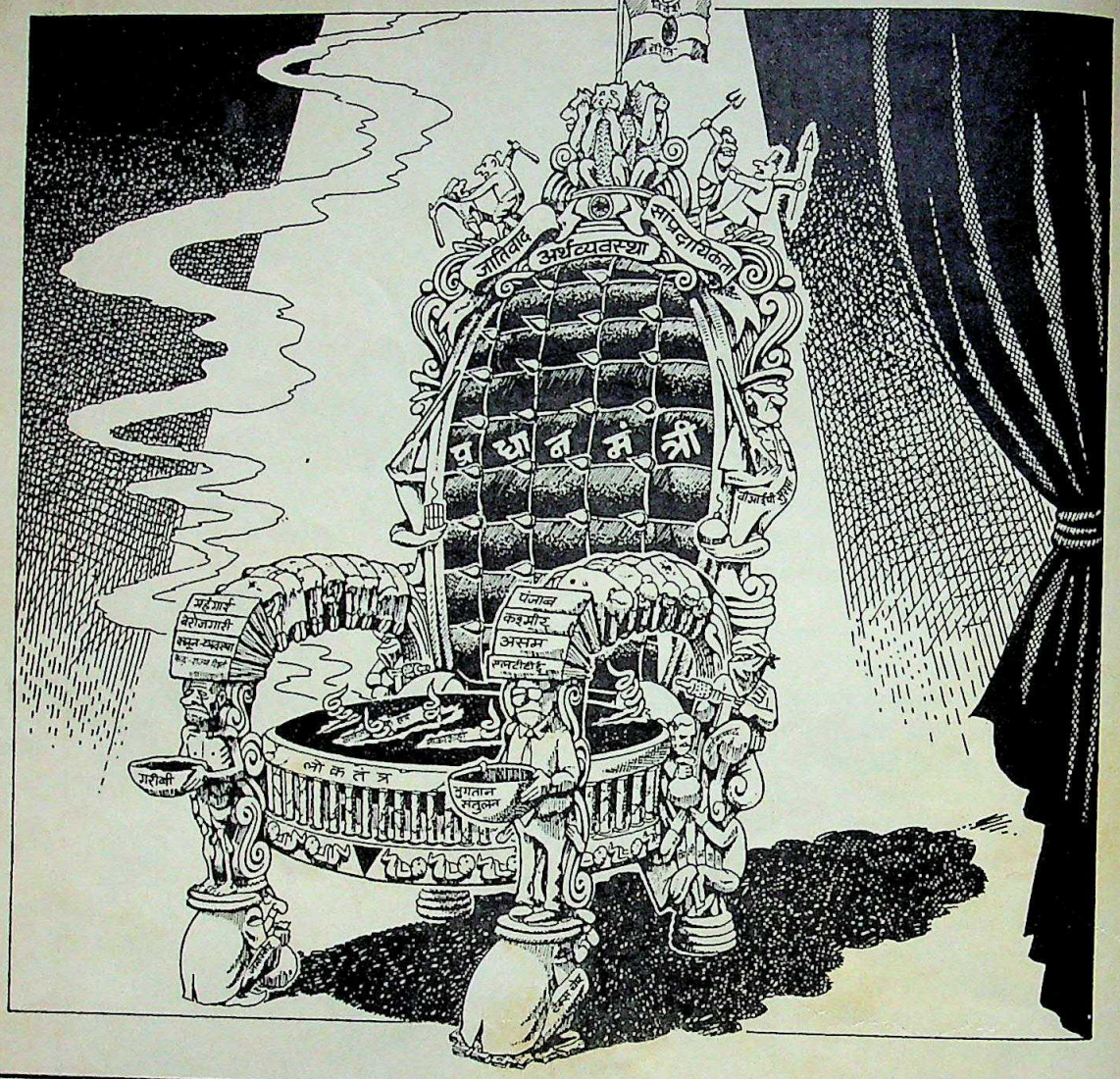

सनद रहे

निधनः नवगठित 'नतुन असम गण परिषद' के नेता 56 वर्षीय **दिनेश गोस्वामी** का. असम में एक सड़क दुर्घटना में उनकी मृत्यु हुई. वे विश्वनाथ प्रताप सिंह मंत्रिमंडल में कानून और न्यायमंत्री भी रहे. अस्सी के दशक के शुरू में वे असम में शुरू हुए छात्र आंदोलन में सक्रिय थे और वे असम गण परिषद के संस्थापकों में भी थे.

रिकॉर्डः शताब्दी के सबसे ऊंचे तापमान का. यह **56 डिग्री से.** तापमान राजस्थान के बीकानेर में पाकिस्तान सीमा के पास बिरियावाली गांव में दर्ज किया गया. वहां तैनात भारतीय थल सेना की टुकड़ी ने यह तापमान दर्ज किया.

नियुक्तिः एअर मार्शल एन.सी. सूरी की, वायुसेना अध्यक्ष पद पर. वायुसेना उपाध्यक्ष सूरी 31 जुलाई को यह पदभार संभालेंगे. संयुक्त सेना कमान के पहले पाठ्यक्रम के स्नातक सूरी विभिन्न वरिष्ठ पदो पर खासा अनुभव बटोर चुके हैं.

निधनः कांग्रेसी नेता 91 वर्षीय **उमाशंकर दीक्षित** का. 1984 में उन्होंने राज्यपाल का पद ठुकराकर कांग्रेस कार्यकारिणी की सदस्यता स्वीकार की थी. 1957 और 1962 में उन्होंने जवाहरलाल नेहरू के चुनाव प्रचार का जिम्मा संभाला था, और 1967 तथा 1969 के चुनावों में इंदिरा गांधी के चुनाव प्रचार का.

फांसी की सजाः कुख्यात अपराधी **ऑटो शंकर** उर्फ गौरी शंकर को, चेंगई-अन्ना जिले के सेशन जज ने सुनाई. तमिलनाडु के तिरुवनमियूर में हुए हत्याकांडों का वह मुख्य अभियुक्त था. इस मामले में उसके दो साथियों को भी फांसी की सजा सुनाई गई, जबकि पांच को आजीवन कारावास की.

पेशकशः गंगोत्री की सफाई की, **टाटा तथा बिड़ला** घरानों की ओर से. इंडियन माउंटेनियरिंग फाउंडेशन ने पर्वतारोहण दलों से अपील की है कि वे वहां मलबे की सफाई में मदद करें. सबसे ज्यादा कूड़ा-कचरा हटाने वाले को सर एडमंड हिलेरी की ओर से विशेष ट्रॉफी दी जाएगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब इनके शेयर भी बिकेंगे

सार्वजनिक उपक्रमों के शेयर बेचने की केंद्र सरकार की योजना लागू होकर रहेगी. सो, वित्त मंत्रालय में पूंजी निर्गम नियंत्रक का कार्यालय सार्वजनिक क्षेत्र के शेयरों का मूल्य निर्धारित करने, खासकर मुनाफा तय करने के तरीके सोचने में व्यस्त है ताकि उन्हें सही दाम पर बेचा जा सके. सरकारी कंपनियों के शेयरों पर मुनाफा कुल संपत्ति के औसत मूल्य और प्रति शेयर आय पर निर्भर करेगा. इस बीच सार्वजनिक उपक्रम के लिए बनी स्थायी समिति 'स्कोप' ने कुल 25 बड़ी कंपनियों की पहचान की है जिनके शेयर सरकार बेच सकती है. हालांकि वित्तमंत्री का सुझाव था कि सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के 20 फीसदी शेयर राष्ट्रीयकृत बैंकों के सहयोगी साझा कोषों को बेचने चाहिए, लेकिन 'स्कोप' की दलील है कि 30 से 60 फीसदी तक शेयर आम नागरिकों को बेचे जाएं और बैंक तथा वित्तीय संस्थाएं मध्यस्थ का काम करें.

बिक्री बढ़ाने के इरादे

बंगलूर की टाइटन वाचेज कंपनी ने पिछले पखवाड़े अमेरिकी कंपनी टाइमेक्स इन्कॉर्पोरेटेड से अपने बहुप्रचारित सहयोग के बाद अब खुदरा और थोक बिक्री के केंद्रों को दुरुस्त करने की महत्वाकांक्षी योजना बनाई है. देश भर में कंपनी के 31 बिक्री केंद्र हैं. 250 से 350 रु. मूल्य तक की घड़ियों का भारतीय बाजार फिलहाल करीब 1.2 करोड़ का है जिसके 45 फीसदी से अधिक पर सार्वजनिक उपक्रम एचएमटी का कब्जा है. टाइटन अगले साल या उससे आगे करीब 25 लाख घड़ियां बेच पाने की उम्मीद में है. उसकी 'एक्वेरा' श्रृंखला की घड़ियां 300 से 400 रु. मूल्य तक की हैं. कंपनी की योजना 800 और 900 रु. की महंगी घड़ियां भी बाजार में उतारने की है. साथ ही वह गोताखोरों के लिए विशेष घड़ी भी लाएगी.

उलझन बरकरार

पैराजाइलीन और इथिलीन जैसे पेट्रो-रसायन कच्चे मालों से संबंधित आयात नीतियों में लगातार फेरबदल के प्रभावों को लेकर तमाम दावों और प्रतिदावों के बीच एक सचाई यह है कि इसकी डोर अंबानी घराने के हाथ में ही बंधी है. केंद्रीय सचिवों की एक समिति ने पिछले साल मार्च में सुझाव दिया था कि आयात के मामले में सिर्फ पैराजाइलीन ही नहीं, बल्कि इससे बनने वाली वस्तुओं परिशोधित टेरेफ्थैलिक एसिड (पीटीए) और डाई-मिथाइल टेरेफ्थैलेट (डीएमटी) को भी एक ही नीति के अंतर्गत लाना चाहिए और उन पर आबकारी शुल्क समान रूप से 25 फीसदी लगाया जाना चाहिए. असली मामला यह है कि ठीक-ठीक लागत समझे बिना यह जानना मुश्किल है कि पैराजाइलीन पर आबकारी शुल्क अधिक है या कम.

तेजी के आसार

आसानी से ढोये जा सकने वाले कंप्यूटरों के 50 लाख रु. के बाजार में तेजी के आसार हैं. फिलहाल पार कंप्यूटर्स, होप कंप्यूटर्स और जियोन कंप्यूटर्स इसमें हिस्सेदारी कर रहे हैं. मगर शीघ्र ही दो नए कंप्यूटर और आ रहे हैं. मद्रास की स्टर्लिंग कंप्यूटर्स 20,000 रु. का एक मॉडल ला रही है. उसके बाद यह 30,000 रु. का नोटबुक आकार का कंप्यूटर लाएगी. दिल्ली की 'होप' ने 16,000 रु. का ब्रीफकेस आकार का पीसी कंप्यूटर उतारा है. ईटी ऐंड टी भी मैदान में उतरने की पूरी तैयारी में लग रही है.

उम्मीद बाकी

देश में कंप्यूटर हार्डवेयर उत्पादकों के संघ 'मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नॉलॉजी' के ताजा आंकड़ों से पता चलता है कि 2,000 करोड़ रु. के कारोबार वाले इस उद्योग की प्रगति की दर गिरावट की ओर है. 1988-89 में यह 66 फीसदी पर थी जो पिछले वित्त वर्ष 1990-91 में 24 फीसदी पर आ गई. लेकिन उम्मीद अभी बाकी है. विस्तृत

चार्ट प्रणव दत्त

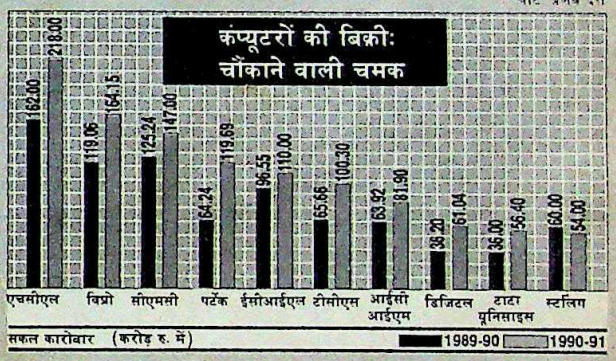

आंकड़े यह दिखाते हैं कि अंतिम तिमाही (जनवरी-मार्च) में उद्योग की जान तब लौट आई जब पूरे वर्ष की बिक्री का 45 फीसदी कारोबार हुआ.

हालांकि, एचसीएल अभी भी अगुआ बनी हुई है (देखें चार्ट) पर इसके कारोबार में 34.5 फीसदी की वृद्धि की कुछ वजह हिसाब-किताब की प्रक्रिया में परिवर्तन भी है. 10 सर्वोच्च कंप्यूटर कंपनियों में सबसे तेज बिक्री पर्टेक (86 फीसदी) ने दर्ज की. इसके बाद डिजिटल इक्विपमेंट (इंडिया) लिमिटेड ने 69 फीसदी दर्ज की. इनके पीछे ईएसपीएल, जेनिथ और ओआरजी ने एक अंकीय प्रगति दर दिखाई जबकि स्टर्लिंग, हिंदीट्रॉन, इस्सेन, ओएमसी और आईडीएम का कारोबार गिरा.

अनूठे सहयोग की तैयारी

उद्योग मंत्रालय ने इंजीनियरिंग उद्योग महासंघ (सीईआई) से ऐसा तकनीकी सूचना केंद्र स्थापित करने को कहा है जो सरकारी तथा निजी क्षेत्र दोनों तरह की कंपनियों की मदद करे और विभिन्न मामलों में अंतरराष्ट्रीय तकनीकी सूचनाएं उपलब्ध कराए. 3 करोड़ की इस परियोजना को सीईआई एक अलग संस्था के रूप में स्थापित करेगी जिसमें यूरोपीय आर्थिक समुदाय भी हिस्सेदार होगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.प्र. सीमेंट निगम

सिर मुंडाते ओले पड़े

कारखाने के निजीकरण का विरोध करते कई मजदूर मारे गए

सभी फोटो: प्रशांत पत्रिपार

मई में जब डालमिया इंडस्ट्रीज लि. ने उत्तर प्रदेश सीमेंट निगम को अपने हाथ में लिया तब सौदा मुनाफे के लिए हुआ था न कि संकट मोल लेने के लिए. इस निगम के अधीन तीन सीमेंट कारखाने हैं—चुर्क, चुनार, और सोनभद्र जिले के डाला में.

डाला में पिछले पखवाड़े पुलिस की गोली से कारखाने के करीब दर्जन भर आंदोलनकारी मजदूर मारे गए और 50 से अधिक घायल हो गए. ये मजदूर कारखाने को निजी हाथों में सौंपे जाने का विरोध कर रहे थे. गोली लगने के बावजूद बच गए मजदूर एस.एन. पांडे कहते हैं, "इस खूनखराबे की कोई जरूरत नहीं थी. हम तो सिर्फ कारखाने को निजी क्षेत्र में सौंपे जाने के खिलाफ जनमत जगाने की कोशिश ही कर रहे थे."

मजदूरों को अंदेशा है कि डालमिया इंडस्ट्रीज इस निगम के 6,000 मजदूरों में से काफी की छंटनी कर देगा. लेकिन नए प्रबंधकों ने किसी मजदूर को न निकालने का वादा किया है. कंपनी के अध्यक्ष संजय डालमिया कहते हैं, "एक बार जब हम मजदूरों को यह समझा पाने में सफल रहेंगे कि किसी को नहीं हटाया जाएगा, तब समस्या खत्म हो जाएगी."

इस कांड ने निजीकरण की राह के रोड़ों को उजागर कर दिया है. लेकिन इस कांड ने निजीकरण से जुड़ी मजदूर समस्या से भी बढ़कर यह तथ्य उजागर किया है कि सार्वजनिक क्षेत्र की यथास्थिति से जुड़ गए निहित स्वार्थों और राजनेताओं-व्यापारियों के गठजोड़ की लड़ाई खतरनाक हो सकती है.

निजीकरण को किसी भी पैमाने पर देखा जाए तो इस सरकारी निगम की बिक्री उचित लगती है. सीमेंट निगम के कारखाने अब तक 155 करोड़ रु. का नुकसान उठा चुके हैं और हर साल इनका घाटा 30 करोड़ रु. बढ़ते जाने का अनुमान था. ये कुछ हद तक आधुनिक कारखाने अपनी 25.6 लाख टन उत्पादन क्षमता का मात्र 40 फीसदी ही उत्पादन करते हैं और एक टन सीमेंट बनाने में 200 किलोवाट बिजली खपत करते हैं जबकि आम तौर पर मात्र 90 किलोवाट बिजली खर्च होती है. और फिर मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने पिछले मार्च में घोषणा की थी कि सार्वजनिक क्षेत्र का कोई भी उद्यम अगर 10 करोड़ रु. सालाना से अधिक का घाटा दे रहा हो तो उसके निजीकरण पर विचार किया जा सकता है.

निगम पर कब्जे से खुश होने के कई कारण भी थे डालमिया के पास. उन्होंने अच्छा सौदा किया था और मात्र 33.45 करोड़ रु. में ही निगम के तीन कारखाने हथिया लिए थे. निगम की संपत्ति करीब 600 करोड़ रु. की थी. और सौदे की शर्तें आश्चर्यजनक रूप से आसान थीं. सहमति पत्र पर दस्तखत के समय मात्र एक करोड़ रु. देने थे. अगले छह महीनों में 4 करोड़ रुपए, और शेष राशि दो वर्षों के अंदर किस्तों में चुकाई जानी है. इनके साथ ही डालमिया ने अनेक रियायतें भी हासिल कर ली थीं. पांच वर्षों तक बिक्री कर से छूट तथा इन कारखानों पर 25 करोड़ रु. की देनदारी को तीन वर्षों के बाद देने की सुविधा. डालमिया उद्योग को कारखाने के 49 फीसदी शेयर मिले परंतु प्रबंधक मंडल के नौ में से पांच सदस्य अपनी पसंद से चुनने की सुविधा के चलते निगम पर उनका ही नियंत्रण हो गया था. थोड़ी कल्पनाशीलता के सहारे निगम को घाटा देने की जगह भारी मुनाफा देने वाला बनाया जा सकता है.

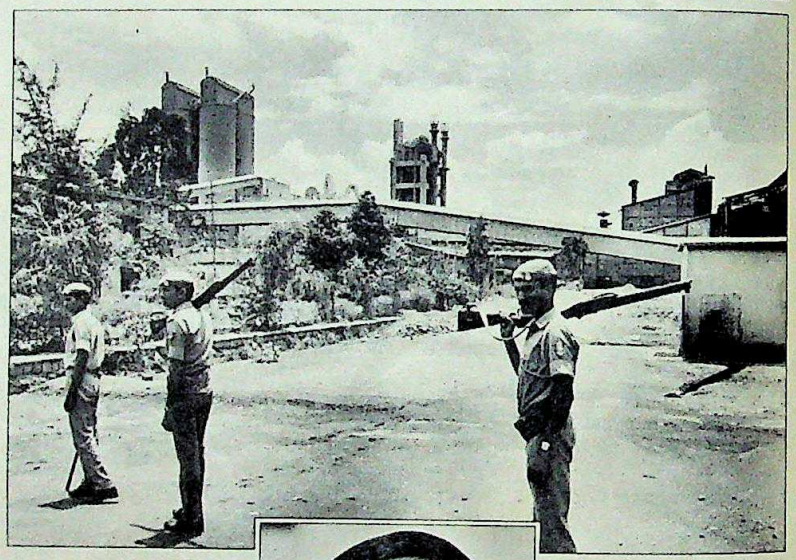

घायल मजदूर (ऊपर) डालमिया (इनसेट); और कारखाना: संकट निजीकरण का

लेकिन कंपनी के भविष्य के बारे में यह आशावादी भविष्यवाणी दोहरी आलोचनाओं से थोड़ी धूमिल पड़ी. पहला हमला तो मजदूर संघों और राजनैतिक दलों द्वारा नए प्रबंधकों और मुख्यमंत्री की आलोचना के रूप में हुआ. दूसरा हमला नए प्रबंधकों ने पुराने प्रबंधकों पर किया. यह गोलीकांड कंपनी को निजी हाथों में सौंपने के मुद्दे पर ही हुआ और मुख्यमंत्री मुलायम सिंह ही व्यापक आलोचना के शिकार हो रहे हैं. जैसे भाजपा नेता और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनारस के पूर्व विधायक श्यामदेव राय चौधरी ने यह कहकर आम मान्यता को ही उजागर किया कि इस सौदे में यादव के निहित स्वार्थ थे और इसीलिए उन्होंने एसीसी और जेके की जगह डालमिया को यह निगम सौंपा. एक प्रमुख मजदूर नेता ने बताया, "सरकार और डालमिया दोनों ही इस सौदे के लिए बेचैन थे क्योंकि खतरा था कि अगली सरकार निजीकरण की योजना ही न रद्द कर दे. इसी कारण डाला, चुनार और चुर्क के कारखाने माटी के मोल दे दिए गए."

स्थानीय पुलिस अधीक्षक के.एन.डी. द्विवेदी कहते हैं कि पुलिस ने आत्मरक्षा में ही गोलियां चलाईं. कारखाने के निकट जब 800 मजदूरों की सभा की तरफ से पत्थरबाजी होने लगी तो 24 पुलिस जवान घायल हो गए. संसद में चंद्रशेखर ने बताया कि यह सौदा छह महीने पहले हुआ था. यह कह कर वे यह जताना चाहते थे कि इसका चुनावों से कोई रिश्ता नहीं है. साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि मजदूर कारखाने में तोड़-फोड़ करने वाले थे, इसकी सूचना भी उनके पास है. लेकिन पुलिस ऐसा नहीं कहती.

लेकिन इन मौतों से डालमिया के खिलाफ गुस्सा और बढ़ ही गया है. चुर्क के मजदूर नेता संदीप दुबे कहते हैं, "हम निजीकरण के खिलाफ नहीं हैं. लेकिन हम यहां हुए निजीकरण की प्रक्रिया के खिलाफ हैं. पूरी जांच से ही इस षडयंत्र का रहस्योद्घाटन होगा."

प्रबंध निदेशक कुमार कहते हैं कि सीमेंट निगम मुख्यतः अनियमितताओं, भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार के चलते ही घाटा दिए जा रहा था. डालमिया के अधिकारियों का मानना है कि यह आंदोलन असल में वे अधिकारी करा रहे हैं जो यहां गड़बड़ियां करके अमीर बन बैठे हैं. सोनभद्र के जिलाधिकारी के.एन. सिंह कहते हैं, "अनेक प्रबंधकों का सीमेंट उद्योग में व्यावसायिक स्वार्थ जुड़ गया है और सरकारी कंपनी के कुप्रबंध के जरिए वे अमीर बन गए हैं."

तर्क चाहे जो चले, यह तय है कि निजीकरण को रद्द नहीं किया जा सकता. डालमिया ने पूरा नियंत्रण कर लिया है. मजदूर भी जान गए हैं कि अब वे बहुत कुछ नहीं कर सकते लेकिन वे मैदान छोड़ने के मूड में नहीं हैं. अब अगर किसी को बहुत फूंक-फूंक कर कदम रखने होंगे तो वे होंगी उत्तर प्रदेश और केंद्र की नई सरकारें जिनके आर्थिक कार्यक्रमों और निजीकरण को शायद प्राथमिकता प्राप्त होगी.

—रमेश मेनन, डाला में

सोने की बिक्री

बेकार बवाल

कर्ज चुकाने का आसान उपाय

सोने की यह बिक्री किसी परिवार के जेवर बिकने जैसी बात तो नहीं थी पर यह पिछले पखवाड़े सुर्खियों में छा गई. सरकार ने बस जब्तशुदा सोने के भंडार में से 20 टन सोना अंतरराष्ट्रीय कीमत पर बेचा और 21.5 करोड़ डॉलर (करीब 430 करोड़ रु.) की बेहद जरूरी नकदी जुटा ली. वित्त मंत्रालय के अधिकारियों का कहना है कि इस रकम से भारी-भरकम 70 अरब डॉलर विदेशी कर्ज की सूद और अल्पकालिक कर्ज की अदायगी की जाएगी. 2,000 करोड़ रु. से कुछ ज्यादा की नकदी के भंडार से जून के अंत तक ही काम चल पाएगा. सो, यह कदम समझदारी भरा ही लगता है. फिर भी राजनैतिक दलों ने इस पर बवाल मचा दिया.

वित्तमंत्री यशवंत सिन्हा ने आश्वासन दिया कि भारतीय रिजर्व बैंक के 332.5 टन सोने के भंडार में हाथ नहीं लगाया गया, सिर्फ जब्तशुदा सोने में से ही कुछ बेचा गया. सोना बेचने का फैसला मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की कमेटी ने यशवंत सिन्हा की अगुआई में प्रधानमंत्री चंद्रशेखर से मौखिक सहमति मिलने के बाद किया.

दरअसल, मामला इतना बड़ा नहीं है. पहली बात तो यही है कि सोना बेचा नहीं गया, बल्कि गिरवी रखा गया है. सोने की बिक्री भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के मार्फत हुई और उसने जूरिच स्थित यूनियन बैंक ऑफ स्विट्जरलैंड से अदला-बदली का सौदा किया. इसका मतलब है कि एसबीआई भविष्य में इस सोने को वापस पा सकता है. यानी फिलहाल वह सोने के नकदी मूल्य का इस्तेमाल कर सकता है और फिर लंदन इंटर बैंक की सूद दर से 6.33 ज्यादा सूद देकर उसे वापस पा सकता है. इस तरह तुरंत विदेशी मुद्रा पाने का यह सबसे सस्ता उपाय है.

रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर सी. रंगराजन कहते हैं, "सरकार से रिजर्व बैंक को यह अधिकार प्राप्त है कि वह अपने सोने के भंडार का 15 प्रतिशत देश के बाहर गिरवी रख सकती है." करीब 100 टन पकड़ा गया सोना फिलहाल राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) और आबकारी विभाग की तिजोरियों में बंद है, करीब 175 टन तस्करी का सोना हर साल भारत में आता है और इसका 5 फीसदी से भी कम पकड़ा जाता है.

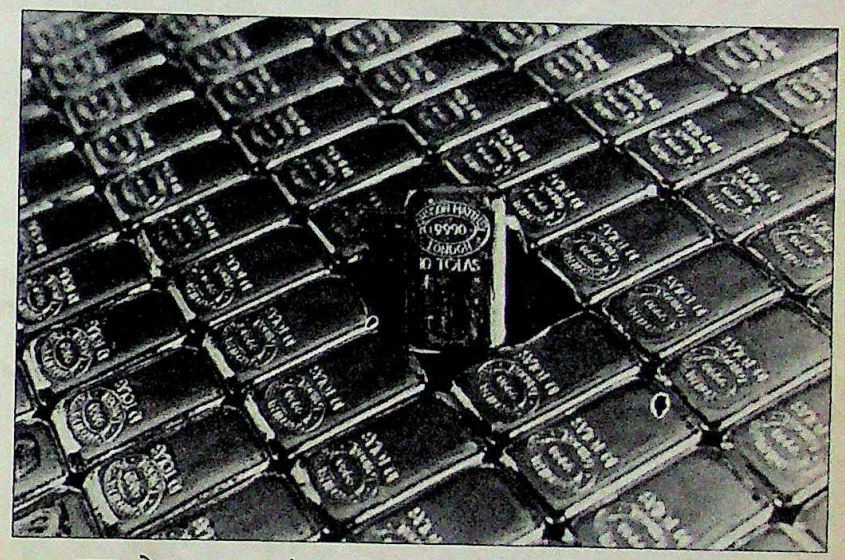

जब्त सोना: भरापूरा भंडार

डीआरआई में अधिकारियों के मुताबिक पकड़े जाने और जब्त होने का खतरा तस्करों को डिगा नहीं सकता. मसलन, वे कहते हैं कि 100 टन सोना अब भारत आ रहा है जो खाड़ी युद्ध की वजह से दुबई की राह बंद होने से, सिंगापुर, मालदीव और लक्षद्वीप में बीमा राशि के बतौर जमा था. पुलिस ने मई तक 2.4 टन पकड़ा है. और चूंकि देश में सोने की कीमत अंतरराष्ट्रीय कीमत के मुकाबले 40 फीसदी ज्यादा है इसलिए तस्करी जारी रहेगी. इन सबके मद्देनजर सरकार भंडार में इजाफे के लिए यही आसान रास्ता पसंद करती है. इससे कर्ज अदायगी तो हो ही जाती है.

—अनिरुद्ध मित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

बेचैनी रही

पाबंदियों के कारण मंदी

वित्तीय जगत की पूजी और उसका ध्यान रिजर्व बैंक की पाबंदियों की ओर लगे रहने से पिछले पखवाड़े 6 जून को बंद बाजार में जान नहीं थी. अधिकाश शेयरों के सौदे बहुत ही कम हुए. मुंबई शेयर बाजार का 30 शेयरों वाला संवेदनशील सूचकांक 12 अंक गिरकर इस पखवाड़े 1284.81 पर बंद हुआ. इकॉनॉमिक टाइम्स का मुबई का शेयर बाजार मूल्य सूचकांक भी थोड़ी गिरावट के बाद 743.9 पर बंद हुआ.

प्रमुख शेयरों में एसीसी 15 रु. गिरकर 2,600 पर रुका. स्टैंडर्ड मिल्स 95 रु. से 88.50 रु. पर आ गया. टेल्को, बजाज ऑटो और हिंडाल्को ऐसे दूसरे प्रमुख शेयर हैं जो कुछ नुकसान के साथ बंद हुए. ऐसा तेजड़ियों से समर्थन न मिलने के कारण हुआ. नकद खरीद वाले शेयरों का कारोबार भी काफी कम हुआ. वीडियोकॉन इंटरनेशनल 15 रु. गिरकर

वार्ट बी.के. शर्मा

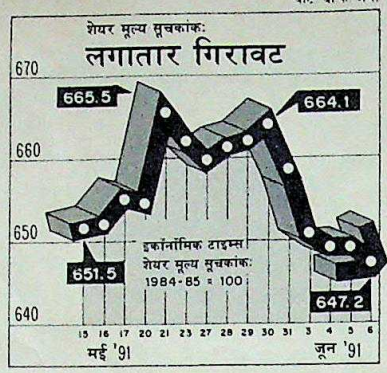

200 रु. पर आया. लेकिन बाजार के बंद होने के बाद बाहर हुए सौदों में कुछ प्रमुख शेयर चढ़े. रिलायंस अधिकृत सौदे के समय तो 143 पर रुका था पर बाद में 147 तक गया. इसी प्रकार टिस्को भी 3 रु. चढ़कर 178 रु. पर पहुंचा.

पखवाड़े के पहले भाग में तेजड़िए नए कारोबार से बचते रहे. बाजार में शुरू से यह माना जा रहा था कि कुछ तेजड़िए बढ़-चढ़कर बोली लगा रहे हैं लेकिन बाजार के अधिकांश जानकार मानते हैं कि राजनैतिक और आर्थिक उठापटक के बावजूद बाजार का रुख दृढ़ता वाला ही है. बाजार के लोग मान रहे हैं कि कांग्रेस ही सरकार बनाएगी और अपने नेता का चुनाव बिना किसी बड़े विवाद के कर लेगी. बाजार की मजबूती इसी में है. उनका मानना है कि स्थायी सरकार बनी तो तेज आर्थिक विकास के लिए कदम उठाएगी. अन्य लोगों को यह अतिशय आशावादिता दिखती है क्योंकि इतनी अनिश्चितता कभी नहीं थी.

इस बीच अमेरिकी क्रेडिट रेटिंग एजेंसी स्टैंडर्ड ऐंड पुअर्स ने भारत की रेटिंग और घटा दी है. पर बाजार में इतना कम कारोबार हो रहा था कि उसमें इस खबर का दुष्प्रभाव नहीं पड़ा. लेकिन अधिक समय नहीं बीता जब भारी-भरकम अमेरिकी ऋण कंपनी मेरिल लिंच इंक की रिपोर्ट का, जिसमें भारतीय अर्थव्यवस्था और खासकर वित्तीय स्थिति पर खराब टिप्पणी की गई थी, शेयर बाजार पर बहुत बुरा असर हुआ. तब मुंबई शेयर बाजार का सूचकांक अपनी रिकार्ड ऊंचाई से गिरकर 1000 के भी नीचे आ गया था. सो, अब बाजार ऐसी रिपोर्टों की परवाह नहीं करता.

हां, पखवाड़े के आखिर में सरकार द्वारा सोना बेचे जाने की खबर ने जरूर शेयर बाजार में हड़कंप मचाया. एक ओर आरोप-प्रत्यारोप तथा खंडन चलते रहे और दूसरी ओर बाजार में बेचैनी रही.

जमा स्टॉक

	1991 ऊंचा	1991 नीचा	बंद 6.6.91	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	162.50	109.00	151.00	3.00 –
एसो.सीमेंट	2780.00	1300.00	2575.00	65.00 +
एशियन पेंट्स	267.50	215.00	236.25	7.50 –
एटलस कोप्को	89.00	42.00	72.00	8.00 –
बजाज ऑटो	680.00	500.00	595.00	31.25 +
बड़ौदा रेयॉन	630.00	400.00	475.00	55.00 –
बाटा इंडिया	93.00	72.00	79.00	3.00 +
बल्लारपुर	309.00	228.00	271.00	34.00 –
बिरला जूट	287.00	168.00	269.00	6.00 –
ब्रूक प्लास्ट	130.00	40.00	120.00	–
बॉबे डाइंग	245.00	150.00	210.00	10.00 –
ब्रिटा.इंडिया	152.00	112.00	141.00	1.00 +
बूक बाइंड	152.00	116.00	139.00	1.00 –
कैडबरी इंडिया	187.50	132.50	158.00	4.50 –
कैस्ट्रोल इंडिया	301.25	162.50	286.25	11.25 –
सेंचुरी टेक्सटाइल्स	5340.00	3625.00	5180.00	160.00 +
कोलगेट पामो.	338.75	250.00	307.50	11.25 –
सायनामिड.	142.50	76.25	128.75	6.25 –
डीसीएम	300.00	123.00	211.50	21.50 –
डनलप	61.00	46.50	54.50	–
ईआई होटल्स	52.00	36.25	37.00	3.00 –
एस्कार्ट्स	172.00	127.00	152.00	7.00 –
फिनो. केबल्स	260.00	140.00	211.25	2.50 –
गरवारे नाइलोन	43.75	30.00	30.00	2.00 –
जी.ई. शिपिंग	47.50	25.00	41.50	2.50 +
गुज.स्टेट फर्टि.	217.50	150.00	197.50	11.25 –
ग्रेसिम इंडिया	261.00	167.50	244.00	3.50 –
गुज.अंबुजा	180.50	90.00	164.00	4.50 –
हिंदु.एल्यू.	277.50	200.00	261.25	4.25 +
हिंदु.सीबा	1300.00	650.00	1190.00	30.00 +
हिंदुस्तान लीवर	180.00	140.00	158.00	–
हिंदुस्तान मोटर्स	25.75	18.80	21.70	1.30 –
हेक्स्ट	3650.00	2500.00	2800.00	50.00 +
आईसीआई	57.00	30.00	54.00	4.50 +
इंडियन आर्गेनिक	47.50	30.00	38.00	1.25 –
इंडियन रेयॉन	137.50	104.50	124.00	11.50 +
इंगरसॉल-रैंड	385.00	240.00	310.00	10.00 –
आईटीसी	170.00	99.00	166.00	4.00 +
जे.के.सिंथेटिक्स	42.00	27.00	32.00	3.50 –
काइनेटिक इंजी.	190.00	150.00	185.00	15.00 –
किर्लो. क्युमिंस	156.25	95.00	131.00	2.00 –
केएसबी पंप्स	225.00	160.00	195.00	10.00 –
लार्सन-टुबो	140.00	90.00	110.00	2.00 +
लिप्टन	114.00	57.50	98.00	5.50 –
लोहिया-मशीन्स	37.50	21.00	23.00	2.50 –
मदुरा कोट्स	260.00	175.00	188.00	1.00 –
महिंद्रा-महिंद्रा	82.50	60.00	71.25	5.00 –
मास्टरगेयर्स	38.00	20.00	36.00	1.75 +
मोटर इंडस्ट्रीज	1225.00	675.00	1195.00	15.00 –
मुकुंद लिमि.	215.00	155.00	161.25	18.75 –
नेशनल आर्गे.	1400.00	925.00	1190.00	100.00 –
नेस्ले इंडिया	152.50	111.25	138.00	3.25 –
निरलॉन	25.00	16.00	22.50	1.00 –
ओरके सिल्क मि.	34.25	17.50	25.75	3.50 –
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	95.00	53.00	71.00	9.00 –
प्रीमियर ऑटो	57.50	30.00	46.50	6.50 –
रेमंड	180.00	110.00	162.00	6.00 –
रिलायंस इंडस्ट्रीज	163.75	91.25	141.50	9.50 –
सीमेंस इंडिया	151.00	112.50	132.25	17.50 –
शॉ वैलेस	122.00	77.00	119.00	2.00 +
श्रीराम फाइबर्स	44.00	33.00	42.75	–
एसकेएफ बेय.	2625.00	1650.00	2425.00	250.00 –
स्पिक	65.00	33.00	57.50	1.50 +
टाटा स्टील	196.00	170.00	173.50	19.50 –
टेल्को	240.00	142.50	222.50	7.50 –
टाइटन वाचेस	93.75	58.00	82.50	1.50 –
वाम ऑर्गेनिक	170.00	102.50	156.00	5.25 –
वीडियोकॉन	285.00	180.00	205.00	30.00 –
वोल्टास	125.00	92.50	120.00	1.25 –
विमको	26.00	16.00	24.00	0.50 +

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	15.8778	15.7140
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	169.5924	169.0431
बहरीन	दीनार	1	–	–
बांग्लादेश	टका	100	60.2999	59.4781
कनाडा	डालर	1	18.3963	18.2155
डेनमार्क	क्रोना	1	3.1338	3.1021
मिस्र	पौंड	1	6.4449	6.3746
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.6036	3.5149
जर्मनी	मार्क	1	12.1951	12.8906
हांगकांग	डालर	1	2.7248	2.6985
इंडोनेशिया	रुपिया	100	1.0886	1.0695
ईरान	रियाल	100	–	–
इटली	लीरा	100	1.6261	1.6059
जापान	येन	100	15.3610	14.9710
केन्या	शिलिंग	1	0.7641	0.7559
कुवैत	दीनार	1	–	–
मलेशिया	डालर	1	7.6124	7.5381
मारीशस	रुपया	1	1.3338	1.3048
नेपाल	रुपया	1	0.7356	0.7262
हालैंड	गिल्डर	1	10.6773	10.5663
पाकिस्तान	रुपया	1	0.9163	0.9038
सिंगापुर	डालर	1	11.8731	11.7550
स्पेन	पेसो	1	0.1946	0.1926
श्रीलंका	रुपया	1	0.5140	0.5055
स्वीडन	क्रोना	1	3.3468	3.3127
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	14.0218	13.8509
तंजानिया	शिलिंग	1	0.1013	0.0994
थाईलैंड	बहत्त	100	83.2997	80.9179
ब्रिटेन	पौंड	1	35.4421	35.1603
अमेरिका	डालर	1	21.0748	20.8768
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	–	–
सोवियत संघ	रूबल	1	22.7870	22.7847

स्रोत: बैंक ऑफ टोक्यो, नई दिल्ली, 7.6.91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्न से वास्तविकता – सिर्फ एक कदम

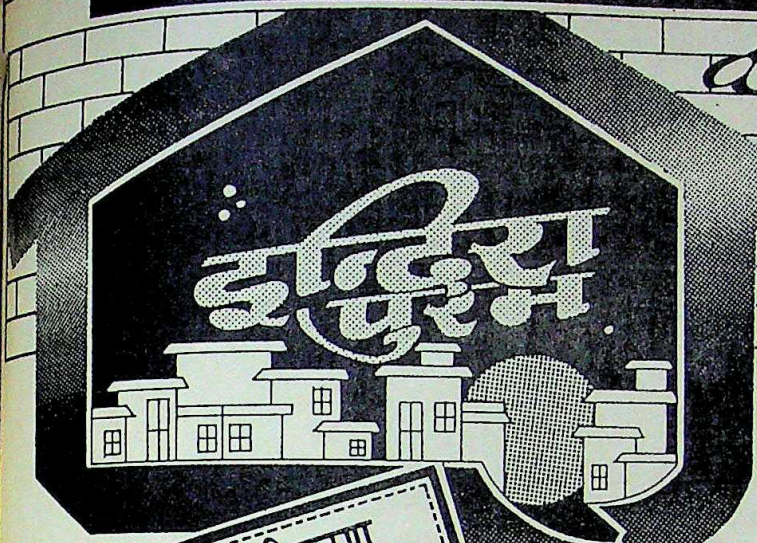

दिल्ली मेट्रोपोलिटिन क्षेत्र के अन्तर्गत गाजियाबाद विकास प्राधिकरण प्रस्तुत करते हैं 6000 विभिन्न श्रेणियों के भवनों का पंजीकरण किराया क्रय पद्धति के अन्तर्गत गाजियाबाद में।

पंजीकरण 25.6.91 तक

आकर्षण:

- इन्द्रापुरम् में, पालिका बाजार/क्नाट प्लेस की भांति एक और प्रतिष्ठान का निर्माण
- शानदार फ्लोरिंग, स्पारटेक टाइल्स/मारबल टाइल्स एवम् अनेक आधुनिक सुविधाएं
- राष्ट्रीय राज्य मार्ग 24 पर स्थित
- वैशाली एवम् कौशाम्बी आवासीय योजना के निकट
- चारों तरफ हरियाली एवम् शुद्ध वातावरण
- कब्जा तीन वर्षों में

भुगतान :

10% धनराशि पंजीकरण के समय तथा 10% धनराशि आरक्षण के पश्चात तथा शेष 80% धनराशि ५ से ७ वर्षों के बीच तिमाही किस्तों में देय होगी।

केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार, सरकारी कर्मचारी, कम्पनियों के कर्मचारी के लिए 25% का आरक्षण

भवनों का विवरण:

क्रम सं.	भवनों की श्रेणी	भवनों की अनुमानित सं.	कवर्ड ऐरिया (वर्ग मी.)	भवनों का अनुमानित मूल्य रु.	पंजीकरण धनराशि + फी. रु. 20/-	विवरण
1.	बसेरा ई.डब्लू.एस.	3000	21.00	भूतल 58,000/- प्र. तल दि. तल 52,000/- तृ. तल 54,000/-	5,820/- 5,220/- 5,420/-	एक कमरा, खाना पकाने का स्थान, बरामदा एवम् टायलेट
2.	आश्रय एल.आई.जी.	1150	56.00	भूतल 2,62,000/- प्र. तल दि. तल 2,23,000/- तृ. तल 2,36,000/-	26,220/- 22,320/- 23,620/-	ड्राईंग रूम, लाबी, एक कमरा, टायलेट, डब्लू सी लाबी के साथ, किचन
3.	अनुकम्पा एम.आई.जी.	896	81.00	भूतल 3,35,000/- प्र. तल दि. तल 3,20,000/- तृ. तल 3,25,000/-	33,520/- 32,020/- 32,520/-	ड्राईंग/डाइनिंग, दो कमरे, टायलेट के साथ डब्लू सी, किचन कोर्ट यार्ड, एवम् बालकोनी
4.	आकांक्षा (I) मिनी एम.आई.जी.	576	79.30	भूतल 4,10,000/- प्र. तल दि. तल 3,25,000/- तृ. तल 3,35,000/-	41,020/- 32,520/- 33,520/-	भू. तल एक ड्राईंग डाइनिंग, दो कमरे, दो टायलेट किचन, दो बैठक प्र. तल दि. तल तृ. तल एक ड्राईंग डाइनिंग, दो कमरे, दो टायलेट, किचन, एवम् बालकोनी
5.	आकांक्षा (II) एम.आई.जी.	808	भू. तल 111.00 प्र. तल 101.00 दि. तल 90.00 तृ. तल 90.00	भू. तल 5,00,000/- प्र. तल 4,25,000/- दि. तल 4,00,000/- तृ. तल 4,10,000/-	50,020/- 42,520/- 40,020/- 41,020/-	भू. तल, एक ड्राइंग कम डाइनिंग, दो कमरे, दो टायलेट, किचन, दो बैठक, बरामदा, एवम गैराज प्र. तल एक ड्राइंग कम डाइनिंग, दो कमरे, दो टायलेट बरामदा, दो मिट-आउट, किचन एवम् लांज दि. तल/तृ " " " एवम् टेरस

ध्यान दें:
केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार, कारपोरेशन्स कोआपरेटिव सोसाइटी, बैंकर्स एवम् अर्ध-सरकारी संस्थान गाजियाबाद विकास प्राधिकरण विभिन्न प्रकार के इन्दिरापुरम आवासीय योजना में 15 मंजिलों बहुखण्डीय भवनों को बना रहा है। उक्त योजना में जो भी संस्थायें, पूरी-पूरी मंजिल क्रय करना चाहे तो उन्हें वरीयता प्रदान की जायेगी! विस्तृत जानकारी हेतु कृपया त्रिभुवन सिंह, नगर नियोजक एवम् वास्तुकार, तथा उषा कान्त गुप्ता, मुख्य लेखाधिकारी गा. वि. प्रा. से सम्पर्क कर सकते हैं।

आर.बी. मौर्य
सचिव

प्रभु नाथ मिश्र
उपाध्यक्ष

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण

विकास पथ, गाजियाबाद (उ.प्र.)

एक सुन्दर शहर–हमारा सकल्प

पंजीकरण पुस्तिका ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स की निम्नलिखित शाखाओं से रु. 25/- का नकद भुगतान करके प्राप्त की जा सकती है। तथा डाक द्वारा रु. 35/- का मनीआर्डर भेजकर, ओरियण्टल बैंक ऑफ कामर्स, बी 193 राहुल पैलेस, लोहिया नगर, गाज़ियाबाद से मंगाई जा सकती है।

ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स

गाज़ियाबाद: बी-193/- लोहिया नगर (राहुल पैलेस), नई दिल्ली: 30-33 प्रथम तल • कनाट प्लेस, प्रिया सिनेमा काम्प्लैक्स • प्रथम तल, वसन्त लोक, दिल्ली: दरियागंज, नेताजी, सुभाष मार्ग • एफ 6, 7 विजय चौक, लक्ष्मी नगर, बॉम्बे: 1, डा. बी.बी. गाँधी मार्ग, फोर्ट, मद्रास: 769 अन्नसलाई, मांउट रोड़, कलकत्ता: 25 थापर हाउस, ब्रेबोर्न रोड., अमृतसर: सीविल लाइन, क्वीन्स रोड़, लुधियाना: चौड़ा बाजार, पटियाला: दी माल, चण्डीगढ़: सैक्टर-17 बी, मेरठ: सदर बाजार, लखनऊ: 94 महात्मा गाँधी मार्ग, हजरत गंज, कानपुर: दी माल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपाल

चुनौतियों से दो-चार

कोइराला सरकार के लिए राह आसान नहीं

पिछले पखवाड़े जब गिरिजा प्रसाद कोइराला ने नेपाल के प्रधानमंत्री पद की शपथ ली तो उन्हें राजीव गांधी का वह मशहूर बयान याद आ गया कि "जनता की अपेक्षाएं डरा देने वाली हैं." हिमालय में बसे इस छोटे-से देश में अंततः लोकतंत्र की स्थापना हो ही गई. परंतु कोइराला के सामने जबरदस्त चुनौतियां हैं. खस्ताहाल अर्थव्यवस्था में फिर से नई जान फूंकनी है. चढ़ती कीमतों पर रोक लगाने के साथ-साथ कानून व व्यवस्था की स्थिति भी बहाल करनी है. और सबसे बड़ा काम है लोकतंत्र की जड़ों को फैलाने और मजबूत करने का.

हर जगह लोगों के धैर्य का बांध टूटता दिख रहा है. नेपाल के लोग लोकतंत्र इसलिए चाहते हैं कि अपने सपनों को सच कर सकें. लेकिन अचानक मिली आजादी ने कुछ समस्याएं भी खड़ी की. प्रशासन सुस्त है और असल मुद्दे ताक पर रख दिए गए हैं. इन सबकी कीमत आम आदमी को चुकानी पड़ रही है. जरूरी चीजों की कीमतें 30 से 40 फीसदी तक बढ़ गई हैं. काठमांडो का टैक्सी ड्राइवर बिनोद बुदाथोकी परेशान है कि "अगर हमें खाना ही नसीब नहीं हो तो आजादी का क्या फायदा?"

32 साल बाद हुए चुनाव के नतीजे जब पिछले महीने आने लगे तो नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी (संयुक्त मार्क्सवादी-लेनिनवादी) उभरकर आगे आ गई. उसने 205 सदस्यों वाली प्रतिनिधि सभा की 69 सीटें जीतीं. नेपाली कांग्रेस ने जैसे-तैसे 110 सीटें जीतकर बहुमत पाया.

वामपंथियों की इस अप्रत्याशित कामयाबी से हतप्रभ नेपाली कांग्रेस ने तय किया कि विपक्ष से टक्कर लेने में कोइराला ही सबसे सक्षम रहेंगे. लेकिन फिलहाल ज्यादातर लोगों के मन में यही सवाल खलबला रहा है कि क्या नेपाली कांग्रेस असरदार ढंग से सरकार चला सकेगी? या यह कम्युनिस्टों से निबटने में ही फंसी रहेगी. कम्युनिस्टों की नजर अगले चुनाव पर है. उन्हें उम्मीद है कि

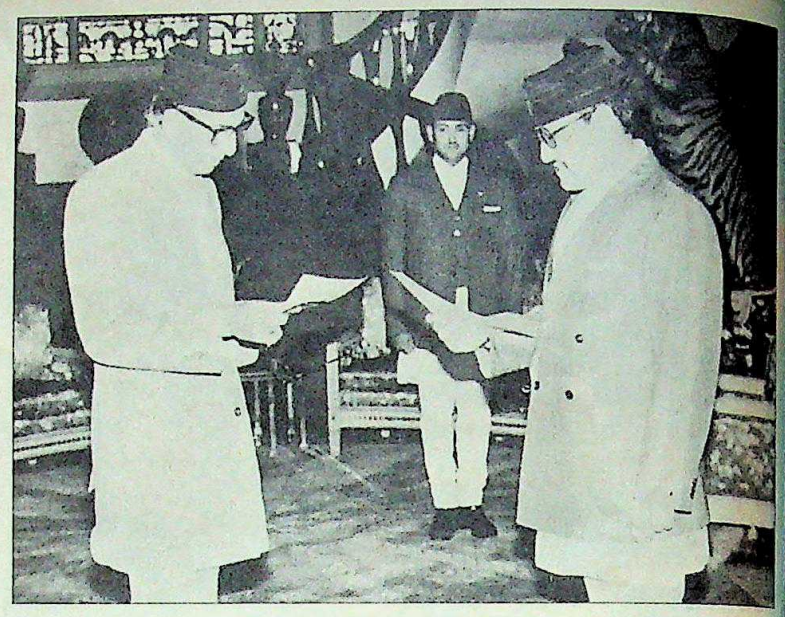

जनता का धैर्य टूटता दिख रहा है. नेपाल के लोग लोकतंत्र इसलिए चाहते हैं कि अपने सपने सच कर सकें

शपथ लेते कोइराला (ऊपर); मदन भंडारी: उभरती दोदलीय व्यवस्था

शरद सक्सेना

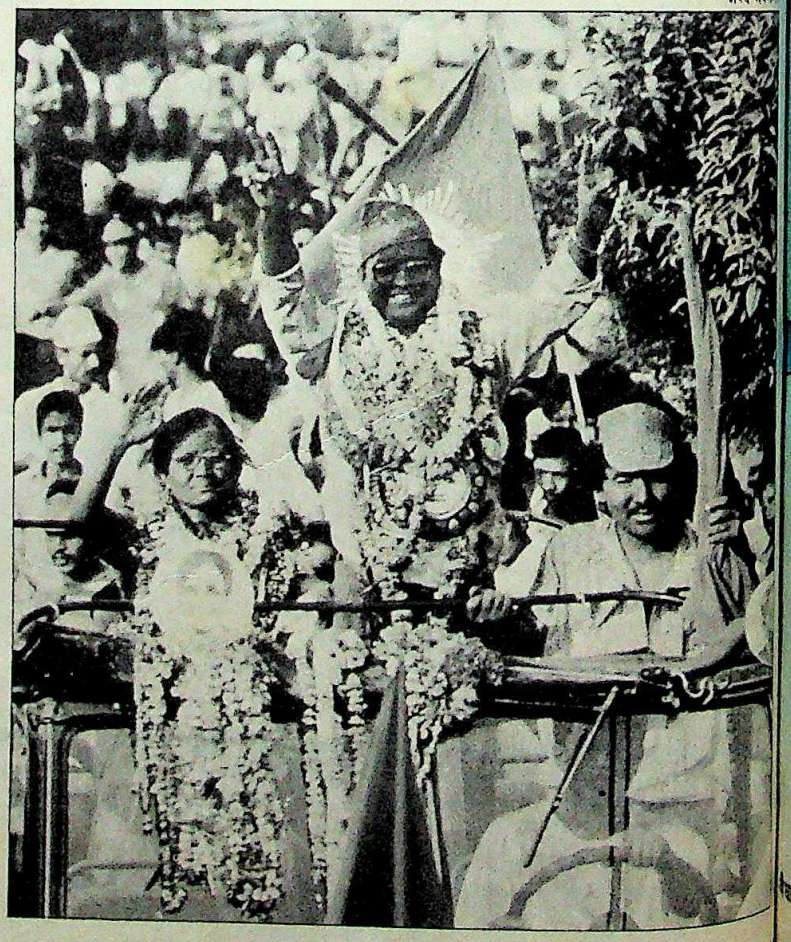

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म्यूज़िक टुडे

की नई पेशकश

सी 91016
महाराजापुरम संथानम *(गायन)*
संकरी समकुरु ; राम नीनू नामिन्ना ; हिमगिरि तनैये/पदसनति मुनिजना : एहि अन्नपूर्णे ; शनमुखम भजः

सी 91015
एम बालमुरली कृष्ण *(गायन)*
नीदैया रादा ; वेगमय
बृहदीस्वरा : ओंकारा ; तिल्लाना

ए 91001
बिस्मिल्लाह ख़ान *(शहनाई)*
राग रागेश्वरी/राग शिवरंजनी

ए 91008
हरिप्रसाद चौरसिया *(बांसुरी)*
राग ललित/राग भूपाली

MAESTRO'S CH

हिन्दुस्तानी एवम् कर्नाटकीय स

पहली बार.... भारतीय संगीत के चोटी के उस्तादों के स्वर में हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के खज़ाने में से उन्हीं की रूचि के रागों का बेहतरीन गुलदस्ता. हर संगीतकार की अपनी पहचान की महक वाले इन रागों और कृतियों का चुनाव उन्होंने स्वयं किया है. यही कारण है कि डिजिटल पद्धति से आपके लिए खास तौर से रिकार्ड किए गए ये कैसेट आपको अनूठी संगीत लहरियों में झुला कर मस्त कर देंगे.

उस्तादों की पसंद – आपके लिए संगीत का ऐसा खजाना जो भारतीय संगीत विरासत के मौजूदा प्रतिनिधियों की महारत का आइना है. चुनींदा दुकानों में उपलब्ध 17 कैसेटों का अनूठा सेट डाक या कूरियर सेवा के रास्ते आपके घर के दरवाज़े पर उपलब्ध.

ए 91009
राम नारायण *(सारंगी)*
राग मारवा/मिश्र देस और मिश्र भैरवी

ए 91005
गंगूबाई हंगल *(गायन)*
राग बिहाग/राग बागेश्री

सी 91017
टी एन कृष्णन *(वायलिन)*
महा गणपतिम ; मारि वेरे ; रघुवमसा सुधा/ सारसाक्षा ; पारुलन्ना माता ; रमणै तरुवय

सी 91014
वी दुरैस्वामी आयंगर *(वीणा)*
वैंकटासैल विहार ; चिंतैया मकोरे घन रागमलिका तानम ; तिल्लाना

MUSIC TODAY

इंडिया टुडे प्रस्तुति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

91001
ख़ान (शहनाई)
ी/राग शिवरंजनी

ए 91003
रवि शंकर (सितार)
राग आसा भैरव
दोनी कान्हरा और मिश्र गारा धुन

ए 91004
भीमसेन जोशी (गायन)
राग रामकली/राग शुद्ध कल्याण

ए 91002
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
राग शुक्ल बिलावल/राग रईसा कान्हरा और राग आडंबरी केदार

ए 91006
किशोरी अमोनकर (गायन)
राग अहीर भैरव/राग संपूर्ण मालकौस

ए 91007
पंडित जसराज (गायन)
राग बैरागी भैरव/राग दरबारी कान्हरा

ए 91010
शिव कुमार शर्मा (संतूर)
राग भूपाल तोड़ी/राग कीरवाणी

CHOICE

कर्नाटकीय संगीत

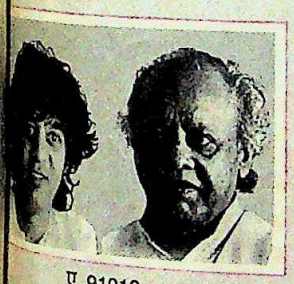

ए 91013
ा रक्खा और ज़ाकिर हुसैन (तबला)
मत्त ताल/जय ताल और पश्तो

ए 91012
असद अली ख़ान (रुद्र वीणा)
राग आसावरी/राग मालकौस

ए 91011
ज़हीरुद्दीन और वसीफ़ुद्दीन डागर (ध्रुपद)
राग ललित/राग कामबोझी

014
ायंगर (वीणा)
चितैया मक
नम; तिल

प्रति कैसेट 48 रु. (कर सहित). 1 से 4 कैसेट के आर्डर पर पैकिंग और वितरण शुल्क के रूप में 10 रु. अतिरिक्त. 5 या अधिक कैसेट के आर्डर पर पैकिंग और वितरण शुल्क नहीं लगेगा.

कृपया ध्यान दें

- दिल्ली से बाहर के चैकों पर 10 रु. अधिक जोड़ें.
- मुंबई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली से भेजे गए चैक/ड्राफ्ट का एम आई सी आर होना ज़रूरी है.
- पूरी पूरी कीमत मिलने पर ही रजिस्टर्ड डाक या कूरियर से कैसेट भेजे जाएंगे.
- कृपया आर्डर के बाद डिलीवरी के लिए कम से कम 3-4 सप्ताह तक प्रतीक्षा करें.
- उपहार भेजने के लिए संलग्न आर्डर-फार्म का प्रयोग करें.
- अपने चैक/ड्राफ्ट और अन्य भुगतान 'म्यूजिक टुडे' के नाम पर इस पते पर भेजें — म्यूजिक टुडे, पो बा. 29, नई दिल्ली- 110001.
- उपरोक्त आकार और कीमतें केवल भारत में लागू होंगी.
- मोड़े हुआ आर्डर फार्म आप तक न पहुँचे तो कृपया सादे कागज़ पर अपना नाम, पता लिखकर अपने भुगतान के साथ इस पते पर भेजें — म्यूजिक टुडे, पो बा 29, नई दिल्ली- 110001

चुनींदा दुकानों मे भी उपलब्ध

मेल-आर्डर फार्म

कोड सं.	कैसेटों की संख्या
ए 91001	_____
ए 91002	_____
ए 91003	_____
ए 91004	_____
ए 91005	_____
ए 91006	_____
ए 91007	_____
ए 91008	_____
ए 91009	_____
ए 91010	_____
ए 91011	_____
ए 91012	_____
ए 91013	_____
सी 91014	_____
सी 91015	_____
सी 91016	_____
सी 91017	_____

हाँ, मैं 'म्यूज़िक टुडे' के कैसेट 48 रु. प्रति कैसेट की दर से खरीदना चाहता/चाहती हूँ. (कृपया 1 से 4 कैसेट तक के आर्डर पर पैकिंग और वितरण शुल्क के लिए 10 रु. अतिरिक्त भेजें). मुझे ये कैसेट

अपने लिए ☐ उपहार देने के लिए ☐

चाहिए. विवरण नीचे है.

इसके लिए 'म्यूजिक टुडे' के नाम पर रु. _____ का क्रास किया हुआ चेक/डिमांड ड्राफ्ट संलग्न है (दिल्ली से बाहर वाले चैक पर 10 रु. अतिरिक्त जोड़ें)

कुल देय राशि रु. _____

मेरा नाम _____

पता _____

_____ पिन _____ फोन _____

उपहार पाने वाले का नाम _____

पता _____

_____ पिन _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

SONY

अब नए वी एच एस वीडियो कैसेट रिकॉर्डर्स में सोनी आप के लिए लेकर आए हैं एक नई अनुपम सुविधा: ड्यूअल मोड शटल रिंग। ताकि वीडियो चलाना अत्यन्त सरल हो जाए। अलग-अलग बटन दबाने का अब झंझट ही नहीं, केवल सोनी के नए शटल रिंग को घुमाएं और टेप को मनचाही स्थिति में ले आएं: प्ले, फॉरवर्ड या रिवर्स धीमी स्पीड, सामान्य स्पीड,

डबल स्पीड, क्यू/रिव्यू, एफ़ आर पिक्चर सर्च... आश्चर्यजनक! जी हां लेकिन साथ ही उतना सरल भी! यही नहीं, सोनी के इन दो वी सी आर में ऐसी और भी अनेक नवीनतम सुविधाएं हैं, जिन्हें आपको सोनी जैसी विख्यात कम्पनी से उम्मीद रहती है। इसलिए आज ही अपने लिए ये वीसीआर ले आएं और स्वयं ही देख लें कि हर कोई सोनी वीएचएस का इतना दीवाना क्यों है।

VHS

नए आधुनिकतम ''ड्यूअल मोड शटल'' रिंग के साथ

SLV-X 50

●2-सिस्टम (PAL/MESECAM) ●एक सेकेंड से भी कम समय में स्क्रीन पर पिक्चर के लिए 'सुपर ऐक्सेस मैकेनिज़म' ●साफ़ स्टिल और स्लो मोशन के लिए DA Pro 4 ●HQ ●यूनी कमांडर (SLV-X 50 और ब्लैक ट्रीनीट्रॉन दोनों को कंट्रोल करता है) ● 1 माह/ 8 इवन्ट टाइमर ●ऑटो मेनू ●डिजिटल ऑटो ट्रैकिंग ● FR पिक्चर सर्च ●हाई स्पीड रिवाइंड ●ऑटो हेड क्लीनर ●ऑटो वोल्ट

SLV-X 30

●2-सिस्टम (PAL/MESECAM) ●ड्यूअल मोड शटल रिंग ●सुपर ऐक्सेस मैकेनिज़म और हाई स्पीड रिवाइंड ●पिक्चर क्वालिटी में सुधार के लिए टर्बो पिक्चर ●डिजिटल ऑटो ट्रैकिंग ●ऑटो मेनू ● 1 माह/ 8 इवन्ट टाइमर ● स्टिल और स्लो मोशन ●FR पिक्चर सर्च ●ऑटो हेड क्लीनर ●ऑटो वोल्ट ● HQ ●यूनी कमांडर (SLV-X30 और ब्लैक ट्रीनीट्रॉन, दोनों को कंट्रोल करें)

VHS वीडियो कैसेट टेप.
नए और बेहतर हाई रिज़ोल्यूशन वाले ''वाई वैक्स'' टेप
E-180V 180 मिनट की अवधि
E-120V 120 मिनट की अवधि

SAY YES TO SONY VHS

SONY SERVICE

भारत में सोनी अधिकृत सर्विस केन्द्र: ओलिम्पिया सर्विस सेंटर 55 -ए, सिद्धार्थ चैम्बर्स, आज़ाद अपार्टमेंट्स के बगल में, ओल्ड सराय, नई दिल्ली-110016 फोन: 6864947 ● ओलिम्पिया सर्विस सेंटर, ओलिम्पिया चैम्बर्स, ग्राउंड फ्लोर, एस-2, 21 पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016 फोन: 295101 ● कमाल सर्विस सेंटर, 8- सी, मिडलटन स्ट्रीट, कलकत्ता-700071, फोन-296601, 297545 ● स्टीरियो विज़न, 6-8-1 रोड इंडिया सिल्क हाउस के बगल में, मद्रास 600002 फोन- 835444,835489 ● टैलीविडियो सर्विसेज 108, ई और एफ, शाहाजाद बिल्डिंग्स, जे. सी. रोड, बंगलौर-560002 फोन-220164 ● मधुर इलेक्ट्रॉनिक्स 5-8-602 दुकान नं. 8, मुबारक बाज़ार, आबिद रोड, हैदराबाद- 500029 फोन- 233131 ● बायोनिक्स वारियर बिल्डिंग, एम. जी. रोड इर्नाकुलम, कोचिन- 682016 फोन- 369422

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोइराला चुनौतियों के सामने नाकाम साबित होंगे. पार्टी के महासचिव मदन भंडारी का कहना है, "हम जनता को निराश नहीं करेंगे. अगर सरकार नाकामयाब रहती है तो हम आंदोलनात्मक तरीके अपनाएंगे."

भूमिहीनों को भूमि देने, सामाजिक न्याय, गरीबों के लिए नए उपाय और मुफ्त शिक्षा आदि के वायदों पर मिली इस कामयाबी से कम्युनिस्ट खुद भी हैरत में हैं. पिछले 18 साल में उन्होंने जनता के विभिन्न तबकों में आधार बनाया है. कामयाबी की एक और वजह उनका सतत जारी भारत विरोधी अभियान भी है.

नेपाल में कम्युनिस्टों के 22 गुट हैं. उनका तात्कालिक लक्ष्य एकजुट होना और अगले चुनाव तक के लिए एक साझा लक्ष्य तय करना है. कट्टर कम्युनिस्ट और युवा व्यवसायी रोशन तुलाधार का कहना है कि "हमारे जैसे गरीब देश की भलाई कम्युनिस्ट ही कर सकते हैं."

बहरहाल, यह देश कई मुश्किलों से मुकाबिल है. इसलिए कोइराला के सामने कड़े कदम उठाने के अलावा कोई चारा नहीं है, खास तौर पर इसलिए कि नेपाल एक अरब डॉलर की सालाना मदद की वजह से पूरी तरह अमेरिका पर निर्भर है. विश्व बैंक का कहना है कि नेपाल के आर्थिक विकास की संभावनाएं काफी कम हैं. यह इस देश के लिए बहुत दुखद भविष्यवाणी है जिसकी 40 फीसदी आबादी घोर गरीबी में जी रही है.

मिन बज्राचार्य

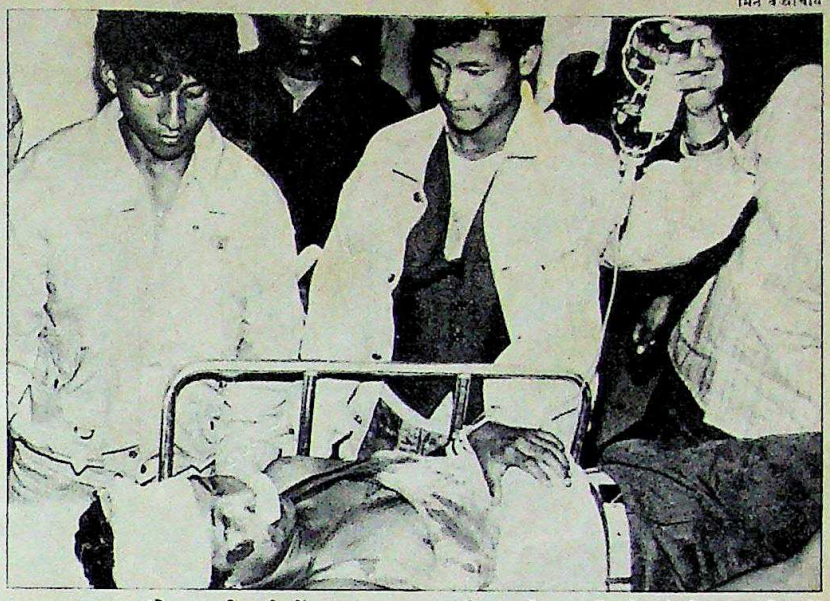

घायल कांग्रेस कार्यकर्ता: हिंसा

बहरहाल, नेपाल में दो दलीय व्यवस्था उभरती दिख रही है. चुनाव लड़ने वाली बाकी ज्यादातर पार्टियों का कोई वजूद ही नहीं नजर आया. इसलिए आर्थिक और सामाजिक समस्याओं से निबटने में नई सरकार को कम-से-कम राजनैतिक स्थायित्व की गारंटी तो रहेगी. कम्युनिस्टों ने भी जिम्मेदार विपक्ष की भूमिका निभाने का वादा किया है. हारने के बाद वे कर भी यही सकते हैं. उन्हें सिर्फ इतना ही करना है कि आराम से बैठे रहें और उम्मीद रखें कि चुनौतियों के आगे कोइराला सरकार मुंह के बल गिरे. अगर ऐसा हुआ तो कम्युनिस्टों को अगले चुनाव में जनता की कुंठित उम्मीदों की फसल काटने को तैयार रहना होगा.

—**रमेश मेनन**, काठमांडो में

गिरिजा प्रसाद कोइराला

'तिनका-तिनका जोड़ना है'

नेपाल के नए प्रधानमंत्री, 66 वर्षीय गिरिजा प्रसाद कोइराला भारत के स्वाधीनता संग्राम में भी सक्रिय रहे. 50 के दशक के शुरू में वे नेपाल के लोकतंत्र बहाली आंदोलन में कूद गए थे. प्रमुख संवाददाता **रमेश मेनन** *से उनकी बातचीत के अंश:*

मंत्रिमंडल की प्राथमिकताओं पर

कानून और व्यवस्था की बहाली, महंगाई पर रोक, कृषि और उस पर आधारित उद्योगों और पर्यटन को विकसित करना. हमारी सरकार हर गांव को पीने का पानी मुहैया कराना चाहती है.

कम्युनिस्टों की मजबूती पर

तकरीबन तीन दशक से कम्युनिस्ट खुद को व्यवस्थित ढंग से संगठित कर रहे हैं. शिक्षा व्यवस्था में उन्होंने भारी पैठ की है और अध्यापकों व छात्रों का दिल जीत चुके हैं. नौजवानों के लिए उनके पास लुभावने नारे हैं.

शरद सक्सेना

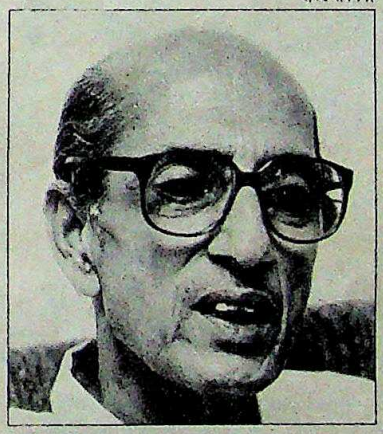

कोइराला: आत्मविश्वास से भरे

लोकतंत्र के भविष्य पर

अगर हम लोकतंत्र के चौखटे में काम करते रहे तो भविष्य उज्जवल है. अगर राजा और जनता मिलजुलकर काम करें तो लोकतांत्रिक संस्थाएं विकसित हो सकती हैं.

लोकतंत्र के अव्यवस्था में बदल जाने की आशंका पर

निस्संदेह यह आशंका भी है. कम्युनिस्ट वर्ग संघर्ष की कसम खाए बैठे हैं. लेकिन अगर राजनैतिक दल जिम्मेदारी से बरताव करें और लोकतांत्रिक परंपराओं को मानें तो लोकतंत्र फले-फूलेगा.

दान पर आधारित अर्थव्यवस्था पर

हमें तिनके-तिनके से नेपाल का पुनर्निर्माण करना है. विकास के लिए हमें दान की जरूरत है लेकिन इस बीच हम ऐसी स्थितियां पैदा कर लेंगे कि आत्मनिर्भर हो सकें.

भारत के साथ रिश्तों पर

मैं भारत से अच्छे रिश्ते बनाए रखना चाहता हूं. आर्थिक और भौगोलिक रूप से किसी भी दूसरे देश के मुकाबले में हम भारत के ज्यादा नजदीक हैं और हमारे हित भी गहरे रिश्ते कायम करने में ही हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

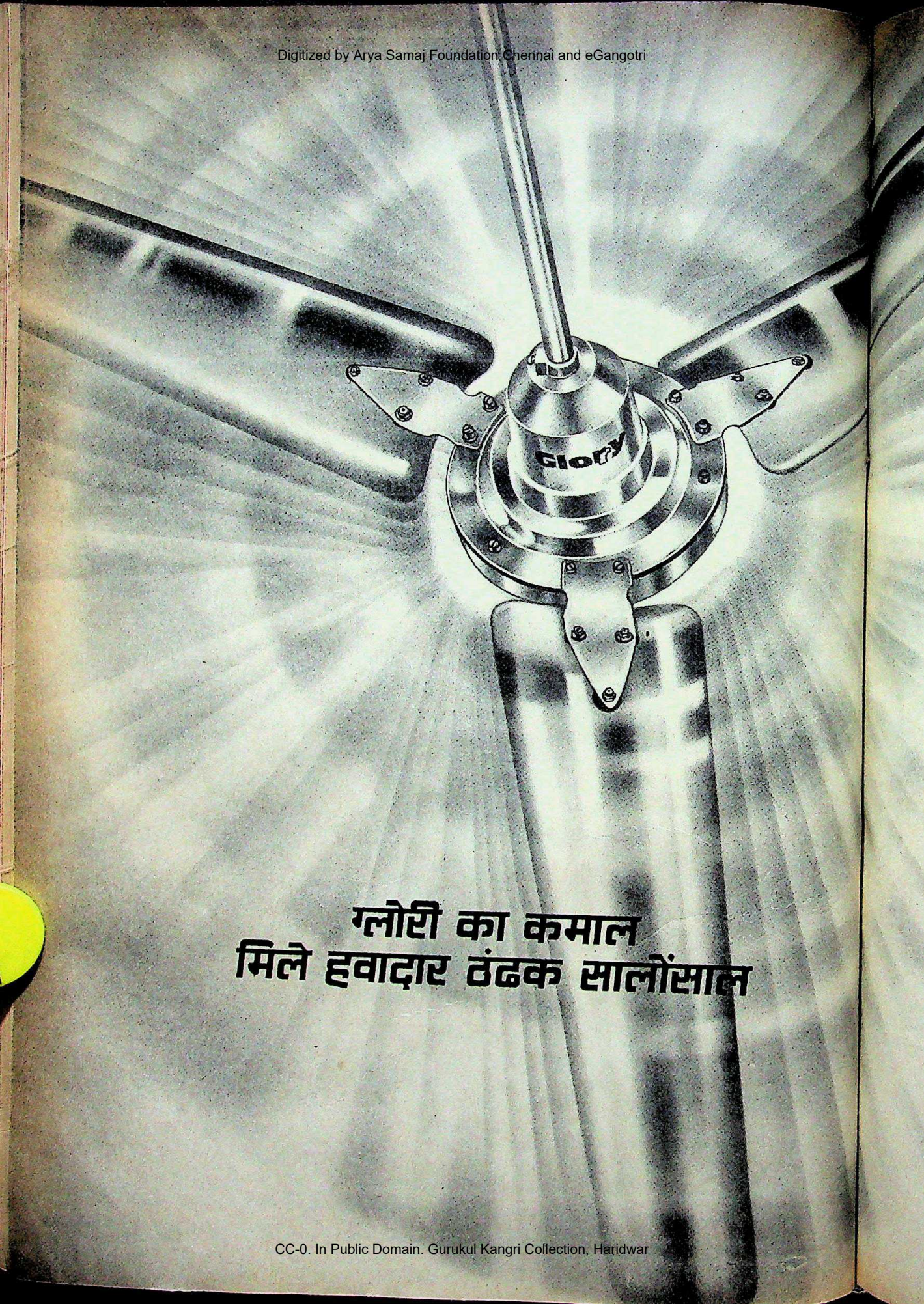

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस, स्विच दबायें और ग्लोरी की रफ़्तार महसूस करें । बिना किसी शोर के, आराम से चारों तरफ हवा बिखेरें । हमेशा तेज़-तेज़ झोंके में बहे । तीन-तीन एरोडाइनेमिक मॉडलों में । हर डिज़ाइन कम्प्यूटर द्वारा तैयार । हरियाना के ज़ीन्द में स्थित भारत के आधुनिकतम प्लांट में निर्मित । सालोंसाल सुचारू संचालन की गारंटी । बिजली-खपत कम, सुपर सक्षम मोटर । बिना किसी झटके या हिचकोले के आराम से चले । डाइ-कास्ट अल्यूमीनियम बॉडी । देश के उत्कृष्टतम डबल बॉल-बेयरिंग्स एवं ठंडी-ठंडी हवा की हिलोर वाला । अनुकूल दाम । ग्लोरी — बेशक, ऐसा आरामदेह अहसास, जो समूचे भारत की धड़कन बनता जा रहा है ।

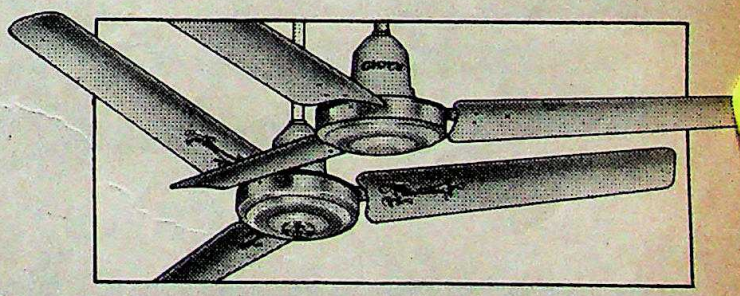

Glory

BREEZEMAKERS

शत-प्रतिशत हवा मशीन

निर्माता : **हरियाना इक्विपमेंट्स लिमिटेड** • हरियाना राज्य सरकार संयुक्त सेक्टर योजना
७ ई, लिंड्से स्ट्रीट, कलकत्ता ७०० ०८७ • **वितरण-अधिकार के लिये सम्पर्क करें**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ते...

1990-91 के लिए हमने निश्चय किया था कि इस वर्ष हम पहले से कहीं ज़्यादा लोगों का भविष्य सुरक्षित बनाएंगे

और हमने इस लक्ष्य को हासिल किया - 1 करोड़ से भी अधिक व्यक्तियों को जीवन बीमा सुरक्षा प्रदान करके.

86,48,192 व्यक्तिगत बीमा पॉलिसियों के ज़रिए रु. 28,152.16 करोड़ की राशि का नया व्यवसाय किया और समूह बीमा योजना के अंतर्गत 17,20,232 व्यक्तियों को जीवन-सुरक्षा देकर रु. 3,392.05 करोड़ की राशि का समूह बीमा व्यवसाय किया.

यह सब हमने कर दिखाया उस समय जबकि देश गंभीर परिस्थितियों के नाज़ुक दौर से गुज़र रहा था

बढ़ते...

यही नहीं, एल आई सी की इस अभूतपूर्व उपलब्धि को और भी विशिष्ट बनाती है - साल-दर-साल लगातार बढ़ती हुई हमारी व्यवसाय विकास की अद्भुत गति. इसीलिए तो भारतीय जीवन बीमा निगम आज है भारत की सबसे विशाल वित्तीय संस्थाओं में से एक संस्था!

लेकिन हमने ठान लिया है कि अगले वर्ष हम सफलता की और अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचेंगे...
यही होगी हमारी आज की सफलताओं को हमारी सच्ची सलामी!

बढ़ते

भारतीय जीवन बीमा निगम का नया व्यवसाय जा पहुंचा है सबसे ऊंचे शिखर पर-

रु. 28,152. 16 करोड़.

1 करोड़ से भी अधिक लोगों को बीमा सुरक्षा देकर.*

भारतीय जीवन बीमा निगम

जन-जन की सेवा में

*समूह बीमा व्यवसाय सहित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तर्क-वितर्क

आर्थिक उदारता की नीति

सहमति के स्वर

अस्सी के दशक में अर्थव्यवस्था को शिकंजों से मुक्त करने की जो शुरुआत हुई वह बीच में ही क्यों रुक गई. इसके अल्पकालिक और दीर्घकालिक परिणामों पर एक परिचर्चा

अर्थव्यवस्था से संबंधित अब तक का किस्सा यह है चरमराती अर्थव्यवस्था को दुरुस्त करने की कोशिश में सरकार औद्योगिक विकास पर लगे प्रतिबंध एक-एक करके उठाने लगती है (यह आठवें दशक के मध्य की बात है) उत्पादन और वितरण पर नियंत्रण ढीले किए जाते हैं हर चीज के लिए अलग-अलग लाइसेंस देने की प्रणाली उदार की जाती है आयातों को आसान बनाया जाता है यहां तक कि सार्वजनिक क्षेत्र में भी स्वायत्तता में ताजगी महसूस की जाती है और इन सबका नतीजा? औद्योगिक विकास की गति सहसा तेज हो जाती है, अर्थव्यवस्था और पूंजी बाजार फलने फूलने लगते हैं लेकिन 1991 में आकर सरकार का बजट घाटा भयावह रूप में सामने आता है देश का विदेशी मुद्रा भंडार इस तेजी से घटता है कि सरकार जब्त सोना भंडार में से कुछ सोना बेचने को मजबूर हो जाती है मुद्रास्फीति दोहरे अंकों को छूने लगती है

अब सवाल यह है कि क्या यह उदारवाद भारत में कामयाब रहा? उदारता में कंजूसी बरती गई या दिलेरी? इससे भी महत्वपूर्ण सवाल यह है अब जबकि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष हमें कर्ज देने वाला है, क्या आर्थिक नीति पर हमारा नियंत्रण छूट गया है?

पहले अच्छी खबर पिछले महीने दिल्ली में इंडिया टुडे द्वारा आयोजित परिचर्चा में भाग लेने वाले 12 व्यक्तियों की, जिनमें नेता, नीति नियंता, अर्थव्यवस्था के पंडित और व्यापारी शामिल थे, यही राय थी कि उदारता तो बमुश्किल ही शुरू हुई है. योजना आयोग के पूर्व सदस्य लक्ष्मीचंद्र जैन का कहना था, "उदारवाद की हमें सख्त जरूरत है" इंका प्रवक्ता और पूर्व वित्तमंत्री प्रणव मुकर्जी इससे असहमत नहीं थे लेकिन वे कहते हैं कि राजनैतिक स्थिरता के बिना यह संभव नहीं

रेखांकन: अजीत नैनन

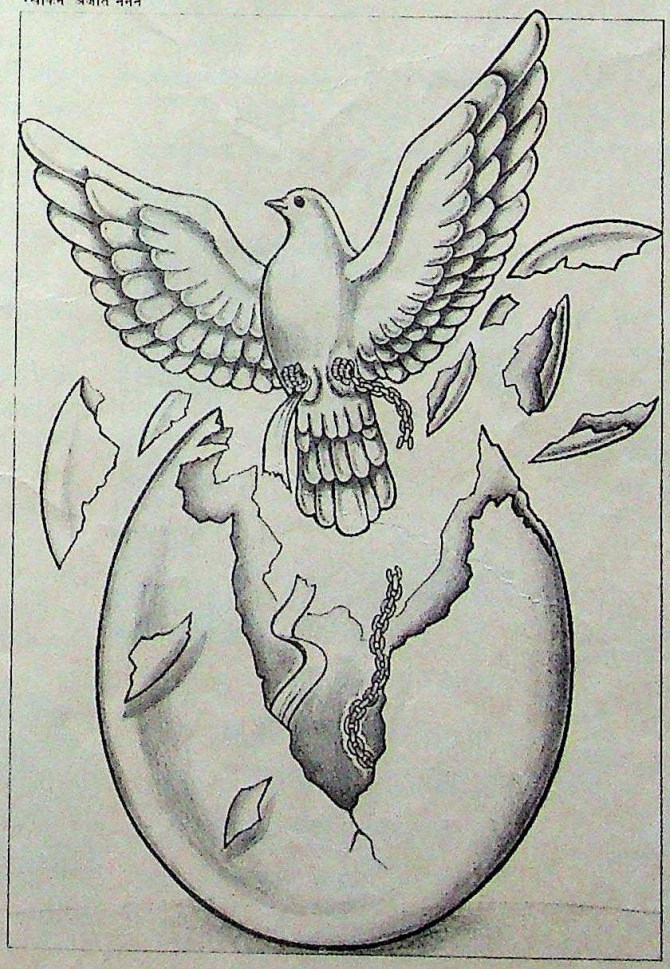

लेकिन प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार समिति के अध्यक्ष विमल जालान की चेतावनी थी कि उदारवाद के कुछ अप्रिय परिणाम भी हैं. यदि उदारवाद से देश में प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ावा मिलता है तो अक्षम उद्योग तो खत्म ही हो जाएंगे. और यही बुरी खबर है ढेरों बीमार उद्योगों ने बैंकों की भारी रकम फंसा रखी है नेताओं को मृतप्राय औद्योगिक इकाइयों को भी बंद करवाने में कठिनाई होती है, क्योंकि इससे लोगों के बेरोजगार होने का खतरा होता है. लेकिन जैसा कि सिगरेट कंपनी आईटीसी के अध्यक्ष जे.एन. सप्रू का कहना था कि आज पिता की नौकरी बचाने के लिए हम उसके बेटों की नौकरियां छीन रहे हैं.

कुछ मुद्दों पर एकदम अलग-अलग विचार मिले. विदेशी कंपनियों को उद्योग लगाने की इजाजत देनी चाहिए या नहीं, आयात शुल्क में नाटकीय बदलाव लाया जाए या नहीं, और क्या भारतीय रुपए को आसानी से विदेशी मुद्रा में परिवर्तनीय कर देना चाहिए या नहीं. पारले समूह के रमेश चौहान की बात मानी जाए तो उन्हीं विदेशी कंपनियों को छूट देनी चाहिए जो देश में उच्च तकनीक लाएं.

इकॉनॉमिक टाइम्स के संपादक टी.एन. नैनन का कहना था कि देश को पसंद हो या न हो बदलाव तो आएगा ही. विदेशी मुद्रा की तंगी को देखते हुए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से कर्ज तो लेना ही पड़ेगा और शर्तें भी जुड़ी होंगी. प्रमुख शर्त यह हो सकती है कि केंद्र सरकार राजस्व घाटा कम करे और यह कोई अपमान-जनक शर्त भी नहीं है.

सुधार का एक और तरीका सार्वजनिक क्षेत्र का कुछ हद तक निजीकरण है, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया के पूर्व अध्यक्ष वी.कृष्णमूर्ति ने इसका समर्थन किया. उनकी एकमात्र चेतावनी यही थी कि यह श्रमिकों की सहमति के बिना संभव नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदारता से कितना घाटा, कितना लाभ?

सभी फोटो भवान सिंह

प्रणब मुकर्जी
इंका प्रवक्ता

"जब मैंने कर्ज मेलों की योजना शुरू की थी तो मैंने यह सपने में भी नहीं सोचा था कि इससे बिना सोचे-समझे लोक-लुभावन कर्ज माफी योजनाएं भी शुरू हो जाएंगी"

बिमल जालानः मेरा खयाल है कि अलग-अलग मामले के लिए भेदभाव बरतने की पुरानी व्यवस्था को पूरी तरह खत्म कर देना चाहिए. पर किसी भी उदारीकरण के कुछ खास नतीजे तो होते ही हैं. आप सीधे-सीधे यह नहीं कह सकते कि किसी भी तरह का लाइसेंस होना ही नहीं चाहिए. घरेलू उदारीकरण का एक नतीजा दिवालियापन भी हो सकता है क्योंकि ज्यादा प्रतिस्पर्धा से कुछ कंपनियां बेमौत मारी जाएंगी.

आर.एन. मल्होत्राः लेकिन अर्थव्यवस्था में जितना भी उदारीकरण हो उसे वृहत् आर्थिक नीतियों से पूरी तरह अलग नहीं किया जा सकता. और ये नीतियां ही गड़बड़ हैं. एक तरफ तो आप केंद्रीय बजट को संतुलित बनाना चाहते हैं, दूसरी तरफ आप कर्ज माफी जैसे कदमों से खर्च बढ़ाते हैं. इस तरह से घाटा तो बढ़ेगा ही. उदारता की बातें करना तो अच्छा है पर हमें हालात को पूरी तरह समझना होगा.

जय दुबाशीः उदारीकरण के पिछले आठ साल के अनुभवों को देखिए. थोड़ी-सी पाबंदियां ही हटाई गई हैं. उद्योग बहुत अच्छा कामकाज कर रहे हैं, शेयर बाजार बुलंदियां छू रहे हैं, मुनाफा बढ़ रहा है. विकास हो रहा है. फिर भी लोग परेशान हैं? यह क्यों है? इसका मतलब है कि उदारीकरण का फायदा नीचे तक नहीं पहुंच रहा है. पर यह सब जनता को नहीं बताया गया है.

प्रणब मुकर्जीः 1985 में शुरू किए गए उदारीकरण से फायदा हुआ है. हमने सूखे के एक वर्ष को छोड़कर बाकी समय कीमतों को स्थिर रखा, मुद्रास्फीति सीमित रही. औद्योगिक विकास में तेजी आई जिससे गरीबी दूर करने में मदद मिली. महत्वपूर्ण बात तो यह है कि 1987 के सूखा वर्ष में भी औद्योगिक विकास बरकरार था.

पहली योजना से पांचवीं योजना तक अर्थव्यवस्था की औसत विकास दर 3.5 फीसदी रही. परंतु आठवें दशक में यह विकास दर 5.5 फीसदी थी. आप इसे नजरअंदाज नहीं कर सकते.

कौशिक बसुः मुझे यह सोचकर चिंता होती है कि सारा खेल लोगों को लुभाने के लिए होता रहा है. आप अपनी नीतियां बहुमत के मुताबिक ही बनाते हैं. अगर आप बहुमत के हिसाब से इंजीनियरों को हवाई जहाज या पुल का डिजाइन बनाने के लिए कहें तो आपके पुल काम लायक नहीं होंगे, आपके विमान उड़ेंगे नहीं. नीतियां वृत्तिकुशल लोगों को बनानी चाहिए और नेताओं को चाहिए कि वे नीतियों की अच्छाई या बुराई के बारे में जनता को समझाएं. मैं एक उदाहरण देता हूं. मुद्रास्फीति से सभी घबराते हैं पर जिस तरह से राजनैतिक दल 100 और 200 दिन में महंगाई खत्म करने का वादा कर रहे हैं उससे तो लगता है कि वे मुद्रास्फीति को कुर्की ही करवा देंगे. और अगर आप जोर-जबरदस्ती से, सरकारी कानूनों और नियमों से मुद्रास्फीति पर नियंत्रण पाने की कोशिश करेंगे तो शुरू में तो जनता वाह वाह करेगी. लेकिन अगर आप इस लोक-लुभावन कार्यक्रम को कुछ समय तक जारी रखेंगे तो आप एक ऐसी व्यवस्था को जन्म दे देंगे जहां चीजों के लिए कतारें लंबी हो जाएंगी, कार्यकुशलता कम होगी और इन्हीं वजहों से कीमतों पर दबाव बढ़ जाएगा.

बिमल जालान
प्रधानमंत्री के मुख्य आर्थिक सलाहकार

"नौकरशाही का एक पहलू जड़ता है. अधिकांश अफसरों को पता ही नहीं होता कि उनके काम का क्या असर होगा"

मिन्हासः क्या मैं एक और बात कह सकता हूं? हमारी विकास दर अच्छी रही यह चाहे उदारीकरण की वजह से हो या इसके बिना हो. हमें यह भी देखना चाहिए कि विकास किस तरह का हुआ. अगर आप सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) से प्रतिरक्षा जैसी गैर-आर्थिक सेवाओं की विकास दर को निकाल दें तो 80 के दशक की औसत विकास दर हिंदू विकास दर से बहुत ज्यादा भिन्न नहीं होगी.

लक्ष्मीचंद्र जैनः मैं समझता हूं उदारीकरण एक पुरातन शब्द है. हमें मुक्ति चाहिए. पंजाब को लीजिए. वह आतंकवाद से परेशान है. वहां छोटे कल-कारखाने बजे शाम तक बंद हो जाते हैं ताकि कर्मचारी घर पहुंच सकें. उग्रवादियों को उन्हें शाम 5 बजे के बाद झेलना पड़ता है लेकिन दिन में 35 इंसपेक्टर उनके कारखाने में आते हैं और उसे चलने नहीं देते. पंजाब में 60,000 छोटे कल-कारखाने और हरेक में औसतन 10 कर्मचारी हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताया गया कि अगर उन्हे इन इंसपेक्टरों से मुक्ति दिलवा दी जाए तो कर्मचारियो की संख्या आसानी से बढ़ाई जा सकती है. जब हम उदारीकरण की बात करते हैं तो हम टाटा, बिड़ला और उन दूसरे लोगों के बारे में सोचते हैं जो लाइसेंस लेने के लिए उद्योग भवन पहुंचते हैं. उन्हें उदारीकरण की जरूरत ही नही है क्योंकि लाइसेंस उनके घर पहुंचा दिया जाता है. मुक्ति तो छोटे उद्योगों को चाहिए, कम-से-कम 'इंसपेक्टर राज' से मुक्ति!

वास्तविक उदारीकरण के लिए तो इन भवनों को खत्म करना होगा, चाहे कृषि भवन हो या उद्योग भवन. धीरूभाई अंबानी उनका अच्छा किराया दे सकते हैं और जब तक आप इन भवनो को नही हटाएंगे तब तक एक तरह का नियंत्रण हटेगा तो दूसरी तरह का आ जाएगा. यह कहा गया कि कुछ मामलों में लाइसेंसिंग की जगह डीजीटीडी तकनीकी विकास महानिदेशालय में पंजीकरण जरूरी होगा. अब इस पंजीकरण में भी लाइसेंस वाली शर्तें जुड़ जाएंगी.

रमेश चौहानः पूरी औद्योगिक लाइसेंस प्रणाली को ही खत्म क्यों नही कर देते. हमारे यहां पहले ही सीजीआई (पूंजीगत वस्तु आयात) लाइसेंस है, विदेशी गठजोड़ के लिए इजाजत और कई दूसरे कानून-कायदे हैं.

टी.एन. नैननः मेरे विचार से भारतीय अर्थव्यवस्था अभी भी दुनिया की सबसे ज्यादा नियंत्रित और सबसे कम उदार अर्थव्यवस्था है.

हमने क्या बदला? सीमा शुल्क की औसत दर 117 फीसदी है जो विश्व रिकार्ड है. ज्यादातर देशों में यह औसतन 20 से 30 फीसदी है. इसलिए आप उन हदों तक जाकर भारतीय अर्थव्यवस्था और उद्योगों की रक्षा कर रहे हैं जिन हदों का दुनिया में किसी ने सपना भी नहीं देखा.

"अगर आपने बैंको, बीमा कंपनियों और अन्य वित्तीय कंपनियों का राष्ट्रीयकरण कर दिया है तो उन पर नियंत्रण रखकर आप सिर्फ पैसे पर नियंत्रण कर रहे हैं, न कि नीतियों में नरमी ला रहे हैं"

आर.एन. मल्होत्रा
पूर्व गवर्नर, रिजर्व बैंक

हम हर मामले के लिए अलग से फैसले और नियंत्रण की व्यवस्था से शुल्क संबंधी नियंत्रणों की ओर जाने की बात करते हैं पर आप देखिए कि सरकार किस तरह के फैसले करती रही है. आप पाएंगे कि बीयर और शराब के लाइसेंस जारी हो रहे हैं, इस्पात कारखानों और चीनी मिलों के लाइसेंस जारी हो रहे हैं. हर एक की कीमत है जो सत्ता में बैठे नेता को मिलती है.

जालानः जहां तक नौकरशाही का मामला है, एक पहलू तो शुद्ध जड़ता का है. हम वही कर रहे हैं जो होता रहा है.

एल.एम. थापरः मेरा खयाल है कि उद्योगो के भी निहित स्वार्थ हैं. आपने ऐसी हालत बना दी है कि आपको लगता है बाजार में लड़ाई लड़ने से ज्यादा आसान है उद्योग भवन में लडाई लड़ना. उद्योगों, नौकरशाहों और नेताओं में भ्रष्टाचार का जो रिश्ता बना है उसमें सभी को फायदा दिखाई देता है. यह पहले भी कहा जा चुका है कि अगर आप बाजार में जिंदा नहीं रह सकते तो मर जाइए. हमें बाहर जाने का रास्ता तो दीजिए. तब हम गंभीरता से सोचेंगे कि हमें इस धंधे में हाथ डालना चाहिए या नही. पर अब क्या होता है? सरकार किसी उस क्षेत्र को निजी क्षेत्र के लिए खोलती है जो पहले उसके लिए बंद था तो लोग उस तरफ भागे जाते हैं भले ही उसमें महारत हो या न हो. दूरसंचार का मामला देखिए. 10 कंपनियां इलेक्ट्रॉनिक टेलीफोन एक्सचेंज बना रही हैं. सबको मालूम है कि खासी मारकाट होगी.

जे.एन. सप्रूः हमें खुद से यह भी पूछना चाहिए कि हम उदारता की बात ही क्यों कर रहे हैं. इसलिए कि 40 साल में कुछ भी हमारे हाथ नहीं लगा. कुछ विकास हुआ जो पर्याप्त नही है. अगर हम छलांग नहीं लगाते तो 10 साल बाद कहां पहुंचेंगे? ठीक है आप पहले या दूसरे साल कुछ गंवा भी सकते हैं. बदलाव का मतलब होता है उथल-पुथल. बात यह है कि हम इसे कम-से-कम कष्टप्रद कैसे बना सकते हैं? पर इसमें कष्ट तो होगा ही.

नैननः आप अर्थव्यवस्था को जितना उदार बनाना चाहते हैं, बना सकते हैं लेकिन अगर वित्तीय कुप्रबंध जारी है तो मुद्रास्फीति बढ़ेगी ही. लोग विदेशी मुद्रा संकट के लिए आयात में उदारता और संचित ऋण को दोषी ठहराते हैं. पर यह समझना और स्वीकार करना जरूरी है कि जीडीपी के अनुपात मे हमारे आयात का प्रतिशत काफी कम है. इसलिए उदार आयात से विदेशी मुद्रा का संकट नही खड़ा हो सकता. इसलिए गड़बड़ सरकारी प्रबंध व्यवस्था में है, उदारीकरण में नहीं.

वी.कृष्णमूर्तिः मैं यह बताना चाहता हूं कि इस नियंत्रित अर्थव्यवस्था ने कितना नुकसान पहुंचाया है. अध्ययनों से जाहिर होता है कि देश में बने इस्पात के महंगे होने का एकमात्र कारण कीमतों और वितरण

जे.एन. सप्रू
अध्यक्ष, आईटीसी

"सार्वजनिक क्षेत्र के साथ मुश्किल यह है कि यहां के शेयर होल्डर रोज ही प्रबंध निदेशक के सिर पर सवार रहते हैं. आप या तो उदारीकरण चला सकते हैं या नियंत्रण रख सकते हैं, दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर सरकारी नियंत्रण है. कोई भी पार्टी सत्ता में आए, हालात उदारीकरण की ही मांग करते हैं.

नैनन: मैं नहीं मानता कि सुधार की दिशा या गति हमारे काबू में है. मुद्रा कोष अपने हिसाब से नीतिगत बदलाव की मांग करेगा. और आप ऐसी स्थिति में हैं नहीं कि आप जो चाहें कर लें. और आपको पैसे (विदेशी मुद्रा) की जरूरत है जो सिर्फ कीमत चुकाने पर ही आएगा. इसलिए किसी भी हालत में बदलाव तो होगा ही. अगर हमने बहुत पहले ही यह कर लिया होता तो उसकी गति और तरीके पर हमारा कुछ बस होता. बदलाव के लिए भारी कीमत अदा करनी ही पड़ती है.

मल्होत्रा: जरूरी यह है कि मजदूर संघों को सही ढंग का राजनैतिक मार्गदर्शन मिले.

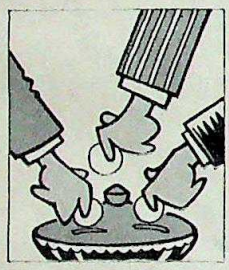

विदेशी पूंजी निवेश क्या कीमत वसूलेगा

चौहान: मुझे नहीं लगता कि कोई भी आदमी देश में विदेशी निवेश के खिलाफ होगा. लेकिन अध्ययनों से पता चलता है कि बहुत कम ही कंपनियों में विदेशी निवेश हुआ है. (मेरा मानना है कि) अब देश में नवीनतम तकनीक के रूप में ही विदेशी निवेश होना चाहिए. दुर्भाग्यवश लोगों ने स्कूटर की सीट और पीछे देखने वाले शीशे जैसी चीजों के लिए भी विदेशी गठबंधन किया है. बजाज ये चीजें वर्षों से बना रहा है. इस तरह के गठबंधन के कारण आयात का अनुपात बहुत बढ़ जाता है.

नैनन: दो मुद्दे हैं. एक तो यह कि आपको किस किस्म का निवेश मिल पाता है. अगर आपने सीमा शुल्क की ऊंची दीवार बनाकर देसी उद्योगों को अतिशय संरक्षण देने की कोशिश की है तो आपको सिर्फ इसी दीवार को लांघ सकने वाला विदेशी निवेश मिलेगा. यह निर्यातोन्मुखी नहीं होगा. लेकिन अगर आपने यह संरक्षणवादी दीवार कम ऊंची रखी है और आपकी अर्थव्यवस्था अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के लायक है तब यह (देश) बाहर माल सप्लाई का स्रोत बन जाता है. और यहां होने वाला निवेश एकदम अलग तरह का होता है.

आपकी अर्थव्यवस्था ऐसी नहीं है कि अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में टिक सके. यहां कई लोग सप्लाई के स्रोत की तलाश में आना चाहते हैं. फोर्ड कंपनी यहां आना चाहती थी, जेनरल इलेक्ट्रिक आना चाहती थी. लेकिन आपको सीमा शुल्क की दीवार को नीचा करना होगा. आपको उन उद्योगों में कुशल होना होगा ताकि आप अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में टिक सके.

ललित मोहन थापर
अध्यक्ष, थापर कंपनी समूह

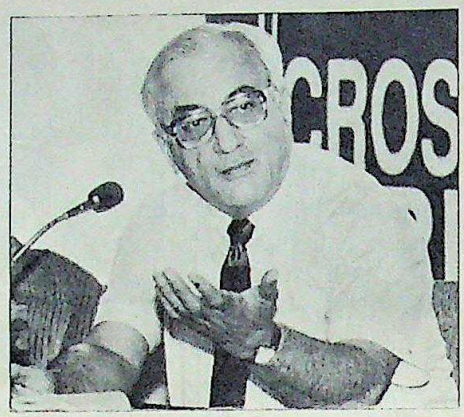

"उद्योगों को कुछ क्षेत्रों से निकलने का रास्ता भी दें तभी हम तय कर सकेंगे कि वे कहां जाएं और कहां नहीं"

जैन: 'अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में टिकने लायक' से आपका क्या मतलब है? आपकी वह दीवार कितनी भी ऊंची हो, कई लोग आपको केवल बाजार के रूप में देखना चाहते हैं.

मल्होत्रा: असली मुद्दा यह है कि अगर आपने संरक्षण की दीवार ऊंची रखी है तो संभावित विदेशी निवेशक उस दीवार को आपके घरेलू बाजार में ही माल बेचने का बहुत फायदेमंद बहाना मानेगा.

थापर: अगर भारत में ही माल बेचना मुनाफा देगा तो विदेशी निवेशक निर्यात नहीं ही करेगा. यही बात भारतीय उद्योग जगत पर भी लागू होती है.

मल्होत्रा: हमें एक राष्ट्र के रूप में यह देखना होगा कि नीतियों को उदार बनाने का क्रम प्रत्यक्ष विदेशी निवेश तक जाना चाहिए. अनेक देशों में हर महीने अरबों डॉलर का निवेश हो रहा है. मुद्दा यह है कि यह निवेश तभी होता है जब फायदा हो रहा हो. और क्या हम ऐसे संसाधन को चाहते हैं या नहीं?

मैं चौहान से इस बात पर सहमत हूं कि अगर उन्हें (विदेशी निवेशकों को) कोला के बाजार में नहीं घुसने देना चाहें तो उन्हें मत बुलाइए. लेकिन इतनी तेजी से बदलती तकनीक वाली दुनिया में ऐसे क्षेत्रों की कमी नहीं है जहां प्रत्यक्ष निवेश कराया जाए और कहा जाए कि फलां-फलां क्षेत्र में इस स्तर तक निवेश करने के लिए आप आजाद हैं. ऐसे क्षेत्रों की एक सूची हो सकती है. चीन में यही कुछ हो रहा है.

बसु: आयात-निर्यात के मामले में मैं मुद्रा विनिमय की पूरी आजादी के पक्ष में हूं. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के मामले में मैं

लक्ष्मीचंद्र जैन
पूर्व सदस्य, योजना आयोग

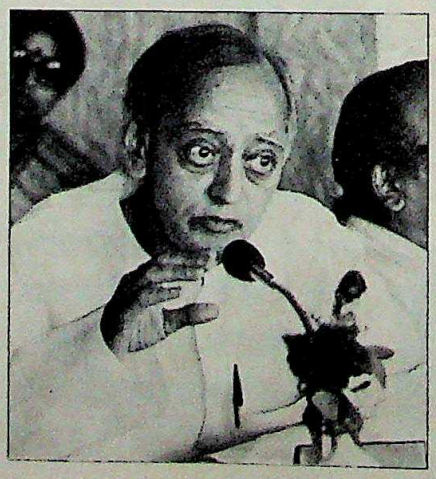

"टाटा, बिड़ला और बड़े घरानों को उदारीकरण की जरूरत ही नहीं है क्योंकि लाइसेंस उनके घर पहुंचा दिया जाता है. असली उदारीकरण तो यह होगा कि कृषि भवन, उद्योग भवन वगैरह सब को ढहा दिया जाए"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

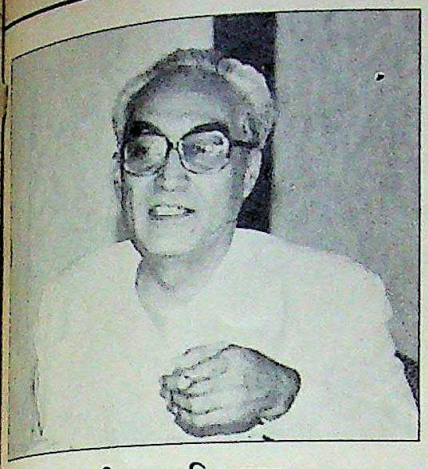

बी.एस. मिन्हास
प्रोफेसर, आईएसआई

"हममें से कुछ लोग 80 के दशक के मध्य से ही भारी वित्तीय घाटे के बारे में कब से चेतावनी दे रहे थे. तब हमें लोगों ने कहा कि हम आतंकित हैं. मुझे तो राष्ट्रद्रोही तक कहा गया"

पुनर्विचार की जरूरत लगती है. हां, इस मामले में अभी बहुत कुछ करने की गुंजाइश है और करना भी चाहिए. लेकिन इसे ही रामबाण औषधि मान लेना भी ठीक नहीं है. जिस देश में भ्रष्टाचार और अकुशलता का स्तर काफी हो वहां प्रत्यक्ष विदेशी निवेश जल्दी ही इस स्तर को और बढ़ाना और इससे लाभ उठाना शुरू कर देता है. हमने देखा है कि जहां कहीं अमेरिकी डॉलर पहुंचा है, जल्दी ही अमेरिकी सोल्जर (सैनिक) भी पहुंच जाते हैं.

चौहानः अगर हम विदेशी मुद्रा को गैर-जरूरी चीजों पर खर्च कर देंगे और फिर इसी के अनुरूप विनिमय दर तय करेंगे तो चीजों की कीमतें काफी चढ़ेंगी ही.

बसुः चौहान साहब, मैं आपके तर्क को नौकरशाही वाला ही मानता हूं. प्राथमिकता वाले क्षेत्र कौन हों यह नौकरशाह, राजनेता या व्यापारी नहीं तय करेंगे. आप विदेशी मुद्रा की दर को बढ़ने दीजिए और फिर बाजार खुद-ब-खुद यह फैसला कर देगा कि किन क्षेत्रों में विदेशी मुद्रा को लगना चाहिए और किन में नहीं. मैं मानता हूं कि अभी खुद बाजार ही बहुत संतुलित नहीं हुआ है और इस स्वाभाविक प्रक्रिया में कुछ त्रुटियां रह जाएंगी. लेकिन जब फैसला मात्र कुछ हाथों में आ जाएगा तो ऐसी त्रुटियां बहुत अधिक और बड़ी होंगी.

कृष्णमूर्तिः ऐसे क्षेत्र हो सकते हैं जिनमें विदेशी निवेश जरूरी ही न हो. मुझे लगता है कि हम ऐसे उद्योगों की भी एक सूची बना सकते हैं. शेष उद्योगों को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए खुला छोड़ सकते हैं.

सप्रूः मेरा मानना है कि हमें सिर्फ अपने यहां विदेशी निवेश को न्यौता ही नहीं देना चाहिए. बल्कि अपने यहां से विदेशों में निवेश की अनुमति देनी चाहिए.

चौहानः मेरा मानना है कि देश से बाहर पूंजी निवेश के लिए भी वही नियम होने चाहिए जो देश में विदेशी निवेश के हों.

जालानः मेरा यह कहना है कि मौजूदा व्यवस्था में हल्का बदलाव भी कुछ सोच-समझकर करना होगा क्योंकि यह बिना प्रतिद्वंद्विता वाली है और इसमें निर्यात की जगह आयात ही ज्यादा तेज रफ्तार से बढ़ता जा रहा है. (विदेशी निवेशक) लालफीताशाही से भागते हैं.

मल्होत्राः मेरा मानना है कि बड़ी बाधा नियम-कानून नहीं, अनिश्चितता है. चौहान साहब से माफी मांगते हुए मैं पेप्सी प्रसंग की तरफ ध्यान दिलाना चाहूंगा. एक बार मंजूरी मिल गई. पर नई सरकार आई और उसने कहा कि हम इस पर पुनर्विचार करेंगे. और पूरी प्रक्रिया फिर शुरू होती है. जब तक चौहान साहब अपने इस अभियान में जुटे हैं और प्रभावी हैं, ऐसा तीसरी बार भी हो सकता है. भारत में निवेश कर सकने वालों से बातचीत के आधार पर मैं कह सकता हूं कि वे अनिश्चितता को ही सबसे बड़ी बाधा मानते हैं. नियम-कानूनों के साथ ही करों का मामला भी उन्हें परेशान करता है. भारतीय प्रशासकों से उन्हें जो संकेत मिलते हैं वे ठीक नहीं हैं. उन्हें लगता है कि वे बेकार आ रहे हैं.

मुकर्जीः भुगतान संतुलन की समस्या को विदेशी निवेश बहुत ही कम सुधार सकता है. हमें असल में प्रतिस्पर्धा की जरूरत है और यह सिर्फ भारतीय कंपनियों और उद्योगों से नहीं. हमें अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में उतरना होगा. और इसके लिए विदेशी निवेश चाहिए. इससे भी महत्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या हम विदेशी निवेश की अनुमति निर्माण के क्षेत्र में या दूसरे क्षेत्र में दे सकते हैं. हम ऐसा नहीं कर सकते. इतने कम समय में हम पूरा बदलाव करके सब कुछ उलट-पलट नहीं सकते. हमारी व्यवस्था इसे स्वीकार नहीं कर पाएगी.

जालानः महोदय, मैं कुछ न्यूनतम उपायों के सुझाव देना चाहता हूं जिन्हें नई सरकार विदेशी निवेश के मामले में लागू कर सकती है. हमें निवेश वाले उद्योगों की सूची बनानी चाहिए और जब तक इनमें विदेशी पैसा लगता जा रहा है तब तक इसमें छेड़छाड़ नहीं की जानी चाहिए. मुझे लगता है हमें कम-से-कम इतना तो करना ही चाहिए.

मल्होत्राः क्या हम अर्थव्यवस्था को उदार बनाने संबंधी विश्व बैंक की रिपोर्ट पर चर्चा कर सकते हैं?

नैननः मुझे लगता है कि इस रिपोर्ट के बारे में एक खास बात यह है कि व्यवस्था में बदलाव का खर्च काफी अधिक होगा. बैंक

कौशिक बसु
प्रोफेसर, दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स

"जिन देशों में भारी भ्रष्टाचार और अकुशलता रहती है वहां प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इन्हें बढ़ाने और इनका लाभ लेने लगता है. हमने देखा है कि जहां भी अमेरिकी डॉलर गया है, वहां उनके सोल्जर (सैनिक) भी पहुंच गए"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमा शुल्क में भारी कटौती की बात कर रहे हैं जिसका मतलब सरकारी राजस्व में भारी गिरावट होगा. इस कमी को पूरा करने के लिए उत्पाद कर में भारी बढ़ोतरी का सुझाव दे रहे हैं. इसके अलग बुरे असर होंगे. वे रुपए के अवमूल्यन और पूंजीगत माल के उत्पादन में भारी कटौती का सुझाव भी दे रहे हैं. क्या इस तरह की नीतियों के राजनैतिक परिणामों संभाला जा सकता है?

मिन्हास: आखिर भारत के लिए विकल्प क्या है?

मल्होत्रा: मुझे लगता है कि सीमा शुल्क में 20 फीसदी कटौती, रुपए का 22 फीसदी अवमूल्यन या सरकारी खर्च में 9 फीसदी की कटौती कतई संभव नहीं है.

नैनन: मुझे नहीं लगता कि स्थिति की नजाकत के बारे में देश में पर्याप्त जागरूकता भी है. कितनी विदेशी मुद्रा चाहिए इसका को अंदाजा नहीं है. इससे आप कैसे निबटेंगे और इसका अर्थव्यवस्था पर क्या असर पड़ेगा? लोगों को स्थिति की गंभीरता का पता नहीं है.

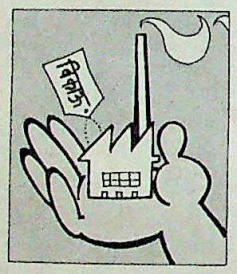

सार्वजनिक क्षेत्र निजी हाथों में?

जैन: आज सरकार बाजार के किसी क्षेत्र में अगुआई करने की स्थिति में नहीं है क्योंकि इस काम के लिए उसके हाथ में अतिरिक्त पैसा है ही नहीं. मुझे लगता है कि कुछ फैसले करने ही होंगे. एक तो यह कि सार्वजनिक क्षेत्र में नया निवेश अब से नहीं किया जाएगा. सार्वजनिक क्षेत्र का मतलब होता है सार्वजनिक उद्देश्य के लिए सार्वजनिक हस्तक्षेप. लेकिन अपने यहां कुछ इकाइयां तो सिर्फ इसीलिए लग गईं कि उनके पक्षधर मंत्री मजबूत थे. हमने बिस्कुट, ब्रेड, होटल और मारुति कार के लिए भी सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियां लगाई हैं. मुझे लगता है कि हमें साफ करना होगा कि ये जरूरी हैं या नहीं. अगर इनसे सार्वजनिक उद्देश्य नहीं पूरा होता तो फिर इनका प्रबंध किसी और के हाथ सौंप दिया जाना चाहिए.

मुद्दा दरअसल यह है कि सरकार की प्रबंधकीय क्षमता और इसके वित्तीय संसाधनों पर भारी दबाव है और इसका उपयोग अर्थव्यवस्था के सर्वाधिक लाभ और सार्वजनिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए ही होना चाहिए. सरकार का पहला काम जान-माल की रक्षा करना है. लेकिन सरकार ऐसा करने में अक्षम रही है. ऐसे में आर्थिक क्षेत्र में कम से कम सरकारी हस्तक्षेप देश के हक में है.

कृष्णमूर्ति: मेरा सुझाव है कि सार्वजनिक उद्यमों को तीन श्रेणियों में विभाजित करना चाहिए. पहली श्रेणी में पर्यटन, ब्रेड, साइकिल और स्कूटर जैसे वे उद्योग होने चाहिए जिनमें सरकार को नहीं होना चाहिए. दूसरा वर्ग ऐसे उद्योगों का होना चाहिए जिनमें निजी क्षेत्र से प्रतिद्वंद्विता कर रहे एचएमटी, भेल और मारुति जैसे उद्योग होने चाहिए. मेरा मानना है कि इनमें भी धीरे-धीरे सरकार को अपने शेयर 50 फीसदी से कम कर देना चाहिए.

तीसरा वर्ग बुनियादी और संरचनात्मक उद्योगों का है जिनमें पेट्रोलियम और कोयला वगैरह आते हैं और जिनमें देश की प्राकृतिक संपदा का दोहन होता है. इन क्षेत्रों में सार्वजनिक क्षेत्र का एकाधिकार चल सकता है लेकिन इसमें भी शेयर दूसरों को बेचे जा सकते हैं. मगर सरकार को अपना ध्यान इन उद्यमों को बेहतर ढंग से चलाने में लगाना चाहिए.

लेकिन निजीकरण रातोरात नहीं हो सकता. कुछ व्यावहारिक दिक्कतें हैं. सबसे पहले हमें मजदूर संघों को साथ लेना होगा. अगर वे सहयोग नहीं करेंगे तो यह पूरी प्रक्रिया ठप हो जाएगी. स्कूटर्स इंडिया में यही तो हुआ है.

मल्होत्रा: जहां तक सार्वजनिक क्षेत्र के मुनाफे की बात है, अगर आप तेल कंपनियों का उदाहरण लें तो पाएंगे कि मुनाफा असल में उसके सामान के दाम तय करने से ही जुड़ा है और इस हिसाब से इस क्षेत्र की कंपनियों का कुल कामकाज बहुत खराब रहा है. और जब आप राज्य सरकार की

"ऐसा लगता है कि हम आर्थिक नीतियों में नरमी को देश के हक में ही मान बैठे हैं. ऐसा है तो फिर लोगों में बेचैनी क्यों है. हमें लोगों को, देश के आम आदमी को उदार आर्थिक नीति के प्रभावों के बारे में यकीन दिलाना होगा"

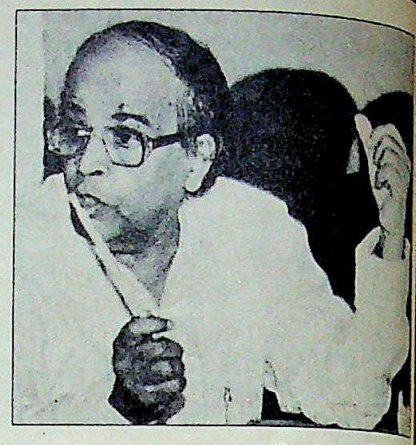

जय दुबाशी
अर्थशास्त्री और भाजपा के सिद्धांतविद

टी.एन. नैनन
संपादक, इकॉनॉमिक टाइम्स

"मेरा मानना है कि भारतीय अर्थव्यवस्था अब भी पूरी दुनिया में सबसे अधिक नियंत्रित हैं. हम देखते हैं कि शराब, इस्पात, चीनी आदि के कारखानों के लाइसेंस जारी किए जाते हैं और राजनेता को इसकी कीमत मिलती है"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्यमों के कामकाज पर नजर डालेंगे तो पाएंगे कि भयावह हालत है, खास तौर से राज्य परिवहन निगमों का.

बसु: सार्वजनिक क्षेत्र का सार्वजनिक होना कोई दोष नहीं है. मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूं कि दक्षिण कोरिया और ताइवान जैसे देशों में सार्वजनिक क्षेत्र का कामकाज बहुत अच्छा है. सार्वजनिक क्षेत्र के काम की गड़बड़ी के लिए राजनैतिक और संगठनात्मक खामियां ही जिम्मेवार हैं. भारत में कुछ अपवादों को छोड़कर सार्वजनिक क्षेत्र का कामकाज बहुत बुरा रहा है. हम क्या करते हैं? एक बात जो जोर पकड़ती जा रही है और मैं जिसे बहुत खतरनाक गलतफहमी मानता हूं वह यह है कि सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को बेच दिया जाना चाहिए. लेकिन ऐसी किसी इकाई को बेचने का मतलब सिर्फ बाहरी आवरण बदलना भर है. जैसे नई चीजें खरीदने के लिए कोई परिवार पुराने गहने बेच दे ठीक उसी तरह का.

सप्रू: मैं अपनी कंपनी (आईटीसी) को भी सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी ही मानता हूं क्योंकि इसके 38 फीसदी शेयर सार्वजनिक क्षेत्र के पास हैं.

मल्होत्रा: उस हिसाब से तो कोई निजी क्षेत्र है ही नहीं.

सप्रू: मैं यह बताने की कोशिश कर रहा था कि मेरे कामकाज और सार्वजनिक क्षेत्र (की कंपनी के प्रमुख) के बीच क्या अंतर है? कुछ बुनियादी अंतर है. (हमारे यहां) एक प्रबंधक मंडल है जो प्रबंध निदेशक के कामकाज पर नियंत्रण रखता है. और मैं हर साल अपने अंशधारकों से एक बार मिलता हूं. अगर मेरा काम ठीक नहीं हुआ तो मुझे बाहर निकाल फेंकने का उन्हें हक है. सार्वजनिक क्षेत्र के साथ मुश्किल यह है कि वहां अंशधारक रोज ही प्रबंध निदेशक से मिलते हैं. वहां प्रबंध निदेशक की कोई हैसियत नहीं रह जाती.

मिन्हास: सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के प्रबंध के साथ परेशानी यह है कि उन पर जवाबदेही नहीं होती. ऐसा निजी क्षेत्र में भी होता है जहां खुद मालिक पेशेवर प्रबंधकों की जगह ले लेते हैं. लेकिन उन्हें भी जल्दी ही बाजार भाव का पता चल जाता है. उनके शेयर नीचे चले जाते हैं. लेकिन सार्वजनिक क्षेत्र में इस तरह की चीजें कभी नहीं होतीं. यहां के कर्ताधर्ता लोगों को बाजार भाव कभी पता नहीं लगता. उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता.

सप्रू: संभव है कि घाटे वाले इन उद्यमों को चलाने के लिए कोई भी खुद-ब-खुद आगे न आए. क्या यह संभव है कि (इन इकाइयों के) मजदूरों को शेयर दिए जाएं?

नैनन: एक बार फिर हम निजीकरण के मुद्दे पर आ रहे हैं. जैसे-तैसे चल रही सरकार जैसे-तैसे काम चलाने का रास्ता ढूंढ़ रही है. मुझे नहीं लगता कि सरकार किसी वैचारिक प्रतिबद्धता के चलते निजीकरण की सोच रही है. वह ऐसा कर रही है क्योंकि उसके पास और कोई रास्ता नहीं है. सार्वजनिक क्षेत्र की अनेक कंपनियां बीमार हैं क्योंकि निजी क्षेत्र से इन्हें बीमार हालत में ही लिया गया था. जब आप बैंकों के निजीकरण की बात करते हैं तो यह याद रखना होगा कि जब निजी बैंकों की हालत खराब हो रही थी तभी रिजर्व बैंक ने उन्हें अपने हाथ में लिया. और आज भी निजी क्षेत्र ही दम तोड़ते जा रहे हैं. आप ऐसे अनेक उदाहरण दे सकते हैं जिन क्षेत्रों में निजी क्षेत्र विफल रहा है.

महत्वपूर्ण मुद्दा बाजार के ढांचे का है, न कि मिल्कियत का. आम तौर पर वे कंपनियां ही अच्छा काम कर रही हैं जो प्रतिस्पर्धा वाले क्षेत्र में हैं (जैसे मारुति, एचएमटी, इंडियन पेट्रोकेमिकल्स). एकाधिकार की स्थिति में सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियां ज्यादा खराब प्रदर्शन करती हैं क्योंकि वहां बाजार का कोई दबाव ही नहीं होता. सो, जब तक बाजार पर सार्वजनिक एकाधिकार की जगह निजी एकाधिकार कायम नहीं करेंगे, कुछ भी नहीं होगा.

दूसरा सवाल है कि आप निजीकरण कैसे करेंगे? क्या ऐसे सौदों के जरिए जिनमें खुद आपको भी पता न हो कि क्या हो रहा है? क्या आप उन्हें किसी बड़े निजी समूह को बेच देंगे जिससे प्रबंध अपने आप बदल जाए? क्या आप उन्हें अंशधारियों के बड़े समूह के हाथ बेचकर कहेंगे कि अब पेशेवर प्रबंधक ही इतने बिखरे अंशधारकों के प्रति जवाबदेह हैं? क्या आप उस पर सार्वजनिक बोली लगने देंगे या नहीं? आप शेयरों का मूल्य कैसे तय करेंगे? क्या आप मुनाफा दे रही कंपनियों को बेचेंगे या घाटा दे रही कंपनियों को, जैसा कि ब्रिटेन का अनुभव है?

"निजीकरण रातोरात नहीं किया जा सकता. कुछ व्यावहारिक दिक्कतें हैं. सबसे पहले हमें मजदूर संघों को राजी करना होगा. हमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्र जैसे विभाजन नहीं करने चाहिए"

वी.कृष्णमूर्ति
पूर्व अध्यक्ष, सेल

रमेश चौहान
प्रमुख, पार्ले कंपनी समूह

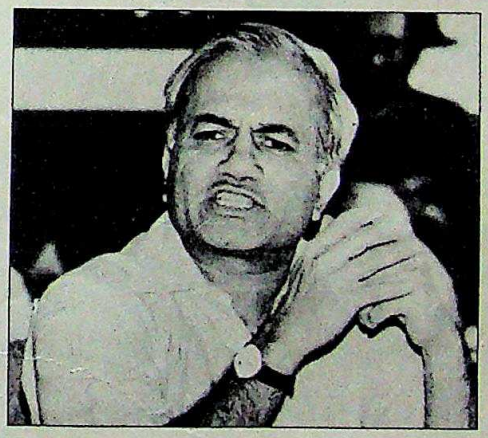

"दुर्भाग्यवश लोग स्कूटर की सीट और बैक-व्यू मिरर तक के लिए विदेशी गठबंधन की वकालत करने लगे हैं. मुझे लगता है कि विदेशी निवेश तकनीकी हस्तांतरण को ध्यान में रखकर होना चाहिए"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी शादी

राहें वही, हमराही बदल गए

दुखद और अस्वाभाविक अतीत से मुक्त होने की कोशिश में दूसरी शादियों का व्यापक प्रचलन

—शाहनाज अंकलेसरिया अय्यर

अब ऐसे युगल पहले से अधिक दिखने लगे हैं. पुरुष बुजुर्ग तथा अक्सर गंजा होता है, तो स्त्री 30 से 40 की उम्र की. यह प्रफुल्लित, नवविवाहित जोड़ा पास-पास बैठा असहज-सा दिखता है. उनकी बातचीत भी अस्वाभाविक होती है. स्त्री अपने पांच साल के आसपास के बच्चे की बातें बताती है तो पुरुष अपनी 21 वर्षीया बेटी की उपलब्धियों को गर्व से सुनाता है.

उच्च मध्यम और उसके ऊपर के वर्ग के पुरुष और महिलाएं भी बेमेल शादियों को तोड़कर नए बंधनों में बंधते जा रहे हैं और इस तरह 'हम दो, हमारे दो' के पारंपरिक नारे से अब लोग 'उसका, उसकी और हमारे' की ओर बढ़ते जा रहे हैं. यह अब हर वर्ग में होता जा रहा है. पत्रकारिता, विज्ञापन एजेंसियां और जनसंपर्क जैसे लकदक पेशों से लेकर नफा-नुकसान देखकर चलने वाले बैंक अधिकारी और यहां तक कि भारतीय परंपरा के स्वयंभू ध्वजवाहक, पुरानी प्रथाएं मानने वाले औद्योगिक घराने भी इसकी चपेट में हैं. नतीजतन पुरानी मान्यताओं को चुनौती मिलने लगी है और ये युगल अपने जीवन की दूसरी अनजानी यात्रा की ओर चल पड़े हैं. इस नई यात्रा में उन्हें चेतावनी देने वाले प्रकाश स्तंभ भी नदारद हैं.

इसके पहले तक बाल-बच्चों वाले किसी धनी-मानी विधुर या तलाकशुदा पुरुष के लिए पारंपरिक 'सुंदर युवती' से शादी करना मुश्किल नहीं होता था. आम तौर पर यह सुंदरी उसकी बेटी से कुछ बड़ी या 'झंझटों से मुक्त निःसंतान विधवा' होती थी. लेकिन आज पेशेवर अधेड़ विधवाएं उन पुरुषों से शादी कर रही हैं जो अपने कैरियर के शिखर पर हैं. और पत्नियां अपने बच्चों समेत दूसरी शादियां कर रही हैं. दूसरी शादियां सिर्फ पहले से शादीशुदा लोगों के ही बीच नहीं हो रही है. यहां तक कि कुंवारे पुरुष और महिलाएं भी उन लोगों से शादी रचा रही हैं जिनका अतीत दुखद या अस्वाभाविक रहा है.

इस प्रवृत्ति की वजहें भी साफ हैं. देश में धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है. अब तलाक एक स्वीकृत विकल्प है. परंपरागत सम्मान का आग्रही मध्यम वर्ग भी अब इससे परहेज नहीं करता. हाईकोर्ट के वकीलों का कहना है कि अब पुरुषों से अधिक महिलाएं तलाक के लिए याचिका दायर कर रही हैं, क्योंकि शादियां अब परिवारों के बीच करार ही नहीं रह गई हैं. नपुंसकता या अनबन जैसी विवाहगत समस्याएं संयुक्त परिवार में खप जाती थीं. लेकिन संयुक्त परिवारों के टूटने और महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ने से पुरुषों और खासकर महिलाओं को व्यक्तिगत चुनाव के अधिक अवसर मिलने लगे हैं.

रेखांकन: जयंती

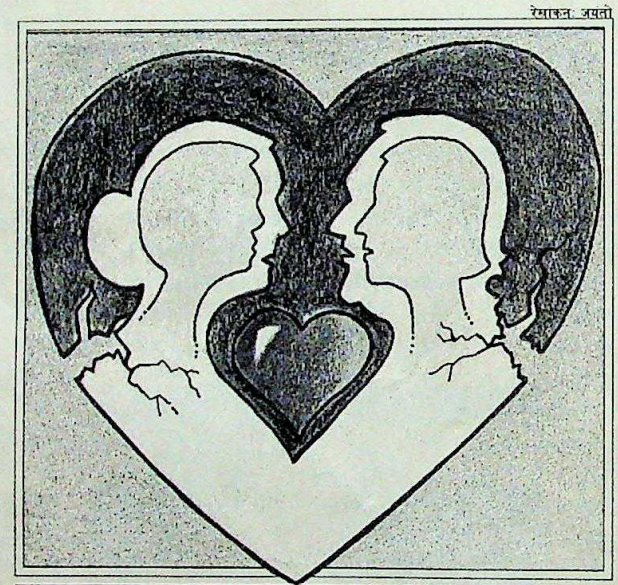

दूसरी शादियां अक्सर कामयाब रहती हैं क्योंकि दूसरी शादी करने वाले अक्सर परिपक्व होते हैं. पिछले अनुभवों से उनमें धैर्य भी आ जाता है, समझदारी भी

बदलाव के दौर में

आज शिक्षित और आत्मनिर्भर कुंवारी महिला अगर बाल-बच्चे वाले तलाकशुदा पुरुष से शादी करे और अतिरिक्त बोझ उठाने को रजामंद होती है तो इसकी वजह यह है कि समाज में स्वीकार्य होने का एकमात्र उपाय शादी ही है क्योंकि आज भी अकेले रहने वाली औरतों को संदेह की नजर से देखा जाता है. बाल-बच्चे वाली तलाकशुदा या विधवा महिलाएं फिर शादी करने को इसलिए तैयार होती हैं कि पति उनके बच्चों को स्थायित्व दे सकेगा जो उसके बुजुर्ग मां-बाप नहीं दे सकते. 40 वर्षीया शीला कहती हैं, "शादी टूटने के बाद मैं मायके लौटी तो मुझे लगा कि मैं फिर मां-बाप पर आश्रित, असहाय लड़की बन गई हूं, जैसी शादी के पहले थी. वे मेरा ज्यादा ख्याल रखने लगे. अक्सर यह पूछा करते कि मैं किसके साथ बाहर जा रही हूं. मैं अपनी व्यक्तिगत अस्मिता गंवाती जा रही थी. स्थिति असहनीय हो गई. फिर भी मैं वहां टिकी रही क्योंकि अलग घर लेकर रहने और बच्चों की पढ़ाई का भारी बोझ उठाने की क्षमता नहीं थी." आखिर शीला ने अपने से अधिक उम्र के एक व्यक्ति से शादी कर ली है. लेकिन बच्चों को अपने मां-बाप के पास ही रखने को मजबूर है क्योंकि उनके पति अपने घर में उन्हें रखना नहीं चाहते. लेकिन वे कहती हैं कि उनके पति उनके बच्चों को आर्थिक मदद देने को प्रतिबद्ध हैं, उनसे मिलने पर स्नेह देते हैं और उन्हें एक ऐसा घर मिल गया जिसकी उन्हें बेहद जरूरत थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन कीमत भी चुकानी पड़ती है...

अकेली महिलाएं भले ही पुराने बने-बनाए सामाजिक ढांचे को चुनौती दे रही हैं पर उन्हें समाज से अलग तरह की दिखने की हिम्मत करने की कीमत भी चुकानी पड़ती है. जब 28 वर्षीया पत्रकार लीला ने अपने सहकर्मी सुरेश से शादी करने का फैसला किया तो उनके तमिल ब्राह्मण मां-बाप बहुत खुश हुए. लीला कहती हैं, "हमारी मान्यताएं एक जैसी थीं. वह मेरी भाषा भी बोलता था." लेकिन उनके पिता को यह नहीं मालूम था कि सुरेश तलाकशुदा हैं और उनके दो बच्चे हैं. आज छह साल बाद भी उनसे यह बात छिपी हुई है. लीला कहती है, "अगर वे जान गए कि मैंने एक तलाकशुदा व्यक्ति से शादी की है तो वे जिंदा नहीं रह सकेंगे."

एक शादी टूटने और दोबारा एक कुंवारे पुरुष से गांठ जोड़ने वाली 40 वर्षीया रीना कहती हैं, "भारतीय लोग खासकर धनी-मानी शिक्षित भारतीय पुरुष पाखंडी होते हैं. महिला को शादी में मर्दे से ही गुजरना होता है, चाहे पहली हो या दूसरी", क्योंकि दूसरी शादी की सफलता के लिए महिला को अपनी पहली शादी से हुए बच्चों को या तो छोड़ना पड़ता है या फिर नए घर में बच्चों को स्थान दिलाने के लिए लगभग निरंतर झगड़ना पड़ता है.

रीना के पूर्व पति धनी व्यवसायी थे. उनकी शादी किशोरावस्था में हुई थी. वे पत्नी को पीटते थे. रीना ने सात साल तक उनके जुल्म सहे. मगर अचानक एक दिन अपनी बेटी का हाथ पकड़ घर से निकल पड़ी. कुछ साल बाद उनकी भेंट 40 वर्षीय कुंवारे विनोद से हुई और उन्होंने शादी करने का फैसला किया. लेकिन विनोद की मां ने इस शादी की बात सुनी तो उन्होंने रीना को अपने घर में आने देने से साफ इनकार कर दिया. आखिरकार उनका मन बदला पर वे इस बात पर अड़ी रहीं कि रीना की 12 वर्षीया बेटी उनके साथ नहीं रह सकती. विनोद ने अपनी पहली बातों को भुलाकर मां के आगे घुटने टेक दिए. अब वे अपनी पति और पिता के घर आना-जाना रखती हैं. पिता के घर ही उनकी बेटी है. इस तरह दूसरी शादी को टूटने से बचाने के लिए वे प्रयासरत हैं.

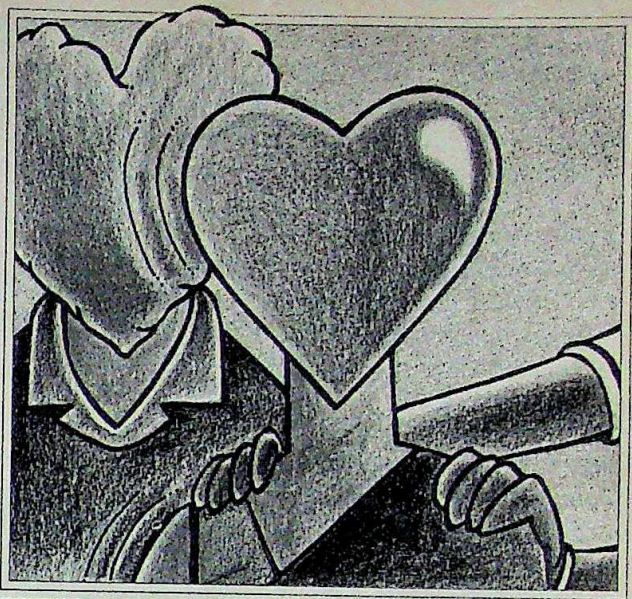

आश्चर्य की बात तो यह है कि दूसरी शादी के प्रति विरोध उन माता-पिता में भी है जिनके अपने बेटे या बेटी तलाक ले चुके होते हैं

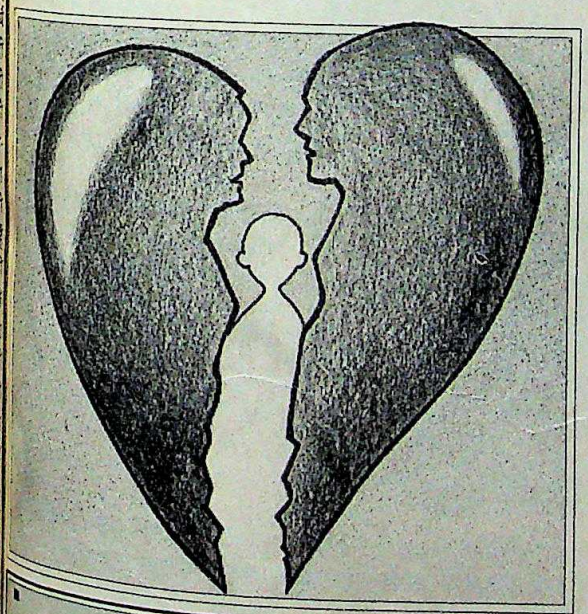

माता-पिता के तलाक से बच्चों का दिल टूट सकता है पर यह बात तो माननी ही पड़ेगी कि खयाल रखने वाले माता-पिता बच्चों को बेहतर जिंदगी दे सकते हैं

माता-पिता की समस्याएं

भारत में परंपरागत संयुक्त परिवार तो टूटते जा रहे हैं पर माता-पिता अपने बेटे के साथ ही रहते हैं. पश्चिम बंगाल के एक विश्वविद्यालय में लेक्चरर कुंतला ने सौमित से शादी करना चाहा तो सौमित के मां-बाप 'किसी अपवित्र महिला' से अपने बेटे की शादी के विचार से भन्ना उठे. कुंतला तलाकशुदा थीं और 12 साल के बेटे की मां थीं. सौमित ने भी संकोच के साथ माना, "पहले मैं भी किसी तलाकशुदा महिला से शादी करने की बात नहीं सोचता था." वे तभी झुके जब उन्हें एहसास हो गया कि सौमित इस शादी के लिए कटिबद्ध हैं.

आश्चर्य तो यह है कि ऐसी ग्रंथियां उन मां-बापों में भी हैं जिनके अपने लड़के-लड़कियों का ही तलाक हो चुका है. सुधा के पति शादी के महीनों बाद ही गुजर गए और इस दुखद घटना के बाद उनके बेटे का जन्म हुआ. सुधा को अपने दूसरे पति के मां-बाप की ओर से भारी विरोध सहना पड़ा था. हालांकि उनके दूसरे पति भी तलाकशुदा पिता थे. सुधा क्षोभ के साथ कहती हैं, "आप जानते हैं कि विधवा अपवित्र मानी जाती है. मैं आत्मनिर्भर हूं. उन्हें लगा कि मैं हर किसी के साथ सोती रही हूं जैसा कि तलाक के बाद उनका बेटा किया करता था."

बच्चों की बात....

भले ही औरत की शादी पहली बार हुई हो पर दूसरी बीवी के तौर पर आने वाली औरत अक्सर यही पाती है कि उसका अपने पति के बच्चों पर कोई अधिकार नहीं है. लीला हालांकि अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल स्वभाव वाले सहयोगी पति की तारीफ करती हैं पर पति के बच्चों से संबंधित मामलों में उसकी राय ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं होती. अक्सर दूसरी शादी के बाद लोग बच्चे न पैदा करने का फैसला कर लेते हैं और अक्सर ऐसा फैसला करने में जीवन साथी की स्वीकृति भी नहीं ली जाती. प्रिया के पति अशोक ने दूसरी शादी करने के लिए उसे छोड़ दिया. अब प्रिया अपने पति की दूसरी बीवी से काफी परेशान है. अशोक का अपनी बेटी से काफी मोह है जिससे मिलने के लिए वे हर शाम प्रिया के घर जाते हैं. प्रिया ने बताया, "उन्होंने बच्चे पैदा करने का विचार छोड़ दिया क्योंकि अशोक अपनी बेटी को आहत नहीं करना चाहते थे. अब बहुत देर हो चुकी है. और वे अपनी बेटी से पूछते हैं कि अगर वे बच्चा गोद ले लें तो उसे कोई एतराज तो नहीं होगा." 10 साल की वह बच्ची अशोक की जिंदगी में 'दूसरी औरत' बन चुकी है. प्रिया मानती है कि उसे यह सोचना भी अखरता है कि उसकी बेटी अशोक की बीवी को सौतेली मां कहे, "मैं सोचती थी कि सौतेली मां तो तब ही होती है जब मां गुजर चुकी हो. अब मुझे लगता है कि मैं गलत थी. पर मेरा अहं इसे स्वीकार नहीं करता." प्रिया को इस बात पर हैरत है कि उसकी सौत किस तरह से अपनी सौतेली बेटी को पढ़ाने के लिए घंटों उसके साथ रहती है, उसका गुस्सा तक सहती है.

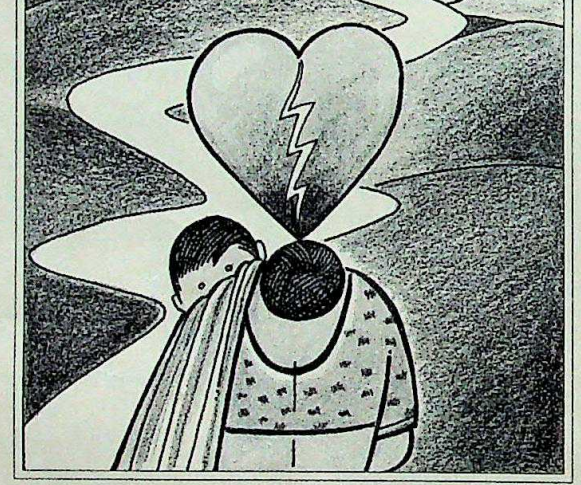

संयुक्त परिवारों के टूटने और महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता के कारण उनके लिए विकल्प चुनने की आजादी बढ़ी है

कई दूसरी शादियां पहली शादी से हुए बच्चों के कारण टूट जाती हैं. अपने मां-बाप की टूटी शादी से आहत और परेशान बच्चे उस समय आक्रोश प्रकट करते हैं जब उनसे अभिभावक की जिंदगी में आए नए शख्स से प्यार करने को कहा जाता है. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में मनोचिकित्सा विभाग के अध्यक्ष डॉ. मोहन राम का कहना है कि "लोगों के दिमाग में सौतेली मां और सौतेले बाप की एक खास छवि अंकित है. उन्हें सौतेले बरताव की आशंका होती है, जो नहीं भी हो सकता."

बच्चे अपने और बड़ों के बीच एक खास तरह के तालमेल से जीते हैं. नया तालमेल बिठाने में समय लग जाता है. सौतेले अभिभावक अगर बच्चे की जिंदगी में बड़ा बदलाव लाना चाहें तो उन्हें काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है. मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि अगर मां दूसरी बार शादी करे तो तालमेल की समस्या और भी बड़ी हो जाती है क्योंकि मां और बेटे में संबंध ज्यादा प्रगाढ़ होते हैं.

लेकिन एक तनावग्रस्त दंपती के साथ जीने वाला वह बच्चा, जिसका इस्तेमाल दोनों को जोड़ने में होता है, उस बच्चे से ज्यादा तनाव झेलता है दो दूसरी शादी करने वाले दंपती के साथ जिंदगी गुजारता है. ज्यादातर बच्चे यह नहीं समझ पाते कि जब वे माता-पिता दोनों को बराबर प्यार करते हैं तब फिर उनके साथ वैसा व्यवहार क्यों किया जाता है. उनकी वफादारी को लगातार विभाजित क्यों कर दिया जाता है. इसका उनके विकास पर उलटा असर पड़ सकता है.

लेकिन वीर जैसे पति भी हैं जो यह मानते हैं कि वह औरत भी, जो बच्चे की असली मां नहीं है, बच्चे को पिता जितना ही प्यार कर सकती है. उनका कहना है, "दरअसल मैं तो इस बात के लिए अपनी बीवी का शुक्रिया भी नहीं अदा कर सकता कि उसने मुझे ज्यादा बेहतर बाप बनने की चुनौती दी. ज्यादातर मां-बाप अपना मतलब साधने के लिए बच्चे का इस्तेमाल करते हैं. वे मानते हैं कि गोद लेने की तरह ही दूसरी शादी से भी अभिभावकत्व की परंपरागत धारणाएं टूटती हैं. "बहुत से दंपती सिर्फ बच्चों के लिए ही दुखी जिंदगी जीते हैं. यह बेवकूफी है. मां-बाप के तलाक से बच्चों का दिल टूट सकता है पर यह बात तो माननी ही पड़ेगी कि खयाल रखने वाले मां-बाप बच्चों को जितनी बेहतर जिंदगी दे सकते हैं, उतनी आपस में लड़ते-झगड़ते मां बाप नहीं."

पर वीर जैसे लोग अपवाद ही हैं. सलाहकारों की आम राय यही है कि दूसरी शादी तभी ठीक रहती है जब बच्चों की देखभाल के लिए दादा-दादी या नाना-नानी हों क्योंकि नई जोड़ी तो अपने रिश्ते जमाने में ही खासा समय ले लेती है. दादा-दादी आदि ज्यादा परिपक्व होते हैं, हालात की नजाकत समझने का माद्दा उनमें ज्यादा होता है, और फिर दूसरी शादी कामयाब हो इसमें उनके निहित स्वार्थ भी होते हैं. वे बीत चुके और नए हालात के बीच एक कड़ी भी बन जाते हैं.

बदकिस्मती से देश में वैवाहिक मामलों में सलाह देने वाले ऐसे बहुत कम ही केंद्र हैं जिन्हें व्यावसायिक सलाहकार चलाते हों, अक्सर यह काम सामाजिक कार्यकर्ता या मनोविज्ञान के स्नातकोत्तर करते हैं जिसे व्यावसायिक मनोवैज्ञानिक नाकाफी मानते हैं.

और अचरज तो यह...

सारी समस्याओं के बावजूद दूसरी शादियां अक्सर कामयाब रहती हैं. दूसरी शादी करने वाले अक्सर परिपक्व होते हैं जिन्होंने तमाम बाधाओं के बाद शादी की होती है. पिछले अनुभवों से उनमें धैर्य भी आ जाता है, समझदारी भी और लोगों से बरताव करने के लिए काफी हद तक लचीलापन भी. जैसा कि वीर का कहना है, "दूसरी शादी में आप सिर्फ खुशी और प्यार ही नहीं बांटते, आप दर्द को भी बांटते हैं. आग से गुजरे लोगों का यह रिश्ता आसानी से तोड़ा भी नहीं जा सकता."

पहचान छिपाने के लिए लोगों के नाम बदल दिए गए हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली

बुजुर्गों से बर्बरता

दिल्ली की संभ्रांत बस्तियों में बुजुर्गों की हत्याएं

राजधानी के अख-अखबारों में पिछले कुछ सप्ताह से एक खास किस्म की भयावह खबरों का ऐसा सिलसिला बंध गया है जिसने नागरिकों, खासकर अकेले रहने वाले बुजुर्गों के मन में खौफ पैदा कर दिया है. पिछले तीन महीने में शायद ही कोई हफ्ता बीता होगा जब किसी वृद्ध की हत्या की दिल दहला देने वाली एक-दो खबरें न छपी हों. इसे महज एक दुखद संयोग कहा जाए या अपराधियों का सोचा-समझा नया अभियान कि इनमें से अधिकांश हत्याएं नगर के अपेक्षाकृत अधिक संभ्रांत माने जाने वाले दक्षिणी क्षेत्र में हुई. लगभग सभी मामलों में हत्यारों के शिकार ऐसे बेबस वृद्ध लोग थे जो अपने घर में अकेले रहते थे. इनमें से अधिकांश हत्याओं का उद्देश्य डकैती ही थी. 3 मई की दोपहर न्यू राजेंद्र नगर की 42 वर्षीया बेबी कुमार अपने नौकर के साथ घर में थीं और कनॉट प्लेस स्थित अपने रेस्तरां जाने के लिए मैनेजर का इंतजार कर रही थीं. तभी घर में दो व्यक्ति घुस आए. पहले उन्होंने नौकर पर चाकुओं से हमला किया और फिर बेबी कुमार को गरदन पर नाई वाला उस्तरा फेर दिया. इसी बीच दरवाजे पर मैनेजर ने घंटी बजाई. जब तक घायल नौकर दरवाजा खोलता तब तक हत्यारे लगभग 60 हजार रु. की नकदी लेकर पिछले दरवाजे से भाग चुके थे और बेबी कुमार दम तोड़ चुकी थीं. हत्याकांड के समय उनका इकलौता 20 वर्षीय पुत्र आकाश कॉलेज गया हुआ था.

6 मई की सुबह साढ़े दस बजे के करीब दक्षिण-पश्चिम दिल्ली के आर.के. पुरम क्षेत्र में रहने वाली 62 वर्षीया बलबीर कौर पूजा-पाठ में व्यस्त थीं और उनका 12 वर्षीय नौकर रसोई में खाना पका रहा था. अचानक 25-26 साल की उम्र वाले चार युवक उनके घर में घुसे. उन्होंने नौकर को रस्सी से बांध दिया और बलबीर कौर के मुंह में कपड़ा ठूंस दिया जिससे दम घुटने से उनकी मृत्यु हो गई. ये युवक टेप रिकार्डर, रेडियो, घड़ी, सोने का हार और कुछ रुपए उठा ले गए.

इससे ठीक एक हफ्ता पहले दक्षिण दिल्ली की एक रईस बस्ती ग्रीन पार्क एक्सटेंशन में रहने वाले 75 वर्षीय अमर सिंह सचदेव को घंटी बजाकर दो-तीन युवकों ने दरवाजे पर बुलाया और उन्हें चाकुओं से गोद डाला. जिससे केवल दो दिन पहले ही सफदरजंग एन्क्लेव में रहने वाले 75 वर्षीय दयाल सिंह और उनकी 70 वर्षीया पत्नी दुलारी देवी की कुछ अज्ञात लोगों ने आधी रात के समय गला घोंटकर हत्या कर दी थी.

एस.एन. सिन्हा /हिंदुस्तान टाइम्स

सफदरजंग में एक वृद्ध दंपती की हत्या के बाद पुलिस जांच दल

बुजर्गों की हत्याओं से पुलिस व्यवस्था से भरोसा उठता जा रहा है और असुरक्षा घर करती जा रही है

इस कांड से तीन दिन पहले 25 अप्रैल को दक्षिण दिल्ली की एक अन्य रईस बस्ती डिफेंस कॉलोनी में भी 68 वर्षीया शकुंतला देवी की हत्या ठीक ऐसी ही की गई. पुलिस ने बाद में घर की पुरानी नौकरानी और उसके पांच युवा साथियों को गिरफ्तार करके उनसे शकुंतला देवी के गहने बरामद किए. हत्याओं के इस क्रम में 10 अप्रैल के दिन राजेंद्र नगर में ठाकुर दास बजाज और उनकी पत्नी 18 अप्रैल को पंचशील पार्क में रहने वाले 71 और 65 साल के मित्तल दंपती 19 तारीख को ईस्ट पटेल नगर की 70 वर्षीया कुलवंत चड्ढा की जघन्य हत्याओं की खबरें पहले से ही राजधानी खौफ पैदा कर चुकी थीं.

बुजुर्ग नागरिकों की हत्याओं के इस अंतहीन सिलसिले ने न केवल पुलिस व्यवस्था की विश्वसनीयता और कार्यक्षमता पर सवालिया निशान लगा दिए हैं बल्कि उन हजारों बुजुर्गों के मन में असुरक्षा का जहर घोल दिया है जो किन्हीं कारणों से अकेले रहते हैं. हालांकि इन वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा के लिए दिल्ली पुलिस ने कई कदम उठाने का आश्वासन दिया है लेकिन इन पर सहज ही विश्वास नहीं हो पाता.

दक्षिणी और दक्षिण-पश्चिम दिल्ली पुलिस के अतिरिक्त आयुक्त संतोष कुमार केन का इस संदर्भ में पुलिस की गिरती साख से परेशान होना स्वाभाविक ही है. अपने इलाके में अप्रत्याशित रूप से एक के बाद एक हुए इन हत्याकांडों के बारे में उनका कहना था, "यह संयोग ही है कि एक छोटे से दौर में इस तरह की कई हत्याएं हो. अधिकांश हत्याएं इन वृद्धों के नौकरों या जान-पहचान वाले लोगों ने ही की हैं."

ऐसी हालत में अपनी साख को बचाने के लिए जो कुछ किया जा सकता है दिल्ली पुलिस पिछले एक के दो महीने से वह सब करने की कोशिश कर रही है. केन के अनुसार उनके क्षेत्र के थानों में ऐसे सभी वृद्धों की सूचियां बनाई जा रही हैं जो अकेले रहते हैं. लोगों से अपने नौकरों की पुलिस शिनाख्त कराने को भी कहा जा रहा है. पुलिस गाड़ियों को गलियों में गश्त करने के निर्देश दिए गए और रास्ते में अवरोध लगाकर संदिग्ध लोगों की मेटल डिटेक्टर से जांच शुरू कर दी गई. इसी तरह 'पड़ोस रखवाली योजना' को सक्रिय करने और मुहल्ला सुधार समितियों के सहयोग पाने के प्रयास भी तेज किए गए हैं. लेकिन पुलिस के ये प्रयास नागरिकों में सुरक्षा की भावना कहां तक पैदा कर पाते हैं यह देखना फिलहाल बाकी है.

—विजय क्रान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-34

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

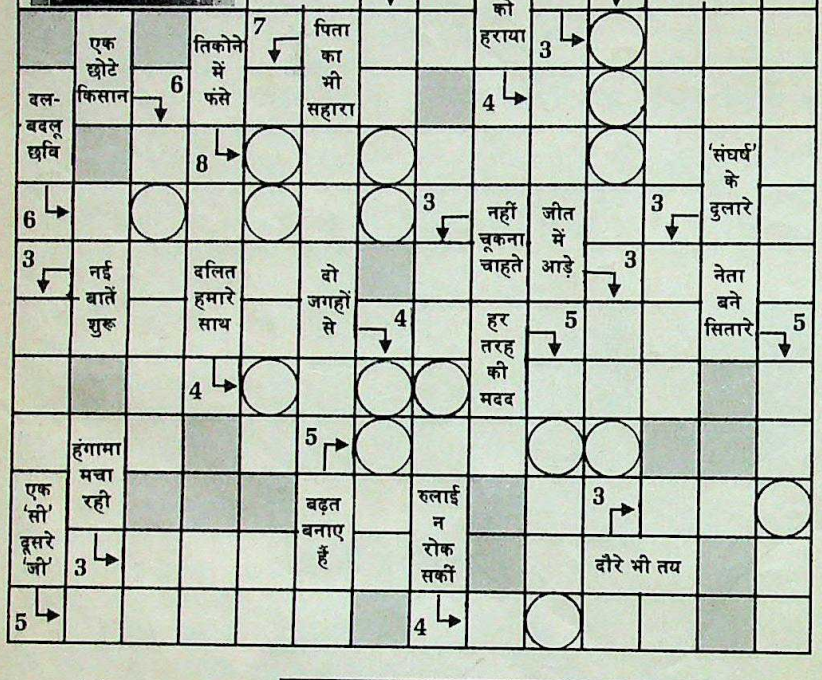

नाम _____

पता _____

पिन _____

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-34, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि:
5 जुलाई 1991
उत्तर के लिए देखें:
16-31 जुलाई 1991 का अंक

► यह पहेली शब्दश: इंडिया टुडे के 31 मई 1991 के अंक पर आधारित है.

► वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.

► तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.

► तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.

► वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुन: होगा.

► मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.

► सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.

► लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

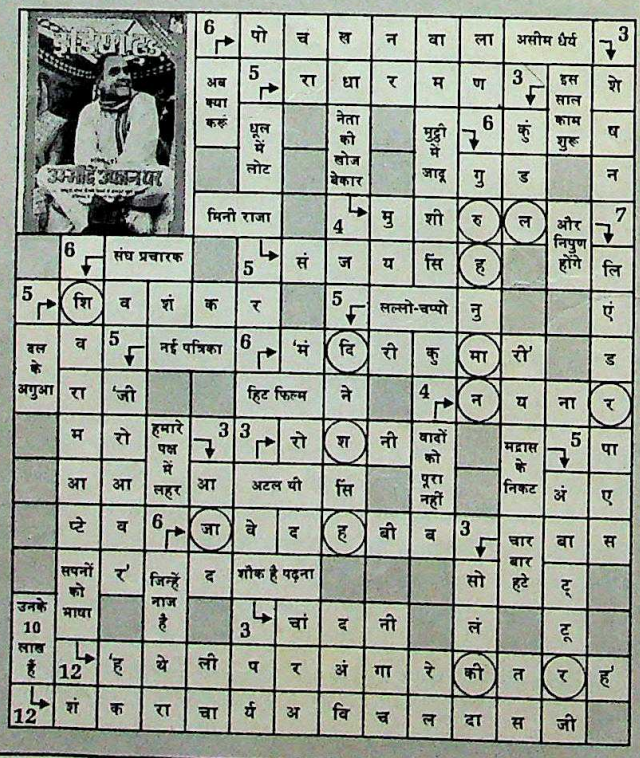

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-32 का हल

पुरस्कार विजेता

सुनीता गुप्ता
प्लॉट संख्या-53, एम.आई.जी.
रामघाट रोड
अलीगढ़ (उ.प्र.)

राजेश रमण शर्मा
उमेश प्रसाद सिंह
जगत नारायण रोड,
पटना, बिहार-800003

भारत भूषण पुरोहित,
जूना बाजार,
आलोट (रतलाम)-457114

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं.
विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओरिएण्टल

एक पहचान

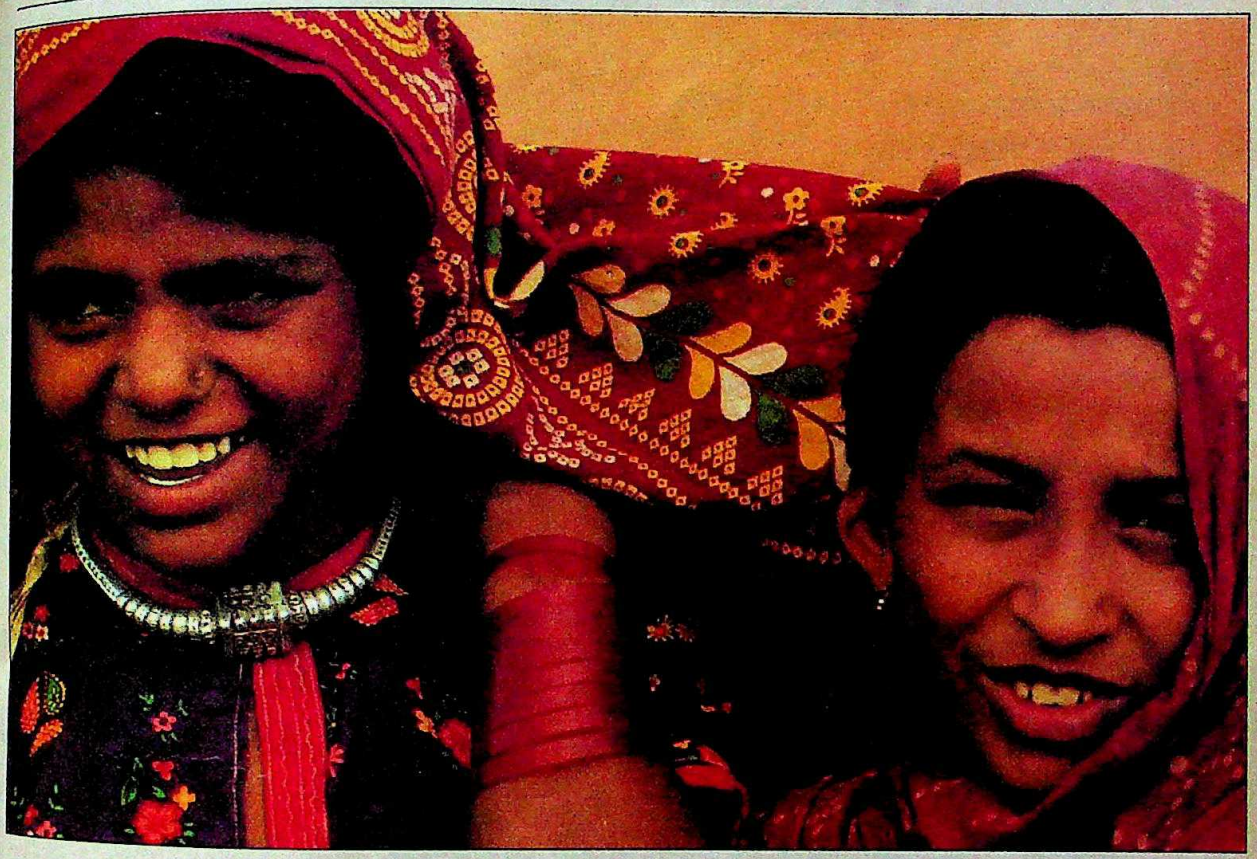

हमारा सर्वाधिक लाभांश

दुख दर्द मिटाना मुस्कान खिलाना

हम मानते हैं कि लाभांश निवेश पर लाभ का प्रतीक है और किसी कम्पनी की सफलता का बढ़िया पैमाना है। जहाँ तक हमारा सवाल है, हम तो पिछले कई वर्षों से 35% लाभांश लगातार देते आ रहे हैं।

ओरिएण्टल में हमें यह भी सन्तोष है कि हमने उन लक्ष्यों को हासिल करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिनके लिए 1972 में साधारण बीमा उद्योग का राष्ट्रीयकरण किया गया था। हमने बीमा का सन्देश, इस विशाल देश के कोने-कोने तक पहुंचाया है। शहरों में सीमित बीमा सेवाओं को गरीब-अमीर, हर वर्ग तक, दूर-दराज़ के लोगों तक, गांवों, मण्डियों और कस्बों तक पहुंचाकर सारा नक्शा ही बदल दिया है। हम केन्द्रीय सरकार की ओर से, देश के उत्तरी हिस्सों में व्यक्तिगत दुर्घटना सामाजिक सुरक्षा बीमा और झोंपड़ी-बीमा योजनाओं का संचालन भी करते हैं। इन योजनाओं से लाभान्वित निर्धन परिवारों को कोई प्रीमियम नहीं देना पड़ता।

प्रिय ग्राहकगण,

हमें अपनी भूमिका और योगदान पर, वास्तव में गर्व है। जो हम निभाते हैं अपने सामाजिक वायदों को पूरा करने में। आपकी और सबकी जरूरतों को पूरा करने में। यह ध्यान रखने में कि तमाम अनिश्चितताओं के बावजूद जीवन की गाड़ी बराक-टाक चलती रहे।

प्रिय पॉलिसी-धारक,

हमारा सर्वाधिक लाभांश है लोगों की आँख के आँसू पोंछने और हर चेहरे पर मुस्कान खिलाने के लिए हमारे निरन्तर प्रयास।

दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड

(जनरल इंश्योरेंस कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया की सहायक कम्पनी)

ग्राहकों से सौजन्य—

ओरिएण्टल की विशिष्ट परम्परा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैन समुदाय

संन्यास लेने का शाही अंदाज

अहमदाबाद के करोड़पति अतुल जैन ने लाखों लुटाकर फकीरी ओढ़ ली

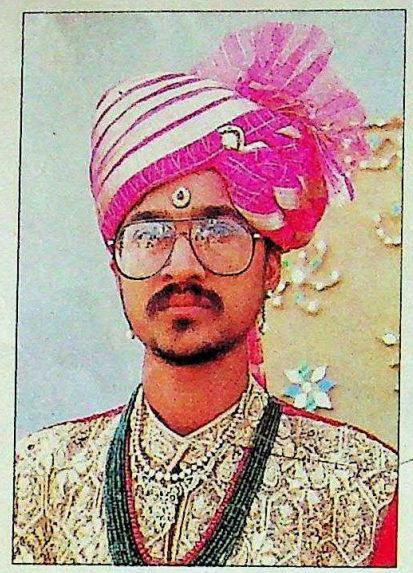

विसंगतियों का इतना अद्भुत समागम कम ही होता है. हीरों का करोड़पति व्यापारी फकीर बन गया. और इसका समारोह—वर्षीदान दीक्षा समारोह—इतने भव्य ढंग से हुआ कि शानदार से शानदार पार्टी भी इसके सामने फीकी लगे. इस करोड़पति व्यापारी अतुल शाह ने जो बेशकीमती हीरे, जवाहरात लुटाए उन्हें जैन मुनियों ने पवित्र उपहार समझकर श्रद्धा से ग्रहण किया. जो ज्यादा दुनियादार थे उन्होंने यह सोचकर लूट लिया कि इन्हें नकदी में बदला जा सकता है. और सब अतुल के गुण गा रहे थे.

29 साल के इस दुबले-पतले व्यापारी ने अपनी सारी जिंदगी उस आरामतलबी में गुजारी थी जिसे दौलत से खरीदा जा सकता है. पर उसे फकीरी का मोह ऐसा लगा कि सारी दौलत ठुकरा दी. 1 जून की सुबह अतुल ने अपना वर्षीदान (सांसारिक

40 लाख से अधिक परिवारों को आज भी इस बात की खुशी है कि उन्होंने केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर ही चुना.

(जिन्होंने नहीं चुना, उनकी खुशी ... भगवान ही जाने)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

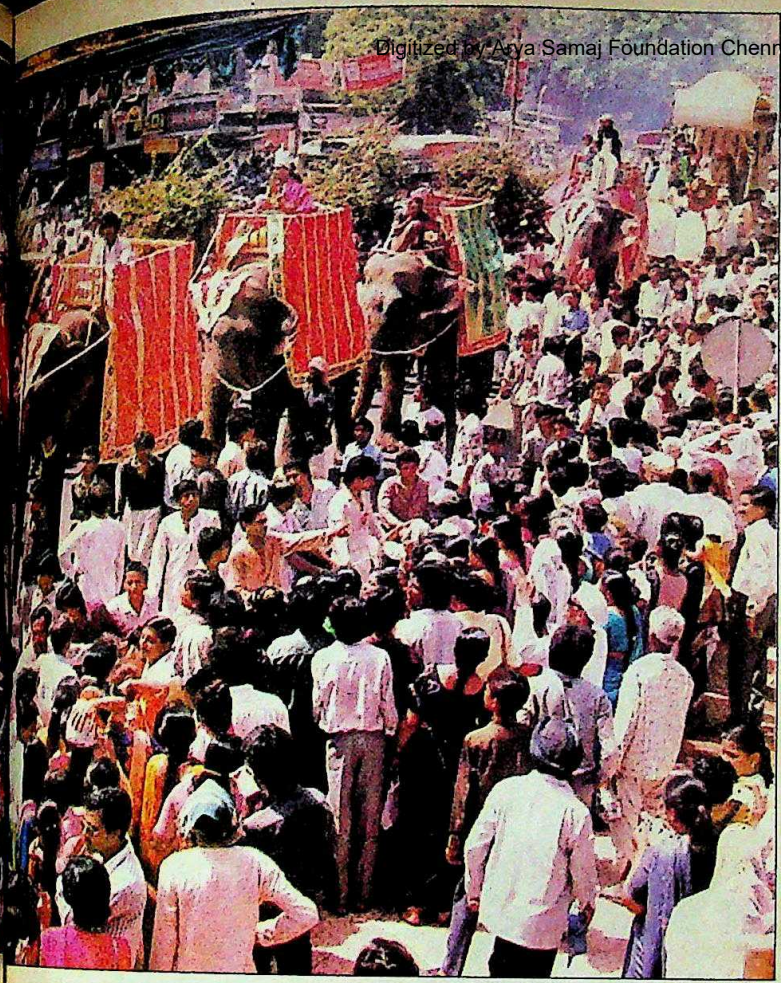

सुधीर सी. शाह

अतुल (बाएं); 60 लाख के जेवरात से सजी पोशाक में; और शोभायात्रा

धन-दौलत का त्याग) जरी की कढ़ाई वाली चमकदार लाल अचकन पहनकर किया. उनके गले में हीरों से जड़ा हार था, हथेलियां मोटी-मोटी सोने की अंगूठियों से लकदक थीं. उनका शरीर ही 60 लाख रु. के जेवरात से सजा था. और जब उनकी शोभायात्रा शुरू हुई तो वे सात हाथियों वाले, चांदी से मढ़े रथ पर सवार थे. इसके पीछे 50 सुसज्जित घोड़े थे, 40 ऊंट गाड़ियां थीं और लोकनर्तकों के ढेर सारे दल थे. शोभायात्रा आठ किलोमीटर तक चली. बेशुमार धन-दौलत की इस शोभायात्रा में अतुल ने सोने व चांदी के सिक्के और कभी-कभी मोती व हीरे लुटाए. एक अनुमान के अनुसार इन जवाहरात की कीमत 2.50 लाख रु. के आसपास थी.

इस दिन अहमदाबाद के लोगों को गरमी, धूप या लू की कोई परवाह नहीं थी. वे सड़कों पर लुटाई जा रही दौलत बटोरने टूट पड़े थे. एक खुशकिस्मत कपड़ा मिल मजदूर के हाथ मोती लग गया. उसने बताया, "मैंने सुना कि सिक्के और मोती लुटाए जा रहे हैं तो मैं भी जुलूस में शामिल हो गया. अब मैं इसे गहने में जड़वाऊंगा."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोभायात्रा के दौरान जवाहरात लुटाते अतुल (ऊपर); और दीक्षा ग्रहण

आदित्य मेहता/इंडिया टुडे

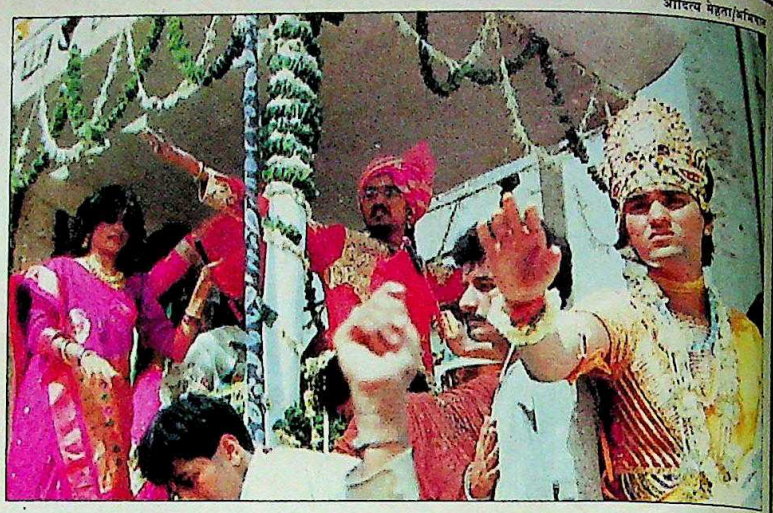

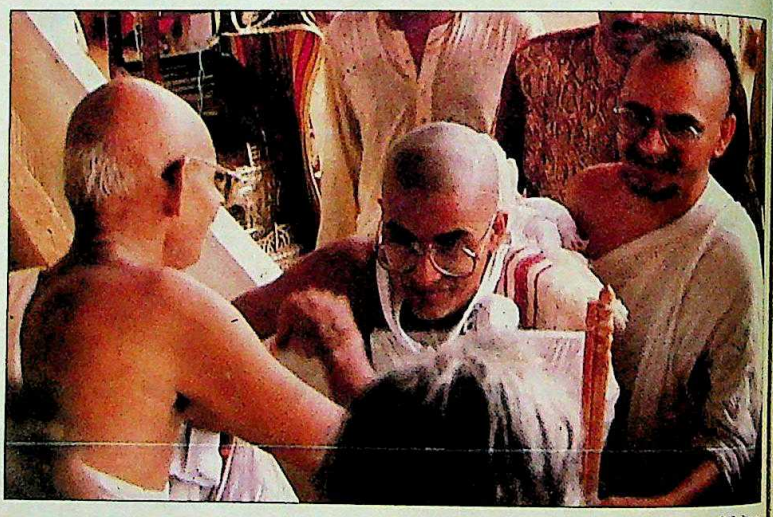

मनत आवेरी ऐंड ब

धार्मिक किस्म के जैनियों में इस त्याग के लिए सम्मान का भाव था. कपड़े के व्यापारी विनोदभाई पारीख को सोने का सिक्का मिला. उन्होंने बताया, "हम वर्षीदान के दान को पवित्र मानते हैं. अगर इसे गले में बांधा जाए तो यह सिक्का सारी बीमारियां दूर कर देगा. हमें इससे आध्यात्मिक प्रेरणा मिलती है."

भौतिक विश्व से अतुल की विदाई अगले दिन तब हुई जब एक वरिष्ठ जैन मुनि ने दीक्षा की रस्म पूरी की. इसके लिए भी बाकायदा एक समारोह हुआ. सरदार पटेल स्टेडियम में तकरीबन 1.50 लाख लोग जमा हुए. अतुल खास तौर से बनाए मंडप में आए जहां भक्ति गीत गाए जा रहे थे. उनके रिश्तेदारों ने उनसे विदाई के प्रतीक स्वरूप उनके माथे पर टीका लगाया. उनके पिता दलपत, जो परिवार के हीरे के व्यापार (वार्षिक कारोबार: 100 करोड़ रु.) के मुखिया हैं, परेशान से दिखे—अपनी मेहनत की कमाई को लुटता देख या बेटे से बिछोह के कारण. लेकिन अतुल की मां खुश थीं. वे अपने बेटे को आशीषें दे रही थीं, "मेरे बेटे को अब किसी और मां के गर्भ से जन्म नहीं लेना पड़ेगा." सबसे बुजुर्ग जैन मुनि 97 वर्षीय आचार्य रामचंद्र सुरेश्वर जी महाराज ने इसके बाद अतुल को जैनियों का परंपरागत 'ओघो' (कपड़ा बंधा हुआ दंड) भेंट किया. इसके बाद अतुल का मुंडन किया गया.

यह दिन तो गिनीज़ बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के लायक था. पहली बात तो यह कि अहमदाबाद का तापमान 45 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया. किसी को याद नहीं कि इसके पहले यहां कभी तापमान इतना चढ़ा था. इसके बाद जैन व्यापारियों में होड़ लग गई कि अतुल का नया नाम घोषित करने की जिम्मेदारी लेने के लिए कौन कितना ज्यादा दान कर सकता है. बोली 2.50 लाख रु. से शुरू हुई और फिर चढ़ती ही गई. पर आखिर में बाजी एंटवर्प के हीरों के व्यापारियों के हाथ आई जिन्होंने 15 लाख रु. दान किए. पर त्याग के अंदाज में उन्होंने इसका अधिकार अतुल के परिवार को दे दिया. और अतुल का नया नाम हो गया—मुनि हितरुचि जी विजय जी महाराज. इस पूरी प्रक्रिया में तकरीबन 90 लाख रु. का दान इकट्ठा हो गया. दीक्षा के बाद भंडारे में डेढ़ लाख लोग शामिल थे.

अतुल के परिवार के कुल 1.50 करोड़ रु. की चपत लगी. तकरीबन 35 लाख रु. तो कैलेंडर के आकार के 5,000 निमंत्रण पत्र छापने में ही खर्च हो गए. हर निमंत्रण पत्र के साथ 600 रु. कीमत का 50 ग्राम का चांदी का सिक्का भी था.

भव्यता के इस पूरे प्रदर्शन के विरोध की छोटी-सी आवाज भी उभरी. समारोह में शामिल रहे अमरजीत सिंह सूरी का कहना था, "अगर अतुल वास्तव में मोक्ष पाना और गरीबों की सेवा करना चाहता है तो उसे अपनी सारी दौलत किसी ट्रस्ट को दान कर देनी चाहिए ताकि स्कूल और अस्पताल चलाए जा सकें." कुछ जैनियों ने भी इसे पसंद नहीं किया. एक छोटे व्यापारी सतीशभाई शाह का सवाल था, "संन्यास के लिए इतने प्रदर्शन की क्या जरूरत? इसे सौम्य तरीके से भी किया जा सकता था."

पर मुनि हितरुचि जी विजय जी अपने इस तरीके को सही मानते हैं, "मेरा विचार संन्यास के महत्व को प्रदर्शित करने का था. मैं चाहता था कि आरामतलबी और दौलत के पीछे पगलाए अमीर इसे देखें." उत्तरी गुजरात में पालनपुर के पास एक छोटे-से गांव में पैदा हुए अतुल के दिमाग में संन्यास की बात पहली बार तब आई जब वे 1983 में जैन मुनि चंद्रशेखर विजय जी से मिले. उनकी बातों का अतुल पर ऐसा असर हुआ कि उसे लगने लगा कि उसकी मंजिल कुछ और है. पर मां के अलावा पूरे परिवार ने भारी विरोध किया. अंततः वे अतुल को उसकी राह से डिगा नहीं सके. इस फैसले से पहले वे एक सामान्य शरारती युवक ही थे जिन्हें एक बार कॉलेज होस्टल से निकाल दिया गया था. क्रिकेट और फिल्मों के तो वे दीवाने थे. पर यह सारी दीवानगी अब बीते कल की बात हो चुकी है. वे पूरे साहस से स्वीकार करते हैं कि अपने इस नए जीवन में उन्हें कविताओं और किताबों का अभाव खलेगा. भविष्य में वे सिर्फ जैन ग्रंथों के पन्ने ही पलट सकेंगे.

—उदय माहूरकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं

ओनिडा टी वी से ईर्षा न कीजिए. खरीद लीजिए.

ओनिडा २१

पड़ोसियों की जले जान. आपकी बढ़े शान.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोनिया गांधी

आधा-अधूरा जीवन

खुशहाल जीवन को तहस-नहस कर देने वाली उस मनहूस घड़ी के दो हफ्ते बाद सोनिया, राहुल और प्रियंका अपने बिखरे जीवन के टुकड़ों को जोड़ने में लगे हैं

—हरिंदर बवेजा

राजीव गांधी की मौत के बाद उनके निवास 10, जनपथ पर एक भयावह सन्नाटा छाया है. जनता की पहुंच से दूर भारी सुरक्षा से घिरा यह बंगला अब उजाड़ किले जैसा लगता है. यहां के बाशिंदों का जीवन एक मनहूस घड़ी में तहस-नहस हो गया. तब से दो हफ्ते बीत चुके हैं और सोनिया, राहुल और प्रियंका अपने बिखरे जीवन को जोड़ने की कोशिशों में जुटे हैं.

राजीव के बिना जीवन? सोनिया, राहुल और प्रियंका के लिए यह एक भयावह सवाल है, जिसका जवाब उन्हें कभी नहीं मिलेगा. कड़ी सुरक्षा में जी रहे इस खुशहाल परिवार के केंद्र राजीव ही थे. उन्होंने ही सोनिया के जीवन को संवारा था. और बच्चे तो उन्हें अपना आदर्श मानते ही थे.

सोनिया के सामने सहसा एक बड़ा शून्य आ खड़ा हुआ है. उन्हें अब वही काम करने पड़ रहे हैं, जिन्हें अब तक वे भरसक टालती आ रही थीं. मसलन, इंका नेताओं, कार्यकर्ताओं और दूसरे विशिष्ट अतिथियों की अगवानी के लिए बंगले के ही अहाते में बने दफ्तर तक जाना. अब तक घर और दफ्तर के बीच स्पष्ट विभाजन रेखा थी. राजीव घंटों पार्टी कार्यकर्ताओं से सिर-खपाई करके घर लौटते तो सोनिया उनके स्वागत को तैयार रहतीं.

अब सोनिया को ही पति के दफ्तर में लोगों से मिलना पड़ रहा है. उनसे मिलने के लिए 10, जनपथ पर आवेदनों का तांता लगा रहता है. असल में राजीव के अंतिम संस्कार के बाद से ही लोग सोनिया के पास आने शुरू हो गए थे. कई राज्याध्यक्षों ने संदेश भिजवाया कि वे व्यक्तिगत रूप से अपनी संवेदना व्यक्त करना चाहते हैं. थकी-मांदी सोनिया और उनके बच्चे अतिथियों की अगवानी के लिए रात 1 बजे तक जगे रहते.

तब तय किया गया कि मिलने वालों के लिए वक्त नियत किया जाए, क्योंकि दिन भर लोगों से मिलते रहना सोनिया के लिए संभव नहीं था. सोनिया अपने बिलकुल करीबी लोगों या राष्ट्रपति वेंकटरामन के अलावा हर अतिथि से संयत भाव से मिलतीं. बल्कि उनसे मिलने आए लोग ही राजीव को याद करके फूट पड़ते. मिलने वाला हर आदमी खुशकिस्मत अतीत के उन दिनों की याद दिला देता जो अब कभी नहीं लौटेंगे.

अब वे हर रोज शाम पांच से सात बजे तक लोगों से मिलती हैं. मिलने से पहले वक्त लेना होता है. और यह मुलाकात पांच से दस मिनट की ही होती है. उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यालय आवेदनों में से नाम छांटकर उनकी मंजूरी लेता है, और मिलने वालों से अनुरोध किया जाता है, वक्त सीमित दिया गया है, ताकि आप अपनी संवेदना व्यक्त कर सकें. इसलिए कृपया ऐसा कुछ न करें जिससे हम परेशान हो जाएं." यह अनुरोध विशेषकर इंका नेताओं और सांसदों के लिए होता है, जिन्हें अब भी उम्मीद है कि शायद राजनीति में आने के बारे में वे दोबारा विचार करें.

उनकी एक घनिष्ठ मित्र बताती हैं, "उन्हें सबसे ज्यादा ठेस इसी ख्याल से पहुंचती है. पति की मौत के सदमे से वे अभी उबरी भी नहीं हैं. और फिर वे पति के राजनीति में आने के बिलकुल खिलाफ थीं. पता नहीं वे इतने संवेदनहीन क्यों हो जाते हैं. सुकून होने के लिए उन्हें एकांत चाहिए." और उनके परिवार को सुकून होना ही बहुत कठिन लग रहा है. मौत के सदमे के अलावा वे उस त्रास से भी नहीं उबर पा रहे हैं, जो राजीव की नृशंस हत्या के कारण है.

राहुल और प्रियंका तो नृशंसता के इस आघात के साथ ही जी रहे हैं. सोनिया की घनिष्ठ मित्र रूपिका चावला कहती हैं, "पत्रिकाओं ने राजीव के क्षत-विक्षत शव की तस्वीरें छापी ही न होतीं तो बेहतर होता." सोनिया और रूपिका पहले राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा में मिला करतीं, बाद में राष्ट्रीय संग्रहालय में, जहां सोनिया घंटों पुरानी ऑयल और वाटर पेंटिंग्स को देखती. पेंटिंग से सोनिया का विशेष लगाव है.

पिता का औंधा पड़ा शव, क्षत-विक्षत चेहरा उन्हें को त्रस्त करता रहा है. उनके दिमाग में अब एक ही सवाल घूमता है कि उनकी 'हत्या किसने की?' प्रियंका को ज्यादा गहरा आघात लगा है. परिवार की मित्र कांता भसीन, जो इंदिरा गांधी की मृत्यु के बाद परिवार की मां जैसी बन गई थीं, कहती हैं, "प्रियंका कहा करती कि 'उसके पिता दुनिया के सबसे खूबसूरत व्यक्ति हैं.' मौत के बाद ये लोग उनका चेहरा नहीं देख पाए." अब उन्हें पिता के खून लथपथ शरीर की याद के साथ ही जीना होगा. गांधी परिवार के मित्र बताते हैं कि बच्चे, खासकर प्रियंका अखबार और पत्रिकाओं को बड़े ध्यान से पढ़ती है.

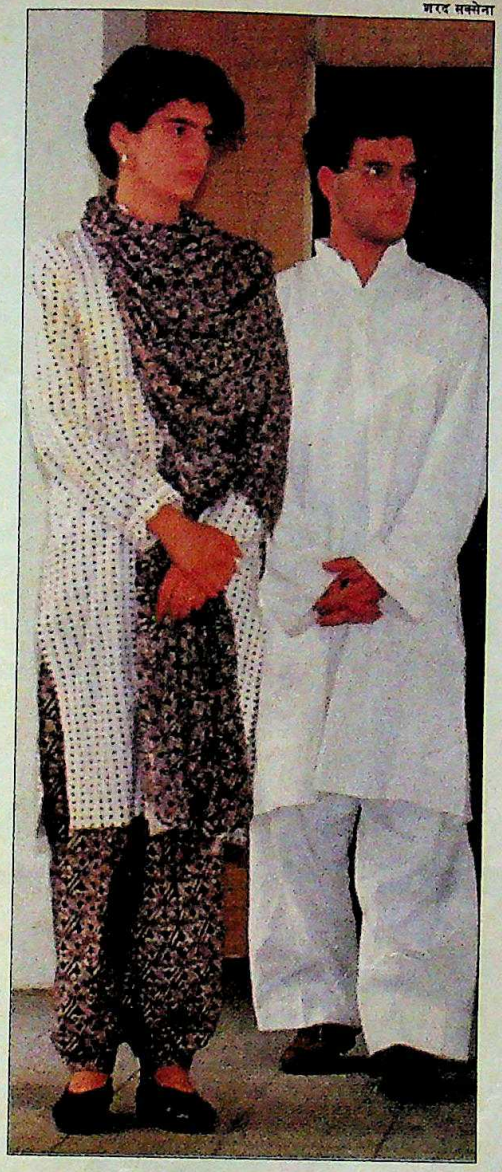
शरद सक्सेना

राहुल और प्रियंका जांच दल की प्रगति की खबरों को गौर से पढ़ते हैं. मानो हत्यारे का पता लगने से उनके मन को शांति मिल जाएगी

पिता के बारे में लिखे एक-एक अक्षर को वह गौर से पढ़ती है, खासकर उनकी हत्या की जांच की प्रगति से संबंधित खबरों को. राहुल कई बार दफ्तर की तरफ चले जाते हैं जहां राजीव के कार्यालय के लोग बैठते हैं. वे वहां भी जाते हैं जहां सुरक्षा व्यवस्था के बड़े अधिकारी हत्या के मकसद आदि को लेकर मशविरा कर रहे होते हैं. उनके परिवार के एक मित्र बताते हैं, "लगता है, एक बार इन्हें इन सवालों के जवाब मिल जाएं कि इस हत्या के पीछे किसका हाथ था, और यह हत्या क्यों की गई, तो उनके बेचैन मन को थोड़ी-बहुत शांति तो मिल ही जाएगी."

पारिवारिक मित्रों से इन बच्चों को बहुत सांत्वना मिलती है. ये लोग दिन का अधिकांश भाग इन्हीं के साथ बिताते हैं. शाम को जब सोनिया दो घंटे के लिए लोगों से मिलती हैं तो वे दोनों उनके साथ होते हैं. और प्रियंका तो इस बात का खास खयाल रखती हैं कि कोई नेता या अमेठी से लोग उनकी मां से मिलने आएं तो वह उनके साथ ही रहे. मां की तरह प्रियंका भी अमेठी की ज्यादातर महिलाओं और बच्चों को नाम से जानती है. सोनिया की मित्रों का कहना है कि अमेठी ऐसी भावनात्मक डोर है, जिसे सोनिया कभी तोड़ना नहीं चाहेंगी. उनके लिए यह क्षेत्र पति का निर्वाचन क्षेत्र ही रहेगा, जिसे उन्होंने बड़े जतन से और बड़े दुलार से संवारा था.

अब तो सोनिया को दुखद यादों के साथ ही जीना पड़ेगा, वे यादें जो हर रोज हजारों की तादाद में आने वाली डाक के साथ ताजा हो जाती हैं. दुनिया के कोने-कोने से ज्ञात और अज्ञात लोगों के सांत्वना भरे पत्र आते हैं. सोनिया शायद खुद को व्यस्त रखने के लिए इन पत्रों को खुद छांटती हैं. संजय गांधी की मौत के बाद ऐसे ही सांत्वना पत्रों को छांटने में वे अपनी सास की भी मदद कर चुकी हैं, और सास की मौत पर आए पत्रों को छांटने में राजीव की भी. सोनिया इस बात का खास खयाल रखती हैं कि पत्रों के जवाब दिए जाएं.

अब भी सांत्वना पत्रों के जवाब में धन्यवाद भेजते समय वे शब्दों के चयन में बहुत सावधानी बरतती हैं. कई बार अपने हाथ से ही जवाब देती हैं. भारी-भरकम डाक को देखते हुए यह बहुत श्रम-साध्य और समय लेने वाला काम है. लोगों को धन्यवाद देते हुए वे कहती हैं, "आपने जो प्यार और स्नेह दिखाया है, उससे मैं और मेरे बच्चे अभिभूत हुए हैं." पति की हत्या को वे "अपने प्यारे देश के लिए किया गया बलिदान बताती हैं जो कांग्रेस के हर महिला और पुरुष कार्यकर्ता के लिए शक्ति का स्रोत रहेगा और सभी को अधिक दृढ़ता से तथा एकजुट होकर उनकी प्रिय कांग्रेस पार्टी के मूल्यों को कायम रखने और मजबूत, अखंड भारत के सपने को पूरा करने की प्रेरणा देगा."

राजीव के बिना उनके परिवार को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शामें लंबी और सूनी लगती हैं क्योंकि इसी वक्त सोनिया, राहुल और प्रियंका उनके आने का इंतजार करते थे. उनके आने पर सब कोच पर इकट्ठे बैठते और उनके पास बैठे कुत्ते इंतजार में रहते कि राजीव उन्हें लॉन में घुमाने ले जाएंगे. अमिताभ बच्चन, जो बच्चों के पास अक्सर आते रहते हैं, कहते हैं, "यह दौर अस्तित्वहीनता के बोध का है. समझ नहीं आता कि क्या कहा जाए, क्या किया जाए. लेकिन ये (बच्चे) बहादुरी से सब कुछ झेल रहे हैं. शायद इतना संयम तो मैं भी न दिखा पाता."

रात के भोजन का समय राजीव के परिवार के लिए ज्यादा पीड़ादायक होता है क्योंकि पंडित नेहरू ने यह नियम बना दिया था कि काम का दबाव चाहे कितना ही ज्यादा हो, रात का भोजन परिवार के साथ ही किया जाना चाहिए. राजीव भी घर पहुंचते ही राजनीति और उससे जुड़े हर तनाव को भूल जाते थे. अब रात के भोजन का वक्त जैसे यातना की घड़ी होती है. सभी एक-दूसरे की भावना से परिचित हैं. लेकिन उन्हें व्यक्त करते डरते हैं.

पिछले छह महीनों से व्यस्त कार्यक्रम के चलते राजीव आधी रात से पहले घर नहीं पहुंच पाते थे. फिर भी बच्चे उनकी इंतजार में जागते रहते. राहुल छुट्टियों में जब दिल्ली आए होते तो चुनाव अभियान से वापस लौटते पिता को लेने हवाई अड्डे जरूर जाते. पिता के साथ ज्यादा समय बिताने के लिए वे राजीव के बिहार दौरे पर उनके साथ गए. उनके एक पारिवारिक मित्र बताते हैं, "उनके बीच एक खास घनिष्ठता थी. सोनिया और राजीव तो एक-दूसरे से बहुत गहरे जुड़े हुए थे." सोनिया को रात देर तक जागने की आदत थी. राजीव के लौटने तक वे जागती रहतीं. वे दमे की मरीज हैं. और अब जब यह रोग फिर उभर आया है. उनके लिए सोना बहुत मुश्किल हो गया है. उनकी मां पाओला उनके साथ रहती हैं जो जिंदगी के तार को फिर जोड़ने में सोनिया की मदद कर ही

भवान सिंह

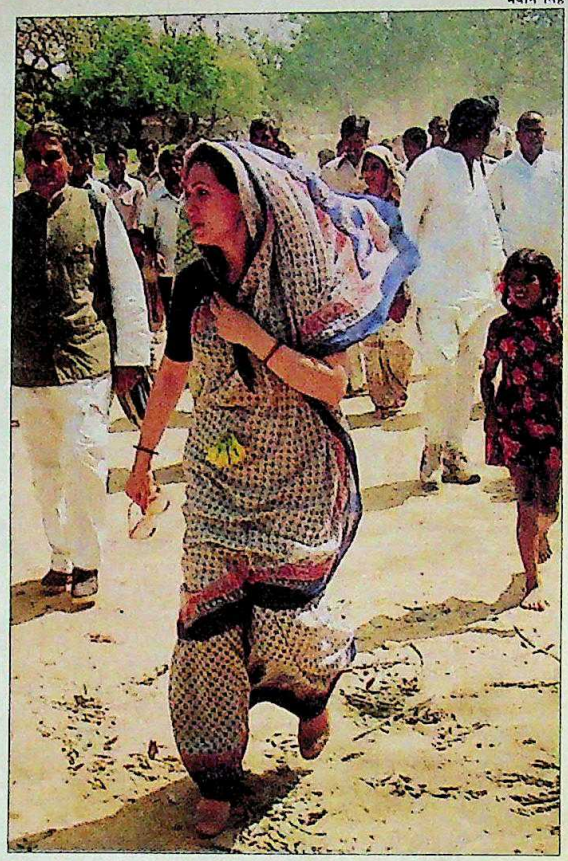

खुद को व्यस्त रखने के लिए सोनिया सांत्वना पत्रों को छांटकर खुद ही 'धन्यवाद' के पत्र भेजती हैं

हैं जिन्हें एक हत्यारिन ने कमरपट्टी में लगा बटन दबाकर एक सेकंड में टुकड़े-टुकड़े कर दिया.

और यही विडंबना है. पिछले 23 वर्षों में यह इतालवी बहू पूरी तरह से भारतीय रंग में रंग गई है. लेकिन सहसा ही उनका जीवन बिन पतवार की नैया जैसा बन गया है. कांता डोगरा बताती हैं कि वर्षों साथ रहकर वे अपनी मां से भी ज्यादा इंदिरा गांधी के करीब हो गई थीं. अब वे अकेली हैं और, वे लोग नहीं रहे, जिन्होंने उनके जीवन को एक नया अर्थ दिया.

स्वभाव से अंतर्मुखी सोनिया पति के अलावा किसी और को अपने विश्वास में नहीं लेती थीं. उनके असली विश्वासपात्र और दोस्त भी—उनके बच्चे राहुल और प्रियंका ही हैं. सोनिया का पालन-पोषण कड़े अनुशासन में हुआ था. अपने बच्चों की परवरिश में उन्होंने अनुशासन तो रखा लेकिन सख्ती नहीं बरती. इसी अनुशासन के चलते वे चाहती हैं कि राहुल हार्विड से लौटकर पढ़ाई पूरी करें.

बच्चों की शिक्षा के प्रति राजीव और सोनिया बहुत सर्तक थे. और उन्हें बोर्डिंग स्कूल में भेजने का उन्होंने फैसला कर लिया था. राहुल को दून स्कूल और प्रियंका को वेल्हम में भर्ती किया गया. यही अनुशासनबद्धता तब भी नजर आई जब प्रियंका को उपहार में मिला एक पिल्ला इसलिए लौटाना पड़ा क्योंकि उसे छोड़ वह हॉस्टल जाने को राजी नहीं हुई.

राजीव के बिना सोनिया पहले वाली सोनिया की छाया मात्र रह गई हैं सफेद साड़ी में लिपटी निष्प्राण-सी काया. लोगों से मिलते वक्त साड़ी का पल्लू उनके सिर पर रहता है. बाहरी दुनिया से उनका संपर्क अखबारों तक ही सिमट गया हैं. और अखबार भी वे उतना ही पढ़ती हैं, जितना प्रियंका कहती हैं.

राजीव की 'तेरहवीं' एकदम सादगी से की गई. कुछ नजदीकी मित्रों और परिवार के लोगों को ही बुलाया गया. पूजा की गई और घर में गंगाजल छिड़का गया. राहुल ने 21 ब्राह्मणों को भोजन परोसा और उनसे आशीर्वाद पाया. हिंदू परंपरा के, जिसमें कि सोनिया अब विश्वास करने लगी हैं, अनुसार वे 40 दिन तक शोक मनाएंगी.

मित्रों ने उन्हें सुझाव दिया है कि बच्चों को लेकर वे कुछ दिनों के लिए इटली चली जाएं लेकिन यह फैसला करने में वे झिझक रही हैं. उनका खयाल है कि अब उनका भाग्य भारत के ही साथ बंध गया है. उनके संबंधी गौतम कौल कहते हैं, "वे शायद समाज सेवा में रुचि लें." इंदिरा गांधी और जवाहरलाल नेहरू की तरह वे अपने पति का भी एक स्मारक बनाना चाहेंगी.

फिलहाल यह परिवार दुख से उबरने की कोशिश कर रहा है. सोनिया की एक मित्र के अनुसार वे अब यह सोचा करती हैं कि क्या हवाई जहाज चलाते हुए मरना उस मौत से बेहतर होता जो एक नेता के रूप में राजीव को मिली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब कुछ नहीं होना

मौसम के साथ मन में कुछ चीजें जुड़ी हैं. मसलन बचपन के दिनों में गरमी के साथ आम, खरबूजे, लीची और फालसे भी पधारते थे. हमें यकीन है कि आते तो अब भी होंगे. बस उनके ठिकाने बदल गए हैं. इधर उनकी आमद-रफ्त हवेलियों और कोठियों तक सीमित है.

आजकल गरमी की सार्वजनिक पहचान, पावर-कट, हैजा और पेयजल के अभाव से होती है. इनसान म्युनिसपैलिटी के दफ्तर में पानी मांगता है, पखेरू पोखर में. दोनों निराश होते हैं.

कवि और शायर अरसे से दर्द और दवा का समान 'सोर्स' बताते रहे हैं. ठीक भी है. डॉक्टर एक बीमारी के लिए दवा देता है. वह मर्ज बमुश्किल तमाम होता है कि दवाई के असर से दूसरा शुरू. अपने 'दर्द के सोर्स' म्युनिसपैलिटी के दफ्तर में हमने दरयाफ्त किया, "भैया ! हालत कब तक सुधरेगी?"

"क्यों क्या हो गया?", जानकार कर्मचारी ने मासूमियत दिखाई.

"न बिजली है, न पानी और आपको पता ही नहीं है कि क्या हो गया?"

"अब कुछ भी नहीं हो सकता", उन्होंने दिलासा दिया.

"आप लोग हड़ताल पर हैं क्या?" हम फिक्रमंद हुए.

"जी नहीं ! हम लोग काम पर हैं इसलिए", उन्होंने पहेली बुझाई.

"हम समझे नहीं", हमने अपनी कमअक्ली जताई.

"स्ट्राइक होती तो फौज-पुलिस कुछ करती. अब कोई माई का लाल कुछ करके तो देखे."

हम सेहत के संत्रास से उबरे नहीं थे. सामने लोकल नेता आततायी को देखकर हम डरे कि कहीं सियासत की गटर में न गिरें, हमने उनको मौका न देकर अपनी शिकायत बयान की, "म्युनिसपैलिटी वाले कहते हैं कि अब कुछ नहीं हो सकता."

"वही क्या, सभी यही कहते हैं."

"क्या सूरज डूब गया या नदियां सूख गईं."

"सूरज डूबे, नदियां सूखें. हमसे क्या?"

"फिर आपको क्या परेशानी है?"

"सारा खेल 'पा' का है", उन्होंने आसमान ताका.

"पानी के महकमे वाले पागल हो गए हैं क्या?," हमें खतरा लगा.

"हम उनकी नहीं, मुल्क की बात कर रहे हैं."

"चुनाव होते थे. हो लिए. हिंसा बढ़ी थी, हो ली. आप जैसे नेता मुल्क को गांधी-नेहरू के धरातल से जाने किस रसातल में ले जा रहे हैं."

"यही तो दिक्कत है. हिंदुस्तान का पढ़ा-लिखा इनसान नाक से आगे की सोचता ही नहीं है."

"कभी भूखे-प्यासे रहकर देखिए. सिर्फ रोटी-पानी सूझता है."

"तभी तो हम भी कहते हैं कि अब कुछ हो ही नहीं सकता."

"कुछ वजह भी बताएंगे कि यही रट लगाएंगे."

"पॉलिटिक्स में 'पा' नहीं रहा. अब तो बस टिक-टिक है."

"रहस्यवाद छोड़िए. सीधे सच बताइए."

"न पानी बिना जीवन है, न पारिवारिक विरासत के पाये के बिना पॉलिटिक्स."

"समय हर शून्य भर देगा", हमने उन्हें समझाया.

"कुर्सी पर तो कोई ऐरा-गैरा धंस लेगा."

"नेता वही जो जनता मन भाए," हमने सीख दी.

"प्रजातंत्र में हम जनता के नहीं, परिवार के पैरवीकार हैं."

"जनतंत्र में खानदान-तंत्र! यह कैसे मुमकिन है?"

"नेता और उसके पूर्वजों ने मुल्क के लिए सब गंवाया. हमारे बुजुर्ग ने उनको पटाया. भारत उनका पारिवारिक प्रजातंत्र है, हमारे पास उल्लू सीधा करने को सिर्फ सेवा-मंत्र है."

रेखाचित्र: जयंती

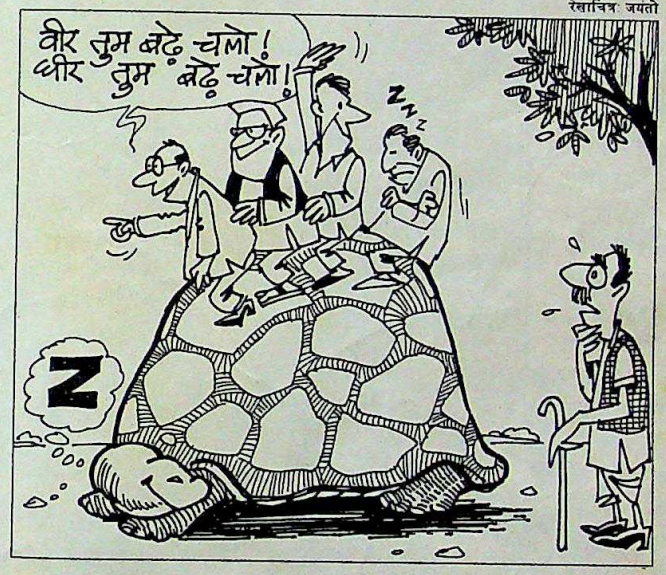

"चमचा कोई कप-विशेष का नहीं होता है. आप नए के गुण गाइए."

"परिवार युग का नेता टिकाऊ था, अब क्या भरोसा! हम यहां एक को पटाएं, वहां दूसरे बदल जाएं.

"आप जरूर कोई-न-कोई गुर पा लेंगे," हमने यकीन दिलाया.

"यही तो मुश्किल है. अब कुछ हो ही नहीं सकता," उन्होंने दोहराया.

यों हर क्षेत्र में यही हाल है. हर पढ़े-लिखे को विश्वास है कि प्रलय का पल पास है. अर्थशास्त्री का खयाल है कि अब और इंटरनेशनल लोन तो हम पाएंगे नहीं. उसके बगैर रोजी-रोटी कैसे चलाएंगे. योजना आयोग के मन में बढ़ती जनसंख्या का मलाल है. उन्हें फिक्र है आबादी की तरक्की से चूहों का जीवन स्तर बेहतर होगा कि इनसान का.

सरकार का हर विभाग काम से बदहाल है. कर्मचारी कुछ करें तो क्या फर्क है ! न करें तो कौन सा बेड़ा गर्क है. सबका यही रोना है. अब कुछ नहीं होना है. नेता हैरान है, चमचा परेशान.

सिर्फ जो आम आदमी है, वह सब जानता है. उसके लिए कब कुछ होना था जो अब कुछ होगा. उसे याद है. आजादी के बाद से वह बिना किसी की मदद-इमदाद आबाद है. उसे कौन इन आकाओं की कृपा की साध है! इतनों को देखा है. इनको भी देख लेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनिरा गांधी

हक के लिए हिम्मत

गुजारे भत्ते के लिए पिता को पुत्री की करारी चुनौती

अब एक बेटी अपने पिता से गुजारे भत्ते की मांग कर रही है. और वह शाह बानो से कम हिम्मती नहीं है. दाऊदी वोहरा समुदाय की 20 वर्षीया मुनिरा गांधी गुजारे भत्ते के लिए अपने पिता से लंबी कानूनी लड़ाई लड़ रही है. उसका पिता अजीज सैज्जुद्दीन गांधी दोहद (गुजरात) में पंसारी की छोटी सी दुकान चलाता है.

1988 में मुनिरा और उसकी मां फातिमा को पिता की तरफ से हर महीने मिलने वाले गुजारे भत्ते के 200 रु. मिलने बंद हो गए. 1972 में जब उसकी मां और पिता में तलाक हुआ था तभी से यह रकम मिलनी शुरू हुई थी. स्थानीय दीवानी अदालत ने दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 के तहत यह गुजारा भत्ता दिलवाया था. मगर इसके इसके तहत किसी भी समुदाय की लड़की का 18 वर्ष की आयु के बाद गुजारे भत्ते की रकम पर अधिकार नहीं रहता. मुनिरा 1988 में बालिग हुई.

वैसे तो मां-बेटी को गुजारे भत्ते के रूप में सिर्फ 200 रु. मिलते थे लेकिन इसकी एक-एक पाई उनके लिए बहुत कीमती थी. ये दोनों फातिमा के भाई के साथ रहती हैं, जो गुड़ का एक छोटा सा व्यापारी है और उसका अपना भी परिवार है. उसके लिए मजदूरी करने के बावजूद दोनों खुद को उस पर भार ही मानती हैं. इसके बावजूद जब गुजारे भत्ते की रकम बंद हुई तो उन्होंने बहादुरी से सहा.

लेकिन मुनिरा घायल शेरनी की तरह वार करने को तब मजबूर हुई, जब एक बार मां से झगड़ कर प्यार पाने की उम्मीद में पिता के पास पहुंची. रात को वह पिता के घर पहुंची जहां वह अपनी चौथी पत्नी के साथ रहता है. लेकिन पिता ने जब उसे पीटकर घर से बाहर निकाल दिया तो उसके विषाद की सीमा नहीं रही.

पिता को सबक सिखाने के लिए उसने अदालत का दरवाजा खटखटाने का फैसला किया. एक युवा वकील कल्पेश डी. पारीख उसकी मदद को आगे आए. वे बताते हैं, "यह तो अंतरात्मा की आवाज थी." उन्होंने मुस्लिम पर्सनल लॉ की धारा 370 के तहत स्थानीय अदालत में मुनिरा की ओर से एक याचिका दायर की. इस धारा के तहत पिता "अविवाहित बेटी की शादी होने तक उसका भरण-पोषण करने को बाध्य है." इस तरह मुनिरा ने गुजारा भत्ता बंद होने की तारीख से हर महीने 500 रु. की दर से कुल 8,000 रु. की मांग की. अजीज यह दलील देकर जिम्मेदारी से बच गया कि मुनिरा और उसकी मां कमा रही हैं, इसलिए उन्हें गुजारे भत्ते की जरूरत नहीं.

गुजारे भत्ते के मुकदमे का अंतिम फैसला होने तक पिता से अंतरिम मुआवजा लेकर मुनिरा ने कानूनी इतिहास में एक नई मिसाल कायम की है

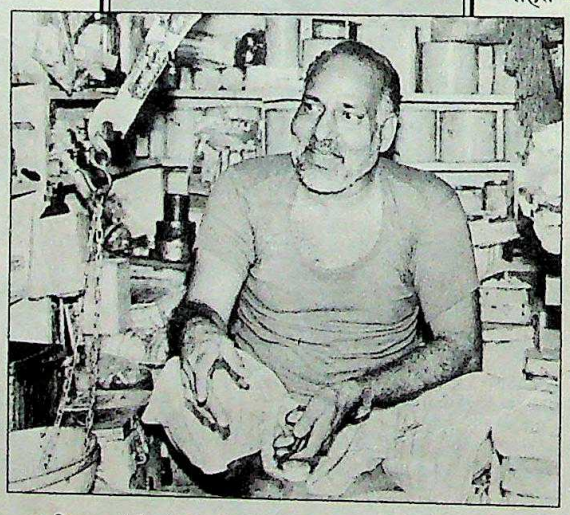

मुनिरा गांधी (ऊपर) और अजीजः पारिवारिक कलह

मुनिरा का मुकदमा बिना किसी फीस के लड़ने वाले पारीख ने दीवानी प्रक्रिया संहिता की धारा 151 के तहत अंतरिम मुआवजे के लिए आवेदन किया. अजीज की दलील थी कि जब तक मुनिरा खुद को गरीब साबित न कर दे, वह अंतरिम राहत की हकदार नहीं.

लेकिन अदालत ने अजीज की दलीलों को दरकिनार कर दिया. न्यायाधीश एच.के. शाह ने सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले का हवाला देते हुए कहा कि इस बात का सबूत नहीं है कि मुनिरा और फातिमा के पास कमाई का कोई जरिया है. इसलिए उन्होंने फैसला होने तक मुनिरा को बतौर अंतरिम मुआवजा हर महीने 130 रु. देने का आदेश दिया.

अब अजीज कहता है, "मेरी इतनी कमाई नहीं है कि मैं मुआवजे की रकम दे सकूं." अजीज के साथ बिताए दिनों को याद करते वक्त मुनिरा और फातिमा फूट पड़ती हैं. मुनिरा की नजर में तो वह एक 'जालिम' है. मुनिरा के मासूम चेहरे को देखकर उसकी दृढ़ इच्छा शक्ति की कल्पना करनी कठिन है. मुकदमे में वह पिता को करारी हार देना चाहती है और कानूनी इतिहास में दूसरी शाहबानो बनने को कटिबद्ध लगती है.

—उदय माहूरकर

SASI/VMU/3/91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनिया को दिखा दो मर्द को चाहिए क्या!

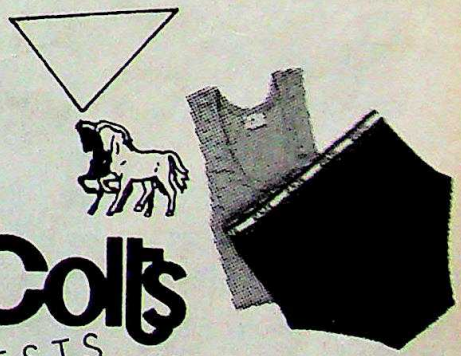

Colts
VESTS & BRIEFS
अंतरंग साथी

A Quality product from :
VIJAYAKUMAR MILLS LTD
Kalayamputhur Post Palani - 624 615

SASI/VMU/3/91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमला चमोला

बैजनाथ की मौत

अब तक 300 से अधिक कहानियों की रचनाकार कमला चमोला की कहानियां हमारे आसपास के सामाजिक माहौल से सीधे जुड़ी होती हैं. प्रस्तुत कहानी चुनावी राजनीति और राजनेताओं की असलियत के बखिए उधेड़ती है.

चुनाव ने मियादी बुखार की तरह सारे शहर को अपनी चपेट में लिया. पांच बरस से नकारा बुड्ढे की तरह अलसाते ऊंघते शहर की रग-रग में स्पंदन जाग उठा. जीपें फर्राटे से धूल-धक्कड़ और चुनावी प्रचार के इश्तिहार बिखेरती बौराई-सी डोल रही थीं. लाउडस्पीकरों की समवेत आवाजें गड्डमड्ड होकर निरर्थक प्रलाप भर बनकर रह गई थीं. पार्टी कार्यालय में बैठे मेवालाल जी का माथा भन्ना रहा था. प्रदेश राजधानी से खटाखट टेलीफोन आ रहे थे, हिदायत दर हिदायत के साथ-साथ उखाड़-पछाड़ की राजनीति पार्टी सचिव रामकिशन जी उन्हें समझा रहे थे.

"किसका फोन था?" जेब से तंबाकू की डिब्बी निकालते हुए माता परसाद जी बोले.

"पहले नीरद बाबू का, फिर रामकिशन जी का... इधर नेता जी के भाषणों का इंतजाम कराना है...नेता जी कह रहे थे हवा का रुख पहचानिए और नीति निर्धारण कीजिए. और..." मेवालाल जी ने कांइयेंपन से बांई आंख दबाई—"पैसों की चिंता मत करिए..."

"अजी यही तो समाजवाद है... पहले बड़े-बड़े उद्योगपतियों से चंदा उगाहो और फिर हम तुम ऐसे जरूरतमंदों में बांट दो."

बैजू के लिए आजकल त्योहार-सा वातावरण था. सांस लेने की फुरसत नहीं थी उसे. हर पांच साल में एक ऐसा समय भी आता जब बैजू जूते गांठने के पुश्तैनी व्यवसाय को ताक में रखकर 'बैजनाथ' बन जाता था. बकस में जतन से तहाकर रखे कुर्ते-पाजामे को पुराने दस्तावेजों की तरह निकाला जाता था. उसकी पत्नी झुनिया कपड़ों को धूप में रखकर बसीली गंध को दूर करने का प्रयास करती, ऐसी नायाब पोशाक को पहनकर बैजू ने गांधी टोपी सिर पर रखी और आले में उकड़ूं पड़े तड़खे शीशे के ऊपरी टुकड़े में चेहरे का कोण स्थिर करके अपना प्रतिबिंब देखने लगा. झुनिया मुग्ध नजरों से पति को देख रही थी. इन दिनों उसकी निगाहों में भी बैजू महज जूते गांठने वाला मोची नहीं, एक वी.आई.पी. व्यक्ति बन जाता था जो नेता जी का खासमखास आदमी है. नेता जी संदेश भेजकर उसे बुलवाते हैं.

बैजू को दुलकी चाल में तेजी से जाते देख दुलिया मोची ने हांक लगाई..."कित्ता ही काम कर ले नेता जी का, रहेगा मोची मोची."

"तो क्या परधानमंतरी बना दें हमको?" बैजू का तनकर दुलिया की व्यंग्योक्ति पर सुलग उठा...इस दुनिया की जबान में जहर भरा हुआ है. नेता जी तक को नहीं बख्शता. वो तो कहो कोई दुलिया की बात में आता नहीं, नहीं तो चमार टोले साधना मुश्किल हो जाता. वह तो नेता जी जैसे बड़े आदमी का अदना-सा कार्यकर्ता है, फिर भी नेता जी कितना मानते हैं मेवालाल जी और नकुलेश जी से कम नहीं है वो नेता जी निगाहों में. बैजू को निरपेक्ष गति से आगे बढ़ता देख दुलिया जी कील ठोकता बुड़बुड़ाया..."मति हर ली है इसकी भी राम जी तीन चुनावों से संग है नेता जी के... नेता जी के तीन महल खड़े गए और इस पगलौटे की झुग्गी अब के सावन में भी ढै गई थी.

नेता जी की कोठी पर पहुंचकर एक पल को बैजू ठिठका,

एक बार तो म्युनिसपैलिटी वाले बुलडोजर लेकर आ ही गए थे झुग्गियों को उखाड़ने. वो तो कहो कि नेता जी शहर में ही थे. बैजू ने उन्हें विपदा सुनाई और उसके कहने पर उन्होंने फोन खड़का दिया...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी रेखाचित्र: सुदेश

ऐसे कैसे लुटे-पिटे से आ रहे हो. अजी तुम काहे अपना हाड़ गला रहे हो? नेता जी तो मालपुए पकवान उड़ाते होंगे और तुम बौराए पगलाए से डोल रहे हो

द रहने वाला बड़ा-सा लोहे का टक उदारता से खुला था. ोगों की आवाजाही जारी थी. ट पर खड़ा गोरखा चुपचाप ूल पर बैठा था. और कोई वत होता तो दसियों तरह के वाल पूछता—कहां जाता है, मसे मिलना है... बैठक की ोट पर जाकर बैजू दीन-हीन ड़ा में खड़ा हो गया. नेता जी र आठ-दस भले से दीखने ले लोगों की आंखों का समवेत ामंत्रण बैजू के चेहरे पर जा ुका.

"कैसे हो बैजनाथ? आओ ो." नेता जी का मिसरी-सा ा स्वर तीन बरस बाद बैजू के कान में पड़ा था. बैजू कृतकृत्य हो ा. नेता जी को अब तलक याद है उसका नाम... इत्ते बड़े आदमी र रत्ती बरोबर भी गुमान नहीं.

"ठीक हूं सरकार..." बैजू वहीं दरवाजे की चौखट पर बैठ गया.

"अरे वहां नहीं... यहां आओ... जमीन पर क्यों बैठे हो... हमारे ए जैसे मेवालाल जी वैसे तुम..." मेवालाल जी के माथे की वटें साफ बता रही थीं कि नेता जी द्वारा बैजू से की गई बरी उन्हें भायी नहीं. सहमता-सा बैजू अंदर आया और कालीन ुट भर की दूरी पर जमीन पर उकड़ूं बैठ गया. नेता जी धीमे से कराए... "गांधी बाबा ने हरिजन कह के इन्हें गले लगाया पर भी तक इनके अंदर की हीन भावना गई नहीं... बैजनाथ... चुनाव र सिर पर है. बस जुट जाओ काम में... यहां से पार्टी कार्यालय ने जाना, मेवालाल जी वहीं तुम्हें बता देंगे तुम्हें क्या-क्या करना वैसे अबकी तुम्हारी झुग्गियों में हवा कहां की है?"

"जब तक बैजू वहां है हवा सरकार की दिशा में ही रहेगी." बैजू ने बोला.

भी तो हम तुम्हें याद करते हैं. वैसे औरों से तो खतरा नहीं है पर बाबूलाल जी के आदमी जरूर आएंगे वोट तोड़ने, भी गरम करने की कोशिश करेंगे शायद, पर कह देना ...हम दस रुपया ऊपर ही देंगे फी आदमी... बस वोट न टूटे."

ाल जी बैजू से बोले—"बैजनाथ तुम कार्यालय चलो. हम ी आधे घंटे तक आते हैं." विनम्रता से सबकी जोहार कर बैजू ा गया तो रामरतन जी बोले—"पूरा चमार टोला इस एक मी भरोसे छोड़ आप बेफिक्र हैं नेता जी."

"वह एक आदमी हमारे दस कार्यकर्ताओं के बराबर है रामरतन ौकात देखकर लियाकत मत आंकिए.... इन नीची कौम में ो है... स्वामीभक्ति कूट-कूटकर भरी होती है, और फिर थ पुराना आदमी है, टोलेवाले इसके इशारों पर चलते हैं, उसे तीन पिछले चुनावों का अनुभव भी है."

"तो यूं कहिए पांच-सात सौ वोट मुट्ठी में लिए है..." रामरतन की बात पर बैठक में कहकहा-सा फूट पड़ा.

जून की चटख गर्मी में बैजू चप्पलें फटकारता तेजी से चल रहा पार्टी कार्यालय कोस भर दूर तो होगा ही...

र... जीप बगल से गुजरी तो बैजू की तंद्रा भंग हुई. मेवालाल माता परसाद जी आदि कार्यकर्ता बैठे थे जीप में... बैजू के अंदर की कचोट-सी हुई. जीप रोककर उसे भी बिठा लेते.. पर क्या पहचान न पाए हों... बैजू ने माथे से पसीना पोंछा.

पार्टी कार्यालय में मेवालाल जी ने बताया कि आज नेता जी का चुनावी भाषण रामलीला मैदान में है. मैदान में सभी कार्यकर्ता काम में जुटे थे. बैजू चटपट लंगूर की तरह चढ़कर बल्लियों से लाउडस्पीकर बांध रहा था. दोपहर की धूप ऐन सिर पर चिलक रही थी. बैजू की जीभ प्यास से तालू से चिपक रही थी पर पानी पीने की फुरसत नहीं थी उसे. ठीक पांच बजे नेता जी का भाषण है पर लोगों का जमावड़ा तो चार बजे ही जुटने लगेगा. उससे पहले हो जाना चाहिए इंतजाम... मेवालाल जी चिल्लाए..."बैजनाथ, जल्दी हाथ चलाओ तीन बल्लियों पर और बांधने हैं लाउडस्पीकर, फिर दरी भी बिछानी है."

"अजी जुटे तो पड़े हैं काम में," बैजू झल्लाकर बोला, "तन्नक सी सांस भी ली हो तो कहो..." बैजू की बात पर मेवालाल जी त्रिलोचन की ओर मुड़े... "देख लिया... कैसे जबान लड़ा रहा है? क्या करें नेता जी के पीछे इन दो कौड़ी के लोगों के नाज-नखरे सहने पड़ते हैं. साले महीने भर को राजा साब ही बन जाते हैं."

"अरे भई गुस्सा क्यों होते हो, इन्हीं लोगों के बूते पर नेता जी जीतते हैं और नेता जी की धोती की लांग पकड़े-पकड़े हम तुम ऐसे भी सुरग पहुंच जाते हैं." शाम छह बजे नेता जी का भाषण निबटा. बैजू घर पहुंचा तो पति का सूखा मुंह और मुड़े-तुड़े कपड़े देखकर झुनिया बोली—"ऐसे कैसे लुटे-पिटे से आ रहे हो?"

"वकीलों-सी जिरह मती कर, दो टिक्कड़ पो दे. सुबेरे से टुकड़ा नहीं गया मूं में—नेता जी के भाषण के इंतजाम में जुटे रहे सब."

"तुम काहे अपना हाड़ गला रहे हो...? नेता जी तो मालपुए पकवान उड़ाते होंगे और तुम बौराए पगलाए से डोल रहे हो."

"अजी वो तो राजा हैं—अब वो थोड़े ही शामियाना दरी बिछवाने आएंगे. ये सब काम तो कार्यकर्ताओं को ही सुलटाने पड़ते हैं न. गलती मेरी ही है. मेवालाल जी ने पैसे सुबेरे ही दे दिए थे. मुझे ही फुरसत ना मिल पाई. बल्लियां साली भी गीली थीं, सारा रंग रोगन कुर्ते-पाजामे से चिपट गया, जरा धो दे. न हो तो जरा घासलेट मल देना तुरंत छूट जाएगा... कल सुबेरे तलक सूख जाने चाहिए कपड़े."

सुबह सबेरे बैजू पार्टी कार्यालय में पहुंच गया. यहीं से उसे दिन भर का काम मेवालाल जी के मार्फत मिलना था. उसे देखते ही मेवालाल जी बोले—"आओ बैजनाथ... लंबी उम्र पाई है... तुम्हें याद कर रहे थे."

"सो हम हाजिर हैं बाबू जी." बैजू अपनी नजरों में और ऊंचा उठ गया था.

"बैजनाथ आज बड़े मैदान में नेता जी का भाषण है ग्यारह बजे, तुम तो जानते हो विरोधी खेमे का गढ़ है वो... बाबूलाल जी की खास मिल्कियत है... तुम अपने टोले के हर आदमी को सकेरकर जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहां किसी तरह ला सको तो रसूक अच्छा रहेगा... चाहो तो वहां सबको चाय भी पिलवा देना." जेब से सौ रुपए निकालकर मेवालाल जी ने बैजू को थमा दिए.

बैजू के जाते ही माता परसाद बांई आंख कांइयेंपन से दबाकर बोला—"नेता जी तो कहे थे डेढ़ सौ देना..."

"डेढ़ सौ इन्हें क्या देना, नीची जात के हैं बदनीयत होते क्या देर लगती है? खुद ही ठर्रा पीकर धुत्त हो जाएगा पर तू क्यों घबरा रहा है फिफ्टी-फिफ्टी का अपना वादा बरकरार है. ये ले पच्चीस रुपए—" मेवालाल जी ने जेब से नोट निकाले. "प्रेस से भी तो बचाए थे तुमने दो सौ." माता परसाद बोला. "कर लेंगे हिसाब कभी. देर हो रही है चल जीप निकाल."

झुग्गी-झुग्गी के द्वारे जाकर बैजू सबको पीपल वाले चौतरे पर इकट्ठा होने को कहता जा रहा था. बैजू का कहा सब मानते हैं आखिर उसका साथ सदा चढ़ते सूरज के साथ रहा है. एक बार तो म्यूनिसपैलिटी वाले बुलडोजर लेकर आ भी गए थे. झुग्गियों को उखाड़ने—वो तो संयोग कहो कि नेता जी प्रदेश राजधानी के बजाए अपने ही शहर में थे. बैजू ने उन्हें अपनी विपदा कह सुनाई... नेता जी ने फटाफट बैजू के सामने ही फोन खडका दिया म्यूनिसपैलिटी वालों को... उस वक्त नेता जी देवता से लगे थे बैजू को. चरणों में लोटने का मन हो रहा था... ऐसे गरीब नवाज हैं नेता जी... वरना गरीब की सुनवाई कहां!

झुनिया ने 100 का बंधा कड़कड़ाता नोट पहली बार हाथ में लिया था. तृषित नेत्रों से नोट को देख वह बोली—"चाहा पिलानी क्या जरूरी है टोले वालों को, तुम्हीं न रख लो इसे. सारा दिन बौराए से डोलते हो धंधा छोड़-छाड़ के."

"है तो औरत जात न, सौ पे ही डोल गई, अरी ये पार्टी के पैसे हैं, देश की अमानत है. हम क्यों गुनैगार बनें, जहां का पैसा है वहीं लग जाए ईमानदारी से. तू तो एक नीला नोट देखकर बौरा गई. वहां मेवालाल जी हैं अलमारी अटी पड़ी है नोटों की गड्डियों से पर क्या मजाल जो तेरी तरियों आंय-बांय सोचें. सारा पैसा नेता जी के काम पे ही लगेगा."

मेवालाल जी का अंदेशा सही निकला—नेता जी का भाषण बड़ी मुश्किल से निबटा. 'नेता जी की हाय-हाय' के प्रत्युत्तर में नेता जी की जै-जयकार करते बैजू का गला बैठ गया.

ज्यों-ज्यों चुनाव नजदीक आ रहे थे शोर-शराबा, और उत्तेजना, अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई थी. बैजू को खाने-पीने की सुध नहीं थी. आखिर चुनाव का दिन भी आ पहुंचा. कई विरोधी पार्टियों वाले ट्रक लेकर चमार टोले में आए—पैसे चाय का दाना भी फेंका पर बैजू ने सारे टोले को जैसे बाड़े में बंद कर रखा था चोंच नहीं धरने दी किसी को. चिल्ला-चिल्लाकर सबको आ कर रहा था—"साला कोई कितना फोड़ने की कोशिश करे टस से मस न होना. हमारा वादा नेता जी के साथ है—याद है दिन जब उन्होंने हमें बेघर होने से बचाया था वरना आज नदी नाली के कीड़े से बिलबिला रहे होते. सब धंधा रोजगार हो जाता." इस आखिरी बह्मास्त्र से सभी कमजोर पड़ गए.

वोटों की गिनती शुरू हुई—मेवालाल जी, नकुलेश जी, परसाद मतगणना वाले कक्ष में थे. बाहर पुलिस का भारी था. गेट के बाहर एक बड़े बोर्ड में विभिन्न पार्टियों की स्थि आंकड़े अंकित हो रहे थे.

अनपढ़ बैजू बोर्ड पर उभरी रेखाओं को न समझ अगल-बग बाबुओं से पूछता—"कौन जीत रहा है साब?" पर उसकी आ शोर में दबकर रह जाती उसे बताने की फुरसत किसी के पास थी. अपने अनपढ़ रहने पर पहली बार बैजू को क्रोध और पश्चा हुआ. निर्णायक घोषणा होते ही अभूतपूर्व कोलाहल से वाता भर उठा.. बस एक पागलपन भरा कर्णभेदी शोर था. नेता जी चार सौ वोट से जीते थे. पर थी तो जीत ही न.

भीड़ का रेला नेता जी की कोठी की ओर मुड़ गया. बैजू भीड़ का हिस्सा बन गया, बिना नेता जी को बधाई दिए भला कैसे घर जा सकता है... सड़क से उसने गेंदे के फूलों का एक भी खरीद लिया नेता जी को पहनाने के लिए. उसे देखकर खुश होंगे नेता जी.. आखिर उनकी जीत में उसका भी हिस्सा नेता जी की कोठी के बाहर अपार जन समुदाय उमड़ा पड़ा हरे-भरे लॉन में एक घास पत्ती तक नजर नहीं आ रही थी. सिर ही सिर थे आदमियों के... नेता जी एक ऊंचे मंच पर खड़े विजय की गरिमा और उल्लास से उनका गौर मुखमंडल दमक रहा था. विनम्र भाव से झुक-झुककर वे सबका अभिवादन स्वीकार कर रहे थे... बैजू ने भीड़ को चीरकर आगे बढ़ने का प्रयास तो भीड़ के रेले ने उसे चार कदम और पीछे धकेल दिया. हार के साथ छाती पर संभालकर दबाए हार में से दो-चार पंखुड़ी झरकर नीचे गिर जातीं. भीड़ अभेद्य दीवार-सी खड़ी थी. नेता जी एक बार जो उसे देख पाते फिर तो खुद ही इशारों में बुला लेते—उस दिन नहीं बुलाया था क्या? दसियों अफसरान थे पर बैजू को ही पुकारकर अपने पास बुलाया था. बैजू अब बढ़ने के बजाए सरककर पीछे होता गया और नरकुल की झाड़ के पास खड़ा हो गया. लोग अब नेता जी को बधाई दे-देकर वापस आ रहे थे. बैजू भी जाना चाहता था. भूख और थकान उसकी टांगें कांप रही थीं पर बिना नेता जी से मिले जाना जंचा नहीं. आखिर कार्यकर्ता भी तो खड़े थे. देख मेवालाल जी बोले यहां क्या कर रहा है बैजू जा अब घर जाकर आराम

"जरा नेता जी से लेता..." बैजू दीनता से बोला मेवालाल जी ठठाकर हंसे मानो बैजू ने कोई सुना सुनाया हो. फिर माता परसाद रामेसर पांडेय को सुना बोले—

"सुनी इस बावरे की नेता जी से मिलने खड़ा है नेता जी अब पांच बरस मिलेंगे—कल दिल्ली जा

अरी ये पार्टी के पैसे हैं, देश की अमानत हैं. हम क्यों गुनैगार बनें. जहां का पैसा है वहीं लग जाए ईमानदारी से. सारा पैसा नेता जी के काम में ही लगेगा

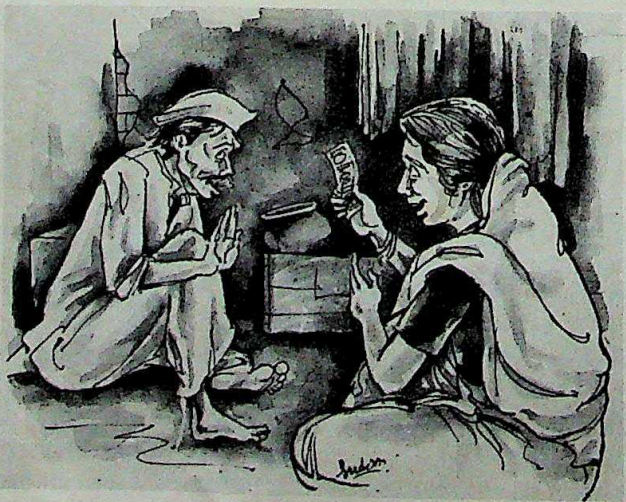

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

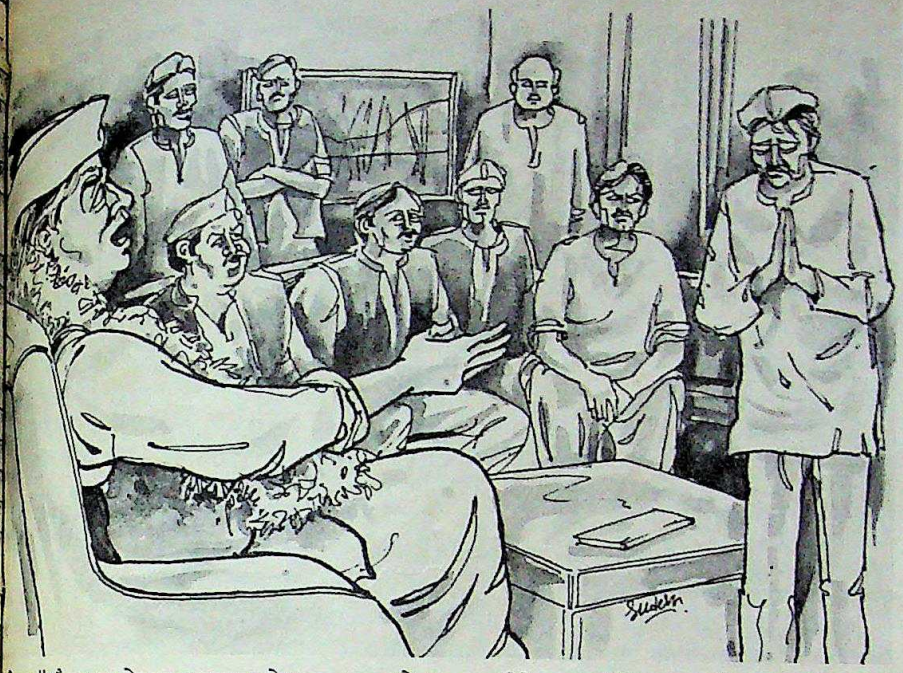

दरवाजे की चौखट पर जाकर बैजू नेता जी की ओर देखने लगा कि कब नेता जी से उसकी आंखें चार हों और वह उन्हें बधाई दे. वह नेता जी के सामने ही खड़ा था पर उनकी नजर बार-बार उसके चेहरे से फिसलकर दाएं-बाएं हो रही थी

...ी जा" बैजू का चेहरा अपमान से काला-सा हो आया. धीमे ...र में बोला, "आप सब भी तो खड़े हैं, मैं तो मिल के ही जाऊंगा ...ा जी से." अंधेरा छुतहे रोग-सा तेजी से घिरने लगा था. अब ...-खास लोग ही रह गए थे. लगभग सभी चेहरे बैजू के परिचित ...ेता जी भी अब अंदर बैठक में चले गए. बैजू भी गुलमोहर की ...ी छाया से निकला और बैठक की ओर बढ़ गया. नेता जी मंद-...ुस्कराते हुए बातें कर रहे थे लोगों से—दरवाजे की चौखट पर ...र बैजू नेता जी के चेहरे की ओर निर्निमेष देखने लगा कि कब ...ा जी में उसकी आंखें चार हों और वह कब उन्हें बधाई दे... वह ...ा जी के सामने ही खड़ा था पर उनकी नजर बार-बार उसके ...रे से फिसलकर दाएं-बाएं हो रही थी. मजबूरन बैजू बोला—...कार हमारी ओर से बहुत-बहुत बधाई कबूल हो..."

...सब तुम लोगों के कारण है बैजनाथ... जाओ अब तुम भी ...ाम करो. एक माह खूब काम किया है."

...ालाल जी बोले—"नेता जी आज तो जश्न होना ...चाहिए." नेता जी मुस्कराए और नाथूराम की ओर मुखातिब ...नाथू, अंदर बोल के फ्रिज से बोतलें निकलवा लो, सोडे का ...ाम भी रखना. काजू और पकौड़े भी तलवा लो." बैजू के सूखे ...े में जैसे ठंडी बर्फीली विदेशी शराब के घूंट उतर आए... मुंह ...ड़े-कसैले थूक को गटक वह सोचने लगा सभी कार्यकर्ता तो ...ी भी विलायती शराब चख के ही जाएगा. वरना तो देसी ठर्रा ...ला पड़ता है. मुंह में उतरते ही कलेजा तक चीर के रख देता ...ाज तो जश्न है. वो भी खूब पीएगा... तभी मेवालाल जी की ...र दरवाजे पर पड़ी तो उनके माथे में बल पड़ गए, "तू अभी ...हीं खड़ा है... बधाई दे तो दी नेता जी को, अब घर जा."

...ैजू को असमंजस की स्थिति में खड़ा देख नेता जी खीझ भरे ...में बोले—"जाओ भई अब—कह जो दिया." मेवालाल जी के ...र पर नेता जी की स्वीकृति की मुहर लगी जान बेमन से बैजू ने ...ो 'जयराम' करी और बाहर आकर अपनी टायर सोल की ...ों में पैर का अंगूठा फंसाने लगा. तभी अंदर से तिरती हुई ...ालाल जी की आवाज आई—"ये नीची जात वाले भी परले ...के लीचड़ होते हैं, घंटे भर से जाने की कह रहा था पर उठता ...हीं, आप जाने कैसे निबाह लेते हैं नेता जी सबके साथ?"

"निबाहना ही पड़ता है भाई..." नेता जी का स्वाभाविक माधुर्य से भरा स्वर आया—"वरना अब तक झुग्गियों की जगह पार्टी कार्यालय की इमारत न खड़ी हो जाती? पार के साल हमने नगर निगम वालों को भेजा भी था कि चमार टोले पर बुलडोजर फिरवाकर पार्टी कार्यालय की बिल्डिंग के लिए जगह बनाओ पर तभी ये बैजनाथ दौड़ा आया. और तब अचानक हमें एहसास हुआ कि हम कितनी बड़ी गलती करने जा रहे हैं."

"हां जी—इधर बुलडोजर फिरता और उधर पांच-सात सौ वोट हाथ से फिसल जाते जिन्हें बाबूलाल जी लपककर कैच कर लेते." माता परसाद की बात पर जोर का ठहाका लगा. बैजू अडोल खड़ा था जैसे किसी पत्थर की मूर्ति को कील दिया हो. रहस्य के आवरण एक-एक करके हटते जा रहे थे. और अंत में बच रहा था एक निर्वसन घिनौना सत्य... तो ये है नेता जी का असली रूप. जिनके लिए एक माह से हाड़-मांस गलाकर दिन-रात काम में जुटा पड़ा है उनके लिए उसका वजूद बस पांच सौ वोटों के कारण है, वरना तो न जाने कब का बुलडोजर फिरवा देते नेता जी चमार टोले पर. उनके मरने-जीने से कोई मतलब नहीं है नेता जी को. आज जो चमार टोला खत्म हो जाए तो नेता जी के लिए बैजनाथ भी खत्म है. बोझिल कदमों से चलता बैजू जाने कब अपनी झुग्गी में पहुंचा और धम्म से खाट में जा बैठा. दिमाग में सांय-सांय-सी हो रही थी... महीने भर से थकान एकदम से टखने से होती हुई पिंडलियों तक उतर आई थी. झुनिया पति को देख उल्लसित होकर बोली—"तुम्हारी मेहनत बरोबर रही, सुना है नेता जी जीत गए."

"हूं." बैजू गुमसुम-सा बैठा था.

"चलो अब चैन से धंधे पर बैठो," झुनिया अपनी ही रौ में बोल रही थी—"आज ही दो गरोंक टायर सोल की चप्पल बनाने का आडर दे गए हैं. कल से जुट जाओ काम पै. लाओ कुर्ता-पाजामा टोपी सब दे दो उतार के. धो-धाकर बकस में धर दूंगी."

"अब इनकी जरूरत नहीं पड़ेगी—बैजनाथ मर गया है."

"कैसा असगुन बांचते हो दिया बाती के टैम," झुनिया बिगड़ी.

"तू काहे हौले खा गई है री—बैजनाथ मरा तो क्या—बैजू अभी तलक जिंदा है."

बैजू की अटपटी बातें झुनिया के गले न उतरीं. खौफ भरी अजीब नजरों से वह पति को देख रही थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन ग्रंथ

विस्मृत कथा

रामायण के महिला पात्रों का ब्यौरा

रामायण के कुछ पात्रों-चरित्रों के में बारे बहुत ही कम लिखा गया है जबकि इनमें से वे कई पात्र भी हैं जिनके कारण रामायण की कथा नए मोड़ लेती है. डॉ. पांडुरंग राव के अनुसार इसमें प्रत्येक पात्र का परिशीलन वाल्मीकि रामायण के आधार पर ही किया गया है. यह लेख उनकी अंग्रेजी पुस्तक 'वीमेन इन वाल्मीकि' का हिंदी रूपांतरण है जिसमें बी.डी जत्ती (तत्कालीन उपराष्ट्रपति) की लिखी भूमिका भी है.

रामायण के महिला पात्र
प्राचीन ग्रंथ
डॉ. पांडुरंग राव
भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली-110003
कीमत: 30 रु.
कुल पृष्ठ: 88

इसमें 12 महिला पात्रों को लिया गया है. इन सभी पात्रों में से जानकी (सीता) का विभिन्न दृष्टियों से अधिक चित्रण दूसरे लेखकों ने किया है लेकिन अन्य पात्रों के बारे में कम लिखा गया है. ऐसे पात्रों में कैकेयी, कौशल्या, सुमित्रा, अहिल्या, अनुसूया, शबरी, स्वयंप्रभा, तारा, मंदोदरी, त्रिजटा, शूर्पणखा शामिल हैं.

अगर रामायण में कैकेयी नहीं होती तो क्या कथा आगे बढ़ सकती थी? अगर शूर्पणखा न होती तो क्या राम-वनवास के बाद ही राम का राजतिलक संभव होता. डॉ. राव जानकी (सीता) को 'असामान्य मनोबल' वाली मानते हुए स्पष्ट कहते हैं कि रामायण केवल राम का ही नहीं, सीता का भी महान चरित है.

कौशल्या सरलता और पवित्रता की मूर्ति हैं. उन्हें वाल्मीकि ने मातृभावना की मधुरतम मूर्ति के रूप में उभारा है. सुमित्रा की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वह कुछ नहीं चाहती और जो अपने आप या दृच्छिक रूप से मिलता है, उसी से संतुष्ट हो जाती है और उसी को सहर्ष स्वीकारती है. इसी तरह शबरी और स्वयंप्रभा हैं जो आश्रमवासिनियां हैं लेकिन शबरी को आम पाठक भी जानता है जबकि स्वयंप्रभा को कम ही जानते हैं. इस विस्मृत पात्र को साधारण पाठकों तक पहुंचाया गया है. एक सिद्ध साध्वी के रूप में किष्किंधा कांड में हनुमान की सीता की खोज में जाते हुए अचानक उनसे भेंट हो जाती है. उनकी वे मदद करती हैं.

इसी तरह अनुसूया, अहिल्या और तारा हैं. रावण की पत्नी मंदोदरी भी इसमें हैं जो लोकोत्तर पतिप्राणा साध्वी है. इसी तरह की एक और पात्र रामायण में है—त्रिजटा. त्रिजटा सीता की अन्यतम सखी बनकर उसे संवेदना और सांत्वना देती है. वह मातृत्व भावना से सीता का मार्गदर्शन करती है. उसमें आसुरी प्रवृत्ति नहीं है.

डॉ. राव ने अपनी इस पुस्तक में रामायण की महिला पात्रों के बारे में लिखा है. यह इसलिए भी प्रशंसनीय है क्योंकि रामायण में मूलत: राम ही हावी हैं. दूसरे पात्रों खास तौर पर महिला पात्रों के योगदान को महत्व उतना नहीं मिला है जितना कि मिलना चाहिए. रामायण की एक उपेक्षित पात्र है उर्मिला. उसे डॉ. राव ने भी उपेक्षित ही किया है. फिर भी रामायण के महिला पात्रों को जानने-समझने का यह अच्छा प्रयास है.

—देवेंद्र उपाध्याय

उपन्यास

स्पष्ट बयान

भागने की नहीं, संघर्ष की बातें

पंजाब समस्या शुरू होने के बाद से वहां हिंदू-सिखों के संबंधों या वहां के लोगों की मानसिकता के बारे में बहुत कुछ लिखा है. सरकारी इलैक्ट्रॉनिक मीडिया ने तो इन रिश्तों का सौहार्द इतने भोंडे तरीके से छलकाया कि संवेदनाओं का कुंड ही सूख गया. लेकिन तेजिंदर की यह किताब दिलो-दिमाग की गहराई में पैठ जाती है. इसलिए नहीं कि यह एक सिख लेखक की पंजाब पर लिखी कथा है बल्कि इसलिए कि यह देश के दूसरे हिस्सों में विभाजन के बाद से या उससे भी पहले जाकर रच-बस गए सिखों की पहचान के वर्तमान संकट का खुलासा करती है. तेजिंदर ने, जिनकी उम्र का ज्यादातर हिस्सा पंजाब से बाहर ही गुजरा है, इस नाजुक मसले पर बड़ी साफगोई से अपनी बात कही है. उन्हें अच्छी तरह पता है कि 1984 के बाद पंजाब से बाहर बसे सिखों के सामने अपने अस्तित्व का ही नहीं, पहचान का भी संकट क्यों और कैसे खड़ा हो गया है? वे अपनों में ही एकाएक बेगाने क्योंकर हो उठे हैं? उनके उपन्यास के नायक शमिंदर सिंह को अब सरदार शमिंदर सिंह कहकर अपना परिचय क्यों देना पड़ता है? उसके सहकर्मी घल्लूघारा, तनखैया शब्दों के मतलब उसी से क्यों पूछते हैं? पंजाब में कोई बड़ा कांड होने पर उसकी निगाहें नीची और लोगों उसके प्रति निगाहें सदेहास्पद या कि घृणास्पद क्यों हो जाती हैं? '47 में अपनी जड़ों से उखड़कर मध्य प्रदेश के बस्तर जैसे आदिम इलाके में डेरा जमाने वाला उसका परिवार अच्छी तरह पांव जमा लेने के बाद फिर पंजाब लौटने की बात क्यों सोचने लगता है?

वह मेरा चेहरा
उपन्यास
तेजिंदर
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
कीमत: 60 रु.
कुल पृष्ठ: 157

1984 की स्थिति के बारे में लेखक का साफ बयान है, "नवंबर 1984 में हमारे साथ जो सलूक हुआ वह न होता, अगर हमने अपनी ओर से लोगों को यह बताने की लगातार कोशिश की होती कि हम पंजाब में हो रही हत्याओं में शामिल नहीं हैं बल्कि उनके विरोध में तुम्हारे साथ खड़े हैं... हम चुप रहे और आम आदमी के मन में हमारे लिए नफरत बढ़ती गई..." लेकिन शायद यह अति आशावादिता ही है क्योंकि उपन्यास के सोढ़ी जैसे लोग भी इस समाज में हैं जिन्हें भिंडरांवाले हीरो नजर आते थे.

लेकिन लेखक की इस राय से इत्तफाक रखा जा सकता है कि पंजाब के बाहर बसे सिखों को, जहां वे हैं, अपनी पहचान दोबारा वहीं तलाशनी होगी. साथ ही पंजाब समस्या के बारे में उनका यह आकलन भी मननीय है कि "जब तक पंजाब का और देश का आम आदमी चुप है, लोग यों ही मरते रहेंगे. आम आदमी का निर्णय अपने पक्ष में पलट सकता है."

उपन्यास की शुरुआत जरूर ढीले-ढाले ढंग से हुई है और कई जगह संदर्भ एकदम से बदल जाने से वाचन में खंड भी पड़ता लगता है. लेकिन अच्छी बात यह है कि इस किताब से भागने की नहीं, जमे रहने की, जद्दोजहद करने की सीख मिलती है.

—जगदीश उपाध्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की सर्वाधिक सफल और विकासशील कंपनियों में से एक सेन्चुरी यह मानती है कि उनकी सभी गतिविधियों से लोगों की बुनियादी ज़रूरतें पूरी होनी चाहिएं

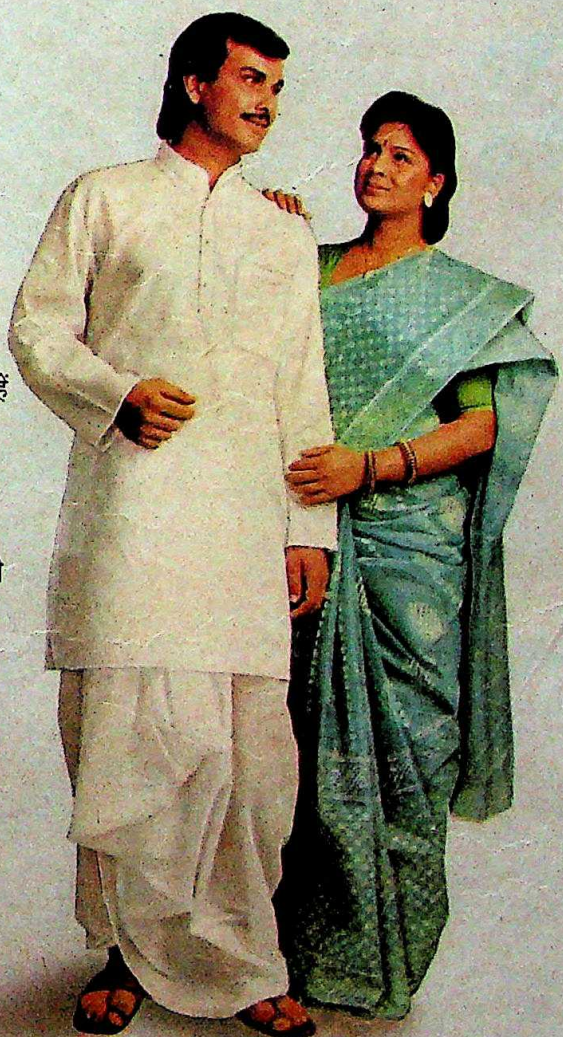

"सेन्चुरी के बारे में हम स्वयं स्वीकार करते हैं कि हमारी उत्पादन इकाइयां उन क्षेत्रों में नहीं आतीं जिन्हें आम तौर पर उद्योग कहा जाता है. इसके विपरीत, हम तो उन बुनियादी उद्योगों के क्षेत्र में हैं जिन्हें देश के आर्थिक विकास का आधार कहा जाता है.

देश की आर्थिक प्राथमिकताओं के प्रति अपनी समर्पित भावनाओं के फलस्वरूप ही हम आज देश के सबसे बड़े उत्पादक-निर्यातक बन सके हैं. इस वर्ष ही हम १४० करोड़ रुपये के मूल्य की विदेशी मुद्रा अर्जित करेंगे. इसके अलावा सीमेंट के अपने उत्पादन को हम लगातार बढ़ाते जा रहे हैं ताकि मांग और पूर्ति के बीच की दूरी को खत्म करने में मदद मिले.

हम मानते हैं कि कर्मचारियों के हितों, शेयरहोल्डरों के हितों और राष्ट्र के हितों के बीच पूरा सामंजस्य होना चाहिए. हमारे कर्मचारी यह कहने में गर्व का अनुभव करते हैं कि वे सेन्चुरी में काम करते हैं. कई परिवार तो तीन-तीन पीढ़ियों से हमारी कंपनी में काम करते रहे हैं. हमारे शेयरहोल्डर भी सदा संतुष्ट रहे हैं. क्यों न हों, बोनस और राइट शेयर्स इश्यू देखें तो पिछले ४० वर्षों से सेन्चुरी के शेयरों का मूल्य ३४० गुने से भी ज़्यादा जो बढ़ आया है. पिछले एक दशक में ही सरकारी कोष में सेन्चुरी का योगदान ६६० करोड़ रुपयों से भी अधिक का रहा है.

और अब, देश को आवश्यक उत्पादक परिसंपत्तियां उपलब्ध कराने के लिए हमने विद्युत और पेट्रोकेमिकल्स जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपने प्रयास प्रारंभ कर दिये हैं."

बी.के. बिरला
अध्यक्ष

सेन्चुरी

राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य... अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य

सेन्चुरी टेक्सटाइल्स एंड इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड • सेन्चुरी टेक्सटाइल्स • सेन्चुरी रेयॉन • सेन्चुरी कॉमिकल्स • सेन्चुरी सीमेंट • मैहर सीमेंट • मानिकगढ़ सीमेंट • सेन्चुरी पल्प एंड पेपर • सेन्चुरी शिपिंग • सेन्चुरी बिल्डर्स

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो बात कही न जा सकी

□ सनी सुपर साउंड थियेटर में किसी भूली-भटकी फिल्म की डबिंग करती छरहरी, कमनीय काया वाली वह नवयुवती सचमुच **फरहा** ही है, इस पर विश्वास करने के लिए दो बार आंखें मलनी पड़ीं.

हमारी बात को 'कांप्लीमेंट' मानकर धन्यवाद देते हुए उन्होंने पतिदेव विड्डू की खबर दी—"बड़े जोर-शोर से फिल्म शुरू करने की तैयारियों में लगे हैं. घर से बाहर कम ही निकलते हैं."

तो यह वजह थी इस चर्चित जोड़े के डिस्कोथे में नजर न आने की. हमने असली बात पूछ ली, "फिल्म में हीरोइन कौन होगी?"

"मैं, और कौन?"

"और हीरो?"

"विड्डू, और कौन?"

"यानी मियां-बीवी की जोड़ी?"

"क्यों? जब एक बच्चे की मां भाग्यश्री

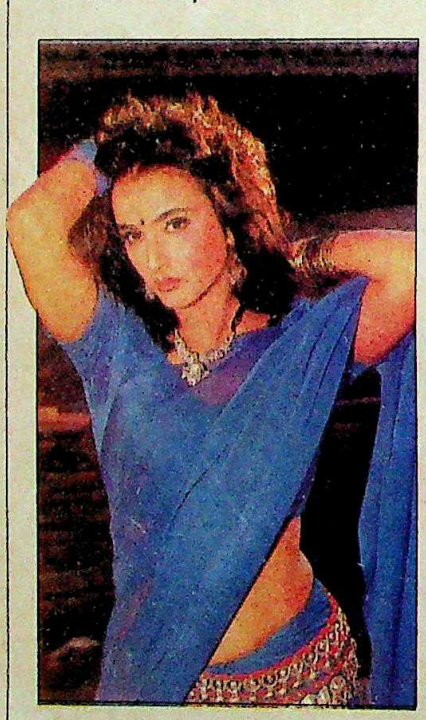

फरहाः राज की बात है...

अपने बच्चे के पिता के साथ पहले-पहले प्यार की कहानी में फिट हो सकती है, तो मुझसे ऐसा सवाल क्यों? मैं तो..."

आगे की बात कहती-कहती वह फरहा भी हिचक गईं जो अपनी बेबाकी से दूसरों को शरमाने के लिए मजबूर कर देने को मशहूर रही हैं. हम तो अनुमान लगा ही रहे हैं कि फरहा ने कौन-सी बात पर जबान को लगाम दे दी. आप भी सोचिए!

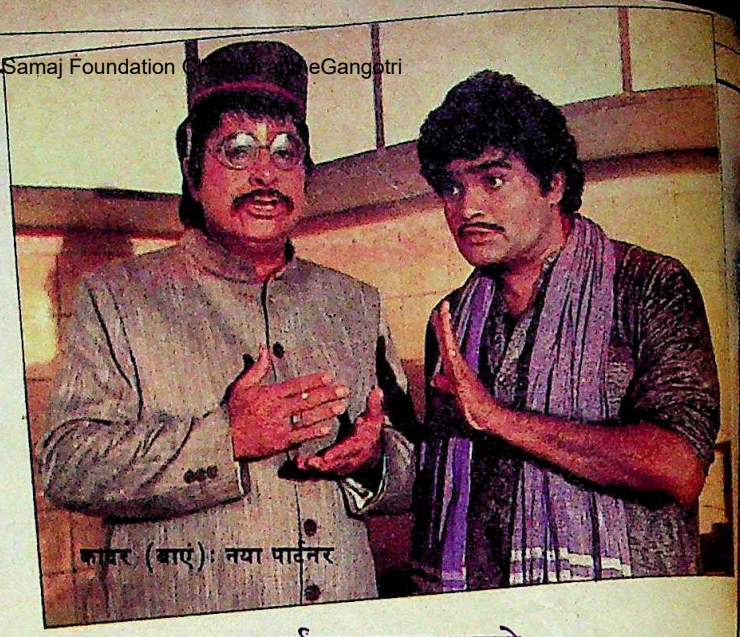

कादर (बाएं): नया पार्टनर

पार्टनर बदल डालो

□ लगता है एक तलाक और होने जा रहा है. इसका नोटिस दिया है लेखक, अभि[illegible] **कादर खां** ने. फेयर पार्टनर (आप गलत समझे, पत्नी नहीं) शक्ति कपूर के साथ [illegible] जोड़ी कई फिल्मों में धूम मचा चुकी है. मगर जबसे शक्ति के सिर हीरो बनने का [illegible] सवार हुआ है, उनके चमचे उन्हें कॉमेडी से किनाराकशी कर लेने की सलाह देते आ [illegible]

ऊहापोह में पड़े शक्ति जब-तब ना-नुकुर और नखरों पर उतर आते हैं. कादर ने [illegible] सुझाव दिया, "उसका दिल कहीं और लग गया है तो मैं नया पार्टनर ले लेता [illegible] कॉमेडियनों की कमी थोड़े ही है हिंदुस्तान में." पार्टनर बदलने का प्रयोग सफल रहा [illegible] का काम मिनटों में निबटता गया. पार्टनर के नए अंदाजों ने कादर को इतना प्रेरित [illegible] कि वे पार्टनर परमानेंटली बदलने का मन बना चुके हैं. शक्ति कपूर, सावधान!

नई-नवेली का मासूम सवाल

□ फिल्मिस्तान स्टुडियो में एक फिल्म की शूटिंग के दौरान **कुनिका** ने जितेंद्र से एक [illegible] मासूम सवाल कर डाला कि सदाबहार जितेंद्र भी सकपका गए. कुनिका छरहरे जिस्म [illegible] तीखे नैन-नक्श की वह नई-नवेली अभिनेत्री है जिसे शरीर प्रदर्शन से नाममात्र का [illegible] है. बहरहाल, इस स्टुडियो में जब यह हवा उड़ी कि जितेंद्र और कुनिका के बीच भी दोस्ती के 'अंकुर' फूट चुके हैं तो जितेंद्र साफ मुकर गए, "मैं तो कुनिका को जानता भी नहीं."

कुनिका इठलाती हुई पहुंची जितेंद्र के पास, "ये लोग कह रहे हैं कि आप मुझे जानते ही नहीं. वह पिछली मुलाकात कितनी जल्दी भूल गए आप..." वे कुछ और कहें इससे पहले जितेंद्र खिसक गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाचेगी नहीं, नचाएंगी

पद्मा: नई भूमिका

□ स्टुडियो में फिल्म के सेट पर **पद्मा खन्ना** को डांस करते देख चौंकना पड़ा. यह सही है कि फिल्मों में उन्होंने एक से बढ़कर एक शानदार और जानदार नृत्य करके जो नाम पैदा किया है वह मिटाया नहीं जा सकता. लेकिन इधर अरसे से वे फिल्मों से लगभग बाहर ही थीं. फिर आज अचानक उन्हें यह क्या सूझी?

मगर यह मामला तो कुछ और ही निकला! नृत्य छोड़ घर बैठ जाने वाली हेलेन (जो अब सलमान की सौतेली मां हैं) जिस तरह मोटी और बेड़ौल हुई हैं, उसके मुकाबले पद्मा का यह फैसला क्या ज्यादा सही और समझदारी भरा नहीं लगता? अब लेखक, अभि[illegible] जरूर जानना चाहेंगे कि आखिर पद्मा खन्ना कर क्या रही थीं? [illegible] के साथ [illegible] चेतावनी' फिल्म के सेट पर वे डांसर नहीं डांस डायरेक्टर के रूप में मौजूद थीं. इस [illegible] बनने का [illegible] में पद्मा के उतर आने से सबसे ज्यादा परेशान हैं सरोज खां. नृत्य निर्देशिका के तौर पर [illegible] दे देते आ [illegible] की धाक छरहरी पद्मा के आ जाने से दुबला जाने का खतरा जो है.

लुहार भाई पर चोट

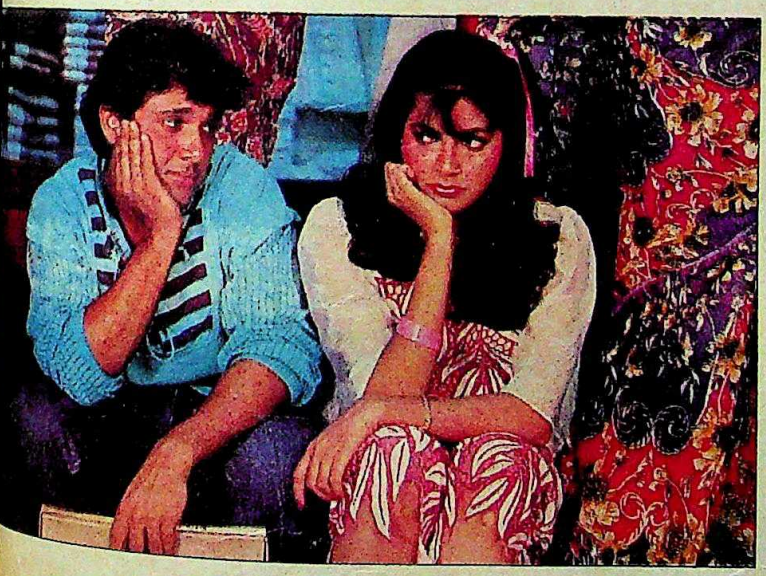

गोविंदा: अपनी ही बात उलटी पड़ी

पार्टी थी 'होटल सन-एन-सैंड' पूलसाइड में. सितारों का जमघट अच्छा था. आमिर, [illegible]मान, सनी, अनिल—सभी तो थे वहां. लेकिन ये सब क्या सिर्फ इसलिए आए थे कि [illegible]ए गए थे या कुछ और सोच कर आए थे? पार्टी में **गोविंदा** के सपत्नीक पहुंच जाने के [illegible] चारों की आंखों में चमक आ गई. फिर तो इनमें से जो भी, जब भी गोविंदा से मिला, [illegible] का संबोधन एक ही था, "हाय, लुहार भाई गोविंदा!"

[illegible]विंदा भौचक. यह हो क्या रहा है? जब तक वे कुछ समझें, तब तक संबोधन सारी [illegible] में फैल चुका था, "लुहार भाई गोविंदा!" इसके साथ-साथ यह बात भी सबको [illegible]ई जा चुकी थी कि अपने एक इंटरव्यू में गोविंदा ने खुद सगर्व स्वीकार किया है, "मैं [illegible] हूं." दरअसल, गोविंदा ने बात में वजन पैदा करने के लिए अंग्रेजी पत्रिका में [illegible]करदार हिंदी में कहा था, "मैं वह लुहार हूं जिसकी अभी एक पड़नी बाकी है."

नीलम: बात बदल गई

मुकरने में क्या मुश्किल

□ कहा जाता है कि मुंह से निकली बात और धनुष से छूटे तीर कभी वापस नहीं आते. न आते हों **नीलम** की बला से. नैनों के तीर उन्होने अक्सर एक साथ ही कई निशानों पर लगाए हैं. और वे चूके भी नहीं हैं. रही मुंह से निकली बात, तो उसका कोई रिकार्ड तो रखता नहीं. उससे मुकर जाने में भला क्या मुश्किल हो सकती है?

हांगकांग निवासिनी नीलम इस भयंकर गरमी में भी मुंबई में शूटिंग कर रही हैं, यह देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ. इससे भी ज्यादा ताज्जुब यह देखकर हुआ कि वे जैकी श्रॉफ के साथ हीरोइन हैं.

यह जोड़ी हिट तो नहीं हुई पर निर्माताओं को पहले भी पसंद थी. लेकिन नीलम ने यह बहाना बनाकर कि वे एक ही हीरो के साथ बार-बार टीम बनाना नहीं चाहतीं, जैकी के साथ काम करने से इनकार कर दिया था. जैकी के ठंडे चल रहे उस दौर में नीलम ने चंकी का पल्ला पकड़ लिया था, शायद यह सोचकर कि माधुरी दीक्षित के साथ हीरो का चांस मिल जाने के बाद चंकी जरूर बड़े ब्रैकेट में आ जाएंगे.

समय के साथ नीलम के सभी हीरो पिट गए और नीलम का अपना कैरियर डोल गया. लेकिन व्यापारी की बेटी नीलम नफा-नुकसान के बारे में इतनी नासमझ नहीं कि मुंह से निकली बात को पूरी तरह झुठलाना न जानती हों. खतरा सामने देख उन्होंने इस जादुई अंदाज से जैकी को स्वीकार कर लिया कि इन्हीं हाथों एक बार अस्वीकार कर दिए जाने की बात अब जैकी भी भूल जाना चाहते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

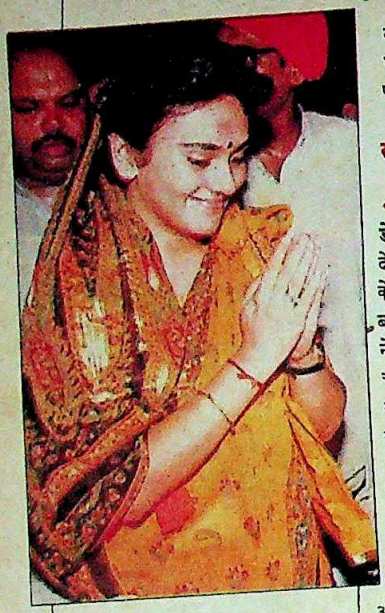

दीपिका: राजनीति से पलायन?

सीता को मिले राम

◆ 'सीता' को अपना असली 'राम' मिल गया है. ये कलयुगी राम हैं सौंदर्य प्रसाधन बनाने वाले उद्योगपति हेमंत टोपीवाला. वडोदरा से भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़ रही कलयुगी 'सीता' 26 वर्षीया **दीपिका चिकलिया** ने गहमागहमी भरा चुनाव अभियान बीच में छोड़ा और एक गुप्त स्थान पर मुंबई के इस उद्योगपति से मंगनी रचा ली. लेकिन सगाई होने से पहले ही यह खबर जब किसी तरह लीक हो गई तो विवाद छिड़ गया. आशंकाएं जाहिर करने वालों ने भविष्यवाणी की कि अब तो उनकी राजनीति बस धरी की धरी रह जाएगी. सबसे ज्यादा झटका तो भारतीय जनता पार्टी के उन नेताओं को लगा जो दीपिका को 'रामायण' धारावाहिक के बाद की गुमनामी से निकालकर राजनीति के केंद्रीय मंच पर ले आए थे. उनको लगता है कि अब दीपिका का राजनैतिक वनवास शुरू हो जाएगा. लेकिन कुछ लोगों का मानना है कि उन्हें 'दहेज में काफी वोट' मिल सकते हैं. पार्टी की तरफ से सगाई टालने का दबाव पड़ने की भी चर्चा थी पर आखिर में जीत प्यार की ही हुई.

साधना सफल हुई

◆ चालीस वर्षीया **मरथकवेल्ली डेविड** के लिए तो जैसे यह देवलोक से मिला निर्देश था. वे केरल की पहली महिला पादरी बनीं और हाल में ही उन्हें नेडियाकला सीएसआई चर्च की चाबियां भी सौंपी गईं. धर्मशास्त्र की स्नातक मरथकवेल्ली ने इस गौरव के लिए वर्षों तक पुरुष साथी धर्माचार्यों से प्रतिद्वंद्विता की थी. सारे पुरुष पादरी यही कहते रहे कि बाइबल के अनुसार, "स्त्रियां अशुद्ध होती हैं. सो, इस पद के लिए वे अयोग्य हैं."

अपनी इस सफलता पर मरथकवेल्ली उल्लसित हैं. वे उत्साह के साथ बताती हैं, "किशोरावस्था से ही मैं पादरी बनने के लिए उत्सुक थी." लेकिन उन्हें अपनी मुश्किलों का भी एहसास है, "अब मेरी एकमात्र समस्या घरेलू कामकाज की है." पति डी. डेविड की मदद से यह काम संभालने में भी उन्हें मुश्किल नहीं होनी चाहिए.

मरथकवेल्ली: सपना साकार

शंकर

एक छक्के से चूके

◆ **वे मात्र एक छक्के की कमी से चूक गए. 18 वर्षीय** सचिन तेंडुलकर **पढ़ाई में भी क्रिकेट जितने कुशल नहीं हैं. हायर सेकेंडरी की परीक्षा में वे मात्र छह अंकों से फेल हो गए. उनके पिता कहते हैं, "यहां भी यह करीब-करीब पास ही हो गया था."**

कार्टून: जयतो

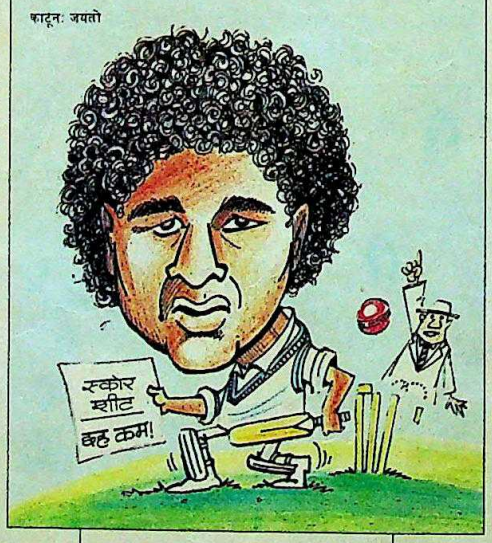

विदाई की बेला

◆ तेरह वर्षों तक न्यूयॉर्क फिलहार्मोनिक के संगीत निदेशक रहने के बाद **जुबिन मेहता** ने इससे विदा ले ली है. न्यूयॉर्क टाइम्स ने प्रथम पृष्ठ पर शीर्षक दिया, "रंग में भंग हो गया." फिलहार्मोनिक ने भी सबसे अधिक समय तक अपना नेतृत्व करने वाले इस शख्स के सम्मान में शानदार आयोजन किया. माहलर की प्रसिद्ध नाइंथ सिंफनी की मूल धुन बजाई गई और अपने संस्थापक के बैटन की अनुकृति भेंट की गई. इस मौके पर मेहता ने कहा, "मैं पूरी संतुष्टि के भाव के साथ विदा ले रहा हूं. मैं दुनिया

जुबिन : संतुष्टि भरी विदाई

की सबसे अच्छी संगीत मंडली के रूप में जो विरासत छोड़कर जा रहा हूं उस पर मुझे नाज है."

नाम बदला

◆ इंडियन एक्सप्रेस साम्राज्य पर दावेदारी का फैसला हो ही गया. हाल ही में 'नाना' रामनाथ गोयनका के 'नाती' **विवेक गोयनका** को गोद ले लिया और उनके नाम में गोयनका की जगह गोयनका जोड़ा गया. दूसरे दावेदार मनोज संथानिम दरकिनार कर दिए गए. विवेक ने कहा, "एक्सप्रेस उन्हीं मूल्यों पर चलता रहे जिसके लिए यह स्थापित हुआ था." लोगों को और चाहिए ही क्या?

विवेक: नाना की पसंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

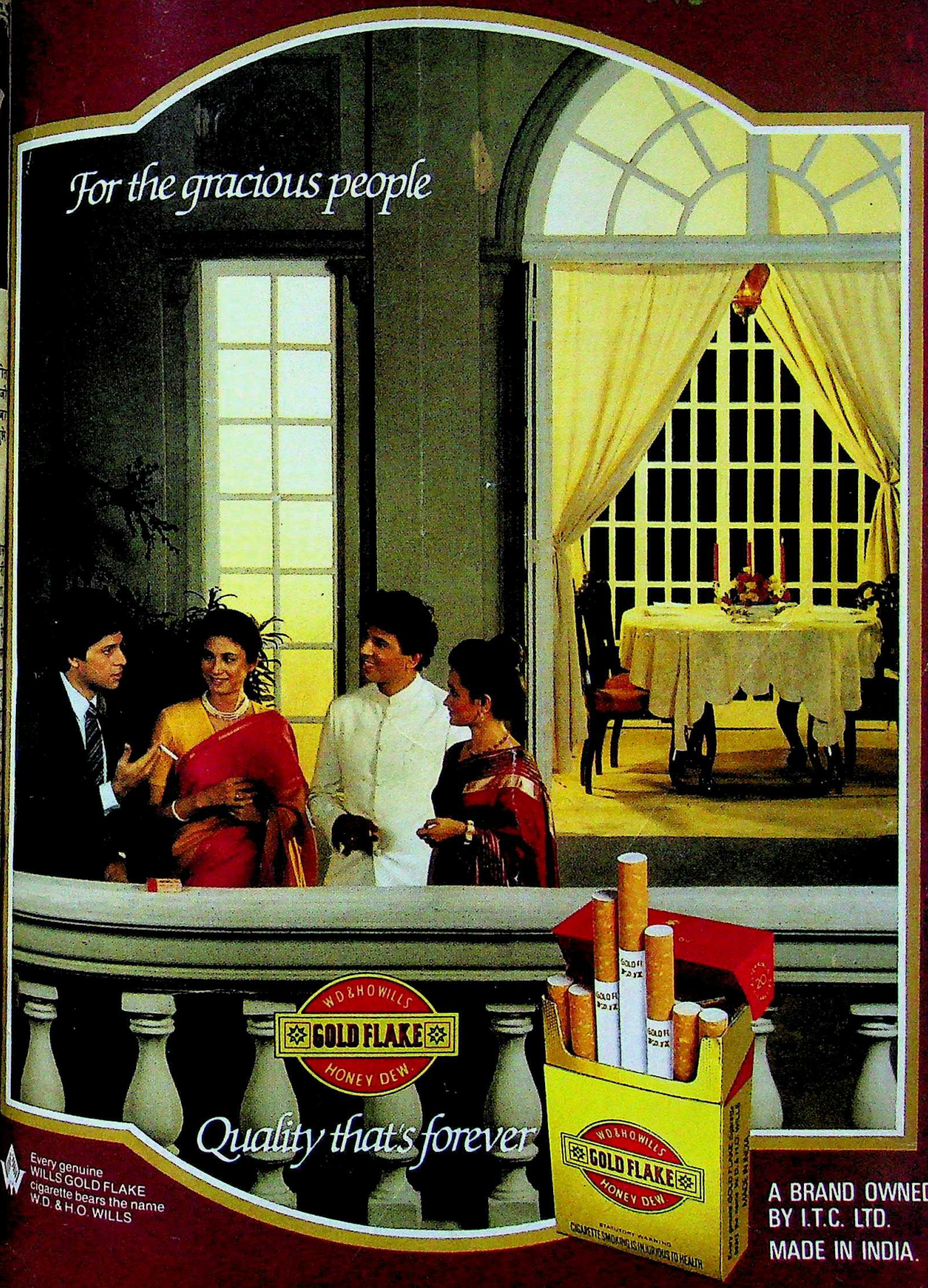

Every genuine WILLS GOLD FLAKE cigarette bears the name W.D. & H.O. WILLS

A BRAND OWNED BY I.T.C. LTD. MADE IN INDIA.

CLARION C-GFK-16R2

STATUTORY WARNING: CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTRATION NO. H.N. 45823/85

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AVAILABLE IN SELECTED CITIES

Rothmans

KING SIZE

WORLD LEADER

THE BEST TOBACCO MONEY CAN BUY

Made in India under licence by Godfrey Phillips (India) Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Statutory Warning:
Cigarette smoking is injurious to health

15 जुलाई 1991 5 रुपए

इंडिया टुडे

खास पड़ताल
राजीव हत्याकांड
साजिश कैसे रची गई

धनु

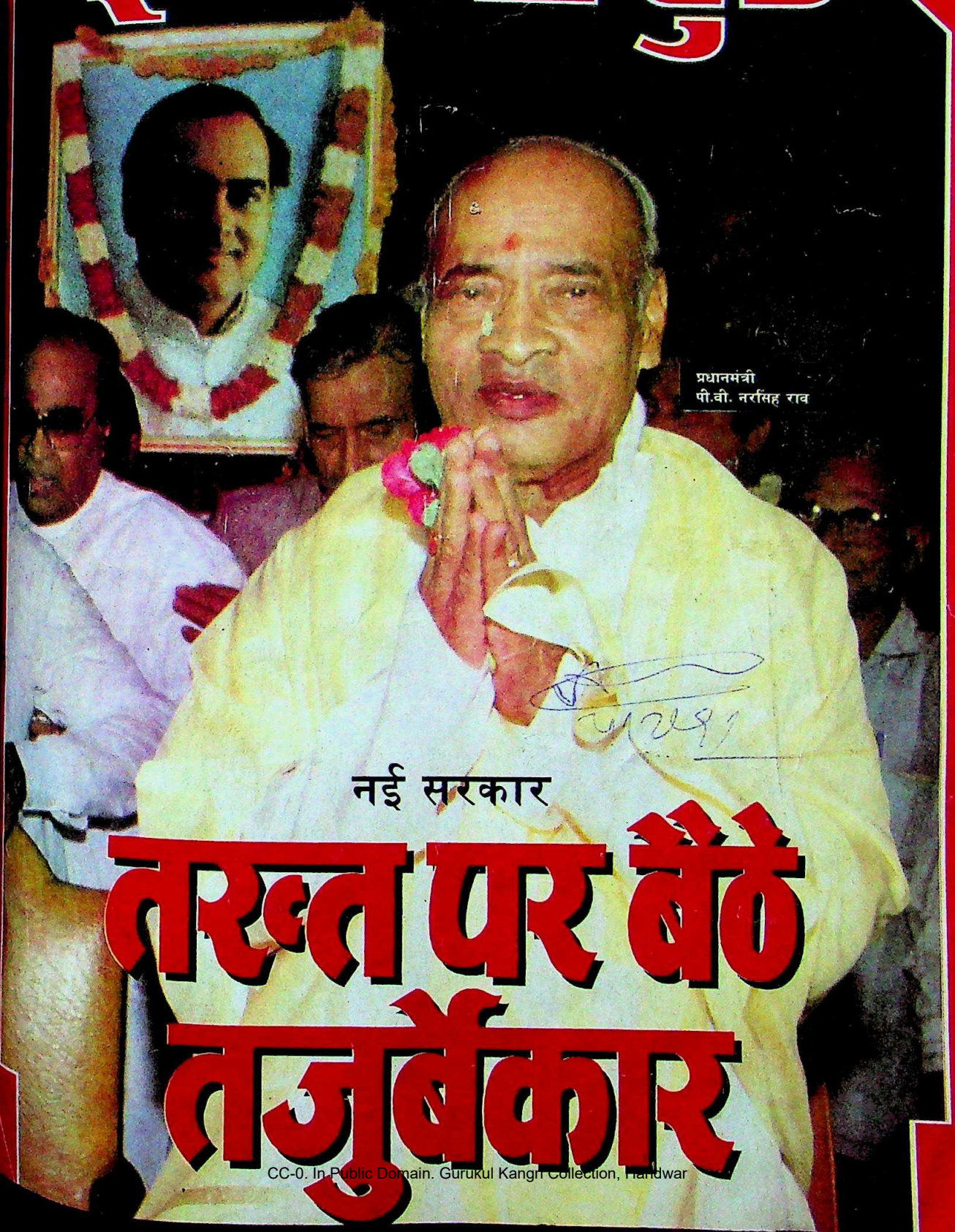

प्रधानमंत्री
पी.वी. नरसिंह राव

नई सरकार

तख्त पर बैठे तजुर्बेकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाख जतन से न निकले, ये कैसी छवि जो मन में छिपी?

इस साज श्रृंगार से प्रिया को मन में बसाइये।
आप के सौंदर्य में हमारे स्वर्ण अलंकार चार चांद लगा देते हैं।
उत्कृष्ट कारीगरी, अटूट विश्वास के साथ नित नये डिज़ाइन।
स्वर्ण अलंकारों के साथ हीरों के जडाऊ जेवरों का अद्वितीय संगम!
'नयनतारा' शो रुम आज जलगांव की शान है।
आप के विश्वास से आज हम कहाँ पहुँच गये जरा आकर तो देखिये।

स्वाभिमान का मुकुटमणी

रतनलाल सी. बाफना
ज्वेलर्स

"नयनतारा" सुभाष चौक जलगांव फोन नं. ३९०३, ५९०३, ७३३२.

BEEJ 203-11

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले पन्नों पर

आवरण कथा

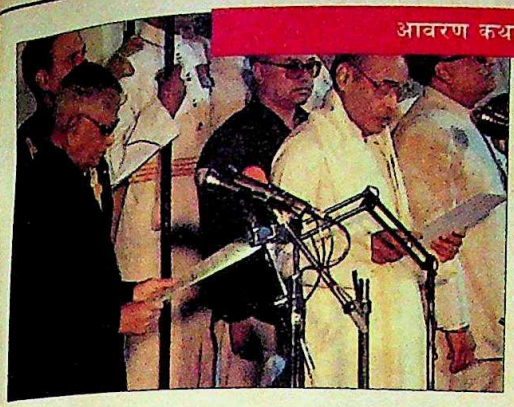

तख्त पर बैठे तजुर्बेकार

नरसिंह राव के प्रधानमंत्री चुने जाने से पुराने कांग्रेसियों के शासन के दिन लौट आए हैं लेकिन उनका मंत्रिमंडल बहुत प्रभावशाली नहीं लगता. महाराष्ट्र के दिग्गज राजनीतिक शरद पवार भी प्रधानमंत्री पद की दौड़ में शामिल थे लेकिन पार्टी पर हावी शक्तिशाली मंडली ने उनके दावों को कुंद कर दिया. इन चुनावों में जहां तमिलनाडु में जयललिता और बिहार में लालू यादव शक्तिशाली क्षेत्रीय नेताओं के रूप में उभरे वहीं देवीलाल जैसे किंग मेकर को अपने ही गढ़ हरियाणा में बेहद अपमानजनक हार सहनी पड़ी.

आवरण कथा..... 18

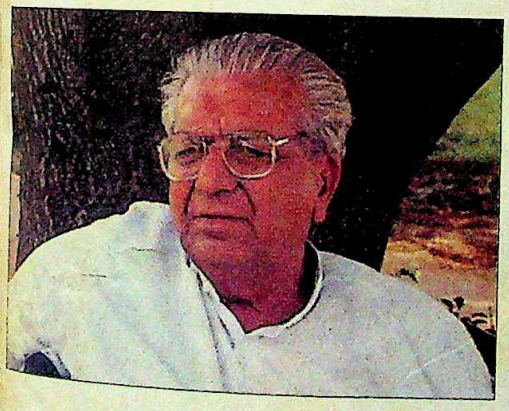

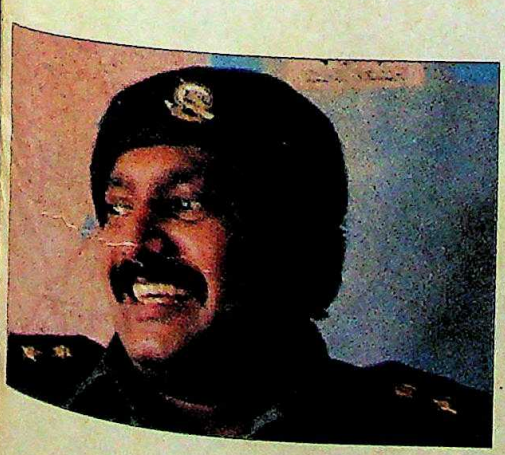

घिनौनी साजिश का ओर-छोर

एलटीटीई प्रमुख प्रभाकरन ने अक्तूबर 1990 में राजीव की हत्या के आदेश दिए. हत्या में शामिल लोगों और इसे अमल में लाने की साजिश पर विशेष खोज.

खास पड़ताल..... 74

कसौटी..... 7
तेवर..... 8
राजरंग..... 10
हिंदोस्तां हमारा..... 12
आवरण कथा
नई सरकार:
तख्त पर बैठे तजुर्बेकार..... 18
अर्थव्यवस्था:
मर्ज कहीं लाइलाज न हो जाए..... 42
व्यापार चक्र..... 59
कारोबार
शेयर बाजार..... 61
पास-पड़ोस
श्रीलंका: हाथ से बाहर जाते हालात..... 62
कूटनीति
भारत-अमेरिका संबंध:
शर्तों ने डाली खटास..... 66
रहन-सहन
जरी बुनकर:
हुड़दंग ने मारा हुनर..... 67
वर्ग पहेली..... 68
आरपार..... 70
समाचार माध्यम
दूरदर्शन:
पेशेवर कुशलता का उम्दा प्रदर्शन..... 71
खास पड़ताल
घिनौनी साजिश का ओर-छोर..... 74
समाचार जगत
अमृत बाजार पत्रिका: कर्ज ने मारा..... 85
कहानी..... 88
किताबें..... 92
परदे के उस पार..... 94
चर्चित चेहरे..... 96

आवरण: शरद सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म्यूज़िक टुडे

की नई पेशकश

सी 91016

महाराजापुरम संथानम *(गायन)*

संकरी समकुरु ; राम नीनू नामिन्ना ; हिमगिरि तनैये/पदसनति मुनिजना : एहि अन्नपूर्णे ; शनमुखम भजः

सी 91015

एम बालमुरली कृष्ण *(गायन)*

नीदैया रादा ; वेगमय

बृहदीस्वरा : ओंकारा ; तिल्लाना

ए 91001

बिस्मिल्लाह ख़ान *(शहनाई)*

राग रागेश्वरी/राग शिवरंजनी

ए 91008

हरिप्रसाद चौरसिया *(बांसुरी)*

राग ललित/राग भूपाली

MAESTRO

हिन्दुस्तानी एवम् कर्नाटक संगीत

पहली बार.... भारतीय संगीत के चोटी के उस्तादों के स्वर में हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के खज़ाने में से उन्हीं की रूचि के रागों का बेहतरीन गुलदस्ता. हर संगीतकार की अपनी पहचान की महक वाले इन रागों और कृतियों का चुनाव उन्होंने स्वयं किया है. यही कारण है कि डिजिटल पद्धति से आपके लिए खास तौर से रिकार्ड किए गए ये कैसेट आपको अनूठी संगीत लहरियों में झुला कर मस्त कर देंगे.

उस्तादों की पसंद – आपके लिए संगीत का ऐसा खजाना जो भारतीय संगीत विरासत के मौजूदा प्रतिनिधियों की महारत का आइना है. चुनींदा दुकानों में उपलब्ध 17 कैसेटों का अनूठा सेट डाक या कूरियर सेवा के रास्ते आपके घर के दरवाज़े पर उपलब्ध.

ए 91009

राम नारायण *(सारंगी)*

राग मारवा/मिश्र देस और मिश्र भैरवी

ए 91005

गंगूबाई हंगल *(गायन)*

राग बिहाग/राग बागेश्री

सी 91017

टी एन कृष्णन *(वायलिन)*

महा गणपतिम ; मारि वेरे ; रघुवमसा सुधा/ सारसाक्षा ; पारुलन्ना माता : रमणै तरुवय

सी 91014

वी दुरैस्वामी आयंगार

वैंकटासैल विहार ; चितंबरा घन रागमलिका तानम ;

MUSIC TODAY

इंडिया टुडे प्रस्तुति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ए 91003
रवि शंकर *(सितार)*
राग आसा भैरव
रागेश्री कान्हरा और मिश्र गारा धुन

ए 91002
मल्लिकार्जुन मंसूर *(गायन)*
राग शुक्ल बिलावल/राग रईसा कान्हरा और राग आडंबरी केदार

ए 91006
किशोरी अमोनकर *(गायन)*
राग अहीर भैरव/राग संपूर्ण मालकौस

ए 91004
भीमसेन जोशी *(गायन)*
राग रामकली/राग शुद्ध कल्याण

ए 91007
पंडित जसराज *(गायन)*
राग बैरागी भैरव/राग दरबारी कान्हरा

ए 91010
शिव कुमार शर्मा *(संतूर)*
राग भूपाल तोड़ी/राग कीरवाणी

CHOICE

कलासीय संगीत

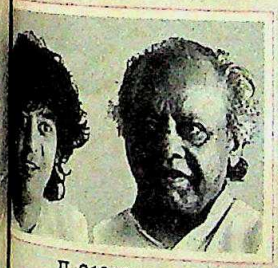

ए 91013
रखा और ज़ाकिर हुसैन *(तबला)*
त ताल/जय ताल और पश्तो

ए 91012
असद अली ख़ान *(रुद्र वीणा)*
राग आसावरी/राग मालकौस

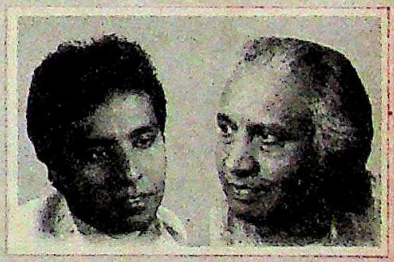

ए 91011
ज़हीरुद्दीन और वसीफ़ुद्दीन डागर *(ध्रुपद)*
राग ललित/राग कामबोझी

ए 91001
ाह ख़ान (गा
श्वरी/राग शिवर

ए 91014
मी आयंगर
हार ; चिरैया
का तानम ;

ए कैसेट 48 रु. (कर सहित). 1 से 4 कैसेट के आर्डर पर पैकिंग और वितरण शुल्क के रूप में 10 रु. अतिरिक्त. 5 या अधिक कैसेट के आर्डर पर पैकिंग और वितरण शुल्क नहीं लगेगा.

कृपया ध्यान दें

- दिल्ली से बाहर के चैकों पर 10 रु. अधिक जोड़ें.
- मुंबई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली से भेजे गए चैक/ड्राफ्ट का एम आर सी आर होना ज़रूरी है.
- केवल पूरी कीमत मिलने पर ही रजिस्टर्ड डाक या कूरियर से कैसेट भेजे जाएंगे.
- कृपया आर्डर के बाद डिलीवरी के लिए कम से कम 3-4 सप्ताह तक प्रतीक्षा करें.
- उपहार भेजने के लिए संलग्न आर्डर-फार्म का प्रयोग करें.
- अपने चैक/ड्राफ्ट और अन्य भुगतान 'म्यूज़िक टुडे' के नाम पर इस पते पर भेजें :– म्यूज़िक टुडे, पो बा. 29, नई दिल्ली- 110001.
- उपरोक्त आफर और कीमतें केवल भारत में लागू होंगी.
- भरा हुआ आर्डर फार्म आप तक न पहुँचे तो कृपया सादे कागज़ पर अपना नाम, पता लिखकर अपने भुगतान के साथ इस पते पर भेजें :– म्यूज़िक टुडे, पो बा 29, नई दिल्ली-110001

चुनींदा दुकानों में भी उपलब्ध

मेल-आर्डर फार्म

कोड सं.	कैसेटों की संख्या
ए 91001	_____
ए 91002	_____
ए 91003	_____
ए 91004	_____
ए 91005	_____
ए 91006	_____
ए 91007	_____
ए 91008	_____
ए 91009	_____
ए 91010	_____
ए 91011	_____
ए 91012	_____
ए 91013	_____
सी 91014	_____
सी 91015	_____
सी 91016	_____
सी 91017	_____

हाँ, मैं 'म्यूज़िक टुडे' के कैसेट 48 रु. प्रति कैसेट की दर से खरीदना चाहता/चाहती हूँ. (कृपया 1 से 4 कैसेट तक के आर्डर पर पैकिंग और वितरण शुल्क के लिए 10 रु. अतिरिक्त भेजें). मुझे ये कैसेट

अपने लिए ☐ उपहार देने के लिए ☐

चाहिए. विवरण नीचे है.

इसके लिए 'म्यूज़िक टुडे' के नाम पर रु. _____ का क्रास किया हुआ चेक/डिमांड ड्राफ्ट संलग्न है (दिल्ली से बाहर वाले चैक पर 10 रु. अतिरिक्त जोड़ें)

कुल देय राशि रु. _____

मेरा नाम _____

पता _____

_____ पिन _____ फोन _____

उपहार पाने वाले का नाम _____

पता _____

_____ पिन _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

TEMPO TRAX

THE ROUGHROAD MASTER!

- OM616* Diesel engine for extra power, smoothness and reliability.
- Rugged chassis, independent front suspension for greater riding comfort.
- Full synchromesh gear box, full floating rear axle, smoother and more dependable.
- Maximum fuel economy, minimum maintenance cost.
- Unmatched warranty and service.
- Available in two wheel bases and soft top/FRP top versions.

* Engine made under licence from Mercedes Benz AG, Germany.

BAJAJ Tempo
Akurdi, Pune-411 035.

Ogilvy&Mather 8252

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुश्किल काम

राजीव हत्याकांड: 'सुरागों से उभरते संकेत' (30 जून) हालांकि कुछ उम्मीद जगाते हैं. लेकिन अपराधियों को पकड़ पाना बहुत मुश्किल काम होगा क्योंकि संबद्ध व्यक्तियों के एक बार भारत से बाहर चले जाने पर उनकी टोह लेना बहुत कठिन है.

बड़हलगंज, गोरखपुर (उ.प्र.) **प्रमोद कुमार ओझा**

विधि की विडंबना

राजीव गांधी पर विशेषांक (15 जून) पढ़ा. यह विधि की विडंबना ही है कि जब राजीव राजनीति में निहायत अपरिपक्व थे, तब उन्हें राजनीति विरासत में मिली और मना सुंदरी ने उनका वरण किया और जब वे राजनैतिक उतार-चढ़ाव में तप-तपकर, प्रखर नेता बनने की ओर अग्रसर थे, जनता के आशा-केंद्र बन चुके थे, मृत्यु ने उन्हें हमसे छीन लिया.

पटना (बिहार) **ज्ञानशंकर प्रसाद**

■ राजीव की हत्या एक नेता की ही हत्या नहीं, वरन भारत के भविष्य की भी हत्या है और हमारा वर्तमान तो खून से लथपथ है ही. इतने कम समय में कोई नेता राष्ट्रीय अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर इतना चहेता नहीं बना था.

कलकत्ता (प.बंगाल) **दिनेशचंद्र प्रसाद**

■ राजीव की अंत्येष्टि के वर्णन ने मन को झकझोर कर रख दिया. महसूस हुआ कि हम अब भी बर्बर युग में जी रहे हैं जहां कोई भी सुरक्षित नहीं है.

विलासपुर (म.प्र.) **सुनील टुटेजा**

■ विशेषांक पढ़कर लगा कि आप अब भी राजीव गांधी की आलोचना में ज्यादा यकीन करते हैं. आपने एक जगह लिखा है कि अच्छा काम करने वाले वी.पी. सिंह और अरुण नेहरू को दरकिनार कर दिया गया. वहीं वी.पी. सिंह आज झूठ, प्रपंच और छल की राजनीति के पर्याय बन चुके हैं.

मोतिहारी (बिहार) **लक्ष्मीकांत झा**

■ राजीव गांधी के न रहने से देश की मध्यमार्गी राजनीति बहुत कमजोर पड़ गई है. चाहे कितने भी तर्क क्यों न दिए जाएं सरकार राजीव की हत्या के दायित्व से मुक्त नहीं हो सकती. देश के सामान्य से सामान्य नागरिक की सुरक्षा का दायित्व सरकार का है तो राजीव की सुरक्षा के तो समुचित प्रबंध होने ही चाहिए थे.

लखनऊ (उ.प्र.) **अनूप चतुर्वेदी**

■ कम उम्र में ही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अपनी पहचान बना लेने वाले राजीव की जीवनयात्रा को जिस सजीवता, करुणा और मार्मिकता से पेश किया उसने इसे एक संग्रहणीय अंक बना दिया है.

जबलपुर (म.प्र.) **सुरेंद्र सिंह सेंगर**

■ कदाचित गांधियों के भाग्य में अस्वाभाविक मौत ही लिखी थी. राजीव गांधी के दर्दनाक अंत की तो किसी ने कल्पना भी नहीं की थी. उनकी अकस्मात मृत्यु से देश और विशेषकर कांग्रेस में तो भयावह रिक्तता पैदा हुई ही है, ऐसे अविश्वास का भी बीजारोपण कर दिया है जिससे आने वाले दिनों में जनता और उसके नेता के बीच दीवार खड़ी हो गई है.

गया (बिहार) **देवेंद्र नाथ**

■ राजीव की हत्या के बाद कांग्रेस के लिए तो यह अग्निपरीक्षा का दौर है. वैसे तो पहले भी कांग्रेस पर गहरा संकट आया है लेकिन गांधी-नेहरू परिवार का साया और कोई-न-कोई लहर उसे हर बार उबार ले गई है. लेकिन इस बार दोनों का ही संबल उसे नहीं मिल पाएगा.

इंदौर (म.प्र.) **नीति अग्निहोत्री**

■ राजीव की क्षत-विक्षत लाश ने मन को झिंझोड़कर रख दिया. पता नहीं अहिंसा का पुजारी कहलाने वाले इस देश की जनता कहां जा रही है?

जबलपुर (म.प्र.) **नरेंद्र सिंह**

■ दिल दहला देने वाली इस घटना और राजीव गांधी की स्मृतिशेष के मध्य से ये ऐतिहासिक उद्गार निकले कि उनका राजनैतिक जीवन शेरशाह सूरी से बहुत साम्यता रखता था. दोनों ने पांच वर्ष शासन किया. दोनों ने शासन व्यवस्था को एक नया आयाम देने की सफल कोशिश की और दोनों का अंत अचानक हुए बम विस्फोटों में हुआ.

इलाहाबाद (उ.प्र.) **राजीव अस्थाना**

■ सौम्यता व शालीनता की मूर्ति युवा नेता राजीव गांधी की निर्मम हत्या पर इतनी गहराई व सूक्ष्मता से खोजपूर्ण रपट व फोटो फीचर पढ़कर यह सोचने को विवश होना पड़ा कि क्या यह विश्व नेताओं की नियति है कि जिसने भी एकता, अखंडता के लिए काम किया, उग्रवाद ने उसे ही अपना निशाना बनाया.

वाराणसी (उ.प्र.) **चंद्रकांत यादव**

आरक्षण का आधार क्या?

'सुलगते सवालों के सूत्रों की समझ' (31 मई) पढ़ा. आरक्षण होना तो चाहिए लेकिन उसका आधार आर्थिक होना चाहिए, जाति नहीं क्योंकि देश में सभी को आगे बढ़ने का

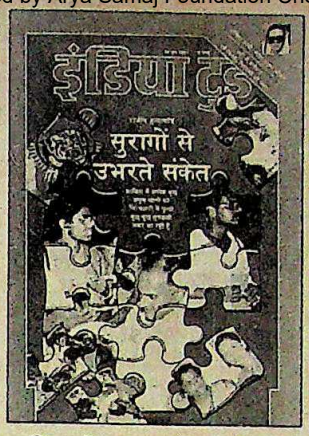

जिनसे हम लोकतंत्र को अस्थिर करने की साजिश कहकर पल्ला झाड़ लेते हैं, वह गलत विदेश नीति का परिणाम है.

नई दिल्ली **अंजू तिवारी**

एक विदेशी उग्रवादी संगठन सारी सुरक्षा व्यवस्था को धता बताकर एक नेता को इस तरह मार जाए क्या यह शर्म की बात नहीं.

फैजाबाद (उ.प्र.) **मीना**

वर्ष: 5, अंक 17,
1-15 जुलाई 1991

● **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001 फोन: 3315801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ● **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कनिंटेट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001 फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ● **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2 नरीमन पाइंट, मुंबई-400021 फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, मुंबई. ● **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कल, नई दिल्ली 110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105, फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 मेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001, फोन: 568448, 579037, 579069, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016, फोन: 225398, 221922, टेलेक्स: 21-7138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कनिंटेट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा धर्ममन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार है. और सभी जातियों में गरीब लोग भी होते हैं, और अमीर भी.

गोंडा (उ.प्र.) **सोहनलाल शुक्ल**

■ जयपाल रेड्डी ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले का जो हवाला दिया है वह कुछ हद तक सही हो सकता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि आरक्षण का लाभ उठाने वालों में 98 फीसदी ऐसे होते हैं जो तमाम सुख-सुविधाओं के बीच पढ़ते हैं और जिनके अभिभावक खासे संपन्न हैं. एक जूते सिलने वाले के लड़के को कभी आरक्षण नहीं मिल पाता जो कि आरक्षण का असली ध्येय है.

रायबरेली (उ.प्र.) **संजय अग्निहोत्री**

अस्पष्ट परिभाषा

धर्मनिरपेक्षता पर बहस 'कैसा स्वरूप, कैसी भूमिका' (15 मई) एक सफल प्रयास है. परिचर्चा से स्पष्ट हो जाता है कि धर्मनिरपेक्षता की परिभाषा कितनी अस्पष्ट है. कहा जा सकता है कि नेताओं को जितना प्यार 'धर्मनिरपेक्षता' शब्द से है, उतना उसकी व्यावहारिकता से नहीं.

हजारीबाग (बिहार) **मुमताज अली अहमद**

■ 'तर्क-वितर्क' से कई तथ्य उभरते दिखे. एम.जे. अकबर और जावेद हबीब का मुसलमानों को आर्थिक रूप से विपन्न समुदाय के रूप में दर्शाना वस्तुस्थिति को नकारना है. समय की मांग है कि समुदाय विशेष के तुष्टिकरण की नीतियों से निजात पाकर हम राष्ट्रवाद की बात कहें.

कैथल (हरियाणा) **डी.के. सचदेव**

■ हबीब ने यह मानकर कि 'धर्मनिरपेक्ष पार्टियां मुसलमानों को राजनैतिक मोहरों के रूप में इस्तेमाल कर रही हैं, साहस का ही परिचय दिया है. स्वतंत्रता के बाद उन पार्टियों ने अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक के रूप में एक समाज का विघटन कर मुसलमानों में यह भय बनाए रखा कि हिंदू उन्हें निगल जाएंगे. इस तरह उन्हें दूसरे दर्जे का नागरिक बना उनकी अशिक्षा व गरीबी को अपने हित में भुनाया.

उदयपुर (राज.) **अनिल कुमार**

पोस्टमार्टम भ्रष्टाचार का

कहानी 'उपलब्धि' (15 मई) में व्यंग्यों का सटीक इस्तेमाल किया गया है. वास्तविकताओं से तालमेल रखते हुए भ्रष्टाचार का खासा पोस्टमार्टम किया गया है. मौजूदा व्यवस्थाओं के चलते आज 'अभय' जैसी प्रतिभाओं की हत्याएं की जा रही हैं.

नैनीताल (उ.प्र.) **जगदीश नैथानी**

परीकथाओं-सी इस प्रेम कहानी में राजनीति ने मानो राजकुमार और राजकुमारी को अलग करने वाले राक्षस की भूमिका निभाई. नियति यदि सोनिया को भारत ले आई है तो उन्हें पति के अधूरे छूटे काम पूरे कर भारत-प्रेम का परिचय देना चाहिए

इलाहाबाद (उ.प्र.) **तारा मिश्रा**

लेख पढ़कर सोनिया के बारे में कई गलतफहमियां दूर हो गईं. आम तौर पर उनकी छवि एक महत्वाकांक्षी, मगरूर और रूखी महिला की ही रही है. राजनीति में उनकी दखलंदाजी के किस्से भी सुने जाते रहे लेकिन पति और परिवार के प्रति वे एक भारतीय महिला जितनी ही समर्पित थीं.

दिल्ली **अरुणा बाली**

अपराधियों का राजनीतिकरण

'जम्हूरियत का जनाजा' (15 मई) पढ़ा. बिहार को राजनीति का अपराधीकरण या अपराधियों का राजनीतिकरण कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी. पिछले चुनावों में यहां बूथ कब्जे, पार्टी कार्यकर्ताओं की हत्या, पेशेवर अपराधियों के वर्चस्व में बेतहाशा वृद्धि हुई है. नेता अपराधियों के संरक्षक बने हुए हैं. ऐसे में स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव की कल्पना भी नहीं की जा सकती.

पटना (बिहार) **हरेंद्र नारायण**

पहले ही संभल जाते

'अब नया अवतार' (15 मई) पढ़ा. यदि अमिताभ सबसे टकराने की बजाए खुशमिजाज और मिलनसार रहते तो शायद उन्हें यह बयान देने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती. अमिताभ में आया खुलापन और प्रेस से दोस्ती भी कुछ हद तक उनकी इस नई सफलता के लिए जिम्मेदार है. काश अमिताभ इस बात को पहले समझ पाते.

सिवनी (म.प्र.) **निमेष आत्रे**

घोर अवमानना

बड़े ही दुख और आश्चर्य की बात है कि अभी हाल तक हम जिन्हें क्रांति के मसीहा मानते थे, उनकी हर कदम पर अवमानना हो रही है. विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में जनता दल की जो सरकार बनी उसमें लोकनायक जयप्रकाश के अनुयायियों की संख्या कम नहीं थी और चंद्रशेखर तो खुद को जयप्रकाश का उत्तराधिकारी ही मानते हैं. इसके बावजूद संसद भवन के सेंट्रल हॉल में जयप्रकाश का कोई चित्र नहीं है राजीव गांधी और सरदार बल्लभभाई पटेल को मरणोपरांत राष्ट्र सेवा के लिए 'भारत रत्न' के सम्मान से सम्मानित करने का निश्चय किया जाता है, लेकिन यहां भी लोकनायक जयप्रकाश को कोई याद नहीं करता.

दिल्ली **शंकर दयाल सिंह**

नितांत अंधविश्वास

'अशुभ और अमंगल' (15 जून) में ओडीसा पर टिप्पणी पढ़ी. यह सच है कि नेहरू गांधी खानदान के तीनों प्रधानमंत्री मृत्यु से पहले ओडीसा के दौरे पर गए थे लेकिन इस वैज्ञानिक युग में इस पर यकीन करना क्या ठीक है. यदि इसे मानना भी हो तो इसकी यह व्याख्या भी हो सकती है कि मौत से थोड़ी देर पहले इस नगरी ने उन्हें अपने पास बुलाया.

संबलपुर (ओडीसा) **गोपालचंद्र मोहंती**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कसौटी

काम करके दिखाइए, काम

बहुमत, सीटों और प्रतिशत के हिसाब से देखें तो दसवीं लोकसभा के चुनाव परिणाम उलझन भरे लग सकते हैं. अंतिम परिणामों की वजहें ढूंढ़ना अब चुनाव विशेषज्ञों का काम है. पर उलझन भरे होने के बावजूद इन परिणामों का यह मतलब नहीं कि मतदाता के मन में भी उलझन है. उसका फैसला बहुत स्पष्ट, निर्णायक और संदेश भरा है. अगर राजनेता अपने-अपने राग अलापने के बजाए थोड़ी समझदारी दिखाते हुए इस फैसले का विश्लेषण करें तो काफी लाभ होगा.

कुछ इलाकों में सहानुभूति लहर के असर को छोड़ दें तो इस बार के परिणामों ने अनेक महत्वपूर्ण संकेत भी दिए हैं. बिहार में, जहां लालकृष्ण आडवाणी के रथ को रोका गया था, मंडल की आंधी ने राम लहर को काट दिया, साथ ही मतदान भी अपेक्षाकृत शांति से संपन्न हो गया. वी.पी. सिंह द्वारा मंडल संबंधी फैसला लेने के तुरंत बाद उत्तर प्रदेश में काफी हिंसा हुई थी लेकिन वहां मंडल के जातिवादी तूफान को राम कार्ड ने बहुत हद तक रोक दिया. उस हिसाब से देखें तो जातिवाद और सांप्रदायिकता की लहर सिर्फ उत्तर प्रदेश और बिहार तक सीमित रही लेकिन बहुत जड़ें नहीं जमा पाई.

रेखाचित्र: अजीत नैनन

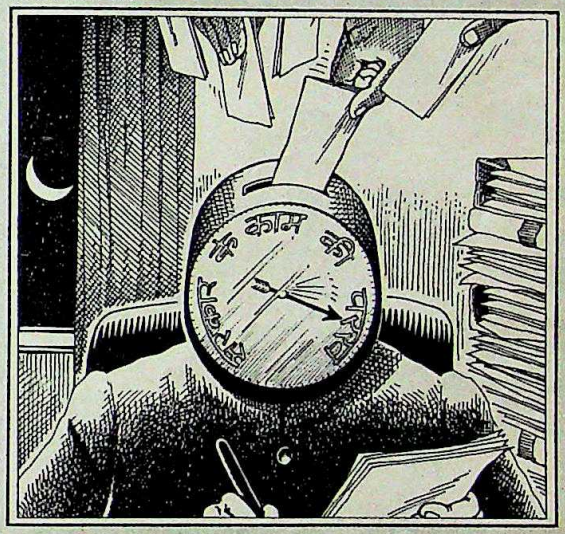

लेकिन इस चुनाव का शायद इससे भी महत्वपूर्ण संकेत यह है कि मतदाता खराब सरकार और खराब राजनेताओं को बर्दाश्त नहीं करेंगे. वे चाहते हैं कि एक कुशल और प्रभावी सरकार बने जो लोगों के हित में काम करे. यह बात सबसे स्पष्ट तौर पर राजस्थान, मध्य प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में दिखी जहां लोगों ने राज्य सरकारों के खिलाफ फैसला दिया. और मजेदार बात यह है कि इन राज्यों में सरकार में रहना भाजपा को नुकसान दे गया तो उत्तर प्रदेश में इसने लाभ भी दिया. भ्रष्ट, अकुशल और अयोध्या संकट के समय हिंदुओं का दमन करके मुसलमानों को अपनी ओर करने की कोशिश करने वाले मुलायम सिंह यादव की सरकार के खिलाफ नाराजगी का लाभ लेकर उसने राम लहर को और मजबूत किया. आज यादव की फौज एकदम पिट गई है.

उधर, दक्षिण में आंध्र प्रदेश में तेलुगु देशम का प्रदर्शन उसकी उम्मीद से काफी कमजोर हुआ. इसका एक कारण तो सहानुभूति लहर थी लेकिन उससे भी बड़ा, रामराव के "नाटक" से लोगों का प्रभावित न हो पाना भी है. कर्नाटक और केरल में मतदाताओं ने अक्षम सरकारों के खिलाफ अपना फैसला सुनाया. ओडीसा में जनता दल का यही हाल बीजू पटनायक सरकार की अप्रतिष्ठा के चलते हुआ जबकि असम में अगप की टूट और उसकी सरकार के खराब कामकाज का लाभ इंका को मिल गया. बिहार में भी व्यवस्था विरोधी वोट पड़ा लेकिन दूसरी व्यवस्था के विरोध में. लालू प्रसाद यादव ने अभी भी व्यवस्था विरोधी क्षेत्रीय नेता वाली छवि बनाए रखी है. उनका यह संदेश बहुत स्पष्ट तरीके से लोगों तक गया कि लालू सिर्फ केंद्र से ही नहीं खुद अपनी पुलिस और नौकरशाही से भी लड़ रहे हैं और इस लड़ाई में उनके हाथ मजबूत करने की जरूरत है.

लेकिन लालू को भी एक बात ध्यान में रखनी होगी—जो उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार पर भी लागू होगी—कि राजनैतिक बाजीगरी और क्षेत्रीयता का मुद्दा एक सीमा तक ही मदद करता है. उसके आगे मतदाता को सरकार के काम से मतलब होता है और जो इस कसौटी पर खरा नहीं उतरता उसे ठुकराने में वे देरी नहीं करते.

शायद ही कोई विवादास्पद नेता मतदाता की 'तलवार' से बच पाया है. हरियाणा में देवीलाल धराशायी हुए तो ओडीसा में जानकीबल्लभ पटनायक और कर्नाटक में रामकृष्ण हेगड़े तथा गुंडूराव. महाराष्ट्र के परिणाम भी इसी तर्क को पुष्ट करते हैं. देश के अधिकांश प्रदेशों की सरकारों की तुलना में महाराष्ट्र की सरकार अनेक विवादों में फंसने के बावजूद अधिक प्रभावी और कुशल रही है. हो सकता है कि राजीव लहर से भी राज्य में इंका को कुछ सीटों का लाभ हो गया हो लेकिन असली निष्कर्ष यही है कि मतों की वास्तविक गारंटी अच्छी सरकार देना ही है, न कि जातिवादी या सांप्रदायिक नारे देना.

अब मतदाता उस पार्टी या राजनेता की कोई बकवास बर्दाश्त नहीं करने वाला जिसे वह वोट देता है. अब उसे अच्छी, कुशल, स्थायी और सक्षम सरकार की जरूरत है जो सिर्फ वोट की गिनती और किसी बंधे बधाए दर्शन में उलझे रहने की जगह तेजी से अच्छे परिणाम दे सके.

1989 से ही पूरे देश और पूरी सरकार की गति थमी-सी पड़ी थी. राजनैतिक दांवपेंच से लोग ऊब चुके हैं. अब केंद्र में उभरते नए समीकरण को लोगों की इसी मानसिकता के अनुरूप काम करना चाहिए. सबसे बड़ी पार्टी होकर भी बहुत ही कम सांसदों वाली सरकार को बाहर से समर्थन देने का फैसला देश के लिए बहुत उलटे परिणाम देने वाला रहा है. आज राष्ट्रीय हित की मांग है कि केंद्र में गैर-भाजपा सरकार को समर्थन देने वाली सारी पार्टियां केंद्र सरकार में शामिल हों या सबसे प्रमुख पार्टी में अपना विलय कर लें जिससे देश फिर से गतिशील हो सके.

जो कोई भी सरकार बनती है उसके लिए मुद्दे बड़े साफ हैं. ये मुद्दे राम, मंडल या मार्क्सवाद नहीं हैं. देश के सामने मौजूद घोर आर्थिक संकट से निपटने के लिए आज दिलेर फैसले लेने और उन्हें लागू करने और स्वच्छ जल, अक्षरज्ञान, परिवार नियोजन, बेहतर संचार व्यवस्था जैसी बुनियादी सुविधाएं देने वाली सरकार की जरूरत है. लेकिन सबसे बड़ी जरूरत तो काम करने वाली सरकार की ही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

y Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SEE BETWEEN THE LINES

Even after
you've heard about it all
and read about it all – see it all
on India's first newsmagazine on
video cassette – ***NEWSTRACK***
Press the play button and you're
on the ringside seat –
to people, places, events, issues –
Incisively covered like on no
other medium ever before.

▶ ONLY ON NEWSTRACK ◀

SPECIAL OFFERS

SINGLE CASSETTE
- Current Issue Rs. 145/- for a single cassette.
- Back Issues Rs. 135/- each.

SUBSCRIPTION
- Annual Rs. 1380/- and a free ***INDIA TODAY ADDRESS BOOK.****

* This offer is valid upto August 31, 1991. Address Books will be delivered at your given address within 4-6 weeks of receipt of order.

Mail a DD/Cheque favouring
Living Media India Limited to P.O. Box No.29,
New Delhi – 110 001.

Cheques/ Demand Drafts payable at Delhi, Bombay, Calcutta and Madras must be MICR only.

For more details contact
Delhi: 3320689. Bombay : 2027867.
Madras : 479163.
Calcutta : 445398. Bangalore : 210834.

Home delivered by courier or Registered Post

India Today Presents
NEWSTRACK
▶The newsmagazine to watch◀

MILESTONES/IT/236

मुधीर तैलंग/हिंदुस्तान टाइम्स

- मुझे एक न एक दिन तो दिल्ली जाना ही है. ■ **शरद पवार**, *वीर अर्जुन*

- मुझे नहीं लगता किसी मराठा को (प्रधानमंत्री बनने का) मौका मिलेगा. दिल्ली के नेताओं ने कभी मराठों से सम्मानजनक व्यवहार नहीं किया है. ■ **बाल ठाकरे**, *संडे मेल*

- त्रिशंकु संसद बनने से हमारे दल की स्थिति दुविधापूर्ण हो गई है, समझ नहीं आता इंका को समर्थन दें या नहीं. ■ **वी.पी. सिंह**, *हिंदुस्तान टाइम्स*

- मेरी महत्वाकांक्षाएं अधूरी नहीं रहीं. मैंने अपनी उम्मीदों से भी ज्यादा हासिल किया है. ■ **चंद्रशेखर**, *ऑनलुकर*

- कांग्रेस यदि पुराने दिनों की ओर लौट जाए जब लोग उद्देश्य के लिए कुर्बानी दिया करते थे, तो मैं समझता हूं कई लोग इसमें शामिल हो जाएंगे. ■ **बीजू पटनायक**, *टेलीग्राफ*

- बीजू पटनायक कभी-कभी बुद्धिमानी की बात कह देते हैं. ■ **बलराम जाखड़** (एक ही विचारधारा के लोगों के मिलकर सरकार बनाने के बीजू के बयान पर टिप्पणी), *नवभारत टाइम्स*

- मैं ग्लैमर ब्वॉय नहीं, तपस्वी हूं. ■ **एन.टी. रामराव**, *सं*

- राष्ट्रीय मोर्चे से ब्याह कर लेने के बाद भी माकपा इंका से प्यार की पींगें बढ़ा रही है. ■ **लालकृष्ण आडवाणी**, *संडे टाइम्स ऑफ इंडिया*

- भाजपा का मतलब है—भागो जनता पकड़ेगी. ■ **माधवराव सिंधिया**, *हिंदुस्तान टाइम्स*

- जनता दल कोई पार्टी नहीं. यहां-वहां से छिटके हुए और भटके हुए नेताओं का एक जत्था है. ■ **एस. बंगारप्पा** (मुख्यमंत्री, कर्नाटक), *नई दुनिया*

- वक्त बताएगा कि मैं राजनीति में कितना खरा उतरा हूं. ■ **राजेश खन्ना**, *दैनिक जागरण*

- राजनीति मेरे बस का रोग नहीं. ■ **अमिताभ बच्चन**, *दैनिक हिंदुस्तान*

- मुझे ग्लैमरस प्रेसवालों ने बनाया. ■ **अश्विनी नाचप्पा**, *स्वतंत्र भारत*

- शादी तो करनी ही है पर अभी तक ऐसा कोई नहीं मिला जो एकदम भा जाए. ■ **जुही चावला**, *जनसत्ता*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माईक्रो ओवन से 53% अधिक जल्दी पकाता है

यूनाईटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

अधिकृत विक्रेता

उत्तर प्रदेश

इलाहाबाद: चौक: गुरु प्रसाद हीरा लाल, नॉवल्टी हाऊस 6-[illegible] खन्ना नेहरु रोड, पावर हाऊस के पास, एस. नसीम अहमद [illegible] कं० गुप्ता ब्रदर्स लाल डिग्गी चौक ● **ठठेरी बाजार:** राजा [illegible] बर्तन गृह ● **सिविल लाईन्स:** अल्का [illegible] इंटरप्राइसिस, खन्ना भाई ● **कटरा:** जेन ट्रेडिंग कं०, ☐ **आगरा: [illegible] बाजार:** आगरा बर्तन भण्डार, आहूजा बर्तन भण्डार, [illegible] बर्तन भण्डार, स्टील हाउस, मानसिंह मोहन लाल, [illegible] बर्तन भण्डार, दौलत मार्केटउ जौहरी बाजार, गुप्ता ग्लास [illegible] सुभाष बाजार. ☐ **अलीगढ़: महावीरगंज:** सी०एस० [illegible] लाल किशोरी लाल, दीपक बर्तन भण्डार, रेलवे रोड़. ☐ **[illegible]:** मोती रेडिओ सेन्टर. ☐ **बहराइच:** श्याम लाल एण्ड [illegible] चौक. ☐ **बलिया:** विजय गन हाउस, स्टेशन रोड. ☐ **[illegible]:** बंगाल क्रोकरी हाउस, गुसाई गंज. ☐ **बस्ती:** सुशील [illegible] बर्तन मर्चेंट, मंगल बाजार. ☐ **बरेली:** दुआ ब्रदर्स, [illegible] रोड, मिगलानी क्रोकरीज, हास्पीटल रोड. संजय स्टील [illegible] एण्ड कं०, सत्य प्रकाश एण्ड कं०, कैपिटल स्टोर्स, दाता [illegible] विनोद कुमार, धामवाला. सेठी लाल सुरेश चन्द, पीपल मंडी. ☐ **फैजाबाद:** अग्रवाल क्रोकरी हाउस, देहली दरवाजा, मोहम्मद [illegible] एण्ड संस, चौक. हरी बर्तन स्टोर्स, रकाब गंज. ☐ **[illegible]:** राज ग्लास एण्ड क्रोकरी स्टोर्स, नेहरु मार्केट. ● [illegible] रोड: मालिग राम भोला नाथ, जय प्रकाश नारायण वेद प्रकाश. ☐ **गोरखपुर: जलकल भवन:** श्री गणेश इंटरप्राइसिस, मॉडर्न क्रोकरी म्यूजियम. ● **टाउन हाल:** विजय एजेंसी, किचन म्यूजियम. ● **रेती चौक:** फैन्सी बर्तन स्टोर्स, नारायण बर्तन स्टोर्स, स्टील वाला, सीता राम श्याम लाल, गणेशी लाल एण्ड संस, सिनेमा रोड. ● **माया बाजार:** अमर क्रोकरी सेन्टर. ● **गोरख नाथ रोड:** मोती स्टील हाउस. ☐ **गोंडा: उतरौली रोड:** पारस स्टील इम्पोरियम. ☐ **हरिद्वार: मोती बाजार:** ओम प्रकाश चेला राम. ☐ **हलद्वानी:** सरदार क्रोकरी हाउस, बरेली रोड. प्रेम सिंह बर्तन वाला, बर्तन बाजार. ☐ **हापुड़: रेलवे रोड:** क्रोकरी सेन्टर. ☐ **हरदोई: रेलवे गंज:** श्याम लाल एण्ड संस, काशी राम बनवारी लाल. ☐ **झाँसी: सर्राफा बाजार:** काशी राम मैथिली शरण, संतोष पात्र गृह, बॉम्बे स्टील इम्पोरियम, लक्ष्मी स्टील सेन्टर, सिपरी. ☐ **जौनपुर: हर लाल का रोड:** ग्लास स्टोर्स. ● **औलंब गंज:** भारत ग्लास स्टोर्स. ☐ **कानपुर: हटिया:** गोपी लाल गुप्ता, स्टील हाउस. ● **मेस्टन रोड:** एस.एम. रशीद एण्ड संस, मोहम्मद हनीफ मोहम्मद अनीस, एशिया लाइट हाउस, नफीस क्रोकरी हाउस, जौहरी क्रोकरी हाउस, कुमार फैन्सी स्टोर्स, नवीन मार्केट. ● **हुला गंज:** रस्तोगी स्टील सेन्टर, कृष्ण कुमार उमेश चन्द, भुसा टोली, भसीन बर्तन भण्डार, गुमटी नं० 5. ☐ **लखनऊ: नजीराबाद:** कन्हैया लाल प्राग दास. ● **अमीनाबाद:** इन्द्र चन्द जैन, बांके लाल राम सरन, संसार एजेंसी. ● **याहया गंज:** कन्हैया लाल प्राग दास, अजीत प्रसाद अरविंद कुमार. ☐ **लखीमपुर खीरी:** अंबर लाल राधे श्याम, मेन बाजार. ☐ **मेरठ: सदर बाजार:** कृष्णा क्रोकरीज, सुरेश चन्द नरेश चन्द, सोना इलैक्ट्रिक एजेंसी, शकुन बर्तन भण्डार, बेगम पुल. ☐ **मुजफ्फर नगर:** मित्तल इंटरप्राइसिस, भगत सिंह रोड. ☐ **मुरादाबाद:** नवीन ग्लास एजेंसी, कटरा पुरानजट बाजार गंज. ☐ **नजीबाबाद:** श्याम लाल एण्ड संस, चौक. ☐ **नौतनवाँ:** लक्ष्मी बिसाता भण्डार. ☐ **रामपुर: मेस्टन गंज:** अग्रवाल क्रोकरी हाउस, सफदरगंज: सलैक्शन इम्पोरियम. ☐ **राय बरेली:** गुप्ता ट्रेडर्स, कैपर गंज, राज बंधु मिलन सिनेमा रोड, राधे श्याम घनश्याम दास गुप्ता, मालखाना. ☐ **रुपईडिहा:** रामदूत स्टोर्स, श्री राम स्टोर्स. ☐ **सहारनपुर: नेहरु मार्केट:** निहाल चंद हरबंस लाल, कृपाल सिंह प्रीतम सिंह, जसवंत राय नरेन्द्र कुमार, सर्राफा बाजार, लक्ष्मी मार्केट. ☐ **शाहजहांपुर:** सहगल क्रोकरीज, सदर बाजार, सहगल गिफ्ट सेन्टर, गोविंद गंज. ☐ **शामली:** सुगन चंद सोहन लाल, बड़ा बाजार. ☐ **सुल्तानपुर:** एस.आर. स्टील इम्पोरियम, शाह गंज, दसरथ लाल एण्ड संस, चौक. ☐ **वाराणसी: बॉस फाटक:** गिरधर दास एण्ड संस, स्टेनलैस स्टील सेन्टर, मित्तल ट्रेडर्स. ● **दाल मंडी:** भारत ग्लास स्टोर्स, एस.एम. अयूब एण्ड संस, आइडियल ग्लास हाउस, महादेव प्रसाद हरी राम, सी.के.62/30 काशी पुरा, इब्राहिम रसूलजी, सराय हड़हा, मोहन लाल किशन चंद, विश्वनाथ गली. ☐ **कलकत्ता:** कृष्णा ट्रेडिंग कं०, पी-II, चितपुर स्पर. ☐ **भुवनेश्वर:** जी.पी. सर्विस, 28, बापूजी नगर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्योगपतियों की उत्सुकता

● केंद्र सरकार बदलने के इस नाजुक दौर में उद्योग जगत के महारथियों का अचानक राजधानी में खिंचे चले आना कोई अचंभे की बात नहीं. 1989 के आखिरी

महीनों और जून 1991 के दौरान उनके क्रियाकलापों से तो यही संकेत मिलता है कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के उलटफेर के दौर में वे महज किसी व्यावसायिक प्रयोजन से राजनैतिक लॉबिइंग के केंद्र स्थल में नही चले आते.

देश के बड़े उद्योगपति घरानों का दांव राजनैतिक पार्टियों पर लगा होता है जिन्हें वे दोनों हाथ से धन बाटते हैं. सो, राजीव गांधी जैसे महत्वपूर्ण नेता की अनुपस्थिति में कौन प्रधानमंत्री बनता है, यह उनकी चिंता का विषय था. इसलिए अपने-अपने उम्मीदवारों के लिए थैली की गांठ ढीली करने को वे तत्पर दिखाई दिए.

इस दौर में राजधानी में मौजूद कुछ प्रमुख उद्योगपतियों में रामप्रसाद गोयनका, राहुल बजाज, अजित गुलाबचंद, नुस्ली वाडिया, अंबानी और बिड़ला घरानों के लोग थे. उद्योगपतियों की अधिक सक्रियता की एक वजह यह भी थी कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री शरद पवार भी होड़ में थे जिनके मुंबई के उद्योगपतियों से मधुर संबंध हैं. उद्योगपतियों से अच्छे-खासे समर्थन के बावजूद पवार की स्थिति कमजोर थी. लेकिन इससे उद्योग जगत के लोगों की राजनैतिक जगत में दिलचस्पी कम नहीं हुई.

रोना आ गया

● यूं तो मेनका गांधी के लिए पीलीभीत संसदीय सीट को गंवाना ही पर्याप्त दुख का कारण है लेकिन उन्हें इससे भी ज्यादा दुख इस बात से हुआ कि उन्हें वन तथा पर्यावरण मंत्रालय छोड़ना पड़ रहा है. इस दुख ने उन्हें रोने पर मजबूर कर दिया.

जब मंत्रालय से पिछले पखवाड़े उनका विदाई समारोह हुआ तो कहा जाता है कि मेनका ने कबूल किया, "मैं दिन भर रोती रही." वैसे, उन्होंने मंत्रालय कर्मचारियों को पर्यावरण की रक्षा की अपनी लड़ाई जारी रखने का भरपूर उपदेश दिया.

मंत्रिमंडल मे रहते हुए अपनाए गए उनके पर्यावरणवादी रुख पर सिर्फ एक ही सवालिया निशान लगता है. और वह यह कि गोवा के तटों पर होटल बनाए जाने की

सभी कार्टून: अजीत नैनन

मुखालफत वाला रवैया बाद में उन्होंने बदल दिया.

न आए देहाती

● सिर्फ यही जताने के लिए कि भारत के किसानों के वे ही अकेले मसीहा हैं, पूर्व उप-प्रधानमंत्री देवीलाल ने पांचतारा अशोक होटल के नितांत आभिजात और

शहरी माहौल में निपट देहाती रंग घोलने की पुरजोर कोशिश की थी. उन्होंने भारतीय पर्यटन विकास निगम को इस होटल में ग्राम्य परिवेश का, खुले में बना रेस्तरां 'चौपाल' खोलने के लिए एक तरह से मजबूर ही कर दिया.

पिछले साल 25 सितंबर को 'चौपाल' के दरवाजे खोल दिए गए. जाट नेता के आदेश पर गांववालों के लिए इस रेस्तरां में 50 फीसदी छूट की घोषणा कर दी गई.

और 'चौपाल' बढ़िया चल रही है और इसके लिए कम-से-कम देवीलाल तो धन्यवाद के पात्र कतई नहीं हैं. दरअसल, विदेशियों को ग्राम्य परिवेश भा गया है. लेकिन गांववाले इसमें कहीं नजर आते. निगम के सूत्र बताते हैं, "पिछले 10 महीनों में ग्रामीण होने का सरपंच का प्रमाणपत्र लेकर इस रेस्तरां में सिर्फ चार लोग आए और वे किसी कोण से ग्रामीण नहीं लग रहे थे."

आते क्यों नहीं

● मानवाधिकार संगठन एमनेस्टी इंटरनेशनल शशोपंज में फंस गया है. पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी इसे अस्थिरता पैदा करने वाली विदेशी ताकत मानते थे. लेकिन चंद्रशेखर ने इसके प्रति और पंजाब में मानवाधिकारों की जांच करने की इसकी प्रार्थना के प्रति बड़ा दयाभाव दिखाया.

विदेश मंत्रालय के वरिष्ठ नौकरशाहों के अनुसार चंद्रशेखर एमनेस्टी के नुमाइंदों को पंजाब जाने की इजाजत देने के लिए सिद्धांत रूप में सहमत हो गए. लेकिन वे उन्हें सुरक्षा मुहैया कराने के लिए तैयार नहीं हुए. उनका मानना था कि एमनेस्टी के नुमाइंदे यदि सरकारी सुरक्षाकर्मी साथ लेकर पंजाब जाएंगे तो उन्हें दूसरी वारदातों के अलावा सिख उग्रवादियों की ज्यादतियों की भी

जांच करने आए सरकारी एजेंट मान लिया जाएगा.

सरकार ने एमनेस्टी को अनौपचारिक रूप से सूचित किया कि सरकारी सुरक्षा दिए जाने से उनके प्राण संकट में पड़ जाएंगे. पंजाब में तो उनका स्वागत है लेकिन अपनी सुरक्षा का इंतजाम उन्हें खुद करना होगा. एमनेस्टी के लिए तो यह बस के बाहर की बात लगती है. सरकार उनका मजे से इंतजार कर रही है.

चुटकी

(सुनी-सुनाई)

सुब्रह्मण्यम स्वामी समाजवादी जनता पार्टी के भविष्य पर बुदबुदाए, "पार्टी अब सिर्फ एक ही राह पर जा सकेगी....ऊपर"

एक आवाज आई, "हां, ऊपर शून्य में"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोदरेज
आपके लिए लाए हैं

आयुर्वेदिक हेअर ऑइल. जानी-मानी और जांची-परखी जड़ी-बूटियां से बना. जो आपके सर की त्वचा और बालों को नया जीवन दे. बालों को झड़ने से रोके.

निर्माता - **एस. गोपालकृष्णन नायर**
आर्शिक हर्बल रेमडीज़ (इंडिया), वानचियूर, त्रिवेन्द्रम, पिन ६९५०३५ केरल.

वितरक - **गोदरेज सोप्स लिमिटेड,** बम्बई ४०० ०७९.

भारत-भर के प्रमुख शहरों में उपलब्ध.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब कुछ जायज

■ अगर प्यार और युद्ध में सब कुछ जायज है तो भला चुनाव में सब कुछ नाजायज कैसे हो सकता है. केरल के कन्नूर जिले में मतदान केंद्र से विरोधी पक्ष के उम्मीदवार के एजेंट को जिस सफाई से भगाया गया वह इसकी मिसाल है.

अजीकोड में युनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट के एक चुनाव एजेंट की ओर से दर्ज कराई गई शिकायत के अनुसार वामपंथी लोकतांत्रिक मोर्चे के एजेंटों ने उसके शरीर पर गुपचुप तरीके से खुजली वाली जंगली बूटी की पत्तियां मल दीं. उसे इतनी खुजली हुई कि मतदान केंद्र

सभी कार्टून: जयंतो

छोड़कर भागना पड़ा. उम्मीद की जाए कि आने वाले चुनाव के दौरान इस्तेमाल होने वाले हथियारों की सूची में इस जंगली बूटी को भी शामिल कर लिया जाएगा.

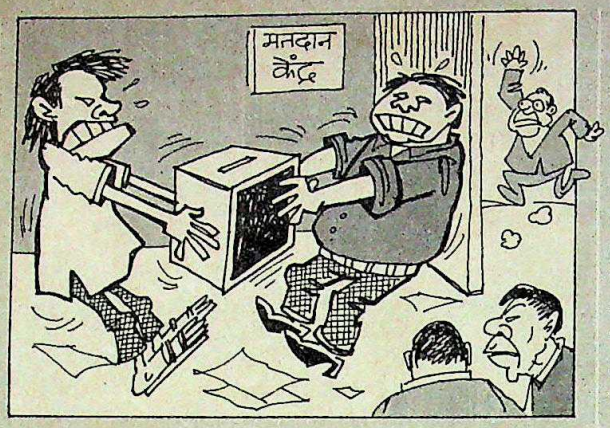

सरकारी बूथ कब्जा

■ चुनाव के दौरान अपने उम्मीदवार को जिताने के लिए पार्टियों और उनके गुर्गों द्वारा मतदान केंद्रों पर कब्जा जमाना अब अपराध के दायरे से निकलकर राजनैतिक ललित कला का रूप ले चुका है. इस बार के चुनाव में भी बिहार, उत्तर प्रदेश और दूसरे कई राज्यों में इस कला में महारत रखने वाले कलाकारों ने मतदान केंद्रों पर कब्जे करके अपनी कलात्मक 'छपाई' का प्रदर्शन किया. कानून के मुताबिक ऐसे किसी मामले की खबर मिलते ही निर्वाचन आयोग अपने अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए मतदान को रद्द कर देता है और कब्जा करने वालों की खबर लेता है. लेकिन अगर मतदान केंद्र पर कब्जा करने का यह विवाद विरोधी उम्मीदवारों के बजाए मतदान अधिकारियों के बीच छिड़ गया हो तो?

ऐसा ही एक विवाद पिछले पखवाड़े अरुणाचल प्रदेश के दो मतदान केंद्रों पर हो गया जिन पर कब्जा जमाने के लिए अरुणाचल और असम के मतदान अधिकारियों के बीच अच्छी-खासी मुठभेड़ हो गई. दरअसल, ये दोनों मतदान केंद्र अरुणाचल प्रदेश के थे लेकिन असम की सीमा से लगे एक गांव में होने की वजह से असम के अधिकारी इन्हें अपना समझ बैठे. लिहाजा, मतदान की सुबह दोनों राज्यों के चुनाव कर्मचारी वहां जा धमके. दोनों पक्षों के बीच चलने वाली तकरार की वजह से मतदान काफी देर तक शुरू नहीं हो पाया. बात ऊपर के अधिकारियों तक पहुंची. तब जाकर कहीं स्थिति स्पष्ट हुई और दोनों मतदान केंद्रों पर मतदान शुरू हो सका.

बरसाती काम आई

■ लोकसभा चुनाव कराना उतना आसान नहीं है जितना निर्वाचन आयोग के काम में मीन-मेख निकालना. लगभग 6 लाख मतदान केंद्रों के लिए निर्वाचन अधिकारियों और कर्मचारियों से लेकर सील लगाने वाली लाख तक एक-एक चीज की व्यवस्था में एक छोटी-सी चूक भी संकट पैदा कर सकती है और सारा मामला गड़बड़ा सकती है.

ऐसी ही एक समस्या केरल में अधिकारियों के सामने आ खड़ी हुई. गरजते मानसून ने मतदान केंद्रों पर हल्ला बोल दिया. मतपेटियों को गीला होने से

बचाने के लिए अधिकारियों ने पॉलीथीन की थैलियों की भी व्यवस्था कर दी. लेकिन आखिरी क्षणों में पाया गया कि मतपेटियां बड़ी हैं और पॉलीथीन के थैले उससे छोटे.

जासूस छुट्टी पर

■ आतंकवाद के इस दौर में अगर किसी बड़े पुलिस अधिकारी को सूचना मिले कि उसके दफ्तर में बम रखा हुआ है तो उसकी प्रतिक्रिया क्या होगी? ठीक वही होगी जो चंडीगढ़ के एक वरिष्ठ

पुलिस अधिकारी की हुई. पिछले पखवाड़े किसी गुमनाम व्यक्ति ने उन्हें फोन पर खबर दी कि जिला अदालत के अहाते में एक शक्तिशाली बम रखा है.

बस फिर क्या था. पूरा पुलिस महकमा और अदालत के कर्मचारी हरकत में आ गए. अदालत के पूरे अहाते को खाली कर तलाशी शुरू हो गई. एक उत्साही अधिकारी ने सुझाव दिया कि क्यों न पुलिस विभाग के जासूसी कुत्ते की सेवाएं ली जाएं. उसकी यह बात जंच गई. संबंधित विभाग को फोन किया गया तो उधर से टका-सा जवाब मिला, "जासूसी कुत्ता आज मेडिकल अवकाश पर है और आराम कर रहा है". आखिरकार कुत्ते की जगह पुलिस को खोजबीन करनी पड़ी.

शराबी की नसीहत

■ लोकतांत्रिक संविधान ने बोलने और लिखने की जो आजादी सबको बख्शी है उसका सबसे बड़ा फायदा शायद पत्रकारों को मिला है लेकिन यह आदत किसी-किसी हालत में कितनी महंगी पड़ सकती है इसका अंदाज हाल ही में मुंबई के एक पत्रकार को हुआ.

मोटरसाइकिल पर सवार ये पत्रकार महोदय एक रात अपने घर पहुंचने ही वाले थे कि एक शराबी आकर उनसे टकरा गया और मोटरसाइकिल समेत उन्हें गिरा दिया. पत्रकार ने बहस करने की कोशिश की लेकिन शराबी के पास कहां फुर्सत थी. पत्रकार महोदय थे कि उसके शराबीपन पर उंगलियां उठा, भलामानस बनने की सलाह दे रहे थे. आखिर शराबी से रहा नहीं गया और उसने पत्रकार की उंगली को ऐसा निशाना बनाया कि अच्छी तरह चबाकर ही छोड़ा. उम्मीद है हर किसी पर उंगलियां उठाने वाली पत्रकार बिरादरी कुछ सबक लेगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफ़र में सहायक

सफ़र चाहे तीस घंटे का हो, बारह का या बस आठ ही घंटे का.

वक्त चाहे कितना भी लगे. ऐसे सफ़र को कहते हैं – 'ओवर नाइट ट्रिप' – एक रात का सफ़र. इसके लिए आपको चाहिए ख़ास बैग

जो न तो ज़्यादा बड़ा हो और न ही बहुत छोटा... सही साइज़ हो उसका. हाँ, सही अंदाज़ होना ज़रूरी है. अब वी.आइ.पी. आपके

लिए लाए हैं एक ख़ास ओवर नाइटर – ऑडिसी. विश्वस्तर का ए बी एस लगेज... कितना आलीशान. चमड़े जैसा रूप. पाउडर

कोटेड खूबसूरत फ्रेम. कॉम्बीनेशन लॉक. नर्म हैंडल. अंदर की लाइनिंग पर साटिन नहीं बल्कि है

सौम्य सुएड. उसी से मिलता-जुलता सेपरेटर जहाँ सभी कागज़ात रहें ज़्यादा सुरक्षित. ज़्यादा

व्यवस्थित बेहतरीन इलैस्टिक बैंड जो ढीला न पड़े. चीज़ों को जगह पर ही रखे. अब आप ही

बताइए, ऑडिसी को आप क्या कहेंगे... एक और सूटकेस या आपके सफ़र का सच्चा सहायक?

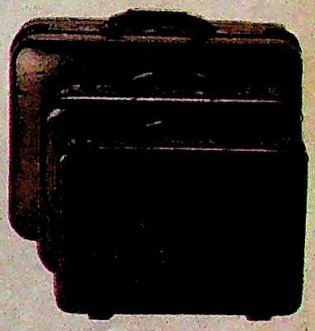

WORLD CLASS
ODYSSEY

वीआइपी की पेशकश

तरक्की, शान के साथ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

HTA 1873 R

इंडिया टुडे प्रस्तुत म्यूज़िक टुडे.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोर से अर्धरात्रि तक के राग

दिन से रात तक के रंगों की अनूठी संगीत यात्रा. एक-एक घंटे के 16 ऑडियो कैसेटों पर प्रतिष्ठित संगीतकारों के चुनिंदा राग उनके विशिष्ट अंदाज़ में, विशुद्ध स्वर की पकड़ डिजिटल पद्धति से तैयार कैसेटों पर.

और आपके घर डाक अथवा कूरियर से पाने की सुविधा.

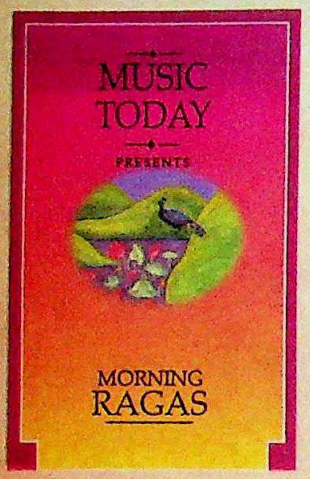

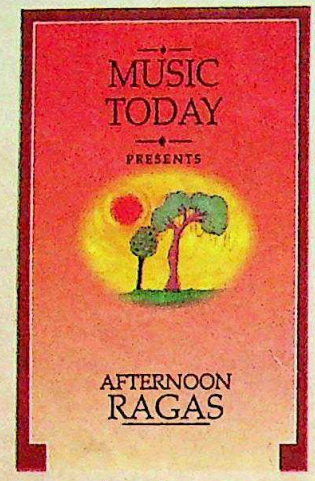

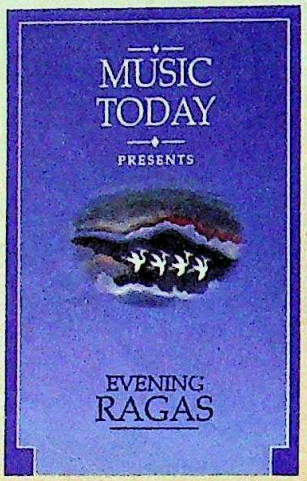

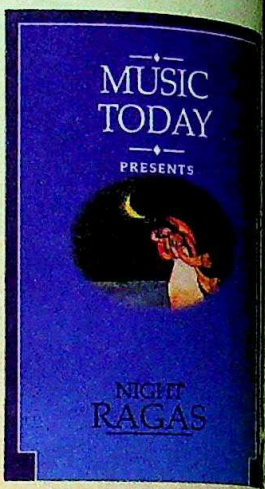

भोर के राग

भाग-1 (कोड ए 90001)
ललित
राजन और साजन मिश्र (गायन)
भैरव
शाहिद परवेज़ (सितार)
अहीर भैरव
श्रुति सदोलिकर (गायन)

भाग-2 (कोड ए 90002)
मियां की तोड़ी
अमजद अली खां (सरोद)
भटियार
पंडित जसराज (गायन)
विभास
श्रुति सदोलिकर (गायन)

भाग-3 (कोड ए 90003)
जौनपुरी
पद्मा तलवलकर (गायन)
बिलासखानी तोड़ी
अमजद अली खां (सरोद)
देसी तोड़ी
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)

भाग-4 (कोड ए 90004)
कुकुभ बिलावल
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
देशकार
शाहिद परवेज़ (सितार)
भैरवी
पद्मा तलवलकर (गायन)

दोपहर के राग

भाग-1 (कोड ए 90005)
शुद्ध सारंग
अमजद अली खां (सरोद)
सुघरई
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
गौड़ सारंग
पद्मा तलवलकर (गायन)

भाग-2 (कोड ए 90006)
बृंदावनी सारंग
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
मधमद सारंग
पंडित जसराज (गायन)
धनी
शाहिद परवेज़ (सितार)

भाग-3 (कोड ए 90007)
भीमपलासी
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
पटदीप
श्रुति सदोलिकर (गायन)
मांड
शाहिद परवेज़ (सितार)

भाग-4 (कोड ए 90008)
मुल्तानी
राजन और साजन मिश्र (गायन)
मधुवंती
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
पीलू
अमजद अली खां (सरोद)

सांध्य के राग

भाग-1 (कोड ए 90009)
मारवा
पंडित जसराज (गायन)
श्री
श्रुति सदोलिकर (गायन)
हंसध्वनि
शाहिद परवेज़ (सितार)

भाग-2 (कोड ए 90010)
पूरिया
राजन और साजन मिश्र (गायन)
श्याम कल्याण
अमजद अली खां (सरोद)
नंद
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)

भाग-3 (कोड ए 90011)
शुद्ध कल्याण
पद्मा तलवलकर (गायन)
मांझ खमाज
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
दुर्गा
राजन और साजन मिश्र (गायन)

भाग-4 (कोड ए 90012)
यमन
शाहिद परवेज़ (सितार)
शंकरा
पंडित जसराज (गायन)
मिश्र धारा
श्रुति सदोलिकर (गायन)

रात्रि के राग

भाग-1 (कोड ए 90013)
शुद्ध नट
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
केदार
पद्मा तलवलकर (गायन)
झिंझोटी
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)

भाग-2 (कोड ए 90014)
बागेश्वरी
पंडित जसराज (गायन)
हमीर
पद्मा तलवलकर (गायन)
तिलक कामोद
शाहिद परवेज़ (सितार)

भाग-3 (कोड ए 90015)
मालकौंस
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
मारु विहाग
श्रुति सदोलिकर (गायन)
जैजैवंती
राजन और साजन मिश्र (गायन)

भाग-4 (कोड ए 90016)
नायकी कान्हड़ा
श्रुति सदोलिकर (गायन)
देश
पंडित जसराज (गायन)
दरबारी
अमजद अली खां (सरोद)

मूल्य
(टैक्स पैकिंग और भेजना शामिल) @ 45 रु. प्रति कैसेट

कृपया ध्यान दें

- दिल्ली से बाहर के स्थानों के चेकों के साथ 10 रु. की अतिरिक्त राशि आवश्यक.
- मुंबई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली के चेक/डिमांड ड्राफ्टों का एमआईसीआर होना आवश्यक.
- कैसेट आपके घर रजिस्टर्ड डाक या कूरियर से पहुंचाए जाएंगे.
- डिलीवरी के लिए कृपया कम से कम 3-4 सप्ताह का समय दें.
- उपहार देने के लिए कृपया उपहार पाने वाले का नाम और पता संलग्न ऑर्डर फार्म पर लिखकर भेजें.
- देय राशि 'म्यूज़िक टुडे' के नाम करें और 'म्यूज़िक टुडे', पोस्ट बॉक्स 29, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजें.
- कृपया ऑर्डर फार्म कम्प्यूटर प्रोसेसिंग सुविधा हेतु अंग्रेजी में ही भरें.
- अगर संलग्न ऑर्डर फार्म न मिले तो अपना ऑर्डर अपने नाम, पता और देय राशि के साथ 'म्यूज़िक टुडे' पोस्ट बॉक्स 29, नई दिल्ली-110001 को भेज दें.
- यह प्रस्ताव सिर्फ भारत में ही लागू है.

ऑर्डर फॉर्म

कोड नं.	कैसेटों की संख्या
ए 90001	_____
ए 90002	_____
ए 90003	_____
ए 90004	_____
ए 90005	_____
ए 90006	_____
ए 90007	_____
ए 90008	_____
ए 90009	_____
ए 90010	_____
ए 90011	_____
ए 90012	_____
ए 90013	_____
ए 90014	_____
ए 90015	_____
ए 90016	_____

मैं 'म्यूज़िक टुडे' कैसेटों के लिए नीचे लिखे विवरण के अनुसार 45 रु. प्रति कैसेट की दर से (टैक्स, पैकिंग और भेजना शामिल) ऑर्डर देना चाहता/चाहती हूं।

मेरे लिए ☐ उपहार ☐

म्यूज़िक टुडे को देय _____ रु. का रेखांकित चेक (दिल्ली से बाहर के ऑर्डरों के लिए 10 रु. और जोड़ें) /डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर रहा/रही हूं।

आर्डर किए कैसेटों की संख्या _____
कुल देय राशि _____
My Name _____
Address _____
_____ Pin _____ Phone No. _____
Gift for _____
Address _____
_____ Pin _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

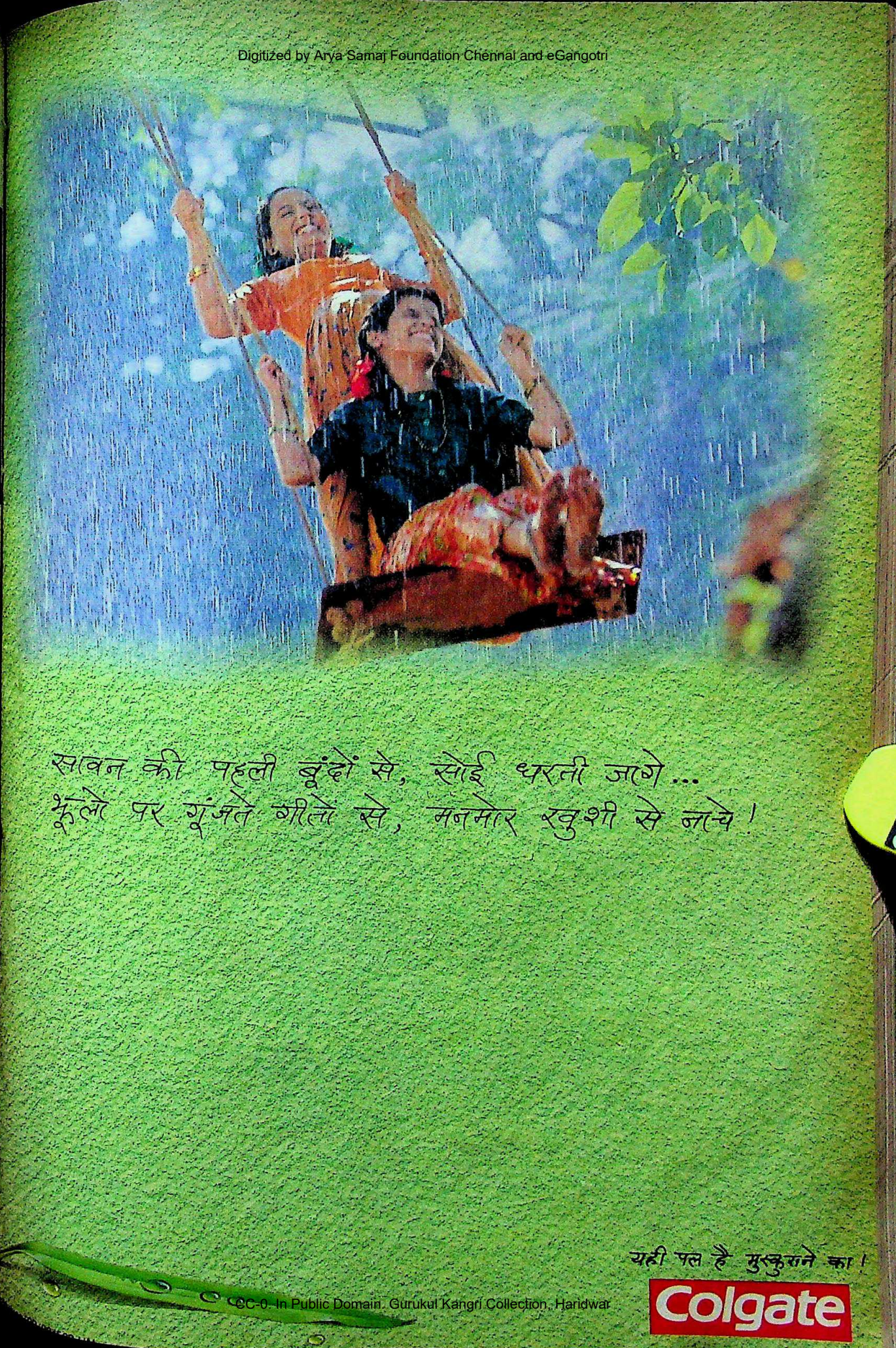

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई सरकार

तख्त पर बैठे तजुर्बेकार

चौतरफा संकट में घिरे देश में जिस सरकार ने काम संभाला है न उसमें कुछ नया दिखाई दे रहा है न उसके प्रधानमंत्री में, जिसका अपना कोई जनाधार नहीं है और जो एक चौकड़ी से घिरा है

संसद के भव्य केंद्रीय कक्ष में पी.वी. नरसिंह राव को नेता चुनने के लिए इंका संसदीय पार्टी की हुई बैठक में कोई उत्साह नहीं दिख रहा था. यह दृश्य सोवियत संघ के बुढ़ा गए कम्युनिस्ट नेताओं द्वारा लियोनेद ब्रेझनेव का चुनाव करने जैसा ही था. पूरे माहौल में व्याप्त फीकापन और अन्यमनस्कता खुद पार्टी और ऐसी नई सरकार की हकीकत बयान कर रही थी, जो नेहरू-गांधी परिवार के नेतृत्व के बिना बन रही थी.

ऐसे मौके पर राजीव गांधी अपनी उपस्थिति भर से जो उत्साह, जो ग्लैमर, जो किशोरों वाला जोश भर देते थे, उसकी जगह सीताराम केसरी, बलराम जाखड़, के. करुणाकरन, पी. शिवशंकर और अर्जुन सिंह जैसे 'बुढ़ऊ' लोगों का समूह बागडोर थामकर पार्टी के लिए नया संक्रमण कर रहे थे. आम तौर पर नौजवान ही बूढ़ों से बागडोर लेते हैं, यहां उलटा हो रहा था. 70 वर्षीय राव का नेता चुना जाना औपचारिकता ही रह गई थी, फिर भी वे अविनीत और चिड़चिड़े लगे. उनके नेता चुने जाने की औपचारिक घोषणा उम्र में उनसे भी बड़े सीताराम केसरी ने की.

एक दिन बाद राष्ट्रपति भवन में भी ये ही बूढ़े चेहरे प्रमुख रहे, जहां राव ने देश के नौवें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली और उसके बाद उनके मंत्रिमंडल के सदस्यों ने. मंत्रिमंडल में कैबिनेट स्तर के अधिकांश मंत्री पुराने ही हैं. जाखड़, केसरी, शंकरराव चव्हाण, सी.के. जाफर शरीफ, माधव सिंह सोलंकी और बी. शंकरानंद जो सभी 60 से ऊपर के हैं. विपक्षी नेताओं की प्रतिक्रिया तुरंत और निर्णयात्मक थी. लालकृष्ण आडवाणी ने मंत्रिमंडल को 'तेजहीन' बताया. जनता दल के

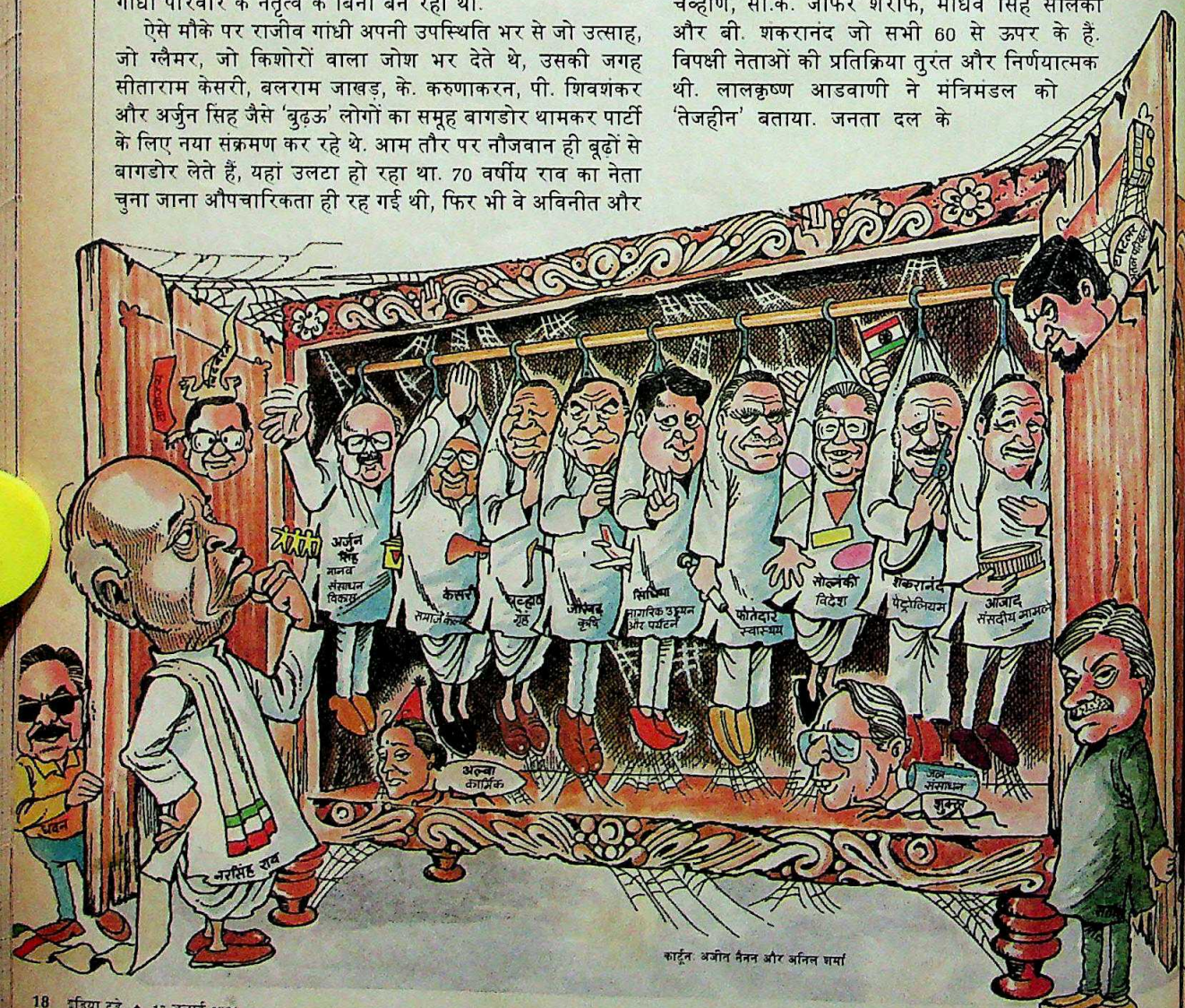

कार्टून: अजीत नैनन और अनिल शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

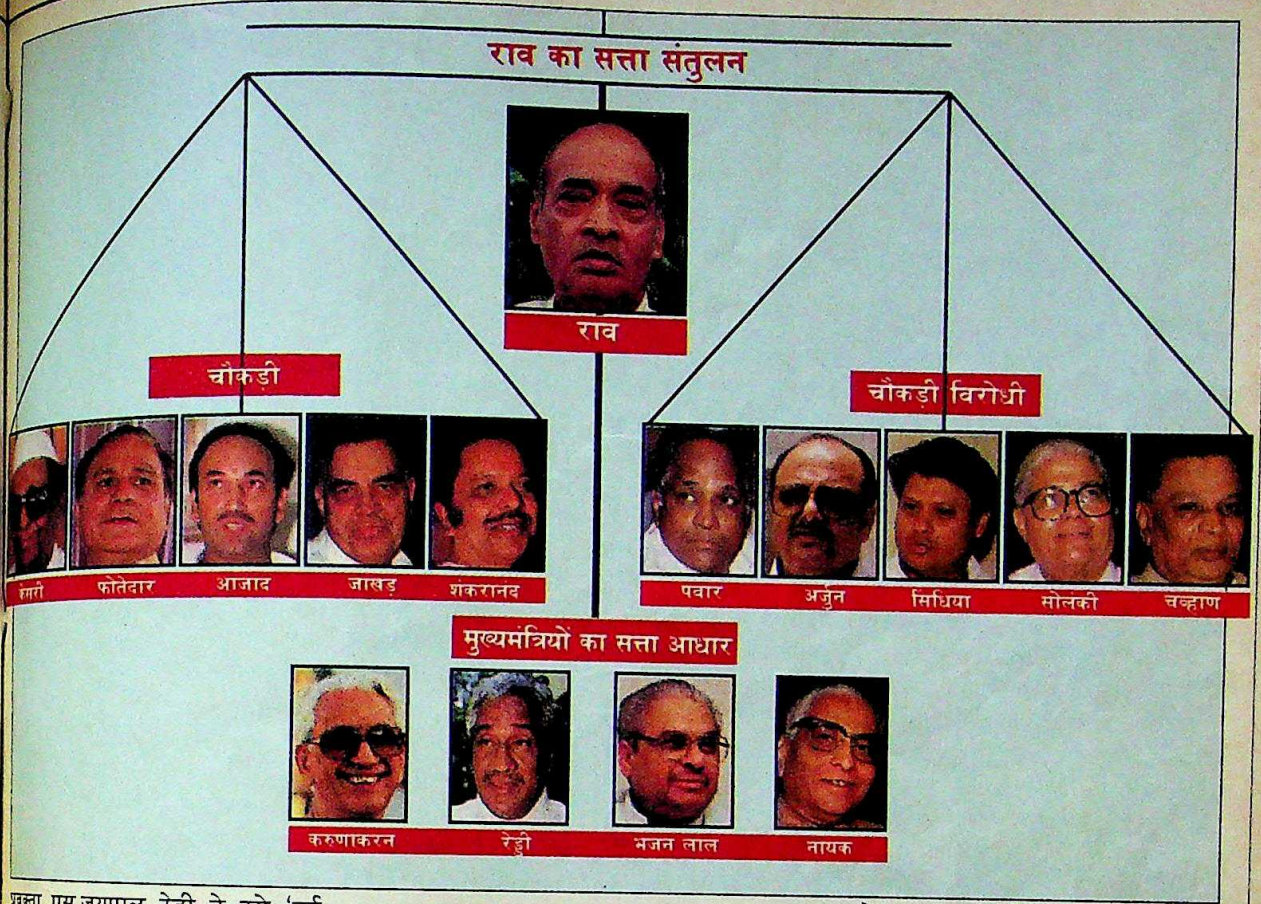

प्रवक्ता एस.जयपाल रेड्डी ने इसे 'नई बोतल में पुरानी शराब' करार दिया.

पार्टी के पुराने लोगों के फिर से काबिज होने की बात पर तो ये टिप्पणियां सही हैं लेकिन यह बात पूरे मंत्रिमंडल पर लागू नहीं होती. इसमें अनेक युवा भी हैं जिनका पहले का कामकाज बहुत अच्छा रहा है. कैबिनेट स्तर के ऐसे मंत्री हैं माधव राव सिंधिया और गुलाम नबी आजाद, जबकि राज्यमंत्रियों में अशोक गहलौत, राजेश पायलट और कमलनाथ शामिल हैं. सलमान खुर्शीद जैसे पहली बार मंत्री बनने वाले लोग भी इसमें हैं.

नई व्यवस्था के अनुसार पुरानी मंडली और पवार एक-दूसरे को संतुलित करेंगे और क्षेत्रीय नेता अपने यहां केंद्रीय हस्तक्षेप न होने की शर्त पर नए प्रधानमंत्री को समर्थन देंगे

लेकिन इस बार असल कर्ताधर्ता जो लोग होंगे वे खुद बहुत मजबूत नहीं हैं और न ही उनके खाते में कोई उपलब्धि है. विडंबना यह है कि इस बार की सरकार का अगुआ भी खुद इसी श्रेणी में है. राव इंका सरकारों में लगातार मंत्री रहे हैं लेकिन 1971-72 में वे जिस आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे हैं, वहां से भी 1977 के बाद चुनाव नहीं जीत पाए हैं.

दुनिया के इस सबसे बड़े लोकतंत्र का नेतृत्व जिस आदमी को जनता, महत्वाकांक्षा या इसे पाने की प्रेरणा से काम करने की जगह भाग्य, नाटकीय घटनाक्रमों और सितारों के चक्कर से ही मिल गया, उसने चार महीने पहले ही अपनी आगे की योजना घोषित कर दी थी. उन्होंने सक्रिय राजनीति से संन्यास लेने और लेखन में समय बिताने का एलान किया था. अपना पूरा राजनैतिक जीवन नेहरू-गांधी परिवार की छाया तले ही गुजारकर परम संतुष्ट रहने वाले इस शख्स के लिए प्रधानमंत्री का पद सपने में भी नहीं आया होगा. इंका संसदीय दल का नेता चुने जाने के बाद राव ने माना भी, "निजी तौर पर मैं खुद को अति साधारण मानता हूं." और उनकी लंबी पृष्ठभूमि को देखने से ही पता लग जाता है कि वे पार्टी और देश के मामलों को किस तरह निबटाएंगे. अपनी पार्टी की ही तरह राव भी बूढ़े हो चुके हैं. इन दोनों ही के लिए देश की बदली वास्तविकताओं के अनुसार खुद को ढालकर गैर-परंपरागत उपाय ढूंढ़ पाना काफी मुश्किल काम है.

जनाधार वाला नेता न होने से राव की मुश्किलें और बढ़ गई हैं क्योंकि इसके बिना वे अपने लोगों को लोकसभा का चुनाव जितवाकर नहीं ला सकते. यह कांग्रेस भी अब तक की परंपरा से एकदम अलग है जिसमें पूरी पार्टी इंदिरा गांधी और राजीव के बलबूते पर ही चला करती थी. लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि राव को राजनीति की समझ नहीं है या उन्हें कांग्रेस की हर बात का पता नहीं है. उन्हें मालूम है कि सत्ता के इर्द-गिर्द बनने वाली चौकड़ी और उसकी गुटबंदी मामले को और उलझाती ही है.

पुराना कांग्रेसी होने के कारण उन्हें एक महत्वपूर्ण गुर तो मालूम है ही: कैसे टिके रहा जाता है. और टिके रहने के लिए कई बार कमजोर होना या दबकर भी रहना पड़ता है. उन्होंने देखा है कि किस तरह मजबूत जनाधार वाले हेमवती नंदन बहुगुणा, मोरारजी देसाई और यशवंत राव चव्हाण जैसे अनुभवी राजनेता भी इंदिरा गांधी को चुनौती देने की स्थिति में उनके हाथों अपमानित हुए और दरकिनार कर दिए गए. राव इसीलिए टिके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमुख कैबिनेट मंत्री

जाने-पहचाने चेहरे

कैबिनेट मंत्री: मौजूदा कैबिनेट चमकदमक से रहित, पार्टी तंत्र के कल्पनाशून्य 15 नेताओं से बनी है. हालांकि अपवादस्वरूप कुछेक में प्रतिभा की झलक भी दिखती है. इनमें आठ लोकसभा से, पांच राज्यसभा से लिए गए हैं. दो मंत्री सांसद नहीं हैं.

राव ने 58 सदस्यों का जो मंत्रिमंडल बनाया है, उनमें से 22 राजीव गांधी की कैबिनेट में रह चुके हैं. पहली बार उत्तर प्रदेश से सिर्फ एक कैबिनेट स्तर का मंत्री है और दो राज्यमंत्री बनाए गए हैं. बिहार से एक कैबिनेट मंत्री तो एक राज्यमंत्री और मध्य प्रदेश से तीनों स्तरों पर एक-एक मंत्री लिया गया है. कश्मीर और पंजाब को महाराष्ट्र की बराबरी पर रखते हुए इन राज्यों से दो-दो कैबिनेट मंत्री लिए गए हैं. 'मंडली' के तीन सदस्यों को कैबिनेट में शामिल किया गया है. पवार के अलावा पुराने नेताओं को ही महत्वपूर्ण पद दिए गए हैं.

केंद्रीय मंत्रिमंडल में राज्यमंत्री स्तर पर राज्यों को बेहतर प्रतिनिधित्व मिला है 33 में से 14 मंत्री दक्षिण के हैं. छह महिलाएं हैं, पांच मुसलमान और पांच ईसाई हैं. कुछ महत्वपूर्ण मंत्रियों के व्यक्तित्व पर एक नजर.

कार्टून: अजीत नैनन और मनोजित दत्त

शरद पवार: 50; बीकॉम: रक्षा मंत्रालय, महाराष्ट्र, मराठा, शहरी, तीक्ष्ण राजनैतिक सूझबूझ. मजबूत राजनैतिक आधार, पैसे वालों से संपर्क, दलबदलू, जमीन के घोटाले के आरोपी, महत्वाकांक्षी, मिलनसार, पारिवारिक व्यक्ति.

सी.के. जाफर शरीफ: 50; मैट्रिक: रेलवे, कर्नाटक, मुसलमान, शहरी, छोटे पार्टी पदों से तरक्की करते 1971 में सांसद बने. '80 के शुरू के वर्षों में रेल, सिंचाई, और ऊर्जा मंत्रालयों में केंद्रीय राज्यमंत्री रहे. लेकिन उल्लेखनीय उपलब्धि नहीं. कर्नाटक के मुसलमानों के अलावा कोई राजनैतिक आधार नहीं. धर्मनिरपेक्ष, मददगार लेकिन राजनैतिक सूझबूझ नहीं.

शंकरराव बी. चव्हाण: 71; बीए एलएलबी: गृह, मराठा, ग्रामीण, स्वच्छ छवि, अनुभवी, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री के रूप में सफल. सुसंस्कृत, पुरानी पीढ़ी के नेता.

माधव सिंह सोलंकी: 64; बीए (ऑनर्स) एलएलबी: विदेश मंत्रालय, गुजरात, राजपूत, लंबा राजनैतिक और प्रशासनिक अनुभव, और व्यापक राजनैतिक आधार, पिछड़ी जातियों के हितों के साथ जुड़ाव, शहरी, शिक्षित, सुसंस्कृत और बुद्धिमान.

बलराम जाखड़: 64; बीए ऑनर्स: कृषि, 'मंडली' के बाहरी घेरे में रहने वाले, पंजाब, हिंदू जाट, ग्रामीण, विशेष राजनैतिक उपलब्धि न होते हुए भी दो सत्रों तक लोकसभा अध्यक्ष, राजनैतिक दृष्टि से कम वजनदार, धनी लेकिन भ्रष्टाचार के आरोपी, कर्तव्यनिष्ठ, मेहमाननवाज और राजनैतिक जीवट वाले.

डॉ. मनमोहन सिंह: 59; डीफिल: वित्त, पंजाब, सिख, जाने-माने अर्थशास्त्री, अध्यापक, और भारत सरकार के आर्थिक सलाहकार, प्रतिभाशाली, शांत, प्रचार से दूर और शालीन.

माधवराव सिंधिया: 46; एमए: नागरिक उड्डयन और पर्यटन, पवार समर्थक, मध्य प्रदेश, मराठा, शहरी, युवा, तेज, 1971 से योग्य सांसद, मध्यम दर्जे का राजनैतिक वजन रखने वाले, बेहद परिश्रमी, महत्वाकांक्षी, प्रभावी वक्ता, संभ्रांत, स्वार्थी, गजब की विनोदप्रियता.

माखनलाल फोतेदार: 59; एमए एलएलबी: स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, 'मंडली' के सदस्य, जम्मू-कश्मीर, ब्राह्मण, गांधी परिवार का अनुचर बनने से तरक्की, कश्मीर का कबाड़ा करने वालों में, चालाक और जोड़-तोड़ में माहिर.

अर्जुन सिंह: 61; बीए एलएलबी: मानव संसाधन विकास, राजपूत, शहरी, मंजे राजनीतिक और कुशल प्रशासक, मुख्यमंत्री के रूप में बेहद सफल, केंद्रीय मंत्री और पंजाब के राज्यपाल रहे और समझौता तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. कई बड़े वित्तीय घोटालों के आरोपी, अंतर्मुखी, सामंती आनबान का प्रदर्शन करने वाले लेकिन जोड़-तोड़ की प्रतिभा को छिपाने वाले.

विजय भास्कर रेड्डी: 71; बीए एलएलबी: कानून, न्याय और कंपनी के मामले, राव समर्थक, आंध्र प्रदेश, अगड़ी जाति, शहरी, स्वतंत्रता सेनानी, योग्य और अनुभवी राजनीतिक और प्रशासक, महत्वाकांक्षा रहित, मृदुभाषी और आदरणीय.

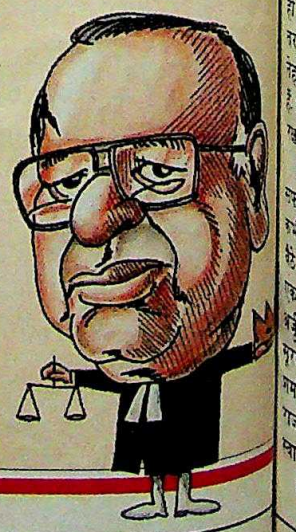

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद सक्सेना

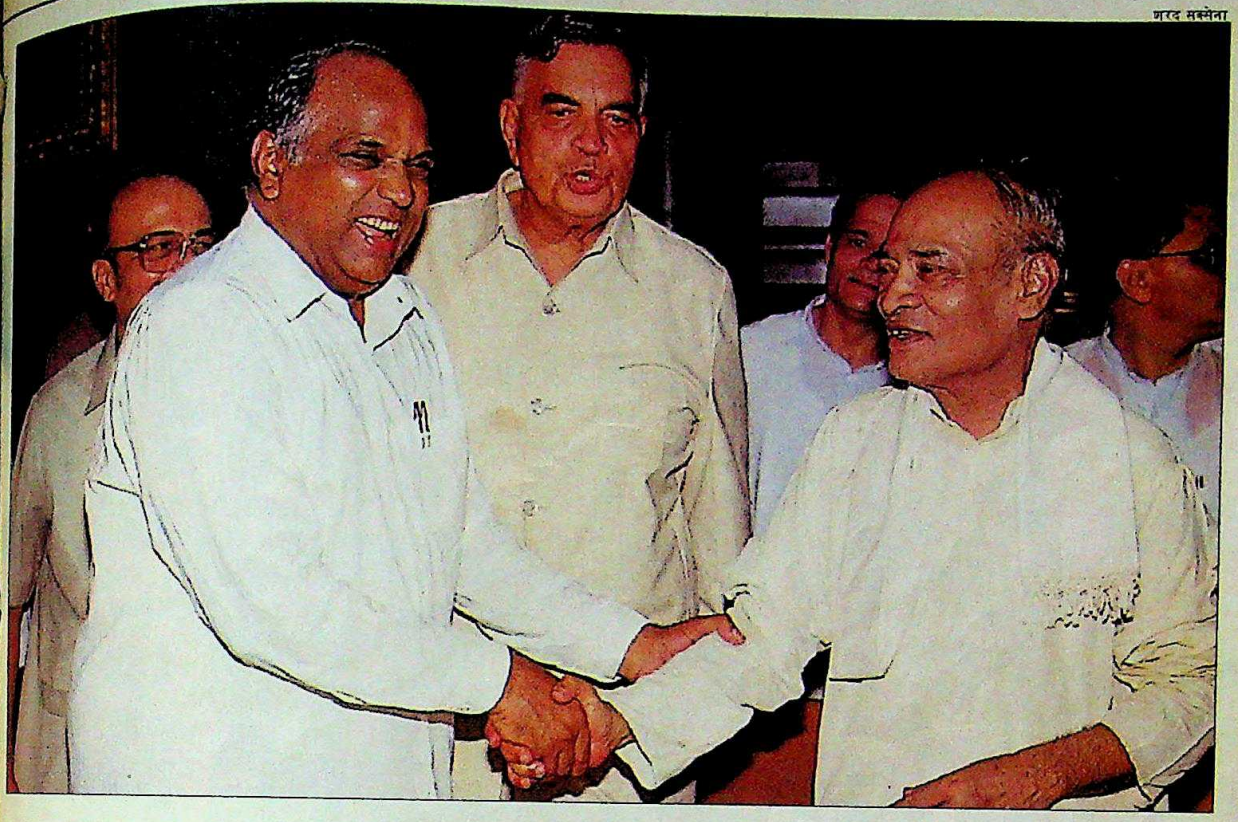

रहे कि उन्होंने कभी नेहरू-गांधी खानदान को चुनौती देने की मुद्रा न दिखाने का सबक सीख लिया था. नेता के रूप में भले ही यह उनकी कमजोरी हो पर आज इसी कारण वे प्रधानमंत्री पद तक पहुंचे हैं. पार्टी के किसी भी गुट से सीधे नहीं जुड़े होने के कारण पहले अध्यक्ष पद के लिए और बाद में प्रधानमंत्री के रूप में उनके नाम पर सर्वानुमति बन गई.

लेकिन मुख्य समस्या बरकरार है. कमजोर प्रधानमंत्री के रूप में उन्हें उसी पार्टी से समर्थन की अपेक्षा करनी होगी, जिसे वे अपनी जान जोखिम में डालकर ही बदलने की कोशिश कर सकते हैं. लंगड़े और अंधे की दोस्ती की तरह पार्टी में उन्हीं लोगों का प्रभुत्व है जो अपने जनाधार की जगह नेहरू-गांधी परिवार से अपने 'रिश्तों' की बदौलत मजबूत बने हुए हैं. उन्होंने राव को इसलिए नेता बनाया है कि वे भी उनके हितों के रक्षक बनेंगे.

सरकार का नेतृत्व बड़े नेता के पास न होने से कोई भी चमत्कार की उम्मीद नहीं कर रहा है. देश के सामने जो मुश्किल समस्याएं हैं उससे विपक्षी दल थोड़ा नरम पड़ गए हैं

प्रधानमंत्री की कुर्सी तक पहुंचने में राव ने अपने दांव बहुत सफलता से चले हैं. किसी एक गुट के नेता के साथ मिलकर उन्होंने कभी खुद को नेतृत्व की दौड़ में नहीं रखा. वे यह जानकर चुपचाप बैठे रहे कि आखिरकार सेहरा खुद-ब-खुद उनके सिर ही बंधेगा. यह एक चालाकी भरी रणनीति थी जिसमें उन्होंने खुद को वस्तुतः अर्जुन सिंह, बंगारप्पा, जनार्दन रेड्डी और करुणाकरन जैसे क्षेत्रीय महत्वाओं और माखनलाल फोतेदार, आर.के. धवन और सतीश शर्मा जैसे मंडली वालों के हवाले कर दिया था. वे भले और बुजुर्ग राजनेता बनकर बैठे रहे और ये लोग उनके पक्ष में, भले ही अपने स्वार्थों के कारण ही, शरद पवार से निबटने के लिए एकजुट हुए. और उन्होंने इसकी कीमत भी राव से वसूली. मंत्रिमंडल के सदस्यों के नाम तय करते समय उन्होंने मुख्य रूप से अर्जुन सिंह, फोतेदार, करुणाकरन, रेड्डी और बंगारप्पा से ही सलाह ली. लेकिन राव पवार के साथ विवाद दूर करके मैत्री भी कायम करना चाहते थे और इसके लिए वे पवार के मुंबई जाने से पहले मध्य रात्रि में उनसे अलग से मिले. पवार ने उनसे कहा कि मेरे लोगों को भी सरकार में लेकर अपनी मंशा जाहिर कीजिए. लेकिन पुरानी मंडली में अब सबसे शक्तिशाली हो चुके फोतेदार अड़ गए कि 'पार्टी के खिलाफ करीब-करीब विद्रोह कर चुके लोगों को पुरस्कृत न किया जाए.

लेकिन अचानक तभी इंदिरा गांधी वाली राजनैतिक शैली अपनाते हुए राव ने ऐसा कदम उठाया जो पुरानी मंडली की जड़ खोदने वाला था. मंत्रियों के चयन में तो उन्होंने इस मंडली की बात मानी और यह मंडली भी पार्टी-सरकार पर अपनी चलती कायम रहने से खुश थी. लेकिन मंत्रालयों के बंटवारे में राव ने खुद अपनी चलाई. प्रमुख मंत्रालयों पर नजर रखने वाले या उस तरफ इशारा कर चुके लोगों को राव के बंटवारे से गहरा सदमा लगा.

दरअसल, शपथ ग्रहण समारोह और विभागों की घोषणा के बीच वाले दिनों में काफी दौड़-भाग चलती रही. मंडली के लोग महत्वपूर्ण मंत्रालयों में अपने लोगों को लाने के लिए बेचैन थे. मध्य प्रदेश के एक सांसद ने बताया भी, "एक बार फिर राजीव के सचिव वी. जॉर्ज को इस बारे में संकेत देने के लिए सक्रिय किया गया." तमिलनाडु और ओडीसा का प्रतिनिधिमंडल राव से मिला और अपने प्रदेशों को कम प्रतिनिधित्व मिलने की शिकायत की.

दबाव बढ़ते जाने और दर्शनार्थियों का तांता न टूटने पर राव हैदराबाद हाउस चले गए और सख्त हिदायत दे गए कि वहां उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये आदतों मोहलाई

बेहद मुलायम व शत-प्रतिशत
सूती धागे से बने. चुना हुआ
इम्पोर्टेड रबर का इलास्टिक.
उच्च तकनीक की बेहतरीन सिलाई.
शाही अहसास. मर्दाना अंदाज़.
आकर्षक रंगों में.
विस्मृति, कुछ पहनने की.

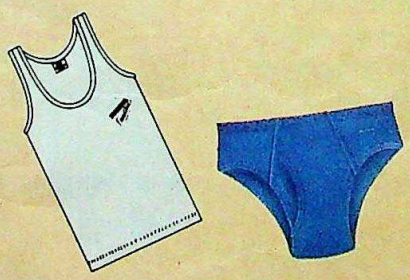

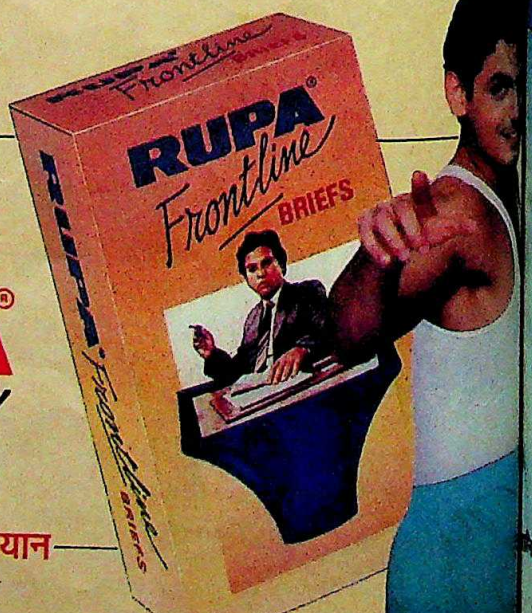

RUPA®
Frontline

जांघिया व बनियान

बिनोद होसियारी
कलकत्ता ७०० ००७ का उत्कृष्ट उत्पादन

रूपा — लाखों परिवार, पहनें बार बार

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परेशान न किया जाए. वहां उन्होंने अपने कमरे का दरवाजा बंद कर लिया और इंदिरा गांधी तथा राजीव गांधी के दौर में गठित मंत्रिमंडलों पर गौर किया. उन्होंने कुछ बड़े अधिकारियों को भी सरकार की स्थिति का पता लगाने के लिए बुलाया.

राव ने मंत्रिमंडल के गठन के मुद्दे पर कुछ पुराने राजनैतिक मित्रों से भी बात की जिनमें एक समय मध्य प्रदेश में अगुआ रहे एक कांग्रेसी नेता भी शामिल हैं. उन्हें विवादास्पद लोगों और सरकार को विवादों में फंसने देने से बचने की सलाह दी गई. इन मशविरों के बाद राव ने अपनी मंत्रिपरिषद बनाई. गृह, वित्त, नागरिक उड्डयन और वाणिज्य जैसे प्रमुख मंत्रालय शंकर राव चह्वाण, मनमोहन सिंह, माधव राव सिंधिया और पी. चिदंबरम जैसे लोगों को दिए गए. दूसरे अधिकांश लोगों के बारे में जो फैसला हुआ, उससे वे हैरत में पड़े.

अर्जुन सिंह को उनका मनचाहा गृह मंत्रालय नहीं मिला. फोतेदार, जिनके चेलों ने खबर उड़ा दी थी कि वे उद्योगमंत्री हो रहे हैं, निराश हुए. केसरी और गुलाम नबी जैसे मंडली के सदस्यों को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण और संसदीय कार्य सरीखे हलके विभाग मिले. धवन को नहीं लिया गया.

और राव ने उन लोगों को भी हैरान किया जिन्हें लग रहा था कि वे राव को बहुत अच्छी तरह जानते हैं. किसी भी तात्कालिक उलझन से खुद को बचाने के लिए उन्होंने पवार और उनके समर्थकों से कहा कि वे मंत्रिमंडल का एक महत्वपूर्ण विभाग उनके लिए रखेंगे. मकसद यह था कि अगर मंडली ने परेशान करने की कोशिश की तो ऐसे वक्त में पवार मददगार होंगे. जैसा कि एक बड़े विपक्षी नेता ने कहा, "पवार को केंद्र में लाना और मंडली को दरकिनार करना राव का धोबीपाट साबित हो सकता है."

लेकिन राव को अपनी सीमाओं का भी पता है. वे ऐसे नेताओं को तो दरकिनार कर सकते हैं जिनके साथ कोई सांसद नहीं हैं. लेकिन करुणाकरन, बंगारप्पा और भजनलाल जैसे उन क्षेत्रीय सूरमाओं को दरकिनार नहीं कर सकते जिनके साथ अनेक सांसदों की फौज है. इसलिए राव ने राजनैतिक सूझबूझ का परिचय देते हुए उनके लिए भी एक नया फार्मूला बनाया है. इंदिरा गांधी और राजीव गांधी के दिनों के विपरीत अब राज्यों में अपने मन से काम करने की पूरी छूट इन क्षेत्रीय सूरमाओं को मिलेगी. मसलन, शरद पवार ने महाराष्ट्र में अपनी कुर्सी के लिए सुधाकर नाइक को चुना तो राव को इस पर तनिक भी आपत्ति नहीं हुई. इसी प्रकार, अपने मंत्रिमंडल की सूची को 'आलाकमान' से पास कराने के लिए भजनलाल और करुणाकरन दौड़कर दिल्ली नहीं आए.

राजीव युग के बाद की कांग्रेस में बूढ़े लोगों के बीच यह सत्ता का नया बंटवारा है. इस 'समझौते' के अनुसार राव प्रादेशिक नेताओं के काम में अड़ंगा नहीं डालेंगे और बदले में वे नेतागण उस प्रधानमंत्री के काम को व्यवस्थित ढंग से चलने देने की जिम्मेदारी लेंगे जिसका अपना कोई आधार नहीं है.

राव और पार्टी के पुराने नेता सत्ता के इस नए बंटवारे से भले ही खुश हों लेकिन कांग्रेसी सांसद, खासकर युवा समूह, पार्टी के भविष्य को लेकर चिंतित हैं. निजी बातचीत में वे अपने भविष्य के प्रति चिंता जाहिर करते हैं, "हमें कौन चुनाव जितवाएगा?" पर युवा सांसद मंडली को दरकिनार करने से खुश भी हैं.

पार्टी सांसद जननेता की तलाश कर रहे हैं और कुछ को उम्मीद है कि "सोनिया जी राजनीति में उतरकर हमारे राजनैतिक भविष्य को बचा लेंगी." लेकिन लगता है कि सोनिया ने अपने दिवंगत पति के अमेठी क्षेत्र से चुनाव मैदान में न उतरने के बारे में भी पक्का फैसला कर लिया है. दरअसल, अब इस सीट के लिए अरुण गांधी-फिरोज गांधी के परिवार की तरफ से राजीव के चचेरे भाई, जो

नए चेहरे

चौंकाने की क्षमता

नरसिंह राव का मंत्रिमंडल किसी हिंदी फिल्म की पुनरावृत्ति सरीखा लग सकता है जिसमें सिर्फ हीरो बदल गया हो. लेकिन उनकी दूसरे दर्जे की टीम नए चेहरों से पटी हुई है. उनकी 58 सदस्यीय टीम में 28 सदस्य पहली दफा केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल किए गए हैं.

नवागंतुकों में तेजतर्रार लोग हैं तो बुद्धिजीवी, प्रशासक, अपने निजी पेशे में माहिर, पार्टी में बने रहने वाले तथा कुछ आधारहीन लोग भी हैं. इनमें से अनेक तो शायद कोई खास उपलब्धि न दिखा पाएं पर कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने कामकाज से चौंका दें.

वाचाल रंगराजन कुमारमंगलम के पिता और दादा भी केंद्रीय मंत्री रह चुके हैं. फौजदारी की वकालत करने वाले, 36 वर्षीय कुमारमंगलम की कई दूसरी भी रुचियां हैं. जैसे कंप्यूटरों से खेल या 'अदर साइड ऑफ ग्रेविटी' शीर्षक से वैज्ञानिक पत्र का संपादन. वे कराटे में ब्लैक बेल्ट की उपाधि भी पाए हुए हैं.

तेजी के हिमायती

कमलनाथ; कुमारमंगलम; खुर्शीदः मौका मिला

लेकिन अब उन्हें मन मुताबिक काम मिल गया है—वे संसदीय मामलों, कानून और न्याय राज्यमंत्री हैं. वे कहते हैं, "हमें फौरन अपना कामकाज दिखाना होगा वरना हम डूब जाएंगे." एक और हैं कु. गिरिजा व्यास. 21 जून 1991 के पहले उनके बारे में भला किसने सुना था? अमेरिका के डलअवेयर विश्वविद्यालय से उन्होंने दर्शन में स्नातकोत्तर किया है. हां, वे राजस्थान की पर्यटनमंत्री भी रह चुकी हैं. उनका अंतरराष्ट्रीय अनुभव दो साल तक इस मंत्रालय के काम में काफी मददगार साबित हुआ था. व्यास कविता लिखती हैं और चलते-चलते नित्से के उद्धरण दे सकती हैं और हर रात बॉख का संगीत सुनती हैं. आंखें नचाते हुए वे कहती हैं, "मुझे शादी करने का समय ही नहीं मिला." सूचना और प्रसारण उपमंत्री की अपनी नई जिम्मेदारी के बारे में वे कहती हैं, "मुझे हर रोज 22 घंटे काम करना होगा."

मध्य प्रदेश के सांसद, तेजतर्रार कमलनाथ को मंत्री पद की जिम्मेदारियां शायद ही बांध पाए. उनका नाम समय-समय पर विवादों से घिरा ही रहता है. कभी संजय ब्रिगेड में रह चुके, 43 वर्षीय कमलनाथ को अक्खड़ मेनका गांधी की जगह वन और पर्यावरण मंत्रालय में बैठाया गया है. वे कहते हैं, "मेरे साथ न तो कोई बाध्यता है, न ही मुझे कोई मुगालता है."

इसी सूची में कलकत्ता की गरम मिजाज छात्र नेता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभवी त्रयी

फारूक; कुरियन; व्यासः चमकने का मौका

वर्षीया ममता बनर्जी भी हैं. जिन्हें युवा मामले और खेल राज्यमंत्री बनाया गया है. वे कहती हैं, "हमें देरी-दर-देरियों का सिलसिला और भ्रष्टाचार पर चोट करने की जरूरत है."

ऐसे दूसरे भी हैं जिनके बारे में नरसिंह राव को उम्मीद है कि वे अपने अनुभव और कुशलता से अपने मंत्रालयों का कायापलट कर देंगे. मसलन, पूर्ववर्ती लोकसभा में इंका के मुख्य सचेतक, भौतिकशास्त्र के प्राध्यापक, 50 वर्षीय पी.जे. कुरियन है अब वे उद्योग राज्यमंत्री हैं. अपने प्राध्यापकीय विषय के मिश्रण के साथ वे कहते हैं, "वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने से ढेरों समस्याओं का हल निकल आता है." उनका मुख्य मकसद, 'लालफीताशाही को तोड़ना और प्रक्रिया आसान बनाना' है.

लालफीताशाही की लेट-लतीफी से इतने ही खफा तमिलनाडु प्रदेश इंका अध्यक्ष, 52 वर्षीय के. वडापडी राममूर्ति भी हैं. सक्रिय मजदूर नेता राममूर्ति को श्रम राज्यमंत्री का जिम्मा भी दिया गया है. हालांकि पहले तो वे 'अफसरशाही गठजोड़' को तोड़ने की उम्मीद पाले हुए हैं. इसके अलावा नागरिक उड्डयन और पर्यटन राज्यमंत्री एम.ओ.एच. फारूक हैं जिन्हें पांडिचेरी

अनपेक्षित नियुक्ति

कमला कुमारी; पोटदुखे; तारा देवीः छींका टूटा

का मुख्यमंत्री होने से प्रशासन का अच्छा अनुभव है.

राज्यों से अनुभवी लोगों को जुटाने के अलावा नरसिंह राव को राजनैतिक बाध्यताओं को भी सिर चढ़ाना पड़ा है. मसलन, रामराम सिंह यादव को खान राज्यमंत्री बनाया गया है जो उत्तर प्रदेश के कई कैबिनेट पदों पर रह चुके हैं. इसी तरह उनके अपने राज्य के मृदुभाषी, 61 वर्षीय कमालुद्दीन अहमद को नागरिक आपूर्तिमंत्री के रूप में लाना पड़ा.

इसके अलावा कई ऐसे लोग हैं जो देश का मंत्री बनाए जाने पर खुद हैरत में पड़ गए. ऐसे ही में कर्नाटक की सांसद तारा देवी दूरदर्शन पर शपथ ग्रहण समारोह देख रही थीं कि उन्हें अपना नाम सुनाई दिया. कुछ ऐसे ही हैं पत्रकारिता छोड़ राजनीति में आए महाराष्ट्र के, 58 वर्षीय शांताराम पोटदुखे जिन्हें वित्त राज्यमंत्री बनाया गया है.

इलाहाबाद में रहते हैं, के नाम पर विचार चल रहा है.

ऊपरी तौर पर तो सरकार और पार्टी में सत्ता की साझेदारी की यह व्यवस्था चलने वाली लग रही है लेकिन देखना यह है कि प्रधानमंत्री के रूप में राव खुद को विरासत में मिली समस्याओं से कैसे मुक्त कर पाते हैं. 225 सांसद होने से उनकी सरकार अल्पमत वाली है और उसे जिंदा रहने के लिए दूसरी पार्टियों का समर्थन चाहिए. जो पार्टी समर्थन देगी वह उसकी कीमत भी वसूलेगी. विपक्ष ने अभी ही लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए अपना उम्मीदवार खड़ा करने की बात कहनी शुरू कर दी है. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण लेने जैसे मुद्दे पर वी.पी. सिंह और ज्योति बसु चाहते हैं कि सरकार कर्ज लेने से जुड़ी शर्तों को सार्वजनिक करे.

लेकिन वी.पी. सिंह यह भी कहते हैं, "हम सरकार को गिराना नहीं चाहते. लेकिन सरकार को खुद ही अपने को बचाना होगा और यह स्पष्ट करना होगा कि वह क्या करना चाहती है." यह बयान गैर-भाजपा विपक्षी दलों और साथ ही अल्पमत राव सरकार की दुविधा को उजागर करता है. जनमत इंका के पक्ष में है सो विपक्ष सरकार को गिरा भी नहीं सकताः और न ही वह सरकार को बड़े मजे से काम करने देकर इसी के आधार पर अगला चुनाव जीत लेने का अवसर दे सकता है.

हां, इंका जनता दल को दोफाड़ कराके बहुमत पा ले इसकी संभावना है. लेकिन तब तक राव को बहुत संभालकर कदम बढ़ाने होंगे. उन्हें उनकी कुछ मांगों पर समझौता करना पड़ेगा तो कुछ पर उन्हें हमले करने देने होंगे. लेकिन यह आसान नहीं है क्योंकि इंका के घोषणापत्र में खासकर आर्थिक उदारता के समयबद्ध कार्यक्रम दिए हैं और जनता दल या मार्क्सवादियों को खुश करने के लिए उनसे कदम वापस खींचना मुश्किल हो जाएगा.

लेकिन नई सरकार को कुछ अंतरनिहित लाभ भी हैं. इसका नेतृत्व कोई इतना बड़ा नेता नहीं कर रहा है. सो, इससे किसी को भी चमत्कार की उम्मीद नहीं है. सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च के भवानी सेनगुप्त कहते हैं कि नई सरकार 'भरोसा नहीं जगाती.' प्रसिद्ध स्तंभकार खुशवंत सिंह नए मंत्रिमंडल को 'फीका और बिना राजनैतिक आधार वाला' करार देते हैं. लेकिन अधिकांश लोगों को भरोसा है कि यह सरकार पूरे पांच साल चलेगी. फिक्की के महासचिव डी.एच. पै पणंदीकर कहते हैं, "मुझे इस सरकार से अपना कार्यकाल पूरा करने की उम्मीद सिर्फ इसी कारण है कि कोई भी जल्दी चुनाव के पक्ष में नहीं है."

इसके अलावा देश के सामने जो गंभीर राजैनतिक और आर्थिक समस्याएं हैं और उन्हें सुलझाने के लिए स्थायित्व का माहौल चाहिए, यह देखकर विपक्षी दल भी थोड़े नरम पड़ गए हैं. वी.पी. सिंह का यह कहना कि सरकार गिराने में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है, एक किस्म की व्यावहारिक मजबूरी है. जो भी पार्टी सरकार को गिराएगी और अस्थिरता को बढ़ाने में अपना योगदान देगी, उसे लोग राजनैतिक खलनायक मान लेंगे.

और फिर, 'चंद्रशेखर तत्व' का चमत्कार भी हो सकता है—अति साधारण स्थिति में भी प्रधानमंत्री पद पाकर नेता के गुण और काम में शानदार बदलाव. लेकिन यह सवाल अपनी जगह है कि क्या राव बीमारी और पुराने लोगों के भरोसे होने के बावजूद खुद को परिस्थिति के अनुकूल ढालकर बढ़िया काम कर सकते हैं? समाजशास्त्री वीणा दास मानती हैं कि समस्याएं 'ढेर सारी और काफी गंभीर' हैं. लेकिन ऐसी पृष्ठभूमि में अगर राव और उनका मंत्रिमंडल टिके रहकर आर्थिक मोर्चे पर और बजट के मामले में कुछ भी महत्वपूर्ण कदम उठाए और उसका वांछित असर हो तो यह बड़ी उपलब्धि होगी क्योंकि यह ऐसी सरकार का काम होगा जिससे उम्मीदें बहुत अधिक नहीं हैं.

—जफर आगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पी.वी. नरसिंह राव

ढीले हाथों में सख्त लगाम

कोई महत्वाकांक्षा न होने के बावजूद लंबी वफादारी का सिला मिला जिंदगी की शाम में, अब अनुभव और ज्ञान की परीक्षा की घड़ी

मोतीलाल नेहरू मार्ग पर ब्रिटिशकालीन बंगले के लॉन में खड़े होकर प्रधानमंत्री पद की बधाइयां स्वीकार करने वाले व्यक्ति के लिए तो यह राजनैतिक पुनरुत्थान ही है. अभी कुछ ही अरसा पहले वे खामोशी से सेवानिवृत्ति की तरफ कदम बढ़ा चुके थे. उनका ज्यादातर वक्त हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत सुनने और पर्सनल कंप्यूटर पर काम करने में बीत रहा था कि एकाएक नाटकीय घटनाओं का चक्र तेजी से घूमा और उसने उन्हें गुमनामी के गर्त से निकालकर राजनीति के केंद्र में लाकर खड़ा कर दिया.

अब सफेद झक जूते, कलफ लगी धोती, रेशमी कुर्ता पहने, कंधे पर रेशमी शॉल डाले और विशेष सुरक्षा दस्ते (एसपीजी) के हट्टे-कट्टे जवानों के जोड़े से घिरे 70 वर्षीय पामुलपर्ति वेंकट नरसिंह राव चौधियाए से लगते हैं. कई पार्टी कार्यकर्ता, चाटुकार और शुभचिंतक उनसे रोज मिल रहे हैं. वे अपने 'दर्शनों' के लिए कतार बांधे खड़े आगंतुकों को देखते हैं. कभी वे खुद भी नेहरू-गांधी खानदान के सदस्यों के 'दर्शनों' के लिए ऐसे ही खड़े रहा करते थे.

यहां तक कि उनकी राजनैतिक सफलता से उदासीन और अलग-थलग रहने वाले परिवारीजन भी उत्साहित हो गए हैं. हैदराबाद में रहने वाले उनके तीनों बेटे और पांच में से तीन बेटियां पिता के जीवन में आए इस अप्रत्याशित उत्थान की खुशियां बांटने दिल्ली आ पहुंचे हैं. सिन्क्लेयर टेलीविजन में प्रबंध निदेशक उनके सबसे छोटे बेटे प्रभाकर राव कहते हैं, "हम लोगों को बहुत अच्छा लग रहा है. हालांकि हम उन्हें 1962 से सत्ता में देख रहे हैं लेकिन यह तो बहुत खास मौका है."

यह खुशी इसलिए नहीं कि उनका परिवार पिता के नए पद से कुछ फायदा उठाना चाहता है. पिछले 30 वर्षों से नरसिंह राव बड़े-बड़े पदों पर रहे हैं. लेकिन उनके परिवारीजन आम नागरिक की तरह ही जीवन जी रहे हैं. राव के दूसरे बेटे, पेशे से एडवोकेट राजेश्वर राव कहते हैं, "हमें तो रेल और हवाई जहाज के टिकट लेने के लिए भी मशक्कत करनी पड़ती है." हाल ही में आंध्र प्रदेश के हनमकोंडा से विधायक चुने गए राव के सबसे बड़े बेटे रंगाराव का कहना है, "मेरे पिता ने मेरे राजनैतिक जीवन को आगे बढ़ाने में मेरी बिलकुल मदद नहीं की. अन्यथा मात्र विधायक बनने के लिए मुझे राजनीति में 30 वर्ष नहीं बिताने पड़ते."

राजनीति के अखाड़े में राव 17 वर्ष की उम्र में 1938 में उतरे. हैदराबाद के निजाम ने जब 'वंदे मातरम' गाने पर प्रतिबंध लगा दिया तो राव ने इसके विरोध में हुए प्रदर्शनों में बढ़चढ़कर हिस्सा लिया. बाद में वे वकालत छोड़ अंग्रेज सरकार के दमन के खिलाफ 'भारत छोड़ो' आंदोलन में शामिल हो गए.

स्वतंत्रता के बाद 1957 में वे आंध्र प्रदेश विधानसभा के सदस्य बने, फिर राज्य मंत्रिमंडल में मंत्री और अंततः 1971 में मुख्यमंत्री बने. राव ने भूमि सुधार लागू करने के क्रम में तगड़ी जमींदार लॉबी को नाराज कर लिया. वे दो वर्ष तक ही मुख्यमंत्री रह सके क्योंकि इंदिरा गांधी ने उनकी सरकार बर्खास्त कर राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया. इस आघात के बावजूद उन्हें 1974 में कांग्रेस महासमिति का महासचिव बनाया गया. राज्य की राजनीति में 20 वर्ष गुजारने के बाद राव हनमकोंडा निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा के लिए चुने गए.

अब तक वे श्रीमती गांधी पर अपनी बुद्धिमत्ता का सिक्का जमा चुके थे. एक पूर्व नौकरशाह याद करते हैं. "वे हर मुद्दे के दोनों पहलुओं को विस्तार से श्रीमती गांधी के सामने रखते, जिससे उन्हें फैसला लेने में मदद मिलती." उनके पूर्व कैबिनेट सहयोगी प्रणब मुकर्जी कहते हैं, "राव और वेंकटरामन इंदिरा गांधी के दो समझदार सहयोगी समझे जाते थे." लेकिन इसके साथ ही उन्होंने श्रीमती गांधी के प्रति अटूट निष्ठा बनाए रखी और उनके फैसलों को कभी चुनौती नहीं दी. 1979 में इंदिरा गांधी ने उन्हें पार्टी का चुनाव घोषणा पत्र बनाने (यह काम वे तब से ही करते आ रहे हैं) का काम सौंपा. बाद में 1980 में कांग्रेस की सत्ता में आने के बाद उन्हें विदेश मंत्री बनाया गया.

> **राव को यदि सफलता का श्रेय नहीं मिला तो असफलता की आलोचना से भी उनका वास्ता नहीं पड़ा. इससे भी महत्वपूर्ण बात यह कि उन्होंने अपने को विवादों से दूर ही रखा**

करीम नगर जिले के वंगारा गांव के इस ब्राह्मण के लिए यह बहुत बड़ी बात थी. विदेशी भाषाओं पर अधिकार की वजह से राव अंतरराष्ट्रीय कूटनयिक जगत में एकदम सफल रहे. राव को यदि सफलता का श्रेय नहीं मिला तो असफलता की आलोचना से भी उनका वास्ता नहीं पड़ा. मसलन, आज किसी को याद नहीं है कि ऑपरेशन ब्लू स्टार वाले दौर, जिसकी परिणति इंदिरा गांधी की हत्या और 1984 में सिख विरोधी दंगों में हुई, के दौरान देश के गृहमंत्री नरसिंह राव थे.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति राव ने तकरीबन अकेले ही अपने 'प्रोसेसर' (कंप्यूटर) पर छह महीने के रिकार्ड समय में तैयार की. लेकिन वे इसके लिए और विवादास्पद नवोदय स्कूलों की योजना के लिए रकम का इंतजाम करवाने में सरासर नाकाम रहे.

राव के साथ काम कर चुके ज्यादातर नौकरशाह उनकी फैसला लेने में ढिलाई बरतने की आदत की आलोचना करते हैं. लेकिन कैबिनेट सचिव बी.जी. देशमुख राव की कार्यशैली का बचाव करते कहते हैं, "राव की तुरंत फैसला न लेने वाले व्यक्ति की छवि इसलिए बनती है कि वे समस्या के हर पहलू पर गौर करते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

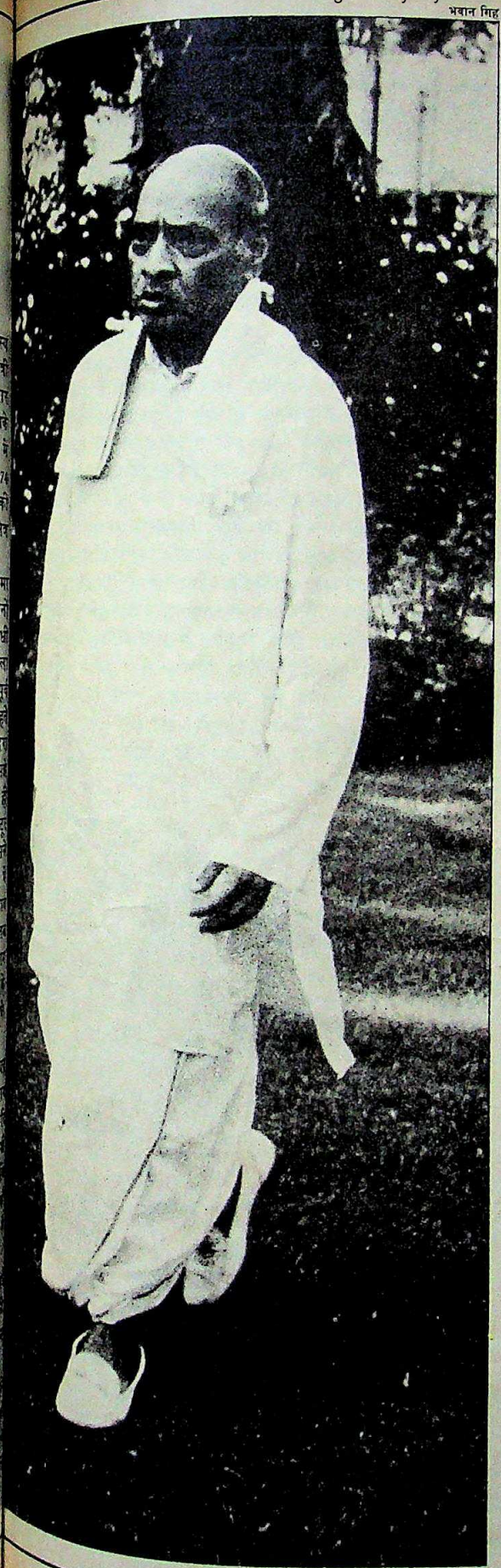
भवान सिंह

जबकि दूसरे नौकरशाह राव को प्रेरक और समझौते कराने वाला नेता मानते हैं. पूर्व शिक्षा सचिव आनंद सरूप कहते हैं, "वे बातचीत और सुलह-समझौते के जरिए समस्या को सुलझा लेते हैं." राव विनम्र नेता भी समझे जाते हैं. "वे कट्टर तो नहीं हैं लेकिन कोई और रास्ता न हो तो जोर देकर अपनी बात मनवा लेते हैं."

अलबत्ता राव ने पूरी चौकसी बरतते हुए अपनी राय प्रधानमंत्रियों पर कभी नहीं थोपी और टकराव से बचे रहे. पूर्व विदेश सचिव एस.के. सिंह बताते हैं, "वे सचमुच में अजातशत्रु हैं."

इतने लंबे अरसे तक सत्ता में रहकर भी उन्होंने खुद को विवादों से दूर ही रखा. इसका एकमात्र अपवाद है, विवादास्पद कथित तांत्रिक चंद्रास्वामी के साथ उनके संबंध. ये संबंध तब से हैं जब राव हैदराबाद में थे. एक बार राव ने एक नौकरशाह से कहा था, "उनके (चंद्रास्वामी) पास आध्यात्मिक शक्तियां भले ही हों लेकिन मेरे खयाल से वे इतने पहुंचे हुए नहीं जितना उन्होंने प्रचार किया हुआ है." इसके बावजूद राव स्वामी से अपने संबंध तोड़ नहीं पाए. इसी वजह से पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह के पुत्र अजेय सिंह के कथित विदेशी खाते से संबंधित सेंट किट्स मामले में सीबीआई की प्रथम सूचना रिपोर्ट में भी राव का नाम है. राव के समर्थक उनके चंद्रास्वामी से संबंधों को दरकिनार करने की जी-तोड़ कोशिश कर रहे हैं.

राव अपनी रिपोर्ट, पत्र और घोषणा पत्र तैयार करने में सबसे छोटे बेटे के भेंट किए सिन्क्लेयर पर्सनल कंप्यूटर और एक माइक्रोसेंस कंप्यूटर का इस्तेमाल करते हैं. आज राव ने इनके संचालन में इतनी महारत हासिल कर ली है कि 10 देसी और 4 विदेशी भाषाओं के अलावा उन्होंने कुछ कंप्यूटरी भाषाएं भी सीख ली हैं, और वे उसकी प्रोग्रामिंग भी कर सकते हैं.

1970 में पत्नी सत्यम्मा—जिनके साथ उनकी शादी 9 वर्ष की उम्र में हुई थी, के गुजर जाने के बाद उन्होंने खुद को पूरी तरह राजनीति में डुबो दिया. उनके आठों बच्चों की शिकायत है कि उनके पिता उन्हें ज्यादा वक्त नहीं दे पाते. उनके पुत्र राजेश्वर राव कहते हैं, "वे आधुनिक पिताओं की तरह नहीं हैं जिनका सीमित परिवार होता है और जो बच्चों का खूब ध्यान रखते हैं."

परिवार के प्रति उनका प्रेम तब ही उमड़ता नजर आया, जब जून 1990 में उनके सबसे बड़े बेटे रंगाराव के हृदय की बाईपास सर्जरी हुई. राव, जो उन दिनों अमेरिका के दौरे पर थे, हैदराबाद आए और बेटे से मिलते रहने के लिए 24 दिन वहां ठहरे. राव याद करते हैं, "पिछले 20 वर्षों में हैदराबाद में यह उनका सबसे लंबा प्रवास था." यह भी विडंबना ही है कि इसके एक महीने बाद ही राव को हृदय की धमनी का बाईपास ऑपरेशन कराना पड़ा क्योंकि मधुमेह से उनकी शिराएं 70 फीसदी से ज्यादा सिकुड़ गई थीं.

ऑपरेशन के बाद राव की जीवन-शैली में बहुत बदलाव आया है. अब वे शाम को टेनिस या बैंडमिंटन नहीं खेलते. राव तो पहले ही सादा और कम भोजन करते थे. अब तो मीठा भी बिलकुल बंद हो गया है. व्यायाम की कमी पूरी करने को वे सुबह छह किमी सैर करते हैं. सुबह पांच बजे उठकर वे गाड़ी से राष्ट्रपति भवन जाते हैं. रास्ते भर वे सोनी डिस्कमैन टेपरिकार्डर से हेडफोन लगाकर भारतीय शास्त्रीय संगीत के अपने पसंदीदा राग भैरवी, मालकौंस और कल्याणी सुनते हैं. राष्ट्रपति भवन के शांत-सुरम्य लॉन पर 55 मिनट या घंटा भर टहलकर वे तरोताजा हो जाते हैं. लौटकर थोड़ा आराम कर दिनचर्या में लग जाते हैं. दोपहर का खाना वे हमेशा घर पर ही खाते हैं और कुछेक घंटे के आराम के बाद फिर व्यस्त हो जाते हैं. उनका दिन—जिसमें कम से कम तीन घंटे वे कंप्यूटर के आगे बिताते हैं—रात एक बजे खत्म होता है. अब देखने की बात यह है कि प्रधानमंत्री के रूप में वे निर्णायक फैसले ले पाते हैं या नहीं.

—वाहेगुरु पाल सिंह सिद्धू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद पवार

नागपाश में आबद्ध क्षत्रप

ताकतवर मराठा नेता ने कुछ ज्यादा ही भरोसा पाल लिया लेकिन चौकड़ी ने षड्यंत्रों से उनको पटखनी दे दी, दक्षिण के नेताओं ने भी उनका साथ छोड़ दिया और वे पी.वी. नरसिंह राव की तरफ हो गए

दो हफ्ते पहले तक लग रहा था कि मराठा क्षत्रप शरद पवार और प्रधानमंत्री की कुर्सी के बीच कुछ ज्यादा फासला नहीं है. लेकिन दावेदारी का अभियान चलाने के लिए दिल्ली पहुंचने के 48 घंटे के भीतर ही कुर्सी उनकी पहुंच से बहुत दूर हो चुकी थी. कांग्रेस (इ) के सूत्र संचालन करने वाली मंडली ने उन पर पूरी ताकत से प्रहार किया था. 20 जून को 'सर्वसम्मति' से 'नरसिंह राव जी' के चयन पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगाने से पहले पवार लड़ाई हार चुके थे.

मंडली की दक्ष संचालन क्षमता के आगे उनके समर्थक नौसिखुए ही साबित हुए. ऊपर से देखने में तो यही लगा कि दोनों खेमों—मंडली और पवार समर्थकों के बीच विभाजन रेखाएं स्पष्ट हैं. मंडली में थे—आर.के. धवन, माखनलाल फोतेदार, सतीश शर्मा, और विंसेट जॉर्ज जो राव को गद्दी पर बिठाकर अपना वर्चस्व बरकरार रखना चाहते थे, तो पवार के समर्थकों में युवा तुर्क कहे जाने वाले नेता थे—आनंद शर्मा और सुरेश कलमाडी तथा वरिष्ठ नेता एन.के.पी.साल्वे और नजमा हेपतुल्ला. असल में पवार खेमे ने जिसे सीधा-सादा सत्ता संघर्ष समझा था वह इतना सपाट नहीं था. बीच में अर्जुन सिंह, के. करुणाकरन और माधवराव सिंधिया जैसे राजनीतिक भी थे जिन्होंने मंडली समर्थक न होते हुए भी पवार खेमे को हराने में मदद की.

माखनलाल फोतेदार जैसे चालाक और अनुभवी नेता राव की तरफ से सबसे ज्यादा सक्रिय थे और उन्होंने कई राज्यों के नेताओं—अहमदाबाद में अमर सिंह चौधरी, बंगलूर में एस बंगारप्पा और तिरुवंनतपुरम में करुणाकरन से संपर्क बना लिया था. आर.के. धवन की वजह से राव समर्थकों के पास हर सांसद के गुटीय झुकाव, वित्तीय संपर्क और गोपनीय भेदों का ब्यौरा था. और यह जानकारी भी कि उसे किस तरह फुसलाया जा सकता है—खुशामद से, चिरौरी से, लालच से, पैसे से या धमकी से. इस तरह का संगठनात्मक अभियान कलमाडी या हेपतुल्ला के बस का नहीं था और मंडली में धवन और फोतेदार ने मिलकर सतीश शर्मा और जॉर्ज को पूरा सहयोग किया.

मंडली की योजना का महत्वपूर्ण हिस्सा यह था कि सोनिया गांधी के नाम पर सांसदों को राव के पक्ष में लाया जाए. चूंकि शर्मा को राजीव-सोनिया का नजदीकी माना जाता है और जॉर्ज की पहुंच घर के अंदर तक है, इसका फायदा उठाकर मंडली के सदस्यों ने सांसदों के कान में यह फूंक भरनी शुरू की कि "सोनिया जी राव के पक्ष में हैं." चतुर अर्जुन सिंह के विपरीत पवार और उनके समर्थक यह नहीं भांप सके कि 'पवार लहर' नाम की कोई चीज है ही नहीं. यहां तक कि '106 वर्ष पुरानी पार्टी की लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत' करने के बयान पर हस्ताक्षर करने वाले सांसद भी पवार के कट्टर समर्थक नहीं थे.

रेखाचित्र: अजित नैनन और मनोजीत दत्ता

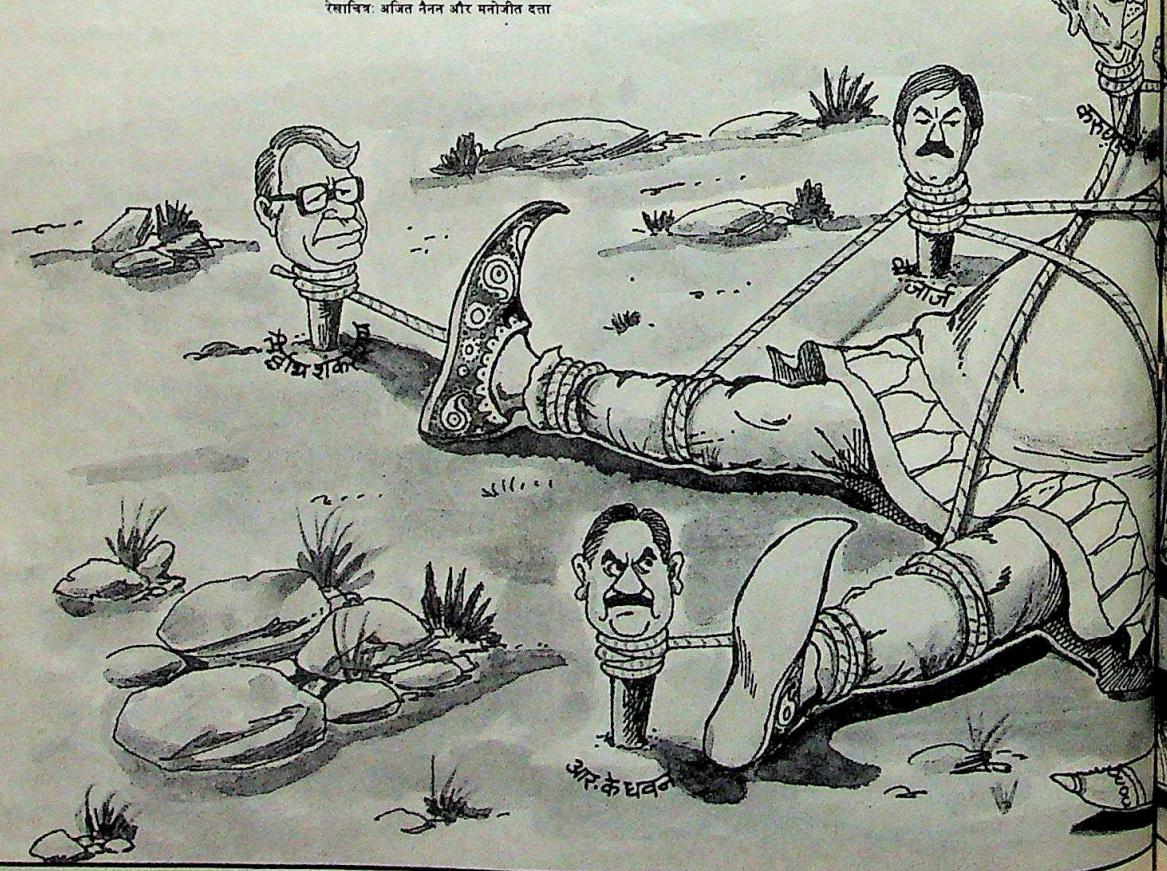

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन राव खेमे द्वारा सोनिया का नाम शामिल किया जाना पवार खेमे के लिए बड़ा धक्का था. तिस पर पवार खेमे ने यह कहकर कि सोनिया के नाम का दुरुपयोग किया जा रहा है, अपनी अपील का असर कम कर लिया. वे बचाव की मुद्रा में आ गए. यह एक रणनीतिक चूक थी. और पवार खेमे की बचाव वाली मुद्रा उन सांसदों को भी प्रभावित नहीं कर पाई जो किसी भी दमदार नेता के साथ जाने को तैयार बैठे थे. आदर्शवाद की जो तुरुप चाल पवार समर्थकों ने चली थी, नाकामयाब रही. और यह सत्ता संघर्ष वैध मंचों और संस्थाओं को सक्रिय करने और असली मुद्दों का संघर्ष होने के बजाए गुपचुप अभियान, प्रचार और विपरीत प्रचार का तमाशा भर रह गया और इस तरह के संघर्ष से निबटने का मंडली को पर्याप्त अनुभव था ही.

पवार के पास पैसे की ताकत भले ही थी लेकिन मंडली के पास चाणक्य नीति से भरे दिमाग थे, जिनका इस्तेमाल पवार समर्थक दक्षिणी खेमे को तोड़ने और उनके युवा तुर्कों को फोड़ने के लिए जमकर किया गया. मंडली का प्रमुख निशाना करुणाकरन थे, जिनकी अगुआई में संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे ने केरल में भारी जीत हासिल की थी. दक्षिण में सबसे पहले वे ही पवार समर्थक बने थे. करुणाकरन को बस में करने के लिए मंडली ने उनके प्रतिद्वंद्वी ए.के. एंथनी का सहारा लिया. मंडली की शह पर एंथनी के समर्थकों ने केरल विधायक दल के नए नेता के चुनाव की मांग उठानी शुरू कर दी. अनुभवी करुणाकरन को इसका मकसद समझने में देर नहीं लगी. राज्य की पार्टी में सुनियोजित विद्रोह से डरकर उन्होंने तुरत-फुरत अपना समर्थन सर्वसम्मति वाले खेमे की तरफ मोड़ दिया.

कुछ ही दिन पहले जहां वे पवार की पैरवी कर रहे थे, अब वे ही दक्षिण के सांसदों को पवार के विरोध में एकजुट करने लगे.

अब पवार पर चारों तरफ से दबाव डाला जाने लगा. फोतेदार सक्रिय हुए और इंका सूत्रों के अनुसार "पवार जी से खुला विचार-विमर्श किया गया जिसमें उन्होंने मुंबई के भूमि आरक्षित घोटाले में महाराष्ट्र के पूर्व उप-मुख्यमंत्री तिरपुडे की पवार जी के खिलाफ लंबित शिकायत का सरसरी तौर पर उल्लेख किया." इसी के साथ-साथ युवा तुर्कों की एक नई फौज खड़ी कर दी गई जो राव के प्रचार में जुट गई.

ज्यों-ज्यों कांग्रेस संसदीय बोर्ड की बैठक की तारीख 20 जून नजदीक आती गई, पवार समर्थक मैदान से हटते नजर आए. एक अंदरूनी सूत्र के मुताबिक धवन ने अंतुले से 'बात कर' उनका 'हृदय परिवर्तन' किया. गुलाम नबी आजाद ने मुरली देवड़ा को 'संभाला' तो सीताराम केसरी ने विलास मुत्तमवार की 'जिम्मेदारी' ली. यहां तक कि नजमा हेपतुल्ला भी राजेंद्र कुमारी वाजपेयी के पास गईं और बताया कि वे राव जी के खिलाफ नहीं हैं. "राव जी का व्यवहार मेरे साथ बहुत अच्छा रहा है."

पवार खेमे ने आखिरी कोशिश कर राजीव के निवास पर संपर्क किया कि क्या सोनिया सचमुच राव का समर्थन कर रही हैं. वी.जॉर्ज के सहायक बाला ने उन्हें साफ-साफ बताया कि सोनिया जी किसी का भी समर्थन नहीं कर रही हैं. 10, जनपथ से यही सूचना एक संवाद एजेंसी को भी प्रसारित की गई और 20 जून की सुबह अखबारों में यही छपा.

लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ा. संसदीय बोर्ड की बैठक शुरू हो चुकी थी. इसमें राव, आजाद, करुणाकरन, केसरी, कर्नाटक के मुख्यमंत्री एस. बंगारप्पा, आंध्र प्रदेश के जर्नादन रेड्डी और महाराष्ट्र के पवार ने भाग लिया. पवार ने खुद को अलग-थलग महसूस किया. पवार बचाव की मुद्रा में तो रहे लेकिन इस मांग पर अड़े रहे कि कांग्रेस संसदीय दल के नेतृत्व के मुद्दे पर सांसदों की व्यक्तिगत राय ली जाए. आकाओं ने उनकी यह मांग 'मंजूर' कर सिद्धार्थशंकर राय और करुणाकरन की समिति बनाई. इसे अगले ही दिन होने वाले नेता के चुनाव से पहले सांसदों की व्यक्तिगत राय जानने का काम सौंपा गया.

इस प्रकरण में यह साफ हो चुका था कि मंडली का स्थिति पर पूरा नियंत्रण है और राज्यों के नेता पवार के खिलाफ हैं. ऐसी स्थिति में किसी सांसद से यह उम्मीद नहीं थी कि राय और करुणाकरन के सामने पवार के पक्ष में राय देंगे. पवार इसे बखूबी जानते थे लिहाजा उन्होंने तुरंत वक्तव्य दिया कि वे राव के पक्ष में अपना नाम वापस ले रहे हैं. पवार के एक समर्थक की टिप्पणी थी, "माफिया ने कमान संभाल ली है. कोई उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता."

और इस तरह इंका फिर पुरानी चाल पर उतर आई यानी जोड़तोड़, अफवाहें और विश्वासघात के जरिए काम चलाना. पवार के असफल विद्रोह ने एक बार साबित कर दिया है कि इंका में लोकतंत्र की बहाली के लिए युद्ध स्तर पर प्रयत्नों की जरूरत है और चुनौती देने वाले को अपनी ताकत का एहसास होना चाहिए. और इतना शक्तिशाली होना चाहिए कि जरूरत पड़ने पर पार्टी का विभाजन कर सके. राजीव गांधी भी 1986 में जब सत्ता के शीर्ष पर थे अपनी पार्टी में चुनाव नहीं करवा सके थे.

—जफर आगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आम चुनाव

कैसे जीता कोई, क्योंकर

चुनाव के विस्तृत आयामों को समझने और यह जानने के लिए कि इन्होंने भारत का राजनैतिक नक्शा और पार्टियों का भाग्य कैसे बदला, 'इंडिया टुडे' ने चुनाव आंकड़ा विशेषज्ञ प्रणय राय से बात की.

इस आम चुनाव की सबसे बड़ी खासियत क्या रही?

अब तक हुए चुनावों के एकदम विपरीत, इस बार देश का संघीय स्वरूप उभरकर सामने आया है. मतदाताओं के रुझानों में आई भिन्नता से यह एकदम स्पष्ट है. पहले जैसे कोई एक पार्टी किसी एक क्षेत्र, जैसे पूरे हिंदीभाषी क्षेत्र में बाजी मार ले जाती थी, वैसा इस बार नहीं हुआ. मतदाताओं का रुझान हर राज्य में अलग-अलग रहा. रुझान तय करने में वहां के स्थानीय मुद्दों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. इसी से जुड़ी एक और विशेषता यह है कि तकरीबन हर राज्य में दो बड़ी पार्टियां उभरकर आईं. यह चुनाव इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि इससे भारत में द्विदलीय व्यवस्था की शुरुआत हो सकती है.

नक्शा और पार्टी बीके ग्रा

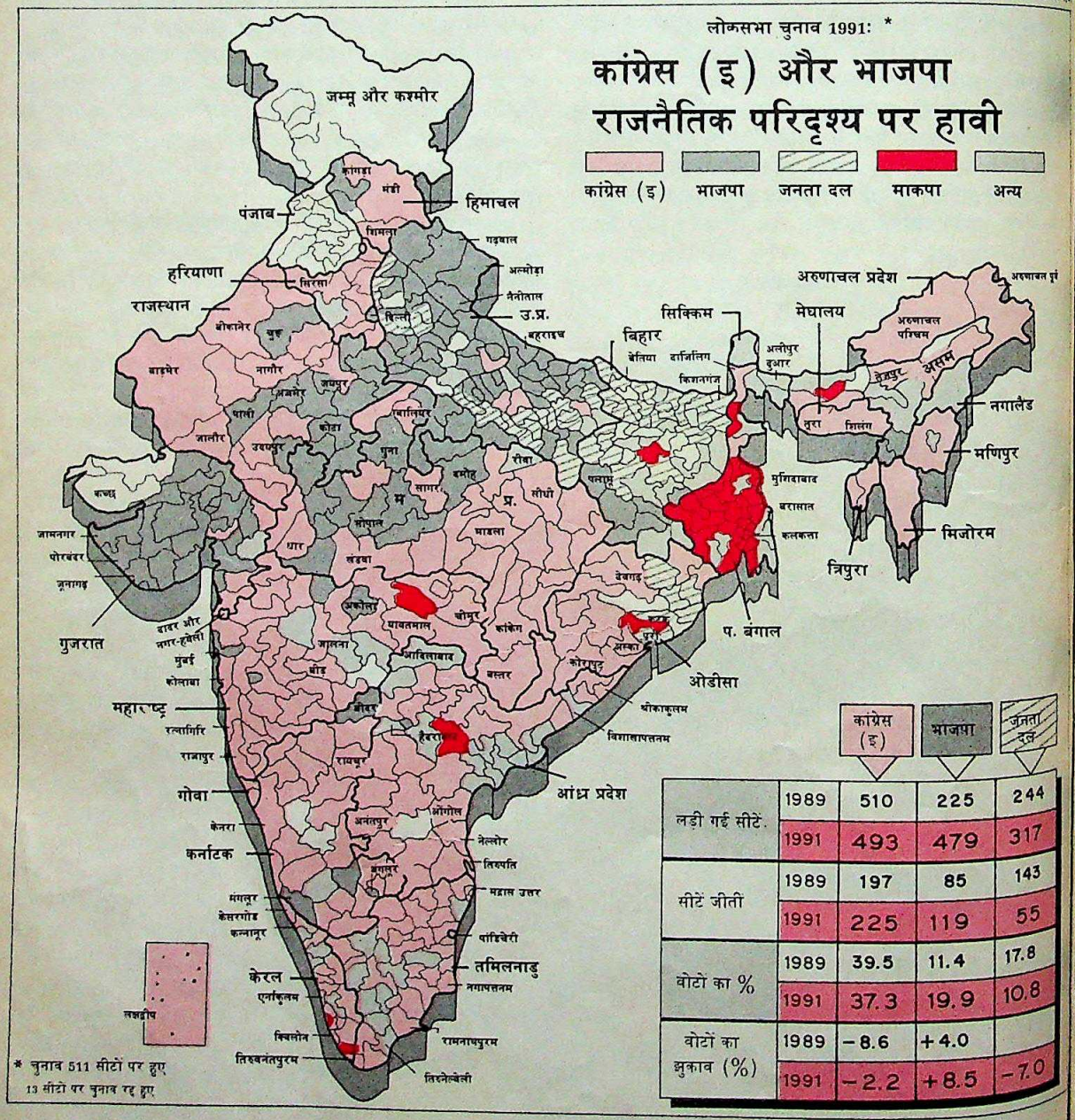

		कांग्रेस (इ)	भाजपा	जनता दल
लड़ी गई सीटें	1989	510	225	244
	1991	493	479	317
सीटें जीतीं	1989	197	85	143
	1991	225	119	55
वोटों का %	1989	39.5	11.4	17.8
	1991	37.3	19.9	10.8
वोटों का झुकाव (%)	1989	−8.6	+4.0	
	1991	−2.2	+8.5	−7.0

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हारा कोई

राजीव गांधी की हत्या के बाद क्या इंका के पक्ष में सहानुभूति लहर थी?

मई में हुए चुनाव के पहले दौर में देश भर में मतदाताओं का रुझान इंका की ओर से 5.7 फीसदी कम हो गया था. लेकिन जून में हुए दूसरे दौर में इंका के पक्ष में 1.6 फीसदी रुझान हो गया. इसका यही मतलब हुआ कि राजीव की हत्या के बाद इंका को मिले वोटों में निश्चित रूप से इजाफा हुआ. हत्या के बाद हुए मतदान में इंका की स्थिति सुधरने की वजह दूसरे दौर में मतदान का प्रतिशत बढ़ना भी है. मतदाता, जिनका झुकाव इंका की ओर था, लेकिन जो वोट डालने के प्रति उदासीन थे, राजीव की मौत के झटके ने उन्हें सक्रिय कर दिया. और वे दूसरे दौर में मतदान के लिए निकल आए. मसलन, बिहार में पहले दौर में 56 फीसदी मतदान हुआ. लेकिन दूसरे दौर में बढ़कर 63 फीसदी हो गया. इस तरह पहले दौर में जहां इंका के खिलाफ 6 फीसदी रुझान था, वह दूसरे दौर में 1.8 फीसदी उसके पक्ष में हो गया. इसी तरह मध्य प्रदेश में मतदान का प्रतिशत 42 फीसदी से बढ़कर 49 फीसदी हो गया और इंका के पक्ष में रुझान 4 फीसदी बढ़ गया. राजस्थान में तो पहले दौर में जहां इंका के पक्ष में सिर्फ 2 फीसदी रुझान था, दूसरे दौर में बढ़कर 14 फीसदी हो गया. इसी दौरान कुल मतदान भी 5 फीसदी बढ़ा. लेकिन इंका समर्थक मतदाताओं का ज्यादा संख्या में वोट डालने निकलना ही एकमात्र वजह नहीं थी.

ज्यादातर राज्यों में राजीव की हत्या के बाद मतदाता दूसरी पार्टियां छोड़ इंका के पक्ष में आ गए. आंध्र प्रदेश में दूसरे दौर के मतदान में तेलुगु देशम के 9 फीसदी मतदाताओं ने अपनी पार्टी का साथ छोड़ दिया. बिहार में जनता दल और भाजपा ने काफी वोट इंका के पक्ष में गंवाए. राजस्थान में इस रुझान का सबसे ज्यादा नुकसान भाजपा को हुआ. उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में जनता दल को नुकसान उठाना पड़ा. उत्तर प्रदेश में मतदान के दूसरे दौर में भाजपा की तरफ रुझान बरकरार रहा और मध्य प्रदेश में इसके पक्ष में रुझान बढ़ा.

पहले दौर (मई मतदान) और दूसरे दौर (जून मतदान) का अंतर

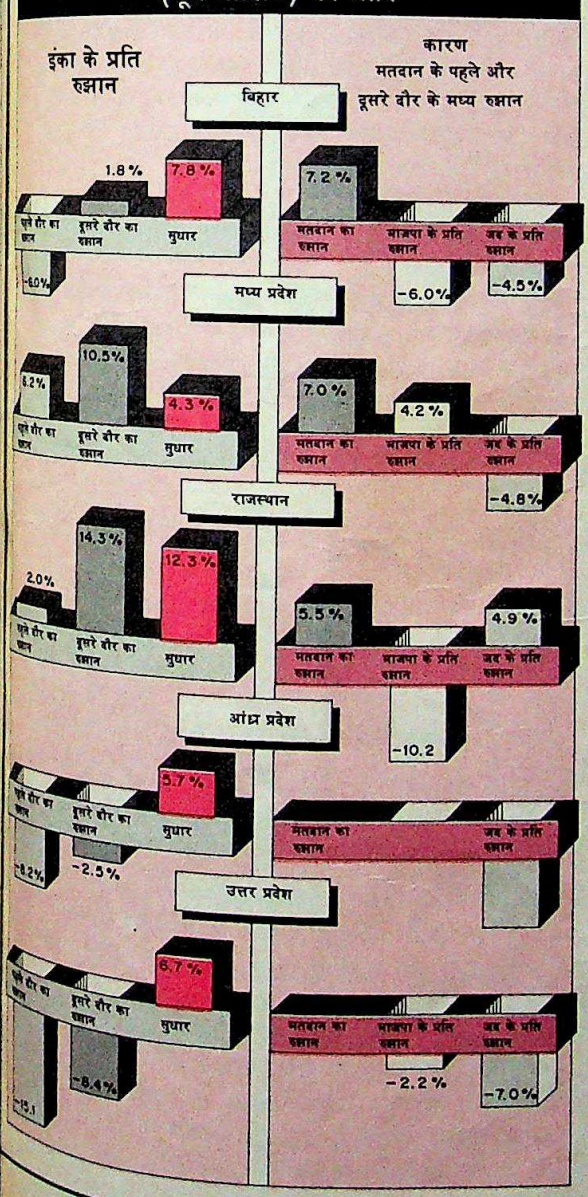

इस बार चुनाव में विपक्षी एकता सूचकांक (विएसू) के मुद्दे का क्या महत्व रहा?

इंका वोटों का प्रतिशत 1989 में 39.5 था, जो इस बार घटकर 38 फीसदी हो गया. इसके बावजूद इस चुनाव में पार्टी

इंकाई वोटों पर विएसू का असर

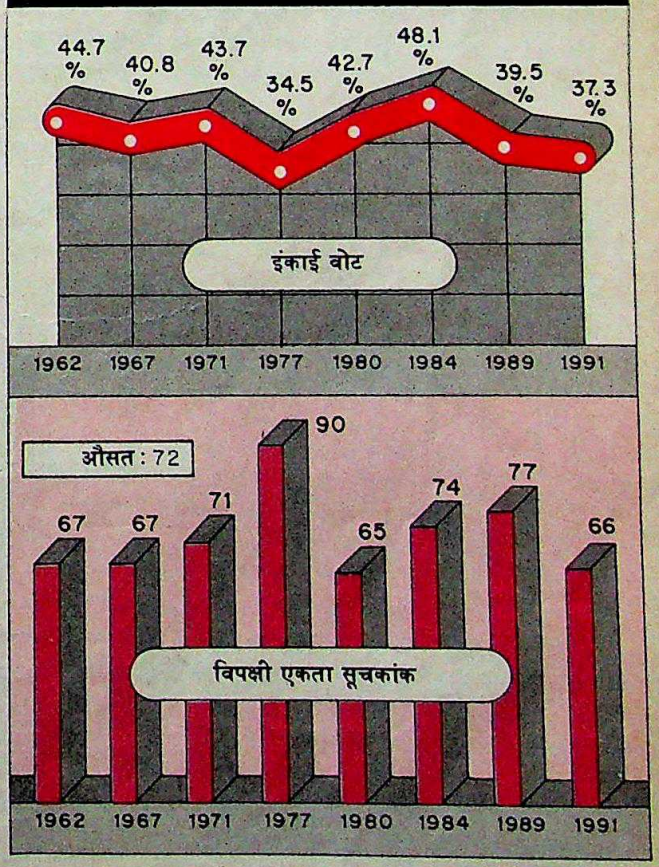

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने 30 सीटें ज्यादा जीतीं. इसकी वजह यह है कि 1989 के मुकाबले विपक्ष के वोट इस बार ज्यादा विभाजित थे. विपक्षी एकता का सूचकांक 1989 के 77 के मुकाबले 66 रह गया. सूचकांक में 11 फीसदी गिरावट का वैसा ही असर हुआ, जैसा इंका के पक्ष में 3.5 फीसदी रुझान बढ़ने का था. नतीजतन, इंका के पक्ष में रुझान में कुल 1.5 फीसदी का इजाफा हुआ. रुझान में एक फीसदी का अंतर आने से 20 सीटें इधर की उधर हो जाती हैं. इसलिए इंका का 30 सीटों का इजाफा, वोटों में आए बदलाव और विएसू में आई गिरावट दोनों ही वजह से है.

विएसू राज्य की प्रमुख पार्टी को प्रभावित करता है. मसलन, इससे पहले के चुनावों में पश्चिम बंगाल में माकपा और आंध्र प्रदेश में तेलुगु देशम कम विएसू से फायदा उठाती रही हैं. इस बार उत्तर प्रदेश में भाजपा को इसका फायदा मिला. विरोधी वोट बंटने का भाजपा को उसी तरह फायदा मिला, जिस तरह विपक्षी वोट बंटने का फायदा इंका को मिलता आया था.

1989 में उत्तर प्रदेश में विएसू (गैर-कांग्रेसी वोट) 64 था. इस बार राज्य में भाजपा विरोधी विएसू 45 आंका गया, यानी इंका के मुकाबले 20 कम. लिहाजा, सिर्फ 33 फीसदी वोट पाकर भाजपा 50 यानी करीब दो-तिहाई सीटें पा गई.

लेकिन जहां तक उत्तर प्रदेश का सवाल है, इस तथ्य की अनदेखी नहीं की जा सकती कि 85 सांसद भेजने वाले इस राज्य में इंका गर्त में जा गिरी है. पिछली बार मिले 32 फीसदी वोटों के मुकाबले इस बार उसे 18 फीसदी वोट ही मिले हैं.

इस चुनाव का सबसे बड़ा आश्चर्य क्या रहा?

यह है भाजपा का एक बड़ी राष्ट्रीय पार्टी के रूप में उभरना. इसको मिले वोटों का प्रतिशत 1989 के मुकाबले लगभग दोगुना यानी 11 से 20 फीसदी हो गया. 119 सीटें जीतकर यह कांग्रेस के बाद दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी.

यह भी गौरतलब है कि इस बार, महाराष्ट्र में शिवसेना के साथ सीटों के तालमेल के अलावा भाजपा ने यह चुनाव अकेले ही लड़ा. यही नहीं, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में, जहां इसे पहले एकाध या एक भी सीट नहीं मिली, भी इसकी झोली में काफी वोट पड़े. मसलन, माकपा के गढ़ पश्चिम बंगाल में इसके वोटों का प्रतिशत 1.5 से बढ़कर 9.5 फीसदी हो गया. हालांकि ज्यादा वोट मिलने की एक वजह यह भी है कि इस बार इसने 1989 की तुलना में ज्यादा प्रत्याशी खड़े किए थे. इस बार इसके प्रत्याशियों की संख्या 480 थी. करीब 130 चुनाव क्षेत्रों में भाजपा के प्रत्याशी दूसरे स्थान पर रहे.

जनता दल की स्थिति कैसी रही?

इन चुनावों के परिणामों से जनता दल को बहुत निराशा होगी. सिर्फ तीन राज्यों—बिहार, उत्तर प्रदेश और ओडीसा में ही इसकी मौजूदगी दर्ज हो सकी. इसके वोटों में 5 फीसदी की कमी आई. इन चुनावों में किसी भी पार्टी के वोटों में

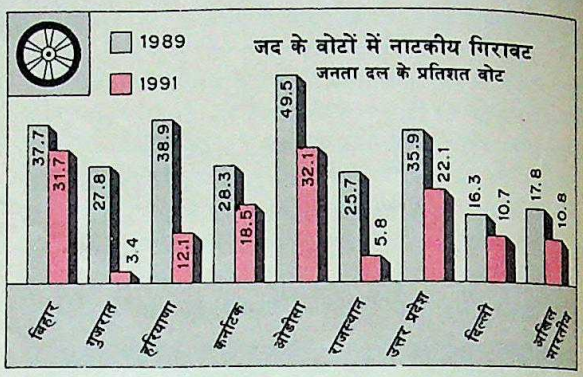

आई यह सबसे ज्यादा गिरावट है. और बिहार जैसे राज्य में कुल वोटों का 31.7 फीसदी पाने के बावजूद जनता दल को 1989 के मुकाबले 4 प्रतिशत कम वोट मिले. 1989 जैसी विजय और एक बार फिर राष्ट्रीय शक्ति के रूप में उभरने के लिए जनता दल को बहुत मेहनत करनी पड़ेगी. अपना संगठन बढ़ाना होगा और अपनी राजनैतिक प्राथमिकताएं बदलनी होंगी.

भाजपा को केंद्र में बहुमत पाने के लिए क्या करना होगा?

लोकसभा में बहुमत हासिल करने के लिए देश में हुए मतदान का 40 फीसदी हासिल करना होता है (हम यह मानकर चलते हैं कि विपक्ष बंटा हुआ है). सत्ता का द्वार अब भी भाजपा की पहुंच से बहुत दूर है. केंद्र में सत्ता में आने के लिए इसकी तरफ मतदाताओं के रुझान में नाटकीय बदलाव की जरूरत है. इंका को हालांकि 38 फीसदी वोट मिले हैं, लेकिन स्पष्ट बहुमत पाने के लिए इसे 3 फीसदी वोट और चाहिए.

इसके लिए इसे उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में तो अपना आधार फिर पाना ही होगा, दक्षिण और पश्चिम में अपना आधार कायम भी रखना होगा. भाजपा के सामने समस्या यह है कि भावी चुनाव में इसकी प्रतिद्वंद्वी इंका सत्ता में रहकर लड़ सकेगी जो कि वह इस बार नहीं कर पाई थी. ■

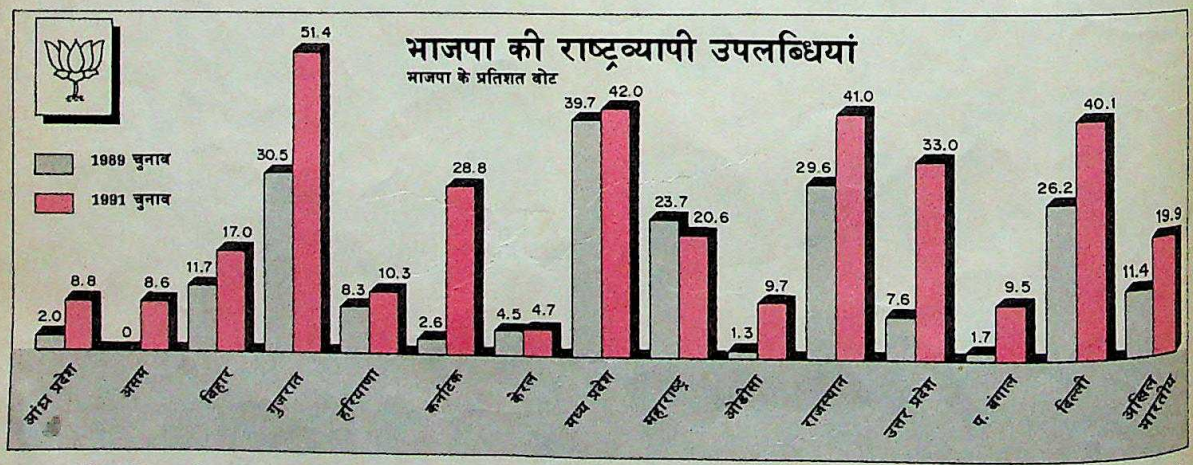

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले आने की मुस्कान

पहले आये निवेशकर्ताओं को विशेष प्रोत्साहन-राशि

पहले आये निवेशकर्ताओं को निम्न दरों पर प्रोत्साहन-राशि अलग से चुकायी जायेगी:

आवेदन पत्र प्राप्ति की अवधि	प्रत्येक 1,000 रु. की स्वीकृति पर प्रोत्साहन-राशि
17 जून से 30 जून, 91	रु. 20
1 जुलाई से 15 जुलाई, 91	रु. 15
16 जुलाई से 31 जुलाई, 91	रु. 10
1 अगस्त से 15 अगस्त, 91	रु. 5
16 अगस्त से 31 अगस्त, 91	कुछ नहीं

इंद सागर और इंद मोती में तुरंत पूंजी लगाने के कई बेहतर कारण हैं. पर अब इनमें पूंजी लगाने का जबर्दस्त कारण भी जान लीजिये. यह है पहले निवेशकर्ताओं को विशेष प्रोत्साहन राशि. इंद सागर पूंजीवृद्धि योजना में वृद्धि पर 60% कर-राहत और 3 साल बाद वापस खरीदी या लिस्टिंग की सुविधा. इंद मोती योजना में पांच सालों से थोड़ी ही ज्यादा अवधि के लिए सालाना लाभप्राप्ति. दोनों ही योजनाओं में आसान हस्तांतरण, भुनाने की सहूलियत और कर लाभ की सुविधा भी. तो देर कैसी,

सबसे पहले पूंजी लगाइये, सबसे बढ़कर प्रोत्साहन-राशि पाइये.

IND SAGAR
CAPITAL GAINS SCHEME
इंद सागर
कैपिटल गेन्स स्कीम

IND MOTI
EQUITY GROWTH SCHEME
इंद मोती
ईक्विटी ग्रोथ स्कीम

इंडियन बैंक
म्यूचुअल फ़ंड
प्रधान ट्रस्टी: इंडियन बैंक
आपकी समृद्धि में सहायक

कॉर्पोरेट ऑफिस: 1ली मंजिल, 100/104, नानक मोटवानी मार्ग, डी.जी. चैम्बर्स, फोर्ट, बम्बई 400 023.

म्युचुअल फंड निवेश बाजार के जोखिम से प्रभावित हो सकते हैं. पिछले उतार-चढ़ाव भविष्य में लाभ-हानि के निश्चित सूचक नहीं होंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य

कैसे कैसे रहे रुझान

दसवीं लोकसभा चुनाव की एक खास बात यह कि किसी भी क्षेत्र में किसी विशिष्ट दल की लहर नहीं चली. हर राज्य में अलग-अलग दलों ने दबदबा बनाए रखा. इंका को सहानुभूति को लाभ मिला.

उ त्त र

अप्रत्याशित सफलता

भाजपा ने अपने झंडे गाड़े

हरियाणा: इंका के पक्ष में मतदाताओं का रुझान एकतरफा था. ऐसा देवीलाल और उनके परिवार के प्रति प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ. मतदाता इंका में विकल्प की तलाश कर रहा था. गैर-इंका वोटों के बंटने से भी इंका की जीत आसान हो गई. इसने अंबाला और करनाल के भाजपा गढ़ और रोहतक, कुरुक्षेत्र, हिसार के जाटबहुल क्षेत्र में अच्छी पैठ कर ली. हर जाति से उम्मीदवार उतारकर इंका ने सजपा और भाजपा के गढ़ों में सेंध लगा दी.

सजपा इस चुनाव में बुरी तरह हारी. वह अधिकांश जाट मतदाताओं को भी अपने पक्ष में नहीं कर सकी. नतीजतन, जाट वोट विभिन्न दलों में बंट गए. भाजपा हैरत में है कि उसे एक भी संसदीय सीट नहीं मिल पाई.

उत्तर प्रदेश: लोकसभा और विधानसभा दोनों चुनावों के परिणाम मतदाताओं के ठोस ध्रुवीकरण के स्पष्ट संकेत देते हैं. और इस ध्रुवीकरण में परंपरागत जाति और धर्म के बांध टूट गए. इसमें संदेह नहीं कि भाजपा की आश्चर्यजनक जीत की एक बड़ी वजह अयोध्या में कार सेवा आंदोलन से निबटने का मुलायम सिंह यादव का तरीका रहा. जनता दल के मामले में मंडल से अधिक मुसलमानों के समर्थन का ही योगदान है क्योंकि पिछड़ी जातियों के वोट जनता दल, सजपा में बंटे और उनके बड़े तबके ने भाजपा को वोट दिया. अगर जनता दल को मुसलमान वोट न मिलते तो उसकी हालत भी सजपा जैसी ही बुरी होती.

परिणामों से यह भी पता चलता है कि राज्य में इंका के सभी वोट बैंक छितरा गए हैं. मुसलमानों ने जनता दल की ओर रुख कर लिया, ऊंची जातियों के कट्टर हिंदू भाजपा की ओर चले गए और हरिजनों ने बहुजन समाज पार्टी को अपना बनाया. वैसे, बसपा को लोकसभा चुनावों में एक भी सीट नहीं मिली पर वह अपना वोट बैंक 9.5 फीसदी तक बनाए रखने में सफल रही.

स्वाभाविक ही भाजपा अपनी विजय से आह्लादित है. इसके नेताओं में विशेष संतोष का भाव इसलिए भी है क्योंकि पार्टी ने राज्य के छह विभिन्न क्षेत्रों में समान रूप से पैठ बनाई. भाजपा नेताओं को सबसे अधिक संतोष इस धारणा से है कि पार्टी ने अपना ठोस वोट बैंक बना लिया है.

हिमाचल प्रदेश: भाजपा को सबसे बड़ा झटका उसके प्रदेश अध्यक्ष महेश्वर सिंह की मंडी में इंका उम्मीदवार से पराजय से लगा. इसका वोट प्रतिशत भी कम हुआ. हमीरपुर और कांगड़ा में उसके

ह रि या णा

पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	सजपा
वोट	38.0	12.1	10.3	26.2
रुझान	−8.1	−12.2	+2.0	+26.2
सीटें	9	0	0	0

विएसू	1984	1989	1991
	65	87	55

उ त्त र प्र दे श

पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	बसपा
वोट	18.1	22.1	33.0	8.0
रुझान	−12.2	−10.4	+24.8	−1.5
सीटें	5	22	50	0

विएसू	1984	1989	1991
	57	64	45

हि मा च लं प्र दे श

पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	सजपा
वोट	46.2	7.0	42.8	1.3
रुझान	+4.2	+0.2	−2.4	—
सीटें	2	0	2	0

विएसू	1984	1989	1991
	82	78	80

दि ल्ली

पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	सजपा
वोट	34.9	10.7	40.1	0.8
रुझान	−8.6	−5.6	+13.9	+0.8
सीटें	2	0	5	0

विएसू	1984	1989	1991
	89	81	65

← वोट और रुझान के सभी आंकड़े प्रतिशत में

तालिकाएं मोहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीत राजनैतिक से अधिक आंकड़ों की ही है. ये दो सीटें उसे जनता दल के उम्मीदवारों की वजह से मिलीं जिन्होंने इंका के वोट काट लिए. सेब उत्पादन वाले क्षेत्र में इसकी पराजय का कारण सेब के समर्थन मूल्य को घटाना है तो पिछड़ी जातियों की अधिकता वाले इलाके में मंडल को नकारना इसे भारी पड़ा.

इंका में भले ही विजय से खुशी है लेकिन उन्हें पता है कि यह उनकी समर्थक लहर ने नहीं कर दिखाया बल्कि सत्ताधारी भाजपा के विरुद्ध व्यवस्था विरोधी रुझान की वजह से ही ऐसा हुआ. जनता दल लड़ाई में नहीं होता तो वह और बेहतर नतीजे ला पाती. हालांकि, इन चुनावों का भाजपा सरकार पर कोई तत्काल असर नहीं पड़ेगा पर बुलंद हौसले के साथ इंका दबाव बढ़ाएगी.

दिल्ली: वैसे तो यहां कुल सात संसदीय सीटें ही हैं पर दिल्ली के चुनाव को पार्टियां अधिक महत्व इसलिए देती हैं कि अक्सर यह राजनैतिक रुझान की दिशा तय करता है. इंका ने लगभग सभी सीटों पर भाजपा को कड़ा मुकाबला दिया पर तिकोने संघर्ष की वजह से उसे ज्यादा सीटें नहीं मिल पाईं. निस्संदेह जनता दल की मौजूदगी से भाजपा को राजधानी पर अपना कब्जा बनाए रखने में मदद मिली. मसलन, नई दिल्ली क्षेत्र से जद उम्मीदवार मंजू मोहन को 20,000 से अधिक वोट मिले जिनमें बहुलांश मुसलमानों और हरिजनों के वोट ही थे. जाहिर है, अगर वे मुकाबले में नहीं होतीं तो इंका उम्मीदवार राजेश खन्ना ने लालकृष्ण आडवाणी को पछाड़ दिया होता.

राजनीति के जानकार राजधानी में इंका के वोटों में अचानक बढोतरी को देख हैरत में हैं क्योंकि यहां मतदान भी राजीव हत्या के पहले ही हो गया था. इंका अंदरूनी कलह के बावजूद जहां हारी, मामूली मतों से ही पिछड़ी. भाजपा के खिलाफ अचानक इस रुझान की वजह साध्वी ऋतंभरा जैसे उग्र वक्ताओं की टेढ़ी बोली को बताया जा रहा है. लगता है कि मध्यम वर्ग ने इस बेतुकी सांप्रदायिक राजनीति के खिलाफ तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है.

द क्षि ण

सहानुभूति का जोर

इंका हर जगह आगे रही

आंध्र प्रदेश: तेलुगु देशम ने 1989 की भारी पराजय से उबरने की पूरी तैयारी कर ली थी कि राजीव की हत्या ने उसके आगे रोड़ा अटका दिया. इंका की भारी सफलता में सहानुभूति लहर की निस्संदेह बड़ी भूमिका रही है. उसके लिए संयोग यह भी रहा कि अधिकांश सीटों पर राजीव हत्या के बाद ही मतदान हुआ. वरना राज्य में इंका विरोधी ऐसी तेज हवा बह रही थी कि अगर अनहोनी न घटी होती तो तेलुगु देशम की विजय तय थी. परिणामों के अनुसार इंका 41 सीटों में 24 सीटें गैर-इंका वोटों के तेलुगु देशम और भाजपा में बंटने से बटोर सकी. इंकाई नेताओं को राजनैतिक रूप से संवेदनशील तटवर्ती इलाकों की 18 में से 11 सीटें गंवाने का खासा दुख हुआ.

सहानुभूति लहर ने ही भाजपा की प्रगति को भी अवरुद्ध कर दिया. फिर भी उसे 9 फीसदी वोट मिल गए. 24 लाख वोटों में से 7.7 लाख मत तो सिर्फ हैदराबाद और सिकंदराबाद में ही मिले. आह्लादित भाजपा अब स्थानीय निकायों में अपना आधार बढ़ाने की कोशिश करेगी. इसकी चुनावी योजना इंका की प्रमुख प्रतिद्वंद्वी बनकर उभरने की थी.

कर्नाटक: यहां महत्वपूर्ण बात यह रही कि इंका ने अधिकांश सीटें हथिया लीं. जनता दल औंधे मुह गिरा और भाजपा को चार क्षेत्रों में अप्रत्याशित विजय मिली. भाजपा के वोटों में भी 1989 के 2.89 फीसदी के मुकाबले 28.8 फीसदी की अस्वाभाविक बढ़त हुई. जनता दल के दिग्गज रामकृष्ण हेगड़े को बागलकोट में अपमानजनक हार

आंध्र प्रदेश

पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	ते.देशम
वोट	45.8	0.6	8.8	32.7
रुझान	−4.9	−0.1	+6.7	−0.7
सीटें	24	0	1	14

विएसू	1984	1989	1991
	19	19	75

कर्नाटक

पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	रैयत संघ
वोट	41.9	18.5	28.8	2.6
रुझान	−6.9	−3.6	+26.2	+0.5
सीटें	21	0	4	0

विएसू	1984	1989	1991
	86	63	60

केरल

पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	माकपा
वोट	38.7	4.5	4.7	20.7
रुझान	−0.6	+4.5	+0.5	+4.4
सीटें	13	0	0	3

विएसू	1984	1989	1991
	88	89	81

तमिलनाडु

पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	अद्रमुक
वोट	42.5	2.9	1.4	18.1
रुझान	+4.3	+1.5	+1.2	+2.2
सीटें	28	0	0	11

विएसू	1984	1989	1991
	92	91	73

अद्रमुक-अन्ना द्रमुक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मुंह देखना पड़ा.

इंका को सहानुभूति लहर से जो फायदा हुआ वह तो अलग है, पर इसे पिछड़े वोटों ने लाभ दिलाया. वीरेंद्र पाटील की अपमानजनक विदाई और एस. बंगारप्पा के उनकी जगह लेने से मदद ही मिली. लेकिन भाजपा इस वोट बैंक में भी सेंध लगाने में कामयाब रही. राज्य में क्षमता प्राप्त जातियों—वोक्कलिगा और लिंगायत के वोट तो एकमुश्त उसके पक्ष में गए ही.

भाजपा कई जगहों पर दूसरे नंबर पर रही और उसने जनता दल को तीसरे स्थान पर ठेल दिया. लगता है, राज्य में दो पार्टियां ही रह जाएंगी, तीसरी शक्ति तो लगभग साफ हो गई.

केरल: जब अप्रत्याशित विजय मिले तो सुख दोगुना हो जाता है. खस्ता हालत में मैदान में उतरे इंका की अगुआई वाले संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे को 16 सीटें मिल गईं. संयुक्त मोर्चा इस सफलता से स्थानीय स्तर पर जनाधार बढ़ाने की योजना बना रहा है ताकि राज्य से मार्क्सवादियों की 'पकड़' खत्म की जा सके. राजीव की मृत्यु के बाद इंका भावनाएं उभारने के लिए उनके अस्थि अवशेषों को हर क्षेत्र में ले गई. खासकर इसने मध्य केरल में अपनी स्थिति मजबूत कर ली और माकपा के गढ़ पालघाट सीट को हथिया लिया. जिला परिषदों में काबिज वाम लोकतांत्रिक मोर्चे का पत्ता साफ हो गया. उसका समर्थन तो नहीं घटा लेकिन केरल में हल्का रुझान भी स्थिति बदल देता है. वाम मोर्चे का घटक जनता दल मंडल को भुनाने में नाकाम रहा.

भाजपा 'किंग मेकर' बनकर उभरी. हालांकि वह एक भी सीट जीतने की स्थिति में नहीं है पर वह औरों की जीत तय करने की पर्याप्त ताकत रखती है. उसे पता है कि उसकी प्रगति की राह में मार्क्सवादी और उनका असर जबरदस्त रोड़ा है. सो, इस बार उसने अपनी ताकत वाम मोर्चे को हराने में लगाई.

तमिलनाडु: इंका और अन्ना द्रमुक का विजय अभियान स्थायित्व के मुद्दे और द्रमुक की 'एलटीटीई समर्थक' नीतियों पर हमला बोलने के इर्द-गिर्द बुना हुआ था. जयललिता लोगों को यह यकीन दिलाने में कामयाब रहीं कि द्रमुक ने राज्य में उग्रवादी गतिविधियों को शह दी. राजीव की हत्या के बाद इस नीति से पार्टी को भारी फायदा मिला. राज्य के चुनावी गणित में कोई खास तब्दीली तो नहीं हुई, लेकिन द्रमुक का वोट बैंक 33 से 22 फीसदी तक नीचे आ गया. करुणानिधि के नेतृत्व पर खतरा उत्पन्न होना भी स्वाभाविक है. द्रमुक-जद गठजोड़ की भारी पराजय की उम्मीद थी ही. द्रमुक का प्रचार इसी के इर्द-गिर्द रहा कि कैसे 'विश्वासघातियों' ने करुणानिधि सरकार को गरीबों की भलाई नहीं करने दी. लेकिन मंडल समर्थक सारी बातें जयललिता की आंधी के आगे मुरझा गईं. उनकी आंधी खास जिलों तक ही सीमित नहीं थी. अन्ना द्रमुक ने मद्रास शहर और तंजावूर जिले जैसे द्रमुक के बेहद मजबूत गढ़ों पर भी कब्जा कर लिया.

पूरब

हर जगह अलग हवा

सबने अपने-अपने गढ़ बचाए

असम: राज्य का राजनैतिक भूगोल ही बदल गया. 1985 के चुनावों में असमी राष्ट्रवाद की लहर में साफ हो जाने के बाद इंका 14 सीटें जीतकर फिर महत्वपूर्ण शक्ति बनकर उभरी है. फैसला दोटूक और स्पष्ट था—अलगाववाद का पूर्ण नकार और असम गण परिषद (अगप) की अफरा-तफरी के प्रति नाराजगी. उग्रवादियों और सेना के बीच झड़पों से पीड़ित ऊपरी असम के इलाके में एकतरफा लहर थी. इससे साबित हुआ कि लोगों ने हिंसा और बिगड़ती कानून व्यवस्था के खिलाफ मत दिए.

एक और आश्चर्य इंका का गढ़ मानी जाने वाली बरक घाटी में भाजपा का उदय है. लगभग शून्य जनाधार से अब वह इस इलाके की 15 में से 9 सीटों पर काबिज है और लोकसभा की दो सीटें ले गई है. वह इंका तथा अगप के बाद तीसरी शक्ति बन गई है. राष्ट्रीय मोर्चा को मुंह की खानी पड़ी.

बिहार: बिहार ने इंका पर अपमानजनक पराजय थोप दी. इसका दोष सीधे-सीधे उसके मुट्ठी भर ऊंची जाति के नेताओं पर जाता है. इन लोगों ने उग्र आरक्षण-विरोधी आंदोलन की अगुआई करके भारी भूल की जिससे इंका पर सामाजिक न्याय का विरोधी होने का ठप्पा चस्पां हो गया. इससे पिछड़ी जातियों को एकजुट करने में मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव को खुला मैदान मिल गया. जाति के आधार पर ध्रुवीकरण से इंका अगड़ी जातियों के मामूली वोट (11 फीसदी) के आसरे ही रह गई और अगड़ी जातियों के वोट भी तीन हिस्सों—भाजपा, इंका और सजपा—में बंट गए. इस तरह इंका बेमौत मारी गई.

हालांकि, भाजपा सिर्फ पांच सीटें ही जीत पाई लेकिन इसने अपने वोट 5 फीसदी से 17 फीसदी तक बढ़ा लिए. इसके अलावा संतोष यह भी है कि उसने अपने दम पर ही यह किया.

लालू यादव भी ऐसी ही संतुष्टि का भाव पाल सकते हैं. उन्होंने जनता दल की विजय पताका फहराई जबकि राज्य में उसका खास संगठनात्मक आधार नहीं है. पहली दफा पिछड़ों ने 'ब्राह्मण वर्चस्व' को उखाड़ फेंका. लालू के खेमे को छोड़कर अगड़ी जातियों का एक भी उम्मीदवार जीत का मुंह नहीं देख पाया.

ओडीसा: राज्य के दिग्गज बीजू पटनायक की मुश्कें कस दी गई

असम				
पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	अगप
वोट	28.7	3.7	8.6	17.0
रुझान	—	—	—	—
सीटें	8	0	2	2

विएसू	73	—	43
	1984	1989	1991

बिहार				
पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	झामुमो
वोट	22.1	31.7	17.0	4.8
रुझान	−4.2	−4.1	+4.8	+1.7
सीटें	0	27	5	6

विएसू	63	71	63
	1984	1989	1991

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ डी सा

पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	सजपा
वोट	43.7	32.1	9.7	3.1
रुझान	+5.3	−16.9	+8.3	+3.1
सीटें	12	6	0	0

विएसू	79	91	67
	1984	1989	1991

प श्चि म बं गा ल

पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	माकपा
वोट	34.9	1.2	9.5	35.1
रुझान	−4.9	−0.7	+7.9	+0.2
सीटें	5	0	0	27

विएसू	92	90	76
	1984	1989	1991

उ त्त र-पू र्व

पार्टियां	इंका	जद	भाजपा
वोट	52.4	10.0	4.6
रुझान	+5.0	+9.8	+1.1
सीटें	8	0	0

विएसू	—	—	62
	1984	1989	1991

उनका जनता दल सिर्फ छह सीटें ही जीत पाया. पिछली बार उसे 18 सीटें मिली थीं. उसमें जनता दल के खिलाफ रुझान स्पष्ट था. बीजू सरकार के खिलाफ इस रुख का फायदा इंका को मिला जिसके वोटों में 6 फीसदी की वृद्धि हुई.

पटनायक इसकी वजह सहानुभूति लहर और उत्सव के मौसम के कारण कम मतदान को बताते हैं. पटनायक को अब पार्टी असंतुष्टों के साथ ही इंका में आए नए जोश का भी सामना करना होगा जिससे राज्य और पार्टी में उनका प्रभाव घट सकता है. सहानुभूति ने तो इंका के पक्ष में निस्संदेह काम किया पर बीजू सरकार के खिलाफ लोगों में गुस्सा भी एक बड़ी वजह थी.

पश्चिम बंगाल: इंका का वनवास अभी जारी है और वाम मोर्चा हमेशा की तरह अपनी पकड़ पुख्ता बनाए हुए है. इंका के कार्यकर्ता अपने वोट बैंक को 5 फीसदी और खिसकता देख आस खो बैठे हैं. कई सीटों पर भाजपा ने उन्हें किनारे कर दिया. जाहिर है, सिद्धार्थशंकर राय के प्रति प्रतिक्रिया अच्छी नहीं रही. पार्टी के प्रचार में इतनी खामी थी कि वह सत्ताधारी वामपंथियों के खिलाफ मुद्दे को भी नहीं भुना पाई. खुद को साफ-सुथरा और सशक्त विकल्प के तौर पर पेश करने में नाकामी की वजह से इसके वोट भाजपा की ओर खिसक गए.

माकपा और उसके सहयोगी अपने वोट बैंक में गिरावट को भांप गए थे और उन्होंने इसके लिए कई प्रयास किए. करीब 60 फीसदी विधायकों को बदलकर नए चेहरे लाए गए. वाम विरोधी वोट के इंका और भाजपा में बंट जाने से भी उन्हें मदद मिली.

उत्तर-पूर्व: उत्तर-पूर्व के छह राज्यों में इंका के एकाधिकार को पहली बार क्षेत्रीय ताकतों से चुनौती मिली. अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैंड और त्रिपुरा, इन छह राज्यों में कुल 10 संसदीय सीटें हैं. पिछले चुनाव में इंका विरोधी तेज हवा के बावजूद पार्टी हर सीट पर काबिज होने में कामयाब रही थी.

इस बार मणिपुर की एक सीट क्षेत्रीय दल (मणिपुर पीपुल्स पार्टी) को गई और नगालैंड की इकलौती सीट नगालैंड पीपुल्स कॉउंसिल को मिली. बाकी आठ पर इंका बनी रही.

त्रिपुरा का नजारा कुछ और ही था. परंपरा से इस मार्क्सवादी गढ़ में इंका सत्ता में तब काबिज हुई जब 1988 के चुनावों के पूर्व केंद्र ने वहां सेना भेज दी. सत्ता में आने के बाद इंका ने मार्क्सवादियों के खिलाफ अभियान छेड़ दिया और इस बार चुनाव के ठीक पूर्व उसने माकपा के खिलाफ हिंसक अभियान चलाया. नतीजतन, माकपा ने चुनाव का बहिष्कार कर दिया. इसलिए दोनों सीटें ही इंका की झोली में आ गईं.

प श्चि म

लहर के खिलाफ मुस्तैद

लेकिन इंका ने अपना किला बनाए रखा

गुजरात: भाजपा के तेजतर्रार अभियान की मदद से गुजरात में हिंदू राष्ट्रवाद का बोलबाला हो गया. भाजपा ने सभी 25 सीटों पर उम्मीदवार खड़े किए और 50.67 फीसदी वोट के साथ 20 सीटों पर काबिज हो गई. नरेंद्र मोदी, शंकर सिंह वाघेला और केशुभाई पटेल की तिकड़ी ने मुख्य क्षेत्रों में अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया. इंका राजीव हत्या के बाद भी भाजपा के वोट बैंक में सेंध नहीं लगा पाई. राज्य का मध्यम वर्ग जनता दल से अपना रिश्ता तोड़ भाजपा के पक्ष में चट्टान की तरह खड़ा हो गया. चिमनभाई की जनतांत्रिक खरीद-फरोख्त ने और गुस्सा भड़काया. उनके जनता दल (गु) की क्षेत्रीय अपील भी काम न आई. पार्टी सिर्फ एक सीट जीत पाने के सदमे से अभी नहीं उबरी है.

इंका खेमे में भी सदमा, आतंक और निराशा का माहौल है. वह पिछली बार से सिर्फ एक सीट ज्यादा जीतकर अपना आंकड़ा चार पर ही पहुंचा पाई. अब पार्टी हिंदुत्व की अपील से जूझने के लिए संगठन में फिर जान फूंकने में लगी है. साख गंवा चुके चिमनभाई से इंका का गठजोड़ मौत के चरण चूमने जैसा साबित हुआ. इससे पिछड़े समुदाय रूठ गए. पटेल लोग भाजपा की ओर चले गए.

महाराष्ट्र: भाजपा-शिवसेना गठजोड़ औंधे मुंह गिरा. 1989 में 14 सीटें जीतकर इंका के दांत खट्टे करने के बाद यह गठजोड़ इस बार अपनी ताकत नहीं दिखा पाया. बाल ठाकरे की वाचालता ने भाजपा को कुछ हद तक आतंकित कर दिया. ठाकरे ने महात्मा गांधी के हत्यारे की प्रशंसा कर दी. भाजपा के राज्य पार्टी महासचिव धरमचंद चोरडिया ने कहा, "हमारी हार की मुख्य वजह यह है कि जनता दल और प्रगतिशील लोकतांत्रिक मोर्चा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात				
पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	जद(गु)
वोट	28.4	3.4	51.4	13.5
रुझान	−4.4	−23.4	+21.8	+13.5
सीटें	4	0	20	1
विएसू	84 (1984)	97 (1989)	76 (1991)	

मध्य प्रदेश				
पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	सजपा
वोट	45.3	4.4	42.0	1.2
रुझान	−7.6	−3.9	+2.3	+1.2
सीटें	27	0	12	0
विएसू	73 (1984)	77 (1989)	77 (1991)	

महाराष्ट्र				
पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	शिवसेना
वोट	48.4	10.9	20.6	9.1
रुझान	+3.0	+0.9	+0.1	+8.2
सीटें	37	0	5	4
विएसू	71 (1984)	72 (1989)	64 (1991)	

राजस्थान				
पार्टियां	इंका	जद	भाजपा	सजपा
वोट	44.1	5.8	41.0	3.2
रुझान	+7.1	−17.3	+11.4	+3.2
सीटें	13	0	12	0
विएसू	66 (1984)	90 (1989)	74 (1991)	

काफी तादाद में वोट नहीं तोड़ पाया और ये वोट इंका की ओर चले गए. सहानुभूति लहर के साथ स्थायित्व के मुद्दे ने हमें पीछे कर दिया.'' पार्टी अपनी हार की वजह कम मतदान भी बताती है. मसलन, मुंबई में 1952 के बाद सबसे कम मतदान 44 फीसदी हुआ. वजह जो भी हो, भाजपा-शिवसेना ने तटवर्ती इलाके कोंकण के साथ-साथ मराठवाड़ा और विदर्भ में अपने गढ़ गंवा दिए. आश्चर्य नहीं कि भाजपा के कुछ लोग अब शिवसेना से रिश्ते पर पुनर्विचार पर बल दे रहे हैं. शायद भाजपा अब इस सचाई से रू-ब-रू है कि राज्य में अनेक लोग शिवसेना को 'गुंडा दल' कहते हैं और ठाकरे की 'नियंत्रित हिंसा' से चिढ़ते हैं.

उधर, इंका को शरद पवार में एक ऐसा व्यक्तित्व मिल गया जिसने इस भ्रम को तोड़ दिया कि राम और शिवाजी का नाम निश्चित विजय दिला देता है. पार्टी की विजय में उनकी प्रभावी संगठनात्मक प्रतिभा काम आई. राजीव की हत्या के बाद सहानुभूति लहर भी मददगार साबित हुई. लेकिन वह वसंत साठे और विट्ठल गाडगिल को जिताने के लिए पर्याप्त नहीं रही जिन्हें जनादेश से महरूम रहना पड़ा.

मध्य प्रदेश: भाजपा अभी भी व्यवस्था विरोधी वोटों के झटके से सिहर रही है. भाजपा के 'नई राजनैतिक संस्कृति बनाने' के वादे से अघा गए औसत मतदाता के लिए यह मौका 'फर्क करने' और नाकामियों को देखने का था. इंका ने पिछले चुनाव में अपनी हार का बदला ले लिया जब उसे 40 में से सिर्फ आठ सीटें मिली थीं. जनता दल तो एकदम साफ ही हो गया.

इंका ने मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा से 'नैतिक आधार' पर इस्तीफे की मांग की है. इंका को अपने पक्ष में 7 फीसदी रुझान और विपक्षी वोटों के बंटने का फायदा मिला. पिछली बार भाजपा-जनता दल गठजोड़ ने 48.7 फीसदी मत लेकर 33 सीटें जीत ली थीं. इस बार उन्हें 46.14 फीसदी वोट मिले (जो इंका से एक फीसदी ज्यादा है). भाजपा को 12 सीटें मिलीं और जनता दल को एक भी नहीं. चुनाव के पहले दौर में इंका को 42.7 फीसदी मत मिले और दूसरे दौर में 50.8 फीसदी.

भाजपा ने राम के नाम का शायद ज्यादा ही इस्तेमाल किया लेकिन कुल वोटों के एक-तिहाई वनवासियों और हरिजनों को क प्रभावित नहीं कर सकी. इसने मुसलमानों को भी इंका की ओर ढकेल दिया. भाजपा अब अपनी पराजय की समीक्षा करने में जुटी है. पार्टी में पटवा को दंडित करने का दबाव बढ़ रहा है. उन्हें ही इस हार का जिम्मेदार माना जा रहा है. बहरहाल, मध्य प्रदेश में दो पार्टियों की व्यवस्था स्थापित हो चुकी है. भाजपा ने अपना वोट बैंक बरकरार रखा है. 1967 के बाद कभी भी उसे 30 फीसदी से कम मत नहीं मिले. न ही इंका के वोट घटे हैं.

राजस्थान: यहां भाजपा का प्रदर्शन मध्य प्रदेश जितना बुरा नहीं रहा लेकिन व्यवस्था विरोधी वोटों के चलते उसे पांच सीटें इंका के हाथों गंवानी पड़ीं. शेखावत सरकार की सांप्रदायिक दंगों को रोकने में नाकामी और राजपूत-जाट वोटों के बिखरने से भाजपा को धक्का लगा. हालांकि पिछली बार की 13 सीटों से अब वह 12 सीटों पर ही रह गई है पर उसे पिछले चुनाव के 29.64 प्रतिशत के बदले इस बार 41.00 फीसदी वोट मिले हैं. भाजपा हाडौती क्षेत्र में अपना वर्चस्व बचाए रखने में कामयाब हुई और उसने राज्य के उत्तर-पूर्व में इंका के गढ़ में भी सेंध लगा दी.

इंका के पक्ष में 7.1 फीसदी मतों के रुझान से उसे कुल 25 सीटों में से 13 मिल गईं. उसने अपने पुराने गढ़ों पर फिर कब्जा कर लिया. जनता दल शून्य पर रहा. पिछले बार की 11 सीटें गंवाकर वह भारी निराशा का शिकार है.

भाजपा ने हार के लिए सहानुभूति लहर को दोषी माना है. 23 मई के मतदान में उसे 10 सीटें मिली जबकि 12 जून के मतदान में दो सीटें ही हाथ लगीं. सचाई यह है कि उदयपुर, भीलवाड़ा और दौसा के अपने गढ़ों में उसे मात मिली पर महत्वपूर्ण चितौड़गढ़ की सीट पर वह बने रहने में सफल रही. राज्य में अब दोनों पार्टियां बराबर हैं लेकिन मुख्यमंत्री भैरों सिंह शेखावत का दावा है कि अगर इंका विधानसभा चुनावों पर जोर देती है तो भाजपा भारी बहुमत से जीतेगी. दरअसल शेखावत की व्यक्तिगत छवि और उनके आक्रामक अभियान ने भाजपा की लाज बचा ली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवचन

भगवान श्री कृष्ण का उपदेश

पं. कृष्ण कांत शर्मा की वाणी

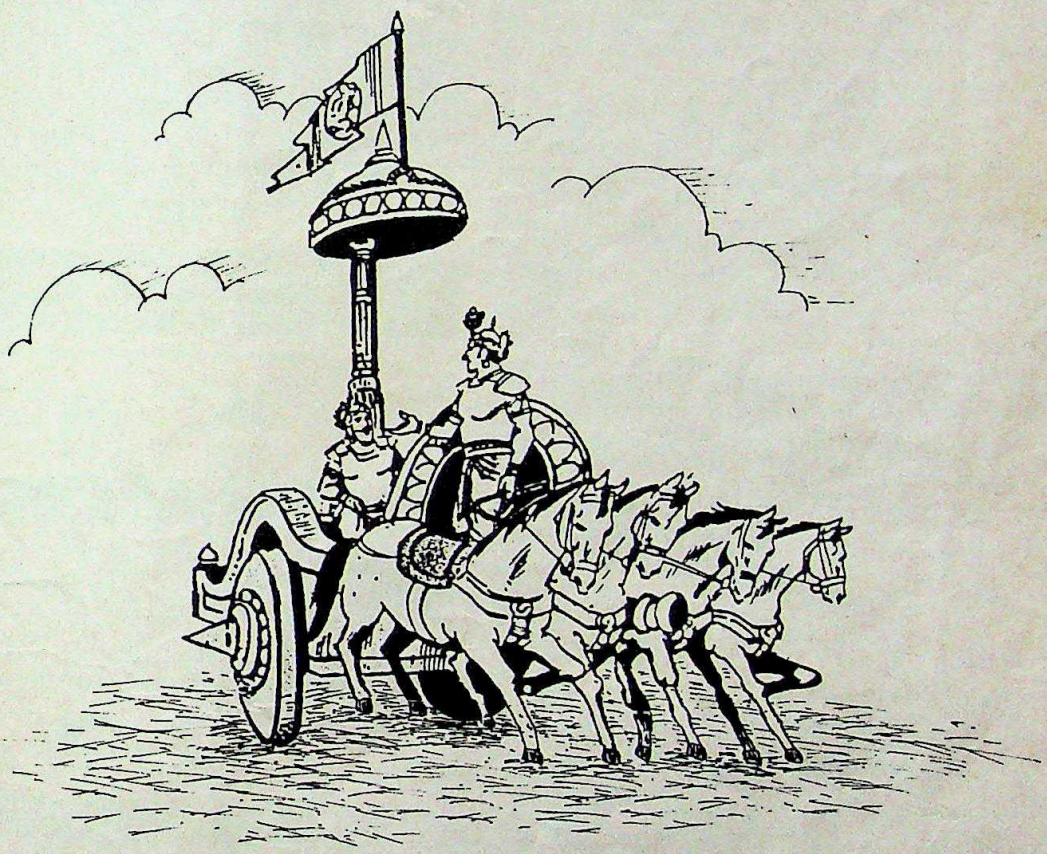

पं. कृष्ण कांत शर्मा की वाणी में गीता के 18 अध्यायों के मूलश्लोक भावार्थ सहित। प्रत्येक कैसेट पर गीता का एक अध्याय डिजिटल रिकार्डिंग द्वारा अंकित किया गया है।

रु 540/-

(डाक खर्च अतिरिक्त)

18 कैसेटों के संकलन के लिए

साथ में भगवद्गीता की एक प्रति मुफ्त

मैसर्स प्रवचन, 266, उद्योग विहार, फेस-I, डुन्डाहेरा, गुड़गाँव, हरियाणा

कृपया मुझे 'प्रवचन' के 18 कैसेटों का संकलन निम्न पते पर वी.पी.पी. द्वारा भेजें।

नाम _____

पता _____

_____ फोन _____

ANUBHUTI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मतदान बाद सर्वेक्षण

कैसे-कैसे मत पड़े

दसवीं लोकसभा के चुनावों के सरकारी आंकड़ों से मतदान के रुझान के अनेक पहलुओं की गहरी जानकारी नहीं मिलती. मसलन, इनसे यह पता नहीं चलता कि देश भर के मतदाताओं के विभिन्न वर्गों ने किसे मत दिया. मतदान बाद के व्यापक सर्वेक्षण जैसी कार्रवाई से ही चुनाव नतीजों के पीछे की जीवंत कथा सामने आ सकती है. 1991 के आम चुनाव में मतदान के रुझान पर 'इंडिया टुडे' विशेष जानकारी दे रहा है:

इस बार 'इंडिया टुडे' ने लोकसभा चुनाव के दौरान राष्ट्रीय स्तर पर मतदान बाद सर्वेक्षण कराने के लिए मार्केटिंग ऐंड रिसर्च ग्रुप (मार्ग) की सेवाएं लीं. यह सर्वेक्षण 20 मई (48,299 नमूने), 12 जून (25,140) और 15 जून (16,566) को देश भर में फैले 72 निर्वाचन क्षेत्रों में किया गया. इन निर्वाचन क्षेत्रों का चयन जाने-माने चुनाव विश्लेषक प्रणय राय ने किया.

देश भर में 90,005 नमूने लिए जाने के फलस्वरूप यह मतदान बाद सर्वेक्षण विश्व में कहीं भी हुए सर्वेक्षणों में शायद सबसे बड़ा है. हर क्षेत्र में 'मार्ग' ने तीन पर्यवेक्षक और छह प्रश्नकर्ता, जो तीन दलों में विभक्त थे, नियुक्त किए.

इन दलों ने निर्धारित चुनाव क्षेत्रों में मतदान के बाद लौटते मतदाताओं से बातचीत की. मतदाताओं की उम्र, लिंग, जाति/धर्म और किस पार्टी को उन्होंने वोट दिया—ये सभी जानकारी प्रश्नकर्ताओं ने दर्ज की.

इन आंकड़ों का विश्लेषण प्रणय राय ने किया. इस रिपोर्ट में विभिन्न वर्गों, जाति, धर्म वाले लोगों के मतदान संबंधी देशव्यापी रुझान और साथ ही इंका या विपक्ष को उनके मतदान के कारणों के संबंध में जानकारी दी गई है.

विशेष: आंध्र प्रदेश में पहले दौर के मतदान के लिए बनाई गई प्रश्नावली को हैदराबाद ले जाते समय भीड़ ने जला दिया. साथ ही तमिलनाडु के विस्तृत परिणामों का विश्लेषण अभी पूरा नहीं हो पाया है. इस तरह, हालांकि 90,005 नमूनों का संकलन किया गया था पर यहां 72,630 नमूनों का निष्कर्ष ही दिया जा रहा है.

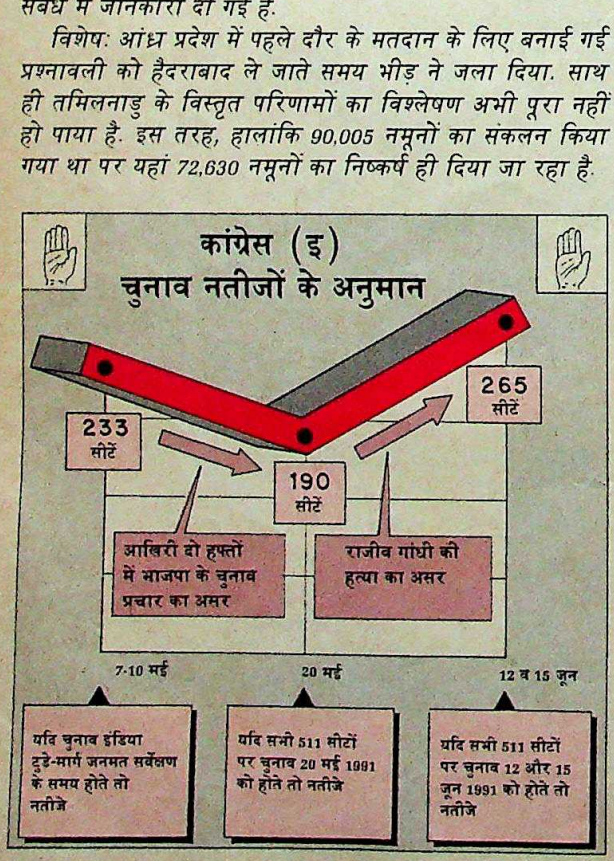

जहां 20 मई को मतदान का पहला दौर चल रहा था, वहीं 'इंडिया टुडे' ने 'मार्ग' को मतदान बाद सर्वेक्षण के साथ-साथ उन राज्यों में मतदान पूर्व सर्वेक्षण का काम भी सौंपा था जहां वोट अभी डाले जाने थे. इस सर्वेक्षण से पता चला कि चुनाव अभियान के आखिरी दो हफ्तों में इंका का जनाधार खिसककर भाजपा और राष्ट्रीय मोर्चे के पक्ष में चला गया था. अगर सभी निर्वाचन क्षेत्रों में 20 मई को मतदान हो जाता तो 'इंडिया टुडे-मार्ग' के मतदान बाद और मतदान पूर्व सर्वेक्षण के अनुसार इंका को केवल 190 सीटें मिलतीं, यानी चुनाव अभियान के आखिरी दो हफ्तों में उसे 43 सीटों का नुकसान होता.

चार्ट: बी के ...

दूसरे दौर के मतदान में कांग्रेस (इ) के प्रति झुकाव की वजहें

'सहानुभूति वोट' डालने में महिला मतदाता आगे रहीं

कांग्रेस (इ) के वोट	पुरुष	महिलाएं	कुल
पहला दौर	32.3 %	31.5 %	32.0 %
दूसरा दौर	39.6 %	43.7 %	41.0 %
झुकाव	+ 7.3 %	+ 12.2 %	+ 9.0 %

ग्रामीण इलाकों में कांग्रेस (इ) का समर्थन शहरों के मुकाबले दोगुना बढ़ा

	शहर	गांव	कुल
पहला दौर	33.3 %	31.5 %	32.0 %
दूसरा दौर	38.6 %	41.7 %	41.0 %
झुकाव	+ 5.3 %	+ 10.2 %	+ 9.0 %

'दूसरे दौर में भाजपा का प्रभाव जहां सवर्ण जातियों में बना रहा, वहीं पिछड़ों, हरिजन और मुसलमानों का झुकाव कांग्रेस (इ) की ओर हो गया

	सवर्ण जातियां	पिछड़ी जातियां	हरिजन	मुसलमान	कुल
पहला दौर	30.9 %	23.6 %	37.9 %	36.5 %	32.0 %
दूसरा दौर	32.8 %	34.3 %	49.8 %	54.8 %	41.0 %
झुकाव	+1.9 %	+10.7 %	+11.9 %	+18.3 %	+9.0 %

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवा मतदाताओं ने भाजपा को समर्थन दिया, तो अपेक्षतः ज्यादा उम्र के मतदाताओं ने इंका को वोट दिया. जनता दल के वोट आधार में उम्र का फर्क कोई महत्वपूर्ण नहीं है.

दल	नए मतदाता 18-21	युवा मतदाता 21-30	अधेड़ आयु 31-50	वृद्ध मतदाता 51 +
इंका	32.2	35.8	38.0	40.1
भाजपा	27.3	22.4	17.7	16.3
जनता दल	11.1	10.7	11.8	9.3

सभी आंकड़े प्रतिशत में

पुरुषों के मुकाबले ज्यादा महिलाओं ने इंका को वोट दिया जबकि भाजपा के मामले में स्थिति उलटी है.

दल	पुरुष	महिलाएं
इंका	36.6	37.9
भाजपा	20.9	18.3
जनता दल	12.1	9.0
वाम मोर्चा	9.7	10.7

सभी आंकड़े प्रतिशत में

'इंडिया टुडे-मार्ग' के मतदान बाद सर्वेक्षण और अंतिम चुनाव परिणाम बताते हैं कि राजीव गांधी की हत्या के फलस्वरूप मतदाताओं का झुकाव इंका के पक्ष में हो गया. हत्या के बाद हुए झुकाव के आधार पर मतदान के पहले दौर वाले क्षेत्रों में हिसाब लगाया जाए तो इंका को कुल कितनी सीटें मिलतीं अगर सभी क्षेत्रों में चुनाव हत्या के बाद हुए होते, यह गणना की जा सकती है. इस आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि हत्या के बाद इंका 265 सीटें जीत लेती (देखें चार्ट-1).

इंका को 225 सीटें मिलना दो अलग चुनावों—हत्या पूर्व (190 सीटें) और हत्या के बाद (265 सीटें) का मिश्रित नतीजा है.

इंका के पक्ष में दूसरे दौर में झुकाव के कई कारण हैं. ज्यादा विस्तृत विश्लेषण बताता है कि मतदान प्रतिशत में वृद्धि और 'सहानुभूति वोट' का मुख्य कारण महिलाएं रहीं (देखें चार्ट-2). पहले और दूसरे दौर के बीच इंका के प्रति महिलाओं के समर्थन में 12.2 फीसदी की वृद्धि हुई.

साथ ही, इंका के पक्ष में झुकाव शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण इलाकों में दोगुना हुआ. फिर, हत्या के कारण मुस्लिम समुदाय भी सर्वाधिक प्रभावित दिखाई दिया. दूसरे दौर में इंका के प्रति उसका झुकाव 18 प्रतिशत से भी ज्यादा हुआ. जनता दल के मुकाबले भाजपा के मतों पर कहीं कम असर हुआ, क्योंकि उसके मुख्य आधार—सवर्ण और शहरी मतदाताओं में इंका के पक्ष में बहुत ही कम झुकाव दिखाई दिया.

राष्ट्रीय परिदृश्यः

इंका की तुलना में भाजपा का वोट आधार विभिन्न आयु वर्गों में उल्लेखनीय रूप से अलग है. युवा मतदाताओं ने भाजपा का समर्थन किया, जबकि अधिक आयु के मतदाताओं ने इंका के पक्ष में वोट दिए (देखें चार्ट-1). उल्लेखनीय बात यह है कि भाजपा पुरुष और शहरी मतदाताओं के आधिपत्य वाली पार्टी के रूप में भी उभरी. इंका की तुलना में वोट प्रतिशत लगभग आधा होने के बावजूद भाजपा ने इंका के मुकाबले सवर्ण जातियों के ज्यादा वोट प्राप्त किए.

भाजपा ने पिछड़ी जातियों का भी उल्लेखनीय समर्थन हासिल किया. लेकिन अनुसूचित जाति/जनजाति के मतदाताओं में उसकी स्थिति बहुत खराब रही. जनता दल ने पिछड़ी जातियों में अपने औसत से ज्यादा समर्थन हासिल किया लेकिन हरिजन मतदाता राष्ट्रीय मोर्चे से दूर हो गए. हरिजन मतदाताओं के रूप में इंका को सर्वाधिक प्रभावशाली समर्थन हासिल हुआ. उन्होंने प्रायः हर राज्य में इंका को ठोस समर्थन दिया.

राष्ट्रीय स्तर पर मुस्लिम वोट इंका और राष्ट्रीय मोर्चा-वाम गठबंधन में प्रायः बराबर बंट गए. पर यह राष्ट्रस्तरीय बंटवारा हकीकत नहीं है. देश के अधिसंख्य राज्यों में मुसलमानों ने भाजपा के विरोध में और इंका या जनता दल के पक्ष में मतदान किया. दूसरे शब्दों में जिस पार्टी को भी उन्होंने भाजपा को हरा पाने के लिए सबसे मजबूत समझा उसे वोट दिए.

भाजपा का वोट आधार ज्यादातर शहरी और जनता दल का ग्रामीण है जबकि इंका दोनों जगह करीब बराबर है. सहानुभूति लहर ने शहरों के मुकाबले ग्रामीण इलाकों में इंका को ज्यादा फायदा दिया.

दल	शहरी	ग्रामीण
इंका	36.1	37.3
भाजपा	27.7	17.5
जनता दल	9.8	11.3

सभी आंकड़े प्रतिशत में

हरिजनों ने जहां इंका का और पिछड़ी जातियों ने जनता दल का साथ दिया, वहीं मुसलमान वोट बराबर बंट गए. भाजपा का सवर्ण जातियों में हाथ ऊपर रहा.

दल	सवर्ण जातियां	पिछड़ी जातियां	हरिजन	मुसलमान
इंका	32.2	30.6	44.1	46.3
भाजपा	36.4	20.8	11.4	—
जनता दल	5.7	15.9	9.8	24.9
वाम मोर्चा	8.6	9.7	9.5	16.7

सभी आंकड़े प्रतिशत में

टिप्पणी: पहला दौर—20 मई का मतदान; और दूसरा दौर जून मतदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थव्यवस्था

मर्ज कहीं लाइलाज न हो जाए

नई सरकार की पहली प्राथमिकता है बजट पेश करना और दूसरी अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण लेने की पुरजोर कोशिश करना. उदारीकरण की नीतियां अपनाना भी लाजमी हो गया है

पिछले छह महीनों से अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे खस्ताहाल हुई जा रही है. विदेश व्यापार का संतुलन तेजी से आयात की ओर झुकता जा रहा है, सरकारी फिजूलखर्ची बढ़ रही है, विदेशी मुद्रा का भंडार न्यूनतम हो गया है और मुद्रास्फीति आसमान छू रही है. स्थिति इतनी बदहाल हो गई कि जनवरी में सरकार को तेल के आयात का बिल और कर्ज की देनदारियां चुकाने के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से 1.8 अरब डॉलर (करीब 3,275 करोड़ रु.) का ऋण लेना पड़ा. इस बीच खाड़ी युद्ध छिड़ गया और तेल आयात का बिल बढ़ता गया. दो महीने बाद नियमित बजट की जगह कामचलाऊ बजट लाना पड़ा जिसमें वित्तीय व्यवस्था को किसी तरह जुलाई के अंत तक खींच ले जाने भर की व्यवस्था है. और इसके साथ ही वित्त मंत्रालय के दिग्गज नौकरशाह यह अनुमान लगाए बैठे हैं कि तब तक नई सरकार भी आ जाएगी जो उचित फैसले लेकर अर्थव्यवस्था को सही पटरी पर ले आएगी. साथ ही अब नई सरकार को भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने मुंह बाए खड़ी दो महत्वपूर्ण तात्कालिक जरूरतों से तुरंत निबटना होगा. पहली जरूरत बजट पेश करने की है जबकि दूसरी है वाशिंगटन स्थित अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण की पहले से कहीं ज्यादा बड़ी किस्त मांगने की क्योंकि पहली किस्त लेने के बाद भुगतान संतुलन की हालत और बिगड़ी है. वित्त मंत्रालय के एक बड़े अधिकारी ने कहा, "जोड़-तोड़ करके काम चलाने के दिन अब लद गए."

दरअसल, अभी तो वित्तीय मामलों के कर्ताधर्ताओं में कोई हलचल नहीं है. नरसिंह राव सरकार ने बागडोर अभी संभाली है. वित्त मंत्रालय का एक तबका अभी भी 1990-91 की शेष अवधि के लिए भी कामचलाऊ बजट लाने का ही पक्षधर है. सरकार हालांकि मुद्रा कोष से 4 अरब डॉलर का कर्ज मांगने की जुगत भिड़ा रही है. लेकिन कितनी रकम दी जाएगी इस बारे में कोष ने कोई वादा नहीं किया है. दूसरी ओर कोष ऋण की अंतिम बातचीत शुरू होने से पहले भारत पर मुद्रास्फीति घटाने, रुपए का अवमूल्यन करने, आर्थिक नीतियों में उदारता लाने और राष्ट्रीयकरण समाप्त करने के लिए दबाव डाल रहा है.

> **ऊपरी बदलाव घोषित करके मुद्रा कोष को झांसा देने के बजाए अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन की जरूरत है. पर नए वित्तमंत्री मनमोहन सिंह के लिए यह कड़वी गोली देना शायद मुश्किल हो**

और इस निराशा के माहौल में अच्छी बात यह है कि नई इंका सरकार ने सत्ता संभालने के पहले ही अर्थव्यवस्था में सुधार की बात कहनी शुरू कर दी थी. यह सही है कि आज उसके पास उदारवाद के प्रबल पक्षधर राजीव गांधी नहीं हैं लेकिन पार्टी में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अर्थव्यवस्था को स्थिर करने की जरूरत समझते हैं. प्रधानमंत्री राव ने भी कहा कि अर्थव्यवस्था को दुरुस्त करना उनकी पहली प्राथमिकता है. उनके वित्तमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह कोई गड़बड़झाला पसंद न करने वाले वित्तमंत्री हैं और रिजर्व बैंक के गवर्नर तथा पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के आर्थिक सलाहकार की हैसियत से वे जाहिर कर चुके हैं कि भारत की अर्थव्यवस्था को तुरंत स्थिर करने की जरूरत है. वित्त मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी यही राय रखते हैं. वित्त मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष और पूर्व वित्त सचिव विमल जालान, जो एक बार फिर इस पद के दावेदार हैं, कहते हैं, "अगर हमने तेजी से फैसले नहीं किए तेजी से कहने का मेरा मतलब अगले चार हफ्तों से है, तो देश को

शरद सक्सेना

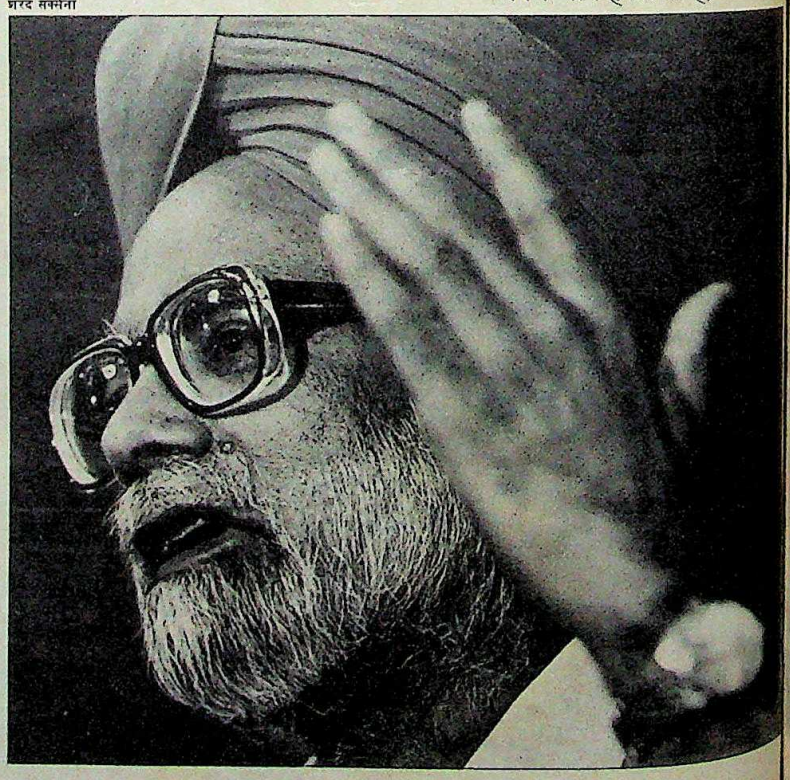

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काफी महंगी कीमत चुकानी पड़ेगी. अब बहुत नरम विकल्प रह भी नहीं गए हैं.''

लेकिन इससे समस्याएं खड़ी होने का पूरा-पूरा अंदेशा हैं. दरअसल समस्याएं सामने आ भी चुकी हैं. यह सभी मान रहे हैं कि बजट पारित कराना और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण लेना तत्कालिक जरूरतें हैं. लेकिन ये दोनों काम किस तरह किए जाएं, इस बारे में अभी भी अनिश्चिता है. जैसा कि अभी लग रहा है, ये दोनों बातें एक-दूसरे से जुड़ी हैं. अगर जुलाई के अंत तक आने वाले बजट में सरकार स्पष्ट रूप से यह नहीं बताती कि वह किस तरह अपना राजस्व बढ़ाएगी, खर्च घटाएगी और नियंत्रण हटाकर अर्थव्यवस्था को उदार करने के कौन-से कदम उठाएगी, कैसे सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका तय करेगी, उसे निजी क्षेत्र को सौंपेगी और सब्सिडी में कटौती करेगी, तब तक मुद्रा कोष कर्ज की एक और किस्त देने के बारे में कोई हलचल नहीं करेगा. यह बात राजनेता, अधिकारी और निजी कंपनियों के अधिकारी भी मानते हैं, अशोक लेलैंड के कार्यकारी निदेशक (वित्त) आर. शेषसायी कहते हैं, ''अभी तो बजट कैसा होगा इस बारे में हमें सोचने की जरूरत नहीं है. यह काम तो हमारे लिए मुद्रा कोष ही कर देगा.''

अब बचाव का तरीका दोतरफा होगा. नीति वक्तव्य और बजट में ऊपरी बदलाव घोषित करके मुद्रा कोष को कर्ज देने के लिए राजी करना और दीर्घकालिक बदलाव वाली ठोस नीतियों पर अमल करना. दूसरे, देश के लोगों को वास्तविक आर्थिक स्थिति की जानकारी देकर उन्हें भरोसे में लेना और वोट बैंकों की परवाह किए बिना कठोर कदम उठाना. इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण काम पहले आर्थिक आपात- स्थिति लागू करना है.

पहला विकल्प तो आसान है, और मुद्रा कोष को समझाने-बुझाने का काम शुरू भी हो चुका है. रिजर्व बैंक ने आयात पर पाबंदियां लगा दी हैं और कंपनियों के लिए बैंकों से कर्ज लेना मुश्किल कर दिया है. लेकिन ये कदम मात्र इस बात के लिए उठाए गए हैं कि सरकार के हाथ में उद्योगों की तुलना में ज्यादा रकम रहे संभावना है कि ये पाबंदियां जारी रहेंगी और अब मुद्रा कोष को मनाने के लिए सरकार को बजट में थोड़े लटके-झटके भर जोड़ने होंगे. जैसे राजस्व जुटाने वाले कदम उठाना: वित्त मंत्रालय में एक सुझाव पर विचार चल रहा है कि पेट्रोल और डीजल की कीमतों में 25 फीसदी की और वृद्धि की जाए जिससे हर साल 3,000 करोड़ रु. अतिरिक्त आने लगें. अगर ऐसा हुआ तो भारी हंगामा मचेगा. गाड़ी वालों के साथ उद्योग जगत भी परेशान होगा. लेकिन कुछ समय बाद पिछले वर्ष की तरह ही कुछ दिनों में यह शोर थम जाएगा. लोग गाड़ी चलाना बंद नहीं करेंगे और उद्योग इस खर्च को अपने उपभोक्ता के ऊपर थोप देंगे. सुझाव दो: बजट के ढांचे में ही 10,000 करोड़ रु. का समायोजन करना. जैसे रक्षा विभाग वाले हवाई अड्डों, स्कूलों और आवास के खर्च को नागरिक उड्डयन, शिक्षा और शहरी विकास मंत्रालय से जोड़ देना. या रासायनिक खाद पर अभी मिल रही 5,000 करोड़ रु. की सब्सिडी में कटौती करना और किसानों को बीज पर सब्सिडी बढ़ा देने जैसे दूसरे लाभ देना. ऐसा करने से यह लगेगा कि सरकार कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर अधिक ध्यान दे रही है और इसके लिए कुछ एक क्षेत्रों को तवज्जो देने की नीति छोड़ रही है. वास्तव में यह सारा कुछ कागजों पर आंकड़ों की बाजीगरी करके यानी खर्च में एक पैसा कटौती किए बिना ही हो जाएगा. एक वरिष्ठ अधिकारी कहते हैं, ''असंतुलन दूर करने की बात तो कब से कही जा रही है. लेकिन कुछ हुआ नहीं.''

लेकिन ऐसी कामचलाऊ व्यवस्था खतरनाक है. कर्ज देने भर के लिए तो मुद्रा कोष झांसे में आ सकता है. लेकिन विश्व बैंक, जापान और जर्मनी जैसे मजबूत ऋणदाता देश तथा निजी ऋणदाता समूह मुद्रा कोष से ऋण मिलने के बाद की स्थिति पर नजर रखे रहेंगे कि यहां किए गए वादों पर अमल भी होता है या नहीं. अगर नहीं हुआ तो फिर ऋण मिलना मुश्किल हो जाएगा. रोग का निदान मुश्किल ही है.

कोई भी यह उम्मीद नहीं कर रहा कि कल अर्थव्यवस्था एकदम खुली हो जाएगी. किसी को भी सरकारी खर्च में भारी कमी की उम्मीद नहीं है और न ही किसी को जुलाई में ही मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था के आ जाने की उम्मीद है. इसके साथ ही कुछ तात्कालिक राजनैतिक सवाल भी जुड़े हैं. राजनैतिक पार्टियां भले ही महत्वपूर्ण मुद्दों पर, जिनमें अर्थव्यवस्था भी शामिल है, इंका सरकार को मदद देने की बात कर रही हैं लेकिन कोई भी बड़ा बदलाव हुआ तो निश्चित रूप से वामपंथी दल, जनता दल और भाजपा की तरफ से भी विरोध होगा ही. इसका मतलब है कि आर्थिक नीतियों को उदार करने का पूरा कार्यक्रम ही बहुत सामान्य रफ्तार से शुरू हो पाएगा. राष्ट्रीय व्यावहारिक आर्थिक अनुसंधान परिषद के मानद महानिदेशक आई.जेड. भट्टी कहते हैं, ''उदारीकरण एक क्रमिक विकास है.''

ी बात सही है. इसमें कोई शक नहीं है. लेकिन इस दिशा में कदम उठाने में सरकार जितनी देर लगाएगी, भारत को उतना ही अधिक नुकसान उठाना पड़ेगा. अगर आर्थिक शब्दाडंबर में न भी पड़ा जाए तो देरी का सीधा मतलब होगा वास्तविक आय में गिरावट, जिससे उपभोक्ता मांग गिरेगी और फिर यह क्रम अपना चक्र पूरा करेगा. इससे उद्योग प्रभावित होंगे और रोजगार में गिरावट आएगी. जालान कहते हैं, ''अर्थव्यवस्था को जो कीमत चुकानी पड़ेगी वह समय के नुकसान की तुलना में बहुत ज्यादा है.'' लेकिन बजट की तैयारी में लगने और मुद्रा कोष के आगे हाथ पसारने के पहले सरकार अगर इस बात को ध्यान में रखे तभी कल्याण है.

—सुदीप चक्रवर्ती

विकल्प जो सामने हैं

अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के उपायों के बारे में निरंतर नीतिगत बयान तैयार करना. इसमें कई बातें हो सकती हैं:

1 **निजी क्षेत्र को कई और धंधों की इजाजत देना, सार्वजनिक क्षेत्र की ऐसी इकाइयों को पहचानना जिन्हें आंशिक या पूर्ण रूप से निजी निवेशकों को बेचा जा सके.**

2 **जितना जल्द मुमकिन हो. केंद्रीय सरकार का बजट पेश करना, जुलाई महीने के अंत तक तो निश्चय ही. क्योंकि कामचलाऊ बजट की व्यवस्थाएं जुलाई तक के लिए ही है.**

3 **सरकारी खर्च में कटौती जिन-जिन क्षेत्रों और मामलों में की जा सकती है, उसका उसी तेजी से पता लगना जिस तेजी से राजस्व वृद्धि के क्षेत्रों और मामलों की खोज करना.**

4 **भले ही इससे तात्कालिक कष्ट हो पर अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की इच्छानुसार नीति अपनाना. अर्थव्यवस्था का अपस्फीतिकरण, रुपए का और अवमूल्यन करना, सार्वजनिक क्षेत्र के राष्ट्रीयकरण को खत्म करना और उद्योगों से ज्यादा से ज्यादा पाबंदियां हटाना.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवीलाल

अपनों ने भी ठोकर पर रखा

कभी 'किंग मेकर' रहे ताऊ का दरबार उजड़ गया है, उनकी पार्टी को शर्मनाक हार झेलनी पड़ी है, उनके कुनबे का दबदबा खत्म हो गया है और सबसे बड़ी बात हरियाणा के लोगों ने उन्हें बेरहमी से ठुकरा दिया है

शान-शौकत छंट गई है और भीड़ ने किनारा कर लिया है. दरबार अब खुशामदियों से खाली है और अर्धगोलाकार कतार में लगी खाली कुर्सियों के बीच विदूषक अकेला रह गया है. पिछवाड़े गाएं रंभा रही हैं और शुभ्र वस्त्रधारी वयोवृद्ध नेता चश्मा उतारकर अखबारों को एक ओर रख विशाल काया को अपनी प्रिय चारपाई पर पसारकर लेट गया है.

1989 के 'किंग मेकर' देवीलाल के पास इसके अलावा करने को कुछ खास है भी नहीं. केवल 17 महीने पहले जिस वातानुकूलित विजय रथ पर सवार होकर नाटकीय राजनैतिक बुलंदियों को उन्होंने छुआ था, वह वक्त के अनुरूप आंगन में खस्ताहाल खड़ा है. अभी कल तक बड़े-बड़े लोगों की कारें यहां बेधड़क रफ्तार से आती-जाती थीं. तब यहां के विशाल लॉन वफादारों, राजनैतिक कार्यकर्ताओं, किसानों और पत्रकारों से भरे रहते थे. बड़े से बड़े लोग ताऊ को मनाने के लिए आते थे. यहां चंद्रशेखर उनसे समर्थन मांगने आए थे, वी.पी. सिंह नें एक के बाद एक दूत भेजे थे. बोम्मई ने आकर अनुनय विनय की थी. और पत्रकार उनकी कोई विवादास्पद टिप्पणी हासिल करने के लिए घंटों इंतजार करते थे.

अब अपने राजनैतिक जीवन की इस शाम में अपने ही राज्य के लोगों द्वारा ठुकरा दिए जाने के बाद वे पेड़ की छांव में आराम करते हैं. "कुछ कमियां रह गई होंगी. लोगों से जाकर पूछूंगा." केवल चार साल पहले किसी अजेय योद्धा की तरह राज्य को अपने शिकंजे में लेने वाले हरियाणा के स्वयंभू सम्राट को जनता ने तिरस्कार के साथ हरा दिया. वही देवीलाल, जिनकी ख्याति हरियाणा से बाहर दूर-दूर तक फैली थी और जिसने उनको पिछले आम चुनाव में राजस्थान की सीकर सीट पर भी जिता दिया था, इस बार न केवल रोहतक संसदीय क्षेत्र वरन सबसे सुरक्षित समझे जाने वाले घिराय विधानसभा क्षेत्र से भी बुरी तरह हार गए.

चुनाव क्षेत्रों का चयन बड़ी सावधानी से किया गया था क्योंकि रोहतक और घिराय दोनों ही क्षेत्र जाट बहुल हैं और देवीलाल हमेशा ही स्वयं पर 'महान जाट नेता' होने का गर्व करते रहे हैं. न केवल उन्होंने मुंह की खाई, वरन इस जाट पितामह को इंका द्वारा खड़े किए गए जाट उम्मीदवारों ने ऐसी पटखनी दी कि पूर्व उपप्रधानमंत्री एक साधारण विधायक बनने से भी वंचित हो गए.

घिराय से अपनी जीत के प्रति देवीलाल इतने आश्वस्त थे कि उन्होंने चुनाव अभियान का काम अपने पौत्र, ओमप्रकाश चौटाला के बड़े पुत्र, अजय सिंह पर छोड़ दिया था और शायद यह उनकी भूल थी. कारण, राज्य में चौटाला विरोधी लहर स्पष्ट रूप से बह रही थी, जो उनके ही गृह जिले सिरसा में, जहां से इंका की 28 वर्षीय शैलजा कुमारी ने आसानी से जीत हासिल कर ली, भी उनको नुकसान पहुंचा रही थी. देवीलाल ने चुनाव अभियान खत्म होने के समय अपनी वातानुकूलित मर्सिडीज में घिराय का ताबड़तोड़ दौरा किया. लेकिन लोग पहले ही अपना मन बना चुके थे. लोगों में यह धारणा भी घर कर चुकी थी कि देवीलाल यह सीट अपने प्रिय बेटे चौटाला के लिए छोड़ देंगे.

देवीलाल की कमजोर रग-चौटाला की वापसी जनता किसी हालत में नहीं चाहती थी क्योंकि राज्य के आम लोगों में भी वे ऐसे नेता के रूप में कुख्यात हो चुके थे, जिसने भाई-भतीजावाद फैलाया और अपने परिवार तथा मित्रों को फायदा पहुंचाने के लिए तमाम कायदों को तोड़ दिया. चौटाला की बदनामी का धब्बा देवीलाल पर चस्पां हो गया. उनके बारे में मान लिया गया कि वे बेटे को बचाने के लिए किसी भी सीमा तक जा सकते हैं. दोनों बेटों चौटाला और रणजीत सिंह को चुनाव मैदान से हटा लेने के देवीलाल के झांसे में भी कोई नहीं आया.

ताऊ के तिरस्कार से स्पष्ट है कि लोग देवी ताऊ और उनके परिवार को सबक सिखाना चाहते थे. नतीजतन, रोहतक में वे 30.573 वोटों और घिराय में 2,100 वोटों के अंतर से हार गए. नवंबर 1989 में रोहतक से 1.88 लाख वोटों से जीतने वाले व्यक्ति के लिए इससे ज्यादा तिरस्कार और क्या हो सकता है. हताशा से भरे देवीलाल कहते हैं "लोकतंत्र में आपको जनता का फैसला मानना ही पड़ता है."

अप्रत्याशित राजनैतिक बुलंदियों को छूने वाले ताऊ ने चार साल पहले किसी अजेय योद्धा की तरह हरियाणा को अपने शिकंजे में लिया था लेकिन पुत्र मोह ने उन्हें सिंहासन से गिरा दिया

विपक्षी दलों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने और इंका विरोधी लहर पर सवार होकर सत्ता तक पहुंचने लायक ताकत बनाने वाला यह दिग्गज, जिसने अकेले दम पर वी.पी. सिंह के लिए प्रधानमंत्री पद का रास्ता प्रशस्त करने के साल भर बाद ही उनसे किनारा कर लिया, अब अपने तेजाखेड़ा फार्म हाउस वापस लौटने की तैयारी कर रहा है. सत्ता की चकाचौंध से वे अब वंचित हैं. उप-प्रधानमंत्री के नाते उनको आवंटित विशाल 1, विलिंगडन क्रिसेंट, जो राष्ट्रपति भवन की संपदा का एक भाग है, अब वीरान नजर आता है. हॉट लाइन काटी जा चुकी है. सुरक्षा कर्मचारी बैठे गपशप करते रहते हैं और कार्यालय स्टाफ टाइपिंग का मामूली-सा ही काम रहने के कारण अब टेलीविजन देखता रहता है, जबकि उनके 'चौधरी साहब' पिछवाड़े के लॉन में अपनी चारपाई पर बैठे रहते हैं.

नेता मनोनीत किए जाने के बाद वी.पी. सिंह के नाम का प्रस्ताव रखने से पहले 2 दिसबंर 1989 के उस ऐतिहासिक क्षण में राष्ट्रपति भवन के अशोक हॉल में करीब-करीब प्रधानमंत्री बन गए इस व्यक्ति के पास अब दिल्ली में ठहरने के लिए एक घर भी नहीं रहा है. आवास और नगर विकास मंत्रालय को देवीलाल पहले से वैकल्पिक स्थान आवंटित करने के लिए लिख चुके हैं. वे अब मकान पाने के अधिकारी तो नहीं हैं लेकिन उनके सहायक का कहना है "अगर ललिता शास्त्री और जगजीवन राम के परिवार को मकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवान सिंह

दिया जा सकता है तो चौधरी देवीलाल को क्यों नहीं?"

चौधरी अब अखबार पढ़ने के अलावा अपनी गायों के साथ वक्त गुजारते हैं. "मेरे पास पांच गाय और दो भैंस यहां तथा 28 गाय और आठ भैंस तेजाखेड़ा में हैं." इन जानवरों को, जिनके लिए विशेष रूप से छत बनवाई गई थी, अब तेजाखेड़ा वापस भेजा जा रहा है. खरगोशों को, जो पिछले 17 महीने में चार से बढ़कर 32 हो गए थे, राजस्थान में अमीक नगर स्थित खरगोश संवर्धन फार्म भेजा जा चुका है. बात करने के लिए कुछ और विषय न होने के कारण ताऊ अब 1, विलिंगडन क्रिसेंट में जुटाई गई ग्रामीण सुविधाओं पर दिलचस्पी से बात करते हैं. सौर ऊर्जा से पानी गरम करने का प्रबंध, ग्रीन रूम, सिंचाई प्रणाली, बीज काउंटर और शौचालय. ताऊ चाहते हैं कि यह निवास किसी किसान को मिले इसलिए उन्होंने बलराम जाखड़ को सुझाव लिख भेजा है कि वे कोशिश करें कि यह मकान उन्हें आवंटित हो जाए.

अपनी खास आदतों वाले ग्रामीण नेता देवीलाल को उन्हींके द्वारा ठुकरा दिए जाने पर, जिनके हित की बात वे करते थे, कृषि और पर्यटन मंत्रालय के अधिकारी भी राहत की सांस ले रहे हैं. कल्पना लोक की उड़ानों के साथ देवीलाल ने ऐसी बेहूदी योजनाएं सामने रखीं कि नौकरशाह मुश्किल में फंस गए. अपनी चीन यात्रा के दौरान 12 अश्वशक्ति वाले चीनी ट्रेक्टरों से प्रभावित देवीलाल चाहते थे कि उन्हें सब्सिडी देकर खरीदा जाए. कहने की आवश्यकता नहीं है कि वित्त मंत्रालय की अनुमति न मिलने के कारण योजना धरी रह गई.

अधिसंख्य राजनैतिकों, नौकरशाहों और अंत में जनता से तिरस्कृत देवीलाल अब अकेले और अलग थलग पड़ गए हैं, जिनसे मिलने में किसी की भी दिलचस्पी नहीं है. नरसिंह राव और उनके कैबिनेट के शपथ ग्रहण समारोह के दौरान देवीलाल को वी.पी. सिंह के हाथों अपमान झेलना पड़ा, जिन्होंने ताऊ के बात करने की कोशिश करने पर मुंह फेर लिया.

देवीलाल कहते हैं, "मैं फिर जनता के पास जाऊंगा." उनके अनुसार, "राजनीति में संन्यास जैसी कोई चीज नहीं होती." यही लगता है कि ताऊ सड़क के छोर पर पहुंच गए हैं, जहां यदि वे संन्यास भी लेना चाहें तो कोई उनको नहीं रोकेगा. कल का ताकतवर बुजुर्गवार ठुकराया जा चुका है और आज दरबार में कोई नहीं है. सचमुच ही, विदूषक अकेला है.

—हरिंदर बवेजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय जनता पार्टी

हो गए स्वप्न कुछ साकार

पार्टी अपने मूल सिद्धांतों से पीछे नहीं हटेगी लेकिन हाल ही में उभर आए उग्र तत्वों को अपने काबू में रखेगी तथा केंद्र में कांग्रेस (इ) सरकार से भी भरसक टकराव टालना चाहे

भाजपा दसवीं लोकसभा में 119 सीटों के साथ सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी के रूप में काम करने जा रही है. हालांकि वह 160 से 200 के बीच सीटें जीतने के अपने बहुप्रचारित दावे से कम सीटें जीत सकी, लेकिन उसने देश के ज्यादातर राज्यों में पैर जमाने और मजबूत राष्ट्रीय हिंदू पार्टी के रूप में अपने को प्रतिष्ठापित करने के अपने मूल मकसद को हासिल कर लिया.

राष्ट्रीय पहचान के लिए वर्षों तक संघर्ष करने और राजनैतिक अछूत के रूप में तिरस्कृत रहने के बाद आखिरकार भाजपा को प्रतिष्ठा मिल ही गई. उसने भारतीय राजनैतिक बहस की सीमाओं को भी अपने 'कांग्रेस समर्थक या विरोधी' तेवर से हटाकर राष्ट्रीयता और 'छद्म धर्मनिरपेक्षता' सरीखे मुद्दों पर ला खड़ा कर दिया है. भाजपा शुरू में हिंदी क्षेत्र तक ही सीमित थी लेकिन अब उसने कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में भी जड़ें जमा ली हैं और असम में भी वह एक ताकत बनकर उभरी है. गुजरात में वह इंका को रौंदकर सबसे शक्तिशाली पार्टी के रूप में उभरी है. लेकिन उसकी सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण विजय उत्तर प्रदेश में सत्ता पर काबिज होना है.

अब जबकि पार्टी अपना भावी राजनैतिक कार्यक्रम तैयार करने जा रही है, उसकी विचारधारा पर उसके चुनावी प्रदर्शन का असर पड़ना लाजमी है. पार्टी का विश्वास है कि उसने अंततः इस मिथ को झुठला दिया कि चुनाव जीतने के लिए अल्पसंख्यकों का समर्थन जरूरी है. पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के एक वरिष्ठ सदस्य कहते हैं, "आज हमें पहले से भी ज्यादा विश्वास हो गया है कि अल्पसंख्यकवाद के खिलाफ संघर्ष की जरूरत है. लेकिन हम हिंसा के खिलाफ हैं क्योंकि उससे हमारी छवि अल्पसंख्यक विरोधी की बनती है."

पार्टी दूसरे मुद्दों पर भी अपने रवैए में नरमी लाने की नहीं सोच रही है. पार्टी के विचारक गोविंदाचार्य ने कहा, "हम राष्ट्रीयता बनाम छद्म निरपेक्षता सरीखे विषयों पर बहस को आगे बढ़ाना चाहेंगे. अब हमें इसके सहारे अपनी जड़ें और मजबूत करनी चाहिए और उनका विस्तार करना चाहिए."

पार्टी अपने मूल सिद्धांतों में संशोधन नहीं करने जा रही है इसलिए वह शिवसेना सरीखी कट्टर सांप्रदायिक पार्टियों या अल्पसंख्यकों को कोसने वाली साध्वी ऋतंभरा सरीखे व्यक्तित्वों से अपने संबंधों के बारे में खेद भी प्रकट नहीं करेगी. बाल ठाकरे की टिप्पणी (हमें नाथू राम गोडसे पर गर्व है. उन्होंने राष्ट्र को एक दूसरे विभाजन से बचाया) पर पार्टी ने बेझिझक अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की. एक भाजपा नेता कहते हैं, "गांधी जी के खिलाफ उनकी बात पर यदि लोग इतने ही नाखुश थे तो गुजरात में उसका असर क्यों नहीं पड़ा?" आडवाणी इससे सहमत हैं. उनका कहना है कि जनता दल (गु) नेता चिमनभाई पटेल "इस टिप्पणी को रोजाना दोहराते थे." वे कहते हैं, "हम महाराष्ट्र में ठाकरे के कारण नहीं. राजीव की हत्या और शरद पवार के कारण हारे."

शरद सक्सेना

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में आडवाणी, वाजपेयी, जोशी, और विजयाराजे सिंधिया.

लेकिन भाजपा को कुछ विफलताएं भी हाथ लगीं. राजीव गांधी की हत्या के बाद उसके नेताओं ने इंका का स्थायित्व का नारा हथियाकर बड़े विश्वास से सत्ता में आने की भविष्यवाणी की थी. लेकिन हुआ उलटा. राजीव की हत्या ने कई राज्यों में वोटों को इंका की तरफ मोड़ दिया. महाराष्ट्र में शरद पवार की अगुआई में एकजुट इंका ने भाजपा और शिवसेना का सफाया कर दिया.

भाजपा के लिए सबसे अपमानजनक बात यह रही कि मध्य प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में उसने सीटें खोईं और राजस्थान में इंका के बराबर रही. ओडीसा और बिहार में भी उसका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा. इन राज्यों में अपनी हार के बारे में वह चाहे जितनी सफाई दे, तथ्य यह है कि मतदाताओं ने उसे नकार दिया.

इन सबसे भी महत्वपूर्ण बात शायद यह है कि पार्टी अपनी सांप्रदायिक विचारधारा के बारे में आशंकाएं दूर करने में विफल रही है. भारतीय जनमानस का एक ताकतवर वर्ग भाजपा नेतृत्व की अधिक संयमित भाषा का उसके कार्यकर्ताओं और विश्व हिंदू परिषद में उसके सिपाहियों की उग्र लफ्फाजी से तालमेल नहीं बिठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता. राजनैतिक पंडितों का मानना है कि यह तथ्य इकाई उम्मीदवार राजेश खन्ना, जो नई दिल्ली में लालकृष्ण आडवाणी से महज 1,589 वोटों से हार गए, के चमत्कारी प्रदर्शन की मुख्य वजहों में से एक है.

आने वाले हफ्तों में पार्टी क्या रणनीति अपनाने जा रही है? शुरू में उत्तर प्रदेश और लोकसभा दोनों में वह केंद्र से लड़ने की रणनीति नहीं अपनाएगी. इसलिए नहीं कि वह दोबारा चुनाव से डर रही है, बल्कि इसलिए कि उसकी राय में लंबे समय में उसका भविष्य, बकौल राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य अरुण जेतली के, अपने दूसरे दर्जे के कुछ उग्र नेताओं के बजाए लालकृष्ण आडवाणी/वाजपेयी विचारधारा के 'तर्कसंगत हिंदुत्व' की छवि मांजने में ज्यादा सुरक्षित है.

अपने सबसे महत्वपूर्ण काम राम मंदिर के निर्माण के लिए भाजपा उत्तर प्रदेश में तीन स्तरीय हमले की योजना बना रही है. पहला यह कि वह 30 नवंबर के पहले विश्व हिंदू परिषद और बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के बीच शुरू हुई समझौता वार्ता को पुनरुज्जीवित करेगी ताकि समस्या का कोई शांतिपूर्ण हल निकल आए. दूसरा, विवादास्पद स्थल के कानूनी ढंग से अधिग्रहण के लिए उन उपायों का पता लगाएगी जिनके जरिए न्यायिक प्रक्रिया में तेजी लाई जा सकती है. गोविंदाचार्य ने कहा, "यहां केंद्र से बड़ी समझदारी से समझौता वार्ता करनी होगी क्योंकि हम नहीं चाहते कि इस मुद्दे पर नई सरकार से हमारा टकराव हो. लेकिन इसके साथ ही यदि केंद्र ने बेशर्मी से अल्पसंख्यकों को पटाने और टकराव की कोशिश की तो हम भी ईंट का जवाब पत्थर से देंगे." पार्टी के उपाध्यक्ष सुंदर सिंह भंडारी कहते हैं, "लाठी टूटे बिना सांप मर जाए तो हर्ज क्या है?"

—शाहनाज अंकलेसरिया अय्यर

जनता दल

अभी चिंताएं बहुतेरी

चुनावों में खराब प्रदर्शन करने के बाद वी.पी. सिंह के सामने पार्टी को एकजुट रखने, इंका के साथ साझेदारी के प्रयासों का विरोध करने और अपना आधार बढ़ाने का काम

देश की 75 फीसदी वंचित जनता में सम्मोहन पैदा कर देने की उम्मीद वाली मंडल की जादुई छड़ी ने जनता दल को सत्रहवीं लोकसभा में तीसरे स्थान पर ला पटका. 1989 का आश्चर्य माने जाने वाले वी.पी. सिंह एक वर्ग विशेष के नेता बनकर रह गए हैं और उनकी पार्टी को पिछले चुनावों की 143 सीटों के मुकाबले इस बार 55 सीटें ही मिल पाई हैं.

बिहार में तो लालू प्रसाद यादव का करिश्मा ही ज्यादा काम आया. वी.पी. सिंह अब सफाई देते हैं, "सहानुभूति लहर ने सारा संतुलन बिगाड़ दिया. कर्नाटक, ओडीसा और महाराष्ट्र जैसे हमारे गढ़ों में राजीव की हत्या के बाद ही मतदान हुआ." पिछड़ी जातियां और मुसलमान वोट बैंक भी पूरी तरह साथ नहीं दे पाया. उत्तर प्रदेश में पार्टी की हालत हालांकि इतनी बुरी नहीं रही पर वहां भी मुसलमान वोट इंका, सजपा और जनता दल में बंट गए. यहां तक कि पिछड़ी जातियों के वोट भी उसे एकमुश्त नहीं मिले.

अब वी.पी. सिंह की फौरी चिंता अपने 55 सांसदों को साथ बनाए रखने की है क्योंकि पार्टी का एक गुट इंका से साझेदारी करने के पक्ष में है. वी.पी. सिंह ने इस सुझाव को इसलिए रद्द कर दिया क्योंकि पार्टी अभी कल तक इंका की कड़ी आलोचक थी. उनका गणित यह है कि अगर जनता दल विपक्षी पार्टी के रूप में अपनी पहचान बनाए रखेगा तो उसे इंका की गलतियों का लाभ मिलेगा. लेकिन अजित सिंह जैसे जद के कई वरिष्ठ नेता मानते हैं कि अगर जनता दल सरकार को बाहर से समर्थन देता रहता है तो वह सत्ताधारी गुट का ही हिस्सा माना जाएगा.

दल के भीतर और इंका की ओर से भी लालू प्रसाद यादव तथा राम विलास पासवान जैसे नेताओं पर विलय या गठजोड़ करने का दबाव पड़ सकता है. मसलन, जरूरत पड़े तो लालू अपनी सरकार बचाने के लिए केंद्र का सहयोग लेने के खिलाफ नहीं होंगे.

अंधकार भरे भविष्य में आशा की एक ही किरण है कि जद इंका की अल्पमत सरकार की अघोषित समर्थक की भूमिका में रहे. राष्ट्रीय मोर्चा-वाम गठजोड़ की ओर से इंका सरकार के प्रति

चुनाव बाद परिदृश्य पर चर्चा करते जद नेताः ऊहापोह की स्थिति

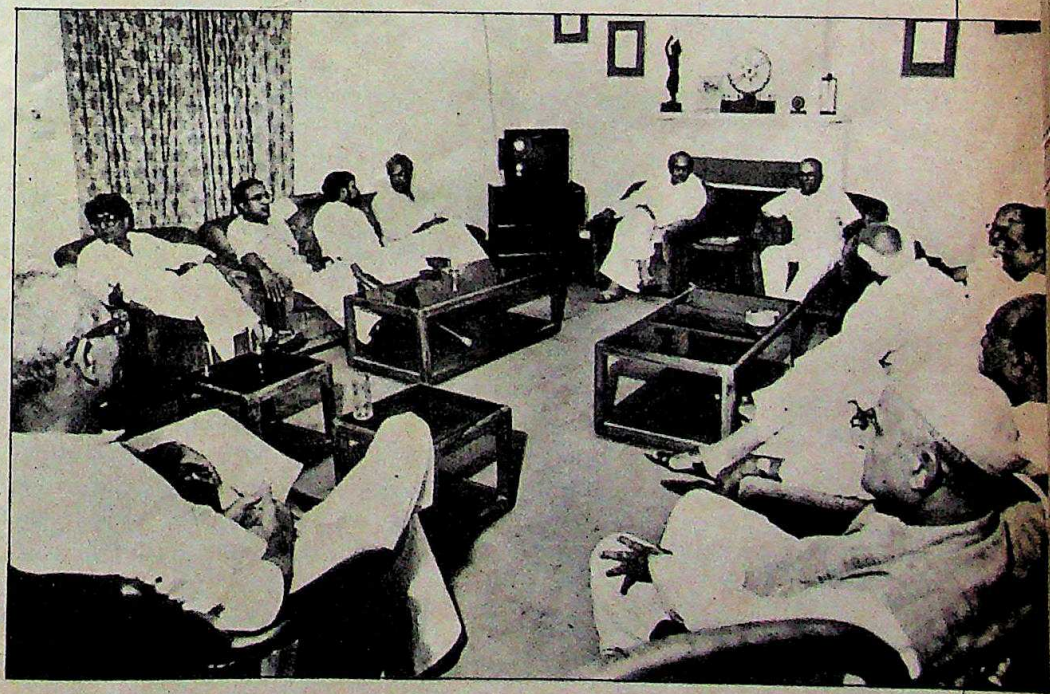

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकारात्मक रवैया अपनाने के फैसले से उसे मोलतोल की ताकत मिल गई है.

वैसे, वी.पी. सिंह तो इस गठजोड़ की शक्ति से अपनी स्थिति बचाने की कोशिश कर रहे हैं पर उनके अपने घर में आग लगी हुई है. चुनावों के तुरंत बाद अजित सिंह ने वी.पी. सिंह पर मुसलमान कट्टरवादियों से हाथ मिलाने का आरोप लगाया था. पार्टी का विभाजन होने से रुक गया क्योंकि अजित सिंह-बीजू पटनायक करीब एक दर्जन सांसदों के समर्थन से अभी इंका साथ जाने की स्थिति में नहीं हैं.

वी.पी. सिंह के लिए फौरी चिंता का एक और विषय वामपंथी दलों से अपने दल के रिश्तों को कायम रखना भी होगा. वामपंथी दलों ने इंका को कुछ मुद्दों पर समर्थन देने का पर्याप्त संकेत दिया है. वी.पी. सिंह को राज्य स्तर पर पार्टी के गठन का भी गंभीर प्रयास करना होगा. जैसा कि जनता दल के एक वरिष्ठ नेता चेतावनी देते हैं, "अगर वी.पी. सिंह मंडल और सामाजिक न्याय का ही राग अलापते रहते हैं तो वे खुद को कांशीराम जैसी स्थिति में पाएंगे और हम सभी लोग इतिहास के कूड़ेदान में फेंक दिए जाएंगे."

—हरिंदर बवेजा

वामपंथी दल

नहीं रही वैसी अहमियत

कम्युनिस्ट पार्टियों ने राष्ट्रीय मोर्चा के साथ रहने का फैसला किया है, पर भाजपा की सफलता पर अंकुश के लिए सरकार को समर्थन देना जरूरी हो गया है

चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद कम्युनिस्ट पार्टियों की स्थिति कुछ-कुछ उन संभावित दुलहनों जैसी थी जो उपयुक्त दूल्हे की इंतजार में हैं.

सामान्य हालात होते तो इंका के पास माकपा के 35 सांसदों को गांठकर सरकारी बेंचों पर बिठाने के सिवा कोई चारा न होता. लेकिन राजीव गांधी की खौफनाक मौत के बाद मिले सहानुभूति वोट ने इंका को बहुमत के करीब ला दिया जिससे माकपा का महत्व कम हो गया. इंका की सदस्य संख्या बढ़ जाने से माकपा की छोटी बहन भाकपा का भी महत्व घट गया. इसके 13 सांसद हैं जो ज्यादातर बिहार से जीते हैं.

लेकिन मंत्रिमंडल में महाराष्ट्र लॉबी के प्रतिनिधित्व और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री शरद पवार के प्रकटतः अपमान से पैदा हुए असंतोष के चलते स्थिति तुरंत बदल भी सकती है. उस हालत में वामपंथी पार्टियां सरकार के लिए वरदान बन सकती हैं.

इस बीच, दोनों वामपंथी पार्टियों ने विपक्ष में बैठने और नई सरकार का मुद्दों के हिसाब से समर्थन करने का फैसला किया है. माकपा यह नहीं चाहती कि इसे व्यवस्था के साथ जोड़ा जाए. उसके सरकार में शामिल होने अथवा औपचारिक समर्थन देने के कोई आसार नहीं हैं. हां, राजनैतिक ताकतों का पुनः एकीकरण और शासक पार्टी का विभाजन हो जाए तो बात दीगर है. कम-से-कम अभी राष्ट्रीय मोर्चा-वाम मोर्चा के गठजोड़ के प्रति उसकी निष्ठा बरकरार है.

भाकपा की कोई बड़ी महत्वाकांक्षाएं नहीं हैं पर राष्ट्रीय मोर्चा-वाम मोर्चा गठबंधन के घटक के तौर पर वह दुविधा में थी कि इंका सरकार में शामिल हो या बाहर से उसे समर्थन दे.

माकपा आर्थिक नीति के सवाल पर भिड़ सकती है. पार्टी भुगतान संतुलन के संकट से निबटने के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से कर्ज लेने के खिलाफ नहीं है. पर उसकी कुछ शर्तें मानने के लिए शायद तैयार न हो.

अशोक वानी

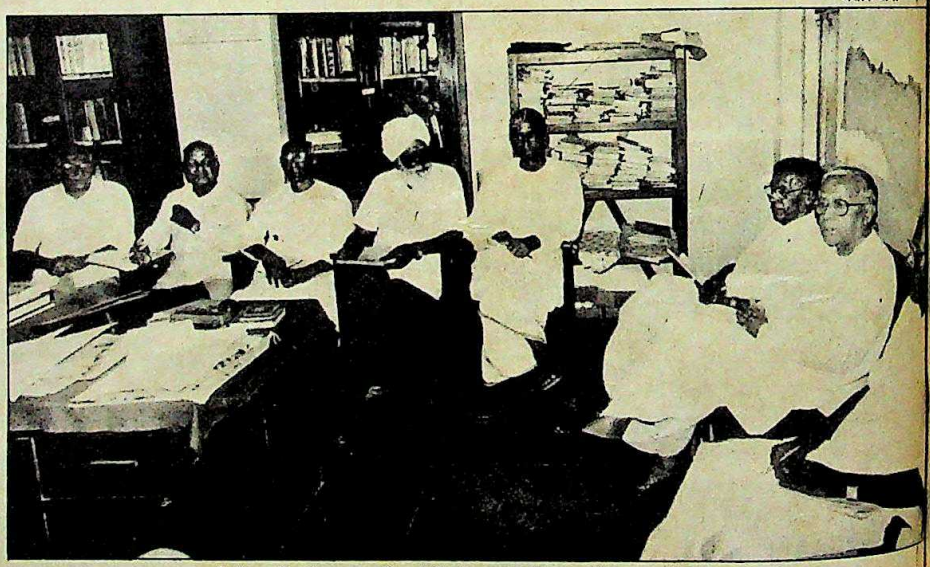

नई दिल्ली में वाम मोर्चा के नेताः नई रणनीति क्या हो?

मसलन, माकपा अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की शर्तों के अनुसार केंद्रीय बजट को टालने का विरोध करेगी. उसका मानना है कि देश के पास निश्चित आर्थिक सामर्थ्य है और उसे इस मुद्दे पर अपनी संप्रभुता का सौदा नहीं करना चाहिए. वह यह भी चाहती है कि सरकार इस मामले में किसी फैसले पर पहुंचने से पहले वामपंथियों और राष्ट्रीय मोर्चे से सलाह-मशविरा करे.

दूसरी तरफ, भाकपा पूंजीपतियों के साथ लेन-देन की पक्षधर है. उसका मानना है कि कुछ क्षेत्र भले ही सरकारी नियंत्रण में रहें पर बहुत से क्षेत्रों में निजी निवेश कराया जा सकता है. और सरकार को अर्थव्यवस्था के विकास में निजी उद्यमियों की मदद करनी चाहिए.

—अरुण चावो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लालू प्रसाद यादव

खुला खेल फरक्काबादी

सड़कछाप दर्शन बघारने वाले इस सामान्य-से नेता ने राज्य पर अपनी पकड़ साबित कर दी. वे बिहार के नए क्षेत्रीय योद्धा के रूप में उभरकर सामने आए हैं.

सिर्फ दो वर्ष पहले जब दंभी, सड़कछाप दर्शन बघारने और गालियां निकालने वाले, नाटे कद के इस व्यक्ति का बिहार के राजनैतिक क्षितिज पर उदय हुआ तो उसे मसखरा और राज्य के साथ राजनैतिक मजाक जैसे उदाहरणों के साथ व्यापक रूप से खारिज कर दिया गया था. यहां तक कि उसके नाम लालू, जो लोक व्यवहार में मूर्ख व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है, को लेकर भी तिरस्कार प्रदर्शित किया गया. लेकिन, आज अकेले लालू प्रसाद यादव ही प्रसन्न हैं, जो भारत के नए क्षेत्रीय योद्धा के रूप में उभरकर आए हैं.

बिहार के घरेलू मंडल मसीहा के रूप में अपनी स्थिति मजबूत करके स्पष्ट रूप से उन्होंने अपने वादे को पूरा किया है, प्रायः पूरे तौर पर. अपने चुनाव अभियान के दौरान उन्होंने डींग हांकी थी, "राष्ट्रीय मोर्चा-वाम गठबंधन के अलावा कोई भी दूसरी पार्टी एक सीट भी नहीं जीत पाएगी." और भाजपा को मिली पांच सीटें छोड़ सभी सीटें जनता दल और सहयोगियों को मिलीं.

उनके विरोधी गड़बड़ी का आरोप लगा रहे हैं. कमलकांत तिवारी उन्हें 'पगलाया हुआ साधारण-सा अपराधी' कहते हैं. विपक्ष के नेता जगन्नाथ मिश्र का प्रहार कुछ हल्का है, "चुनाव अनियमितताओं से पूर्ण थे और मजाक बनकर रह गए."

लालू ने बिहार में चुनावों में कैसे गड़बड़ी की, इसकी कहानियां बहुत ज्यादा हैं. भाजपा के महासचिव यशोदानंद सिंह खागड़िया निर्वाचन क्षेत्र के मतदान केंद्र सं. 176 से 123 वोटों वाली एक मतपेटी के गायब होने का उदाहरण देते हैं, जो बाद में बरामद हुई तो उसमें तीन गुना वोट थे. वे कहते हैं कि यह तो विशाल घोटाले की एक छोटी-सी कड़ी भर है.

विरोधी अकेले वे ही नहीं हैं. मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन ने बार-बार रोका-टोकी की. उन्होंने दो सीटों पर मतगणना रोक दी, आधा दर्जन परिणाम रोक दिए और कुछ निर्वाचन अधिकारियों के तबादले का आदेश दिया. इस पर लालू ने खूब हाय-तौबा मचाई. उन्होंने शेषन को महाभियोग की धमकी दी.

सच कहें तो चुनाव अभियान के दौरान ही लालू की वास्तविक प्रतिभा उजागर हुई. राज्य के हेलिकॉप्टर में हर जगह उड़ते हुए वे खास बिहारी अंदाज में जनसमूह से कहते, "देखो, इस उड़नखटोले को जगन्नाथ मिसरा ने खरीदा था लेकिन इसमें उड़ मैं रहा हूं." देसी मजाकों ने बिहार में लालू को लाड़ला बना दिया. उन्होंने अपने मुख्यमंत्रित्व की शुरुआत सरकारी कार्यालयों, अस्पतालों और प्रशासनिक प्रतिष्ठानों में आकस्मिक छापों के साथ की थी, अधिकारियों को निलंबित किया और अटकी हुई फाइलों को जब-तब हाजिर करने के फरमान जारी किए.

लालू के शासन में बिहार आर्थिक संकट में है. पिछले पखवाड़े रिजर्व बैंक ने ओवर ड्राफ्ट 560 करोड़ रु. से ज्यादा हो जाने के कारण राज्य के सभी भुगतान रद्द कर दिए.

लेकिन ये मामूली बाधाएं बेधड़क लालू को जरा-सा भी परेशान करती नहीं लगती हैं. विपक्षी विधायक के रूप में भी उनके मजाक और चुहलबाजी उन्हें लोगों के विरोध से ज्यादा समर्थन दिलाती रही है. एक बार, उन्होंने तत्कालीन मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र के खिलाफ जबरदस्त अभियान चलाया. सदन में उन्होंने रहस्योद्घाटन किया, "डॉ. मिसरा ने करोड़ों रुपए के हीरे-जवाहरात और सोना अपने पेट में छिपा रखा है और यह मैं सिद्ध कर सकता हूं." सबूत मांगने पर लालू ने भोलेपन से जवाब दिया, "सर्जन को बुलाकर डॉ. मिसरा का पेट चीरने को कहिए. अगर छिपी हुई संपत्ति न निकले तो मैं इस्तीफा दे दूंगा." इस पर कांग्रेस समर्थक भी हंसे बिना नहीं रह सके.

शरद सक्सेना

अनेक लोगों का विश्वास है कि वह दिन दूर नहीं जब लालू राष्ट्रीय मोर्चा से अलग हो जाएंगे और क्षेत्रीय पार्टी बना लेंगे.

ऐसे राज्य में जहां पिछड़े 52 प्रतिशत और अल्पसंख्यक 13 प्रतिशत हैं, लालू ने बिलकुल ठीक गणित बिठाया है. नौकरशाही में पिछड़े वर्ग की मजबूत लॉबी के समर्थन के साथ खैनी खाने वाला सर्वहारा वर्ग का यह स्वयंभू हीरो निश्चित ही सफलता की ओर दौड़ रहा है.

—फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब

एक और विश्वासघात

प्रत्यक्षतः कांग्रेस (इ) को खुश करने के लिए लिए गए चुनाव आयोग के फैसले से राज्य में लोकतंत्र बहाली की प्रक्रिया को गहरा आघात, ज्यादातर पार्टियां इससे नाराज

पंजाब में 20 जून की रात लोगों ने राहत की सांस ली. लोकसभा और विधानसभा चुनाव के प्रचार का सबसे खूनी दौर का अंततः अंत हुआ. 36 घंटे बाद मतदान शुरू होने वाला था.

लेकिन सबसे बड़ा झटका लगना तो बाकी था. अगली सुबह आकाशवाणी और दूरदर्शन पर चुनाव टाले जाने की खबर जब प्रसारित हो रही थी तब पंजाब के लोग स्थानीय अखबारों के मुखपृष्ठ पर राज्य के मुख्य चुनाव अधिकारी की अपील पर ही आंख गड़ाए हुए थे. अपील थी, "हमारे संविधान में हर नागरिक को मतदान करने का अधिकार मिला हुआ है. अपने अधिकार का उपयोग करें." लेकिन मतदान का अधिकार उग्रवादियों ने नहीं बल्कि संवैधानिक संस्था, चुनाव आयोग ने छीन लिया.

मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन का कहना था कि 25 सितंबर तक चुनाव टालने का फैसला अचानक नहीं हुआ बल्कि यह पिछले कुछ हफ्ते की घटनाओं का ही परिणाम है. उन्होंने उम्मीदवारों और मतदाताओं को मिली धमकियों का जिक्र किया, खासकर लुधियाना में लगे उग्रवादियों के उन पोस्टरों का जिनमें मतदान की स्याही लगी उंगलियों को काट देने की धमकी दी गई थी.

चुनावों के अप्रत्याशित स्थगन की तीखी प्रतिक्रिया हुई. पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर ने इसे 'व्यापक असर वाला खतरनाक कदम' बताया. पंजाब के अखबारों ने इससे सहमति जताई. उनकी सुर्खियां थीं, 'भयानक भूल', 'क्रूर मजाक,' 'विश्वासघात' आदि. अकाली दल (मान) ने इसे 'फासीवादी कदम' बताया. पंजाब के राज्यपाल ओमप्रकाश मल्होत्रा ने विरोध में इस्तीफा दे दिया.

चुनाव कराने के चंद्रशेखर के फैसले से उग्रवादियों में अफरा-तफरी मच गई थी. अब इस मोहलत से उन्हें अपने मतभेद दूर करने का मौका मिल जाएगा.

राज्यपाल मल्होत्रा के लिए तो इस स्थगन से उनके कुछ सख्त फैसलों के असर पर पानी फिर गया. इन फैसलों में एक था पालिकाओं के चुनाव कराना जिससे विधानसभा और लोकसभा चुनावों की राह खुल सकी. सचाई तो यह भी है कि शेषन ने राज्यपाल की हफ्ते भर चुनाव टालने (ताकि अर्द्धसैनिक बलों की और खेप तैनात

प्रमोद पुष्प

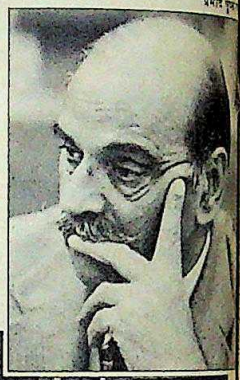

स्वदेश सरदार/ इंडियन एक्सप्रेस

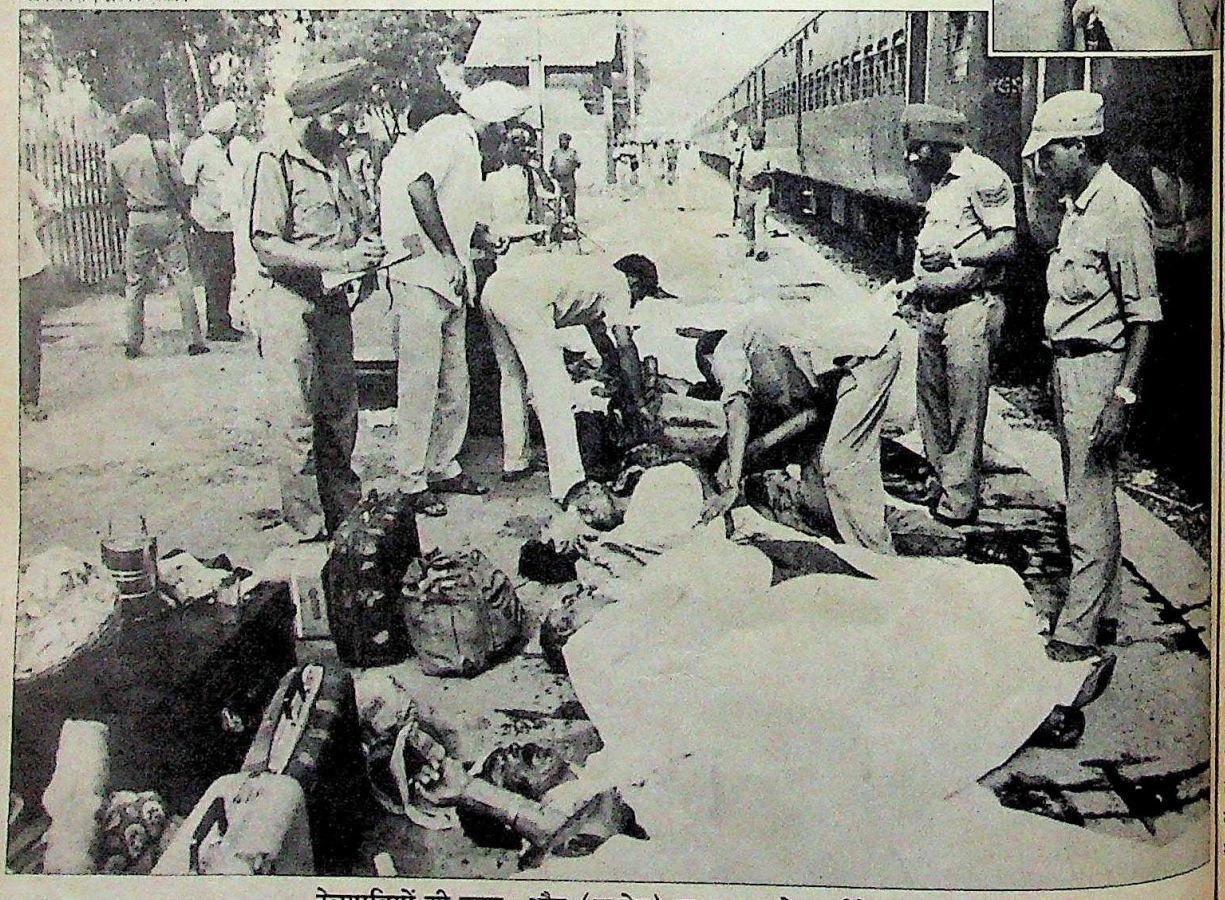

रेलयात्रियों की हत्या; और (इनसेट) जनरल मल्होत्राः पीछे कदम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जा सके) की अपील ठुकरा दी थी और [illegible] सिंह ने और स्थगन का फैसला कर लिया.

शेषन को सिर्फ इंका का ही पुख्ता समर्थन मिला जिसने चुनाव का बॉयकाट किया है. प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद नरसिंह राव ने कहा, "मैं खुश हूं." उनका तर्क था कि मौजूदा स्थिति में निष्पक्ष चुनाव संभव नहीं थे. भाकपा और माकपा ने भी रजामंदी जताई. माकपा नेता हरकिशन सिंह सुरजीत ने कहा, "हम इसका स्वागत करते हैं पर यदि फैसला पहले ले लिया जाता तो कई जानें बच जातीं."

स्थगन के समय में कुछ गड़बड़झाला जरूर है. चुनाव स्थगन का फैसला किए जाने के ठीक एक दिन पहले शेषन ने साफ-साफ कहा था कि चुनाव की अवधि में कोई फेरबदल नहीं होगा. उसकी अगली शाम मल्होत्रा ने दूरदर्शन पर लोगों से निष्पक्ष और निडरता से मतदान करने की अपील की. वजह यह थी कि प्रचार के छह हफ्ते में 24 उम्मीदवार मौत के घाट उतार दिए गए. पूर्व गृह राज्यमंत्री सुबोधकांत सहाय पर जानलेवा हमला हुआ और 74 रेलयात्रियों का संहार कर दिया गया.

लेकिन यह भी सही है कि चुनाव स्थगन के तीन दिन पहले से कोई बड़ी हिंसक घटना नहीं हुई थी. और राज्य में सेना की गश्त के साथ 1.25 लाख सुरक्षा बलों को लगा दिया गया था.

दरअसल, शेषन का यह दावा कि फैसला पूरी तरह उनका ही है, तथ्यों के धरातल पर खरा नहीं उतरता. चुनाव आयोग द्वारा भेजे गए पर्यवेक्षकों ने स्थगन की घोषणा के बहुत पहले ही अपनी रिपोर्ट पेश कर दी थी. स्थगन की घोषणा नरसिंह राव को इंका संसदीय दल का नेता चुन लेने के फैसले के बाद हुई. भाजपा और अकाली दल (बादल) ने आरोप लगाया कि इसका मकसद इंका को चुनाव प्रक्रिया में प्रवेश दिलाना है.

सबसे तीखी प्रतिक्रिया भाजपा की ओर से ही हुई. अगर पंजाब में चुनाव हुए तो उसे बड़े चुनावी फायदे होने की बात हर ओर मानी जा रही है. हालांकि 1985 के विधानसभा चुनावों में उसे मात्र छह सीटें ही मिली थीं लेकिन शहरी इलाकों में हिंदू मतदाताओं के रुख को देखते हुए उसे कम-से-कम 35 सीटें निकाल लेने का पूरा भरोसा था.

1989 के लोकसभा चुनावों में हालांकि उग्रवादियों को स्पष्ट बहुमत मिल गया था फिर भी उस समय इंका और भाजपा को कुल 51 फीसदी वोट मिल गए थे. इस बार इंका के बॉयकाट के मद्देनजर भाजपा को अकेले इसके आसपास मत बटोर लेने की उम्मीद थी. अकाली दल (बादल) के अध्यक्ष प्रकाश सिंह बादल ने आरोप लगाया कि राष्ट्रपति, नरसिंह राव और शेषन ने इंका के स्वार्थ में यह षड्यंत्र रचा.

अफवाह यह भी है कि शेषन की नजर अपने पुराने पद कैबिनेट सचिव पर है और इंका की धुन पर करतब दिखाने से उनका मकसद जल्दी सध सकता है. इसके अलावा मल्होत्रा से राय मशविरा किए बिना ही फैसले से स्पष्ट हो जाता है कि यह कार्रवाई किसी योजना को ध्यान में रखकर की गई.

भाजपा ने आरोप लगाया है कि चुनाव आयोग ने इंका के सत्ता संभालने के पहले ही सत्ताधारी दल के इशारे पर पंजाब के चुनावों के स्थगन का काम आधी रात को अंजाम दिया. पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने इसे 'चुनाव आयोग के इतिहास में काला दिन और नई सरकार की अशुभ शुरुआत' कहा.

शरद सक्सेना

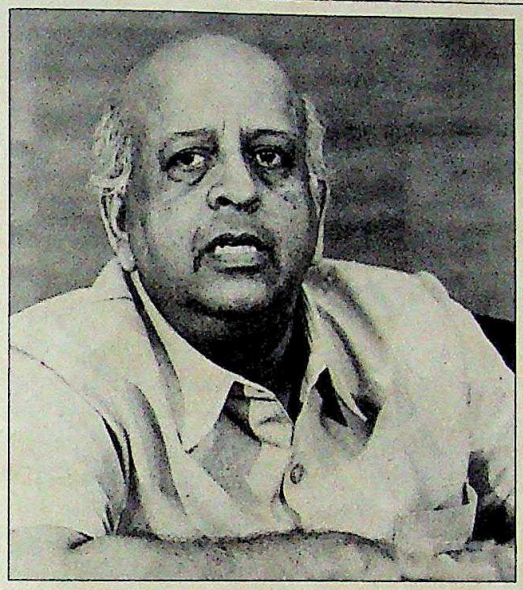

कहा जाता है कि शेषन ने जल्दबाजी में इसलिए फैसला किया ताकि इंका सरकार बाद में कह सके कि इसमें उसका कोई हाथ नहीं था

दिल्ली के राजनैतिक हल्कों से यह खबर पुष्ट होती लगती है कि शेषन की 20 जून के पहले ऊहापोह भरे दो दिनों से नरसिंह राव समेत इंका के वरिष्ठ नेताओं से गुफ्तगू चल रही थी. 19 जून तक जाहिर हो गया कि इंका सत्ता में आ रही है. माना जा रहा है कि शेषन ने आधी रात को फैसला इसलिए लिया ताकि इंका कह सके कि इसमें उसका हाथ नहीं है. घोषणा के 12 घंटे बाद ही नई सरकार आ गई. शेषन ने माना है कि वे इस फैसले का जिक्र राष्ट्रपति से करना भूल गए थे जबकि वे महज तीन घंटे पहले ही उनसे मिले थे.

स्थगन की घोषणा तो हो गई पर उसके प्रभाव शोचनीय हैं. करीब 1600 उम्मीदवारों के प्रचार खर्च के अलावा सरकार सुरक्षा बलों को पंजाब पहुंचाने पर ही करोड़ों रु. खर्च कर चुकी है. लेकिन सबसे बड़े झटके को चंडीगढ़ के अखबार 'ट्रिब्यून' ने शब्द दिए, "यह विश्वासघात की श्रृंखला में एक और कड़ी ही मानी जाएगी."

चुनाव में हिस्सेदारी की वजह से हमला झेल रहे अखिल भारतीय सिख छात्र संगठन (मंजीत गुट) और अकाली दल के विभिन्न घटकों को अब और हमले झेलने होंगे. इन्हीं घटकों पर उग्रवादियों का नजला सबसे अधिक गिरा है. जो लोग मारे गए उनमें अधिकांश इन्हीं के उम्मीदवार थे. उन्हें मतदान के दिन उग्रवादियों के 'बंद' को भी झेलना होगा. ऐसे बंदों (या जिसे उग्रवादी 'कर्फ्यू' कहते हैं) का सबसे ज्यादा असर ग्रामीण इलाकों में ही होगा जहां इन घटकों को ज्यादा समर्थन मिलने वाला है.

इसके बाद जिन उग्रवादी धड़ों ने हिस्सेदारी का फैसला लिया है, वे फैसले से पीछे हट सकते हैं और जो सिख राजनैतिक गुट अभी तक 'खालिस्तान' शब्द के प्रयोग से बचते रहे हैं, उनके घोषणा पत्र और कठोर हो जाएंगे. स्थगन से बब्बर अकाली दल और दूसरे उग्रवादी गुटों के चुनाव विरोधी रवैए को भी बल मिलेगा.

इसके अलावा इसकी कोई गारंटी नहीं है कि सितंबर तक स्थिति सुधर ही जाएगी. पंजाब में मई 1987 में राष्ट्रपति शासन लगाए जाने के बाद एक लगभग असंभव मांग 'चुनाव के पहले शांति' कायम करने की उठती रही है. और इस आधी रात के स्थगन से खतरा और बढ़ जाएगा. और अगर ऐसा हुआ तो इसका सारा दोष विवादास्पद शेषन के मत्थे ही होगा.

—कंवर संघू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

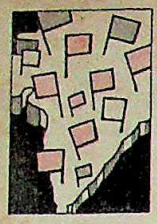

विधानसभाएं

राह वही, राही बदल गए

पूर्ववर्ती राज्य सरकारों के प्रति लोगों की नाराजगी के कारण इंका ने हरियाणा, केरल और असम में औरों से सत्ता छीन ली तो उत्तर प्रदेश में सबको मसलकर भाजपा का कमल खिला

उत्तर प्रदेश

कुल सीटें: 425; चुनाव हुआ: 404; जद: 91;
सजपा: 30; इंका: 46; भाजपा: 211; अन्य: 26

हर क्षेत्र में भगवा लहर

उत्तर प्रदेश में सरकार चलाना भाजपा के लिए 'इस पार या उस पार' की लड़ाई जैसा है. अगर वह यहां सफलतापूर्वक सरकार नहीं चला पाती है तो उसके लिए उत्तर प्रदेश फिर कभी ऐसा 'सुगम' नहीं होगा जैसा कि इस बार था.

भाजपा के नेताओं को भी आगे आने वाली चुनौतियों का पता है. मुख्यमंत्री कल्याण सिंह कहते हैं, "पिछली सरकार से हमें सांप्रदायिक दंगों, कानूनहीनता और कंगाली से परेशान प्रदेश ही मिला है." प्रदेश भाजपा विधायक दल के चुनाव परिणाम की घोषणा करते हुए भाजपा अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी ने कहा, "नवजात शिशु के साथ थोड़ा धीरज रखिए. इसे घुटने के बल चलना, फिर खड़े होना और फिर चलना सीखने दीजिए. एकदम से यह न कहिए कि मूर्ख चलना भी नहीं जानते." लोगों की उम्मीदें भाजपा को मिले 32.6 फीसदी वोट, प्रदेश से लोकसभा की 50 सीटों और विधानसभा के 404 स्थानों में से 211 पर जीत पाकर मिले जनादेश से ही स्पष्ट दिख जाती हैं. इसलिए उसे जल्दी 'चलना' ही होगा.

भाजपा की जीत के क्रम में प्रदेश में अब तक के चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले जातीय समीकरण भी ध्वस्त हो गए. 20 फीसदी से अधिक वोट पाने वाली दूसरी पार्टी जनता दल भी मंडल के जरिए पिछड़ों को गोलबंद करने की अपनी रणनीति में विफल रही. कांग्रेस की पराजय में उसे मुसलमानों के वोट न मिलना मुख्य कारण रहा. पार्टी को मिले मात्र 18 फीसदी वोट और 46 विधानसभा सीटें साफ बताती हैं कि उसे मुसलमानों के वोट नहीं मिले. मुसलमान वोट न मिलने से इससे भी ज्यादा दुखी पूर्व मुख्यमंत्री यादव की समाजवादी जनता पार्टी है. पार्टी को मात्र 10 फीसदी वोट और 30 सीटें मिलीं. भाजपा की लहर ने प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी के बढ़ते असर पर भी अंकुश लगाया. वैसे तो विधानसभा में इस बार भी उसके 13 विधायक आ गए हैं पर इस बार उसने अपनी दोनों लोकसभा सीटें गंवा दी हैं और उसके वोट भी 9.33 फीसदी से गिरकर 8.04 फीसदी हो गए हैं.

सभी पार्टियों को हुए नुकसान को देखने पर भाजपा की जीत और महत्वपूर्ण दिखने लगती है. इस बार उसने ऐसे क्षेत्रों से भी सीटें जीती हैं जहां उसका कोई आधार नहीं है. जैसे पर्वतीय क्षेत्र के आठ जिलों की 19 विधानसभा सीटों में पहले उसके पास मात्र एक सीट थी. इस बार उसने यहां से 15 सीटें जीती हैं जबकि इंका को

मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते कल्याण सिंह: भारी चुनौतियों का सामना

सभी फोटो: आर.के. गुप्ता

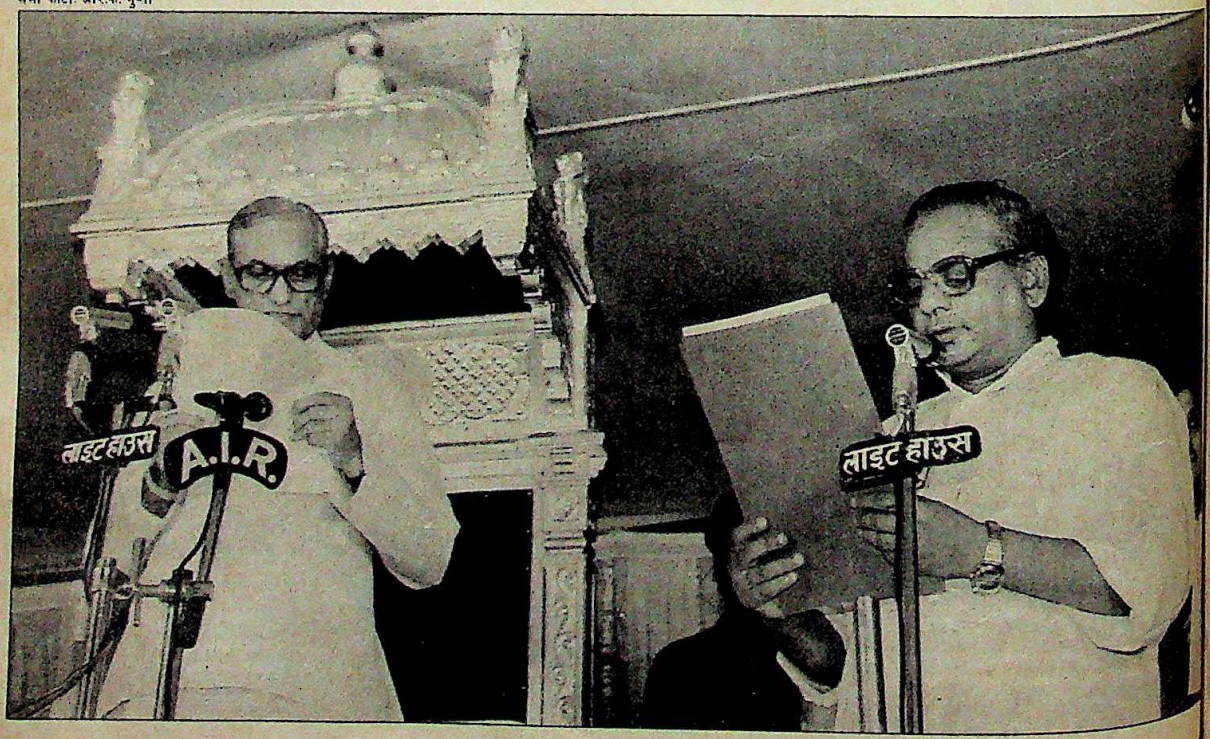

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ तीन और जनता दल को एक ही सीट पर संतोष करना पड़ा. इसी प्रकार बुंदेलखंड क्षेत्र के पांच जिलों की 21 विधानसभा सीटों में उसने अपनी संख्या 5 से 11 कर ली है. पिछड़ों और हरिजन बहुल इस क्षेत्र में जनता दल और सजपा को एक भी सीट नहीं मिली. इंका को 1989 की पांच की जगह चार सीटें मिलीं.

भाजपा को सबसे उल्लेखनीय सफलता तो मुस्लिम बहुल रुहेलखंड इलाके में मिली जहां के 7 जिलों में विधानसभा की 50 सीटें हैं और यहां की 50 फीसदी से ज्यादा आबादी मुसलमानों की है. भाजपा ने 1989 में यहां मिली 9 सीटों का अपना खाता बढ़ाकर इस बार 34 सीटें जीत लीं. सजपा को 10 सीटों का घाटा हुआ और इंका की भी 5 सीटें चली गईं. मुसलमानों का अच्छा समर्थन मिलने से जनता दल ने इस इलाके में एक सीट का लाभ लेकर अपनी झोली में नौ सीटें डाल लीं.

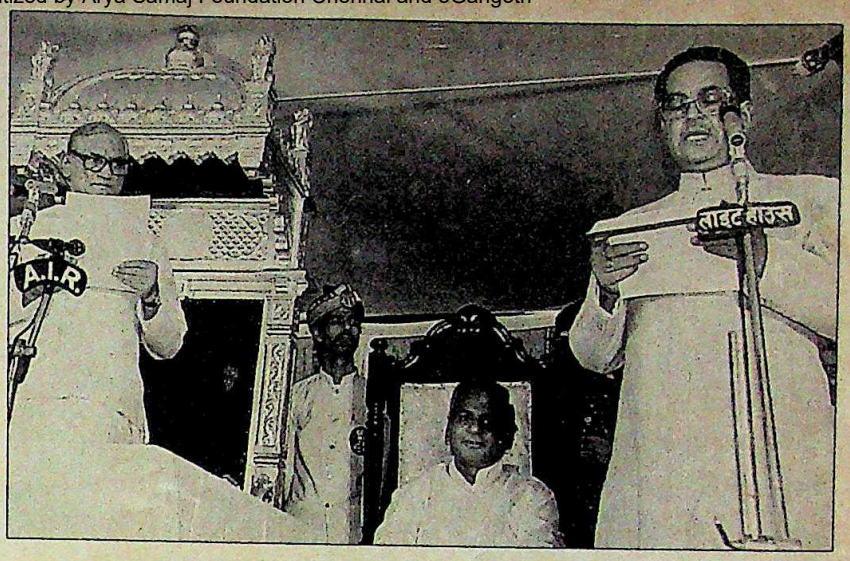

इकलौते मुसलमान मंत्री एजाज रिज़वी: रामराज्य के पक्षधर

मध्य उत्तर प्रदेश के अपने गढ़ में भी इंका स्थिति सुधारने में असफल रही. 10 जिलों वाले इस क्षेत्र में कुल 75 सीटें हैं और यहां भाजपा ने अपनी स्थिति मजबूत की. उसने पिछली बार की 12 सीटों की जगह इस बार 29 सीटें जीतीं. यहां सजपा को 9 सीटों के नुकसान के साथ 11 सीटें मिलीं. यहां भाजपा इंका के वोट बैंक में बहुत सेंध नहीं लगा पाई.

लेकिन पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भाजपा की प्रभावी घुसपैठ कम उल्लेखनीय नहीं है. यहां के 14 जिलों में कुल 101 सीटें हैं जिनमें से 17 के चुनाव रोक दिए गए हैं. यहां भाजपा पिछले चुनाव में मिली 13 सीटों की जगह 40 सीटें जीत गई है. जनता दल ने 5 सीटों के नुकसान के साथ 31 सीटें जीतीं. सजपा के 30 विधायक पिछली

कल्याण सिंह

'हमारे काम बोलेंगे'

59 वर्षीय कल्याण सिंह 1967 से लगातार चुनाव जीतते रहे. मुख्यमंत्री के रूप में उनके सामने महत्वपूर्ण चुनौतियां हैं और उत्तर प्रदेश में भाजपा का भविष्य ही उसकी भावी राष्ट्रीय हैसियत तय करेगा. शपथ ग्रहण के बाद ***इंडिया टुडे*** *से हुई उनकी बातचीत के अंश:*

• क्या आपको समस्याओं की जटिलता और तीव्रता का एहसास है?

निश्चित रूप से है. हमें विरासत में मिला राज्य सांप्रदायिक दंगों, अविश्वास और सरकारी आतंक से त्रस्त हो चुका है. इसीलिए मेरा सबसे पहला काम राज्य को दंगामुक्त बनाने का होगा. हम लोगों के आहत मन पर मरहम लगाने का काम करेंगे.

• भाजपा को सांप्रदायिक माना जाता है, फिर आप इसे कैसे करेंगे?

भाजपा के खिलाफ सभी पार्टियों के दुष्प्रचार से ही शायद ऐसी शंकाएं बनी हैं. हमारी सरकार के कामों से पता चल जाएगा कि ये शंकाएं गलत हैं.

• ज्यादातर मतदाता उम्मीद कर रहे होंगे कि आप सत्ता में आते ही राम मंदिर का निर्माण करवाएंगे?

भाजपा के खिलाफ सभी पार्टियों के दुष्प्रचार से कुछ लोगों के मन में उपजी शंकाओं को मिटाना हमारी प्राथमिकता होगी

मंदिर के निर्माण के लिए हम प्रतिबद्ध हैं. सबसे पहले हम इस संबंध में सारी बाधाएं हटाएंगे. एक मुख्य—बाधा मुलायम सिंह को तो राज्य की जनता ने खुद ही हटा दिया. हमने एक बार फिर वार्ता के द्वार खोल दिए हैं ताकि मामला आपसी बातचीत से ही निबट जाए.

• आपकी पार्टी अयोध्या में हुई हत्याओं और राज्य के दंगों के लिए मुलायम सिंह को दोषी मानती रही है. अब आप क्या सोचते हैं?

हमारे विचार बदले नहीं हैं. दरअसल, अब तो मुलायम सिंह की भूमिका के बारे में हम पहले से ज्यादा स्पष्ट हैं. हम पहले से बने न्यायिक जांच आयोग को भंग कर रहे हैं और हाईकोर्ट के जज की अगुआई में नया जांच आयोग बना रहे हैं जो मुलायम सिंह यादव के भाषणों से हुए नुकसान, अयोध्या के हादसे और कार सेवा के दौरान पूरे प्रदेश में अपनाए गए अड़ियल रवैए की जांच करेगा. हम अधिकारियों समेत सभी को अपनी सफाई पेश करने का भरपूर मौका देंगे और किसी भी तरह की मनमानी नहीं होने देंगे.

• मंडल आयोग के मुद्दे पर आपकी पार्टी क्या करेगी?

हमारी पार्टी आरक्षण के लिए एकदम प्रतिबद्ध है लेकिन संपूर्ण आरक्षण की ऐसी नीति अपनाई जाएगी जिससे सभी को फायदा मिले. हम पूरी नीति की फिर से समीक्षा करेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार थे जबकि इस बार उसके मात्र आठ लोग ही जीत सके.

पिछड़े वोटों के विभाजन का एक और प्रमाण पूर्वी उत्तर प्रदेश के 19 जिलों के चुनाव परिणाम देते हैं. यहां से 159 सीटें हैं. यहीं से जनता दल और सजपा को सबसे ज्यादा उम्मीदें थीं लेकिन भाजपा ने 81 सीटों पर हाथ साफ कर दिया जबकि 1989 में उसे सिर्फ 17 सीटें मिली थीं. जनता दल ने भी पिछली बार की 28 सीटों के मुकाबले इस बार 40 सीटें जीतकर उल्लेखनीय सफलता पाई. सजपा ने 43 सीटों का नुकसान सहकर मात्र 7 स्थान ही पाए और इंका ने 19 का नुकसान उठाकर सिर्फ 13 पर जीत हासिल की.

अब इतनी भारी सफलता पाने के बाद 59 वर्षीय मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के कामों पर राजनैतिक पार्टियों और समाचार जगत के लोगों के साथ ही मुसलमानों की नजर भी लगी रहेगी जिनकी आबादी प्रदेश की कुल आबादी की 16 फीसदी है. अभी तो मुसलमान भाजपा को एक मौका देना चाहते हैं. स्थानीय मुसलमान नेता डॉ. इश्तियाक हुसैन कुरैशी कहते हैं, "हम कामकाज को कुछ दिन देखेंगे और फिर इस सरकार के बारे में राय बनाएंगे."

अपने पहले संवाददाता सम्मेलन में की गई कल्याण सिंह की इस घोषणा का शहाबुद्दीन जैसे मुसलमान नेताओं ने भी स्वागत किया है कि वे राम जन्मभूमि मुद्दे पर नए सिरे से बातचीत शुरू कराएंगे. पहली खेप के 17 मंत्रियों में ही एक मुसलमान एजाज रिजवी को मंत्री बनाने से भी मुसलमानों के मन का डर कुछ दूर होगा.

कल्याण सिंह की पहली प्राथमिकता तो सांप्रदायिक सद्भाव कायम करना है. आने वाले महीनों में निश्चित रूप से उन्हें बड़ी संभाल संभाल कर कदम बढ़ाने होंगे.

—दिलीप अवस्थी

हरियाणा

कुल सीटें: 90; चुनाव हुए: 90; इंका: 51;
सजपा: 16; हविपा: 12; भाजपा: 2; अन्य: 9.

वंशवाद का नाश

चार साल पहले हरियाणा के मतदाताओं ने दलबदल और भ्रष्टाचार की इंका की राजनीति को रद्द करके भारी बहुमत से 'ताऊ' देवीलाल की अगुआई वाले जनता दल को गद्दी पर बिठाया था. पर भाई-भतीजावाद, पारिवारिक कुशासन और अव्यवस्था के चलते यह जनादेश मिट्टी में मिल गया. जो इंका 90 स्थानों के सदन में पांच स्थान बमुश्किल हासिल कर पाई थी, अब 51 सीटें पाकर सत्ता की सीढ़ियां चढ़ गई है. देवीलाल परिवार के खिलाफ गुस्सा इस कदर था कि खुद 'ताऊ' जाटबहुल घिराय विधानसभा क्षेत्र से इंका के युवा नौसिखुए प्रत्याशी प्रोफेसर छत्तरपाल के हाथों पराजित हो गए. पिछले सदन में सजपा के सदस्यों में केवल तीन लोग ही जीत पाए.

इंका की जीत मुख्य रूप से उसकी विरोधी पार्टियों—सजपा और हरियाणा विकास पार्टी (हविपा) में वोटों के बंट जाने से हुई. देवीलाल ने शुरू में ही खतरा भांप लिया था और अपने युद्धरत बेटों—चौटाला और रणजीत सिंह को उन्होंने मैदान से दूर रखा. पर यह दांव नाकाम रहा. पार्टी 16 सीटें पाकर दूसरे स्थान पर रही. ये सीटें भी ज्यादातर जाटबहुल इलाकों से थीं. चुनाव की पूर्व संध्या पर इंका से निष्कासित बंसीलाल की नवस्थापित हरियाणा विकास पार्टी और जनता दल के बीच गठजोड़ भी काम नहीं आया तथा पिछड़ों और हरिजनों के वोट इंका को मिल गए. बंसीलाल महज 12 सीटें पा सके, वह भी मुख्यतः भिवानी क्षेत्र में. जनता दल को 3 सीटें ही मिलीं. रोहतक से नवनिर्वाचित सांसद भूपिदर सिंह हुडा ने कहा, "जो काम बंसीलाल कांग्रेस में रहते नहीं कर पाए, वह उन्होंने हविपा बनाकर कर दिखाया."

भजनलालः राह आसान नहीं

इंका की जीत का एक मुख्य कारण चुनावों में स्वच्छ छवि वाले नए चेहरे उतारना भी है. और फिर, नेतृत्व का मुद्दा भजनलाल और प्रदेश इंका अध्यक्ष बीरेंद्र सिंह के बीच खुला छोड़कर वह जाटों और गैर-जाटों दोनों के वोट बटोर ले गई.

—कंवर [illegible]

प. बंगाल

कुल सीटें: 294; चुनाव हुए: 294; इंका: 43;
माकपा: 188; माकपा: 6; अन्य: 57.

किला कायम रहा

पश्चिम बंगाल आसानी से रंग नहीं बदलता. 14 साल के कम्युनिस्ट शासन के बाद लाल झंडा एक बार फिर यहां विजयी रहा है. और माकपा की अगुआई वाले वामपंथी मोर्चे ने विधानसभा चुनाव में भी भारी जीत हासिल की है. इंका दूसरे स्थान पर रही. अंतिम परिणाम दरअसल 1987 की ही पुनरावृत्ति हैं. पर एक महत्वपूर्ण अपवाद भी रहा. भाजपा ने बेहद ध्रुवीकरण वाले इस राज्य में पहली बार भारी सेंध लगाई है.

भाजपा को सीट तो कोई भी हाथ नहीं लगी पर इसने अपना वोट बैंक दस गुना बढ़ाकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया है. इसके वोट 1.71 से बढ़कर 10 फीसदी हो गए हैं. इसकी इस हैरतअंगेज उपलब्धि से इंका की हालत खस्ता हो गई और उसका वोट प्रतिशत 1987 के 41.81 के मुकाबले 35 पर जा टिका. प्रदेश इंका के निराश महासचिव सौगत राय ने माना, "भाजपा ने हमारी गणनाएं गड़बड़ा दीं." मार्क्सवादियों की ताकत भी कुछ हद तक घटी. उनके वोट 52.95 से घटकर 46 फीसदी रह गए. माकपा के राज्य सचिवालय के प्रभावशाली सदस्य बिमान बोस ने कहा, "भाजपा ने हमारे वोट हड़प लिए."

दरअसल, भाजपा दर्जनों विधानसभा क्षेत्रों में निर्णायक कारक सिद्ध हुई. ऐसी करीब आधी सीटों पर इंका माकपा के हाथों हार गई. बाकी सीटों पर वामपंथियों की हार का यही सबब बना. नतीजतन, इंका की हारी सीटों के मुकाबले नई जीती सीटों की खास फर्क नहीं डाल पाई. पहले के मुकाबले उसे महज चार सीटें ज्यादा मिलीं. इंका के नवनिर्वाचित विधायक साधन पांडे ने कहा, "अगर भाजपा हमारे वोटों में सेंध न लगाती तो हम कम-से-कम 50 सीटें और जीत लेते." कालियाचक का नतीजा इसका एक उदाहरण है. इंका यहां करीब 1,000 वोटों से ही हारी जबकि भाजपा को 20,875 वोट मिले थे. यही कहानी इंग्लिश बाजार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारबा, गजल, मगराहाट, बरुइपुर, हसनाबाद जैसे क्षेत्रों की है.

पर इसमें ज्यादा दोष खुद इंका का है. अब्दुल गनी खां चौधरी की जगह सिद्धार्थ शंकर राय को प्रदेश इंका अध्यक्ष बनाने जैसी नुमायशी तब्दीलियों ने उसे कोई फायदा नहीं पहुंचाया. उनके खिलाफ प्रायोजित अभियान में मार्क्सवादियों ने '70 के दशक में राय के मुख्यमंत्रित्व में फैली 'अव्यवस्था और आतंक' की पुरानी यादें ताजा कर दीं.

इंका के निराशाजनक प्रदर्शन की एक वजह उसके तौर-तरीके में भी निहित हैं. कई स्थानों पर निपट बाहरी लोगों को पार्टी का अधिकृत उम्मीदवार बना दिया गया.

ज्योति बसुः चैन की बंसी

इसके विपरीत, वाम मोर्चे की सांगठनिक ताकत कसौटी पर खरी उतरी. उसने चुनाव प्रचार भी काफी पहले ही शुरू कर दिया. हां, कई जगह उसे पराजय का भी सामना करना पड़ा. उसके चार मंत्री हार गए और मिले वोटों की संख्या भी घट गई. बहरहाल, मोर्चे में यह आघात सहने की ताकत मौजूद थी.

जाहिर है, कुछ रुकावटों के बावजूद मोर्चा सत्ता का एक और कार्यकाल पूरा करने की ओर अग्रसर है.

—रुबेन बनर्जी

असम

कुल सीटें: 126; चुनाव हुए: 125; इंका: 65;
अगप: 19; भाजपा: 10; अन्य: 31.

कलह से कुपित

छह वर्ष पहले असम की जनता ने इंका को करारी हार देकर अगप को अपना क्षेत्रीय उद्धारक बनाया था. पिछले पखवाड़े उसी जनता ने पूर्व इंका मुख्यमंत्री हितेश्वर सैकिया को, उन्हीं के शब्दों में "बेकाबू हो रहे अलगाववादी आंदोलन को कुचलने के लिए" पुनः सत्ता में बिठाया.

अगप ने तो बुरी तरह मुंह की खाई है. 1985 में हालांकि इसके पास न अनुभव था, और न ठोस राजनैतिक दर्शन. तब भी इसने 65 सीटें जीतीं थीं. पांच वर्ष बाद राज्य के युवा भी इसके साथ नहीं हैं. आत्मघाती झगड़े, भ्रष्टाचार के आरोप और जातीय मांगे अगप शासन का पर्याय बने रहें जब केंद्र ने असम सरकार बर्खास्त कर उल्फा के खिलाफ सैन्य अभियान शुरू किया तो अगप खुद ही अलग-थलग पड़ गई. इसकी बची-खुची साख तब जाती रही जब अगप के दोनों गुट- प्रफुल्ल कुमार महंत की अगुवाई वाली अगप और उनके पूर्व गृहमंत्री भृगु कुमार फूकन की अध्यक्षता वाली नूतन अगप अलगाववादी मांगों के साथ जनता से वोट मांगने गई पहले से चकराए मतदाताओं को स्थानीय और राष्ट्रीय मुद्दे लेकर सामने आई इंका कहीं अधिक संतुलित और विश्वसनीय लगी. सैकिया प्रशासन संभालने के बाद अब उल्फा और आसू से हिसाब चुकता कर सकेंगे

सैकियाः दूसरा मौका

गैरकानूनी घोषित किए जा चुके संगठनों से बातचीत के जरिए समझौता आसान नहीं होगा. सैकिया यदि दिसपुर के जनता भवन में ज्यादा दिन टिकना चाहते हैं तो उन्हें इन समस्याओं से निबटना ही होगा.

—फरजंद अहमद

तमिलनाडु

कुल सीटें: 234; चुनाव हुए: 232; ;
इंका: 61; अन्ना द्रमुक: 163; अन्य: 8.

कामयाब करिश्मा

अरसे से अपमान सहने और बट्टे खाते में गई, यह सुनने की अभ्यस्त हो चुकी जयललिता जयराम के लिए मानो सपना साकार हो गया है. वे न सिर्फ सेंट फोर्ट जॉर्ज पर अपना झंडा गाड़ने में सफल हुई हैं बल्कि उन्हें इतना भारी जनादेश भी मिला है जो भारत में किसी क्षेत्रीय नेता को पहले कभी नहीं मिला. एमजीआर की उपलब्धियों को भी निस्तेज कर देने वाली द्रमुक को पीटकर जयललिता ने अपने राजनैतिक गुरु की विरासत को कायम रखा है.

इसका श्रेय इस पूर्व सिने तारिका के करिश्मे और वोट आकर्षित करने की क्षमता को है. 44 फीसदी वोट पाकर अन्ना द्रमुक ने अपने बूते पर विधानसभा में पर्याप्त बहुमत हासिल कर लिया है. राज्य में राजीव गांधी की हत्या का इस कदर गहरा असर पड़ा कि अन्ना द्रमुक-इंका गठजोड़ ने द्रमुक को रौंद डाला और केवल एम. करुणानिधि ही मद्रास हार्बर से अपनी सीट बचा पाए. मगर इस सब में सहानुभूति वोट के बजाए एलटीटीई समर्थक द्रमुक के खिलाफ गुस्सा ज्यादा कारगर साबित हुआ.

जयललिताः व्यक्तिगत जीत

जयललिता की यह व्यक्तिगत जीत है, यह उन संदेशों से स्पष्ट है जो वे मतदाताओं को दिया करती थीं, "सभी 234 सीटों पर मुझे ही उम्मीदवार समझिए." उनके उम्मीदवार नए होने के बावजूद सभी सीटों पर विजयी रहे. द्रमुक के एक निराश समर्थक का कहना था, "अगर उन्होंने किसी लाश को भी खड़ा किया होता तो वह भी जीत जाती."

द्रमुक के सर्वेसर्वा के लिए खुद उनकी अपनी यह टिप्पणी कि "अगर एक तमिल का दूसरे तमिल की मदद करना पाप है तो करुणानिधि इसे बार-बार दोहराएगा," अभी भी उनकी राजनैतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौत साबित हो सकती है. रणनीति यह थी कि एलटीटीई के संघर्ष को सही और न्यायोचित ठहराकर तमिल भावनाएं उभारी जाएं. श्रीपेरुंबुदूर की त्रासदी के बाद उन्होंने सागर पार के तमिल भाइयों से सहानुभूति जताने से परहेज किया और हत्यारों से अपने संपर्क को कपोल कल्पना करार दिया.

अपनी पार्टी की मुकम्मल हार की जिम्मेदारी लेते हुए करुणानिधि ने विधानसभा की अपनी सीट से इस्तीफा दे दिया. बहरहाल, द्रमुक को अभी चुका हुआ मान लेना समय पूर्व होगा, क्योंकि द्रमुक विरोधी चो रामास्वामी के बकौल, "यह पार्टी कार्यकर्ता आधारित है, एकजुट है और उसका अपना वोट बैंक है जबकि जयललिता गलतियां करने के लिए विख्यात हैं."

मगर फिलहाल जयललिता नए मिले गौरव का लुत्फ उठा रही हैं. जैसा कि एक उम्मीदवार कहते हैं, "मैंने पहले कभी उन्हें इस कदर जीवंत नहीं देखा." बहरहाल, सुरक्षा कारणों से वे अपने पाएस गार्डन निवास में ही बंद रहीं. यह दूरियां बनी रहीं तो अंततः महंगी साबित हो सकती हैं.

—आनंद विश्वनाथन

पांडिचेरी

कुल सीटें: 30; चुनाव हुए: 30;
इंका: 15; अन्ना द्रमुक: 6; द्रमुक: 4; अन्य: 5.

लहर का असर

तमिलनाडु की लहर पांडिचेरी में भी चल निकली. इका-अन्ना द्रमुक गठजोड़ ने 30 सदस्यीय विधानसभा में 21 सीटों पर कब्जा कर लिया. विपक्षी खेमा भरभराकर औंधे मुंह गिरा. 18 सीटों पर लड़ी द्रमुक महज चार स्थान बटोर पाई. बदतर तो यह कि पार्टी के पूर्व मुख्यमंत्री डी. रामचंद्रन समेत उनके सभी मंत्री हार गए. लगता है कि द्रमुक को यहां भी एलटीटीई से अपने संपर्कों का नुकसान उठाना पड़ा.

रामचंद्रन इस हार के लिए सहानुभूति लहर को दोषी ठहराते हैं. उन्होंने कहा, "राजीव की हत्या और चुनावों के स्थगन का नतीजों पर निश्चय ही असर पड़ा है." मगर प्रदेश इंका अध्यक्ष षणमुगम की हार ने पार्टी को परेशानी में डाल दिया है. षणमुगम मुख्यमंत्री पद के दावेदार थे. उनके चारों खाने चित हो जाने से प्रदेश इंका में उत्तराधिकार की जबरदस्त जंग छिड़ गई. जीत आखिर पूर्व मंत्री वी. वैद्यलिंगम की हुई लेकिन पांडिचेरी के तख्त पर काबिज होने की यह लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है.

वैद्यलिंगमः लड़ाई जारी

इंका की जीत कुछ हद तक सहानुभूति लहर और जयललिता के बहुचर्चित करिश्मे की वजह से तो हुई ही पर यह द्रमुक-जनता दल साझा सरकार के खिलाफ जनादेश भी था. अब इंका को यह सबक याद रखना होगा क्योंकि सहानुभूति लहर हमेशा ही नहीं रहने वाली.

—कविता शेट्टी

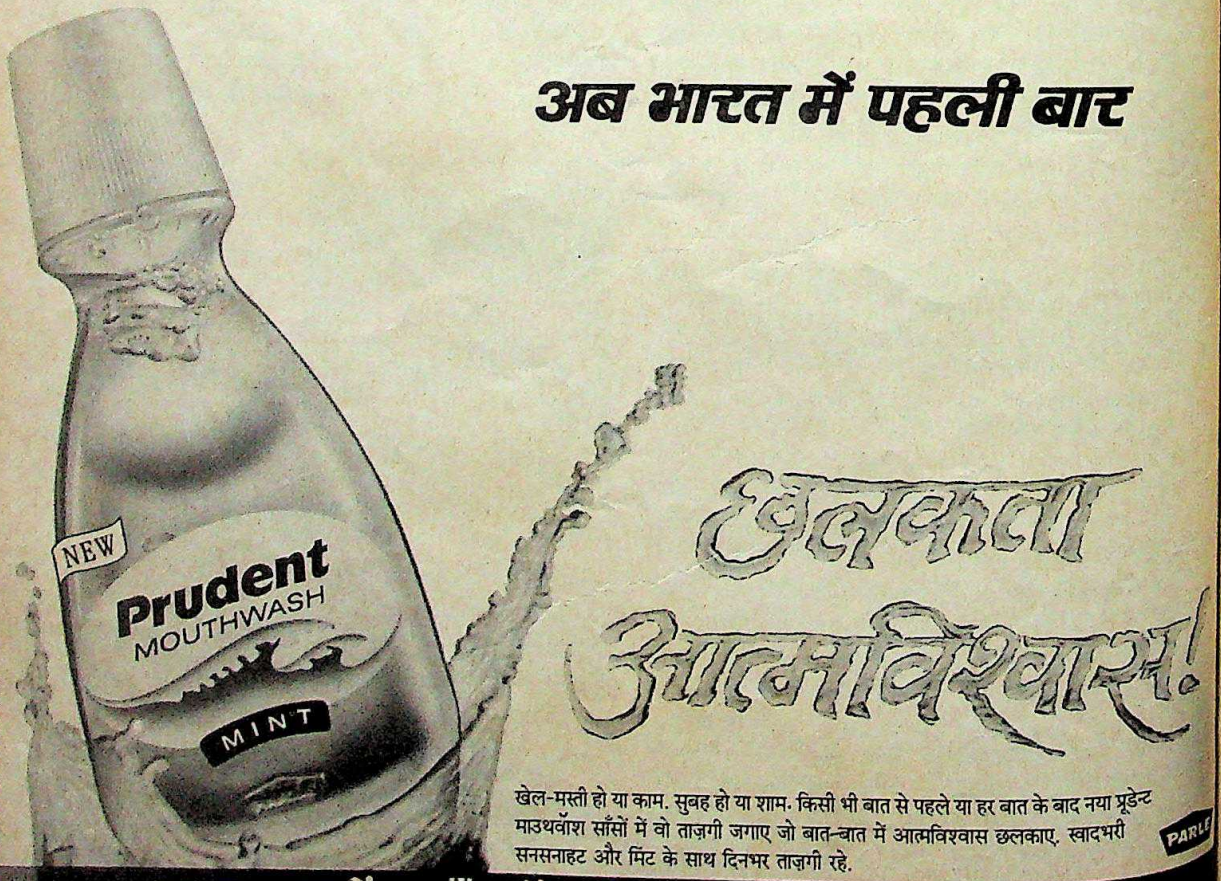

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मेरा अपना घर'
होने का अद्भुत अहसास!

बेसिक होम 225, साउथसिटी लखनऊ

आप भी साउथसिटी, लखनऊ, में अपना घर बुक कराएं– केवल 22,500 रु. में

आपके सपनों में रचने-बसने वाला घर अब तेजी से साउथसिटी, लखनऊ, में विकसित हो रहा है। साउथसिटी! रायबरेली रोड पर स्थित (हज़रतगंज से केवल 10 मिनट की दूरी पर) स्वयं में पूर्ण मिनीसिटी। छावनी, पी जी आई और डॉ. अम्बेडकर विश्वविद्यालय के निकट।

हरी-भरी और ऊंची 300 एकड़ से अधिक भूमि पर स्थित साउथसिटी अपनी अत्याधुनिक सुविधाओं से आपकी जीवनशैली को एक नई शान से भर देगी। तेजी से पूर्ण हो रही इस मिनीसिटी में आप अपनी पसंद के अनुसार प्लॉट या घर खरीद सकते हैं। वो भी नाममात्र अग्रिम राशि दे कर। शेष राशि आसान और ब्याज मुक्त किस्तों में चुकाने की सुविधा। अगर आप चाहें तो लंबी अवधि के एच डी एफ सी या जीवन बीमा निगम आवासीय और वित्त ऋण से भी चुका सकते हैं।

अब तो आप भी मान गए होंगे कि अपने सपने को साकार करने का इससे बेहतर उपाय नहीं। इसलिए देरी न करें, आज ही यूनिटेक से संपर्क करें।

UNITECH LIMITED

58, हजरतगंज, पहली मंज़िल, साहू सिनेमा की बगल में, लखनऊ-226001. फोन : 233535.

Arms Bozell/UL/12/6/91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

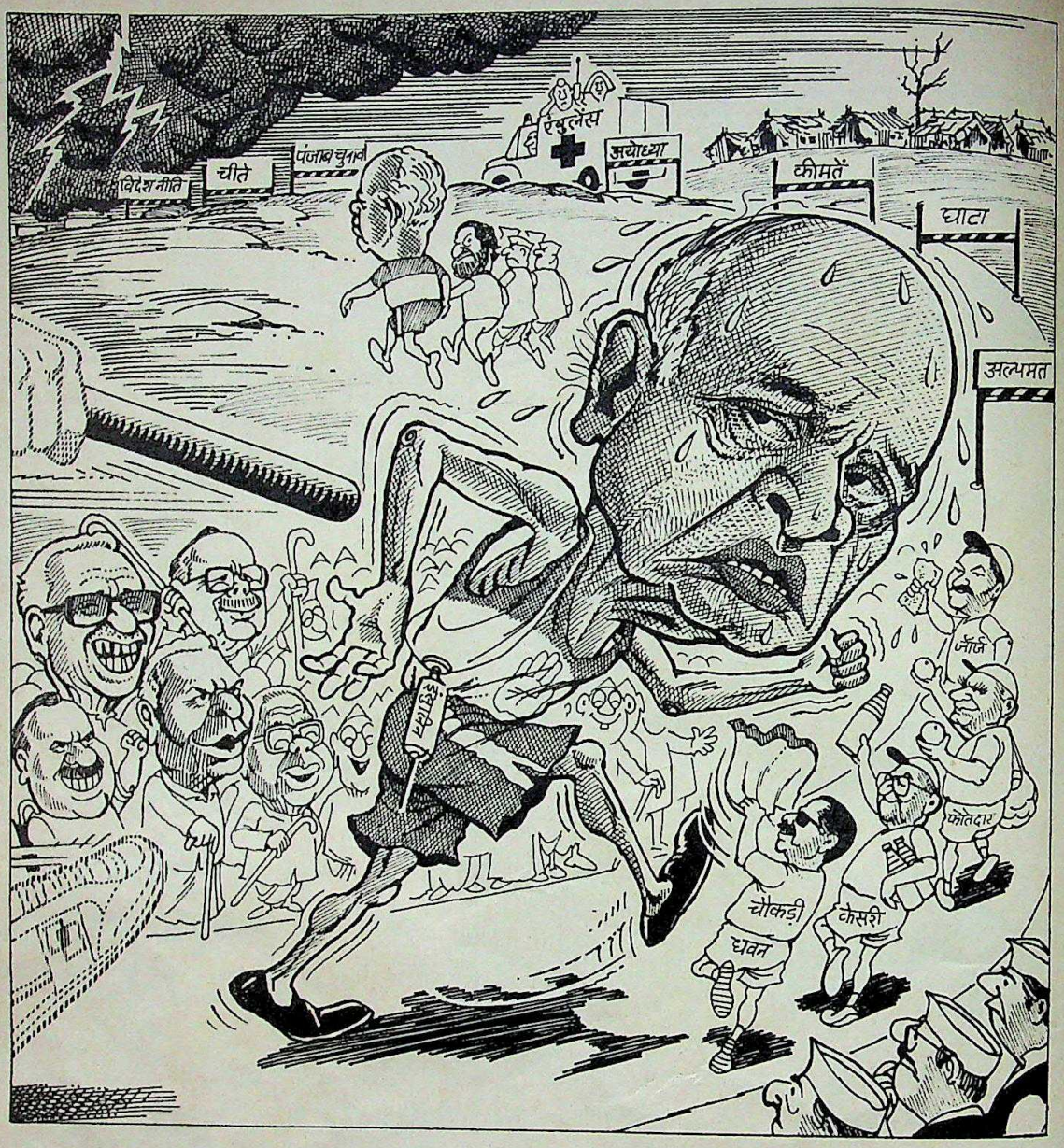

सनद रहे

सम्मान मिलाः राजीव गांधी और **सरदार वल्लभभाई पटेल मरणोपरांत भारत रत्न से** सम्मानित किए गए. राजीव को यह सर्वोच्च नागरिक सम्मान 21वीं सदी की उनकी

कल्पनाशीलता के लिए मिला जबकि सरदार पटेल 562 शाही रियासतों को भारत संघ में मिलाने के लिए सम्मानित किए गए.

निधन हुआः धनबाद के माफिया सरगना और बिहार में आरा लोकसभा सीट से सजपा उम्मीदवार 48 वर्षीय **सूरजदेव सिंह** की मृत्यु हो गई. पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के करीबी सूरजदेव ने अंतिम सांस बलिया में ली जहां वे बूथ लूटने का बंदोबस्त करने गए थे.

सजा मिलीः अमेरिका में हरे कृष्णा संप्रदाय के **अगुआ कीर्तानंद स्वामी भक्तिपाद** को लाखों डॉलर मूल्य के एक गैरकानूनी उद्यम को बचाने में हत्या की मंजूरी देने के लिए अमेरिका में 30 साल जेल की सजा दी गई. वे वेस्ट वर्जीनिया में हरे कृष्णा मंदिर से जुड़े एक प्रमुख नेता हैं.

प्रतिबंध लगाः पाकिस्तान ने एम.जे. अकबर की 'कश्मीरः बिहाइंड द वेल', जिसमें जिन्ना की नाकामी का जिक्र है, पर पाबंदी लगा दी.

निधन हुआः प्रख्यात हिंदी साहित्यकार डॉ. **प्रभाकर माचवे** का दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया. कई भाषाओं के जानकार डॉ. माचवे ने हिंदी के 10 उपन्यासों, और 5 कविता संग्रहों समेत 100 से भी अधिक किताबें लिखीं. उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार भी मिला.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक और बैंक गया घाटे में

हालांकि ज्यादातर राष्ट्रीयकृत बैंकों ने मार्च 1991 में खत्म होने वाले वित्त वर्ष में मुनाफा कमाया है पर शायद घाटा उठाने वालों की सूची में एक नाम और जुड़ जाए. एक साल पहले 90 लाख रु. का मुनाफा दर्शाने वाला पंजाब ऐंड सिंध बैंक घाटे के गर्त में गोता लगा गया है. इसी के साथ यह 1989-90 में 54.59 करोड़ रु. का घाटा दर्शाकर पूरे उद्योग को हिला देने वाले यूको बैंक और न्यू बैंक ऑफ इंडिया (एनबीआई) की कतार में शामिल हो गया है. पिछले महीने इसने रिजर्व बैंक से अपना स्थिति विवरण 30 जून की समय-सीमा के बाद पेश करने की इजाजत मांगी और उसे यह इजाजत मिल भी गई. इसके अलावा जिस एक और बैंक ने ऐसी राहत के लिए अर्जी दी वह था एनबीआई. 1989-90 में इसका घाटा 9.89 करोड़ रु. था. इस साल यह घाटा 12 करोड़ रु. के आसपास रहने की आशंका है.

नए कंप्यूटरों का बड़ा बाजार

भारत का कंप्यूटर उद्योग अब वर्क स्टेशंस के निर्माण पर ही सारा जोर दे रहा है. ये जोरदार क्षमता वाले सस्ते मेजी कंप्यूटर होते हैं. मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी के आंकड़ों के अनुसार इन कंप्यूटरों को 95 करोड़ रु. का बाजार फिलहाल सबसे तेजी से फैलने वाला बाजार है. इसलिए हैरत की बात नहीं है कि सन माइक्रोसिस्टम, कंप्यूटरविजन, सिलिकॉन ग्राफिक्स, हैवलेट पैकर्ड और डिजिटल इक्विपमेंट कार्पोरेशन जैसे दुनिया के बड़े-बड़े धुरंधर अपने भारतीय सहयोगियों के साथ इस बाजार का ज्यादा से ज्यादा हिस्सा हासिल करने के लिए जुटे हुए हैं. फिलहाल इस बाजार की अगुआई एचसीएल के पास है जिसके वर्क स्टेशन के डोमेन शृंखला की बिक्री 1990-91 में 35 करोड़ रु. पहुंच गई जो एक साल पहले 28 करोड़ रु. थी. पर इस बाजार में सबसे ज्यादा तरक्की बंगलूर की विप्रो इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी लिमिटेड के सब वर्क स्टेशन की हुई.

दूर हुई मुद्रा की कमी

नकदी की तंगहाली में फंसे बैंकों को अब कुछ राहत मिली है. नकदी प्रबंधन के वास्ते 60 दिन तक सिर धुनने के बाद अब अल्पकालिक मांग मुद्रा बाजार की दरें नीचे आने लगी हैं. मध्य जून में ये दरें 30-35 फीसदी तक गिर गई. वजह यह है कि साझा कोषों में निष्क्रिय पड़ी रकम मांग मुद्रा बाजार में आ गई है. नए पूंजी निर्गम के अभाव में इन कोषों के प्रबंधकों ने अभिभावक बैंक को कर्ज देना शुरू किया जो इसे आसमान पर चढ़े मांग मुद्रा बाजार में लगा देंगे.

सिंगापुर एअरलाइंस का वजीफा

विदेशी कंपनियों के लिए अपनी साख बनाने और शुभ-चिंतक वाली छवि उभारने का सस्ता और प्रभावशाली तरीका है वजीफे देना. जापान की हिताची और हॉलैंड की फिलिप्स इस कला में अग्रणी रही हैं. जापान की एक और धुरंधर कंपनी फूजित्सू व्यापार में लगे भारतीयों को वजीफे देती है. अब सिंगापुर एअरलाइंस भी भारतीय युवकों को वजीफे देकर मैदान में उतर पड़ी है. वह दो साल के लिए 20,000 सिंगापुरी डॉलर (तकरीबन 2.6 लाख रु.) के 20 वजीफे देगी. मकसद यह है कि भारत में एक दल ऐसा बनाया जाए जो सिंगापुर एअरलाइंस और सिंगापुर के लिए वफादार हो.

ये तो होना ही था

भारत के आर्थिक योजनाविदों की दिक्कत हमेशा ही बहुत सीधी-सादी रही है—सामाजिक न्याय का काम रोके बगैर विकास की जरूरत को कैसे पूरा किया जाए. पर दक्षिणपंथी हमेशा ही मानते रहे हैं कि रोटी पकाने के तरीके का फैसला किए बिना इसके बंटवारे के कानून बनाना व्यर्थ है. जेनेवा के संगठन वर्ल्ड इकॉनॉमिक फोरम ने अंतरराष्ट्रीय

चार्ट: बी.के. शर्मा

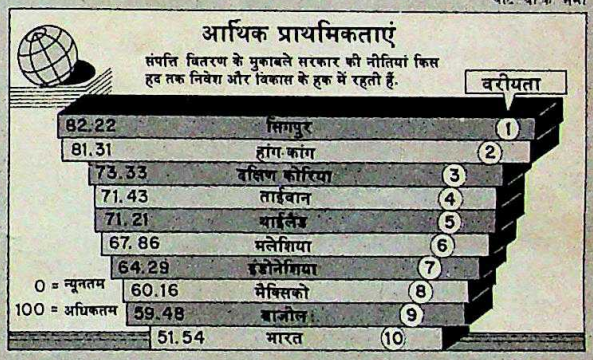

औद्योगिक अग्रणियों का हाल ही में एक सर्वेक्षण करवाया जिसमें आर्थिक प्राथमिकताओं के लिहाज से भारत सबसे नीचे (देखें चार्ट) था. फोरम की 'वर्ल्ड' कंपटीटिवनेस रिपोर्ट-1991 के अनुसार भारत की आर्थिक नीतियां निवेश और विकास के बजाए संपत्ति के वितरण की तरफ ज्यादा झुकी हुई हैं.

कंपनी ने खोली कंपनी

सिटीबैंक एनए की अमेरिकी अभिभावक कंपनी सिटीकार्प की सांताक्रुज इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात संसाधन क्षेत्र में स्थित सिटीकार्प ओवरसीज सॉफ्टवेयर लिमिटेड (सीओएसएल) ने बंगलूर में सिटीकार्प इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी इंडस्ट्रीज लिमिटेड (सीआईटीआईएल) कंपनी स्थापित की है. नई कंपनी की 40 फीसदी हिस्सेदारी सीओएसएल के पास रहेगी पर उसके अधिकारियों ने अभी तक यह नहीं बताया कि बाकी हिस्सेदारी किसके पास होगी. नई कंपनी स्थानीय बैंकिंग क्षेत्र के लिए कंप्यूटर सॉफ्टवेयर तैयार करेगी. सीओएसएल और बाहर के कंप्यूटर पेशेवरों की अगुआई वाली इस कंपनी ने काम शुरू कर दिया है. 50 पेशेवर लोग इससे जुड़ गए हैं और वे भारतीय यूनिट ट्रस्ट पूंजी बाजार शोध संस्थान के लिए काम कर रहे हैं. बंगलूर इकाई को भी 6 करोड़ रु. का निर्यात का ऑर्डर मिला.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग मैना का नया किस्सा

पान किंग® पान मसाला

हर लब की शाही तलब

सादा

गुटखा

वैधानिक चेतावनी : तम्बाकू चबाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

मै० एम० आर० कम्पाऊन्डस एण्ड एलाईड़. प्रोडक्ट्स (प्रा०) लि०

फैक्ट्री: देवी रोड़, मैनपुरी (उ० प्र०) रजि० आफिस: 1/33 राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- 110060

सी० एण्ड एफ० एजेन्ट: विजय सेल्स कार्पोरेशन 6377, नया बांस, दिल्ली- 6 फोन: 239696

90/117

Tramcoir

डोर मैट्स

ट्रैमकॉयर उपयोग कीजिये. मिट्टी-धूल पोंछ डालिये. रबर के सहारे वाले, ज्यादा लचीले डोरमैट्स. 60 से भी ज्यादा आकर्षक डिज़ाइनों और रंगों में उपलब्ध. आपकी हर सजावट के अनुरूप इनके रंग-रूप.

साथ ही * मैटिंग रोल्स. * कार मैट्स.

कर्ल-ऑन के सारे डीलरों के यहाँ उपलब्ध.

Karnataka Consumer Products Ltd.

Offices & Showrooms: NEW DELHI: No. 3/3, Desh Bandhu Gupta Road, Pahar Ganj, Ph: 772019; 1764, Partap Street, Chuna Mandi, Pahar Ganj, Ph: 732133; **KANPUR:** 109/375, R.K. Nagar, G.T. Road, Ph: 24172; **FARIDABAD:** Sector 16-A, No. 375; **BHOPAL:** 26, Mangal Sadan, Anekant Nagar, Jahangirabad, Ph: 67874; **RAIPUR:** 88, New Textile Market, Panderi, Ph: 26939; **PATNA:** Road No. 6-A, Dayal Mansion, Rajendra Nagar, Near Rajendra Nagar Hospital, Ph: 57911; **CHANDIGARH:** (C&F) M/s. Garg Enterprises, SCO. 3028, Sector 22-D, Ph: 29203/44424 (P. P.).

प्रतिनिधि रहित क्षेत्रों के लिये डीलरशिप की पूछताछ का स्वागत है।

MASS/TC-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

खुशी बरकरार

इंका सरकार से उत्साह बढ़ा

पिछले पखवाड़े देश के शेयर बाजारों पर इंका को पूर्ण बहुमत न मिलने का कोई बुरा असर नहीं पड़ा बल्कि माहौल उत्साहजनक था. आम तौर पर माना गया कि इंका सरकार और पी.वी. नरसिंह राव का प्रधानमंत्री बनना देश के आर्थिक और वित्तीय संकट को देखते हुए सही कदम है. ज्यादातर सूचकांकों से यही संकेत मिलता है. निवेशक बाजारों में लौटने लगे हैं. 20 जून को मुंबई शेयर बाजार (मुंशेबा) का 30 शेयरों वाला संवेदनशील सूचकांक 1991 की नई बुलंदी पर जा पहुंचा. 1336.75 पर बंद होने से पहले यह 1341.58 पर पहुंच गया था. अगले दिन मंत्रिमंडल के शपथ ग्रहण के बाद मुंशेबा का यह सूचकांक 1361.7 तक ऊपर उठ गया. हालांकि प्रणब मुकर्जी को शामिल नहीं किया गया लेकिन शेयर बाजार के लिए खुशी की बात यह थी कि मनमोहन सिंह को मंत्री बनाया गया था. इकॉनॉमिक टाइम्स का साधारण शेयर मूल्य सूचकांक भी 21 जून को 6.9 अंकों की वृद्धि पाकर 665.6 पर बंद हुआ.

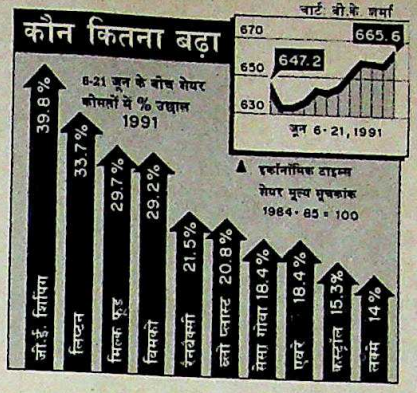

ज्यादातर बड़े शेयर चढ़ गए. नई सट्टेबाजी के आधार पर टेल्को का मूल्य 238.25 रु. से बढ़कर 248.75 रु. हो गया. शेयर बाजार के बाहर दलालों ने तो इसे 250 रु. तक उठा दिया. टाटा स्टील भी 5.5 रु. की वृद्धि पाकर 194 रु. पर बंद हुआ. रिलायंस इंडस्ट्रीज ने एक दिन में 1.50 रु. की बढ़त पाकर 154 रु. की बुलंदी पाई जबकि बाजार के बाहर इसे और बढ़त मिली. मगर लार्सन एंड टुब्रो 4 रु. का घाटा खाकर 112 रु. पर जा टिका. नकदी शेयरों की चाल अमूमन नियमित रही और उन्हें मामूली फायदा मिला जबकि बड़ी निर्यातोन्मुख कंपनियों को भी कुछ लाभ हासिल हुआ. महत्वपूर्ण बात यह है कि आशावादी लोग, जो संख्या में फिलहाल निराशावादियों से ज्यादा हैं, भविष्यवाणी कर रहे हैं कि शेयर बाजार में अभी और तेजी आएगी जिससे मुंशेबा का सूचकांक 1,500 की बुलंदी पर जा सकता है.

लेकिन यह सही है कि विभिन्न साझा कोषों की शेयरों से जुड़ी बचत योजनाओं, शेयरों और परिवर्तनीय ऋणपत्रों के आधार पर जुटाई गई 700 करोड़ रु. से अधिक रकम होने से कुछ ही शेयरों पर बहुत ज्यादा लाभ मिलने के कारण मंदी वाले व्यवसायों का अतिरिक्त पैसा भी शेयर बाजारों में पहुंच गया है जिससे शेयरों की मांग बहुत बढ़ गई है. भारतीय यूनिट ट्रस्ट के अध्यक्ष एस.ए. दवे कहते हैं, "हाल ही में निवेश पर सबसे ज्यादा लाभ शेयर बाजारों में मिला है."

मुंशेबा के सूचकांक का सुरक्षित स्तर 1,200 अंक मान लें तो लगता है बाजारों में खुशहाली बनी रहेगी, कम-से-कम इस साल की पहली छमाही तक, जब कंपनियों के परिणाम आने लगेंगे.

जमा स्टॉक

	1991 ऊंचा	1991 नीचा	1991 बंद 21.6.91	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	162.50	109.00	149.00	1.00 –
एमो.मोमेंट	2780.00	1300.00	2625.00	50.00 +
एशियन पेंट्स	267.50	215.00	242.50	6.25 +
एटलस कोप्को	89.00	42.00	73.00	1.00 +
बजाज ऑटो	680.00	500.00	615.00	20.00 +
बड़ौदा रेयॉन	630.00	400.00	515.00	40.00 +
बाटा इंडिया	93.00	72.00	82.00	3.00 +
बल्लारपुर	309.00	228.00	280.00	9.00 +
बिरला जूट	293.00	168.00	280.00	11.00 +
ब्लो प्लास्ट	145.00	40.00	145.00	25.00 +
बांबे डाइंग	245.00	150.00	225.00	15.00 +
सिटा.इंडिया	152.00	112.00	142.00	1.00 +
कैडबरी इंडिया	152.00	116.00	140.00	1.00 +
कैप्टोल इंडिया	187.50	132.50	161.25	3.25 +
कंट्री टेक्सटाइल्स	335.25	162.50	330.00	20.00 +
कोलगेट पामो.	5425.00	3625.00	5380.00	200.00 +
कामनामिड.	338.75	250.00	303.75	3.75 –
सीमोएम	142.50	76.25	132.50	3.75 +
दनलप	300.00	123.00	215.00	3.50 +
डेक्कन होटल्स	61.00	46.50	58.00	3.50 +
एफकाईस	52.00	35.00	40.00	3.00 +
फिनो. केबल्स	172.00	127.00	152.00	–
गोदरेज नाइसोन	260.00	140.00	232.50	12.25 +
जी.ई. सिरिंग	43.75	27.00	29.00	1.00 –
गुजरात स्टेट फर्ट.	58.00	25.00	58.00	16.50 +
हिंदुस्तान इंडिया	217.50	150.00	203.75	6.25 +
गुजरात अंबुजा	261.00	167.50	257.50	13.50 +
हिंदु.एल्यु.	180.50	90.00	177.50	13.50 +
हिंदु.लीवा	277.50	200.00	262.50	1.25 +
हिंदुस्तान लीवर	1300.00	650.00	1180.00	10.00 –
हिंदुस्तान मोटर्स	180.00	140.00	167.50	9.50 +
हेक्ट	25.75	18.80	22.70	1.00 +
आईसीआई	3650.00	2450.00	2450.00	350.00 –
इंडियन ऑर्गेनिक	57.00	30.00	54.50	0.50 +
	47.50	30.00	38.50	0.50 +
इंडियन रेयॉन	137.50	162.50	330.00	20.00 +
इंगरसॉल-रैंड	385.00	240.00	315.00	5.00 +
आईटीसी	170.00	99.00	165.50	0.50 –
जे.के.सिथेटिक्स	42.00	27.00	32.50	0.50 +
काइनेटिक इंजी.	190.00	150.00	172.50	7.50 +
किर्लो. क्युमिस	156.25	95.00	135.00	4.00 +
केएसबी पंप्स	225.00	160.00	195.00	–
लार्सन-टुब्रो	140.00	90.00	114.50	4.50 +
लिप्टन	135.00	57.50	131.00	33.00 +
लोहिया-मशीन्स	37.50	21.00	25.00	2.00 +
महिंद्रा-महिंद्रा	82.50	60.00	71.25	–
मास्टरशेयर्स	38.00	20.00	35.50	0.50 –
मोटर इंडस्ट्रीज	1350.00	675.00	1310.00	115.00 +
मुकुंद लिमि.	215.00	155.00	163.75	2.50 +
नेशनल आर्गे.	1400.00	925.00	1200.00	10.00 +
नेस्ले इंडिया	152.50	111.25	140.00	2.00 +
निरलॉन	25.00	16.00	21.50	1.00 –
ओरके सिल्क मि.	34.25	17.50	29.25	3.50 +
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	95.00	53.00	72.50	1.50 +
प्रीमियर ऑटो	57.00	30.00	46.00	0.50 –
रेमंड	180.00	110.00	161.50	0.50 –
रिकीट-कोलमैन	277.00	205.00	268.00	4.00 +
रिलायंस इंडस्ट्रीज	163.75	91.25	154.00	12.50 +
सीमेंस इंडिया	151.00	112.50	140.00	7.50 +
शॉ वैलेस	123.00	77.00	123.00	4.00 +
श्रीराम फाइबर्स	44.00	33.00	43.00	0.25 +
एसकेएफ बेय.	2825.00	1650.00	2275.00	150.00 –
स्पिक	65.00	33.00	60.00	2.50 +
टाटा स्टील	197.00	170.00	194.00	20.50 +
टेल्को	255.00	142.50	248.75	26.25 +
टाइटन वाचेस	93.75	58.00	83.00	0.50 +
वाम ऑर्गेनिक	171.25	102.50	166.25	9.75 +
वीडियोकॉन	285.00	180.00	197.50	7.50 –
वोल्टास	125.00	92.50	120.00	–
विमको	31.50	16.00	31.00	7.00 +

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	16.1864	16.0189
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	168.5477	166.4263
बहरीन	दीनार	1	56.3469	54.7947
बांग्लादेश	टका	100	60.6193	59.7902
कनाडा	डालर	1	18.5504	18.3672
डेनमार्क	क्रोना	1	3.0698	3.0382
मिस्र	पौंड	1	6.5189	6.4375
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.5524	3.4662
जर्मनी	मार्क	1	12.0773	11.7786
हांगकांग	डालर	1	2.7440	2.7174
इंडोनेशिया	रुपिया	100	1.0926	1.0735
ईरान	रियाल	100	–	–
इटली	लीरा	100	1.5918	1.6720
जापान	येन	100	15.4799	15.1057
केन्या	शिलिंग	1	0.7439	0.7364
कुवैत	दीनार	1	72.3087	69.9545
मलेशिया	डालर	1	7.6093	7.5347
मारीशस	रुपया	1	1.2626	1.2359
नेपाल	रुपया	1	0.7395	0.7300
हालैंड	गिल्डर	1	10.5144	10.4047
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8809	0.8654
सिंगापुर	डालर	1	11.9078	11.7888
स्पेन	पेसो	1	0.1877	0.1858
श्रीलंका	रुपया	1	0.5160	0.5086
स्वीडन	क्रोना	1	3.2768	3.2424
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	13.7726	13.6337
तंजानिया	शिलिंग	1	0.0925	0.0912
थाईलैंड	बहत	100	83.4112	81.6590
ब्रिटेन	पौंड	1	34.6681	34.4175
अमेरिका	डालर	1	21.1864	20.9864
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	5.7713	5.7121
सोवियत संघ	रूबल	1	22.7870	22.7847

स्रोत: बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 20.6.91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीलंका

हाथ से बाहर जाते हालात

सरकार पूरी सैनिक ताकत झोंकने के बावजूद एलटीटीई पर काबू नहीं कर पा रही, वार्ता की झांसेबाजी भी जारी

देश के उत्तर-पूर्व में सेना और एलटीटीई के बीच जारी भीषण युद्ध से उपजे जोरदार झटकों ने एक बार फिर राजधानी कोलंबो को कंपा दिया. इसमें कम-से-कम 40 लोगों की जानें गईं और थलसेना, नौसेना तथा वायुसेना का उच्च सुरक्षा वाला संयुक्त कमान मुख्यालय तहस-नहस हो गया. विस्फोटकों से भरी एक वैन को आत्मघाती दस्ते के दो व्यक्तियों ने सुबह भीड़-भाड़ वाले समय में दफ्तर के मुख्य प्रवेश द्वार से भिड़ा दिया. इस भारी विस्फोट से एलटीटीई ने वावुनिया और त्रिकोमाली में सरकारी फौजों द्वारा किए नुकसान का बदला ले लिया.

एलटीटीई ने इससे यह भी संकेत दे दिया कि अगर उन पर दबाव बढ़ा तो वे सरकार की ठीक नाक के नीचे कोलंबो में वार कर सकते हैं. इस आत्मघाती विस्फोट ने राजीव गांधी की हत्या की जांच कर रहे भारतीय अधिकारियों के लिए भी कुछ महत्वपूर्ण संदेश दिए. एक बार फिर एलटीटीई ने विस्फोटकों के मामले में अपनी विशेषज्ञता और आत्मघाती कार्रवाई में अपने कार्यकर्ताओं के बलिदानी तेवर को दिखा दिया है.

विडंबना यह है कि एलटीटीई से लड़ने के मकसद से बनाए गए संयुक्त कमान मुख्यालय की दोमंजिली इमारत सुरक्षा के ताम-झाम की मर्मस्थली थी. अब इसकी क्षत-विक्षत हालत उस भय की प्रतीक बन गई है जो कोलंबो में तारी है. इसके पहले दो बड़े विस्फोट हो चुके हैं. एक 1987 में पेट्टा में शाम के व्यस्ततम घंटों में जिनमें करीब 100 लोग मारे गए थे और दूसरा इस साल मार्च में जिसमें रक्षामंत्री रंजन विजेरत्ने समेत 40 लोग मौत के घाट उतार दिए गए थे.

लेकिन इस बार का विस्फोट सबसे खतरनाक था जिसमें कम-से-कम 50 मकान और 20 कारें क्षतिग्रस्त हो गईं. विस्फोट स्थल पर इतना भारी गड्ढा हो गया कि उसमें पानी निकल आया. अधिकारियों का कहना है कि कम-से-कम 75 किलो प्लास्टिक विस्फोटक का इस्तेमाल किया ही गया होगा. संपत्ति का नुकसान तो हुआ ही, विस्फोट के समय सेना के कुछ बड़े अधिकारी भी इमारत में मौजूद थे. सेना कार्रवाई के निदेशक, ब्रिगेडियर तिलक प्राणागम को मलबा गिरने से चोट लगी.

लेकिन उत्तरी जाफना इलाके में सुरक्षाबलों के कमांडर, ब्रिगेडियर विजय विमलरत्ने मुख्यालय में दाखिल होने ही वाले थे कि धमाका हुआ. वे सीधे सेना मुख्यालय को खबर करने और अग्निशमन दल और एंबुलेंस को फोन करने रवाना हो गए. प्रधानमंत्री विजेतुंगे को यह सोचकर जरूर दहशत हुई होगी कि उनका घर सिर्फ 100 मीटर दूर है.

विस्फोट में तमिल उग्रवादियों का हाथ होने का कोई ठोस सबूत तो नहीं था पर राष्ट्रपति के अंतरराष्ट्रीय मामलों के सलाहकार ब्रैडमैन वीराकुन ने इसे 'अलगाववादी आतंकवादियों' का काम करार दिया. लेकिन खुफिया सूत्रों का कहना था कि इसमें एलटीटीई का ही हाथ हो सकता है क्योंकि कोलंबो पर हमले के उनके पास वजहें हैं. अपने कार्यकर्ताओं के मनोबल बढ़ाने के लिए उसे कुछ ठोस करना

सैनिक मुख्यालय पर आत्मघाती हमलों से एलटीटीई की विस्फोटकों के मामले में विशेषज्ञता और उसके कार्यकर्ताओं की दृढ़ता का पता चलता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो श्याम टेकवानी

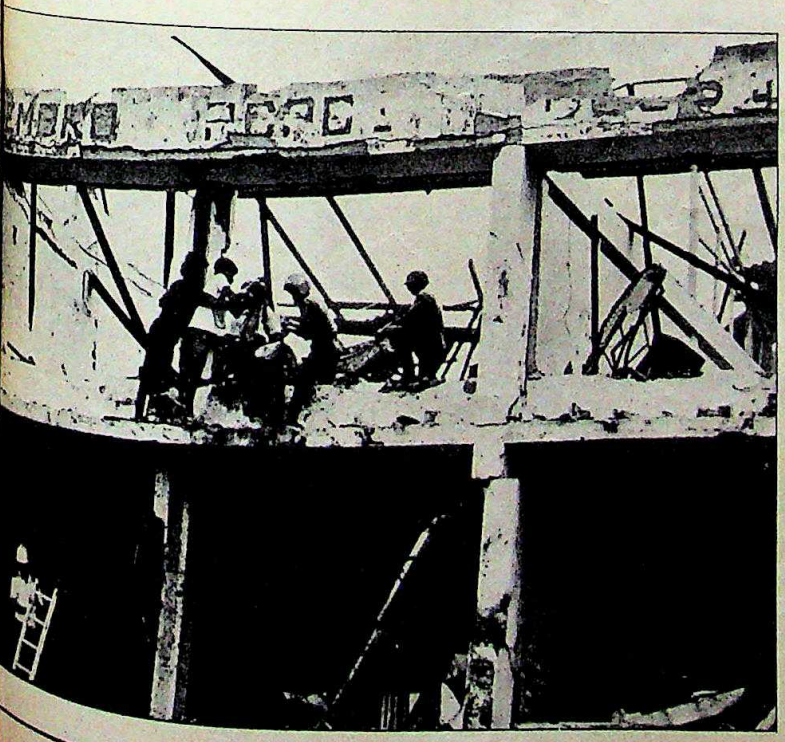

विस्फोट के बाद; (नीचे) तहस-नहस बैरक; और विस्फोट स्थल पर विजेतुंगे

करना जरूरी था क्योंकि वह श्रीलंकाई सेना के हाथों बुरी तरह पिट गई थी. सेना ने वावुनिया के उत्तरी इलाकों में 15 जून से हफ्ते भर चले ऑपरेशन 'वन्नी विकरामा' के दौरान पूर्व में उसके शिविरों को रौंद दिया था.

ऑपरेशन 'वन्नी विकरामा' का मकसद वावुनिया और उत्तर में मन्नार के बीच मुख्य सड़क पर नियंत्रण कायम करना था. पांच दिन की भीषण लड़ाई के बाद सेना ने वावुनिया से 20 किमी उत्तर में एलटीटीई के गढ़ परैयानाकुलम पर कब्जा कर लिया और 19 जून तक सप्लाई मार्ग काट दिया.

लेकिन श्रीलंकाई अधिकारी भी मानते हैं कि इस कब्जे को बनाए रखने या नए इलाकों पर कब्जा करने के लिए उनकी सेना की ताकत बहुत कम है. सेना की कुल संख्या 60,000 है. एलटीटीई के खिलाफ कुछ कार्रवाई कर पाने की मुख्य वजह यह है कि जनता विमुक्ति पेरामुना को नष्ट करने के बाद सरकार सेना की कई टुकड़ियां सिंहली इलाकों से हटा पाई थी. संयुक्त कमान मुख्यालय पर इस भारी हमले का मकसद दक्षिण में सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने के लिए उत्तरी इलाकों से फौज हटाने का दबाव बनाना भी हो सकता है. अधिकारियों को आशंका है कि सरकार के हवाई हमलों को मात देने के लिए एलटीटीई जमीन से हवा में मार करने वाली मिसाइलें हासिल करने की प्रक्रिया में है.

सेना और एलटीटीई के बीच इस लुकाछिपी के खूनी खेल में असली शिकार जाफना प्रायद्वीप के तमिल ही हो रहे हैं. सरकारी नियंत्रण वाले मिली-जुली आबादी के क्षेत्रों में लोगों को निरंतर कर्फ्यू झेलना पड़ रहा है और कई बार तो कर्फ्यू लगे हफ्तों बीत जाते हैं.

मसलन, जाफना चारों ओर से एकदम घिर गया है. खाद्य सामग्री और साइकिलें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

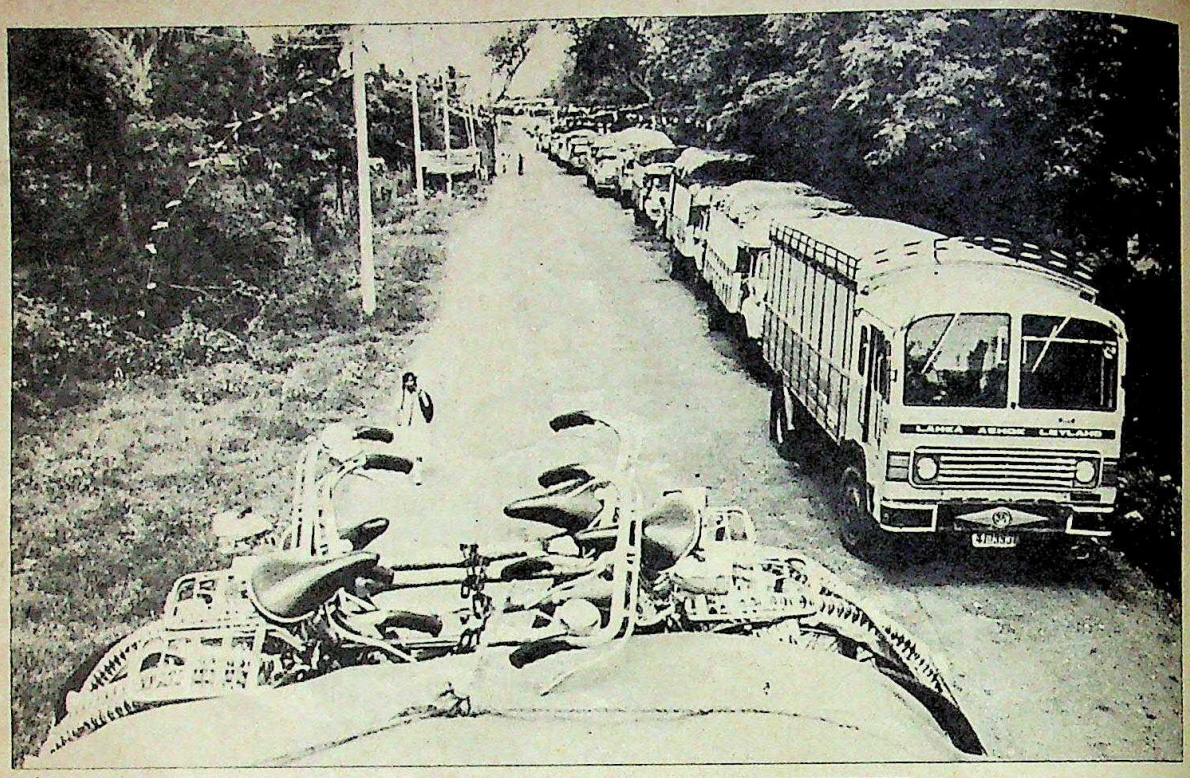

सेना द्वारा ट्रकों को वावुनिया में रोक लिए जाने से बेसहारा तमिलों को जरूरी जिंसें नहीं मिल रही हैं

जाफना के तमिलों को पेट्रोल और डीजल के अभाव में यातायात की एकमात्र साधन साइकिल 4,000 रु. में कोलंबो से मंगानी पड़ती है

लिए ट्रकों को वावुनिया में दो हफ्ते से अधिक तक सेना की मंजूरी के लिए रुके रहना पड़ता है. उत्तर में इन चीजों की बहुत मांग है. बदतर तो यह है कि वाहन चालकों को हर चौकी पर श्रीलंकाई अधिकारियों को घूस के साथ एलटीटीई द्वारा लगाए गए कर भी देने पड़ते हैं. जाहिर है, यह पैसा गरीब तमिलों की जेब से ही पूरा किया जाता है. कुछ जरूरी जिंसों के दाम आसमान छू रहे हैं. प्रायद्वीप में चावल 30 रु. किलो, चीनी 60 रु. किलो और किरासन तेल अगर हो तो 90 रु. लिटर से कम पर नहीं मिलता. लगभग साल भर से जाफना शहर को बिजली के बगैर ही गुजारा करना पड़ा रहा है. साइकिल की मौजूदा दर 4,000 रु. तक है क्योंकि यातायात के लिए यही एकमात्र उपलब्ध वाहन है. वावुनिया में हफ्ते भर से इंतजार कर रहे ट्रक ड्राइवर एस. पद्मनाभ कहते हैं, "यहां हमें रोज एक बार या दो दिन में एक बार भोजन करके ही काम चलाना पड़ रहा है."

इस बीच, पूर्व में कोक्काडिचोलै में तमिलों का हुआ नरसंहार श्रीलंकाई सेना के नाम पर बदनुमा दाग है. एक सुरंग विस्फोट में दो सैनिकों की मृत्यु के बाद बट्टिकलोआ जिले के महिलादितुवु, मुनाइकुडु और मुथालिकुडा गांवों में सेना ने जैसी तबाही की उसे देख विएतनाम के माई लाई नरसंहार की याद ताजा हो उठी है. ईपीआरएलएफ के सांसद के. प्रेमचंद्रन कहते हैं, "सेना ने ही कोक्काडिचोलै में पहला नरसंहार नहीं किया. एलटीटीई भी बेकसूरों की हत्याएं करती आ रही है. अब एलटीटीई और सेना में कोई फर्क नहीं रह गया है."

जाफना प्रायद्वीप की सप्लाई बंद कर देने पर कई सिंहली विपक्षी नेता भी मानते हैं कि इससे लोगों में अलगाव ही बढ़ेगा. श्रीलंका फ्रीडम पार्टी के नेता अनुरा भंडारनायके कहते हैं, "सरकार को एलटीटीई उग्रवादियों के सैन्य तंत्र को नष्ट करने में मामूली सफलता ही मिली है. उसे वास्तविक स्थिति का अंदाज नहीं है. अगर वह एलटीटीई के खिलाफ युद्ध जीत भी लेती है तो वह तमिल लोगों का दिल कतई नहीं जीत सकती जिन पर सबसे अधिक मार पड़ी है."

विडंबना यह है कि सरकार और एलटीटीई दोनों ही बातचीत के लिए तैयार रहने का संकेत दे रहे हैं. लेकिन सचाई यह भी है कि एलटीटीई पहले भी ऐसा संकेत थोड़ी मोहलत जुटाने के लिए ही देती रही है. इसलिए रक्षा मंत्रालय के कट्टरपंथी एलटीटीई की 'बिना शर्त बातचीत' को मात्र बहाना भर बताते हैं. एलटीटीई अभी भी इस बात पर अड़ी हुई है कि सरकार पहले तमिलों के आत्मनिर्णय के अधिकार को मान ले.

ब्रैडमैन वीराकुन कहते हैं कि सरकार की तीन पूर्व शर्तें हैं:

- एलटीटीई घोषणा करे कि राजनैतिक फायदे के लिए हथियारों का इस्तेमाल नहीं होगा.
- बातचीत में दूसरे राजनैतिक दलों की भागीदारी हो.
- एलटीटीई के नेता वेलुपिल्लै प्रभाकरन जरूर मौजूद रहें.

रक्षा मंत्रालय के कट्टरपंथियों की दलील है कि एलटीटीई की ओर से शांति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

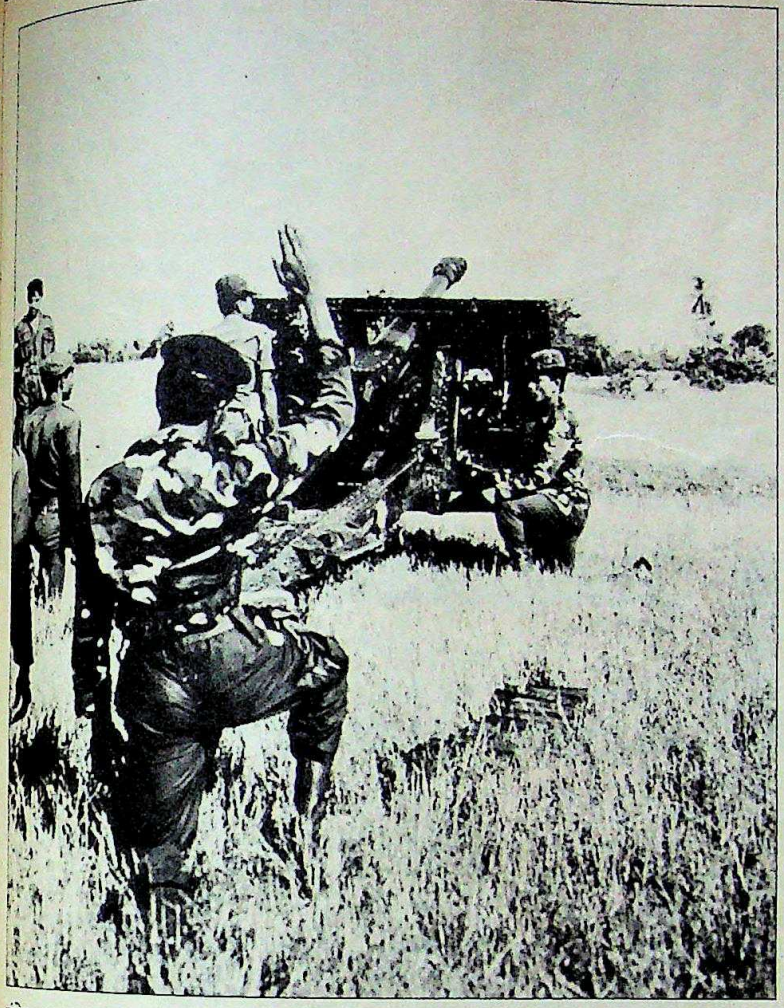

बेहतर प्रशिक्षण और मारक क्षमता के बावजूद सेना एलटीटीई को पछाड़ने में नाकाबिल है जिससे राष्ट्रपति प्रेमदास को वार्ता करने को विवश होना पड़ रहा है

संकेत महज ध्यान बटाने की रणनीति है. उनके मुताबिक वह सैनिक उपकरणों की भारी मात्रा में जब्ती हो जाने से थोड़ी मोहलत चाहती है. ये हथियार एलटीटीई के पणमुगम कुमारन के व्यावसायिक जहाज से पकड़े गए थे. बताया जाता है कि वे पाइंट पेडरो नामक संदिग्ध जहाजरानी कंपनी चलाते हैं. मलेशियाई अधिकारियों ने इस जहाज को जब्त किया था. इसमें पकड़े गए उपकरणों में—225 हार्सपावर के आउट बोर्ड इंजनों वाली एक स्पीडबोट, 175 हार्सपावर के 11 यामाहा इंजन, 15 तैराकी किट, चार जाइरो दिशासूचक यंत्र, 450 वॉकी-टॉकी, 1000 एंटेना सेट, 325 रेडियो ट्रांसरिसीवर बेस स्टेशन, दो मोबाइल संचार यंत्र, 43 दूरबीनें और विभिन्न तरह की 95,000 बैटरियां हैं.

सरकार 14 महीने पहले की बातचीत के दौर भी नहीं भूली है जो एलटीटीई द्वारा उत्तर-पूर्व में 14 थानों और सेना शिविरों पर हमले के बाद अचानक टूट गई थी. उसके बाद से लड़ाई में अब तक 7,000 जानें जा चुकी हैं और एलटीटीई को पूर्व से भागने पर मजबूर होना पड़ा है. 1,989 सैनिक गंवाने के कटु अनुभव के बाद अब सुरक्षा बल एलटीटीई को फिर संभलने की मोहलत नहीं देना चाहते.

लेकिन लगता है रक्षा मंत्रालय और राजनैतिक नेतृत्व में टकराव चल रहा है. खुद राष्ट्रपति रणसिंघे प्रेमदास समझौता वार्ता के विचार के विरोधी नहीं हैं. प्रेमदास अपनी विशेष शैली में कहते हैं, "मैं उन्हें इल्लम (सब कुछ) दे दूंगा पर ईलम (स्वतंत्र तमिल देश) नहीं दूंगा."

प्रेमदास की भी अपनी मजबूरियां हैं. सबसे पहली तो अर्थव्यवस्था है जिस पर युद्ध स्तर पर काम चल रहा है. इसके अलावा अंतहीन हिंसा और समुदायों के विस्थापन से उपजी सामाजिक त्रासदी की समस्या भी है. पर्यटन व्यवसाय, जो कुछ उम्मीद जगाने लगा था, विस्फोट के बाद अब मुश्किल में फंस गया है.

और फिर, राष्ट्रपति की यह मंशा भी है कि जातीय संकट को हल करके वे अपना नाम इतिहास में दर्ज कर लें. उन्हें एहसास है कि उनकी सेना की कुछ सीमाएं हैं. वे भारतीय मदद लेना नहीं चाहते. सो, उनके पास समझौता वार्ता ही एकमात्र रास्ता बचता है.

चतुर प्रेमदास जानते हैं कि एलटीटीई इस समय भारी दबाव में है. उनकी सेना को कुछ सफलता हाथ लगी है और राजीव हत्याकांड में हाथ होने की संभावना के मद्देनजर एलटीटीई विश्व भर में तिरस्कार का पात्र बन गई है. सबसे महत्वपूर्ण यह है कि तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता ने राज्य से एलटीटीई को निकाल बाहर करने का दृढ़ संकल्प दुहराया है. इस पनाहगाह में जाना अब उनके लिए आसान नहीं रहेगा.

कोलंबो के पुराने अनुभव के मद्देनजर प्रेमदास एलटीटीई पर हमला जारी रखने के साथ-साथ बातचीत के संकेत भी देते रहेंगे. इस तरह वे एलटीटीई को संदेश देंगे कि दबाव में होने के कारण उग्रवादियों के पास बातचीत के अलावा कोई उपाय नहीं है. लेकिन संयुक्त कमान मुख्यालय में प्लास्टिक विस्फोटक से लदी वैन ले जाने वाले दो व्यक्तियों ने शायद एलटीटीई का जवाब दे दिया है.

—अमरनाथ के. मेनन, श्रीलंका में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत-अमेरिका संबंध

शर्तों ने डाली खटास

परमाणु हथियारों का मसला बेवजह तूल पकड़ रहा

अमेरिका के साथ भारत के उतार-चढ़ाव से भरे संबंधों में पिछले कुछ समय से चढ़ाव ही ज्यादा था. लेकिन पिछले पखवाड़े इसमें भारी गिरावट आ गई. अमेरिका की प्रतिनिधि सभा ने प्रस्ताव पारित किया कि भारत को तभी मदद दी जाए जब अमेरिकी राष्ट्रपति प्रमाणित कर दें कि भारत परमाणु हथियार नहीं बना रहा है. पाकिस्तान पर भी अमेरिका ने ऐसी ही शर्त लादी है.

अमेरिका की असामान्य पेचीदा विधायी प्रक्रिया के तहत यह विधेयक सिनेट और राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद ही कानून बन सकता है. इस पहल पर भारत की तीखी प्रतिक्रिया के मद्देनजर अमेरिका के प्रशासकीय अधिकारी फौरन यह स्वीकार करने लगे कि अगले कुछ महीनों में इसे अमली जामा पहनाए जाने की उम्मीद 'बहुत कम' है.

भारतीय विदेश मंत्रालय के अधिकारी अमेरिका के इस नए रवैए से ज्यादा चिंतित हैं, न कि 44 करोड़ रु. की अमेरिकी मदद की संभावित क्षति से. जैसा कि विदेश मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा, "अमेरिकियों के नकारात्मक संकेत ही कहीं ज्यादा चिंताजनक हैं."

सार्वजनिक तौर पर अमेरिकी प्रशासन शायद यह रवैया बनाए रखे कि वह विदेश नीति के मामले में अमेरिकी कांग्रेस के 'मीन-मेख' निकालने के खिलाफ है. लेकिन भारतीय कूटनयिकों को अनौपचारिक रूप से चेतावनी दी गई है कि परमाणु परियोजनाओं के सवाल पर देश के न झुकने वाले रवैए से संबंधों में और गिरावट आ सकती है. ये भी संकेत थे कि हल्के लड़ाकू विमान बनाने जैसी रक्षा परियोजनाओं में बढ़ता अमेरिकी सहयोग रोका जा सकता है.

वैसे, अमेरिकी रुख के इस कदर कड़े हो जाने का दोष भारत के मत्थे ही जाता है. कमजोर निवर्तमान चंद्रशेखर सरकार के कारण भारतीय विदेश नीति के नियंता खतरे के संकेतों को नहीं भांप पाए. दरअसल, अमेरिका की ज्यादा चिंता पाकिस्तान की परमाणु हथियारों की बढ़ती क्षमता के प्रति ही है. पिछले साल पाकिस्तान को 520 करोड़ रु. की सैनिक सहायता तब तक रोक दी गई जब तक अमेरिकी राष्ट्रपति यह प्रमाणित नहीं कर दें कि पाकिस्तान ने परमाणु उपकरण बनाने बंद कर दिए हैं. मई के बाद से नवाज शरीफ की नई पाकिस्तानी सरकार अमेरिकी सैनिक मदद पाने की कोशिश में परमाणु क्षमता वाले मसले पर कई समझौतावादी बयान दे रही है.

अमेरिकी रवैए को नरम करने के लिए नवाज शरीफ ने सुझाव दिया है कि इस क्षेत्र में परमाणु हथियारों की बाढ़ रोकने पर विचार-विमर्श के लिए पाकिस्तान, भारत, चीन और सोवियत संघ की बैठक की जाए.

अमेरिकी संसद में पाकिस्तानी मदद पर मतदान होने के कुछ ही दिनों पहले आए शरीफ का प्रस्ताव कूटनैतिक चाल ही है. लेकिन इससे कोई खास उपलब्धि नहीं हुई क्योंकि भारत समर्थक, ताकतवर अमेरिकी सांसद स्टीफन सोलार्ज तब तक पाकिस्तानी मदद पर पाबंदी की संसद में मंजूरी लेने में सफल रहे जब तक अमेरिकी राष्ट्रपति प्रमाणित न कर दें कि पाकिस्तान के पास परमाणु हथियार बनाने की क्षमता नहीं है.

शरीफ के प्रस्ताव को साफ-साफ नामंजूर करके भारत अमेरिकी विदेश नीति के नियंताओं को प्रभावित करने में नाकाम रहा. जैसा कि एक वरिष्ठ अमेरिकी कूटनयिक ने कहा, "तुरंत मुकर जाने के बदले भारत सरकार यह कह सकती थी कि वह प्रस्ताव पर सोच-विचार कर रही है." इससे अमेरिकी संसद में पाकिस्तान समर्थक लॉबी को भारत पर हमला करने का मौका मिल गया.

चार्ट: प्रणव दत्त

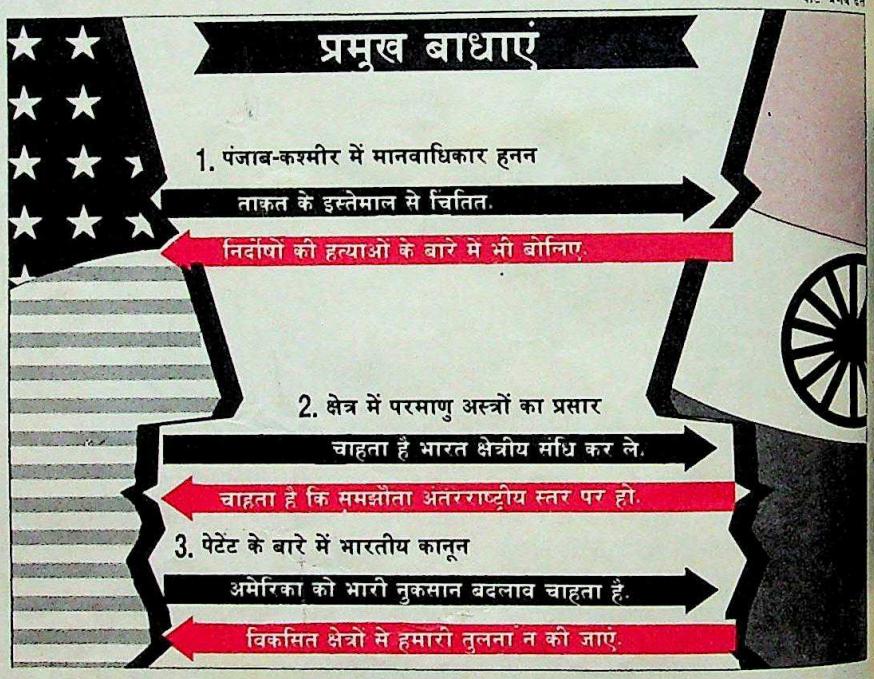

अगले कुछ महीनों में नई केंद्र सरकार को दोनों देशों के संबंधों को 'शीतगृह' से निकालने के लिए परमाणु मामलों के अलावा दूसरी रुकावटों को दूर करना होगा (देखें चार्ट). अप्रैल में अमेरिकी प्रशासन ने भारत को विशेष 301 धारा में डाल दिया. अमेरिका अपनी सुरक्षात्मक कार्रवाई और भारतीय अर्थव्यवस्था पर सरकारी नियंत्रण से भी चिंतित रहा है और उसने 'मूलभूत परिवर्तन' की मांग की थी. अमेरिकी सांसद पंजाब और कश्मीर में मानवाधिकारों के बारे में भी चिंतित हैं.

अगर नई सरकार इन मामलों का दोनों देशों को स्वीकार्य हल नहीं ढूंढ़ लेती तो दोनों देशों के बीच संबंधों में खींचतान कड़वाहट तक भी बढ़ सकती है.

—राज चेंगप्पा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरी बुनकर

हुड़दंग ने मारा हुनर

वाराणसी में मुसलमान कारीगरों का पुश्तैनी धंधा ठप्प

जरी की खूबसूरत साड़ियां और जरी के मनमोहक नमूने तैयार करने वाले वाराणसी के करघे अब थम गए हैं. आए दिन बढ़ती हिंसा के डर से इस तीर्थ नगरी का फलता-फूलता धंधा अब ठप हो चुका है.

पिछले महीने व्यापक पैमाने पर फैली हिंसा की वजह से बड़े-बड़े बुनकर नाराज तो हैं ही, लाचार भी हो गए हैं. बनारसी साड़ियों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए दिन-रात चलने वाले 500 से भी ज्यादा करघे या तो जला दिए गए या तबाह कर दिए गए हैं. तीन घंटे के दंगों में 10 व्यक्ति मारे गए, 126 घायल हुए और 117 घर बरबाद हुए. 60 लाख रु. से भी ज्यादा कीमत के करघे तबाह कर दिए गए. वाराणसी के महापौर एम.एस. अंसारी की चिंता यह है कि बुनकरों को दोबारा काम शुरू करने में दिक्कतें आएंगी, क्योंकि ये करघे काफी कीमती होते हैं. एक करघे की कीमत कम-से-कम 10,000 रु. है.

फोटो: प्रभात पंजियार

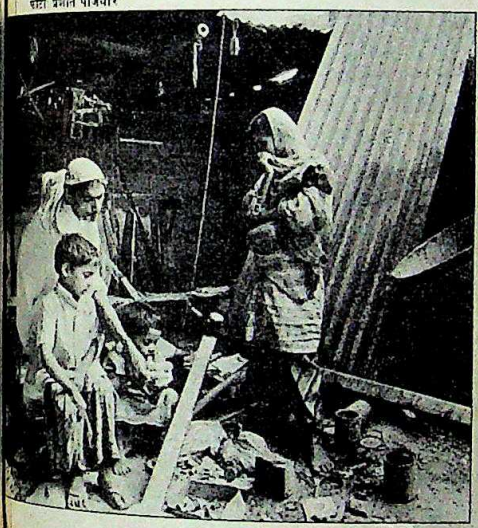

दंगे में 500 करघे नष्ट हुए. गरीब बुनकर इसकी भरपाई काफी समय तक नहीं कर पाएंगे

परिवार के साथ शाह; जली साड़ी: तबाही का तांडव

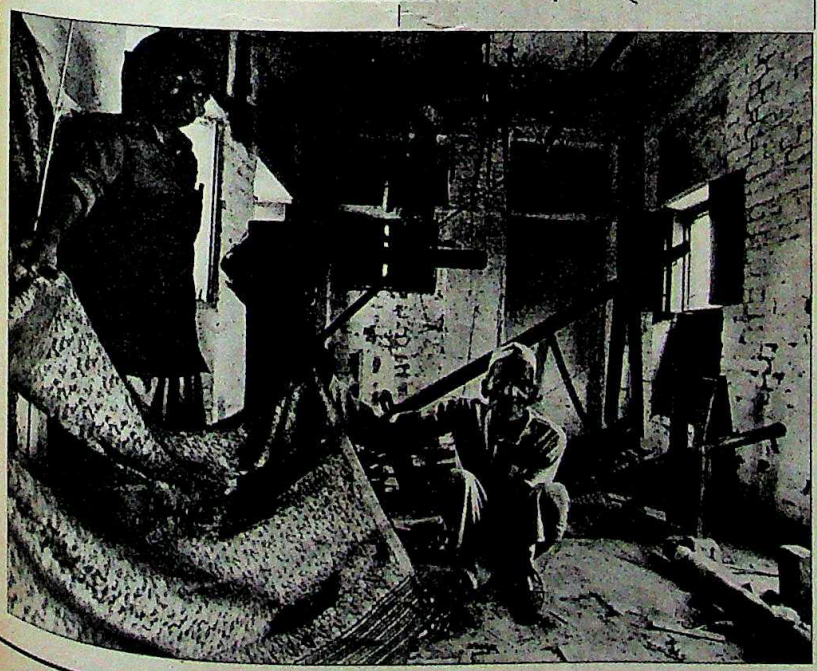

उत्तेजित भीड़ तो क्रूरता पर उतर आई थी. साड़ी नंदन में भीड़ ने एक घर में घुसकर तीन करघों को तहस-नहस कर डाला. इन पर जरी की साड़ियां (कीमत प्रति साड़ी 2,000 रु. से ऊपर) बुनी जा रही थीं. इसके बाद दो महिलाओं को जला दिया गया और तीसरी की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई. गोदौलिया क्षेत्र में ईंटें मार-मारकर एक आदमी का सिर फोड़ दिया गया. जक्खा में 111 घर तहस-नहस किए गए और 60 जला दिए गए.

हिंसा के शिकार ज्यादातर लोग पेड़ों के झुरमुटों के नीचे बैठे सरकारी सहायता का इंतजार कर रहे हैं. बुनकर मुहम्मद आकिल शाह पत्नी और दो बच्चों के साथ बिना छत वाली घर में खड़े हैं. उनके घर का सब सामान लूटा जा चुका है. दंगों में हुए नुकसान का जायजा लेने के लिए आए सरकारी अधिकारियों का कहना है कि उनके घर जो सामान बरबाद हुआ उसकी कीमत कुछ सौ रु. ही होगी. शाह ने नुकसान का जो अंदाजा बताया था उसे वे नहीं मानते.

पिछले पखवाड़े एक सौ से भी ज्यादा दंगा-पीड़ितों ने सरकार की तरफ से मिलने वाले 2,000 रु. का मुआवजा यह कहकर ठुकरा दिया कि सरकार उनके जले पर नमक छिड़क रही है. मुहम्मद हारून भी ऐसा ही एक बुनकर है, जिसका करघा तबाह कर दिया गया और घर लूट लिया गया. बेटी की शादी के लिए जो गहने-कपड़े उन्होंने जुटाए थे, लूट लिए गए और अब 11 बच्चों का पेट भरने की समस्या उनके सामने मुंह बाए खड़ी है.

बुनकरों का डर वाजिब भी है. उनका काम बेहद हुनर वाला है. जरी की अच्छी, तकरीबन 2,000 रु. की साड़ी तैयार करने में कम-से-कम एक पखवाड़ा लग जाता है. ज्यादातर बुनकरों को कच्चा माल पाने और फिर तैयार माल को बेचने के लिए व्यापारियों पर निर्भर रहना पड़ता है.

मुसलमान बुनकरों का मानना है कि वे जनता दल समर्थक होने के कारण निशाना बने. दंगापीड़ितों की मदद कर रहे मुहम्मद यासीन बताते हैं, "काश भाजपा केंद्र में सत्ता में आती. तभी वह मुसलमानों का संहार छोड़ जिम्मेदारी का परिचय देगी."

अब महत्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या तबाह हुए करघे फिर शुरू हो सकेंगे? यह बहुत हद तक राज्य की नई सरकार के रवैए पर निर्भर करेगा.

—रमेश मेनन, वाराणसी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-35

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

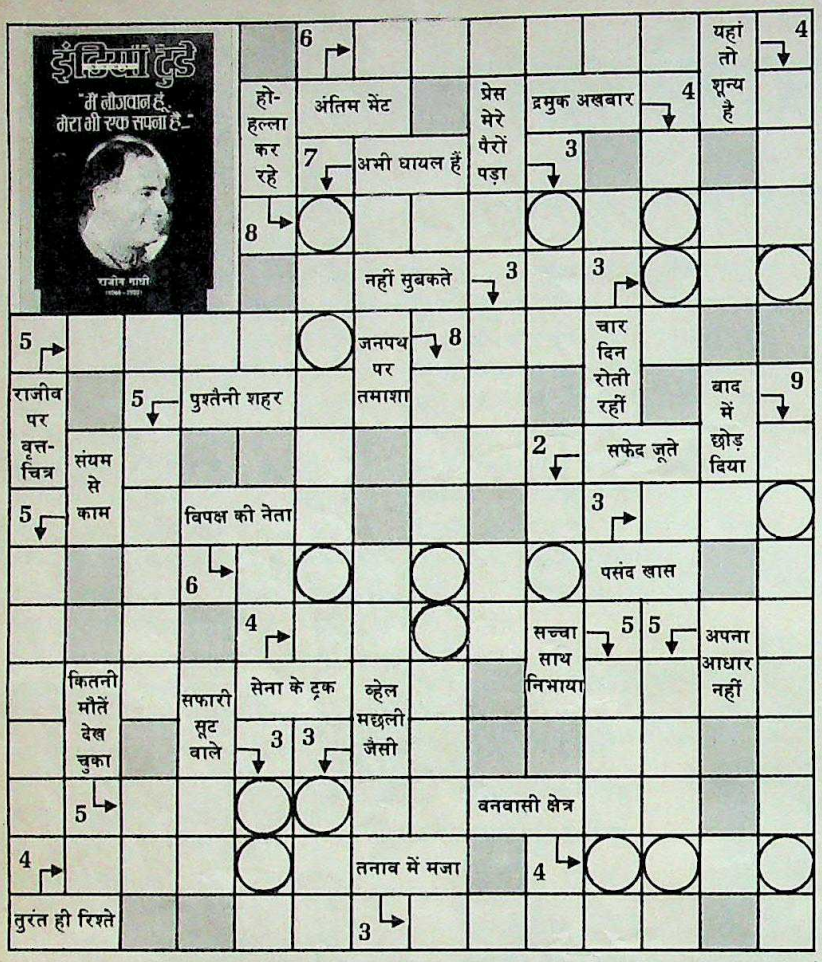

नाम _____

पता _____

पिन _____

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-35, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि:
20 जुलाई 1991
उत्तर के लिए देखें:
1-15 अगस्त 1991 का अंक

- यह पहेली शब्दश: इंडिया टुडे के 15 जून 1991 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुन: होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

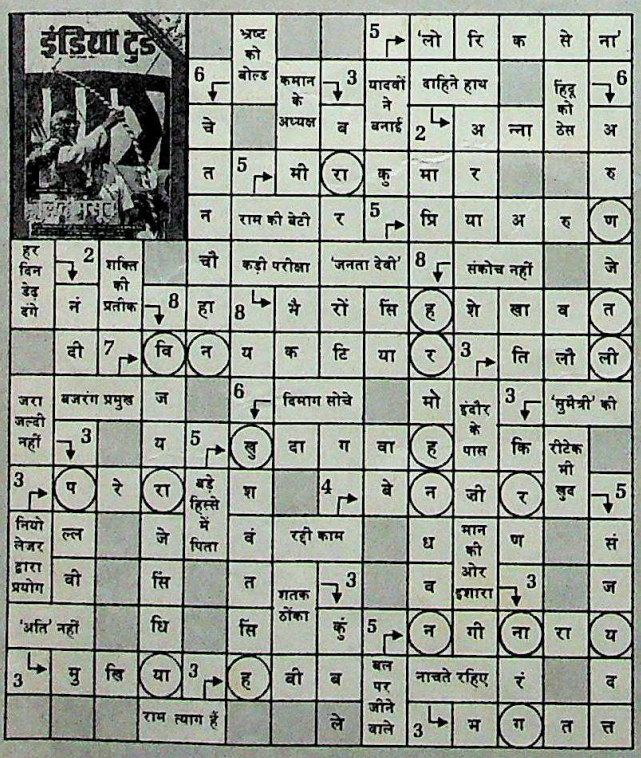

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-33 का हल

पुरस्कार विजेता

अजय चंद गोस्वामी
1207, राधा कुंज
बांदरी का नासिक
मोती बुरला बाजार
जयपुर (राज.)-302002

मनीष शर्मा
द्वारा—सत्यनारायण शर्मा
एस.एन. कॉलेज के पीछे
जसवाड़ी रोड
खंडवा (म.प्र.)-450001

सुनील मिश्रा
एफ-145, इंद्रलोक कॉलोनी
कृष्णनगर
लखनऊ-5 (उ.प्र.)

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं.
विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपक द्विवेदी

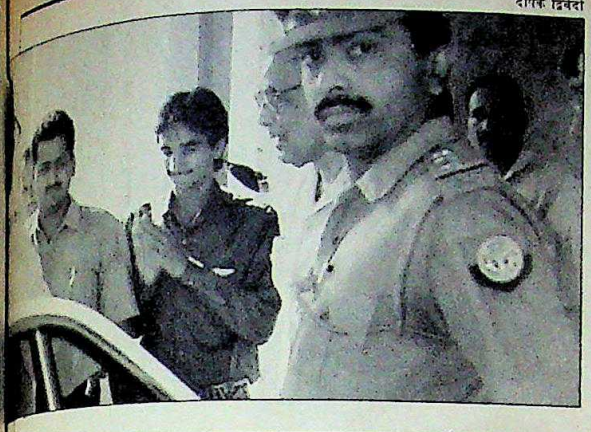

टूटते रिश्ते

विश्वविद्यालयों में छात्र संघ और कुलपति के बीच तनाव इस हद तक बढ़ जाए कि छात्र संघ के नेता कुलपति से शपथ लेने से ही मना कर दें तो मानना होगा कि समस्या गंभीर है. पिछले दिनों लखनऊ विवि छात्र संघ के चुनाव के बाद छात्र नेताओं को शपथ दिलाने के लिए कुलपति के बजाए

रेड्डीः नई परंपरा

राज्यपाल बी. सत्यनारायण रेड्डी को बुलाया गया जो विवि के कुलाधिपति हैं.

इस विवाद में कुलपति डा. हरिकृष्ण अवस्थी का कसूर यह कि उन्होंने छात्र संघ चुनावों में कॉलेज परिसर में लाउडस्पीकर, पोस्टर और बैनर आदि पर तो प्रतिबंध लगाया ही, पेशेवर छात्र नेताओं और मठाधीशों के घुसने पर भी रोक लगा दी.

—दीपक द्विवेदी, गिरिजेश मिश्र, लखनऊ

चोखा रंग

विश्वविद्यालयों में सिर्फ राजनीति ही नहीं, कुछ और भी होता है. नई तकनीकें विकसित की जाती हैं. इसका उदाहरण पेश किया है जबलपुर के जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि के वैज्ञानिकों ने. इन वैज्ञानिकों ने लंबे अनुसंधान के बाद मटर की एक ऐसी किस्म विकसित की है जिसे छिलके समेत खाया-पकाया जा सकता है. संकरण पद्धति से विकसित 'जवाहर पी-19' किस्म की इस मटर की फलियां सामान्य से बड़ी और सात-आठ दाने वाली होती हैं. प्रति हेक्टेयर सौ क्विंटल पैदावार देने वाली इस मटर को पूरा इस्तेमाल किया जा सकेगा जबकि सामान्य मटर का लगभग आधा वजन छिलके की वजह से बेकार चला जाता है.

इसी विवि के कृषि अभियांत्रिकी कॉलेज में छात्रों और अध्यापकों ने मिलकर कचरे से कोयला बनाने की तकनीक भी विकसित की है. इससे सूखी पत्तियों, पुआल, भूसे, डंठल, रद्दी कागज और कपड़े की कतरनों को कोयले की ऐसी गिट्टियों में बदला जा सकता है जो अंगीठी में जलने पर धुआं नहीं देतीं. इस प्रणाली में इस्तेमाल होने वाले कचरा संग्राहक, सफाई यंत्र तथा पाइरोलाइजर जैसे यंत्रों का भी यहीं विकास किया गया है. ये सस्ते भी हैं और इन्हें कोई भी बढ़ई या लोहार बना सकता है.

—चैतन्य भट्ट, जबलपुर

कचरे से कोयलाः उपलब्धि

अफरोज मा

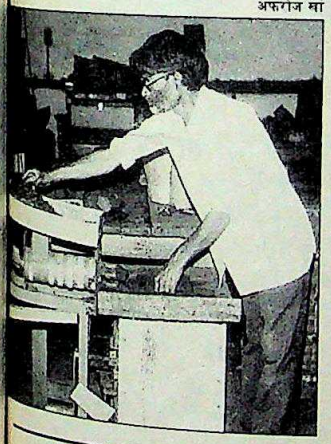

प्रभात कुमार कौशल

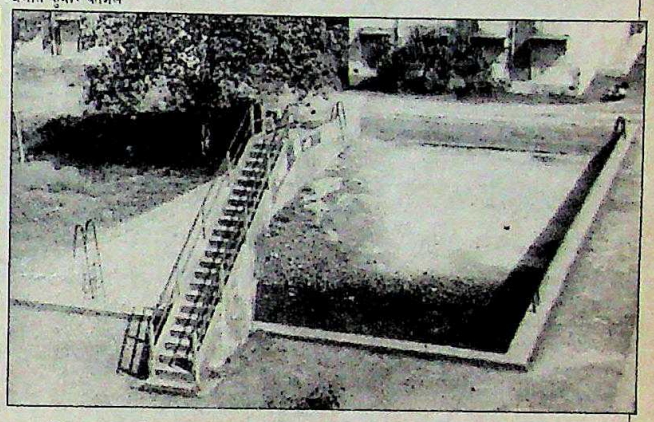

बिन पानी सब सून

खेल के मैदान में भारत की गिरती हुई साख पर आंसू बहाना एक बात है और हालात को सुधारने के लिए कुछ सार्थक करना दूसरी बात है.

लेकिन इस बारे में हमारे स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय कितने जागरूक हैं, इसका एक अंदाज पटना में मगध विवि के कॉलेज ऑफ कॉमर्स में बने स्विमिंग पूल से लगाया जा सकता है. 1966 में शानोशौकत के साथ बनाए गए इस स्विमिंग पूल में

स्विमिंग पूलः पानी नहीं

पानी को छोड़ बाकी सब कुछ है. आकार में पटना शहर के सबसे बड़े इस स्विमिंग पूल में न तो पानी डालने की व्यवस्था है और न निकालने की. अब ऐसे में तो पूल की मुंडेर पर बैठकर और नीचे टांगें झुलाकर गप्पबाजी ही की जा सकती है, तैरने का अभ्यास नहीं. कॉलेज के छात्र और अध्यापक इस पूल को नया जीवन दिलाने के कई प्रयास कर चुके हैं पर 24 साल में तो बात बनी नहीं.

—मुकेश कुमार हिसारिया, पटना

देर आयद...

दाखिलों का मौसम आते ही विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों की भीड़-भाग शुरू हो जाती है. ऐसे में शारीरिक रूप से विकलांग विद्यार्थियों की परेशानी का अंदाज लगाया जा सकता है.

इस साल दिल्ली विवि ने विकलांग विद्यार्थियों को राहत पहुंचाने का नया काम किया है. अब उत्तरी और दक्षिणी कैंपस में चिकित्सा बोर्ड विकलांगता प्रमाणपत्र जारी करेंगे जिसे हर

भवान सिंह

दाखिले की तैयारियां

कॉलेज मान्यता देगा. इसी तरह हर कॉलेज में विशेष समिति गठित की गई है जिसका काम विकलांग विद्यार्थियों को दाखिले में सहायता करना है.

कुलपति प्रो. उपेंद्र बक्शी का कहना था, "मेरे दफ्तर में आने वाले विकलांग विद्यार्थियों की परेशानी ने मुझे इतना द्रवित कर दिया कि मुझे यह कदम उठाना पड़ा." देर आयद दुरुस्त आयद.

—विजय क्रांति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलेख: गोपाल चतुर्वेदी

वे कहां बाज आने वाले

बहुत दिनों बाद हमने राहत की सांस ली. चलो, बैलट और बुलेट की बैटल आखिर खत्म तो हुई. इतने मरे. गनीमत है, हम तो जिंदा हैं. अपना वोट भले गैर ने डाल दिया, जान तो बख्श दी, यही क्या कम एहसान किया पर लीडर मानते कहां हैं. हारे तो नए सिरे से आगे की जुगत भिड़ाते हैं, जीते तो कुर्सी की जोड़-तोड़ में भिड़ जाते हैं. हमने आततायी से उम्मीद जताई—

"अब तो थोड़े दिन अमन-चैन रहेगा."

"आप मौत क्यों चाहते हैं? बेचैनी ही जीवन है"

"वह कैसे" हमने ज्ञानी से ज्ञान चाहा.

"भूखे रोटी की तलाश में काम करते हैं. भरे पेट कुर्सी की बेचैनी में नेता बनते हैं!"

"तो यह उठापटक का सिलसिला चलता रहेगा."

"कोई उठेगा, कोई गिरेगा! यही तो लोकतंत्र है."

"अब तो कैबिनेट भी बन गई. बाकी ही क्या बचा है."

"हमारे प्रधानमंत्री कोई कारपेंटर हैं क्या जो कैबिनेट बनाएं."

"हम बढ़ई की कलाकृति का नहीं, मंत्रियों का जिक्र कर रहे हैं."

"हमारे वजीरे-आजम टेनिस-बेडमिंटन के प्लेयर हैं. क्रिकेटर हैं."

"इससे फर्क क्या पड़ता है." हम अपनी बात पर अड़े रहे.

"नए नेता देश के साथ ताश खेल रहे हैं." आततायी ने कहा.

"उनकी मर्जी है. चौपड़, सांप-सीढ़ी, शतरंज जो मन भाए खेलें."

"सांप-सीढ़ी और शतरंज नेहरू परिवार के खानदानी खेल थे."

"हम सियासत की बात कर रहे हैं, आप खेलों की."

"आप सोचिए तो. प्रधानमंत्री ने संसदीय पार्टी को फेंटा और मंत्रियों की पूरी गड्डी एकबारगी चल दी."

"उनके मंत्रियों की गिनती बावन से ज्यादा है."

"आप समझते क्यों नहीं! कुछ जोकर भी तो जरूरी हैं."

"यह खेलकूद ही चलेंगे कि देश के दिन भी फिरेंगे."

"मुल्क की तरक्की ताश-तकनीक से ही मुमकिन है."

"आप पहेली बुझा रहे हैं", हमने शिकायत की.

"अब तक वतन में चुनाव-प्रचार का कानफोड़ू शोर और बूथ कैप्चर की भयंकर मारकाट रही है."

"आप सही फरमाते हैं." हमने हामी भरी.

"अब आराम से पत्ते फिटेंगे, बटेंगे, कटेंगे."

"पर काम कब होगा," हम सशंकित हुए.

रेखाचित्र: जयंती

"आदमी को काम, क्रोध, मोह, लोभ से बचना चाहिए."

"इसीलिए पी.एम. ने बिना किसी मोह-तृष्णा अपने सारे कार्ड मंत्री बनाने में चल दिए."

"आप जानते हैं. देश की अर्थव्यवस्था कागज की करेंसी से चलती है. वह भी कागज के नए ताश ले लेंगे."

"पर उनके दल के लोग तो अभी से सत्ता न पाने की शिकायत कर रहे हैं."

"करते रहे. पूरी पार्टी की मेजोरिटी कुर्सी में अटकी है."

"यही तो गिला है. कुछ को कुर्सी भी नहीं मिली है."

"हमारा तो बेचैनी-दर्शन है. जैसे-जैसे बेचैनी बढ़ेगी, उन्हें कुर्सी भी मिलेगी."

"तो क्या यह सरकार भी नहीं चलेगी," हम सहमे.

"नहीं! अपना कहना सिर्फ इतना है कि सत्ता कुर्सी में नहीं है."

"फिर कहां है, हमने जानकारी चाही."

"सत्ता के स्वामी हर दौर में और हैं, कुर्सी के और."

"आपका मतलब है कि असली पावर जनता के पास है."

"आम आदमी सिर्फ वोट देने और खटने के लिए है", उन्होंने भ्रम मिटाया.

"आप हम लोगों का मजाक उड़ा रहे हैं."

"जी नहीं. हम सच्चाई बता रहे हैं. पावर गंवार के नहीं, पवार जैसों के पास है."

"चलिए, पावर न सही, हमें रोटी तो मिलेगी"

"आपको यह यकीन कैसे है." आततायी ने प्रश्न किया.

"मंत्री गरीब जनता के माई-बाप हैं. कुछ तो करेंगे," हमने उत्तर दिया.

"बड़ा सामंती खयाल है आपका. मंत्रियों ने कोई ढाबा खोल रखा है क्या. यों भी,पहले फुरसत से अपना पेट भरेंगे, फिर औरों का सोचेंगे."

"यह लोग कोई पहले वालों की तरह भूखे-प्यासे तो हैं नहीं. सब खाए-पिए हैं," हमने आततायी को दिलासा दिया.

हमने कहने को तो कह दिया. पर अपने मन में शक अब भी बरकरार है. हर चुनाव के बाद जनता आशा के आसमान से निराशा के बियाबान में टपकती है. उसे खाने को भाषण, पहनने को वादे और रहने को थोथे नारे मिलते हैं. लीडरों की सिफ्त है. न वह एक दूसरे से लड़ने से मुकरते हैं, न जनता को छलने से. इतिहास है कि अपने को दोहराने में बाज नहीं आता है. हमें डर है तो सिर्फ यही कि हम कब तक यूं ही सब झेलते और कुढ़ते हुए जिंदगी बिताएंगे. फिर कहीं हमारी वर्तमान की उम्मीदों को तवारीख के साथ धोखा न दे जाएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद सक्सेना

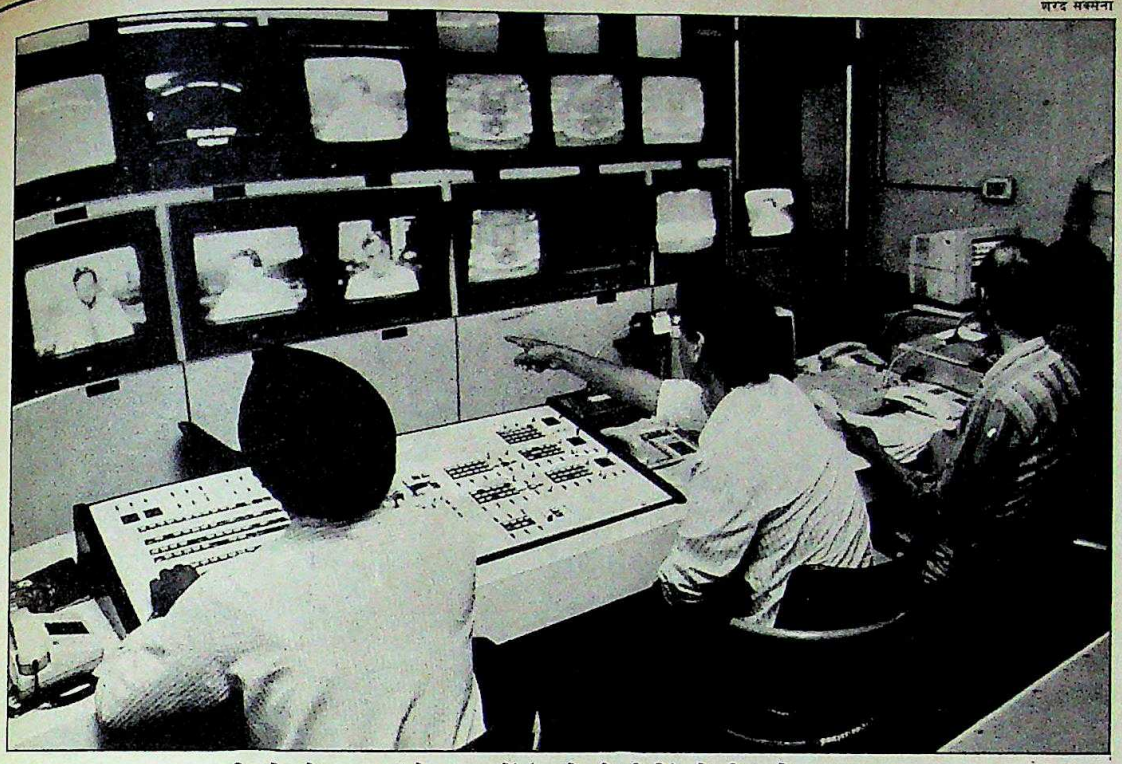

दूरदर्शन के प्रोडक्शन कंट्रोल रूम में 'न्यू डेल्ही टीवी' की टीम: मेहनत का फल

दूरदर्शन

पेशेवर कुशलता का उम्दा प्रदर्शन

चुनाव विश्लेषण कार्यक्रम में इलेक्ट्रॉनिक करतब और संपादकीय सुघड़ता देखने को मिली

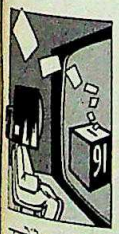

यह 16 जून की बात है. दोपहर 12.45 बजे से कुछ देर पहले ही प्रणय राय और विनोद दुआ दूरदर्शन के स्टुडियो नंबर 2 में कैमरों के सामने जमे बैठे थे. उन्होंने काफी रिहर्सल की थी. अचानक ही प्रसारण का समय हो आया, इस विशिष्ट कार्यक्रम की पूर्व सूचना देने वाली खास धुन बजने लगी और 'गुड ऑफ्टरनून' के साथ राय ने दसवें आम चुनाव के विश्लेषण के दो दिवसीय कार्यक्रम का श्रीगणेश किया.

यह दुनिया का सबसे अच्छा कार्यक्रम तो खैर नहीं था पर मतदान के अंतिम चरण के बाद के दो दिनों तक इसने एक नीरस माध्यम को जानदार और देखने लायक बना दिया. 'निकनेट' की मेहरबानी से नतीजे तेजी से मिलते गए. देश भर के करीब 400 जिलों में फैला यह संचारजाल इनसेट के जरिए दिल्ली से जुड़ा हुआ है. इसकी वजह से तकरीबन सभी मतगणना केंद्रों पर चल रहे मिनट-दर-मिनट के रुझानों का पता लगा. ये आंकड़े कंप्यूटर में भरे गए जिन्होंने इन्हें तुरंत ही टीवी लेखाचित्रों (ग्राफिक्स) में बदल दिया. राय अपनी चुनाव गणित विशेषज्ञता का इस्तेमाल करते हुए बताते थे कि पिछले चुनाव के मुकाबले वोटों में कितना रुझान है. इसलिए यह तुरंत ही पता लग गया कि राजीव गांधी की हत्या के बाद चली सहानुभूति लहर उम्मीद से ज्यादा पुख्ता है और भाजपा कुछ ऐसे क्षेत्रों में भी बेहतर प्रदर्शन कर रही है जहां उससे ऐसी उम्मीद नहीं थी. राय ने लेखाचित्रों के जरिए यह भी बताया कि नई संसद का स्वरूप कैसा हो सकता है.

पहले के मुकाबले ग्राफिक्स भी काफी बेहतर हो गए थे. राय के ही स्टेटआर्ट सॉफ्टवेयर ने इस कार्यक्रम के लिए सॉफ्टवेयर भी तैयार किया. राय ने बताया, "इसे पहली बार इस्तेमाल किया गया और इसने अच्छा काम भी किया." क्वांटल पेंटबाक्स नाम के एक उपकरण से स्पेशल इफेक्ट पैदा किया गया, जैसे नक्शों में विभिन्न इलाकों को खास रंगों में दर्शाया गया. राय की एक और कंपनी 'न्यू डेल्ही टेलीविजन' के सौ लोगों की टीम कार्यक्रम से कई दिन पहले ही स्टुडियो नंबर 2 में जम गई थी.

राय, उनकी पत्नी राधिका, ब्रिटेन के टीवी विशेषज्ञ पॉल मैकी, दूरदर्शन प्रोड्यूसर अभिजीत दासगुप्त, और विजय कुमार किसी भी बाधा का सामना करने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे. उन्हें दूरदर्शन नेटवर्क और कर्मचारियों का सहयोग भी मिल रहा था (देखें बॉक्स). राधिका ने बताया, "दूरदर्शन ने कोई कसर बाकी न रखी." देश भर में फैले कैमरे हारने और जीतने वालों की छवियां कैद कर रहे थे और सीधे मौके के दृश्य दिखा रहे थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर सिर्फ रंगीन ग्राफिक्स ने ही दर्शकों को नहीं बांधे रखा. इसमें संपादकीय ठाठ-बाट भी था. नरसिंह राव, वी.पी. सिंह, लालकृष्ण आडवाणी, चंद्रशेखर से लेकर दूसरी और तीसरी पंक्ति के नेताओं से भी दर्शकों को साक्षात्कार कराया गया. उनसे महत्वपूर्ण और कभी-कभी परेशान करने वाले सवाल भी पूछे गए. आडवाणी की भाजपा के दो चेहरों—उदारवादी और उग्रवादी—पर खिंचाई की गई जबकि माकपा नेता हरकिशन सिंह सुरजीत को मुद्रा कोष से कर्ज लेने के बारे में अपनी पार्टी के रवैए पर कुछ तीखे सवालों का सामना करना पड़ा. कार्यक्रम की संपादकीय नीति के बारे में दूरदर्शन के अतिरिक्त महानिदेशक शशिकांत कपूर ने कहा, "इस पर किसी तरह की कोई पाबंदी नहीं थी."

कार्रवाई को हिंदी में अनूदित करने वाले और कभी-कभी पैनल के लोगों से सवाल भी पूछने वाले विनोद दुआ ने अपनी पुरानी प्रतिभा की झलक कभी-कभार ही दिखाई. 15 महीने बाद किसी सीधे प्रसारित होने वाले कार्यक्रम में आए दुआ की परेशानी लाजमी थी. इस टीम ने 15 घंटे में 19 कार्यक्रम पेश किए. राय का मानना है कि अगली बार लगातार 24 घंटे का कार्यक्रम दिया जाना चाहिए. वे कहते हैं, "दुनिया भर में यही होता है."

कार्यक्रम सस्ता नहीं पड़ा. दूरदर्शन ने इसमें 4 करोड़ रु. लगाए. जिसमें ज्यादातर संचार लाइनें लेने में ही लग गए. राय का बिल आया 22 लाख रु. पर नेटवर्क को विज्ञापनों से 2 करोड़ रु. की आमदनी हुई.

जाहिर है, दूरदर्शन के लिए अपनी रोजमर्रा की खबरों के लिए इतना खर्च कर पाना मुमकिन नहीं है. पर फिर दूरदर्शन के बोरियत भरे कार्यक्रमों की दुनिया में लौटे दर्शकों को इसकी झलक जरूर मिल गई कि छोटे परदे पर क्या कुछ हो सकता है.

—आलोक तिवारी

चार्ट: बी.के. शर्मा

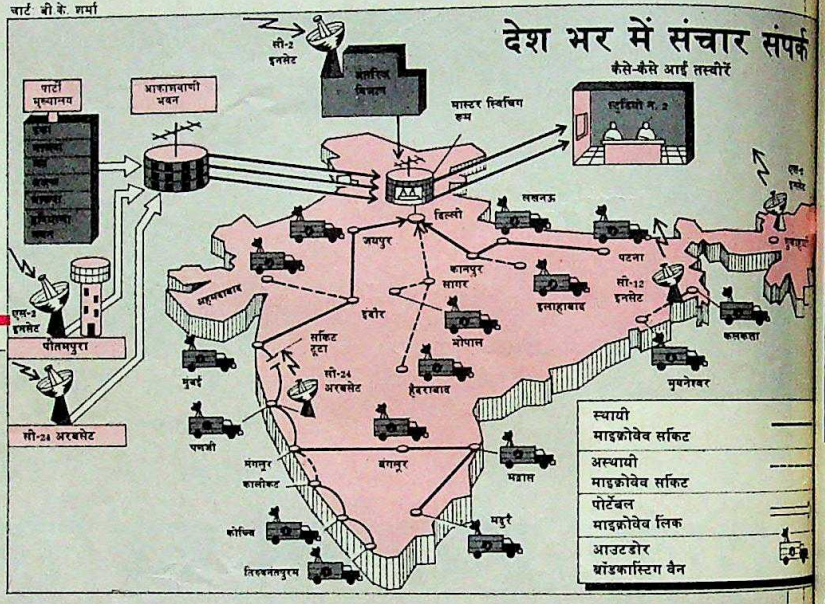

नई तकनीक

श्रमसाध्य प्रयास

नई तकनीक ने दुनिया को छोटा बना दिया है, यह बात प्रणय राय के चुनाव विश्लेषण वाले कार्यक्रम ने भारत के बारे में साबित कर दी. छोटे परदे पर कुछ समय के अंदर ही पूरे देश के दृश्य दिख जाते थे. लेकिन पूरे देश को संचार प्रणाली से जोड़ना साधारण काम नहीं था. बटन दबाते ही गुवाहाटी से लेकर तिरुवनंतपुरम से जुड़ने वाला संबंध असल में नवीनतम इंजीनियरिंग की महत्वपूर्ण सफलता है.

इस कार्यक्रम के लिए जुटे इंजीनियरिंग स्टाफ की चुनौती राय के कार्यक्रम के लिए देश भर में खड़े किए गए 23 ओबी (आउटडोर ब्रॉडकास्टिंग) वैन और आठ स्टुडियो को मुख्य केंद्र से तालमेल करने की थी. इन 31 केंद्रों से मिलने वाली दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाना था. यह काम 14 शहरों को जोड़ने वाले दूरदर्शन के अति संवेदनशील माइक्रोवेव सर्किट से किया गया. कैजुअल सर्किटों के सहारे 5 अन्य शहरों को जोड़ा गया. इनके अलावा दिल्ली में स्थित मुख्य राजनैतिक दलों के मुख्यालय आकाशवाणी भवन स्थित मास्टर स्विचिंग रूम से पोर्टेबल माइक्रोवेव लिंक के जरिए जुड़े थे.

ऐसा नहीं है कि मास्टर स्विचिंग रूम से इन सभी 31 स्थानों से एक साथ संबंध स्थापित रह सकता था क्योंकि एक सर्किट पर सिर्फ एक केंद्र ही जुड़ सकता था. इसमें कुछ और जुड़ाव के लिए मुंबई, इंदौर और जयपुर होकर दिल्ली को दक्षिण से जोड़ने वाले सर्किट को पणजी और मुंबई के बीच तोड़ा गया. पणजी से इसे सीधे अरबसेट उपग्रह को भेज दिया जाता था जहां से दिल्ली केंद्र इसे पकड़ लेता था (देखें नक्शा). यहां से ये कार्यक्रम दो प्रोड्यूसरों, अभिजीत दासगुप्त और राधिका राय के पास पहुंचते थे जो प्रणय और विनोद के कान में लगे उपकरणों में उन्हें यह बताते थे कि अब परदे पर क्या आने वाला है.

इन सबके संयोजन के लिए लगे स्टाफ को विस्तृत निर्देश थे कि कब क्या करना है. दूरदर्शन के निदेशक (इंजीनियरिंग) एन. सुब्रह्मण्यम ने कहा, "यह एक बड़ी संगीत मंडली से किसी धुन को बजवाने जैसा काम था."

माइक्रो सिग्नल तरंगें एक सीध में ही चलती हैं. और बड़े पेड़ों व बहुमंजिली इमारतों भरी दिल्ली में खासी समस्या आई जो रास्ते में इन वेव को रोक देती थीं. इसलिए कनिष्क होटल के ऊपर एक छोटा उपकेंद्र बना जहां से वे कंट्रोल रूम को भेजी जातीं.

इस काम में जुटे 1,000 से अधिक इंजीनियरिंग कर्मचारियों ने इस बात की खास व्यवस्था की कि देश के दूरदराज के सिग्नल लोगों के घरों में रखे टीवी सेट तक बिना बाधा के पहुंच जाएं. यह उनका श्रम ही था कि इस पूरे कार्यक्रम में 'रुकावट के लिए खेद है' की तख्ती का इस्तेमाल नहीं करना पड़ा.

—आलोक तिवारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

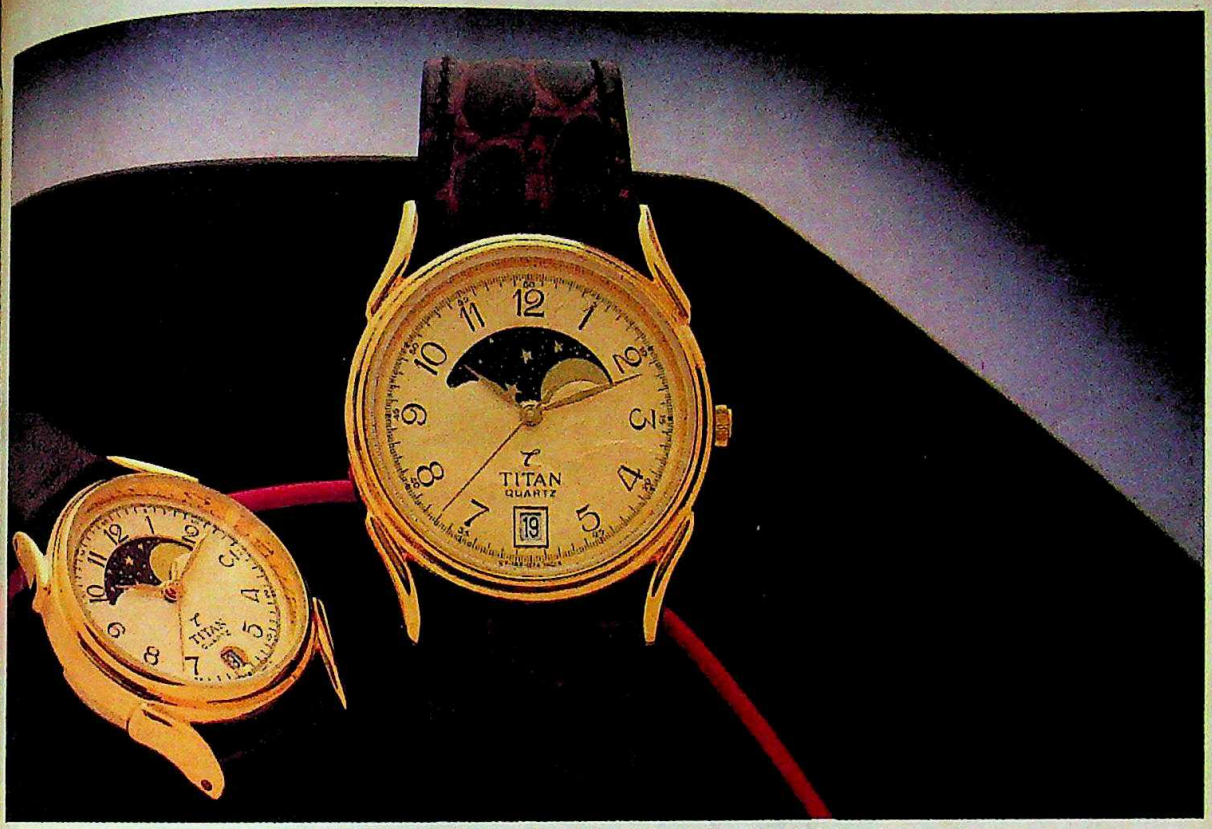

मूनफेज़ घडियाँ. पूनम से अमावस्या तक चाँद की हर तस्वीर सही दिखाएं. जैन्टस घड़ी Rs.1330* लेडीज़ घड़ी Rs.1209*

टाइटन की क्लासीक. बारीक पसन्द की पहचान.

हीरे और मोती का फ़र्क तो सबको नज़र आता है. पर हीरों में कोहिनूर की पहचान के लिए चाहिए नज़र की बारीकी.

वो नज़र जो स्वयं टिक जाती है टाइटन की क्लासीक पर. घड़ियों का एक ख़ज़ाना जिसमें १८ और २३ कैरेट गोल्ड प्लेटिंग की दोहरी परत के रूप को उभारता है शानदार लैदर स्ट्रैप. और आपको मिलती हैं शानदार घड़ियाँ जिनमें झलकता है पुराना राजसी अन्दाज़ या आधुनिक शान-शौकत.

टाइटन की क्लासीक एक पंसन्द है ४०० से ज़्यादा अन्तर्राष्ट्रीय क्वॉर्ट्ज़ घड़ियों के ख़ज़ाने से. हर घड़ी के साथ आपको मिलेगा टाटा के नाम का भरोसा और २ साल की गारण्टी.

टाइटन की क्लासीक. फ़र्क शान का. बारीक पहचान का.

Classique

Rs.696* Rs.768* Rs.823* Rs.726* Rs.798*

TITAN
QUARTZ
The Changing Face Of Time

Ogilvy&Mather 3237

* दिखाई गई कीमतों में 10 जून, 1991 तक, दिल्ली में लागू सभी कर शामिल हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव हत्याकांड

घिनौनी साजिश का ओर-छोर

प्रभाकरन द्वारा अक्तूबर 1990 में जाफना के जंगलों में बनाई हत्या की योजना पर एलटीटीई दस्ते ने अमल किया. उनके आदेश पर ही पहले वी.पी. सिंह और राजीव गांधी की सभाओं में दो नकली अभ्यास भी किए गए. और राजीव की हत्या के लिए लोग जुटाए गए.

—अनिरुद्ध मित्र, मद्रास में

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या के महीने भर बाद इसकी जांच कर रहा विशेष जांच दल पूरे राष्ट्र को सदमे में डाल देने वाले इस अपराध के पीछे गढ़े गए षड्यंत्र पर से परदा हटाने के काफी करीब पहुंच चुका है.

विस्तृत जांच और अभी तक पकड़े गए मुख्य संदिग्ध लोगों से हुई पूछताछ से पता चलता है कि राजीव गांधी की हत्या की पहली योजना अक्तूबर 1990 में जाफना के जंगलों में ही बनी थी. माना जाता है कि यह षड्यंत्र तब नई दिल्ली के राजनैतिक हालात को ध्यान में रखकर बना था. उस समय भाजपा के समर्थन वापस लेने की धमकी के चलते वी.पी. सिंह सरकार मुश्किल में पड़ी हुई थी. पाक जलडमरूमध्य के उस पार पूर्वोत्तर श्रीलंका के जंगल के एक अड्डे पर एलटीटीई का नेतृत्व भारत की राजनैतिक स्थिति का मूल्यांकन करने जुटा. बैठक में तय माना गया कि राजीव गांधी के सत्ता में लौटने की संभावना निश्चितप्राय है. तमिल ईलम के लिए संघर्ष कर रहे इस उग्रवादी संगठन के लिए राजीव की वापसी का मतलब भारतीय शांति सेना का श्रीलंका लौटना और तमिलनाडु में एलटीटीई के फैले जाल का समाप्त होना होता.

यह सोचकर कि प्रधानमंत्री की कुर्सी पर आ जाने के बाद राजीव गांधी को मार

षड्यंत्र के सूत्र

प्रभाकरन
एलटीटीई प्रमुख
मुख्यालय: जाफना

बेबी सुब्रह्मण्यम
एलटीटीई विचारक
भूमिका: हत्यारों के लिए पनाहगाहों का प्रबंध
फिलहाल: जाफना लौटा, फरार घोषित

मुतुराजा
एलटीटीई का भरोसेमंद कार्यकर्ता
भूमिका: मद्रास में संचार और पैसे की व्यवस्था करना
फिलहाल: पिछले हफ्ते श्रीलंकाई नौसेना से मुठभेड़ में मारा गया बताया जाता है

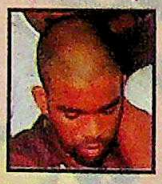

मुरुगन
एलटीटीई का प्रमुख प्रशिक्षक और विस्फोटक विशेषज्ञ
भूमिका: हत्यारों को पैसे की सहायता देना
फिलहाल: हिरासत में

शिवरासन
(काना उस्ताद)
एलटीटीई का गुप्तचर
भूमिका: हत्या का सबसे महत्वपूर्ण काम उसके जिम्मे.
फिलहाल: फरारों में प्रमुख

नलिनी
बेबी द्वारा भर्ती की गई
भूमिका: हत्यारों को पनाह दी
फिलहाल: हिरासत में

माग्यनाथन
द्रविड़ कषगम कार्यकर्ता
भूमिका: हत्यारों को पनाह दी
फिलहाल: हिरासत में

हरिबाबू
मुतुराजा द्वारा भर्ती फोटोग्राफर
भूमिका: हत्या के अभ्यास की फिल्म बनाई
फिलहाल: विस्फोट में मृत्यु

रविशंकर
फोटोग्राफर और एलटीटीई समर्थक
भूमिका: अभ्यास की फिल्म बनाई
फिलहाल: पूछताछ हो रही

अरिवू
एलटीटीई का विस्फोटक विशेषज्ञ
भूमिका: राजीव का मारने वाला बम बनाया
फिलहाल: हिरासत में

पेइस
एलटीटीई कार्यकर्ता
भूमिका: फर्जी ड्राइविंग लाइसेंस बनाया, शिवरासन को पनाह दी
फिलहाल: हिरासत में

धनु
एलटीटीई आत्मघाती दस्ते की सदस्य
भूमिका: हत्या में मानव बम बनी
फिलहाल: विस्फोट में मृत्यु

शुभा
एलटीटीई आत्मघाती दस्ते की सदस्य
भूमिका: धनु की सहायता
फिलहाल: फरार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

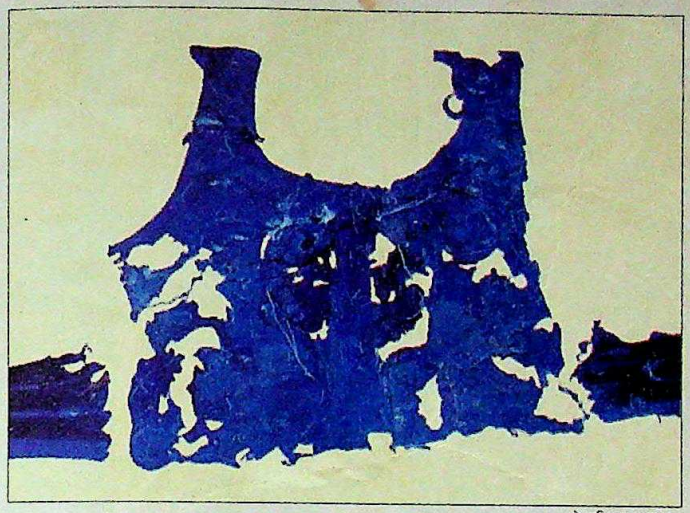

रेखाचित्र: प्रणव दत्त

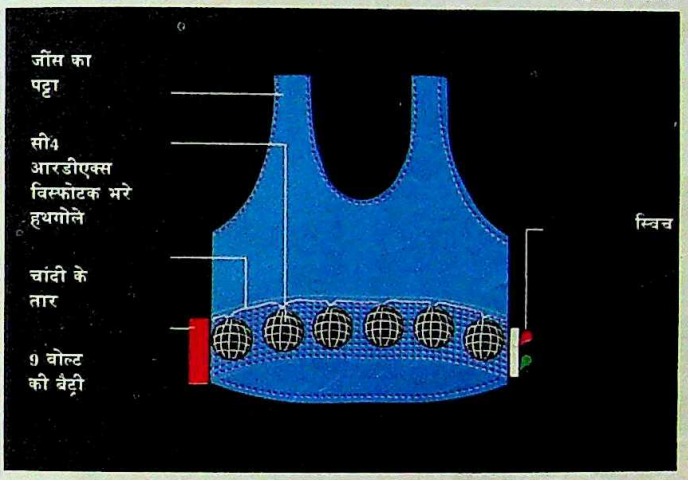

विस्फोट में बिखरे टुकड़े जोड़कर बना जींस का बेल्ट बम

...करीब-करीब असंभव ...जाएगा. इसलिए उनके ...में रहते हुए कम ...के बीच ही उन्हें ...से मारना तय ...गया. चुनाव प्रचार के ...ऐसा करना और भी ...माना गया. नवंबर के ...तक यह फैसला कर ...के बाद एलटीटीई ...प्रभाकरन ने अपने ...विश्वस्त सहयोगियों— ...सुब्रह्मण्यम, मुरुगन, ...राजा और शिवरासन ...बुलाया और हत्या की ...बनाई. सुब्रह्मण्यम ...मुतुराजा को मद्रास से ...गया, जहां वे तब रह ...थे.

...दिसंबर के पहले हफ्ते में ...करन ने अपने इन चार ...सहयोगियों को अपना ...सुना दिया. अभियान ...दूसरी बारीकियां तय ...का काम उन पर छोड़ ...गया लेकिन प्रत्येक को ...साम जिम्मेदारियां ...गईं.

...एलटीटीई का प्रमुख ...बेबी सुब्रह्मण्यम ...में एक प्रेस चलाता ...जो एलटीटीई का ...छापा करता. उसे ...करने वाली टीम को अपना काम ...में पहले और बाद में छुपाने की ...जिम्मेदारी दी गई.

...मुतुराजा को मद्रास में संचार व्यवस्था ...ने, संदेशवाहक चुनने और हत्यारों को ...काटने की व्यवस्था करने को कहा गया. ...एलटीटीई के विस्फोटक विशेषज्ञ मुरुगन ...सुब्रह्मण्यम और मुतुराजा के मद्रास से ...आ जाने पर उन दोनों की ...जिम्मेदारियां संभाल लेने को कहा गया. ...शिवरासन को, जिसकी तलाश आज ...अधिक हो रही है और जिसे 'काना ...' कहा जा रहा है, सबसे महत्वपूर्ण ...—हत्या कराना—सौंपा गया.

...तमिलनाडु की द्रमुक सरकार को ...किए जाने से हत्या की योजना पर ...जोर-शोर से काम शुरू हुआ. ...निधि सरकार को राज्य में एलटीटीई ...गतिविधियों में सहयोग देने के आरोप में ...किया गया था. यह आरोप पूरी ...निराधार भी नहीं था क्योंकि राजीव ...हत्या के पूर्व अपने प्रचार अभियान में उन्होंने श्रीलंका के तमिलों की मांग को जायज बताया था.

तमिलनाडु में राष्ट्रपति शासन लागू होना एलटीटीई के लिए एक बड़ा सदमा था. द्रमुक सरकार को गिराने का फैसला निश्चित रूप से इंका और अन्ना द्रमुक के दबाव के चलते किया गया. लेकिन ऐसा गुप्तचर ब्यूरो की इन रिपोर्टों के आधार पर किया गया कि द्रमुक और एलटीटीई के लोगों के बीच मैत्री बढ़ती जा रही है.

गुप्तचर ब्यूरो ने एलटीटीई के प्रति करुणानिधि की सहानुभूति और द्रमुक से उसके रिश्तों का पता तो लगा लिया लेकिन उग्रवादी गुट राजीव गांधी की हत्या की योजना बना रहा है इसकी उसे भनक तक नहीं मिली. यही हाल विदेशी खुफियागीरी करने वाली संस्था रॉ का भी था.

इस बीच, 1991 के शुरू होते-होते प्रभाकरन के चारों सहयोगी अपनी योजना पर काम शुरू कर चुके थे. बेबी सुब्रह्मण्यम और मुतुराजा मद्रास लौट आए थे. दोनों ने योजना के पहले चरण का महत्वपूर्ण काम शुरू कर दिया था—हत्या में शामिल होने और सहयोग करने वाले लोगों की पहचान और भर्ती का.

मुख्य भर्ती केंद्र बनी एक फोटो एजेंसी, जो मद्रास में एलटीटीई की गतिविधियों का केंद्र थी. शुभ न्यूज ऐंड फोटो एजेंसी को मद्रास के अधिकांश उभरते छायाकारों की शरणस्थली माना जाता है जिसे शुभ सुब्रह्मण्यम चलाते हैं. शुभ की एजेंसी में द्रविड़ कड़गम के अनेक लोग भी आते-जाते थे. द्रमुक की सहोदर द्रविड़ कड़गम खुलेआम एलटीटीई की समर्थक है.

मुतुराजा और सुब्रह्मण्यम ने शुभ के यहां से ही द्रविड़ कड़गम के नौजवान कार्यकर्ता भाग्यनाथन की पहली भर्ती की. भाग्यनाथन ने एक राजनैतिक पत्रिका निकालने की इच्छा जताई पर साथ ही साधनों का अभाव भी बताया. भाग्यनाथन का परिवार कर्ज में डूबा था और खर्च चलाने में भी मुश्किल महसूस कर रहा था. वह खुद अपनी बहन नलिनी के दफ्तर में स्टेशनरी सप्लाई करके अपना गुजारा करता था. यहां नलिनी को सेक्रेटरी की नौकरी मिली थी. उसकी मां कल्याणी नर्सिंग होम में नर्स थी.

असली मुश्किल तब आई जब उसकी मां को नर्सिंग होम की तरफ से मिला क्वार्टर खाली करने को कहा गया. पूरा परिवार संकट में आ गया. पैसा न होने से वे मद्रास में किराए का मकान लेकर नहीं रह सकते थे. और इस प्रकार इस हत्या के षड्यंत्र की पहली भर्ती खुद-ब-खुद हो गई. बेबी सुब्रह्मण्यम ने भाग्यनाथन से यूं ही कहा कि वह कुछ और कारोबार करना चाहता है सो इस प्रेस का खरीदार ढूंढ़ रहा है. भाग्यनाथन ने इसे खरीदने की पेशकश की और कीमत किश्तों में चुकाने की मोहलत चाही. भाग्यनाथन को अपने जाल में फंसता देख बेबी तुरंत सहमत हो गया.

अब बेबी की पहुंच भाग्यनाथन के पूरे परिवार के बीच हो गई जो तभी प्रेस से लगे इलाके में आ गया था. उसने नलिनी को सलाह दी कि वह अपने दफ्तर के काम के बाद भाग्यनाथन के प्रेस में उसे मदद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करे. यह प्रेस हत्यारी मंडली के छुपने का आदर्श स्थान था. अब अभियान का दूसरा चरण—पूरे परिवार को इसमें शामिल करना—शुरू हुआ. नलिनी को भाग्यनाथन के प्रेस के काम में मदद देने की बेबी की सलाह काम करती दिखी. नलिनी अब एलटीटीई के उस साहित्य में रमने लगी जो वहां से छप रहा था और जिसमें कहा गया था कि श्रीलंका में शांति सेना के 'जुल्मों' के लिए सिर्फ राजीव गांधी जिम्मेदार थे.

नलिनी बहुत जल्दी ही बदल गई. कुछ दिनों के अंदर ही उसने 'सैंटेनिक फोर्सेज' नामक किताब पर काम शुरू कर दिया जिसमें भारतीय शांति सेना के जुल्मों का विवरण था. इस किताब में प्रभाकरन की एक उक्ति "काम ही पूजा है" के अलावा एलटीटीई की कोई टिप्पणी नहीं थी.

इस बीच, भर्ती टीम का दूसरा सदस्य मुतुराजा अभी शुभ सुंदरम की एजेंसी में उतना ही व्यस्त रहा. शुभ को तब तक प्रभाकरन का यह संदेश मिल गया था कि वह एलटीटीई के एक गोपनीय अभियान के लिए कुछ अर्चाचित लोगों की भर्ती में मुतुराजा की मदद करे. दो नौजवान फोटोग्राफर रविशंकरन और हरिबाबू इस जरूरत के योग्य लगे. शुभ के यहां ठीक से काम न करने के लिए निकाले जाने के बावजूद हरिबाबू समय-समय पर फोटो खींचने का काम दिए जाने से एलटीटीई का ऋणी था. हरिबाबू ने नई एजेंसी, विघ्नेश्वर वीडियो के लिए काम करना शुरू किया लेकिन उसे मालूम था कि उसे जो पैसा दिया जा रहा है, वह उसके काम से काफी अधिक है.

तभी मुतुराजा ने हरिबाबू को बताया कि कोई आदमी जाफना से फोटोग्राफी सीखने के लिए आ रहा है और वह हरिबाबू के साथ ही पेइंग गेस्ट के तौर पर रहेगा. हरिबाबू के घर आए इस नए मेहमान बालन ने उसे कुछ अतिरिक्त आमदनी कराने के अलावा बहुत बदल भी दिया. उसने हरिबाबू के दिमाग में यह बात बैठा दी कि राजीव गांधी ही श्रीलंका के तमिलों पर हुए जुल्म के लिए जिम्मेदार हैं और सत्ता में उनकी वापसी का मतलब दमन का नया दौर ही होगा.

उधर, जाफना में मुरुगन उस मंच पर विराजमान होने की तैयारी कर रहा था जो मद्रास में बैठे उसके दो साथियों ने तैयार किया था. जाफना में शिवरासन के साथ अनेक दौर की बातचीत के बाद मुरुगन ने एलटीटीई के दो नौजवानों—जयकुमारन और रॉबर्ट पेइस को शिवरासन के गांव से मद्रास भेजने का फैसला किया. वे फरवरी के शुरू में यहां आए. पहले वे जयकुमारन के जीजा के पोरूर, मद्रास के सवरीनगर विस्तार वाले घर में रुके. कंप्यूटर साइंस में डिप्लोमाधारी अरिवू 1990 के शुरू से ही मद्रास में रह रहा था. एलटीटीई का समर्पित कार्यकर्ता होने के बावजूद मुरुगन के संपर्क करने के पहले उसने किसी तोड़-फोड़ के काम में हिस्सा नहीं लिया था. इस षड्यंत्र में अरिवू की इलेक्ट्रॉनिक की जानकारी मारक भूमिका निभाने वाली थी.

मध्य फरवरी में मद्रास पहुंचने के साथ ही मुरुगन इस अभियान के मंच पर प्रकट हुआ. उसने पहला काम किया पेइस और जयकुमारन को अरिवू के साथ एक नए घर में रखवाने का. अरिवू को बताया गया था कि उसे एक 'विशेष अभियान' में मदद करनी है लेकिन उसे लक्ष्य नहीं बताया गया. मुरुगन का मुख्य काम इन तीनों के खर्च की व्यवस्था करने के साथ ही सैन्य साज-सामान देना रहा. पेइस और जयकुमारन को नई जगह रखवाकर उसने छुपने का एक और अड्डा बना लिया.

फरवरी के अंत में मुतुराजा ने मुरुगन का परिचय भाग्यनाथन के परिवार से कराया. तब तक नलिनी के मन में राजीव गांधी के प्रति गहरी नफरत पैदा हो गई थी. इसी समय वे सत्ता में वापसी की तैयारी भी कर रहे थे. इस प्रकार, मुरुगन के छुपने का तीसरा अड्डा तय करने में कोई दिक्कत नहीं आई. छुपने के तीन सुरक्षित अड्डे, हथगोले को सुधारकर आत्मघाती व्यक्ति द्वारा

दुर्घटना के क्षणों की तस्वीर

चित्र: अजीत नैनन, जयनी और देवज्योति

नवम्बर 1990

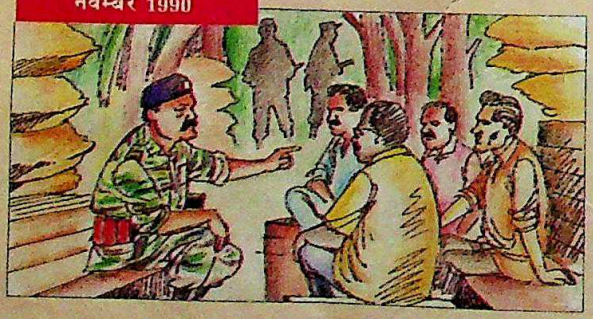

जाफना में एलटीटीई के प्रमुख प्रभाकरन चार भरोसेमंद सहयोगियों को बुलाते हैं और बताते हैं कि राजीव गांधी का प्रधानमंत्री बनना तय है इसलिए उनको खत्म करना ही होगा

जनवरी 1991

अपना प्रेस बेचकर बेबी सुब्रह्मण्यम भाग्यनाथन के परिवार को फंसाता है और यह घर हत्यारों के छुपने का एक सुरक्षित अड्डा बन जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म के साथ हरिबाबू का कैमरा (घेरे में)

फोटो करा सकने लायक बेहतर बम लेने में जुटे अरिवू के अलावा नलिनी, और भाग्यनाथन के रूप में तीन नए साथियों और नई भर्ती कराने वाले शुभ टीम को तैयार कर लेने के बाद योजना टीम ठीकठाक ढर्रे पर आ गई. मुरुगन ने फोन में शिवरासन को संदेश भेजकर उसे मद्रास आने को कहा. मार्च के पहले हफ्ते में शिवरासन यहां पहुंचा. सबसे पहले वह पोरूर स्थित पेइस के घर में ठहरा जहां उसे छुपने के अड्डों और मुतुराजा तथा बेबी सुब्रह्मण्यम के भर्ती किए गए लोगों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई.

मद्रास में शिवरासन के पहुंचने के साथ ही राजीव गांधी की हत्या का वह जाल बिछ गया जिसे प्रभाकरन ने जाफना के जंगलों में बुना था. अब इस पूरे षड्यंत्र में मुख्य भूमिका शिवरासन को निभानी थी. खुद भी विस्फोटक विशेषज्ञ शिवरासन ने अरिवू के मानव बम वाले डिजाइन को जांचा-परखा और उसे उपयुक्त करार दिया. उसने बेबी सुब्रह्मण्यम और मुतुराजा को जाफना चले जाने को कहा क्योंकि उनका यहां रहना सुरक्षित नहीं होता. मार्च के अंत तक ये दोनों जाफना चले गए.

शिवरासन अब भाग्यनाथन के घर आ गया जहां उसने यह योजना मुरुगन, नलिनी और भाग्यनाथन को बताई. उसने कहा कि उसके दिमाग में वह नाम है जो मानव बम का काम करेगा. उसने भाग्यनाथन से कोई भरोसे लायक फोटोग्राफर तलाशने को कहा. तभी पुराने परिचित हरिबाबू और रविशंकरन इस खेल में शामिल हुए.

अब अगला कदम शिवरासन का जाफना जाकर उस 'मानव बम' को मद्रास ले आने का था. जाफना में उसने प्रभाकरन से मिलकर मद्रास में हुई प्रगति के बारे में बताया. प्रभाकरन ने शिवरासन से कहा कि वह इस पूरे अभियान का एक खाली अभ्यास कर ले और फिर पूरी घटना की तस्वीर खिंचवाए जिसे वे खुद देख सकें.

शिवरासन ने तब अपने मानव बमों को चुना—धनु उर्फ गायत्री तथा शुभा उर्फ शालिनी, जो एलटीटीई की महिला शाखा की सदस्य थीं. ये दोनों उसकी चचेरी बहनें भी थीं. दोनों लड़कियों को लेकर वह हफ्ते भर में ही मद्रास लौट आया. अगला कदम विस्फोटक (आरडीएक्स की सी-4 किस्म) जुटाने का था, जिसे ईपीआरएलएफ के नेता जे. पद्मनाभ की हत्या में उपयोग किया गया था. तमिलनाडु में एलटीटीई का विस्तृत जाल फैले होने से यह विस्फोटक पाना मुश्किल नहीं था. अब शिवरासन अपने नेता का आदेश—राजीव

फरवरी 1991

एलटीटीई के लिए भर्ती करने वाला दूसरा आदमी मुतुराजा फोटोग्राफरों हरिबाबू और रविशंकरन को तस्वीरें खींचने के लिए फंसाता है

फरवरी 1991

एलटीटीई का विस्फोटक विशेषज्ञ मुरुगन बम के डिजाइन के बारे में अरिवू से उसके पोरूर स्थित घर पर विस्तार से बात करता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी की हत्या करो—मानने को पूरी तरह तैयार था.

मद्रास में धनु और शुभा को नलिनी के घर ले जाया गया, जहां मुरुगन उनकी प्रतीक्षा कर रहा था. इसके बाद योजना बनाने के लिए जो बैठकें हुईं उनमें शिवरासन ने पेइस, जयकुमारन और अरिवू को शामिल नहीं होने दिया. लेकिन अरिवू से अलग से बात करके शिवरासन ने उसे समझा दिया कि उसे किस शक्ति का बम चाहिए. अभियान के बारे में सब कुछ न बताते हुए उसने ऐसे बम की मांग की जिसे आसानी से कपड़े के नीचे छुपाया जा सके और कोई औरत अपनी कमर में बांध ले.

अरिवू अपने काम में जुट गया और खुद ही उसने एक बेल्ट बम बनाया. इस पट्टे में छह हथगोले फिट किए जा सकते थे. हर गोले में 80 ग्राम सी-4 आरडीएक्स (2.0 मिमी के 2,800 छर्रे वाले) भरा जाना था. और इन्हें टीएनटी के डिब्बों में भरा जाना था. इन हथगोलों को चांदी के तारों से जोड़ा जाना था, जो दो गिल्लीनुमा स्विचों से जुड़ते. एक स्विच चार्ज के लिए और दूसरा विस्फोट के लिए था. इस पूरे बम को 9 एमएम की बैटरी से विस्फोट कराना था.

इस बम को 'पास' करने के बाद शिवरासन ने मुरुगन से एक ऐसा दर्जी तलाशने को कहा, जो इस पट्टे को सिल दे. मुरुगन ने एक दर्जी तलाश लिया जिसने नीले जींस वाले मोटे कपड़े का यह पट्टा सिल दिया जो एक किलो बम उठा सके. इसके तैयार हो जाने के बाद अरिवू ने सावधानी से इसमें बम फिट कर दिया. राजीव गांधी और कम-से-कम 16 दूसरे लोगों को मांस के लोथड़े में तब्दील कर देने वाला यह बम अब तैयार था.

इसके साथ शिवरासन वह अभ्यास करने को भी तैयार था जिसका आदेश प्रभाकरन ने दिया था. ऐसा पहला अभ्यास 21 अप्रैल को मद्रास में राजनैतिक चहल-पहल के केंद्र मरीना बीच पर किया गया. इसी जगह राजीव गांधी की सभा हुई थी जिसमें अन्ना द्रमुक की नेता जयललिता ने भी भाषण दिया था. इस सभा की तस्वीरें रविशंकरन ने लीं जबकि शुभ सुंदरम की एजेंसी ने इसकी वीडियो रिकार्डिंग कराई. लेकिन तब हत्यारों ने इन दोनों नेताओं के अधिक निकट जाने की कोशिश नहीं की. संयोग से इस मौके पर रविशंकरन के साथ हरिबाबू भी था और यहीं उसे शक हुआ कि जिस अभियान में उसे लगना है उसका लक्ष्य शायद कोई राजनेता ही है.

दूसरा अभ्यास 12 मई को मद्रास से 40 किमी दूर अर्कोनम के तिरुवल्लूर में हुआ जहां वी.पी. सिंह और करुणानिधि की सभा हुई थी. यह अभ्यास अधिक सफल था क्योंकि इसमें धनु वी.पी. सिंह के पैर उसी अंदाज में छूने में कामयाब रही जिस तरह से उसे 21 मई की रात को राजीव गांधी के पैर छूने थे. इस अभियान की वीडियो रिकार्डिंग भी शुभ फोटो एजेंसी ने कराई थी. यह वीडियो फिल्म अब जांच दल के पास है.

दो सफल अभ्यासों के बाद शिवरासन अब हत्या के असली अवसर की तलाश में रहा. समय तेजी से बीतता जा रहा था. श्रीपेरुंबुदूर में 21 मई के कार्यक्रम की घोषणा दो दिन पहले हुई और यही सबसे अच्छा और आखिरी मौका था. 20 मई की सुबह शिवरासन नलिनी के घर अखबार की उस कतरन के साथ पहुंचा जिसमें राजीव गांधी की 21 मई की सार्वजनिक सभाओं के कार्यक्रम थे. रात में श्रीपेरुंबुदूर की सभा के बाद कार्यक्रम समाप्त हो जाने थे. जगह तय कर ली गई.

रविशंकरन ने हरिबाबू को बुलाया और उससे माला खरीदने को कहा. फिर उससे 21 मई को तीसरे पहर नलिनी के घर पर शिवरासन और दूसरे लोगों से मिलने को कहा. तब हरिबाबू ने रविशंकरन से फिल्म भरा कैमरा मांगा. रविशंकरन ने उसे अपना कैमरा देने की जगह अपने एक दोस्त दीपक का कैमरा और कोनिका की एक रंगीन फिल्म दी.

20 मई की रात काफी आराम से

विस्फोट के कुछ क्षण बाद राजीव के पैर छू

अप्रैल 1991

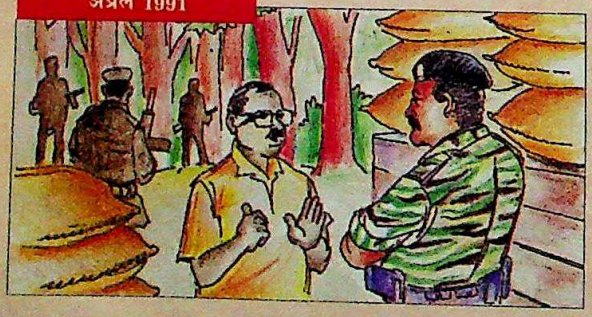

प्रभाकरन को सारी खबर देने के लिए शिवरासन जाफना लौटता है. प्रभाकरन उसे हत्या के पहले अभ्यास करने और इसकी तस्वीर खींचकर भेजने को कहते हैं

अप्रैल 1991

शिवरासन वूमैन टाइगर्स की धनु और शुभा को लेकर जाफना से तमिलनाडु लौटता है जो मानव बम का काम करने वाली थीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव के पैर के पास सुलगती आग देखी जा सकती है

गई. षड्यंत्रकारियों ने उस रात एक देखी. किसी भी लड़की, खासकर धनु की का कोई लक्षण नहीं दिखा. शुभा वाला पट्टा धनु की कमर में बांधकर उसने वह चश्मा भी पहना जिसे लोगों छलावा देने के लिए उसे पहली बार था. शाम साढ़े चार बजे नलिनी, शुभा, धनु और शिवरासन पैरीज कॉर्नर गए, जहां हरिबाबू से मिलने का प्रोग्राम पहले से तय था.

मद्रास के मुख्य बस अड्डे के निकट स्थित पैरीज कॉर्नर पर हरिबाबू घंटे भर पहले स्टेट इंपोरियम पूमपुहार से खरीदी चंदन की माला लिए उनका इंतजार कर रहा था. ये पांचों श्रीपेरुंबुदूर के लिए एक बस पर सवार हो गए जिसने उन्हें आठ बजे वहां पहुंचा दिया.

ये सभी, जिनमें हाथ में माला लिए धनु भी थी, वीआईपी बाड़े के पास खड़े हुए. एक बार महिला सब-इंस्पेक्टर अनुसूया कुमारी ने उनसे पूछताछ भी की. हरिबाबू ने कहा कि वह प्रेस फोटोग्राफर है और राजीव गांधी को इस लड़की (धनु) के माला पहनाने की तस्वीर खींचेगा. इस सब-इंस्पेक्टर ने कहा कि राजीव गांधी बहुत देर से आएंगे इसलिए अभी से यहां भीड़ लगाने की कोई जरूरत नहीं है. और फोटोग्राफर को प्रेस वाले बाड़े में चले जाना चाहिए. वे सभी वहां से हट गए. शुभा और नलिनी भीड़ में बैठ गईं. शिवरासन मंच के निकट जाकर खड़ा हो गया. उसके पास एक पिस्तौल थी क्योंकि इस पूरे अभियान दल को सुरक्षा या मदद देने वाला वह अकेला ही था. धनु और हरिबाबू उस लाल कालीन के निकट खड़े हो गए. जिससे होकर राजीव गांधी को मंच पर जाना था.

राजीव गांधी करीब 10 बजे रात में पहुंचे और तुरंत माला पहनाने की कोशिश करने वाले लोगों ने उन्हें घेर लिया. महिला सब-इंस्पेक्टर अनुसूया ने एक बार फिर धनु को राजीव के निकट जाने से रोकने की कोशिश की. उन्होंने करीब-करीब उस हत्यारिन को पकड़ ही लिया था लेकिन अनुसूया के अनुसार खुद राजीव गांधी ने कहा, 'सबको मौका दो.' अनुसूया वहां से दूर चली गई और इस प्रकार खुद उसकी जान बच गई. धनु इस प्रकार झुकी जैसे राजीव के पैर छूना चाहती है. फिर राजीव उसे उठाने के लिए झुके. तभी धनु के दाहिने हाथ की उंगली ने बम का स्विच दबा दिया.

विस्फोट के तुरंत बाद नलिनी और शुभा बस स्टैंड की तरफ खिसक लीं, जहां उन्हें शिवरासन मिला जिसने उन्हें बताया कि राजीव गांधी, धनु और हरिबाबू मर चुके हैं

अप्रैल 1991

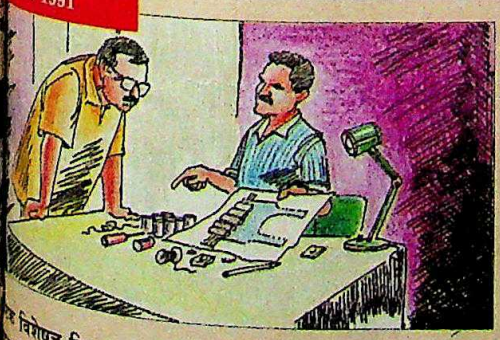

विशेषज्ञ शिवरासन खुद भी अरिबू के की जांच करता है कि बम कैसे काम करेगा उपयुक्त करार देता है

अप्रैल 1991

राजीव की मरीना बीच सभा में अभ्यास हुआ. शिवरासन की तुलना में धनु मंच के अधिक निकट पहुंची. रविशंकरन और हरिबाबू ने तस्वीरें उतारी

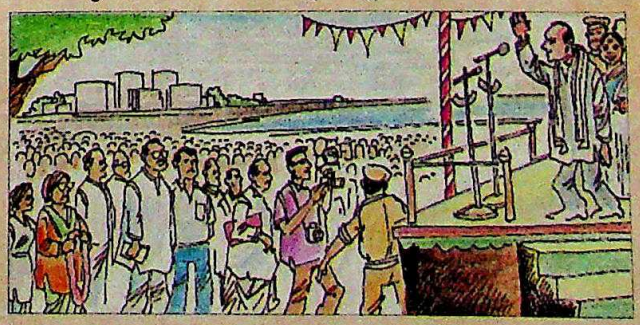

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अब भाग लेना ही बेहतर है. उन्होंने वहां से पूनामली के लिए ऑटोरिक्शा लिया और फिर वहा से दूसरा ऑटो रिक्शा लेकर शिवरासन के पोरुर वाले घर पहुंचे. शिवरासन ने शुभ सुंदरम को फोन करके बताया कि विस्फोट में हरिबाबू की जान तो चली गई है लेकिन उसका कैमरा सही सलामत है और शुभ सुंदरम को उसे वापस पाने की कोशिश करनी चाहिए.

लेकिन शहर मे उपद्रव शुरू हो जाने के कारण वे पूरे दिन घर में ही बंद पड़े रहे. 21 मई की रात को शुभ सुंदरम सक्रिय हुआ. उसने टी. राममूर्ति नामक फोटोग्राफर के घर पर फोन किया तो उसे बताया गया कि राममूर्ति ने पूनामली थाने से फोन कर विस्फोट मे अपने घायल होने और देरी से घर पहुंचने की सूचना दी है. सुंदरम ने फिर पूनामली थाने फोन किया और राममूर्ति से पूछा कि क्या वह हरिबाबू का कैमरा ले आए हैं. राममूर्ति ने उससे कहा कि यह मेरा काम नही है. इस बीच, सुंदरम ने रवि-शंकरन को हरिबाबू के कैमरे और उसमें पड़ी फिल्म वापस करने की जरूरत के बारे में बता दिया था.

तब तक विशेष जाच दल ने भीषण अभियान छेड़ दिया था. उसके अधिकारी मद्रास जनरल अस्पताल मे पड़े विस्फोट के घायल लोगो के चश्मदीद विवरण लेने वहां पहुच गए. अनुसूया ने उन्हें कुछ संदिग्ध लोगो के बारे में बताया जो एक फोटोग्राफर के सग थे. तब तक हरिबाबू के खीचे फोटो तैयार कर लिए गए थे. अनुसूया के विवरण के आधार पर ही उन्हे हरिबाबू के कैमरे से खीची गई तस्वीर मे मौजूद कुछ लोगो के बारे मे शक हुआ. इनमें हाथ में माला लिए खडी महिला भी शामिल है और साथ ही शिवरासन भी है. अगले दिन अनुसूया ने यह पुष्टि की कि ये वही लोग हैं जिन्हें उसने देखा था.

अगली सुबह विशेष जाच दल दुर्घटना स्थल पर पहुंचा जहां उसे धनु के कपड़ों के टुकड़े, बम वाले पट्टे के हिस्से और मांस के टुकड़े लगा बेल्ट बम, दो गिल्लीनुमा स्विच, बम में उपयोग हुए तार और नौ वॉल्ट वाली झुलसी हुई बैटरी मिली. विशेषज्ञो ने वहां मिले मांस के टुकड़ों के डीएनए प्रिंट उतारे. बेल्ट बम से लगे टुकड़े वहां मरी पड़ी औरत के शरीर के टुकडों से मेल खाते थे. यह सिद्ध होते ही मान लिया गया कि हत्या आत्मघाती मानव बम से की गई थी.

इसके बाद नेशनल सिक्यूरिटी गार्ड्स के बम विशेषज्ञों ने बिखरे पुर्जे जोड़कर जींस वाली पट्टी और बेल्ट बम का 'आकार खड़ा किया. इस बीच, 25 मई को वेदारेनियम बंदरगाह पर एलटीटीई के सदस्य शंकर की गिरफ्तारी से एक और रहस्योद्घाटन हुआ. पूछताछ के दौरान उसने बताया कि उसे प्रभाकरन ने भोपाल में भारत सरकार द्वारा छुपाकर रखे वरदराज पेरुमल की हत्या करने के लिए भेजा है.

इस सूचना को तुरंत मद्रास में विशेष जांच दल तक पहुंचाया गया. जब शंकर को हरिबाबू की खीची गई तस्वीर दिखाई गई तो उसने इसमें कुर्ता-पाजामा पहने आदमी को रघुवरन बताया, जो प्रभाकरन का भरोसेमंद करीबी और विस्फोटक विशेषज्ञ है और जो ईपीआरएलएफ के नेता पद्मनाभ की हत्या में भी शामिल था. एलटीटीई के जिन अनेक कार्यकर्ताओं और समर्थको को पूछताछ के लिए पकड़ा गया उनमें से एक वेदारेनियम के जगदीशन ने भी कुर्ता-पाजामा धारी आदमी को पहचाना और उसका नाम रघु बताया. उसने बताया कि पद्मनाभ की हत्या के समय वह वेदारेनियम और जाफना के पाइंट-पेड्रो के बीच उसके

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणी

बम बनाने वाला अरिवू (बाएं)

मई 1991

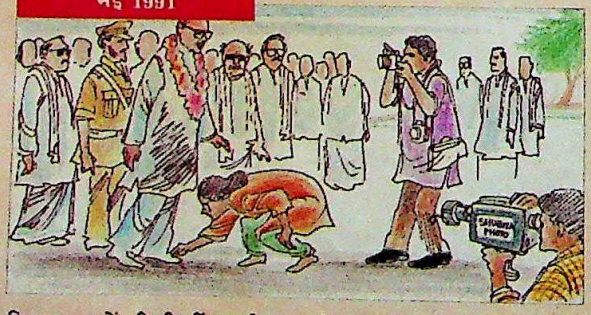

तिरुवल्लूर में वी.पी. सिंह की सभा में दूसरा अभ्यास हुआ. धनु वी.पी. सिंह के पांव उसी तरह छूने में सफल रहती है जैसे उसने बाद में राजीव गांधी के छुए

मई 1991

नलिनी के घर में शुभा धनु को जींस वाला बेल्ट बम पहनाने में मदद करती है बम सलवार कमीज पहन लेने पर नहीं दिखता

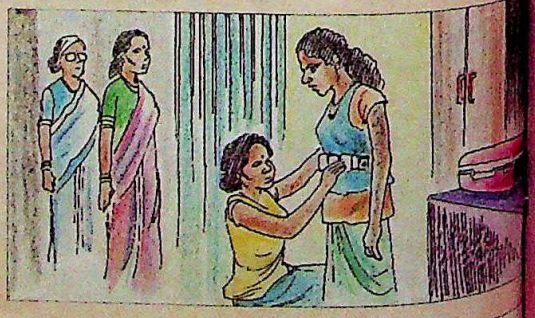

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जान, तुमने अमूल चॉकलेट का रैपर किताब में क्यों रख छोड़ा है?"

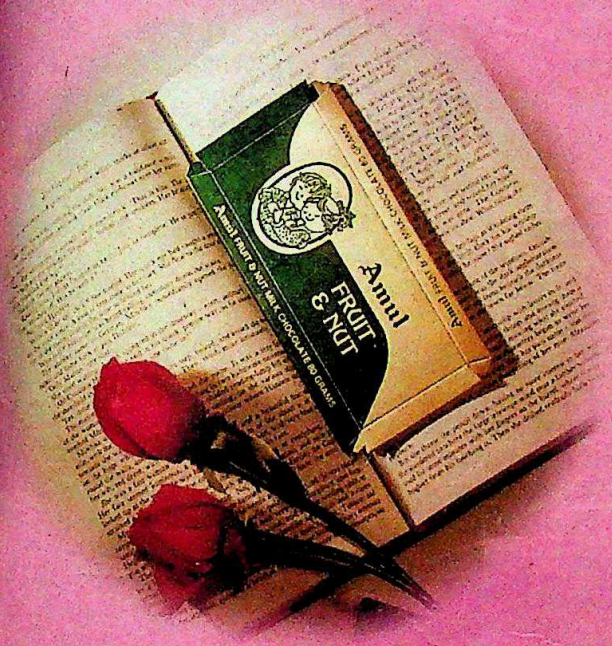

"बताऊं, तुम हंसोगे तो नहीं.

ये चॉकलेट पहली भेंट थी
जो तुमने मुझे दी थी.

तुमने कहा था 'अमूल चॉकलेट
यानी प्यार की मीठी भेंट.'

याद है हम कितना हंसे थे.

लेकिन तुम्हारी वो अदा
मेरा दिल छू गई थी.

उसी याद में मैंने ये
रैपर संभाल कर रख लिया.

देखो, मुझे पता था तुम हंसोगे."

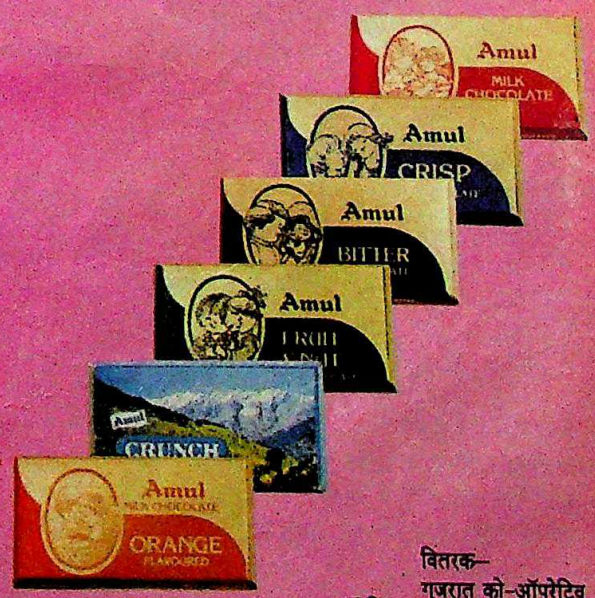

अमूल चॉकलेट

प्यार की मीठी भेंट

६ स्वादिष्ट चॉकलेट

अमूल मिल्क चॉकलेट, अमूल क्रिस्प, अमूल बिटर,
अमूल फ्रूट एण्ड नट, अमूल क्रंच, अमूल ऑरेंज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वितरक—
गुजरात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
फेडरेशन लिमिटेड,
आणंद ३८८ ००१.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

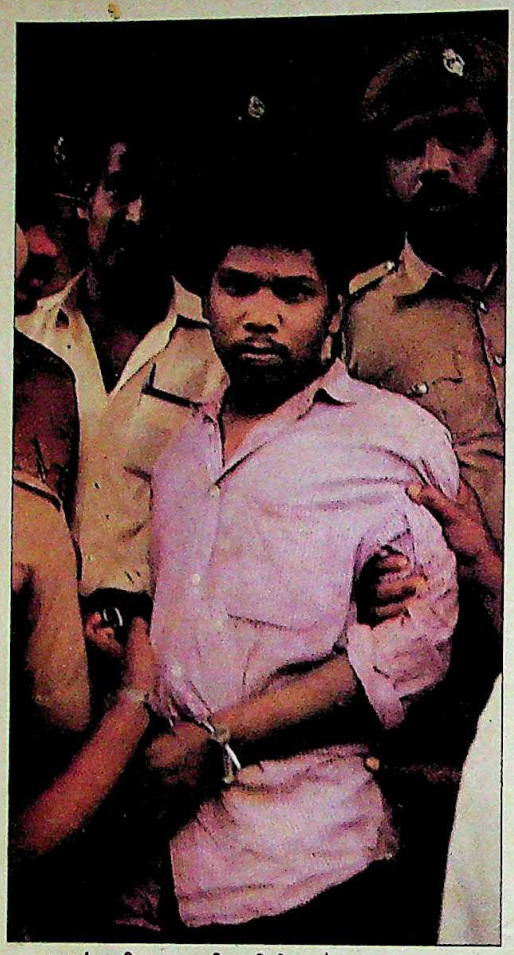

षड्यंत्र की महत्वपूर्ण कड़ी पेइस

स्पीड बोट में सफर कर चुका है.

शंकरन के पास से एक नोटबुक मिली जिसमें मद्रास का एक टेलीफोन नंबर और उसके सामने दो नाम लिखे थे: नलिनी और मुरुगन. टेलीफोन अधिकारियों ने भी इन लोगों के नंबर और पहचान की पुष्टि की.

इस बीच, पद्मनाभ की हत्या के विस्तृत अध्ययन से मालूम हुआ कि उस समय न फूटे दो हथगोलों में भी सी-4 आरडीएक्स विस्फोटक ही भरा था. विशेष जांच दल को दो फोटोग्राफरों, शुभ सुंदरम और रविशंकरन के बारे में भी सुराग मिले जो हरिबाबू का कैमरा पाने के लिए बेचैन थे. हरिबाबू की मां लक्ष्मी ने विशेष जांच दल को बताया कि 22 मई को सुबह रविशंकरन कैमरे के बारे में पूछने के लिए उनके घर आया था लेकिन उसने हरिबाबू की मौत के बारे में कुछ नहीं बताया. हरिबाबू के एक और दोस्त कन्नन ने भी जांच दल को यही किस्सा बताया. इसके बाद जांच दल ने इन दोनों फोटोग्राफरों के फोन सुनने शुरू किए. दोनों पर नजर रखी जाने लगी.

जांच दल के अधिकारी एक बार फिर श्रीपेरुंबुदूर पहुंचे और इस बार उन्होंने हरिबाबू की खींची गई भीड़ की तस्वीरें स्थानीय लोगों में बंटवाईं. जब इसमें मौजूद करीब सारे लोगों के बारे में पता हो गया तो सिर्फ चार या पांच लोग बिन पहचाने रह गए जिनमें दो तो नलिनी और शुभा ही निकले.

रविशंकरन के पास से जब्त एलबम की एक तस्वीर में भी नलिनी को कुछ लोगों के साथ देखा गया. पूछताछ के दौरान रविशंकरन ने जांच दल को बताया कि उसे इस सामूहिक तस्वीर में सिर्फ एक ही आदमी का पता है. और यह आदमी भाग्यनाथन निकला.

भाग्यनाथन को उसके प्रेस से पकड़ लिया गया लेकिन नलिनी और मुरुगन भागने में सफल रहे. भाग्यनाथन ने जांच दल को बताया कि किस तरह वह वेलु सुब्रह्मण्यम के प्रभाव में आया और किन-किन लोगों से उसका संपर्क हुआ. उसने ही कुर्ता-पाजामाधारी व्यक्ति की पहचान शिवरासन के रूप में की.

उधर मुरुगन और नलिनी तिरुपति पहुंचे जहां मुरुगन ने अभियान की सफलता के उपलक्ष्य में मुंडन की सोची थी. इन दोनों ने शादी कर लेने की भी योजना बनाई थी. लेकिन तब तक नलिनी की तस्वीर पूरे राज्य में प्रचारित हो गई. सो, उन्होंने अपनी योजना छोड़ दी. तटीय इलाकों में चौकसी होगी, यह सोचकर उन्होंने मद्रास लौटने का फैसला किया.

शहर के सभी बस अड्डों और रेलवे स्टेशनों पर पुलिस के जत्थे उनकी ही राह देख रहे थे. नलिनी और मुरुगन की गिरफ्तारी इस जांच अभियान की सबसे जबरदस्त सफलता थी. उनसे पूछताछ से न सिर्फ इस पूरे षड्यंत्र का पता चला बल्कि प्रभाकरन के इस सबके पीछे होने की बात भी खुली. मुरुगन ने कबूल किया कि उसे सीधे प्रभाकरन से ही आदेश मिला था. उनके इकबालिया बयानों के तुरंत बाद पेइस और अरिवू की गिरफ्तारी भी हो गई.

लेकिन अभी तक मिली सफलताओं के बावजूद इस जांच दल के मुखिया डी.आर. कार्तिकेयन मानते हैं कि "अभी काफी दूरी तय करनी है." उन्होंने इंडिया टुडे को बताया, "हमें अभी भी मुख्य अभियुक्त को गिरफ्तार करना है लेकिन हमने यह गुत्थी सुलझा ली है कि हत्या कैसे हुई. मैं यह जरूर कहूंगा कि मेरे साथी शानदार ढंग से काम कर रहे हैं". राजीव गांधी की हत्या के षड्यंत्र के रोंगटे खड़े कर देने वाले विवरण जुटा लेना सचमुच शानदार काम का ही प्रमाण है.

मई 1991

महिला दारोगा अनुसूया धनु को राजीव के पास जाने से रोकने की कोशिश करती है लेकिन राजीव खुद सबको पास आने देने को कहते हैं

मई 1991

धनु राजीव को माला पहनाती है और पैर छूने के लिए नीचे झुकती है. जब वे उसे ऊपर उठाने के लिए झुकते हैं तो वह बम का स्विच दबा देती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृत बाजार पत्रिका

कर्ज ने मारा

गौरवशाली परंपरा खंडित

इस साल 6 फरवरी के बाद अनेक कलकत्तावासियों के लिए सुबह के रंग में भंग पड़ गया है. सुबह चाय-बिस्कुट के साथ अखबार पढ़ने के आदी लोगों के सामने अब 123 साल पुराना अंग्रेजी दैनिक 'अमृत बाजार पत्रिका' (अंतिम प्रसार संख्या 25,000) और उसका बंगला सहयोगी दैनिक 'युगांतर' (प्रसार संख्या 60,000) अब नहीं होगा. कर्ज में डूबे अखबार मालिक कर्मचारियों के वेतन देने में असमर्थ रहने पर दफ्तर ही छोड़ गए और 1,100 कर्मचारियों के पास अब अखबार के गौरवशाली अतीत की यादें भर रह गई हैं.

अखबार समूह जब 1986 के अंत में बागबाजार के आनंद चटर्जी लेन के प्राचीन स्थान से अपना दफ्तर मध्य कलकत्ता में आचार्य जगदीश चंद्र बोस रोड पर एक बहुमंजिली इमारत में ले गया, उसके बाद ही इस अमृत का स्वाद कड़वा होने लगा था. महीने में एक करोड़ रु. से अधिक मिलने वाले विज्ञापन अचानक घटकर 15-20 लाख रु. के बीच रह गए. नतीजतन, आर्थिक संकट ने आ घेरा. इसके बाद ही मानो अखबार मौत के कगार पर पहुंच गया.

कर्मचारियों की अधिकता, अनाप-शनाप खर्च, प्रेरणा और अनुशासन के अभाव से यह मौत के मुंह में जा गिरा. 'अमृत बाजार पत्रिका', 'युगांतर' और 'अमृत' कर्मचारी संघ के अध्यक्ष सुबोध बोस कहते हैं, "अखबार को बंद करके मालिक इसकी पूंजी अचल संपत्ति की खरीद-फरोख्त के व्यवसाय में लगाना चाहते हैं."

इस वित्तीय संकट के समय प्रतिद्वंद्वी आनंद बाजार समूह के अंग्रेजी अखबार 'टेलीग्राफ' का निरंतर प्रहार घातक सिद्ध हुआ. आधुनिक साज-सज्जा और चुटीली पत्रकारिता के बल पर 'टेलीग्राफ' ने 'अमृत बाजार पत्रिका' के बाजार में सेंध लगा दी और नतीजतन कभी 1.5 लाख प्रसार संख्या वाले इस अखबार का बाजार बेइंतहा घट गया. प्रतिद्वंद्वी अखबार 'स्टेट्समैन' के संपादक सुनंदा के. दत्त राय कहते हैं, "हम लोग अमृत बाजार को हमेशा प्यार से बागबाजार का प्रतिद्वंद्वी कहा करते थे. हम यह देखकर काफी दुखी हुए कि कलकत्ता में वह गौरवशाली बंगाली संस्थान नदारद हो जाएगा."

'अमृत बाजार पत्रिका' के मालिकों में अखबार चलाने की इच्छा शक्ति ही नहीं रही. इसके प्रबंध निदेशक तरुणकांति घोष राज्य में लगभग 20 साल तक बहुत प्रभावी मंत्री रहे हैं और गृह तथा वित्त जैसे महत्वपूर्ण विभाग संभाल चुके हैं. वे 1984 से 89 तक इंका सांसद भी रहे हैं. परिवार के बुजुर्ग, 94 वर्षीय तुषारकांति घोष इस उम्र में भी अखबार समूह के संपादक हैं. तरुणकांति घोष कहते हैं, "वाकई यह विडंबना है कि सामाजिक अधिकारों और न्याय के लिए लड़ने वाला अमृत बाजार आज खुद ही कानून को तोड़ने वाला बन गया है."

वैसे, अमृत बाजार नकारा प्रबंध का शिकार है. 10 मंजिली विशाल इमारत के एवज में 3.5 करोड़ रु. का बैंक कर्ज लिया गया था. इसके अलावा उच्चतर तकनीक लाने के लिए बैंकों से 9 करोड़ रु. अग्रिम राशि ली गई. सूद निर्बाध गति से बढ़ने लगा. फिलहाल कंपनी पर बैंकों का कर्ज 21 करोड़ रु. है.

अधिकृत तौर पर तालाबंदी की घोषणा नहीं की गई है, सो कर्मचारी अभी भी रोज दफ्तर आते हैं, हाजिरी लगाते हैं और फिर बैठकर चाय की चुस्कियों के साथ अपने भविष्य की चर्चाएं करते रहते हैं. एक प्रूफरीडर चांदी घोष ने दफ्तर में आत्महत्या कर ली.

मालिकों ने पेशकश की है कि उन्हें बहुमंजिली इमारत समेत सारी संपत्ति को बेचने की इजाजत दी जाए ताकि वे कर्ज चुकता कर सकें. और तब वे अखबार का दफ्तर पुरानी जगह बागबाजार में ले जाएंगे. तरुणकांति घोष कहते हैं, "फिर प्रकाशन शुरू करने की संभावना 2000 फीसदी तक उज्ज्वल है." लेकिन कर्मचारी पुनर्प्रकाशन के पहले अपना बकाया चाहते हैं. लेकिन फिलहाल तो यही लगता है कि इस महान बंगाली संस्थान की मौत हो चुकी है.

—रुबेन बनर्जी

सभी फोटो सैबल दास

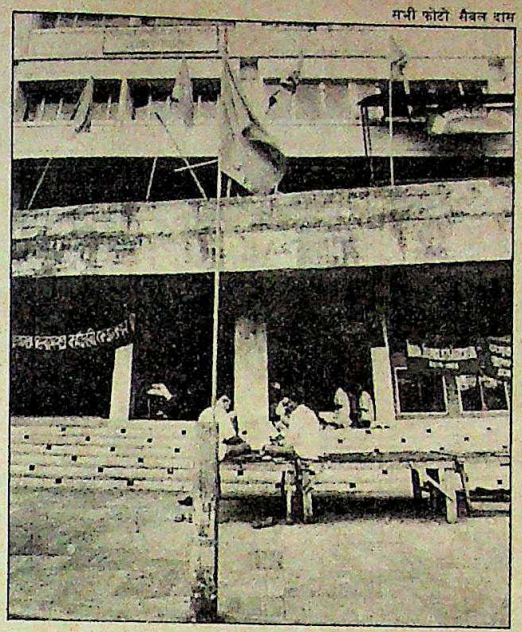

अमृत बाजार का परिसर: कुप्रबंध का शिकार

AMRITA BAZAR PATRIKA

Published from Calcutta and Jamshedpur

कर्ज (रु. में)	
बैंक	21 करोड़
भविष्य निधि	1.98 करोड़
ग्रेच्युटी	80 लाख
अन्य	4.2 करोड़

"यह विडंबना ही है कि सामाजिक अधिकारों और न्याय के लिए लड़ने वाला अमृत बाजार आज खुद ही कानून तोड़क बन गया है"

तरुणकांति घोष
प्रबंध निदेशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पक्की जासूसनी थी वह.
अंदर आते ही
कमरे की एक-एक चीज़ ताड़ ली!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

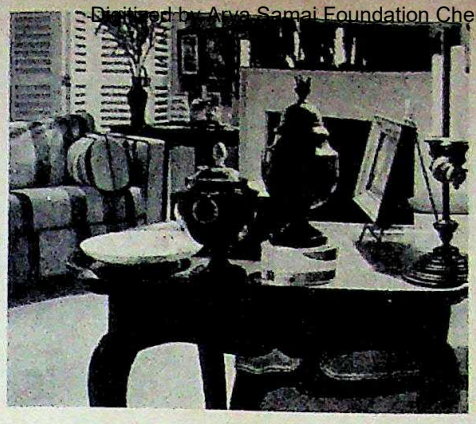

कुछ भी तो नहीं छूटा उसकी नज़र से! आँखों ही आँखों में पूरा कमरा उसने छान लिया, एक-एक चीज़ याद करती गई।

फिर उसकी नज़र छत की तरफ़ उठी।

"हूँ... यह पंखे," वह बोली, "किसकी पसंद है?"

"मेरी," मैंने बताया, "जिस दिन यह फ्लैट ख़रीदा था, उसी दिन पंखे भी लिए थे। क्यों, कुछ गड़बड़ है क्या?"

(पंखे तो उषा के क्लासिक कलैक्शन के थे, पर मैंने औपचारिकता के नाते कह दिया।)

एक विचित्र सी मुस्कुराहट उसके चेहरे पर उभरी। वह बोली — "नहीं, कुछ नहीं। लेकिन मैं बाक़ी फ़्लैट भी देखना चाहूँगी — अगर आपको एतराज़ न हो..."

मुझे भला क्या एतराज़ हो सकता था? चुपचाप मैंने बाक़ी फ़्लैट भी दिखा दिया।

(हाँ, रसोई के पास उसे न जाने दिया क्योंकि वह तो रोज़ की तरह औंधी-सीधी पड़ी थी।)

एक-एक कर उसने सभी कमरों का मुआयना किया। अपनी पैनी दृष्टि से उसने हर चीज़ आँकी, जाँची, बहुत ही बारीकी से।

(दादा जी की दी हुई ऐंटीक रोलटॉप डेस्क में भी उसने उतनी ही दिलचस्पी दिखाई जितनी पंखों में दिखाई थी।)

दस मिनट बाद हम फिर ड्रॉइंग रूम में खड़े थे। वह धीरे से मेरी ओर मुड़ी और मुस्करा दी — "आप पास हो गए। मम्मी ने ठीक ही कहा था — मेरी बहन के लिए आप योग्य वर साबित होंगे। बधाई हो!" मैंने चैन की साँस ली।

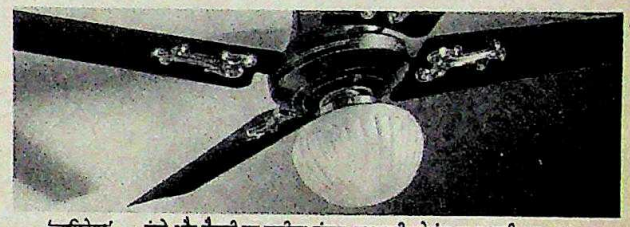

'ल्युमिनेयर' — पंखे और रौशनी का सजीला संगम, मख़मली भूरे रंग पर सुनहरी सज-धज।

'स्टैला' — उत्कृष्ट सुरुचिपूर्ण डिज़ाइन, आईवरी सफ़ेद व भूरे रंगों में।

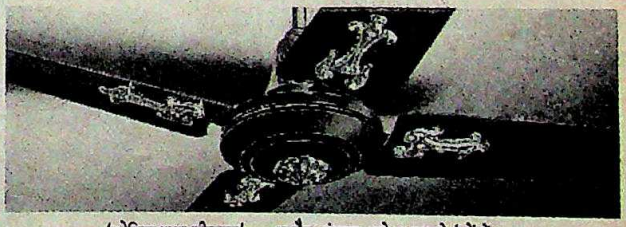

'कोहिनूर सुपर डीलक्स' — सुडौल सुंदरता, भूरे व सुनहरे रंगों में।

उषा

क्लासिक

क लै क्श न

पंखे जो आपके बारे में बहुत कुछ बताते हैं.

60 से अधिक देशों को निर्यात • 40 वर्षों की उत्तमता • भारत के सर्वाधिक बिकने वाले पंखे

Contract JEW/24115 Hin

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी और बंदर

शिल्प के धनी मनोज दास न सिर्फ आधुनिक उड़िया कथा साहित्य के एक प्रतिनिधि कथाकार हैं बल्कि उनकी कहानियों में पूरा भारतीय मानस भी प्रतिबिंब होता है. सामाजिक सरोकार और मानवीय संवेदना ही उनके सृजन के मुख्य विषय है. अन्य प्रमुख रचनाओं के अलाव अब तक उनके चार कहानी संग्रह आ चुके हैं. साहित्य की अनूठी सेवा के लिए उन्हें उड़िया तथा केंद्रीय साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित किया जा चुका है. सशक्त कथाकार की प्रस्तुत कहानी में आदमी और पशु के संबंधों का अद्भुत चित्रण है.

अभी संध्या उतर ही रही थी कि पश्चिमी आकाश के किसी सुदूर कोने से काले बादल का एक गोला उभरता हुआ दिख पड़ा. द ग्रेट ग्रांड सर्कस के मालिक नायक को ठंडी हवा के पहले ही झोंके से आभास हो गया कि मानसून चला आ रहा है. साथ ही उसने पूर्वी तट को छोड़कर दक्षिण की ओर बढ़ने का फैसला कर लिया.

लेकिन इससे पहले कि वह उस तटीय इलाके से अपना आखिरी खेमा उठाता, उसकी मंडली के सदस्यों में, जिनमें कोई दो दर्जन औरतें और मर्द थे, एक बूढ़ा खोखियाया हुआ भालू था, एक बहुत ही शरीफ सांड और अहिंसा का पुजारी एक चीता था, एक नटखट बंदर भी आ शामिल हुआ. जिस व्यक्ति ने नायक के पास उसे कुछ ही सिक्कों के लिए बेचा था, वह बहुत बूढ़ा हो चुका था और उसमें अब इतनी ताकत नहीं रही थी कि वह उसे लिए-लिए घूमता फिरे. लेकिन उसने उसकी परवरिश बहुत अच्छी की थी और उतना ही बढ़िया उसे सधाया था. जिस समय उसका वह प्रिय जीव उससे जुदा हुआ था, उस समय वह काफी रोया था. नायक उसका रोना समझ सकता था, क्योंकि वह जानता था कि ऐसे जीव को अपने से जुदा करने का क्या अर्थ होता है—ये जीव सखा ही नहीं होते, अस्तित्व के घोर संघर्ष में बराबर साथ भी निभाते हैं.

सभी रेखांकन: सुदेश

पहले कुछ दिनों तक तो अपने को अपरिचितों के बीच पाकर बंदर बुरी तरह उदासी ओढ़े रहा, बल्कि जब-जब सर्कस मंडली ने किसी छोटे मुहल्ले या किसी बड़े गांव में पड़ाव डाला, उसने बराबर यही कोशिश की कि वह किसी तरह पास के जंगल या किसी झुरमुट की तरफ खिसक जाए. लेकिन नायक के आदमी हमेशा चौकन्ने रहते, सो उसे भागने का कोई मौका न मिलता. पर इससे उसकी उदासी बढ़ती ही रही.

ऐसी ही स्थिति में नायक ने लट्टू को बंदर की जिम्मेदारी लेने को कहा. लट्टू सर्कस का बहुरूपिया था. नायक अपने अनुभव और अंतर्ज्ञान के बल पर कह सकता था कि लट्टू कुछ इस तरह की नकलें उतार सकता है जिससे बंदर में कुछ तब्दीली आएगी और मंडली को लाभ भी पहुंचेगा. पहले ऐसा कई बार हो चुका था.

और अब भी नायक का सोचना गलत नहीं था. शुरू में तो लट्टू ने बंदर की उदासी को जब-जब दखलंदाजी की, तो

जिस समय उसका वह प्रिय जीव उससे जुदा हुआ था, उस समय वह काफी रोया था. नायक उसका रोना समझ सकता था क्योंकि वह जानता था कि ऐसे जीव को अपने से जुदा करने का अर्थ क्या होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लट्टू जब चीनी जैसी दिखने वाली मोटी महिला के प्रति प्यार का प्रदर्शन करता तो दर्शक हंसते-हंसते लोट-पोट होने लगते लेकिन उनकी खुशी का तब ठिकान न रहता जब बंदर भी उसी अंदाज में अपना प्यार जताने में पीछे न रहता

ब बंदर ने उसका चेहरा कर उसे मजा चखाया. पर टू भी टलने वाला नहीं था. झूठ-मूठ का रोना शुरू दिया और तरह-तरह के बनाए. बंदर को यह सब लगा. अब लट्टू झुककर गया और उसने बंदर से, प्यार और विनम्रता जताते विनती की कि वह उसके पर सवारी करे. बंदर ने र उसकी बात मान ली उसके कंधे पर सवार र बारी-बारी से मंडली के यों का परिचय प्राप्त किया उन्होंने भी उसे केले और रह-तरह की चीजें भेंट कीं.

मशाम दिन लट्टू ने बंदर को ने साथ ही रखा और उसे बिठाए रहा. शाम को खेल होने से पहले वह अपने को पोतता रहा. बंदर ने अपने साथी के चेहरे पर दो-बार कूचियां फेरीं और चेहरे पर भी खुद ही काले सफेद रंग की धारियां बना फिर दोनों साथी एक-दूसरे राहना करते रहे और शाम बंदर लट्टू के सिर वारी किए-किए सर्कस के में उतरा. दर्शक

ज्यादातर गांव के लोग थे. उन्होंने तालियां बजाकर उसका दार स्वागत किया. लट्टू ने जो भी करतब दिखाए, उन पर की बनिस्बत लोग कहीं ज्यादा हंसे. दरअसल, हुआ यह था लट्टू जो भी करतब दिखाता, बंदर हू-ब-हू उसकी नकल उतार करता.

नायक ने लट्टू को मुबारकबाद दी. लट्टू अपनी कामयाबी पर था. अब तो वह दिन-रात बंदर को बढ़िया-से-बढ़िया करतब में जुट गया. बंदर में भी नए-नए करतब सीखने की अद्भुत थी. दूसरे, उसमें आदमी की तरह ही हंसने की भी क्षमता इसलिए शीघ्र ही लट्टू और उसका बंदर, दोनों मिलकर, धारियां दिखाने में सर्कस का प्रमुख आकर्षण बन गए.

टू जो भी करतब दिखाता, बंदर उसके बराबर ही उतरता. उनकी मंडली में एक ऐसी महिला भी थी जो नहीं दिखती थी. और जब वह महिला चीनी पोशाक पहन और सर्कस में थोड़ा-सा भी चलकर दिखाती तो लोग उसके भरकम वजूद पर हंसते-हंसते लोट-पोट होने लगते. उधर, वह चलती तो लट्टू उसके पीछे-पीछे हो लेता. दोनों की खूब जमती. एक भारी-भरकम और दूसरा हवा से भी हल्का, वह आदमी न होकर आदमी की छाया हो. और जब वह उस औरत के प्रति अपना प्यार जताते-जताते बेहाल-सा हो तो दर्शकों को काफी मजा आता. लेकिन उनकी खुशी का तब न रहता जब बंदर भी उसी अंदाज में अपना प्यार जताने न रहता.

सर्कस के मसखरे को यह अधिकार तो रहता ही है कि वह दर्शकों को किसी न किसी तरह हंसाता रहे. इसलिए लट्टू संजीदा दिखने वाले कुछ महानुभावों का कभी रूमाल तो कभी टोपी झपट लेता और बड़ी मासूमियत से उन्हें लेकर चल देता. और उधर बंदर तो उसकी नकल करने में तत्पर रहता ही था. इसलिए वह भी वही कुछ, बल्कि थोड़ा बढ़-चढ़कर ही, कर बैठता और फुर्ती से उनकी नाक से उनका चश्मा उतारकर अपने कब्जे में ले लेता.

दरअसल, सर्कस की दुनिया का सही नागरिक या अच्छा करतब दिखाने वाला वही माना जाता है जो आदमी और जानवर में किसी प्रकार का भेद न करे. यही नहीं, उसे अपने साथी करतब दिखाने वालों का सम्मान तो करना ही चाहिए. लट्टू में बंदर के प्रति ऐसा ही भाव था. बल्कि वह तो उसे अपना शिष्य और दोस्त, दोनों ही मानता था. वैसे जब चारों ओर बिजली की जगमगाहट हो और चेहरा कई तरह से पुता हो और उस पर रूमानी भाव उभर रहे हों तो किसी की असली हालत का सही जायजा ले पाना आसान नहीं होता. लेकिन असलियत यह थी कि लट्टू अब बूढ़ा और कमजोर हो चला था. वह चाहता था कि उसे कोई ऐसा ठौर मिले जहां वह सहानुभूति और संतोष पा सके. बंदर के रूप में उसे वह आंतरिक बल मिला जिसकी उसे तलाश थी, हालांकि इसके लिए उसने कोई प्रयास नहीं किया.

लेकिन लट्टू के जीवन में एक संकट भी आ गया. उनकी मंडली एक लंबे सफर पर थी और एक गांव से किसी मेले में जा रही थी. रास्ते में जबरदस्त बारिश होने लगी. रात को लट्टू को काफी बुखार हो आया. चीता-मास्टर रामू ने उसे होम्योपैथी की दवा दी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन बुखार बरकरार रहा, और शाम तक यह स्पष्ट हो गया कि खेल उसके बिना ही चलेगा. नायक काफी परेशान दिख रहा था. ऐसे मौकों पर परेशान हो जाना स्वाभाविक भी था. फिर लट्टू ने राह सुझायी, "क्यों न आज रात बंदर को अकेले ही करतब दिखाने दिया जाए."

नायक इस मामले में ज्यादा आशावान नहीं था. लेकिन आजमाइश करने में क्या हर्ज है? बंदर लट्टू की बगल में ही था. इसलिए चाहे उसे बुखार था, फिर भी लट्टू ने उसे पहले से ज्यादा सावधानी से रंगा और उसे उसकी पोशाक पहना दी. जब खेल शुरू हुआ तब लट्टू कंबल में लिपटा हुआ था.

वह वैसे ही बीच सर्कस में पहुंचा और उसने अपने शिष्य को आगे धकेल दिया. कमजोरी उसे बेहद थी. इसलिए वह खड़ा नहीं रह पाया और न ही अपने शिष्य के करतब देख पाया. लेकिन इससे पेश्तर कि वह अपने खेमे में लौटता, तालियों की गड़गड़ाहट उसके कानों से टकरायी. इसलिए वह उलटे पांव वापस आया और उसने सर्कस के मध्य झांका. ठीक वैसा ही हुआ जैसा उसका अनुमान था. अकेले रहते हुए भी बंदर ने गजब कर दिखाया था.

लट्टू लौटकर अपने बिस्तर में आ लेटा. उसका दिल धड़क रहा था, खुशी से नहीं, बल्कि एक प्रकार के भय से. हालांकि वह वहां नहीं था, पर उस ठट्टे के लिए जो तालियां बजी थीं, वे रुकती ही न थीं. बंदर ने बाजी मार ली थी. खास तौर से तब लोगों को ज्यादा मजा आया जब बंदर ने उस भारी डील-डौल वाली महिला की तरफ अपना प्यार भरा हाथ बढ़ाया.

कतरन दिखाकर बंदर जब वापस खेमे में आया, तब लट्टू ने जरा-सी आंखें खोलकर उसे देखा. फिर उसने उसकी पीठ ठोकी और उसे शाबाशी देता रहा.

अब नायक को लट्टू की बीमारी की कोई चिंता नहीं थी. खेल मजे से चल रहा था. मेले में चारों ओर बस बंदर के करतबों का ही जिक्र हो रहा था.

लट्टू को ठीक होने में एक हफ्ते से ज्यादा ही लग गया. उसकी जवानी जैसे एकाएक गायब हो गई थी. अब वह जब चलता या किसी से बात भी करता तो उससे देखने वालों को परेशानी होती. उन्हें वह एक अपरिचित बुढ़ऊ दिखता.

"क्या आज रात तुम खेल खेलोगे?" नायक ने उससे प्रश्न किया.

"नहीं मालिक, मुझे लगता है जैसे मुझे किसी ताकत की दवा और आराम की जरूरत है," लट्टू ने उत्तर दिया और फिर ताकत की दवा खरीदने के लिए कुछ पैसे मांगे.

नायक का मिजाज उस समय कुछ बिगड़ा हुआ था. उसने लट्टू के निवेदन को एकदम ठुकरा दिया. लट्टू कमजोर और उदास तो था ही, वह भी मालिक पर चढ़ बैठा. पर इससे मालिक का पारा और चढ़ गया.

उनका झगड़ा सुनकर बाकी लोग भी वहां जमा हो गए. मालिक को तो अब अपना मालिकपना दिखाना ही था. कोई घरेलू झगड़ा तो था नहीं. इसलिए वह जोर से बरसा, "अगर तुम्हें मेरे तौर-तरीके पसंद नहीं तो तुम फौरन जा सकते हो. यह बंदर तुमसे कुछ कम नहीं." फिर अपनी आवाज में कुछ व्यंग्य भरकर बोला, "तुम्हें ताकत की दवा दिलवाने से बेहतर तो यह होगा कि इस बंदर को कुछ दिलवाऊं."

मालिक को तो अपना मालिकपना दिखाना ही था. वह जोर से गरजा, "अगर तुम्हें मेरे तौर-तरीके पसंद नहीं हैं तो तुम फौरन जा सकते हो. यह बंदर तुमसे कुछ कम नहीं. तुम्हें ताकत की दवा दिलवाने से बेहतर है कि बंदर को ही कुछ दिलवाऊं"

बात बरदाश्त से बाहर थी. लट्टू लड़खड़ाता हुआ अपने खेमे में लौटा. बंदर वहीं बैठा था. उसने उसकी तरफ गौर से देखा. लगा जैसे वह जीव काफी कुछ समझ रहा है. लट्टू से रहा न गया. वह बोला, "मैं अपनी जिंदगी के इतने दिन मसखरे का रोल निभाता रहा. अब लगता है मेरे साथ मसखरी होने में भी कोई कसर नहीं रही."

अभी वह लौटकर बैठा ही था कि चीता-मास्टर रामू आ पहुंचा और उसने बंदर को अपने कब्जे में ले लिया. "मालिक का कहना है कि इसे पिंजरे में रहना चाहिए," वह बोला तो सही, पर उसके स्वर में क्षमा-याचना का भाव था.

लट्टू अब बैठा न रह सका. वह गुस्से से कांप रहा था, "क्या मतलब है उसका?" वह अपने आपसे पूछ रहा था, "उस नामुराद के मन में किस तरह की शंकाएं उठ रही हैं? उसने क्या यह सोच लिया है कि इस जीव मेरे हाथों में अब सुरक्षित नहीं है, या कि मेरे मन में उसके प्रति ईर्ष्या जग गई है?"

लट्टू के पास सामान के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

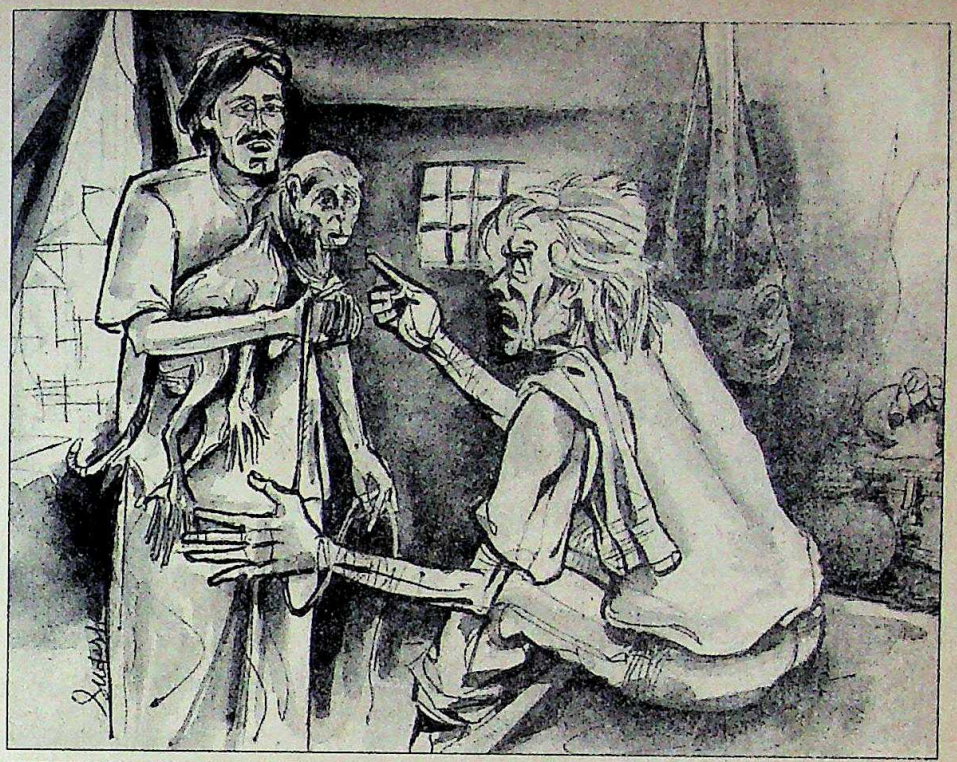

मालिक का संदेश पाकर लट्टू गुस्से से कांप रहा था. उसने कहा, "उस नामुराद के मन में कैसी शंका है? उसने क्या यह सोच लिया है कि यह जीव मेरे हाथों में अब सुरक्षित नहीं है, या कि मेरे मन में इसके लिए ईर्ष्या जग गई है?"

...ादा नहीं था. उसने वह सब ...ुछ किया, और जिस वक्त ...रे लोग प्रचार के लिए जुलूस ...निकालने जा रहे थे, उसने ...पना खेमा छोड़ दिया.

खेमा छोड़ने के बाद उसने ...ार के बाहर एक छोटी-सी ...ाय का सहारा लिया और ...ी के बरामदे में उसने रात ...ायी. सूरज जिस समय ...ीलों-मील फैले अनाज के खेतों ...ो अपनी सुनहरी किरणों का ...न समेट रहा था, उस समय ...ावरण की शांति ने लट्टू के ...वन की यादें ताजा कर दीं. ...खिर, यह जीवन इतना छोटा ...ी तो नहीं था.

दरअसल, लट्टू हमेशा ...ेला ही रहा. मां-बाप थे ...ी इसलिए अभी जवानी पार ...ी की थी कि एक ऐसी मंडली ...ामिल हो गया जो कभी-...ार संगीत-नाट्य किया ...ती थी. उसे उसमें एक ...कुमार की भूमिका मिल ...ई, हालांकि इस राजकुमार को ...कर भूखो रहना पड़ता था. ...द में उसने अपने इलाके के ...क बड़े नगर के होटल में ...री कर ली, और यहीं उसने ...ली बार सर्कस देखा. उस ...ेल में उसकी उम्र का एक लड़का था जो बिजली की तरह ...लों और रस्सों में से अपने को तोड़ता-मरोड़ता निकल जाता था. ...ट्टू को इस अद्भुत लड़के के प्रति गहरा आकर्षण था. इसलिए ...ने उसके साथ किसी-न-किसी तरह दोस्ती गांठ ली थी.

...ब उस शहर से सर्कस रवाना हुआ तो लट्टू भी उसके साथ-...ो हो लिया और सर्कस की गेटकीपरी करने के साथ-साथ रिंग-...टर के निजी सेवक के रूप में भी काम करने लगा. एक रोज, ...कि खेल चल रहा था, जोर की आंधी आई जिसने देखते ही ...ेल समूचे वितान को उखाड़ फेंका. लट्टू का दोस्त काफी ऊपर ...ढ़ा हुआ था. वह वहीं से नीचे आ गिरा और उसका दिल ...कना बंद हो गया.

...स दुर्घटना के बाद लट्टू को हर चीज खराब लगने लगी ...और उसने दूसरे काम की तलाश में उस मंडली को छोड़ ...या. लेकिन जल्दी ही उसे पता चल गया कि सर्कस तो उसकी ...ेलों में रच-बस गया है. इसलिए जैसे ही शाम होती, सर्कस के ...की याद उसे सताने लगती. उसे वहां का वातावरण भी याद ...ने लगता जिसमें भय और प्रशंसा मिले होते. फिर वहां था ...लों और जानवरों का अनोखा मेल, करतब दिखाने वाले लड़के ...लड़कियों के साथ घुल-मिल जाने की रोमांच भरी खुशी और ...नी जगहों की यात्रा का सुख.

...र सर्कस में वापस चला आया, और यहां पर उसने कई तरह ...काम किया, जब तक कि उसके भीतर का मसखरा बाहर नहीं ...आया. उसने कई मंडलियों का उठना और गिरना भी देखा. फिर वह हालात के साथ भी बहता रहा, जिन्होंने उसे बड़े-बड़े अखाड़ों से यहां, द ग्रेट ग्रांड सर्कस के अखाड़े में ला पटका.

उस रात लट्टू को अच्छी नींद आई. उस सुखद नींद के पीछे एक एहसास यह था कि वह हर चीज के आखिर तक पहुंचा. कोई ख्वाहिश अब ऐसी नहीं थी जिसे लेकर वह बेचैन होता. नई तरह की जिंदगी शुरू करने का भी उसमें कोई जोश नहीं था.

लेकिन सुबह हुई तो वह चिंता में पड़ गया. उसे कहीं पहुंचकर कुछ करना तो होगा ही.

वह इस स्थिति पर आंखें बंद किए विचार कर ही रहा था कि एकाएक उसे अपनी गर्दन के गिर्द बहुत ही स्निग्ध हाथों का एहसास हुआ. वह इन हाथों को अच्छी तरह पहचानता था और इसलिए उन्हें लेकर किसी प्रकार की दुविधा में नहीं था.

बंदर अब उसके सामने था. वह जरूर, पेश्तर इसके कि उसे पिंजरे में बंद किया जाता, खेल के दौरान या खेल के तुरंत बाद वहां से भागा होगा, क्योंकि वह सर्कस की पोशाक ही पहने हुए था और वैसे ही पुता हुआ था.

"वह नटखट जरूर मेरी खोज में इधर-उधर देर तक भटका होगा." लट्टू के मुंह से एकाएक निकला और वह जोर-जोर से हंसते हुए अपने शिष्य को सहलाने लगा. अब इस नन्हें प्राणी की मदद से गांव-गांव घूमकर वह आसानी से अपनी रोटी पैदा कर सकता था.

और अगर नायक बंदर वापस भी लेने आया तो वह अच्छी तरह जान लेगा कि उस जीव के साथ-साथ लट्टू को भी उसे वापस ले जाना होगा.

—अनुवाद: **श्रवण कुमार**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटक

गहरी दृष्टि

संदर्भ ग्रंथ के रूप में उपयोगी

शंकर शेष हिंदी के समर्थ नाटककार हैं. लगभग 22 नाटक और एकांकियों का सृजन शंकर शेष ने किया. वे बहुआयामी प्रतिभाशाली लेखक के रूप में सामने आते हैं. बाल, नाटक, नाटक-अनुवाद और उपन्यास लेखन के अलावा शंकर शेष ने 'घरौंदा' और 'दूरियां' जैसी समानांतर सिनेमा धारा की सार्थक फिल्मों के पटकथा-संवाद भी लिखे. भारतेंदु, प्रसाद, भुवनेश्वर, लक्ष्मीनारायण मिश्र, मोहन राकेश जैसे पहली पंक्ति के नाटककारों के होते हुए भी हिंदी नाटक बंगला-मराठी इत्यादि भारतीय नाट्य-परंपराओं जितना समृद्ध नहीं है. यह विडंबना ही है. इस संदर्भ में मोहन राकेश के बाद, अपनी तमाम सीमाओं के बावजूद शंकर शेष के नाटक संभावनाओं से रहित नहीं हैं.

शंकर शेष प्रयोगशील नाटककार के रूप में पहचाने जाते हैं. उनकी प्रयोगशीलता मात्र शैल्पिक धरातल तक सीमित नहीं है. इससे आगे बढ़कर शेष ने प्रायोगिक नाट्य परंपरा को विकसित किया और मंचीय तथा कथानक संबंधी नए अर्थों का समावेश किया. संख्या में अधिक होने पर भी उनके नाटकों में लगभग दुर्लभ, विविधता देखने को मिलती है. 'खजुराहो के शिल्पी' में उनकी जीवन और कला संबंधी दार्शनिक आकुलता उभरती है और दूसरी तरफ 'पोस्टर में वे वर्ग संघर्ष के कारणों पर उंगली रखती हैं. इसी तरह, वे 'फंदी' में 'मर्सीडिथ' जैसा एकदम नया और अपारंपरिक विषय उठाते हैं. साथ ही 'एक और द्रोणाचार्य' में पारंपरित मिथकीय त्रासदी का आधुनिक विवेचन करते हैं. वस्तु एवं रूप की विविधता उनके अन्य नाटकों में भी मिलती है. वस्तुतः प्राच्य मिथकों एवं प्रतीकों की समसामयिक संदर्भों में व्याख्या और समकालीन विसंगत यथार्थ के मूलभूत संकटों का गहराई से विश्लेषण— ये दो मुख्य बिंदु शेष के नाटकों के मूल में हैं. इस अर्थ में वे जयशंकर प्रसाद और मोहन राकेश के बीच अपना मुहावरा गढ़ते नजर आते हैं.

शेष उन गिने-चुने नाटककारों में हैं, जिनके नाटक प्रकाशित होने से पूर्व ही अपने मंचन के द्वारा स्थापित होते रहे हैं. उनके नाटकों के साथ एक समस्या यह रही कि एक लंबे समय तक वे अप्रकाशित रहे. केवल मंचित होने के कारण अकादमिक क्षेत्रों मे उनकी वह चर्चा नहीं हुई जो हो सकती थी. डॉ. विनय ने उनके पूरे लेखक को पांच खंडों की रचनावली में प्रस्तुत करके इस कमी को पूरा किया है. यह रचनावली उन पुस्तकों में है, जिसे लेखक की षष्ठीपूर्ति या अभिनंदन-ग्रंथ की तरह बतौर परंपरा प्रकाशित नहीं किया गया है. इसका प्रकाशन एक बड़ी जरूरत को पूरा करने का प्रयास है. मात्र शोधार्थियों के लिए ही नहीं, उसकी उपयोगिता नाटक के आम पाठक के लिए भी कम नहीं है.

शंकर शेष रचनावली
नाटक
संपादकः डॉ. विनय
पृष्ठः 2500
कीमतः 1000 रु.
प्रकाशकः किताब घर, दरियागंज, दिल्ली

—हेमंत कुकरेती

कथा संग्रह

संग्राम की ओर

जीवन-रस से सराबोर

डॉक्टर शांतिनाथ देसाई का आधुनिक कन्नड़ कथा साहित्य में विशिष्ट स्थान है. उनके कन्नड़ भाषा में छह कथा संकलन और आठ उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं. इस संकलन में ग्रामीण और शहरी जीवन की 17 उत्कृष्ट कहानियां पेश की गई हैं.

इन कहानियों में विविध सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है. जैसा कि कहानियां 'यश की लालसा', 'यात्रा' और 'कूर्मावतार' में उच्च वर्ग एवं मध्य वर्ग तथा पुरानी एवं नई संस्कृति के परस्पर टकराव, मध्यवर्गीय आर्थिक समस्याओं, और अंतरजातीय विवाह जैसे विषयों को पेश किया गया, जबकि 'प्रतिकृति', 'मध्यस्थ' और 'अंतर' कहानियों में विश्वविद्यालय परिसर, शिक्षक-विद्यार्थी संबंधों तथा नवयुवकों की समस्याओं को लिया गया है. 'शिबु का विद्रोह', 'नदी का पानी' और 'चंदू' कहानियों में किशोरावस्था की मानसिक अवस्था का बड़ा मार्मिक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है. स्त्री-पुरुष संबंधों तथा यौन व प्रेम का सजीव चित्रण 'चंदू' और 'यश की लालसा' में दिया गया है.

इस संकलन की सबसे सशक्त कथाकृति है 'क्षितिज' जिसमें एक पुराने संस्कारों की युवती का जहाज में यात्रा करते समय नवीन एवं पाश्चात्य संस्कृति के स्वच्छंद वातावरण से साक्षात्कार होने पर उसके मानसिक द्वंद्व का हृदयस्पर्शी विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है. यह भारतीय युवती शिक्षा प्राप्ति के लिए इंग्लैंड जा रही है. अपने संस्कारों के कारण संकोचवश वह मानसिक और शारीरिक सुख प्राप्त करने से असमर्थ रहती है.

विविध रूपकों, जैसे जहाज, सागर, क्षितिज, रात्रि-उत्सव आदि का लेखक ने सफलतापूर्वक उपयोग करके कहानी को अद्वितीय बना दिया है.

एक अन्य उल्लेखनीय कहानी है 'यश की लालसा', जिसमें उच्च वर्ग और मध्य वर्ग की विषमताओं को प्रदर्शित किया गया है. इस कहानी में मध्यवर्ग एवं उच्च वर्ग पर तीक्ष्ण व्यंग्य भी है और मार्मिक विश्लेषण भी.

इस प्रकार इसमें उच्च वर्ग की अनैतिकता, मर्यादाहीन आचरण तथा अन्य विडंबनाओं को भी रेखांकित किया गया है.

क्षितिज
कहानी संग्रह
शांतिनाथ देसाई
कुल पृष्ठः 221
मूल्यः 75 रु.
प्रकाशकः भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली-

इन कहानियों का सुंदर अनुवाद किया है डॉ. बी.आर. नारायण ने. अनुवादक ने 11 पृष्ठों की भूमिका में कन्नड़ कथा साहित्य के प्रारंभ और विकास पर एक ज्ञानवर्धक निबंध भी दिया है जो कि वस्तुतः सराहनीय है. इसके अतिरिक्त पुस्तक के अंत में परिशिष्ट के रूप में उन्होंने लेखक से एक प्रबुद्धतापूर्ण वार्तालाप भी दिया है, जिसमें मूल लेखक डॉ. देसाई के लेखन संबंधी कुछ प्रश्नोत्तर पेश किए गए हैं, जिससे पुस्तक और भी अधिक उपयोगी बन गई है.

—सुरजीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Down to earth designs with an upscale appeal!

Aesthetics, function and versatility are the hallmarks of our designs. No wonder then why Dash holds sway over half the ready-to-wear connoisseur segment in the country.

ADVEL- DMW-741

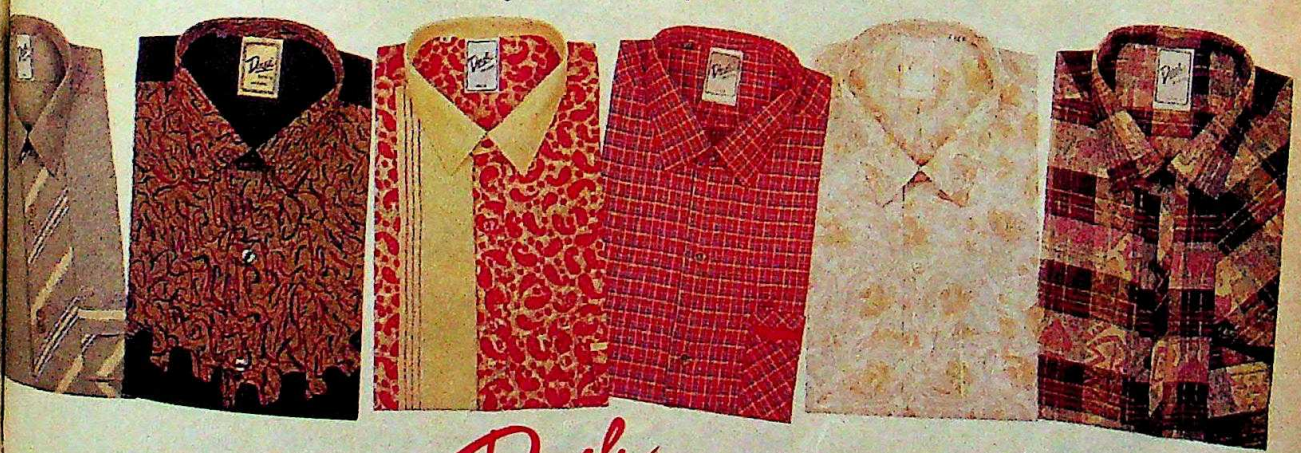

Dash
MEN'S WEAR
The only way to dress

DWARKA MENS'S WEAR Head Office : New Delhi-110 031 Tel : 221782-83. Bombay Office : Chintamani Building, 44-Ram Wadi, Kalba Devi, Bombay-400002. Tel : 251590

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे को तैसा

मुर्गे की जान चली जाए और मियां जी को फिर भी मजा न आए तो दोष किसका? मगर यह मामला कुछ ऐसा मसालेदार है कि मरने-मारने को बुरा बताने वाले भी मुर्गे की हिमायत को तैयार नहीं हैं.

फिल्म 'चोर और चांद' की गोवा में हुई शूटिंग के दौरान **पूजा भट्ट** ने सितारों वाले खर्चीले नखरे दिखाए, मुंबई से आकर उनके 'बॉय फ्रैंड' उतने दिन गोवा में ही जमे रहे रात की पार्टियों का 'हैंग ओवर' सुबह इतनी देर तक सवार रहता था कि कभी काम वक्त पर शुरू नहीं हो सका. इन सब के जो जवाब पूजा ने दिए हैं वो किसी भी अभिनेत्री को फिल्मों से बाहर कर देने को काफी होते—"शूटिंग खत्म होने के बाद मैं क्या खाती हूं, क्या पीती हूं, इससे किसी को क्या लेना-देना?"

लेकिन यहां तो मुर्गे यानी उस प्रोड्यूसर की किसी को परवाह ही नहीं जिसको अपनी हीरोइन की हरकतों का खामियाजा चुकाने में पसीने आ गए. सबसे बड़ी बात यह कि इस प्रोड्यूसर ने जो खुद हीरो भी है, दूसरे प्रोड्यूसरों के साथ यही सब करने में कब कोर-कसर रखी है जो आज किसी को उसके साथ सहानुभूति हो? पूजा ने तमाम ज्यादतियों के बावजूद आदित्य पंचोली जैसे बददिमाग का दिमाग जो ठिकाने लगा दिया.

पूजाः किसी को क्या लेना?

मुगालते में पड़ा हीरो

'साहिबां' का ऑडियो म्यूजिक कैसेट रिलीज किए जाने के लिए दी गई पार्टी में हीरो **ऋषि कपूर** आए और रस्म निभाकर चलते बने. यह कोई खास खबर नहीं बनी. लेकिन ऐसा जरा कम ही होता है कि हीरो पार्टी छोड़कर चला जाए और फिर आसपास के किसी दूसरे होटल में कमरा लेकर वहां से, पार्टी में आए दोस्तों को फोन करे कि पार्टी छोड़कर घर चले जाएं.

उम्मीद थी कि 'साहिबां' में भी वे ही छाए रहेंगे. लेकिन 'साहिबां' में निर्देशक जैसे इस हीरो को भूल, छरहरी, सलोनी और प्रतिभा की धनी हीरोइन माधुरी दीक्षित में खोकर रह गया. यह अनुभव उन सभी का है जिन्होंने फिल्म के रशेज देखें हैं. ऋषि, यही बात बर्दाश्त नहीं कर पा रहे. और इस कोशिश में उन्होंने वे सब हरकतें दोहराई जो अब आधी उम्र में उन पर शोभा देती लेकिन साड़ी में सजी माधुरी की मितभाषी सौम्यता के आगे ऋषि कपूर ज्यादा ज्यादा शक्ति कपूर साबित होकर रह गए

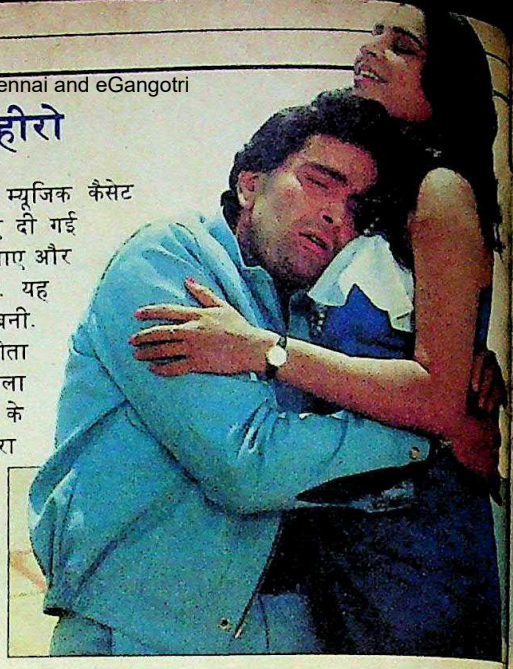

ऋषिः बचकानी हरकतें

स्मिता बनाने की तैयारी

चेहरे की रंगत उड़ी-उड़ी, बिखरे हुए बाल, एक दाग यहां, एक दाग वहां, इसी रूप में शूटिंग करती मिलीं **मीनाक्षी शेषाद्रि**. यूं हीरोइनें रूप बिगाड़ने को तैयार नहीं होतीं "डायरेक्टर राजकुमार संतोषी जी की नई फिल्म 'घातक' में मुझे मेकअप करना ही नहीं है," मीनाक्षी ने चहकते हुए बताया. ओह! लेकिन संतोषी अपने सपनों की रानी के साथ यह कर क्या रहे हैं? और मीनाक्षी राजी कैसे हो गई इसके लिए? वह भी तब जब रवीना टंडन जैसी 'फ्रैश' अभिनेत्री साथ हो?

पूरा हफ्ता लग गया परत-दर-परत खोलते. हालांकि मीनाक्षी को फ्लॉप और अपशकुनी हीरोइन के चंगुल से निकाल हिट हीरोइन की प्रतिष्ठा संतोषी निर्देशित 'घायल' ने ही दिलाई. फिर भी उनके निवेदन को मीनाक्षी ने ठुकरा दिया. लेकिन संतोषी ने उन्हें बदला नहीं. कहा जा रहा है कि इस नई फिल्म 'घातक' बिना मेकअप, मीनाक्षी को शबाना आजमी और स्मिता पाटील की ऊंचाइयों तक पहुंचा देने का भरोसा दिलाया है संतोषी ने.

श्रीदेवी बनने की कोशिश में मीनाक्षी को स्मिता बनने की प्रेरणा दे संतोषी प्यार में हार का बदला तो नहीं रहे कहीं? है न घातक विचार!

मीनाक्षीः क्या-क्या न करना पड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महंगी पड़ती अकड़

...ली प्यार किया' सुपर हिट होते ही **सलमान** ने प्रेस से बातचीत करना बंद कर दिया ...पिछले दिनों एक शूटिंग पर जब प्रोड्यूसर के निमंत्रण पर पत्रकारों-छायाकारों का दल ...तो सलमान भड़क गए. शूटिंग करने से उन्होंने साफ इनकार कर दिया.

...ली भर के अंदर-अंदर प्रेस को निर्माता शोभू मुखर्जी ने नई फिल्म 'संगदिल सनम' के ...पर आमंत्रित किया था जिसके हीरो हैं सलमान. प्रेस फोटोग्राफरों के पहुंचते ही मुहूर्त ...तो भी गया. लेकिन एक भी फ्लैश न चमकता देख प्रोड्यूसर परेशान हुआ. उन्होंने ...'कुछ फोटो-वोटो लो वरना छपेगा क्या' "पहले सलमान को किनारे कर दीजिए", ...प्रवक्ता ने कहा. सलमान सकपका कर रह गए. हट जाएं तो हेठी, खड़े रहें तो हेठी. ...शूटिंग की इस गति से दोनों को ऊबारा प्रेस ने ही. वॉकआउट करके.

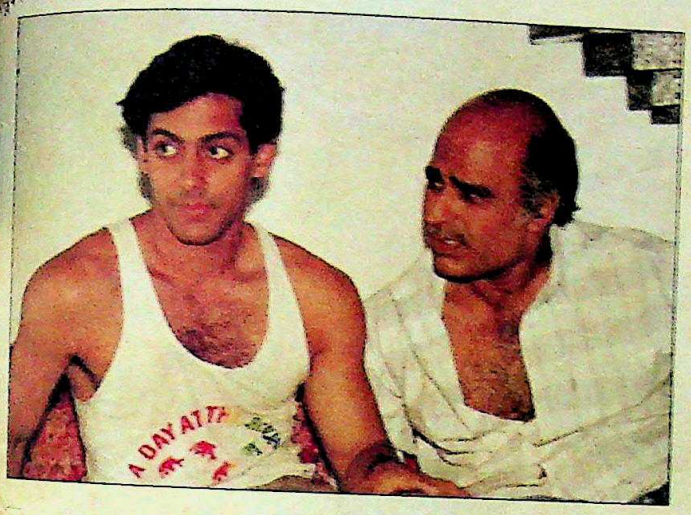

सलमान: हेठी का आलम

जिक्र कमर का न भाया

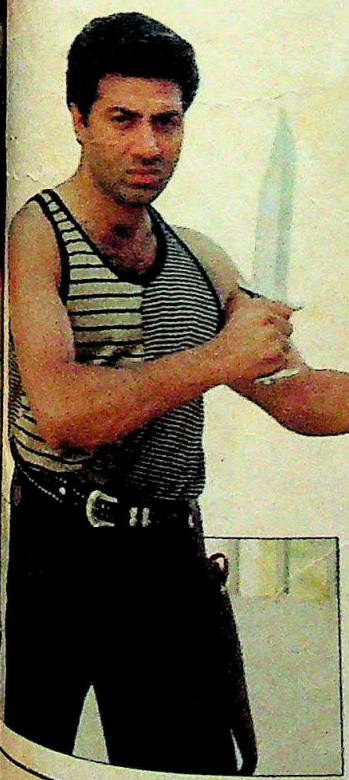

सच कहने और सच लिखने के इल्जाम में प्रेस रिपोर्टरों की पिटाई करना धर्मेंद्र का शौक रहा है. और **सनी देओल** चूंकि धर्मेंद्र की कार्बन कॉपी भर हैं. सो, यह शौक भी उन्होंने ज्यों का त्यों अपना लिया है. पिछले दिनों उनकी नई फिल्म शुरू होने की खुशी में दी गई पार्टी में वे, एक पत्रकार की पिटाई करने उसके पीछे दौड़े चले गए.

अब इस बात के लिए कोई पत्रकार क्या करे कि सनी देओल की एक्टिंग और पुरस्कार की ट्राफी की तो कहीं कोई चर्चा हुई नहीं, चर्चा में आ गई उनकी कमर! किस-किस को पसीना नहीं आया इस कमर की खातिर? तो भला, क्या बुरा किया पत्रकार ने इस कमर का हाल पूछकर? उसे क्या पता था कि कमर के जिक्र भर से सनी की सारी गर्मी सीधे सिर में जा पहुंचती है? पर घायल के घाव को छूने का यही नतीजा होता है.

सनी: कैसी-कैसी मुसीबत

जरा बहादुरी भी दिखाओ

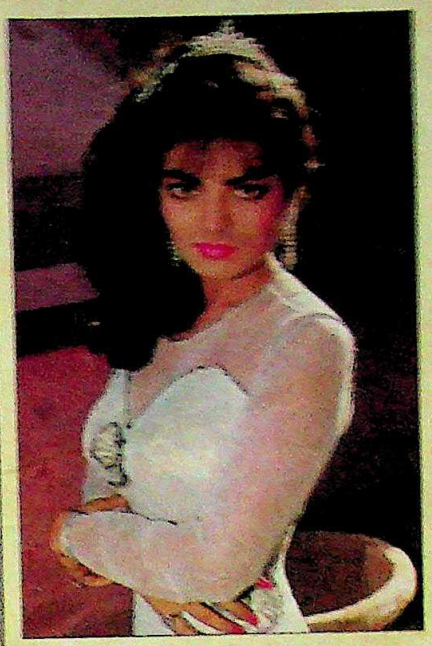

शीबा: शाबाशी बटोरने का गुर

फिल्मों में आई किसी भी नई हीरोइन से पूछिए, "सुना है फिल्मों में नई आई लड़की को कई समझौते करने पड़ते हैं. आपका अनुभव क्या है?" वह तुरंत कहेगी, "पर मेरे साथ किसी ने, कभी कोई बदतमीजी नहीं की." यही बात अब **शीबा** भी कह रही हैं. जबकि यह अफवाह जगजाहिर हो चली है कि टुटु शर्मा की फिल्म 'राजकुमार' उन्हें इसके हीरो अनिल कपूर के साथ 'आवश्यक सहयोग' न करने की वजह से ही छोड़नी पड़ी है.

'राजकुमार' के लिए पहले हीरो सोचे गए थे अमिताभ बच्चन. किन्हीं वजहों से अमिताभ के साथ बात बनी नहीं. उनकी जगह हीरो ले लिए गए अनिल कपूर. हीरोइनें तय हुई माधुरी दीक्षित, शिल्पा शिरोडकर और शीबा. शीबा विदेशों में रही, पढ़ी हैं. पैसे की उनके पास कमी नहीं. मुंबई में किसी भी नामी अभिनेत्री से बड़ा फ्लैट लेकर शीबा ने 'संघर्ष' शुरू किया था. अब ऐसी लड़की के सामने समझौते की नागवार शर्तें आएंगी तो वह काहे को स्वीकार करने लगी? वह भी हीरोइन नहीं, तीसरी सहायक भूमिका के लिए? लिहाजा, शीबा फिल्म से बाहर.

शीबा के कदम का स्वागत किया जाना चाहिए लेकिन अगर शीबा हिपोक्रेसी छोड़, हिम्मत से इतना कहतीं कि "हां, अनुचित बातें मुझसे भी मनवानी चाही थीं. लेकिन मैंने फिल्म छोड़ना बेहतर समझा." तो क्या उन्हें ज्यादा दाद न मिलती?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमीः तहलका मचाने को तैयार

आई नाजनीना

◆ सीमा पर से मुंबई आकर रुपहले परदे पर चमकने वाले सितारों में नया नाम है—पाकिस्तान में जन्मी अभिनेत्री **सोमी अली** का जिन्होंने पहली बार में ही लंबा हाथ मारा है. वे युवाओं के चहेते सितारे सलमान खां के साथ फिल्म 'बुलंद' में नजर आएंगी. वे बताती हैं, "इससे पहले मैं एक फिल्म का ऑफर नामंजूर कर चुकी हूं. धर्मेंद्र अपने बेटे बॉबी के साथ एक फिल्म 'चैम्पियन' का प्रस्ताव लेकर आए थे. लेकिन इसमें मुझे स्विमिंग सूट पहनना था, इसलिए मैंने फिल्म नहीं ली" ऐसी हिचकिचाहट के बावजूद यह शर्मीली लड़की तहलका मचाने को तैयार है.

बजाते रहने की तमन्ना

◆ संगीत यदि प्रेम का आधार है तो इसकी साधना में जुटे रहने में क्या हर्ज है. 3,75,000 डॉलर की मैक आर्थर फैलोशिप जीतने के बाद सरोद वादक **अली अकबर खां** की शायद यही करते रहने की योजना है. वे कहते हैं, "यह संगीत मनोरंजन के लिए नहीं यह तो आत्मा की खुराक है." यह पूछने पर कि इस राशि का वे क्या करेंगे. उनका जवाब है कि उन्होंने अभी कुछ तय नहीं किया है लेकिन बहुत दिनों से उनकी ख्वाहिश है कुछ ऐसा रिकार्ड करने की तमन्ना रही है. इसके अलावा वे शास्त्रीय संगीत का अभिलेखागार भी तैयार कर रहे हैं. वैसे आजकल उनका नया एलबम 'जर्नी' तहलका मचा रहा है.

गौतम राज्याध्यक्ष

खांः मन लायक मौका

सयानी हुई बेटी

◆ सेंसर की सीमा तक ऊंचे स्कर्ट पहनने वाली **पूजा बेदी** आखिर सयानी हो गई. उनकी 21वीं सालगिरह की पार्टी वैसी ही थी जैसी होनी चाहिए, यानी जोश, हंगामा और शबाब सब कुछ उफान पर. मम्मी प्रोतिमा बेदी, पापा कबीर बेदी और उन दोनों की दोस्त मंडली भी जुटी थीं लेकिन पार्टी को असली रंग दिया पापा कबीर बेदी ने, जो मुंबई के 'गो बनाना' डिस्कोथे में नाचती बेटी को तोहफा देने के लिए खींचकर बाहर लाए. तोहफा था—फूलों और रिबनों से सजी चांदी के रंग की मारुति डीलक्स. सुबह 5 बजे पार्टी खत्म होने पर पूजा जब इसी कार से घर जाने लगी तो पापा ने टोका, "लाइसेंस बनने के बाद ही." यह पूछने पर कि 21 वर्ष की होने पर वे कैसा महसूस कर रही हैं, पूजा का जवाब था, "मुझे बड़ा होना बहुत बुरा लगता है. लगता है, मैं बहुत लंबा रास्ता तय कर आई हूं." वह तो आपने किया ही है! वैसे, उस दिन भी पूजा भड़काऊ कपड़ों में थी.

अविनाश पसरीचा

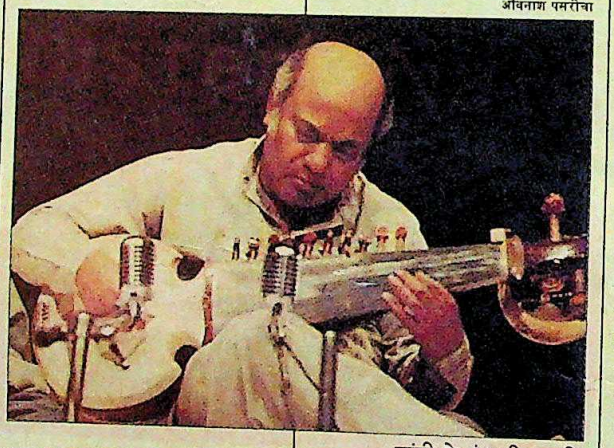

पूजाः आखिर सयानी

रायः आलोचना बर्दाश्त नहीं

आलोचना से खफा

◆ आम तौर पर आलोचक **सत्यजीत राय** की आलोचना से परहेज बरतते आए हैं. लेकिन जब उनके मित्र चिदानंद दासगुप्त ने उनकी फिल्म 'शाखा प्रोशाखा' के बखिए उधेड़ डाले तो राय ने 'द टेलिग्राफ' में अपनी प्रतिक्रिया भेजी. "इस तरह की घटिया समीक्षा से तो दास एक अच्छे आलोचक का स्थान खो बैठेंगे." इस पर दास का जवाब था, "यह देखकर दुख होता है कि राय हम उस (भारतीय) आलोचक से लड़ मरने को उतारू हैं, जिसने आलोचना की जुर्रत की."

गौतम राज्याध्यक्ष

यह भी कोई क्रिकेट है!

◆ दोनों देशों में कूटनयिक संबंध नहीं हैं तो क्या हुआ, भारतीय क्रिकेट के 'लिटल मास्टर' सुनील गावसकर ने क्रिकेट के लिए प्रतिबंधित देश दक्षिण अफ्रीका में 'युनाइटेड क्रिकेट बोर्ड ऑफ साउथ अफ्रीका' के उद्घाटन पर जाने के लिए तो हामी भर ली है. उनका कहना है, "दक्षिण अफ्रीका सरकार कहती है गोरे काले का रंगभेद नहीं रहा और यह क्रिकेट के लिए अच्छी खबर है." इमरान खां और गैरी सोबर्स के अलावा गावसकर भी इस समारोह में विशेष अतिथि होंगे. क्या गावसकर दक्षिण अफ्रीका के भारत आकर खेलने की बात उठाएंगे तो उनका जवाब होता है, "बिलकुल नहीं, मैं वहां सिर्फ दावत उड़ाने जा रहा हूं." अब इसे तो कोई क्रिकेट नहीं कहेगा!

कार्टून: जयंती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

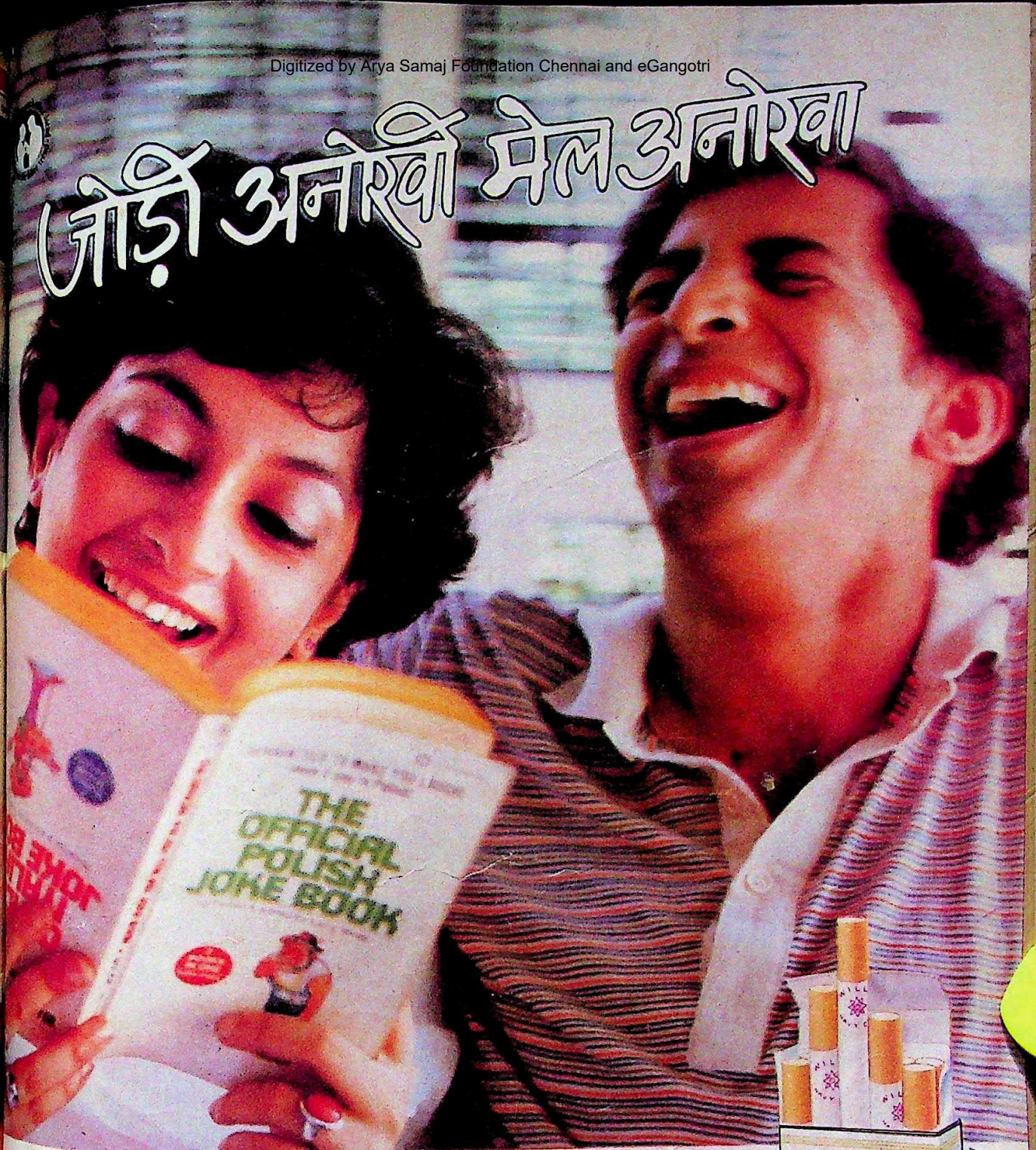

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन। आज भी है यह सबसे बढ़िया। स्वाद में। तसल्ली में। हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर। लाखों सिगरेट प्रेमियों ने इसे आज़माया...फिर हमेशा के लिए अपनाया।

WILLS
FILTER

आई टी सी लिमिटेड
का अपना एक ब्राण्ड
भारत में निर्मित

फ़िल्टर और तम्बाकू का अनोखा मेल

वैधानिक चेतावनी:
सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTRATION NO. KOL 1222/98
REGISTERED NO. DKW/PBD/2/97
D—(C) 14/96

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह मा रा ब जा ज

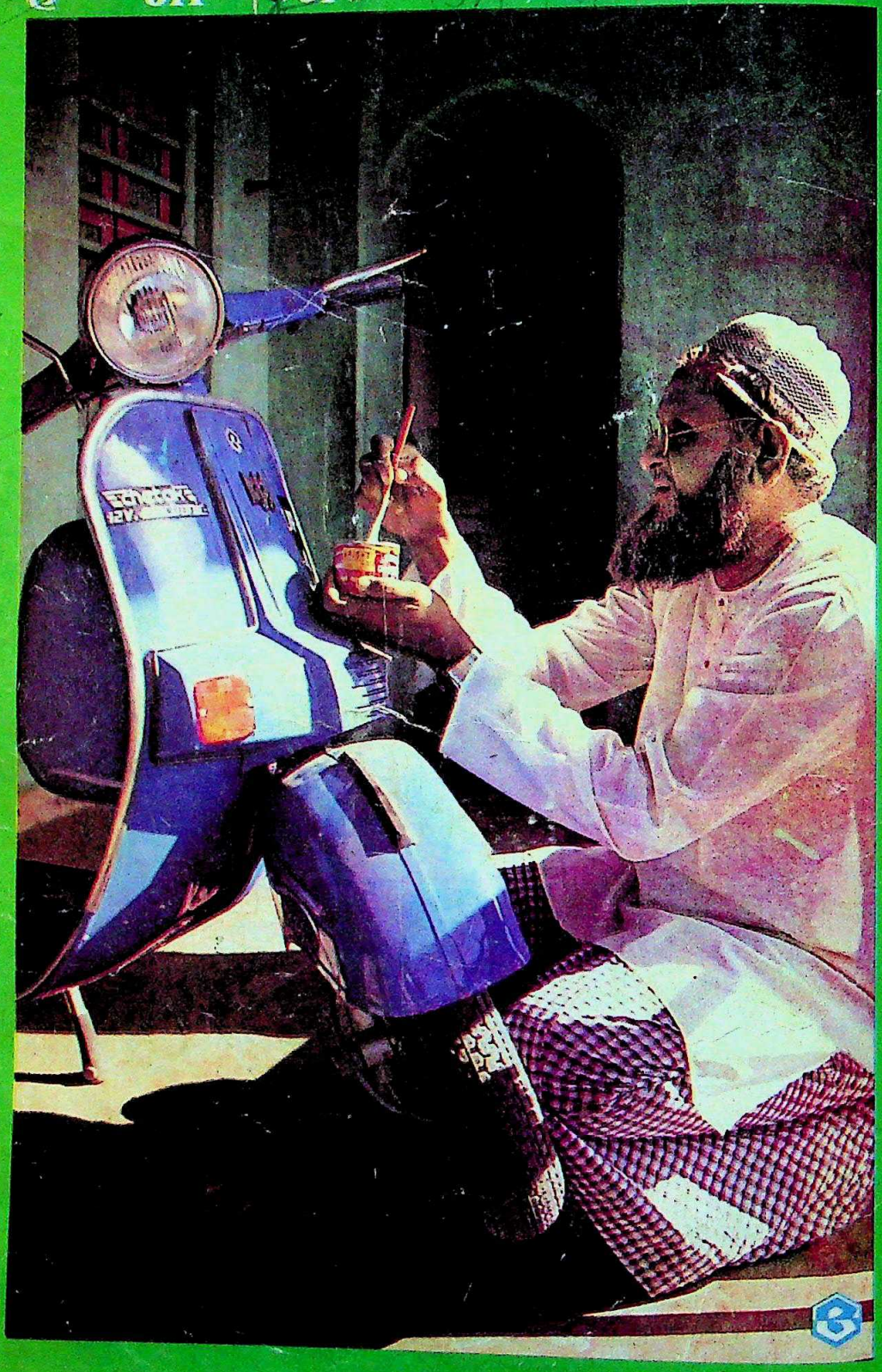

फ़ा य
की
ब र सो
सा

bajaj

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LINTAS BAJ SCT 231 2720 HI

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

31 जुलाई 1991 9 रुपए

इंडिया टुडे

शिवरासन

...व हत्याकांड जांच: तलाश में तेज़...

इंका: आगे की फ़िक्र

अर्थव्यवस्था

कड़वी दवा

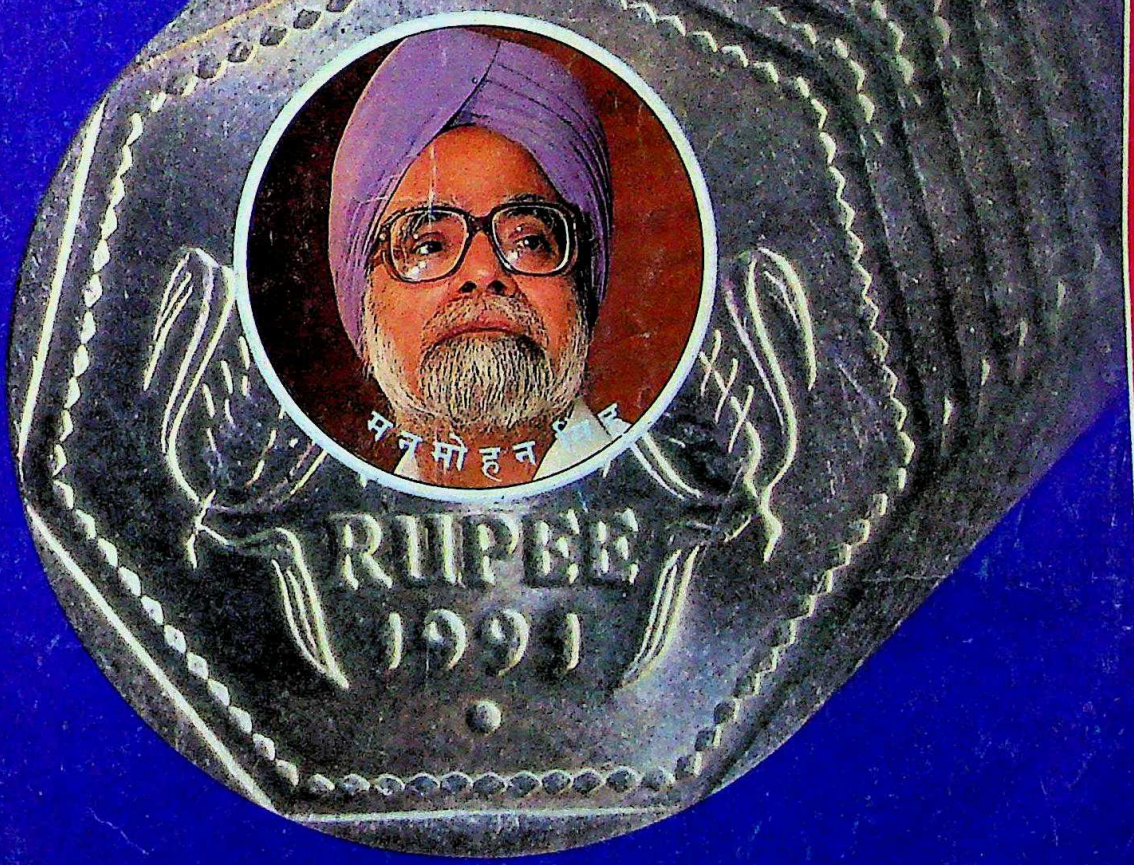

पर क्या इससे सेहत सुधरेगी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोर से अर्धरात्रि तक के राग

दिन से रात तक के रंगों की अनूठी संगीत यात्रा. एक-एक घंटे के 16 ऑडियो कैसेटों पर प्रतिष्ठित संगीतकारों के चुनिंदा राग उनके विशिष्ट अंदाज़ में, विशुद्ध स्वर की पकड़ डिजिटल पद्धति से तैयार कैसेटों पर.

और आपके घर डाक अथवा कूरियर से पाने की सुविधा.

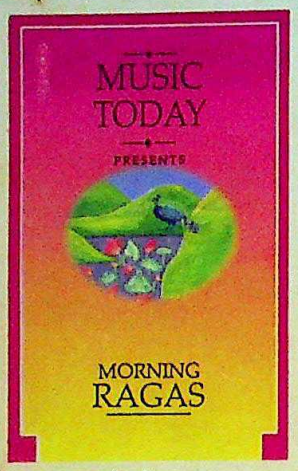

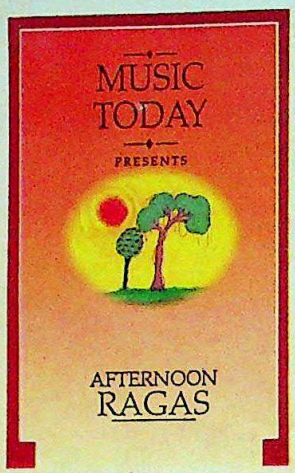

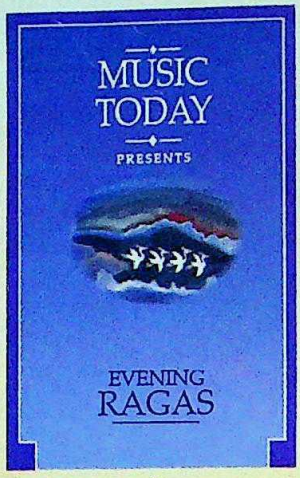

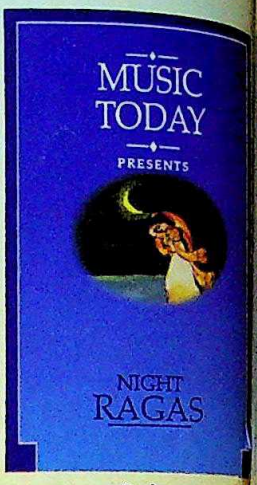

भोर के राग
भाग-1 (कोड ए 90001)
ललित
राजन और साजन मिश्र (गायन)
भैरव
शाहिद परवेज़ (सितार)
अहीर भैरव
श्रुति सदोलिकर (गायन)
भाग-2 (कोड ए 90002)
मियां की तोड़ी
अमजद अली खां (सरोद)
भटियार
पंडित जसराज (गायन)
विभास
श्रुति सदोलिकर (गायन)
भाग-3 (कोड ए 90003)
जौनपुरी
पद्मा तलवलकर (गायन)
बिलासखानी तोड़ी
अमजद अली खां (सरोद)
देसी तोड़ी
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
भाग-4 (कोड ए 90004)
कुकुभ बिलावल
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
देशकार
शाहिद परवेज़ (सितार)
भैरवी
पद्मा तलवलकर (गायन)

दोपहर के राग
भाग-1 (कोड ए 90005)
शुद्ध सारंग
अमजद अली खां (सरोद)
सुघरई
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
गौड़ सारंग
पद्मा तलवलकर (गायन)
भाग-2 (कोड ए 90006)
बृंदावनी सारंग
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
मधमद सारंग
पंडित जसराज (गायन)
धनी
शाहिद परवेज़ (सितार)
भाग-3 (कोड ए 90007)
भीमपलासी
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
पटदीप
श्रुति सदोलिकर (गायन)
मांड
शाहिद परवेज़ (सितार)
भाग-4 (कोड ए 90008)
मुल्तानी
राजन और साजन मिश्र (गायन)
मधुवंती
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
पीलू
अमजद अली खां (सरोद)

सांध्य के राग
भाग-1 (कोड ए 90009)
मारवा
पंडित जसराज (गायन)
श्री
श्रुति सदोलिकर (गायन)
हंसध्वनि
शाहिद परवेज़ (सितार)
भाग-2 (कोड ए 90010)
पूरिया
राजन और साजन मिश्र (गायन)
श्याम कल्याण
अमजद अली खां (सरोद)
नंद
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
भाग-3 (कोड ए 90011)
शुद्ध कल्याण
पद्मा तलवलकर (गायन)
मांझ खमाज
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
दुर्गा
राजन और साजन मिश्र (गायन)
भाग-4 (कोड ए 90012)
यमन
शाहिद परवेज़ (सितार)
शंकरा
पंडित जसराज (गायन)
मिश्र धारा
श्रुति सदोलिकर (गायन)

रात्रि के राग
भाग-1 (कोड ए 90013)
शुद्ध नट
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
केदार
पद्मा तलवलकर (गायन)
झिंझोटी
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
भाग-2 (कोड ए 90014)
बागेश्वरी
पंडित जसराज (गायन)
हमीर
पद्मा तलवलकर (गायन)
तिलक कामोद
शाहिद परवेज़ (सितार)
भाग-3 (कोड ए 90015)
मालकौंस
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
मारु विहाग
श्रुति सदोलिकर (गायन)
जैजैवंती
राजन और साजन मिश्र (गायन)
भाग-4 (कोड ए 90016)
नायकी कान्हड़ा
श्रुति सदोलिकर (गायन)
देश
पंडित जसराज (गायन)
दरबारी
अमजद अली खां (सरोद)

मूल्य
(टैक्स पैकिंग और भेजना शामिल) @ 45 रु. प्रति कैसेट

कृपया ध्यान दें
- दिल्ली से बाहर के स्थानों के चेकों के साथ 10 रु. की अतिरिक्त राशि आवश्यक.
- मुंबई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली के चेक/डिमांड ड्राफ्टों का एमआईसीआर होना आवश्यक.
- **कैसेट आपके घर रजिस्टर्ड डाक या कूरियर से पहुंचाए जाएंगे.**
- डिलीवरी के लिए कृपया कम से कम 3-4 सप्ताह का समय दें.
- उपहार देने के लिए कृपया उपहार पाने वाले का नाम और पता संलग्न ऑर्डर फार्म पर लिखकर भेजें.
- देय राशि म्यूज़िक टुडे के नाम करें और 'म्यूज़िक टुडे', पोस्ट बॉक्स 29, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजें.
- कृपया ऑर्डर फॉर्म कम्प्यूटर प्रोसेसिंग सुविधा हेतु अंग्रेजी में ही भरें.
- **अगर संलग्न ऑर्डर फार्म न मिले तो अपना ऑर्डर अपने नाम, पता और देय राशि के साथ 'म्यूज़िक टुडे' पोस्ट बॉक्स 29, नई दिल्ली-110001 को भेज दें.**
- दर व पेशकश सिर्फ भारत में ही लागू है.

ऑर्डर फॉर्म

कोड नं.	कैसेटों की संख्या
ए 90001	_____
ए 90002	_____
ए 90003	_____
ए 90004	_____
ए 90005	_____
ए 90006	_____
ए 90007	_____
ए 90008	_____
ए 90009	_____
ए 90010	_____
ए 90011	_____
ए 90012	_____
ए 90013	_____
ए 90014	_____
ए 90015	_____
ए 90016	_____

मैं 'म्यूज़िक टुडे' कैसेटों के लिए नीचे लिखे विवरण के अनुसार 45 रु. प्रति कैसेट की दर से (टैक्स, पैकिंग और भेजना शामिल) ऑर्डर देना चाहता/चाहती हूँ।

मेरे लिए ☐ उपहार ☐

म्यूज़िक टुडे को देय _____ रु. का रेखांकित चेक (दिल्ली से बाहर के ऑर्डरों के लिए 10 रु. और जोड़ें)/डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर रहा/रही हूँ।

आर्डर किए कैसेटों की संख्या _____

कुल देय राशि _____

My Name _____

Address _____

_____ Pin _____ Phone No. _____

Gift for _____

Address _____

_____

Pin _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चुनींदा दुकानों में भी उपलब्ध

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कड़वी दवा

नई सरकार ने रुपए का अवमूल्यन और व्यापार कानूनों में सुधार जैसे साहसिक कदम उठाए हैं. औद्योगिक और विदेशी पूंजी निवेश नीति में भी शीघ्र ही भारी बदलाव किए जाने की उम्मीद है. लेकिन इंका ये बदलाव ला पाएगी? विपक्ष उसे यह सब करने देगा?

आवरण कथा 38

सुभीते की हालत में

पी.वी. नरसिंह राव की छवि अपेक्षाकृत कम फुर्तीले नेता की रही है. लेकिन आज उनकी सरकार तेजी से काम करती दिखती है. प्रधानमंत्री से बातचीत और साथ ही संसद के आगामी सत्र में इंका की रणनीति पर एक नजर.

खास रपट 14

नकारा जाना ही नियति

जातीय पूर्वाग्रहों से ग्रस्त बिहार में हरिजनों का शोषण और उत्पीड़न आज भी वैसा ही है जैसे साठ साल पहले हुआ करता. भोजपुर जिले में सोते हुए 14 हरिजनों की हत्या इस बात का सबूत है कि सरकार हरिजनों की नियति नहीं बदल पाई.

खास रपट 64

गुमनामी से प्रसिद्धि की ओर

फिल्मी दुनिया के हाशिए पर रहकर हिंदी फिल्मों को तरह-तरह के साज-सामान मुहैया कराने वाले लोग बेशुमार दौलत कमा चुके हैं. उनका धंधा इतना अच्छा चल निकला है कि अब वे अंधेरे से बाहर आकर फिल्म निर्माण और निर्देशन के क्षेत्र में कूद रहे हैं.

कारोबार 55

आरामतलबी का आलम

युद्धभूमि से शिविर में लौटे नेता की तरह पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर प्रशासनिक तनावों से दूर अपना वक्त भोंडसी के फार्महाउस में बिताते हैं. वे अब अपने ट्रस्ट के कामों की निगरानी कर रहे हैं पर उन्होंने राजनीति से खुद को अलग नहीं किया है.

विशेष लेख 60

सपना हुआ अपना

सीमा पार पनपे प्रेम पर फिल्म बनाने का सपना राजकपूर दो दशक तक बुनते रहे. उनके लिए विभाजन ऐसी त्रासदी थी, जिसे वे कभी कबूल नहीं कर पाए. पिछले पखवाड़े 'हिना' को रिलीज करके उनके तीनों बेटों ने उनके अधूरे काम को पूरा कर दिया.

सिनेमा 70

अगले पन्नों पर

कसौटी 7
तेवर 10
राजरंग 11
हिंदोस्तां हमारा 12
खास रपट
नरसिंह राव:
'जनादेश हमें ही मिला है' 14
कांग्रेस (इ):
सुभीते की हालत में 16
आजकल
कश्मीर: बंदूक का बंधक 18
धीरेंद्र ब्रह्मचारी: चर्चे कम नहीं 19
हरियाणा: तेज कदम 21
बिहार: खजाना खाली 22
गुजरात: चतुर चाल 27
सीबीआई: बड़ा शिकार 27
राजस्थान: जान सांसत में 29
मध्य प्रदेश: बलि होने से बचे 30
उल्फा: महंगी शांति 31
पड़ताल
राजीव हत्याकांड जांच:
तलाश में तेजी 34
राज्य-दर्पण 36
आवरण कथा
अर्थव्यवस्था: कड़वी दवा 38
खास मुलाकात
आर.के. धवन:
'परिवार के प्रति वफादार रहूंगा' 50
खास रपट
डिज्नीलैंड परियोजना:
हवाई सपने का अंत 52
व्यापार चक्र 54
कारोबार
फिल्म उद्योग के सप्लायर: गुमनामी
के अंधेरे से प्रसिद्धि के उजाले में 55
शेयर बाजार: उम्मीदें बहराईं 59
विशेष लेख
चंद्रशेखर: आरामतलबी
और बेफिक्री का आलम 60
खास रपट
बिहार के हरिजन:
नकारा जाना ही नियति 64
वर्ग पहेली 68
सिनेमा
हिना: सपना हुआ अपना 70
कहानी 72
किताबें 76
परदे के उस पार 78
चर्चित चेहरे 80

आवरण सज्जा: पिअली दत्त गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमवार था हरा।

जो-चाहा-जब-चाहा-किया दिन।

दूर चले दुनिया से परे जहां बरसात की बाहों में

घास लहलहा रही थी।

उससे रहा न गया। हरा, वह बोली।

इक-पल-रहा-न-जाय-हरा।

और झींगुर देखते रहे।

इस-पल-रहा-न-जाय-हरा। क्या घास में कांटे थे?

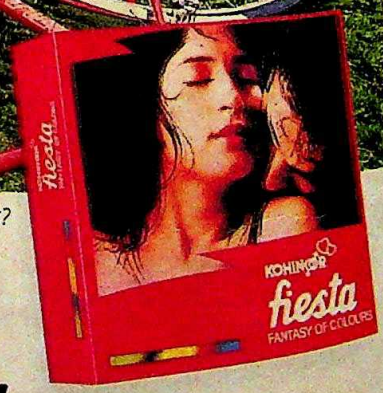

KOHINOOR

fiesta

ल्यूब्रिकेटेड रंगीन कॉन्डोम

MAA COMMUNICATIONS 1590 HIN

उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की सर्वाधिक सफल और विकासशील कंपनियों में से एक सेन्चुरी यह मानती है कि उनकी सभी गतिविधियों से लोगों की बुनियादी ज़रूरतें पूरी होनी चाहिएं

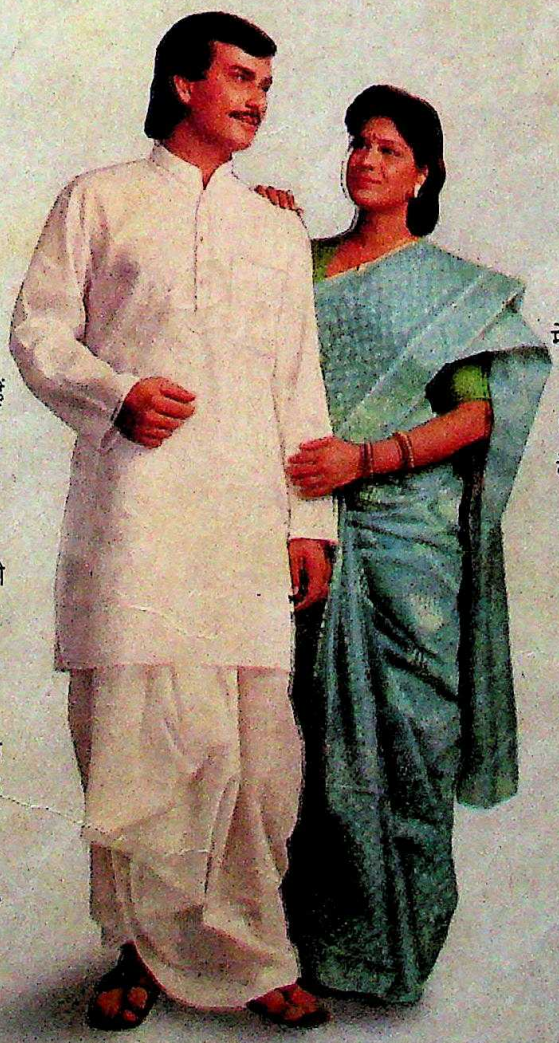

"सेन्चुरी के बारे में हम स्वयं स्वीकार करते हैं कि हमारी उत्पादन इकाइयां उन उद्योगों में नहीं आतीं जिन्हें आम तौर पर सनसेट उद्योग कहा जाता है. इसके विपरीत, हम तो उन बुनियादी उद्योगों के क्षेत्र में हैं जिन्हें राष्ट्र के आर्थिक विकास का आधार कहा जा सकता है.

देश की आर्थिक प्राथमिकताओं के प्रति अपनी समर्पित भावनाओं के फलस्वरूप ही हम आज देश के सबसे बड़े उत्पादक-निर्यातक बन सके हैं. इस वर्ष ही हम १४० करोड़ रुपयों के मूल्य की विदेशी मुद्रा अर्जित करेंगे. इसके अलावा सीमेंट के अपने उत्पादन को हम लगातार बढ़ाते जा रहे हैं ताकि मांग और पूर्ति के बीच की दूरी को खत्म करने में मदद मिले.

हम मानते हैं कि कर्मचारियों के हितों, शेयरहोल्डरों के हितों और राष्ट्र के हितों के बीच पूरा सामंजस्य होना चाहिए. हमारे कर्मचारी यह कहने में गर्व का अनुभव करते हैं कि वे सेन्चुरी में काम करते हैं. कई परिवार तो तीन-तीन पीढ़ियों से हमारी कंपनी में काम करते रहे हैं. हमारे शेयरहोल्डर भी सदा संतुष्ट रहे हैं. क्यों न हों, बोनस और राइट शेयर्स इश्यू देखें तो पिछले ४० वर्षों से सेन्चुरी के शेयरों का मूल्य ३४० गुने से भी ज़्यादा जो बढ़ आया है. पिछले एक दशक में ही सरकारी कोष में सेन्चुरी का योगदान ६६० करोड़ रुपयों से भी अधिक का रहा है.

और अब, देश को आवश्यक उत्पादक परिसंपत्तियां उपलब्ध कराने के लिए हमने विद्युत और पेट्रोकेमिकल्स जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपने प्रयास प्रारंभ कर दिये हैं."

बी.के. बिरला
अध्यक्ष

सेन्चुरी

राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य... अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य

सेन्चुरी टेक्सटाइल्स एंड इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड • सेन्चुरी टेक्सटाइल्स • सेन्चुरी रेयॉन • सेन्चुरी केमिकल्स • सेन्चुरी सीमेंट • मैहर सीमेंट • मानिकगढ़ सीमेंट • सेन्चुरी पल्प एंड पेपर • सेन्चुरी शिपिंग • सेन्चुरी बिल्डर्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

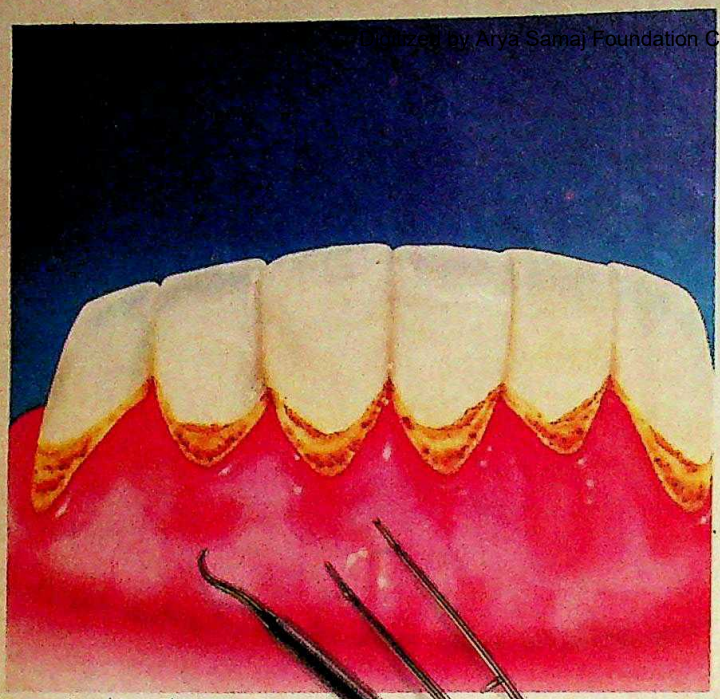

टारटर कैसे बनता है.

यह बदसूरत जमावट साफ़ करते ही, दोबारा जम जाती है... जब तक आप इसका तुरंत कोई निश्चित उपाय नहीं करते.

ये है मैल की परत.

इसे टारटर कहते हैं. दांतों पर, मसूढ़ों के पास आप अपनी जीभ से धब्बेदार पीली (कई बार सफ़ेद) सीमेंट जैसी खुरदुरी परत को आसानी से महसूस कर सकते हैं. एक बार इसके जमने पर, आम तौर से इसे हटाने के लिए दांतों के डॉक्टर की सहायता लेनी पड़ती है. लेकिन ये दोबारा फिर जम जाती है. यदि इस पर ध्यान न दिया जाए तो इस टारटर के कारण आपके दांत न केवल भद्दे और बदसूरत नज़र आने लगते हैं बल्कि इससे मसूढ़ों की गंभीर समस्या भी पैदा हो सकती है. यहां तक कि आपके दांत सड़ भी सकते हैं. सबसे बुरी बात तो यह है कि भारत के ९०% वयस्कों की दांतों संबंधी बीमारियों का प्रमुख कारण है - यही टारटर.

केवल चुने हुए शहरों में उपलब्ध.

परीक्षणों द्वारा मान्य टारटर नियंत्रक.

टारटर बनता कैसे है?

सामान्यतया लार में मौजूद कैल्शियम लवण और ऑरथोफ़ॉस्फ़ेट की परस्पर प्रतिक्रिया द्वारा कणों के रूप में हायड्रॉक्सीएपेटाइट तैयार होता है. दरअसल, टारटर का मूल बीज या असली कारण भी यही है. जिसे डॉक्टर कैलक्युलस कहते हैं. धीरे-धीरे कैल्शियम लवण के और भी कण इस बीज पर जमा होते जाते हैं और टारटर की एक परत सी बन जाती है. ऐसा इसलिए होता है क्योंकि इन बीजों में ख़ास गुण होते हैं, जिससे इन पर कैल्शियम लवण अपने आप जमा होते जाते हैं.

नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला. टारटर को रोकने वाला परीक्षणों द्वारा मान्य टूथपेस्ट.

नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला टूथपेस्ट परीक्षणों द्वारा मान्य भारत का सबसे पहला और एकमात्र टूथपेस्ट है जो टारटर को बनने से रोकता है और इससे होने वाली बीमारी की संभावना को कम करता है.

नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला कैसे असर दिखाता है?

नये कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूले में घुलनशील पायरोफ़ॉस्फ़ेट होता है, जो लार में मौजूद कैल्शियम के साथ मिल जाता है और इस कैल्शियम को फ़ॉस्फ़ेट के साथ मिलने से रोकता है. यह नया मिश्रण आसानी से सख़्त नहीं होता. इस तरह टारटर बनने की क्रिया भी कम होती है. यही नहीं, पायरोफ़ॉस्फ़ेट पहले ही बन चुके टारटर को और अधिक बढ़ने से भी रोकता है. यह मौजूदा टारटर के बीजों के साथ मिलकर, दांतों पर एक कवच सा तैयार कर देता है तथा और अधिक टारटर की जमावट को रोकता है.

टारटर को रोकने में बेजोड़.

अमेरिका के फ़ॉरसिथ डेंटल सेंटर में किए गए एक तुलनात्मक सर्वेक्षण के अनुसार, दांतों के इलाज के लिए आए एक समूह की निगरानी के दौरान नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला टारटर की जमावट को रोकने में औसतन ४७.६% तक सफल सिद्ध हुआ.

टारटर का करें नियंत्रण - तीन सुनहरे नियम.

१. दांत के डॉक्टर से दांतों की सफ़ाई करवाएं.
२. दांतों को दिन में दो बार कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला टूथपेस्ट से साफ़ करें.
३. नियमित समय पर दांत के डॉक्टर के पास जाएं.

"कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूले से मसूढ़े के ऊपरी हिस्से पर टारटर का बनना तो निश्चित रूप से कम हुआ, लेकिन दांतों संबंधी बीमारी पर कोई औषधीय प्रभाव नहीं दिखाई दिया."

काउंसिल ऑन डेंटल थेरोपेटिक्स* अमेरिकन डेंटल एसोसिएशन.

Proven to fight Tartar build-up

NEW! Colgate Dental Cream

Tartar Control Formula

Rediffusion/CP/91/189b HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्लेमर नहीं योग्यता

'ढीले हाथों में सख्त लगाम' (आवरण कथा, 15 जुलाई) में नए प्रधानमंत्री के व्यक्तित्व का परिचय पढ़ यही लगा कि उनमें ग्लेमर भले ही न हो, उनकी विद्वता, योग्यता और लंबा प्रशासनिक अनुभव उन्हें सफल प्रधानमंत्री की श्रेणी में रखेगा.

दिल्ली — **शिप्रा**

सुरक्षा तंत्र की कमजोरी

'सुरागों से उभरते संकेत' (30 जून) से हमारा खुफिया विभाग खुश भले हो लेकिन उनसे कुछ हासिल होने वाला नहीं. जब तक हमारी गुप्तचर व्यवस्था और सुरक्षा तंत्र मजबूत नहीं होते, ऐसे हादसे होते रहेंगे. हमसे अच्छी तो फिलस्तीन मुक्ति संगठन की गुप्तचर व्यवस्था है जिसने राजीव गांधी और हमारी खुफिया एजेंसी को आगाह कर दिया था.

गोंडा (उ.प्र.) — **राकेश चंद्र कुंवर**

■ खुफिया विभाग 'राजीव हत्याकांड' की गुत्थी सुलझा लेता है तो यह उसकी असाधारण सफलता होगी. दूसरी ओर भारत की अखंडता पर चोट करना ही यदि एलटीटीई का लक्ष्य है, तो सत्तारूढ़ दल के साथ-साथ विपक्ष की भी यह जिम्मेदारी होगी कि वे एकता का परिचय देकर इसका मुकाबला करें.

दिल्ली — **कमलेश कुमार मिश्र**

■ राजीव गांधी जैसे विशिष्ट व्यक्ति की हत्या भारतीय लोकतंत्र के सूक्ष्म सिद्धांतों पर प्रहार है, व हमारी सुरक्षा व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाती है. विपक्ष में होते हुए भी उनकी हत्या से राजनैतिक रिक्तता-सी उत्पन्न होने से उनके प्रभाव को समझा जा सकता है.

कानपुर — **अखिल जैन**

■ जिस प्रकार पंजाब सरकार को अस्थिर करने के लिए इंदिरा गांधी ने आतंकवादियों को सहारा दिया और वे ही उनकी मृत्यु का कारण बने, उसी तरह राजीव सरकार द्वारा एलटीटीई को छूट और संभवतः प्रशिक्षण में सहयोग प्रदान कराना आत्मघाती सिद्ध हुआ. आज कुछ पार्टियां जिस तरह सांप्रदायिकता को संरक्षण दे रही हैं या कुछ पार्टियां अल्पसंख्यकों को सिर चढ़ा रही हैं कल को ये उनके लिए भी भस्मासुर हो सकते हैं.

छिंदवाड़ा (म.प्र.) — **निखिल श्रीवास्तव**

अच्छे सुझाव

'सुधारों की जरूरत बरकरार' (कसौटी, 30 जून) अक्षरशः एक स्पष्ट दिशा निर्देश लगी. आज मध्यावधि चुनाव राजनीतिज्ञों के निजी स्वार्थों के कारण देश की नियति बन गए हैं. कोई भी सत्ताधारी दल कितना भी आश्वस्त करे कि हम पांच वर्ष तक स्थायी शासन देंगे लेकिन सत्ताविहीन विपक्षी दिग्गज उनकी टांग खींचने के लिए तत्पर रहते हैं.

जबलपुर (म.प्र.) — **नरेंद्र सिंह**

■ 'कसौटी' में आपने चुनाव पद्धति की खामियों को दूर करने के जिन उपायों का सुझाव दिया है वह प्रशंसनीय है, लेकिन इनका लाभ मिलने तक बहुत देर हो चुकी होगी.

कैथल (हरियाणा) — **मुनीश कुमार**

नुकसानदेह उदारवाद

आर्थिक उदारवाद की नीति पर 'सहमति के स्वर' (30 जून) में पश्चिमी मानसिकता वाले शहरी, उच्च वर्ग के अर्थशास्त्री जिस आर्थिक उदारवाद की बात कर रहे हैं, वह देश के लिए नुकसानदेह है. इस उदारता का तात्पर्य सीधे-सीधे विदेशी निवेश व सहयोग से है. विदेशी सहयोग से तैयार होने वाली कारों, दोपहिया वाहनों के उत्पादन पर कीमती विदेशी मुद्रा बरबाद हो रही है. इतना पैसा सार्वजनिक परिवहन को मजबूत करने में लगाया जाता तो क्या अच्छा नहीं होता.

जयपुर (राज.) — **अनिल खंडेलवाल**

प्रचार की ललक भी

'संन्यास लेने का शाही तरीका' (30 जून) पढ़ा. माना कि सुख-वैभव त्यागकर संन्यास की दिशा लेना बड़े साहस की बात है लेकिन इससे अतुल जैन की प्रचार की ललक भी जाहिर होती है. इस तरह संपत्ति लुटाने की जगह यदि किसी परमार्थ ट्रस्ट को सौंप दी जाती तो संपत्ति का ज्यादा उपयोग हो सकता था लेकिन तब उन्हें प्रचार इतना नहीं मिल पाता.

जोधपुर (राज.) — **राजेंद्र जगाणी**

■ अतुल जैन का इस तरह धन लुटाना एक मूर्खता ही मानी जाएगी. व्यापारियों का धन कमाना, जोड़ना बुरी बात नहीं है. उसे इस तरह लुटाना गलत है.

कोटा (राज.) — **इंदर लालवानी निरंकारी**

■ संन्यास लेने के लिए आखिर इतना आडंबर क्यों? बेहतर होता इतनी दौलत जरूरतमंद या गरीब लोगों की भलाई के लिए इस्तेमाल की जाती. मुनि हितरुचि का यह कहना कि दौलत से पगलाए लोग इससे सबक लें, तर्कसंगत नहीं लगता क्योंकि अपनी दौलत छोड़ पाना सबके लिए सहज नहीं होता.

पटना (बिहार) — **संजीव कुमार**

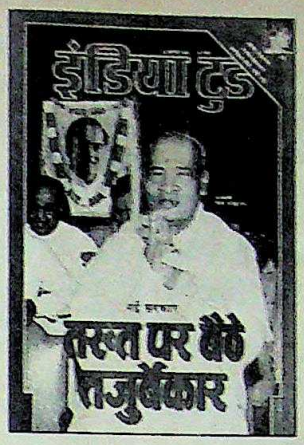

राव ने मंडली वालों को हल्के मंत्रालय देकर साबित कर दिया कि वे दबाव में आने वाले नहीं.

देवरिया (उ.प्र.) — **सत्यानंद**

परदे के पीछे चले नाटक के बावजूद आम सहमति से राव का चयन यह साबित करता है कि इंका में हर संकट से उबरने की बहुत ऊर्जा है.

जौनपुर (उ.प्र.) — **राजेंद्र सिंह**

वर्ष: 5, अंक 18,
16-31 जुलाई 1991

● **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001 फोन 3315801-4, टेलेक्स 31-61245 INTO IN, तार लिवमीडिया, नई दिल्ली ● **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001 फोन 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली ● **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जोली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, मुंबई-400021, फोन 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार लिवमीडिया, मुंबई ● **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001, फोन 3325378, 3323576, 3321323, 3321273, टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105, फोन: 477188, टेलेक्स 041-6177 INTO IN, तार लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001, फोन 568448, 579037, 579089, टेलेक्स 0845-2217 INTO IN, तार लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016, फोन: 225398, 221922, टेलेक्स 21-7138 INTO IN, तार लिवइन-मीडिया, कलकत्ता ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थामसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

■ यदि यह संन्यास सादगी से लिया जाता और दौलत इस तरह सड़कों पर लुटाने की जगह कल्याणकारी योजना में लगाई जाती तो वास्तव में यह सच्चा होता.

विदिशा (म.प्र.) **शैलेंद्र सक्सेना**

सचमुच अनुचित

'बेकार का बवाल' (30 जून) में सोने की बिक्री जैसे समझदारी भरे कदम पर विपक्षी दलों का इस तरह बवाल मचाना उचित नहीं कहा जा सकता. यह पढ़कर हैरत हुई कि करीब 175 टन सोना हर साल भारत आता है, और सिर्फ पांच टन पकड़ा जाता है. यदि सरकार तस्करों को पकड़ने में मुस्तैदी दिखाए तो कर्ज चुकाना आसान हो जाए.

टोंक (राज.) **जसवंत सिंह खरेड़ा**

भारतीयता की छाप

सोनिया गांधी ने जिस साहस व धैर्य से खुद को तथा बच्चों को इस विकट घड़ी में संभाला है, उससे उनके परंपरागत भारतीय नारी होने का ही परिचय मिलता है. 'आधा अधूरा जीवन' (30 जून) से उनका जो व्यक्तित्व उभरकर सामने आया है वह प्रशंसनीय एवं प्रेरणादायक है.

तिनसुकिया (असम) **विनोद कु. पारीक**

■ सोनिया पर विशेष लेख पढ़कर मन भर आया. लेकिन एक बात बहुत खटकी कि आपने खुद ही लिखा कि पिता का क्षत-विक्षत शव देख राहुल-प्रियंका को मानसिक आघात पहुंचा. इसके बावजूद आपने वह चित्र छापा. और अगले अंक में उसे फिर दोहराया.

जबलपुर (म.प्र.) **कुमारी प्रतिभा**

समयानुकूल फैसला

'अस्पष्ट जनादेश' (30 जून) समय के अनुकूल है क्योंकि केंद्र में इस समय कांग्रेस शासन की जरूरत थी, उत्तर प्रदेश में मंदिर मुद्दे पर भाजपा को परखना जरूरी था, और तमिलनाडु में एलटीटीई के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए अन्नाद्रमुक सरकार की जरूरत थी. मतदाताओं ने बड़ी जागरूकता का परिचय दिया है.

उज्जैन (म.प्र.) **रामसिंह मंडलोई**

■ वर्तमान लोकसभा और विधानसभा चुनावों ने सिद्ध कर दिया कि यहां की जनता किसी पार्टी या नेता द्वारा ठगी नहीं जा सकती.

मुजफ्फरपुर (बिहार) **पंकजेंद्र किशोर**

■ कांग्रेसी नेता उ.प्र. व गुजरात में अपनी करारी हार का जिम्मेदार चिमनभाई व मुलायम सिंह यादव के समझौते को ठहराते हैं. परंतु उस समय समझौते की जरूरत दोनों पक्षों की थी. यदि उ.प्र. व गुजरात में समझौता नहीं होता तो लोकसभा चुनाव अवश्यंभावी थे क्योंकि इन मुख्यमंत्रियों के समर्थक संसद सदस्यों ने ही चंद्रशेखर के नेतृत्व में सरकार का गठन किया था.

इंदौर (म.प्र.) **विष्णु भट्ट**

■ पिछले दो आम चुनावों से इस तथ्य का पता चलता है कि मतदाता सकारात्मक वोट के स्थान पर नकारात्मक वोट डाल रहे हैं जो कि नेताओं और राजनीतिबाजों के खोखले वादों के प्रति भारतीय जनता का तीखा प्रहार है. अतः नेताओं और राजनीतिज्ञों को चाहिए कि वे ठोस कार्यक्रम प्रस्तुत करें और जनता का विश्वास जीतने का प्रयास करें. स्थायी सरकार का गठन तभी संभव है.

पानीपत (हरियाणा) **राजन सेतिया**

गलत आलोचना

'खतरनाक परंपरा के सूत्रधार' (30 जून) में मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन की जो आलोचना की गई है, वह ठीक नहीं है. सच तो यह है पहली बार आम जनता को चुनाव आयोग की उपयोगिता का पता चला. आज जिस तरह की राजनीति हो रही है, उसे देखते चुनाव आयोग को और ज्यादा अधिकार दिए जाने चाहिए.

पटना (बिहार) **पंकज पुष्प**

■ टी.एन. शेषन को खतरनाक नहीं, बल्कि मजबूत परंपरा का सूत्रधार माना जाना चाहिए. आपने यह तथ्य नजरअंदाज कर दिया कि पहले चुनाव आयुक्त आचार संहिता बनाकर अपने कर्तव्यों से मुक्त हो जाते थे. इसलिए उनकी छवि उज्ज्वल रहती थी. इस चुनाव में जितने व्यापक स्तर पर बूथ कब्जे और हिंसा की तैयारियां की गई थी, उतनी ही जोरदार कार्रवाई निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए टी.एन. शेषन ने भी की.

पटना (बिहार) **बनिता सिन्हा**

स्थायी हल नहीं

'सिर मुंडाते ओले पड़े' (30 जून) पढ़ा. घाटे में चल रहे सार्वजनिक उपक्रमों का निजीकरण समस्या का स्थायी हल नहीं है. सुधार के कुछ उपायों तथा प्रबंधन में अधिकारियों की जिम्मेवारी एवं मजदूरों की हिस्सेदारी तय करके संकट को कम किया जा सकता है.

खैरागढ़ (म.प्र.) **आलोक शर्मा**

ये प्रवृत्तियां निश्चित ही भारतीय विवाह संस्कृति के लिए घातक हैं. क्या ऐसे में हर लड़की का पहला विवाह सफल हो पाएगा क्योंकि पति को दूसरी औरत से शादी करने का

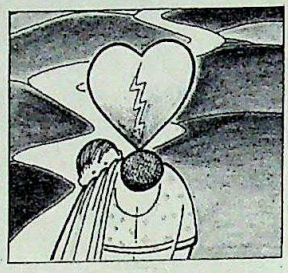

आसान रास्ता मिलने जो लगेगा. इससे न केवल हर दंपती का वैवाहिक जीवन खतरे में पड़ जाएगा वरन एक अय्याशी का भी प्रादुर्भाव हो जाएगा. दहेज प्रथा तो शायद मिट जाए लेकिन उससे भी खतरनाक प्रवृत्ति जन्म ले लेगी?

सेंधवा (म.प्र.) **अविनाश वाबीकर**

दूसरी शादी करने पर भी पुरुष के मनमौजी जीवन में कोई बदलाव नहीं आता. लेकिन स्त्री को दूसरी शादी में ज्यादातर दुख और अपमान ही झेलना पड़ता है. ससुरालवालों की ही नहीं, पति की नजर में भी वह इज्जत व प्यार नहीं रहता.

इंदौर (म.प्र.) **रश्मि भावे**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थनीति पर आम सहमति जरूरी

भारतीय अर्थव्यवस्था की राजनीति में फिर से गरमी के आसार हैं. अर्थव्यवस्था की जो मौजूदा स्थिति है उसमें यह तो होना ही है. लेकिन इसमें राजनीति का खतरनाक खेल खेलने की हिमाकत शायद कोई नहीं करेगा. जुलाई के शुरू में ही रुपए का जो भारी अवमूल्यन किया गया उस पर विपक्षी दलों की प्रतिक्रिया जो रही वह अपेक्षित ही थी.

यह सही है कि राष्ट्रीय प्रतिष्ठा दांव पर लगी है लेकिन उतनी हद तक भी नहीं जितनी विपक्षी पार्टियां जताना चाह रही हैं. अगर रुपए का अवास्तविक मूल्य तय करना भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए श्रेयस्कर और सम्मानजनक होता तो वित्त मंत्रालय में बैठा कोई भी शख्स भारतीय अर्थव्यवस्था को वर्षों पहले दुरुस्त कर चुका होता. लेकिन शर्मनाक बात यह रही है कि सरकार अपने खर्चों में कटौती न करके, महंगाई को बेकाबू होने देकर और नियंत्रणों तथा अभावों के सहारे उच्च लागत वाली अर्थव्यवस्था को वैधानिक रूप से बढ़ावा देकर रुपए को वर्षों से भ्रष्ट करती रही है. यह सब केवल कांग्रेसी सरकारें ही नहीं, गैर-कांग्रेसी सरकारें भी करती रही हैं.

रेखाचित्र: अजीत नैनन

ज्योति बसु ने अवमूल्यन की पूरी कार्रवाई के तौर-तरीके और राजनैतिक दलों से विचार-विमर्श न किए जाने पर नाराजगी जाहिर की है. लेकिन अवमूल्यन तभी कारगर होता है जब यह अचानक और शीघ्र किया जाए. इस बारे में लंबी बातचीत से उलटे नतीजे निकल सकते थे क्योंकि बातचीत शुरू होते ही अवमूल्यन की आशंका से देश में विदेशी मुद्रा का प्रवाह रुक जाता. उधर भारतीय जनता पार्टी सरकार की आलोचना करने लगी कि सरकार मुद्रा कोष के इशारे पर नाच रही है. मगर उसकी बेईमानी इस बात से उजागर होती है कि उसकी खुद की नीतियां—मसलन बैंकों का निजीकरण—मुद्रा कोष के सुझावों के अनुरूप है. जनता दल ने दावा किया कि अवमूल्यन अर्थव्यवस्था के लिए घातक हो सकता है. मगर उससे पूछा जा सकता है कि क्या निकम्मापन देश के लिए कम घातक होता?

जब सरकार अल्पमत वाली हो तब अर्थनीति पर आम सहमति का अभाव विदेशों में भारत की वित्तीय साख और देश में आर्थिक सुधार की योजनाओं को भारी नुकसान पहुंचा सकता है. खबर है कि स्टेट बैंक अपनी अंतरराष्ट्रीय देनदारियों को निभाने में चूका है. किसी सरकारी संगठन की इस तरह की यह पहली चूक है. इससे संकेत मिलता है कि भारत को भी लातिनी देशों वाला रोग लगने को है. अब अगर राजनैतिक अनिश्चितता का आभास मिला और अंतरराष्ट्रीय महाजनों ने हाथ मोड़ लिए तो आगे भी ऐसी चूकें हो सकती हैं. यह खतरा वास्तविक है.

हाल के चुनाव में राजनैतिक पार्टियों ने जो लंबे-चौड़े वादे किए हैं उनके कारण विवेकसम्मत अर्थनीति तैयार करना मुश्किल हो गया है. वित्तमंत्री मनमोहन सिंह ने तो कांग्रेस के इस वादे को बकवास बता दिया कि कीमतें 100 दिन के भीतर गिरने लगेंगी. उन्हें पार्टी के दबाव पर अंततः अपनी बात वापस लेनी पड़ी है. प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव को भी यह आश्वासन देना जरूरी लगा है कि पार्टी के चुनावी वादों की बलि नहीं चढ़ाई जाएगी.

विपक्षी दलों के लिए जरूरी नहीं है कि वे नरसिंह राव की मुश्किलें आसान करें. लेकिन उन्हें अपने क्षुद्र राजनैतिक स्वार्थों को देशहित के ऊपर तो तरजीह नहीं ही देनी चाहिए. वे चाहें या न चाहें, 1991-92 का वर्ष भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए निर्णायक साबित होने वाला है. इसलिए अर्थव्यवस्था को दुरुस्त करने के उपायों में उन्हें सरकार का सहयोग करना चाहिए. अर्थनीति पर आम सहमति बननी चाहिए. इसके लिए जरूरी हो तो सर्वदलीय बैठक भी बुलाई जानी चाहिए. मुख्य बात यह है कि मुद्रा कोष के इशारों के बगैर भी सरकार को अर्थव्यवस्था तथा बजट आदि के प्रति अपने नजरिए में बुनियादी परिवर्तन लाना ही पड़ता. वर्षों से यह अपनी औकात से ज्यादा खर्च करती रही है. आज स्थिति यह है कि केंद्र सरकार खर्च किए गए प्रत्येक रुपए पर मात्र 70 पैसे ही आमदनी कमा पाती है. बाकी या तो कर्ज से, या ज्यादा नोट छापकर पूरा किया जाता है. इसलिए, अचरज नहीं कि कुल खर्चों का पांचवां हिस्सा कर्ज भुगतान में ही जाता है. खर्चों का जो उत्पादक पहलू है—योजना खर्च—उस मद में रुपए का 15 पैसा ही खर्च हो पाता है. यानी साफ है कि सरकार ने चादर से बहुत ज्यादा पैर बाहर निकाला है. इसका एक नतीजा यह हुआ है कि आयात बढ़ता गया है और इसी के साथ विदेशी मुद्रा का संकट भी.

मुद्रा कोष से पैसे मिलने से ही समस्याएं दूर हो जाएंगी, यह सोचना बेहद घातक होगा. कर्ज के इस पैसे से सिर्फ इतना होगा कि विदेशी मुद्रा भंडार की स्थिति ठीक होगी और फिलहाल संकट टल जाएगा. विदेशी महाजनों को कर्ज देने में खतरा महसूस नहीं होगा. लेकिन देश में नेताओं और नौकरशाहों ने जो गंदगी फैला रखी है उसे तो साफ करना ही होगा.

देश की समस्याओं का समाधान कड़े उपायों से ही संभव है. इन उपायों से किसी-न-किसी को तो चोट पहुंचेगी ही. सरकारी खर्चों में कटौती से किसी गुट को चोट पहुंचेगी, तो मुक्त विदेशी निवेश से घरेलू उद्योगों को, और अवमूल्यन से उन उद्योगों की मुश्किलें बढ़ेंगी जो निर्यात पर निर्भर हैं. सामान्य दौर में ये सब राजनैतिक उठापटक और प्रचार हथकंडों का मसाला बन सकते हैं. आज इन तमाशों से बचा जाए तो बेहतर होगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचानक एक धमाका-सा हुआ,
एक चीख़ सुनाई दी और कांच टूटने की छनछनाहट,
फिर पूरे कमरे में अंधेरा छा गया...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

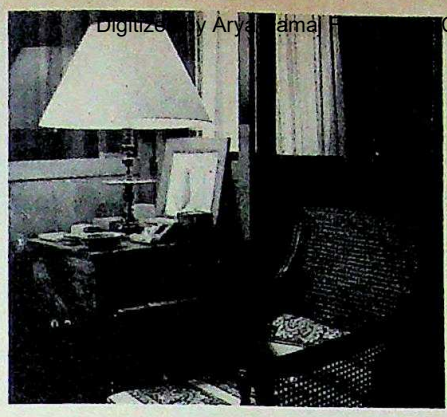

घुप्प अंधेरा! पार्टी का रंग भंग हो गया। मेहमानों में अफ़रा-तफ़री मच गई। संगीत की जगह हड़बड़ाई आवाज़ें उभरने लगीं, झाड़-फानूसों की जगह माचिस की तीलियाँ टिमटिमाने लगीं और मेरे क्लासिक उषा पंखों के रुकते ही सब गर्मी से बेचैन हो उठे।

"क्या हुआ?" मैंने बैरा से पूछा।

"साब, एक मेमसाब मुझसे टकराईं ओर हड़बड़ाकर चिल्ला पड़ीं। मेरे हाथ से ट्रे छूटकर स्टीरियो पर गिर पड़ी। लगता है फ़्यूज़ उड़ गया है– और वह मेमसाब भी बेहोश हो गई हैं।"

मैं फ़ौरन इंतज़ाम में लग गया। फ़्यूज़ बना, बत्तियाँ जलीं, और सबसे बढ़कर, उषा के पंखे फिर से चलने लगे। सबने चैन की साँस ली।

जो साहिबा बेहोश हो गई थीं, उन्हें गेस्ट रूम में ले जाकर आराम से लिटाया गया। मैंने खुद खिड़कियाँ खोलीं और पंखा चलाया। उषा पंखे के पर हिले और तेज़ी से घूमने लगे। वही सुहानी हवा, वही तेज़ रफ़्तार, हमेशा की तरह बेखटका, बेआवाज़...

उन साहिबा की आँखें धीरे से खुलीं, मेरी आँखों से मिलीं।

उन्होंने राज़दारी से कहा – "कब से मौक़ा ढूँढ रही थी कि एक मिनट आपसे अकेले में बात हो। पर इतने सारे लोग थे वहाँ....और कोई तरीक़ा भी तो नहीं था –"

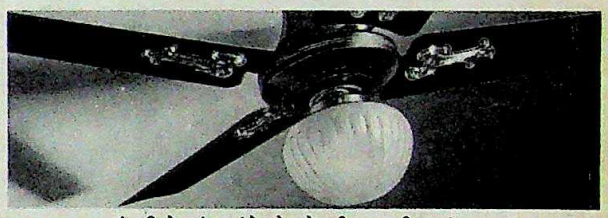

'ल्युमिनेयर' – पंखे और रौशनी का सजीला संगम, मख़मली भूरे रंग पर सुनहरी सज-धज

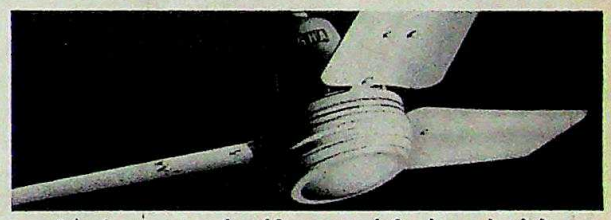

'स्टैला' – उत्कृष्ट सुरुचिपूर्ण डिज़ाइन, आईवरी सफ़ेद व भूरे रंगों में

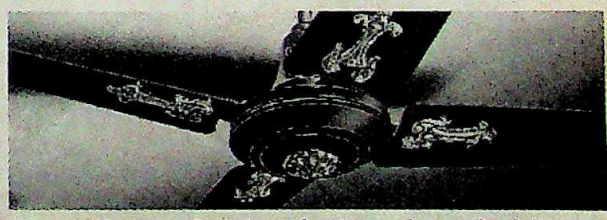

'कोहिनूर सुपर डीलक्स' – सुडौल सुंदरता, भूरे व सुनहरे रंगों में

उषा

क्लासिक

क लै क्श न

पंखे जो आपके बारे में बहुत कुछ बताते हैं.

60 से अधिक देशों को निर्यात • 40 वर्षों की उत्तमता • भारत के सर्वाधिक बिकने वाले पंखे

Contract.JEW.24165 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म्यूज़िक टुडे

को चाहिएं

डिस्ट्रीब्यूटर्स

म्यूज़िक टुडे, लिविंग मीडिया इंडिया लि. का एक डिविज़न, जो **इंडिया टुडे** प्रकाशित करते हैं और श्रेष्ठ क्वालिटी के प्री-रिकॉर्डेड ऑडियो कैसेट के निर्माता हैं, को डिस्ट्रीब्यूटर्स चाहिएं।

इच्छुक पार्टियां, जिनका स्थापित नेटवर्क है, समुचित व्यापार संबंध हैं और मजबूत वित्तीय स्थिति है, वे कृपया अपना विवरण इस पते पर भेजें :

म्यूज़िक टुडे
पो. ऑ. बॉक्स 29
नई दिल्ली- 110 001.

क्या आप मकान या पता बदल रहे हैं?

केवल मकान बदलने या नए पते पर जाने के कारण *'इंडिया टुडे'* की डाक से आने वाली अपनी प्रतियों से वंचित न हों। आप तक पत्रिका की प्रतियां नियमित रूप से पहुंचती रहें इस काम में हमारी मदद करें — अपना मकान या पता बदलने से छः सप्ताह पूर्व ही हमें कृपया यह कूपन भर कर भेज दें।

इस पते पर भेजें :

लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. ऑ. बॉक्स नं. 706
फरीदाबाद- 121 007
हरियाणा

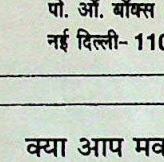

नॉन-स्टॉप
डिलीवरी कूपन

मेरा नाम : .....
.....
(स्पष्ट अक्षरों में)

मेरा सब्सक्रिप्शन नं.: .....

मेरा वर्तमान पता : .....
.....
.....

पिन कोड : .....

मेरा नया पता : .....
.....
.....

पिन कोड : .....

अबु, टेलीग्राफ

● राम ने मर्यादा तोड़ने की शिक्षा कब दी थी? राम कोई ओढ़ने-बिछाने की चीज नहीं हैं कि हम सब उनका इस तरह इस्तेमाल करने लग जाएं.

■ **अटल बिहारी वाजपेयी** (उ.प्र. के मंत्रियों को विवादास्पद राम जन्मभूमि स्थल का दौरा करने पर फटकारते हुए), *नवभारत टाइम्स*

● अफसरों, कर्मचारियों को हमने हिदायत दे दी है. वह सरकारें हरामखोरी करती थीं. यह भाजपा की सरकार है. एक बार मौका दूंगा. अगर नहीं समझे तो अक्ल ठिकाने लगा दूंगा. ■ **रमापति मिश्र** (उ.प्र. के नए मंत्री), *दैनिक जागरण*

● आधार (सरकार को बरखास्त करने के) क्या होते हैं. समय आने पर सब पता पड़ जाएगा. ■ **अशोक गहलोत** (राजस्थान सरकार को धमकी देते हुए), *जनसत्ता*

● गहलोत के कह देने मात्र से यह सरकार बरखास्त होने वाली नहीं है.

■ **भैरों सिंह शेखावत,** *राजस्थान पत्रिका*

● हां, अब बताओ मैं जब दिल्ली में थी तो माकपावालों ने क्या गड़बड़ी की.

■ **ममता बनर्जी** (कलकत्ता में इंका कार्यकर्ताओं से), *टेलीग्राफ*

● सुंदरलाल पटवा को सरकार चलाना नहीं आता.

■ **सिकंदर बख्त** (भाजपा उपाध्यक्ष), *हिंदुस्तान*

● अधिक तो नहीं कह सकता. लेकिन इतना साफ है कि (नई सरकार के) मौजूदा रंग-ढंग उत्साहवर्धक नहीं हैं. ■ **यशवंत सिन्हा** (पूर्व वित्तमंत्री), *संडे ऑबजर्वर*

● हमारी पार्टी में भीतरी कलह या टूट का सवाल ही नहीं उठता. यह दूसरी पार्टियों में होता है, कांग्रेस में नहीं. ■ **गुलाम नबी आजाद,** *साप्ताहिक हिंदुस्तान*

● फील्ड पर मैं हमेशा अलग दिखना पसंद करती रही हूं. मुझे यह जानकर खुशी है कि मैंने दौड़ में कुछ ग्लेमर भी शामिल किया. ■ **अश्विनी नाचप्पा,** *स्पोर्ट्सस्टार*

● ऊपरवाले की दया से आज मैंने अपनी वह जगह बना ली है कि मेरी असफल फिल्मों का प्रभाव भी मुझ पर नहीं पड़ता. ■ **धर्मेंद्र,** *दैनिक जागरण*

● कपूर का ठप्पा छुड़ाने में मुझे काफी वक्त लगा. ■ **करिश्मा कपूर,** *स्टारडस्ट*

● सेक्स सिंबल बनने की मेरी कोई तमन्ना नहीं है. ■ **माग्यश्री,** *जी*

● मैं तो हर एक आलोचना का जवाब दे सकता हूं. लेकिन क्या फायदा? हमारी तो असली संपत्ति हमारी कला है और वही हमारा परिचय है.

■ **पंडित रविशंकर,** *संडे ऑबजर्वर*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंप्यूटर प्रेमी हिंदूवादी

● अब कोई यह नहीं कह सकेगा कि हमारे पुराने नेता समय के साथ कदम मिलाकर नहीं चलते. नए प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव तो कंप्यूटर प्रेमी हैं

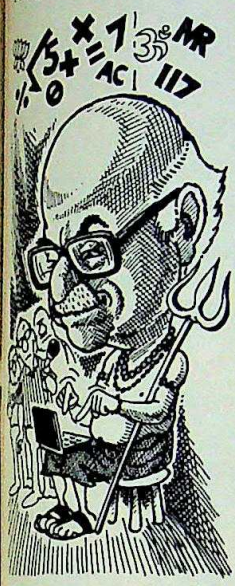

ही, दूसरे नेता भी कम नहीं हैं. कंप्यूटर से बेहद लगाव रखने वाले एक नेता हैं राम लहर के प्रणेता लालकृष्ण आडवाणी. भाजपा के इस नेता को हर पश्चिमी चीज बेतरतीब नापसंद है, हिंदुत्व के हिंदुस्तान की कामना उतनी ही उत्कट. लेकिन कंप्यूटर उन्हें अमृतजल या राम रथ जितना ही प्रिय लगता है. जब-जब आंकड़ों की जरूरत पड़ती है, आडवाणी अपने कुर्ते की जेब से काले रंग का कंप्यूटर निकालकर उसका बटन दबा देते हैं. और एक वफादार दोस्त की तरह यह कंप्यूटर सारी सूचनाएं मुहैया करा देता है.

हाल ही में एक निजी बातचीत में उनसे पूछा गया कि इन चुनावों में पार्टी की सीटों के बारे में उनके अनुमान इतने गलत क्यों निकले, तो आडवाणी शरमाए, मुस्कराए और कुर्ते की जेब से अपना काला कंप्यूटर निकाला, स्टील फ्रेम के चश्मे को दुरुस्त किया और कंप्यूटर का बटन दबा दिया. जो आंकड़े उभरे, उन्हें उन्होंने गर्व से सबके सामने रखा—भाजपा को कम-से-कम 117 सीटें, संभावना 125 सीटों की और अधिकतम 148 सीटें. इसके बाद वे बोले, यह गणना मैंने 6 जून को की थी. बहुत गलत तो मैं तब भी नहीं था." पश्चिमी तकनीक के बिना हिंदुत्व के उद्धारकों का भी काम नहीं चलता.

यह भी शिष्टाचार

● भारत के राष्ट्रपति आम तौर पर शिष्टाचार के नियमों का पालन करते हैं, लेकिन पिछले पखवाड़े फिल्म 'हिना' के प्रीमियर पर आर. वेंकटरामन ने इसमें ढील बरती. इसकी प्रेरणा शायद भारतीय फिल्म उद्योग के सबसे बड़े शो-मैन राजकपूर की आत्मा से ही मिली होगी. कार्यक्रम के अनुसार राष्ट्रपति को फिल्म के मध्यांतर में ही वहां से चल देना था लेकिन राजकपूर की बड़ी बेटी ऋतु नंदा ने जब उनसे कपूर खानदान के साथ फोटो खिचाने का अनुरोध किया तो वे ना नहीं कर सके. मध्यांतर होने पर वे न सिर्फ फोटो खिचाने के लिए चल पड़े बल्कि पाकिस्तान के उच्चायुक्त अब्दुस सत्तार को भी फोटो के लिए साथ आने का न्यौता दिया. सत्तार भला क्यों न

सभी कार्टून: अजीत नैनन

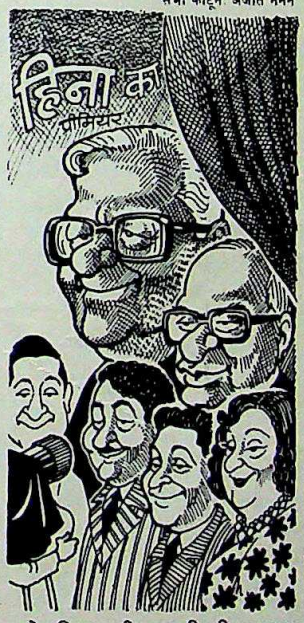

आते. फिल्म की कहानी सीमा पार पनपे प्रेम की कहानी ही तो है.

कम नहीं हुईं मुश्किलें

● प्रधानमंत्री जिस रास्ते से गुजरें वहां से गुजरने वाले लोगों को परेशानी उठानी ही पड़ती है. नई दिल्ली के सड़क यात्रियों को तो यह परेशानी कुछ ज्यादा ही

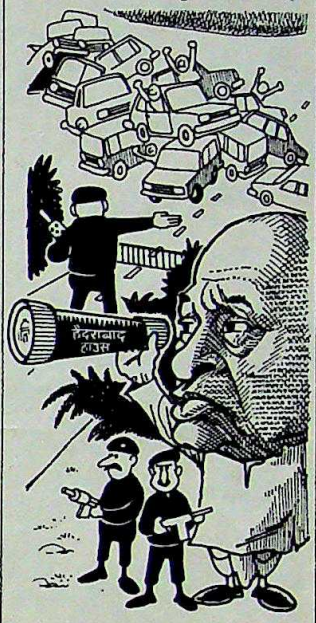

उठानी पड़ती है. लोगों का खयाल था कि नए प्रधानमंत्री चूंकि ज्यादा तामझाम वाले व्यक्ति नहीं हैं इसलिए उनकी वजह से ऐसी परेशानियां कम ही होंगी. लेकिन हुआ एकदम उलट ही. मोतीलाल नेहरू मार्ग जैसा चहल-पहल वाला रास्ता यातायात के लिए एकदम बंद कर दिया गया है. प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंहराव का निवास इसी मार्ग पर है.

प्रधानमंत्री को सरकारी निवास 7, रेसकोर्स रोड में जाना है. लेकिन अधिकारियों का कहना है कि वे अब तक कोई शुभ दिन तय नहीं कर पाए हैं. अफवाह यह भी है कि नरसिंह राव अपने पसंदीदा हैदराबाद हाउस को प्रधानमंत्री के सरकारी निवास में तब्दील करना चाह रहे हैं. अति विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा की ब्लू बुक के अनुसार राव को न्यूनतम सुरक्षा की जरूरत है. लेकिन सुरक्षा महकमे के लोग कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहते.

आशियाने की तलाश

● महाराष्ट्र के दिग्गज नेता शरद पवार ने जब रक्षा मंत्रालय का कार्यभार संभाला तो इसे उनकी एक बड़ी राजनैतिक जीत माना गया. और यह समझा गया कि अब उन्हें किसी दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ेगा.

लेकिन शायद पवार को भी यह गुमान नहीं था कि अभी उन्हें एक और बाधा—दिल्ली की नौकरशाही—को पार करना है. 15,000 करोड़ रु. के बजट वाले सबसे महत्वपूर्ण मंत्रालय का मुखिया बनने के एक हफ्ते बाद तक वे बिना किसी सरकारी निवास के काम चला रहे हैं. जून के अंत तक पवार मुंबई के आलीशान इलाके मालाबार हिल पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के सरकारी निवास में रह रहे थे. लेकिन राष्ट्रीय राजनीति में आने

के बाद वे कोपरनिकस मार्ग पर महाराष्ट्र सदन के कमरा नं. दो में रह रहे हैं. फिलहाल स्थिति यह है कि पिछली दो सरकारों के मंत्री सरकारी बंगलों को खाली करने के मूड में नहीं दिख रहे हैं. कुछ के पास सुरक्षा का बहाना है. इसलिए लगता है कि पवार को अभी महाराष्ट्र सदन में ही डेरा जमाए रहना होगा. इससे और कुछ नहीं तो प्रांतीय सत्ता का उनका आधार तो बना ही रहेगा.

...और एक चुटकी

वित्तमंत्री मनमोहन सिंह 95 दिन पहले ही मैदान से भाग खड़े हुए. उन्होंने काम संभालने के पांचवें दिन कह दिया कि सरकार 100 दिन में महंगाई नहीं घटा सकती. कहने वाले कह रहे हैं कि कोई नेता होता तो 95 दिन पहले नहीं, 5 दिन पहले ऐसा बयान देता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ्त यात्रा

■ रेल विभाग टिकटों की कीमतों में बढ़ोतरी करता ही रहता है. ऐसे में अगर कोई सफर का शौकीन अपने दिल पर काबू न रख पाए और टिकटों का बंडल पार कर ले तो...? तूतीकोरिन के एक नौजवान का यही शौक उसे ले डूबा.

पिछले पखवाड़े इन साहब ने तूतीकोरिन रेलवे स्टेशन के दो टिकट बाबुओं को स्पेशल चाय पेश की जिसे पीते ही वे बेहोश हो गए. मौके का फायदा उठाते हुए इन्होंने टिकटों के एक बंडल पर हाथ साफ किया और भारत यात्रा पर निकल गए. लेकिन मदुरै रेलवे स्टेशन पहुंचकर जब

सभी कार्टून: जयंतो

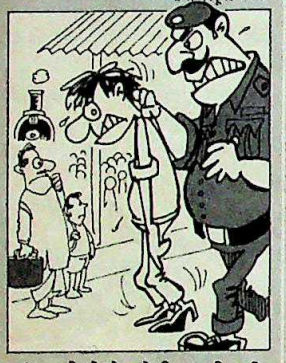

जांच हुई तो हेराफेरी पकड़ी गई. स्थानीय रेलवे पुलिस ने अपना हाथ दिखाया तो इन साहब ने सारा सच उगल दिया. लिहाजा, लौटती गाड़ी से उन्हें बिना टिकट तूतीकोरिन लाया गया.

हार में जीत

■ हर बार चुनाव आते हैं और देखते-देखते कई बड़े मंत्री और सांसद मतदाता के ठप्पे की मार से 'भूतपूर्व' हो जाते हैं. मगर बलिहारी हैं वे निर्दलीय उम्मीदवार जो निष्काम कर्म के फलसफे में श्रद्धा दिखाते हुए चुनाव की जंग में कूदते हैं, जमानत जब्त कराते हैं और हार के बावजूद मुस्कराते हुए अगले चुनाव का इंतजार करते हैं.

दसवीं लोकसभा के चुनावों के दौरान लोकतंत्र की नींव में अपनी जमानत का मट्ठा डालकर उसे मजबूत करने वालों के चेहरे की मुस्कराहट के राज अब धीरे-धीरे खुलने लगे हैं. पिछले पखवाड़े राजधानी के पत्रकार यह देखकर हैरान हो गए कि उनके यहां आने वाली प्रेस विज्ञप्तियों में ऐसे 'नेताओं' की विज्ञप्तियां भी हैं जिनकी एकमात्र योग्यता, उनके लैटरहैड के अनुसार, उनका 'भूतपूर्व लोकसभा उम्मीदवार' होना है. जब एक पत्रकार ने ऐसे ही एक 'नेता जी' को कुरेदा तो पता चला कि इन में से अधिकांश के लिए चुनाव हारना भी किसी जीत से कम नहीं है.

इन नेता जी के अनुसार सिर्फ 500 रु. की जमानत जब्त कराने के बदले हर उम्मीदवार को बिना इंतजार किए एक टेलीफोन मिल जाता है, अखबारों में बयान छपते हैं, और कई लाख मतपत्रों पर नाम छप जाता है. और कुछ को तो पिस्तौल का लाइसेंस भी मिल जाता है. सोने पर सुहागा यह कि हारने के बाद अपने लेटरहेड पर छापने के लिए एक नया रुतबा मिल जाता है. कौन कहता है चुनाव लड़कर हारना घाटे का सौदा है?

बिरादरी का फैसला

■ राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के कमाना गांव की एक बिरादरी की पंचायत को खबर मिली कि उनकी बिरादरी के एक 60 वर्षीय बुजुर्ग ने 35 वर्षीया विधवा भानजी से शारीरिक रिश्ता गांठ लिया. जिस वजह से वह गर्भवती हो गई थी.

इस नाजायज हरकत पर विचार करने के लिए पंचायत बैठी और उसने इन महाशय की मूंछें काटकर उनका मुंह काला करने और गधे पर बिठाने की सजा सुनाई. पंचायत ने यह हुकुम भी सुनाया कि 'अपराधी' का जुलूस निकालने के समय बिरादरी के सभी पुरुष शराब

पीएंगे और उसे एक-एक थप्पड़ मारेंगे. फैसले का आर्थिक पहलू यह था कि 'इंसाफ' करने की इस प्रक्रिया के दौरान इस्तेमाल होने वाली शराब का खर्चा भी 'अपराधी' को उठाना होगा.

महिमा फोन की

■ जरूरी नहीं कि टेलीफोन लग जाने पर मुसीबतें हल हो जाएं. अमृतसर के इन डॉक्टर साहब का ही किस्सा लीजिए. मरे हुए फोन के साथ रहना इन्होंने सीख लिया था. लेकिन सदमा उन्हें तब

लगा जब हजारों काल के बिल आने शुरू हो गए. इस पर उन्होंने टेलीफोन विभाग से इतनी शिकायतें कीं कि तंग आकर उन्हें नया फोन कनेक्शन दे दिया कि अब यह कभी बंद नहीं होगा. लेकिन नए नंबर पर रात-दिन 'रांग नंबर' के जवाब देते-देते उनका सिर भन्ना गया. इससे पहले यह नंबर जिला टेलीफोन अधिकारी का था. मिन्नतें करने पर उन्हें फिर से नया नंबर दिया गया. लेकिन इस बार तो हालत और भी खराब रही क्योंकि यह इंडियन एअरलाइंस का इन्क्वायरी नंबर था. अब इन महोदय ने अतिरिक्त फीस देकर अपना फोन एक साल के लिए कटवा लिया है—इस उम्मीद में कि इस बीच मुसीबत भरे नंबर दूसरों को दे दिए जाएंगे.

'माया' मिली न नौकरी

■ दिल्ली में रहने वाले दो भाइयों ने अपने पड़ोस की दुकान से एक मशहूर कंपनी के शीतल पेय की बोतलों का क्रेट खरीदा. घर जाकर उन्होंने पाया कि कुछ बोतलों के अंदर पेय में काई तैर रही है. पहले तो उन्होंने सोचा कि कंपनी की इस लापरवाही के खिलाफ शिकायत की जाए. लेकिन बाद में काई वाली बोतलें अखबारों तक पहुंचाने की धमकी देकर कंपनी के साथ सौदेबाजी शुरू कर दी. कंपनी ने खराब बोतलें वापस मांगते हुए उन्हें पूरा साल हर रोज बोतलों का एक क्रेट देने का प्रस्ताव पेश कर दिया. वे नहीं माने. आखिर कंपनी अधिकारियों को पता चला कि इनमें से एक भाई नौकरी की तलाश में है तो उन्होंने अगले दिन उसे बोतलें लेकर इंटरव्यू में आने का निमंत्रण दे दिया. पर अगले दिन बोतलें कब्जे में करने के बाद उन्होंने इन साहब का इंटरव्यू लिया और 'रिजेक्ट' करते हुए बाहर का रास्ता दिखा दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसोई में आपका साथी

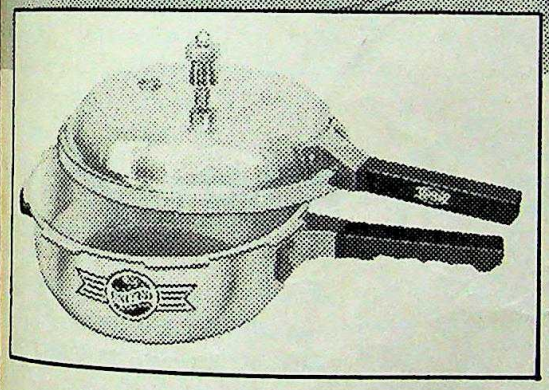

यूनाइटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

अधिकृत विक्रेता

गुजरात

...मदाबाद: मै० फैन्सी नावल्टी स्टोर्स, 1811/2, थ्री गेट, ...अब्दुल कादिर मो० हुसैन, 1812, थ्री गेट, ● मै० अकबर ...कादिर भाई, 1822, थ्री गेट, ☐ बड़ौदा: मै० मोती लाल ...कन्नारा, एम०जी० रोड, ● मै० श्रीजी मेटल ...ढोलकी मुहने पोल, बजवाड़ा, ☐ बल्सर: मै० ...दयाराम बलभ राम एण्ड कं०, राम जी स्ट्रीट, ● मै० ...कमीयर्स, C/o. ए०एस० मैमन, मोटा ताइवाड, ☐ ...नगर: मै० धर्मन्द्रा बासन भंडार, एम जी रोड, ● मै० ए ...एन बस भंडार, वोरा बाजार, महालक्ष्मी मंदिर के सामने, ...दरा: मै० महावीर मेटल का०, पुराने बस स्टोप के पास, ...वसारी: मै० पुष्पांजली स्टेनलेस स्टील मार्ट, 12 सत्या ...मार्केट, दीधया तालाव, ● मै० दीपक बासन भंडार, ...कटरा स्ट्रीट मोटा बाजार, ● मै० नीतिन बासन भंडार, ...सेन्टर दुधिया तालाव, ● मै० शक्ति बासन भंडार, ...दुधिया तलाव, ☐ नडीआड: मै० चारभुजा बासन ...अहमदाबाद बाजार, ☐ सूरत: मै० अरीहंत स्टील ...पथ, छोटा बाजार मैन रोड, ● मै० ठक्कर बदर्स, 5/569 ...4227, बुन्देलवाड भागल, ● मै० ठाकुर दास जीवा राम एण्ड ...भक्तना झकना, हरीपुरा, ● मै० संगीता स्टील सेन्टर, ...कालापीठ, ● मै० कनसारा ...कृष्ण शौपिंग सेन्टर, ...रशम वाली बिल्डिंग, बरानपुरी ...मेन गेट,

राजस्थान

☐ अलवर: मै० जुनेजा बदर्स, 1 वीर चौक, होप सर्कस, ● मै० भारत बर्तन भंडार, बाजाजा बाजार, ☐ अजमेर: मै० गोर्वधन लाईट हाउस, मदर गेट, ☐ चित्तौड़गढ़: मै० आप की दुकान, मीरा मार्किट, कालीकोठरी चोवारा, ● मै० सुरेश स्टील एम्पोरियम, 26 नेहरू बाजार, ● मै० चारभुजा बर्तन भंडार, 6 नेहरू मार्किट, ☐ जयपुर: मै० महावीर जनरल स्टोर्स, 215 तरीपोलिया बाजार, ● मै० जैन स्टील सेन्टर, 141 तरीपोलिया बाजार, ● मै० जगदीश जनरल स्टोर्स, तरीपोलिया बाजार, ☐ जोधपुर: मै० सुपर स्टील सेंटर, तरीपोलिया रोड, ● मै० एवन ट्रेडर्स, मोजाती गेट के अन्दर, ☐ कोटा: मै० गोस्वामी बदर्स, भारतेन्दु भवन, लादपुरा, ● मै० नारायण जनरल स्टोर्स, रामपुरा बाजार, ☐ नाथवाड़ा: मै० कंसारा तारा चन्द शंकर लाल, दिल्ली बाजार, ☐ उदयपुर: मै० लाल चन्द छगन लाल चौधरी, घंटा घर, ● मै० राजेश मैटल्स, गली भंगवाली, सुरज पोल, उदयपुर

हरियाणा

☐ अम्बाला सिटी: मै० दीवान चन्द मनोहर लाल, कोतवाली बाजार, ● मै० सचदेवा बर्तन भंडार, पटेल रोड, ● मै० संजीव ट्यर हाउस, केसरा बाजार, ☐ बल्लबगढ़: मै० जींदल मेटल हाउस, मेन बाजार, ☐ चण्डीगढ़: मै० अग्रवाल डिस्ट्रीबुटर्स, शो रूम नं० 30, सेक्टर-26, मध्या मार्ग, ● ☐ फरीदाबाद: मै० मोहन स्टोर्स, मेन बाजार, ● मै० न्यू लाईट हाउस, मार्किट नं० I, एनआईटी, ● मै० कृष्ण लाल संजीव कुमार, दुकान नं० 116, मार्किट नं० I, एनआईटी, ☐ हाँसी: मै० प्रशोत्तम लाल एण्ड सन्स, सदर बाजार, ☐ जाखल मण्डी: मै० शिव दत्त राय कमल चन्द, अनाज मंडी, ☐ हिसार: मै० क्रोकरी पैलेस, मोती बाजार, ☐ जगाधरी: मै० सेठी मेटल स्टोर्स, रेलवे रोड, ☐ जींद: मै० केदार नाथ पवन कुमार, मेन बाजार, ☐ कालका: मै० रल्ला राम द्वारका दास, चादनी चौक, ● मै० बेनी प्रसाद परदूमन कुमार, बस स्टैण्ड, गांधी चौक, ☐ कैथल: मै० सरस्वती बर्तन भण्डार, नरवारिया बिल्डिग, ● मै० राम प्रकाश रामेश कुमार, तलाई बाजार ☐ कुरुक्षेत्र: मै० सरस्वती बर्तन भण्डार, मोती चौक, थानेसर, ● मै० कुमार बर्तन स्टोरज़, कृष्णा गेट, ☐ पानीपत: मै० मोहन सिंह धारी मल, मेन बाज़ार, ● मै० जैन बर्तन भण्डार, मेन बाज़ार, ● मै० जिया लाल जैन दास, हलवाई हाटा, मेन बाज़ार, ☐ रोहतक: मै० श्याम लाल आदेश कुमार जैन, रेलवे रोड़ ☐ रिवाड़ी: मै० शमा बर्तन भण्डार, किला रोड, ● बलदेव सहाय हेमराज सैनी, गोकल बाज़ार.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

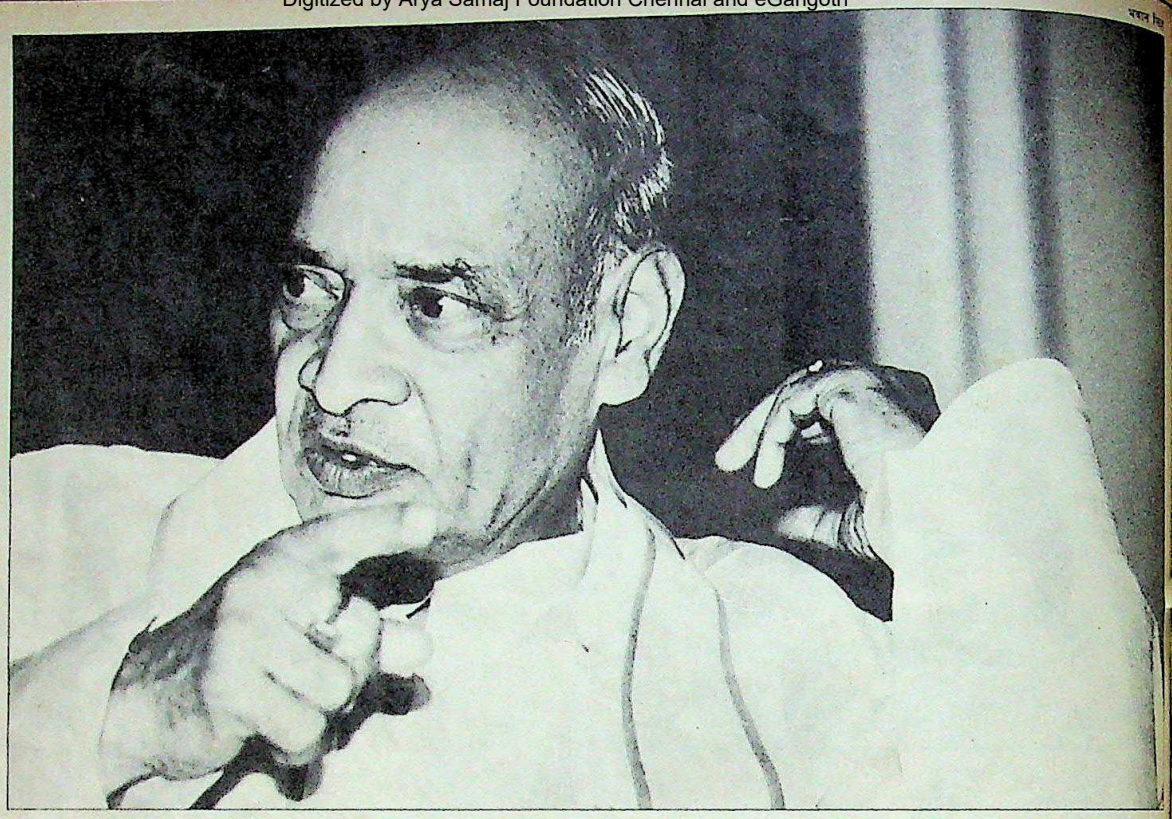

पी.वी. नरसिंह राव

'जनादेश तो हमें ही मिला है'

प्रधानमंत्री के रूप में राजीव गांधी के व्यक्तित्व से यदि ठाट-बाट और आडंबर झलकता था तो विश्वनाथ प्रताप सिंह अपने पद से हमेशा रस्साकशी करते लगते थे. लेकिन पी.वी. नरसिंह राव का अपने कर्तव्यों के प्रति रवैया हिंदू अनासक्ति वाला है. अपने दायित्व से वे न तो अति विस्मयाभूत दिखते हैं और न ही भयभीत. अपने गुरुतर दायित्व की उनमें समझ दिखाई देती है. एक वाक्य में कहा जाए तो यह उनका राजनैतिक कर्म है. और उन्होंने इसी के अनुकूल अपना रवैया रखा है— उन्हें जो करना है उसे वे जरूर करेंगे.

पत्र-पत्रिकाओं में छपे चित्रों में वे निस्तेज और रूखे-से दिखाई देते हैं लेकिन नजदीक से देखने पर उनके चेहरे पर ज्ञान की आभा दिखती है; झुर्रिया नहीं हैं, आंखें सतर्क और भेदक हैं; बात करने का तरीका सटीक है, आचरण और व्यवहार में कहीं उग्रता नहीं है, वे बात टालते भी हैं तो शालीनता से.

वे अच्छे श्रोता हैं. ध्यान से कोई बात सुननी हो तो आंखें मूंद लेते हैं, बहुधा उनका सिर बाईं तरफ झुक जाता है, ठोड़ी को वे तर्जनी और अंगूठे के बीच में टिका देते हैं. वे कृशकाय तो हैं लेकिन तनकर बैठते हैं. एकाग्रता उनमें गजब की है. झुलसाती दोपहर में 11, मोतीलाल नेहरू मार्ग स्थित उनके घर में लंबे इंटरव्यू के दौरान तीन बार बिजली गई लेकिन वे अविचलित बने रहे.

प्रधानमंत्री का व्यस्ततम दिन सुबह 8 बजे से शुरू हो जाता है और करीब 14 घंटे तक खिंचता है. हां, दोपहर को वे थोड़ी देर विश्राम जरूर करते हैं. विश्राम के इसी समय में उन्होंने करीब एक घंटा प्रधान संपादक ***अरुण पुरी*** *और कार्यकारी संपादक* ***इंद्रजीत बधवार*** *से बात की. इस बातचीत के अंश:*

• ऐसे समय जबकि समूचा देश जैसे पगला गया-सा लग रहा हो, प्रधानमंत्री बनना कैसा लगता है?

यह बड़ी चुनौती है. पहले तो लगा कि इससे पार पाना लगभग असंभव है. लेकिन पिछले कुछ दिनों से इसकी तीव्रता कम लग रही है. ऐसा नहीं कि समस्याएं हल हो गई हैं. दरअसल हमारा आत्मविश्वास बढ़ा है.

• पहले यह काम असंभव क्यों लगा और किस कारण आपका आत्मविश्वास बढ़ा?

(राजीव गांधी की) हत्या के बाद सब ओर अंधेरा दिखता था, कांग्रेस कार्यकर्ता बुरी तरह हताश हो गए थे. लेकिन (चुनाव) अभियान आगे बढ़ा तो मैंने पाया कि स्थिरता के युग के लिए लोग फिर कांग्रेस की ओर देख रहे हैं. हमारे शपथ लेने से पहले अर्थव्यवस्था के बारे में मिलने वाली सूचनाएं भयभीत किए दे रही थीं और जब हमने सत्ता संभाली तो पाया कि वास्तविक परिस्थिति और भी डरावनी है.

• बदलाव तो बिजली की गति से हुए क्या आपको कल्पना थी कि आप इस कदर तेजी से कार्रवाई कर सकेंगे?

हां, मैंने सोचा था कि हमें बड़े बदलाव करने पड़ेंगे. हमें पता था कि यदि हम तुरत-फुरत एकमुश्त सुधार न किए तो कोई उम्मीद नहीं रहेगी. भुगतान संतुलन के मामले में देश लगभग दिवालिया होने के कगार पर था. वही असली चुनौती थी जिससे हमें जल्दी करने और आगे बढ़ने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखा मिली. वही एक तरीका बचा था. देश की साख बचाने के लिए कुछ करना ही था. और संकटों का सामना करने की भारत की क्षमता के बारे में विदेशों से मिलने वाली प्रतिक्रियाएं काफी उत्साहवर्धक रहीं बाहर बसे मित्रों और प्रवासी भारतीयों ने मुझे पूरा समर्थन देने के संदेश भेजे. दो ही हफ्तों में बदलाव आ गया है.

● ***आर्थिक पुनर्रचना होने के कारण लोगों का बेरोजगार होना और मजदूर संघों तथा मजदूरों का विरोध में खड़े होना तय है. आप इसका सामना करने के लिए तैयार हैं?***

थोड़े समय के लिए हमें वह सब तो भुगतना ही होगा. यदि नहीं भुगतेंगे, अल्पकालिक प्रभावों के डर से हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे तो. दीर्घकालिक परिणाम भयावह होंगे. यह देश फिर कभी संभल नहीं सकेगा.

● ***लेकिन अल्पमत सरकार होने के कारण ऐसे विरोध के सामने आपकी राजनैतिक इच्छाशक्ति काफूर हो सकती है.***

परिस्थिति की बाध्यताएं ऐसी हैं कि जो नतीजे हम पाना चाहते हैं और जिन समस्याओं का शमन करना चाहते हैं, उनके सिलसिले में 10-15 वोटों की कमी का कोई मतलब नहीं होना चाहिए. कुछ बलिदान तो करना ही होगा. लेकिन जो लोग जिस सीमा तक बलिदान कर सकते हैं, उन पर उसी अनुपात में बोझ डाला जाएगा.

● ***क्या आपने विपक्ष का भरोसा हासिल किया है?***

मैंने सभी विपक्षी नेताओं से बात की है. उनका रुख उत्साहवर्धक है. अब देखने की बात यह है कि मुद्दों पर आधारित समर्थन किस तरह मिलता है. मैंने उनसे पूरा समर्थन मांगा. लेकिन उनका कहना है कि वे हरेक मुद्दे के गुण-दोष के आधार पर समर्थन करेंगे.

● ***क्या आपको लगता है कि आप अपने बजट के लिए समर्थन जुटा लेंगे?***

बजट में क्या होगा यह तो मैं नहीं जाहिर कर सकता पर मुझे लगता है कि क्रमभुक्त सुधारों के मामले में हमें जैसा समर्थन मिला, वैसी ही (बजट पर) परिस्थिति होगी.

● ***पिछले चुनाव के नतीजे एक तरह से अधूरे रहे. क्या आप दलों या धड़ों के आपको समर्थन के संदर्भ में नए गठजोड़ उभरने की संभावना देखते हैं?***

लोगों ने कांग्रेस को सरकार चलाने के लिए और दूसरी पार्टियों को चौकस रहने के लिए ही नहीं बल्कि कांग्रेस से सहयोग करने के लिए भी वोट दिए.

● ***अल्पमत में होने के बावजूद क्या आपको लगता है कि ऐसे क्रांतिकारी परिवर्तन करने का शासनादेश आपको है?***

शासनदेश हमें ही मिला है, किसी और पार्टी को नहीं. जो (करना) जरूरी है, वह जरूरी ही है. किसी को तो इसे करना होगा.

● ***आपकी प्राथमिकताएं क्या हैं?***

पंजाब और कश्मीर. कुछ ही दिनों में हम पंजाब पर नीति लाने वाले हैं और हम सभी दलों को भरोसे में लेना चाहेंगे.

● ***पंजाब में चुनाव स्थगित करने से क्या इन कोशिशों को धक्का नहीं पहुंचा?***

हमने चुनाव का बहिष्कार इसलिए किया क्योंकि हमें नहीं लगता था कि चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष होंगे. हालात का दोबारा आकलन करने के लिए चुनाव स्थगन की घोषणा से बहुत सुविधा हुई.

● ***स्थगन में तो आपका भी हाथ रहा?***

नहीं. हम शुरू से ही स्थगन की मांग कर रहे थे. इसलिए जब स्थगन की घोषणा हुई तो लगा कि जरूरी मौका हमें मिल गया है और हम उसका उपयोग कर लेंगे.

● ***लेकिन आपकी सरकार चुनकर आई और स्थगन की घोषणा हुई. इसमें कहीं न कहीं तो संबंध है ही.***

वह काम चुनाव आयोग के जिम्मे है. मैं उस मामले को विवादों में नहीं घसीटना चाहता, हालांकि कुछ विवाद हो सकता है.

> **"अल्पकालिक प्रभावों के डर से हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे तो दीर्घकालिक परिणाम भयावह होंगे. यह देश फिर कभी संभल नहीं सकेगा"**

● ***कश्मीर में हिंसा और अगवा करने की घटनाएं बढ़ रही हैं और सरकार की वक़अत सिर्फ आतंकवादियों से सौदेबाजी करने तक की ही रह गई है.***

आम तौर पर लोगों के मनोबल को तो सहारा देना ही होगा. वे असहाय हैं. अधिकारी तो कार्रवाई करें या न करें के बीच झूलते हैं. हालात फिर से काबू में लाने के लिए कुछ तो करना ही होगा. मैं कश्मीर में सक्रिय दलों—नेशनल कान्फ्रेंस, भाजपा के नेताओं से विस्तृत बातचीत कर रहा हूं और हम अपनी अगली कार्रवाई इसी के तारतम्य में तय करेंगे.

● ***पूरी दुनिया और अंतरराष्ट्रीय संबंध बदल रहे हैं. बाजार और तकनीक के लिए हम पश्चिम पर ज्यादा से ज्यादा निर्भर होते जाएंगे. ऐसे में क्या हमारे रिश्ते भी बदलेंगे?***

पश्चिम से हमारे व्यापारिक संबंध हमेशा अच्छे रहे हैं. अब हमें इस व्यापार की मात्रा और उस तंत्र में प्रभावी ढंग से शामिल होने के लिए अपनी कार्यकुशलता बढ़ानी होगी.

● ***अयोध्या के बारे में क्या विचार है? यदि उत्तर प्रदेश सरकार मंदिर निर्माण शुरू कर देती है तो?***

हम स्थिति पर निगाह रखे हुए हैं. लेकिन हमारा कहना है कि मस्जिद गिराए बगैर मंदिर बनाना चाहिए. हम अपने इस दृष्टिकोण पर दृढ़ हैं.

● ***लेकिन भाजपा को लगता है कि उसे इसी के लिए जनादेश मिला है और यह बात आपके दृष्टिकोण से टकराती है?***

उन्होंने तो आरंभ से अंत तक एक जैसा रवैया भी नहीं अपनाया. चुनाव अभियान के दौरान आडवाणी जी ने कहा कि मंदिर अब मुख्य मुद्दा नहीं रहा है. उन्होंने जो बात शुरू की थी उसमें और सत्ता में आने की संभावना दिखने पर उन्होंने जो कुछ कहना शुरू किया, उसमें जमीन आसमान का अंतर दिखता है.

● ***क्या आप इस मामले को इतना गंभीर मानते हैं कि इस पर राज्य सरकार को बरखास्त कर दिया जाए?***

ये ऐसे मामले हैं जिन पर हरेक को और देश को वक्त आने से पहले कोई टिप्पणी नहीं करनी चाहिए.

● ***संसद में बहुमत सिद्ध करने के मुद्दे से आपकी सरकार कैसे निबटेगी?***

हमें संसद में बहुमत साबित करने की कोई जरूरत नहीं. हमें तो सिर्फ यह दिखाना है कि सरकार में सदन का विश्वास है.

● ***क्या आपने वामपंथी दलों से कोई वचन ले लिया है?***

कोई पक्का वादा नहीं किया है. लेकिन बनने के पखवाड़े के भीतर इस सरकार के गिरने की संभावना शून्य है.

● ***सरकार कब तक चलेगी?***

पूरे पांच साल.

● ***राजीव गांधी की मौत के बाद इंका में नेतृत्व का झगड़ा चला. कुछ सदस्य नेता का चयन गुप्त मतदान से चाहते थे. उससे पार्टी पर क्या असर पड़ा?***

पार्टी में कोई मतभेद नहीं हैं. यदि कुछ लोगों ने गुप्त मतदान की मांग की तो इसमें गलत क्या है. यह तो लोकतंत्र का हिस्सा है.

● ***लेकिन आपने वह तरीका नहीं अपनाया.***

गुप्त मतदान कराने से हम कतराए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस (इ)

सुभीते की हालत में

पिछले पखवाड़े यही लगता रहा कि सत्ता के शिखर पर बैठे लोग अर्थव्यवस्था की चिंता में ही डूबे रहे. वित्तमंत्री मनमोहन सिंह ने अर्थनीति में जो भारी बदलाव किए उनका नाममात्र को ही विरोध हुआ. इस तरह लगा कि राजनीति को कुछ समय के लिए गौण मान लिया गया है.

और संसद का मानसून सत्र शुरू होने से पहले इंका राजनीति के मामले में भी आश्वस्त दिखी. इसके उम्मीदवार शिवराज पाटील लोकसभा के अध्यक्ष चुन लिए गए. और विपक्षी पार्टियों ने घोषणा कर दी कि वे पी.वी. नरसिंह राव की अल्पमत वाली सरकार को गिराने की कोई कोशिश नहीं करेंगी. इस तरह इंका सुभीते की स्थिति में दिखी. लेकिन इसके लिए उसे काफी जोड़-तोड़ करनी पड़ी. इसके बड़े नेता विपक्षी पार्टियों से मिल-जुलकर यह जुगत भिड़ाते रहे कि वे उसे संसद में परेशानी की स्थिति में न डालें.

स्पष्ट बहुमत के लिए इंका को 10 सीटें कम पड़ रही हैं. इसलिए उसके पास दो ही विकल्प हैं. वह या तो राष्ट्रीय मोर्चा और वामपंथी दलों के गठजोड़ वाले 126 सांसदों के गुट का समर्थन हासिल करे या 121 सांसदों के भाजपा-शिवसेना गठजोड़ का. 507 सदस्यों के सदन में इंका के 226 सदस्य हैं जबकि इसकी सहयोगी पार्टियों के 18 सदस्य हैं. संसदीय मामलों के मंत्री गुलाम नबी आजाद को भरोसा है कि मजलिस-ए-मुसिलमीन, बसपा, सजपा, और झामुमो जैसी छोटी पार्टियों के समर्थन से वे स्पष्ट बहुमत के लिए आवश्यक 10 सदस्यों का समर्थन जुटा लेंगे. लेकिन इंका बेहद कमजोर बहुमत के आधार पर विधेयक या बजट मंजूर कराने का खतरा मोल नहीं ले सकती थी.

इसलिए इस मसले पर उच्चस्तरीय विचार-विमर्श हुआ. प्रधानमंत्री ने रणनीति तय करने के लिए पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की बैठक बुलाई. इसमें फैसला किया गया कि पहले माकपा के जरिए राष्ट्रीय मोर्चा का समर्थन हासिल करने की कोशिश की जाए. इसके बाद प्रणव मुकर्जी और इंका की तेजतर्रार नेता ममता बनर्जी ने कलकत्ता में मुख्यमंत्री ज्योति बसु से मुलाकात की और उनके समर्थन के एवज में बंगाल की लटकी पड़ी योजनाओं को मंजूरी देने की पेशकश की.

विपक्षी पार्टियों से समर्थन हासिल करने के काम पर लगाए गए आजाद ने इसके बाद वी.पी. सिंह से दो बार मुलाकात की. उन्होंने भाकपा के महासचिव इंद्रजीत गुप्त और माकपा नेता हरिकिशन सिंह सुरजीत से भी मुलाकात की. आजाद ने इन लोगों से उस परंपरा को जारी रखने की गुजारिश की जिसके तहत शासक दल का उम्मीदवार लोकसभा का अध्यक्ष चुना जाता है, जबकि उपाध्यक्ष विपक्षी उम्मीदवार.

इंका सिर्फ नरमी ही नहीं दिखा रही थी, बल्कि कड़ाई करने का भी संकेत दे रही थी. आजाद ने जहां समझौता वार्ता की, वहीं इंका के प्रवक्ता सी.पी. ठाकुर ने अचानक बिहार की जनता दल सरकार को राज्य में कानून और व्यवस्था की बिगड़ती हुई स्थिति के बारे में चेतावनी दे

भावी अर्थनीति के बारे में विपक्षी नेताओं को ब्यौरा देते प्रधानमंत्री नरसिंह राव

शरद मलंगे

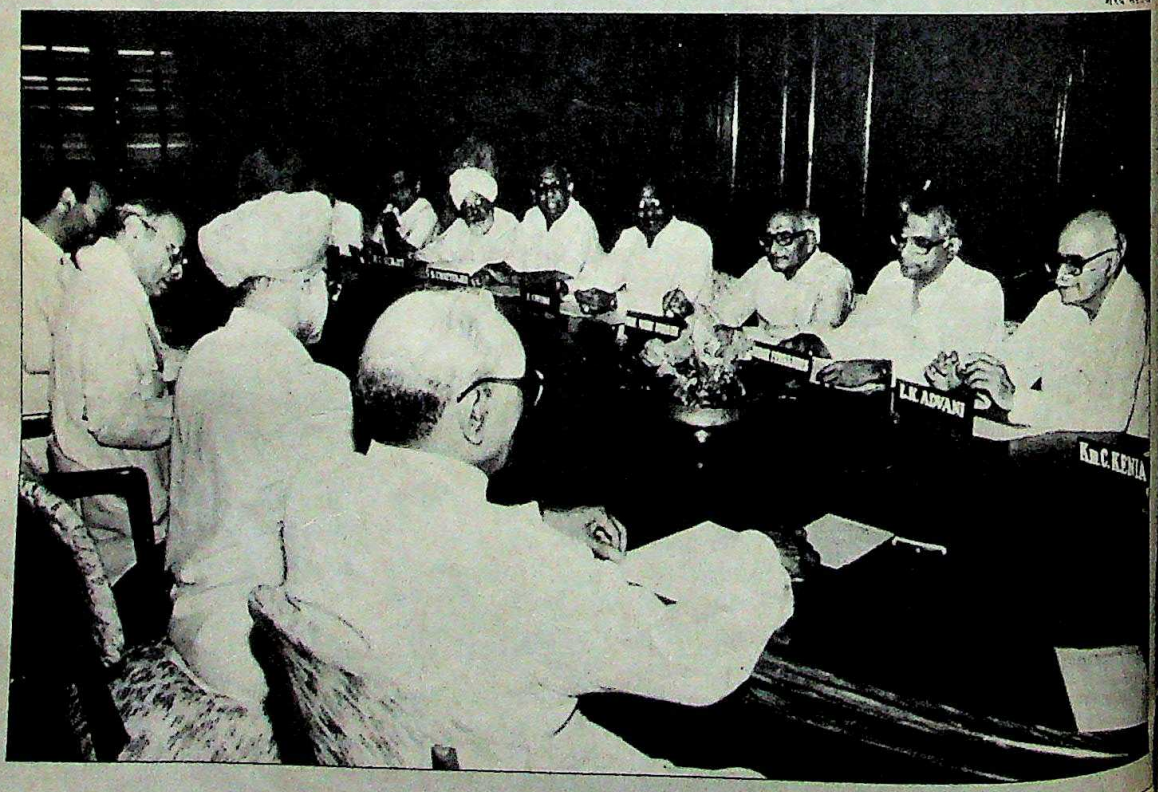

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मतलब साफ था: यदि जनता दल ने में अल्पमत सरकार के साथ खेल की कोशिश की तो केंद्र पलट कर करने से नहीं चूकेगा.

इस धमकी से चिंतित वी.पी. सिंह ने 6 को राष्ट्रीय मोर्चा-वाम गठजोड़ की समिति की बैठक बुलाई और तारक रामराव और इंद्रजीत गुप्त मदद से इंका को समर्थन देने की की योजना पर रोक लगा दी. के बाद गठजोड़ ने लोकसभा अध्यक्ष के लिए रबि राय की उम्मीदवारी की कर दी. दूसरी तरफ, वी.पी. सिंह चुनावी हिसाब-किताब लगा रहे थे. के चुनाव की पूर्व संध्या, यानी 8 की रात को अर्जुन सिंह और

इंका के लिए फायदे की सबसे बड़ी बात यह है कि कोई भी पार्टी, यहां तक कि भाजपा भी एक और चुनाव नहीं चाहती

वी. चव्हाण वी.पी. सिंह से मिले और अध्यक्ष पद के लिए राष्ट्रीय मोर्चा-गठजोड़ के उम्मीदवार के रूप में राय को खड़ा न करने का अनुरोध किया. लेकिन महत्वपूर्ण हिंदी क्षेत्र में मुस्लिम वोट बैंक को बचाने के लिए सिंह इंका को भाजपा के करीब चाहते थे. सो वी.पी. सिंह बात पर डटे रहे और अंततः टूट गई.

इंका के पास भाजपा से समझौता करने का बचाव और कोई रास्ता नहीं था. राव कृष्ण आडवाणी को अपने आवास रात्रिभोज के लिए आमंत्रित किया. आडवाणी अटल बिहारी वाजपेयी और राजे सिंधिया के साथ आए और व उनके सहयोगियों ने, जिनमें आजाद और अर्जुन सिंह शामिल सौदा पक्का कर लिया.

अध्यक्ष का मुद्दा सुलझ जाने के बाद को इस बारे में सोचने की जरूरत थी 9 जुलाई से 13 सितंबर तक लोकसभा बजट सत्र की भारी-भरकम कार्यवाही सुचारु रूप से कैसे चले. सरकार 16 जुलाई को रेल और 24 जुलाई को आम बजट पेश करने वाली थी. 30 जुलाई को सरकार को बजट प्रस्तावों की स्वीकृति को रोक लेखानुदान प्रस्ताव भी हासिल करना होगा. सरकार को उन सात अध्यादेशों को भी बदलना होगा जो अंतः-सत्र की अवधि में पेश किए गए थे. उसे टी.एन. शेषन पर महाभियोग, रुपए के अवमूल्यन और विदेशी बैंकों में सोना गिरवी रखने जैसे मुद्दों पर विपक्ष की आलोचना का सामना भी करना पड़ सकता है. लेकिन अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए इंका को अपनी कूटनीति या आम राय वाले नजरिए की जगह मौजूद परिस्थितियों का शुक्रगुजार होना चाहिए. राव सरकार के बने रहने का सबसे बड़ा कारण यह तथ्य है कि भाजपा सहित कोई भी राजनैतिक पार्टी देश पर दूसरे चुनाव का बोझ डालना नहीं चाहती. राष्ट्रीय मोर्चा के अध्यक्ष रामराव कहते हैं, "हम सरकार के साथ विपक्षी पार्टी की तरह पेश आएंगे. उसे गिराएंगे नहीं."

वामपंथी पार्टियों के विचार से "एक पार्टी के शासन का जमाना लद गया है और संसदीय प्रणाली आम राय वाले नजरिए से ही जीवित रह सकती है." आडवाणी भी सभी प्रमुख राष्ट्रीय समस्याओं पर आम राय वाले नजरिए से सहमत हैं. एक भाजपा उपाध्यक्ष ने साफ माना, "क्या हम फिर चुनाव में उतरने का बोझ उठा सकते हैं?" उनकी यह बात मौजूदा भावनाओं को ही दर्शाती है.

इसलिए राव सरकार सुविधाजनक स्थिति में है. मनोवैज्ञानिक रूप से भी, चुनाव के तुरंत बाद सरकार से भिड़ने में विपक्ष की विफलता से इंका के हौसले बुलंद हैं. कोई ताज्जुब नहीं कि आजाद विश्वास से भरे हुए लगते हैं. उन्होंने घोषणा की, "सरकार नहीं गिरेगी. विपक्ष ने भी हमें भरोसा दिया है कि वे सरकार नहीं पलटेंगे."

आर्थिक मोर्चे पर क्रांतिकारी फैसले करके संसद की बैठक के पहले राव सरकार ने अच्छी शुरुआत की है. संसद में इसका कार्यकाल तूफानी साबित हो सकता है. विपक्षी पार्टियां वाक वाउट और इंका को परेशान करने की कोशिश कर सकती हैं. लेकिन राव और उनके पार्टीजन इस बात से आश्वस्त रह सकते हैं कि उनके विरोधी 10वीं लोकसभा के पहले सत्र के दौरान सरकार गिराने की हिम्मत नहीं कर सकते हैं.

नहीं. पर पार्टी ने स्वविवेक से तय किया कि उस तर्ज पर बंटवारा होने से बचना ही ठीक है.

● ***क्या आपको पार्टी के चुनाव करवा लेने की उम्मीद है? राजीव गांधी भी यह चाहते थे लेकिन वे कामयाब नहीं हो सके.***

मुझे आशा ही नहीं है, चुनाव कराने का मेरा दृढ़ निश्चय है. इस महीने के आखिर में हम इसकी योजना बनाने के लिए राज्यों के सभी नेताओं और सचिवों को बुला रहे हैं. चुनाव से बचा नहीं जा सकता और मुझे विश्वास है कि ज्यादातर (कांग्रेसी) इसे टालना नहीं चाहते. वे इसलिए भी चुनाव चाहते हैं क्योंकि जब कोई सालों साल पद पर बैठा रहता है तो धीरे-धीरे उसकी दिलचस्पी कम होने लगती है और लोग भी उसकी नहीं सुनते. ऐसे में उनके लिए भी यह कोई अच्छी स्थिति नहीं. इसलिए चुनाव की मांग उठी.

● ***क्या आप एक व्यक्ति, एक पद की धारणा के समर्थक हैं?***

यदि पार्टी ऐसा चाहती है तो उसे रोका नहीं जा सकता.

● ***आपकी क्या राय है?***

इस मामले पर मेरी कोई राय नहीं है. मैं दो पदों पर बैठा हूं. लेकिन मैं पार्टी का ताबेदार हूं. यदि वह दूसरे अध्यक्ष का चुनाव करती है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी.

● ***क्या आप अमेठी से सोनिया गांधी के चुनाव लड़ने के पक्षधर हैं?***

यह मामला उन्हीं पर छोड़ देना चाहिए. मेरा इसमें ज्यादा कुछ कहना उचित नहीं.

● ***पर क्या आप पार्टी में उनकी कोई भूमिका देखते हैं?***

वे तो पहले से ही कांग्रेस परिवार की सदस्य हैं.

● ***राज करने की आपकी शैली राजीव गांधी से किस तरह भिन्न है?***

राजीव जी ने जो किया उसमें से कई बातें हमने जारी रखी हैं. मुझे नहीं लगता कि कोई मूलभूत अंतर है...लेकिन अंतर करना अभी जल्दबाजी होगी. फिर उचित समय पर मैं देखना चाहूंगा कि क्या अंतर है क्योंकि 42-43 साल के एक नौजवान आदमी के काम करने के तरीके और उनके साथ काम कर चुके और उनकी आशा-आकांक्षाओं को जानने वाले उनके कुछ साथियों द्वारा किए जा रहे काम के तरीके में तो अंतर होगा ही.

● ***कहा जाता है कि आप काम ज्यादा बांटकर करते हैं.***

क्यों नहीं करना चाहिए? उन्होंने भी काम बांटा. मुझे दिया, औरों को दिया. उन्होंने भी काफी काम बांटकर किया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरद सक्सेना

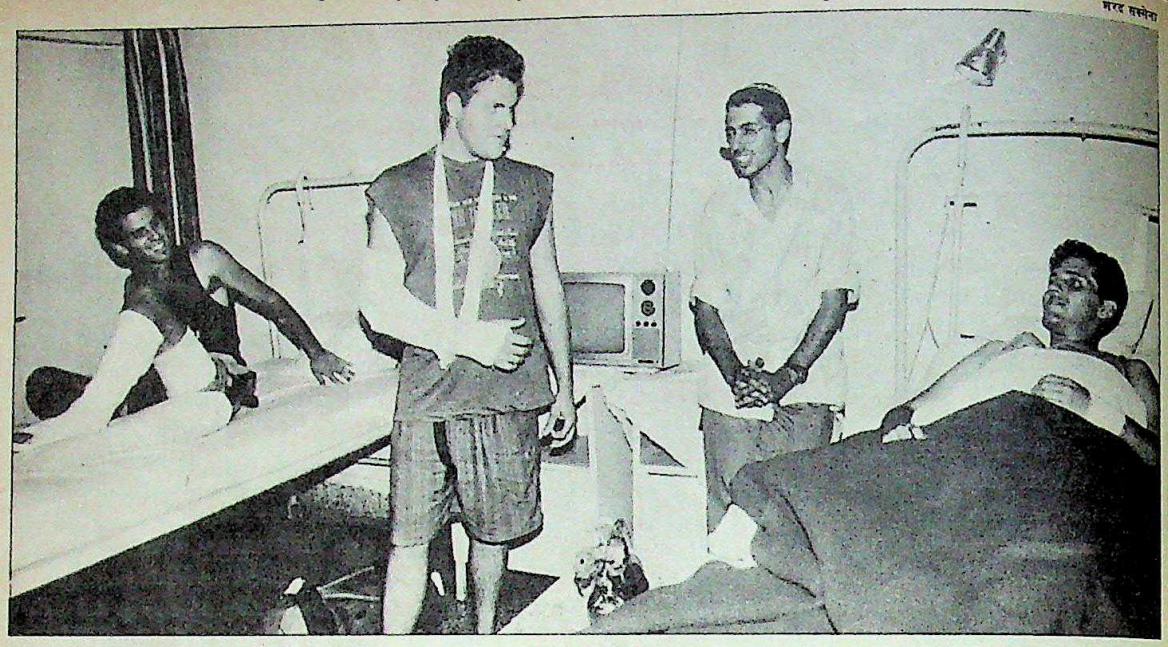

घायल इज्राएली पर्यटक और उग्रवादियों द्वारा रिहा यित्ज़की

कश्मीर

बंदूक का बंधक

वादी में उग्रवादियों की गतिविधियां फिर से उफान पर

बनिहाल सुरंग के परले सिरे से रोशनी के अभी भी कोई आसार नहीं हैं. कश्मीर में आने वाले पर्यटकों का प्रवाह लगभग सूख चुका है. और पिछले पखवाड़े की घटनाओं ने इसके पूरी तरह चुक जाने का संकेत भी दे दिया है.

घाटी से आने वाली खबरें दुखद थीं. इज्राएली पर्यटकों के एक दल और उग्रवादियों में एक अनोखी झड़प, फिर जेकेएलएफ द्वारा उनमें से एक का अपहरण और भारतीय तेल निगम के एक वरिष्ठ अधिकारी का भी अपहरण. इन सबसे राज्य के परेशानहाल प्रशासन की मुश्किलें और भी बढ़ गईं.

पर दो घटनाएं ऐसी हुई जिनकी कोई उम्मीद नहीं थी. जेकेएलएफ ने इज्राएली बंधक येर यित्ज़की को पकड़ने के एक हफ्ते के अंदर ही छोड़ दिया. और दो दिन बाद ही स्वीडन के दो इंजीनियर जॉन जॅनसन और जान ओल लोमैन 97 दिन तक उग्रवादियों के कब्जे में रहने के बाद निकल भागे. इतनी लंबी अवधि तक बंधक रहने वाले वे पहले लोग हैं.

दोनों घटनाओं में भारतीय अधिकारियों की भूमिका नगण्य-सी रही. यित्ज़की के मामले में उग्रवादियों ने भारत सरकार को दरकिनार कर दिया. पहले उन्होंने सीधे संयुक्त राष्ट्र संघ से बातचीत चलाने की कोशिश की. वह संभव नहीं हुआ तो अखबारवालों को बिचौलिया बना लिया. स्वीडिश नागरिकों के मामले में तो भारतीय अधिकारी कुछ नहीं कर सके. वे बस उग्रवादियों की हरकतों के अनुसार ही डोलते रहे. दरअसल, पिछले कुछ समय से सरकार और अपहर्ताओं के बीच कोई संपर्क ही नहीं रह गया था.

और जहां सरकार ने सक्रिय भूमिका निभाने की कोशिश की, जैसे इंडियन ऑयल के अधिकारी के. दुरैस्वामी के अपहरण के मामले में, वहां गड़बड़झाला ही हुआ. अपहरण करने वाली मुस्लिम जांबाज फोर्स से सरकार का संपर्क लगातार बना रहा लेकिन बंधकों के बदले उग्रवादियों को छोड़ने के बारे में कोई पक्की नीति न होने की कमी शिद्दत से महसूस की जाती रही.

जॅनसन और लोमैनः अप्रत्याशित

मेराजुद्दीन

अपनी मानवतावादी छवि प्रदर्शित करने के लिए जेकेएलएफ को यित्ज़की से अच्छा शिकार नहीं मिल सकता था. यित्ज़की को संयुक्त राष्ट्र अधिकारियों के हाथों सौंपने का जिम्मा जिन तीन पत्रकारों को दिया गया था, उनमें से एक के अनुसार, "बड़ी भावुकतापूर्ण विदाई हुई. यित्ज़की ने तो अपने अपहर्ताओं को गले भी लगाया और उन्होंने उसे जेकेएलएफ की दो कमीजें भी भेंट कीं." बाद में इस 22 वर्षीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...खाएली ने पत्रकारों को बताया, "मैं सच ...ता रहा हूं कि वे मुझसे काफी उदारता से ...ाए.... आप जानते हैं मौत को करीब ...देखने का और फिर यह जानने का कि ...ने आपका जीवन आपको सप्रेम लौटा ...है. मतलब क्या होता है."

...बंधक को छोड़ देने से जेकेएलएफ को ...हासिल तो हुआ लेकिन पाकिस्तानी ...र्थक गुट उससे कुछ और दूर हो गए. ...उमर मुजाहिदीन ने इसे जल्दबाजी में ...किया गया फैसला बताया. जबकि हिब्ज-...मुजाहिदीन, दुख्तराने मिल्लत, महाज-...स्लाम और पासदाराने-इंकिलाब-ए-...स्लामी (दरअसल पहले इसी गुट ने सात ...खाएली पर्यटकों का अपहरण किया था) ...संगठनों की प्रतिक्रिया तो और भी ...थी. उन्होंने आरोप लगाया कि सभी ...खाएली पर्यटक जासूस थे जो "हमारे ...आंदोलन को कमजोर करने में भारत की ...मदद करने" कश्मीर आए थे.

...पर 6 जुलाई को दो स्वीडिश बंधकों के ...नानी से भाग निकलने के कारण अपहर्ता ...बाज फोर्स घाटे में रही. जांबाज फोर्स ने ...जोड़ी का अपहरण कश्मीर के मुद्दे को ...राष्ट्रीय बनाने के मकसद से 31 मार्च ...किया था. लेकिन तीन महीने बीत जाने ...45 गुप्त ठिकाने बदलने के बाद यह ...निराश हो चला था.

...जांबाज फोर्स ने अपनी तरफ से भागने ...एक तरह से उनकी मदद ही की. जिस ...वे दोनों भागे, उस रात उग्रवादी ...क्षित रूप से अलग कमरे में सोए और ...कों के जूते भी उन्हीं के कमरे में छोड़ .... फिर, पहली मंजिल पर रखने के ...ए उन्हें निचली मंजिल पर ही रखा ...और उनके भाग निकलने के बाद उन्हें ...ने की कोशिश करने के बजाए जांबाज ...ने बयान जारी कर दिया कि दोनों ...कों को सुबह 5.30 बजे पुलवामा जिले में ...कर दिया गया. लेकिन दिलचस्प बात ...है कि स्वीडिश नागरिक अनंतनाग जिले ...विजबेहाड़ा कस्बे में मिले. जाहिर है कि ...बाज फोर्स के दावे को किसी ने भी ...ता से नहीं लिया.

...अब दिक्कत यह खड़ी हो गई है कि कोई ...पर्यटक कश्मीर की खूबसूरती और ...र्षण को गंभीरता से नहीं लेगा. ...कि सरकारी आदेशों के विपरीत कुछ ...घाटी में जाते रहेंगे लेकिन आगे ...वाले समय में ज्यादा पर्यटकों के वहां ...की कोई उम्मीद नहीं है. स्पष्ट है कि ...का भविष्य उग्रवादियों का बंधक ...गया है.

—**वाहेगुरु पाल सिंह सिद्धू** दिल्ली में,
साथ में **जफर मेराज** श्रीनगर में

धीरेंद्र ब्रह्मचारी

चर्चे कम नहीं

संस्थाओं पर छापे से कई घोटाले जाहिर

विवाद जैसे उनकी जिंदगी का अहम हिस्सा बन गया है और वे इससे बहुत परेशान नहीं होते. लेकिन पिछले पखवाड़े स्वामी धीरेंद्र ब्रह्मचारी जब एक बार फिर विवाद के केंद्र में आए तो उनके चेहरे की मुस्कान स्वाभाविक नहीं थी, आत्मविश्वास भी नदारद था.

संभव है इसकी वजह यह हो कि विवाद कुछ बेवक्त उठ गया था. पी.वी. नरसिंह राव सरकार के गठन के चंद रोज बाद ही सीमा शुल्क अधिकारियों ने इस विवादास्पद ब्रह्मचारी के पांच ठिकानों पर छापा मारा. इनमें कटरा स्थित शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र, मानतलाई स्थित अपर्णा आश्रम और शिव गन फैक्टरी (सभी जम्मू में) और नई दिल्ली के केंद्रीय योग अनुसंधान संस्थान शामिल हैं. छापे में कई अजीबोगरीब चीजें बरामद हुईं—मसलन अत्याधुनिक टेलीफोन, मानव मस्तिष्क का अध्ययन करने में सहायक मशीनें, संवेदनशील कैमरे, ईसीजी मशीनें और हार्मोन की जांच करने वाले यंत्र. ब्रह्मचारी का दावा है कि इन मशीनों का आयात योग अनुसंधान के लिए किया गया. लेकिन स्वास्थ्य मंत्रालय ने वित्त मंत्रालय को स्पष्ट रूप से लिख भेजा है कि उसने ऐसे यंत्रों के आयात की इजाजत कभी भी नहीं दी क्योंकि योग अनुसंधान कार्यों में ऐसे उपकरणों की जरूरत ही नहीं पड़ती.

चौंकाने वाली बात यह है कि ये छापे उस समय मारे गए जबकि ब्रह्मचारी के पुराने बंधु और इंका के तजुर्बेकार लोग सत्ता में वापस लौट आए हैं. इस पर ब्रह्मचारी की दलील यह है कि ये छापे उनके कट्टर प्रतिद्वंद्वी विवादास्पद धर्मगुरु चंद्रास्वामी के इशारे पर मारे गए हैं. ब्रह्मचारी ने 'इंडिया टुडे' को बताया, "यह कदम इसलिए उठाया गया है ताकि मैं फिर प्रभावशाली न बन सकूं क्योंकि मेरे पुराने मित्र ही अब सत्ता में हैं." लेकिन केंद्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क विभाग के प्रमुख बी.आर. रेड्डी इस तरह के आरोपों को गलत ठहराते हैं.

चंद्रास्वामी के नजदीकी लोग भी इन आरोपों को बिलकुल मनगढ़ंत बताते हैं. उनमें से एक के अनुसार, "धीरेंद्र ब्रह्मचारी सत्ता की दलाली में अब बिलकुल नाकारा हो चुके हैं. लिहाजा वर्तमान प्रधानमंत्री के करीबी दोस्त चंद्रास्वामी उन पर अपना वक्त क्यों बर्बाद करेंगे?"

भवान सिंह

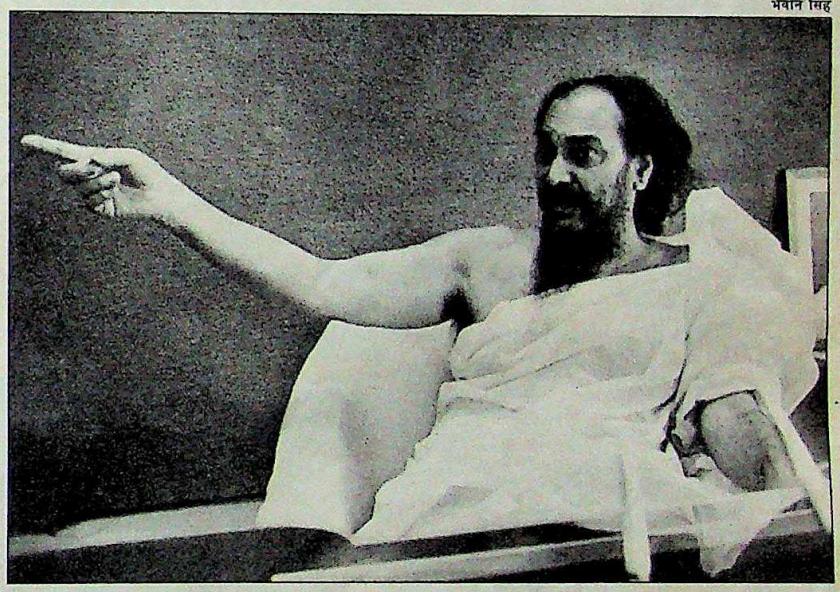

ब्रह्मचारी: अब श्रीहीन

वैसे इस बात में सचाई लगती है. पिछले कुछ वर्षों में ब्रह्मचारी नाटकीय रूप से काफी कुछ श्रीहीन हो चले हैं. पिछले सप्ताह उन्होंने सोनिया गांधी से मिलने और वापस अपनी साख कायम करने की भरसक कोशिश की. इसके अलावा उन्होंने अपने निकटतम लोगों के साथ बातचीत में यह कहना भी शुरू कर दिया है कि अगर उन पर दबाव बना रहा तो वे इंका के कई दिग्गज नेताओं पर पर्याप्त कीचड़ उछालने में कोई परहेज नहीं करेंगे. निश्चय ही ब्रह्मचारी प्रसंग का उपसंहार अभी दूर है.

—**अनिरुद्ध मित्र**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

बारूद के ढेर पर

भाजपाई मुख्यमंत्री स्थिति के मद्देनजर सावधान

अब सबकी निगाहें राज्य के भाजपाई मुख्यमंत्री कल्याण सिंह पर लगी हैं. और कल्याण सिंह नियंत्रित आक्रामकता की नीति पर चलकर यह जता रहे हैं कि उन्हें भी इसका एहसास है. भाजपा से जिस तेजी से हल्ला बोलने की उम्मीद थी वह नहीं हो रहा है. लगता है कि हिंदुत्व के रथ के चक्के जाम हैं.

ये तथ्य भी काबिले गौर हैं. उम्मीद के मुताबिक वे अपने 17 मंत्रियों, पार्टी विधायकों तथा सांसदों के साथ अयोध्या गए और बयान दिया, "नया मंदिर उसी जगह पर बनेगा." लेकिन पिछले अक्तूबर में अयोध्या में हुए नरसंहार की जांच के लिए न्यायिक आयोग बिठाने का फैसला करने में वे पिछड़ गए. फिर भी उन्होंने इस विवादास्पद दौरे में जो दो वादे किए, उन्हें पूरा कर दिया. राम जन्मभूमि पर सुरक्षा की सख्ती में 2 जुलाई से ढील कर दी गई और शिलान्यास स्थल पर बनी छतरी फिर से लगवा दी गई जिसे मुलायम सिंह यादव की सरकार ने हटवा दिया था. मगर सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि मुख्यमंत्री ने अपने प्रथम औपचारिक पत्रकार सम्मेलन में अपनी इन कार्रवाइयों का कोई जिक्र नहीं किया.

लेकिन बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी आशंकित है. इसके संयोजक जफरयाब जिलानी कहते हैं, "उन लोगों के बारे में तमाम आशंकाएं सच होने वाली हैं. मामला जब अदालत में है तो वे छतरी को फिर से कैसे लगवा सकते हैं?" जिलानी कहते हैं कि ऐसी कार्रवाइयों से मुसलमानों के मन में खौफ पैदा होगा.

मुसलमानों की आशंकाएं जायज भी हो सकती हैं. लखनऊ में पिछले एक पखवाड़े में 13 हत्याएं हो चुकी हैं. बुलंदशहर में दो मुसलमान युवकों की हत्याएं और सीतापुर में हिंसा से जाहिर है कि सांप्रदायिक तनाव कायम है. केंद्रीय गृह उपमंत्री रामलाल राही, जो सीतापुर के ही हैं, बताते हैं कि भाजपा विधायक नरेंद्र सिंह वर्मा के भाई बकहवां गांव में मुसलमानों की 30 झोंपड़ियां और दुकानें फूंकने में शामिल थे. राही इसे 'गंभीर मामला' बताते हैं. मगर वे चुस्त प्रशासनिक कार्रवाई से संतुष्ट हैं.

मुख्यमंत्री भी शायद स्थिति बिगड़ने से पहले तैयार हो लेना चाहते हैं. उन्होंने 77 आईपीएस अधिकारियों के तबादले किए हैं. अब 63 में से 31 जिलों को नए पुलिस प्रमुख मिल गए हैं. इसके अलावा 56 आईएएस अधिकारियों के तबादले किए गए हैं जिनमें 32 जिला मजिस्ट्रेट शामिल हैं. मुलायम यादव ने जिन अधिकारियों को दरकिनार किया था वे वापस आ गए हैं.

जैसे संवेदनशील जिलों में नए पुलिस प्रमुख लाए गए हैं, जो कार्यकुशल माने जाते हैं. मुख्यमंत्री कल्याण सिंह कहते हैं, "मैंने बदले की भावना से काम नहीं किया है क्योंकि राज्य में नेताओं की करनी के लिए अधिकारियों को दोष नहीं दिया जा सकता. मैं दंगामुक्त राज्य चाहता हूं."

मुलायम सिंह यादव ने उन्हें कार सेवा के लिए एक महीने से ज्यादा 'रासुका' के तहत बंद रखा था. इसलिए अगर कल्याण सिंह बदले की कार्रवाई करें तो किसी को

अयोध्या में भाजपा विधायकों और अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी के साथ मुख्यमंत्री कल्याण सिंह: शक्ति प्रदर्शन

आर के. गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्चर्य न होगा. मगर मुख्यमंत्री आशंकाओं से बचने के लिए कोई भी जोखिम हड़बड़ी में नहीं करना चाहते. अपने मंत्रियों में विभागों का बंटवारा करने में उन्होंने तीन दिन लगाए. मंत्रिमंडल की पहली बैठक भी जाकर 2 जुलाई को हुई. उस बैठक में जो फैसले किए गए वे भी लोकलुभावन ही थे—स्वतंत्रता सेनानियों के भत्तों पर लगी रोक में छूट देना, राज्य के 5 लाख कर्मचारियों को अतिरिक्त महंगाई भत्ता और राज्य के गैर- योजना खर्च में 10 प्रतिशत कटौती की संभावना की जांच के लिए दल का गठन.

लेकिन लोग इस बात की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं कि कल्याण सिंह भाजपा और विहिप के बड़े नेताओं की गतिविधियों से किस तरह निबटते हैं. इन नेताओं की कुछ गतिविधियां सचमुच आपत्तिजनक रही हैं यहां तक कि भाजपा नेता अटल बिहारी वाजपेयी ने मुख्यमंत्री के अयोध्या दौरे को बेकार का नाटक बताया और निंदा की.

कल्याण सिंह की दूसरी बैठकें फलदायी नहीं हैं. सत्ता के पहले पखवाड़े में उन्होंने भाजपा अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी के साथ चार और अशोक सिंघल के नेतृत्व वाले विहिप प्रतिनिधिमंडल के साथ एक बैठक की. इन गुपचुप वार्ताओं के ब्यौरे तो उपलब्ध नहीं हैं मगर जाहिर है कि इनमें राम जन्मभूमि पर प्रमुखता से चर्चा हुई होगी. कल्याण सिंह ने घोषणा की है कि और वार्ताएं और होंगी. लेकिन मुसलमान नेता इससे उत्साहित नहीं हैं. जिलानी कहते हैं, "जब वे लोग अदालत की बात मानने को तैयार नहीं हैं और विवादास्पद जगह पर मंदिर बनाने पर आमादा हैं तो बात करने का क्या मतलब है?" जनता दल के महासचिव डी.पी. बोरा कहते हैं, "पहले उन्हें साफ करना होगा कि वे इस मामले पर पुनर्विचार करने को तैयार हैं तभी वार्ताओं से कुछ बात बनेगी."

भगवा रंग में ओतप्रोत युवा उत्साहियों को काबू में रखना भी कल्याण सिंह के लिए मुश्किल काम होगा. बुलंदशहर और सीतापुर की घटनाएं इन उत्साहियों की सक्रियताओं का अंदाज देती हैं. नेतृत्वविहीन होकर ये और भी खतरनाक हो सकते हैं. इसके साथ ही अगर राजनैतिक प्रतिद्वंद्विता का तत्व जुड़ जाए, जैसा कि लखनऊ के एक मंदिर के पुजारी की हत्या में शिवसेना विधायक की गिरफ्तारी से उजागर है, तो बारूद के फटने के लिए बस चिनगारी की ही कमी रह जाती है. इसलिए कल्याण सिंह को राजनैतिक और सांप्रदायिक दोनों तरह की बारूदी सुरंगों पर से गुजरने का करतब कर दिखाना है.

—दिलीप अवस्थी

हरियाणा

तेज कदम

बेहतर प्रशासन देने के प्रयास

मुख्यमंत्री भजनलाल तेज-तेज चल रहे हैं. उन्होंने राज्य में परिवर्तन लाने के लिए तीन महीने का समय चाहा है. पर यह काम आसान नहीं होगा. राज्य की आर्थिक स्थिति तो डांवाडोल है ही, साथ में प्रदेश इंका अध्यक्ष और राजस्व-मंत्री बीरेंद्र सिंह कुर्सी की दौड़ में मात खाने से असंतुष्ट हैं.

तीसरी बार मुख्यमंत्री बने भजनलाल को इस दफा पूर्ण बहुमत मिला है. उन्होंने नौकरशाही में फेरबदल किया है और पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला की डिज्नीलैंड परियोजना को रद्द कर दिया है. साथ ही वे प्रतिदिन एक दर्जन से भी अधिक बैठकें कर रहे हैं.

इस बार जोर मानवीय और सौम्य प्रशासन पर है. मुख्यमंत्री ने 'इंडिया टुडे' को बताया, "हम अमन के लिए प्रतिबद्ध हैं. गुंडे किसी भी दुकान में जाकर सौदा उठाकर दुकानदार से कहते रहे हैं कि इसे ताऊ के खाते में लिख लो. ऐसे तत्वों को दुरुस्त किया जाएगा." सभी चुनावी वादों को पूरा करने की समय सीमा भी तय है. इनमें पिछले सात वर्षों के बकाया ब्याज की माफी भी शामिल है जो सहकारिता ऋणों पर बनताहै. साथ ही पेंशन के लिए उम्र सीमा घटाने पर भी काम किया जाना है.

भजनलाल संभवतः इस बात से अवगत हैं कि देवीलाल और बंसीलाल उनके किसी ऐसे गलत कदम का इंतजार कर रहे हैं जो उनको मिले ग्रामीण समर्थन को हिला सके. इसलिए भजनलाल ने एहतियाती उपाय भी किए हैं—26 वरिष्ठ आईएएस और आईपीएस अधिकारियों का तबादला कर दिया गया है और भजनलाल के पूर्व मुख्य सचिव बी.एस. ओझा को मुख्य सचिव बनाया गया है. कल्याण रुद्र को खुफिया ब्यूरो से वापस लाकर पुलिस महानिरीक्षक बनाया गया है. 13 उपायुक्तों और जिला स्तर के 16 पुलिस प्रमुखों की भी अदलाबदली की गई है. इस फेरबदल की यह कहकर तीखी आलोचना हुई है कि भजनलाल ने जाट अधिकारियों को नजरअंदाज किया है.

लेकिन सवाल यह है कि भजनलाल अपने अधिकारों का इस्तेमाल करके ताऊ के लोगों की अनियमितताओं की जांच कराएंगे? इस मसले पर भजनलाल फूंक-फूंककर कदम रख रहे हैं. उनका कहना है कि किसी को भी अकारण परेशान नहीं किया जाएगा. उनका यह भी कहना है कि अन्य पिछड़ी जातियों के लिए गठित गुरनाम सिंह आयोग की रिपोर्ट की भी समीक्षा करके 'आर्थिक दृष्टि से पिछड़ों' का पता लगाया जाएगा. लेकिन भजनलाल बोतल के जिन्न से कोई खिलवाड़ करने की इच्छा नहीं रखते.

और, सबसे ज्यादा अहम सवाल तो यह है कि भजनलाल केंद्र से कितनी आर्थिक मदद जुटा पाते हैं. घाटे को पूरा करने के लिए यह मदद जरूरी है. उनके सामने उपाय करों में बढ़ोतरी का ही है जो उनकी लोकप्रियता को घटाएगा.

बिजली संकट भी सिर पर आ धमका है. जाहिर है कि राज्य की राजनैतिक रस्साकशी में जीत के लिए भजनलाल को काफी मेहनत करनी होगी. —कंवर संधू

प्रशांत पजियार

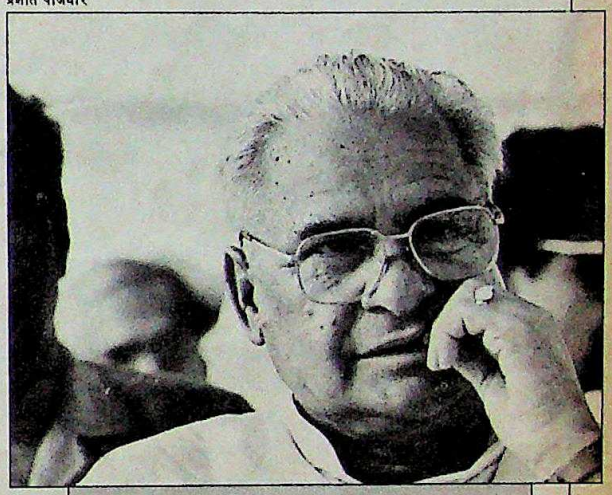

भजनलालः अपनी बारी

"हम अमन के लिए प्रतिबद्ध हैं. मेरे पूर्ववर्ती सत्ताधारी लोग अपने परिवार की ही चिंता में व्यस्त थे"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

खजाना खाली

लेकिन लालू एकदम निश्चिंत

अभी हाल तक बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव पर शुतुरमुर्ग जैसा आचरण करने का आरोप गलत बैठता था. लेकिन कंगाली के कगार पर खड़े राज्य पर आसन्न आर्थिक संकट के समय लालू ठीक वैसा ही व्यवहार करने लगे हैं. राज्य सरकार पहले ही भारतीय रिजर्व बैंक से 52 करोड़ रु. लेकर ओवरड्राफ्ट की अपनी सीमा से 10 गुना अधिक रकम खर्च कर चुकी है. और अब राज्य के 10 लाख सरकारी कर्मचारियों के वेतन के लिए भी धन जुटाना मुश्किल पड़ रहा है. मगर लालू राज्य की आर्थिक बदहाली के लिए केंद्र को ही दोषी बताने लगे हैं.

वैसे, यह स्थिति सस्ती लोकप्रियता हासिल करने की लालू की कोशिशों का ही नतीजा है. राज्य सरकार ने जब रिजर्व बैंक का दरवाजा खटखटाया तो उससे कहा गया कि वह अपनी मुट्ठी बंद ही रखे तो अच्छा होगा. बिहार के अपने संसाधन भी नाम मात्र के बचे हैं. पिछले वर्ष सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया कि सरकार खनिज संपदा से मिलने वाली रॉयल्टी पर उपकर वसूल नहीं कर सकती. इससे सरकारी खजाने में जो थोड़ी-बहुत रकम थी वह भी चुक गई.

राज्य आज आर्थिक संकट के भंवर में जा पड़ा है तो इसके लिए मुख्यमंत्री भी काफी हद तक जिम्मेदार हैं. पिछले अक्तूबर में उन्होंने मंत्रिमंडल का विस्तार कर उसे 72 सदस्यों का विशाल आकार दे डाला. नतीजतन, राज्य को हर महीने 5 करोड़ रु. का अतिरिक्त बोझ सहना पड़ा. विधायकों को मिलने वाले भत्तों तथा अन्य सुविधाओं में भी बढ़ोतरी कर दी गई. और फिर लालू के 'सामाजिक न्याय और कल्याण' के कार्यक्रमों के तहत वृद्धावस्था पेंशन को भी 30 रु. से बढ़ाकर 100 रु. प्रति महीना कर दिया गया. कृषि ऋण भी माफ कर दिए गए. इन फैसलों से राज्य के बजट पर 530 करोड़ रुपए का अतिरिक्त वजन पड़ गया.

यही नहीं, लालू सरकार ने ताड़ी पर लगने वाला उत्पाद शुल्क भी हटा दिया और गरीबों को तालाबों से मछली पकड़ने की छूट देने के साथ-साथ तेंदु पत्तों पर लगने वाले तमाम करों को भी समाप्त कर देने की घोषणा कर डाली.

राज्य में आर्थिक स्थिति को लेकर चिंता का माहौल है. कई मंत्री गैर-योजना खर्च में कटौती पर बल देने लगे हैं. राज्य के कर्मचारी किसी तरह अपने आधे वेतन या वह भी नहीं मिलने के त्रास से जूझते रहे. विश्वविद्यालयों के कोष भी खाली थे. नतीजतन कक्षाएं रोक दी गईं.

सरकारी कर्मचारियों के भत्तों को लेकर इतना हो-हल्ला हुआ कि सरकार ने जून के उनके वेतन के साथ मंहगाई भत्ते की 11 करोड़ रु. की राशि देना स्वीकार कर लिया. वित्त आयुक्त सी.आर. वेंकटरामन के अनुसार पांच महीनों के बकाया महंगाई भत्तों को किस्तवार दिया जाएगा. जून महीने का वेतन देने के लिए सरकार को सभी तरह के विकास कार्यों को ठप करना पड़ा है.

अब सरकार ने नकदी जुटाने की 60 सूत्री योजना बनाई है. इसमें सरकारी जमीन को पट्टे पर देने या नीलामी भी शामिल है. उत्पाद और वाहन शुल्क में परिवर्तन, रोजगार उपकर, लाइसेंस शुल्क में बढ़ोतरी और दूसरे कई करों के पुनर्निर्धारण से आय बढ़ाने की कोशिश होगी. 144 करोड़ रु. के विकास बांड जारी करना और औद्योगिक इकाइयों, ऊर्जा क्षेत्र, चीनी मिलों और बस मार्गों के निजीकरण की योजना भी शामिल है.

लालू को यकीन है कि सभी विकास परियोजनाओं पर रोक लगाने और राजस्व उगाही के उपायों से इतनी रकम तो जुट ही जाएगी कि गाड़ी पटरी पर आ सके लेकिन करदाताओं से धन की उगाही में वक्त तो लगेगा ही. इस बीच, जुलाई के वेतन के भुगतान की समस्या सिर पर है. रकम है नहीं, और बहुत संभव है कि राज्य के कर्मचारी सरकार की इस दूसरी चूक का जवाब हड़ताल से दें. खतरे की इन तमाम घंटियों की आवाज से सबसे बेखबर व्यक्ति लालू ही लगते हैं. हो सकता है, इन सब की उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ जाए.

—फरजंद अहमद

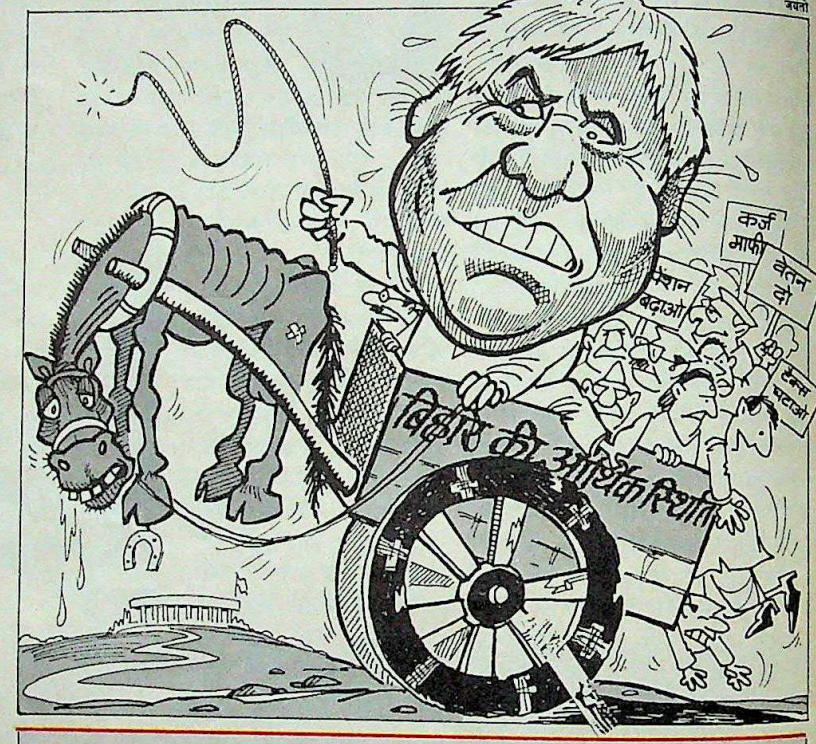

जयंतो

राज्य कंगाली के कगार पर है, सरकार के पास कर्मचारियों के वेतन देने का पैसा भी नहीं है. खतरे की घंटियां बज रही हैं मगर इन सबसे बेखबर मुख्यमंत्री ही दिखते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

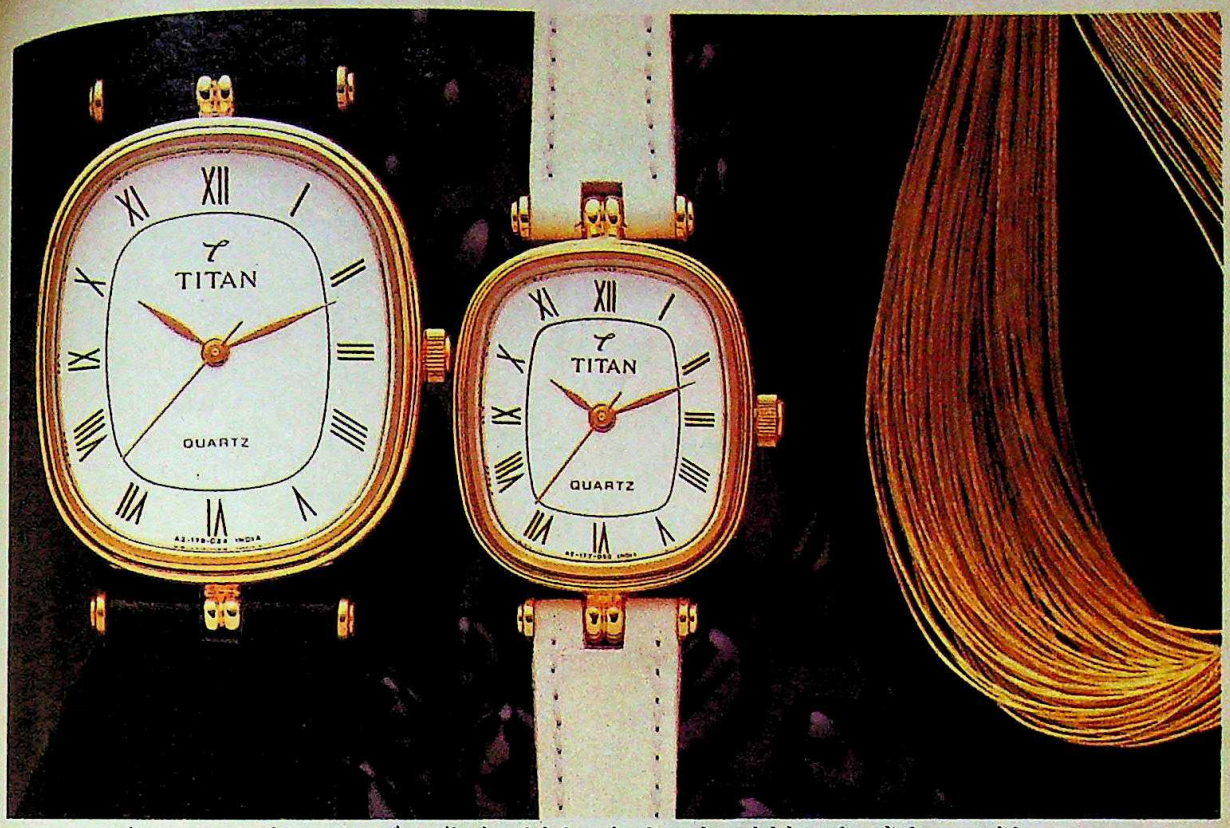

घड़ियों का अलग अन्दाज़. रोमन नम्बर, १८ और २३ कैरेट गोल्ड की दोहरी परत से सजीं. शाम के पहनावे से मेल खातीं. पुरुषों की Rs. 847* लेडीज़ Rs. 799*

टाइटन की क्लासीक. बारीक पसन्द की पहचान.

हीरे और मोती का फ़र्क तो सबको नज़र आता है. पर हीरों में कोहिनूर की पहचान के लिए चाहिए नज़र की बारीकी.

वो नज़र जो स्वयं टिक जाती है टाइटन की क्लासीक पर. घड़ियों का एक ख़ज़ाना जिसमें १८ और २३ कैरेट गोल्ड प्लेटिंग की दोहरी परत के रूप को उभारता है शानदार लैदर स्ट्रैप. और आपको मिलती हैं शानदार घड़ियाँ जिनमें झलकता है पुराना राजसी अन्दाज़ या आधुनिक शान-शौकत.

टाइटन की क्लासीक एक पसन्द है ४०० से ज़्यादा अन्तर्राष्ट्रीय क्वॉर्ट्ज़ घड़ियों के खज़ाने से. हर घड़ी के साथ आपको मिलेगा टाटा के नाम का भरोसा और २ साल की गारण्टी.

टाइटन की क्लासीक. फ़र्क शान का. बारीक पहचान का.

Classique

Rs. 847* Rs. 823* Rs. 823* Rs. 799* Rs. 775*

TITAN
QUARTZ

The Changing Face Of Time

Ogilvy & Mather 3244 HIN

* दिल्ली में लागू सभी कर इस क़ीमत में शामिल हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले कुछ दि

ऑडिसी. विश्

सामान व्यवस्थि

ज़िप वाला प

बेहतरीन इलेक्

कोटेड फ्रेम दो

बताइए ऑडि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफ़र सहयोगी

एक और लंबे सफ़र की तैयारी. घर से दूर.ऑफ़िसों, होटलों और फ़्लाइट्स पर.

अगले कुछ दिन सूटकेस के सहारे ही गुज़ारने का इरादा और पक्का इंतज़ाम होना ज़रूरी है. अब आपकी शान के अनुरूप ही वी.आइ.पी. लाए हैं -

ऑडिसी. विश्व स्तर का ए बी एस लगेज. ऑडिसी खोल कर देखिएगा,आप पायेंगे अंदर की लाइनिंग में साटिन नहीं बल्कि है सौम्य सुएड.

सामान व्यवस्थित रखने का पूरा इंतज़ाम - जैसे इसका डिवाइडर, ताकि ज़रूरी कागज़ात और कपड़े अलग-अलग रखे जा सकें. टॉयलेटरीज़ के लिए

ज़िप वाला पाउच, क्रोमियम की परत वाली रॉड जहां टाइयाँ बिना सिलवटों के रखी जा सकें.

बेहतरीन इलेस्टिक पट्टी, जो चीज़ों को जगह पर बरक़रार रखे. दिखने में चमड़े जैसा,और ख़ूबसूरत पाउडर

कोटेड फ्रेम दो ख़ास खूबियों के साथ - कॉम्बिनेशन लॉक और आकर्षक नर्म हैंडल. अब आप ही

बताइए ऑडिसी को आप क्या कहेंगे-एक और सूटकेस या आपका अपना सफ़र सहयोगी?

WORLD CLASS
ODYSSEY

वी.आइ.पी. की पेशकश

तरक़्क़ी, शान के साथ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे सारे डाई एक तरफ, गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई दूसरी तरफ...

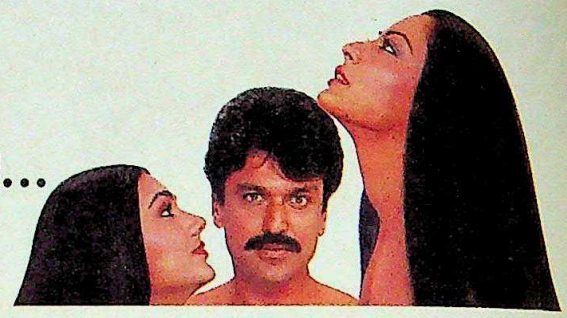

फिर भी, गोदरेज हेयर डाई इस्तेमाल करने वाले ज़्यादा ही होंगे!

इन ३ ख़ास कारणों से:

१ गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई बालों को क़ुदरती रंग और छवि देता है. इसमें कंडीशनर भी है जो बालों को नर्म-मुलायम बनाए रखता है. **बाल इतने स्वाभाविक काले हो जाते हैं कि कोई जान ही न सके, जब तक आप खुद न बताएँ.**

२ गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई इस्तेमाल में आसान और सुविधाजनक है जबकि अन्य हेयर डाई में यह विशेषता नहीं.

जी हां, आसान इतना बालों में शैम्पू करने जितना.

३ आप गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई की क्वालिटी पर भरोसा कर सकते हैं. क्योंकि यह खास तौर से आपके बालों के लिए बनाया गया है. **'क्वॉलिटी जिसपर आप भरोसा करें.**

यही गोदरेज का वादा है.

Godrej शैम्पू-आधारित हेयर डाई

दो रंगों में उपलब्ध: कुदरती काला और गहरा भूरा.

CLARION/BGS/130/275 HIN R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात

चतुर चाल

भाजपा ने सोलंकी को फंसाया

यह भारतीय जनता पार्टी की चतुराई भरी चाल थी. उसने खेड़ा जिले में भाद्रां कस्बे के लोगों को भड़काकर राज्य सरकार को केंद्रीय विदेशमंत्री माधव सिंह सोलंकी के बेटे भरत सोलंकी की गिरफ्तारी के लिए मजबूर कर दिया. उन पर मतदान से एक दिन पहले 14 जून को इस कस्बे में दंगे का षड्यंत्र रचने का आरोप है. उस दिन गोलियां चलीं जिसमें भाजपा का एक कार्यकर्ता घायल हो गया, जिसके लिए

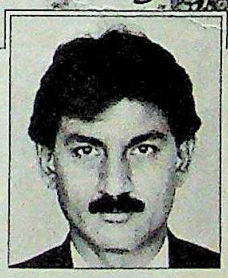

भाद्रां में विरोध प्रदर्शन; और भरत सोलंकी

पार्टी ने भारत सोलंकी को जिम्मेदार ठहराया.

इस चाल का मकसद न सिर्फ सोलंकी को उलझन में डालना था बल्कि राज्य की राजनीति में परंपरागत रूप से प्रतिद्वंद्वी रहे मौजूदा मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल और इंका नेता सोलंकी के बीच खाई पैदा करना भी था.

सोलंकी चिमनभाई के जनता दल (गुजरात) के साथ अपनी पार्टी के गठबंधन को लेकर कभी खुश नहीं थे. हाल के लोकसभा चुनाव में इस गठबंधन के घटिया प्रदर्शन के बाद सोलंकी चाहते थे कि इंका जनता दल (गुजरात) सरकार से समर्थन वापस ले ले. उधर, भाजपा भी दोनों पार्टियों की खींचतान का भरपूर फायदा उठाना चाहती थी.

और, भारत वाले मामले में वह ऐसा करने में लगभग सफल हुई. चिमनभाई के ही करीबी, गृह राज्यमंत्री प्रबोधकांत पांड्या ने तो यह गांठ डाल भी दी जब उन्होंने पहले यह दावा किया कि राज्य सरकार ने भारत की गिरफ्तारी के आदेश दिए हैं. इसे चुनाव के बाद खिसकते जा रहे इंका के समर्थन को बनाए रखने के लिए दबाव माना गया. लेकिन इंका ने जब पांड्या पर भाजपा के हाथों में खेलने का आरोप लगाया तो उन्होंने कदम खींच लिए और यह माना कि सरकार ने गिरफ्तारी के आदेश नहीं दिए हैं.

इस बीच, सिविल इंजीनियर से उद्योगपति बने भारत ने कहा, "यह मेरे पिता को बदनाम करने की सोची-समझी साजिश है." उन्होंने किसी प्रकार की गोली चलने के आरोप से हालांकि इनकार किया पर भाजपा का दावा है कि इंका कार्यकर्ता स्टेनगनें उठाए हुए थे. इंका भाजपा के इस आरोप को सोलंकी के चरित्रहनन की कोशिश मानती है क्योंकि उसके अनुसार भाजपा समझ चुकी थी कि वह आणंद संसदीय सीट पर सोलंकी के ससुर ईश्वरभाई चावडा से भारी नहीं पड़ सकती. इस चुनाव में भारत अपने नाना के प्रचार में जुटे हुए थे.

भाजपा इस घटना पर एकमात्र उद्देश्य लेकर भिड़ गई. पहले उसने एक तथ्यखोजी दल भाद्रां भेजा और फिर पार्टी कार्यकर्ताओं की भूख हड़तालें आयोजित कीं. पार्टी के एक बड़े नेता नलिन भट्ट ने कहा, "दोषियों को सिर्फ इसलिए नहीं बख्शा जा सकता कि वे बड़े लोग हैं." इसके फौरन बाद एक स्थानीय संगठन लोक संघर्ष समिति ने आंदोलन की बागडोर थाम ली. कस्बे में करीब 10 दिन तक बंद आयोजित हुए.

भाद्रां में विरोध प्रदर्शन हो रहे थे तो स्थानीय पुलिस सो रही थी. भारत दिल्ली में अपने मंत्री पिता की छत्रछाया में चले आए. आंदोलन तभी ठंडा पड़ा जब भारत और उनके दो साथियों ने पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया.

लेकिन इस सारे विवाद में भारत से ज्यादा सोलंकी फंसे दिखते हैं और इससे पिंड छुड़ाना उनके लिए आसान नहीं. नए विदेशमंत्री के लिए यह सचमुच गैर-कूटनैतिक शुरुआत मानी जा सकती है.

—उदय माहूरकर

सीबीआई

बड़ा शिकार

डीआईजी घूस लेते गिरफ्तार

केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) के डीआईजी और प्रसिद्ध पुलिस अधिकारी ओ.पी. शर्मा को निलंबित कर दिया गया. भ्रष्टाचार के आरोपों पर नई सरकार द्वारा 24 जून को निलंबित किए जाने वाले वे पहले वरिष्ठ अधिकारी हैं. इतने बड़े अधिकारी को निलंबित करने के आदेशों को खुद प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव ने स्वीकृति प्रदान की.

ओ.पी. शर्मा को उनके ही विभाग के लोगों ने 18 जून को नई दिल्ली स्थित अपने निवास स्थान पर एस.के. जैन नामक एक दलाल से 10 लाख रु. की घूस लेते हुए सचमुच रंगे हाथों गिरफ्तार किया. शर्मा ने घूस के बदले 6 करोड़ रु. से भी अधिक की वह रकम छोड़ देने का वादा किया था जो सीबीआई ने हवाला का धंधा करने वाले जैन सहित दूसरे लोगों से जब्त की थी. जैन का कश्मीर के उग्रवादी संगठन जेकेएलएफ से भी संबंध रहा है. इस काम के एवज में शर्मा ने 50 लाख रु. की घूस मांगी थी, और प्राथमिकी रिपोर्ट के अनुसार इसमें से 36 लाख रु. उन्हें दिए जा चुके थे.

'इंडिया टुडे' ने जब दिल्ली दरियाजंग के संजीवन नर्सिंग होम में उच्च रक्तचाप और अवसाद जैसी तकलीफों के लिए भर्ती हुए शर्मा से संपर्क करना चाहा तो उन्होंने "जांच पूरी होने तक कुछ भी कहने" से इनकार कर दिया.

लेकिन छापे के एक दिन बाद ही शर्मा ने सीबीआई निदेशक विजय करण से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपर्क साधा. शर्मा बहुत जल्द ही महानिरीक्षक (आईजी) के रूप में तरक्की पाने वाले थे. लेकिन करण से संपर्क का कोई लाभ नहीं हुआ क्योंकि मामले के सारे तथ्य शर्मा के खिलाफ हैं. यह मामला मई महीने के आरंभ से ही तूल पकड़ चुका था. तब विचाराधीन कैदी एम.एल. कौल ने स्वीकार कर लिया था कि वह शर्मा के लिए दलाल का काम करता है.

यह घटना झकझोर देने वाली थी क्योंकि शर्मा को 1990 के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक मिल चुका है और उन्होंने सैयद मोदी हत्याकांड और मुफ्ती मुहम्मद सईद की बेटी रुबैया सईद के अपहरण जैसे कई सनसनीखेज मामलों पर काम किया है. सीबीआई ने शर्मा पर नजर रखनी शुरू कर दी और फिर यह तथ्य खुला कि हवाला व्यापारियों से जब्त की गई 6 करोड़ रु. की रकम का कोई ब्यौरा नहीं रखा गया है.

शर्मा से स्पष्टीकरण मांगने की जगह सीबीआई ने उनका फोन खुफिया तरीके से सुनना शुरू कर दिया. कौल का आरोप सही निकला. और 18 जून को, जब कौल घूस की अगली किस्त शर्मा को पहुंचाने के लिए जाने वाले थे, जाल बिछा दिया गया. एसपी सत्यपाल सिंह के नेतृत्व में सीबीआई का दल कौल को लेकर शर्मा के घर तक गया.

राष्ट्रपति से पदक प्राप्त शर्मा के लिए सारे तथ्य उलटे पड़े. उन्हें रंगे हाथों गिरफ्तार होना पड़ा

शर्मा के घर में 10 लाख रु. के नोटों से भरा ब्रीफकेस थमाने के तुरंत बाद कौल ने बाहर मौजूद सीबीआई के दल को इशारा कर दिया. वहां मुस्तैद इस दल के हरकत में आने से पहले शर्मा तुरंत बालकनी की तरफ भागे और उन्होंने ब्रीफकेस फेंक देने की कोशिश की. उन्हें पता होना चाहिए था कि उस बैग और उसमें रखे रुपयों पर उनकी उंगलियों के निशान के लिए एक विशेष पाउडर का छिड़काव कर दिया गया था. इस पाउडर के अंश उनके हाथों में लग चुके थे और ब्रीफकेस फेंककर भी वे रंगे हाथ पकड़े जाने से बच नहीं सकते थे.

जब कोई रास्ता न दिखा तो हताशा में शर्मा ने सरकारी पिस्तौल निकालकर धमकी दी कि वे गोली चला देंगे क्योंकि सीबीआई अधिकारियों के साथ जेकेएलएफ के कुछ उग्रवादी भी मौजूद हैं. संभवतः उनका संकेत जैन की ओर था जो वहां गवाह की हैसियत से उपस्थित था. लेकिन यह चाल बेकार साबित हुई. वह मुस्तैद सीबीआई का दल इन सारी आशंकाओं से निबटने के लिए पहले ही तैयार था. छापामार दल ने घर में घुसकर उनसे अपना हाथ पानी से भरे एक बरतन में रखने को कहा ताकि उनके हाथ में लगा पाउडर लाल रंग छोड़ने का कमाल दिखा सके. इस तरह शर्मा 'रंगे हाथों' पकड़े गए. आगे और जांच के बाद उनके खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया जाएगा. अदालत का फैसला चाहे जो हो पर लगता है कि एक शानदार केरियर का अंत तो हो ही गया है.

—अनिरुद्ध मित्र

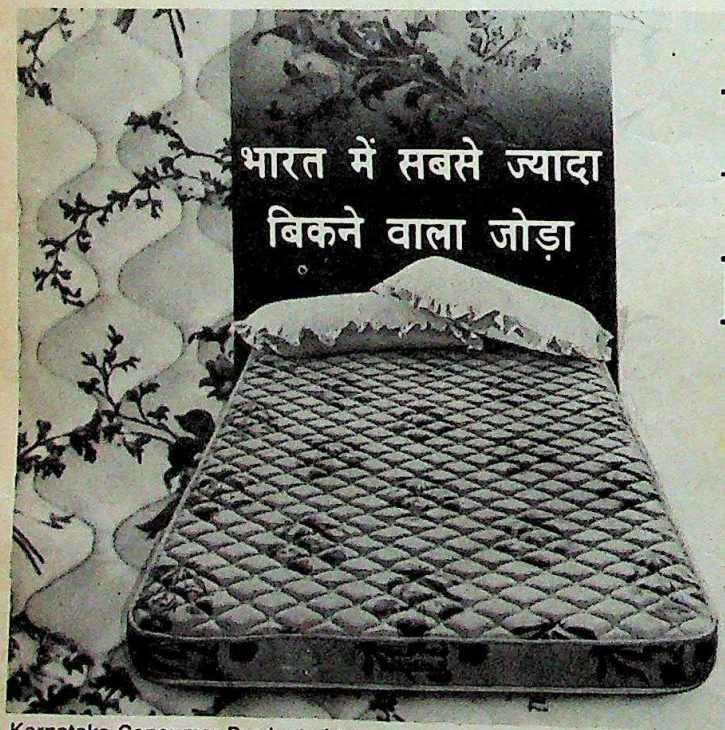

Kurl-on®
गद्दे
Kurlopillo®
तकिये

रात दर रात। सुख - चैन की नींद की गारेंटी हर कर्ल-आन गद्दें और कर्लोपिल्लो तकिये के साथ। तभी तो यह भारत का सर्वाधिक बिकने वाला जोड़ा बन गया है।

असली कर्ल-आन/ कर्लोपिल्लो खरीदने के लिए कृपया अधिकृत डीलर सेही खरीदें।

Karnataka Consumer Products Ltd., Marketing Division: III Floor, North Block, Manipal Centre, Dickenson Road, BANGALORE - 560 04
Ph: 572264.

Offices & Showrooms: **NEW DELHI:** No. 3/3, Desh Bandhu Gupta Road, Pahar Ganj, Ph: 772019; 1764, Partap Street, Chuna Mandi, Pahar Ganj, Ph: 732133; **KANPUR:** 109/375, R.K. Nagar, G.T. Road, Ph: 247211; **FARIDABAD:** Sector 16A, No. 375; **BHOPAL:** 26, Mangal Sadan, Anekant Nagar, Near Lily Talkies, Jahangirabad, Ph: 67874; **RAIPUR:** 88, New Textile Market, Panderi, Ph: 26939; **PATNA:** Road No. 6A, Dayal Mansion, Rajendra Nagar, Near Rajendra Nagar Hospital, Ph: 57911; **CHANDIGARH:** (C&F) M/s. Garg Enterprises, SCO, 3028, Sector 22-D, Ph: 29203, 44424 (PP).

MASS/KCPL/'91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

जान सांसत में

शेखावत के लिए परीक्षा की घड़ी

धुरंधर नेता और राजस्थान के मुख्यमंत्री भैरों सिंह शेखावत को मौजूदा संकट से पार पाने के लिए हर तरह की चालें चलनी पड़ेंगी. पिछले साल नवंबर में जबसे जनता दल उनकी साझा सरकार से अलग हुआ है, भाजपा सरकार तलवार की धार पर है.

200 सदस्यों वाले सदन में महज 85 सदस्य लेकर भाजपा अपनी सरकार बचाए रखने में सफल रही तो इसलिए कि शेखावत ने 16 नवंबर को दिग्विजय सिंह की अगुआई वाले जनता दल के 26 सदस्यों का समर्थन हासिल कर लिया. लेकिन लोकसभा चुनावों में इंका के आश्चर्यजनक प्रदर्शन से उनका आसन खतरे में पड़ गया है. अपनी सफलता के उत्साह में इंका ने मुख्यमंत्री से तत्काल इस्तीफे की मांग की है.

लेकिन शेखावत इसे दरकिनार करने को तैयार हैं. इंका की मांग हिकारत से ठुकरा दी गई है. शेखावत कहते हैं, "चुनाव हुए तो हम पूर्ण बहुमत पा लेंगे."

भैरों सिंह

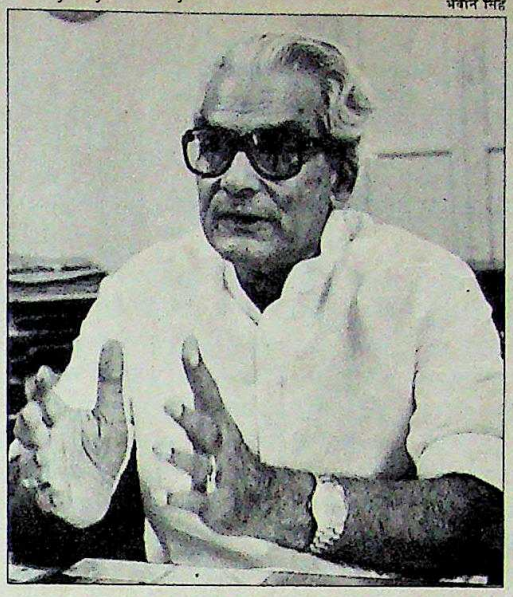

शेखावतः नाजुक डोर

भाजपा नेताओं का कहना है कि 12 सीटें उसकी अपनी झोली में होने से कुल 25 लोकसभा सीटों में इंका की संख्या 13 होना कोई शेखी वाली बात नहीं है.

पर शेखावत का भाग्य खुद अपने ठौर-ठिकाने के प्रति आश्वस्त न होने वाले जद (दिग्विजय) के हाथों में है. यह गुट भी अपना ठिकाना ढूंढ़ रहा है. अगर वह सरकार में बना रहा तो निश्चय ही अधिक मंत्री पदों के रूप में इसकी कीमत मांगेगा. शेखावत सरकार को गिराने के लिए वह इंका का साथ भी दे सकता है लेकिन इससे उसे कोई लाभ मिलने की उम्मीद नहीं है.

जद (दिग्विजय) मूल पार्टी में लौटने के प्रति भी उत्सुक नहीं. जद की राज्य इकाई खुद आठ महीनों में चार बार टूटी है. जनता दल 22 सीटों पर चुनाव लड़ा और सभी पर हारा. और इसके वोट भी 1989 के 26 फीसदी के मुकाबले घटकर 5.75 फीसदी रह गए.

शेखावत ने जद (दिग्विजय) की यह हिचकिचाहट शायद भांप ली है. उन्होंने इस गुट के कुछ लोगों को अपने साथ बने रहने के लिए राजी कर लिया है. उसके कुछ सदस्यों के मामलों में तो यह मुश्किल भी नहीं है. इस पार्टी के कई विधायक चुनाव का लेखा-जोखा करने के लिए पिछले पखवाड़े जयपुर में हुई भाजपा विधायक दल की बैठक में भी उपस्थित थे.

जद (दिग्विजय) फिलहाल शायद वक्त का इंतजार करे. पर शेखावत को सरकार चलाने के लिए सचमुच मोहलत मिल पाएगी, यह देखना बाकी है.

—नरेंद्र कुमार सिंह

कांग्रेस (इ)

अलग राग

राज्य की साझा सरकार की बरखास्तगी को लेकर दो केंद्रीय मंत्रियों के बयानों ने मुख्यमंत्री शेखावत को राहत तो पहुंचाई मगर इंका के विरोधाभासों को भी उजागर किया.

हुआ यूं कि राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ ने दोनों नए मंत्रियों के लिए अलग-अलग दिन 'प्रेस से मिलिए' कार्यक्रम का आयोजन किया. पहले केंद्रीय कपड़ामंत्री अशोक गहलोत ने कहा, "लोकसभा चुनावों में प्रदेश की जनता ने भाजपा सरकार को ठुकरा दिया है, अतः उसे नैतिकता के आधार पर इस्तीफा देना चाहिए. वह इस्तीफा नहीं देती तो उसे बरखास्त किया जाए."

इसके दो दिन बाद हुए 'प्रेस से मिलिए' कार्यक्रम में केंद्रीय संचारमंत्री राजेश पायलट ने कहा कि शेखावत सरकार को बरखास्त करने का केंद्र का कोई इरादा नहीं है. उनके मुताबिक, "हम चुनी हुई राज्य सरकारों को नहीं गिराएंगे." गहलोत के बयान के बारे में उन्होंने कहा कि राजनीति में जरूरी नहीं कि वे किसी दूसरे व्यक्ति की बात से सहमत हों.

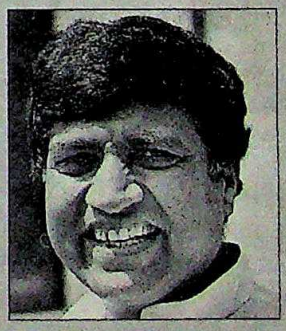

गहलोत (बाएं); और पायलटः अपनी-अपनी डफली

इन विरोधाभासी बयानों का फायदा उठाते हुए शेखावत ने टिप्पणी की कि गहलोत को राजनीति के विषयों पर पायलट से शिक्षा लेनी चाहिए. पायलट के बयान पर प्रदेश इंकाइयों में तीखी प्रतिक्रिया रही. कई उत्साही कांग्रेसियों ने तो पायलट पर शेखावत के साथ मिलीभगत का आरोप भी लगा दिया. पूर्व मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी भी मानते हैं कि शेखावत सरकार को इस्तीफा देना चाहिए क्योंकि चुनावों में उसके खिलाफ स्पष्ट जनादेश मिला है.

बहरहाल, इन मांगों की गंभीरता केंद्रीय मंत्रियों के बयानों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य प्रदेश

बलि होने से बचे

तमाम आलोचनाओं के बाद पटवा कुर्सी पर कायम

यह तो होना ही था. मध्य प्रदेश में भाजपा की चुनावी हार इस बात का स्पष्ट सकेत थी कि सुंदरलाल पटवा बलि का बकरा अवश्य बनेंगे. पर पिछले पखवाड़े जिस शिद्दत से पार्टी विधायकों और कार्यकर्ताओं ने प्रदेश भाजपा की बैठक में पटवा और प्रदेश पार्टी अध्यक्ष लखीराम अग्रवाल पर प्रहार किए, उससे ये दोनों सज्जन भी चकित रह गए होंगे.

इस बैठक में असंतुष्टों ने चुनाव परिणामों की समीक्षा करने की अपनी मांग दोहराई. तल्खी भरे खूब भाषण हुए और एक समय तो एक सदस्य ने आस्तीनें भी तान लीं. जिलों के ज्यादातर संयोजकों ने चुनाव में पराजय के लिए सरकार और मंत्रियों को दोषी ठहराया.

आलोचना की कुछ बानगियां देखें. खजुराहो से तेजतर्रार सासद उमा भारती ने कहा, "मेरी जीत राज्य सरकार के कामकाज की वजह से हरगिज नहीं हुई." पार्टी उपाध्यक्ष सिकंदर बख्त ने कहा, "पटवा जी, आप शासन की कला नहीं जानते." उन्होंने यह भी कहा कि ऐसा लगता है मुख्य सचिव खुद मुख्यमंत्री पर हावी थे और सचिवों के हाथ में सभी मंत्रियों की नकेल थी. खंडवा जिला भाजपा के महासचिव सुरेंद्र अग्रवाल ने कहा, "इन दोनों को इस्तीफा दे देना चाहिए."

भाजपा में असंतोष हैरानगी वाली बात नहीं है. दरअसल इसकी जड़ें गहरी हैं. हैरानगी तो यह है कि इस बार असंतुष्टों ने पूरी शिद्दत से नेताओं पर हमला किया. आलाकमान ने जितने मनमानेपन से नाराजगी दबानी चाही, उतनी ही वह उभरकर सामने आई. एक नाराज विधायक ने कहा भी, "नेतृत्व तो कभी हमारी शिकायत सुनने को तैयार नहीं हुआ."

पिछले साल असंतुष्टों ने राज्य पार्टी अध्यक्ष पद समेत सांगठनिक चुनावों में ही नेताओं के प्रभुत्व को चुनौती दी थी और अपने प्रति कार्यकर्ताओं के समर्थन का खुला इजहार किया था. लेकिन उन्हें कोई स्थान देने के बजाए आलाकमान ने दिलीप सिंह जूदेव, उमा भारती और वीरेंद्र कुमार सखलेचा सरीखे प्रमुख असंतुष्टों को दबाने की कोशिश की. असंतुष्ट चुपचाप पड़े रहकर मौके का इंतजार करने लगे.

चुनाव के बाद हुई बगावत की एक वजह यह है कि पार्टी के दुर्भाग्यपूर्ण प्रदर्शन की जिम्मेदारी कबूल करने की जगह नेतृत्व बहानों और दयनीय औचित्यों के पीछे पनाह लेने की कोशिश कर रहा है. पटवा ने कहा, "चुनाव हम भले ही हार गए पर हमारी लोकप्रियता बढ़ी है, जिसका इजहार हमें मिले वोटों से होता है." असंतुष्टों ने इस दावे का खुलकर मजाक उड़ाया. पूर्व विधायक आनंद श्रीवास्तव ने कहा, "यह तो कुछ ऐसा ही हुआ कि डॉक्टर कहे मरीज नहीं बचाया जा सकता पर उसका ब्लड प्रेशर काबू में आ गया है."

लेकिन पटवा के इस्तीफे की मांग कम नहीं हुई. बिलासपुर इकाई के संगठन सचिव केशव दवे ने जब यह कहा कि छत्तीसगढ़ इलाके में पार्टी के पूरी तरह सफाए की वजह प्रशासकीय भ्रष्टाचार, सरकार पर अफसरशाही के प्रभुत्व और पार्टी कार्यकर्ताओं की अवहेलना है तो वे आम कार्यकर्ता की भाषा बोल रहे थे.

पटवा और अग्रवाल पार्टी आलाकमान को अपने इस्तीफों की पेशकश हालांकि पहले ही कर चुके थे मगर उसने नियमों से बाहर जाकर भी उनकी रक्षा की है. पटवा को अभी भी मध्य प्रदेश के प्रभारी महासचिव कुशाभाऊ ठाकरे और राज्य पार्टी की सर्वेसर्वा विजयाराजे सिंधिया का समर्थन हासिल है.

फिर भी, भाजपा नेतृत्व दुविधा में है. उसे पता है कि राजस्थान और हिमाचल प्रदेश के मुकाबले यहां पार्टी के घटिया प्रदर्शन का एक मुख्य कारण पटवा का कुशासन, कुछ काम कर दिखाने में उनकी असफलता, दुश्मनी मोल लेने की उनकी निपुणता और उनकी हेकड़ी में निहित है. लेकिन इस समय उनको हटाने से विपक्ष को सुनहरी मौका मिल जाएगा. वह भी इस आधार पर सरकार की बरखास्तगी की मांग कर रहा है कि उसने जनता का विश्वास खो दिया है. इस संबंध में इंका राज्यपाल को एक ज्ञापन पहले ही दे चुकी है. इंका का यह कदम पटवा के लिए छिपा वरदान साबित हुआ है.

इसलिए असंतुष्टों की शिकायतों में चाहे कितना भी दम हो, आलाकमान की मंशा मंझधार में नेतृत्व परिवर्तन करने की नहीं है. कम-से-कम फिलहाल तो नहीं ही.

—नरेंद्र कुमार सिंह

आर. सी. साह

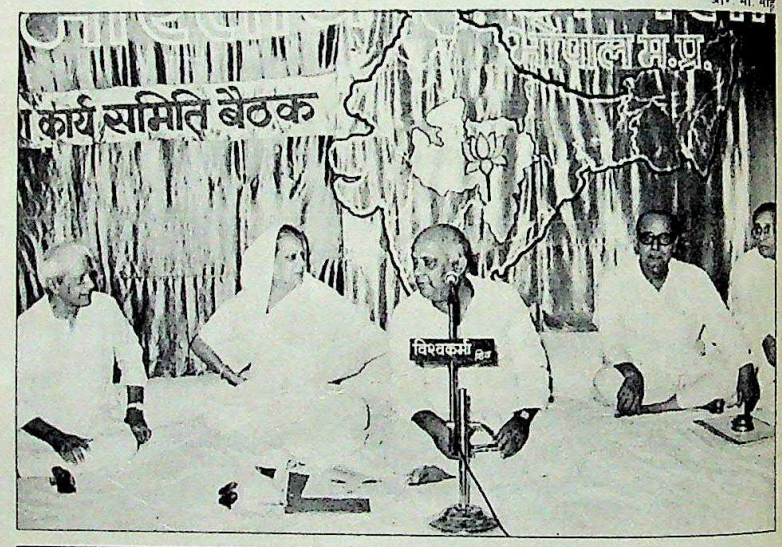

प्रदेश भाजपा की बैठक में विधायकों और कार्यकर्ताओं ने चुनावी हार के लिए पटवा और अग्रवाल की जमकर आलोचना की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असम

अमन के लिए जुआ

उल्फा वालों को आम माफी देकर मामला सुलझाने की कोशिश

चुनाव के बाद राज्य के छह अलग-अलग हिस्सों में उल्फा ने एक साथ 14 लोगों का अपहरण करके सिद्ध कर दिया है कि सरकारी सख्ती का इन उग्रवादियों पर कोई खास असर नहीं पड़ा है. इसलिए बेकाबू हो चुके हालात को संभालने के लिए कुछ नए तरह के उपाय ही करने की जरूरत है.

हितेश्वर सैकिया के नेतृत्व वाली नई इंका सरकार ने केंद्रीय गृह मंत्रालय से हरी झंडी मिलने के बाद 8 जुलाई को एक जुआ खेला. इसने दो बंधकों—सोवियत तकनीकविद सर्गेई ग्रिशेंको और 'ओएनजीसी' के अधिकारी बी. एन. जायसवाल—के बदले केवल छह कट्टर उल्फा उग्रवादियों की रिहाई की जगह सभी 650 उल्फा बंदियों को आम माफी देने की घोषणा कर दी. उग्रवादियों द्वारा निर्धारित समय सीमा 9 जुलाई को सैकिया ने उनमें से 324 को रिहा कर दिया. अब 14 बंधकों को छोड़ देने की जिम्मेदारी उल्फा पर आ गई. लेकिन सोवियत इंजीनियर के कथित रूप से भागने के प्रयास के दौरान उनकी हत्या का रहस्योद्घाटन उल्फा द्वारा कई दिनों बाद किए जाने से सारे किए-कराए पर पानी फिर गया.

आम माफी के जरिए उल्फा को खुश करने का सैकिया का फैसला उन्हें मुंह चिढ़ाने वाला ही साबित हुआ. पद भार संभालने के दूसरे दिन ही उनका सामना उल्फा की व्यापक उग्रवादी कार्रवाइयों से हुआ. सैकिया सरकार को जैसे लकवा मार गया. उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि वह सख्ती से काम ले या नरमी से.

जाहिर है कि चुनाव से पहले तीन महीनों की शांति महज एक धोखा थी. उल्फा की ताकत को खत्म कर देने का 'ऑपरेशन बजरंग' का दावा भी खोखला साबित हुआ. इस अवधि का इस्तेमाल इसने दोबारा संगठित होने के लिए किया. सितंबर में नए हमले के लिए वह म्यानमार में काचिन के जंगलों में तैयारी कर रहा है.

इससे सरकार को चौकन्ना हो जाना चाहिए था. लेकिन समस्या यह है कि सैकिया सरकार चाहते हुए भी कुछ कर पाने में खुद को असमर्थ पा रही है. अनेक उच्च अधिकारी, जो उल्फा से सहानुभूति रखते हैं, इसकी मांग को मान लेने के पक्ष में थे.

पिछले पखवाड़े इसके छह साथी डिब्रूगढ़ और तेजपुर की जेलों से जिस आसानी से भागने में सफल रहे, उससे साफ है कि राज्य व्यवस्था में उसकी कितनी पैठ है. राज्य की अधिकांश जनता भी उल्फा के प्रति नरम रुख रखती है.

आम माफी के एकतरफा फैसले से सैकिया ने समस्या सुलझाने की पहल की कोशिश की थी क्योंकि उल्फा अपने मतलब से अस्थायी हल की ताक में था. वह निश्चित तौर पर समय निकालने की फिराक में था.

अपने साथियों को छुड़ा लेना ही उल्फा का एकमात्र मकसद नहीं था. कोल इंडिया के लिए कार्य कर रहे सोवियत इंजीनियर सर्गेई को बंधक बनाने के पीछे उसका मकसद दुनिया भर का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करना था. प्रशासकीय विभाग में सेक्रेटरी व कमिश्नर एस. के. तिवारी और ओएनजीसी के आठ अधिकारियों का अपहरण राज्य और केंद्रीय सरकार के कान गरम करने के लिए किया गया था. इसके अलावा अपहरण का खास समय चुनकर उसने नई इंका सरकार के प्रति अपना नकारात्मक रुख भी उजागर किया. इंका को वह भारतीय 'उपनिवेशी शासक' का प्रतिनिधि मानता है. इस साल मार्च से अब तक यह करीब 25 कांग्रेसियों की हत्या कर चुका है.

इसके बावजूद सैकिया बदले की बात नहीं सोचते. केंद्र की इंका सरकार ने भी सैकिया को कठोर कदम न उठाने की सलाह दी है. उन्होंने कहा, "पुलिस या सैनिक कार्रवाई समस्या का स्थायी हल नहीं है." वे 'आर्थिक और जातीय समस्या' के समाधान के लिए उल्फा के साथ बातचीत को पूरी तरह तैयार हैं. लेकिन पृथक राज्य की मांग पर कोई बातचीत नहीं करना चाहते.

आम माफी की घोषणा से असम सरकार ने गेंद उल्फा के पाले में डाल दी है. अब सवाल यह है कि उग्रवादी अमन चाहते हैं या नहीं.

—रूबेन बनर्जी, गुवाहाटी में

सैबल दास

उल्फा की बढ़ती ताकत और उसे प्राप्त समर्थन के कारण सैकिया को नरमी का रास्ता अपनाना पड़ा

सैकिया, और (ऊपर) गिरफ्त में उल्फा उग्रवादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनद रहे

अफवाहः 500 रु. के नोटों के रद्द किए जाने का. बाजार के सूत्रों का कहना है कि इस नोट

की कीमत अनेक स्थानों पर 400 से 475 रु. की हो गई थी. इस बीच सरकार ने इस अफवाह का खंडन किया है कि ये नोट रद्द किए जा रहे हैं.

छोड़ा गयाः देसी मिसाइल **'पृथ्वी'**, आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा से चौथी बार सफलतापूर्वक. यह सतह से सतह पर मार करने वाला मिसाइल है.

गिरफ्तारः दिवंगत एमजीआर को अपना पिता बताने वाली **प्रेमा.** एक महीने तक शानो-शौकत की जिंदगी बिताते हुए उसके होटल का बिल एक लाख रु. तक पहुंच गया. उसने करीब 6 लाख रु. के गहने खरीदे और 80,000 रु. की साड़ियां खरीद डालीं. मद्रास पुलिस के अनुसार यह ठग सुंदरी चोरी के एक क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करती हुई शहर से बाहर आती-जाती रही.

अनुरोधः अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस के नेता **नेल्सन मंडेला** का भारतीय क्रिकेट टीम से, कि वह दक्षिण अफ्रीकी टीम को भारत का दौरा करने के लिए आमंत्रित करे. दक्षिण अफ्रीका ने रंगभेद कानून को रद्द कर दिया है. और कई वर्षों से अंतरराष्ट्रीय बहिष्कार के चलते अलग-थलग पड़ी वहां की श्वेत और अश्वेत खेल संस्थाओं का विलय हो गया है.

पुरस्कृतः विकास, निरस्त्रीकरण और शांति के इंदिरा गांधी पुरस्कार से, नामीबिया के डॉ. **सैम नुयोमा.** यह पुरस्कार उन्हें नामीबिया की आजादी और समानता के संघर्ष में उनके साहसिक और प्रेरक नेतृत्व के लिए दिया गया.

रद्दः पाकिस्तानी हवाई अड्डों पर भारतीय यात्रियों के लिए **पारगमन की सुविधाएं.** पाकिस्तानी अधिकारियों ने आरोप लगाया है कि इन सुविधाओं के बेजा इस्तेमाल किए जाते हैं. वे कहते हैं कि 24 घंटे के पारगमन पड़ाव के दौरान भारतीय यात्री या तो कहीं खिसक जाते हैं या फिर 'घटिया कामों' में लग जाते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Maharishi Ayurved

छोटी शीशी के बड़े कमाल, आम तकलीफों में दे आराम.

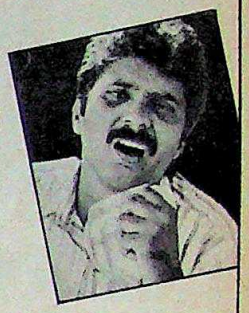

प्राणधारा की यह छोटी सी शीशी तीन तरह से कमाल दिखाती है.
प्राणधारा साँस के साथ खींचने पर बंद नाक को तुरन्त खोलती है.
प्राणधारा दर्द या मोच वाले हिस्से पर मलने से तुरन्त राहत देती है.
प्राणधारा केवल दो बूंदें, दो चम्मच पानी में लेने से पेटदर्द, दस्त, पेचिश अथवा जी मिचलाने पर तुरन्त आराम देती है.

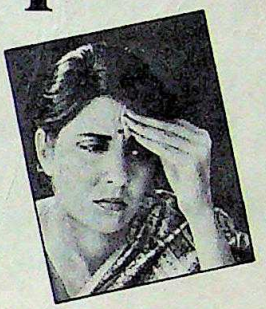

प्राणधारा–कई आम तकलीफ़ों के लिए एक प्राकृतिक, सुरक्षित व असरदार प्राथमिक उपचार.

प्राणधारा–हमेशा अपने पास रखिए.

म ह र्षि आ यु र्वे द

प्राणधारा

सुगन्धित तेलों का मिश्रण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

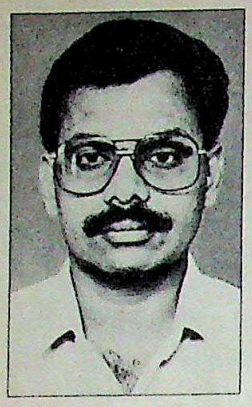

राजीव हत्याकांड जांच

तलाशी में तेजी

'काना उस्ताद' शिवरासन तो गिरफ्त से बचा हुआ है मगर राजीव हत्याकांड के षड्यंत्रकारियों के गिर्द सीबीआई का घेरा कसता जा रहा है

—**अनिरुद्ध मित्र**, मद्रास में

इस हत्याकांड का एक प्रमुख षड्यंत्रकारी माने जाने वाले 'काने उस्ताद' शिवरासन से जुड़ा रहस्य दिन-ब-दिन गहराता जा रहा है. तकरीबन एक महीने से वह सुरक्षा बलों को चकमा दिए हुए है. किसी एक व्यक्ति को पकड़ने के लिए सुरक्षा बलों ने इतना सघन जाल पहले कभी नहीं बिछाया था. विशेष जांच दल को पूरा यकीन है कि लापता शिवरासन भारत में ही छिपा हुआ है. इसलिए उसे धर दबोचने के लिए जांच दल चप्पा-चप्पा छान रहा है.

लेकिन लापता होते हुए भी यह भगोड़ा कहीं-न-कहीं अपनी मौजूदगी जताता रहा है. एक दिन वह मदुरै में नजर आता है, दूसरे दिन विशाखापत्तनम में, तो अगले दिन बंगलूर के नजदीक 'देखा' जाता है. जांच दल के प्रयत्नों से यह तो पता लगा ही है कि देश के दक्षिणी हिस्से में एलटीटीई ने व्यापक जाल बिछाया हुआ है.

इस तथ्य की भी पुष्टि हुई है कि शिवरासन अभी भारत में ही छिपा है, और जांच दल कई बार उसे पकड़ते-पकड़ते रह गया है. जांच दल को उसकी मौजूदगी का पता उस उच्च क्षमता वाले वायरलेस सेट से चलता है जिससे वह जाफना से संपर्क रखता है. जांच दल ने 'जैक' (शिवरासन का गुप्त नाम) और जाफना के बीच चल रहे गुप्त संकेतों वाले संदेशों को सुना है.

जांच दल का यह दावा कि वह अपने शिकार को जल्द ही पकड़ लेगा, इसी उपलब्धि के आधार पर किया जा रहा था. तमिलनाडु में एलटीटीई के कार्यकर्ताओं से मिली सूचना से यह पता लगा कि जाफना से संपर्क बनाए रखने के लिए जैक के पास एक उच्च क्षमता वाला ट्रांसमीटर भी था. जांच दल ने तुरंत तमिलनाडु के तट पर जाल बिछाए बैठी पुलिस और जलडमरूमध्य पर तैनात भारतीय नौसेना से वायरलेस संदेशों पर निगरानी रखने को कहा.

पहली बड़ी सफलता जून के पहले हफ्ते में मिली जब भारतीय नौसेना के गश्ती जहाज ने तमिलनाडु से जाफना भेजे जा रहे एक गुप्त संदेश को सुन लिया. एलटीटीई के मुखबिरों ने पहले ही बता दिया था कि शिवरासन के पास एक ट्रांसमीटर रहता था. अब समस्या उन गुप्त संदेशों का अर्थ लगाने की थी. सौभाग्य से राजीव की हत्या के लिए बम बनाने वाला अरिवू पेरुलिवालन भी पकड़ा गया. उससे की गई पूछताछ से शिवरासन द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे कुछ गुप्त संकेतों के बारे में भी जानकारी मिली. अब उस संदेश का अर्थ निकाला गया—शिवरासन ने बहुत जल्दी नाव की मांग की थी, जो उसे पाक जलडमरूमध्य के उस पार ले जा सके.

लेकिन जांच दल के बुलंद हौसले जल्द ही धराशायी हो गए. शिवरासन घुटा हुआ उस्ताद निकला. उसे किसी तरह सूचना मिल गई कि उसका संदेश बीच में सुना जा रहा है. उसने जाफना को संदेश भेजना बंद करने की जगह जांच दल को भरमाना शुरू कर दिया. एक बार तो जांच दल 60 जवानों को लेकर तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश सीमा पर पुलिकट झील जा पहुंचा. 600 वर्ग किमी वाली झील का चप्पा-चप्पा छान मारा. तब उसे पता चला कि उसे उल्लू बनाया गया है.

पिछले पखवाड़े दिल्ली में दो श्रीलंकाइयों की गिरफ्तारी से जांच दल और उलझन में पड़ गया. उन्होंने ही रहस्योद्घाटन किया कि उन्हें काठमांडो में एलटीटीई के एक सदस्य से संपर्क करने का जिम्मा सौंपा गया था, जो शिवरासन को भारत से बाहर ले जाने का इंतजाम करने वाला था. काठमांडो के इस एलटीटीई कार्यकर्ता त्यागराजन को पूछताछ के लिए दिल्ली लाया गया. उससे पता चला कि वह एलटीटीई की तरफ से हवाला का सौदा करता था, और मद्रास और नेपाल में एलटीटीई के लिए पैसे जुटाता था. जांच दल इस नतीजे पर पहुंचा कि सिंगापुर, थाईलैंड और मलेशिया से एलटीटीई के लिए आने वाले पैसे की देखभाल के लिए ही उसे नेपाल भेजा गया था. नेपाल को भाग निकलने का रास्ता बनाया जा रहा है या जांच दल को झांसा दिया जा रहा है, यह अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है.

इसके बावजूद जांच दल का उत्साह बरकरार है. इसकी एक बड़ी वजह यह है कि शिवरासन ट्रांसमीटर से संदेश भेजना छोड़ने को बाध्य हो गया है. और वह ट्रांसमीटर जिसे शिवरासन इस्तेमाल किया करता था, उत्तरी मद्रास में गिरफ्तार दो श्रीलंकाई तमिल शरणार्थियों के पास से बरामद हुआ. इसके अलावा तटवर्ती जिलों के वे हिस्से, जो समुद्री यातायात के लिए इस्तेमाल किए जाते थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

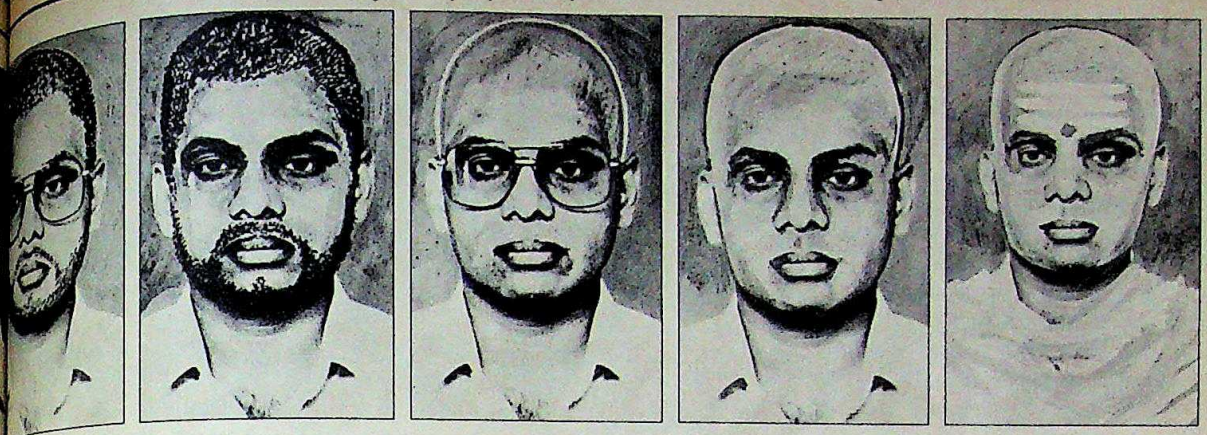

यह तो साफ है कि शिवरासन अभी भारत में ही कहीं छिपा हुआ है. मगर वह पकड़ में आने से बचता रहा है तो दक्षिण भारत में व्यापक तौर पर बिखरे एलटीटीई के सूत्रों की मदद के कारण ही

शिवरासनः 'काना उस्ताद' के गिरगिटी रूप

द कर दिए गए हैं. असल में वेदारण्यम बंदरगाह पर एलटीटीई उग्रवादी शंकरन की गिरफ्तारी से जांच दल का उत्साह फिर बढ़ गया है.

शंकरन ने जांचकर्ताओं को बताया कि शिवरासन एलटीटीई से सहानुभूति रखने वालों के जरिए उससे संपर्क करेगा. लेकिन शंकरन के ही अनुसार एलटीटीई के स्थानीय संपर्क सूत्र राजीव गांधी की निर्मम हत्या से स्तब्ध रह गए थे. और किसी तरह की मदद देने के नाम पर उनके हाथ-पांव फूल गए थे.

शंकरन की गिरफ्तारी से ज्यादा हौसला बढ़ाने वाली बात जांच दल के लिए यह हुई कि मद्रास के एक उपनगर में दो श्रीलंकाई तमिलों की गिरफ्तारी के साथ ही उस वायरलेस सेट के कुछ पुर्जे बरामद किए गए जिसे शिवरासन ने इस्तेमाल किया था. एलटीटीई के ये दो कार्यकर्ता—26 वर्षीय पेरुमल विजयन और उसका 55 वर्षीय साथी एस. भास्करन—पिछले वर्ष नवंबर में शरणार्थी के रूप में भारत आए थे. शिवरासन की सहायता से उन्होंने मद्रास में एक मकान किराए पर लिया था.

इन दोनों की गिरफ्तारी से पुलिस को वे कई कारतूस बरामद करने में सफलता मिली जिन्हें शिवरासन ने अपनी स्वचालित राइफल में इस्तेमाल किया था. इनके अलावा राजीव की हत्या में प्रयुक्त विस्फोटकों का डिब्बा, उच्च क्षमता वाले उस वायरलेस सेट के पुर्जे जिनका इस्तेमाल शिवरासन ने जाफना से संपर्क बनाए रखने में किया, और उसकी शीशे की एक आंख भी बरामद की गई. जांचकर्ताओं को शक है कि बम विजयन के मद्रास वाले मकान में ही बनाया गया होगा.

इस बीच शुभा भी पकड़ में नहीं आ रही है. बताया जाता है कि शुभा को ही धनु का विकल्प बनाया गया था ताकि धनु अगर कामयाब न हो तो शुभा मानव बम बनकर काम करे. जांच दल को शुभा की गतिविधियों की कोई जानकारी नहीं है. इसके अलावा, अगर वह पकड़ी भी जाती है तो उससे कुछ उगलवा पाना मुश्किल होगा, क्योंकि एलटीटीई के 'शैडो स्क्वाड' का सदस्य होने के कारण वह सायनाइड की गोली अपने साथ रखती है.

इस मामले की कुछ कार्रवाई अब अदालतों तक भी पहुंच रही है. शुभ सुंदरम और अरिवू ने सीबीआई के खिलाफ याचिका दर्ज करके मांग की है कि उन्हें वकीलों की सहायता लेने दी जाए. उनकी ओर से ये याचिकाएं द्रविड कड़गम समर्थक वकीलों ने दायर की. लेकिन इन याचिकाओं को दाखिले की मंजूरी नहीं मिली.

फिलहाल तो जांच दल के सारे प्रयत्न 'काने उस्ताद' की खोज पर ही केंद्रित हैं. जांच दल ने इन खबरों का भी खंडन किया है कि शिवरासन बंबई के बदनाम भूमिगत अड्डों में जा छिपा है, जहां भगोड़े तमिलों का खासा दबदबा है. हाल ही में नई दिल्ली में गिरफ्तार 70 वर्षीय कनक सभापति और एक किशोरी से पूछताछ के दौरान जांच दल इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि शिवरासन और शुभा के भाग निकलने की योजना नई दिल्ली में एलटीटीई की एक बैठक में बनी थी.

तभी जांच प्रक्रिया को अनोखा मोड़ देते हुए जांच दल ने दो अन्य श्रीलंकाई तमिलों—आर. सुरेश कुमार उर्फ शिवा और उसके चाचा मेघजा को जा घेरा. उन्हें जयपुर के एक होटल से पकड़ा गया. शिवा ने होटल के प्रबंधकों से कहा था कि वह नकली पांव लगवाने के लिए शहर में ठहरा हुआ है क्योंकि उसकी एक टांग 'गायब' है. जांच दल का खयाल है कि जिस बम विस्फोट में राजीव मरे, उसी में उसने अपनी टांग गंवाई होगी. श्रीपेरुंबुदूर में विस्फोट के बाद जो नौ लोग जयपुर आए वह उन्हीं में से एक था.

इन लोगों के जयपुर पहुंचने की खबर रॉबर्ट पायस से मिली, जिसे शिवरासन को पनाह देने के अपराध में गिरफ्तार किया गया है. पायस ने ही जांच दल को बताया कि शिवा को विस्फोट स्थल से हरिबाबू का कैमरा उठा लाने का काम सौंपा गया था. इसके लिए यह जरूरी था कि वह धनु और हरिबाबू के करीब रहे. इसीलिए उसे गहरी चोटें आईं और उसकी टांग जाती रही.

शिवरासन की खोज भारत तक ही सीमित नहीं है. सीबीआई ने शिवरासन के कुछ सहयोगियों की शिनाख्त के लिए इंटरपोल, मादक पदार्थ नियंत्रण ब्यूरो, रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस और लंदन के स्कॉटलैंड यार्ड की भी सेवाएं ली हैं. इंटरपोल तो खास तौर से एलटीटीई के अंतरराष्ट्रीय संपर्कों की जांच कर रही है.

विदेशों में एलटीटीई के संपर्कों और गतिविधियों की जानकारी हासिल करने के बाद ही इस मान्यता की जांच हो सकेगी कि राजीव की हत्या का षड्यंत्र रचने में विदेशी हाथ था और एलटीटीई की मदद से इसे अंजाम दिया गया. लेकिन यह तो बहुत दूर की बात है. शिवरासन के पकड़े जाने और उससे पूछताछ किए बिना यह गुत्थी सुलझाना असंभव ही है. इसीलिए इस 'काने उस्ताद' की खोज को इतनी अहमियत दी जा रही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब

इस्तीफे से संकट

● पंजाब विश्वविद्यालय के उप-कुलपति प्रो. आर.पी. बांबा पिछले कुछ दिनों से अपने विश्वविद्यालय को ही चकमा दे रहे हैं. विश्व के चोटी के गणितज्ञों के रूप में विख्यात बांबा अपने चंडीगढ़ स्थित विश्वविद्यालय के कार्यालय में कभी-कभार ही नजर आते हैं. पहले तो वे देश भर में होने वाले सेमिनारों और सम्मेलनों में व्यस्त रहे, अब 10 हफ्ते की छुट्टी लेकर अमेरिका चले गए हैं.

लेकिन ज्यादा परेशानी इस वजह से है कि वे इस पद से इस्तीफा दे रहे हैं, जबकि इसी जनवरी में कई नियमों का अनदेखी करते हुए उनका कार्यकाल तीन वर्ष के लिए बढ़ा

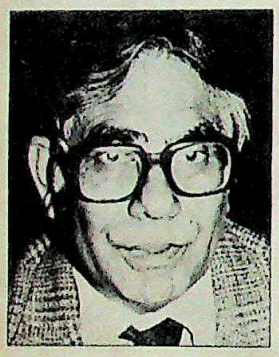

बांबा: चुपचाप खिसके

दिया गया था. उपराष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा को, जो कि विश्वविद्यालय के कुलपति भी हैं, एक पत्र लिखकर बांबा ने अपना इस्तीफा मंजूर करने का अनुरोध किया है. इस्तीफा देने की वजह उन्होंने यह बताई है कि वे 'सक्रिय अध्यापन' से फिर जुड़ना चाहते हैं. सर्वविदित है कि बांबा को उग्रवादियों से धमकियां मिलती रही हैं. वे उनका कार्यकाल बढ़ाए जाने के खिलाफ हैं.

बांबा के इस तरह हाथ झाड़ देने से पंजाब विश्वविद्यालय की समस्याएं और गहरा गई हैं. उनकी अनुपस्थिति में उनका कार्य देखने के लिए बनी चार सदस्यीय समिति भी हालात सुधारने में नाकामयाब रही है. चुनावों के बारे में फैली अनिश्चितता के कारण, जिसकी वजह से परीक्षा का कार्यक्रम भी गड़बड़ा गया, इस विश्वविद्यालय की समस्याओं का अंत नजर नहीं आता.

आंध्र प्रदेश

चतुराई की चाल

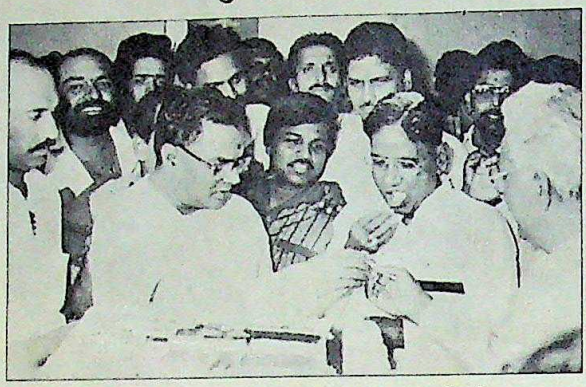

अपने जन्म दिन समारोह पर भास्कर राव: जोड़तोड़

● एन. भास्कर राव चतुर खिलाड़ी रहे हैं. यह तभी साबित हो गया था जब उन्होंने इंका की मदद से एन.टी. रामराव को लंगड़ी लगाकर उनकी सरकार गिरा दी थी. लेकिन इस वर्ष 1 जुलाई को अपनी 57वीं सालगिरह पर उन्होंने कुछ अति ही कर दी. पूर्व मुख्यमंत्री चेन्ना रेड्डी समेत वर्तमान मुख्यमंत्री एन. जनार्दन रेड्डी के कई विरोधियों को भोज समारोह में बुलाकर उन्होंने सनसनी फैला दी.

लेकिन वकील से राजनीतिक बने भास्कर राव अभी अपनी असली मंशा नहीं जाहिर कर रहे हैं. कुछ पूछने पर उनका दो टूक जवाब होता है, "आप चाहे जो निष्कर्ष निकाल लें." हालांकि जनार्दन रेड्डी के लिए यह साफ संकेत है कि भोज में आए इन करीब 30 विधायकों में से कुछ को मंत्री नहीं बनाया गया तो बगावत तय समझिए.

गुजरात

हादसे का विरोध

● महात्मा गांधी के प्रांत में अवैध शराब 40 लोगों की जान लील लेती है तो इस घटना की भयावहता कई गुना बढ़ जाती है. पिछले महीने अहमदाबाद में हुए इस हादसे से क्रुद्ध कई लोग सड़कों पर उतर आए. आंदोलन की अगुआ है—सामाजिक कार्यकर्ता इलाबेन भट्ट की संस्था 'सेवा'. इला कहती हैं, "अवैध शराब के सबसे घातक परिणाम औरतों को ही झेलने पड़ते हैं. सामाजिक दबाव से ही बदलाव लाया जा सकता है." लेकिन किसी को भरोसा नहीं कि शराब का यह अवैध धंधा बंद भी हो सकता है.

इला भट्ट: विरोध का नेतृत्व

सनत झावेरी ऐंड कं.

उत्तर प्रदेश

लड़ने-भिड़ने को तैयार

● कांग्रेसियों के आगे हड्डी का एक टुकड़ा भर फेंक दीजिए और फिर तमाशा देखिए. वे आपस में न लड़-भिड़ पड़ें इस टुकड़े के लिए तो कांग्रेसी नहीं! भले ही उस पर रत्ती भर मांस न हो.

उत्तर प्रदेश में फिलहाल यही कुछ हो रहा है. विधानसभा में भले ही इस बार इसके विधायकों की संख्या गिनी-चुनी है मगर इंका विधायक दल के नेता पद के लिए ये मुट्ठीभर विधायक भी आपस में लड़ मरे.

425 सदस्यों वाली विधानसभा में इसकी सदस्य संख्या 1989 की 94 से घटकर 46 रह गई है. लोकसभा चुनाव में अपमानजनक हार के बाद विधायक दल के नेता

आर.के. गुप्ता

प्रमोद तिवारी: अंततः विजयी

नारायण दत्त तिवारी इस बार इस पद के लिए दौड़ से बाहर हो गए. और उनके हटने से इस पद के कई दावेदार खड़े हो गए. विधायकों के तीन गुट बन गए. और इन तीन गुटों ने तीन प्रत्याशियों—प्रमोद तिवारी, रणजीत सिंह जूदेव और गोपीनाथ दीक्षित का समर्थन किया. पिछले हफ्ते इस चुनाव की देखरेख के लिए जब आलाकमान के पर्यवेक्षक लखनऊ आए तो विधायकों के बीच कड़े मुकाबले के लक्षण स्पष्ट थे.

कोई भारी संकट की स्थिति न पैदा हो जाए यह समझाने—बुझाने 'सर्वसम्मति' से प्रमोद तिवारी को नेता चुनने के लिए विधायकों को राजी करने में केंद्रीय पर्यवेक्षकों को पूरा दिन लग गया.

इस पूरी कार्रवाई के अंत में हारने वाले एक विधायक की टिप्पणी थी, "हम कभी अपनी गलतियों से नहीं सीख पाएंगे, क्योंकि हम कांग्रेसी हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

OYSTER

स्विट्ज़रलैण्ड में बनी. दुनियाँ ने अपनायी.

4002

भारत में बना. दुनियाँ ने माना.

18 कैरेट खरे सोने की रोलेक्स घड़ी, मानो खासतौर पर कुछ महानायकों के लिए बनी हो। क्वालिटी की ठीक उसी प्रतिबद्धता के साथ बना है 'बुश' का एक-एक रंगीन टेलीविज़न। उन खास लोगों के लिए, जिन्हें चाहिए सिर्फ़ भरोसेमन्द, टिकाऊ और श्रेष्ठतम रंगीन टेलीविज़न।

'बुश' हो या रोलेक्स दोनों ही के डिज़ाइनों का मुख्य आधार है — उत्कृष्टता।

अनुसंधान और विकास की निरन्तर व लम्बी भागीरथी यात्रा के बाद ही 'बुश' ने पाया है, दृढ़ विश्वास और उत्कृष्ट गुणवत्ता। भारत की 'बुश' तथा जापान की NEC और AKAI जैसी विश्व प्रसिद्ध तीन कम्पनियों के संगठित प्रयासों का परिणाम है — 'बुश' रंगीन टेलीविज़न। जिसे चार दशकों से भी ज्यादा की तपस्या ने साकार बनाया है।

निस्सन्देह, तभी तो ब्रिटिश सेफ़्टी स्टैण्डर्डस अथॉरिटी ने अपने कठिनतम मापदण्डों को पार करने पर 'बुश' की क्वालिटी को मान्यता प्रदान की है।

परिणाम : आज 'बुश' रंगीन टेलीविज़न ब्रिटेन और यूरोप को निर्यात करने के लिए बनाये जा रहे हैं। और कल दुनियाँभर के लिए।

बुश. भारत में बना. दुनियाँ के लिए. आपके लिए.

BUSH

IN TUNE WITH THE WORLD

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थव्यवस्था

कड़वी दवा

—सुदीप चक्रवर्ती
जफर आगा और शहनाज अंकलेसरिया अय्यर के साथ

मनमोहन सिंह ने 21 जून को अपने कुछ नजदीकी दोस्तों को दोपहर के खाने पर अपने घर बुलाया था. लेकिन उसी दिन सुबह उनकी पत्नी ने उन मित्रों को फोन करके सूचित कर दिया कि भोज अगले दिन होगा क्योंकि एक 'जरूरी' काम आ गया है. वे लोग मान गए और अपने घरों में टीवी पर नई सरकार के शपथ ग्रहण समारोह का प्रसारण देखने बैठ गए. जब उन्होंने मनमोहन सिंह को वित्तमंत्री के रूप में शपथ लेते देखा तो हैरान रह गए.

दफ्तर संभालते ही डॉ. मनमोहन सिंह ने अपनी नई कार्यशैली का प्रदर्शन किया. मंत्री बनने के एकाध दिन बाद ही उन्होंने देश के आठ बड़े अधिकारियों, जो प्रमुख विभागों के सचिव हैं, की बैठक बुलाई. वहां उन्होंने बड़े शांत भाव से कहा कि उन्हें उन लोगों की 'प्रतिभा और निष्ठा' पर पूरा भरोसा है लेकिन अगर किसी को यह लगे कि वह सरकार की नई नीतियों को लागू नहीं कर सकता तो उसे यह बात उन्हें बता देनी चाहिए पर किसी ने कुछ नहीं कहा. और मनमोहन सिंह ने इस छोटे से वाक्य के साथ अपनी बात खत्म की, "मुझे आप सभी की मदद चाहिए."

फिर अगले पखवाड़े जो कुछ हुआ उसके लिए 'हैरानी हुई' यह कहना काफी कम

कार्टून: अजीत नैनन और मनोजित दत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेना. सिर्फ वित्तमंत्री के मित्र ही नहीं, राजनेता, उद्योगपति और सरकारी अधिकारी भी फैसलों की रफ्तार और विस्तार को देखकर भौंचक रह गए. नीतिगत बदलावों की शुरुआत ही रुपए के अवमूल्यन और विदेश व्यापार नियमों में भारी बदलाव से हुई. वर्षों की सुस्ती के बाद सरकार आर्थिक बाध्यताओं का मुकाबला करती दिखाई दी. अनेक लोगों ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने आपात ऋण के लिए जो शर्तें लगाई हैं उनके अनुसार ही ये फैसले लिए गए, न कि डॉ. सिंह की पहल पर. इससे आर्थिक स्थायित्व की उम्मीदों को भविष्य की कठिनाइयां देख झटका लगा. लेकिन इसके साथ ही कोई भी व्यक्ति भारतीय अर्थव्यवस्था का गड़बड़झाला दूर करने की नए वित्तमंत्री की कोशिशों के महत्व को कम करके नहीं आंक रहा था. मनमोहन सिंह ने अधिकारियों से कहा, "मुझे प्रधानमंत्री का शासनादेश मिला है भारी-भरकम बदलाव के लिए. और दुनिया को जान लेना चाहिए कि भारत बदल गया है." यानी मनमोहन सिंह के हिसाब से देखें तो भारत को तुरत-फुरत बदलना चाहिए. ऐसा करने का एकमात्र तरीका यह है कि नीतिगत बदलावों की कड़वी खुराक जल्दी-जल्दी दी जाए. कुछ सरकारी अधिकारियों का मानना है कि यह काम महीने भर में हो सकता है. 1990-91 का बजट, बस जैसा होगा. यह साफ नहीं है कि नई नीतियां और बजट से आम आदमी पर कितना बोझ बढ़ जाएगा. लेकिन उद्योग जगत खुद को बड़े झटके के लिए तैयार कर रहा है. हिंदुस्तान लीवर लि. के अध्यक्ष एस.एम. दत्त कहते हैं, "अगर प्रतिकूल बजट आया तब भी उद्योग जगत की तरफ से चूं-चपड़ नहीं होगी." ऐसा है तो सरकार पूरे जोर-शोर से अपने अभियान में लग सकती है.

तूफानी रफ्तार

लोगों को रुपए के अवमूल्यन की उम्मीद थी. लेकिन ऐसा इतनी जल्दी यानी लगातार दो दिनों में ही बड़े पैमाने पर कर दिया जाएगा, इसका अंदेशा किसी को न था. एक दिन के अंतर पर दो बार में डॉलर, पाउंड, स्टर्लिंग, येन और डायट्श की तुलना में रुपए की कीमत करीब 20 फीसदी तक घटा दी गई. इसके कारण भी स्पष्ट थे—विदेशी मुद्रा का भंडार समाप्तप्राय है और भुगतान संतुलन काफी कुछ आयात की तरफ झुका हुआ है. अवमूल्यन से आयात महंगा होगा और भारतीय वस्तुएं बाहर सस्ती होंगी, जिससे उनका निर्यात बढ़ेगा.

फिर दूसरा नीतिगत फैसला हुआ जिसकी भी उम्मीद की जा रही थी. अवमूल्यन के तुरंत बाद वाणिज्यमंत्री पी. चिदंबरम ने निर्यातकों के लिए नकद सहायता योजना रद्द की क्योंकि रुपए की कीमत करीब उतनी ही घटा दी गई थी जितनी यह मदद दी जाती थी और इस एक फैसले से सब्सिडी के रूप में दी जाने वाली राशि में 2,600 करोड़ रु. की कमी हो गई. साथ ही प्रतिपूर्ति लाइसेंस की खुली खरीद-बिक्री की अनुमति भी दे दी गई. उधर, उद्योग मंत्रालय से भी नए बदलावों के संकेत दिए जा रहे थे. उद्योग राज्यमंत्री पी.जे. कुरियन ने कहा, "हम लघु उद्योगों के लिए नई नीति की घोषणा करेंगे. साथ ही हम विदेशी निवेश और (देसी कंपनियों में) विदेशियों की शेयर होल्डिंग को बढ़ावा देने के तरीकों पर भी सोच-विचार कर रहे हैं. हम पूरी उद्योग नीति पर पुनर्विचार कर रहे हैं."

हफ्ता भी नहीं बीता कि न्याय, कानून और कंपनी मामलों के राज्यमंत्री रंगराजन कुमारमंगलम एकाधिकार और प्रतिबंधात्मक व्यापार कानून को पूरी तरह समाप्त करने या इसमें कंपनियों की संपत्ति सीमा को 10 गुना बढ़ाकर 1,000 करोड़ रु. करने की बात कहने लगे. उन्होंने कहा कि सरकार किसी एकाधिकारी कंपनी को बाजार का 40 फीसदी हिस्सा रखने की इजाजत देगी जबकि अभी यह सीमा 25 फीसदी ही है. फिर उन्होंने कंपनियों को आसानी से अपना कामकाज समेट लेने की अनुमति देने संबंधी पहली घोषणा भी कर दी. उन्होंने कहा कि जिस कंपनी पर सार्वजनिक ऋण नहीं होगा, जो अभी तो एक असंभव-सी बात मानी जाती है, उसे सरकार अपना काम बंद करने की इजाजत दे देगी. टाटा केमिकल्स, टाटा टी, टाटा फर्टिलाइजर सरीखी कंपनियों के अध्यक्ष दरबारी सेठ कहते है, "चाहे या अनचाहे भारी बदलाव आ गया."

यह बात सही है. लेकिन यदि नीतियों पर सही ढंग से अमल नहीं किया गया तो अभी या बाद में इसका खामियाजा भी भुगतना पड़ेगा. अब आयात काफी महंगा हो गया है और दवा, इलेक्ट्रॉनिक्स,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंप्यूटर, रसायन, व्यावसायिक वाहन जैसे आयात पर भारी मात्रा में निर्भर उद्योगों पर इसका बुरा असर होगा. वे कीमतें बढ़ाने को बाध्य होंगे जिसका असर उपभोक्ताओं पर पड़ेगा। डॉलर महंगा होने से पेट्रोलियम और डीजल की कीमतों में 25 फीसदी तक की बढ़ोतरी हो सकती है क्योंकि भारत अपनी 40 फीसदी जरूरत के लिए आयात पर आश्रित है। कोयले की कीमतें बढ़ने वाली हैं, रेल भाड़े में बढ़ोतरी की संभावना है और उद्योगों को दी जाने वाली बिजली की कीमत भी बढ़ेगी और इन सबका असर कीमतों और मुद्रास्फीति पर पड़ेगा ही.

इससे अनेक लोग चिंतित हैं खासकर राजनेता, चाहे सत्ता पक्ष के हों या विपक्ष के. और फिर वित्तमंत्री की इस घोषणा ने उनकी चिंताएं बढ़ाई हैं कि महंगाई खत्म करने के लिए उनके पास कोई जादुई छड़ी नहीं है. दूसरी ओर मुक्त नीतियों के बदले उद्योग जगत करों का बोझ और लागत खर्च बढ़ने के अंदेशे से परेशान है. प्रीमियर ऑटोमोबाइल्स लि. के प्रबंध निदेशक विनोद दोषी कहते हैं, "सरकार को कड़वी गोलियां देनी ही चाहिए और अगर लोगों को ये पसंद नहीं आतीं तो यह दुखद बात है." उनकी बात से सब लोग शायद ही सहमत होंगे.

हरेक का समर्थन

प्रधानमंत्री नरसिंह राव कांग्रेस की उस पुरानी पीढ़ी के नेता हैं जो मानती थी कि सार्वजनिक क्षेत्र की प्रमुखता रहे और बाजार पर सरकार का पूरा नियंत्रण रहे. लेकिन लगता है कि वास्तविकताओं ने इस शख्स को बदल

डॉ. मनमोहन सिंह

'सरकार का मुख्य काम शासन करना है, नियंत्रण करना नहीं'

वित्तमंत्री मनमोहन सिंह के स्वभाव को जानने वाले उनके परिचित भी हैरान हैं कि चुप-चुप रहने वाला यह शख्स बिना लाग-लपेट के कठोर फैसले लेने वाले वित्तमंत्री की भूमिका में भी सामने आ सकता है. 59 वर्षीय मनमोहन सिंह कब से अर्थव्यवस्था के लिए कड़वी दवाएं सुझाते आ रहे थे. वे उद्योगों में प्रतिस्पर्धा बढ़ाने, विदेशी बाजार में टिकने, सार्वजनिक क्षेत्र की कार्यकुशलता बढ़ाने और बहुराष्ट्रीय कंपनियों को न्यौतने की बात कहते रहे हैं.

अभी यह कह पाना मुश्किल है कि कैंब्रिज विश्वविद्यालय में एडम स्मिथ पुरस्कार जीतने वाले और रिजर्व बैंक के गवर्नर, योजना आयोग के उपाध्यक्ष तथा चंद्रशेखर सरकार के आर्थिक सलाहकार रहे मनमोहन सिंह यह सब कर पाएंगे या नहीं. लेकिन मौजूदा स्थिति में तो वे ही इस काम के लिए उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हैं क्योंकि जैसा कि एक बड़े अधिकारी ने कहा, उनके खून में राजनीति नहीं है. लेकिन सरकार में उनके सहयोगी उसी तरह अपने वोट बैंक पर नजर रखेंगे जिस तरह मनमोहन सिंह बजट घाटों पर. इससे संभव है आर्थिक नीति में कुछ विरोधाभास दिखे.

*उन्होंने इन मुद्दों पर प्रमुख संवाददाता **शहनाज अंकलेसरिया अय्यर** से बात की. इस बातचीत के अंश:*

● भारतीय अर्थव्यवस्था में आप कौन से बुनियादी बदलाव लाना चाहते हैं?

हम विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ना चाहते हैं. हम अलग-थलग रहना नहीं चाहते. हम अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के साथ संरचनात्मक सामंजस्य स्थापित करना चाहते हैं. अब मुद्दा सामंजस्य की शर्तों का ही है.

● विदेशी निवेश के बारे में आपका क्या नजरिया है?

आज हम एक अलग स्थिति में हैं. हम सिर्फ विदेशी निवेश पर विचार ही नहीं कर रहे, इसे पाने की कोशिश भी कर रहे हैं. आकर्षक शर्तों पर बुला रहे हैं. अगर हमें अव्वल दर्जे की तकनीक चाहिए तो यह बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पास है. इसलिए हमें बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ व्यापार करना सीखना होगा. हम अधिक प्रतिस्पर्धा चाहते हैं—सिर्फ देसी कंपनियों के बीच ही नहीं, विदेशी कंपनियों से भी. भारत के बारे में मेरा जो सपना है वह अपने पैरों पर खड़े हो सकने वाले सक्षम भारत का ही है. आज से पांच साल के बाद हमें अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के आगे हाथ नहीं पसारने पड़ेंगे.

● विदेशी मुद्रा नियमन कानून (फेरा) के बारे में क्या कहेंगे?

अगर यह कानून विदेशी निवेश और आप्रवासियों के निवेश में बाधक बनता है तो हम इसकी समीक्षा करेंगे.

● क्या आपके राजनैतिक साथी आपसे सहमत हैं?

हम संकट की स्थिति का सामना कर रहे हैं. मैंने विपक्षी नेताओं से कहा है कि अनेक मोर्चों पर भारत को नए सोच की जरूरत है. सोच का पुराना तरीका हमें कहीं भी नहीं ले गया है. उलटे हमारी स्थिति बदतर हुई है. 1960 में प्रति व्यक्ति आय के मामले में भारत और दक्षिण कोरिया करीब-करीब बराबरी पर थे. आज कोरिया अमीर देशों के क्लब 'ओईसीडी' में जाने की बात कर रहा है. आज बाहर ऐसी शक्तियां बैठी हैं जो भारत की मदद करना चाहती हैं. लेकिन वे आश्वस्त हो जाना चाहती हैं कि भारत खुद अपनी मदद करना चाहता है.

● आप यह सब कैसे करेंगे? क्या इसकी शुरुआत बजट से करेंगे? आपकी प्राथमिकताएं क्या हैं?

बजट बहुत महत्वपूर्ण है. अर्थव्यवस्था जबरदस्त भुगतान असंतुलन का सामना कर रही है जो घरेलू मोर्चे पर अनेक असफलताओं से पैदा हुआ है. सरकारी खर्च अनियंत्रित रहा है और अर्थव्यवस्था की उत्पादकता दर कम रही है. अब चुनौती इस असंतुलन को इस तरह दूर करने की है कि आर्थिक स्थिरता आए, बजट घाटा नियंत्रित हो, मुद्रास्फीति बढ़ने का अंदेशा खत्म हो और विकास पर उलटा असर न हो. फिर हमें ऐसा कामचलाऊ रास्ता नहीं निकालना चाहिए जो गरीबों पर अनावश्यक भारी बोझ लाद दे. हम विकासोन्मुख रास्ता चाहते हैं.

● अल्पमत वाली सरकार में होने के कारण आप कठोर कदम उठाकर कैसे बचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया है. ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि अब उनका पाला ऐसी अर्थव्यवस्था से पड़ा है जो एकदम खस्ताहाल है और इससे उस व्यवस्था की असफलता जाहिर होती है जिसके वे चार दशकों से पक्षधर रहे हैं.

लेकिन महत्वपूर्ण सवाल तो यह है कि क्या कांग्रेस भी बदली है? क्या शासक दल भी राव सरकार के मंत्रियों द्वारा लिए गए आर्थिक फैसलों से सहमत है? राजीव गांधी ने सत्ता के शुरू के दिनों में जब बदलाव करने चाहे तब कांग्रेस ने ही उन पर अंकुश लगाया था और उन्होंने भी पुराने लोगों के आगे घुटने टेकते हुए उदारीकरण की प्रक्रिया पूरी तरह रोक दी थी. योजना आयोग के उपाध्यक्ष और राजीव के शुरुआती दिनों में उनके प्रबल आलोचकों में रहे प्रणव मुकर्जी कहते हैं, "समय अब बदल गया है और हमें नई वास्तविकताओं को स्वीकार करना ही पड़ेगा."

अभी तक तो राव को सर्वानुमति मिलती दिखती है, भले ही यह ऊपरी तौर पर हो. यह अच्छी बात है. पुरानी पीढ़ी के एक अन्य नेता, कृषिमंत्री बलराम जाखड़ ने भी खुले तौर पर नए बदलावों का समर्थन किया है. साथ ही उन्होंने किसानों से इसका

शरद सक्सेना

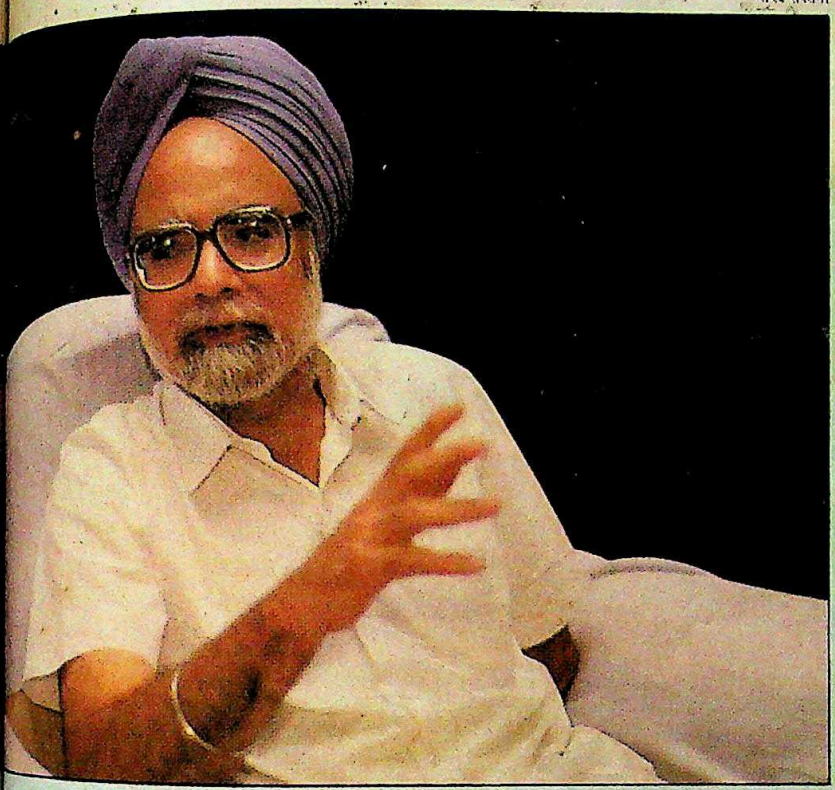

रह सकेंगे?

मैं मानता हूं कि मुझे जो कुछ जरूरी है वह सब करने का जनादेश मिला हुआ है. सचाई यह है कि हम अभी मुश्किल में हैं. और सरकारी खर्च बढ़ाए जाने का पुराना रास्ता सही राजनीति नहीं है. अच्छी राजनीति का आधार अच्छी अर्थव्यवस्था होती है. इसके अलावा आप विचारों की ताकत को भी कम नहीं आंकिए.

निहित स्वार्थों की ताकत भी कम नहीं है लेकिन हमारी सरकार का नजरिया एकपक्षीय नहीं है. मामला सिर्फ विदेशी कर्ज चुकाने में चूक जाने का ही नहीं है. असल मामला भारत की प्रतिष्ठा का है.

मैंने माकपा के अपने मित्रों से कहा कि अगर आपके पास अधिक प्रभावी तरीके हों तो मुझे बताइए. हम अभी तक नियंत्रणों की वकालत करते रहे हैं जिससे विकास तो नहीं हुआ, निष्क्रिय पूंजीवाद जरूर हो गया. लोग काम करके, उत्पादन करके अमीर होने की जगह लाइसेंस प्रणाली में उलटफेर कराके ही अमीर हो गए. यह कोई कार्यकुशलता नहीं है.

भारत को कुछेक नियंत्रणों के साथ बाजार वाली अर्थव्यवस्था चाहिए. हम एकदम उन्मुक्त बाजार की बात नहीं कर रहे, कुछ नियंत्रण रखेंगे. लेकिन सरकार का मुख्य काम शासन करना है, नियंत्रण करना नहीं. मुझे लगता है कि सरकार को वे सभी काम छोड़ देने चाहिए जो वह ठीक से नहीं कर सकती.

● ***क्या आप सरकारी खर्चे में कटौती कर सकते हैं?***

अगर अर्थव्यवस्था का विकास होगा तो सरकार सिमटती ही जाएगी.

● ***क्या आप उद्योगों को निजी क्षेत्र को सौंपने के लिए कदम उठाएंगे?***

मैं इससे इनकार नहीं करता. लेकिन मैं सार्वजनिक क्षेत्र के वैसे उद्यमों को पूरा समर्थन देता हूं जो लाभ कमा रहे हैं. मेरी पहली प्राथमिकता यही देखने की होगी कि इससे ही हालत सुधर सकती है या नहीं. इटली और फ्रांस में सार्वजनिक क्षेत्र ही कार्यकुशलता के उदाहरण है. लेकिन कुल मिलाकर हमें प्रतिस्पर्धा की गुंजाइश बढ़ानी होगी—देसी भी और विदेशी भी. भारत को निश्चित रूप से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाना होगा.

● ***क्या प्रतिस्पर्धा का मतलब बीमार उद्योगों की छंटनी होगा?***

मुझे नहीं लगता कि अपनी नीतियों से हम बहुत बड़े पैमाने पर बेरोजगारी पैदा करेंगे. तब तो सामाजिक असंतोष पैदा हो जाएगा. सबसे महत्वपूर्ण चीज सामाजिक सुरक्षा वाली व्यवस्था को दुरुस्त करना है. बीमार उद्योगों को सब्सिडी देने और बेतहाशा खर्च वाली नीति सही नहीं है. लेकिन समस्या यह है कि भले ही उद्योग बीमार हों, उद्योगपति तो बीमार नहीं हैं. मुझे नहीं लगता कि मजदूर वर्ग को आधुनिकीकरण और नई व्यवस्था का बोझ उठाने को बाध्य किया जाना चाहिए. हमें उन मजदूरों को नए सिरे से प्रशिक्षण देने का कार्यक्रम बनाना चाहिए जो नौकरी से हाथ धो बैठे हों.

● ***क्या आपकी सरकार इन सभी सुधारों के लागू हो जाने तक टिकी रहेगी?***

जब मैं अपना बजट रखूंगा और कार्यक्रम तथा रणनीति का ब्यौरा दूंगा तो इसके पक्ष में जो जनमत बनेगा वही हमारी सरकार को पांच साल चलाने का आधार मुहैया करेगा. अगर हम तीन साल भी इसी नीति पर चलते रहे तो इंका शासन करने वाली स्थायी पार्टी बन जाएगी. मैं उम्मीद करता हूं कि इस संकट की घड़ी में देश के लिए जरूरी कदम उठाने का नैतिक बल मुझमें है. मैं पीछे नहीं हटूंगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोझ सहन करने की बातें भी कही हैं. नई आर्थिक नीतियों को जाखड़ के समर्थन का खास मतलब है क्योंकि सरकार खाद पर सब्सिडी कम करेगी. वैसे, वह इसके बदले 'उपज का उचित मूल्य' देकर भरपाई की कोशिश करेगी. यह एक अच्छा बदलाव है. मानव संसाधनमंत्री अर्जुन सिंह भी, जो उनको मिले मंत्रालय से नाखुश बताए जाते हैं, बदलाव के पक्षधर हैं. वे कहते हैं, "इन सभी आर्थिक बदलावों पर विचार हो चुका है और ये हमारी पार्टी के चुनाव घोषणा पत्र का अंग हैं."

इससे प्रधानमंत्री थोड़ी बेहतर हालत में आ गए हैं. उनका न तो कोई जनाधार है, न पार्टी में बहुत समर्थन. वे वरिष्ठ नेताओं के साथ सत्ता बांटकर यथास्थिति बरकरार रखकर ही टिके हुए हैं. अब राव को अस्थिर करने की कोई भी कोशिश राजीव के बाद की कांग्रेस में उभरे साझा सहमति के माहौल को बिगाड़कर सत्ता हथियाने और पार्टी को कमजोर करने की प्रक्रिया का सूत्रपात कर देगी. दूसरी ओर राव बड़े आर्थिक बदलावों के मामले में पार्टी के मजबूत नेताओं को अपने साथ रखने की सार्थक कोशिश कर रहे हैं. मंत्रिमंडल की पहली बैठक में ही उन्होंने सारे मंत्रियों से 'कड़वी दवा' देने की प्रक्रिया में सहयोग की अपील की. कांग्रेस कार्यसमिति में भी उन्होंने आर्थिक स्थिति पर साफगोई से बात की.

लेकिन कांग्रेसी सांसद महंगाई को लेकर खासे चिंतित हैं. उनमें से अधिकांश का मानना है कि विपक्ष इस स्थिति का लाभ उठा लेगा. तमिलनाडु के एक सांसद कहते हैं, "कीमतें बढ़ेंगी ही और इससे हमारी पार्टी की विश्वसनीयता पर असर पड़ेगा." लेकिन अभी इन बातों का राव पर असर होता नहीं लगता. एक बात यह भी कही जा रही है कि अगर मनमोहन सिंह की कड़वी दवाएं राजनैतिक रूप से परेशानी पैदा करती हैं तो उन्हें तुरंत बलि का बकरा बना दिया जाएगा. फिलहाल तो डॉ. मनमोहन सिंह की आर्थिक नीतियों की पुनर्रचना की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि राव सियासत का खेल कितनी नफासत से खेलते हैं और वे, उनकी पार्टी तथा विपक्ष वित्तमंत्री का कितने समय तक समर्थन करते हैं. अभी तो मामला ठीक है. ग्रेसिम इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष आदित्य बिड़ला कहते हैं, "इन लोगों (राव और मनमोहन सिंह) ने कुछ कदम उठाए हैं जिनका समर्थन होता दिखता है." लेकिन समर्थन हो या नहीं, सुधारों के अलावा अब

किसे जरूरत है आयात की?

नाममात्र शुल्क दरें, मूल्य का 1985 वाला %

	अंतर्वर्ती वस्तुएं	पूंजीगत वस्तुएं	उपभोक्ता वस्तुएं	निर्मित वस्तुएं
हंगरी	14.2	15.0	22.6	20.9
युगोस्लाविया	18.0	20.7	20.0	19.0
अर्जेंटीना	21.2	25.0	21.9	22.9
मोराक्को	21.6	18.1	43.0	27.3
फिलीपींस	21.8	24.5	39.0	28.0
मेक्सिको	25.5	23.5	32.2	24.7
थाइलैंड	27.8	24.8	8.5	33.6
तुर्की	29.4	54.9	55.3	37.1
चीन	75.0	73.8	127.3	89.8
पाकिस्तान	78.9	62.5	130.7	91.2
बांग्लादेश	97.9	80.5	116.1	100.8
भारत	146.4	107.3	140.9	137.7

स्रोत: विश्व बैंक

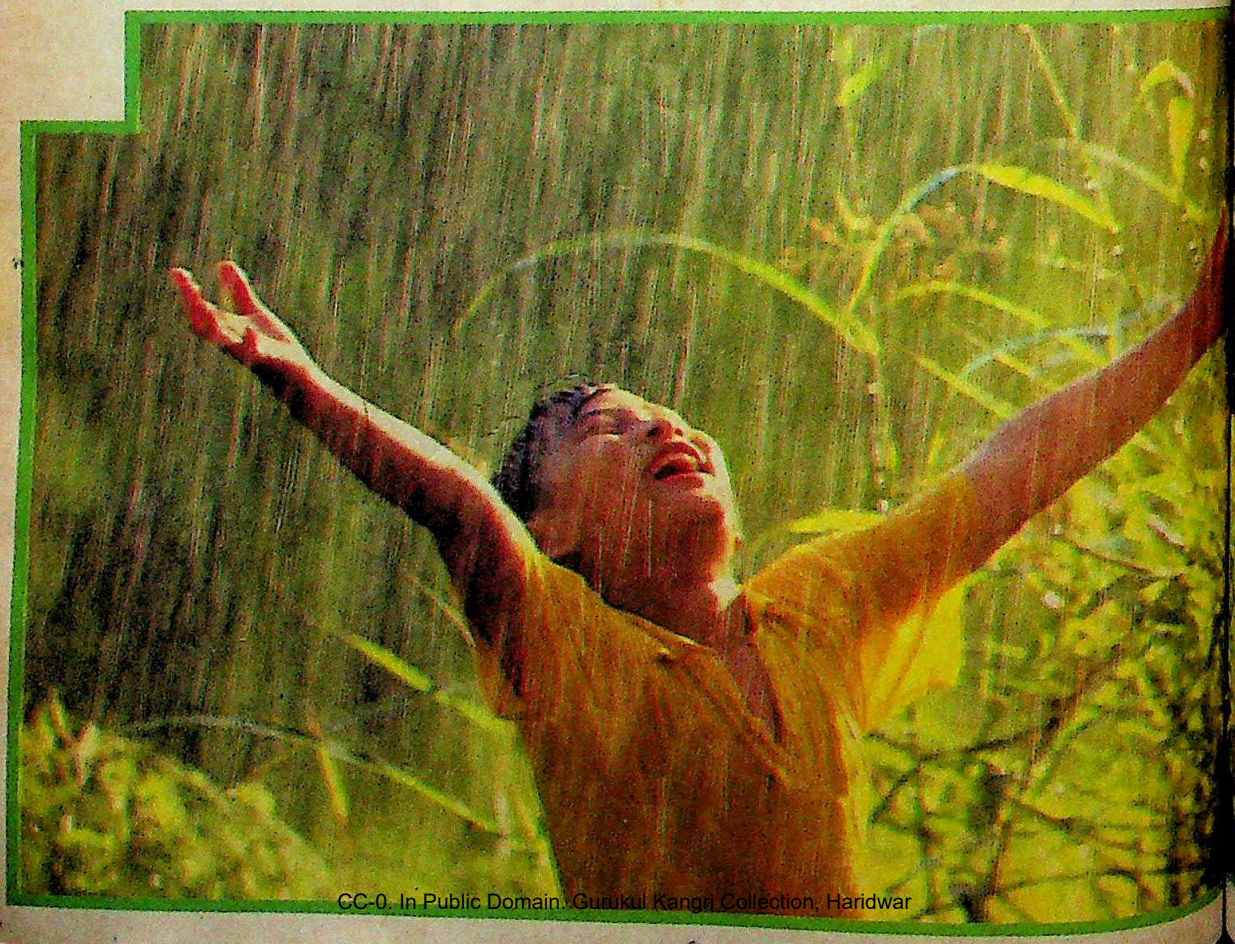

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या निर्यात की? भारत को नहीं

निर्मित वस्तुओं का निर्यात सकल घरेलू उत्पाद (1988) के % के तौर पर

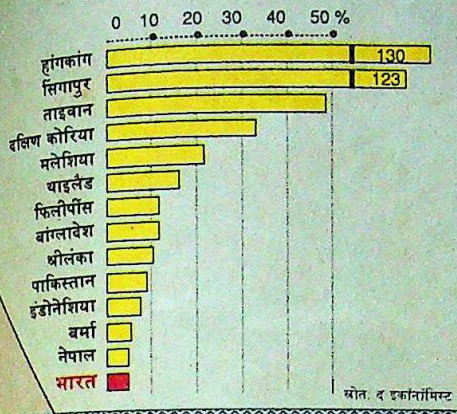

स्रोत: द इकानॉमिस्ट

निर्मित वस्तुओं की निर्यात मात्रा

औसत वार्षिक वृद्धि% 1980-85	1985-88
9.6	14.0
5.4	26.1
13.3	28.1
13.0	23.9
17.7	13.8
15.4	27.8
4.5	7.7
2.6	10.5
21.2	2.6
6.4	17.4
146.9	17.2
उपलब्ध नहीं	उपलब्ध नहीं
25.9	0.1
0.1	**12.8**

अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचने और नई नीतियों की कामयाबी के लिए आयात की बाधाओं को हटाकर निर्यात बढ़ाया जाना चाहिए

अंतरराष्ट्रीय कर्जदाता संस्थाएं "अच्छा कर्जदार बने रहने" और रुपए के अवमूल्यन व अनुदानों में कटौती जैसे कदमों से "आर्थिक असंतुलन ठीक करने" की भारत की इच्छा से काफी "प्रभावित हैं." लेकिन फिलहाल हर कोई स्थिति पर नजर रखना चाहेगा. यहां तक कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की भी यही स्थिति है, जिसके पास भारत खुद 1.75 से 2 अरब डॉलर (4,550-5,200 करोड़ रु.) के कर्ज के लिए गया था. लेकिन भारत की नीतियां अगर रुपए के अवमूल्यन, उद्योगों के निजीकरण व विनियंत्रीकरण और अर्थव्यवस्था के विमुद्रास्फीतिकरण जैसी मुद्रा कोष द्वारा सुझाई खुराकों से हल्की हुई तो कर्ज मिलना मुश्किल हो जाएगा.

उदारीकरण की तो खैर छोड़िए, सरकार को अपने बजट घाटे तक में कटौती करनी होगी. विशेषज्ञों का कहना है कि यह तभी हो सकता है जब सरकार 3,000 करोड़ रु. से ज्यादा का नया राजस्व न बटोरे, अपने खर्च में भी भारी कटौती करे. निर्यातों पर दिए जाने वाले अनुदान में तो कटौती कर दी गई है और अब नजला उर्वरक और खाद्य पदार्थों पर गिरने की संभावना है. भारतीय

ईर कोई रास्ता नहीं बचा है.

आगे का रास्ता

सरकार ने जो आर्थिक चमत्कार करने का वादा किया है, उसे वह किस तरह पूरा करेगी या उसे किस तरह पूरा करना चाहिए? या उदाहरण के लिए वह कैसा बजट पेश करेगी? वाशिंगटन में विश्व बैंक के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार

BPL

बरखा बहार में मस्त मल्हार

संगीत की बौछार में गुम. बीपीएल सॉन्यो की संगीत फुहार में हम तुम. सॉन्यो टेक्नॉलॉजी की नृत्य कला की धुन. कैसेट रिकार्डर, कम्पोनेंट सिस्टम, मोनो व स्टीरियो टू-इन-वन की घनघोर रुनझुन. डिटेचेबल स्पीकरों की गुंजन. हाई स्पीड डबिंग और, सब वो. मौज के लिये चाहिये जो. आइये, बीपीएल सॉन्यो के संगीत की बरसात में. झूमे-गायें साथ-साथ में.

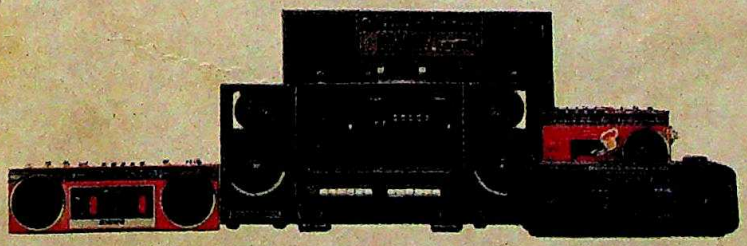

BPL · SANYO

Two-in-Ones

बरसों संग मधुर तरंग

Mudra:Blr:BPL:347:91:HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियंत्रणों से मुक्ति

अर्थव्यवस्था की हालत में सुधार तभी हो सकता है अगर सरकार अवमूल्यन के बाद नियंत्रण ढीला करने की दिशा में ताबड़तोड़ कदम उठाए और मुद्रास्फीति को काबू में रखे

हालत में सुधार

अल्पावधि में, नियंत्रण ढीला करने के साथ शुल्क और सरकारी खर्चों में कटौती पीड़ादायक होगी. पर देश अगर तीन साल इस राह पर चलता रहा और निर्यात बढ़ गया तो कुल मिलाकर विकास दर फिर 5 फीसदी से अधिक पर लौट जाएगी.

अवमूल्यन

अवमूल्यन से कीमतें बहुत अधिक बढ़ जाएं और दूसरा अवमूल्यन करना पड़े, इसमें कामयाबी पाने के लिए इससे पहले ही निर्यात तेजी से बढ़ना चाहिए. कीमतें इसलिए बढ़ेंगी कि आयातित सामान रुपए के हिसाब से ज्यादा मंहगा हो जाएगा.

निर्यात

करीब 20 फीसदी अवमूल्यन निर्यात को आगे बढ़ाएगा लेकिन आवश्यक वस्तुओं के आयात की रुपए के हिसाब से अधिक कीमतों के नकारात्मक असर को खत्म करने के लिए ही निर्यात को करीब 4,000 करोड़ रु. बढ़ाना होगा.

आयात

भारत का करीब 2/5 आयात तो होना ही है जिसमें पेट्रोलियम उत्पाद, औद्योगिक कच्चा माल, खाद्य तेल आदि आते हैं. रुपए के हिसाब से इनकी कीमतें 20 फीसदी तक चढ़ सकती हैं.

नियंत्रण से मुक्ति

लालफीता और नौकरशाही जैसी बाधाएं दूर करने से अनुमानित मंद गति से उभरने के लिए उद्योग की क्षमता बढ़ेगी. फिर भी केंद्र सरकार इस कदर विशालकाय है कि इसके 42 लाख कर्मचारी वेतन और भत्तों में ही सालाना 12,000 करोड़ रु. डकार जाते हैं.

महंगाई

अवमूल्यन की कामयाबी सीधे कीमतों से जुड़ी हुई है. अगर कीमतें बहुत ज्यादा बढ़ जाती हैं तो निर्यात को अप्रतियोगी बनने से रोकने के लिए रुपए का और तेजी से अवमूल्यन करना होगा. लेकिन अधिक कर और रेल माल भाड़े, कोयले और स्टील की कीमतों में वृद्धि 1991-92 में मुद्रास्फीति को 10 फीसदी से अधिक रख सकती है.

उद्योग

मुद्रास्फीति से चूंकि दूसरे क्षेत्रों में आयात पर दबाव पड़ेगा इसलिए कंप्यूटर, ऑटोमोबाइल, टेलीविजन सेट और पेट्रोरसायन जैसे आयात पर निर्भर उद्योगों की गति मंद पड़ जाएगी.

अर्थव्यवस्था

वित्तीय घाटा कम करने के लिए जरूरी अधिक कर और खर्चों में कटौती से मांग कम हो जाएगी. रिजर्व बैंक चूंकि मुद्रा प्रवाह में भी कमी कर रहा है इसलिए अगले दो वर्षों में अर्थव्यवस्था का विकास कम गति से —शायद 2.5 से 4 फीसदी के बीच ही होगा (अब तक के 5 फीसदी से अधिक के मुकाबले)

सरकारी राजस्व

आयात पर निर्भर उद्योग की गति मंद पड़ जाने के कारण उत्पादन घटने और शुल्क कटौती के चलते सरकारी राजस्व में कमी आ सकती है. करीब 37 फीसदी सरकारी राजस्व सीमा शुल्क से हासिल होता है.

बजट

राजस्व में कमी आने का मतलब है अधिक कर या खर्च में कटौती. राष्ट्रीय व्यावहारिक आर्थिक शोध परिषद का कहना है कि सरकार को वित्तीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद के 6.5 फीसदी पर बनाए रखने के लिए 2,200 करोड़ रु. के नए कर लगाने होंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ऐतिक विकास बैंक के अध्यक्ष ...एन. नाडकर्णी का मानना है ...कि मुझे लगता है कि अगले ...बजट में उर्वरकों पर अनुदान भी ...बढ़ता रहेगा. खाद्यान्न के अनुदान ...और दुरुपयोग को रोकने के लिए ...प्रशासनिक मशीनरी को कसना ...होगा." दोनों बातें एक-दूसरे से ...जुड़ी हैं. कटौती कुछ इस तरह हो ...सकती है—सरकार उर्वरकों पर ...1,000 करोड़ रु. के मौजूदा ...अनुदान को धीरे-धीरे कम कर ...सकती है.

...इसके साथ ही उर्वरकों की ...कीमत में वृद्धि की भरपाई में ...लागों की वसूली कीमत भी ...बढ़ानी पड़ेगी. और तीसरे चरण ...में सरकार खाद्यान्नों पर मौजूदा ...1,500 करोड़ रु. के सालाना ...अनुदान में कटौती कर सकती है. ...इसके तहत 2,000 रु. प्रतिमाह से ...ज्यादा कमाने वाले परिवारों को ...राशन की दुकान से सामान लेने ...से रोका जा सकता है.

...सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों ...का निजीकरण करके भी बहुत ...कुछ बचत की जा सकती है. ...मारुति लिमिटेड के अध्यक्ष व प्रबंध ...निदेशक और भाजपा के ...राज्यसभा सदस्य दीपेन्द्र साहू का ...कहना है कि "इस दिशा में काफी ...कुछ होगा. पर यह सब धीरे-धीरे ...होगा." लेकिन निजीकरण अगर ...धीरे-धीरे चला तो भारतवासियों के लिए ...फायदेमंद होगा. सार्वजनिक क्षेत्र ...में 99,315 करोड़ रु. के पूंजी ...निवेश पर पिछले साल मात्र ...781 करोड़ रु. का फायदा हुआ. ...इसमें से पेट्रोलियम कंपनियों को ...निकाल दीजिए तो फायदा 881 ...करोड़ रु. ही रह जाता है. वह भी ...तब जब उनके उत्पादों की कीमत सरकार ...तय करती है. एक तरीका यह है कि ...सार्वजनिक क्षेत्र की उत्पादकता बढ़ाई जाए ...और समय पूर्व अवकाश जैसे उपायों से कुछ ...इकाइयां बंद कर दी जाएं. एक तरीका यह ...भी है कि इन इकाइयों के शेयर जनता को ...बेचे जाएं, या पूरी इकाइयां ही बेच दी ...जाएं. सिर्फ वही इकाइयां नहीं जो नुकसान ...में चल रही हैं बल्कि वे भी जिन्हें निजी क्षेत्र ...शायद बेहतर ढंग से चला सकता है.

बदलाव कारगर होंगे?

इसी वर्ष मई में पत्रिका 'इकॉनॉमिस्ट' ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर एक सर्वेक्षण रिपोर्ट प्रकाशित की थी. इसमें इस बात पर बल दिया गया है कि सरकार को "नियंत्रणों और अनुग्रहों की उस बेहद जटिल व्यवस्था को समाप्त कर देना चाहिए जो पिछले चार दशकों से भारतीय जनजीवन के प्रत्येक पहलू को कुप्रभावित किए हुए है. पहला और सबसे जरूरी कदम यह होगा कि इस व्यवस्था को एक बेड़ी के रूप में देखा जाए, जो कि वह वस्तुतः है." लेख में आगे लिखा है, "दुखद बात यह है कि भारत अभी भी इस बात को महसूस नहीं कर पाया है."

सर्वेक्षण को प्रकाशित हुए दो महीने हो चुके हैं और आज की स्थिति के मद्देनजर यही तथ्य उजागर होता है कि इसमें कही गई बातें अब लोगों की समझ में आ रही हैं. पिछले पखवाड़े के दौरान मंत्री और नौकरशाह भारत और विश्व के सामने लगातार यह दोहराते रहे कि उन्हें इस बात का एहसास हो गया है कि पहले की नीतियां कहां गलत साबित हुई हैं.

हो सकता है कि भारत एकाएक उदार देश हो जाए और बहुराष्ट्रीय कंपनियों को बेहिचक आने दे. सरकार विदेशी निवेशकों को 51 फीसदी हिस्सेदारी देने का भी एलान कर सकती है. क्योंकि वर्षों से उनकी यह चाह रही है. रॉयल्टी के रूप में किए जाने

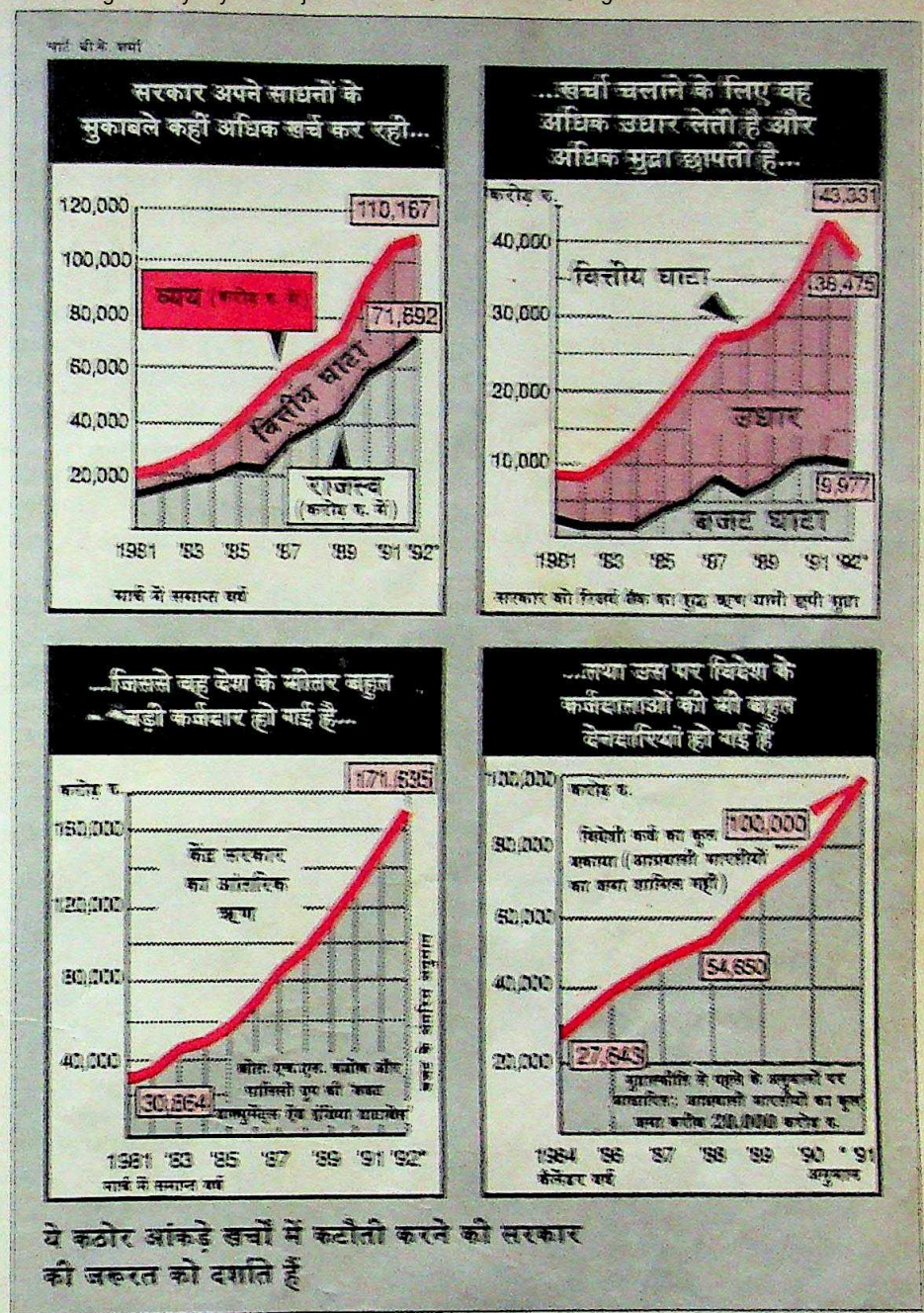

ये कठोर आंकड़े खर्चों में कटौती करने की सरकार की जरूरत को दर्शाते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले भुगतान को भी अभी की 5 फीसदी की दर से बढ़ाया जा सकता है ताकि तकनीक के हस्तांतरण को और अधिक आकर्षक बनाया जा सके. बहुत संभव है कि इन सब का नतीजा बहुत समय तक सामने न आए. येल विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्री प्रोफेसर टी एन. श्रीनिवासन कहते हैं, "उदारीकरण की घोषणा भर से कुछ नहीं होने वाला. हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि तात्कालिक लाभ नहीं मिलने की स्थिति में भी ये बदलाव जारी रहें." वजह: देश-विदेश सभी जगहों पर लोग यही परख रहे हैं कि सरकार उदारीकरण के इरादों के प्रति कितनी गंभीर है.

मिसाल के तौर पर जापानियों का नजरिया लें. 'द एशियन टाइगर्स' कहे जाने वाले विश्व के सबसे बड़े निवेशकों ने जापानी निवेश से काफी लाभ कमाया है. जापानी निवेशक जापानी बैंकों के कहने पर भारत भी आए थे पर यहां निवेश की संकीर्ण गुंजाइश ने उन्हें जरा भी आकर्षित नहीं किया. नौकरशाही की तरफ से होने वाली रोक-टोक, देरी और फिर विदेशी मुद्रा अधिनियम (फेरा) ने उन्हें डरा दिया.

इसमें एक और भी पहलू शामिल है. भारत स्थित सनवा बैंक के महाप्रबंधक मिशिहीरो शिनोहारा कहते हैं, "जापानी व्यापारी 100 फीसदी हिस्सेदारी चाहते हैं क्योंकि उनका मानना है कि उनके स्तर का उत्पादन किसी भारतीय कंपनी के बस की बात नहीं है. भारत और जापान में उत्पादन के स्तर में काफी अधिक अंतर है."

शिनोहारा की बातों में दम है. भारतीय उत्पाद विदेशों में मूल्य के हिसाब से प्रतिस्पर्धा में तो टिकते हैं. और यह भी रुपए के अवमूल्यन के कारण ही संभव हो पाया है. लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर की वस्तुएं बनाने के मामले में भारत अभी बहुत पीछे है. मौजूदा हालात में तो लगता नहीं कि आप्रवासी भारतीय भी निवेश के लिए तैयार होंगे. वित्त मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, "उन्हें भारत से प्यार हो सकता है पर उनका धन उन्हें ज्यादा प्यारा है."

सरकार राजनैतिक उठापटक, जड़ नौकरशाही और निजीकरण तथा प्रतिस्पर्धा के कारण छंटनी की स्थिति में उग्र होने वाली मजदूर यूनियनों से कैसे निबटती है, यह खर्चों में कटौती और संसाधनों के प्रबंधन से ज्यादा महत्वपूर्ण है. और इस

विपक्ष

हां भी, ना भी

जहां तक विपक्ष का सवाल है, सब कुछ जरूरत के मुताबिक चल रहा है. जैसे देश को स्थिरता देने के नाम पर संसद में एक अल्प बहुमत वाली सरकार को समर्थन देना. मगर विपक्ष में होने के कारण अर्थव्यवस्था को फिर से पटरी पर लाने की इंका सरकार की कोशिशों में रोड़े भी अटकाना. वोट बैंकों को बचाए रखने की जरूरत का ध्यान रखना. उनके हिसाब से रुपए के अवमूल्यन की जरूरत है भी, नहीं भी है. फिर संकट से मुक्ति के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के द्वार खटखटाने की जरूरत तो है लेकिन उसकी शर्तें स्वीकार नहीं और अंततः अर्थव्यवस्था को उदार बनाने की आवश्यकता.

समस्या यह है कि विपक्षी पार्टियां सभी बातों पर सहमत हैं. और उनकी यही आम राय इंका के साथ खटपट का कारण बन सकती है, खास तौर से लोकसभा के बजट अधिवेशन के दौरान. भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी के अनुसार, उनकी पार्टी "दूसरी पार्टियों की तरह आदर्श रूप में उदारीकरण के विरुद्ध नहीं है." लेकिन लोकसभा में विपक्ष के नेता अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के पास जाने के सरकारी तरीके के भी आलोचक हैं. "उन्होंने बिना किसी हील-हुज्जत के मुद्रा कोष की हर बात मान ली और बातचीत की जरा भी कोशिश नहीं की."

जनता दल के नेता और पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह कहते हैं, "सरकार, उद्योगों, श्रमिकों और राजनैतिक पार्टियों के बीच विचार-विमर्श होना चाहिए. जरूरी नहीं कि टकराव हो." लेकिन अभी की परिस्थिति में तो लगता नहीं कि पूर्व वित्तमंत्री वी.पी. सिंह का व्यापक सहमति का सिद्धांत काम कर पाएगा और अर्थव्यवस्था में नई जान आ पाएगी.

वैसे महत्वपूर्ण बात यह है कि राष्ट्रीय मोर्चा के वामपंथी सहयोगी हालात से पूरी तरह सहमत नहीं हैं. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी तो मुद्रा कोष से कर्ज लेने की बात से सहमत है पर वह रुपए के अवमूल्यन के सख्त खिलाफ है. भाकपा नेता इंद्रजीत गुप्त कहते हैं, "सबसे बड़ा नुकसान भुगतान संतुलन के बारे में होगा." गुप्त पूछते हैं कि "अवमूल्यन किस तरह सुधार लाएगा?" उनका कहना है कि भारत से खरीदने के लिए दूसरे देशों के पास बहुत विकल्प नहीं है. वामपंथी पार्टियां भी भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की मौजूदगी से खुश हैं, बशर्ते कि वे नई तकनीक लाएं. लेकिन वे खाद्य पदार्थों पर मिल रही सब्सिडी घटाने के विरुद्ध हैं.

कई मायनों में विपक्ष की सोच इंका के कई तबकों जैसी ही है. और किसी भी मायने में सुधार के लिए उठाए गए कदमों से बड़ा वर्ग आहत होगा—चाहे वह सब्सिडियों में कटौती के कारण हो, या फिर प्रतियोगिता के कारण. सभी वर्गों को संतुष्ट कर पाना कठिन होगा. गरीबों के साथ अमीरों पर भी गाज गिरेगी.

इस बात में जरा भी संदेह नहीं कि इंका को समर्थन देना महंगा सौदा साबित हो सकता है. दुबाशी कहते हैं, "राजनीति के बाजार में अपने ग्राहकों का खयाल तो रखना ही पड़ता है." लेकिन यह एक ऐसा दृष्टिकोण है, जिससे देश को कुछ लाभ नहीं होने वाला.

—अरुण चाको और शहनाज अंकलेसरिया अय्यर

"सरकार, उद्योगों, श्रमिकों और राजनैतिक पार्टियों के बीच विचार-विमर्श होना चाहिए"

वी.पी. सिंह, जनता दल

"सरकार ने बिना किसी हील-हुज्जत के मुद्रा कोष की हर बात मान ली, बातचीत की कोशिश नहीं की"

एल.के. आडवाणी, भाजपा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ता को लेकर बड़ी समस्याएं जन्म ले सकती हैं.

मिसाल के तौर पर, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी से संबद्ध मजदूर यूनियन, सीटू के नाम से जानी जाती है, और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व वाली यूनियन ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस, दोनों ही सरकार के नए प्रयासों के खिलाफ आंदोलन छेड़ने की कोशिश कर रही हैं. मजदूर नेता, भाकपाई सांसद चतुरानन मिश्र नीतियों में हो रहे परिवर्तनों को "आत्मनिर्भरता के सिद्धांत का सफाया करने वाला" बताते हैं.

यह भी संभावना है कि नौकरी गंवाने की आशंका में नौकरशाह भी लालफीताशाही आदि खत्म करने के प्रयासों में अड़ंगा लगाएं. दूसरी तरफ उन नेताओं के लिए भी समस्या उठ खड़ी होगी, जो कहते तो यह हैं कि वे बदलाव की नीतियों का समर्थन करते हैं पर हकीकत में अपने वोट बैंकों के छिन जाने के भय से आतंकित हैं. इसी तरह लाइसेंस-परमिट राज में परवान चढ़े लोग भी हैं जिन्हें स्वदेशी बाजार में शुरू होने वाली प्रतिस्पर्धा की

नेपथ्य के लोग

अभूतपूर्व अफरातफरी

सरकार के वरिष्ठ अर्थशास्त्रियों और अधिकारियों ने रुपए की विनिमय दर, विदेशी मुद्रा विनियमन कानून (फेरा) और व्यापार कानूनों में बदलाव की सिफारिशें करने वाली अध्ययन रिपोर्टें तैयार करने पर महीनों मेहनत की. फिर भी उन्होंने देखा कि दो सरकारें उनकी रिपोर्टों पर धूल ही बैठाती रहीं. लेकिन अब उन सबसे एकदम दौड़ लगाने को कह दिया गया है. ऐसे मुद्दों पर आम तौर पर जो मंत्री सवालिया निगाहें उठाते थे आज वही रफ्तार से फैसले कर रहे हैं.

आज राजधानी में सबसे गहमागहमी का केंद्र बने वित्त मंत्रालय में कुछेक लोगों की टोली युद्ध के सेनानायकों जैसी लग रही है. मंत्रालय में मुख्य आर्थिक सलाहकार दीपक नैयर अपने दफ्तर से मध्य रात्रि में तेजी से निकलकर वित्तमंत्री मनमोहन सिंह के पास बैठक के लिए जाते हुए कहते हैं, "हफ्ते भर से अपने बच्चों से मैं नहीं मिल पाया हूं."

नीति संबंधी इस तेज बदलाव का असर अन्य मंत्रालयों पर भी पड़ा है. उद्योग मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी कहते हैं, "इस सबके बारे में एक तरह की अविश्वसनीयता का माहौल भी है." जैसे, 1988 में निर्यात संबंधी एक विशेषज्ञ दल का सुझाव था कि आठवीं योजना में यथार्थवादी विनिमय दर तय हो और प्रतिपूर्ति लाइसेंस को आसानी से खरीदने-बेचने की सुविधा होनी चाहिए, जिसकी घोषणा अब वाणिज्यमंत्री पी. चिदंबरम ने कर भी दी है. पिछली सरकार में वाणिज्य सचिव की हैसियत से मोंटेक सिंह अहलूवालिया ने इस नीति के 20 से अधिक प्रारूप तैयार किए थे. मंत्रालय के एक अधिकारी कहते हैं, "इसे मंजूरी मिल गई थी. पर कुछ हुआ नहीं. अब 48 घंटों में ही सारा कुछ हो गया."

बहरहाल, अवमूल्यन के मामले में तो अधिकारियों को पीटीआई के न्यूजफ्लैश से ही खबर मिली. इस बारे में प्रधानमंत्री, वित्तमंत्री, वित्त सचिव एस.पी. शुक्ल, मुख्य आर्थिक सलाहकार दीपक नैयर और रिजर्व बैंक के गवर्नर एस. वेंकिटरमणन के बीच हुई उच्चस्तरीय बैठक में फैसला किया गया.

और इन सबके नीचे-नीचे अनिश्चितता की आग भी सुलग ही रही है. अधिकारियों को पता नहीं कि कब उनका सिर कलम हो जाए. ये लोग दो संभावनाओं के बीच झूल रहे हैं. पहला तो यह कि नीतियों पर अमल कराने भर के लिए उनका उपयोग कर लिया जा रहा है और बाद में उन्हें दरकिनार कर दिया जाएगा. दूसरा यह कि उन्हें अच्छे काम के कारण ही पुराने पदों पर रखा गया है. परदे के पीछे रहकर काम करने वाले ये मुट्ठी भर लोग भले ही नीतिगत बदलाव की रफ्तार और अपनी उपयोगिता बढ़ने से खुश हों लेकिन उनकी नजर देश के आर्थिक भविष्य के साथ ही अपने कैरियर पर भी लगी है. दोनों में उठाव-गिराव साथ-साथ होना है.

शहनाज अंकलेसरिया अय्यर

दीपक नैयर

पिछली तीन सरकारों के मुख्य आर्थिक सलाहकार नैयर ने अपने शोध प्रबंध में तर्क दिया था कि साठ के दशक में भारत के निर्यात में हुई वृद्धि का रिश्ता रुपए के अवमूल्यन से नहीं, विश्व व्यापार में आए उफान के कारण था.

मोंटेक सिंह अहलूवालिया

वाणिज्य सचिव. नीतियों में उदारता के प्रबल पक्षधर. 1990 की अपनी टिप्पणी के लिए, जिसमें अर्थव्यवस्था में भारी उलटफेर और इसे नियंत्रणों से मुक्त करने की सिफारिश की गई थी, पर्याप्त आलोचना सह चुके हैं.

ए.एन. वर्मा

प्रधान सचिव. पहले उद्योग सचिव थे. अनुभवी अधिकारी और औद्योगिक नीति में मौजूदा सुधारों की वकालत करने वालों में प्रमुख. नई औद्योगिक नीति के नाम से इसे वी.पी. सिंह सरकार ने पेश किया था.

एस.पी. शुक्ल

वित्त सचिव. पिछली सरकार में वाणिज्य सचिव रहते हुए 'गैट' बातचीत में मुख्य भागीदार. आर्थिक बदलावों का विरोध करने के लिए विख्यात पर अभी नए आर्थिक सुधारों को आगे बढ़ाने के प्रति पूर्ण निष्ठावान.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

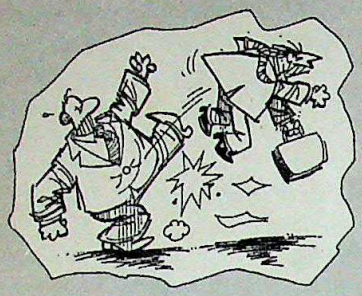

जो बेकार हो जाएंगे

जब अर्थव्यवस्था नियंत्रणों से मुक्त होने की दिशा में बढ़ती है तो कुछ संगठन बेकार हो जाते हैं. जैसे:

मुख्य आयात-निर्यात नियंत्रक: करीब 300 कर्मचारियों की फौज आयात को नियंत्रित और निर्यात संवर्द्धन, योजनाओं को लागू करती है. यहां प्रति वर्ष करीब दो लाख आवेदन आयात लाइसेंस और निर्यात सब्सिडी के दावे के लिए आते हैं. अब 'टेप' योजना के माध्यम से आयात को निर्यात से जोड़ देने से इस दफ्तर का काम आधा रह गया है.

आपूर्ति एवं निबटान महानिदेशालय: यह सरकारी विभागों के लिए स्टेशनरी एवं साज-सामान की करीब 3,000 करोड़ रु. की खरीद और इनके वितरण का काम करता है. यह काम संबद्ध विभाग खुद ही कर सकते हैं.

राज्य व्यापार निगम और धातु एवं खनिज व्यापार निगम: खाद, खाद्य तेल, लोहा एवं इस्पात और अन्य अलौह धातुओं के थोक आयात के लिए सरकार की सरणीकरण एजेंसियां हैं. ये खूब मुनाफा देती हैं क्योंकि इन्हें मुनाफा कमाने का अधिकार खुद सरकार ने दिया है. 6,000 से अधिक कर्मचारियों की फौज के साथ और शाहखर्ची करके ये एजेंसियां यह काम ढिलाई से करती हैं. उदारीकरण के बाद राव्यानि और धाखव्यानि तभी टिक सकते हैं जब वे मुनाफाखोरी बंद कर दें.

तकनीकी विकास महानिदेशालय: यह तकनीक के आयात, आयात के सामान का स्थानापन्न ढूंढ़ने और विदेशी गठबंधनों के मामले में सरकार के मुख्य सलाहकार संगठन का काम करता है. यह नया उद्यम शुरू करने वालों के रास्ते में रोड़ा अटकाने का काम ही करता रहा है. इसे हर साल 55,000 आवेदन मिलते हैं. लाइसेंस नीति में नरमी के साथ अब उद्यमी खुद ही इस दफ्तर का काम निबटा सकते हैं.

पूंजी निर्गम नियंत्रक: कंपनियों के नए निर्गमों के बारे में फैसला करता है. पिछले 12 महीनों में इसने 9,500 करोड़ रु. के नए निर्गमों की अनुमति दी. अभी ही प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड द्वारा बाजार पर नजर रखने का काम शुरू करने के साथ यह संस्था पहले ही करीब-करीब बेकार हो गई है.

संभावना में अपने एकाधिकार का खात्मा नजर आता है.

लेकिन देश के हालात में सुधार इस पर निर्भर है कि सरकार अपनी नीतियों को किस तेजी से कार्यरूप दे पाती है. उसे संबंधित मामलों को भी संभालना होगा. उदाहरण के लिए, अवमूल्यन को कामयाब बनाने के लिए जरूरी है कि मूल्यवृद्धि से पहले निर्यात को तेजी से बढ़ावा दिया जाए क्योंकि आयातित वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि से कीमतों में भारी तेजी का पूरा खतरा है. और इसके कारण एक बार फिर अवमूल्यन की नौबत आ सकती है. 20 फीसदी अवमूल्यन से निर्यात तो बढ़ेगा. लेकिन पेट्रोलियम उत्पाद, उद्योगों के काम आने वाला कच्चा माल और खाद्य तेलों आदि जरूरी चीजों के आयात पर रुपए के खर्च के चलते पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों को नाकाम करने के लिए निर्यात का स्तर 4,000 करोड़ रु. के आसपास ले जाना होगा. अगर यह संभव हो जाता है, तब भी सीमा शुल्क से होने वाली राजस्व आय में आने वाले घाटे और सामान ढुलाई खर्च, कोयला और इस्पात की कीमतों में वृद्धि से महंगाई बढ़ सकती है. इसके संभावित दुष्प्रभावों से बचने के लिए सरकार को अपने खर्च में कटौती करनी होगी ताकि अतिरिक्त राजस्व की उगाही एक सीमा तक ही करनी पड़े. लेकिन खर्च को घटाने का अर्थ सरकार के आकार को कम करना भी होता है. लिहाजा, एकमात्र रास्ता यही है कि आलोचनाओं की परवाह किए बिना नई व्यवस्था को व्यापक पैमाने पर इस तेजी से लागू किया जाए कि अर्थव्यवस्था के और नए क्षितिज खुलें, और साथ ही साथ निर्यात को युद्ध स्तर पर इस तरह बढ़ाया जाए मानो सारा दारोमदार इसी पर हो. प्रधानमंत्री को आर्थिक सलाह देने वाली परिषद के अध्यक्ष बिमल जालान कहते हैं, "आगे रास्ते में हिम्मत हारने से हालात और भी बेकाबू और बदतर हो जाएंगे."

तो क्या ये परिवर्तन कारगर सिद्ध होंगे? आज वित्तमंत्री और उनके सहयोगी इस आस में हैं कि इनका लाभ जरूर मिलेगा. भविष्य में इनकी सफलता के प्रति उनका दावा भी विश्वास से भरा है. लिहाजा, अगर नीतियां सफल होती हैं तो देश पर मंडराता संकट टल जाएगा. लेकिन नाकामी हाथ लगती है तो भारत भारी मुसीबत में फंस जाएगा. इसलिए मेहनत के सिवा दूसरा रास्ता नहीं है.

पिंजड़े में बंद बाघ

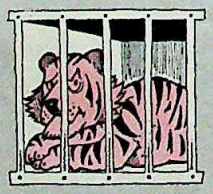

पत्रिका 'इकॉनॉमिस्ट' ने मई 1991 के अंक में भारतीय अर्थव्यवस्था पर एक सर्वेक्षण रिपोर्ट प्रकाशित की है. इसमें भारत को 'पिंजड़े में बंद बाघ' की संज्ञा दी है और इस देश की क्षमताओं पर देश की जनता से ज्यादा भरोसा जाहिर किया गया है. रिपोर्ट का एक उद्धरण:

आगामी दशक में भारत गरीबी दूर करने की दिशा में तेज प्रगति कर सकता है. भारतीय लोग बड़े चाव से कहा करते हैं कि पूर्व एशिया के जापान और दक्षिण कोरिया जैसे उन्नतिशील अर्थव्यवस्था वाले देश अगर बाघ हैं तो भारत विशालकाय हाथी है जो धीरे-धीरे, सोच-समझकर मगर मजबूती और मकसद के साथ कदम-दर-कदम बढ़ाता है (भारतीय पौराणिक संदर्भ के अनुसार भी हाथी एक शुभ प्रतीक है, गणेश से साम्य के कारण). विकास की हिंदू दर की तरह ही यह मान्यता भी भ्रामक है.

अगर भौगोलिक प्रतीकों की बात करें तो यह कहना ज्यादा सटीक होगा कि भारत पिंजड़े में बंद बाघ जैसा है. इस बाघ को मुक्त कर दिया जाए तो यह एशिया के दूसरे बाघों जैसा ही स्वस्थ और स्फूर्तिवान हो जाएगा. लेकिन मुक्त करना ही सबसे मुश्किल काम है. भारत सरकार को चाहिए कि वह चार दशकों से चली आ रही नियंत्रणों से ग्रस्त, अनुग्रहीत करने वाली और अविश्वसनीय रूप से जटिल व्यवस्था से निजात पाए. ये नियंत्रण और अनुग्रह ही इसके बंधन हैं. लेकिन अफसोस यह है कि भारत को इसका एहसास ही नहीं है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

KYOCERA

वाइड एन्गल। स्टैंडर्ड।
क्लोज़ अप। मॅकरो क्लोज़ अप।

नया
याशिका ज़ूमटैक 90

ॲक्शन सीन हो या मुन्नी बिटिया की सालगिरह। अब आधुनिक इन्फ्रा रेड वायरलेस रिमोट कन्ट्रोल से शूट करें।
नया याशिका ज़ूमटैक 90 कॉम्पॅक्ट 35mm ज़ूम कैमेरा।
इलेक्ट्रोनिक कन्ट्रोल स्टैपलेस ज़ूम।
वाइड एन्गल (38mm) से टैलिफोटो (90mm) तक,
जैसे चाहे चित्र को फ्रेम करे।
कंटीन्युअस ऑटो फ़ोकस से चित्र हमेशा साफ़।
साथ मॅकरो मोड जिस के सहयोग से आप 50 cms की नज़दीकी से भी चित्र खींच सकते हैं। याशिका ज़ूमटैक 90 में ये सब सुविधाए। और अगर चाहे तो रिमोट कन्ट्रोल भी।
ज़ूमटैक 90 के अलावा, ज़ूमटैक 80 और ज़ूमटैक 60 भी उपलब्ध।

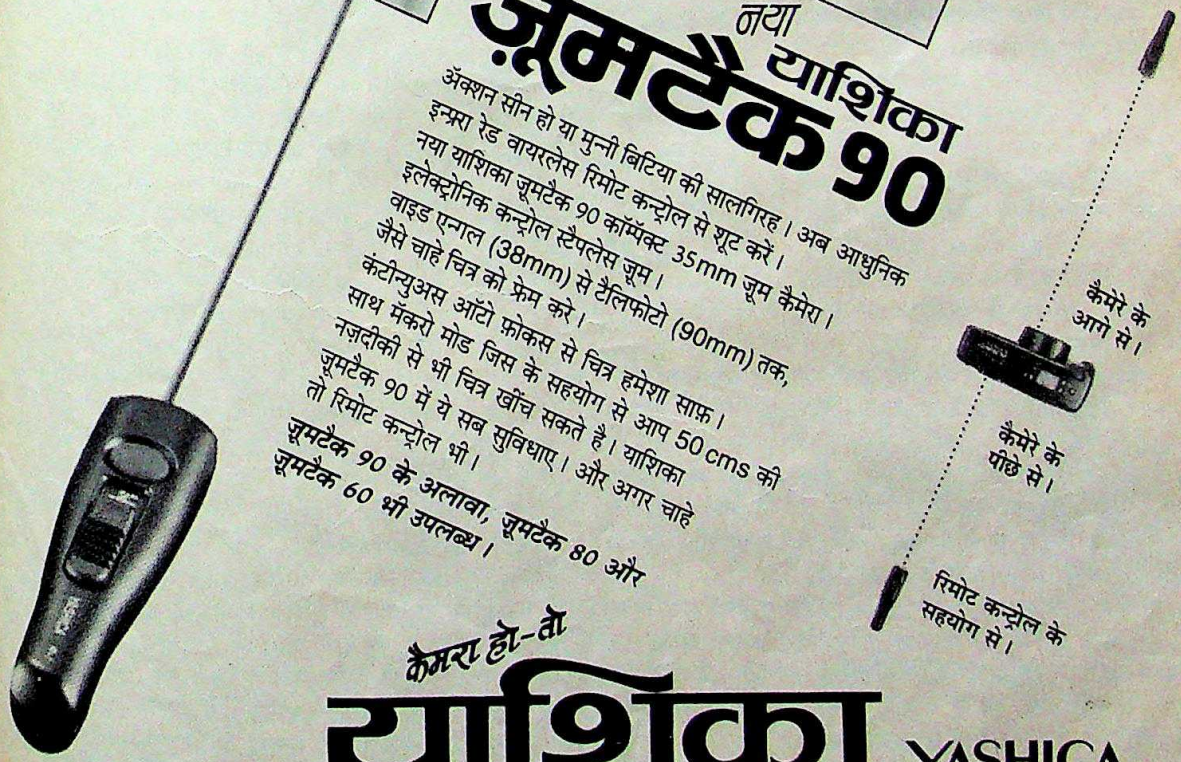

कैमरा हो-तो
याशिका YASHICA

KYOCERA CORPORATION. Optical Equipment Division, 27-8, 6-chome Jingumae, Shibuya-ku, Tokyo 150, Japan.
"YASHICA" is a trademark of KYOCERA CORPORATION.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

372R/IT

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजेंद्र कुमार धवन

'परिवार के प्रति वफादार रहूंगा'

राजीव गांधी की हत्या के बाद उनके दरबार के सबसे असरदार आदमी 54 वर्षीय आर.के. (राजेंद्र कुमार) धवन ने अपने राजनैतिक आका को भी खो दिया और अपनी राजनैतिक हैसियत को भी. नई सरकार ने उन्हें दरकिनार कर दिया है. सो, धवन अब अपना ज्यादातर समय घर पर ही बिताते हैं. निष्प्रभावी कर दिए गए धवन से वरिष्ठ संवाददाता ***हरिंदर बवेजा*** *की बातचीत के अंश:*

प्रमोद पुष्करणा

● *आपने हमेशा कहा कि आपका मुख्य मकसद गांधी परिवार की सेवा करना है. अब जब इंदिरा गांधी और राजीव दोनों ही नहीं हैं तो कैसा लगता है?*

सिर्फ यही मेरी आकांक्षा थी और अब भी है. मैं समय देखकर बदलने वाला व्यक्ति नहीं हूं. मेरी वफादारी परिवार के प्रति है, उसकी हैसियत के प्रति नहीं. मैं तब भी गांधी परिवार की सेवा करता रहा जब इंदिरा गांधी सत्ता में नहीं थीं. अब सोनिया गांधी हैं. परिवार से मेरा रिश्ता अब भी वही है.

● *क्या आप खुद को राजनैतिक रूप से अनाथ महसूस करते हैं?*

हां, क्योंकि गांधी परिवार मेरी वक़अत जानता था. बाकियों को इसे परखने का मौका नहीं मिला.

● *अब आप किस हैसियत से इस परिवार की सेवा कर रहे हैं?*

सोनिया गांधी और बच्चे राजनीति में आएं या न आएं, मेरी वफादारी बनी रहेगी.

● *राजीव गांधी की हत्या के बाद क्या उन्होंने आपसे किसी चीज के लिए कहा?*

ऐसा कोई मौका नहीं आया कि वे मुझसे किसी चीज के लिए कहतीं. मैंने उनसे कहा था कि मैं हमेशा उनकी सेवा के लिए तैयार हूं.

● *क्या में सोनिया के राजनीति आने की कोई संभावना है?*

खुद मैं सोचता हूं कि उन्हें आना चाहिए, परिवार के नाम को जिंदा रखने के लिए.

● *क्या सोनिया ने कभी राजनीति के प्रति कोई झुकाव दिखाया?*

मैं नहीं समझता कि राजनीति से उनका कोई लगाव है. राजीव जी के छोटे से कार्यकाल में मैंने उन्हें कभी भी किसी भी राजनैतिक मामले में दखल देते नहीं देखा.

● *लेकिन आप अपनी खातिर चाहते थे कि वे पार्टी अध्यक्ष बनें.*

मैंने कहा कि मैं उनके साथ हूं. इसलिए अपनी खातिर का सवाल नहीं उठता. और वे राजनीति में आ भी गईं तो जरूरी नहीं कि मुझे कोई पद दे दें. मैंने कभी यह नहीं सोचा कि वे राजनीति में आएं तो मेरी सत्ता बनी रहे.

● *क्या आप राजनीति को अभी भी अपना कैरियर मानते हैं?*

मैंने भविष्य की कभी चिंता नहीं की. जो होना है, होगा.

> **"समय देखकर बदलने वाला व्यक्ति नहीं हूं. मेरी वफादारी परिवार के प्रति है, उसकी हैसियत के प्रति नहीं"**

● *चौगुटे के फोतेदार और केसरी जैसे लोगों को मंत्रिमंडल में जगह दे दी गई, पर आप बाहर रह गए.*

चौगुटा, चौकड़ी और मंडली जैसे शब्द बस कल्पनाएं हैं. मैंने राजीव गांधी को प्रधानमंत्री के पद पर देखा है. हर आदमी उन तक पहुंच सकता था.

● *पर आप उनके करीबी लोगों में तो थे.*

कौन कहता है कि वहां सिर्फ एक गुट था. कई समूह और कई घेरे थे. मैं भी उनमें से एक था. राजीव जी जब केसरी, फोतेदार और दूसरों से मशविरा करते थे तब मैं वहां मौजूद रहता था. कभी-कभी मैं वहां नहीं भी होता था. इसलिए यह चौकड़ी-वौकड़ी की बातें क्या हैं?

● *पर सवाल वहीं है कि आपको जगह नहीं दी गई.*

यह प्रधानमंत्री का विशेषाधिकार है.

● *नरसिंह राव से आपके कैसे संबंध हैं?*

वे वरिष्ठ और सम्मानित नेता हैं. इंदिरा गांधी और राजीव गांधी भी उनकी इज्जत करते थे. इसलिए जाहिर है मैं भी उनकी इज्जत करता हूं. वे प्रधानमंत्री हैं. मैं उनके निर्देशों से बंधा हुआ हूं.

● *अब इंका के पास कोई हैसियत वाला नेता नहीं है और पार्टी में विद्रोह भी है.*

और क्या हो सकता है जबकि राजीव गांधी के स्तर का कोई नेता नहीं है. पर राव हैसियत वाले हैं.

● *आप कहते हैं कि पार्टी में हैसियत वाले नेता हैं, फिर भी आपको लगता है कि सोनिया को राजनीति में आना चाहिए.*

मैं यह नहीं कह रहा कि सोनिया जी को इसलिए राजनीति में आना चाहिए कि कोई हैसियत वाला नेता नहीं है.

● *इंका में चापलूसी का बोलबाला है. क्या वंशवाद के कारण?*

आप वंशवाद क्यों कहती हैं? इंदिरा गांधी 1959 में ही पार्टी अध्यक्ष बन गई थीं. क्या उन्होंने मेहनत नहीं की और चुनाव नहीं लड़ा? कल को सोनिया जी चुनाव लड़कर जीतती हैं तो आप लोग कहेंगे कि यह भी वंशवाद है. लोग अगर उन्हें नहीं चाहते तो वे उन्हें पराजित कर दें.

● *राजीव गांधी और इंदिरा गांधी में आपको किसके साथ काम करना ज्यादा अच्छा लगा?*

जब आप किसी के लिए प्रतिबद्धता के साथ काम कर रहे होते हैं तो यह महत्वपूर्ण नहीं होता कि आपको अच्छा लग रहा है या नहीं. मैं परिवार के प्रति समर्पित था और मैंने कभी इसका खयाल नहीं रखा कि मुझे बदले में मिल क्या रहा है.

● *आप परिवार के प्रति समर्पित कैसे हुए?*

मैं खुद नहीं जानता. हो सकता है यह पूर्व जन्म का संबंध हो.

● *मौका मिला तो क्या आप नरसिंह राव के लिए काम करेंगे?*

अगर तो बहुत बड़ा शब्द है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

THE COLTS MAN

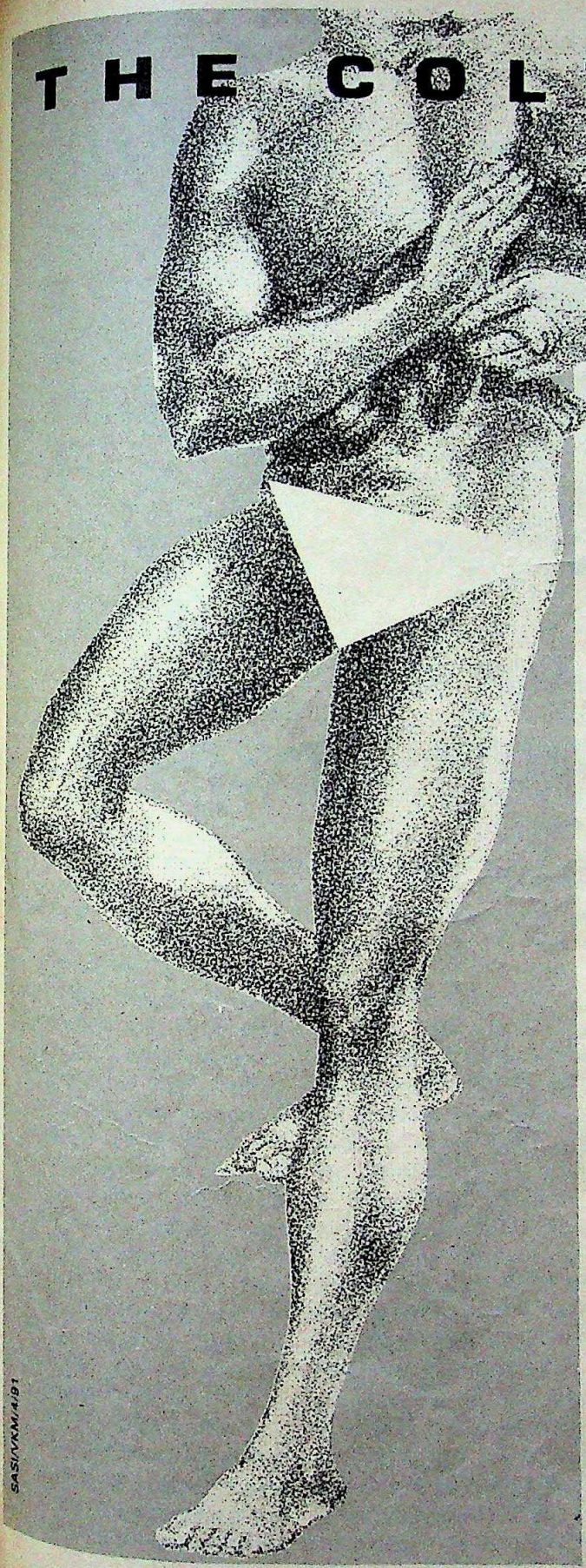

अपनी मर्दानी चाहत
को पहने वह
शान से.

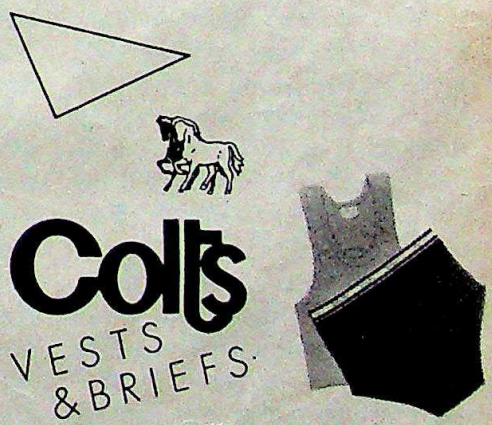

Colts
VESTS
& BRIEFS

अंतरंग साथी

A Quality product from :
VIJAYAKUMAR MILLS LTD
Kalayamputhur Post, Palani, Tamil Nadu - 624 615.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

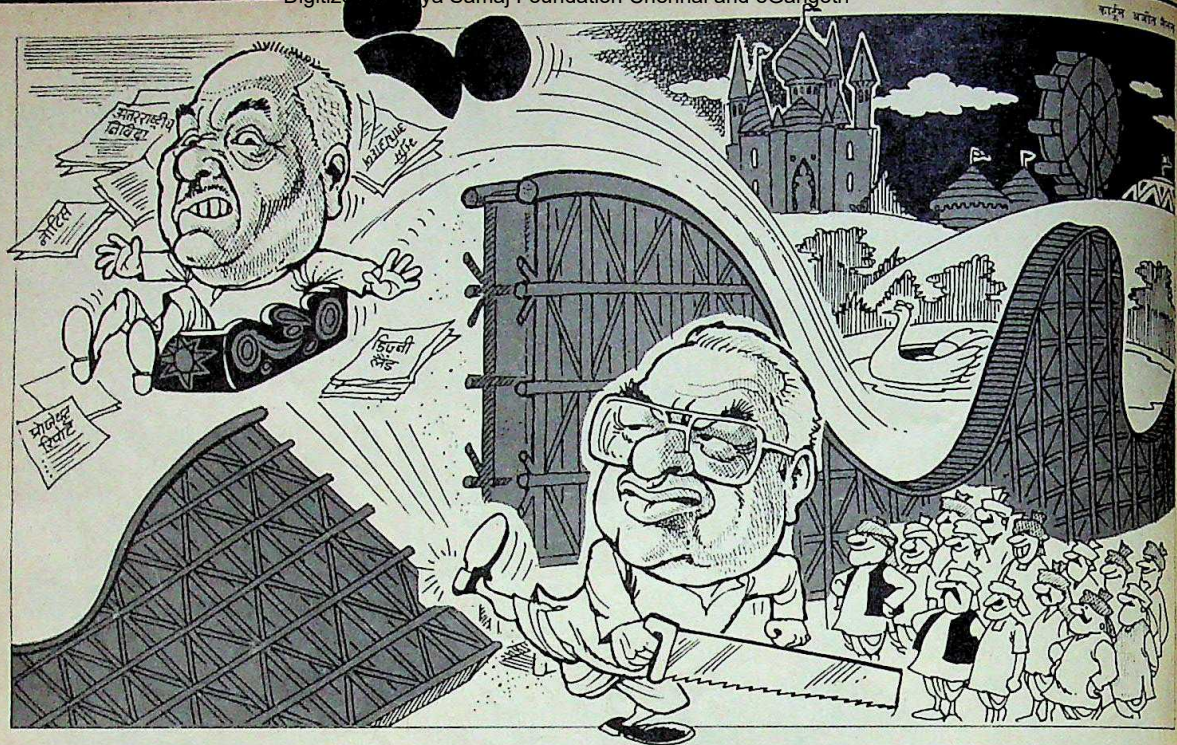

डिज्नीलैंड परियोजना

हवाई सपने का अंत

चौटाला की विवादास्पद मनोरंजन पार्क योजना भजनलाल ने रद्द की

हरिंदर बवेजा और कंवर संधू

हरियाणा में मिकी माउस के प्रवेश पर भजनलाल ने रोक लगा दी है. यहां अब रोलर-कोस्टर भी नहीं दौड़ सकेंगे और न मनोरंजन वाले वाहन हुड़दंग मचा सकेंगे. मुख्यमंत्री का पद संभालते ही उन्होंने सबसे पहला काम ओमप्रकाश चौटाला की देसी डिज्नीलैंड योजना पर रोक लगाने का ही किया. इसकी फाइल पर उन्होंने लिखा, "यह योजना जनहित विरोधी है. इसे रद्द कर दिया जाए."

यह योजना फिर कभी शुरू न हो पाए, इसकी और पक्की व्यवस्था करने के लिए भजनलाल ने दमदमा में सारस पर्यटन स्थल का उद्घाटन करने का फैसला भी किया. गुड़गांव में यह कांप्लेक्स उसी जगह पर बना है जिसे चौटाला सरकार ने डिज्नीलैंड के लिए भूमि अधिग्रहण कानून की धारा 6 के तहत कब्जे में किया था. मुख्यमंत्री के रूप में अपनी पहली जनसभा में उन्होंने खुशियां जाहिर कर रहे किसानों से कहा, "आपको 30 दिनों के अंदर जमीन लौटा दी जाएगी. यह जमीन आपकी है और आप ही इसके मालिक रहोगे." चौटाला के मनोरंजन पार्क की जगह सरकार अब दमदमा झील में पानी वाले खेलों का परिसर बनाने की सोच रही है.

और कुछ हो न हो, किसानों ने काफी राहत महसूस की. अपनी जमीन से हाथ धोने के 18 महीने पुराने सिरदर्द से उन्हें मुक्ति मिली. जनवरी 1990 में चौटाला सरकार ने 28,341 एकड़ जमीन के, जिसमें से 14,000 एकड़ तो एकदम उपजाऊ है, अधिग्रहण का नोटिस दिया था. लेकिन इसके अधिग्रहण से भारी बवाल मच गया. राजेश पायलट और भजनलाल ने इसके खिलाफ कई विरोध प्रदर्शनों का नेतृत्व किया. इसके अलावा डिज्नीलैंड विरोधी मोर्चे ने भी धरना दिया. परिणामस्वरूप इस योजना के तहत आने वाले क्षेत्र को कम कर दिया गया और 3,990 एकड़ जमीन ही अधिग्रहित हुई.

लेकिन योजना का विरोध जारी रहा. कृषि योग्य सिर्फ 210 एकड़ जमीन को ही इसमें लिया गया तब भी विरोध चलता रहा. भजनलाल ने इसे 'शताब्दी का फरेब' करार दिया. पायलट ने कहा कि चौटाला ने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के नाम इस योजना के आसपास वाली सारी जमीन खरीद ली है. योजना चालू होने पर इस जमीन की कीमत काफी बढ़ जाएगी इसीलिए चौटाला इस पर इतना जोर दे रहे हैं. स्थानीय किसानों का भी यही मानना था. डिज्नीलैंड के प्रति चौटाला के प्रेम को लेकर इस कारण भी संदेह पैदा हुआ कि वाटिका, अंसल और स्किपर जैसे बड़े बिल्डरों की जमीन को बड़ी सावधानी से इस योजना से बाहर ही रखा गया था. अब चौटाला कहते हैं, "भजनलाल इस प्रकरण का नाजायज लाभ ले रहे हैं. इसमें मेरा कोई निजी स्वार्थ नहीं है. यह योजना कांग्रेस के दौर में ही बनी थी और अब उन्होंने ही इसे समाप्त कर दिया है."

इस विवादास्पद परियोजना को रद्द करने का फैसला भी बड़े मौके पर हुआ. चौटाला सरकार ने इस साल जनवरी में अंतरराष्ट्रीय निविदाएं मंगाई थीं और इनका मूल्यांकन अब होने ही वाला था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

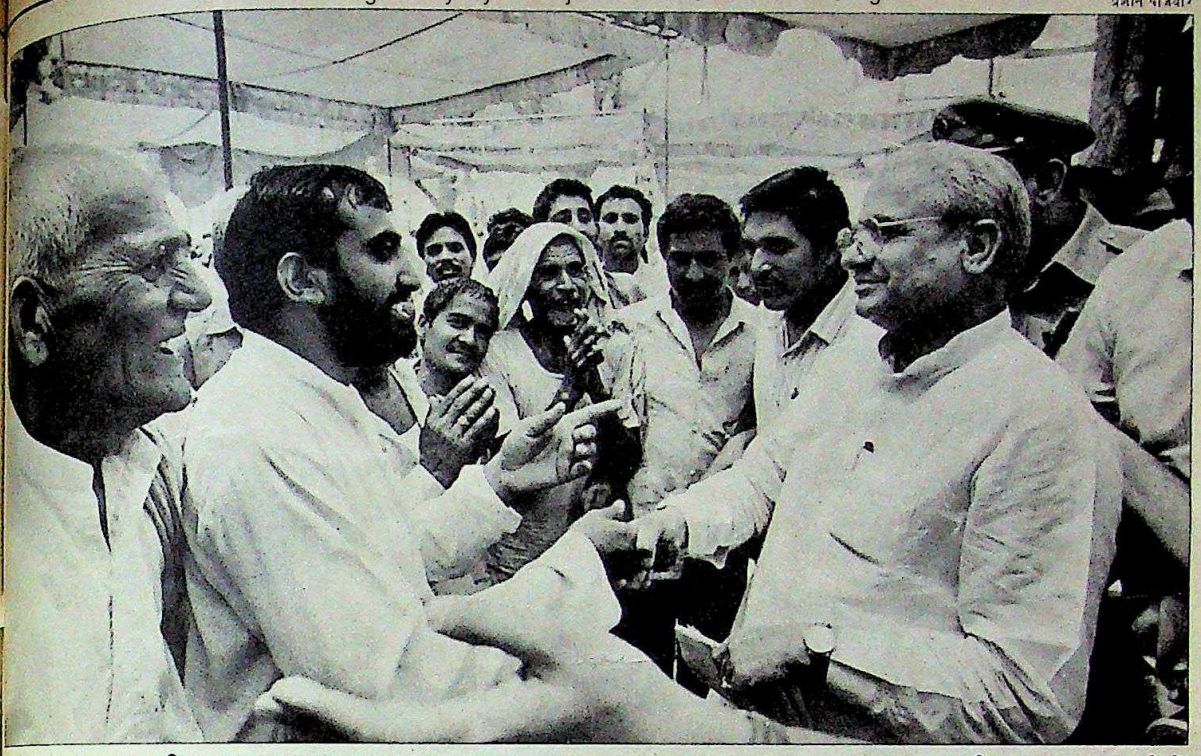

जमीन वापस पाए ग्रामीणों के साथ भजनलाल: बदली स्थिति

चौटाला सरकार की मनोरंजन पार्क योजना का इतिहास काफी उतार-चढ़ाव वाला रहा है. इस में पहली अधिसूचना अप्रैल 1983 को जारी थी जब संयोग से भजनलाल ही मुख्यमंत्री दिसंबर 1986 तक योंही पड़ा रहा. यह प्रस्ताव फिर उभरा लेकिन इस बार मनोरंजन पार्क के रूप में. यह फाइल तत्कालीन मुख्यमंत्री बंसीलाल के सामने की गई जिस पर उनके प्रधान सचिव आर.एस. वर्मा ने 3 फरवरी 1987 को कहा कि मुख्यमंत्री ने इस योजना को स्वीकृति प्रदान की. यह परियोजना सूरजकुंड और बड़खल के बीच तय थी जिस पर 50 करोड़ रु. खर्च का अनुमान था. अखबारों में विज्ञापन देकर इस पार्क को बनाने का प्रस्ताव 15 मार्च 1987 तक बुलाया गया. यह प्रक्रिया चल ही रही थी कि देवीलाल मुख्यमंत्री बन गए.

भजनलाल ने किसानों से कहा कि चौटाला सरकार ने जो जमीन अधिग्रहित की थी, वह लोगों की ही थी और 30 दिनों के अंदर उन्हें वापस मिल जाएगी

5 जून 1989 को हुई बैठक में, जिसकी अध्यक्षता तत्कालीन पर्यटन सचिव बी.ए. ओझा ने की (जो अब मुख्य सचिव हैं) और जिसमें सभी संबद्ध विभागों के अधिकारियों ने हिस्सा लिया, इस परियोजना को लगाने का स्थान बदलकर रोहतक कर दिया गया. ऐसा कई कारणों से किया गया जिसमें बड़खल में जमीन के नीचे पानी की अपर्याप्त मात्रा भी एक कारण है. यह अनुमान भी लगाया गया कि करीब 2,500 एकड़ जमीन की जरूरत होगी जो मुख्यतः 'गैरमुमकिन' और 'बेचिराग' जमीन लेने से पूरी हो जाएगी. उसी समय नई अंतरराष्ट्रीय निविदाएं आमंत्रित की गईं पर जवाब बहुत ही ठंडे आए. सिर्फ आठ जवाब आए जिनमें हैदराबाद के मेसर्स कामिनेनी इंटरप्राइजेज और नई दिल्ली के मेसर्स मीरा सिस्टम्स का जवाब शामिल है.

जल्दी ही सरकार के तीन बड़े अधिकारी जिनमें ओझा भी शामिल थे, दुनिया के सभी प्रमुख मनोरंजन पार्कों को देखने के लिए विदेश के दौरे पर निकले. जिन जगहों को उन्होंने देखा उनमें केलिफोर्निया का डिज्नीलैंड और फ्लोरिडा का डिज्नीवर्ल्ड शामिल है. उनकी रिपोर्ट के बाद यह फैसला किया गया कि इस परियोजना का दायरा बढ़ाया जाए. काम की प्रगति के मूल्यांकन के लिए एक बैठक 26 दिसंबर 1989 को तत्कालीन मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला की अध्यक्षता में हुई. इसी के बाद 28,341 एकड़ जमीन के लिए अधिसूचना जारी हुई. इस योजना के कामकाज पर नजर रखने के लिए एक मनोरंजन पार्क प्राधिकरण के गठन और इस स्थल के 10 किलोमीटर के दायरे में विकास और निर्माण कार्य बंद करा देने का फैसला भी किया गया. तब जो योजना सोची गई वह फ्लोरिडा के डिज्नीवर्ल्ड जैसी थी जो 27,000 एकड़ जमीन में फैली है. विरोध प्रदर्शनों को देखते हुए सरकार ने इसका क्षेत्रफल घटा दिया और दिखावटी घोषणा की कि ऐसा संसाधनों की कमी को देखते हुए किया गया है. तब इसे फ्रांस के यूरो डिज्नीलैंड जैसा बनाने का फैसला हुआ जिसका क्षेत्रफल 4,800 एकड़ है. लेकिन अब कलम की नोक से गुब्बारे की हवा निकाल दी गई है.

और यह करते हुए भजनलाल ने इतना बड़ा ही राजनैतिक दांव भी मारा है. डिज्नीलैंड के ताबूत में कील ठोंककर उन्होंने चौटाला के 'जिन्न को बोतल में बंद' करने का संकेत भी दिया है और स्पष्ट कर दिया है कि वे उसे वहीं बंद रखने के लिए कोई कसर बाकी नहीं रखेंगे. आगे के चौटालाओं के लिए भी यह एक संदेश है कि लाठी कभी-कभी भांजने वाले के सिर पर भी आ पड़ती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसाएंगे इक नया जहां

अर्थव्यवस्था की बेड़ियां तोड़ने का दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है. ऐसे समय एक गुमनाम सी समिति विदेशी निवेश का स्वर्ण महल बनाने का स्वप्न रच रही है. जी नहीं, न तो यह कर मुक्त क्षेत्र बनाने की बात है और न मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाने की. भारतीय आयात-निर्यात बैंक के अध्यक्ष कल्याण बनर्जी की अगुआई वाला यह दल एक ऐसा विशिष्ट औद्योगिक शहर बसाने की संभावना पर विचार कर रहा है जिसकी तरफ विदेशी निवेशक खुद-ब-खुद खिंचे चले आएंगे. यहां निवेशकों को शिकायत का कोई मौका नहीं मिलेगा. यहां दुनिया की बेहतरीन सुविधाएं उपलब्ध होंगी. दल की निगाहें जापानी उद्योगपतियों पर लगी हैं. समिति में शामिल विदेशी निवेशकों में कुछ जापानी उद्योगपति भी हैं. बाकी सदस्यों में वित्तीय संस्थाओं, वित्त, वाणिज्य तथा विदेश मंत्रालय के प्रतिनिधि शामिल हैं.

सत्ता बदली, दिन फिरे

जबसे जयललिता ने तमिलनाडु की सत्ता संभाली है, स्टैंडर्ड-2000 कार बनाने वाली कंपनी स्टैंडर्ड मोटर प्रोडक्ट्स इंडिया लिमिटेड के दिन फिर गए हैं. जनवरी 1992 तक वहां उत्पादन शुरू हो जाने की संभावना है. हाल ही में कंपनी के अधिकारियों तथा औद्योगिक और वित्तीय पुनर्गठन ब्यूरो की एक बैठक में इस बीमार इकाई को फिर से शुरू करने के लिए 24 करोड़ रु. की योजना पर विचार हुआ. करुणानिधि की सरकार ने कंपनी को बुरी तरह परेशान कर दिया था. अब कंपनी के प्रवर्तक ए.सी. मुथिया कंपनी में अपनी तरफ से 6 करोड़ रु. लगाने को तैयार हो गए हैं. वित्तीय संस्थाएं इसमें 15 करोड़ रु. लगाएंगी. सरकार बिक्रीकर में भी कुछ रियायतें देगी और उत्पादन शुरू होते ही स्टैंडर्ड मोटर से कार खरीदेगी भी.

पूरब का रुख

नए इस्पात राज्यमंत्री संतोष मोहन देव ने सार्वजनिक क्षेत्र के धातु वैज्ञानिकों और इंजीनियरों से पूर्वोत्तर भारत में गैस आधारित स्टेनलेस स्टील संयंत्र लगाने की संभावनाओं पर रिपोर्ट तैयार करने को कहा है. देव इस क्षेत्र में 300 टन पनालीदार इस्पाती चादरें बनाने का संयंत्र लगाने के उपा रेक्टीफायर के औपचारिक प्रस्ताव पर भी हमदर्दी से विचार कर रहे हैं. वे परियोजनाओं के प्रस्तावों में से 20 को हरी झंडी दिखाने की योजना भी बना चुके हैं.

एमटीएनएल का निजीकरण

संचार राज्यमंत्री राजेश पायलट महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड (एमटीएनएल) के अर्धनिजीकरण के विकल्प पर विचार कर रहे हैं. मुंबई और दिल्ली की टेलीफोन व्यवस्था चलाने वाला यह निगम फायदे में भी चल रहा है. एमटीएनएल की कार्यप्रणाली की जांच करने वाली अथरैया समिति ने निगम को एक हद तक निजी हाथों में सौंपने की सिफारिश की थी और पायलट के पूर्ववर्ती संजय सिंह इसे लागू भी करना चाहते थे. पर पायलट संजय सिंह की एक पहल को आगे बढ़ने से रोकने के मूड में हैं. और यह है बिना बारी के 20,000 टेलीफोन कनेक्शन देने का संजय सिंह का फैसला. इस मद के जिन लोगों को अभी तक कनेक्शन नहीं मिला, उन्हें अब मिलेगा भी नहीं, बशर्ते पायलट आखिरी क्षण में कहीं अपना विचार न बदल दें.

बढ़ती चमक

अवमूल्यन के साथ ही सोने की कीमतें आसमान छूने लगी क्योंकि निवेशक उस चीज के पीछे भाग रहे हैं जो मुद्रास्फीति के खिलाफ फायदे का सौदा हो. सोने की कीमतें मार्च के शुरू में ही बढ़नी शुरू हो गई थीं. तब ये 35,410 रु. तक पहुंच गईं. चार महीने में 601 रु. की वृद्धि. 29 जून से 4 जुलाई के बीच तो यह वृद्धि तूफानी रफ्तार से हुई. तब चार दिन में ही

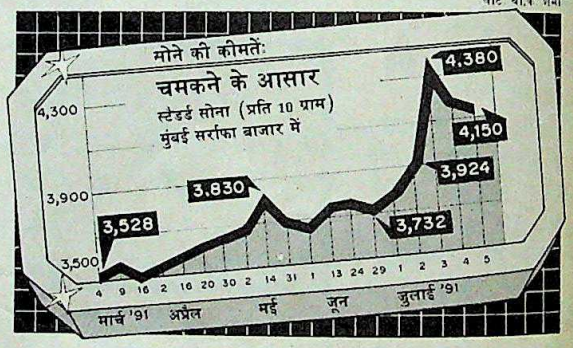

कीमत 458 रु. बढ़ गई और इस बीच तो यह 4,380 रु. की बुलंदी पर भी पहुंच गई. सरकार अब भी पहले मारो फिर दुलारो की नीति पर चलती रही तो सोने की कीमतें और चढ़ेंगी.

मिलेगी अमेरिकी तकनीक आसानी से

अमेरिका और यूरोप की नियंत्रित एजेंसी कोऑर्डिनेशन कमेटी फॉर मल्टीलेटरल एक्सपोर्ट कंट्रोल ने अपनी हाल ही की बैठक में नागरिक और सैनिक इस्तेमाल की 50 फीसदी वस्तुओं को राष्ट्रीय सुरक्षा निर्यात नियंत्रण से मुक्त कर दिया. इंटिग्रेटेड सर्किट बनाने वाले उपकरण कंप्यूटर, सेमीकंडक्टर डायोड्स, इलेक्ट्रॉनिक परीक्षण के उपकरण और दूरसंचार उपकरण आदि के भारतीय उत्पादकों के लिए यह अच्छी खबर है. कंप्यूटरों के मामले में भारत आने वाली तकनीक का स्तर निर्धारित करने के लिए एक नया फार्मूला बनाया जा रहा है. यह तकनीक अब अमेरिका से सामान्य लाइसेंस के तहत भारत लाई जा सकेगी और इसके लिए अमेरिकी सरकार के लिखित अधिकार पत्र की जरूरत नहीं रहेगी. कार्ड, कानवेक्स और कंट्रोल डाटा कार्पोरेशन जैसी कंपनियों के उच्च क्षमता वाले मेनफ्रेम और सुपर कंप्यूटर तकनीक अब भारतीय उत्पादकों को उपलब्ध रहेगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म उद्योग के सप्लायर

गुमनामी के अंधेरे से प्रसिद्धि के उजाले में

सामान जुटाने वाले अब अपने पैसों का सही इस्तेमाल करने के मूड में. इनमें से कई फिल्म निर्माता और निर्देशक बन गए हैं

...ांडफ्रे परेरा

...तर बिलकुल स्पष्ट और कई बार दुखदायी लगता है. पीछे जहां तक ...ाह जाती है, मुंबई के हिंदी फिल्म ...र्माताओं और फिल्म उद्योग को उपकरणों ...ी आपूर्ति करने वालों में हमेशा एक दूरी ...ाई देती है. निर्माताओं की श्रेणी में आने ...ले लोग तड़क-भड़क से सजे होते हैं. ...न्नी सितारों की महत्वाकांक्षाओं को ...ाने-बिगाड़ते हैं, करोड़ों रुपए की मसाला ...ल्में तैयार करते हैं और नोटों का प्रबंध ...ते हैं.

इसके विपरीत, सप्लायर उल्लेखनीय ...ा में दूसरे दर्जे के व्यवसायी होते हैं. ...र्माता और कलाकार दोनों ही उन्हें ...ा और प्रकाश सज्जाकार या ...ी खिदमतगारों के रूप में ...ते हैं, जो चकाचौंध भरी ...ल्मी दुनिया में अपनी ...ारी के लिए उनके इशारों ...ा नाचने को मजबूर हैं.

लेकिन कल का प्रकाश सज्जाकार अंधेरे में रहते, स्टंट कलाबाज हीरो के लिए ढिशुम-ढिशुम करते और वस्त्र सज्जाकार खूबसूरत और उदास चेहरों की सजावट करते-करते थक चुका है. उनमें से अनेक ने उद्योग में पैसा लगाने का कौशल दिखाया है. लेकिन आज उनका धंधा इतना चमक गया है कि अब वे उपेक्षित रहने की जगह कलाकारों का चयन करने वालों की हैसियत में आ गए हैं. कुछ तो फिल्मों का निर्माण और निर्देशन कर चुके हैं और दूसरे करना चाहते हैं. वे उस व्यवसाय का अभिन्न हिस्सा बन जाना चाहते हैं, जो आज भी 'सामान जुटाने वाले व्यवसाय' को हिकारत की निगाह से देखता है. किस्मत आजमाने के लिए उनके पास धन का जुगाड़ भी है. फिल्म निर्माण के अलावा बिजली का सामान और कैमरे किराए पर देने का कारोबार करने वाली फर्म मर्चेंट आइवरी प्रोडक्शंस के मुंबई कार्यालय के प्रमुख वहीद चौहान कहते हैं, "फिल्म उद्योग को साज-सामान देने के काम में बहुत कमाई है और मुझे इस नए रुझान पर कतई हैरानी नहीं है. यह तो होना ही था."

पप्पू वर्मा को ही लीजिए. वे पीछा करने वाले दृश्यों, डाकू वाली फिल्मों और पौराणिक लड़ाइयों के लिए उद्योग को घोड़े किराए पर देते हैं. उन्होंने 1985 में संजय दत्त और अनीता राज को लेकर अपनी पहली फिल्म 'जान की बाजी' बनाई. उसके बाद उन्होंने 1.5 करोड़ रु. की लागत से सन्नी देओल, सोनम और संजय दत्त को लेकर 'क्रोध' बनाई. उन्होंने 90 लाख रु. से मध्यम बजट की फिल्म 'वंश' का निर्माण और निर्देशन भी किया है, जिसके रिलीज होने की प्रतीक्षा है. वर्मा कहते हैं, "बस मैंने सोचा कि मेरे लिए फिल्म निर्माण का काम करने का वक्त आ गया है. मैं बरसों हथकंडे सीखता रहा और इसके लिए तैयार था." अनुभव और धन दोनों के ही लिहाज से.

घोड़े किराए पर देने का धंधा, जिसे

"किसी तस्कर या भवन निर्माता के मुकाबले हमें फिल्म उद्योग की ज्यादा समझ है"

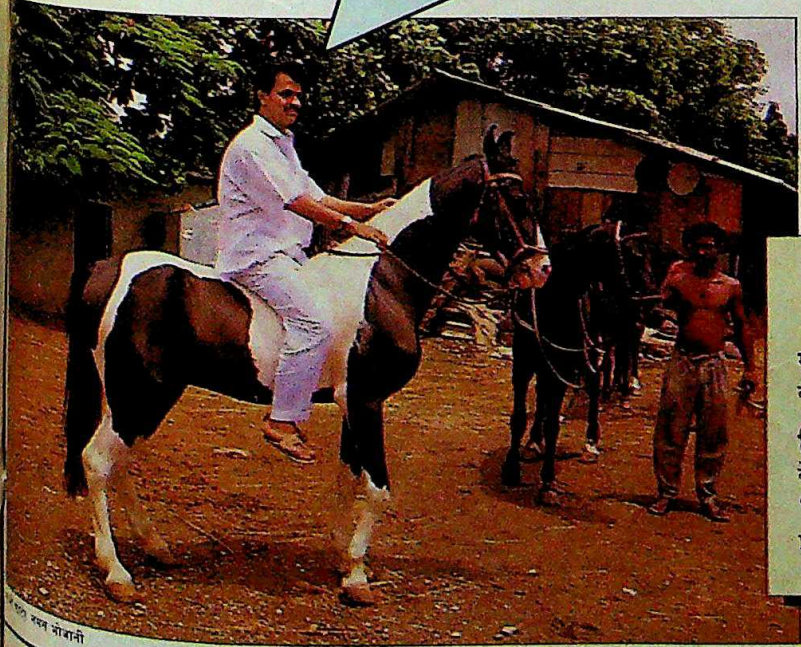

...ाटो: ...वन जोशी

पप्पू वर्मा

मूल व्यवसाय: फिल्म उद्योग को घोड़ों की सप्लाई. पूर्व स्टंट निदेशक.

निर्मित फिल्में: वर्मा फिल्म्स कंबाइन के बैनर तले 'जान की बाजी', 'क्रोध', 'वंश'. कुछ दूसरी फिल्में बनने की प्रक्रिया में.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सोचता हूं जिंदगी में ऐसा काम करूं कि लोग मुझे याद करें"

जलील अहमद

मूल व्यवसायः रोशनी का सामान सप्लाई करना. तीन आर्कलाइटों से शुरुआत की थी.

निर्मित फिल्में: 'दौलत की जंग'. यह फिल्म सफल रही तो और भी बनाएंगे, पिटी तो कोई घाटा नहीं.

वर्मा के पिता ने 1955 में शुरू किया था, उन्हें तीन लाख रु. सालाना मुनाफा देता है. दस साल तक वे फिल्म उद्योग में श्रेष्ठ स्टंट कला निर्देशक भी रहे, जिससे उन्हें प्रति फिल्म दो लाख रु. फीस के रूप में आय हुई. 'क्रोध' जैसी पिटी फिल्मों को छोड़ दें तो वर्मा भविष्य में अपनी वर्मा फिल्म्स कंबाइन के बैनर तले और भी फिल्में बनाने का इरादा रखते हैं.

निर्माता बन जाने का एक और उदाहरण मोरानी परिवार का है. अली और करीम मोरानी और उनके पिता गुलाम अली इस उद्योग में आतिशबाजी के सबसे बड़े व्यवसायी हैं, जो फिल्मी और वास्तविक शादियों के अलावा जगमग दृश्यों के लिए आतिशबाजी सप्लाई करते हैं. 'सिनेयुग' के बैनर तले उन्होंने 1985 में 1.5 करोड़ रु. की लागत से सन्नी देओल को लेकर 'अर्जुन' का निर्माण किया था. इस हिट फिल्म ने मुंबई में 75 लाख, दिल्ली में 40 लाख और हैदराबाद में 25 लाख रु. का व्यवसाय किया. उत्तरी मुंबई के उपनगर जुहू में आलीशान मकान में रहने वाले

केल्विनेटर:
जहाँ हर 35 सैकण्ड में
तैयार होता है
एक नया रेफ्रिजरेटर!

(रिकार्ड के लिए, 1964 में बना सबसे पहला केल्विनेटर आज भी कार्यशील है)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुर्ख मोरानी बताते हैं, "पैसे के बारे में बात न करना ही ठीक है क्योंकि इससे बात फैल जाती है." यह धन के बारे में मूक संस्कृति है, जो इस परिवार को अनेक पीढ़ियों से प्राप्त हुआ है.

फिल्म उद्योग हर लिहाज से काले धन को सफेद में बदलने का नायाब माध्यम है. सौदे जगजाहिर तरीके से कम और चुपचुप ज्यादा होते हैं तथा लिखा-पढ़ी में बातचीत तय करने का तो कायदा ही नहीं है. हीरा उद्योग की तरह ही जबानी बातचीत और आपसी भरोसा फिल्मी दुनिया में काम आते हैं. मकान-जायदाद के व्यापार से पैसा निकालकर लोग लगातार फिल्म उद्योग में लगा रहे हैं. यह तस्करी से होने वाले मुनाफे को कानूनी रूप देने का भी उपयुक्त तरीका बन गया है. बहरहाल, जैसा कि नए निर्माताओं का कहना है कि दूसरों के पास सिर्फ पैसा हो सकता है जबकि उनके पास पैसे के साथ-साथ अक्ल भी है. घोड़ा व्यापारी और निर्माता वर्मा कहते हैं, "हम इंडस्ट्री की रग-रग से वाकिफ हैं. इसलिए किसी

"मेरे लिए फिल्म बनाने और निर्देशन करने का वक्त आ गया है"

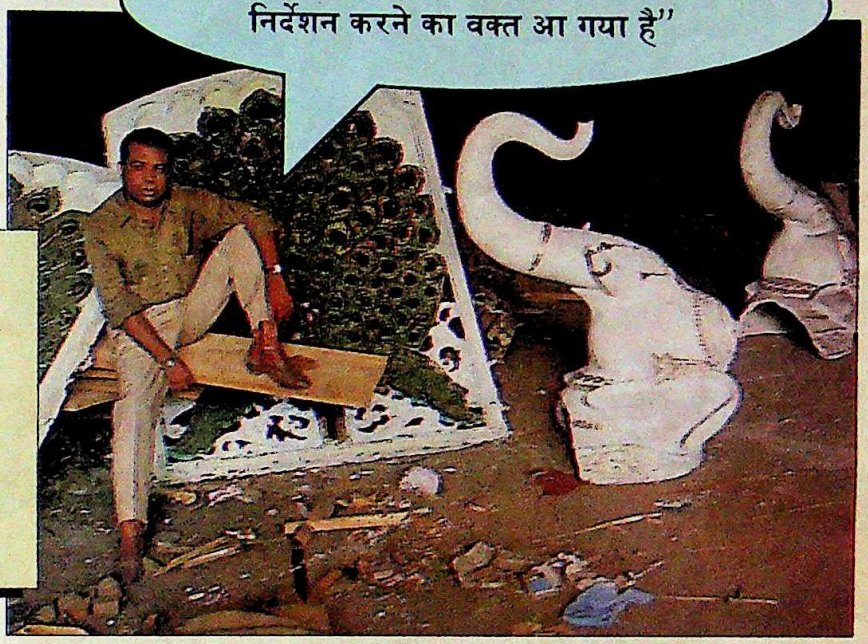

बिजन दासगुप्त

मूल व्यवसाय: सेट डिजाइन करने और उसे बनाने के काम में सर्वोत्तम माने जाते हैं.

निर्मित फिल्में: अभी कोई नहीं. पिछले साल समय नहीं था. अब करेंगे. सफलता के प्रति आश्वस्त.

इसकी ठंडक सबसे बेहतर
यह है नं. 1 रेफ्रिजरेटर

केल्विनेटर®
रेफ्रिजरेटर्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Karishma/KEL/18/1338 Hin

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

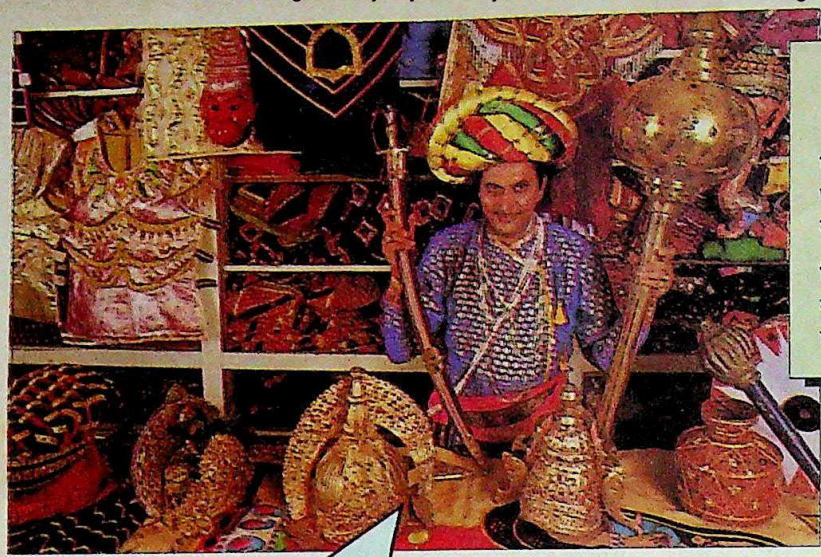

"मुझे उद्योग की जानकारी है. मैं फिल्म का निर्माण करूंगा"

सुरेशभाई मगनलाल

मूल व्यवसायः प्राचीन काल की पोशाकें सप्लाई करना. धंधे में सर्वप्रथम.

निर्मित फिल्में: अभी कोई नहीं पर कॉमेडी बनाने की योजना. इस साल शुरुआत करने का इरादा.

तस्कर या भवन निर्माता के मुकाबले हमें इसके बारे में ज्यादा समझ है." वर्मा तथा उनकी तरह के दूसरे लोगों का कहना है कि इसका मतलब आगे सफलता के बेहतर अवसर होना है.

निर्माण के क्षेत्र में नए लोगों के इच्छुक होने का ठीक यही कारण है. मारियो गोंजाल्वेस हैं जो फिल्मी सेटों पर बैंड बजाते हैं. सुधीर देशमुख हैं जो बिजली का सामान किराए पर देते हैं. और शंकर आनंद हैं जो मुंबई में दादर के पास फिल्मी पोस्टर छापने वाली प्रिंटिंग प्रेस के मालिक हैं. आनंद कहते हैं, "आजकल फिल्म इंडस्ट्री से एकदम अनजान अनेक मूर्ख लोग फिल्में बना रहे हैं तो मैं भी क्यों न बनाऊं. अगर कामयाबी हाथ न भी लगी तो मेरा व्यवसाय तो है ही." लेकिन ये लोग आने वाले वर्षों में फिल्में बनाने का विचार रखते हैं जबकि ज्यादा स्थापित और संपन्न लोग कहीं जल्दी ही अपने इरादों को पूरा करने का इरादा बनाए हुए हैं.

मसलन, बिजन दासगुप्त को लें. दासगुप्त ने 1981 से 1990 के बीच करीब 70 फिल्मों के सेट डिजाइन तैयार किए. अब उनकी 12 फिल्में निर्माणाधीन हैं. मुंबई में रोजाना उनका चार जगह काम चलता है और वे सेट डिजाइन के लिए दो लाख रु. तथा सेट बनाने के काम को अंजाम देने के लिए इससे भी दोगुना मेहनताना हासिल करते बताए जाते हैं. वे कहते हैं, "लगता है मेरे फिल्म बनाने और निर्देशन करने का वक्त आ गया है. मैं पिछले साल ही यह करने वाला था लेकिन समय नहीं मिल पाया." दासगुप्त कहते हैं कि फिल्म बनाना जुआ है. इसमें जो 'खास रोमांच' है उसे वह व्यक्त नहीं कर पाते. दूसरी तरफ वे कामयाबी के प्रति आश्वस्त हैं. वे कहते हैं, "फिल्म इंडस्ट्री में मेरे संपर्क हैं. मुझे पता है मैं क्या चाहता हूं."

संपर्क तो हर व्यवसाय में महत्वपूर्ण होते हैं पर फिल्मी दुनिया में खास तौर पर. वहां संपर्क हों तो सफलता, नहीं तो पूरी तरह असफलता हाथ लगती है. इस मामले में सप्लाई का धंधा करने वालों का हाथ ऊपर है और इसमें वही अर्थशास्त्र काम करता है जिस पर यह उद्योग फल-फूल रहा है. मसलन, कोई सेट डिजाइनर, साउंडमैन या प्रकाश सज्जाकार फिल्म निर्माताओं को आसान शर्तों पर कर्ज देता है और महीनों भुगतान का तकाजा नहीं करता. और यह सदाशयता कई बार बहुत काम आती है. जैसे कोई फिल्म साइन करने के लिए किसी फिल्म स्टार से परिचय करना हो या किसी फिल्म में कुछ पैसा लगवाना हो या दोस्त डिस्ट्रीब्यूटरों से मदद लेनी हो.

फिल्म उद्योग में एक और कम महत्वपूर्ण पर सम्मानित व्यक्ति को भी निर्माण का चस्का लग गया है. ये हैं वस्त्रों के प्रमुख सप्लायर मगनलाल ड्रेसवाला के मालिक सुरेशभाई मगनलाल. उनकी कंपनी पुरानी तर्ज की पोशाकें, पुराने जमाने जैसे नकली जेवरात, हथियारों और दूसरे सामान की आपूर्ति करती है. अब सुरेशभाई एक कॉमेडी फिल्म बनाना चाहते हैं. वे कहते हैं, "मुझे उद्योग की जानकारी है, मैं फिल्म का निर्माण करूंगा." यह कंपनी उनके पिता ने 1926 में खोली थी और रामलीलाओं तथा रात भर चलने वाली लोकनाटिकाओं को पोशाकें सप्लाई किया करती थी. फिर फिल्म उद्योग में भी इसने पांव पसारे. और आज मगनलाल ड्रेसवाला बढ़िया कारोबार कर रही है. पोशाकें साप्ताहिक आधार पर किराए पर दी जाती हैं. आम पोशाक के 50 रु. से लेकर राजाओं के पोशाकों का किराया 30 हजार रु. तक है. श्याम बेनेगल के टी.वी. सीरियल 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' के लिए उसने कुल मिलाकर 52 कड़ियों के 7 लाख रु. वसूल किए. सुरेशभाई ने भारत में बनी लगभग हर ऐतिहासिक फिल्म या टीवी सीरियल को पोशाकें या दूसरा सामान सप्लाई किया है. इसकी कुछ ताजा मिसालें 'महाभारत', 'टीपू सुलतान', 'अजूबा' और 'कृष्ण' हैं.

अरसे से परदे के पीछे काम करने वाले ये लोग अब आगे आना चाहते हैं तो इसकी वजह पैसा है. उन्होंने जान लिया है कि फिल्म उद्योग में पैसा ही सब कुछ है. जलील अहमद इस महत्वाकांक्षा की सटीक मिसाल हैं. 30 वर्ष पहले तीन आर्क लाइटों के साथ उन्होंने काम शुरू किया. आज उनकी कंपनी गोल्डन लाइट्स उद्योग को रोशनी के सामान की सबसे बड़ी सप्लायर है. अहमद ने कमसिन जोड़ी आमिर खां और जूही चावला को लेकर अपनी पहली फिल्म 'दौलत की जंग' का निर्माण किया है. फिलहाल वे अपनी फिल्म परदे पर लाने के लिए किसी वितरक की तलाश में हैं. वे कहते हैं, "अगर मेरी फिल्म कामयाब रही तो मैं आगे निर्देशन का काम भी करूंगा."

पैसे के अतिरिक्त भी इसकी एक वजह है. अहमद कहते हैं, "मैं सोचता हूं जिंदगी में ऐसा काम करूं कि लोग मुझे याद करें. जगमगाहट के सामान की सप्लाई में तो यह संभव नहीं पर उन्होंने हिट फिल्म का निर्माण कर लिया तो यह हो सकता है. इस मौके से अहमद और उन जैसे दूसरे लोग वंचित नहीं रहना चाहते.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

उम्मीदें बहराईं

अवमूल्यन के बावजूद बढ़ोतरी

अधिकतर मौकों पर अनुमान लगाना कठिन होता है कि शेयर बाजार किस राह जाएगा. पिछले महीने भर से तो बाजार के रुख का अंदाज लगाना टेढ़ी खीर साबित हो रहा है. शेयरों की कीमत बताने वाला इकॉनॉमिक टाइम्स सूचकांक मध्य जून में 653.5 था और 20 जून तक 660 अंकों की सीमा पार कर चुका था. महीने के आखिर में जब अंदेशा जाहिर किया जाने लगा कि सरकार अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की शर्तों के आगे सिर नवा देगी और अर्थव्यवस्था की हालत दुरुस्त करने के लिए कठोर कदम उठाएगी तो सूचकांक ने 30 अंकों का गोता लगा लिया. लेकिन जब सरकार ने सचमुच में कठोर कदम उठाने शुरू किए जैसे—वित्तमंत्री मनमोहन सिंह ने जुलाई के पहले हफ्ते के दो दिनों के भीतर ही रुपए का करीब-करीब 20 फीसदी अवमूल्यन करने की घोषणा कर दी—तो सूचकांक ऊपर चढ़ने लगा. 5 जुलाई को यह 661.7 था.

चार्ट: बी.के. शर्मा

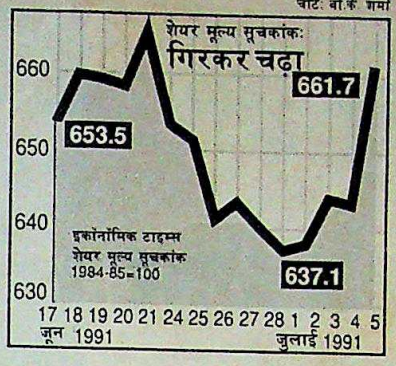

बाजार में होने वाले उतार-चढ़ाव का ईमानदारी से मूल्यांकन किया जाए तो यही दिखता है कि बाजार के उम्मीदें रखने की ठोस वजहें हैं. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से कर्ज मिलने ही वाला है. इस बात के भी संकेत हैं कि सरकार अर्थव्यवस्था के द्वार खोलने जा रही है. इसके अलावा मुंबई शेयर बाजार में यह अफवाह भी जोरों पर है कि वित्तमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव ने इस बात का पक्का आश्वासन दे रखा है कि उनके काम में किसी किस्म की कोई सियासी दखलंदाजी नहीं होगी. और यह भी कि अर्थव्यवस्था की सेहत दुरुस्त करने के लिए उन्हें दो साल दिए गए हैं.

हालांकि ये बातें बेपर की हो सकती हैं लेकिन कुछ विशिष्ट उद्योगों पर से नियंत्रण हटाने की बातों में दम दिखाई देता है. मिसाल के तौर पर औषधि उद्योग को लिया जा सकता है. औषधि मूल्य नियंत्रण आदेश में बड़े बदलाव किए जा सकते हैं. सरकार ने इस आदेश के माध्यम से दवाओं के दाम मनमर्जी से तय कर दिए. और आजादी का एहसास होते ही दवा कंपनियों के शेयर कुलांचे भरने लगे. इस मामले में हेक्स्ट सबसे भाग्यशाली रहा. उसके शेयर 550 अंक चढ़कर 5 जुलाई को सीधे 3,100 रु. पर बंद हुए. इसी तरह हिंदुस्तान सीबा-गाएगी के शेयर 200 रु. चढ़कर 1,400 रु. पर बंद हुए. ग्लैक्सो इंडिया, पार्क-डेविस, फाइजर, बरोज वेल्कम और औषधि उद्योग के दूसरे दिग्गजों के शेयरों का भी एक ही रुख रहा—ऊपर की ओर.

आशाजनक वातावरण कब तक बना रहता है, इसके बारे में तो कहना कठिन है. कुल मिलाकर बाजार तो देश की अर्थव्यवस्था का प्रतिबिंब ही दिखाते हैं जबकि नीति नियंता लालबुझक्कड़ी पर आश्रित रहा करते हैं.

जमा स्टॉक

	1991 ऊंचा	1991 नीचा	बंद 5.7.91	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
ब्लोक तेलैड	162.50	109.00	146.00	3.00–
ग्लो-मोर्मेट	2780.00	1300.00	2390.00	235.00–
ग्लिक्सन पेंट्स	267.50	215.00	233.75	8.75–
ग्लक्सो कोप्को	89.00	42.00	72.00	1.00–
ग्राज आंटो	680.00	500.00	575.00	40.00–
ग्वाडा रेयॉन	630.00	400.00	445.00	70.00–
ग्वाडा इंडिया	93.00	72.00	80.00	2.00–
ग्वालियर	309.00	228.00	282.00	2.00+
गेनल जूट	297.00	168.00	295.00	15.00+
गो ज्वाइंट	155.00	40.00	137.50	7.50–
गोवे ग्राइंग	245.00	150.00	197.50	27.50–
गोदरेज इंडिया	152.00	112.00	140.00	2.00–
ग्रुप वार	152.00	116.00	146.00	6.00–
ग्रैंडरी इंडिया	187.50	132.50	152.50	8.75–
ग्रैंडलोन इंडिया	355.00	162.50	348.75	18.75+
ग्रैंडरी टेक्सटाइल्स	6400.00	3625.00	6325.00	945.00+
ग्रानोलिट पामो.	338.75	250.00	325.00	21.25+
ग्रान्नामिंद.	142.50	76.25	127.50	5.00–
ग्रेनोएम	300.00	123.00	179.00	36.00–
ग्रवर	61.00	46.50	55.00	3.00–
ग्रिर्न होटल्स	52.00	35.00	45.00	5.00+
ग्रुपकाइंस	172.00	127.00	146.00	6.00–
ग्रुप्ती. केमल्स	260.00	140.00	185.00	47.50–
ग्रवारे नाइलोन	43.75	27.00	30.00	1.00+
गो ई. शिपिंग	81.00	25.00	78.50	20.50+
गुजरात फर्टि.	217.50	150.00	196.25	7.50–
गुजरात इंडिया	261.00	167.50	239.00	18.50–
गुल अंबुजा	180.50	90.00	170.00	7.50–
गुल गुलबू	277.50	200.00	260.00	2.50–
गुल बोरा	1450.00	650.00	1400.00	220.00+
हिंदुस्तान कीवर	180.00	140.00	171.25	3.75+
हिंदुस्तान मोटर्स	25.75	18.80	20.00	2.70–
हेक्स	3650.00	2400.00	3100.00	650.00+
हाईसीआई	57.00	30.00	52.00	2.50–
हाइपन आर्गेनिक	47.50	30.00	33.50	5.00–

	1991 ऊंचा	1991 नीचा	बंद 5.7.91	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
इंडियन रेयॉन	137.50	104.50	116.00	7.00–
इंगरसॉल-रैंड	385.00	240.00	315.00	–
आईटीसी	179.00	99.00	175.00	9.50+
जे.के.सिथेटिक्स	42.00	27.00	28.50	4.00+
काइनेटिक इंजी.	190.00	145.00	160.00	12.50–
किर्लो. क्युमिंस	156.25	95.00	138.75	3.75+
केएसबी पंप्स	225.00	160.00	200.00	5.00+
लार्सन-टुब्रो	140.00	90.00	107.50	7.00–
लोहिया-मशीन्स	37.50	21.00	23.00	2.00–
महिंद्रा-महिंद्रा	82.50	57.50	60.00	11.25–
मास्टरशेयर्स	38.00	20.00	34.75	0.75–
मोटर इंडस्ट्रीज	1350.00	675.00	1250.00	60.00–
मुकुंद लिमि.	215.00	125.00	127.50	36.25–
नेशनल आर्गे.	1400.00	925.00	1375.00	175.00+
नेस्ले इंडिया	152.50	111.25	144.00	4.00+
निरलॉन	25.00	16.00	21.00	0.50–
ओरके सिल्क मि.	34.25	17.50	24.75	4.50–
पेड्को इलेक्ट्रॉनिक्स	98.50	53.00	91.00	18.50+
फाइजर	92.50	60.00	85.00	8.75+
प्रीमियर आंटो	57.00	30.00	40.00	6.00–
रेमंड	180.00	110.00	152.50	8.75–
रिकीट-कोलमैन	277.00	205.00	263.00	5.00–
रिलायंस इंडस्ट्रीज	163.75	91.25	124.00	30.00–
सीमेंस इंडिया	151.00	112.50	150.00	10.00+
शॉ वैलेस	127.00	77.00	124.00	1.00+
श्रीराम फाइबर्स	44.00	33.00	40.50	2.50–
एसकेएफ बेय.	2825.00	1650.00	2425.00	150.00+
स्पिक	65.00	33.00	51.00	9.00–
टाटा स्टील	204.00	170.00	204.00	10.00+
टेल्को	255.00	142.50	232.50	16.25–
टाइटन वाचेस	93.75	58.00	75.00	8.00–
वाम ऑर्गेनिक	182.50	102.50	182.50	16.25+
वीडियोकॉन	285.00	133.75	160.00	37.50–
वोल्टास	125.00	92.50	125.00	5.00+
विमको	31.50	16.00	28.50	2.50–

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	19.9321	19.7207
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	201.5315	201.0614
बहरीन	दीनार	1	69.4406	67.5104
बांग्लादेश	टका	100	74.2807	73.1443
कनाडा	डालर	1	22.8651	22.6335
डेनमार्क	क्रोना	1	3.7001	3.6616
मिस्र	पौंड	1	8.1339	8.0051
फ्रांस	फ्रैंक	1	4.2735	4.1667
जर्मनी	मार्क	1	14.4928	14.1243
हांगकांग	डालर	1	3.3599	3.3265
इंडोनेशिया	रुपिया	100	1.3410	1.3199
ईरान	रियाल	100	–	–
इटली	लीरा	100	1.9241	1.9012
जापान	येन	100	19.0114	18.5529
केन्या	शिलिंग	1	0.9072	0.8922
कुवैत	दीनार	1	–	–
मलेशिया	डालर	1	9.3462	9.2523
मारीशस	रुपया	1	1.5541	1.5210
नेपाल	रुपया	1	0.6070	0.6056
हालैंड	गिल्डर	1	12.6900	12.5547
पाकिस्तान	रुपया	1	1.0701	1.0554
सिंगापुर	डालर	1	14.7654	14.6140
स्पेन	पेसो	1	0.2264	0.2241
श्रीलंका	रुपया	1	0.6368	0.6268
स्वीडन	क्रोना	1	3.9560	3.9147
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	16.5303	16.3597
तंजानिया	शिलिंग	1	0.1192	0.1175
थाईलैंड	बहत्त	100	102.5920	99.6397
ब्रिटेन	पौंड	1	41.8673	41.5628
अमेरिका	डालर	1	26.1097	25.8565
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	7.1124	7.0377
सोवियत संघ	रूबल	1	29.9813	29.9125

स्रोत: बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 4.7.91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्रशेखर

आरामतलबी और बेफिक्री का आलम

पूर्व प्रधानमंत्री अपनी आरामगाह में लौट आए हैं. राजनीति से दूर रहकर अब वे अपनी सत्ता के दिनों में मिली अतिरिक्त भूमि पर निर्माण कार्यों की देखरेख में लगे हैं.

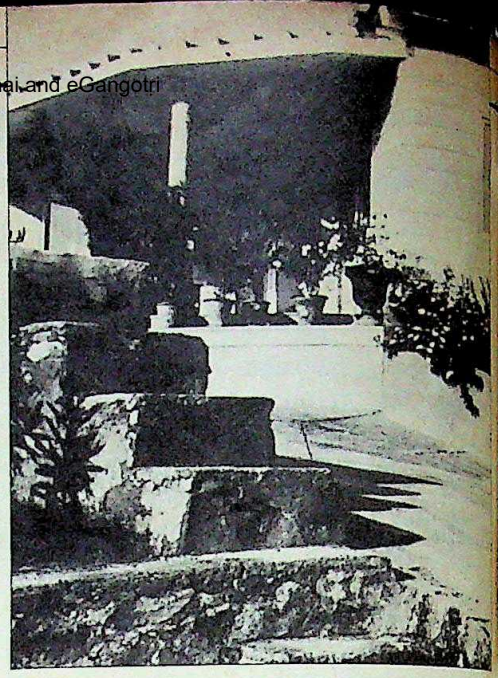

—हरिंदर बवेजा

पगडंडी पर चलते हुए वे कोई गीत गुनगुना रहे हैं, सासारिक चिंताओं से बेखबर. वे सिर झटककर बेलौस हंसते हैं, किताबें पढ़ते हैं, दूर तक टहलने निकल जाते हैं. पक्षियों को या तो दाना चुगाते हैं या फिर उनसे बतियाते हैं, और कुछ नहीं तो यों ही बैठकर प्रकृति को निहारते हैं. न पढ़ने को फाइलें हैं, न बैठकों की फिक्र है. न तो भाषणों की तैयारी है और न ही गुप्त मंत्रणाओं का दौर है.

पूर्व प्रधानमंत्री होने का अर्थ है अपने चारों ओर घिर आए शून्य को भरने की लगातार कोशिश करना. और चंद्रशेखर इस काम को बखूबी अंजाम दे रहे हैं. नई दिल्ली से 45 किमी दूर भोंडसी के फार्महाउस में वे कुछ इस अंदाज से लौटे हैं मानो कोई योद्धा अपने शिविर में लौटा हो. देश की समस्याओं से जूझने की चिंता अब उन्हें नहीं है और न ही इंका द्वारा समर्थन वापस ले लेने का खौफ. कठपुतली सरकार चलाने के आरोप की भी आशंका नहीं. वह समय भी पीछे छूट गया है जबकि उनकी सरकार को बजट प्रस्तुत करने नहीं दिया गया था, और तमिलनाडु में द्रमुक सरकार को बरखास्त करने के लिए उन्हें एक तरह से मजबूर कर दिया गया था. वे दिन भी अतीत का हिस्सा बन चुके हैं जब चुनाव सभाओं को संबोधित करने के लिए वे तूफानी दौरों में व्यस्त रहा करते थे. चेहरे पर निश्चितता के भाव के साथ वे कहते हैं, "मैं अभी आराम कर रहा हूं. आप जाकर नई सरकार के लोगों से बातचीत करें."

कोई दुःख या पश्चाताप नहीं है. जिस आत्मविश्वास से भरकर वे अपने मुट्ठी भर साथियों के साथ देश के सबसे महत्वपूर्ण

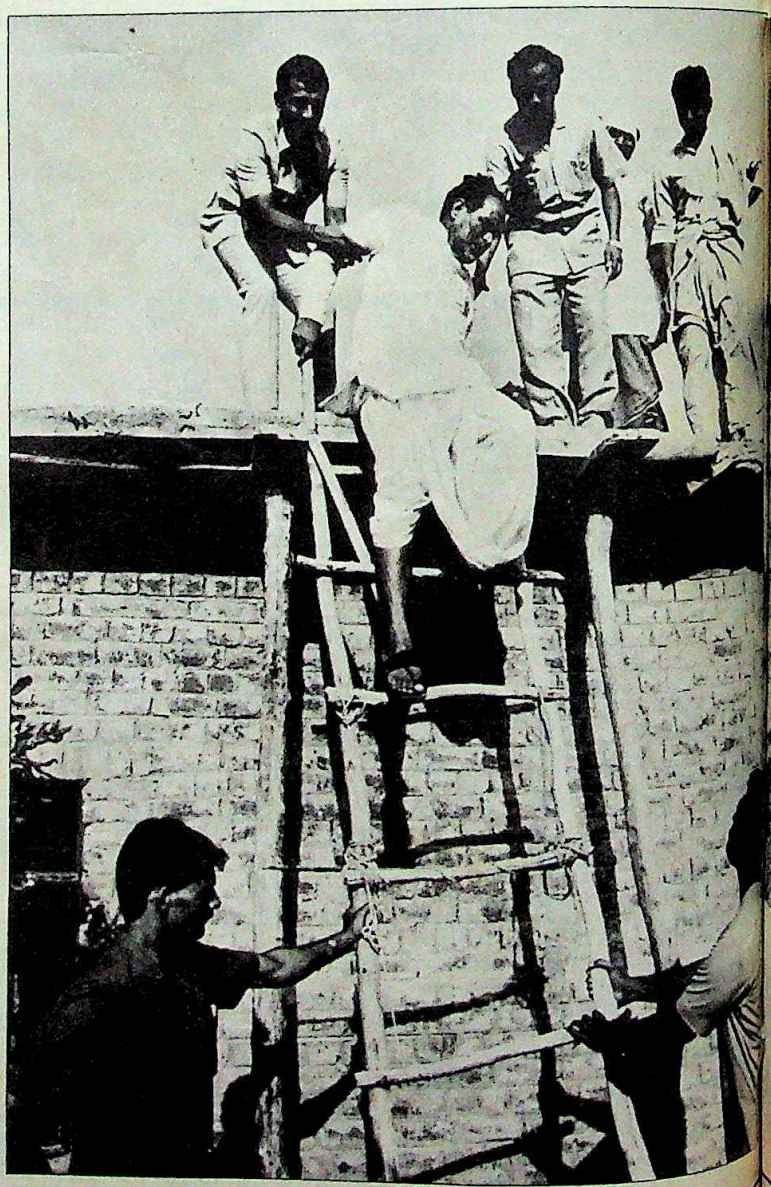

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...लिन बन गए थे, उसी अंदाज में उन्होंने ...क ऐसी पार्टी का नेता बनना कबूल कर ...वा है जिसे हाल के चुनावों में महज पांच ...टे ही हासिल हुई हैं. आवाज का ...तोषपन भी वही है. उनके शब्दों में, ...ाने आधार या संगठन को मजबूत करने ...ा हमें वक्त ही कहां मिला.'' चंद्रशेखर के ...रे पर उदासी के चिह्न नहीं हैं, क्योंकि ...स्ट भविष्य में कोई बड़ी संभावना भी ...ी नजर आती. चंद्रशेखर हमेशा से गुपचुप ...ने बलते रहे हैं. प्रधानमंत्री बनने के लिए ...े उन्होंने काफी जोड़तोड़ की लेकिन ...ोंसी रह चुके चंद्रशेखर अब कोई नई ...ेना नहीं बना रहे, खास तौर से इंका ...ग समर्थन वापस लेने के कटु अनुभव के ...द बलिया का यह नेता फिलहाल तो बस ...र सदस्य की भूमिका में ही संतुष्ट है.

चंद्रशेखर का अधिकांश दिन अब अपने फार्महाउस पर चल रहे निर्माण कार्यों की देखरेख में बीतता है. उनके प्रधानमंत्री बनने के तत्काल बाद ही भारत यात्रा ट्रस्ट को अतिरिक्त 35 एकड़ जमीन मुहैया करा दी गई. इसका विकास कार्य वे खुद अपनी देखरेख में करवा रहे हैं. यह जमीन खास तौर से महिलाओं के लिए एक पॉलिटेक्निक बनाने के लिए दी गई, क्योंकि पंचायत की जमीन किसी सामाजिक कार्य के लिए ही दी जा सकती है.

पर यह संयोग मात्र नहीं है कि यह अतिरिक्त जमीन उनके फार्महाउस से सटी हुई है. आलोचकों के अनुसार इस दान में ओमप्रकाश चौटाला की अहम भूमिका रही. 1984 में चंद्रशेखर की 4,260 किमी की प्रसिद्ध पदयात्रा के बाद उक्त ट्रस्ट को 45 एकड़ जमीन मिली थी. फिर उनके 'पीएम साहब' बनने पर भोंडसी को कई सुविधाएं मिल गईं. हरियाणा लोक निर्माण विभाग ने सोना-गुड़गांव मार्ग से 1.8 किमी पक्की सड़क निकालकर उसे उनके फार्महाउस से जोड़ दिया.

भारत यात्रा ट्रस्ट को अरावली क्षेत्र को हरा-भरा बनाने का ठेका मिला हुआ है. 25 करोड़ रु की इस केंद्रीय परियोजना में चंद्रशेखर की खासी रुचि है. फार्महाउस के आसपास भी उन्होंने 500 एकड़ जमीन में पेड़ लगाने का काम ले रखा है. वे रोजाना तड़के ही सभी जगहों की देखरेख के लिए निकल पड़ते हैं. एक जगह पहुंचकर वे कहते हैं, ''इन पत्थरों को यहां से हटा दीजिए. नहीं तो यहां कुछ भी कैसे उगेगा?''

फोटो: प्रभात पंजियार

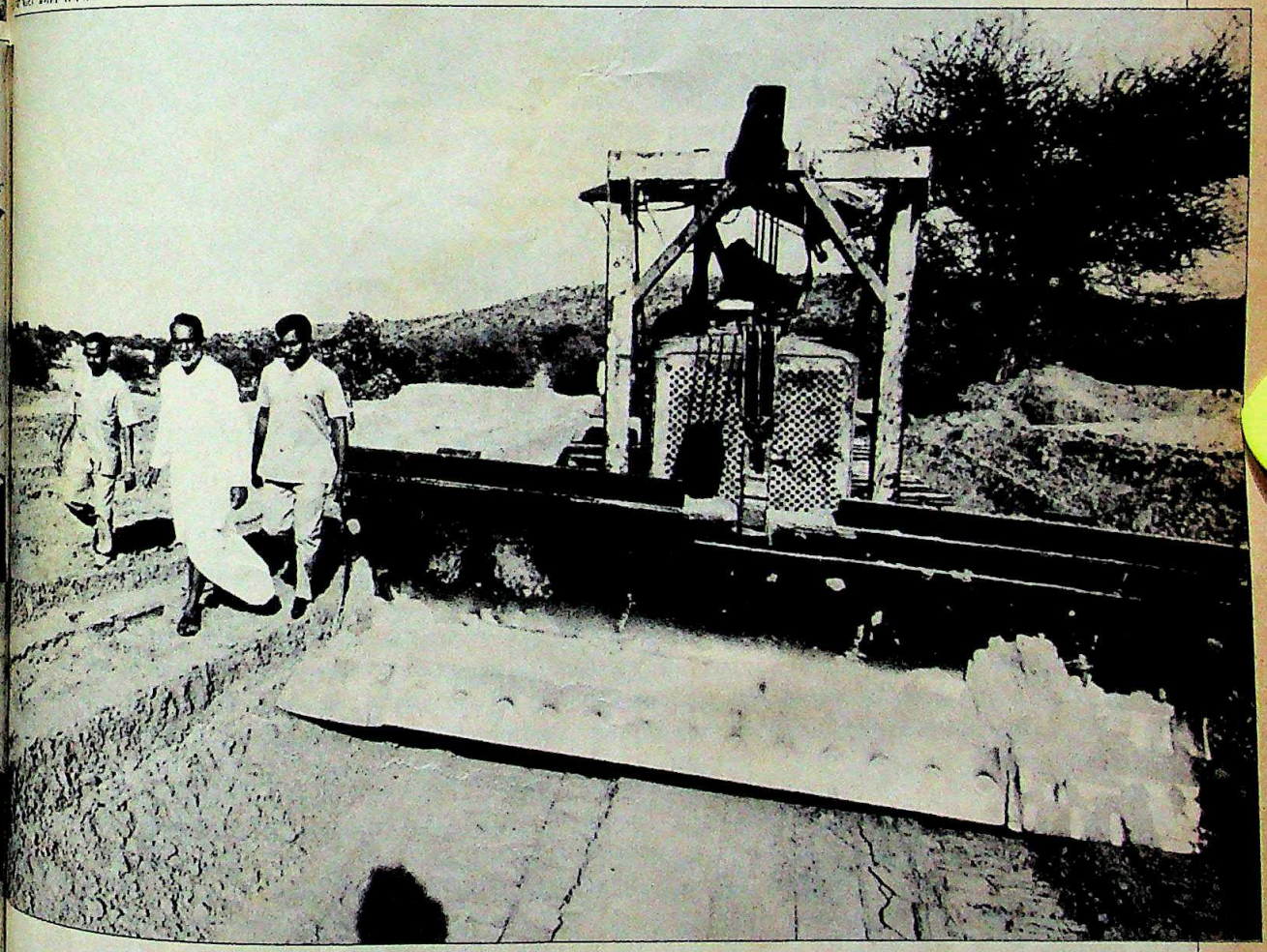

(बाएं ऊपर) फार्महाउस; ग्रीनहाउस की छत का निरीक्षण; और नई मिली जमीन पर काम

चंद्रशेखर भारत यात्रा ट्रस्ट के कामकाज में पूरी रुचि ले रहे हैं. उनका मानना है कि देश चलाना ज्यादा आसान था, तब सिर्फ निर्देश ही देने होते थे. अब तो खुद काम करवाना पड़ता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

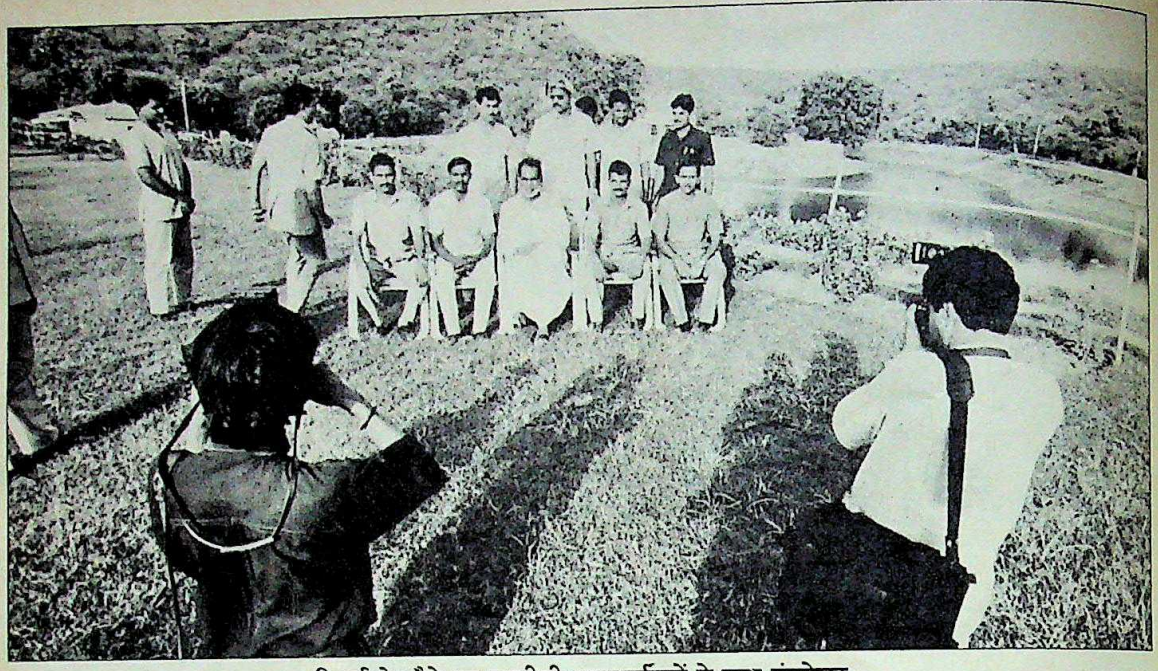

विदाई के मौके पर एसपीजी सुरक्षाकर्मियों के साथ चंद्रशेखर

चंद्रशेखर बुलेटप्रूफ कारों और सुरक्षाकर्मियों जैसे सत्ता के चोंचलों को धीरे-धीरे विदा कर रहे हैं. उन्हें दुख है तो सिर्फ एसपीजी वालों की विदाई का, जिन्हें वे सुसंस्कृत लोग बताते हैं

असंतुष्ट भाव से वे अपने बचपन के मित्र और ट्रस्ट के अध्यक्ष बेनी प्रसाद माधव की ओर घूमकर उनसे यह काम करवा देने के लिए कहते हैं और आगे बढ़ जाते हैं.

पेशानी से पसीने की बूंदें हटाते हुए चंद्रशेखर मुस्कराकर कहते हैं, "देश चलाना ज्यादा आसान था. सिर्फ निर्देश देने होते थे, अब तो मुझे खुद काम करवाना पड़ता है." सात महीने के अपने शासनकाल से वे बिलकुल अलग-थलग हो गए लगते हैं. "मैंने देश की समस्याओं को जानते हुए ही प्रधानमंत्री का पद संभाला था. काम अत्यंत कठिन है और एक बात साफ है कि हम जब तक एक नहीं होंगे, सफलता हाथ नहीं लगेगी. एक चंद्रशेखर तमाम समस्याओं को नहीं सुलझा सकता. एक व्यक्ति देश को बना या बिगाड़ नहीं सकता. देश चलाना घर चलाने जैसा नहीं होता. न ही यह काम किसी एक राजनैतिक पार्टी के बूते का है. हम राजनीति की चर्चा क्यों कर रहे हैं? मैं यहां आराम करने आया हूं."

सत्ता के जिन चोंचलों का इस्तेमाल चंद्रशेखर प्रधानमंत्री के नाते करते थे, उनका आभास अब उन चार 'बुलेटप्रूफ' कारों से ही मिलता है जो उनके साथ-साथ चलती हैं. साथ में एसपीजी के जवान भी उन्हें घेरे में लेकर चलते हैं. और इसी सब के दौरान चंद्रशेखर गांववालों से सलाम-दुआ करने के साथ-साथ तालाब की बत्तखों से भी बातें करते चलते हैं.

वैसे, उन्होंने खुद को राजनीति के मैदान से खारिज नहीं किया है. "हमारी ही ऐसी पार्टी है जो जाति या धर्म के नाम पर विभाजित नहीं. जनता दल में ऐसी क्या महान बात है कि हमें उसके साथ रहना चाहिए था? हम दोनों ही विपक्ष में हैं. मेरे आगे क्या है या पीछे क्या रह गया, यह महत्वपूर्ण नहीं. मेरा भविष्य उतना अंधकारमय नहीं, जितना कुछ लोग समझते हैं."

एकांत में पड़े खलल से नाराज, वे कहते हैं, "मैं अपनी बात संसद में कहूंगा. सत्र शुरू तो होने दीजिए. लगता है आप यहां इसलिए आ गई क्योंकि आपके पास कोई और काम नहीं." जो व्यक्ति वी.पी. सिंह को सदा कांटे-सा चुभता रहा, जिसे विद्रोही, तोड़क वगैरह बताया जाता रहा, आज राजनीति की चर्चा नहीं चाहता. राष्ट्रीय मसलों के केंद्र में गुजरे सात महीनों ने पूर्व प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षा कम कर दी है.

चंद्रशेखर जानबूझकर किसी भी तरह के काम से अलग रह रहे हैं. "मैं अपनी मर्जी से दिन गुजार रहा हूं. अगर कुछ पढ़ने की इच्छा होती है तो पढ़ता हूं, अन्यथा दोस्तों से गपशप करता हूं." उनके दोस्तों में कानपुर के ज्योतिषी शुक्ला जी भी थे. वे शुभ समाचार लेकर आए थे. चंद्रशेखर आगामी 14 महीनों के बाद फिर प्रधानमंत्री बनेंगे. किन दोस्तों के साथ उनका वक्त गुजरता है? "अरे, क्या आप सब भूल गईं? आधा समय तो आप पत्रकारों ने मेरे दोस्तों के बारे में लिखा. अब सूर्यदेव सिंह तो रहे नहीं, सो कोई उनके बारे में लिखता नहीं. और क्या चंद्रास्वामी केवल मेरे दोस्त थे? मुझसे ज्यादा तो वे नरसिंह राव के करीबी हैं पर अब आपकी कोई रुचि नहीं. यह कैसी दोहरी नीति है आप सबकी?"

लॉन के दूसरे सिरे की ओर बढ़कर वे सुरक्षाकर्मियों को पीछे छोड़ कहते हैं, "आइए, चाय लें." इसके साथ ही प्रधानमंत्री वाला तामझाम जैसे कहीं पीछे छूट गया लगता है. चंद्रशेखर ने नरसिंह राव के शपथग्रहण से पहले ही अपना सब कुछ समेटकर 7, रेसकोर्स रोड खाली कर दिया था. आराम के इन क्षणों में अब शायद उन्हें अगले 14 महीनों के बीतने का इंतजार है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब भारत में पहली बार

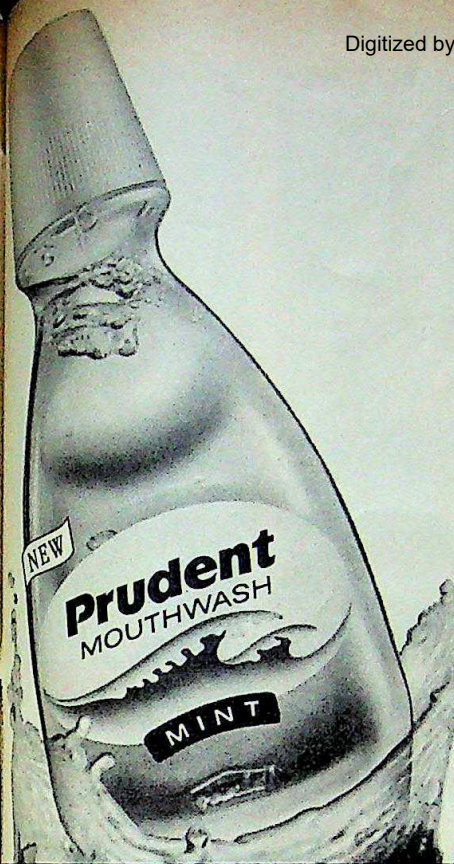

छलकता आत्मविश्वास!

खेल-मस्ती हो या काम. सुबह हो या शाम. किसी भी बात से पहले या हर बात के बाद नया प्रूडेन्ट माउथवॉश साँसों में वो ताज़गी जगाए जो बात-बात में आत्मविश्वास छलकाए. स्वादभरी सनसनाहट और मिंट के साथ दिनभर ताज़गी रहे.

PARLE

जब चाहें, साँसों में ताज़गी छलकाएं

अगर आप पूरी तरह निराश हो चुके हों तो

प्रोफ़ेसर पी.जी.ए. नाथ "तांत्रिक सम्राट"

विश्वविख्यात हस्तरेखा-विशेषज्ञ और ज्योतिषी से परामर्श लीजिये.

○ शत्रुओं से रक्षा ○ प्रेम विवाह ○ नौकरी ○ तबादला ○ मुकद्दमेबाजी ○ प्रमोशन ○ दौलत ○ पति-पत्नि और परिवार के झगड़े ○ व्यापार ○ स्वास्थ्य ○ विदेश यात्रा ○ मानसिक शांति ○ ओज तथा जीवन शक्ति ○ भय से बेचैनी ○ परीक्षा में सफलता ○ राजनीति में उपलब्धि आदि.

चमत्कारिक 'सिद्ध यंत्र' धारण करके आनंद मनाइये.

शुल्कः— स्पेशल 2295/- रु०, डीलक्स 2595/- रु०, सुपर डीलक्स 2895/- रु०, हाईपावर 3595/- रु०, सुपरशाट 3995/- रु०, इंसटेन्ट एक्शन 5555/- रु०, हस्तरेखा पठन 1595/- रु०, प्रति प्रश्न 1195/- रु०, भाग्यशाली रत्न सबंधी परामर्श 1795/- रु०, नये लाभकारी व्यापार सबंधी परामर्श 1995/- रु०

यह सभी सिद्ध जन्तर पूजा पाठ एवं सिद्धियुक्त हैं और हर प्रकार की समस्या हल करने में सक्षम हैं।

प्रोफ़ेसर पी.जी.ए. नाथ जिज्ञासु

62-63 A, कमलानगर दिल्ली-110 007 फोनः 2514445, 232310, 2927077

मिलने का समय प्रातः 8.00 बजे से सायं 8.00 बजे तक

Rashtriya

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: कृष्णमुरारी किशन

तिस्खोरा हत्याकांड में मृतक; (दाएं) जमींदार ज्वाला सिंह: कोई कार्रवाई नहीं

बिहार के हरिजन

नकारा जाना ही नियति

राज्य में हरिजनों के उत्पीड़न का घृणित तरीका तो अब खत्म हो गया है पर उनकी सामाजिक स्थिति में कोई खास अंतर नहीं आया है.

—फरजंद अहमद

बिहार के गया जिले के जमींदार 30 के दशक में हरिजनों से हर सुबह एक सेर दूध की मांग किया करते थे. अगर हरिजन दूध नहीं दे पाते थे तो जमींदार उनके परिवार की औरतों का एक सेर दूध मांगते थे. यह उनके दंड देने का तरीका था. ऐसे ही उत्पीड़न की वजह से स्वामी सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में उग्रपंथी 'किसान आंदोलन' तेजी से फैला था. छह दशक बाद उत्पीड़न का यह घृणित तरीका खत्म तो हो गया है लेकिन हरिजनों की सामाजिक स्थिति में कोई खास फर्क नहीं आया है.

22 मई को एक हरिजन युवक अपनी नवविवाहिता पत्नी के साथ एक ट्रैक्टर में जा रहा था. जैसे ही वह गया जिले के मायापुर गांव में पहुंचा, कुछ जमींदारों ने उसे रोक लिया और उससे कहा कि हरिजन होने के कारण उसे ट्रैक्टर से जाने का दुस्साहस नहीं करना चाहिए था. युवक ने विरोध किया तो उसे गोली मार दी गई.

बिहार के हरिजन अभी भी 'दुनिया में सबसे घृणित', शोषित और मताधिकार से वंचित लोग हैं. वे हमेशा इसी आशंका में जीते हैं कि ताकतवर जमींदार उन्हें खत्म कर देंगे (देखें चार्ट).

पिछले पखवाड़े यह सचाई बड़े बर्बर तरीके से सामने आई. भोजपुर जिले के देव और सहियारा गांवों के 14 हरिजनों को नींद में ही मौत के घाट उतार दिया गया क्योंकि स्थानीय जमींदारों को आशंका थी कि उन लोगों ने उनके तीन 'आदमियों' की हत्या की है. ये तीनों बदमाश भोजपुर के डांवर-बिहटा इलाके में राजपूत जमींदारों द्वारा की गई 23 हरिजनों की हत्या में मुख्य अभियुक्त थे. हरिजनों का अपराध? 1989 के चुनाव में उन्होंने वोट देने का दुस्साहस किया था.

आजादी के चार दशकों के बाद भी बिहार के हरिजन अभी भी अपने मताधिकार के प्रयोग की हिम्मत नहीं कर सकते. कई भागों में तो वे अपना सिर भी नहीं उठा सकते. जेलमंत्री उदय नारायण चौधरी ने, जो. हरिजन हैं और जिन्होंने गरीबों के शोषण के खिलाफ संघर्ष किया है, कहा, "हरिजनों को आजादी का लाभ अभी तक नहीं मिला है. इससे उनके भीतर कुंठा उपज रही है जिसे मुख्य धारा वाली राजनैतिक पार्टियों और धुर वामपंथी संगठनों ने भुनाया है."

डांवर-बिहटा भी इसकी एक मिसाल है. पिछले पखवाड़े 14 गरीब लोगों की हत्या के बाद सभी पार्टियों के नेता शोकाकुल लोगों को सांत्वना देने दौड़ पड़े. उन्होंने मदद की घोषणा की और हत्यारों को दंड देने की कसम खाई. मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव घटनास्थल पर सबसे पहले पहुंचे और मारे गए लोगों के परिवारों को एक लाख रु. की अनुग्रह राशि और उनके आश्रितों को नौकरी देने की घोषणा की.

यादव के इरादे पर किसी को शक नहीं है. ग्रामीण पटना जिले के तिस्खोरा हत्याकांड में जब जमींदारों के 'किसान सेना' के हथियारबंद दस्तों ने छह हरिजनों सहित 14 गरीबों की हत्या कर दी थी तो यादव ने तुरंत उनके परिवारों को मुआवजा दिया और उनके आश्रितों को काम मुहैया करा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्रवाई शुरू की थी. लेकिन जब मारे गए लोगों को पार्टी का कार्यकर्ता बताया तो को बहुत ताज्जुब हुआ क्योंकि सर्वविदित तथ्य है कि इन क्षेत्रों धुर वाम राजनैतिक पार्टी— पीपुल्स फ्रंट (आईपीएफ) मजबूत जड़ें थीं और वे उनके कर्ता थे. जाहिर है, हरिजनों के अपना आधार मजबूत बनाने के यादव इस मामले को नैतिक रंग दे रहे थे.

ऐसा प्रयास करने वालों में सिर्फ यादव ही नहीं थे. नरसंहार के बाद केंद्रीय कल्याणमंत्री राम केसरी हवाई जहाज से पहुंचे और वहां से कारों के काफिले के साथ घटनास्थल तक. मारे गए लोगों के परिवारों प्रत्येक को प्रधानमंत्री राहत में 50,000 रु. की अनुग्रह राशि और बचे हुए लोगों के पुनर्वास गरीबों में आत्मविश्वास जगाने लिए एक कल्याणकारी कार्यक्रम करने की घोषणा की.

ने अपनी पार्टी की से, जिसने हरिजन को दिया है, पहली कहा कि "राजनैतिक में सामाजिक न्याय महत्वपूर्ण है." लेकिन यादव का मानना है राज्य में 'सामाजिक न्याय' के उनके से ही अंततः हरिजन अपनी उठा सकेंगे और शोषक वाद के खिलाफ लड़ सकेंगे. इस की प्राप्ति और हरिजनों का रुख ओर करने के लिए लालू यादव ने ठाकुर के पदचिह्नों पर चलते हुए की कि तनावग्रस्त गांवों में को हथियार दिए जाएंगे ताकि जमींदारों के हमलों से अपनी रक्षा कर सकें. लालू यादव ने कहा कि हरिजन युवकों को सशस्त्र दिया जाएगा उन्हें प्रति माह में 200 रु. भी मिलेंगे.

लालू यादव भले ही इस योजना पर करें लेकिन वे डांवर-बिहटा के लिए जिम्मेदार माने जाने ताकतवर राजपूत जमींदार ज्वाला के खिलाफ अभी तक कोई कार्रवाई कर सके हैं. 70 वर्षीय ज्वाला सिंह वाद की विशिष्ट मिसाल हैं. वे एकड़ जमीन के मालिक हैं और डांवर-बिहटा के बीच में किलेबंदी वाले

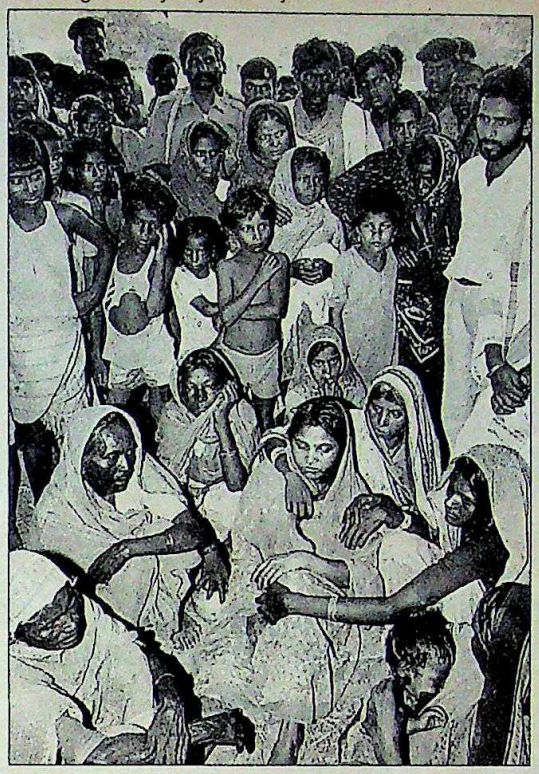

अगर मैंने कुछ गलत किया है तो सरकार उसे साबित करे. सीआईडी ने मुझे दोषमुक्त कर दिया था"

ज्वाला सिंह, जमींदार

नरसंहार में मारे गए हरिजनों की संख्या

वर्ष	स्थान	मौतें
1977	बेलछी	14
1980	पिपरा	14
1980	पारसबीघा	11
1984	गगनबीघा	5
1986	गैनी	12
1986	कंसारा	11
1988	नोनही-नगवां	18
1988	कोइरिया-चातर	7
1989	तिरोजपुर	6
1989	मुंगेर	7
1989	डांवर-बिहटा	23
1990	दरियापुर	4
1991	पहाड़पुर	7
1991	हरलाखी	6
1991	मलबरिया	13
1991	देव और सहियारा	14

डांवर-बिहटा नरसंहार में मृतकों के परिवारजन

'ठाकुर निकेतन' में रहते हैं. 'ठाकुर निकेतन' एक तरह का सत्ता केंद्र है. हरिजनों के 1989 के नरसंहार में वे मुख्य संदिग्ध थे और उन्होंने अग्रिम जमानत ले ली थी. इस साल के चुनाव में भी ज्वाला सिंह के आदमियों ने ऐसा आतंक फैलाया ताकि कोई भी हरिजन वोट न देने पाए. आतंक इतना जबरदस्त था कि हरिजन बस्ती के सभी मर्द गांव छोड़कर भाग गए.

देव-सहियारा नरसंहार के बाद पुलिस उन्हें पकड़ने में विफल रही. तरारी ब्लॉक के प्रमुख ज्वाला सिंह ने दावा किया, "यदि मैंने कुछ गलत किया है तो सरकार उसे साबित करे. सीआईडी ने मुझे दोषमुक्त कर दिया था. 20 मुखियाओं ने सरकार को भेजे एक संयुक्त ज्ञापन में कहा है कि मैं अपराध में शामिल नहीं था."

उधर, आईपीएफ के राज्य अध्यक्ष कृष्णदेव प्रसाद यादव ने कहा कि सामाजिक न्याय के नाम पर लालू यादव की सरकार उन लोगों के साथ 'सामाजिक अन्याय' कर रही है जिन्हें सचमुच न्याय की जरूरत है. अपनी बात के समर्थन में उन्होंने कहा कि जब कुछ पार्टी कार्यकर्ता हाल के हत्याकांड का विरोध करने के लिए विधानसभा के सामने गए तो पुलिस ने उन्हें बड़ी बेरहमी से पीटा.

गरीबों और हरिजनों में आत्मविश्वास जगाने के लिए आईपीएफ के अध्यक्ष नागभूषण पटनायक ने डांवर-बिहटा से अपनी पार्टी का अभियान शुरू किया था. हर किसी ने सोचा था कि चुनाव में हरिजन 'बाबू साहबों' (राजपूतों) की बात नहीं मानेंगे. लेकिन ऐन चुनाव के दिन ऐसा नहीं हुआ. जहानाबाद के नोनही-नगवां गांवों में भी कोई हरिजन वोट देने की हिम्मत नहीं जुटा सका. 50 वर्षीय जगदीश पासवान ने कहा, "मारपीट के डर से हम बूथ पर नहीं गए. चुनाव से एक दिन पहले गांव की पुलिस चौकी हटा ली गई. हमको पहले भी कभी वोट नहीं डालने दिया गया था." भीमल पासवान ने कहा, "बूथ पर हमारे पहुंचने के पहले ही हमारे वोट पड़ चुके होते हैं. इस चुनाव से क्या फायदा है?" 45 वर्षीया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीता देवी ने कहा, "हमने आज तक वोट देखा ही नहीं है."

बिहार में, जहां नया सामाजिक-राजनैतिक ढांचा तेजी से उभर रहा है, ऐसे कई डांवर-बिहटा और नोनही-नगवां गांव हैं जहां के हरिजन वोट तो डालना चाहते थे लेकिन ऐसा करने की हिम्मत नहीं जुटा पाए. जिन लोगों ने हिम्मत भी की, उन्हें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी. उत्तर बिहार में मुजफ्फरपुर से 30 किमी दूर विष्णुपुर-भागनगरी गांव की हरिजन बस्ती में यह साबित भी हो गया. मतदान के दूसरे दिन सैकड़ों सशस्त्र गुंडों ने उनकी झोंपड़ियों को तहस-नहस कर डाला और उनमें आग लगा दी जिसमें दो महीने के जुड़वां बच्चे जलकर मर गए. खेतों और अगड़ी जातियों के लोगों के घरों से घिरी बस्ती एक पल के भीतर ही जलकर राख हो गई. जुलुम पासवान ने, जिनके जुड़वां बच्चे हमले में मारे गए, कहा, "अपनी मर्जी से वोट देने का हमें यह फल मिला."

भोजपुर में मतदान के दिन जिला मुख्यालय आरा से 15 किमी दूर अरुहौरिया गांव में 12 लोगों ने 100 हरिजन पुरुषों और महिलाओं को भगा दिया, बूथों पर कब्जा करके उनके वोट डाल दिए.

ये घटनाएं उस व्यवस्था का पर्दाफाश करती हैं जिसमें हरिजनों की आबादी 14 प्रतिशत होते हुए भी उन्हें इलाके के सामाजिक-राजनैतिक प्रभुत्व वाले लोग वोट नहीं डालने देते. एक अधिकारी ने कहा, "ऐसा नया कुछ भी नहीं हुआ है जो पहले न हुआ हो. नया तथ्य सिर्फ यह है कि हरिजनों का एक वर्ग अब अपने वोटों का महत्व महसूस करने लगा है."

जनता दल नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री उपेंद्र प्रसाद वर्मा कहते हैं, "आज हरिजनों की लड़ाई आर्थिक से ज्यादा सामाजिक है. यह डॉ. राममनोहर लोहिया के इस दर्शन का नतीजा है कि सामाजिक और आर्थिक क्रांतियां एक साथ शुरू होनी चाहिए." उन्होंने कहा कि डॉ. लोहिया ने बिहार को अपना कार्यक्षेत्र बनाया था. कुछ दूसरे लोगों का मानना है कि राज्य के सामुदायिक विकास आंदोलनों का फायदा उठाकर उग्रपंथी आंदोलनों ने हरिजनों को उनके सामाजिक-आर्थिक अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया और मार्क्सवादी संगठनों ने हरिजनों को संगठित करने में इसी का लाभ उठाया.

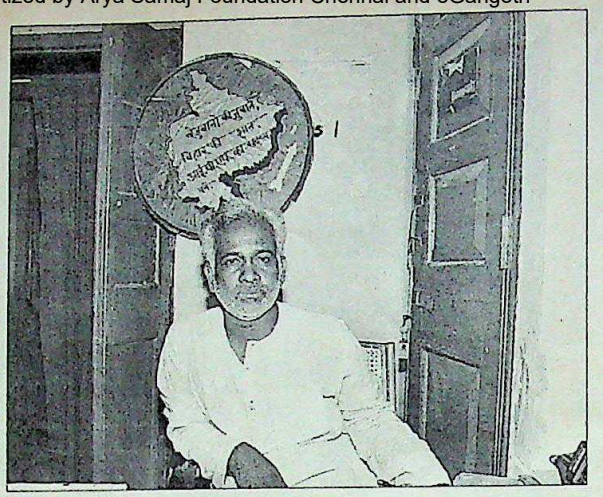

"हरिजनों को अपने अस्तित्व और अधिकारों के लिए खड़ा होना होगा और लड़ना होगा"

कृष्णदेव प्रसाद यादव, अध्यक्ष, आईपीएफ

हरिजनों के सामाजिक और आर्थिक रूप से जागरूक होने के कारण पारंपरिक अगड़ी जातियों के जमींदारों और पिछड़ी जातियों के नव-धनाढ्य जमींदारों ने मध्य बिहार में 'उग्रपंथियों' को कुचलने के लिए अपनी निजी सेनाएं बना लीं. इस बीच, मार्क्सवादी संगठनों ने अपनी जड़ें जमा लीं और हरिजनों को उनके अधिकारों की मांग के लिए प्रेरित किया जिससे सामंतों की आंखों में खून उतर आया. हरिजनों ने जब भी अपनी आवाज उठाई, नरसंहार हुआ.

प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रधान हरिशंकर प्रसाद के अनुसार, "गरीब मध्यम वर्ग और गरीब किसानों को, जो शोषित और अछूत हैं और कुल आबादी के 60 प्रतिशत हैं, 31 प्रतिशत अगड़ी जातियों के खिलाफ खड़ा किया जा रहा है. यही नहीं, उन्हें अगड़ी-पिछड़ी जातियों के खिलाफ भी खड़ा किया जा रहा है."

वोट की राजनीति और हिंसा भी सभी गड़बड़ियों की जड़ रही है. ज्यादातर राजनैतिक पार्टियों और आईपीएफ सहित धुर-वामपंथियों ने अपना राजनैतिक आधार बढ़ाने के लिए हरिजनों का हमेशा चारे के रूप में इस्तेमाल किया.

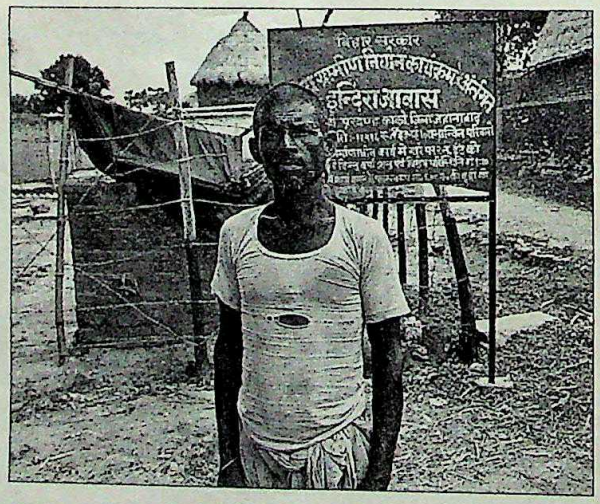

"हमारे वोट तो बूथ पर पहुंचने से पहले ही पड़ चुके होते हैं. इस चुनाव से क्या फायदा है?"

भीमल पासवान, नोनही-नगवां गांव

पिछले 40 वर्षों में हरिजनों में से कई नेता उभरे और वे अपने व्यवहार में 'ब्राह्मण' बन गए. मिसाल के तौर पर, जगजीवन राम को ही लें, जो हरिजनों के हितों की लड़ाई लड़ने की जगह 'ब्राह्मण' जैसा व्यवहार करने लगे थे. हरिजनों के उत्थान के संघर्ष के लिए दलित सेना बनाने वाले रामबिलास पासवान ने अपने को जुझारू नेता के रूप में पेश किया और सार्वजनिक रूप से घोषणा की कि "जुझारू पासवान का जमाना आ गया है." लेकिन उनकी पांच सितारा संस्कृति और अपने ही लोगों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार के हरिजन अभी भी मताधिकार से वंचित किए जाते हैं. हमने आज तक वोट देखा ही नहीं है''

मीता देवी, नोनही-नगवां गांव

...की नजर से देखने के ...ण वे अपने निर्वाचन क्षेत्र ...पुर में, जहां से वे दो बार ...रिकार्ड के अंतर से जीते ...लोकप्रिय हो गए. बिहार ...हरिजन मंत्री उदय नारायण ...चौधरी ने कहा, "पूंजीवादी ...नैतिक व्यवस्था के तहत ...रने वाले हरिजन नेता सत्ता ...की चमक से चुंधिया जाते हैं ...और गांवों में अपने लोगों को ...भूल जाते हैं. यह दुखद सचाई है ...हरिजनों को उग्रपंथियों की ...छतरी तले जाने को मजबूर कर ...ती है."

और अब हर कोई खास तौर ...आईपीएफ को इस बात ...लिए दोषी ठहराता है कि ...उन्होंने हरिजनों को ऐसी ...स्थिति में ला दिया है कि ...उनकी हत्या होनी ही है. पूर्व ...मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र का ...कहना है, "आईपीएफ का ...हिंसक संघर्ष का सिद्धांत ...और आक्रामक रवैया ही राज्य के विभिन्न हिस्सों में हरिजनों के नरसंहार के लिए जिम्मेदार है." उधर, लालू यादव ने उग्रपंथी गतिविधियों से निबटने के लिए एक 'विशेष कार्यदल' बनाने का फैसला किया है.

पर आईपीएफ के प्रदेश अध्यक्ष कृष्णदेव प्रसाद यादव का मानना है कि "हरिजनों को अपने अस्तित्व और अधिकारों के लिए खड़ा होना होगा और लड़ना होगा. यदि वे लड़ेंगे तो शहीद होंगे."

हरिजनों के दिमाग में शहादत की भावना भरे जाने से बिहार, खासकर मध्य बिहार में नरसंहार हो रहा है जहां हरिजनों को बचाने वाला तो कोई नहीं है, परंतु हर हत्या के बाद मुआवजा देने और सहानुभूति जताने के लिए दौड़ पड़ने वाले नेता जरूर हैं.

नई हरिजन बस्तियां

अतीत से मुक्ति

जिस जगह सिद्धार्थ को बुद्धत्व हासिल हुआ था, उसके पास राजमार्ग के किनारे छोटे-छोटे कई गांव बस गए, जिन्हें देखकर लगता है कि लगातार लेकिन शांतिपूर्ण संघर्ष से मार्क्सवादी भी अपना उद्देश्य हासिल कर सकते हैं.

पिछले एक दशक में धीरे-धीरे आधा दर्जन हरिजन बस्तियां या तो सरकारी जमीन पर या फिर जमींदारों की जमीन पर उग आईं. जमींदार उनका शोषण करते थे, उन्हें न्यूनतम मजदूरी नहीं देते थे और यहां तक कि उनकी महिलाओं की इज्जत भी लूटते थे. लेकिन ये सब अब अतीत की घटनाएं बन गई हैं. 'स्टालिन नगर' में हरिजनों के साथ रहने वाले मार्क्सवादी नेता गोवर्धन यादव ने कहा, "इन गांवों के गरीब हरिजनों के लिए संतोष की बात सिर्फ यही है कि अब उनकी अपनी झोंपड़ियां हैं और वे इज्जत के साथ चल सकते हैं." यादव के अनुसार 'स्टालिन नगर' 1974 में उस समय बसाया गया था जब मार्क्सवादियों ने हरिजनों को शोषण से मुक्त कराने के लिए संघर्ष छेड़ा था.

जगदीश शर्मा: है किसी की हिम्मत?

स्टालिन नगर के निवासी भूमिहीन हैं लेकिन वे खेतिहर मजदूर के रूप में काम करते हैं. और खाने के साथ 10 रु. न्यूनतम मजदूरी पाते हैं. एक दशक पहले उन्हें दिन भर के काम का एक सेर अनाज मिलता था.

इसी गांव से सटी हुई एक दूसरी बस्ती है जिसे प्रसिद्ध माकपा नेता प्रमोद दासगुप्ता के नाम पर 'प्रमोद दासगुप्ता नगर' कहा जाता है. इस गांव की लगभग 500 की आबादी में ज्यादातर हरिजन हैं. 55 वर्षीय जगदीश दास, जो ड्राइवर हैं, के अनुसार, "सरकार से किसी तरह की सुविधा नहीं मिली है और अगड़ी जातियों के जमींदार उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं. लेकिन लेकिन अब कोई भी उनके शोषण की हिम्मत नहीं जुटा पाता."

ग्रामीणों के अनुसार, इसी तरह 'मार्क्सवादी नगर' और 'लेनिन नगर' भी बसाए गए हैं. 1974 के जेपी आंदोलन के दौरान छात्र युवा संघर्ष वाहिनी ने भी बोधगया में महंत के खिलाफ जबरदस्त भूमि संघर्ष चलाया था, जो बहुत हद तक सफल रहा.

गया अतीत की तरह एक बार फिर नई राह दिखाने वाला साबित हुआ है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-36

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एलबम में
उनकी अक्खड़ छवि
सीमा के पास गांव
दांत टूट चुके
लिखने के लिए प्रसिद्ध
बड़े झाड़ में है
मोहने की कोशिश
जमे रहने की सीख
रास्ता दीजिए
चोल राजा
साये की तरह
एक तलाक और
फब्जे से खुश
समस्या घरेलू
पिछड़ी जाति
क्षेत्रीय सूरमा हैं
उनका लोहा मानते हैं
नैनों के तीर
टक्कर लेने में सक्षम
दृढ़ इच्छा शक्ति
राष्ट्रद्रोही कहा
बम से प्रसिद्धि
पत्र में चर्चा
चमक फीकी
तेज बिक्री

नाम _____

पता _____

पिन _____

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-36, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि:
5 अगस्त 1991
उत्तर के लिए देखें:
16-31 अगस्त 1991 का अंक

- यह पहेली शब्दश: इंडिया टुडे के 30 जून 1991 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-34 का हल

पुरस्कार विजेता

धरमेश व्यास
नंद भवन
सुखानंद जी की बगीची
चांद पोल रोड सीवांची गेट
जोधपुर (राज.)-342001

कोमल पुरी
जे.सी. 17 ई.
एलआईजी फ्लैट्स
मायापुरी, नई दिल्ली

लक्ष्मी नारायण चौरसिया
रामपुरा, साबूलाल मार्केट
सागर (म.प्र.)-470002

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मेरा अपना घर'
होने का अद्भुत अहसास!

बेसिक होम 225, साउथसिटी लखनऊ

आप भी साउथसिटी, लखनऊ, में अपना घर बुक कराएं– केवल 22,500 रु. में

आपके सपनों में रचने-बसने वाला घर अब तेजी से साउथसिटी, लखनऊ, में विकसित हो रहा है। साउथसिटी! रायबरेली रोड पर स्थित (हज़रतगंज से केवल 10 मिनट की दूरी पर) स्वयं में पूर्ण मिनीसिटी। छावनी, पी जी आई और डॉ. अम्बेडकर विश्वविद्यालय के निकट।

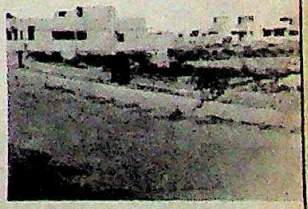

हरी-भरी और ऊंची 300 एकड़ से अधिक भूमि पर स्थित साउथसिटी अपनी अत्याधुनिक सुविधाओं से आपकी जीवनशैली को एक नई शान से भर देगी। तेजी से पूर्ण हो रही इस मिनीसिटी में आप अपनी पसंद के अनुसार प्लॉट या घर खरीद सकते हैं। वो भी नाममात्र अग्रिम राशि दे कर। शेष राशि आसान और ब्याज मुक्त किस्तों में चुकाने की सुविधा। अगर आप चाहें तो लंबी अवधि के एच डी एफ सी या जीवन बीमा निगम आवासीय और वित्त ऋण से भी चुका सकते हैं।

अब तो आप भी मान गए होंगे कि अपने सपने को साकार करने का इससे बेहतर उपाय नहीं। इसलिए देरी न करें, आज ही यूनिटेक से संपर्क करें।

UNITECH LIMITED

58, हजरतगंज, पहली मंज़िल, साहू सिनेमा की बगल में, लखनऊ-226001. फोन : 233535.

Arms Bozell/UL/12/6/91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिना

सपना हुआ अपना

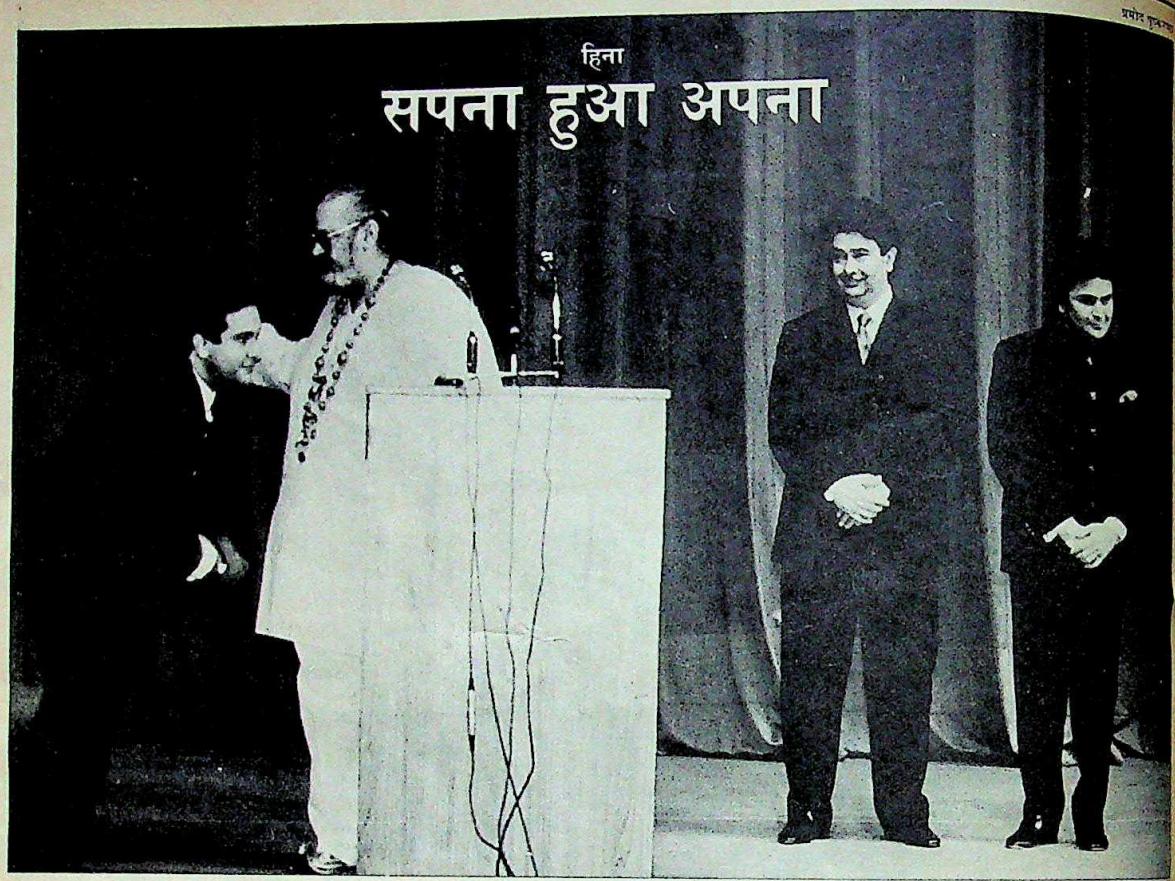

प्रीमियर पर कपूर खानदान

"यह कहानी झेलम नदी के इर्दगिर्द बुनी गई है, जो भारत से पाकिस्तान तक बहती है. नदी का इस पार का इलाका हिंदू है, लेकिन उस पार जाते ही यह इलाका मुस्लिम हो जाता है. क्यों? क्योंकि इसे मनुष्य ने बांटा है. लेकिन क्या आप प्यार को बांट सकते है? यही उस फिल्म का कथ्य है. जिसे मैं हिना नाम से बनाने जा रहा हूं"

—राजकपूर, 1987

तकरीबन दो दशक तक राजकपूर 'हिना' को अपने खयालों में किसी सपने की तरह बुनते रहे. उनका कैमरा किसी और फिल्म के दृश्य कैद करता होता मगर हिना की खुशबू भीतर ही भीतर महकती रहती. और इस बीच 1988 में राजकपूर चल बसे. और यह सपना वे अपने तीनों बेटों को विरासत के रूप में सौंप गए. बेटों ने अपने पिता की पुरानी टीम के सहयोग से इस सपने को परदे पर उतारा जो पिछले पखवाड़े 'हिना' फिल्म के रूप में रिलीज हुई.

तीनों बेटों ने यह काम साहस के साथ किया. साहस के साथ इसलिए कि यह काम उनके पिता नहीं कर पाए. राजकपूर वर्षों तलाश करते रहे लेकिन उन्हें वह हीरोइन नहीं मिली जो उनके जेहन में बसी 'हिना' को साकार कर सके. उन्हें पद्मिनी कोल्हापुरे मिलीं, लेकिन वे 'हिना' नहीं थीं. इसलिए उन्हें लेकर 'प्रेमरोग' बनाई. बाद में उन्हें मंदाकिनी मिलीं, तो हिना कुछ देर के लिए उनके दिमाग से उतर गई. और उन्होंने 'राम तेरी गंगा मैली' बनाई.

रुपहले परदे पर प्रेम की गहनतम अभिव्यक्ति और उसकी भव्य प्रस्तुति के कुशल चितेरे के रूप में राजकपूर को वह स्थान हासिल था कि उनकी विरासत ग्रहण करने वाले व्यक्ति के लिए लोगों की अपेक्षाओं पर पूरा उतरना असंभव ही होता. निर्देशन का जिम्मा संभालने वाले उनके सबसे बड़े बेटे 44 वर्षीय रणधीर कपूर ने समझदारी दिखाते हुए वह सब करने की कोशिश नहीं की जो सिर्फ राजकपूर ही कर सकते थे. भावनाओं की सूक्ष्मतम अभिव्यक्ति और मांसल सौंदर्य की परिष्कृत प्रस्तुति, जो राजकपूर की विशेषता थी, रणधीर नहीं कर पाए हैं. वे कहते हैं. "मैंने राजकपूर की भावनाओं को जीवित रखने की पूरी कोशिश की है. हर व्यक्ति तो राजकपूर नहीं हो सकता."

राजकपूर इस फिल्म का नाम, कहानी तय करके और सिर्फ दो गाने रिकार्ड करके

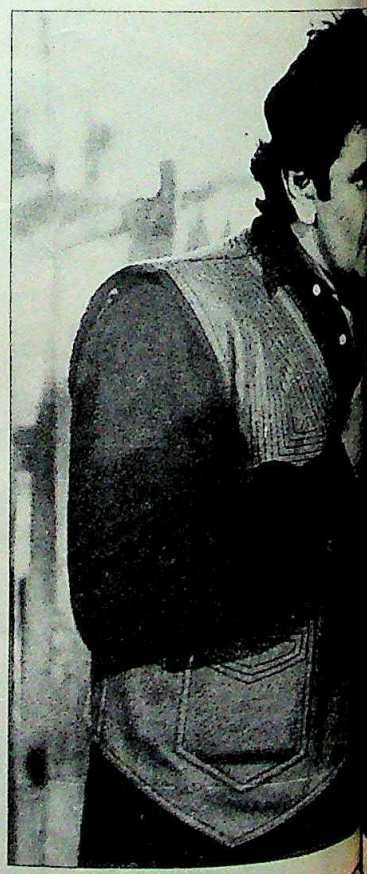

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के संगीत उनकी फिल्मों की रूह हुआ था. उनके बेटों ने भी फिल्म में गाने दिए हैं मगर राजकपूर द्वारा रिकार्ड दो गानों को छोड़ बाकी गानें उतने क नहीं लगते.

बहरहाल पिता ने शुरुआत की और काम उनके बेटों ने किया. जानी-नी वाक्पटुता और जोश से राजकपूर टे बेटे बताते हैं, "यह कुछ इस तरह है राजकपूर ने एक पांच तारा होटल का ा खड़ा किया था, जिसमें 20 रेस्तरां और एक हजार कमरे थे. हमने तो उसे पूरा कर उसकी सजावट ही की है."

जैसा कि कपूर बंधु कहते हैं, "यह फिल्म राजकपूर को श्रद्धांजलि है." ऋषि कहते हैं, "पापा को हम तीनों भाइयों से बहुत उम्मीदें थीं." लेकिन इससे भी बड़ी बात यह थी कि शो को जारी रखना था. ऋषि कहते हैं, "पापा के गुजरने के बाद लोग हम पर ताने कसने लगे." रणधीर कहते हैं, "हम आर.के. का झंडा ऊंचा और ऊंचा उठाए रखना चाहते थे."

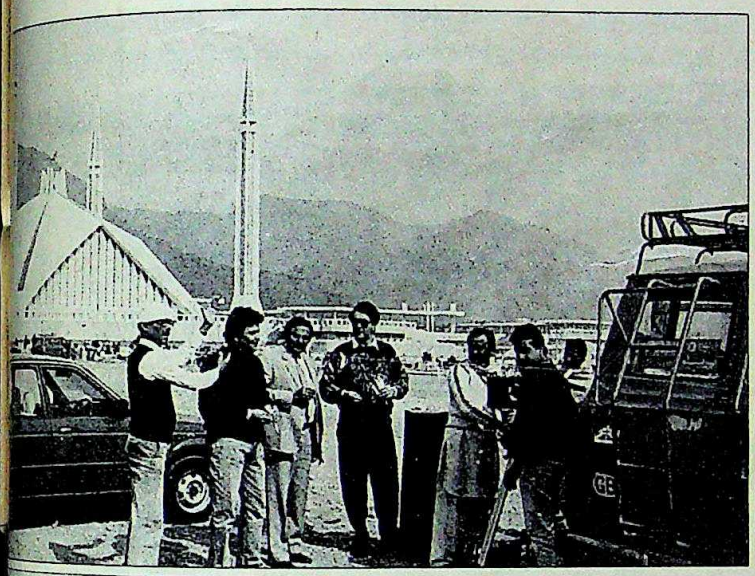

फैसल मस्जिद पर ऋषि और रणधीर (बाएं), और 'हिना' का दृश्य

लेकिन यह आसान नहीं था. फिल्म उद्योग की बड़ी हस्तियों ने तो इतना तक कह दिया था कि यह फिल्म कभी बनेगी ही नहीं. राजकपूर अपनी किस्म के अकेले ही शोमैन थे. यहां तक कि आर.के. स्टुडियो के बिकने की भी अफवाहें उड़ीं. फिर, हिना के लिए हीरोइन का चयन सबसे बड़ी चुनौती थी. रणधीर कपूर बताते हैं, "मैं पुरानी फिल्मों की हीरोइनों जैसी अभिनेत्री चाहता था. लेकिन जो भी लड़कियां स्क्रीन टेस्ट के लिए आतीं उन्हें देखकर ऐसा लगता मानो किसी फैशन पत्रिका के पन्नों से उठकर चली आ रही हों, मेकअप से लिपीपुती और ब्लीच किए बालों वाली."

फिर अचानक यह खोज पूरी हो गई. 'राम तेरी गंगा मैली' की पटकथा पर काम कर चुकी पाकिस्तान की पटकथा लेखिका हसीना मोइन ने पाकिस्तानी अभिनेत्री ज़ेबा बख्तियार का नाम सुझाया, जो एक टीवी नाटक में काम कर चुकी थीं. उनका एक स्क्रीन टेस्ट किया गया. और अंततः 'हिना' के लिए हीरोइन मिल गई.

गोरी-चिट्टी रंगत और भरे-भरे नैन-नक्श की वजह से ज़ेबा कपूर खानदान की सदस्य लगती हैं. ज़ेबा के सौंदर्य में जो मासूमियत और सहजता है वह उन्हें प्रकृति की गोद में पली-बढ़ी बाला की भूमिका के लिए बिलकुल उपयुक्त बनाती है. हिना एक बंजारा सरगना की बेटी है जो सीमा पार के युवक से प्यार कर बैठती है.

दूसरी समस्या फिल्म के लिए दूसरी प्रमुख महिला पात्र के लिए उपयुक्त हीरोइन को ढूंढ़ने की थी. मराठी अभिनेत्री अश्विनी भावे अंतिम समय में ढूंढ़ी जा सकीं. बहरहाल, भावे ने अपनी भूमिका में जान डाली है. लेकिन समस्या लोकेशन को लेकर भी आई. राजकपूर फिल्म को पाकिस्तान में फिल्माना चाहते थे. बेटों ने इसके लिए पाकिस्तान सरकार को लिखा. तब बेनज़ीर भुट्टो सत्ता में थीं. जब वहां से कोई जवाब नहीं मिला तो रणधीर ने मनाली में शूटिंग शुरू कर दी.

पाकिस्तान और कश्मीर के दृश्य मनाली और आस्ट्रिया में फिल्माने के करतब किए गए. ऋषि कहते हैं, "हम सपनों के सौदागर जो हैं. हमें थोड़ी जादूगरी की छूट तो है ही." लेकिन जादू के लिए भी कुछ ठोस आधार तो चाहिए. इसलिए रणधीर ने पाकिस्तान सरकार को फिर लिखा. इस बार सत्ता में बैठे नवाज़ शरीफ ने हरी झंडी दिखा दी. लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी. रणधीर बताते हैं, "पहले इजाजत मिली होती तो हमने 90 फीसदी फिल्म पाकिस्तान में ही शूट की होती." फिर भी यथार्थ चित्रण की खातिर वे इस्लामाबाद गए. वहां की फैसल मस्जिद के दृश्य शूट किए गए ताकि "हम सचाई से कह सकें कि फिल्म पाकिस्तान में बनाई गई है."

इस बार कैमरे के पीछे राजकपूर जरूर नहीं थे मगर उनका असर जरूर झलकता है. रणधीर कहते हैं, "हमने इस फिल्म में अपनी गरदन पूरी तरह फंसा दी." इसकी लागत 4 करोड़ रु. आई है. नामावली पेश करने के दृश्यों के लिए एम.एफ. हुसैन से कई चित्र बनाने को कहा गया. ये चित्र बहुत असाधारण नहीं हैं मगर दर्शनीय हैं. राधू कर्मकार ने मनाली और आस्ट्रियाई गांवों की खूबसूरती को बखूबी कैमरे में कैद किया है. फिल्म पर उस महान शोमैन की छाया स्पष्ट नजर आती है.

राजकपूर के लिए हिना का अर्थ उस चीज से था जो अपना रंग दूसरे को देकर विलीन हो जाती है. फिल्म में हिना नायक के लिए कुरबान हो जाती है. राजकपूर आज इस दुनिया में नहीं हैं मगर अपना रंग वे अपने बेटों पर छोड़ गए हैं.

—मधु जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोक

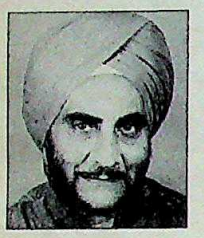

महीप सिंह

आज के सच को आईने की तरह पेश करने और पात्रों के माध्यम से सामाजिक द्वंद्वों को बखूबी उजागर करने वालों में महीप सिंह अपना अलग स्थान रखते हैं. यह एक संयोग है कि सात कहानी संग्रहों और एक उपन्यास के इस रचनाकार की कहानियों पर आधारित धारावाहिक 'रिश्ते' इन दिनों दूरदर्शन पर दिखाया जा रहा है.

सारे घर में शोक छाया हुआ था. टेलीफोन के सामने बैठकर सागर जी कुछ देर सोचते रहे. फिर टेलीफोन की डायरी उठाकर उसके पन्ने पलटने लगे. उनके मन में बार-बार उठने लगा—कहां से शुरू करूं? तभी उनके मन में आया कि इधर-उधर से शुरू करने से कुछ लोग रह जाएं, ऐसा हो सकता है, इसलिए एल्फाबेटिकल क्रम से शुरू करना ही अच्छा रहेगा. उन्होंने डायरी का एकदम शुरू का पन्ना निकाला. 'ए' में पहला नाम अमरनाथ जी का था. उन्हें लगा यह महत्वपूर्ण नाम है. चाहे यह नाम राजनीति का नहीं है, फिर भी इस व्यक्ति की अपने समाज में बड़ी इज्जत है. पैसे वाला होने के कारण कितने स्कूलों, सभा-सोसाइटियों के साथ जुड़ा हुआ है.

सागर जी ने अमरनाथ का नंबर मिलाया—"अमरनाथ जी?"

दूसरी ओर से आवाज आई—"जी बोल रहा हूं."

"मैं सागर बोल रहा हूं—जी—सुबह-सुबह आपको परेशान कर रहा हूं. मेरे पिता जी गुजर गए... बस.. कुछ घंटे पहले.. उन्हें दिल का दौरा पड़ा.. नहीं, पहले तो ऐसी कोई शिकायत नहीं थी... उमर...? बस यही बहत्तर-तिहत्तर थी... लेकिन सेहत बहुत अच्छी थी... रोज सुबह चार बजे सैर करने निकल जाते थे, आज सैर करके आए तो कुछ घबराहट महसूस हुई. मैं तो अपने कमरे में सो रहा था... रात को आल पार्टी मीटिंग बड़ी देर तक चलती रही... होम मिनिस्टर ने बुलाई थी... देश की जैसी हालत है, सो तो आप जानते ही हैं... मां ने मुझे जगाया... इससे पहले कि मैं डॉक्टर को बुला सकूं... पिता जी के प्राण पखेरू उड़ गए... (गला भर जाता है) उनका मुझे बहुत सहारा था. मेरे सार्वजनिक जीवन की जो भी उपलब्धियां हैं, सब उन्हीं की बख्शीश से थीं. मैं तो एकदम बेसहारा महसूस कर रहा हूं... जी निगम बोध घाट पर... पांच बजे तक वहां पहुंच जाएंगे..... बड़ी कृपा होगी.....मुझे हमेशा ही आपसे बल मिलता रहा है....जी...जी....."

सागर जी ने घड़ी देखी. एक व्यक्ति को इस बात की खबर देने में ही पांच-सात मिनट लग गए थे. कुछ इधर-उधर की बातें भी तो करनी ही पड़ती हैं. उन्होंने झटपट दूसरा नाम देखा—अमरजीत सिंह. इसे भी खबर करनी चाहिए, इतना बड़ा ट्रांसपोर्टर है. चुनाव के मौके पर बड़े काम का आदमी है. उन्होंने नंबर मिलाया.

संयोग से अमरजीत सिंह भी फोन पर मिल गए. उनसे भी लगभग उसी तरह की बात हुई. हां, एक खास बात यह हुई कि अमरजीत सिंह ने गहरी हमदर्दी दिखाते हुए अपनी ओर से एक पेशकश की—"सागर जी, निगम बोध घाट तक अर्थी ले जाने का क्या इंतजाम है?"

"एक बड़ी वैन का प्रबंध कर लिया है?"

"परिवार के लोग श्मशान घाट तक कैसे पहुंचेंगे?" अमरजीत सिंह ने बड़ा सरोकार दिखाते हुए पूछा.

"दो-तीन गाड़ियों की व्यवस्था तो है, लेकिन...."

"आप चिंता न कीजिए. मैं एक बस भेज देता हूं. साठ-सत्तर लोग उसमें आसानी से बैठ जाएंगे."

सागर जी एकदम प्रफुल्लित हो उठे—"यह तो बड़ी अच्छी बात है अमरजीत सिंह जी—मैं सोच ही रहा था कि इतने लोगों को इस गरमी में श्मशान तक कैसे ले जाऊं...? घर मेहमानों से भरा पड़ा है... शवयात्रा तक और लोग भी पहुंच जाएंगे. आप बस भेज देंगे तो बड़ी सुविधा हो जाएगी... बहुत-बहुत धन्यवाद."

फोन रखकर सागर जी सोचने लगे—अमरजीत सिंह मौके पर काम आने वाला आदमी है. लेकिन मैंने भी तो उसके कितने काम किए हैं. उन्हें याद आने लगा—अमरजीत सिंह की टूरिस्ट बसों को आल इंडिया परमिट दिलवाने में कितनी भाग-दौड़ करनी पड़ी थी, ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर तक गोट न बैठाई गई होती तो काम नहीं बन सकता था.

तभी उनका ध्यान अगले नाम पर गया—अनीस अहमद, अनिल अरोड़ा, अनूप सिंह. फिर उन्हें खयाल आया कि इस तरह चलने से तो बहुत देर हो जाएगी, बहुत से महत्वपूर्ण लोग जिनका नाम एमआरएफ आदि से आता है, वे अपने-अपने घरों से चले जाएंगे... तब उन्हें ढूंढना बहुत मुश्किल होगा. इसलिए बेहतर यही होगा कि पहले महत्वपूर्ण लोगों—विशिष्ट लोगों को फोन कर लिए जाएं... दाह संस्कार के समय कुछ जानी-मानी हस्तियां निगम बोध घाट पर

सभी रेखाचित्र: सुदेश

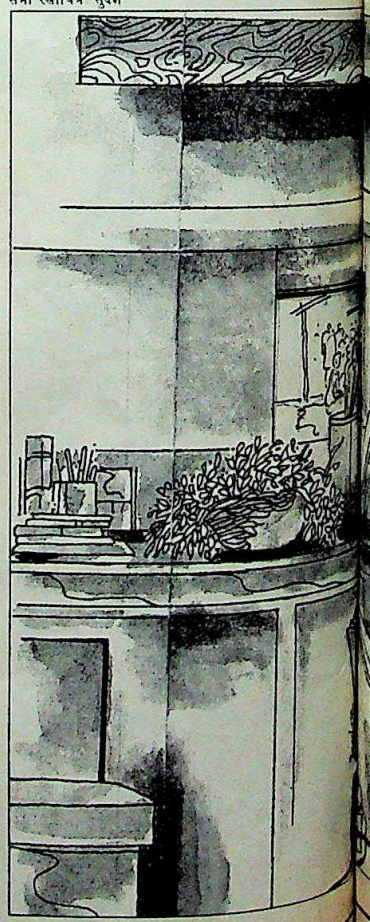

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाई दीं तो भला लोग क्या सोचेंगे. सागर जी विशिष्ट लोगों के नाम याद किए हुए डायरी के पन्ने पलटने लगे. सबसे पहले उन्हें परिवहनमंत्री का ही नाम याद आया. उन्होंने उनका नंबर घुमाया तो बड़ी परिचित-सी आवाज सुनाई दी... "जी... ई...ई..."

"आप परिवहनमंत्री जी के यहां से बोल रहे हैं?"

फिर वही...जी...ई..ई.....ई....ई...

"मैं एस.पी. सागर बोल रहा हूं... आप कौन बोल रहे हैं?"

"मैं मंत्री जी का पीए बोल रहा हूं शर्मा."

सागर जी ने आवाज में एकदम मिठास भर ली... "शर्मा जी, शायद आपने मुझे पहचाना नहीं... मैं एस.पी. सागर हूं... मंत्री जी के साथ आपने मुझे अक्सर देखा होगा... मैं अपनी पार्टी के उद्यम और व्यापार सेल का संयोजक हूं... आपको याद होगा... पिछले ही महीने अमरजीत सिंह की कंपनी के नए शोरूम का उद्घाटन हुआ था... मंत्री जी उसमें आए थे... शायद आप उनके साथ थे... अच्छा उनके साथ नहीं थे? उस दिन कोई और पीए उनके साथ था....? खैर, लेकिन आपने मुझे मंत्री जी के साथ देखा कई बार होगा... जरा उनसे मेरी बात करा दीजिए..... कुछ बड़ी जरूरी बात करनी है....."

चोंगा हाथ में थामे हुए सागर जी प्रतीक्षा करने लगे. दूसरी ओर से कोई आवाज नहीं आ रही है, यह सोच-सोचकर उनके मन में खीझ पैदा होने लगी. वे सोचने लगे, दो-चार मंत्रियों का दाह संस्कार के समय निगम बोध घाट पर होना बड़ा जरूरी है.. नहीं तो बड़ी भद् हो जाएगी. तभी अपने घोर प्रतिद्वंद्वी सरूपचंद का चेहरा उनके सामने घूम गया. कुछ महीने पहले ही उसकी मां की मृत्यु हुई थी. तब निगम बोध घाट पर कितनी भीड़ थी. अपनी पार्टी के कितने ही बड़े नेता वहां उपस्थित थे. यहां तक कि विपक्षी दलों के कितने जाने-माने चेहरे दिखाई दे रहे थे. लेखकों-पत्रकारों का भी वहां पर अच्छा-खासा जमावड़ा था... और सबसे बड़ी बात... उस समय सरूपचंद के चेहरे पर कैसा गर्व झलक रहा था, जब सफेद एंबेसेडर कार अंदर तक चली आई थी और उसमें से दो लोग फूलों का कितना बड़ा

प्रोटोकॉल तरीके से चलने लगे तो कई बड़े लोग तो छूट ही जाएंगे. बेहतर यही होगा कि पहले महत्वपूर्ण लोगों को फोन कर लिया जाए. दाह संस्कार के समय कुछ जानी-पहचानी हस्तियां निगम बोध घाट पर नहीं दिखाई दीं तो लोग क्या सोचेंगे. यह सोचते-सोचते उनकी आंखों के सामने अपने प्रतिद्वंद्वी सरूपचंद का चेहरा तिरने लगा

चक्कर लेकर उतरे थे. लोगों की आंखों में उस समय कैसा भाव झलक आया था, जब उन्हें यह पता लगा था कि प्रधानमंत्री ने सरूपचंद की मां के शव पर चढ़ाने के लिए ये श्रद्धा सुमन भेजे हैं.

तभी सागर जी एकाएक चौंक उठे. टेलीफोन पर दूसरी तरफ मंत्री जी बोल रहे थे. उनकी तो जैसे घिग्गी बंध गई—"जी मंत्री जी, अच्छा...? आप नाश्ता कर रहे थे... आय एम सो सॉरी... इस वक्त आपको तकलीफ दी..." फिर उनका गला भर आया. उन्होंने बड़ी करुण आवाज में पिता की मृत्यु के कारण उन पर हुए बज्रपात की बात मंत्री जी को सुनाई. उनके चेहरे से लग रहा था कि मंत्री जी को इस दुखद समाचार से बहुत कष्ट पहुंचा है और वे सागर जी के साथ गहरी संवेदना व्यक्त कर रहे हैं.

सागर जी की आंखें सचमुच भर आई थीं. एक हाथ से चोंगा पकड़े हुए उन्होंने दूसरे हाथ से कुर्ते की जेब से रुमाल निकाल लिया था. वे मंत्री जी से बातें भी कर रहे थे, और अपनी आंखें भी पोंछते जा रहे थे... "आप यदि दो मिनट के लिए वहां दर्शन देंगे तो मुझे ढाढस मिलेगा... बहुत बल मिलेगा... आपकी मुझ पर सदा ही बड़ी कृपादृष्टि रही है... यह दृष्टि हमेशा बनाए रखिएगा..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोंगा रखकर उन्होंने ठंडी सांस ली... "चलो, एक केंद्रीय मंत्री का आना तो पक्का हुआ."

फिर टेलीफोन डायरी के पन्ने पलटने और डायल पर उंगलियां घुमाने की गति एकाएक तेज हो गई. उनकी नजर बार-बार दीवार पर लगी घड़ी की ओर उठती थी और बार-बार उन्हें अपने अंदर एक बड़ी हड़बड़ी अनुभव होती थी.

"अब बंद भी करिए टेलीफोन करना," सागर जी की पत्नी झुंझलाई हुई उनके पास खड़ी थीं—"पिता जी के अंतिम संस्कार के लिए कितने सारे इंतजाम करने हैं... आप हैं कि सुबह से टेलीफोन लिए बैठे हैं."

सागर जी ने बहुत घूरकर पत्नी की ओर देखा. उनके मन में उभरा यह तो बिलकुल मूर्ख है... इसे पता नहीं... मैं कितना जरूरी काम कर रहा हूं. कुल मिलाकर यही तो दो-चार मौके होते हैं जब आपका जनसंपर्क बनता है और दिखता है. उन्होंने उसका एक हाथ पकड़कर अपने दोनों हाथों से दबाया. उन्हें लगा, घर में पत्नी के साथ साधा गया संपर्क बड़े-बड़े नेताओं या हजारों लोगों से किए गए जनसंपर्क से कुछ कम मुश्किल काम नहीं है.

अपनी आवाज में बिलकुल आजमाई मिठास भर सागर जी बोले—"आप चिंता न कीजिए—सारा प्रबंध हो जाएगा... जो काम मैं कर रहा हूं, वह बड़ा जरूरी है. आप सरूपचंद की मां के दाह संस्कार में गई थीं न? कितने लोग... कितने स्टेटस वाले... श्मशान भूमि में आए थे... हमें भी तो समाज में अपनी इज्जत दिखानी पड़ेगी कि नहीं...? आप जरा इन बातों पर भी तो गौर कर लिया करिए?"

"यह सब तो ठीक है," शीला जी पूरी तरह द्रवित हो गई थीं—"लेकिन अगर दोपहर से पहले अर्थी को घर से बाहर निकालना है तो सारा इंतजाम तुरंत करना पड़ेगा...समय ही कहां है?"

"देखो...." सागर जी ने सोचते हुए कहा—"अर्थी तो दोपहर बाद ही यहां से निकलेगी. इससे पहले तो लोगों को खबर ही नहीं मिल पाएगी. अगर पिता जी की मृत्यु शाम को हुई होती तो मैं यह खबर अखबारों में दे देता जो दूसरे दिन सभी जगह छप जाती. उसी के साथ दाह संस्कार का कार्यक्रम भी छप जाता. लेकिन... पिता जी तो सुबह-सुबह ही गुजर गए.... शाम के अखबारों में तो मैंने खबर भिजवा दी है.... पर जो बात सुबह के अखबारों से बनती है, वह भला शाम के अखबारों से कैसे बन सकती है. मुश्किल तो यह है कि शाम के अखबारों को लोग सीरियसली लेते ही नहीं."

अर्थी के लिए आवश्यक सामग्री का प्रबंध सागर जी के साले साहब कर रहे थे. तीनों बच्चे अभी बहुत छोटे हैं. सबसे बड़ा लड़का अभी दस साल का भी पूरा नहीं हुआ. तीनों बच्चे अपने मामा से इतना हिले हुए हैं कि हमेशा मामा-मामा कहते हुए उसके पीछे लगे रहते हैं.

"किरपाल..." सागर जी ने उसे पास से गुजरते हुए देखा तो आवाज दे दी.

"जी.. जीजा जी," उसकी आवाज में बेहिसाब हड़बड़ाहट थी.

"देखो भाई, यह सारा इंतजाम तुम्हारे कंधों पर है. मुझे तो यह भी पता नहीं कि ऐसे मौके पर किन-किन चीजों की जरूरत पड़ती है... देखना किसी बात की कमी न रह जाए... नहीं तो ऐन मौके पर खिल्ली उड़ जाएगी."

"आप बिलकुल फिकर न करिए जीजा जी... कोई कमी नहीं रहने पाएगी," कहकर उसने शीला की तरफ देखा—"दीदी, जरा एक बात सुनना."

डायल घुमाते हुए सागर जी ने देखा—किरपाल और शीला एक कोने में कुछ गुपचुप बात कर रहे हैं और शीला अपने ब्लाउज में से पर्स निकाल रही है.

सागर जी ने जो नंबर मिलाया था, वह बार-बार एंगेज आ रहा था. वे दूसरा नंबर मिलाने लगे. उन्होंने देखा, शीला पर्स में से सौ-सौ के कुछ नोट निकाल कर किरपाल को दे रही है.

डायल घुमाते-घुमाते सागर जी को बड़ी उलझन होने लगी. उन्हें लगा, इस सारे प्रबंध में किरपाल दो-चार सौ रुपए जरूर मार लेगा.

दो-चार लोगों को और फोन करने के बाद सागर जी उठ खड़े हुए. कुछ सोचते हुए धीरे-धीरे वे अंदर वाले कमरे में गए. पिता जी की देह जमीन पर सफेद चादर में लिपटी हुई थी. उनकी मां और कुछ रिश्तेदार बड़े उदास भाव से बैठे हुए थे. मृत देह के सिरहाने बैठा एक पुजारी धीरे-धीरे किसी धर्मग्रंथ का पाठ कर रहा था.

सागर जी मृत देह के पैरों के पास बैठ गए. उन्होंने अपने दोनों हाथ पिता के पैरों पर रखे और सिर झुकाकर फफक-फफक कर रोने लगे. आसपास बैठे कुछ लोग उनके पास खिसक आए. उन्हें अपने कंधों और पीठ पर अनेक स्त्री-पुरुष हाथों का स्पर्श अनुभव हुआ.

शाम को निगम बोध घाट पर काफी

सागर जी की उदासी दूर नहीं हो रही थी. केंद्र का बस एक ही मंत्री आया था. ...एक और मंत्री ने भी बड़े-बड़े वादे तो किए थे लेकिन... कम-से-कम अपने पीए के हाथ फूल ही भिजवा दिए होते. श्मशान में कम-से-कम डेढ़-दो हजार की भीड़ होनी ही चाहिए थी. अगर आनंद जी भी न आते तो बस...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी. सागर जी अपनी सूजी हुई आंखों
के संवेदना भरे स्वर सुन रहे थे और
जोड़कर सबके सामने सिर झुका रहे
उनकी नजरें बार-बार सामने से आने
लोगों की तरफ उठ जाती थीं.
सागर जी ने मन ही मन में पूरा हिसाब
लिया था. पार्टी के स्थानीय नेताओं में
कुछ लोग आ गए थे, किंतु प्रदेश के
उपाध्यक्ष या महासचिव के चेहरे
तक नहीं दिखे थे. नगर निगम के दो-
भूतपूर्व सदस्य तो आ गए थे, लेकिन
नेतृत्व में से किसी के दर्शन नही हुए
न पार्टी में से, न सरकार में से.
लोग सागर जी के पास आकर अपनी
व्यक्त कर रहे थे. वे उन्हें बड़े
भाव से अपना धन्यवाद भी दे रहे
उनका मन बहुत उदास हो गया था.
रिश्तेदार चिता के लिए लकड़ियां
ठाकर ला रहे थे. संस्कार करवाने
पुरोहित चिता की लकड़ियां ठीक ढंग
रहा था. सागर जी के बड़े भाई
को ही दिल्ली पहुंच गए थे, इसलिए
को मुखाग्नि देने का दायित्व उनके
पर चला गया था.
करपाल दौड़-दौड़कर सारी सामग्री
कर रहा था. तभी भीड़ में से एक
चेहरा उभरा. सागर जी ने देखा उपमंत्री आनंद जी हाथ में गुलाब की माला लिए कुछ लोगों से घिरे हुए चले आ रहे हैं. सागर जी के चेहरे पर हल्की-सी चमक दौड़ गई. वे बड़ी फुर्ती से आगे बढ़े. उन्हें अपनी ओर बढ़ता देखकर आनंद जी रुक गए. उन्होंने मुंह में भरा हुआ पान मसाला एक ओर थूक दिया और दोनों हाथ बढ़ाकर सागर जी को अपने कलावे में ले लिया.

"पिता जी के स्वर्गवास से बहुत आघात लगा.... सागर जी...."

"जैसी भगवान की मर्जी," सागर जी ने बड़े भरे शब्दों में कहा. फिर वे उपमंत्री जी को बड़े आदर से अर्थी के पास ले गए. मंत्री जी ने अर्थी पर माला डाली और बड़ी श्रद्धा से दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम किया.

आज चौथा था. घर के प्रमुख लोगों को अस्थियां चुनने के लिए श्मशान भूमि पर जाना था. यह निश्चित हुआ था कि वहीं से एक वैन अस्थियां लेकर गंगा में प्रवाहित करने के लिए हरिद्वार चली जाएगी. लेकिन सागर जी अस्थियों के साथ हरिद्वार नहीं जा रहे थे.

पिछले दो दिन से वे बहुत उदास थे. किसी काम में उनका मन नहीं लग रहा था. उन्होंने ठीक से कुछ खाया-पीया भी नहीं था. शीला ने उन्हें समझाने की बार-बार कोशिश की थी "किसी के माता-पिता हमेशा तो साथ नहीं रहते... इस तरह हिम्मत हारने से कैसे चलेगा... पिता जी अपनी सभी जिम्मेदारियां पूरी कर गए... आपको हौसला रखना चाहिए... इसी से उनकी आत्मा को शांति मिलेगी."

लेकिन सागर जी की उदासी दूर नहीं हो रही थी. उनकी आंखों के सामने श्मशान भूमि का दृश्य बार-बार घूम रहा था... बस, केंद्र का एक मंत्री आया... उस कैबिनेट मिनिस्टर को क्या हो गया था...? उसने वहां आने का पूरा वादा किया था... पर इनके वादे का क्या है... नहीं आना था तो कम-से-कम अपने पीए के जरिए फूल माला ही भिजवा देते...

और फिर श्मशान भूमि में लोग भी उम्मीद से बहुत कम थे... कम-से-कम हजार-डेढ़ हजार की भीड़ तो होनी ही चाहिए थी... बड़ी मुश्किल से चार-पांच सौ लोग होंगे... उनमें ज्यादातर तो गली-मोहल्ले वाले ही थे. वीआईपी कितने थे...? मुश्किल से एक-दो होंगे... अगर आनंद जी भी न आते... तो बस.. सब बंटाढार हो गया होता... उनके मन में बार-बार सरूपचंद का ही खयाल आता. कम-से-कम उसके सामने वे क्या मुंह दिखाएंगे.

अस्थियां लेकर एक गाड़ी हरिद्वार चली गई थी. सुबह अफसोस करने आए लोग भी चले गए थे. घर में सन्नाटा छाया हुआ था. मां एक कोने में उदास बैठी हुई थीं. शीला रसोईघर में उलझी हुई थी. बच्चे खा-पीकर सो गए थे.

दूर कुर्सी पर बैठे सागर जी मां की ओर टकटकी लगाए देख रहे थे. एकाएक उन्हें लगा—अब मां भी ज्यादा दिन जिंदा नहीं रहेंगी. फिर उनके अंदर भविष्य की कितनी ही कल्पनाओं का जैसे ज्वार-सा उमड़ पड़ा.

उन्हें लगा—मां की अर्थी श्मशान भूमि पहुंच गई है. प्रधानमंत्री समेत केंद्रीय मंत्रिमंडल के अनेक सदस्य वहां आए हुए हैं... सारे निगम बोध घाट पर बस सिर ही सिर दिखाई दे रहे हैं... इतने में एक बड़ी लंबी गाड़ी वहां आकर रुकती है... उसमें से राष्ट्रपति का एडीसी फूलों का बड़ा गुलदस्ता लेकर उतरता है और अपनी फौजी वर्दी में खट-खट चलता हुआ अर्थी के पास पहुंचकर सैल्यूट करता है. फिर उसे अर्थी पर रख देता है. यह सोचते-सोचते उन्होंने अपनी आंखों पर हाथ फेरा.

सागर जी मां को एकटक देखने लगे. फिर धीरे से उठकर उनके पास जाकर बैठ गए. मां के पास बैठे-बैठे उनकी आंखों में आंसू छलक आए.

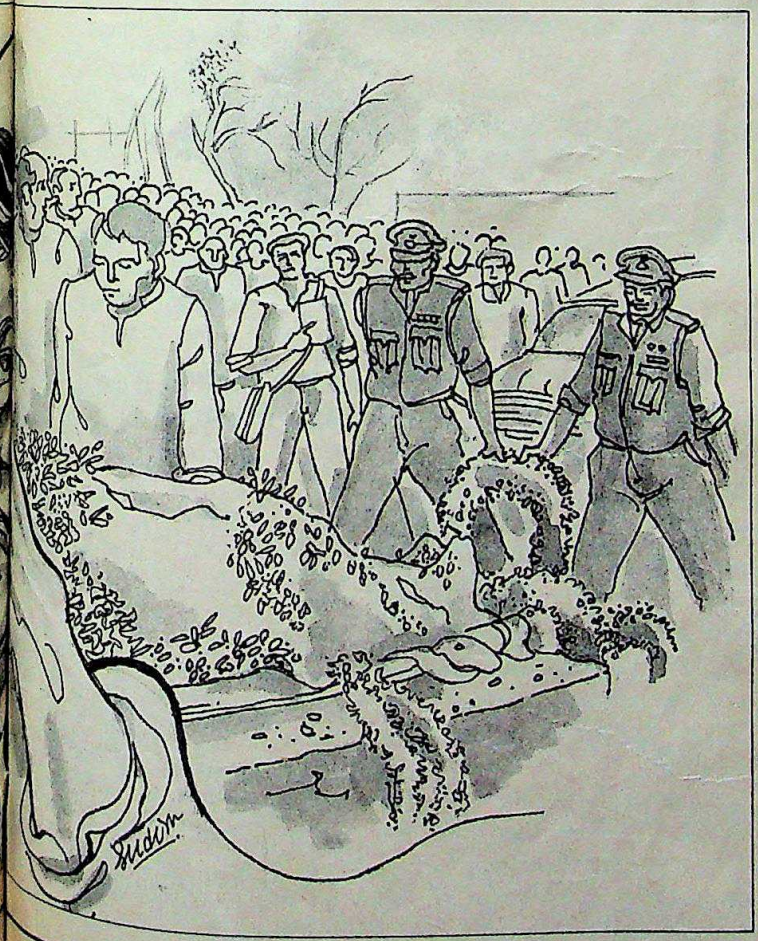

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी संग्रह

विकृति के दंश

सच और आस्था का द्वंद्व

शेखर जोशी के नए कहानी संग्रह 'नौरंगी बीमार है' में कहानीकार की संवेदना के वे सभी आयाम प्रस्तुत हैं, जो उनकी पूर्ववर्ती रचनाओं में मौजूद हैं. ग्यारह कहानियों के इस संग्रह की सभी कहानियां बहुत सहज हैं. जीवन की सहज स्वाभाविक अनुभवों को शेखर जोशी ने जिस सहजता से प्रस्तावित किया है उससे इन कहानियों की धार तेज हो गई है. इसलिए संग्रह की कहानियां आसपास बिखरे जीवन की विकृतियों को उजागर करने में पूरी तरह समर्थ हैं.

नौरंगी बीमार है
कहानी संग्रह
शेखर जोशी
राजकमल प्रकाशन,
दरियागंज, नई दिल्ली
कुल पृष्ठ: 114
कीमत: 40 रु.

संग्रह की सबसे बड़ी कहानी 'आशीर्वचन' की संवेदना का फलक बहुत व्यापक है. इसमें मूल्यों के बदलने और सार्थक के निरर्थक हो जाने की त्रासदी को श्यामलाल के माध्यम से निर्ममता के साथ प्रस्तावित करते हुए आने वाले कुरुक्षेत्र में जिस संघर्ष का उल्लेख है, वह समूचे संग्रह की रचनाओं की भी केंद्रीय शक्ति है. 'संवादहीन' में ताई के माध्यम से जिस अकेलेपन की व्यथा को प्रस्तुत किया गया है, वह हमें अपने आसपास के उन बुजुर्गों की व्यथा जान पड़ती है, जिन्हें हम और हमारे जैसे लोग चुका हुआ मानकर एक ओर धकेल देते हैं. 'निर्णय' के श्रीधर के भीतर की आग उसे अंधेरी गुफा के अंधकार से जूझने के लिए शक्ति तो देती ही है, साथ-साथ उन हकीकतों से भी रू-ब-रू कराती है, जिसके कारण गांव का शुद्ध पर्यावरण जहरीला हो गया है.

'नौरंगी बीमार है' में शेखर जोशी ने हमारे जमाने के छल और छद्म, पाखंड और ढोंग का जो खाका खींचा है वह शेखर जोशी की रचनाधर्मिता का मूल, लेकिन स्वाभाविक गुण है. 'बच्चे का सपना' जिस ढंग से फुटपाथी बच्चों को जिंदगी की कहानी कहता है, वह बहुत मार्मिक और तीखी है. इन कहानियों में शेखर जोशी ने अपने जमाने की विकृतियों को उकेरने के लिए किसी दर्शन या सिद्धांत को इस्तेमाल नहीं किया. तटस्थता के साथ बात कह देने मात्र से ही इन्हें प्राण शक्ति मिली है.

इन कहानियों में एक द्वंद्व लगातार दिखाई देता है. यह द्वंद्व जमाने की कटु सचाइयों और आस्था के बीच का है. कटु सचाइयां शेखर जोशी की सृजनात्मक आस्था पर हमला तो करती हैं, लेकिन उन्हें पराजित नहीं कर पातीं. यही कारण है कि उनकी कहानियां अपने छोटे कलेवर में संवेदना के कई आयामों को एक साथ समेटती हैं. यह द्वंद्व संभवतः रचनाकार के भीतर चल रहे द्वंद्व का ही प्रतिरूप है. लेकिन जिस स्तर का ट्रीटमेंट शेखर जोशी ने अपने अनुभवों के साथ इन कहानियों में किया है, वह काबिले तारीफ है. कहानीकार की संवेदना में किसी किस्म का बिखराव नहीं दिखता. सभी कहानियों की संवेदना के वृत्त अलग-अलग होने के बावजूद एक बृहत्तर वृत्त बनाती हैं और यह वृत्त है हमारे आसपास के आज का. जिसके सभी रंग 'नौरंगी बीमार है' में दिखाई देते हैं.

—नानक चंद

उपन्यास

अनकही बात

भावप्रवण विषय का फूहड़ निर्वाह

पिछले दिनों कश्मीरी लाल जाकिर का एक उपन्यास आया था 'करमांवाली' जिसके नाट्य-रूपांतरण की प्रस्तुतियों की पर्याप्त चर्चा चल रही थी. उनके नाम की इस चर्चा अवधि में ही उनका नया उपन्यास 'डूबते सूरज की कथा' आया. लेकिन 'करमांवाली' की सफल नाट्य-प्रस्तुतियों के प्रभाव में इस उपन्यास को पढ़ने का अनुभव मायूसी भरा होगा.

डूबते सूरज की कथा
उपन्यास
कश्मीरी लाल जाकिर
दिशा प्रकाशन,
दिल्ली-35
कुल पृष्ठ: 206
कीमत: 50 रु.

इस उपन्यास की भूमिका में बुढ़ापे को जी और झेल रही पीढ़ी को समसामयिक और युगीन संदर्भों में रेखांकित करते हुए बताया गया है कि इस समस्या पर समय रहते सोच लेना क्यों जरूरी है.

वस्तुतः भूमिका के इसी चक्र में खोकर पाठक यह उम्मीद करता है कि उसे किसी दादा-दादी, नाना-नानी की हर एक झुर्रियों के संगीत में बंधी और कलकल बहती कोई जीवंत और खूबसूरत-सी कहानी पढ़ने को मिलेगी जो उनके बुढ़ापे को 'लाचारी' के आरोप से मुक्ति दिलाएगी और सहानुभूति की भीख से बचाकर, उन्हें एक स्वयंसिद्ध और सार्थक परिभाषा से लबालब भर देगी. संयोग से, लगभग ऐसा ही कहने-बताने की कोशिश इस उपन्यास में है भी. सोमां, दुर्गादास, लक्ष्मी, राजो, दीनानाथ, गोवर्धन (विलायती), बरकत तथा अंजली आदि पात्रों के साथ-साथ गांव, प्रकृति तथा देश-विभाजन के पर्याप्त विश्वसनीय चित्रों को यह कथा अपने भीतर समेटे हुए है. मगर कथा के अंत तक आते-आते 'एजिंग' की समस्या पर अतिरिक्त नमन भाव तथा कमोबेश घड़ियाली आंसुओं की झड़ी को लेखक संभाल नहीं पाता.

दो भागों (उर्फ दो पीढ़ियों की अलग-अलग दास्तान) में रचित इस उपन्यास का अंतिम भाग चूंकि एजिंग की समस्या पर लगभग एकाग्र है इसलिए वह अपेक्षाकृत पठनीय हो सका है. हल्के-फुल्के फुटपाथिया संवादों, परिवेश को 'प्रामाणिक' बनाने की गरज से इस्तेमाल की गई जनाना गालियों, उथली भावुकताओं और कथा को अति नाटकीय बनाने की कोशिश में कथा अप्रभावशाली बन गई है.

इसके अतिरिक्त, उपन्यासकार ने भी कथा को बुनने और पाठक को मूर्ख समझने में खासी आजादी बरती है. उदाहरण के लिए जब सोमां (नायिका) अपने पति का घर छोड़कर चली जाती है तो न तो उसके ससुरालवाले और न ही पुलिसवाले उसकी खोज करने के लिए मायके जाते हैं जहां कि वह फिर बरसों रहती है. इसी प्रकार गोवर्धन के पात्र को भी लेखक ने जहां चाहा लिया और जहां चाहा वहां छोड़ दिया है. बहरहाल, इस उपन्यास के पृष्ठों पर एक अतिसंभावनाशील, प्रासंगिक और भावप्रवण विषय की कथात्मक वेदना, अंधकार, आत्मीयता और गहराई की कथा के अक्षम रचना कौशल के अंधेरे में गर्क होते देखना किसी साहित्यिक दुर्घटना से कम नहीं है.

—राजकुमार गौतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

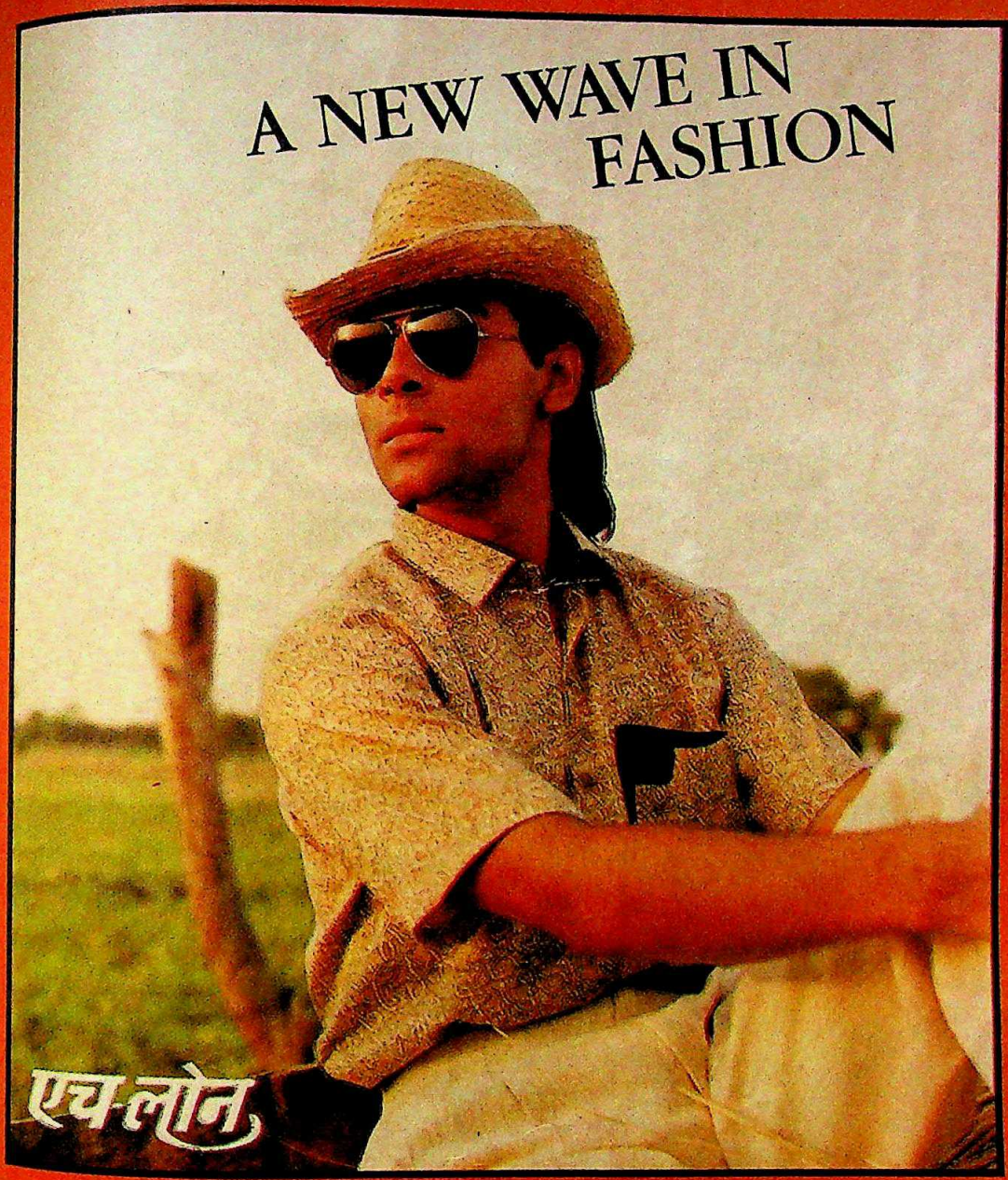

Go...for Something New ! Something better ! Something Different ! Punctuated with colour and textural interest to suit you for all occassions in all seasons. H-Lon the designer's collection will give you the very look you want.

H-Lon Hosiery Ltd.
H-Lon House, C-4/1
Wazir Pur Industrial Area, Delhi-52
Phones : 7110352, 7231508

H-Lon®
MEN'S WEAR

Dealers/Exclusive Showroom enquiries Solicited.

Shirts • Trousers • Kurta Payjama • Pathani Suit • Socks • Vest • Underwear • Briefs • Tie and Handkerchief

Exclusive Showrooms in Delhi: Kamla Nagar *Rajouri Garden *Moti Nagar *Wazirpur

Rashtriya

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह आंगन ही है टेढ़ा

□ उस शानदार उपनगरीय होटल में पार्टी दी गई थी 'प्रेम कैदी' की रिलीज के उपलक्ष्य में. नए हीरो-हीरोइनों की भरमार का जो अंदाजा लेकर गए थे, गलत निकला. है न ताज्जुब की बात! रणधीर कपूर और बबीता जैसे अपने जमाने के महंगे कलाकारों की बेटी **करिश्मा** की पहली पहली फिल्म रिलीज हो और फिर भी बधाई देने आने वाले न्यू कमर्स इतने कम?

वजह हीरोइन करिश्मा ने खुद स्पष्ट कर दी, "फिल्म की रिपोर्ट कुछ ठंडी रही है न! इंडस्ट्री मे तो हर कोई सफलता का साथ देने आता है."

और यह रिपोर्ट ठंडी होने की वजह? अखबारवाले, और क्या? बकौल करिश्मा, अखबारवालों ने उलटा-सीधा लिखकर उनका कैरियर ही चौपट कर देने की

करिश्माः नाराजगी

कोशिश की है इसलिए वे उन पर मानहानि का मुकदमा कर देने की सोच रही हैं और इसमें फिल्म के हीरो हरीश ने उन्हें पूरी मदद करने का वादा किया है. जिस ज्यादती की सजा ये दोनों कलाकार समीक्षकों को देने चाहते हैं वह है यह टिप्पणी कि फिल्म की हीरोइन लड़की नहीं, नई उम्र का कोई लड़का लगती है और हीरो लड़का नहीं, मूंछ लगाए श्रीदेवी लगता है. क्या यहां पर यह बता देने उचित नहीं कि यह हीरो प्रोड्यूसर का पुत्र है!

बदल रहा है रुख

□ **विनोद खन्ना** हॉलीवुड भले ही नहीं गए लेकिन अमेरिका से लौटे कुछ इसी भाव से थे. लेकिन अमेरिका में ऐसी कशिश है कि उनकी कोशिश का रुख अब फिर उसी तरफ है.

यह रहस्योद्घाटन विनोद खन्ना ने खुद किया नहीं, हो जाने दिया. आजकल वे मुजफ्फर अली की फिल्म 'जूनी' के जुनून में हैं. उसकी वजह है जूनी का अंग्रेजी संस्करण. विनोद ने बताया कि वे जब जूनी के अंगरेजी संस्करण के संवाद बोलते हैं तो सेट पर मौजूद हिंदुस्तानी हतप्रभ रह जाते हैं. लोग कहते हैं उन्हें हॉलीवुड जाना चाहिए.

आप पूछेंगे, "तो भई, देर किस बात की है? हॉलीवुड वाले तो अक्सर ही ओरिएंट का जादू जगा सकने वाले कलाकारों की तलाश में रहते हैं." लेकिन शुभचिंतकों ने विनोद को सलाह दी है, "इतनी जल्दी क्या है?" यह जूनी (मुंबई की जबान में जूनी पुरानी को भी कहते हैं) अब पूरी हुई जाती है, अमेरिका में रिलीज होगी तो खुद ऑफर आएंगे. और

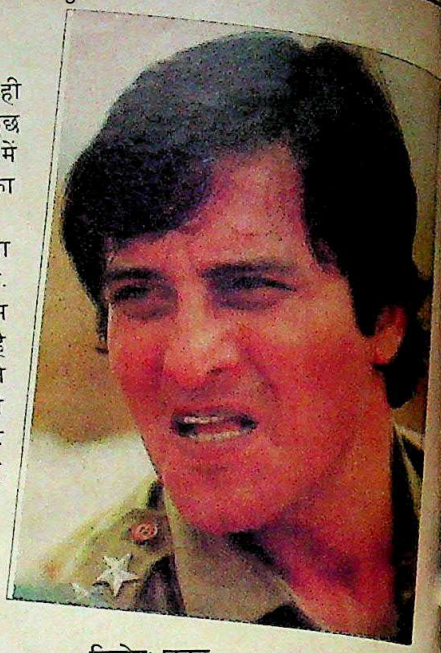

विनोदः जुनून

फिर 'जूनी' के गेटअप में आप जंचे भी इतने हैं कि लोग भूल जाएंगे कबीर बेदी को.

अब जो सवाल लोगों को हैरान परेशान कर रहा है, वह है, "तो क्या विनोद कबीर बनेंगे?"

हम किसी से कम नहीं

□ समस्या का हल चतुर **गोविंदा** इतनी जल्दी इतनी आसानी से कर देंगे, यह किसी ने सोचा तक नहीं था. यह समस्या उठी थी फिल्मसिटी में जहां बरसात के बीच मिले कुछ सूखे दिनों का फायदा उठाकर चार चार फिल्म निर्माता शूटिंग करने चले आए थे. इसलिए छोटे-बड़े 8-10 सितारे लंचब्रेक के दौरान इस तरह जमा हो गए जैसे किसी महत्वपूर्ण मीटिंग के लिए बुलाने पर भी नहीं होते.

सितारों के इस संगम में उठी समस्या थी, 'अमिताभ के बाद कौन?'

अनिल कपूर और सलमान खां की मौजूदगी को देखते हुए मिठुन और आमिर खां जैसे सितारों ने भी जब चुप रहना बेहतर समझा तब 'चतुर' गोविंदा समझ गए कि इनमें से कोई भी किसी लायक नहीं है. उन्होंने बेखटके ऐलान कर दिया, "मैं भी अमिताभ जितना ही पापुलर हूं. मैं हर बड़ा प्रोजेक्ट पूरा कर सकता हूं."

बंबई के उपनगर विरारवासी गोविंदा के बारे में इंडस्ट्री की यह धारणा अब दूर हो जानी चाहिए कि उनकी फिल्में विरार से आगे नहीं चलतीं.

गोविंदा: अपने मुंह मियां मिट्ठू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वादा किया तो निभाना पड़ेगा

अमृताः हाथ से फिसलता वक्त

□ जिस वक्त **अमृता सिंह** नए कलाकारों वाली फिल्म 'बेखुदी' के मुहूर्त में शामिल होने फिल्मालय स्टुडियों में घुसीं, सबको यही लगा कि अमृता को इस फिल्म में कोई रोल मिल गया है. लंबे समय से वे लगभग बगैर किसी फिल्म के बैठी हैं, हालांकि गिनाने को कई नाम हैं उनके पास—'दस करोड़', 'धर्म संकट', 'सूर्यवंशी', 'अकेला' वगैरह वगैरह. और यह भी सब जानते हैं कि कोई नई नामी फिल्म पा लेने के लिए अमृता ने इन दिनों निर्देशक राहुल रवेल का पल्ला किस कदर कसकर पकड़ रखा है. आखिर राहुल ही उस सफल फिल्म 'बेताब' के निर्देशक थे जिसने मर्दसिंह की उपाधि प्राप्त अमृता को हिट हीरोइन बना दिया था. लेकिन राहुल के पास भी आखिर कोई जादुई छड़ी तो है नहीं जो अमृता की उम्र घटा दें और अमृता हैं कि यह मानने को राजी नहीं कि उनके बाद अभिनेत्रियों की कम-से-कम दो और पीढ़ियां अभियन जगत में उतर चुकी हैं.

कुछ कोमल क्षण ऐसे होते हैं जिनमें पुरुष अगर कमजोर हो तो कोई भी वादे करने पर मजबूर हो जाता है. उन्हें फिर से [illegible] में आने के शायद ऐसे ही किसी वादे को निभाते हुए राहुल ने अमृता को एक बार अखबारों तक पहुंचा तो दिया ही इस फिल्म के मुहूर्त शॉट का क्लैप उनके कोमल [illegible] हाथों से दिलाकर.

यह कैसी नागमणि

□ कहते हैं, जिसे नागमणि मिल जाए उसकी सभी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं. दिल्ली सुंदरी **शिखा स्वरूप** को बंबई में 'नागमणि' फिल्म मिल गई लेकिन यह नागमणि उनकी सब इच्छाएं पूरी नहीं कर रही. इसलिए शिखा अपना आपा खोकर फुफकारने लगती हैं तो क्या ताज्जुब?

ऐसी कौन सी इच्छाएं हैं भला शिखा की? यह बताने के लिए, लीजिए आपको फिल्म 'नागमणि' के सेट पर ले चलते हैं. शिखा के साथ दो-तीन जूनियर आर्टिस्ट ही हैं, मड आइलैंड के इस बंगले में.

डायरेक्टर वी. मेनन अगला शॉट ले

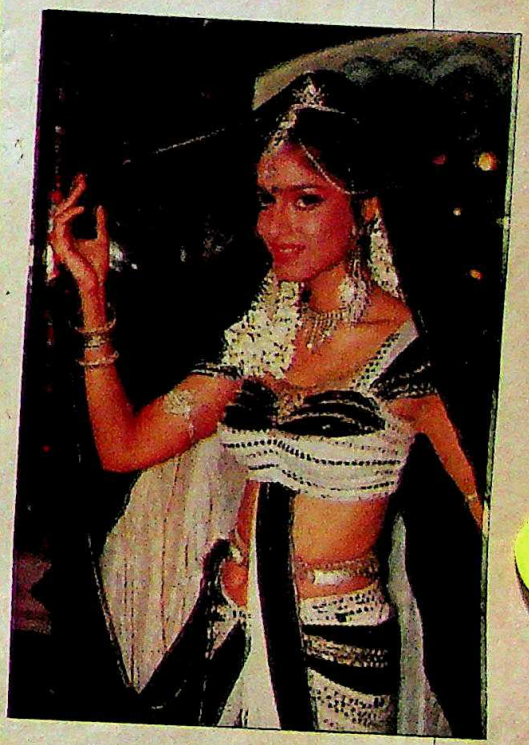

शिखाः रोज के नखरे

लेना चाहते हैं. शिखा राजी नहीं हैं. "ये कैसी नागमणि है जो समय पर सैंडविच और पेस्ट्री पेश नहीं कर सकती?" वे बिगड़ उठती हैं. "मैडम, यह मड आइलैंड है, शहर से दूर जगह. पाइनएपल पेस्ट्री यहां मिल नहीं रही," प्रोडक्शन असिस्टेंट बताता है.

"तो शूटिंग पैकअप", हीरोइन का गुस्सा सातवें आसमान पर है. डायरेक्टर वी. मेनन उसे समझाने नहीं जा रहे. देखकर ताज्जुब हो रहा है. "रोज की बात है." इसमें नया क्या है? वे कान में बताते हैं. "खाने के नाम पर इनके रोज के नखरे, वह भी दिन में चार छह बार, देख सोचता हूं कि अगली शूटिंग 'कैलाश पर्वत भोजन भंडार' में रखूं, यही ठीक रहेगा."

छोड़ दे आस बावरे

[illegible]वी फिल्मों के नामचीन गायक [illegible]ना **गुरदास मान** को बंबई के उस [illegible] हो चुके स्टुडियो के सामान्य से सेट [illegible] हिंदी फिल्मों से लगभग अस्वीकृत [illegible]यों के साथ एक हिंदी फिल्म के सीन में जान डालने की जबरदस्त कोशिश करते देखना वैसा सुखद नहीं लगा जैसा उन्हें स्टेज पर देखना लगता है. 'दिल दा मुआमला है...' जैसा जिंदादिल गीत गाते, मटकते, चमाचम कपड़ों और डिस्को लाइट्स के बीच थिरकते गुरदास जब स्टेज पर होते हैं तब दर्शक और श्रोता आपे में नहीं रहते. लेकिन गुरदास का दुख यही है कि हिंदुस्तान से बाहर के मुल्कों तक फैली उनकी मशहूरी के बावजूद हिंदी फिल्म संसार उन पर तवज्जो नहीं दे रहा. "कोई सही फिल्म मिल जाए तो मैं हिंदी फिल्मों में अपने गाने खुद गाने वाले हीरो का जमाना लौटा लाऊं." उनका दावा है.

गुरदासः दावा

लेकिन सारी गलती कहीं इस दावे में तो नहीं? गुजरा जमाना चाहिए किसको? अपने गाने खुद गाने वाली अभिनेत्रियों का युग लौटाने की कोशिशें करने वाली सुलक्षणा और सलमा का हश्र नहीं पता?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिभा के साथ
ब्वॉय मुकर्जीः कमसिन जोड़ी

ब्वॉय भी आए

• नामों में लयबद्धता हो तो ऐसी. पिता जॉय, एक बेटा टॉय तो दूसरा ब्वॉय और यही स्टारपुत्र **ब्वॉय** अब रुपहले परदे पर उतरने की तैयारी में हैं. बीते दिनों के रोमांटिक हीरो जॉय मुकर्जी के सुपुत्र ब्वॉय 'महबूब मेरा महबूब' के लिए पहली बार मेकअप की परतें चढ़ाकर कैमरे का सामना करेंगे. और उनके साथ हीरोइन भी स्टार पुत्री ही हैं—माला सिन्हा की बेटी **प्रतिभा.**

उन्हें ब्वॉय जैसा अनूठा नाम किस तरह मिला? तो इसका जवाब है—उनके पिता जॉय एडगर राइस बरो के टारजन से बहुत प्रभावित थे जिन्होंने अपने बेटे का नाम ब्वॉय रखा था. बहरहाल, ब्वॉय की मां श्रीमती मुकर्जी कहती हैं, "मेरे बेटे के नाम का पॉप गायक ब्वॉय जॉर्ज से कोई वास्ता नहीं है. आप इसे उनके नाम से न जोड़ें. अन्यथा हमें बड़ी परेशानी होगी. सब जानते हैं, ब्वॉय कैसे आदमी हैं." चलिए उन जैसा नहीं मानेंगे, पर पहले बंबइया फिल्मों के रुपहले परदे पर कुछ करके तो दिखाइए.

निर्विकार भाव

• उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा लेकिन उनका चेहरा बहुत कुछ कह गया. राष्ट्रपति भवन के भव्य दरबार हॉल में, जहां उनके पति को मरणोपरांत 'भारत रत्न' से सम्मानित किया जाना था, **सोनिया गांधी** गुमसुम अकेली बैठी थीं. काले बॉर्डर की सफेद साड़ी में वे दुबली और उदास नजर आ रही थीं. राजीव गांधी की मृत्यु के बाद से उनके चेहरे पर जो निर्विकार भाव स्थिर हो गया है वह एक क्षण के लिए तभी बदला जब पुरस्कार लेने के बाद वे कुर्सी की तरफ लौट रही थीं.

समारोह खत्म होते ही राहुल और प्रियंका मां की तरफ इस तरह लपके मानो उन्हें सुरक्षा प्रदान कर रहे हों. बाद में अशोक हॉल में जब पत्रकारों ने उनसे पूछा कि क्या वे राजनीति में आएंगी तो उन्होंने वही चिर परिचित चुप्पी साधकर अपना चेहरा दूसरी तरफ घुमा लिया.

सोनियाः शोक बरकरार

अब धुआं नहीं उठेगा

• सिगरेट छोड़ देने का उनका संकल्प अब तक धुएं का गुबार बनकर ही उड़ता रहा. लेकिन पर्यावरण मंत्रालय की कुर्सी संभालते ही कमलनाथ ने 20 वर्ष पुरानी आदत को तिलांजलि दे दी. अब उन्हें कोई परेशानी तो नहीं हो रही? उनका जवाब है—नहीं तो! वजहः वे लगातार च्युइंगम चबाते रहते हैं. वे कहते हैं, "न मैं दफ्तर में सिगरेट पीता हूं, न घर में और न ही बाथरूम में."

कार्टूनः जयंतो

बदला आसमान

• कभी उनकी तमन्ना पायलट बनने की थी. लेकिन अभिनेत्री तनूजा की 17 वर्षीया बेटी **काजल** ने आखिर फिल्मी आकाश में ही उड़ान भरने का फैसला किया. सोफिया कॉलेज की इस छात्रा को आसमान बदलने का कोई गम भी नहीं होना चाहिए क्योंकि नवाब पटौदी और अभिनेत्री शर्मिला टैगोर के साहबजादे सैफ खां के साथ फिल्म 'बेखुदी' के लिए वे अनुबंधित की जा चुकी हैं. काजल फिल्मी दुनिया के चलन से खूब वाकिफ हैं, "मैं जानती हूं अखबारवाले मेरा नाम इस नहीं तो उस हीरो के साथ जरूर जोड़ेंगे. मैं हर स्थिति से निबट लूंगी." यानी तैयारी पूरी है.

काजलः अलग क्षेत्र

हंस चला विदेश

• इस बूढ़े हंस को अब यात्रा का शौक चर्राया है. मजेदार बात तो यह कि इसके पैरों में पहिए भी लगे हैं. नाभा के महाराज की 1912 मॉडल की **ब्रूक स्वान** कार को लंदन ले जाया गया है जहां इसकी नीलामी होगी, हालांकि पुरानी कारों के निर्यात पर प्रतिबंध है. हंस के आकार की इस कार की आंखें रंगीन प्रिज्म से बनाई गई हैं. और कंप्रेसर की चोंच बनाई गई है. नीलामी की कम-से-कम कीमत 1,00,000 पाउंड रखी गई है. राह चलते लोगों को दूर रखने के लिए यह कार फुफकारती हुई चलती थी और इसके नथुनों से गरम पानी निकला करता था. यही नहीं, इस गाड़ी में आठ आर्गन पाइप और की-बोर्ड भी लगे हैं जिनसे संगीत की धुनें निकलती हैं

इंडियन एक्सप्रेस

ब्रूक स्वानः नखरेबाजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ी अनोखी मेल अनोखा

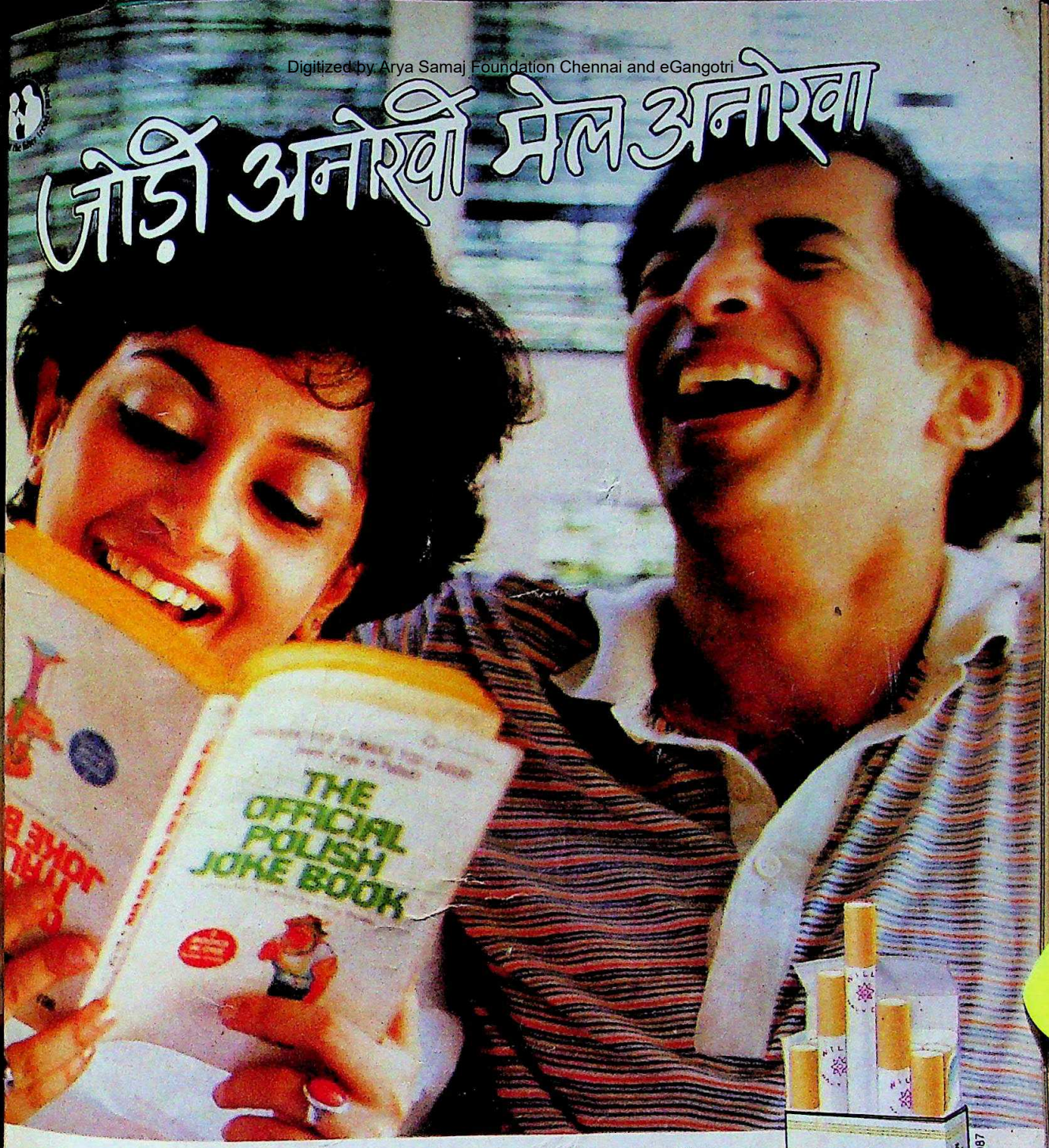

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन। आज भी है यह सबसे बढ़िया। स्वाद में। तसल्ली में। हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर। लाखों सिगरेट प्रेमियों ने इसे आज़माया...फिर हमेशा के लिए अपनाया।

WILLS
FILTER

फ़िल्टर और तम्बाकू का अनोखा मेल

आई टी सी लिमिटेड का अपना एक ब्राण्ड भारत में निर्मित

वैधानिक चेतावनी:
सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AVAILABLE IN SELECTED CITIES

Rothmans

KING SIZE

WORLD LEADER

THE BEST TOBACCO MONEY CAN BUY

Made in India under licence by Godfrey Phillips (India) Ltd.

Statutory Warning: Cigarette smoking is injurious to health

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

21 अगस्त 1991 6 रुपए

इंडिया टुडे

सम्पूर्ण समाचार पत्रिका

शिवरामन

राजीव हत्याकांड: गुत्थियां ही गुत्थियां

परशु सिंह: स्टिक का नया जादूगर

जनता दल: अपना अपना रोना

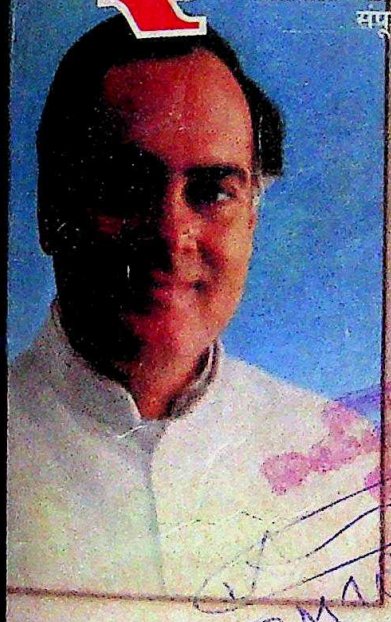

कांग्रेस (इ)

सोनिया के नाम पर सियासत

शासन सूत्र फिर से संभालने को बेताब सोनिया राजनीति में आने की सोनिया की इच्छा के बावजूद उनके नाम की बड़ी बालाकी से भुना रही है. नतीजतन पार्टी की गाड़ी पटरी से उतरी जा रही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri

इंडिया टुडे प्रस्तुत म्यूज़िक टुडे:

भोर से अर्धरात्रि तक के राग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन से रात तक के रंगों की अनूठी संगीत यात्रा. एक-एक घंटे के 16 ऑडियो कैसेटों पर प्रतिष्ठित संगीतकारों के चुनिंदा राग उनके विशिष्ट अंदाज़ में, विशुद्ध स्वर की पकड़ डिजिटल पद्धति से तैयार कैसेटों पर.

और आपके घर डाक अथवा कूरियर से पाने की सुविधा.

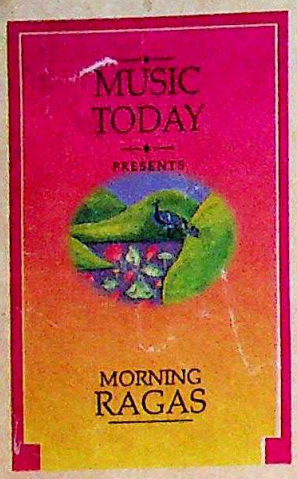

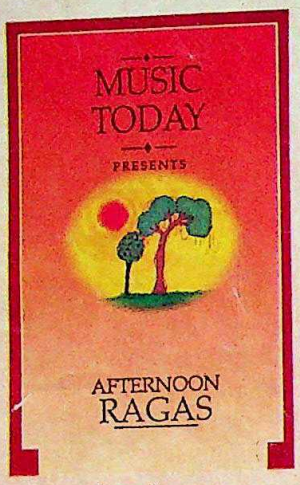

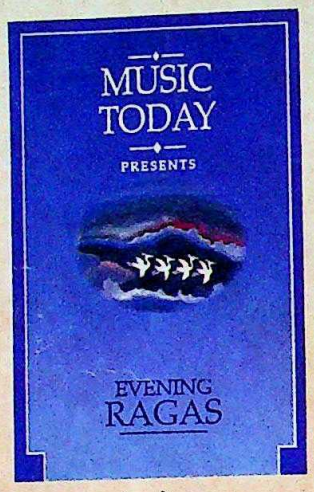

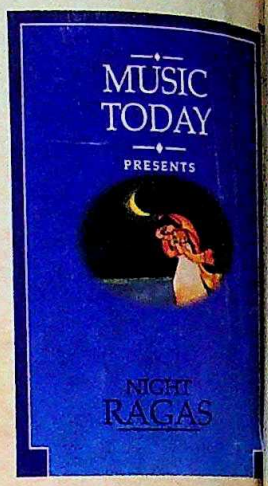

भोर के राग
भाग-1 (कोड ए 90001)
ललित
राजन और साजन मिश्र (गायन)
भैरव
शाहिद परवेज़ (सितार)
अहीर भैरव
श्रुति सदोलिकर (गायन)
भाग-2 (कोड ए 90002)
मियां की तोड़ी
अम्मजद अली खां (सरोद)
भटियार
पंडित जसराज (गायन)
विभास
श्रुति सदोलिकर (गायन)
भाग-3 (कोड ए 90003)
जौनपुरी
पद्मा तलवलकर (गायन)
बिलासखानी तोड़ी
अमजद अली खां (सरोद)
देसी तोड़ी
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
भाग-4 (कोड ए 90004)
कुकुभ बिलावल
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
देशकार
शाहिद परवेज़ (सितार)
भैरवी
पद्मा तलवलकर (गायन)

दोपहर के राग
भाग-1 (कोड ए 90005)
शुद्ध सारंग
अमजद अली खां (सरोद)
सुघरई
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
गौड़ सारंग
पद्मा तलवलकर (गायन)
भाग-2 (कोड ए 90006)
बृंदावनी सारंग
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
मधमद सारंग
पंडित जसराज (गायन)
धनी
शाहिद परवेज़ (सितार)
भाग-3 (कोड ए 90007)
भीमपलासी
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
पटदीप
श्रुति सदोलिकर (गायन)
मांड
शाहिद परवेज़ (सितार)
भाग-4 (कोड ए 90008)
मुल्तानी
राजन और साजन मिश्र (गायन)
मधुवंती
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
पीलू
अमजद अली खां (सरोद)

सांध्य के राग
भाग-1 (कोड ए 90009)
मारवा
पंडित जसराज (गायन)
श्री
श्रुति सदोलिकर (गायन)
हंसध्वनि
शाहिद परवेज़ (सितार)
भाग-2 (कोड ए 90010)
पूरिया
राजन और साजन मिश्र (गायन)
श्याम कल्याण
अमजद अली खां (सरोद)
नंद
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
भाग-3 (कोड ए 90011)
शुद्ध कल्याण
पद्मा तलवलकर (गायन)
मांझ खमाज
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
दुर्गा
राजन और साजन मिश्र (गायन)
भाग-4 (कोड ए 90012)
यमन
शाहिद परवेज़ (सितार)
शंकरा
पंडित जसराज (गायन)
मिश्र धारा
श्रुति सदोलिकर (गायन)

रात्रि के राग
भाग-1 (कोड ए 90013)
शुद्ध नट
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
केदार
पद्मा तलवलकर (गायन)
झिंझोटी
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
भाग-2 (कोड ए 90014)
बागेश्वरी
पंडित जसराज (गायन)
हमीर
पद्मा तलवलकर (गायन)
तिलक कामोद
शाहिद परवेज़ (सितार)
भाग-3 (कोड ए 90015)
मालकौंस
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
मारु विहाग
श्रुति सदोलिकर (गायन)
जैजैवंती
राजन और साजन मिश्र (गायन)
भाग-4 (कोड ए 90016)
नायकी कान्हड़ा
श्रुति सदोलिकर (गायन)
देश
पंडित जसराज (गायन)
दरबारी
अमजद अली खां (सरोद)

मूल्य
(टैक्स पैकिंग और भेजना शामिल) @ 45 रु. प्रति कैसेट

कृपया ध्यान दें
- दिल्ली से बाहर के स्थानों के चेकों के साथ 15 रु. की अतिरिक्त राशि आवश्यक.
- मुंबई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली के चेक/डिमांड ड्राफ्टों का एमआईसीआर होना आवश्यक.
- **कैसेट आपके घर रजिस्टर्ड डाक या कूरियर से पहुंचाए जाएंगे.**
- डिलीवरी के लिए कृपया कम से कम 3-4 सप्ताह का समय दें.
- उपहार देने के लिए कृपया उपहार पाने वाले का नाम और पता संलग्न ऑर्डर फार्म पर लिखकर भेजें.
- देय राशि म्यूज़िक टुडे के नाम करें और 'म्यूज़िक टुडे', पोस्ट बॉक्स 29, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजें.
- कृपया ऑर्डर फार्म कम्प्यूटर प्रोसेसिंग सुविधा हेतु अंग्रेजी में ही भरें.
- **अगर संलग्न ऑर्डर फार्म न मिले तो अपना ऑर्डर अपने नाम, पता और देय राशि के साथ 'म्यूज़िक टुडे' पोस्ट बॉक्स 29, नई दिल्ली-110001 को भेज दें.**
- दर व पेशकश सिर्फ भारत में ही लागू है.

ऑर्डर फॉर्म

कोड नं.	कैसेटों की संख्या
ए 90001	_____
ए 90002	_____
ए 90003	_____
ए 90004	_____
ए 90005	_____
ए 90006	_____
ए 90007	_____
ए 90008	_____
ए 90009	_____
ए 90010	_____
ए 90011	_____
ए 90012	_____
ए 90013	_____
ए 90014	_____
ए 90015	_____
ए 90016	_____

मैं 'म्यूज़िक टुडे' कैसेटों के लिए नीचे लिखे विवरण के अनुसार 45 रु. प्रति कैसेट की दर से (टैक्स, पैकिंग और भेजना शामिल) ऑर्डर देना चाहता/चाहती हूं।
मेरे लिए ☐ उपहार ☐
म्यूज़िक टुडे को देय _____ रु. का रेखांकित चेक (दिल्ली से बाहर के ऑर्डरों के लिए 15 रु. अतिरिक्त जोड़ें)/डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर रहा/रही हूं।
आर्डर किए कैसेटों की संख्या _____
कुल देय राशि _____
My Name _____
Address _____
_____ Pin _____ Phone No. _____
Gift for _____
Address _____
_____ Pin _____

चुनींदा दुकानों में भी उपलब्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पखवाड़े

सोनिया के नाम पर सियासत

सोनिया ने हालांकि अभी तक राजनीति में उतरने की इच्छा जाहिर नहीं की है लेकिन इंका राजनीति का वे केंद्र बिंदु बनी हुई हैं. सत्ता और रुतबा पाने के लिए उनका नाम भुनाने वाले गुटों पर एक रिपोर्ट. साथ में सोनिया की स्थिति का विवेचन.

आवरण कथा 16

ये बढ़े तो वे अड़े

सरकार का खाद पर सब्सिडी कम करने का फैसला एक बड़ा मुद्दा बन गया है. वोट बैंक हाथ से खिसक जाने के डर से घबराए इंका नेताओं ने जब विपक्ष के साथ मिलकर सब्सिडी जारी रखने की मांग की तो वित्तमंत्री को झुकना पड़ा.

खास रपट 25

सुलझी कुछ और गुत्थियां

राजीव हत्याकांड के प्रमुख अभियुक्त शिवरासन और शुभा अब तक फरार हैं लेकिन विशेष जांच दल ने गहरे षड्यंत्र का पर्दाफाश किया है जिसके सूत्र विदेशों तक में पहुंचे हुए दिखाई देते हैं. एलटीटीई ने अपने 'काने उस्ताद' से किनारा कर लिया है.

खास रपट 30

अपना-अपना रोना

जनता दल में वी.पी. सिंह और अजित सिंह में टकराव बढ़ते जाने के बावजूद दोनों ही पार्टी तोड़क कदम उठाने से बच रहे हैं. अजित को कमजोर करने की वी.पी. सिंह की कोशिशों के बावजूद जाट नेता और उनके समर्थकों को पार्टी का विभाजन मंजूर नहीं.

आजकल 36

स्वार्थों से उपजा अलगाववाद

'इंडिया टुडे' की तर्क-वितर्क की पांचवीं शृंखला में जॉर्ज फर्नांडीस, मुरली मनोहर जोशी, सैफुद्दीन चौधरी, एम.जे. अकबर, बी.जी. वर्गीज, बलराज पुरी, पी.ए. रोशा, पी.के. दवे, रियाज पंजाबी, ले. जनरल (रिटा.) एम. हसनैन कश्मीर पर बहस कर रहे हैं.

तर्क-वितर्क 55

जीत से बढ़ा मनोबल

इपोह में अजलान शाह हॉकी टूर्नामेंट जीतने के बाद भारतीय हॉकी टीम अब ओलंपिक खेलों के क्वालिफाइंग मैच से ज्यादा की उम्मीदें बांध रही है. साथ में इस टूर्नामेंट में सबसे उम्दा प्रदर्शन करने वाले कप्तान परगट सिंह पर विशेष लेख.

खेलकूद 62

अगले पन्नों पर

कसौटी 7
तेवर 8
राजरंग 10
हिंदोस्तां हमारा 12
आवरण कथा
कांग्रेस (इ):
सोनिया के नाम पर सियासत 16
खास रपट
संसद: सिर्फ जबानी जमा-खर्च 22
खाद सब्सिडी:
ये बढ़े तो वे अड़े 25
खास रपट
राजीव हत्याकांड:
सुलझी कुछ और गुत्थियां 30
आजकल
जनता दल: अपना-अपना रोना 36
ओडीसा: लापरवाही का फल 37
महाराष्ट्र: मिट्टी में मिला जीवन 39
मुंबई: दादा बाहर 40
मध्य प्रदेश: सत्ता की प्रबल आस 42
स्वास्थ्य
दिल्ली: पिनों की अजीब पहेली 48
व्यापार चक्र 45
कारोबार
शेयर बाजार 47
समाचार जगत
अखबारी कागज:
कचूमर निकालतीं कीमतें 53
तर्क-वितर्क
कश्मीर: दलगत स्वार्थों से
उपजा अलगाववाद 55
खेलकूद
हॉकी: जीत से बढ़ा मनोबल 62

आवरण: प्रमोद पुष्करणा

घोषणा

रुपए के अवमूल्यन से आयातित अखबारी कागज के दाम में भारी बढ़ोतरी हो गई है. इसमें राज्य व्यापार निगम की प्रस्तावित बढ़ोतरी शामिल नहीं है, जिसे अखबार उद्योग ने अभी मंजूर नहीं किया है.

बढ़े दामों से अंशतः तालमेल बिठाने के लिए हमें 'इंडिया टुडे' की कीमत 16 सितंबर के अंक से 9 रु. के बदले 11 रु. करने पर मजबूर होना पड़ रहा है. नया वार्षिक शुल्क 210 रु. होगा और यह 1 सितंबर 1991 के बाद ग्राहकी नवीनीकरण या नई ग्राहकी पर लागू होगा.

उम्मीद है, पाठक हमारी मजबूरियां समझेंगे और हमें सहयोग देना जारी रखेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

फ़ोर स्क्वाइफ़ किंगसाइज़
FOUR SQUARE
KINGS
FOUR SQUARE
KINGS
आख़िरी कश तक वही भरपूर स्वाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफलता की कीमत क्या आप अपना स्वास्थ्य देकर चुकाएंगे ?

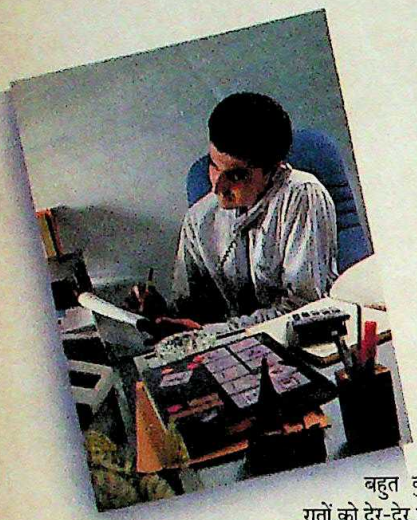

सफलता का स्वाद बेशक बड़ा मीठा होता है. यह समृद्धि और तृप्ति देती है. लेकिन सफलता अपने साथ और भी तो बहुत कुछ लेकर आती है. यह सम्पूर्ण जीवनशैली को ही बदल देती है. रातों को देर-देर तक जागना, हड़बड़ी में भोजन, कॉकटेल के दौर, तेज मसालेदार खाना... और काम की भारी चुनौतियों की क्या कहें. डेडलाइन्स, चिन्ताएं, भाग-दौड़, 'टेंशन' और भी ये-वो.

जिस तरह कैरियर और कारोबार में आप उन्नति की ऊचांइयों की तरफ निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं, उसी तरह आपके शरीर में कोलेस्ट्राल और ट्राइग्लाइसेराइड स्तर भी बढ़ते जा रहे हैं. और आप जानते हैं कि ये आपके शरीर के लिए कितने घातक हैं तथा आपको इनसे छुटकारा पाना है. लेकिन इसके लिए आपके पास वक्त कहाँ? आपका काम आपसे दिन रात का साथ मांगता है. और आपका परिवार भी इसी मुद्दे पर आपसे अक्सर उलझता है. और किसी एक थकान भरे दिन के अंत में, अगर आपके स्वास्थ्य को इसका नतीज़ा झेलना पड़ जाए तो शायद आपकी हैरानी का कोई ओर - छोर नहीं रहेगा. आखिरकार आपका स्वास्थ्य ही आपकी सफलता की सीढ़ियों का आधार है और इसी पर आपके प्यारे परिवार की तमाम खुशियां टिकी हुयी हैं. तो क्या आप सफलता की कीमत अपने स्वास्थ्य की बलि देकर चुकाएंगे?

लेकिन घबराइए नहीं. आपके लिए कुदरत के पास ही है इसका सही नुसखा - एलियम सतिवम् तथा शोरिया रोबुस्ता, दो सुरक्षित तथा प्रभावशाली कुदरती तरल रेगुलेटर. आपके लिए इसे एक हेल्थ कैपसूल "टेक केयर" के रूप में लेकर आए हैं नेचुरा. आज से ही हर रोज "टेक केयर" लेना शुरू कीजिए. महीनेभर के लिए मात्र रू ५७.९०. आपकी सफलता की खातिर एक मामूली सी कीमत. बेशक यह कीमत आपके स्वास्त्य की खातिर भी है.

पेश है

कुदरत का अपना बिलकुल निजी नुसखा

TAKE Natura CARE

आपके पड़ोस के केमिस्ट के पास उपलब्ध है.

MAA COMMUNICATIONS 1001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक और शुरुआत

नई आर्थिक नीति पर आवरण कथा 'लाइसेंस राज के खात्मे की शुरुआत' (15 अगस्त) का एक सुखद परिणाम यह तो होगा कि लाइसेंस-परमिट हासिल करने के साथ जुड़े भ्रष्टाचार और लालफीताशाही खत्म हो जाएंगे.

मयूर विहार (दिल्ली) **गायत्री त्रिपाठी**

ईमानदार कोशिश

देश की आर्थिक सेहत सुधारने के लिए मनमोहन सिंह की 'कड़वी दवा' (आवरण कथा, 31 जुलाई) नई सरकार की एक ईमानदार कोशिश है जिसकी तरफ पूरा देश आशा भरी नजरों से देख रहा है. जरूरत इस बात की है कि सरकार इन सुधारों को अलोकप्रियता का खतरा उठाते हुए भी जारी रखे क्योंकि यदि नेताओं पर महंगाई आदि के कारण अपने वोट बैंक का दबाव बढ़ा तो न केवल विपक्ष वरन सत्ता पक्ष के व्यक्ति भी वित्तमंत्री को बलि का बकरा बनाने में मंत्रिमंडल के सामूहिक दायित्व का लिहाज भी नहीं करेंगे.

इलाहाबाद (उ.प्र.) **मनोज पटेल**

■ खस्ता, जर्जर भारतीय अर्थव्यवस्था में जो कठोर मगर साहसिक कदम उठाए गए हैं, उन्हीं के बल पर हम विश्व अर्थव्यवस्था के साथ सामंजस्य बना सकते हैं. जिस तेजी से नीतियों का क्रियान्वयन हुआ है, उससे लगता है कि नई सरकार की आर्थिक नीति निकट भविष्य में भारत को अपने पैरों पर खड़ा कर देगी.

बारां (राज.) **हरिनारायण सिंह**

■ अर्थव्यवस्था की कड़वी गोली की सचाई पढ़कर यही महसूस हुआ कि विश्व बैंक व अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के दबाव में आकर नई सरकार ने जिस तरह दो बार रुपए का अवमूल्यन कर अपनी आर्थिक व औद्योगिक नीति में परिवर्तन किया, उससे देश को आर्थिक गुलामी के गर्त में धकेल दिया गया है.

मुरादाबाद (उ.प्र.) **विनोद जैन**

■ अर्थव्यवस्था में सुधार लाने के लिए इस तरह के बुनियादी बदलाव जरूरी हो गए थे ताकि हम दुनिया के साथ कदम मिलाकर चल सकें. भारतीयों को चाहिए कि ऐसे संकट की घड़ी में व्यर्थ की नुक्ता-चीनी में न पड़ें और देश की उन्नति के लिए इस कड़वी दवा की घूंट भर लें.

मस्कट (ओमान) **हेम टी.नायर**

■ मनमोहन सिंह का यह कथन कि मेरे पास कोई जादुई छड़ी नहीं है यथार्थ से परिचय कराता है. पिछली सरकारों ने देश की अर्थव्यवस्था को इतना खोखला कर दिया है कि यदि मुद्रा अवमूल्यन जैसे साहसिक कदम न उठाए जाते तो देश को दिवालिया होने से नहीं बचाया जा सकता था.

मुरादाबाद (उ.प्र.) **महेंद्र सिंह देवल**

■ आपने 'कड़वी दवा' को मीठी बनाने की भरपूर कोशिश की है. परंतु इस दवा का असर तो अंततः आम जनता पर महंगाई के रूप में पड़ेगा. आपने आर्थिक नीति पर सकारात्मक लेख प्रस्तुत किया है लेकिन स्वाभिमान को भूलकर एक अंतरराष्ट्रीय संस्था के आगे घुटने टेक देना कहां की समझदारी है.

मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) **मुनीश कुमार**

■ प्रधानमंत्री, वित्तमंत्री एवं उनके सहयोगियों ने यह साबित कर दिया है कि वे सत्ता लोलुपता से परे जाकर इस तरह के साहसिक निर्णय भी ले सकते हैं.

बिलासपुर (म.प्र.) **ओमप्रकाश मिश्र**

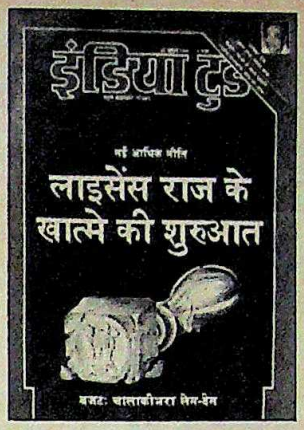

सरकार की हर नई नीति की आलोचना तो हुआ ही करती है, लेकिन मनमोहन सिंह की नई आर्थिक नीति यदि भारत को विश्वमंच पर आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में उठाई गई है, तो इसका हर हाल में स्वागत ही होना चाहिए.

होशंगाबाद (म.प्र.) **जितेंद्र**

वर्ष: 5, अंक 20,
16-31 अगस्त 1991

● संपादकीय कार्यालय: लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 3315801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ● मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय: इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ● मुख्य विज्ञापन कार्यालय: 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, मुंबई-400021. फोन: 2026152, 2029328, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, मुंबई. ● क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय: के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016. फोन: 225398, 221922, टेलेक्स: 21-7138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

अन्य व्यस्तताएं भी हों!

'आरामतलबी का आलम' (31 जुलाई) में चंद्रशेखर की व्यस्तता का वर्णन पढ़कर प्रसन्नता हुई. इसका दूसरा पहलू यह है कि सभी राजनीतिकों के पास एक दूसरा पेशा या व्यवसाय होना चाहिए ताकि जनता द्वारा नकार दिए जाने पर वे अपना ध्यान व समय अन्यत्र लगा सकें.

भिलाई (म.प्र.) **राकेश पिपरसानिया**

■ अब चंद्रशेखर केवल देश के वरिष्ठ नेता न होकर पूर्व प्रधानमंत्री भी हैं. और वे देश की शासन व्यवस्था, समस्याओं व कार्य प्रणाली को काफी नजदीक से जान चुके हैं. ऐसे में देश के प्रति उनका दायित्व बन जाता है कि वे उसे नई दिशा देने के लिए प्रयास करें.

जोधपुर (राज.) **राजेंद्र पुरोहित**

प्रशासन तो अब देखा

'बलि होने से बचे' (31 जुलाई) में यह कहना सरासर गलत है कि पटवा सरकार के कुशासन और दुश्मनी मोल लेने की आदत की वजह से भाजपा हारी है. असल में प्रशासन क्या होता है, कानून व्यवस्था कैसी होनी चाहिए, यह सब भाजपा के 15 महीने के शासन में ही देखने को मिला है.

भोपाल (म.प्र.) **प्रमोद शुक्ला**

■ भाजपा की हार के लिए अकेले पटवा को दोषी ठहराना गलत होगा. भाजपा की हार में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव की हत्या से उपजी सहानुभूति लहर का भी असर रहा.
सीतामढ़ी (बिहार) केदारनाथ मिश्र

ये कैसे मसीहा?

'नकारा जाना ही नियति' (31 जुलाई) में मारे गए हरिजनों की संख्या जानकर ऐसा महसूस हुआ कि क्या यह वही लालू सरकार है, जो हरिजनों और पिछड़ों की मसीहा होने का ढोंग रचती है.
गया (बिहार) केशरी चंद्र

■ बिहार के हरिजनों के भाग्य में सामंतवादी ताकतों के आगे सिर नवाकर मौत को गले लगाना ही है. जनता दल सरकार, जिसका प्रमुख नारा 'सामाजिक न्याय' है, के ही राज्य में सामाजिक अन्याय का वातावरण गहराता जा रहा है.
सारणी (म.प्र.) अरविंद श्रीवास्तव

■ हरिजनों पर अत्याचार की वजह एक ही है और वह है, सदियों पुरानी जाति-व्यवस्था पर आधारित गांव. जब तक जातिगत आधार पर बसे गांवों को मिली-जुली जाति के आधार पर नए सिरे से नहीं बसाया जाता, तब तक अपराध, पिछड़ेपन और आदिम सोच से बिहार का मुक्त होना असंभव है.
कलकत्ता (प. बंगाल) शैलेंद्र सिंह

यह तो जरूरी ही था

'अर्थनीति पर आम सहमति जरूरी' (31 जुलाई) में आपके विचार अधिक सटीक व वास्तविक लगे. देश की अर्थव्यवस्था को और अधिक दयनीय होने से बचाने के लिए यह शायद जरूरी था.
जबलपुर (म.प्र.) प्रतिभा जाट

ठीक ही किया

'हवाई सपने का अंत' (31 जुलाई) पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई. सत्ता हासिल करने के बाद चौटाला ने आनन-फानन में जो तुगलकी निर्णय लिए उनमें डिज़ीलैंड तो पूर्णतया किसान विरोधी था. भजनलाल ने बंदर के हाथ से उस्तरा छीनकर अच्छा काम किया है.
मुरादाबाद (उ.प्र.) नवीन रावत

सामाजिक सचाई

कहानी 'शोक' (31 जुलाई) में वाकई में एक कटु सत्य है जिसे नकारा नहीं जा सकता. किसी की मौत का राजनैतिक लाभ किस प्रकार उठाया जाता है यह हमारे समाज की वास्तविकता बन चुकी है. महीप सिंह ने इस हकीकत की सटीक प्रस्तुति की है.
ग्वालियर (म.प्र.) लोकेंद्र सिंह भदौरिया

जल्द निपटारा जरूरी

'तलाशी में तेजी' (31 जुलाई) से जेहन में कई सवाल उभरते हैं. यदि काना उस्ताद शिवरासन गिरफ्तार हो भी जाए तो भारत में ऐसे अनगिनत हैं जिनके बदले काने उस्ताद को बिना शर्त रिहा करने की मांग की जा सकती है. राजनैतिक दलों को दलगत स्वर्थों से ऊपर होकर कठोर संवैधानिक बदलाव लाने की पहल करनी चाहिए जिससे आतंकवाद के जघन्य अपराधियों के पकड़े जाने पर फौरन मुकदमे चलाकर सख्त से सख्त सजा दी जा सके.
इलाहाबाद (उ.प्र.) विजयभूषण भटनागर

निर्णायक जनादेश

'बारूद के ढेर पर' (31 जुलाई) बैठे उत्तर प्रदेश के नए मुख्यमंत्री कल्याण सिंह को निस्संदेह एक ऐसा जनादेश प्राप्त हुआ है जो प्रदेश में ही नहीं वरन संपूर्ण देश में भाजपा के भविष्य को तय करेगा. मंदिर निर्माण, जो कि भाजपा के लिए जटिल किंतु आवश्यक कार्य बन गया है, को उन्हें इस ढंग से निबटाना होगा जिससे भाजपा का भविष्य भी सुरक्षित रह सके और केंद्र से टकराव की स्थिति भी न बन पाए.
ग्वालियर (म.प्र.) अश्विनी कुमार सूद

मानसिक दिवालियापन

'बड़ा शिकार' (31 जुलाई) पढ़कर आश्चर्य तो नहीं पर दुख जरूर हुआ. राष्ट्रपति पदक से सम्मानित और सीबीआई जैसे प्रतिष्ठित एवं भरोसेमंद विभाग के डीआईजी का इस तरह घूस लेते रंगे हाथों पकड़ा जाना देश के दुर्भाग्य का ही परिचायक है. जेकेएलएफ जैसे आतंकवादी संगठन के हाथों महज चंद रुपयों के लिए बिक जाना ओ.पी. शर्मा के मानसिक दिवालिएपन को ही उजागर करता है.
जशपुर नगर (म.प्र.) दीपेंद्र सिन्हा

ऐसा ही नेता चाहिए

नरसिंह राव से बातचीत 'हमें जनादेश तो मिला ही है' (31 जुलाई) उनकी योग्यता व सौम्यता की परिचायक तो थी ही, उनका लहजा भी अहंकार से कोसों दूर था. इस देश को ऐसा ही प्रधानमंत्री चाहिए जो विनम्र हो, सबको साथ लेकर चलने वाला हो, और देशहित के लिए कठोर फैसले लेने में न हिचकिचाए.
मद्रास (तमिलनाडु) संगीता गढ़वानी

फिल्म 'हिना' पर लेख पढ़कर और फिल्म देखकर लगा कि हिना जरूर रंग लाएगी. निर्देशक के रूप में रणधीर कपूर ने राजकपूर की शैली और तकनीक बरकरार रखने की पूरी कोशिश की है. उम्मीद है, उनके रूप में फिल्म उद्योग को एक और 'शोमैन' मिलेगा.
जबलपुर (म.प्र.) कृष्णा तिवारी

फिल्म बनाने में सचमुच मेहनत की गई है. ज़ेबा तो लाजवाब रहीं ही, फिल्म की फोटोग्राफी भी अविस्मरणीय है.
रतलाम (म.प्र.) प्रकाशचंद्र कनेरिया

परिवार के साथ देखी जा सकने वाली इतनी साफ-सुथरी फिल्म बनाकर रणधीर कपूर ने अपने पिता राजकपूर की आखिरी दौर की फिल्मों पर लगा अश्लीलता का धब्बा धो दिया है और अपनी काबिलियत दिखा दी है.
आजमगढ़ (उ.प्र.) सूर्यनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पर्धा में टिकना सीखें

रेखांकन: अजीत नैनन

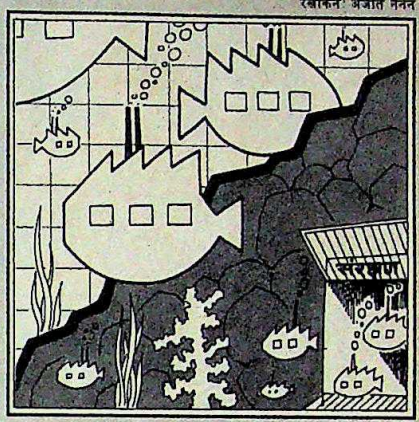

अब जब कि वित्तमंत्री मनमोहन सिंह ने मुक्त बाजार प्रणाली की उफनती नदी में छलांग लगा ही दी है, उन्हें इस बात पर भी जोर देते रहना चाहिए कि जो तैरना नहीं सीखेंगे, डूब जाएंगे. और जैसे-जैसे सुधार सामने आते जा रहे हैं, उद्योगपतियों को दोटूक शब्दों में यह बता दिया जाना चाहिए कि कोई भी उद्योग कृत्रिम पोषण और सरकारी संरक्षण के भरोसे फल-फूल नहीं सकता.

यही बात लघु उद्योगों पर भी लागू होनी चाहिए. एकाधिकार और प्रतिबंधात्मक व्यापार कानून के, जिसने दरअसल व्यापार पर रोक लगाई और एकाधिकार को बढ़ावा दिया, उन्मूलन से बड़े व्यवसायों को यदि और अधिक होड़ का सामना करना पड़ेगा तो लघु उद्योगों को भी आर्थिक मुख्यधारा से जुड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए. सरकार ने काफी लंबे समय से उद्योगों को कुटीर, लघु, मझोले, और बड़े क्षेत्रों में बांट रखा है. इसने छोटे उद्योगों को वित्तीय और लाइसेंसिंग प्रोत्साहनों और आरक्षणों के जरिए इस विश्वास से संरक्षण दे रखा है कि यदि इन्हें विशेष दर्जा न दिया गया तो इन्हें बड़े उद्योग निगल जाएंगे.

लेकिन इन नीतियों ने विकास को बढ़ावा दिए या रोजगार में वृद्धि किए बिना इन क्षेत्रों में निहित स्वार्थ पैदा कर दिए. दरअसल, इससे बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार फैल गया. तथाकथित 'लघु उद्योग मार्ग' परियोजनाएं लगाने के लिए सरकारी पैसा हासिल करने का जरिया बन गया है. ये परियोजनाएं कभी नहीं लगती. कई कंपनियां इस मार्ग का इस्तेमाल घरेलू या आयातित कच्चे माल का वरीयता के आधार पर आबंटन हासिल करने के लिए करती हैं. फिर काला बाजार में भारी मुनाफा लेकर उन्हें बेच देती हैं और अपना कारोबार समेट लेती हैं. लेकिन उनके 'स्वीकृत' उद्योग कागज पर बने रहते हैं.

ये कंपनियां विकसित होने के बजाए लघु कंपनी ही बनी रहती हैं और निहित स्वार्थ का विकास करती हैं. उन्मुक्त बाजार से सर्वोत्तम को आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिलता है. लघु और बड़े क्षेत्रों को परस्पर निर्भर भी बना देना चाहिए ताकि बड़े उद्योग छोटे उद्योगों को प्रौद्योगिकी और वित्तीय सहायता दें और छोटे उद्योग उनके लिए उनके उपयोग की वस्तुएं और कच्चा माल तैयार करें. शुरुआती प्रक्रिया कष्टदायक हो सकती है लेकिन यदि राष्ट्र को प्रतिस्पर्धात्मक और अंतरराष्ट्रीय स्तर का माल तैयार करना है तो यह कदम निहायत जरूरी है.

समर्थ किसानों को सहायता कैसी

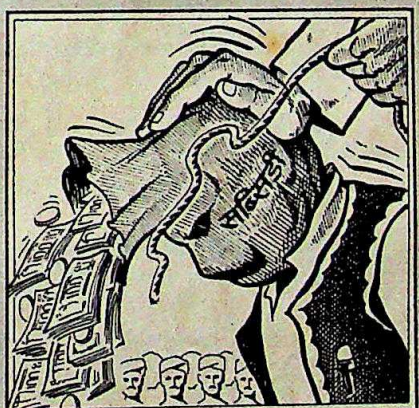

राजीव गांधी फाउंडेशन को 100 करोड़ रु. का अनुदान देने से सरकार का पीछे हटना एक शुरुआती भारी भूल को चतुराई से सुधारना है लेकिन नई उर्वरक नीति पर कोई भी समझौता करना एक समझदारी भरे कदम से पीछे हटना होगा. इसका यह भी मतलब होगा कि ये सभी साहसिक घोषणाएं एक ऐसी अनिश्चित और असुरक्षित सरकार कर रही है जिसकी आर्थिक नीतियां विरोध करने पर दम तोड़ देती हैं.

ऐसी स्थिति में प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव साहस खोने या राजनैतिक संकल्प से डिग जाने का प्रदर्शन नहीं कर सकते. उर्वरक नीति कुछ हजार करोड़ रु. बचाने से ज्यादा एक दूसरी महत्वपूर्ण बात की ओर संकेत करती है. वह यह कि मुफ्त की मलाई उड़ाने यानी कर्ज माफी, कर्ज मेलों और राजनीति से प्रेरित मूल्य नीति के दिन लदने जा रहे हैं. दरअसल, उर्वरक नीति उतनी भयानक है नहीं जितनी कि यह लगती है. जहां खेती संबंधी सभी चीजों के दाम तेजी से बढ़े हैं वहीं ऊंची उत्पादन लागत के बावजूद उर्वरक की कीमतें 1981 से नहीं बढ़ी हैं. इन कीमतों का भार सरकार उत्पादकों को प्रत्यक्ष सब्सिडी देकर उठाती रही है. यह सब्सिडी, जिससे उत्पाद की कीमत स्थिर रही, पिछले साल लगभग 4 हजार करोड़ रु. पहुंच गई और इस साल यह 6 हजार करोड़ रु. पहुंच जाती. इस बार सरकार उर्वरक की कीमत 40 फीसदी बढ़ाने को है ताकि बाजार कीमतों का भार वहन कर ले. वह 2 हजार करोड़ रु. की अतिरिक्त सब्सिडी भी देने से बच जाएगी. यह ठोस कदम था. लेकिन सरकार क्यों नहीं एक कदम आगे बढ़कर मौजूदा सब्सिडी में कुछ और कटौतियां करती क्योंकि इस सब्सिडी से बड़े किसानों को फायदा होता है.

सरकारी अनुमानों के अनुसार लगभग 80 फीसदी उर्वरक बड़े किसानों के पास जाता है जो कि अच्छी कमाई कर रहे हैं. पिछले 5 वर्षों में अनाज के वसूली मूल्य 40 फीसदी बढ़े लेकिन मझोले और बड़े किसान अपनी उपज को खुले बाजार में 30 से 50 फीसदी अधिक कीमत पर बेचते हैं. जाहिर है, ये किसान बढ़ी हुई कीमतों का बोझ उपभोक्ताओं पर आसानी से डाल सकते हैं. सरकार सुरक्षित भंडारों और सार्वजनिक वितरण प्रणाली के लिए कुल कृषि उपज का आठवें भाग से ज्यादा नहीं उगाह पाती. अगर कोई सब्सिडी जारी भी रहती है तो वह केवल सीमांत किसानों के हित के लिए होनी चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SEE BETWEEN THE LINES

Even after
you've heard about it all
and read about it all – see it all
on India's first newsmagazine on
video cassette – ***NEWSTRACK***
Press the play button and you're
on the ringside seat –
to people, places, events, issues –
incisively covered like on no
other medium ever before.

▶ **ONLY ON NEWSTRACK** ◀

SPECIAL OFFERS

SINGLE CASSETTE
- Current Issue Rs. 145/- for a single cassette.
- Back Issues Rs. 135/- each.

SUBSCRIPTION
- Annual Rs. 1380/- and a free ***INDIA TODAY ADDRESS BOOK.****

* This offer is valid upto August 31, 1991. Address Books will be delivered at your given address within 4-6 weeks of receipt of order.

Mail a DD/Cheque favouring
Living Media India Limited to P.O. Box No.29,
New Delhi – 110 001.

Cheques/ Demand Drafts payable at Delhi, Bombay, Calcutta and Madras must be MICR only.

For more details contact
Delhi: 3320689. Bombay : 2027867.
Madras : 479163.
Calcutta : 445398. Bangalore : 210834.

Home delivered by courier or Registered Post

India Today Presents

NEWSTRACK

▶ The newsmagazine to watch ◀

MILESTONES/IT/236

आर.के. लक्ष्मण, टाइम्स आफ इंडिया

● आप किस तरह के विपक्ष के नेता हैं? मैं कुछ भी बोलने के लिए मुंह खोलती हूं तो आप 'नो' 'नो' कहकर चीखने लगते हैं.

■ **नज्मा हेपतुल्ला,** राज्यसभा में विपक्ष के नेता जयपाल रेड्डी से

● सीआईए का कुत्ता! इसको जूते से मारो और बाहर निकालो. इसको गधे पर बिठाकर घुमाओ. इसका मुंह इंदिरा गांधी और राजीव गांधी के खून से सना है.

■ **रत्नाकर पांडेय** (इंका के), जद के राम जेठमलानी से राज्यसभा में

● ऐसा लगता है कि (राजीव) फाउंडेशन ही देश का मालिक है. चिट्ठी आती है और वित्तमंत्री अपना प्रस्ताव वापस ले लेते हैं.

■ **चंद्रजीत यादव,** राजीव फाउंडेशन को प्रस्तावित एक अरब रु. की सहायता वापस लेने के वित्तमंत्री के बयान पर, लोकसभा में

● जरा बताइए, देश कौन चला रहा है, ये चला रहे हैं या वे चला रही हैं?

■ **मदललाल खुराना,** लोकसभा में

● नेहरू-गांधी परिवार ने देश की जितनी सेवा की और बलिदान दिए, उतने किसी ने नहीं दिए.

■ **सी.पी. ठाकुर,** इंका प्रवक्ता, *इंडियन एक्सप्रेस*

● लोग जितना झेल सकते हैं, उतना ही बोझ उन पर डाला गया है.

■ **डॉ. मनमोहन सिंह,** *ट्रिब्यून*

● यदि राजीव गांधी जीवित होते तो बंगारप्पा ऐसा 'दुराचार' (कावेरी जल पर अध्यादेश) करने का साहस नहीं करते.

■ **पी.आर. कुमारमंगलम,** *हिंदुस्तान*

● मैं दिल्ली में कोई ताजमहल नहीं देख रहा था.

■ **लालू यादव,** अपनी हाल की दिल्ली यात्रा पर विधानसभा में

● वी.पी. सिंह भले ही बहुत प्रभावशाली नेता न लगते हों, लेकिन राजनीति में उनका महत्व कम नहीं.

■ **जॉर्ज फर्नांडीस,** *नवभारत टाइम्स*

● मैं मुख्यमंत्री नहीं, प्रदेश का संतरी हूं.

■ **कल्याण सिंह,** मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

● जनाब, भारतीय हॉकी में प्रतिभा है कहां जिसकी उपेक्षा हो.

■ **धर्मपाल सिंह,** पूर्व हॉकी खिलाड़ी, आज

● मैं अगर नकल करके अपने ढंग से पेश करता हूं तो लोग जलते क्यों हैं?

■ **बप्पी लाहिड़ी,** जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माईक्रो ओवन से 53% अधिक जल्दी पकाता है

यूनाइटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

अधिकृत विक्रेता

उत्तर प्रदेश

इलाहाबाद: चौक: गुरु प्रसाद हीरा लाल, नॉवल्टी हाउस 6-[illegible] जवाहर नेहरु रोड, पावर हाउस के पास, एस. नसीम अहमद [illegible] कं० गुप्ता ब्रदर्स लाल डिग्गी चौक ● **ठठेरी बाजार:** राजा [illegible] प्रसाद, लक्ष्मी बर्तन गृह ● **सिविल लाईन्स:** अल्का [illegible] एजेंसिस, खन्ना भाई ● **कटरा:** जेन ट्रेडिंग कं०, ☐ **आगरा: [illegible] बाजार:** आगरा बर्तन भण्डार, आहूजा बर्तन भण्डार, [illegible] बर्तन भण्डार, स्टील हाउस, मानसिंह मोहन लाल, [illegible] कं० बर्तन भण्डार, दौलत मार्केटउ जौहरी बाजार, गुप्ता ग्लास [illegible], बृजाश बाजार. ☐ **अलीगढ़: महावीरगंज:** सी०एस० [illegible] लुहर कं०, जय दीपक बर्तन भण्डार, लीलाधर बाबूलाल, [illegible] लाल किशोरी लाल, दीपक बर्तन भण्डार, रेलवे रोड़. ☐ [illegible]: मोती रेडिओ सेन्टर. ☐ **बहराइच:** श्याम लाल एण्ड [illegible] चौक. ☐ **बलिया:** विजय गन हाउस, स्टेशन रोड. ☐ [illegible]: बंगाल क्रोकरी हाउस, गुसाई गंज. ☐ **बस्ती:** सुशील [illegible] बर्तन मर्चेंट, मंगल बाजार. ☐ **बरेली:** दुआ ब्रदर्स, [illegible] रोड, मिगलानी क्रोकरीज, हास्पीटल रोड. संजय स्टील [illegible], 722 शिवाजी मार्ग. ☐ **देहरादून: पटेल बाजार:** [illegible] एण्ड कं०, सत्य प्रकाश एण्ड कं०, कैपिटल स्टोर्स, दाता [illegible] किशोर कुमार, धामवाला. सेठी लाल सुरेश चन्द, पीपल मंडी. [illegible]: अग्रवाल क्रोकरी हाउस, देहली दरवाजा, मोहम्मद [illegible] एण्ड संस, चौक. हरी बर्तन स्टोर्स, रकाब गंज. ☐ [illegible] **बाद:** राज ग्लास एण्ड क्रोकरी स्टोर्स, नेहरु मार्केट. ● [illegible] **रोड:** सालिग राम भोला नाथ, जय प्रकाश नारायण वेद प्रकाश. ☐ **गोरखपुर: जलकल भवन:** श्री गणेश इंटरप्राइसिस, मॉडर्न क्रोकरी म्यूजियम. ● **टाउन हाल:** विजय एजेंसी, किचन म्यूजियम. ● **रेती चौक:** फैन्सी बर्तन स्टोर्स, नारायण बर्तन स्टोर्स, स्टील वाला, सीता राम श्याम लाल, गणेशी लाल एण्ड संस, सिनेमा रोड. ● **माया बाजार:** अमर क्रोकरी सेन्टर. ● **गोरख नाथ रोड:** मोती स्टील हाउस. ☐ **गोंडा: उतरौली रोड:** पारस स्टील इम्पोरियम. ☐ **हरिद्वार: मोती बाजार:** ओम प्रकाश चेला राम. ☐ **हलद्वानी:** सरदार क्रोकरी हाउस, बरेली रोड. प्रेम सिंह बर्तन वाला, बर्तन बाजार. ☐ **हापुड़: रेलवे रोड:** क्रोकरी सेन्टर. ☐ **हरदोई: रेलवे गंज:** श्याम लाल एण्ड संस, काशी राम बनवारी लाल. ☐ **झाँसी: सर्राफा बाजार:** काशी राम मैथिली शरण, संतोष पात्र गृह, बॉम्बे स्टील इम्पोरियम, लक्ष्मी स्टील सेन्टर, सिपरी. ☐ **जौनपुर: हर लाल का रोड:** ग्लास स्टोर्स. ● **औलंब गंज:** भारत ग्लास स्टोर्स. ☐ **कानपुर: हटिया:** गोपी लाल गुप्ता, स्टील हाउस. ● **मेस्टन रोड:** एस.एम. रशीद एण्ड संस, मोहम्मद हनीफ मोहम्मद अनीस, एशिया लाइट हाउस, नफीस क्रोकरी हाउस, जौहरी क्रोकरी हाउस, कुमार फैन्सी स्टोर्स, नवीन मार्केट. ● **हुला गंज:** रस्तोगी स्टील सेन्टर, कृष्ण कुमार उमेश चन्द, भुसा टोली, भसीन बर्तन भण्डार, गुमटी नं० 5. ☐ **लखनऊ: नजीराबाद:** कन्हैया लाल प्राग दास. ● **अमीनाबाद:** इन्द्र चन्द जैन, बांके लाल राम सरन, संसार एजेंसी. ● **याहया गंज:** कन्हैया लाल प्राग दास, अजीत प्रसाद अरविंद कुमार. ☐ **लखीमपुर खीरी:** अंबर लाल राधे श्याम, मेन बाजार. ☐ **मेरठ: सदर बाजार:** कृष्णा क्रोकरीज, सुरेश चन्द नरेश चन्द, सोना इलैक्ट्रिक एजेंसी, शकुन बर्तन भण्डार, बेगम पुल. ☐ **मुजफ्फर नगर:** मित्तल इंटरप्राइसिस, भगत सिंह रोड. ☐ **मुरादाबाद:** नवीन ग्लास एजेंसी, कटरा पुरानजट बाजार गंज. ☐ **नजीबाबाद:** श्याम लाल एण्ड संस, चौक. ☐ **नौतनवाँ:** लक्ष्मी बिसाता भण्डार. ☐ **रामपुर: मेस्टन गंज:** अग्रवाल क्रोकरी हाउस, **सफदरगंज:** सलैक्शन इम्पोरियम. ☐ **राय बरेली:** गुप्ता ट्रेडर्स, कैपर गंज, राज बंधु मिलन सिनेमा रोड, राधे श्याम घनश्याम दास गुप्ता, मालखाना. ☐ **रुपईडिहा:** रामदूत स्टोर्स, श्री राम स्टोर्स. ☐ **सहारनपुर: नेहरु मार्केट:** निहाल चंद हरबंस लाल, कृपाल सिंह प्रीतम सिंह, जसवंत राय नरेन्द्र कुमार, सर्राफा बाजार, लक्ष्मी मार्केट. ☐ **शाहजहांपुर:** सहगल क्रोकरीज, सदर बाजार, सहगल गिफ्ट सेन्टर, गोविंद गंज. ☐ **शामली:** सुगन चंद सोहन लाल, बड़ा बाजार. ☐ **सुल्तानपुर:** एस.आर. स्टील इम्पोरियम, शाह गंज, दसरथ लाल एण्ड संस, चौक. ☐ **वाराणासी: बौस फाटक:** गिरधर दास एण्ड संस, स्टेनलैस स्टील सेन्टर, मित्तल ट्रेडर्स. ● **दाल मंडी:** भारत ग्लास स्टोर्स, एस.एम. अयूब एण्ड संस, आइडियल ग्लास हाउस, महादेव प्रसाद हरी राम, सी.के.62/30 काशी पुरा, इब्राहिम रसूलजी, सराय हड़हा, मोहन लाल किशन चंद, विश्वनाथ गली. ☐ **कलकत्ता:** कृष्णा ट्रेडिंग कं०, पी-11, चितपुर स्पर. ☐ **भुवनेश्वर:** जी.पी. सर्विस, 28, बापूजी नगर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौसेना में नोंक-झोंक

● पिछले साल के आखिरी दिनों में तत्कालीन नौसेनाध्यक्ष एडमिरल जे.जी. नाडकर्णी के उत्तराधिकार के लिए वाइस एडमिरल एल. रामदास और

वाइस एडमिरल एस. जैन के बीच ठन जाने से नौसेना की काफी भद पिटी और इसकी गूंज देश की समुद्री सीमा से दूर भी सुनी गई.

प्रतिष्ठित प्रकाशन 'जेंस फाइटिंग शिप्स' के 1991-92 संस्करण की भूमिका में इस पर तीखी टिप्पणी है, "(भारतीय) नौसेना की छवि पर धब्बा लगाने वाली कुछ विशिष्ट घटनाओं में नौसेनाध्यक्ष पद के लिए चली अनुचित होड़ भी है."

इस होड़ में अंततः विजयी रहे एडमिरल रामदास ने नौसेना की गिरती साख को दर्शाने के लिए राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज का कोर्स पूरा कर रहे नौसेना अधिकारियों के सामने इस रिपोर्ट को पढ़कर सुनाया. गौरतलब बात यह भी कि उन्होंने रियर एडमिरल विष्णु भागवत की पोत कमांडर के पद पर नियुक्ति का भी समर्थन किया.

उत्तराधिकार के लिए चली जंग के दौर में भागवत ने नौसेना की चयन प्रक्रिया पर मुंबई हाईकोर्ट में चुनौती दी थी जिससे रामदास के पदारूढ़ होने की संभावना बढ़ गई थी.

लेकिन रक्षामंत्री शरद पवार ने हाल ही में अधिकारियों की खुलेआम तू-तू, मैं-मैं पर अपनी नाराजगी जाहिर की है. संभव है, रामदास अगले साल भी अपने अधिकारियों को 'जेंस' की पंक्तियां पढ़कर सुनाएंगे.

मंत्री और मकान

● जरा सोचिए तो जॉर्ज फर्नांडीस के यहां हाल ही में कौन आया? ये हैं विद्याचरण शुक्ल. वैसे, विद्याचरण अपने सत्ताच्युत, तेजतर्रार समाजवादी दोस्त का हाल-चाल पूछने उनके घर नहीं गए थे. हमेशा की तरह वे अपना मतलब साधने के मौके की तलाश में थे. इस बार उनका लक्ष्य है मकान पाना. वे कृष्णमेनन मार्ग पर उस बंगले की खुद एक झलक लेना चाहते थे जिसे जॉर्ज शायद खाली करने वाले हैं.

लेकिन जॉर्ज का घर उन्हें ज्यादा नहीं भाया. विद्याचरण को शायद 1 विलिंगटन क्रिसेंट ही ज्यादा रास आए लेकिन फिलहाल इस पर पूर्व उप-प्रधानमंत्री देवीलाल का कब्जा है. लगता है, मकान तलाशन केंद्रीय मंत्रिमंडल

सभी कार्टून: अजीत नैनन

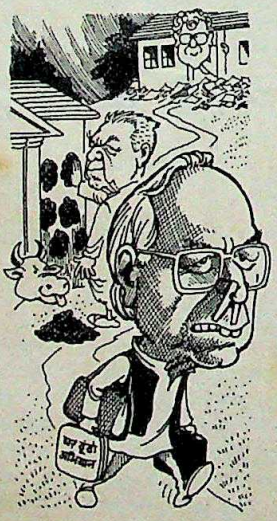

में जगह पाने से ज्यादा दुस्साध्य काम है:

परिवार सुरक्षा दस्ता

● अतिशय सुरक्षा वाले अतिविशिष्ट लोगों की सूची दिनोदिन बढ़ती जा रही है. इस सूची में सबसे ताजा नाम पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर का जुड़ गया

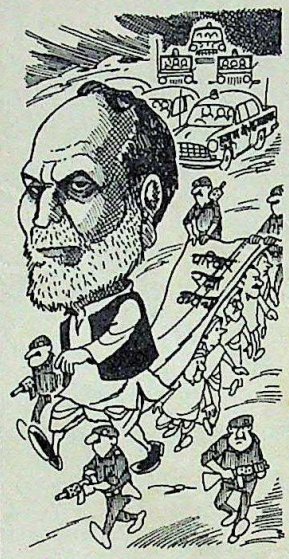

है. प्रधानमंत्री बनने से पहले तक वे देश भर में बेफिक्र घूमा करते और उनके साऊथ एवेन्यू के निवास पर लोग बेधड़क चले जाया करते थे. इसके विपरीत अब एक उपायुक्त उनके सुरक्षा प्रबंधों में समन्वय करेगा.

पर गृह मंत्रालय के निर्देश पर चंद्रशेखर के परिवार के सदस्यों को सुरक्षा मुहैया कराना पुलिस को महंगा पड़ रहा है. राष्ट्रपति भवन के नजदीक उनके निवास में लंबी-चौड़ी फौज ही रहती है. यहां उनके अपने परिवार के अलावा उनके भाई कृपाशंकर तथा उनके बच्चे भी रहते है.

दिल्ली पुलिस के एक अधिकारी ने चुटकी ली, "अगर अतिविशिष्ट लोगों के सभी परिवार-जनों को भी विशेष सुरक्षा दस्ते (एसपीजी) की ऐसी ही सुरक्षा दी जाती रहेगी तो इसका नाम बदलकर एफपीजी (परिवार सुरक्षा दस्ता) कर देना होगा."

बड़बोले कूटनयिक

● लंदन में भारतीय उच्चायुक्त लक्ष्मीमल्ल सिंघवी शायद निरभिमानी रहने में विश्वास नहीं करते. हाल ही में विदेश मंत्रालय के एक भोज में वे पत्रकारों को 80 मिनट तक अपने चार माह के कुटनयिक कार्यकाल की उपलब्धियां ही बताते रहे.

उनके आत्मालाप का सारांश यह था कि उन्होंने अपने व्यक्तिगत असर से प्रधानमंत्री जॉन मेजर समेत सभी ब्रिटिश राजनैतिक हस्तियों पर ऐसा जादू चलाया कि उनका पाकिस्तान समर्थक रुख नरम पड़ गया; कि व्यक्तिगत संपर्कों और पत्र-व्यवहार से उन्होंने ब्रिटिश प्रेस का भारत विरोधी रुख बदल दिया; कि कश्मीर पर एमनेस्टी इंटरनेशनल की रिपोर्ट का खंडन

करके उसे परेशानी में डाल दिया.

संयोग से सिंघवी लंबे समय से इस मनावाधिकार संगठन से जुड़े रहे हैं लेकिन अब विपरीत खेमे में आने पर ही उसकी संदिग्ध प्रक्रिया का उन्हें एहसास हुआ. इसके बाद उन्होंने घोषणा की कि सफल कूटनीति वही है जिसमें कूटनीति कम-से-कम की जाए और ईंट का ज़्वाब पत्थर से दिया जाए. लेकिन ऐसा जवाब दूसरों को देना चाहिए या अपनों को?

...और एक चुटकी

(सुनी-सुनाई)

इंका सरकार की महत्वपूर्ण नई छंटनी नीति का सबसे ताजा सबूत क्या है?

श्रममंत्री वी. राममूर्ति का इस्तीफा मंजूर करना...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे सारे डाई एक तरफ,

गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई दूसरी तरफ...

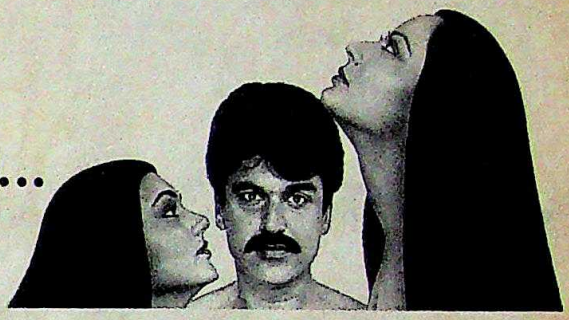

फिर भी, गोदरेज हेयर डाई इस्तेमाल करने वाले ज़्यादा ही होंगे!

इन ३ ख़ास कारणों से:

१ गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई बालों को क़ुदरती रंग और छवि देता है. इसमें कन्डीशनर भी है जो बालों को नर्म-मुलायम बनाए रखता है. **बाल इतने स्वाभाविक काले हो जाते हैं कि कोई जान ही न सके, जब तक आप खुद न बताएँ.**

२ गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई इस्तेमाल में आसान और सुविधाजनक है जबकि अन्य हेयर डाई में यह विशेषता नहीं.

जी हां, आसान इतना बालों में शैम्पू करने जितना.

३ आप गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई की क्वालिटी पर भरोसा कर सकते हैं. क्योंकि यह खास तौर से आपके बालों के लिए बनाया गया है. **क्वॉलिटी जिसपर आप भरोसा करें.**

यही गोदरेज का वादा है.

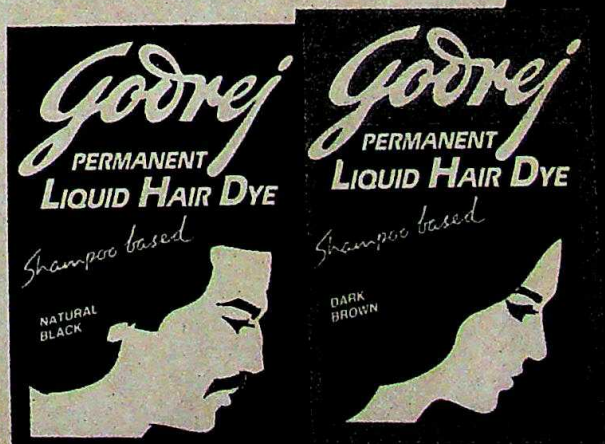

Godrej शैम्पू-आधारित हेयर डाई

दो रंगों में उपलब्ध: क़ुदरती काला और गहरा भूरा.

CC-0. In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भैंस की कृपा

■ मतदाता ने वोट पर ठप्पा लगाकर अपना फैसला तो सुना दिया. लेकिन पार्टियों के दफ्तरों में चुनाव की जीत और हार का लेखा-जोखा अभी भी जारी है. उत्तर प्रदेश और बिहार में कांग्रेस की हार के कारणों की जांच के लिए बनी कमेटी को एक अजीब शिकायत मिली.

कमेटी को एक इंका विधायक की ओर से मिली शिकायत में कहा गया है कि देवरिया जिले की एक विधानसभा सीट पर टिकट बांटते समय प्रदेश के एक वरिष्ठ पार्टी नेता ने रिश्वत ली है. इस शिकायत के अनुसार वहां से एक अच्छे इंका नेता को महज

सभी कार्टून: जयंती

इस वजह से पार्टी टिकट नहीं मिल पाया क्योंकि उनके मुकाबले में पार्टी टिकट के एक अन्य दावेदार ने उक्त नेता को रिश्वत के तौर पर एक भैंस उपहार में दे दी और टिकट पा लिया.

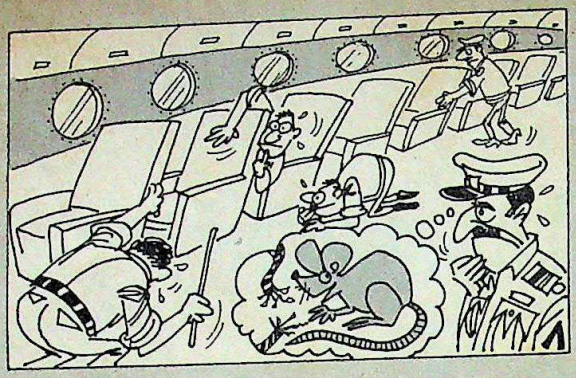

'शेर' चूहा

■ कहा जाता है कि अपने बिल में चूहा भी शेर हो जाता है. लेकिन यह किस्सा एक ऐसे चूहे का है जिसने बिल से दूर खड़े एक पूरे हवाई जहाज पर कब्जा जमा लिया. पिछले पखवाड़े एअर इंडिया की एक एअरबस के पायलट, यात्रियों, सुरक्षा कर्मचारियों और इंजीनियरों को इस चूहे ने अच्छा नाच नचाया.

दुबई से लौटी एअरबस के यात्री दिल्ली जाने के लिए उतावले थे लेकिन विमान था कि अपना हैंगर छोड़कर बाहर आने का नाम ही नहीं ले रहा था. पता चला कि विमान में एक चूहा घुस आया है जिसे निकालने में हवाई अड्डे के सुरक्षा कर्मचारी और इंजीनियर व्यस्त हैं. चूहे को ढूंढ़ निकालने या उसे बाहर निकलने के लिए मजबूर करने की यह भागदौड़ पांच घंटे तक चलती रही लेकिन चूहे मियां किसी कोने में अपनी मस्ती में डूबे हुए थे.

उधर लंबी प्रतीक्षा से बुरी तरह ऊब चुके विमान यात्रियों की परेशानी बढ़ती चली जा रही थी और इधर बेचारे कर्मचारियों की नींद हराम हो रही थी. उन्हें डर था कि कहीं मस्ती में आकर चूहा विमान में बिजली के तार कुतरकर उसकी उड़ान और सुरक्षा प्रणाली को ही नष्ट न कर दे. कर्मचारियों और यात्रियों को चूहे की विदाई के लिए कुल मिलाकर नौ घंटे इंतजार करना पड़ा. एअर इंडिया और इंडियन एअर लाइंस के विज्ञापन विशेषज्ञों को शायद यह सोचकर अपनी सफलता पर नाज हो रहा होगा कि एअर इंडिया के आरामदेह उड़ानों वाले दावे ने ही चूहे को आकर्षित किया होगा.

घर में चोर

■ किस्सा सीतामढ़ी का है जहां चोरी का सामान बरामद करने गए पुलिस दस्ते के एक सदस्य ने खुद ही माल पर हाथ साफ कर दिया.

पुलिस ने एक घर पर छापा मारा. तलाशी चल रही थी कि मालकिन ने चीख-पुकार मचाकर आसमान सिर पर उठा लिया. उसका आरोप था कि पुलिस दस्ते के एक सदस्य ने घड़ी चुरा ली है. भरी भीड़ के सामने लगाए गए इस आरोप से मुक्ति के लिए थानेदार के पास इसके अलावा कोई और चारा नहीं था कि अपने जवानों की तलाशी लें. उस का दिल उस समय धक से रह

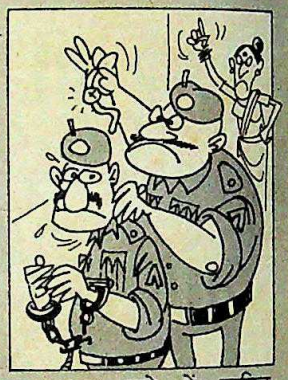

गया जब दस्ते में शामिल होमगार्ड के एक जवान की जेब से वह घड़ी बरामद हो गई. घर से चोर पकड़ने आई पुलिस अपने ही इस साथी को गिरफ्तार करके लौट गई.

अनचाहा विद्यार्थी

■ सरकार के साक्षरता अभियान का असर शहरों और गांवों में रहने वालों पर कितना पड़ा है यह तो कुछ साल बाद ही पता लगेगा लेकिन यह तय है कि इसका असर अब वन्य प्राणियों में

भी दिखने लगा है. पिछले पखवाड़े महाराष्ट्र के गांव पोचनार के स्कूल में एक सुबह विद्यार्थी यह देखकर हैरान हुए कि एक बेंच पर पहले से ही कोई सोया हुआ है. कुछ निकट जाने पर पता लगा कि यह नया 'विद्यार्थी' कोई अतिउत्साही बच्चा नहीं बल्कि एक शेर है. बच्चों के शोरशराबे से परेशान शेर ने जब गुर्राना शुरू किया तो पलक झपकते ही पूरा स्कूल खाली हो गया. उधर बच्चों की चीख-पुकार का यह असर हुआ कि घबराया हुआ शेर भी दुम दबाकर जंगल की ओर भाग गया. कमरे के टूटे दरवाजे की मरम्मत के बाद अब अध्यापकों को उम्मीद है कि उन्हें भविष्य में किसी अनचाहे 'विद्यार्थी' का सामना नहीं करना पड़ेगा.

खुदाई खिदमतगार

■ हिंदुस्तानी लोकतंत्र का एक रचनात्मक पहलू यह है कि अपनी बात कहने के लिए लोग कोई न कोई नायाब तरीका खोज निकालते हैं. अब कर्नाटक में बेलूर के विष्णु समुद्र मार्ग के आसपास रहने वाले लोगों के इस कारनामे को ही लीजिए.

इस इलाके के लोग लंबे समय से इस बात से परेशान थे कि सड़क की हालत एकदम खस्ता है. इस बारे में वे स्थानीय प्रशासन को कई बार शिकायत कर चुके थे. इस बार मानसून की बरसात ने रही सही कसर भी पूरी कर दी. शिकायतों की अनदेखी से तंग आए नागरिकों ने आखिर इस समस्या से अपने ही ढंग से निबटने का फैसला कर लिया. उन्होंने पानी और कीचड़ से सराबोर सड़क पर हल चलाया, क्यारियां बनाईं और धान की बुआई कर दी. नतीजतन न सिर्फ सड़क पूरी तरह बंद हो गई बल्कि शहर में प्रशासन की सुस्ती और लापरवाही की खिल्ली भी उड़ने लगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

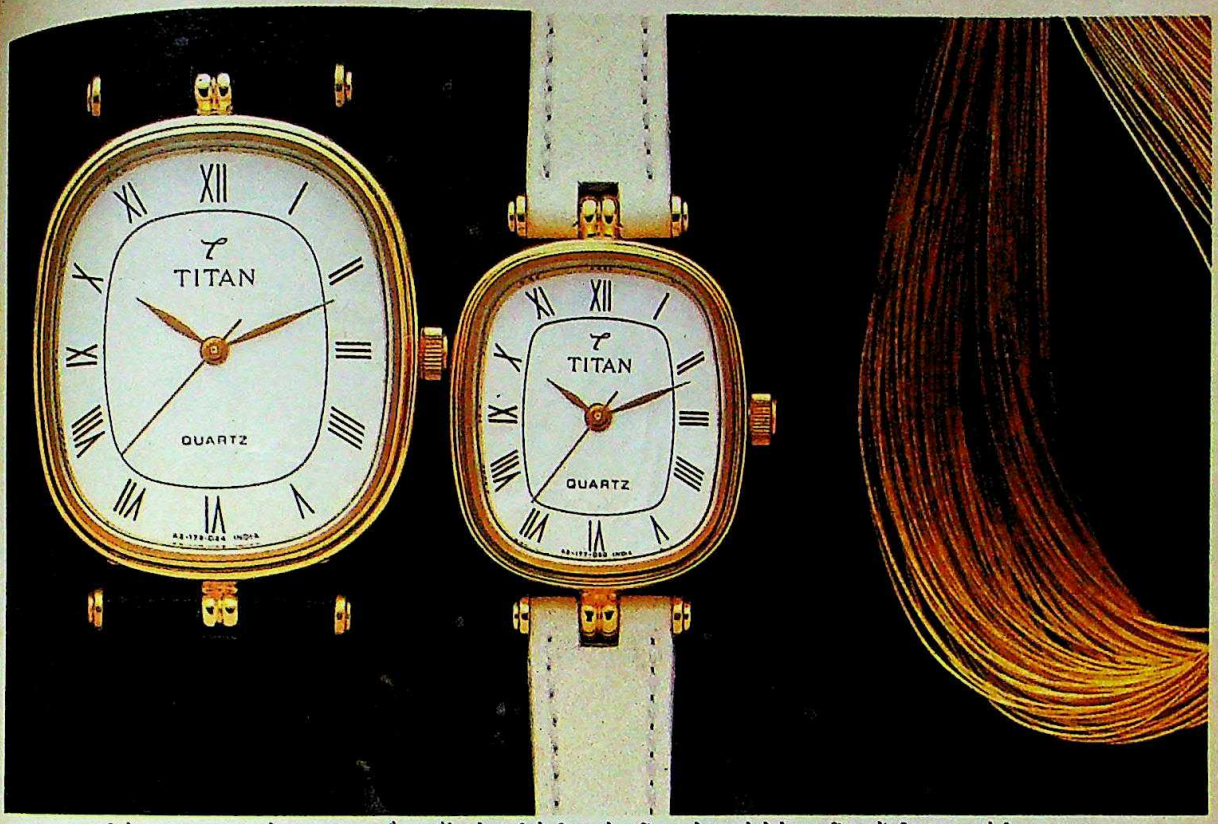

घड़ियों का अलग अन्दाज़. रोमन नम्बर, १८ और २३ कैरेट गोल्ड की दोहरी परत से सजीं. शाम के पहनावे से मेल खातीं. पुरुषों की Rs.938* लेडीज़ Rs.920*

टाइटन की क्लासीक. बारीक पसन्द की पहचान.

हीरे और मोती का फ़र्क तो सबको नज़र आता है. पर हीरों में कोहिनूर की पहचान के लिए चाहिए नज़र की बारीकी.

वो नज़र जो स्वयं टिक जाती है टाइटन की क्लासीक पर. घड़ियों का एक ख़ज़ाना जिसमें १८ और २३ कैरेट गोल्ड प्लेटिंग की दोहरी परत के रूप को उभारता है शानदार लैदर स्ट्रैप. और आपको मिलती हैं शानदार घड़ियाँ जिनमें झलकता है पुराना राजसी अन्दाज़ या आधुनिक शान-शौकत.

टाइटन की क्लासीक एक पसन्द है ४०० से ज़्यादा अन्तर्राष्ट्रीय क्वॉर्ट्ज़ घड़ियों के खज़ाने से. हर घड़ी के साथ आपको मिलेगा टाटा के नाम का भरोसा और २ साल की गारण्टी.

टाइटन की क्लासीक. फ़र्क शान का. बारीक पहचान का.

Classique

Rs.944* Rs.944* Rs.908* Rs.835* Rs.835*

TITAN
QUARTZ

The Changing Face Of Time

Ogilvy & Mather 3273 HIN

* दिल्ली में लागू सभी कर इस क़ीमत में शामिल हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र.

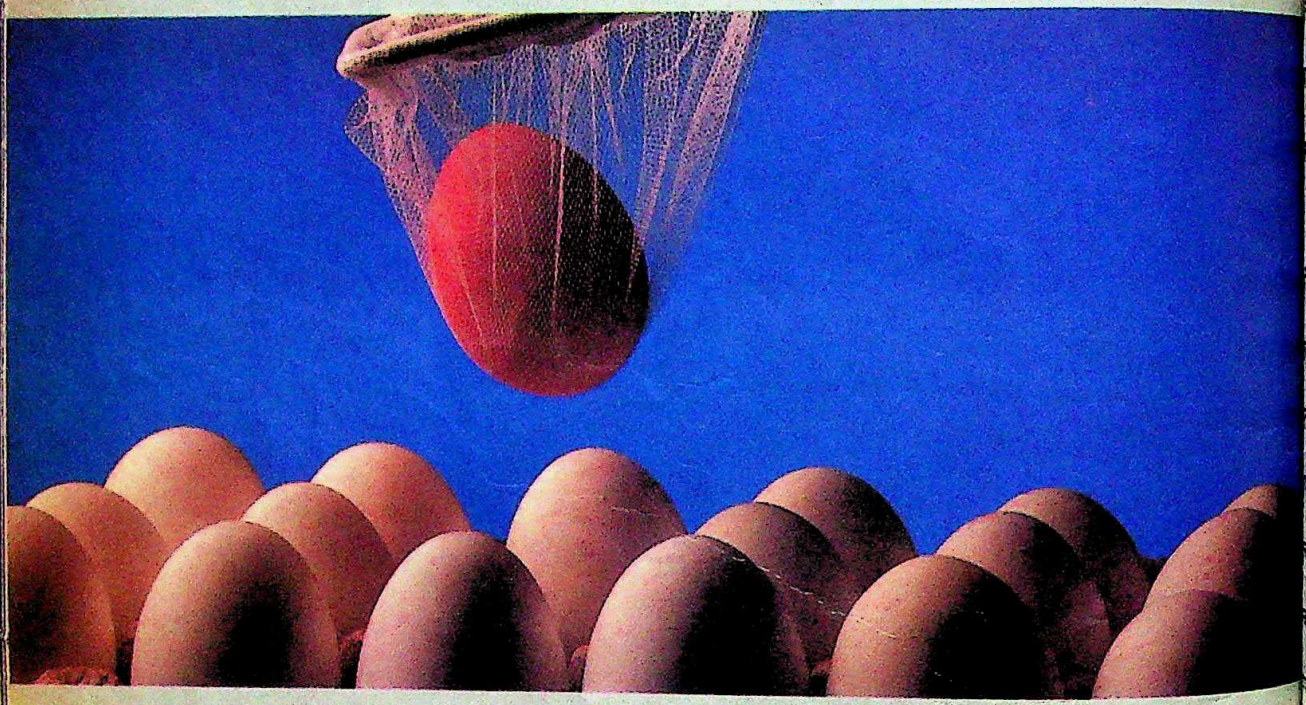

पूर्ण सुरक्षा कैसे प्राप्त करें?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीमा। हर कोई मानता है कि यह ज़रूरी है। फिर हममें से अधिकतर को परेशानी उठानी पड़ती है। क्यों? आइए इस पर विचार करें बिल्कुल शुरू से।

पॉलिसी की ज़रूरत क्यों है?

आपकी सारी सम्पत्ति आपके कठोर परिश्रम, मूल्य समय और गाढ़ी कमाई का परिणाम होती है। लिए वह आपको इतनी प्रिय होती है। तभी तो उसे हर प्रकार से सुरक्षित रखना चाहते हैं।

की सुरक्षा कैसे की जाए ?

सबसे आसान तरीका है उसका बीमा करा कर। बीमा सही प्रकार से कराने के लिए यह यक है कि आप सम्पत्ति को उत्पन्न होने वाले को सही प्रकार से जान लें। और इसके लिए से ओरिएण्टल प्रतिनिधि के साथ विस्तार से -विमर्श करना होगा, ताकि आप दोनों उन्हें तरह समझ सकें। बीमा तभी कराएं जब हर वित खतरे को शामिल कर लिया गया हो।

जिन्हें शामिल नहीं किया गया है?

यदि किन्हीं सम्भावित खतरों को शामिल नहीं गया है तो कृपया इस बारे में भी अपने एण्टल प्रतिनिधि से विचार-विमर्श कर लें। वह आपको सलाह देगा कि अतिरिक्त प्रीमियम पर किस-किस को शामिल किया जा सकता है।

कम मूल्य का बीमा कराने से क्या नुकसान होता है?

आपको हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कहीं आपकी सम्पत्ति का कम मूल्य का बीमा तो नहीं किया जा रहा। पूर्ण सुरक्षा के लिए हो सकता है अतिरिक्त प्रीमियम देना पड़े, किन्तु जब बीमे की राशि का दावा करने का समय आता है तब आपके नुकसान की समुचित भरपाई हो जाती है।

याद रखने योग्य सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है?

सभी प्रीमियम समय से पहले ही जमा कराना याद रखें। यह वास्तव में वैधानिक रूप से भी आवश्यक है। ऐसा करने पर ही आपकी पॉलिसी वैध मानी जाएगी और आपको वांछित सुरक्षा मिल पाएगी।

यदि आपको कोई समस्या पेश आए तो हमारे 1,000 कार्यालयों में से किसी से भी बेहिचक सम्पर्क करें। इनमें से प्रत्येक कार्यालय आपकी सहायता के लिए 'हेल्प लाइन' (सहायता केन्द्र) के रूप में स्थापित किया गया है।

आइए देखभाल और सहयोग की भावना से और करीब आएं।

अपनी
आज
और
कल की
ज़रूरतें
समझकर।
अभी!

ओरिएण्टल इंश्योरेंस

ग्राहकों से सौजन्य –
ओरिएण्टल की विशिष्ट परम्परा

HELP Line
ग्राहक मार्गदर्शन कक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

F.S. Advertising/OIC/004/Hin

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस (इ)

सोनिया के नाम पर सियासत

—इंद्रजीत बधवार और जफर आगा

इंका सांसदों और राजनीतिकों के प्रतिनिधिमंडल अब नियमित रूप से सोनिया गांधी से मिलने जनपथ स्थित बंगला नंबर 10 में जाते रहते हैं. सोनिया के सचिव विंसेंट जॉर्ज या मुलाकात करवाने वाले पार्टी नेता उन्हें सख्त हिदायत देते हैं कि वे 'मैडम' से राजनीति पर बिलकुल बातचीत न करें. पर नंबर 10 में आजकल जो भी हो रहा है वह खालिस राजनीति ही है और सोनिया इस भंवर में फंस चुकी हैं. राजीव की विधवा को भले ही यह पसंद हो या नहीं पर वे शासक पार्टी के भीतरी सत्ता संघर्ष का केंद्रबिंदु बन चुकी हैं, जिसके चलते पार्टी के नेता प्रतिद्वंद्वी गठजोड़ों के जरिए अपना-अपना प्रभाव और नियंत्रण स्थापित करने में मसरूफ हैं. इस तरह की मुलाकातें सोची-समझी रणनीति का हिस्सा हैं. इनका मकसद सोनिया को लोगों की निगाहों में बनाए रखने के साथ-साथ उनके बारे में रहस्यमयता बढ़ाना; इन मुलाकातों में ले जाए गए पार्टीजनों की संख्या के हिसाब से अपने-अपने गुट की अहमियत का दावा जताना; पार्टीजनों को किसी गुट या नेता विशेष के पीछे कतारबंद करने के लिए भावनात्मक ब्लैकमेल करना; यह संकेत देकर कि सोनिया स्वामिभक्ति की सर्वोच्च पीठ नहीं तो विकल्प जरूर हैं, प्रधानमंत्री की कुर्सी को

राजीव को भारत रत्न अलंकरण समारोह में सोनिया

शरद सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...मगाए रखना तथा ...डम' पर सक्रिय राजनीति ...शामिल होने के लिए ...ाव बनाए रखना.

इस खेल में कई गुट ...मिल हैं. इनमें प्रमुख हैं: ...ास्थ्यमंत्री माखनलाल ...तेदार, पार्टी महासचिव ...राम नबी आजाद और ...ाध्यक्ष सीताराम केसरी ...ती 'चौकड़ी', आर. के. ...न और सतीश शर्मा ...रीके राजीव के वफादारों ...'अनाथ मंडली' जो पार्टी ...सरकार में किसी पद पर ...हीं है; एस. एस. ...हलूवालिया और रत्नाकर ...डेय जैसों का राज्यसभा में ...क्रिय 'भोंपू दस्ता.' अपने

सोनिया पर बढ़ता दबाव

22 मई	इंका कार्यसमिति उन्हें अध्यक्ष बनाती है	**उनका इनकार**
मध्य जून	नरसिंह राव-शरद पवार के बीच सत्ता संघर्ष में चौकड़ी उन्हें राव समर्थक बताती है	**खंडन कर देती हैं**
जुलाई के शुरू में	पार्टी उनके दर्शन के लिए सांसदों की टोलियां भेजती है	**राजनीति पर बात न करने को कहती हैं**
जुलाई के शुरू में	अमेठी से उनके दर्शन को टोलियां लाई जाती हैं	**उनसे चुपचाप मिल लेती हैं**
5 जुलाई	एक सादे समारोह में राजीव को मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया जाता है	**दूरदर्शन पर सोनिया दिखाई जाती हैं**
24 जुलाई	राजीव गांधी प्रतिष्ठान को 100 करोड़ रु. अनुदान दिया जाता है	**इस पेशकश को ठुकरा देती हैं**

20 अगस्त राजीव का जन्मदिन मनाने अमेठी जाने की योजना बना रहीं

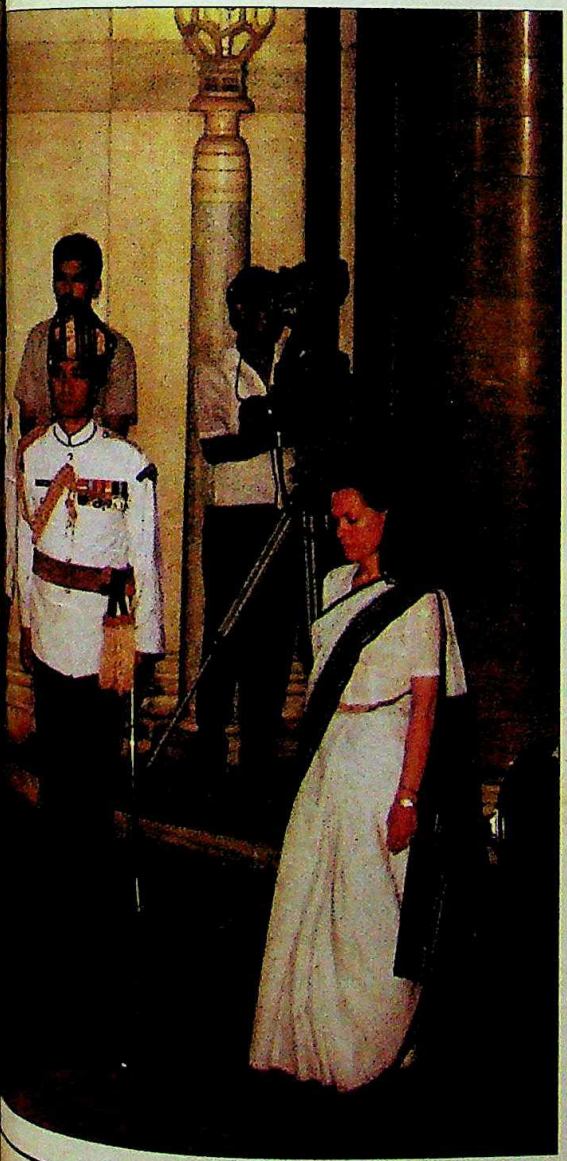

सियासी वजूद के लिए सोनिया की साड़ी का पल्लू थामकर ये पार्टी के एकजुट इकाई के रूप में काम करने को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहे हैं.

इन तथाकथित 'पारिवारिक वफादारों' पर राजनीति में शामिल होने की सोनिया की अनिच्छा का कोई असर नहीं पड़ा है. वे पी.वी. नरसिंह राव के स्वतंत्र कामकाज से नाखुश हैं और प्रधानमंत्री कार्यालय तथा दूसरे सरकारी पदों की नियुक्तियों में अपना असर इस्तेमाल करने की ताक में रहते हैं. जूनियर मंत्रियों की शिकायत है कि टाइपिस्ट तक की नियुक्ति के लिए उन्हें 'नंबर 10 बंगले के सहायक' की ओर से फोन आते हैं.

महल की राजनीति में सतीश शर्मा गुपचुप, पर असरदार भूमिका निभाते आ रहे हैं. उनका अपना जनाधार भले ही न हो पर वे इस बात के सबसे अच्छे उदाहरण हैं कि मामूली हैसियत वाला नेता भी पार्टी में कितना बड़ा रुतबा हासिल कर सकता है तथा सोनिया का नाम ले-लेकर सरकार के लिए मुश्किलें खड़ी कर सकता है. मसलन, राजीव गांधी फाउंडेशन को दिए जाने वाले 100 करोड़ रु. के अनुदान के मामले में उनकी भूमिका.

मध्य जून में गांधी परिवार के नजदीकी मित्रों ने सोनिया से कई मुलाकातों में राजीव की याद में फाउंडेशन कायम करने और उसके लिए पैसा जुटाने पर विचार किया. 21 जून को उप-राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा के घर पर हुई आखिरी बैठक में तय हुआ कि न्यासी के नाते सतीश शर्मा कोष इकट्ठा करने की अपील जारी करें. एक न्यासी ने बताया, "दान और अपीलों के जरिए पैसा इकट्ठा करने में सोनिया को कभी कोई एतराज न था, और इस तरीके को जारी रखना वे पसंद भी करतीं."

अंदरूनी जानकारों के मुताबिक शर्मा ने अपने पुराने दोस्त और वित्त राज्यमंत्री रामेश्वर ठाकुर को यह संदेश भेजकर कि सरकार फाउंडेशन के लिए कुछ नहीं कर रही है, इस मामले में गांधी परिवार की नाराजगी का संकेत दिया. सरकार के दहशत में आ जाने के लिए इतना ही काफी था. इसलिए राव और मनमोहन सिंह दोनों ने अपनी रजामंदी न होने के बावजूद बजट प्रस्ताव में फाउंडेशन के लिए 100 करोड़ रु. का प्रावधान रख दिया.

और जब विपक्ष ने निजी ट्रस्ट को सरकारी अनुदान देने पर संसद में हंगामा मचाया तो शर्मा और संसद में उनके साथियों ने ऐसा रुख अपनाया मानो वे भी इस मुद्दे पर सरकार की खिंचाई करना चाहते हों. शर्मा और धवन का संकेत समझकर पांडेय और अहलूवालिया ने 'राजीव गांधी का नाम बदनाम करने' के लिए राव सरकार की खुली आलोचना की.

अहलूवालिया ने 4 अगस्त को अपनी सरकार को और मुश्किल में डाला. उनका वह वैधानिक प्रस्ताव, जो पिछली सरकार के पारित एक विधेयक के खिलाफ था, ऊपरी सदन में पराजित हो गया. वे सदन में आए दिन सरकार के लिए ऐसी परेशानी खड़ी कर रहे हैं. लेकिन इंका में किसी ने भी अहलूवालिया को कारण बताओ नोटिस तक जारी करने की हिम्मत नहीं की क्योंकि वे धवन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोनिया का नाम भुनाने वाले

पार्टी के कुछ सत्तापिपासु गुट अपने राजनैतिक मतलब पूरे करने के लिए उनके नाम का इस्तेमाल कर रहे हैं

चौकड़ी

सरकारी पदों पर

फोतेदार

आजाद

केसरी

रणनीतिः सोनिया के नाम पर धाक जमाना.
मकसदः नरसिंह राव को नीचा दिखाना.

अनाथ मंडली

परदे के पीछे सक्रिय

सतीश शर्मा

आर.के. धवन

रणनीतिः खुद को सोनिया का विश्वस्त बताना.
मकसदः नेपथ्य से पार्टी पर नियंत्रण रखना.

भोंपू दस्ता

शोर मचाने में आगे

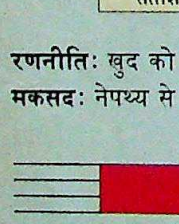
पांडेय

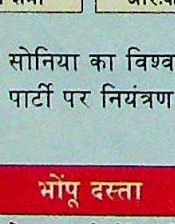
अहलूवालिया

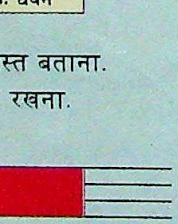
विश्वजीत सिंह

रणनीतिः अनाथ मंडली के निर्देश का पालन और सोनिया के राजनीति में प्रवेश के लिए बयानबाजी करना.
मकसदः राज्यसभा में अपना स्थान दोबारा पक्का करना.

खास बताए जाते हैं और उन्हें 'राज्यसभा के मिस्टर 10 जनपथ' के रूप में जाना जाता है.

अगले ही दिन राव और इंका के लिए एक नई परेशानी खड़ी हो गई. इंका सांसदों को एकाएक ही पार्टी के संसदीय कार्यालय से टेलीफोन पर संदेश मिलने लगे कि "सोनिया जी आज शाम सांसदों से भेंट के लिए राजी हो गई हैं. आप कृपया शाम 6.30 से पहले 10, जनपथ पहुंच जाएं." उसी दिन दोपहर को जब सांसद इस भेंट के लिए जुटने लगे तो उनसे कहा गया कि भेंट रद्द कर दी गई है. एक मंत्री ने रोष व्यक्त किया, "इसका उद्देश्य यह साबित करना था कि जिस समय विवादास्पद बजट पर पूरे जोर-शोर से बहस चल रही है, 10 जनपथ से आया कोई टेलीफोन भी सांसदों को सीधा सोनिया से मिलने के लिए दौड़ा सकता है." इस बार भी सोनिया ने ही स्थिति को बिगड़ने से बचाया. उन्हें जब सांसदों के साथ मुलाकात के कार्यक्रम के पीछे छिपी राजनैतिक तिकड़म का पता चला तो उन्होंने तत्काल ही कार्यक्रम रद्द कर राव सरकार की परेशानी टाल दी.

सोनिया का नाम भुनाने की कोशिश में लगे लोगों की रणनीति एक-सी है: पहले राव के लिए समस्याएं खड़ी कर उनको दोषी ठहराओ और फिर असंतुष्टों को अपने पक्ष में जुटा लो. लक्ष्य यही है कि राव उनकी मांगें मानने के लिए मजबूर हो जाएं या प्रतिद्वंद्वी सत्ता केंद्र के रूप में सोनिया का सामना करने के लिए तैयार रहें. मसलन, कावेरी विवाद में धवन और फोतेदार ने केंद्र को विवश कर दिया कि वह कर्नाटक के मुख्यमंत्री एस. बंगारप्पा पर अध्यादेश जारी करने के लिए दबाव डाले. लेकिन जब तमिलनाडु के पार्टी सांसदों ने प्रतिवाद किया तो चौकड़ी तुरंत ही सरकार की आलोचना में उनके साथ सुर मिलाने लगी.

अहलूवालिया सरीखे लोगों को ऐसे आचरण पर तनिक भी अफसोस नहीं. उलटे, वे चिंता जाहिर करते हैं, "अगर सोनिया जी हमारा नेतृत्व नहीं करतीं तो इस देश की 80 करोड़ जनता का क्या होगा?" अहलूवालिया देश की 80 करोड़ आबादी के लिए उतने चिंतित नहीं, जितने अपने राजनैतिक भविष्य के लिए हैं. राज्यसभा में उनका कार्यकाल अगले वर्ष मार्च में समाप्त हो जाएगा. गांधी परिवार का वरदहस्त मिले बिना राज्यसभा में फिर चुने जाना उनके लिए मुश्किल होगा. रत्नाकर पांडेय, विश्वजीत पृथ्वीजीत सिंह और जयंती नटराजन जैसे राज्यसभा सदस्य भी इन्हीं कारणों से यह सब कर रहे हैं

सोनिया को राजनीति में लाने के इच्छुक इंकाइयों का चौथा गुट बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे 'राज्यों से हारे' लोगों का है. उत्तर प्रदेश इंका अध्यक्ष महावीर प्रसाद कहते हैं, "मैं सोनिया जी से मिलकर उनसे अमेठी से चुनाव लड़ने और कांग्रेस की अध्यक्षता स्वीकार करने का आग्रह करूंगा."

इस सब से राव बेचैन हो गए हैं. लेकिन अभी तक वे काम करने की अपनी स्वतंत्र शैली को बदलने या अपने विरोधी गुटों के लोगों को मंत्री अथवा पार्टी पद देकर खुश करने के लिए राजी नहीं हैं. ऐसे में राज्यों और केंद्र के अनाथ हुए नेताओं का सोनिया पर दबाव बढ़ना स्वाभाविक ही है.

पर सोनिया के करीबी लोग इस बात की पुष्टि करते हैं कि उन्होंने अभी अपना इरादा नहीं बदला है. नाम प्रकाशित न करने की शर्त पर फाउंडेशन के एक सदस्य ने कहा, "आप समझते हैं कि उन्हें अपने परिवार के तीन सदस्यों की त्रासद मृत्यु का एहसास नहीं है?" पारिवारिक मित्र हालांकि इस विषय पर खुलकर नहीं बोलते लेकिन अमिताभ बच्चन, सुमन दुबे, मणिशंकर अय्यर और एम. जे. अकबर शायद यही चाहते हैं कि सोनिया भारतीय राजनीति के चक्रव्यूह से दूर ही रहें.

मगर अमेठी सोनिया की कमजोरी है. यही वह दुखती रग है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोगिंदर चावला

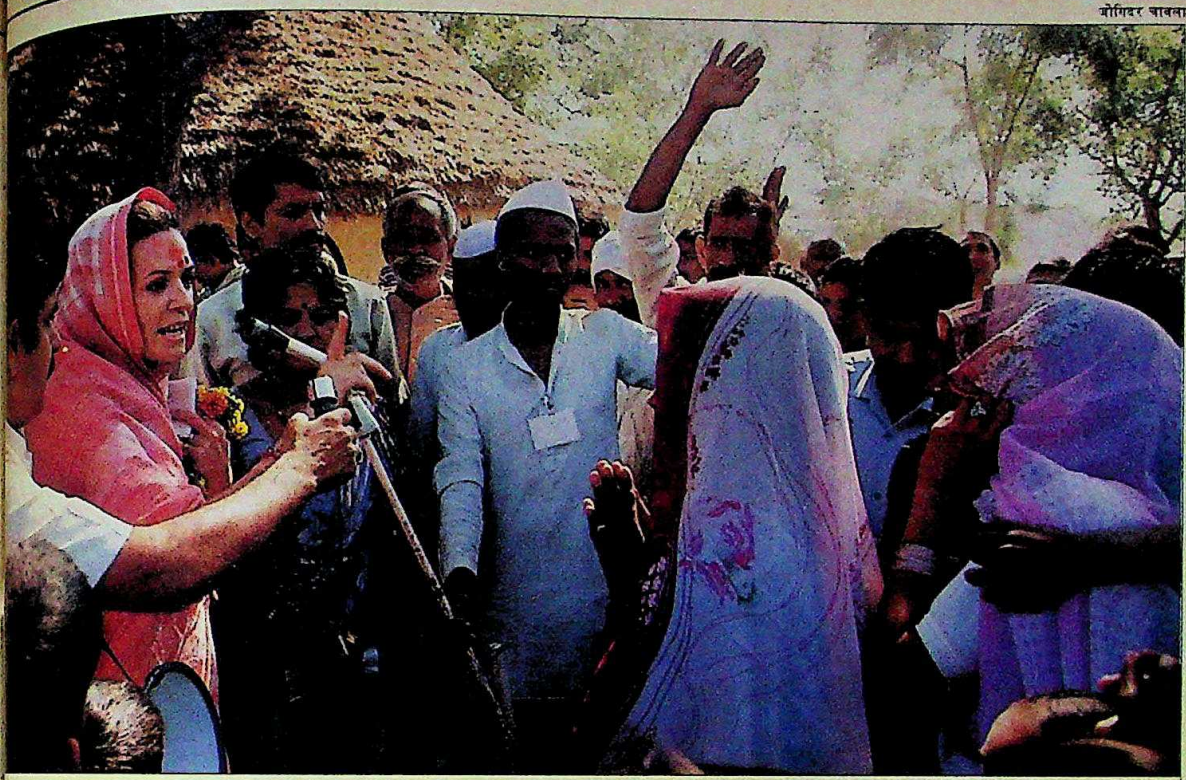

पिछले चुनाव प्रचार के दौरान अमेठी में सोनियाः अपनत्व

अमेठी

सोनिया बिना सब सून

अमेठी की लड़ाई शुरू हो गई है. उपेक्षा सहने का आदी न होने वाला, यह प्रमुख चुनाव क्षेत्र अपनी शाही शान बनाए रखने की तैयारी में लगा है.

स्थानीय इंका नेता सोनिया गांधी को मनाने में एड़ी-चोटी का पसीना एक कर रहे हैं कि वे पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के दुलारे और स्नेहभाजन' लोगों पर कृपादृष्टि बनाए रखें. करीब 20 ऐसे प्रतिनिधिमंडल सोनिया से भेंट कर चुके हैं जिनमें हर छोटा-बड़ा स्थानीय इंका नेता शामिल रहा है.

उनको नई दिल्ली की राह दिखाने वाला अदृश्य हाथ अमेठी में राजीव के चुनाव प्रबंधक रहे और पायलट से नेता बने विवादास्पद सतीश शर्मा का है. उनके निर्देशों को समन्वयक (को-आर्डिनेटर) अंजाम दे रहे हैं जो पहले इस संसदीय क्षेत्र के विधानसभाई हलकों का काम संभालते थे.

नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में सतीश शर्मा द्वारा किराए पर लिए गए अस्थायी कार्यालय से छह समन्वयक सोनिया लाओ अभियान' की सारी व्यवस्था देख रहे हैं. मसलन, सोनिया से मिलने का समय लेना और अमेठी से किराए की बसों में भरकर लाए जाने वालों के ठहरने वगैरह का इंतजाम करना उनका काम है. राजीव के लिए नारे गढ़ने वाले जगदीश पीयूष 2 बुलाई से अमेठी में बैठे हैं, जिन्हें शर्मा का ही आदमी माना जाता है. उन्हें निर्देश है कि सभी स्थानीय नेताओं को सोनिया दर्शन के लिए दिल्ली भेजने का प्रबंध करें. इसके दूसरे महत्वपूर्ण पात्र राज्यसभा सदस्य बाबा मिश्र और रुद्रप्रताप सिंह हैं.

राजधानी की यात्रा और वापसी के लिए बसें 6,000 रु. में किराए पर ली जाती हैं. स्थानीय नेता ही किराया अदा करते हैं. लेकिन इसमें कोई परमार्थ की भावना नहीं. एक नेता कहते भी हैं, "बात सतीश शर्मा की ही नहीं, अगर सोनिया जी अमेठी से नहीं लड़तीं तो हम सभी अनाथ हो जाएंगे."

अमेठी के ब्लॉक प्रमुख राममूर्ति शुक्ल कहते हैं, "हमने सतीश शर्मा को यकीन दिलाया है कि सोनिया सिर्फ पर्चा भर दें और चुनाव नतीजे का इंतजार करें. बाकी व्यवस्था हम कर लेंगे." एक के बाद एक प्रस्ताव पारित हो रहे हैं जिनमें सोनिया से अमेठी से चुनाव लड़ने का अनुरोध है. इंका विधायक दल के नेता प्रमोद तिवारी कहते भी हैं, "किसी और के अमेठी से लड़ने का सवाल ही नहीं उठता."

इन सब के लिए यह अस्तित्व का सवाल है. भगवा लहर और राजीव की मृत्यु से इंका में उत्तर प्रदेश का स्थान नगण्य-सा हो गया है. शायद यही वजह है कि राज्य के सभी केंद्रीय मंत्री—बलराम सिंह यादव, रामलाल राही और सलमान खुर्शीद—सोनिया से राजनीति में पांव धरने का अनुरोध कर रहे हैं.

नेताओं को पूरा यकीन है कि वे अपनी जिद छोड़ देंगी. मुसाफिरखाना के पुराने नेता आनंद प्रकाश मिश्र पूछते हैं, "अगर अमेठी का हर बच्चा, स्त्री, पुरुष अपने घर से निकलकर उनसे अनुनय-विनय करने लगेगा तो वे कैसे मना कर पाएंगी?"

वैसे, उनकी रणनीति तैयार है. पहला कदम सोनिया को क्षेत्र के दौरे पर लाना है. उनसे राजीव का जन्मदिन मनाने के लिए वहां आने को कहा जाएगा. उसके पहले उनसे अमेठी से करीब आठ प्रतिनिधिमंडल मिलेंगे. और फिर जब उपचुनाव की घोषणा हो तो प्रदेश इंका सोनिया को उम्मीदवार बनाने की पेशकश करेगी. अमेठी के छुटभैयों की इस योजना से निबटने के लिए सोनिया को अपूर्व इच्छा शक्ति दिखानी होगी.

—**दिलीप अवस्थी**, अमेठी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

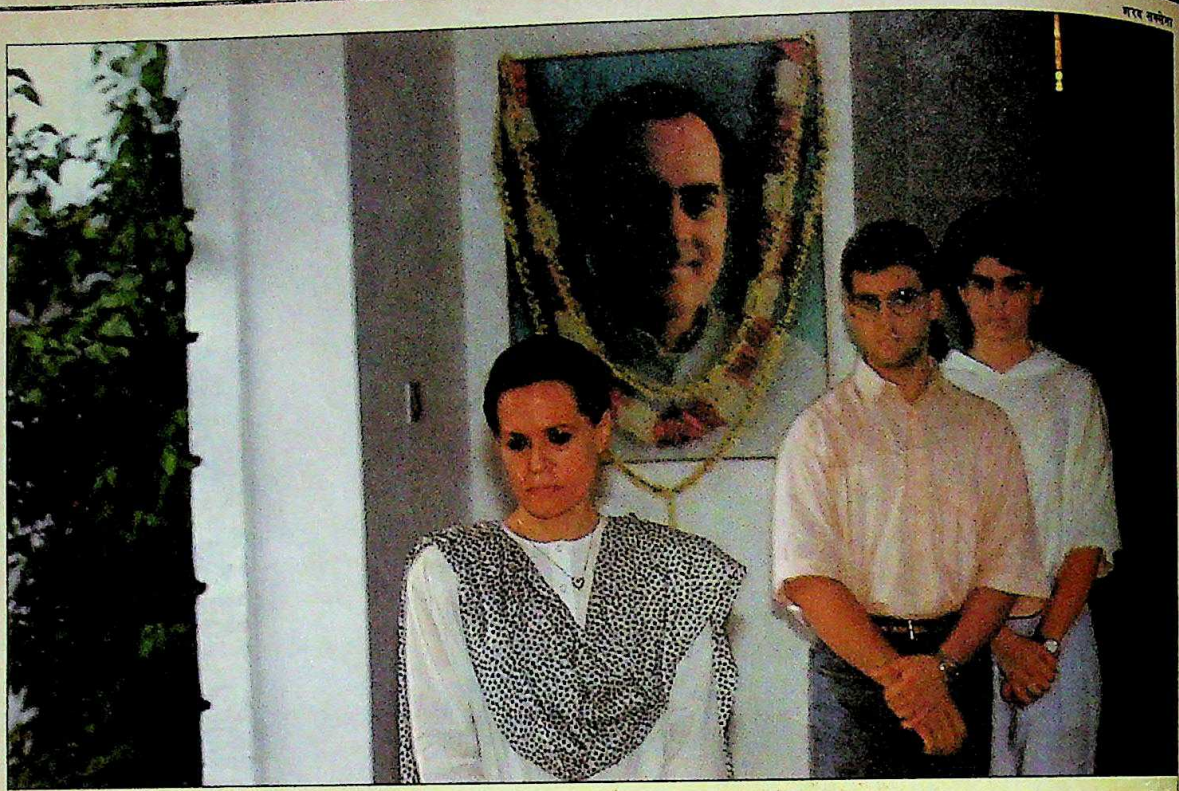

सोनिया गांधी

सोनिया, राहुल और प्रियंकाः उधेड़बुन में

सूनी आंखों के सपने

दस जनपथ का पिछला गेट खुलते ही एक कार सर्र से गुजरती चली जाती है. सतीश शर्मा की गाड़ी के अलावा यही एक है, जो बेरोक-टोक निकल सकती है. यह गाड़ी गांधी परिवार के प्रति निष्ठावान विंसेंट जॉर्ज की है, जो बकौल उन्हीं के "सोनिया जी की मदद" करने आए हैं.

जहां पहले राजीव का दफ्तर हुआ करता था, वहां अब सोनिया आगंतुकों से मिलती हैं. जॉर्ज तय करते हैं कि सोनिया से कौन पहले मिले, कौन बाद में. स्वागत कक्ष में जांच-पड़ताल के बाद आगंतुक सोनिया से मिल पाते हैं. वातावरण बहुत बोझिल है और बातचीत नितांत औपचारिक.

राजनीति की चर्चा कभी-कभार ही होती है. लेकिन इस दुर्गम किले में, जहां जीवन अब लौटने लगा है, राजनीति घर के चौथे पर अदृश्य सदस्य सरीखी है. यह एक ऐसा सवाल है, जिसका कर्तव्यपरायण बहू और वफादार पत्नी बनकर संतुष्ट रहने वाली यह महिला सामना करने से हिचक रही है.

पारिवारिक मित्रों का कहना है कि सोनिया के चिंतित रहने के ढेर कारण हैं. सबसे बड़ी चिंता तो बच्चों की है. परिवार की घनिष्ठ मित्र कांता डोगरा पूछती हैं, "लोग उन्हें शांति से बैठने क्यों नहीं देते, ताकि वे खुद को संभाल सकें?" एक और पारिवारिक मित्र का कहना है कि सोनिया बच्चों की शिक्षा को लेकर बहुत चिंतित हैं. अब तक का जीवन कड़े सुरक्षा घेरे में बिताने के कारण सोनिया जानती हैं कि अब सामान्य जीवन जीना उनके लिए मुश्किल होगा. और अंदरूनी सूत्रों के मुताबिक यही बड़ी वजह है जो सोनिया को लोगों के पास लौटने को मजबूर कर सकती है. उनके बच्चों के लिए राजनीति ही एकमात्र भविष्य दिखता है. इसके अलावा, वे पति के निर्वाचन क्षेत्र को इस तरह बेसहारा नहीं छोड़ना चाहतीं.

दोनों बच्चे धीरे-धीरे सामान्य जिंदगी जीने लगे हैं. प्रियंका जीसस ऐंड मेरी कॉलेज, जहां वे मनोविज्ञान पढ़ रही हैं, की कक्षाओं में जाने लगी हैं. और राहुल हॉवर्ड विश्वविद्यालय में अगले महीने शुरू होने वाले सत्र की तैयारियां कर रहे हैं.

व्यस्तता सोनिया के लिए मरहम का काम करती है. सुबह 10.30 बजे तक वे अध्ययन कक्ष में पहुंच जाती हैं, जहां पहले पत्रों को छांटती हैं. इनमें अब भी संवेदना पत्रों की भरमार होती है. कई समाजसेवी संस्थाओं के पत्र भी आते हैं, जिनमें राजीव गांधी फाउंडेशन से आर्थिक सहायता की मांग होती है. यह फाउंडेशन ही अब उनकी गतिविधियों का केंद्र बन गया है.

लेकिन राजीव के बिना जीवन तो सूना हो ही गया है. सोनिया की मां इटली लौट गई हैं. लेकिन उनकी बड़ी बहन नादिया इस परिवार को गहरे आघात से उबरने में मदद देने के लिए अब भी उनके पास रुकी हुई हैं. उनके अंतर्मन को जानने वाले उन्हें पहले के मुकाबले ज्यादा खामोश और अवसादग्रस्त पाते हैं. उनकी आंखों की चमक राजीव का उल्लेख आने पर ही लौटती है. मसलन, जब कोई नेता राजीव के साथ किए दौरों की याद ताजा करता है या इंडियन एअरलाइंस के दिनों के सहयोगी उनके साथ बिताए दिनों को दोहराते हैं. फिलहाल राजीव की चर्चा उनकी उदासी दूर करने का बड़ा जरिया है. एक मित्र कहती भी हैं, "अभी तक तो वे सिर्फ राजीव के बारे में ही पूछती रहती हैं." लेकिन जल्द ही सोनिया को दूसरा फैसला भी करना पड़ेगा.

—हरिंदर बवेजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का फायदा राजीव के वफादार उठाना चाह रहे हैं. एक हितैषी के अनुसार राजनीति से दूर रहने के बारे में अभी तक सोनिया का कोई बयान न आने का एकमात्र कारण यह है कि "वे अमेठी से सांसद बनें या नहीं, यह तय नहीं कर पाई हैं."

सोनिया के समर्थकों का कहना है कि यदि वे अमेठी से चुनाव लड़ती भी हैं तो पार्टी के अंदरूनी मामलों में कोई खास दिलचस्पी नहीं लेंगी, लेकिन सचाई यह है कि एक बार राजनीति के मैदान में कूद जाने पर वे राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में आ जाएंगी और विपक्षी नेता उन पर चारों तरफ से हमला करने लगेंगे. "कांग्रेस (आई)—इ से इटली" और "रोम राज" जैसे मजाक

सोनिया के विश्वस्त

भीतरी टोली

अमिताभ बच्चन

सुमन दुबे

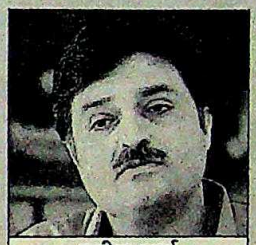

सतीश शर्मा

विंसेंट जॉर्ज

अमिताभ और सुमन दुबे उनसे राजनीति से दूर रहने को कह रहे हैं. बाकी उनके राजनीति में प्रवेश के लिए नेपथ्य से दबाव डलवा रहे हैं.

बाहरी टोली

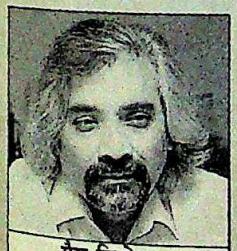

सैम पित्रोदा

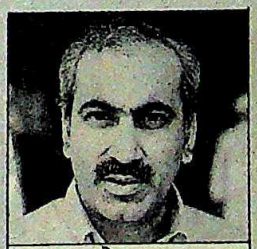

एम.जे. अकबर

पी. चिदंबरम

मणिशंकर अय्यर

राजीव गांधी फाउंडेशन की गतिविधियों के बहाने सोनिया तक पहुंच

चल पड़ेंगे. बोफोर्स, स्नैम प्रोगेत्ती और क्वात्रोच्चि जैसे मुद्दों को फिर उठाया जाएगा. और भाजपा सोनिया को विदेशी बताकर विरोधी वोटों को अपनी तरफ करने की कोशिश करेगी.

खुद इंका में ही सत्ता संघर्ष शुरू हो जाएगा. एक वरिष्ठ कांग्रेसी ने कहा, "यदि वे अब राजनीति में शामिल होती हैं तो उन्हें गुट का नेता ही माना जाएगा, उनके दिवंगत पति की तरह राष्ट्रवाद नेता नहीं."

लेकिन इससे भी कहीं बड़ा मुद्दा दांव पर है. कई स्वतंत्र विश्लेषकों का मानना है कि अगर कोई पार्टी सिर्फ वंशगत मजबूरियों या निहित स्वार्थों के कारण एक अयोग्य व्यक्ति को अपना नेता बना रही है तो इससे राजनैतिक व्यवस्था का भयानक दिवालियापन ही जाहिर होगा. भाकपा की राष्ट्रीय परिषद के सदस्य एम. फारूकी गुस्से में कहते हैं, "यदि कांग्रेस ऐसे व्यक्ति को पार्टी का नेता बनाना चाहती है जिसका राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है, तो उसे कौन रोक सकता है?" कांग्रेस पर नजर रखने वालों की भविष्यवाणी है कि एक बार सोनिया के राजनीति में कूदने पर परदे के पीछे सक्रिय लोग उन्हें पार्टी अध्यक्ष, शायद प्रधानमंत्री पद पर भी बैठाने के लिए जोड़-तोड़ शुरू कर देंगे.

भाजपा नेता केवलरतन मल्काणी कहते हैं, "यदि वे सोनिया को इंका अध्यक्ष बनाने की कोशिश करेंगे तो पार्टी टूट जाएगी. देश भी उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में मंजूर नहीं करेगा क्योंकि वे विदेशी मानी जाती हैं."

वरिष्ठ जनता दल नेता मधु दंडवते खेद जताते हैं, "अनुभवहीनता को काफी तरजीह दी जा रही है. यह दौर राजीव से शुरू हुआ, जो हवाई अड्डे से सीधे राजनीति में आ गए. सोनिया के राजनीति में कूदने से तो स्थिति और भी बदतर हो जाएगी."

लेकिन सत्ता के दलालों और प्रभाव बढ़ाने के लिए जोड़-तोड़ करने वालों के लिए, जो साजिश, तिकड़म, धूर्तता और सत्ता की भूख के सिवा कुछ नहीं जानते, इन तर्कों का कोई मतलब नहीं है. उनके लिए तो अल्पकालिक लाभ, भले ही विनाश की कीमत पर क्यों न हो, नशाखोरी की तरह हैं. लेकिन सोनिया के लिए यह पीड़ादायक दुविधा है. वे राजनीति में न रहते हुए भी राजनीति में हैं और उसी रास्ते पर बढ़ रही हैं जिससे उन्हें हमेशा नफरत रही और जिस पर उन्होंने पति को बढ़ते जाने से रोकने की असफल कोशिश की थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसद

सिर्फ जबानी जमा-खर्च

खाद सब्सिडी में कटौती और कुछ दूसरे मुद्दों पर विपक्ष आंदोलन को तत्पर लेकिन राव की अल्पमत सरकार गिराने की कोई इच्छा नहीं

—जफर आगा

पी. वी. नरसिंह राव की अल्पमत सरकार ने विश्वास मत प्रस्ताव का जिस इत्मीनान से सामना किया वह दिखावटी था. इसकी वजह यह थी कि पिछले पखवाड़े सरकार की चूलें हिलती लगीं और लोग समझ नहीं पाए कि सरकार किस दिशा में जा रही है.

संसद भवन आपाधापी का केंद्र बना रहा. मंत्रीगण कई-कई बार नजर आते रहे. प्रधानमंत्री की आवाजाही भी बढ़ गई और संसद में संवाददाता सम्मेलन भी अपेक्षाकृत अधिक होते नजर आए. चुनाव की रेलम-पेल से थकी-मांदी राजनैतिक पार्टियां शुरू के दो हफ्तों तक तो बगैर पतवार की नौका की तरह हिचकोले खाती रहीं. फिर उनके नेताओं को सरकार की खिंचाई करने के लिए दो मसले मिल गए. एक मसला राजीव गांधी फाउंडेशन को 100 करोड़ रु. का अनुदान देने का, दूसरा उर्वरकों को दी जाने वाली सब्सिडी में कटौती का था.

राजीव गांधी फाउंडेशन का मसला तो सोनिया गांधी द्वारा सरकारी अनुदान ठुकरा देने से असमय ही खत्म हो गया. लेकिन खाद सब्सिडी में कटौती का मसला गरमाता गया. इस मुद्दे पर वित्तमंत्री को कटघरे में खड़ा करने के लिए इंका सदस्य विपक्ष से बाजी मारते दिखे.

हालांकि पहला गोला जनता दल नेता जॉर्ज फर्नांडीस ने दागा. उन्होंने कहा कि वे खाद सब्सिडी में कटौती के विरोध में प्रस्ताव लाएंगे. यह पूछे जाने पर कि अगर सरकार कटौती प्रस्ताव में हार गई तो क्या वे सरकार को गिर जाने देंगे, उनका संक्षिप्त जवाब था, "सरकार अपनी रक्षा खुद करे." हालांकि माकपा ने खाद सब्सिडी के कटौती प्रस्ताव पर जोर न देने का संकेत दिया है लेकिन जनता दल को उम्मीद है कि वह अपनी सहयोगी पार्टी को इसके लिए मना लेगा. जनता दल के वरिष्ठ नेता मधु दंडवते के अनुसार, "पार्टी सब्सिडी में कटौती स्वीकार नहीं कर सकती." भाजपा ने भी कटौती का नोटिस दे रखा है जबकि दूसरी पार्टियों ने सरकार के वित्त विधेयक का ही विरोध करने की धमकी दी है.

अब सवाल यह है कि अगर सरकार का वित्त विधेयक पारित नहीं होता तो क्या राव मंत्रिमंडल को इस्तीफा देना पड़ेगा?

विपक्ष के वरिष्ठ नेता—जैसे लालकृष्ण आडवाणी, इंद्रजीत गुप्त, विश्वनाथ प्रताप सिंह और पी. उपेंद्र इस बात पर एकमत हैं कि सरकार अभी तो चलेगी ही. आडवाणी के शब्दों में, "सरकार को अभी कोई खतरा नहीं है." उपेंद्र और भी खुलासा करते हैं, "अभी चुनाव का सामना कौन कर सकता है." एक वरिष्ठ वामपंथी नेता ने भी कहा

कार्टून: अजीत नैनन

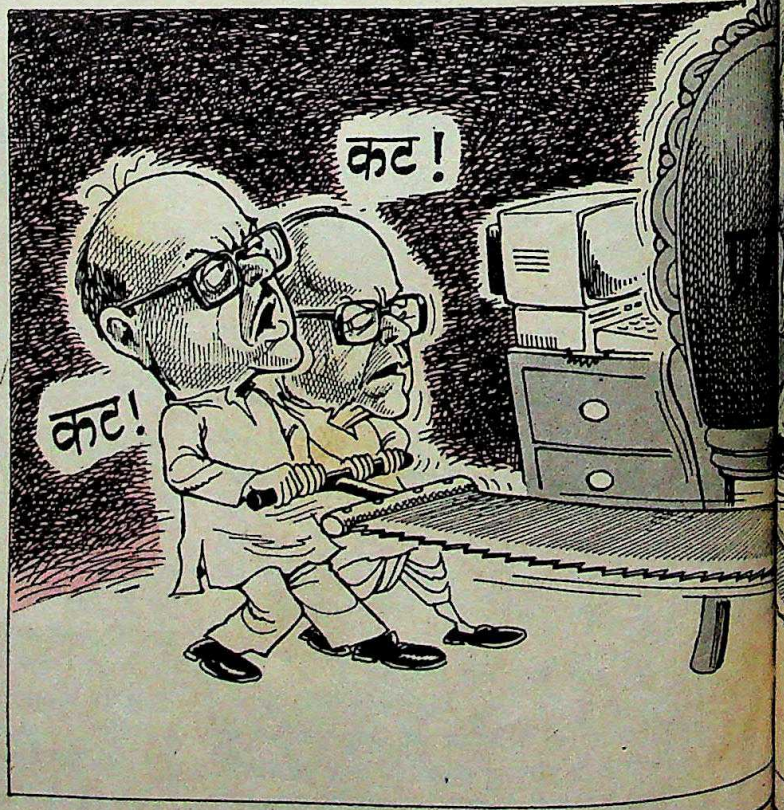

किसका कैसा रुख

- नई आर्थिक नीति पर जनता दल और भाजपा काफी हद तक सहमत.
- वी.पी. सिंह की इसी महीने सप्ताह भर का आंदोलन करने और खाद की मूल्यवृद्धि के खिलाफ वामपंथी दलों के साथ किसान रैली की योजना.
- भाजपा का किसान संगठन जल्दी ही रणनीति तैयार करने को तत्पर.
- "आयकर सीमा बढ़ाने में सरकारी असफलता" पर कटौती प्रस्ताव लाने की भाजपा की धमकी.
- राष्ट्रीय मोर्चा और भाजपा अवकाशप्राप्त सैनिकों के लिए समान रैंक-समान पेंशन योजना लागू न करने के लिए सरकार के विरुद्ध अलग-अलग कटौती प्रस्ताव लाने के इच्छुक.
- वी.पी. सिंह सरकारी क्षेत्रों में संभावित छंटनी का मसला उछालने को तैयार.
- सभी राजनैतिक दल सरकार नहीं गिराने पर एकमत.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि उनका रुख सरकार गिराने का कतई
ही होगा.
ऐसा भी नहीं है कि विपक्ष नई आर्थिक
ति में पूरी तरह क्षुब्ध है. उलटे भाजपा
र राष्ट्रीय मोर्चा दोनों ही सरकार से
हमत हैं. आडवाणी आर्थिक नीति की
ुख बातों से सहमत' हैं और उन्हें अपनी
र्थिक रणनीति के दोषपूर्ण होने की इंका
स्वीकारोक्ति से खुशी है.
वी.पी. सिंह भी लाइसेंस-कोटा राज की
ाप्ति चाहते हैं. उनका यह दृष्टिकोण
जाहिर है कि भारत को शेष विश्व के
कक्ष आकर प्रतिद्वंद्विता करके आगे
ना चाहिए.
वामपंथी दल नई नीतियों पर असंतोष
हिर करते हैं. माकपा नेता प्रकाश करात
हते हैं, "हम सरकार की नई औद्योगिक
ति के बिलकुल खिलाफ हैं." लेकिन
होंने यह संकेत भी दिया कि वामपंथी
ल सरकार को गिराए बिना संसद में
का विरोध करने के लिए 'जटिल
नीति' अपनाएंगे.
मगर खाद सब्सिडी में कटौती का मामला
और ही है. वी.पी. सिंह ऐसे नेता हैं जो
ों में प्रतिक्रिया पैदा करने वाले मसले को
ाने की संभावनाएं तुरंत भांप लेते हैं. खाद
ब्सिडी में कटौती के खिलाफ जनता दल,
हर है, उनकी ही पहल पर 15 अगस्त से
भर का आंदोलन करने जा रहा है. फिर
वामपंथी दलों के साथ मिलकर वे अगले महीने विशाल किसान रैली का आयोजन भी करने की सोच रहे हैं. भाजपा भी इस मामले में पीछे नहीं है और उसका किसान संगठन किसानों का क्षोभ व्यक्त करने की योजना जल्द ही बना रहा है.

फिलहाल, विपक्ष बजट प्रस्तावों पर कटौती की योजनाएं बनाते हुए ही संतुष्ट लग रहा है. भाजपा ने मध्यम वर्ग का दिल जीतने के लिए आयकर सीमा बढ़ाने में सरकारी असफलता पर कटौती का भी नोटिस दिया है. राष्ट्रीय मोर्चा और भाजपा—दोनों ही अवकाशप्राप्त सैनिकों के लिए समान रैंक-समान पेंशन की योजना पर अमल नहीं करने के लिए सरकार के विरुद्ध अलग-अलग कटौती प्रस्ताव लाने वाले हैं. वी.पी. सिंह भी नई औद्योगिक नीति के कारण सरकारी क्षेत्रों में कर्मचारियों की संभावित छंटनी में अपने लिए मुद्दा तलाश रहे हैं. उनके अनुसार रोजगार एक ऐसा मसला है जिस पर सरकार को 'भारतीय' दृष्टिकोण से काम लेना होगा. लग रहा है कि इस बार भी व्यापक आम सहमति को तात्कालिक फायदों के लिए दरकिनार किया जा रहा है. आर्थिक नीति और सरकार—दोनों को ही एक बार फिर वोट बैंकों के सामने सिर झुकाना पड़ सकता है. लेकिन सरकार के पर कतरे जाएंगे, इसमें संदेह ही है.

कटौती प्रस्ताव

दुधारी तलवार

कटौती प्रस्ताव एकदम से महत्वपूर्ण हो गए हैं. प्रति वर्ष वित्त विधेयक पर संसद में होने वाली बहसों के बाद विपक्ष की भूमिका समाप्तप्राय हो जाया करती थी. लेकिन कटौती प्रस्ताव अब एक ऐसे मारक हथियार के रूप में सामने आ गए हैं जिनसे सरकार को गिराए बिना ही धमकाया जा सकता है.

वरिष्ठ समाजवादी नेता मधु लिमये इसे "दिखावे की लड़ाई" बताते हैं. उनका कहना है कि जब तक विपक्ष एक मसले पर स्थिर होकर लोकसभा अध्यक्ष से यह नहीं कहता कि इसे तत्काल वापस लिया जाए या फिर जब तक विभिन्न विपक्षी दल अपने सांसदों को व्हिप जारी करके उनके पूरे समर्थन की व्यवस्था नहीं करते, इस सबका कोई मतलब नहीं.

वित्त विधेयक के दो हिस्से हुआ करते हैं. एक तो खर्च का अनुमान होता है जिस पर मतदान किया जा सकता है और इसे अनुदानों की मांगों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है. लोकसभा इसे स्वीकार अथवा अस्वीकार कर सकती है. इसमें कटौती की जा सकती है. मांगों में कटौती से संबंधित प्रस्ताव तीन प्रकार के हो सकते हैं. नीति में कटौती विषयक असहमति, आर्थिक कटौती और प्रतीकात्मक कटौती.

कटौती प्रस्ताव वैसे तो मांग पर बहस शुरू करने का एक माध्यम होता है पर विपक्ष इसका इस्तेमाल अप्रत्यक्ष रूप से मंत्रिमंडल में अविश्वास प्रस्ताव के लिए करता है. इसमें सबसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव नीति में कटौती से संबंधित है जिसके तहत "मांग की राशि को 1 रु. घटाने" का प्रावधान है.

लेकिन इस प्रस्ताव पर जब तक समूचा विपक्ष एकजुट नहीं होता, सरकार या उसके बजट का कुछ नहीं बिगड़ सकता.

मगर अभी कटौती प्रस्तावों से डरने का कोई कारण नहीं है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब ट्रस्टों के लिए ब्याज की बढ़ी हुयी दरें.

अधिक लाभ का सरलतम साधन

एच डी एफ़ सी

ट्रस्ट

जमा योजना

- आयकर एक्ट धारा ११(५) (ix) के अंदर मान्यताप्राप्त.
- बम्बई पब्लिक ट्रस्ट एक्ट धारा २(१२) (डी) के अंतर्गत 'पब्लिक सिक्योरिटी' घोषित.
- चैरिटी कमिश्नर से अनुमति की आवश्यकता नहीं.
- राजस्थान पब्लिक ट्रस्ट एक्ट के अंतर्गत पब्लिक ट्रस्टों द्वारा निवेश के लिए आम मंजूरी प्राप्त.
- मध्य प्रदेश पब्लिक ट्रस्ट एक्ट के अंतर्गत रजिस्ट्रार ऑफ़ पब्लिक ट्रस्ट्स, इंदौर, से पब्लिक ट्रस्टों द्वारा इस योजना में निवेश के लिए आम मंजूरी प्राप्त.
- ३६ महीने और उससे अधिक समय के लिए जमा राशि पर १५% वार्षिक ब्याज. तथा २५ से ३५ महीनों तक जमाराशि के लिए १४.५% वार्षिक ब्याज.
- कम से कम जमाराशि रु. २,०००/- और रु. १,०००/- के गुणकों में. अधिकतम राशि की कोई सीमा नहीं.
- संचयी ब्याज का विकल्प भी.
- फार्म १५ए जमा करने पर आय के स्रोत पर कर में छूट.
- एच.डी.एफ़.सी. के अधिकृत दलालों के लिए आकर्षक दलाली.
- देश भर में एच.डी.एफ़.सी. की २६ शाखाओं में राशि जमा कराने की सुविधा.
- अवधि पूरी होने पर ब्याज के शीघ्र भुगतान व पुनर्भुगतान की व्यवसथा.
- जमाराशि के चेक प्राप्त होने की तिथि से ही ब्याज प्रभावी.

अधिकतम जानकारी के लिए अपने निकटतम एच.डी.एफ़.सी कार्यालय में सम्पर्क करें.

१५%
ब्याज ३६ महीनों के लिए जमा राशि पर

एच·डी·एफ़·सी
हाउसिंग डिवेलपमेंट फाइनेंस कार्पोरेशन लिमिटेड

आपके साथ... मंज़िल तक.

रजि. कार्यालयः बम्बई

यह संक्षिप्त विज्ञापन कार्पोरेशन द्वारा १ अगस्त, १९९१ को प्रकाशित वैधानिक विज्ञापन का ही एक अंग है.

उत्तरी क्षेत्रः चंडीगढ़: दूसरी मंजिल, एस.सी.ओ. १११०, १११११, सेक्टर २२-B चंडीगढ़-१६० ०२२. फ़ोनः २७९३२, ४०६६४. **इन्दौरः** ९/१/१, एम.जो. रोड, फिल एंड फ्लाई पेट्रोल पंप के निकट, इन्दौर-४५२ ००१. फ़ोनः ७७८४, ७३७६ **जयपुरः** सी-९६, जगन पथ, सरदार पटेल मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-३०२ ००१. फ़ोनः ५२०६९१, ५२०५४३. **कानपुरः** भगवान निवास, १६/१९ डी, सिविल लाइन्स, (डी.एम. निवास के निकट) कानपुर-२०८ ००१. फ़ोनः २१५६८. **लखनऊः** पीलीभीत हाउस, दूसरी मंजिल, शाहनजफ़ रोड, लखनऊ-२२६ ००१. फ़ोनः २४७५०५, २३५०५५. **नयी दिल्लीः** एच.डी.एफ.सी. हाउस, बी-६/३ सफदरजंग एन्क्लेव, डी डी ए कमर्शियल कॉम्प्लेक्स, (डीयर पार्क के निकट). नयी दिल्ली-११० ०२९. फ़ोनः ६०३१४६/६०३१४७.

Mudra:B:HDFC:994:2416:HN:NZ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाद सब्सिडी

ये बढ़े तो वे अड़े

एक अहम मसले पर सरकार को दोस्तों-दुश्मनों ने मिलकर झुका दिया

—ज़फर आगा

पांच अगस्त को सावन की उस सुबह पानी केंद्रीय वित्तमंत्री मनमोहन सिंह के गले तक आ गया. उन्हें उम्मीद थी कि उनकी पार्टी खाद की कीमतें 40 फीसदी बढ़ाने के उनके फैसले का एकमत से समर्थन करेगी लेकिन कांग्रेस संसदीय दल की बैठक में उनके साथ अछूतों-सा व्यवहार किया गया.

उनकी यह ठोस दलील कि इससे 1,800 करोड़ रु. की बचत होगी, अनसुनी कर दी गई. राज्यसभा सांसद रत्नाकर पांडेय ने तो यहां तक कह दिया कि "ये तो राजनीति समझते ही नहीं, ये हमारे लिए क्या करेंगे. यह वही आदमी है, जिसने वी.पी. सिंह और चंद्रशेखर सरकारों की मदद की थी." वित्तमंत्री के लिए और बुरा यह हुआ कि प्रधानमंत्री भी इस मामले पर पार्टी की मांग के आगे झुकते लगे.

संसदीय पार्टी की बैठक खत्म होते ही मनमोहन सिंह तेजी से नरसिंह राव के दफ्तर गए. उन्होंने कागज पर कुछ लिखा और राव को थमा दिया. राव ने उन्हें देखा और आहत स्वर में पूछा, "आप मुझे अकेला छोड़ देंगे?" वित्तमंत्री फूट पड़े और थोड़ी देर बाद उन्होंने कागज का वह टुकड़ा, जो उनका इस्तीफा था, फाड़कर फेंक दिया.

अगले दिन निराश-से मनमोहन सिंह ने लोकसभा में घोषणा की कि सरकार ने खाद की कीमतों में की गई 40 फीसदी बढ़ोतरी 10 फीसदी घटाकर 30 फीसदी करने का फैसला किया है. उन्होंने छोटे और सीमांत किसानों को इस वृद्धि से पूरी तरह मुक्त रखने के राजनैतिक चालाकी भरे फैसले का ऐलान किया. इससे सरकारी खजाने पर 856 करोड़ रु. का बोझ पड़ा. लेकिन इससे भी खराब बात यह हुई कि दबावों के आगे राव सरकार की सिर नवाने की कमजोरी उजागर हो गई. यह भी कि पार्टी पर राव का नियंत्रण नाममात्र का ही है.

दरअसल, राव और मनमोहन सिंह को ऐसी प्रतिक्रिया का अंदाज नहीं था. बुआई के मौसम से ठीक पहले खाद की कीमत बढ़ाने का कई राज्यों के किसानों ने विरोध किया. प्रति हेक्टेयर औसतन 165 किग्रा खाद की खपत वाले राज्य पंजाब के किसानों की यूनियनों ने राज्य भर में दो घंटे रास्ता रोका. आंध्र प्रदेश में विरोधी दलों का समर्थन प्राप्त किसान सड़कों पर उतर आए. उन्होंने दुकानें लूटीं, ट्रक लूटे और

बाबजी/जनता स्टुडियो

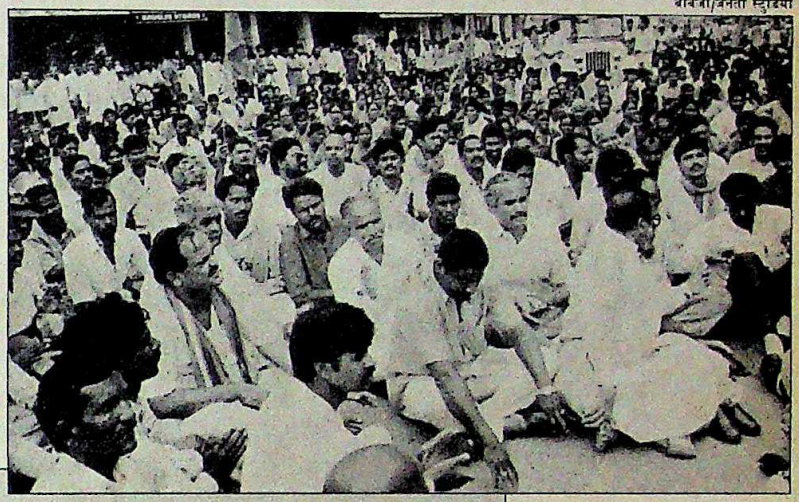

सब्सिडी खत्म करने के खिलाफ भाजपा का धरना

विवाद कैसे बढ़ा

24 जुलाई
केंद्रीय बजट में वित्तमंत्री मनमोहन सिंह खाद की कीमतों में 40 फीसदी वृद्धि की घोषणा करते हैं.

25-31 जुलाई
कई राज्यों में किसान और राजनैतिक पार्टियां इसका विरोध करती हैं. संसद में विपक्ष सरकार गिराने की धमकी देता है.

3-5 अगस्त
नरसिंह राव हल के लिए एक गुट बनाते हैं. पार्टी सांसदों की बैठक में वित्तमंत्री अपमानित होते हैं. वे इस्तीफा देते हैं जो नामंजूर होता है.

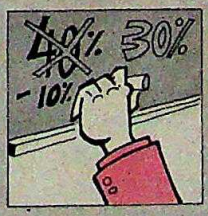

6 अगस्त
बीच का रास्ता ढूंढ़ लिया जाता है. वित्तमंत्री वृद्धि में 10 फीसदी की कटौती और छोटे किसानों को इससे मुक्त रखने की घोषणा करते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यातायात ठप किया. गुंटूर जिले के चिलकालूरीपेट में भीड़ को तितर-बितर करने के लिए गोली चलानी पड़ी और दो किसान मारे गए.

केंद्र सरकार पर हमले के लिए मुद्दे की तलाश में अकुलाए विपक्षी दलों को अचानक ही एक हथियार हाथ लग गया. हरियाणा में देवीलाल ने इंका के 'किसान विरोधी' रवैए के विरोध में 'नया युद्ध' शुरू करने की धमकी दी. हैदराबाद में एन.टी. रामराव ने घोषणा की कि उनकी पार्टी लंबा आंदोलन छेड़ेगी. पार्टी की बैठक में

किसान का जो खर्च अब होगा

सभी आंकड़े प्रति हेक्टेयर औसत 7000 किलो धान की पैदावार के अनुमान पर आधारित हैं.

1 किलो धान पैदा करने का लागत खर्च (बीज, सिंचाई, कीटनाशक, मजदूरी, खाद और लगान जोड़कर)	रु. 0.64
कुल लागत में खाद का हिस्सा	
मूल्य वृद्धि के पहले	रु. 0.15
30% वृद्धि के बाद	रु. 0.20
पैदावार की नई लागत	रु. 0.69
सरकारी क्रय मूल्य	रु. 2.25
क्रय मूल्य में वृद्धि की जरूरत ताकि किसानों का घाटा पूरा हो	रु. 0.05
किसानों का प्रति हेक्टेयर मुनाफा (मौजूदा क्रय मूल्य पर)	
मूल्य वृद्धि के पहले	रु. 11,250
मूल्य वृद्धि के बाद	रु. 10,929

चार्ट बी.के. शर्मा

उन्होंने कहा, "जो हाथ हमें खिलाता है, क्या उसे काट खाना ठीक होगा?"

बिहार में मंडल मुद्दे पर साफ हो चुकी इंका के विरुद्ध किसान भी उठ खड़े होने लगे. जनता दल समेत दूसरे दल साझा रणनीति बनाने लगे. बिहार प्रदेश इंका अध्यक्ष जगन्नाथ मिश्र ने राव को पत्र लिखकर सब्सिडी वापस लेने का फैसला रद्द करने को कहा. प्रदेश इंका के एक नेता ने कहा, "इंका इस मामले पर बाकी राजनैतिक पार्टियों के मुकाबले ज्यादा चिंतित है.", इंका को किसानों के आर्थिक नुकसान की उतनी चिंता नहीं, जितनी इसके सियासी नतीजे की है. खाद के दाम 40 फीसदी बढ़ने का अर्थ है कि कृषि पैदावार की लागत 7 फीसदी से ज्यादा नहीं बढ़ेगी (देखें चार्ट). 70 फीसदी खाद का इस्तेमाल बड़े किसान ही करते हैं जो बढ़ी कीमत बर्दाश्त कर सकते थे. फिर वित्तमंत्री ने अनाज उगाही मूल्य में बढ़ोतरी की घोषणा कर ही दी थी.

पर राज्यों में इतने तगड़े विरोध को देखकर इंका सांसद सक्रिय हो गए. शुरू में एकाध पार्टी सांसद ही मनमोहन सिंह के पास गए. बाद में इतने ज्यादा इंका सांसदों ने विरोध जताया कि पार्टी उन पर काबू नहीं रख सकी.

विरोध का मानो बांध ही टूट पड़ा. महाराष्ट्र के सांसद प्रतापराव भोंसले के किसान संसदीय मंच ने खाद सब्सिडी में कटौती पर गंभीर चिंता व्यक्त करने वाले ज्ञापन पर 40 सांसदों के हस्ताक्षर लिए. अगले दिन आंध्र प्रदेश के सांसद विजयराम राजू ने लोकसभा अध्यक्ष को सदस्यता से इस्तीफा भेज दिया. एक विचित्र दृश्य भी इस मौके पर देखने को मिला. सत्तारूढ़ पार्टी के सांसदों ने संसद में इस मुद्दे पर अपनी आलोचना भरी प्रेस विज्ञप्तियां वितरित कीं. और इंका संसदीय दल की बैठक में तो मनमोहन सिंह और परोक्ष रूप से राव को भी तीखी आलोचना झेलनी पड़ी.

पार्टी के पदाधिकारियों का मानना है कि इस तरह का बवाल उठना कोई असामान्य घटना नहीं है. पार्टी के कोषाध्यक्ष सीताराम केसरी ने इसे महत्वहीन करार देते हुए कहा कि "ज्यादातर सांसद ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्रों से आए हैं. उन्होंने तो अपनी राय भर जाहिर की है."

बाकी लोगों का मानना था कि इंका ने बवाल इसलिए खड़ा होने दिया ताकि विपक्ष को इसका फायदा उठाने से रोका जा सके. जिस तरह से विपक्षी दल राज्यों में इसे भुना रहे थे, उसे देखते हुए यह आकलन कुछ हद तक सही भी है. संसदीय कार्यमंत्री गुलाम नबी आजाद ने कहा, "विपक्षी दल इसे सदन में एक मुद्दा बना रहे थे. ऐसे में अपने सांसदों की मांग के आगे झुककर रियायतें देना बेहतर तरीका था."

लेकिन यह अर्धसत्य ही है. एक और कारण यह है कि कई वरिष्ठ कांग्रेसी राव के काम करने की शैली से नाखुश हैं. राजीव गांधी के निकट रही तथाकथित चौकड़ी तो खास तौर से खफा है. रक्षामंत्री शरद पवार

खाद उद्योग

सब्सिडी के सहारे

नेक इरादों से हमेशा अर्थव्यवस्था की हालत नहीं सुधरती. खाद सब्सिडी मुद्दे पर आगे कुआं पीछे खाई वाली स्थिति में फंसे नीति-नियंताओं के लिए यह एक कड़वा सबक है.

यह सब्सिडी खाद की कीमत कम रखने के लिए 1977 में लागू की गई थी ताकि किसान खाद का ज्यादा इस्तेमाल कर पैदावार बढ़ा सकें. सरकार भी उत्पादकों को उचित कीमत देकर पैदावार बढ़ाना चाहती थी.

पैदावार बढ़ने के साथ-साथ सब्सिडी की मात्रा भी बढ़ती गई. पिछले एक दशक में जहां पैदावार तीन गुना बढ़कर 90 लाख टन हो गई, वहीं सब्सिडी 1977-78 के मात्र 266 करोड़ रु. से बढ़कर पिछले साल 4,000 करोड़ रु. पर जा पहुंची. इस सब्सिडी के 6,000 करोड़ रु. का आंकड़ा भी पार कर जाने की संभावना थी लेकिन वित्तमंत्री मनमोहन सिंह ने इस पर रोक लगाने की कोशिश की. वे आंशिक रूप से विफल रहे.

कटौती वापस लेने और छोटे किसानों को छूट देने पर सहमत होकर मनमोहन सिंह ने एक ऐसी दोहरी मूल्य प्रणाली बनाई है जिससे भ्रष्टाचार फैलेगा. उत्तर प्रदेश के बाराबंकी के छोटे किसान राम कुमार यादव कहते हैं, "कीमत के अंतर के कारण बड़े किसान बेनामी खरीद करके हमारे हिस्से का खाद ले लेंगे."

लेकिन इसी तरह की राजनैतिक

टी.एस. बेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

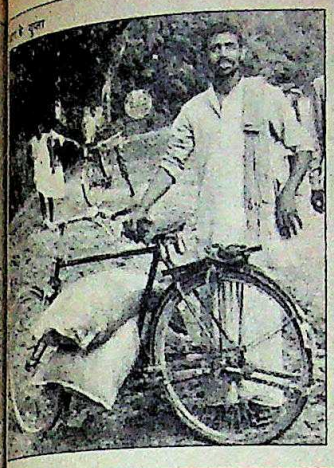

दाम में अंतर के कारण बड़े किसान फर्जी नामों से हमारे हिस्से का खाद खरीद लेंगे. हमें खुले बाजार से ही खाद खरीदते रहना पड़ेगा"

राम कुमार यादव
उत्तर प्रदेश के छोटे किसान

...ाबरता के चलते खाद सब्सिडी ...त्याकार अनुपात में बढ़ गई. खाद की ...कीमत 1981 से स्थिर रही जबकि ...उत्पादन लागत में भारी वृद्धि हो गई. ...इंडो-गल्फ फर्टिलाइजर्स के प्रबंध निदेशक ...जी.एन. पूरनमल्का कहते हैं, "यदि ...मुद्राही मूल्य के साथ-साथ खाद की ...कीमत भी बढ़ी होती तो सब्सिडी को ...नियंत्रित किया जा सकता था."

दूसरी समस्या उद्योग पर सरकार का ...शिकंजा रहा है. नेप्था और गैस जैसे ...कच्चे माल की कीमत तय करने, रॉक ...फॉस्फेट के आयात को सरलीकृत करने ...और उसका बिक्री मूल्य निर्धारित करने ...को लेकर हर कंपनी अपने उत्पादन के ...लिए कितना भुगतान करेगी—सब पर ...सरकार का नियंत्रण रहा है. खाद विभाग ...डीलरों को दी जाने वाली छूट भी तय ...करता है.

इसके अलावा, सरकारी और ...सहकारी कंपनियां कुल देसी उत्पादन का ...26 प्रतिशत उत्पादन करती हैं. चूंकि ...इनमें मांग पूरी नहीं होती, इसलिए 26 लाख टन आयात करना पड़ता है.

सरकार ने 150 इकाइयों में से हरेक को खाद के मूल्य के रूप में भुगतान के लिए जो नियम बनाए हैं, खाद उद्योग उनकी आलोचना करता है. खाद विभाग कंपनी की टेक्नोलॉजी और उत्पादन क्षमता के आधार पर यह तय करता है कि खाद की प्रति टन उत्पादन लागत कितनी होनी चाहिए. फिर कंपनी को इस लागत और बाजार बिक्री मूल्य में अंतर जितनी रकम अदा की जाती है और उसे निवेश पर 12 फीसदी लाभ का भरोसा भी दिया जाता है. आरोप है कि कंपनियां अपनी संपत्ति की ऊंची कीमत बताकर और उत्पादन क्षमता कम दिखाकर करदाताओं के खर्च पर भारी मुनाफा कमा रही हैं.

फर्टिलाइजर कार्पोरेशन ऑफ इंडिया और हिंदुस्तान फर्टिलाइजर कार्पोरेशन जैसी पुरानी सरकारी कंपनियों के लिए उत्पादन के मानक इतने ऊंचे हैं कि वे उन्हें कभी पूरा नहीं कर पातीं. पुरानी टेक्नोलॉजी और फालतू कर्मचारियों के बोझ से दबी ये कंपनियां लगातार घाटा दे रही हैं और खजाने को खाली कर रही हैं. पिछले आठ साल में इन्हें लगभग 1,500 करोड़ रु. का नुकसान हुआ है.

फर्टिलाइजर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के कार्यकारी निदेशक प्रताप नारायण कहते हैं, "कीमत में 40 प्रतिशत वृद्धि करना उतना ही बुरा है जितना 10 वर्षों में कोई वृद्धि न करना."

सब्सिडी में भारी कटौती करने की ठोस वजहें भी हैं और कुल मिलाकर सब्सिडी के खात्मे से कृषि और उद्योग दोनों की भलाई होगी. —**आलोक तिवारी**

छोटे और मझोले किसानों को औरों से अलग करना किसानों में फूट डालने की कोशिश है. इससे बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार भी पैदा होगा"

बलबीर सिंह राजेवाल
महासचिव, भाकियू

भी खासे नाराज थे क्योंकि महत्वपूर्ण मामलों पर उनकी राय लेने की जरूरत नहीं समझी गई. खाद मुद्दे पर जिस तरह खुला विद्रोह हुआ, वह पार्टी में संगठनात्मक नियंत्रण के अभाव का भी सूचक था.

खाद का मामला गंभीर मोड़ ले रहा है, यह देख राव ने संसदीय दल की बैठक से अगले दिन इसका समाधान सुझाने के लिए वरिष्ठ मंत्रियों और पार्टी नेताओं का एक अनौपचारिक गुट बना दिया. इस गुट में शिवचरण माथुर, राजेश पायलट, बलराम जाखड़, बूटा सिंह और अर्जुन सिंह थे. अर्जुन सिंह मध्य प्रदेश इंका की बैठक में भाग लेने भोपाल जा चुके थे इसलिए भारतीय

खाद पर सब्सिडी: बेलगाम बढ़ोतरी

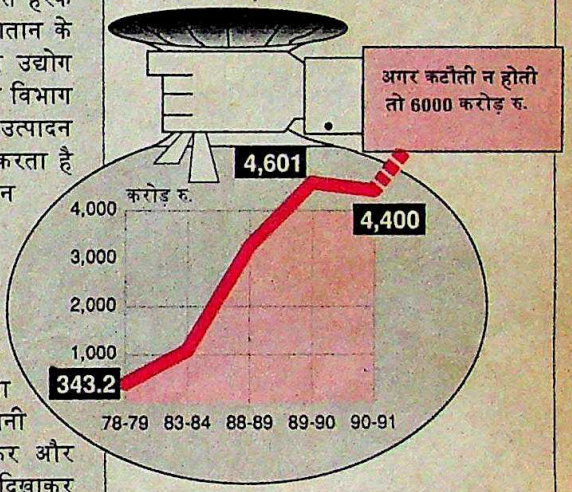

वायुसेना का विशेष विमान उन्हें लाने के लिए भेजा गया. पवार मद्रास में थे उनसे भी दिल्ली आने को कहा गया.

इस अनौपचारिक गुट की आम राय थी कि यदि सरकार बचे रहना चाहती है तो खाद वाले मुद्दे पर उसे कदम पीछे हटाना ही होगा. पर चूंकि मनमोहन सिंह पहले जितनी सब्सिडी देने को तैयार नहीं थे, इसलिए बीच का रास्ता निकाला गया.

सरकार पर घिर आए खतरे को टालने में राव सफल हो गए हैं लेकिन इसमें बरबादी के बीज छिपे हैं. खाद सब्सिडी पर दोहरी नीति दुरुपयोग के कई रास्ते खोल देगी (देखें बॉक्स).

इंका ने विपक्षी दलों को इस मुद्दे को भुनाने से भले ही महरूम कर दिया लेकिन राव ने अपनी ही पार्टी के सूरमाओं के आगे घुटने टेक दिए. अब उन्हें हर बड़ा फैसला लेने से पहले उनकी राय लेनी होगी और शायद समझौते भी करने पड़ेंगे.

—लखनऊ, पटना, हैदराबाद और चंडीगढ़ की ब्यूरो रिपोर्टों के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-38

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटक बताया | 70 के सेट | बदले से नहीं | जमाना लौटा लाऊं | स्वीडन के | गुप्त नाम | वादों की बलि नहीं | इस योजना से बाहर | जुझारू नेता | क्यों न आते | नाना के प्रचार में | घाटे में रही | बूढ़े को शौक चर्राया | जिन्न बोतल में | समय पर पेस्ट्री नहीं | कैसी दोहरी नीति | सत्ता संभाली है | आसन खतरे में | हथ-कंडे सीखता रहा | खोज भारत तक नहीं | फूंक कर कदम | नामा-वली के चित्र | राज्य पार्टी की | तेजतर्रार नेता | टूट ही नहीं

नाम _____

पता _____

पिन _____

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-38, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि:
5 सितंबर 1991
उत्तर के लिए देखें:
16-30 सितंबर 1991 का अंक

- यह पहेली शब्दश: इंडिया टुडे के 31 जुलाई 1991 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500** रु. दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

एलबम में | उनकी अक्खड़ छवि | नवन टवर लाल | सीमा के पास गांव | बात टूट चुके | लिलने के लिए प्रसिद्ध | बड़े झाड़ में है | मोहने की कोशिश | जमे रहने की सीख | नंक रिकरा | रास्ता दीजिए | वद चोल राजा रों या ल | साये की तरह | लमोहनएक तलाक और कादीवामा | समस्या धरेलू मे | कब्जे से छुरा | डानामरायणदत्तनीलम | पिछड़ी जाति | क्षेत्रीय सूरमा है | चेउनका लोहा मानते हैं रखां | नैनों के तीर | मिथहशरा | याकरैबरार | टक्कर लेने में सक्षम | मिन्हा | राष्ट्रद्रोही कहा | दृढ़ इच्छा शक्ति | मुल्ली बम से प्रसिद्धि | पटेंकपत्र में चर्चा | स | निचमक फीकी | तेज बिक्री वा | पटवा | रासिरनजीतसिहमान

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-36 का हल

पुरस्कार विजेता

सर्वेश कुमार
1V-1, बीसलपुर परियोजना कॉलोनी
पो.- राजमहल
तहसील-देवली
जिला-टौंक
राजस्थान-304 807

नवीन कुमार शर्मा
हारा, बैंक ऑफ इंडिया
आगरा रोड.
अलीगढ़-202 001

रामबाबू गुप्ता
1226/13, अरबन एस्टेट
करनाल
हरियाणा-132 001

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Kingfisher presents the makings of a champion.

From Kingfisher, a video tape on the men behind the scenes of the most thrilling moments on turf. The men who make champions. The men who ride champions. And the champions themselves.

Kingfisher presents 'Horsepower'.

The story of the Indian thoroughbred . A tape every horse racing enthusiast or sports fan would consider a collector's item.

Ogilvy & Mather 3266

O R D E R F O R M

Yes, I would like to order Kingfisher's cassette 'Horsepower', for Rs.175/- (taxes, packing and forwarding included).

I herewith enclose a DD/MO payable in Bangalore (only Bangalore cheques accepted)

to: Kingfisher 'Horsepower', C/o *ONE-TO-ONE Communications Pvt. Ltd., No. 3, President Chambers, 8, Richmond Road, Bangalore- 560 025. Ph: 217788.

Name..... Add.....

.....

Pin..... Tel.....

KINGFISHER PRESENTS HORSEPOWER
THE STORY OF THE INDIAN THOROUGHBRED
TASTE THE EXCITEMENT

*The cassette will be hand-delivered in Bangalore & couriered elsewhere • Please allow lead-time of 2-4 weeks for delivery • Offer/rates valid in India only • Send your form to the indicated (*) address.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव हत्याकांड

सुलझी कुछ और गुत्थियां

विशेष जांच दल को साजिश के कुछ छोर विदेशों में भी दिखाई दे रहे, एलटीटीई ने शिवरासन से पल्ला झाड़ लिया, उसकी अपीलों की उपेक्षा

—अनिरुद्ध मित्र, मद्रास में

इस षड्यंत्र के तार उलझते जा रहे हैं और इसके लक्ष्य भी एक नहीं, कई दिखने लगे हैं. विशेष जांच दल को मिले ताजा सबूतों से पता चलता है कि साजिश का मकसद सिर्फ राजीव गांधी को ही चिरनिद्रा में सुला देना नहीं था बल्कि तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता जयराम और प्रदेश इका अध्यक्ष वी.के. राममूर्ति भी निशाने पर थे.

अब लगता है, इस षड्यंत्र के सूत्र विदेश में भी थे. संदिग्ध व्यक्तियों से पूछताछ और बरामद दस्तावेजों के मुताबिक इस पेचीदा षड्यंत्र का सूत्रधार 'काना उस्ताद' शिवरासन स्वीडन, सिंगापुर, फ्रांस, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात के लोगों से बराबर संपर्क बनाए हुए था.

शिवरासन को पकड़ने की तमाम कोशिशों के बावजूद वह आजाद घूम रहा है. असल में अब वह हर ओर से आजाद है क्योंकि एलटीटीई के उससे किनारा करने के भी सबूत मिले हैं. जांचकर्ताओं को मिली सूचनाओं के मुताबिक काना उस्ताद मध्यस्थों के जरिए जाफना से लगातार अनुरोध करता रहा कि उसे भारत से सुरक्षित बाहर निकलने का रास्ता बताया

चार्ट : बी.के. भट्ट

शिवरासन ने अपने सहयोगियों और आश्रयदाताओं का एक व्यापक जाल फैला रखा था जिसका मकसद सिर्फ राजीव की ही हत्या नहीं बल्कि जयललिता और राममूर्ति की हत्या भी था. उसने नई दिल्ली में तमिलनाडु के राजकीय अतिथि गृह में भी दो हत्यारों को बैठा दिया था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए लेकिन एलटीटीई ने उसकी अपीलों पर कोई ध्यान नहीं दिया है. यही नहीं उन्होंने उसकी हिफाजत के लिए किया बंदोबस्त भी खत्म करके उसे अपने हाल पर छोड़ दिया है.

बावजूद इसके, शिवरासन और दूसरी मुख्य संदिग्ध आरोपी शुभा का पकड़ में न आना आश्चर्यजनक है. काना उस्ताद विशेष जांच दल और राज्य पुलिस को हर जगह से धक्का देने में कामयाब रहा है. खुफिया से मिली हर सूचना पर तुरंत हरकत होती है, उनकी हर पनाहगाह पर छापे डाले जाते हैं लेकिन लगता है कि पुलिस हर बार उनसे कुछ क्षण पिछड़ जाती है.

उनकी सबसे आश्चर्यजनक और संदेहास्पद फरारी मद्रास के निकट कोडुंगैयूर के एक मकान से हुई जो स्थानीय थाने से महज 200 मीटर की दूरी पर ही था. इस मकान में हत्यारों का पूरा गिरोह पांच हफ्ते टिका रहा. इसमें हत्या के बाद गुजारे दो हफ्ते भी शामिल हैं. पड़ोस में रहने वाले एक एंग्लो-इंडियन परिवार ने 5 और 6 जुलाई को जांच दल को फोन पर कई बार सूचना दी लेकिन अंततः 7 जुलाई को जब विशेष दल के अधिकारी पधारे, शिवरासन और शुभा फरार हो चुके थे.

दल के हाथ अन्य चार संदिग्ध अभियुक्तों के अलावा एक वीएचएफ संचार उपकरण, शिवरासन के कपड़े, पिस्तौल और गूढ़ भाषा में सूचनाओं की एक डायरी लगी. इन दोनों फरार अभियुक्तों के तमिलनाडु में ही होने की बात बताई जाती है. नेपाल और पाकिस्तानी सीमा से भाग निकलने के उनके मंसूबे नाकाम हो गए हैं.

एलटीटीई ने शायद अपने बचाव की खातिर शिवरासन की मदद के अनुरोधों को ठुकरा

धनु, चार साल पहले जाफना में

हत्यारी टोली

कई नाम, अनेक रूप

अब तक की जांच से यह जाहिर हुआ है कि इस व्यक्ति के कई नाम हैं. राजीव गांधी हत्याकांड में पुलिस उसे शिवरासन, शिवराज और तुरै नाम से जानती है. लेकिन ईपीआरएलएफ नेता पद्मनाभ और 14 दूसरे लोगों की मद्रास में हुई हत्या में वह रघुवरन और रघुअप्पा नाम से कुख्यात हुआ था.

इस तरह हर नए षड्यंत्र के लिए वह नया नाम रख लेता है. लेकिन उसका असली नाम है राजा अरुमैनायगम. देश की पुलिस को सबसे ज्यादा तलाश इसी अपराधी की है जिसे पकड़ने के लिए 10 लाख रु. का इनाम रखा गया है.

32 वर्षीय शिवरासन पूर्वी प्रांत में श्रीलंका सरकार का कर्मचारी है. मूल रूप से जाफना के चावकचेरी गांव का रहने वाला शिवरासन मानविकी में स्नातक है लेकिन कई दूसरे गुणों के चलते वह एलटीटीई का सबसे विश्वसनीय व्यक्ति बन गया. वह तमिल, तेलुगु, मलयालम और हिंदी तो धाराप्रवाह बोलता ही है, भारत के स्थानों से भी बखूबी परिचित लगता है. इसीलिए वह सीबीआई के हाथ नहीं लग पाया.

उसके पक्ष में एक और बात यह है कि उसका चेहरा सामने से देखने पर एक तरह का नजर आता है तो बगल से एकदम दूसरी तरह का, हरिबाबू के खींचे साइड फोटोग्राफ और उसके ड्राइविंग लाइसेंस पर लगे, सामने से खींचे गए फोटो में कुछ भी साम्य नहीं है.

लेकिन अब लगता है कि एलटीटीई ने शिवरासन को बिलकुल ही त्याग दिया है. उसके छद्म रूप समाचार पत्रों में लगातार प्रकाशित होते रहने से अब वह 'गोपनीय कार्रवाई' के लायक नहीं रह गया है. एलटीटीई कैबिनेट में शामिल होने के लिए अभी वह बहुत जूनियर है.

शिवरासनः बगल से और सामने से

मानव बम बनी धनु उर्फ गायत्री शिवरासन के रिश्ते की बहन थी. 24 वर्षीय यह लड़की जाफना के कुपुंकुल्लै गांव की थी. खुफिया एजेंसियों ने जांच दल को उसके जो पुराने फोटो अपराध विज्ञान विभाग को दिखाए तो इसके निदेशक पी. चंद्रशेखरन ने पूरे विश्वास से कहा कि यह फोटो उसी के हैं और चार वर्ष पहले जाफना में खींचे गए थे.

शुभा उर्फ शालिनी भी, जिस पर 5 लाख रु. का इनाम है, शिवरासन की रिश्ते की बहन है. धनु की तरह वह भी कुपुंकल्लै की रहने वाली है. उसका दायां पांव बाएं से छोटा है.

—अनिरुद्ध मित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या पुरानी रेडियल तकनीक आपको गुमराह कर रही है ?

सब रेडियल टायर एक जैसें नहीं होते।

यदि आपको अपनी मोटर के लिये सर्वोत्तम रेडियल चाहिये, तो देखिये, ट्रेड के नीचे क्या है। स्टील? साधारण कपड़ा या फाइबर ग्लास?

कपड़ा या फाइबर ग्लास स्टील का मुकाबला कभी नहीं कर सकते। केवल स्टील बेल्टेड रेडियल आपकी मोटर की क्षमता बढ़ाते हैं। यह ईंधन अधिक बचाते हैं, ज्यादा माइलेज देते हैं एवं हर प्रकार की सड़कों पर बेहतर पकड़ रखते हैं।

तभी तो संसार की 97% मोटरें स्टील बेल्टेड रेडियल टायरों पर चलती हैं।

फिर आपकी मोटर क्यों न उठाए स्टील का फ़ायदा। ब्रेक लगाते समय, मोड़ते समय या गीली सड़कों पर मोटर चलाते समय, स्टील रेडियल टायरों की मज़बूती और सुरक्षा का मुकाबला नहीं।

लीजिए, अर्न्तराष्ट्रीय-स्तर के स्टील रेडियल टायर।

केवल जे के द्वारा निर्मित।

यही है असली रेडियल।

असली रेडियल के बारे में अधिक जानकारी के लिए, इस पते पर लिखें: श्री एस. वी. श्रीनिवासन्, रेडियल क्लब, जे.के.इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड 3, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002

असली रेडियल
जेके स्टील रेडियल

जेकेटायर

Sista's-JK/610/91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया है. जांचकर्ताओं ने दूरसंचार से भेजे गए ऐसे संदेशों को पकड़ा है जिसमें शिवरासन ने अपने नेता प्रभाकरन से 'कुछ खामियों' के लिए माफी मांगी है. इनमें से सबसे बड़ी खामी फोटोग्राफर हरिबाबू की मौत है. हरिबाबू की तस्वीरें ही जांच दल के लिए सूचना स्रोत बनी हैं.

इन संदेशों के कारण ही राज्य में एलटीटीई के बड़े अड्डों का सफाया किया जा सका और भारी मात्रा में हथियार, विस्फोटक, अत्याधुनिक संचार यंत्र और नकद राशि बरामद की गई. साथ ही उसके 30 से अधिक सदस्य या तो मारे जा चुके हैं या जेल की हवा खा रहे हैं. नतीजतन, एलटीटीई का लगभग बड़ी सावधानी से

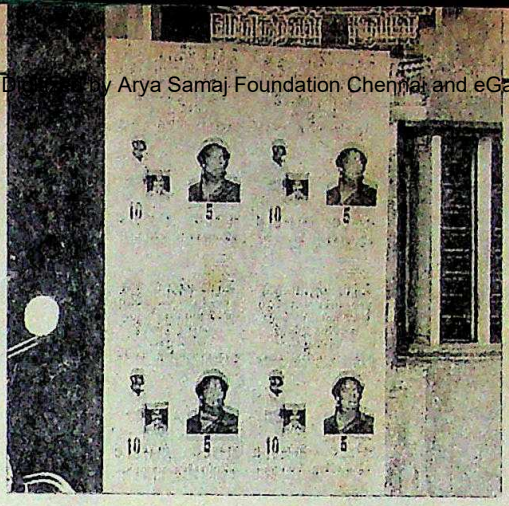

इनाम की घोषणा वाले पोस्टर

दशक भर में स्थापित किया गया तंत्र ताश के पत्तों की तरह ढेर हो गया. लिहाजा, कल का सूरमा उनके लिए आज बोझ साबित हो रहा है. सो, इसमें आश्चर्य नहीं कि जाफना पहुंचने के लिए एक नाव का इंतजाम करने का शिवरासन का अनुरोध एलटीटीई के आकाओं ने अब तक नहीं माना.

विशेष जांच दल सबसे ज्यादा हैरत में तो इस सूचना से है कि राजीव की हत्या के बाद शिवरासन भाग नहीं रहा था बल्कि दूसरे दो अतिविशिष्ट व्यक्तियों पर हाथ डालने की तैयारी कर रहा था. अगली योजना को दिल्ली में अंजाम देना था. रामभूति के साथ जयललिता जुलाई के मध्य में प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव से मिलने वाली थीं. इस योजना के तहत शिवरासन ने राजधानी में

मेंटल परिवार

हत्यारों से वास्ता

फोटो: भवान सिंह

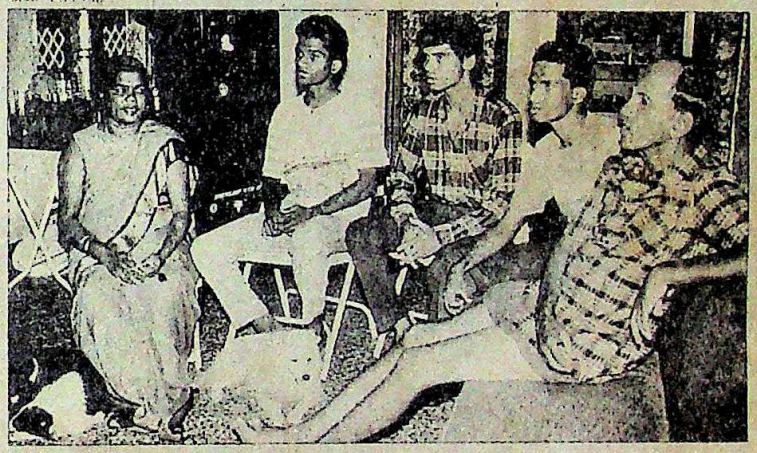

जब जांच दल शिवरासन और उसके सहयोगियों की तलाश में तमिलनाडु का चप्पा-चप्पा छान रहा था तो यह हत्यारी मंडली मद्रास के निकट कोडुंगैयूर गांव में शर्ले मेंटल और उनके परिवार के साथ वाले घर में ही रह रही थी. विशेष जांच दल ने अगर यहां पहुंचने में थोड़ी भी फुर्ती दिखाई होती तो इस गिरोह को दबोच सकता था. लेकिन ये लोग दो दिन बाद पहुंचे और विजयन तथा उसकी पत्नी सेल्वी को, जो खुद को शिवरासन की चचेरी बहन बताती है, ही पकड़ पाए.

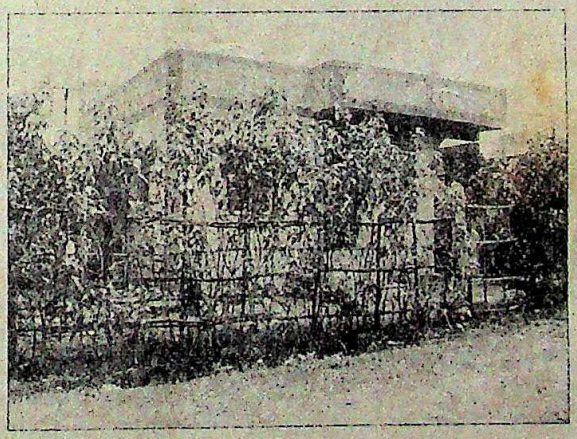

मेंटल परिवार; (बाएं) शिवरासन का अड्डा

यह घर शिवरासन का अड्डा था, जहां से वह वीएचएफ प्रणाली के जरिए जाफना से संपर्क बनाए रखता था. और शिवरासन मंडली का मेंटल परिवार में ही आना-जाना था. विजयन और सेल्वी तो उनके यहां गप्पबाजी के लिए अक्सर आते थे. लेकिन शिवरासन के फोटो अखबार में छपे तो उनका आना-जाना बंद हो गया.

मेंटल परिवार बताता है कि इस हत्यारे गिरोह के तीन व्यक्तियों को वे बखूबी जानते हैं. "ये लोग बहुत मिलने-जुलने वाले तो नहीं थे लेकिन शिवरासन राजीव की हत्या के बाद भी यहां बेफिक्र घूमता-फिरता था. वह बस स्टॉप तक पैदल जाता था. यानी थाने के आगे से भी वह गुजरा ही होगा.

"वह हमेशा अपने साथ काला बैग रखता था (बाद में विजयन ने बताया कि इसमें वह एके-47 राइफल रखता था). धनु और शुभा शाम को बीएसए एसएलआर साइकिल पर सवारी करते हुए भी नजर आती थीं. वे हमेशा महंगे चूड़ीदार-कुर्ते पहने रहतीं. थोड़ा लंगड़ाकर चलने के बावजूद शुभा फिल्म अभिनेत्री जैसी दिखती थी."

इस हत्यारी टोली के अड्डे वाले घर की बैठक में, जहां हत्या की योजना बनाई गई, दीवारों पर आज भी राजीव, जयललिता और एम.जी. रामचंद्रन के चित्र लगे हैं. लेकिन मेंटल परिवार का जीवन अब पहले जैसा शांतिमय नहीं रह गया है.

—अनिरुद्ध मित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य के अतिथि गृह में दो हत्यारों को बिठा दिया था.

सीबीआई ने इन दोनों—72 वर्षीय कनकसभापति और 18 वर्षीय अतिरै को गिरफ्तार किया, जो धनु और शुभा के साथ ही एलटीटीई के आत्मघाती दस्ते की सदस्य थीं. इनसे पता चला कि जयललिता के साथ भी राजीव हत्या जैसी ही कार्रवाई दुहराई जानी थी. हैरानी और क्षोभ की बात तो यह है कि इन दोनों की नई दिल्ली स्टेशन पर अगवानी अतिथि गृह के प्रबंधक ने की और उनके ठहरने के दौरान उन्हें विशेष सुविधाएं दी गईं.

इस बीच, हत्या के मकसद के बारे में अनेक अनुमान लगाए जाने लगे हैं. पूर्व राज्य पुलिस (खुफिया) महानिदेशक मोहनदास कोंडथ ने 'कुछ उलझी हुई परिस्थितियों' की ओर इशारा किया है. जैसे राममूर्ति से सलाह किए बिना राजीव की यात्रा में श्रीपेरुंबुदूर का जोड़ा जाना और विशाखापत्तनम में विमान में आई गड़बड़ी को फौरन दूर कर लिया जाना गौरतलब बातें हैं. उनके विचार से ये षड्यंत्र की सूचना जाहिर हो जाने के सबूत हैं. वे कहते हैं कि यासर अराफात की राजीव को दी गई चेतावनी पर भी गौर करना चाहिए. उन्हें शुबहा है कि एलटीटीई ने किसी और संगठन के लिए यह काम किया. हालांकि एलटीटीई के अलावा किसी और 'विदेशी हाथ' होने के सबूत न के बराबर हैं.

जांचकर्ताओं का दावा है कि हथियार और विस्फोटक सामग्री लेने के लिए शिवरासन के स्वीडन, सिंगापुर और फ्रांस के दौरे तथा रकम उगाहने के लिए सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात की उसकी यात्राओं के पक्के सबूत उनके पास हैं. हालांकि वे यह बात नहीं समझ पा रहे हैं कि शिवरासन जैसे अदना कार्यकर्ता को, जिसकी जानकारी सिर्फ विस्फोटकों तक ही सीमित है, क्यों बाहर भेजा गया. अब चर्चा में एक नया अनुमान यह है कि शायद शिवरासन खुद ही एलटीटीई से अलग गुटों से संपर्क साध रहा हो. एक गुत्थी यह भी है कि एलटीटीई से जाहिरा संबंधों के बावजूद शिवरासन पूर्वी प्रांत में श्रीलंकाई सरकार का कर्मचारी बना रहा.

राज्य पुलिस ने तंजावुर (पूर्व और पश्चिम), पौडुकोटै, मुदरै, दक्षिण अर्कोट, रामनाथपुरम और रामनाद जिलों में सुरक्षा व्यवस्था तेज कर दी है. जब तक राज्य पुलिस विशेष कार्यदल नहीं बना लेती तब तक सीआरपी समुद्र तटों पर तैनात रहेगी. मुख्यमंत्री ने इस बारे में एक योजना केंद्रीय गृह मंत्रालय को सुझाई है.

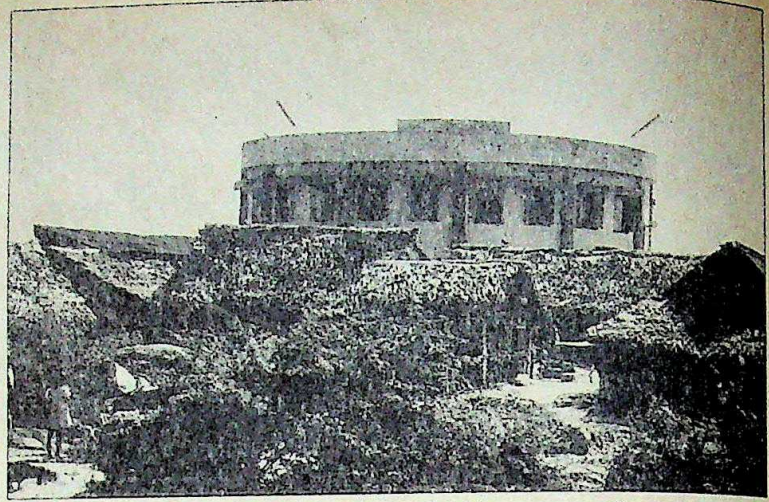

कोवलम में श्रीलंकाई शरणार्थी कॉलोनी जहां शिवरासन कुछ दिन रुका था

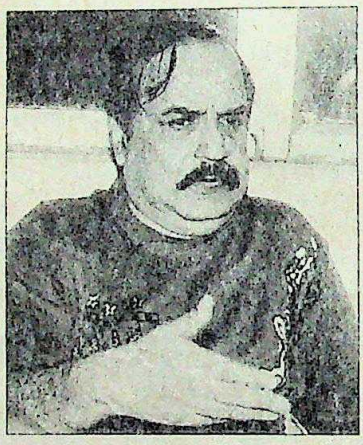

"मुझे पूरा संदेह है कि हत्या में कुछ विदेशी शक्तियों का हाथ है. एलटीटीई इसमें एक औजार की तरह ही शामिल रही होगी"

मोहनदास कोंडथ
पूर्व राज्य पुलिस महानिदेशक (खुफिया)

"इससे निबटने के लिए बुद्धि कौशल और चुस्त व्यवस्था की जरूरत है. मुख्यमंत्री ने इस बारे में गृह मंत्रालय को एक योजना सौंपी है"

एस. श्रीपाल
राज्य पुलिस महानिदेशक

शिवरासन के मुख्य मददगारों जैसे विजयन, जयकुमारन और राबर्ट पाएस से पूछताछ से पता चला कि हत्यारों के गिरोह ने शुभा के मार्फत हरिबाबू का कैमरा और धनु के शव के अवशेषों को प्राप्त करने की जी-तोड़ कोशिश की. उनके षड्यंत्र में यही दो खामियां छूट गई थीं. 22 मई की सुबह जब राजीव का शव मद्रास हवाई अड्डे ले जाया जा रहा था तब इन तीनों ने धनु के अवशेष हासिल करने की उम्मीद में उस एंबुलेंस का अपहरण करने का प्रयास किया था.

शिवरासन और शुभा के लिए बाहर जाने के सारे रास्ते बंद हो चुके लगते हैं क्योंकि उन्हें पनाह देने वालों पर से परदा उठ गया, उनके सहयोगी अंधेरी कोठरियों में हैं और सीमा पर चौकसी कड़ी हो गई है. संभव है, शिवरासन के पकड़े जाने की घड़ी नजदीक आ रही हो. लेकिन शिवरासन पर फंदा कसने वाले जांचकर्ताओं को यह भी डर है कि वैसा मौका आने पर वह अपने गर्दन में लटकती साइनाइड की गोली गटककर सब कुछ खत्म करने का फैसला भी कर सकता है. उस हालत में जांचकर्ताओं के हाथ से वह चाबी निकल जाएगी जिससे राजीव हत्या के रहस्य का ताला खुल सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंधन-रहित निवेश की मुस्कान

IND SAGAR
CAPITAL GAINS SCHEME
इंद सागर
कैपिटल गेन्स स्कीम

IND MOTI
EQUITY GROWTH SCHEME
इंद मोती
ईक्विटी ग्रोथ स्कीम

इंद मोती या इंद सागर योजनाओं में पूंजी लगाइये. इनमें आपकी पूंजी बंधी नहीं रहेगी. आप अपनी पूंजी के 75% तक का उपयोग कर सकते हैं, जबकि आपके पूरे निवेश पर बाकायदा लाभ प्राप्ति होती ही रहेगी.

यही नहीं, दोनों योजनाओं में आसान हस्तांतरण, कर लाभ और सुनिश्चित एलॉटमेंट की सुविधा भी है. तो देर कैसी, आज ही अपने सुखी भविष्य के लिए पूंजी निवेश कीजिये.

इश्यू खुल गया है

इंडियन बैंक
म्यूचुअल फ़ंड
प्रधान ट्रस्टी: इंडियन बैंक
आपकी समृद्धि में सहायक

कॉर्पोरेट ऑफिस: 1ली मंजिल, 100/104, नानक मोटवानी मार्ग, डी.जी. चैम्बर्स, फोर्ट, बम्बई 400 023.

म्यूच्युअल फ़ंड निवेश बाजार के जोखिम से प्रभावित हो सकते हैं. पिछले उतार-चढ़ाव भविष्य में लाभ-हानि के निश्चित सूचक नहीं होंगे.

06:203 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता दल

अपना अपना रोना

पर राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी टूटने के आसार फिलहाल नहीं लगते

जनता दल नेता अजित सिंह ने जब संसदीय पार्टी के नेता वी.पी. सिंह पर पार्टी को अपनी मुट्ठी में रखने का आरोप लगाते हुए गुस्से में उन्हें चिट्ठी लिखी तो वे सांगठनिक सुधार से कहीं ज्यादा की मांग कर रहे थे. वे वी.पी. सिंह के इस संकल्प को चुनौती दे रहे थे कि जनता दल के लिए सामाजिक न्याय मुख्य मुद्दा है.

हालांकि टकराव बढ़ता ही जा रहा है लेकिन दोनों पक्ष पार्टी तोड़क कोई भी कदम उठाने से बच रहे हैं ताकि वे दल-बदल विरोधी कानून से बच सकें. लोकसभा में जद के 56 सांसद है और पार्टी तोड़ने के लिए 19 सांसदों की जरूरत है. और फिर, दोनों नेताओं को उनके ज्यादातर कट्टर समर्थकों ने साफ-साफ कह दिया है कि वे किसी भी कीमत पर समझौता कर लें. अजित सिंह कहते हैं, "जनता दल टूटने नहीं जा रहा है. जिनसे लोग पीड़ित हैं, ऐसे मुद्दे उठाने के लिए हम संगठन खड़ा करना चाहते हैं."

इस पर वी.पी. सिंह कहते हैं, "मैंने हमेशा अजित को सम्मान दिया है. मैं पार्टी को सुव्यवस्थित करना चाहता हूं. मेरे अंदर अहं का कोई भाव नहीं है. पार्टी सामूहिक फैसले लेने वाली संस्था होनी चाहिए और उसमें सामंजस्य की भावना होनी चाहिए."

लेकिन मुख्य मुद्दे अनसुलझे ही हैं. हाल के चुनाव से दोनों नेताओं के लिए अलग-अलग निष्कर्ष निकले हैं. जहां अजित सिंह के लिए पार्टी का आधार बढ़ाना फायदेमंद है, वहीं वी.पी. सिंह के लिए इस तरह के कदम ज्यादा नुकसानदेह हैं.

वी.पी. सिंह खेमे के अनुसार, मुख्य समस्या अजित सिंह की राष्ट्रीय नेता, खासकर उत्तर भारत की किसान लॉबी का नेता बनने की अति महत्वाकांक्षा है. दूसरी तरफ अजित समर्थकों के मुताबिक वी.पी. सिंह के बुनियादी लक्ष्यों में से एक यह है कि एक के बाद दूसरे ऐसे नेता को प्रश्रय दो जो अजित से उनके नेतृत्व के लिए उत्पन्न खतरे को खत्म कर दे.

पिछले चुनाव के नतीजे दर्शाते हैं कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश और राजस्थान तथा बिहार के कुछ हिस्सों में अजित के पारंपरिक समर्थक--ठाकुर, कुर्मी, मुल्ला, सैनी, लोध जैसी विभिन्न जातियों के किसान और शहरी अभिजात वर्ग, मध्यम वर्ग, उद्योगपति जैसे दूसरे लोग अजित का साथ छोड़कर भाजपा के साथ हो गए हैं.

जनता दल का मुख्य चुनावी मुद्दा मंडल वोटरों के गुस्से का सिर्फ एक कारण था. दूसरे कारण भी उतने ही महत्वपूर्ण थे. मसलन, जनता दल ने भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, ग्रामीण पुनर्संरचना, पलायन और किसान समस्या जैसे अहम मुद्दों पर चुप्पी साध ली थी. इन समूहों ने मध्यमार्गी विकल्प के रूप में मंडल विरोधी भाजपा को ज्यादातर वोट दिए.

वी.पी. सिंह के लिए चुनाव नतीजों का अलग संदेश था. इससे साबित हुआ कि सामाजिक न्याय की बात उठाने वाली, धर्मनिरपेक्षता का हिमायती होने का दावा करने वाली पार्टी के एक नेता के लिए भारतीय राजनीति में विशिष्ट जगह है.

यही वह पृष्ठभूमि है जिसके चलते अजित जनता दल का पुनर्गठन करना चाहते हैं. अजित के समर्थकों का कहना है कि जनता दल का हर सदस्य, खासकर अजित 'मंडल के प्रति नैतिक रूप से प्रतिबद्ध हैं.' लेकिन असली संघर्ष पार्टी के

टकराव के मुद्दे

इसका आधार व्यापक हो	मंडल	इसे प्रमुख मुद्दा बनाए रखें
वी.पी. सिंह के सभी मोहरों को हटाओ	संगठन	नेतृत्व का फैसला पार्टी करे
खास मुद्दों पर सहयोग करें	कांग्रेस (इ)	किसी भी कीमत पर गठजोड़ नहीं
कभी नहीं	विभाजन	कभी नहीं

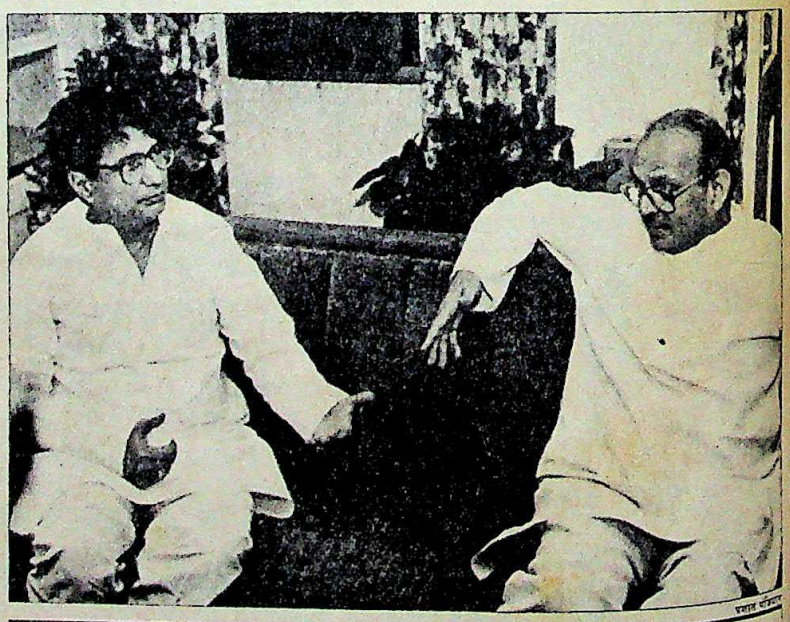

प्रभात कांबले

"जनता दल टूटने नहीं जा रहा है. जिनसे लोग पीड़ित हैं, ऐसे मुद्दे हम उठाना चाहते हैं."

अजित सिंह

"मैंने हमेशा अजित को सम्मान दिया है. मैं पार्टी व्यवस्थित करना चाहता हूं. मुझ में अहं कोई नहीं है."

वी.पी. सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंच को व्यापक बनाना है ताकि उसमें उन लोगों को भी शामिल किया जा सके जो उसके 'रूढ़ और संकीर्ण आधार' के कारण अपने को अलग-थलग महसूस करते हैं. अजित के एक समर्थक ने कहा, "हमें ऐसी स्थिति में डाल दिया गया है कि हम पीछे नहीं हट सकते. आखिरी दम तक लड़ना ही अब एकमात्र चारा है."

रणनीतिक तौर पर, इंका से किसी तरह का गठबंधन दोनों नेताओं के लिए अलग-अलग नतीजों वाला होता. वी.पी. सिंह के करीबी सूत्रों के अनुसार, चुनाव के बाद अजित ने सुझाव दिया था कि जनता दल पहले इंका के साथ ढीला-ढाला गठबंधन करे और भविष्य में विलय की संभावना को खुला छोड़ दे. उन्होंने कहा कि अजित के लिए आज मुख्य दुश्मन भाजपा है. इंका के साथ गठजोड़ से उनके लिए भाजपा से लड़ना आसान हो जाता.

जाहिर है, यह वी.पी. सिंह को खुद को राजनैतिक वियाबान में धकेलने जैसा लगा होगा. पहली बात यह कि ऐसी कोई भी व्यवस्था होने पर, भले ही वह अनौपचारिक होती, पार्टी के तत्काल टूटने का खतरा था. पूरी बिहार इकाई टूट जाती. पार्टी सामाजिक न्याय के लिए लड़ रही है. यदि इसे इंका से गठजोड़ करते देखा जाता तो पूरा उद्देश्य ही खत्म हो जाता.

अजित के विरोधियों का दावा है कि वे इस रणनीति के लिए अपने समर्थकों को भी नहीं जुटा सके. वी.पी. सिंह के एक करीबी सूत्र के मुताबिक अजित ने जब दिल्ली में किसान सम्मेलन किया तो उसके बाद कई प्रमुख विधायकों ने वी.पी. सिंह से मिलकर कहा, "हमने अजित को बताया कि हम जनता दल में आपको उचित जगह दिलाने के लिए संघर्ष करेंगे लेकिन इंका से किसी भी तरह का गठजोड़ हमारी लाशों पर होगा."

लेकिन अजित के करीबी सूत्र इस बात का खंडन करते हैं कि उनके नेता ने इंका से तालमेल का कोई कदम उठाया था. अजित के एक करीबी मित्र ने कहा, "पार्टी के भीतर अजित सिंह को कमजोर करने की यह साजिश है." लेकिन वे भाजपा शासित राज्यों में इंका से तालमेल की संभावना से इनकार नहीं करते हैं.

जनता दल की राज्य इकाइयों में परस्पर विरोधी हित टकराने के संकेत दिखने भी लगे हैं. महाराष्ट्र में जनता दल के 23 में से 9 विधायकों ने अलग होकर महाराष्ट्र कांग्रेस दल बना लिया और 1 अगस्त तक सत्तारूढ़ इंका में शामिल हो गए. उत्तर प्रदेश में, वी.पी. सिंह खेमे ने रामपूजन पटेल को राज्य पार्टी का अध्यक्ष नियुक्त करवा दिया. पूर्व अध्यक्ष कैलाश नाथ यादव ने पुराना पार्टी दफ्तर खाली करने से इनकार कर दिया और कहा, "अजित सिंह पार्टी को एकजुट रखने की आखिरी कोशिश कर रहे हैं. लेकिन मुझे विश्वास में लिए बिना नए अध्यक्ष की नियुक्ति से इस कोशिश को बड़ा झटका लगा है."

ज्यादातर जद विधायक राज्य में पार्टी की एकता की संभावना को क्षीण मान रहे हैं, और पार्टी में विभाजन की सूरत में दोनों नेताओं को राजनैतिक झटका पहुंचने की संभावना भी देख रहे हैं. दोनों नेता सहयोग का भाव दिखा रहे हैं. लेकिन निजी बातचीत में एक-दूसरे की बखिया उधेड़ने में लगे हैं.

—शाहनाज अंकलेसरिया अय्यर

ओडीसा

लापरवाही का फल

नौकरशाही के निकम्मेपन और बेरहमी से नुकसान हुआ

लगभग चार दशकों तक अपर इंद्रावती प्रोजेक्ट (यूआईपी) को ओडीसा के अर्से से सूखापीड़ित जिले कालाहांडी के हर मर्ज की रामबाण औषधि माना जाता रहा. पिछले पखवाड़े इंद्रावती के पानी के तेज बहाव के साथ यह सपना भी बह गया. इस वर्ष नदी में आई बाढ़ माहुलपाटना पहाड़ियों के नजदीक बने मिट्टी के काफर बांध (पानी का संग्रह करने वाला बांध) को साथ बहा ले गई. इसने 600 मेगावाट का बिजलीघर नष्ट कर दिया. और बिजलीघर से निकलने वाला पानी सिंचाई के लिए ले जाने के वास्ते बनाई जा रही सुरंग में कार्यरत 18 मजदूर मारे गए. कमर तक पानी में डूबे नजदीक के एक गांव के वनवासी हरि जानी कहते हैं, "क्षण भर के लिए तो ऐसा लगा कि बिजली घर के नजदीक की पहाड़ी टूट पड़ी है. अब यह पूरा इलाका मनुष्यों और मशीनों की कब्रगाह बन गया है."

रेखाचित्र: बी.के. शर्मा

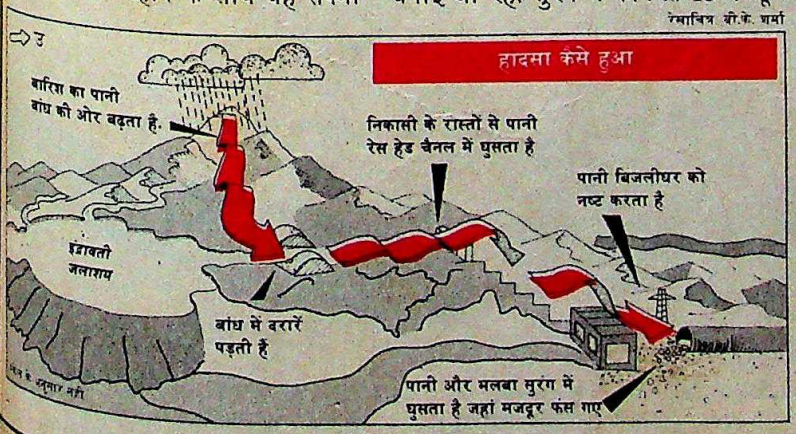

भाजपा राज्य इकाई के अध्यक्ष देवेंद्रनाथ प्रधान का अनुमान है कि इस दुर्घटना में कम-से-कम 100 मजदूर मारे गए होंगे. जबकि इंका यह आंकड़ा 450 के आसपास बताती है. सिंचाईमंत्री बिजोय महापात्र स्वीकार करते हैं, "शुक्र है कि उस दिन (28 जुलाई को) इतवार था. अन्यथा कम-से-कम 1,500 जानें जा सकती थीं."

28 जुलाई को जलग्रहण क्षेत्र में 825 मिमी रिकॉर्ड वर्षा होने की वजह से ही जलाशय लबालब हो गया और पानी बह निकला. 1959 में शुरू की गई यह परियोजना अब तक अधूरी ही है. इसके तहत एक जलाशय तैयार करने के लिए इंद्रावती नदी पर चार बांध और आठ तटबंध बनाए गए हैं. जलाशय को दो नहरों के जरिए 600 मेगावॉट के बिजलीघर से जोड़ा गया था. बिजलीघर से कालाहांडी की धरमगढ़ तहसील के 1,09,300 हेक्टेयर सूखाग्रस्त क्षेत्र की सिंचाई के लिए पानी छोड़ा जाता है.

मृतकों की संख्या के बारे में चली तीखी बहस नौकरशाही की अकर्मण्यता और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेरहमी, जिसकी वजह से यह दुर्घटना हुई, पर परदा नहीं डाल सकती. इस परियोजना के लिए आधा पैसा मुहैया कराने वाले विश्व बैंक ने बार-बार चेतावनी दी थी कि काफर बांध की ऊंचाई बढ़ाकर 630 मीटर कर दी जाए और शटर लगाकर सुरक्षा प्रणाली मजबूत की जाए लेकिन इंजीनियरों ने इस पर ध्यान नहीं दिया. इंद्रावती नदी पर बने मुख्य बांध को तो ऊंचा कर दिया गया लेकिन काफर बांध को ऐसे ही छोड़ दिया गया.

महापात्र बताते हैं कि इस काम का ठेका लेने वाले राष्ट्रीय परियोजना निर्माण निगम (एनपीसीसी) को काफर बांध ऊंचा करने और सुरंग में कंक्रीट लगाने का काम पूरा करने के लिए कई पत्र लिखे गए. लेकिन इस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया. समस्या यह है कि जिन ठेकेदारों को यह काम सौंपा गया था, उन्होंने ऐसे छोटे-मोटे काम करने के लिए छोटे ठेकेदारों को रख लिया. अधिकारियों ने बताया कि सरकार इस मामले में दखल नहीं दे सकती थी क्योंकि एनपीसीसी को यह ठेका अंतरराष्ट्रीय कांट्रेक्ट बांड के

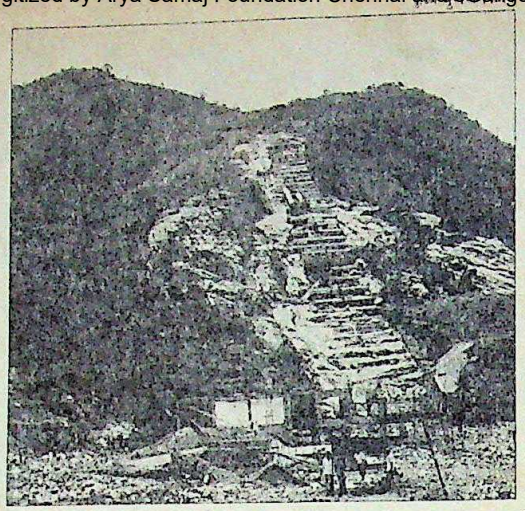

बाढ़ की विनाश लीला का दृश्य: अक्षम्य लापरवाही

जरिए मिला था और यह फैसला विश्व बैंक ने किया था. राज्य सरकार ने विश्व बैंक से अनुरोध किया है कि वह एनपीसीसी का ठेका रद्द कर दे. सरकार ने प्रमुख निर्माण इंजीनियर लिंगराज मिश्र और एक सुपरिटेंडेंट इंजीनियर को निलंबित करने के अलावा विकास आयुक्त एस. सुंदरराजन की अध्यक्षता में एक समिति गठित की है.

कुल मिलाकर, कालाहांडी के लिए तो यह बहुत बुरा हादसा है क्योंकि यहां के लोग पिछले चार दशकों से इंतजार कर रहे हैं कि इंद्रावती से निकली नहरें इसकी सूखी धरती की प्यास बुझाएंगी. 1959 में कालाहांडी को 'ओडीसा का हरित क्षेत्र' बनाने के लिए यह परियोजना शुरू की गई. लेकिन मध्य प्रदेश, ओडीसा और आंध्र प्रदेश के बीच कृष्णा-गोदावरी जल विवाद के कारण यह अधर में ही लटकी रही. शुरू में इस परियोजना का अनुमानित खर्च 200 करोड़ रु. लगाया गया था जो 1990 में बढ़कर 740 करोड़ रु. हो गया. और अब यह लागत 1,044 करोड़ रु. तक पहुंचने का अनुमान है.

अब बिजलीघर और सुरंग के नष्ट हो जाने से परियोजना की लागत और भी आसमान छूने लगेगी. खासकर इसलिए भी कि अब यह परियोजना नौकरशाही के जाल में फंस चुकी है और लगता है कालाहांडी के लिए सुरंग के उस ओर न तो बिजली है और न ही पानी.

—फरजंद अहमद

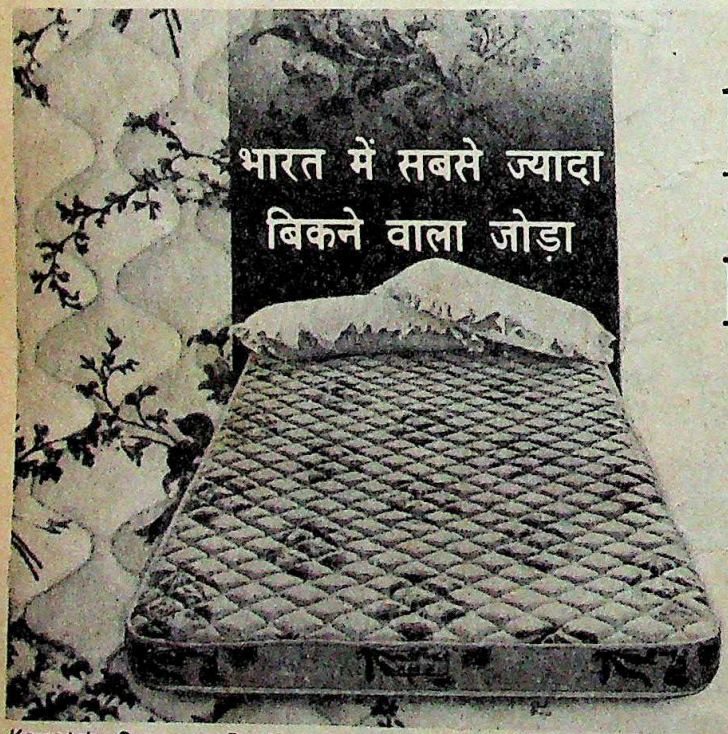

Kurl-on®
गद्दे
Kurlopillo®
तकिये

रात दर रात। सुख - चैन की नींद की गारंटी हर कर्ल-आन गद्दें और कर्लोपिल्लो तकिये के साथ। तभी तो यह भारत का सर्वाधिक बिकने वाला जोड़ा बन गया है।

असली कर्ल-आन/ कर्लोपिल्लो खरीदने के लिए कृपया अधिकृत डीलर से ही खरीदें।

Karnataka Consumer Products Ltd., Marketing Division: III Floor, North Block, Manipal Centre, Dickenson Road, BANGALORE – 560 042. Ph: 572264.

Offices & Showrooms: **NEW DELHI:** No. 3/3, Desh Bandhu Gupta Road, Pahar Ganj, Ph: 772019; 1764, Partap Street, Chuna Mandi, Pahar Ganj, Ph: 732133; **KANPUR:** 109/375, R.K. Nagar, G.T. Road, Ph: 247211; **FARIDABAD:** Sector 16A, No. 375; **BHOPAL:** 26, Mangal Sadan, Anekant Nagar, Near Lily Talkies, Jahangirabad, Ph: 67874; **RAIPUR:** 88, New Textile Market, Panderi, Ph: 26939; **PATNA:** Road No. 6A, Dayal Mansion, Rajendra Nagar, Near Rajendra Nagar Hospital, Ph: 57911; **CHANDIGARH:** (C&F) M/s. Garg Enterprises, SCO, 3028, Sector 22-D, Ph: 29203, 44424 (PP).

MASS/KCPL/91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमन भाटाती

मोवाड गांव: जल समाधि

महाराष्ट्र

मिट्टी में मिला जीवन

बांध टूटने से मोवाड गांव में जलप्रलय, राहत भी नाकाफी

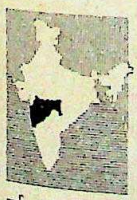

हादसे में मरे लोगों की गिनती अभी जारी है. लेकिन पिछले पखवाड़े नागपुर के नजदीक मोवाड गांव में वर्धा नदी का तटबंध टूटने से हुई तबाही का दृश्य बेहद खौफनाक है. मृतकों की संख्या का सरकारी अनुमान 500 के आसपास है लेकिन यह आंकड़ा 2,000 के आसपास भी हो सकता है.

वर्धा नदी के तट पर बसा मोवाड जलप्रलय के रास्ते में ही पड़ता था. नदी का जलस्तर बांध के 16 फुट तक पहुंच गया और पक्के मकानों, खंभों को धराशायी करता तबाही मचा गया.

बाढ़ का पानी जब उतरना शुरू हुआ तो मोवाड एक बड़ी कब्रगाह में तब्दील हो चुका था. सड़ते अनाज तथा पानी में फूले शवों की दुर्गंध वातावरण में फैली थी. मोवाड पर तो बाढ़ ने कहर ढाया ही, जवालखेड, खैरगांव, थूगांव और मदना गांव भी बाढ़ से प्रभावित हुए.

राहत की रफ्तार बहुत धीमी रही. शुरू में कामठी स्थित गार्ड्स रेजीमेंटल सेंटर के 250 सिपाहियों को राहत कार्य के लिए लगाया गया. इसके बाद सरकार ने गांव के बाहर भोजन और चिकित्सा केंद्र खोले लेकिन आपदा से बचे लोगों को शायद इनकी जानकारी नहीं थी. समाजसेवी संस्थाएं भी आगे आईं. लेकिन मदद शायद पर्याप्त नहीं थी. पर नेताओं को तो वहां पहुंचना ही था. रक्षामंत्री शरद पवार ने 28 लाख रु. के राहत अनुदान और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री सुधाकरराव नाइक ने मरने वालों के निकटतम संबंधियों को 15-15 हजार रु. के अनुदान की घोषणा की.

दूसरे 'अतिथि' भी बर्बादी देखने आए. नागपुर से गहनों से लदी महिलाएं, कलफदार धोती पहने पुरुष और अपने भोजन के पैकेट लेकर नौजवान भी पहुंचे. उनकी तो यह पिकनिक थी.

मोवाड की मुसीबतों की शुरुआत '60 के दशक में तटबंध बनने के साथ ही हो गई थी. यहां के निवासी मजबूत दीवार बनाने की मांग करते आ रहे हैं लेकिन हुआ कुछ नहीं. ताजा दुर्घटना को टाला जा सकता था. वर्षा की इस तबाही से पहले तटबंध की मरम्मत के दौरान कई पेड़ उखड़ गए थे, जिससे बांध और कमजोर हो गया. इस मरम्मत के आदेश काटोल के विधायक सुनील शिंदे ने दिए थे. इसलिए मोवाड के बचे हुए लोग इस विपदा के लिए उन्हें ही दोषी मान रहे हैं. लेकिन शिंदे का जवाब है, "ऐसे बेहूदा सवालों का मेरे पास जवाब नहीं है. देखते नहीं, मैं मृतकों की गिनती में व्यस्त हूं."

कुछ लोगों के लिए अब जीवन में कुछ भी बाकी नहीं रह गया है. मोतीराम कृष्ण का घर पानी में डूब गया. उनकी पत्नी कमला और सात वर्षीय बच्ची शांति भी उसी में लीन हो गईं. 40 वर्षीय सुरेश कमाने भी पत्नी और माता-पिता को खो बैठे. बड़ी कड़वाहट के साथ वे मोवाड छोड़कर जा रहे हैं. यशवंत भेगड़े, जिनके 70 वर्षीय पिता बाढ़ में बह गए, की शिकायत थी, "जिस तरह का खाना हमें मिल रहा है, उससे तो हमें हैजा हो जाएगा." मोवाड के निवासियों के लिए यह जलप्रलय सर्वग्राही थी. लेकिन जो बच गए हैं, उनके लिए तो अबूझ भविष्य ही बड़ी विपदा है. —गॉडफ्रे परेरा, मोवाड में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुंबई

दादा बाहर

पुलिस को खूनी भिड़ंतों की आशंका

पिछले महीने सुप्रीम कोर्ट ने जब तीन कुख्यात अपराधियों को रिहा कर दिया तो एक ही बार में मुंबई पुलिस की सारी मेहनत पर जैसे पानी फिर गया.

इससे पुलिस का मनोबल काफी गिर गया लगता है. राज्य में आतंकवाद और विघटनकारी गतिविधि निरोधक कानून (टाडा) लागू करने के लिए पुलिस काफी मशक्कत के बाद महाराष्ट्र सरकार को राजी कर पाई थी. यह कानून बचने का सिर्फ एक ही रास्ता बाकी छोड़ता है और वह है सुप्रीम कोर्ट. इसी का फायदा उठाते हुए गिरीश दुबे, डैनी और श्याम किशोर घरिकापट्टी बच निकलने में सफल रहे.

ये तीनों अपराधी मुंबई के कुख्यात गिरोहों से जुड़े हैं और संगीन अपराधों से उनका वास्ता रहा है. शिवसेना के पार्षद श्याम दुबे के बेटे गिरीश को हत्या और एके-47 बंदूक रखने के जुर्म में जेल हो चुकी है जबकि खूंखार माफिया सरगना दाऊद इब्राहीम के मार-कुटाई दस्ते के सदस्य डैनी पर हत्या की कोशिश का आरोप है. घरिकापट्टी दुबई जा बसे दाऊद का एक और बंदूकबाज है. दुबे और घरिकापट्टी को छुड़ाने में जाने-माने वकील राम जेठमलानी की प्रमुख भूमिका रही.

मुंबई पुलिस आयुक्त एस. राममूर्ति और संयुक्त पुलिस आयुक्त (अपराध और प्रशासन) अरविंद इनामदार के लिए चिंता की बात यह है कि इससे दूसरों के लिए राह खुल गई है. राममूर्ति कहते हैं, "यह पुलिस के मुंह पर तमाचा है." उन्हें लगता है कि टाडा के तहत बंदी बनाए गए 157 अपराधी रिहाई के लिए जल्दी ही इसी तरह सुप्रीम कोर्ट की शरण में जाएंगे. इनामदार को पक्का विश्वास है कि दुर्दांत अपराधी अरुण गावली, जो आजकल पुणे जेल में बंद है, जल्द ही इस फैसले से उत्साहित होकर अदालत की राह लेगा.

पुलिस को डर है कि अगर गावली एक बार छूट गया तो भारी खून-खराबा होना निश्चित है. राममूर्ति और इनामदार इसी को रोकने की कोशिश में लगे हैं. वे मुख्यमंत्री सुधाकरराव नाइक से मिलने की योजना बना रहे हैं और पुलिस सूत्रों के अनुसार केंद्रीय रक्षामंत्री शरद पवार से भी वे मिलेंगे. इनामदार कहते हैं, "हमें अपराधियों के साथ-साथ कानून से भी लड़ना होगा."

कोई भी व्यक्ति वर्ष 1987 से 1989 के दौरान दिन-दहाड़े होने वाली गिरोहों की लड़ाई की पुनरावृत्ति नहीं चाहता. उस दौरान पुलिस जिस किसी अपराधी पर हाथ डालती थी, वही जमानत ले लेता था. यह तब की बात है जब गावली और दाऊद के बीच युद्ध रेखा खींची हुई थी और मुंबई की सड़कों पर सरेआम गोलियां चलती थीं. 1989 में राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम लागू किए जाने पर इन दादाओं को जेल में डाल तो दिया गया लेकिन विभिन्न हाईकोर्टों से स्थगन आदेश लेकर वे छूट गए. हो सकता है इस बार पुलिस दोबारा खून-खराबा रोक पाने में सफल न हो पाए. —गॉडफ्रे पेरेरा

(बाएं से) घरिकापट्टी, दुबे, डैनी: कैद से आजाद

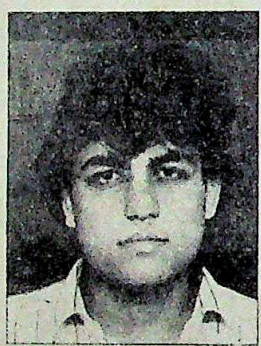

इधर, मुंबई पुलिस को डर है कि कानूनी खामियों की मदद से अपराधियों के आजाद हो जाने से प्रतिद्वंद्वी गिरोहों में खूनी जंग फिर शुरू हो जाएगी

हरियाणा

निर्दयी न्याय

और सारा गांव चुपचाप देखता रहा

पिछले पखवाड़े हिसार के निकट रतनगढ़ गांव में रात के सन्नाटे को भेदती मर्मभेदी चीखों ने एक बार फिर इस हकीकत को उजागर कर दिया कि भारत में अभी मध्ययुगीन अवशेष मौजूद हैं. इसे न्याय का वीभत्स रूप ही कहा जाएगा, जिसमें दो भाइयों ने अपनी दो बहनों की बड़ी निर्दयता से हत्या कर दी.

गांववालों के मुताबिक सिल्लो और कोरी 'बदचलन' और 'व्यभिचारी औरतें' थीं. उस मनहूस रात उनके भाइयों—रूप बसंत और ओमी ने उन दोनों को खेत में कुछ आदमियों के साथ बातचीत करते देख लिया. आगबबूला होकर उन्होंने वहीं दरांती से दोनों बहनों के टुकड़े कर डाले.

इससे भी वीभत्स बात यह कि अगले दिन दोनों ने अपने आपको जब पुलिस के हवाले कर दिया तो समूचा गांव स्वीकृति के भाव में चुपचाप देखता रहा. गांववालों का मानना है कि उन औरतों को गांव की इज्जत लुटाने के लिए अपने किए की सजा मिली है. और यह सजा थी अजनबी लोगों के साथ गप्पें लड़ाने की, बिलावजह हंस-हंसकर बातें करने की, बड़ों की इज्जत न करने की.

कोई दुखी है तो सिल्लो और कोरी की मां कट्टोबाई. उनसे कोई भी बात नहीं करता. इसलिए उन्हें रतनगढ़ छोड़ पास के गांव रत्तिया जाना पड़ा. बेटियों का बचाव करते-करते टूट चुकी कट्टो परिवारवालों से घिरी बैठी हैं. "क्या कहूं? 'किस्मत' का खेल है. मेरी बेटियां नेक थीं और अच्छी माएं थीं. अचानक हर कोई उनके बारे में किस्से गढ़ने लगा है, जो सरासर झूठ हैं."

और ये किस्से हर पल बढ़ते जाते हैं. जिस दिन से विधवा सिल्लो चार बच्चों के साथ अपनी मां के यहां रहने आई थी, तभी से उसे परेशान किया जाने लगा था. विधवा होने के नाते उस पर तरह-तरह की घटिया टिप्पणियां कसी जातीं. कट्टो कहती हैं, "रांड के बारे में तो बातें होती ही हैं."

बदचलनी का ठप्पा लगने के बावजूद सिल्लो ऐसी बातों को अनसुना करती रहती. कुछ दिनों बाद उसकी बहन कोरी भी वहीं आकर रहने लगी. उसके पति असरू ने नशे की हालत में उसे छुरा घोंप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद सक्सेना

परिवारजनों के साथ कट्टोबाई: 'किस्मत का खेल'

बहनों की हत्या की यह क्रूर घटना मध्य युग की याद ताजा करती है

...या था. पर गांववाले दूसरी ही कहानी ...ाते हैं. उनके मुताबिक कोरी ने ...नबूझकर उसे शराब पिलाई थी ताकि ...ह शाम को पति के एक दोस्त के साथ ...ज-मस्ती कर सके. उनका कहना है कि ...ी से क्षुब्ध होकर अमरू अपनी बीवी पर ...ला कर बैठा.

गांववालों को यही बात सबसे ज्यादा ...कती थी कि सिल्लो और कोरी घटिया ...ऱ्यणियों की रत्ती भर परवाह नहीं करतीं. ...सल वे खेतों में काम करती थीं. कट्टो ...ती भी हैं, "पहले तो गांववालों ने मेरे ...ड़कों को सिल्लो की दुबारा शादी करने ...र मजबूर किया. लेकिन बात नहीं बनी तो ...र-उधर की बातें बनाना शुरू कर दीं. ...ो के आदमी नहीं थे न!"

हत्यारे भले ही जेल में हैं लेकिन ...वालों की अंतरात्मा नहीं जागी. हिसार ...उपायुक्त समीर माथुर कहते हैं, "यह ...ी तरह दकियानूसी समाज है. जन्म लेने ...ाद सब कुछ यहां के नियमों के ...नुसार करना पड़ता है. और कोई चारा ...ही है." शायद मौत के सिवा.

राहुल पाठक, हिसार में

अंतर्कथा

इंद्रजीत बधवार

विरासत पर बवाल

विश्वनाथ प्रताप सिंह और अजित सिंह के बीच तनाव की एक मनोवैज्ञानिक गुत्थी उस जोड़-तोड़ में निहित है कि कई घटकों वाले जनता दल के 56 सांसदों में कितने, किस नेता के नियंत्रण में हैं और पार्टी तोड़ने के लिए कौन पर्याप्त सांसद जुटा सकता है. दो विपरीत दिशाओं की तरह ये दोनों नेता एक-दूसरे से अलग रहने या एक-दूसरे से जूझते रहने को अभिशप्त हैं.

दोनों ही अपने-अपने तई वस्तुतः राजा हैं. विश्वनाथ प्रताप सिंह मांडा की सामंतशाही के उत्तराधिकारी हैं तो अजित अपने पिता के जाति और क्षेत्र के जोड़ से बनाए राजनैतिक राजशाही के वारिस. इस राजशाही ने कभी कांग्रेस के अपराजेय साम्राज्य को भी हिलाकर रख दिया था. जनता दल में इन दिनों चल रही जंग का मकसद इसी राजशाही या उसके अवशेष पर कब्जा जमाए रखना है.

इसमें हर प्रतिद्वंद्वी—अजित और वी.पी. सिंह दोनों ही—दूसरे को घुसपैठिया मानता है. चौधरी चरण सिंह ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश को केंद्र बनाकर जाट नेतृत्व में जाटों और पिछड़ी जातियों का ताकतवर गठजोड़ बनाया था जिससे उत्तरी भारत का चुनावी गणित बदल गया. उत्तर प्रदेश को अपना सत्ता आधार मानने वाले वी.पी. सिंह खुद को इस गठजोड़ का जायज उत्तराधिकारी मानते हैं क्योंकि उन्होंने ही पिछड़ों को सबसे अधिक एकजुट किया और चरण सिंह के इस राजनैतिक आधार में मुसलमानों को जोड़कर उसे और मजबूत बनाया. अजित खुद को अपने पिता की उस राजनैतिक राजशाही का वारिस मानते हैं जिसका दोहन एक ऐसा व्यक्ति करने पर तुला है जो जाट नहीं, ठाकुर है.

रेखांकन: अयनी

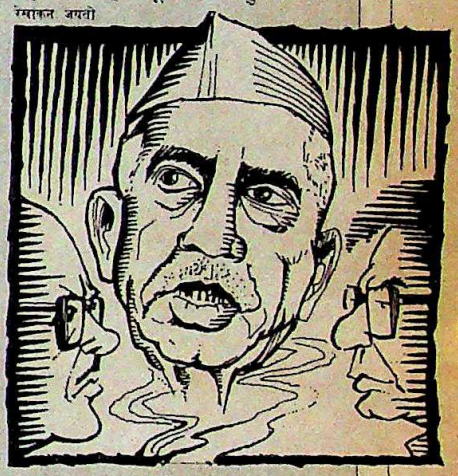

इन दोनों नेताओं की सार्वजनिक नोक-झोंक सिर्फ पार्टी पदों को लेकर ही नहीं हो रही है. जनता दल के क्षत्रपों में से अजित सिंह अपने ही गढ़ में राजा के मंडल अभियान से सबसे ज्यादा प्रभावित हुए. कभी सिर्फ पश्चिम उत्तर प्रदेश से ही उनके पास 20 सांसद हुआ करते थे. आज वे केवल 10 के समर्थन का ही दावा कर सकते हैं क्योंकि मंडल विरोधी जाटों ने पिछले चुनाव में भाजपा की ओर रुख कर लिया.

पहचान बचाने के लिए अपने मूल आधार—जाटों—की ओर लौटना अजित की मजबूरी बन गई है. अगर अजित सिंह पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जाट-पिछड़ा गठजोड़ कायम करने में सफल हो भी जाते हैं तो क्या वे मुसलमानों को अपने साथ रख पाएंगे? शायद नहीं. हाल ही में मुफ्ती मुहम्मद सईद के घर मुसलमान नेताओं की बैठक में जाटों के खिलाफ जबर्दस्त नाराजगी जाहिर की गई क्योंकि जाट लोगों ने पिछले चुनाव में लगभग सभी मुसलमान उम्मीदवारों का बहिष्कार ही कर दिया. क्या यह बात वी.पी. सिंह के हक में जाएगी? अभी कहना मुश्किल है. फिलहाल, उत्तर प्रदेश के कई हिस्सों में मुसलमान और हरिजन नेताओं के बीच नया गठजोड़ बन रहा है जो भाजपा से टक्कर होने पर इंका के ही पक्ष में जा सकता है.

फिलहाल अजित सिंह अपने मूल आधार किसानों की ओर वापसी के लिए दिल्ली में किसान सम्मेलन कर रहे हैं और वी.पी. सिंह उनसे पहल छीन लेने की कोशिश में इस माह के आखिर में 'किसान सप्ताह' मनाने की घोषणा कर रहे हैं. इस दौरान वे सरकार की कृषि नीति की खिंचाई करने के लिए उत्तर प्रदेश के सैंकड़ों गांवों की यात्रा करेंगे. यानी चरण सिंह की मृत्यु के पांच साल बाद उनके राजनैतिक जनाधार को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर खींचतान हो रही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर.सी. साहू

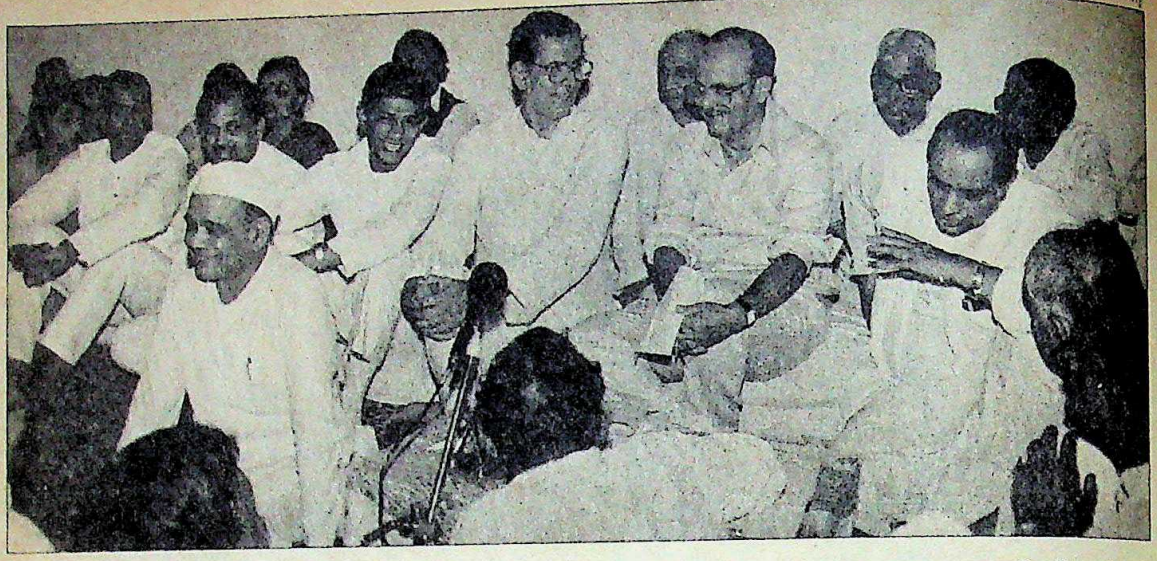

श्यामाचरण शुक्ल, अर्जुन सिंह और दूसरे नेताः घमासान की तैयारी

मध्य प्रदेश

सत्ता की प्रबल आस

लेकिन पटवा सरकार को हटाने पर इंका में दो राय

विजय हमेशा सिर चढ़कर बोलती है. पिछले लोकसभा चुनाव में मध्य प्रदेश में सत्तारूढ़ भाजपा से बाजी जीतने वाली इंका के कुछ नेताओं के साथ ऐसा ही हो रहा है. लेकिन कुछ नेता ऐसे भी हैं जिन्हें वास्तविकताओं का एहसास है.

लोकसभा चुनाव के ठीक पहले मध्य प्रदेश के बड़बोले कांग्रेसी नेता कमलनाथ ने खम ठोंककर ऐलान किया था कि राज्य में भाजपा सरकार के पतन की उलटी गिनती शुरू हो चुकी है. "पटवा जी समझ लें," कमलनाथ ने कहा, "उनकी सरकार साठ दिनों के अंदर गिर जाएगी."

वे साठ दिन कबके पूरे हो चुके हैं. कमलनाथ नई केंद्रीय सरकार में मंत्री बन चुके हैं. पर पटवा सरकार अभी भी कांग्रेसियों की छाती पर मूंग दल रही है. अपनी गर्वोक्ति की याद दिलाने पर पिछले पखवाड़े उन्होंने कहा, "उलटी गिनती का समय थोड़ा बढ़ाना पड़ेगा."

पर पिछले पखवाड़े भोपाल में प्रदेश कांग्रेस प्रबंध समिति की बैठक के समय जो राजनैतिक समीकरण उभरकर आए उनमें ऐसा लगता है कि समय थोड़ा नहीं काफी बढ़ाना पड़ेगा. वैसे तो प्रबंध समिति ने पटवा सरकार को तुरंत बरखास्त कर राज्य में नए चुनाव कराने की मांग की पर उसके पीछे ज्यादा जोश-खरोश नजर नहीं आया. इस मांग पर मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा ने कहा, "हमारी सरकार कैसी चल रही है यह बताने के पहले वे अपनी सरकार तो चला लें."

प्रदेश में भाजपा सरकार की बरखास्तगी को लेकर कांग्रेस दो खेमों में बंटी नजर आती है. एक तरफ तो वे नेता हैं जो भाजपा को गिराकर सत्ता से हमबिस्तर होने के लिए बेताब हैं. दूसरी तरफ दिल्ली के तख्त पर नशीन वे दिग्गज हैं जो मुंह से भाजपा को हटाने की बात तो करते हैं पर दिल से ऐसा नही चाहते. पर्यटन और नागरिक उड्डयनमंत्री माधवराव सिंधिया ने मंद मुस्कान के साथ कहा, "पटवा सरकार के रहने में ही हमारा फायदा है. वे जितने दिन राज करेंगे भाजपा की हालत पतली होगी."

पहले खेमे के नेता श्यामाचरण शुक्ल हैं जो मुख्यमंत्री की गद्दी पर दोबारा बैठने के लिए उतावले हो रहे हैं. 'इंडिया टुडे' से आत्मविश्वास से उन्होंने कहा, "यह सरकार ज्यादा दिन चल नहीं सकती."

पर दूसरे खेमे की तत्काल सरकार गिराने में खास दिलचस्पी नहीं. अर्जुन सिंह-सिंधिया-कमलनाथ सत्ता सुख भोग रहे हैं. उन्हें यह भी डर है कि चुनाव के बाद प्रदेश में शुक्ल बंधु सत्ता न हथिया लें. प्रदेश कांग्रेस के मुंहफट उपाध्यक्ष हजारीलाल रघुवंशी बोले, "श्यामाचरण जी ने तो चुनाव के टिकट भी बांट दिए और कैबिनेट भी बना ली है."

पर कांग्रेस के सामने विधानसभा चुनाव कराने के राजनैतिक कारण भी हैं. अगले साल राज्यसभा के चुनाव होंगे. विधानसभा में भाजपा का दो-तिहाई बहुमत बरकरार रहा तो राज्यसभा में कांग्रेस हमेशा फिसड्डी ही बनी रहेगी. सो, भोपाल में जड़ें मजबूत करना जरूरी है.

जो सरकार खुद एक टांग पर खड़ी हो क्या वह विपक्ष के छत्ते में हाथ डालेगी? भाजपा के आला नेताओं में से एक, विजयाराजे सिंधिया के विश्वस्त सलाहकार संभाजीराव आंग्रे ने कहा, "कांग्रेस में सारे लोग इतने बेवकूफ नहीं." निश्चय ही राज्य सरकार बरखास्त करना कांग्रेस की प्राथमिकताओं में नहीं है.

जिस समय भोपाल में राज्य सरकार की बरखास्तगी की मांग उठ रही थी, लगभग उसी समय दिल्ली में 27 में से 16 सांसद एकजुट होकर प्रदेश कांग्रेस नेतृत्व के खिलाफ आवाज उठा रहे थे कि प्रदेश अध्यक्ष अर्जुन सिंह, विधायक दल नेता श्यामाचरण शुक्ल, युवक कांग्रेस अध्यक्ष मुकेश नायक, महिला कांग्रेस अध्यक्ष रामरानी जौहर, सेवादल अध्यक्ष प्रताप मेहता और राष्ट्रीय छात्र संगठन अध्यक्ष राजकुमार पटेल की छुट्टी की जाए.

जाहिर है इस ज्ञापन से कांग्रेस में आपसी उठापटक और जोर पकड़ेगी. उससे वे निबट लें तभी पटवा सरकार की बारी आएगी.

—नरेंद्र कुमार सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4 खास बातें जिनकी वजह से आपको यूनाइटेड इंडिया की मशीनरी ब्रेकडाउन इन्श्यूरेन्स पॉलिसी ले लेनी चाहिए.

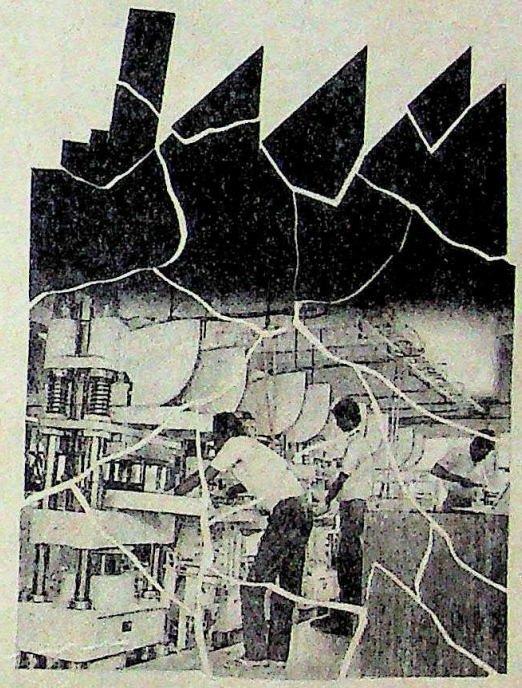

1. उत्पादन से संबंधित

"महत्त्वपूर्ण मशीनों में से एक भी ठप्प हो गई तो उत्पादन का पूरा काम तो रुक ही जाता है, उत्पादन का नियत कार्यक्रम भी समय पर पूरा नहीं हो पाता."

2. बिक्री से संबंधित.

"कंपनी की सफलता या असफलता कंपनी के उत्पादनों के बाज़ार में लगातार उपलब्ध होने पर बहुत निर्भर करती है. उत्पादन समय पर न पहुंचाए जाने का मतलब है वितरकों और ग्राहकों का विश्वास खो देना और प्रतिस्पर्धियों को पैर जमाने का मौका देना."

3. मुनाफे से संबंधित.

"मशीन बंद, तो समझिए कैश-फ्लो में गड़बड़ी, पैसे की तंगी. रोज़ के कामकाज में लगी पूंजी. गैर-उत्पादक लागत में फंस जाती है. इस सबसे मुनाफा काफी कम हो जाता है."

4. देखभाल से संबंधित.

"टर्बाइन्स, कम्प्रेसर्स, पंप्स, जनरेटर्स, ट्रांसफॉर्मर्स सभी कीमती मशीनें हैं. इनकी रोजमर्रा की देखभाल तो मुमकिन है लेकिन इनका अचानक ठप्प हो जाना महंगा पड़ सकता है."

मशीनरी चाहे इलेक्ट्रिकल हो या मैकेनिकल, काम कर रही हो या बंद, उसकी सफाई की जा रही हो या जांच, ओवरहॉलिंग हो रही हो या उसे हटा कर इंश्योर्ड कराई सीमाओं में ही फिर से बिठाया जा रहा हो— यूनाइटेड इंडिया अचानक हो जानेवाली क्षति या टूट-फूट की स्थिति में भरपाई करती है. मशीनरी ब्रेकडाउन यानी मशीन के ठप्प हो जाने से मुनाफे में आ जाने वाली कमी जैसी स्थितियों के लिए इस पॉलिसी की विस्तारित सुविधा भी उपलब्ध हो सकती है.

हां तो, आप बड़ी फैक्टरी के मैनेजर हो या लघु उद्योगपति, इस बात का पहले से पक्का इन्तजाम कर लें कि मशीनरी के ठप्प हो जाने और फिर से पैसा लगा सकने की हालत न होने की वजह से आपका सारा कामकाज ही न रुक जाए.

यूनाइटेड इंडिया की बीमा पॉलिसी को बना लीजिए— अपनी पॉलिसी का अटूट हिस्सा.

UNITED INDIA

यूनाइटेड इंडिया इन्श्यूरेन्स कं. लि.

भारतीय साधारण बीमा निगम की सहायक संस्था

24, व्हाइट्स रोड, मद्रास 600 014.

जल्दी करें. आप हमारे 1120 से भी ज्यादा कार्यालयों में कहीं भी संपर्क कर सकते हैं.

HTA 7762 R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्टून: अजीत नैनन

नियुक्तः सुरेंद्रनाथ पंजाब के नए राज्यपाल बनाए गए. जम्मू-कश्मीर में पुलिस महानिरीक्षक रह चुके सुरेंद्रनाथ जनरल ओ.पी. मल्होत्रा की जगह लेंगे. राष्ट्रपति भवन की विज्ञप्ति के अनुसार वे पंजाब के राज्यपाल होने के साथ-साथ उसकी राजधानी और केंद्रशासित प्रदेश चंडीगढ़ के प्रशासक का पदभार भी संभालेंगे.

निधनः धारवाड के शास्त्रीय गायक 71 वर्षीय **डॉ. बासवराज राजगुरु** नहीं रहे. उन्होंने किराना, ग्वालियर और दूसरे घरानों की गायकी के मिश्रण से अपनी एक खास शैली विकसित की. बासवराज को कई दूसरे सम्मानों के अलावा पद्मश्री और पद्मभूषण से भी सम्मानित किया गया था.

शपथ लीः लीला सेठ हिमाचल प्रदेश की नई मुख्य न्यायाधीश बनीं. देश के किसी हाईकोर्ट की वे पहली महिला मुख्य न्यायाधीश नियुक्त की गई हैं. उन्होंने इंग्लैंड में कानून की पढ़ाई की और उपाधि ली. लीला सेठ कुछ समय तक दिल्ली हाईकोर्ट में भी मुख्य न्यायाधीश का पदभार संभाल चुकी हैं. वे मशहूर लेखक विक्रम सेठ की मां हैं.

पाबंदीः गुजरात सरकार ने गर्भधारण के बाद भ्रूण का लिंग परिवर्तन करने का दावा करने वाली **दवा** पर पाबंदी लगा दी है.

अयोग्य घोषितः रामकृष्ण हेगड़े कर्नाटक विधानसभा की सदस्यता के अयोग्य करार दिए गए हैं. राज्यपाल का यह फैसला 5 दिसंबर से प्रभावी होगा. फैसला विधान परिषद में कांग्रेस के सदस्य ए.के. सुबैय्या की याचिका पर हुआ. उनका तर्क था कि हेगड़े योजना आयोग के उपाध्यक्ष और विधायक दोनों ही पदों पर एक साथ थे.

मांगः लोकसभा में क्रुद्ध **भाजपा सदस्यों** ने माधवराव सिंधिया से माफी मांगने को कहा. उन्हें सिंधिया के उस बयान पर एतराज था जिसमें उन्होंने भाजपा नेताओं को 'देशद्रोही' कहा था. भाजपा ने कहा कि अगर मंत्री ने माफ़ी नहीं मांगी तो वह सरकार के प्रति अपने रवैए पर पुनर्विचार करेगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़-तोड़ से जान बचाएंगे

चर्चा है कि धीरूभाई अंबानी लार्सन ऐंड टुब्रो के 'अधिग्रहण' के दूसरे प्रयास में जुटे हैं, वहीं रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) के अंदरूनी सूत्रों के मुताबिक खस्ताहाल रिलायंस पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड (आरपीएल) को आरआईएल में विलय करने की गुत्थियां सुलझाई जा रही हैं. कुछ साल पहले उठाया यह कदम विपरीत विचारों वाली सरकार और एकाधिकार तथा प्रतिबंधित व्यापार कानून के कारण स्थगित कर दिया गया था. अब नई सरकार के अनुकूल रवैए और कानून में छूट के मद्देनजर मूल प्रस्ताव पर फिर काम शुरू कर दिया गया लगता है. संभवतः विलय का काम आरपीएल के पांच शेयरों के बदले आरआईएल का एक शेयर देकर अंजाम दिया जा सकता है. यही नहीं, कंपनी के अंदरूनी सूत्रों के मुताबिक अगर आरआईएल में विलय न हो पाया तो आरपीएल का लार्सन ऐंड टुब्रो में विलय किया जा सकता है.

निर्यातकों की सेवा

जब देश उदारीकरण की ओर चल पड़ा हो और भारी निर्यात की तैयारी कर रहा हो तो वित्तीय क्षेत्र में नए-नए उपायों का सूत्रपात जरूरी ही है. ऐसा ही एक उपाय कर्ज रक्षा की सुविधा देना है. मुंबई स्थित एक निजी वाणिज्य बैंक अंतरराष्ट्रीय सहयोग से अपने ग्राहकों को कर्ज सुरक्षा सुविधा की पेशकश कर रहा है. विश्व के नई प्रमुख वित्तीय संस्थाओं से सहयोग की प्रक्रिया में लगा यह बैंक निर्यात के मूल्य के 1 से 1.5 फीसदी शुल्क पर यह सेवा उपलब्ध कराएगा. इसका मतलब यह है कि वह विदेशी पार्टियों से निर्यातकों का बकाया वसूलने की खुद जिम्मेदारी लेगा. फिलहाल बकाया वसूलना निर्यातकों के लिए दुःस्वप्न सरीखा है.

अब आ गई आफत

सार्वजनिक क्षेत्र की चुनींदा कंपनियों के 20 फीसदी शेयर साझा कोषों और निजी लोगों को बेचने का बजट का एक प्रस्ताव धीरे-धीरे प्रगति पर है. वित्त मंत्रालय और भारतीय यूनिट ट्रस्ट, कैनबैंक साझा कोष तथा भारतीय स्टेट बैंक के कैपिटल मार्केट्स के बीच विचार-विमर्श के बाद सरकार सार्वजनिक क्षेत्र के शेयरों का मूल्य तय करने के लिए समिति बना रही है. सार्वजनिक क्षेत्र के मुखिया महसूस करने लगे हैं कि उन्हें नए तरह के शेयरधारकों के प्रति जवाबदेह होना पड़ेगा. सरकार तो मुनाफा हथिया लेगी पर उनके पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा. दूसरी तरफ उनके नए शेयरधारक— साझा कोष—उनसे बेहतर नतीजे की उम्मीद करेंगे जिससे उन कोषों के निवेश को उचित ठहराया जा सके. नतीजतन सार्वजनिक क्षेत्र की ऐसी इकाइयों को या तो सुधरना होगा या वे पिट जाएंगी.

कोरियाई कंपनी के सपने

दक्षिण कोरिया की विशाल कंपनी हुंडाई हेवी इंडस्ट्रीज भारत में अपना कारोबार बढ़ाने जा रही है. नीलम ऑफशोर ऑयलफील्ड डेवलेपमेंट प्रोजेक्ट का 4,000 करोड़ रु. का ठेका तो उसकी झोली में है ही. अब हुंडाई मुंबई के समुद्र किनारे के क्षेत्र में एल-II परियोजना के लिए भी कोशिश करने की योजना बना रही है. हुंडाई की योजना तेल क्षेत्र के बाहर भी हाथ-पैर फैलाने की है. दक्षिण कोरिया की यह कंपनी कम दर पर उपलब्ध श्रमिकों का लाभ उठाने के लिए ऑटोमोबाइल उपकरण कंपनी लगा सकती है.

वक्त वक्त की बात

अगर नई उद्योग नीति चल पड़ती है तो गैर-लाइसेंसीकृत उद्योगों के समय की बचत ही इस कदम को जायज ठहरा देगी. मसलन, आशय-पत्र गैरजरूरी हो जाने से ही तीन से आठ महीने की बचत हो जाएगी. तकनीकी विकास महानिदेशालय से मंजूरी की जरूरत खत्म होने से चार से छह माह की और बचत

होगी. और एकाधिकार प्रतिबंधित व्यापार कानून का खात्मा अन्य छह महीने से साल भर तक की बचत कर देगा. पूंजीगत वस्तुओं के आयात के नियम नरम किए जा रहे हैं, सो बचत सूची में तीन से पांच महीने और जुड़ जाएंगे. इसके अलावा कुछ क्षेत्रों में विदेशी सहयोग के सरल हो जाने से भी तीन से पांच महीने की बचत होगी.

टूथपेस्ट पर टकराव

उपभोक्ता उत्पाद व्यवसाय में टूथपेस्ट के क्षेत्र को शायद ही कोई छोड़ना चाहे. पिछले साल 400 करोड़ रु. के मूल्य के 37,000 टन टूथपेस्ट की खपत हुई और इसके बाजार की प्रगति दर सालाना 10 फीसदी है. साबुन और डिटर्जेंट के बाजार में अपनी धाक जमाए रखने वाली हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड अभी टूथपेस्ट के बाजार में तो नई है पर अब वह इसमें भी बड़ा हिस्सा चाहती है. क्लोज-अप के लाल, फिर नीले जेल पेस्ट को कामयाबी से बाजार में उतारने के बाद अब वह इसका हरा जेल पेस्ट निकाल रही है. एशियाई बाजारों में हरे जेल पेस्ट की सफलता को देखते हुए हिंदुस्तान सीबा-गाइगी लिमिटेड भी ऐसा ही पेस्ट उतारने जा रही थी. सीबा के सूत्र इस पर ज्यादा नहीं बोलते. वे सिर्फ इतना ही कहते हैं कि वे दूसरे उपायों पर सोच रहे हैं. मतलब यह कि टूथपेस्ट युद्ध की तैयारी चल रही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया रोज़ाना

रसोई में करे चमत्कार
मुट्ठी भर रोज़ाना
और आपका प्यार!

सिर्फ़ मुट्ठी भर रोज़ाना बढ़ाए
सब्ज़ी का आकार और
रखे स्वाद बरकरार.
किफ़ायती और स्वास्थ्यकर
पैक में नया रोज़ाना.

कॉम्प्लान, फ़ैरेक्स, ग्लुकॉन-सी,
ग्लुकॉन-डी बनानेवालों की
ओर से एक और भेंट.

मुफ़्त!
हर एक पैक के साथ.

ROZANA

भरपूर प्रोटीनयुक्त सोया बड़ी और दाना.

100% शाकाहारी

फ़िलहाल चुने हुए बाज़ारों में उपलब्ध.

Gx 363.91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

तेजी के तेवर

कड़े उपायों का प्रतिकूल असर नहीं

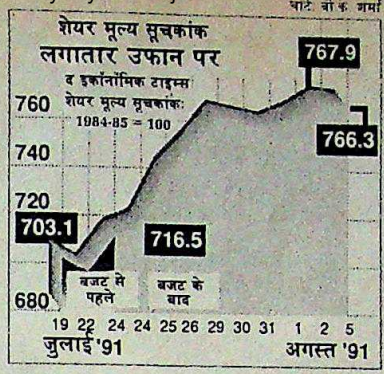

नरसिंह राव सरकार के सत्ता में आने के बाद से 400 अंक या 33 फीसदी बुलंदी पर चढ़ गए मुंबई शेयर बाजार (मुंशेबा) के संवेदनशील सूचकांक के अब नीचे आने के लक्षण नहीं दिखाई दे रहे. और 3 अगस्त को खत्म होने वाले पखवाड़े को तो यह सूचकांक अब तक के सबसे ऊंचे स्तर 1,700 के बिंदु से उछलकर 1,703.15 के बिंदु तक पहुंच गया. बाद में वह 1,680.62 के बिंदु पर स्थिर हुआ, यानी उसमें 80 अंक की शुद्ध वृद्धि हुई.

दिलचस्प बात यह है कि यह उछाल सिर्फ परपरागत सट्टेबाजी वाले शेयरों तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि ढेर सारे नकदी खरीद-फरोख्त वाले शेयरों सहित सभी में दिखाई दिया. मुंबई के लिए इकॉनॉमिक टाइम्स का अपेक्षाकृत कठोर सूचकांक भी 892.8 की नई बुलंदी पर पहुंच गया. और यह सब भी कारोबार पर कई तरह की पाबंदियों, ऊंची बदला दरों और वित्तीय संस्थानों की भारी बिकवाली के बावजूद हुआ.

जाहिर है कि शेयर बाजार के वारे-न्यारे हो रहे थे. हालांकि मुद्रास्फीति बढ़ने और आर्थिक कठिनाइयों के मद्देनजर इसका उलटा ही होना चाहिए था. शेयर बाजार के एक अगुआ विश्लेषक का कहना है, "यह सिर्फ नजरिए का सवाल है. बाजार में उत्साह है क्योंकि लोगों को लगता है कि कम-से-कम तुलनात्मक रूप से ही सही अतिरिक्त करों और लेवी के मामले में उद्योगों को बख्श दिया गया है." बाजार में हमेशा दीर्घकालीक सोच चलती है. बहुत से सटोरियों को लग रहा है कि नई उद्योग नीति तो जैसे खुदा की न्यामत बनकर आई है. पर एक वित्तीय विश्लेषक की चेतावनी है, "अगर यह प्रयोग नाकाम रहा तो हम पर कयामत बरपा हो जाएगी."

हालात कितने नाजुक और तनाव भरे हैं यह तब पता चला जब 2 अगस्त को अफवाह फैल गई कि वित्तमंत्री मनमोहन सिंह ने राजीव गांधी फाउंडेशन को 100 करोड़ रु. का अनुदान देने पर उठे विवाद के कारण इस्तीफा दे दिया है. बाजार में दहशत फैल गई और शेयरों के भाव दनादन लुढ़कने लगे. आखिर जब पता चला कि यह बात बेबुनियाद है तब जाकर कहीं हालत सुधरी.

शेयरों में सबसे तेज गति रिलायंस इंडस्ट्रीज में रही. 203 रु. तक पहुंचा इसका शेयर 193 रु. से गिरा तो 183 रु. पर ही जाकर दम लिया. हालांकि बाद में वह फिर 194 पर जा पहुंचा. अन्य शेयरों में लार्सन ऐंड टुब्रो नौ रु. चढ़कर 152 रु. पर पहुंच गया क्योंकि अफवाह यह थी कि अंबानी फिर इस भारी-भरकम इंजीनियरिंग कंपनी पर काबिज होने जा रहे हैं. बाजार में इस वक्त अफवाहें चल रही हैं, लेकिन कोई भी इस बात पर शर्त बदने को तैयार नहीं कि बाजार में पिछले दो महीनों जैसी तेजी आगे भी बनी रहेगी.

जमा स्टॉक

	1991 ऊंचा	1991 नीचा	बंद 5.8.91	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	174.00	100.00	173.00	11.00 +
एल्को सीमेंट	3200.00	1300.00	3100.00	520.00 +
एशियन पेंट्स	267.50	215.00	235.00	5.00 −
एटलस कोप्को	111.25	42.00	105.00	20.00 +
बजाज ऑटो	680.00	500.00	655.00	65.00 +
बड़ौदा रेयॉन	940.00	400.00	865.00	300.00 +
बाटा इंडिया	93.00	72.00	93.00	9.50 +
कल्यानपुर	309.00	228.00	301.00	17.00 +
बिरला जूट	341.00	168.00	337.00	46.00 +
ब्लो प्लास्ट	135.00	40.00	145.00	22.50 +
राबे ड्राइंग	267.50	150.00	258.75	51.25 +
सिटा.इंडिया	180.00	112.00	171.00	15.00 +
एफ बांड	172.00	116.00	152.00	14.00 +
कैडबरी इंडिया	197.50	132.50	191.25	27.50 +
कैप्टोल इंडिया	435.00	162.50	407.50	45.00 +
केंचुरी टेक्सटाइल्स	6950.00	3625.00	6725.00	385.00 +
कोलगेट पामो.	351.25	250.00	337.50	5.00 +
कामनामिड.	170.00	76.25	155.00	10.00 +
सीमेंटम	300.00	123.00	259.00	42.00 +
डनलप	72.00	46.50	72.00	16.00 +
डियाई होटल्स	60.00	35.00	50.00	5.00 −
एस्कार्ट्स	172.00	127.00	162.00	12.50 +
फिनी. केबल्स	260.00	140.00	237.50	40.00 +
गारवारे नाइलोन	44.00	27.00	40.50	2.50 +
जी.ई. सिंगिंग	101.00	25.00	89.50	11.25 +
गुज.स्टेट फर्टि.	260.00	150.00	232.50	15.00 +
गोदरेज इंडिया	312.50	167.50	302.50	51.50 +
गुज.अंबुजा	246.25	90.00	236.25	50.75 +
हिंदु.एल्यु.	335.00	200.00	322.50	16.25 +
हिंदुस्तान लीवर	2100.00	650.00	2000.00	300.00 +
हिंदुस्तान मोटर्स	160.00	132.50	145.00	5.00 +
हैल्कर	33.50	18.80	29.25	6.25 +
आईसीआई	4100.00	2400.00	3900.00	650.00 +
इंडियन आर्गेनिक	80.00	30.00	71.00	14.00 +
इंडियन रेयॉन	63.00	30.00	71.00	14.00 +
इंगरसॉल-रैंड	172.50	104.50	164.50	18.50 +
आईटीसी	385.00	240.00	350.00	5.00 −
जे.के.सिथेटिक्स	260.00	99.00	251.00	61.00 +
काइनेटिक इंजी.	55.00	27.00	50.00	14.50 +
किर्लो. क्युमिंस	200.00	145.00	190.00	3.00 +
केएसबी पंप्स	185.00	95.00	175.00	31.25 +
लार्सन ऐंड टुब्रो	240.00	160.00	225.00	15.00 +
लिप्टन	163.00	90.00	160.00	50.00 +
लोहिया-मशीन्स	170.00	57.50	135.00	10.00 −
महिंद्रा-महिंद्रा	37.50	21.00	32.50	10.00 +
मास्टरशेयर्स	85.00	57.50	81.25	15.00 +
मोटर इंडस्ट्रीज	42.50	20.00	29.75	5.90 −
मुकुंद लिमि.	1525.00	675.00	1400.00	30.00 +
नेशनल आर्गे.	215.00	117.50	148.75	3.75 +
नेस्ले इंडिया	1950.00	925.00	1840.00	330.00 +
निरलॉन	190.00	111.25	188.00	26.50 +
ओरके सिल्क मि.	41.25	16.00	33.50	11.00 +
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	39.00	17.50	35.50	13.00 +
प्रीमियर ऑटो	117.00	53.00	116.00	27.50 +
रेमंड	57.00	30.00	53.50	6.00 +
रेकिट-कोलमैन	192.50	110.00	176.25	17.50 +
रिलायंस इंडस्ट्रीज	370.00	205.00	370.00	79.00 +
सीमेंस इंडिया	204.00	91.25	195.00	65.00 +
शॉ वैलेस	170.00	112.50	166.25	11.25 +
श्रीराम फाइबर्स	185.00	77.00	178.00	44.00 +
एसकेएफ बेय.	61.00	33.00	61.00	15.00 +
स्पिक	2925.00	1650.00	2650.00	50.00 −
टाटा स्टील	76.00	33.00	64.00	7.00 +
टेल्को	248.00	170.00	235.00	20.50 +
टाइटन वाचेस	277.50	142.50	270.00	25.00 +
वाम ऑर्गेनिक	93.75	58.00	80.00	5.00 +
वीडियोकॉन	195.00	102.50	185.00	2.50 −
वोल्टास	285.00	133.75	210.00	30.00 +
विमको	135.00	92.50	130.00	10.00 +
	47.00	16.00	46.00	10.00 +

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	विक्रय मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	20.1856	19.9796
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	213.8854	211.3120
बहरीन	दीनार	1	68.5457	66.6488
बांग्लादेश	टका	100	72.4984	71.4028
कनाडा	डालर	1	22.4838	22.2589
डेनमार्क	क्रोना	1	3.8815	3.8415
मिस्र	पौंड	1	8.4843	7.9029
फ्रांस	फ्रैंक	1	4.4843	4.3764
जर्मनी	मार्क	1	15.2672	14.8810
हांगकांग	डालर	1	3.3201	3.2879
इंडोनेशिया	रुपिया	100	1.3237	1.3030
ईरान	रियाल	100	–	–
इटली	लीरा	100	2.0120	1.9880
जापान	येन	100	19.2678	18.7970
केन्या	शिलिंग	1	0.9018	0.8919
कुवैत	दीनार	1	–	–
मलेशिया	डालर	1	9.3054	9.2130
मारीशस	रुपया	1	1.5802	1.5613
नेपाल	रुपया	1	0.6070	0.6056
हालैंड	गिल्डर	1	13.3298	13.1954
पाकिस्तान	रुपया	1	1.0107	0.9913
सिंगापुर	डालर	1	14.9410	14.7894
स्पेन	पेसो	1	0.2403	0.2378
श्रीलंका	रुपया	1	0.6233	0.6144
स्वीडन	क्रोना	1	4.1403	4.0973
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	17.1993	17.0233
तंजानिया	शिलिंग	1	0.1177	0.1150
थाईलैंड	बहत	100	101.2699	98.3680
ब्रिटेन	पौंड	1	43.9754	43.6586
अमेरिका	डालर	1	25.7732	25.5265
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	7.0208	7.9479
सोवियत संघ	रूबल	1	29.9379	29.9356

स्रोत: बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 7.8.91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली

पिनों की अजीब पहेली

लड़की की बांहों से निकलती सुइयों ने डॉक्टरों को उलझाया

दिल्ली-हरियाणा सीमा पर बसा एक शांत-खामोश गांव झड़ौदाकलां पिछले कुछ समय से कौतूहल का केंद्र बन गया है. कौतूहल का केंद्र खेतों के बीच एक टीले पर बसे घर में रहने वाली 18 वर्षीया मीनू है जिसकी बांहों में से लोहे की सुइयां निकलती हैं. पिछले ढाई साल में डॉक्टर उसकी बांहों में से 21 सुइयां निकाल चुके हैं. लेकिन उनके लिए यह बात अभी भी पहेली बनी हुई है कि एकदम बाजारी दिखने वाली आलपिने और सिलाई की सुइयां उसके शरीर में प्रवेश कैसे करती हैं.

इस अजूबे की शुरुआत 1989 में हुई जब खतौली (उ.प्र.) में अपने घर में सिलाई करते समय मीनू को दाएं अंगूठे में दर्द हुआ और उसकी मां ने कुरेदकर नाखून और मांस के बीच वाले हिस्से में से एक सुई बाहर निकाली. उसके पिता कालेराम शर्मा, जो खतौली के एक बैंक में गार्ड हैं, बताते हैं कि तब इस बात को यह सोचकर रफादफा कर दिया गया था कि सिलाई करते हुए सुई अंदर घुसकर टूट गई होगी. लेकिन दो-तीन घंटे बाद उसी अंगूठे में से एक सुई और निकली. अगले दिन दायीं बांह में उसे तीखा दर्द हुआ और एक स्थानीय डॉक्टर ने वहां से एक और सुई निकाली. इसके बाद तो महीने दो महीने बाद दायीं या बायीं बांह में टीस उठने, तिल जैसा दाग बनने और फिर फफोला बनने के बाद सुई निकलने का यह क्रम अब तक जारी है. इस बीच पिछले साल मीनू ब्याहकर झड़ौदा उसी परिवार में आ गई जहां उसकी दो बहनें ब्याही हैं.

पिछले पखवाड़े दिल्ली के पीतमपुरा स्थित एक निजी क्लीनिक में डॉ. माहेश्वरी ने उसकी दायीं बांह में दो जगह काटकर तीन सुइयां निकालीं. इनमें लगभग तीन सेमी लंबी स्टेनलेस स्टील की एक चमकदार सुई तो ठीक ऐसी ही थी जैसी हाथ से सीने वाली सुई छेद वाला हिस्सा तोड़कर अलग करने के बाद दिखती है. इन्हें ढूंढ़ने के लिए पूर्वी दिल्ली के गुरु तेगबहादुर अस्पताल में डॉ भार्गव की देखरेख में मीनू के पूरे शरीर के दस एक्स-रे चित्र लिए गए.

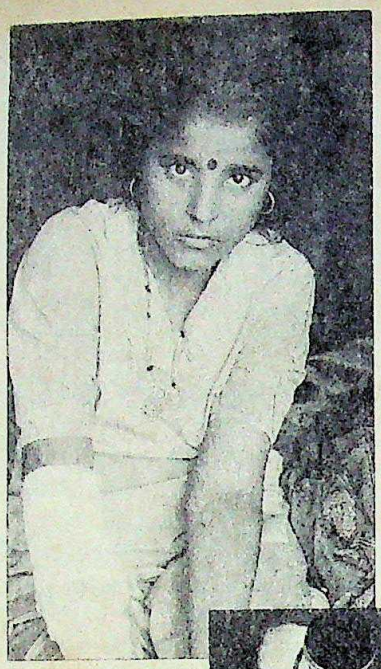

विजय क्रान्ति

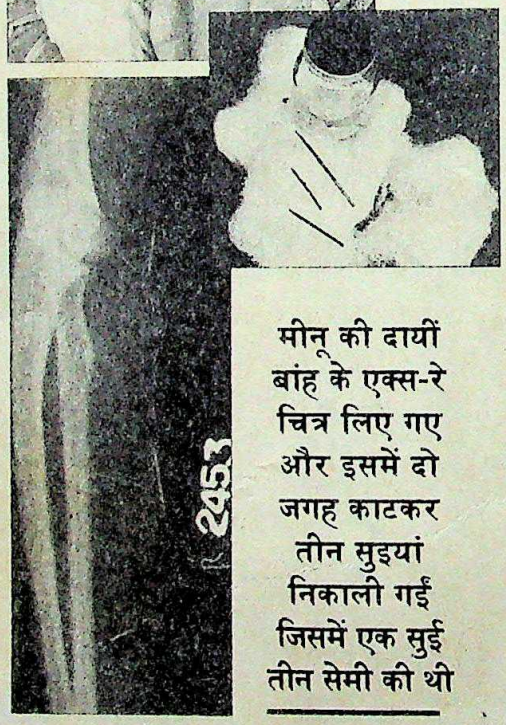

मीनू की दायीं बांह के एक्स-रे चित्र लिए गए और इसमें दो जगह काटकर तीन सुइयां निकाली गईं जिसमें एक सुई तीन सेमी की थी

डॉ माहेश्वरी का कहना है, "यह तो तय है कि बांह से निकाली गई तीन सुइयों में से एक भी शरीर के भीतर पैदा नहीं हुई. उनकी चमक, बाजारी सुइयों जैसी फिनिश और आकार यही दिखाते हैं कि सुइयां कहीं बाहर से बांहों में आती हैं." लेकिन हैरानी है कि भले ही वह डॉ माहेश्वरी हों या पिछले दो साल में मीनू की बांहों से 16 बार सुइयां निकालने वाले खतौली के डॉक्टर आर.एन. मल्होत्रा, या फिर दिल्ली के लोकनायक और जी.बी. पंत अस्पताल तथा असम और पुणे के सैनिक अस्पतालों के डॉक्टर, इनमें से कोई इस गुत्थी को सुलझा पाने में सफल नहीं हो पाया है कि मीनू की बांहों में ही सुइयां जाती कहां से हैं.

मीनू को देखने वाले डॉक्टरों की अक्सर पहली राय यही होती है कि वह जानबूझकर या दौरे की हालत में इन सुइयों को अपनी बांह में घुसा लेती है. मीनू पिछले तीन साल से हिस्टीरिया की मरीज भी रही है. डॉ. मल्होत्रा कहते हैं, "बांह में सुई घुसाना दूसरे अंगों के मुकाबले सबसे आसान है. इसलिए मुझे कई बार ऐसा लगा कि शायद वह खुद यह काम करती है. लेकिन न तो कभी सुई घुसाने की वजह से होने वाला कोई जख्म दिखाई दिया और न कभी इस वजह से कहीं सेप्टिक हुआ." वैसे, जी.बी. पंत अस्पताल और सैनिक अस्पतालों में मनोचिकित्सकों ने अपनी जांच में मीनू को सामान्य युवती पाया है.

पर एकदम शांत और दोस्ताना लहजे में बात करने वाली मीनू शिकायत करती है, "सुई निकलने से पहले हफ्ता भर जो दर्द मुझे सहना पड़ता है, वह मैं ही जानती हूं. मुझे दर्द भुगतने में मजा थोड़ा आता है." उसकी बड़ी बहन उर्मिला कहती हैं, "एक बार डॉक्टरों के यहां दौड़ने में ही दो-चार सौ रु. फुंक जाना आम बात है. हम जैसे गरीब सिर्फ वाहवाही के लिए इस तरह का मजाक नहीं कर सकते."

डॉक्टरों और झाड़-फूंक करने वालों के यहां चक्कर काटकर थक चुके इस परिवार ने पिछले पखवाड़े सिद्धी पद्धति से इलाज करने वाले तपस्वी जनक शाही के पीतमपुरा स्थित केंद्र की शरण ली. शाही का दावा है कि उनके यहां लाइलाज बीमारियों का अचूक इलाज होता है. इस दावे को पुख्ता करने के लिए वह चांदनी चौक की गीतू शर्मा का उदाहरण देते हैं (इंडिया टुडे, 31 मार्च 1991) जिसकी आंख से चींटियां निकलती थीं. उनका कहना है कि उनके केंद्र में इलाज के बाद वह भली-चंगी हो गई. मीनू और उसका परिवार भी अब किसी दैवी चमत्कार की इंतजार में है.

—विजय क्रान्ति, खतौली और झड़ौदा से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

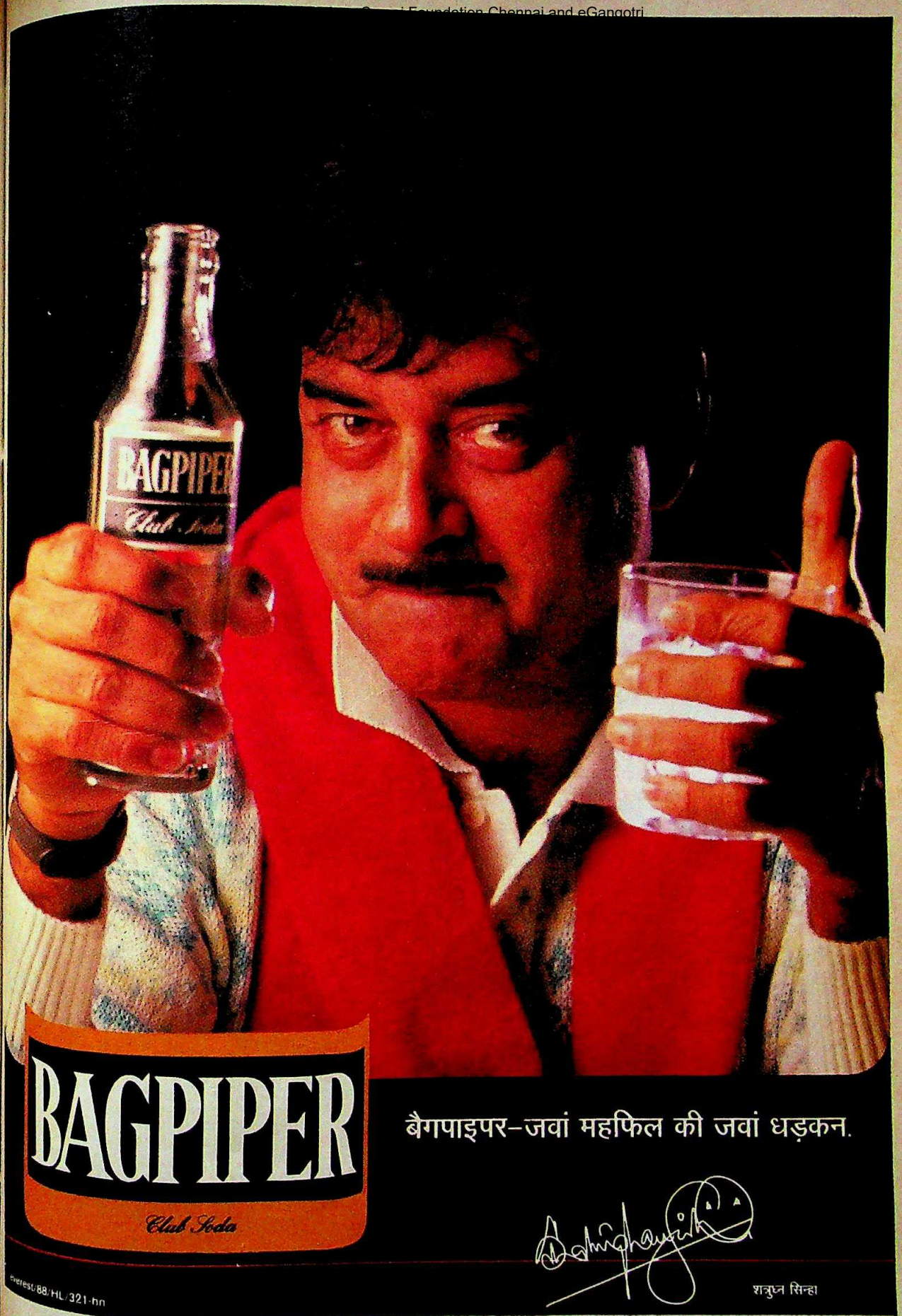

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म्यूज़िक टुडे

की नई पेशकश

ऋतु संगीत

ए-91021
बिस्मिल्लाह ख़ान *(शहनाई)*
राग हमीर बहार
किशोरी अमोनकर *(गायन)*
राग बसंत बहार

ए-91022
भीमसेन जोशी *(गायन)*
राग बहार और राग हिन्डोल बहार
रवि शंकर *(सितार)*
राग सिन्दुरा और राग मिश्रा काफ़ी

ए-91023
शिव कुमार शर्मा *(संतूर)*
राग बसंत
मल्लिकार्जुन मंसूर *(गायन)*
राग बसंती केदार और राग बसंती बिहाग

Basant Bahar

भारतीय शास्त्रीय संगीत के सुर सागर में ऐसे अनेक राग हैं जो ऋतुओं के बदलते मिज़ाज से भलीभांति परिचित हैं। यह श्रृंखला पेश करती है — दो सबसे हसीन, मोहक और शोख ऋतुओं का एक बेहतरीन उपहार।

बसंत बहार बसंत के सदाबहार रंगों, उमंगों और ताज़गी से परिपूर्ण है। राग बहार की सुरीली और लहराती तानों से तन-मन यूं खिल उठता है जैसे बसंत आने पर फुलवारी के फूल।

ए-91024
पंडित जसराज *(गायन)*
राग भवानी बहार और राग अदि बसंत
हरिप्रसाद चौरसिया *(बांसुरी)*
राग शहाना बहार और पहाड़ी धुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ए-91025
रवि शंकर *(सितार)*
राग मियाँ की मल्हार
मल्लिकार्जुन मंसूर *(गायन)*
राग रामदासी मल्हार

ए-91026
शिव कुमार शर्मा *(संतूर)*
राग मेघ
पंडितर जसराज *(गायन)*
राग धुलिया मल्हार

MEGH MALHAR

ए-91027
हरिप्रसाद चौरसिया *(बांसुरी)*
राग मधु मल्हार
भीमसेन जोशी *(गायन)*
राग मियाँ की मल्हार

ए-91028
किशोरी अमोनकर *(गायन)*
राग गौड़ मल्हार
बिस्मिल्लाह खान *(शहनाई)*
मिश्रा मेल की मल्हार और कजरी

अनेक राग हैं
परिचित हैं।
क और शोख
रीन उपहार।
और ताज़गी से
ों से तन-मन
ारी के फूल।

ग मल्हार में सावन की रिमझिम पिया-मिलन की चाह और
हे के गीतों की गूंज है। राग मल्हार के खनकते सुर
राते बादलों और उनका सीना चीरती बिजली की चमकती
लवार का आइना बन जाते हैं।
ु संगीत ... इस श्रृंखला के हर राग को हमारे समय के
न कलाकारों ने बड़ी लगन और साधना से
ाया-संवारा है। एक घंटे के इन ऑडियो कैसेटों की
न डिजीटल रिकार्डिंग सुनकर आप रसविभोर हो जाएंगे।

ूल्य
ी कैसेट रु. 48 (कर सहित)। पैकिंग एवं वितरण शुल्क के रूप में रु. 15
ोगा। ऑर्डर कम से कम 4 कैसेट के लिए होना चाहिए।
पया ध्यान दें
दिल्ली से बाहर के चैकों पर रु. 15 अधिक जोड़ें।
ुंबई, कलकत्ता, मदास और दिल्ली से भेजे गए चैक/ड्राफ्ट का एम
ार्ड सी आर होना ज़रूरी है।
कैसेट पूरी कीमत मिलने पर ही रजिस्टर्ड डाक या कूरियर से कैसेट भेजे जाएंगे।
कृपया ऑर्डर के बाद डिलीवरी के लिए कम से कम 3-4 सप्ताह तक
ंतज़ार करें।
उपहार भेजने के लिए संलग्न ऑर्डर-फार्म का प्रयोग करें।
अपने चैक/ड्राफ्ट और अन्य भुगतान 'म्यूज़िक टुडे' के नाम पर इस पते पर
भेजें — म्यूज़िक टुडे, पो. बा. 29, नई दिल्ली-110001।
उपरोक्त ऑफर और कीमतें केवल भारत में लागू होंगी।
यदि छपा हुआ ऑर्डर फार्म आप तक न पहुँचे तो कृपया सादे कागज़ पर अपना
नाम पता लिखकर अपने भुगतान के साथ इस पते पर भेजें:—
म्यूज़िक टुडे, पो.बा. 29, नई दिल्ली-110001

चुनींदा दुकानों में भी उपलब्ध

मेल-ऑर्डर फार्म

कोड सं.	कैसेटों की संख्या
ए 91021	_____
ए 91022	_____
ए 91023	_____
ए 91024	_____
ए 91025	_____
ए 91026	_____
ए 91027	_____
ए 91028	_____

हाँ, मैं 'म्यूज़िक टुडे' कैसेट रु. 48 प्रति कैसेट के दर पर खरीदना चाहता/चाहती हूँ। (ऑर्डर कम से कम 4 कैसेट के लिए होना चाहिए! कृपया पैकिंग एवं वितरण शुल्क के रूप में रु. 15 अतिरिक्त भेजें। मुझे ये कैसेट

अपने लिए ☐ उपहार के लिए ☐

चाहिए। विवरण नीचे है।

इसके लिए 'म्यूज़िक टुडे' के नाम पर रु. _____ का क्रास किया हुआ चैक/डिमांड ड्राफ्ट संलग्न है (दिल्ली से बाहर वाले चैक पर रु. 15 अतिरिक्त जोड़ें)

कुल देय राशि रु. _____

मेरा नाम _____

पता _____

_____ पिन _____ फोन _____

उपहार पाने वाले का नाम _____

पता _____

_____ पिन _____

MUSIC TODAY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सदस्यता में इच्छुक वितरक, संपर्क करें म्यूज़िक टुडे

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगलवार था नीला।

जिस दिन उसे लिपस्टिक का दाग़ मिला।

और बर्फ़ सी जम गई।

हां नीला। बर्फ़-की-गहराई-में-शोला-नीला।

वह जली, भड़की,

गरजी। मैं अड़ा रहा।

फिर पिघली - तो पूरी की पूरी।

बर्फ़-की-गहराई-में-शोला-नीला। हाय! कैसी चिनगारी है यह नारी!

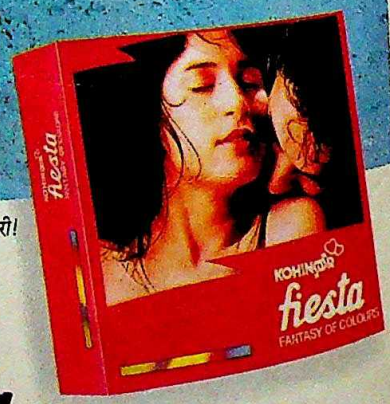

KOHINOOR
fiesta

ल्यूब्रिकेटेड रंगीन कॉन्डोम

MAA COMMUNICATIONS 1591 HIN

उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखबारी कागज

कचूमर निकालती कीमतें

दरों में भारी बढ़ोतरी से समाचार पत्र उद्योग की जान सांसत में

अगर आप अखबारी कागज आयात करते हैं तो जान लीजिए मुसीबत सिर पर आन खड़ी है. यह वह कड़वी सचाई है, जिसका साक्षात्कार आज देश भर की पत्र-पत्रिकाएं कर रही हैं.

सूचना और प्रसारण मंत्रालय की अखबारी कागज मूल्य निर्धारण समिति ने 3 जुलाई की अपनी बैठक में रुपए के अवमूल्यन के मद्देनजर अखबारी कागज की कीमतों को बढ़ाने का फैसला किया. उसने मानक अखबारी कागज की कीमत 23 फीसदी यानी 3,000 रु. प्रति टन और चिकने अखबारी कागज की कीमत 25 फीसदी यानी 4,565 रु. प्रति टन बढ़ा दी. इससे समाचार पत्र उद्योग को लगा बला टल गई. लेकिन काश, उसे पता होता कि गाज तो गिरनी अभी बाकी है.

समिति की एक और बैठक 30 जुलाई को हुई और अखबारी कागज आयात का काम संभालने वाले राज्य व्यापार निगम ने धमाका कर दिया. निगम की सिफारिश थी कि कीमतें और बढ़ाई जाएं. इसने मानक अखबारी कागज की कीमत 4,670 रु. प्रति टन बढ़ाकर 20,670 रु. प्रति टन और चिकने कागज की कीमत 10,410 रु. प्रति टन बढ़ाकर 34,210 रु. टन करने को कहा. यानी एक महीने में ही कुल मिलाकर मानक अखबारी कागज की कीमत में 60 फीसदी और चिकने अखबारी कागज की कीमत में 80 फीसदी वृद्धि हो गई. यही नहीं, इस दरम्यान निगम ने अपने भंडार से सप्लाई भी रोक दी. इसके बाद इंडियन न्यूज पेपर सोसाइटी (आईएनएस) के प्रतिनिधियों की प्रधानमंत्री और वित्तमंत्री समेत सरकार के बड़े सिपहसालारों के साथ धुआंधार बैठकें हुईं. सरकार ने कोई राहत नहीं दी.

निगम ने इस भारी वृद्धि की वजह यह बताई कि अखबारी कागज उधारी में खरीदा जा रहा है और उधारी भी बढ़ी हुई मियाद में चल रही है. निगम ने हिसाब लगाने पर पाया कि जुलाई आरंभ में हुए रुपए के अवमूल्यन की तारीख तक यह उधारी 60 करोड़ रु. की हो चुकी थी. फिर परेशान करने वाली एक बात सामने आई. देश के पास विदेशी मुद्रा नहीं थी इसलिए निगम ने अपने बिलों का भुगतान करने के लिए विदेशी मुद्रा का अल्पकालिक कर्ज लिया. ये ऋण राशियां बढ़ते रहने दी गई. दूसरे शब्दों में भुगतान की मियाद पहले 180 दिन से बढ़कर 360 दिन हुई और फिर 540 दिन तक पहुंच गई. निगम ने ऐसा शायद वित्त मंत्रालय के निर्देश पर किया. पर देनदारी के इस तरह बढ़ते जाने की बात अखबारों को कभी नहीं बताई गई. इसलिए अचानक ही उधारी का एक बड़ा आंकड़ा सामने लाया गया तो सभी को हैरत हुई. फिर निगम ने इस कर्ज को रुपए के अवमूल्यन के असर से बचाने के लिए पहले से कोई सुरक्षा का उपाय नहीं किया. इससे हुआ यह कि मुद्रा की कीमत तो घटती रही लेकिन रुपयों में उसकी देनदारी बढ़ती गई. निगम इसी बढ़ी हुई देनदारी को अब अखबार उद्योग से वसूलना चाहता है.

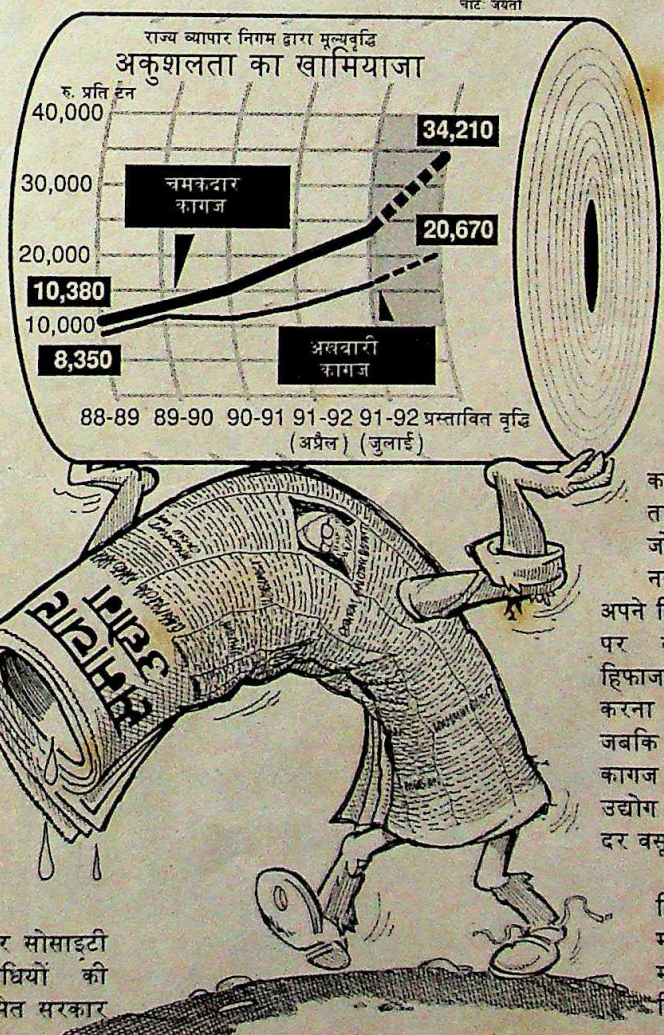

अखबारों का कहना है कि वे स्थापित परंपरानुसार अखबारी कागज के दाम अग्रिम देते हैं और मूल्य निर्धारण समिति हर तिमाही में कीमतें तय करती है. इसलिए पिछली खरीद को लेकर उन पर कोई देनदारी नहीं थोपी जानी चाहिए. आईएनएस के अध्यक्ष नरेश मोहन का कहना है, "यह तो पिछली तारीख से लगाई गई लेवी है जो हम अपने उपभोक्ताओं से नहीं वसूल सकते. निगम ने अपने हिसाब से जो ऋण लिया उस पर व्यावसायिक जोखिम की हिफाजत का बंदोबस्त उसे खुद करना चाहिए था, खासकर तब जबकि तिमाही बैठकों में अखबारी कागज की कीमत तय करने के लिए उद्योग से अमेरिकी डॉलर की अग्रिम दर वसूल की जा रही थी."

निगम का कहना है कि विदेशी मुद्रा सुरक्षा काफी महंगी पड़ती हालांकि कुछ मामलों में यह ली भी गई थी. निगम के अध्यक्ष एस.सी. वैश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कहना है कि "इस हालत में हम इससे ज्यादा कुछ नहीं कर सकते थे." पर उद्योग का कहना है कि निगम ने एकतरफा फैसला किया था. 'हिंदुस्तान टाइम्स' की कार्यकारी निदेशक शोभना भरतिया के शब्दों में, "यह वृद्धि सरासर नाजायज है. निगम की अयोग्यता और अकुशलता के लिए उद्योग क्यों भुगते?"

यह लागत अखबार उद्योग के मत्थे कर देने में निगम की जल्दबाजी का एक और कारण हो सकता है. अखबारी कागज के आयात को असरणीबद्ध करने (नियंत्रण से बाहर निकालने) की कुछ बातें अभी उठी थीं. वैसा होता तो निगम आयात का काम छिन जाने से विदेशी मुद्रा का अपना नुकसान वसूल करने की स्थिति में नहीं रहता. और समस्या की मुख्य बात यही है. निगम ने 60 करोड़ रु. की यह पूरी रकम अपने वर्तमान भंडार और निकट भविष्य में आने वाली 1.30 लाख टन की जहाजी खेप पर थोपने का फैसला किया. निगम के एक अधिकारी के अनुसार, "अगर भंडार में भारी मात्रा में कागज होता तो प्रति टन मौद्रिक असर कम पड़ता." और निगम इस बात का भी पक्का इंतजाम करेगा कि अखबारी कागज का आयात अभी कुछ और समय सरणीबद्ध ही रहे.

साल भर के लिए जो 195 करोड़ रु. की विदेशी मुद्रा दी गई थी वह खत्म हो गई है और नवंबर-दिसंबर में उद्योग को अखबारी कागज के अकाल का सामना करना पड़ सकता है. जरूरत 3.30 लाख टन की है लेकिन 1.6 लाख टन आयात कम होगा. सोवियत संघ ने भारत-सोवियत व्यापार संधि के तहत रुपए के भुगतान पर 70,000 टन कागज देने का वादा किया था पर वह इसके एक-तिहाई कागज की ही आपूर्ति कर रहा है. इसलिए अब उद्योग को वर्ष के बचे हिस्से की जरूरत के लिए 200 करोड़ रु. की विदेशी मुद्रा चाहिए.

प्रस्तावित वृद्धि को लेकर अखबार उद्योग और सरकार के बीच गतिरोध बरकरार है. 8 अगस्त को मूल्य निर्धारण समिति की बैठक फिर से हुई पर कोई हल नहीं निकला. अखबार मूल्य वृद्धि स्वीकार नहीं करना चाहते. निगम भी अड़ गया है कि जब तक वृद्धि स्वीकार नहीं की जाती वह अखबारी कागज की बिक्री नहीं शुरू करेगा. भारतीय लघु और मध्यम समाचार पत्र संघ के अध्यक्ष हरभजन सिंह का कहना है, "निगम के बिक्री शुरू न करने से छोटे अखबार बंद हो जाएंगे."

और सरकार है कि एक से दूसरे मंत्रालय पर जिम्मेदारी टाल रही है. हफ्ते के शुरू में वाणिज्यमंत्री पी. चिदंबरम ने, जिनके मंत्रालय के मातहत निगम आता है, घोषणा की कि अखबारी कागज की कीमतें उनके मंत्रालय ने नहीं अपितु सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने तय कीं. सूचना-प्रसारण मंत्रालय का कहना था कि अखबारी कागज की कीमतों और आपूर्ति पर उसका कोई नियंत्रण नहीं. उसका जिम्मा तो सिर्फ कोटा जारी करना है.

वित्त मंत्रालय चुप्पी लगाए रहा. वित्तमंत्री ने निगम को संदेश भेजा कि वह उनके लिए और मुसीबतें खड़ी न करे. मनमोहन सिंह ने यह बयान भी जारी कर दिया कि मामला 'सद्भाव और न्यायोचित' ढंग से निबटा लिया जाना चाहिए ताकि उद्योग संतुष्ट हो जाए. हालांकि प्रधानमंत्री को उनके स्टॉफ ने विवाद की पूरी जानकारी दे दी थी पर वे खामोशी ओढ़े रहे. अब पचड़ा मंत्रिमंडलीय सचिव नरेश चंद्र के हवाले है और उन्हें उद्योग तथा विभिन्न मंत्रालयों के परस्पर विरोधी दावों का निबटारा करना है. जानकारों के मुताबिक उन्होंने सुझाया है कि उद्योग पर आधा ही बोझ—30 करोड़ रु.— डाला जाए और वसूली की मियाद भी ठीक से तय की जाए.

लेकिन अखबारों का गुस्सा शांत नहीं हुआ है. वर्तमान मंदी वाले माहौल में बड़े प्रकाशन और समूह भी उनकी कुल उत्पादन लागत में 60 फीसदी हिस्सा रखने वाले कच्चे माल की कीमत में की गई भारी और अतिरिक्त बढ़ोतरी को वसूल करने की संभावना नहीं देखते.

अखबारी कागज की मूल्य वृद्धि से पहले विज्ञापनों में हुई कमी ने ही हालात काफी कठिन बना दिए थे. बैंक से लिए कर्ज पर ब्याज की दरें बढ़ाने की सरकार की कड़ी मुद्रा नीति और आयात पर नकद पड़ते ने उद्योगों के लिए कड़की की हालत पैदा कर दी. वे घरेलू खर्च में कटौती को विवश हुए और विस्तार योजनाएं रोकने लगे. शीतल पेय, एअर कंडीशनर तथा सूती कपड़ों जैसी सिर्फ गर्मी में ही बिकने वाली चीजें बनाने वाली कंपनियों को छोड़कर ज्यादातर कंपनियों ने अपने विज्ञापनों में कटौती कर दी. इन सबके असर दिखने भी लगे हैं.

'इलेस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया' ने चिकने अखबारी कागज पर छपने वाली रंगीन पत्रिका बंद कर दी है. अब पूरी पत्रिका बड़े अखबार के आकार में ही निकलेगी जो मानक अखबारी कागज पर छपती है. 'इकॉनॉमिक टाइम्स' की कीमत 4 रु. से बढ़ाकर 5 रु. कर दी गई है. 'हिंदुस्तान टाइम्स' ने अपने 24 पेज के अखबार में हर रोज 4 से 8 पेज की कटौती शुरू कर दी है.

'टाइम्स ऑफ इंडिया' के निदेशक (कंपनी) वी.जी. जिंदल के अनुसार, "अगर निगम इस वृद्धि को उद्योग के मत्थे थोपता है तो विज्ञापनों का अनुपात और आवरण मूल्य दोनों ही बढ़ जाएंगे. पाठकों के पास कम विकल्प होंगे और वे कम प्रकाशन खरीद सकते हैं." निगम की कार्रवाई से यह प्रक्रिया तेज ही नहीं होगी, स्थापित प्रकाशन भी हिल उठेंगे.

हालात और भी बुरे हो सकते हैं. 1930 लाख डॉलर यानी आज की विनिमय दर से तकरीबन 242 करोड़ रु. लंबित राशियों का भी भुगतान समय आ पहुंचा है. सरकार ने विदेशी मुद्रा नहीं दी इसलिए अक्तूबर के बाद से अखबारी कागज खरीदने का कोई नया आर्डर नहीं दिया गया.

—विवियन फर्नांडीस

अखबारी कागज से जुड़ा बवाल

- **भारत विदेशी मुद्रा का संकट झेल रहा है. सो, राज्य व्यापार निगम ने विदेशी मुद्रा का ऋण लिया. इसकी वापसी रोकने के लिए वह ऋण भुगतान अवधि को 180 दिनों से 540 दिनों तक बढ़ाता रहा.**

- **लेकिन निगम ने रुपए के अवमूल्यन के असर से बचे रहने का पुख्ता इंतजाम नहीं किया जो कि सामान्य तरीका है. परिणामस्वरूप रुपए में कर्ज की देनदारियों का बोझ 60 करोड़ रु. और बढ़ गया.**

- **अखबार उद्योग ने कागज का अग्रिम मूल्य भर दिया है और अब इसका कहना है कि कर्ज की देनदारियां निगम का सिरदर्द है और ऋण अवधि बढ़ाने का फैसला सरकार का था.**

- **निगम का कहना है कि वह एजेंट भर है और अखबार उद्योग को बोझ उठाना ही चाहिए.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीर

दलगत स्वार्थों से उपजा अलगाववाद

कश्मीर घाटी की पेचीदा समस्या पर राज्य की राजनीति के जानकार और प्रमुख नेताओं ने खुलकर चर्चा की. एम.जे. अकबर, सैफुद्दीन चौधरी, पी.के. दवे, जॉर्ज फर्नांडीस, मुरली मनोहर जोशी, बलराज पुरी, रियाज़ पंजाबी, पी.ए. रोशा, लेफ्टिनेंट जनरल मैथ्यू थॉमस और बी.जी. वर्गीज ने इस बहस में हिस्सा लिया. अध्यक्षता फीचर संपादक शेखर गुप्ता ने की. संपादन कावेरी बामज़ई, परवीन चोपड़ा और अनुराधा अवस्थी ने किया.

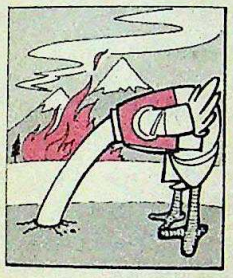

पहचान के संकट से हुई शुरुआत

एम.जे. अकबर: भारत की अवधारणा में दिलचस्पी रखने वाले हम सभी लोगों को कश्मीर अब भी बेहद आकर्षित करता है क्योंकि बकौल शेख अब्दुल्ला यह भारतीय धर्मनिरपेक्षता की असली परीक्षा भूमि है.

मैं मुस्लिम लीग के इतिहास का उल्लेख कर रहा हूं. रोचक बात यह रही कि 1937-38 के चुनावों में लीग की भारी पराजय ही उसके पुनर्जीवन का आधार बनी, क्योंकि हारने वाले तत्व ही भावोन्माद, डर और सुप्त पड़ी हीनभावना जगाकर मुसलमानों का दिलो-दिमाग जीतने की कोशिश में शिद्दत से जुट गए.

1937-46 के दौर में कश्मीर का इतिहास बाकी उत्तर भारत में मौजूद मुस्लिम राजनीति के ठीक विपरीत रचा जा रहा था. कश्मीर में शेख अब्दुल्ला की अगुआई में बनी मुस्लिम कांफ्रेंस को नेशनल कांफ्रेंस में तब्दील किया जा रहा था. हम आज भले ही उनकी अवमानना करते हों लेकिन बख्शी गुलाम मुहम्मद और गुलाम मुहम्मद सादिक जैसे नेताओं ने 1941-44 के दौरान शेख के सहयोगियों के रूप में बहुत महत्वपूर्ण काम किए. आदर्शवाद के उस चरम बिंदु से लेकर 1989-91 के बीच का इतिहास भारत द्वारा कश्मीरियों, खासकर मुसलमानों का भरोसा खो देने की ही कहानी है.

समस्या न आर्थिक कठिनाइयों की है, न ही सांप्रदायिक उभार की. 40 साल से दलगत स्वार्थों के लिए राज्य की राजनीति से खिलवाड़ का ही नतीजा है कि आज घाटी में अलगाववादी दावानल धधक रहा है

जॉर्ज फर्नांडीस: फारूक अब्दुल्ला की अनुचित बरखास्तगी पर नए सिरे से विचार करने की जरूरत है. इस घटना पर लोगों की नाराजगी और फारूक को उनके समर्थन का मैं खुद गवाह हूं. फारूक ने भारत के प्रति कभी कोई विद्वेष नहीं दिखाया बल्कि उनका तो इसमें गहरा विश्वास रहा. इसके बावजूद नई दिल्ली ने उन्हें राष्ट्रविरोधी करार दिया. अब चुनावों की बात करें. 1952 से कश्मीर के लोगों को निष्पक्ष और स्वतंत्र तरीके से अपनी राय जाहिर करने का मौका नहीं मिला है, सिवाय 1977 के. तब भी जनता पार्टी में ऐसे लोग थे, जो लोगों को वोट डालने से वंचित रखने की प्रक्रिया जारी रखना चाहते थे. लेकिन मोरारजी देसाई ने दृढ़ता से इस तर्क को रद्द कर दिया. बहुत से कश्मीरियों ने मुझे बताया है कि 1977 में ही उन्होंने पहली बार मतपत्र देखा.

इस पृष्ठभूमि में जब फारूक ने इंका के साथ सत्ता में भागीदारी का फैसला किया तो लोगों का काफी

मेराजुद्दीन

जेकेएलएफ के हथियारबंद उग्रवादी: खतरनाक मोड़ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: भवान सिंह

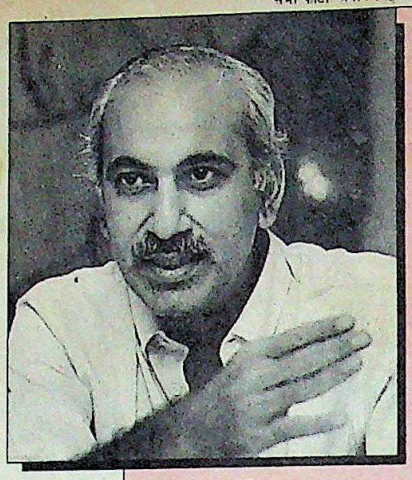

एम.जे. अकबर
पत्रकार, लेखक और पूर्व इंका सांसद

"इंदिरा गांधी ने 1983 में पुनर्वास विधेयक लाकर कश्मीर की राजनीति का सबसे अधिक संप्रदायीकरण किया"

"जब 1986 में गुल शाह को हटाकर फारूक अब्दुल्ला को लाया गया तो संप्रदायीकरण की दूसरी प्रक्रिया शुरू हुई"

मुरली मनोहर जोशी
अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी

बड़ा तबका, खासकर नौजवान उनके खिलाफ हो गए. और 1987 के चुनावों में हुई हेराफेरी ने अलगाववाद को और हवा दी. फारूक इंका की साझेदारी से सत्ता में बने रहे. फिर 1989 में केंद्र में जनता दल की सरकार बनी. तब तक हालात बहुत बिगड़ चुके थे.

काश! जगमोहन भी यहां होते. हालात को इस मुकाम तक पहुंचाने में उनका योगदान भी कम नहीं है. हालांकि वे बहुत कुछ कर दिखाने का दावा करते हैं लेकिन उन्होंने जो क्षति पहुंचाई वह अपूरणीय है. 1989 में ही जब आतंकवादियों ने गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद की बेटी का अपहरण किया तो हमारी सरकार ने घातक फैसला लिया. बंधक लड़की को छुड़ाने के लिए कैदियों को रिहा कर हमने आतंकवादियों को यह संकेत दे दिया कि इस तरह के हालात में भारत सरकार को झुकाया जा सकता है.

लेकिन मैं इस धारणा का खंडन करूंगा कि इस समस्या का आर्थिक विकास से कुछ लेना-देना नहीं है. कश्मीर में लगाए गए अरबों रुपए कहां गए?

अकबर: यह बात महत्वपूर्ण है. लेकिन राजनैतिक लड़ाई आर्थिक हालात के मुकाबले ज्यादा महत्वपूर्ण है.

फर्नांडीस: हां, लेकिन पहले मुझे आर्थिक पहलू की व्याख्या करने दीजिए. आज कश्मीर में प्रशासनिक कामकाज ठप हो चुके हैं. क्यों? इसकी वजह यह है कि कश्मीरी पंडित, जो कुल जनसंख्या का 3 फीसदी होते हुए भी 80-90 फीसदी नौकरियों पर कब्जा जमाए बैठे थे, अब जम्मू, दिल्ली या दूसरे स्थानों को पलायन कर चुके हैं.

बलराज पुरी: लेकिन हमें इसे हिंदू-मुस्लिम समस्या का विस्तार नहीं समझना चाहिए. यह समस्या कुछ हद तक इसलिए भी पैदा हुई कि महाराजा हरी सिंह ने भारतीय संघ में शामिल होने के फैसले को लटकाए रखा. इससे कश्मीरियों में अपनी पहचान के प्रति अनिश्चितता पैदा हुई. बाकी देश 15 अगस्त तक भारत या पाकिस्तान के साथ जाने को मानसिक रूप से तैयार हो चुका था पर कश्मीर में हिंदू भी भारत का हिस्सा बनने के लिए तैयार नहीं थे. बाद में राज्य की पूरी जनता ने हालात से समझौता कर लिया. जो मुसलमान पाकिस्तानी पक्ष वाले कश्मीर में गए, वहां घुलमिल गए. इधर, भारत वाले कश्मीर में हिंदुओं, बौद्धों, यहां तक कि जम्मू के मुसलमानों, डोगरा मुसलमानों, पंजाबी मुसलमानों, लद्दाखी मुसलमानों और गुज्जर मुसलमानों ने भी भारत के साथ मेल-मिलाप स्वीकार कर लिया लेकिन कश्मीरी मुसलमानों ने नहीं. कश्मीरी मुसलमानों ने महसूस किया कि पाकिस्तान में उनकी पहचान खतरे में पड़ जाएगी. उन्हें उम्मीद थी कि भारत के हाथों यह सुरक्षित रहेगी. लेकिन अब जब उन्होंने अपनी पहचान की बात की तो उन्हें अलगाववादी करार दिया गया. कश्मीरी पहचान का यह संकट जम्मू में अशांति से भी गहराया जिसके लिए भाजपा या जनसंघ अंशतः दोषी है.

पी.के. दवे: कश्मीर में शुरू से ही चुनावों में धांधली होती रही है. लेकिन 1987 में मुस्लिम संयुक्त मोर्चा आया और धांधली का राज खुल गया. उसने जाहिर कर दिया कि मतपेटी से वोट न मिलने के बावजूद उम्मीदवारों को कैसे वोट हासिल हो जाते हैं.

अकबर: यानी जमाते-इस्लामी को दी गई सीटें पूर्व-नियोजित होती थीं.

दवे: हां, 1987 में इंका ने यही किया.

अकबर: 1987 की बात और है. मैं सिर्फ '71 की बात कर रहा हूं.

पी.ए. रोशा: मुझे ऐसा नहीं लगता.

अकबर: मैंने जो सुना या पढ़ा है, उसके मुताबिक जमात को जान-बूझकर उभरने दिया गया. यह वह प्रक्रिया थी जिसमें आप लोग वादी में कांग्रेस या कांग्रेस समर्थित नेशनल कांफ्रेंस का विपक्ष खड़ा करने की कोशिश कर रहे थे.

बी.जी. वर्गीज: 1984 में फारूक अब्दुल्ला को जमात के समर्थन से ही हटाया गया. गुल शाह की सरकार इंदिरा गांधी के पूर्ण समर्थन से बनी थी. जाहिर है, दलगत स्वार्थों, राजनैतिक वजहों से राष्ट्रीय हित को जान-बूझकर और सरेआम बलि चढ़ाया गया.

अकबर: 1983 के चुनाव के दौरान ही पुनर्वास विधेयक के मार्फत कश्मीरी राजनीति का सबसे अधिक संप्रदायीकरण हुआ. इंदिरा गांधी ने सीमा के उस ओर इशारा करके पुनर्वास विधेयक का पत्ता चला था जिसकी तीखी प्रतिक्रिया हुई और राजनीति सांप्रदायिक रंग लेने लगी.

मुरली मनोहर जोशी: 1986 में गुल शाह को हटाकर जब फारूक को फिर केंद्रीय मंच पर लाया गया तब संप्रदायीकरण की दूसरी प्रक्रिया शुरू हुई.

अकबर: यह दलील समझ नहीं आती.

पुरी: मुझे विस्तार से कहने दीजिए. ऐसी प्रबल आशंका है कि कश्मीर में पहले सांप्रदायिक तनाव और कश्मीरी पहचान को बांटने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमजोर करने के लिए पैदा किया गया. कट्टरवाद सहायक होगा इसलिए तय गया कि जमात या मुस्लिम संयुक्त जैसे किसी का समर्थन किया जाए. मुझे बात एक जाने-माने व्यक्ति ने बताई.

प्रकबर: आप उस व्यक्ति का नाम क्यों लेते? क्योंकि आप जानते हैं कि कल वह शख्स भाजपा के समर्थन से गृहमंत्री जाए?

पुरी: जिस व्यक्ति की मैं बात कर रहा हूं पूर्व राज्यपाल जगमोहन ही हैं.

जोशी: इस नई नीति पर केंद्र सरकार की सहमति रही होगी.

रबे: भारत सरकार की बात पूरी तरह हुए मैं निश्चित तौर पर यही नहीं कि जगमोहन ने बलराज पुरी से जो कही वह भारत सरकार की कोई योजित नीति थी.

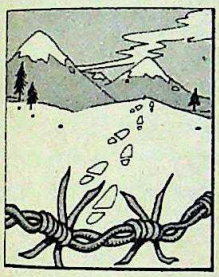

मनोदशा बिगड़ी हुई है

रोशा: कश्मीर मसले को जानबूझकर दायिक रंग दिया जा रहा है. मुझे याद है, साल मार्च में एक सांसद ने संसद में कि 250 मंदिरों को अपवित्र कर दिया है. मैंने मुफ्ती मुहम्मद सईद और जॉर्ज से स्पष्टीकरण देने के लिए कहा. जब तक जॉर्ज वर्गीज जैसे लोक-हितैषी वहां नहीं गए, कुछ नहीं हुआ. हमने एक मुद्दा उठाया: देश के दूसरे हिस्सों के को कश्मीर में जमीन की इजाजत क्यों नहीं ती. इसका अनुच्छेद 370 कुछ लेना-देना नहीं है. च्छेद 370 सिर्फ यह कहता है राज्य की विषय सूची की भाषा भारत सरकार सिर्फ ही मर्जी से नहीं बदल ती.

फ़ुद्दीन चौधरी: हमें सभी के लोगों की पहचान का न करना चाहिए. यदि हमें मीर को धर्मनिरपेक्ष धारा में

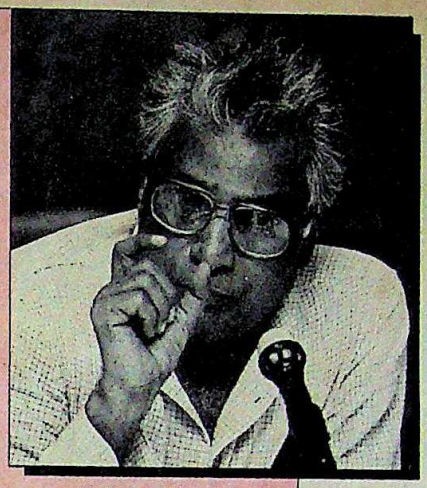

जॉर्ज फर्नांडीस
रामो सरकार में
कश्मीर मामलों के मंत्री

"मुफ्ती के हाथों कश्मीर को छोड़ना गलत था. मैंने तब प्रधानमंत्री से कहा था कि वे गृह विभाग खुद संभालें"

■

"अब स्थिति बदली है और उम्मीद जागी है. लोगों में उग्रवाद और पाकिस्तान के खिलाफ भारी नाराजगी है"

बी.जी. वर्गीज
पूर्व संपादक, हिंदुस्तान टाइम्स
और इंडियन एक्सप्रेस

वापस लाना है तो हमें देश के बाकी हिस्सों में उन तत्वों को दबाना होगा जो सांप्रदायिकता फैला रहे हैं.

जोशी: कश्मीर में ऐसी ताकतें रही हैं जो हमारे खिलाफ काम करती रहीं और भारत के प्रति घृणा का अभियान चलाती रहीं. वहां जबरदस्त पाकिस्तान समर्थक अभियान, आजादी का अभियान चलता रहा. कश्मीर महज भारत और बाकी भारत के बीच की समस्या नहीं है. अंतरराष्ट्रीय ताकतें कश्मीर को महान भारतीय राज्य की सीमा से बाहर रखना चाहती थीं. पाकिस्तान में यह सोच काम कर रही है कि बांग्लादेश बनाने के लिए हमें सबक सिखाना होगा. देखिए, यही मनोवृत्ति काम कर रही है.

पुरी: बांग्लादेश के दो प्रभाव पड़े हैं. संस्कृति पर आधारित पहचान का प्रतिरक्षण और कश्मीर मुद्दे को भुनाने की पाकिस्तान की कोशिश. पाकिस्तान ऐसा 1947 से ही करता रहा है. लेकिन इस बार वह सफल क्यों हो गया? 1988-89 में जेकेएलएफ़ ने पहली बार कश्मीरियत का मुद्दा उठाया और उसे जितना समर्थन मिला वह पाकिस्तान की उम्मीदों से कहीं अधिक था. अब पाकिस्तान ने जेकेएलएफ के समर्थन में कमी कर दी है और हिज्बुल मुजाहिदीन को मदद दे रहा है. सो, अब पाकिस्तान के खिलाफ प्रतिक्रिया शुरू हो गई है. पिछले कुछ महीनों में पहली बार स्वतःस्फूर्त और स्वाभाविक पाकिस्तान विरोधी प्रदर्शन हुए.

वर्गीज: मौजूदा संदर्भ में आंदोलन का नेतृत्व 30 वर्ष से कम उम्र के लोग कर रहे हैं. वहां नई पीढ़ी तैयार हो गई है. इसलिए विलय की बात करना भी तर्कसंगत नहीं है. नई पीढ़ी के लोग भारत के बाकी हिस्सों में घट रही घटनाओं यानी संप्रदायीकरण और अनुच्छेद 370 के बारे में होने वाले आंदोलन पर नजर रख रहे हैं.

रोशा: पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर की हाल की घटनाओं के संदर्भ में यदि हम यह दिखा सकें कि भारतीय राज्य व्यवस्था अपने नागरिक को सम्मान और न्याय देती है तो हम समाधान की दिशा में काफी आगे बढ़ सकते हैं. जनता के अलग-थलग पड़ जाने के कारण ही उग्रवाद जीवित है. डोगरा शासन काल में कश्मीर पर दो महत्वपूर्ण कर लगाए गए. एक कर महाराजा के मंदिर के लिए धन उगाहने को लगाया गया और दूसरा मंदिरों की मरम्मत के लिए लगाया गया. हालांकि मुसलमानों की आबादी 99 फीसदी है लेकिन किसी ने विरोध नहीं किया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीरियों के लिए भारत में शामिल होने की ऐतिहासिक या भौगोलिक मजबूरी नहीं थी. लेकिन इस संघ में उनके शामिल हो जाने के बाद मुद्दा यह है कि हम उनके साथ कैसा बर्ताव करें. अब कश्मीरी पहचान का, जो धर्मनिरपेक्ष थी, कश्मीर के बाहर और भीतर की घटनाओं के कारण इस्लामीकरण किया जाने लगा.

दूसरी बात यह कि कुछ ऐसी ताकतें भी हैं जो यह कहेंगी कि कश्मीरी पहचान का मतलब शायद मुस्लिम पहचान है. यह सही नहीं है. तीसरी बात यह कि कश्मीरियों को राष्ट्रीय जीवन से कभी नहीं जोड़ा गया. आपने हमेशा कहा, "भाई यह विशेष दर्जा क्या है, इसे खत्म कर दो." आपने जब अनुच्छेद 370 को नरम बनाने की बात कही तो हमने मान लिया. कश्मीर संघीय ढांचे, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र के वादे पर आपके साथ जुड़ा. लेकिन आपके पास इनमें से कुछ नहीं है.

फिर भी देश से कहा जा रहा है कि देखो किस तरह कश्मीरियों को करोड़ों रु. दिए जा रहे हैं. वे नहीं जानते कि आप तकनीकी रूप से हमें 10 रु. देते हैं और फिर 9 रु. ले लेते हैं. '89 तक लोग महसूस करने लगे कि राज्य की किलेबंदी कर दी गई है. रोजगार नहीं, सांस्कृतिक रूप से जोड़ने की बात नहीं, सुरक्षा की भावना नहीं. लेकिन उग्रवाद का तरीका वही है जो '65 के दस्तावेज में है. लोगों के समर्थन के अभाव में उस समय यह शैली कारगर नहीं हो पाई थी. लेकिन 1990 में यह कारगर हो गई क्योंकि समूची आबादी को अलग-थलग कर दिया गया. सुरक्षा बल किस तरह समस्या से निबट रहे हैं, जरा इस पर गौर कीजिए. उग्रवादियों को न पकड़ पाने पर वे आम आदमी को गिरफ्तार कर रहे हैं. लोगों के मानस को किस तरह विकृत किया जाता है, यह उसकी मिसाल है.

मैथ्यू थॉमस : जहां तक सेना का सवाल है, उसकी धारणा मूल रूप से देश की भलाई से निर्देशित होती है. पिछले दो वर्षों में स्थिति के बदतर होने की वजह सिर्फ केंद्र से प्रशासन को निर्देश का ही अभाव नहीं रहा है बल्कि संप्रदायीकरण में पाकिस्तान का हाथ होना भी रहा है. अब कोई भी शख्स अनुच्छेद 370 या रायशुमारी पर चर्चा करने के लिए तैयार नहीं है. कश्मीर को मुख्य धारा में लाने के लिए कम-से-कम 10 वर्ष लगेंगे. अब पाकिस्तान सफल क्यों हो रहा है, इस बारे में मेरा मानना है कि वह कुछ हताश हो रहा है क्योंकि हमारी सेना सीमा पर अपनी क्षमता के बारे में निश्चिंत है. फिलहाल, कश्मीर में उग्रवादियों की संख्या 3,000 से 5,000 के बीच होगी और 5,000 से 10,000 दूसरे उग्रवादी उनकी मदद कर रहे हैं.

रियाज़ पंजाबी: हां, '65 से ही यह योजना (ऑपरेशन जिब्रॉल्टर) जारी है.

जोशी: लेकिन '65 में भी भारत सरकार और पूरी दुनिया को इस बारे में जानकारी थी. इसके बावजूद हमने 1965 से 1990 तक क्या किया?

रोशा: यह स्पष्ट है कि '80 और '89 में उन ताकतों से लड़ने की राजनैतिक इच्छा कमजोर पड़ती जा रही थी और इसकी झलक प्रशासनिक कार्रवाइयों में भी दिखाई पड़ी.

और फिर, संसदीय चुनावों के दौरान बारामूला में उग्रवादियों ने एक मतदान केंद्र के सामने एक ताबूत रख दिया और कहा कि यह वोट देने वाले पहले शख्स के लिए है. लेकिन प्रशासन ने कुछ नहीं किया.

दवे: लेकिन यह तो भारत के ज्यादातर हिस्सों में होता है.

पुरी: लेकिन 1947 से सरकार की यह अघोषित नीति रही है कि राज्य में सिर्फ एक पार्टी का शासन होना चाहिए. अशोक मेहता और मैं जब वहां पीएसपी की शाखा स्थापित करने गए थे तो हमारी बड़ी बेरहमी से पिटाई की गई. फिर हम उनकी देशभक्ति की एक तरह की कौमार्य परीक्षा भी लेते रहते हैं कि किसी कश्मीरी को सिर्फ भारत के प्रति ही नहीं बल्कि कश्मीर सरकार, केंद्र सरकार, कश्मीर और केंद्र के सत्ताधारी दल के प्रति भी वफादार रहना चाहिए.

जोशी: ऐसी परिस्थिति का एक कारण यह भी है कि हमने कश्मीर की जनता को राजनैतिक रूप से समरस हो जाने नहीं दिया. भारतीय राजनीति में इसका खासा शोषण किया गया. कभी इसको देश के एकमात्र धर्मनिरपेक्ष मॉडल के रूप में पेश किया गया और इसे सीमित दायरे में ही सिमटे रहने दिया गया.

अकबर: पर 1953 में शेख अब्दुल्ला की गिरफ्तारी के बाद तो कश्मीर धर्मनिरपेक्षता का प्रदर्शन लायक नमूना भी नहीं रह गया. और उसके बाद देश का हिस्सा बनाए रखने की गरज से ही इस पर शासन किया गया. कश्मीर में विपक्ष को काम करने की इजाजत नहीं मिली. विपक्ष वहां कभी उभर नहीं या विकसित नहीं हो सका. इसकी वजह सिर्फ यह थी कि विपक्ष मुख्यतः महाराजा रायशुमारी से ही निकला था जिसे कभी तरजीह देने का विचार नहीं किया गया.

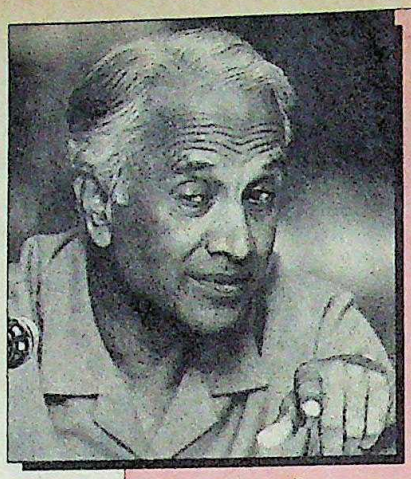

मैथ्यू थॉमस
ले. जनरल (अवकाशप्राप्त), संप्रति संपादक, इंडियन डिफेंस रिव्यू

"पाकिस्तान से लड़ाई से समस्या सुलझने वाली नहीं. हमारी आर्थिक स्थिति लंबी लड़ाई के लायक नहीं है"

"कश्मीर धर्म-निरपेक्षता और लोकतंत्र की खातिर भारत में आया पर आज कुछ भी हमारे पास नहीं है"

रियाज़ पंजाबी
प्राध्यापक, कश्मीर विश्वविद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिति कैसे बदल सकती है?

चौधरी: पर कश्मीर के लोग धर्मनिरपेक्ष रहे. जब हम तत्कालीन केंद्रीय मंत्री जॉर्जीस के साथ वादी में गए तो लोगों ने कहा. "हमें बड़ा दुख है कि हमारे पंडित भाई हमें छोड़ गए." लोगों का यह भी कहना था कि वे उग्रवादियों और सुरक्षा बलों दोनों के परेशान करने से आजिज आ गए हैं. अब दो टूक रवैया अपनाना जरूरी है. आम लोगों से मानवीय बर्ताव किया जाए और उग्रवादियों में भी उदारपंथी और कट्टरपंथी का भेद किया जाए. बाकी देश में भी हमें ठीक ही का बर्ताव करना होगा. अगर हम भागलपुर और मलियाना जैसे हादसे फिर होने देंगे तो कश्मीर के लोगों को विश्वास दिलाना कठिन हो जाएगा.

पंजाबी: जो लोग इस आंदोलन की रीढ़ हैं वे युवा हैं. उनमें से अधिकांश को पिछले 40 साल से रायशुमारी की घुट्टी पिलाई गई. नेशनल कांफ्रेंस ने उन्हें नहीं अपनाया. वे कांग्रेस में जाने की कोशिश की और वहां में अलग-थलग गुट बनाकर रह गए. फिर चुनाव के समय उन्हें सबक सिखाने के लिए सारी पुलिस थी. स्थानीय स्तर पर इसी कारण ये नौजवान अलग-थलग हो गए. इनमें कई विदेश चले गए. पाकिस्तान समर्थक कहकर उन्हें सींखचों के पीछे डालना और मारना बड़ा आसान हो गया. पर कुछ नौजवान नेता, जो महत्वपूर्ण उग्रवादी नेता हैं, अब उन्होंने बयान जारी किया कि वे मुख्य धारा में शामिल होना चाहते हैं और अपना सारा ध्यान सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर लगाना चाहते हैं. शर्तें कि पुलिस उन्हें परेशान न करे. पर उन्हें परेशान किया गया. पिछले 25 साल से यही कहानी जारी है कि अगर आप कश्मीरी हैं, अगर आप मुसलमान हैं तो आप पाकिस्तान समर्थक हैं और उसी के मुताबिक बर्ताव होना चाहिए.

पी.के. दवे
जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्य सचिव, गृह मंत्रालय के पूर्व अधिकारी

"नीतियों के मामले में मंत्रियों से अधिक अफसरशाही की चलती है. मंत्री तो थोड़े समय के लिए ही होते हैं"

"जगमोहन ने मुझसे कहा था कि अगर कश्मीरी पहचान को नष्ट न किया गया तो भारतीयता खतरे में पड़ जाएगी"

बलराज पुरी
सामाजिक कार्यकर्त्ता
निदेशक, जम्मू-कश्मीर संस्थान

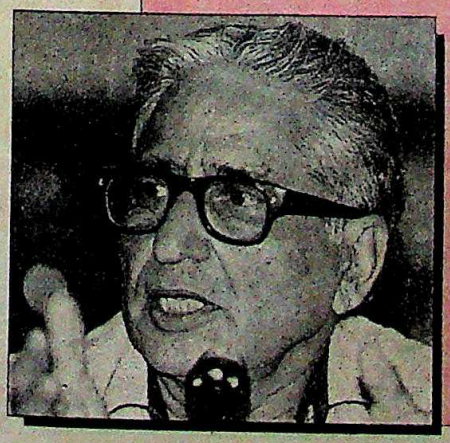

अकबर: समाधान हमारे वैचारिक ढांचे से बाहर नहीं हो सकता. और जहां तक राजनैतिक पहलू का सवाल है, जब तक कश्मीरियों का गुस्सा भारत और कश्मीर सरकार के खिलाफ है, भारतीय और भारत की अवधारणा के खिलाफ नहीं है, तब तक हमारे पास मौका है. हालात से निबटने का प्रशासनिक तरीका सबसे ज्यादा नुकसानदेह साबित हो रहा है. उग्रवादी पांतों में मुख्य गुटों की पहचान करनी होगी. एक तरफ आप कश्मीर को सजा दें और दूसरी तरफ भारत के वास्ते उसे बचाकर भी रखना चाहें, यह नहीं हो सकता. कश्मीरियों को मारने का मतलब है भारत की अवधारणा की हत्या. सख्त सजा का हकदार उग्रवादियों का वह मुख्य गुट ही है जो भारत की धर्मनिरपेक्षता के खात्मे के प्रति वैचारिक रूप से प्रतिबद्ध है. ये लोग पहले जमात के झंडे तले इकट्ठा हुए थे. पिछले 35-40 बरस में उभरे ऐसे गुटों में यह सबसे अहम गुट है.

1971-72 में जमात को अहमियत दिलाने और नेशनल कांफ्रेंस को खत्म करने की कोशिशों के लिए कांग्रेस को ही जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए. समस्या का एकमात्र हल है, कश्मीरियत के विचार को परवान चढ़ाना जिसे हिंदुस्तानियत के एक अंग के रूप में देखा जाना चाहिए.

रोशा: जहां तक कानून और व्यवस्था का मामला है, मेरे खयाल से अर्धसैनिक बलों का यह रवैया कि हर कश्मीरी मुसलमान राष्ट्रविरोधी है, विदेशी है, समस्या की जड़ रहा है. इस पर भी तुर्रा यह कि कश्मीरी नौकरशाही पर अविश्वास किया जाता है.

पर यह बात बड़ी निराशा की है कि कानून की प्रक्रिया वहां कायम करने की कोई कोशिश नहीं हो रही है. जब तक यह नहीं होता, किसी को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता. रोज-ब-रोज की घटनाओं के कारण भी काफी नुकसान हो रहा है. जैसे बसों की तलाशी लेना, लोगों से बात करने का तरीका और यह मानकर घरों में तलाशी के लिए घुसना कि वे सब पाकिस्तानी हैं.

वर्गीज: हालात अब बदल गए हैं और उम्मीद भी जगाते हैं. महत्वपूर्ण यह होगा कि हम भूतकाल के बजाए भविष्य पर ध्यान दें. किसी भी समाधान में पाकिस्तान भी एक घटक होगा. हम इसे सुलझाने के लिए पाकिस्तान का सहयोग मांग सकते हैं.

कश्मीर में जो नया माहौल है, उसमें लोग उग्रवाद से भी आजिज आ गए हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तान से भी. 'आजादी' के लिए बावलापन अब नदारद है. हालांकि अब भी लोगों का रुख भारत समर्थक नहीं है. पर उग्रवाद का चरित्र बदल गया है. दूसरे उग्रवादियों से अपेक्षाकृत धर्मनिरपेक्ष तथा लोकतांत्रिक जेकेएलएफ और हिज्बुल, जमात तथा बाकी पाकिस्तान समर्थक गुटों में स्पष्ट अंतर है. हमें लोगों के सामने 'आजादी' का एक वैकल्पिक विचार रखना होगा जो कि भरोसेमंद हो, रचनात्मक हो, स्थानीयता के अनुरूप हो, उप-राष्ट्रीय हो, जिसमें क्षेत्रीयता, राष्ट्रीयता और अंतर-राष्ट्रीयता के सारे तत्व हों. हमें बहुत से गिरफ्तार लोगों को छोड़ देना चाहिए. नगालैंड और मिजोरम की तरह आम माफी की घोषणा करनी चाहिए. कानून और व्यवस्था के हिसाब से सोचने के बजाए हमें राजनैतिक दृष्टिकोण अपनाना होगा.

जाड़े की शुरुआत से पहले ही हमें चुनाव का वादा करना चाहिए, जो वसंत की शुरुआत में या गर्मियों की शुरुआत में होने चाहिए. फिर जम्मू, लद्दाख और भारतीय कश्मीर को ज्यादा अधिकार दिए जाने चाहिए और पूरे कश्मीर को ज्यादा स्वायत्तता दी जानी चाहिए. पाकिस्तान से सरहद पर एक उदार सीमा रेखा का वादा करना होगा जिसका हम अंतरराष्ट्रीय सीमा की तरह सम्मान करेंगे. और समझौते के तहत हमें और पाकिस्तान दोनों को ऐसी ही घोषणा करनी होगी. तब कहना होगा कि हम उनके साथ संघ बनाने को तैयार हैं जैसा कि 1974 में छह-आठ महीनों के लिए सिक्किम के साथ बनाया गया था. कुछ निश्चित मकसदों के लिए वृहत्तर कश्मीर होना चाहिए. नियंत्रण रेखा को तार्किक बनाना होगा.

फर्नांडीस: हालात ऐसे हो गए हैं कि कश्मीर को राजनैतिक मुख्य धारा में वापस लाना आसान नहीं होगा. हमारी कभी कोई नीति नहीं रही—बस नीति वही रही जो दिल्ली के आकाओं को भाए. मैंने कश्मीरी बागियों से कहा था कि अगर आप लोग एके-47 लेकर सामने आओगे तो आपको एके-47 या उससे बढ़िया हथियार का मुकाबला करना होगा क्योंकि भारत पर्याप्त शक्तिशाली राज्य है. जहां तक पाकिस्तान की बात है, भारतीय मानस में आज भी वह स्वीकार्य नहीं है. इससे हम पाकिस्तान से गंभीरता से बातचीत नहीं चला पाते. बागियों के साथ-साथ पाकिस्तान से भी बात चलाना जरूरी है.

मेरी समझ से महासंघ बनाने की बात फिर से चलानी चाहिए. पाकिस्तान के सामने रखने के लिए यह ठोस प्रस्ताव हो सकता है. हम ऐसा प्रस्ताव रखें कि भारत, पाकिस्तान और संभव हो तो बांग्लादेश का भी महासंघ बने और कश्मीर उसका हिस्सा बने. लद्दाख और जम्मू भी उसके हिस्से हो सकते हैं. मैं यह भी चाहूंगा कि कश्मीर में मानवाधिकार संगठनों को जाने की छूट दी जाए. अलगाववादियों से आपके जैसे भी संपर्क बने हैं, वे उन्हीं लोगों की बदौलत हैं जो उनकी आवाज उठा रहे हैं. मैंने भी ऐसा ही संपर्क बनाने की कोशिश की थी.

थॉमस: पाकिस्तान के साथ लड़ाई से भी समस्या नहीं सुलझेगी. महाशक्तियां हमें आरपार वाली लड़ाई नहीं लड़ने देंगी. हमारी आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं है कि हम लंबी लड़ाई लड़ सकें. सो, लड़ाई करना हमारी मूर्खता होगी.

पंजाबी: बगावत से निबटने में सुरक्षा बलों ने पिछले दो वर्षों में आबादी के बड़े हिस्सों का सफाया कर दिया है. लेकिन हम मानवाधिकार रिपोर्टों के जरिए इनके बारे में एक-चौथाई भी नहीं जान पाते. बीएसएफ, सीआरपीएफ और शायद सेना भी भिन्न हैं. लेकिन रोज ही बेकसूर लोगों को अपमानित किया जाता है, यातनाएं दी जाती हैं और गिरफ्तार कर लिया जाता है. कश्मीर को रोजाना भावनात्मक रूप से खोया जा रहा है. और यदि मानवाधिकार संगठनों को बदनाम किया जाता रहा तो संवाद का कोई स्रोत नहीं रह जाएगा.

पुरी: अब तक कश्मीर के विनाश का स्तर लगभग पूरा हो चुका है. लेकिन जिस तरह से हम समस्या से निबट रहे हैं, गुस्से और असंतोष का कोई भी गैर-उग्रवादी स्रोत नहीं बचा है. क्या भारत विरोधी नारे लगाने पर गोली मार दी जानी चाहिए? मुझे वह घटना याद है जब अनंतनाग में मेरे सामने एक बारात पर कुछ सैनिकों ने हमला कर दिया और दुलहन के साथ सामूहिक बलात्कार किया.

सो, यदि यहां मानवाधिकार संगठन काम करना बंद कर देंगे तो इससे कोई फायदा नहीं होगा. मानवाधिकार संगठनों से बातचीत करने की भारी गुंजाइश है. और फिर कश्मीरी पंडितों और कश्मीरी मुसलमानों, कश्मीरी मुसलमानों और जम्मू के लोगों के बीच भी संवाद की जरूरत है.

सैफुद्दीन चौधरी
माकपा सांसद, कश्मीर पर संसदीय समिति के सदस्य

"मैं कश्मीर ही नहीं हरेक की क्षेत्रीय स्वायत्तता का समर्थक हूं"

"केंद्र मानता रहा कि कश्मीरियों को लोकतंत्र का ढांचा तो मुहैया करा दिया, उन्हें लोकतांत्रिक व्यवस्था से क्या मतलब"

पी.ए. रोशा
पूर्व सुरक्षा महानिदेशक, जम्मू-कश्मीर
निदेशक, राष्ट्रीय पुलिस अकादमी

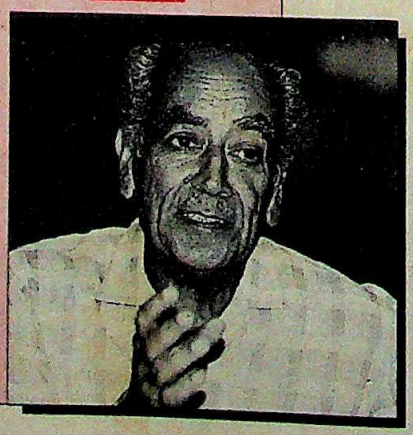

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

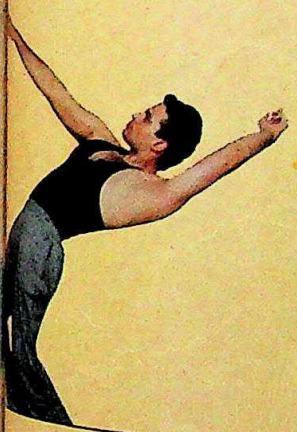

बेहद मुलायम व शत-प्रतिशत
सूती धागे से बने. चुना हुआ
इम्पोर्टेड रबर का इलास्टिक.
उच्च तकनीक की बेहतरीन सिलाई.
शाही अहसास. मर्दाना अंदाज़.
आकर्षक रंगों में.
विस्मृति, कुछ पहनने की.

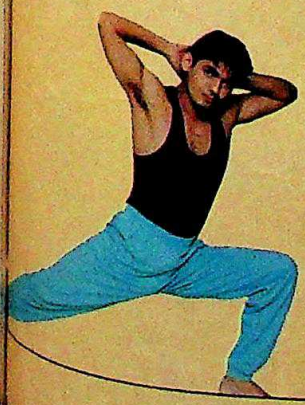

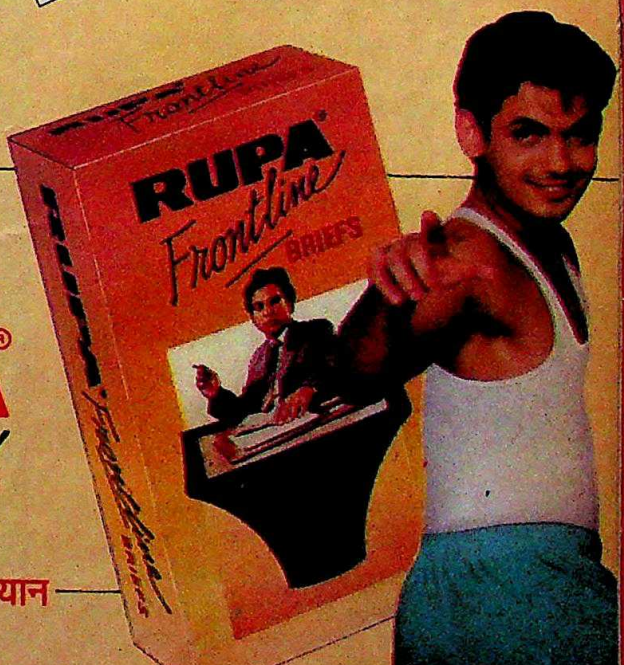

RUPA®
Frontline

जांघिया व बनियान

होसियारी
900 000 का उत्कृष्ट उत्पादन

रूपा - लाखों परिवार, पहनें बार बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परगट सिंह

स्टिक का नया जादूगर

संपूर्ण हॉकी के हिमायती भारतीय कप्तान दुनिया के बेहतरीन खिलाड़ियों में

—शेखर गुप्ता, साथ में
वाहेगुरु पाल सिंह सिद्धू

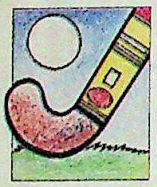

खेलों के लिए अब 'मेगास्टार' का युग आ गया है. क्रिकेट के अनेक मेगास्टार, फुटबाल में नाइजीरिया से 'उधार' लिया एक मेगास्टार और टेनिस के मैदान में दो नौसिखिए लेकिन सिर्फ नाम ही नाम वाले खिलाड़ी. "लेकिन राष्ट्रीय खेल हॉकी के क्या हाल हैं?" आप पूछ सकते हैं, "क्या इसमें भी कोई स्टार है?"

सिर खुजलाइए. जहां-तहां हॉकी खेल पर लिखी सामग्री देखिए. पुराने रिकॉर्ड पलटिए. ध्यान चंद, बाबू, जेंटल, बलबीर सिंह. यहां तक तो आसानी से दिमाग जाता है. जरा और जोर लगाइए, सुरजीत, अशोक, गोविंदा, गणेश और अजीतपाल. यह सब 1978 तक का इतिहास है. आप मान लेते हैं कि यहीं आकर भारतीय हॉकी ने स्टार पैदा करना बंद कर लिया.

एक बार और सोचिए. परगट सिंह का नाम सोचिए जो 26 वर्ष की उम्र में ही 22 वर्ष से भी कम औसत उम्र वाली राष्ट्रीय हॉकी टीम के 'बुजुर्ग' बन गए हैं. पिछले पखवाड़े जब वे राजधानी के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरे तो अजलान शाह हॉकी कप उनकी बैग पर बेतरतीब ढंग से रखा था जो परगट के नया स्टार बनने का प्रतीक है.

इपोह की प्रतियोगिता ने परगट को वह जीत दिला दी जिसकी जरूरत विश्व का यह सबसे अच्छा फुल-बैक और होशियारी से रणनीति बनाने के लिए चर्चित कप्तान बड़ी शिद्दत से महसूस कर रहा था. पेइचिंग एशियाड में पाकिस्तान के हाथों जब भारत पराजित हुआ था तो परगट बहुत ही दयनीय नजर आते थे. वे खुद भी चोट खा गए थे. और तभी स्टेडियम के बाहर आते हुए एक पाकिस्तानी पत्रकार ने बिन मांगी सलाह देने की गलती कर दी.

"आपने जगबीर को डिफेंस में रखकर गलती कर दी. आपको और हमले करने चाहिए थे," उसने बड़े विनम्र ढंग से कहा.

प्रमोद पुष्करणा

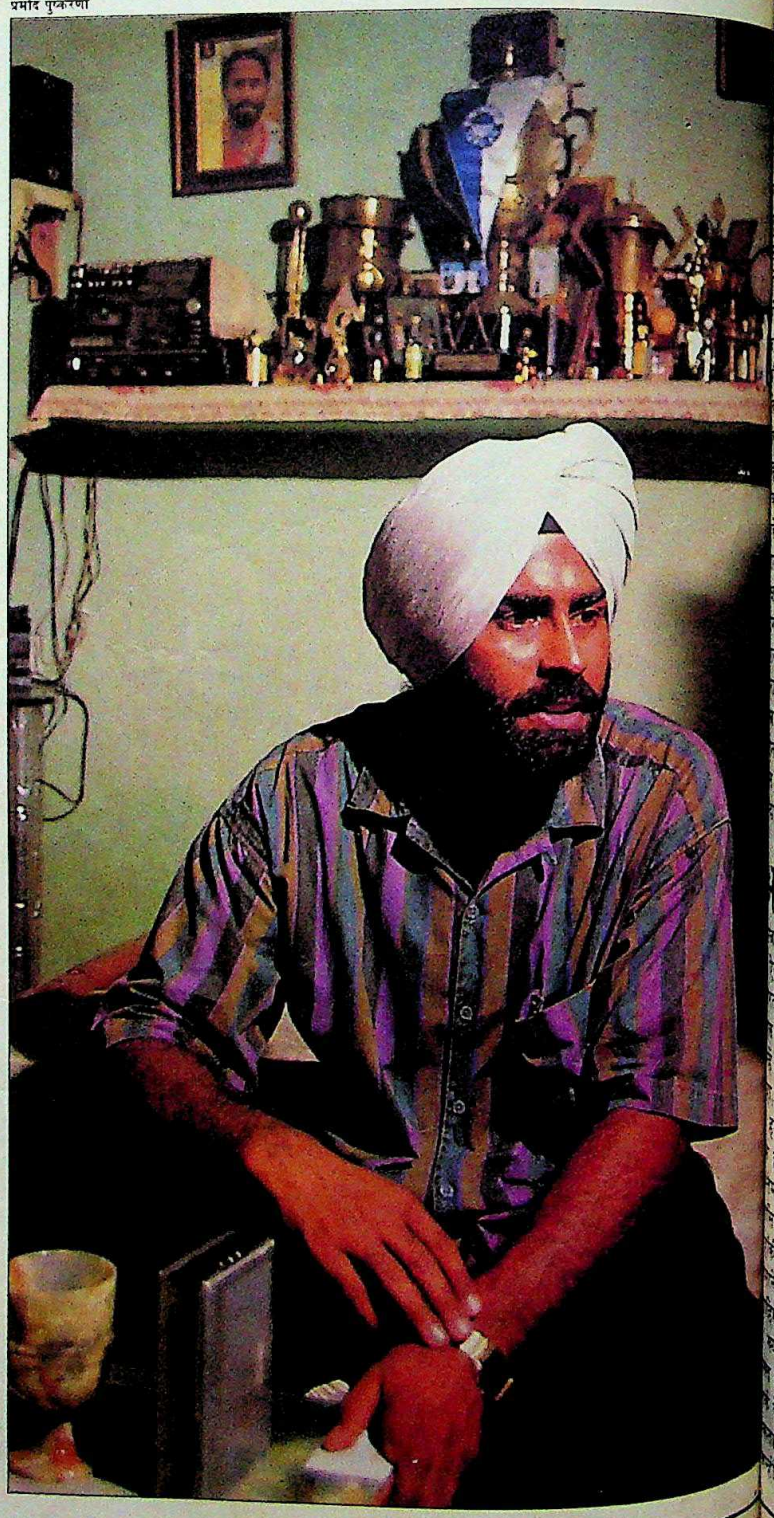

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना सुनते ही इस जाट सिख की आंखों में दुख और पराजय का भाव विदा हो गया और गुस्सा उतर आया. उसने अपनी स्टिक को झटका दिया और पाकिस्तानी पर त्योरियां चढ़ाते हुए गुर्राया, "भा' जी, अगर चोट नहीं खा गया होता तो देख लेता कि जीतते कैसे जीतते, ठीक है जी?" वह पाकिस्तानी जल्दी से भीड़ में गायब हो गया. उन्होंने इसी अंदाज में अपने खेल की शुरुआत भी की. पर्थ में चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारत और जर्मनी का मैच चल रहा था और जब खेल खत्म होने में सिर्फ आठ मिनट रह गए थे तो भारत 1-5 से पिछड़ रहा था. अचानक इस दुबले-पतले लेफ्ट बैक ने अपने स्थान से गेंद पकड़ी और बढ़ गया. जर्मन उसको अपने डी-एरिया में न पकड़ सके और वह भी फाउल करके, पेनाल्टी कार्नर मिला. परगट ने गोल बना दिया. कुछ ही मिनट बाद उन्होंने एक और लांग कार्नर जमाया. गेंद एक साथी खिलाड़ी की स्टिक से लगकर गोल में जा गिरी और जब तक खेल पंडित यह सोचें कि यह 13 नंबर खिलाड़ी कौन आ गया, तब तक वे अपने तीसरे गोल के लिए आगे बढ़ चुके थे, जिसे उनका सर्वश्रेष्ठ गोल माना जाता है. मध्य मैदान से गेंद लेकर चार विपक्षियों को काटते हुए उन्होंने दन से गोल कर दिया. उनके खेल से उत्साह भरी भारतीय टीम ने खेल खत्म होते-होते तक दूसरी वाला गोल भी ठोंक दिया और इसे अब तक का सबसे जबरदस्त जवाबी खेल माना जाता है. उसके बाद से भारतीय टीम 13 नंबर वाले खिलाड़ी के बिना कभी मैदान में नहीं उतरी.

भवान सिंह

परगट सिंहः बेमिसाल जादू

हमलावर विपक्षी खिलाड़ी के पीछे से सरपट दौड़ते आना और एक ही हाथ से उसकी स्टिक के ठीक नीचे से बड़ी सफाई से गेंद छीन लेना परगट की खासियत बन गई है

अब वे जालंधर से सटे अपने गांव मीठापुर में खाट पर बैठकर खूब दूधवाली चाय पीते हुए पर्थ का किस्सा सुनाते हैं. सब कुछ इतनी जल्दी हो गया. शायद जर्मनों ने सोचा नहीं था कि भुला कर दूंगा." यह कहकर वे ठहाका लगाते हैं. जिस दौर में भारतीय हॉकी पतन पर है, उनका रुतबा अलग तरह का है. पिछले साल जब परगट ने हॉकी फेडरेशन से झगड़ा मोल ले लिया था और टीम से बाहर रखने की तैयारी हुई तो एक गोलकीपर ने साफ कहा, "परगट बैक नहीं रहे तो मैं नहीं खेलूंगा."

हमलावर विपक्षी खिलाड़ी के पीछे से सरपट दौड़ते आना और एक ही हाथ से उसकी स्टिक के ठीक नीचे से, कलाई का ही कमाल करते हुए बड़ी सफाई से गेंद छीन लेना परगट की खासियत बन गई है. परगट संपूर्ण हॉकी खेलते हैं. वे कहते हैं, "हॉकी अब बदल गई है. भा' जी, एक जगह जमकर खेलना पुराने जमाने की बात हो गई है. हर आदमी को हर जगह खेलना सीखना चाहिए. हमला करना, रक्षा करना, सब कुछ."

प्रसिद्धि हो जाने के बावजूद परगट रियाज के मामले में एकदम पक्के हैं. रोज पांच घंटे अभ्यास करते ही हैं. हर दिन उन्हें बर्लटन के एस्ट्रोटर्फ पर आठ से दस लड़कों के साथ खेलते देखा जा सकता है. मीठापुर गांव से परगट तीसरे अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी हैं जिन्होंने ओलंपिक खेल चुके स्वरूप सिंह और कुलवंत सिंह मांगुर के नक्शेकदम पर ही गांव का नाम रोशन किया है.

कई बार प्रशिक्षकों को वे अक्खड़ और अवज्ञा करने वाले लगते हैं. लेकिन इसका कारण है परगट का उस दुर्दशा का शिकार होना जिसे अनेक प्रमुख भारतीय खिलाड़ियों को अपने अच्छे दिनों में होना पड़ा है. ऑस्ट्रेलिया के एक सर्वकालीन सर्वश्रेष्ठ फारवर्ड टेरी वाल्श कहते हैं, "परगट बहुत अच्छा खिलाड़ी है. दरअसल आपकी टीम के हिसाब से कुछ ज्यादा ही अच्छा." ऐसे में अगर परगट, गावसकर या विजय अमृतराज की तरह जब तब अधिकारियों से उलझ पड़ते हों तो यह स्वाभाविक तो है ही क्रिकेट और टेनिस में उठने वाले विवाद के मुकाबले ज्यादा जायज भी है क्योंकि खेल अधिकारी हॉकी के खिलाड़ियों से चपरासी से बेहतर बरताव नहीं करते. इपोह प्रतियोगिता के लिए खिलाड़ियों को दैनिक भत्ता मात्र 10 डॉलर दिया गया और उनके साथ कोई डॉक्टर नहीं गया, जिससे चोट लगने पर उन्हें प्रतिद्वंद्वी टीम के डॉक्टर की मदद लेनी पड़ती थी. परगट इससे एकदम चिड़चिड़े हो गए हैं. रेल कोच फैक्टरी, कपूरथला के कल्याण अधिकारी परगट को समझ नहीं आता कि क्रिकेट का रणजी स्तर का खिलाड़ी कैसे उनसे ज्यादा पैसे पा जाता है. एक बार उनसे पूछा गया कि भारत को बेहतर लेफ्ट विंगर क्यों नहीं मिलता तो उनका जवाब था, "मुंडे आन कित्थो? हॉकी हुण खेडदा कौन है? देश के लिए खेलने का भाव अब काम नहीं देने वाला. आज हर आदमी भविष्य की सोचता है."

लेकिन इससे परगट की राष्ट्रभक्ति के बारे में शक न कीजिए. न ही उनके मजाकिया स्वभाव पर. 1990 विश्व कप के दौरान लाहौर में आजाद कश्मीर का जेहाद चरम पर था और भारतीय टीम को रोज गालियां सुननी पड़ती थीं. तभी एक दिन एक वेटर परगट के कमरे में आया और उन्हें कश्मीरी कहवा देने लगा. परगट ने मुस्कराते हुए कहा, "हम तुम्हारा कश्मीरी कहवा न पिएं तभी अच्छा, वरना तुम कश्मीर मांगने लगोगे. और चाहे जो हो जाए, हम यह नहीं देने वाले. ठीक है जी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हॉकी

जीत से बढ़ा मनोबल

ओलंपिक में पहुंचने की भारत की उम्मीद बढ़ी

पराजय से पक्की दोस्ती बना चुकी टीम के लिए साधारण टीमों वाली प्रतियोगिता को भी जीत लेना बड़ी बात तो है ही, इससे पुराने गौरव की याद भी ताजा हो गई. ओलंपिक के लिए क्वालिफाई करने की अपमानजनक दौड़ में आ चुकी भारतीय हॉकी टीम ने जब इपोह, मलेशिया में छह राष्ट्रों की अजलान शाह हॉकी प्रतियोगिता जीती तो उसके साथ भी यही हुआ. इस कप की जीत से भी ज्यादा मीठा अनुभव था पाकिस्तान को 1-0 से पराजित करना. टीम के प्रशिक्षक बालकिशन सिंह ने कहा, "आखिरकार टीम अपने रंग में आ रही है."

पाकिस्तान, सोवियत संघ, दक्षिण कोरिया, मलेशिया और न्यूजीलैंड की टीम की मौजूदगी वाली प्रतियोगिता को जीत लेने से भले ही विश्व रैंकिंग में भारत की स्थिति न सुधरे लेकिन इसने कम-से-कम टीम का मनोबल तो काफी बढ़ा ही दिया है. मलेशिया से लौटने पर उत्साह भरी टीम के कप्तान परगट सिंह ने कहा, "सिर्फ प्री-ओलंपिक ही क्यों, हम ओलंपिक पदक भी जीतेंगे." टीम ने इस प्रतियोगिता में तीन दूसरे प्रमुख दावेदारों को भी हराया जो सितंबर में ऑकलैंड में हो रहे ओलंपिक चयन मुकाबलों में बड़े दावेदार हैं.

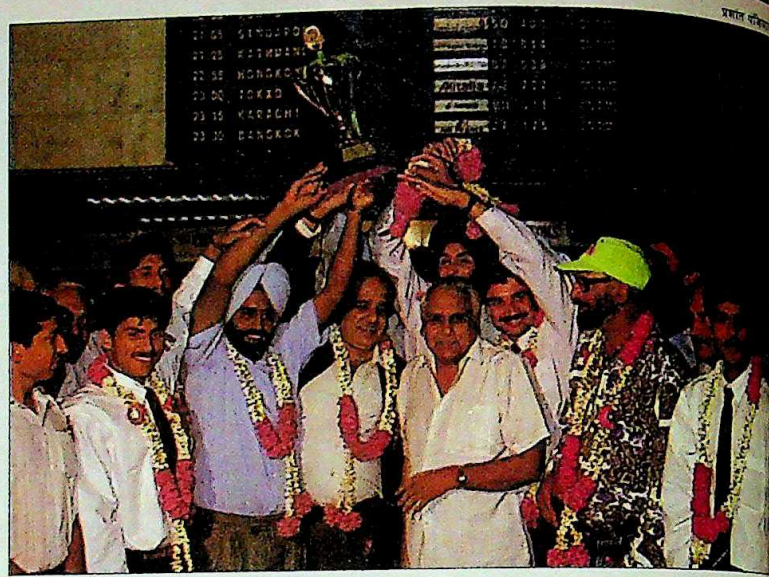

विजयी टीमः आत्मविश्वास से भरपूर

पाकिस्तान के खिलाफ इस टीम ने जिस तेजी का प्रदर्शन करके इस उपमहाद्वीपीय 'महायुद्ध' को जीता अगर वह बनी रहती तो बर्सिलोना ओलंपिक के लिए चुने जाने में उसे कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए. अग्रिम पंक्ति ने रफ्तार पकड़ ली है. उसने

भारत के करीब
50% रेफ्रिजरेटरों की
धड़कन है
केल्विनेटर का
पावर सेवर कम्प्रैसर.

(सोवियत संघ, चीन, सिंगापुर, हाँगकाँग पाकिस्तान और मध्य पूर्व देशों में कुछ रेफ्रिजरेटरों को भी है यही पसंद
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदीप मिश्र

स्तान की कमजोर रक्षा पंक्ति को
-बार छकाया. वैसे, पाक रक्षा पंक्ति
कोच इस्लाउद्दीन के लिए काफी
से सिरदर्द बनी हुई है. वह 21 वर्षीय
र मुकेश कुमार के, जिन्होंने एकमात्र
किया, हमलों को नहीं संभाल पाई.
स सफलता का आधार असल में मध्य
का खेल था, जो आम तौर पर
तीय हॉकी की सफलता में पहले भी
वपूर्ण भूमिका निभाती रही है. शकील,
जीत सिंह और हरप्रीत सिंह की तिकड़ी
अग्रिम पंक्ति की रफ्तार बढ़ाई. और वे
से रक्षा पंक्ति को मजबूत करने भी
जाते थे. पाकिस्तान की फारवर्ड
न पांच घुड़सवारों की टोली जैसे अपने
यात अंदाज में हमले ही नहीं कर पाई.
रक्षा पंक्ति को ठीक से बांध नहीं सकी.
नई रणनीति के अनुसार अब टीम पांच
जगह चार फारवर्ड के साथ मैदान में
रती है. पांचवें फारवर्ड जुडे फेलिक्स
पीछे रहकर खेलते हैं. इसके पीछे तर्क
-सादा है. चूंकि भारत के पास
स्तान जैसे तेजतर्रार फारवर्ड नहीं हैं,
आगे भीड़ लगाने और रक्षा पंक्ति को
जोर रखने की कोई जरूरत नहीं है.
इससे भी बड़ी बात यह हुई है कि इपोह
योगिता मुख्य प्रशिक्षक बालकिशन सिंह

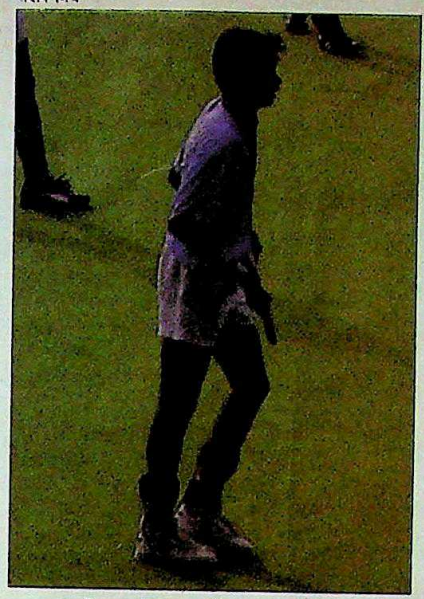

मुकेश कुमारः विलक्षण प्रदर्शन

के 'संपूर्ण हॉकी' के फार्मूले का परीक्षण स्थल भी बनी. यह सिद्धांत बहुत सरल है. कृत्रिम मैदान में गेंद बहुत तेज रफ्तार से भागती है, सो हर खिलाड़ी को हमला और रक्षा करना आना चाहिए. इपोह में जब भी जरूरत पड़ी भारतीय फारवर्ड लाइन भी बचाव में उतरी और रक्षा पंक्ति भी हमले करने निकली.

संतुष्ट होने का एक और भी कारण था. ऑस्ट्रेलिया के अब तक के सर्वश्रेष्ठ फारवर्ड खिलाड़ी माने जाने वाले टेरी वाल्श अब मलेशिया के कोच हैं. भारतीय रक्षा पंक्ति को काफी समय तक परेशान कर चुके वाल्श ने भविष्यवाणी की थी कि मलेशिया भारत को हरा देगा. पर 1-4 से अपनी टीम के पराजित होने के बाद अपने शब्द वापस लेते हुए उन्होंने कहा, "यह भारत की नई तरह की टीम है. इसके पास कुछ सचमुच कुशल खिलाड़ी हैं, जैसे मुकेश."

अगर टीम ने ऑकलैंड में ऐसे ही फार्म का प्रदर्शन किया तो भारत पहले चार स्थानों में आकर ओलंपिक खेलने का मौका पा जाएगा. लेकिन अनेक समस्याएं बनी हुई हैं. जगबीर मौके गंवा रहा है. एडगर मैस्क्रेन्हास कभी अच्छा खेलता है तो कभी बुरा और सिर्फ मुकेश, फेलिक्स और धनराज पिल्लै से ही हमले चला पाने की उम्मीद करना ठीक नहीं है.

औसत उम्र में 22 वर्ष से भी कम वाली इस भारतीय टीम को अब सिर्फ आत्मविश्वास की जरूरत है, जिसकी कमी दशकों से थी. इपोह की जीत इस मामले में कुछ मददगार होगी ही.

—**संदीप मिश्र**, इपोह में

केल्विनेटर
रेफ्रिजरेटर्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

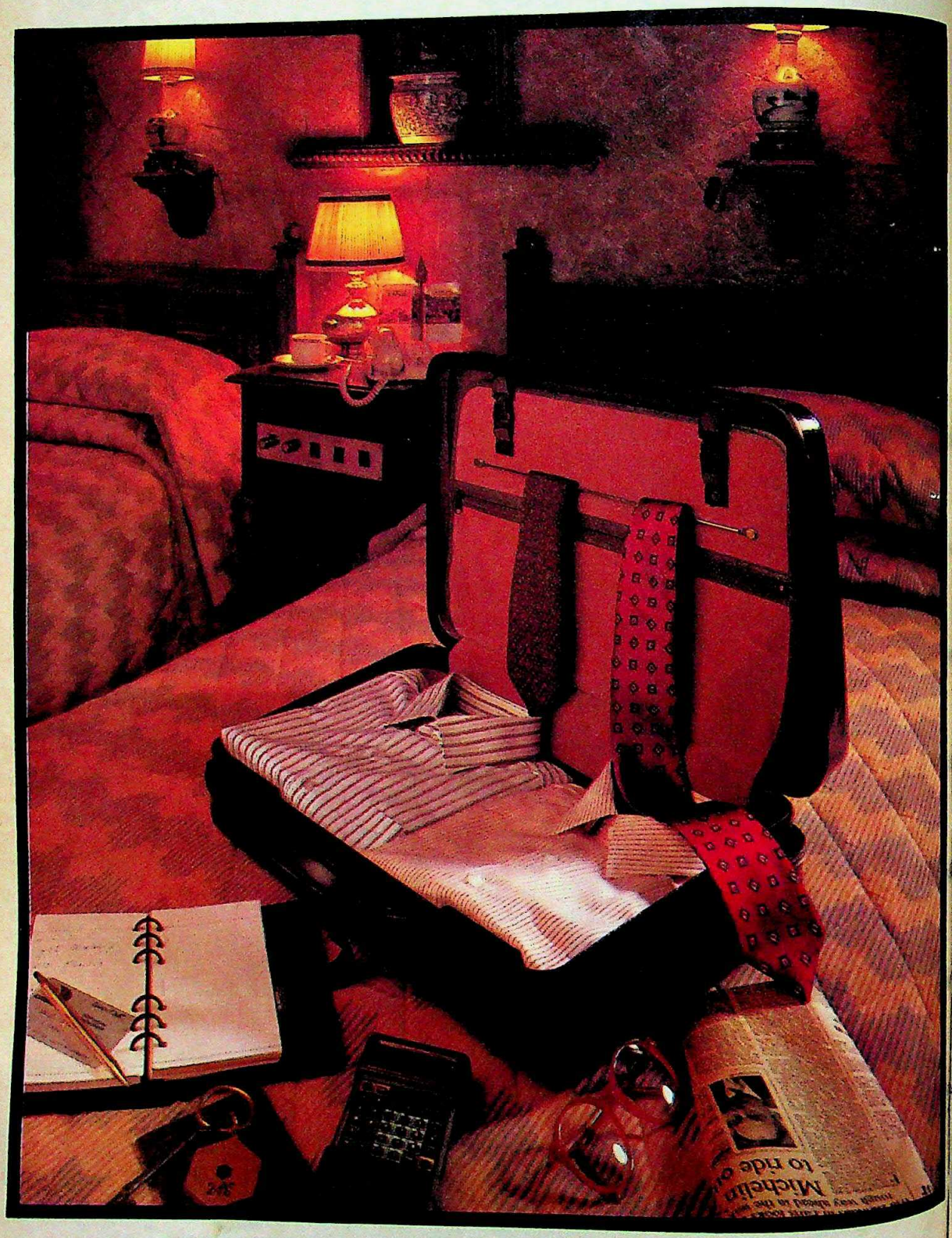

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफ़र सहयोगी

एक और लंबे सफ़र की तैयारी. घर से दूर.ऑफ़िसों, होटलों और फ़्लाइट्स पर.

पहले कुछ दिन सूटकेस के सहारे ही गुज़ारने का इरादा और पक्का इंतज़ाम होना ज़रूरी है. अब आपकी शान के अनुरूप ही वी.आइ.पी. लाए हैं -

ऑडिसी. विश्व स्तर का ए बी एस लगेज. ऑडिसी खोल कर देखिएगा,आप पायेंगे अंदर की लाइनिंग में साटिन नहीं बल्कि है सौम्य सुएड.

सामान व्यवस्थित रखने का पूरा इंतज़ाम - जैसे इसका डिवाइडर, ताकि ज़रूरी कागज़ात और कपड़े अलग-अलग रखे जा सकें. टॉयलेटरीज़ के लिए

वाला पाउच, क्रोमियम की परत वाली रॉड जहां टाइयाँ बिना सिलवटों के रखी जा सकें.

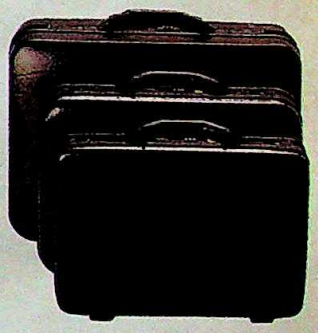

इलेस्टिक पट्टी, जो चीज़ों को जगह पर बरक़रार रखे. दिखने में चमड़े जैसा,और ख़ूबसूरत पाउडर

फ्रेम दो ख़ास खूबियों के साथ - कॉम्बिनेशन लॉक और आकर्षक नर्म हैंडल. अब आप ही

ऑडिसी को आप क्या कहेंगे-एक और सूटकेस या आपका अपना सफ़र सहयोगी?

WORLD CLASS
ODYSSEY

वी.आइ.पी. की पेशकश

तरक़्क़ी, शान के साथ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

HTA 1874R

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमर के दर्द को रुकावट मत बनने दो!

हर रोज़, सुबह-शाम, सुख-दुःख के बीच घर गृहस्थी चलाने में जो आनन्द है इसे एक गृहिणी, एक माँ ही जान सकती है. प्यार-दुलार का संसार. इसमें ज़रा भी अड़चन नहीं आनी चाहिए. तो फिर कमर के दर्द को दिन पर क्यों हावी होने देते हो? हमेशा घर में 'मूव' रखिए.

३ तरह असरकारक

जोड़ों के ज़ड़ तक जाएँ

'मूव' में है प्राकृतिक तेल का असरकारक मिश्रण, जो त्वचा से होकर जोड़ों में दर्द की जड़ तक पहुँच जाता है.

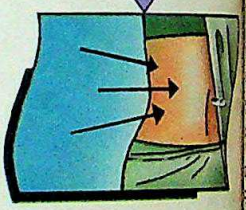

जल्द असर करने वाला

'मूव' अपने 'ऑयल ऑफ विन्टरग्रीन' और अन्य कुदरती तेलों से - जो शक्तिदायक लाभकर रस है, तुरन्त ही रक्त का प्रवाह बढ़ाता है. जोड़ों के बीच का चिकना तरल वापस आ जाता है. आपको मिलता है, जल्द आराम.

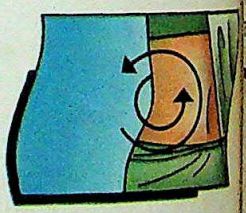

अधिक समय तक आराम दिलाए

'मूव' के मलते ही, उसका बेजोड़ फार्मूले वाला 'बेस' प्राकृतिक तेलों का स्थिर प्रवाह करता है, जो प्रभावित क्षेत्र को अधिक समय के लिए गर्म रखता है, बिना त्वचा को जलन पहुँचाये और आपको फिर से मिलती है वही चुस्ती-फुर्ती.

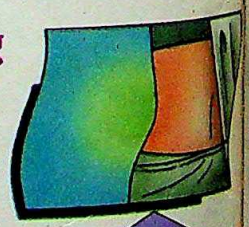

मूव

जल्द राहत, जल्द आराम

PARAS PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
Jitendra Chambers, Ashram Road, AHMEDABAD 380 014.

Interact PPPL 523 D Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटेन

शिकंजे में आतंकवादी

तीन सिख उग्रवादियों को हत्या के षड्यंत्र में अदालत से सजा

पिछले पखवाड़े लंदन की ओल्ड बेली अदालत के फैसले ने ब्रिटेन में सिख आतंकवादी गतिविधियों के फैलते जाल की तरफ ध्यान आकर्षित किया. भाड़े के हत्यारों के जरिए उदार सिख नेताओं की हत्या का षड्यंत्र रचने और विस्फोटक पदार्थ भारत भेजने की योजना बनाने के अपराध में तीन सिखों को 36 वर्ष की सजा सुनाई गई.

महिला व्यापारी श्रीमती गुरशन सकारिया, सतपाल बिंजी और परजीत सिद्धू को स्काटलैंड यॉर्ड की आतंकवाद विरोधी शाखा ने सुनियोजित अभियान के तहत धर दबोचा. इन आतंकवादियों ने पश्चिमी लंदन स्थित साउथॉल के प्रमुख गुरुद्वारे के सचिव बेअंत सिंह को मारने के लिए भाड़े के हत्यारे को रखने की भी योजना बनाई थी. सिख समस्या के हल के लिए लोकतांत्रिक तरीका अपनाए जाने का पक्षधर होने की वजह से बेअंत सिंह उनकी हिट लिस्ट में थे. सिद्धू कट्टर संगठन अंतरराष्ट्रीय सिख युवा संघ (आईएसवाईएफ) की एक शाखा का दूसरा सबसे बड़ा पदाधिकारी है, जबकि बाकी दोनों अपराधी आईएसवाईएफ के सदस्य हैं.

इन्हें पकड़ने के लिए दो पुलिस अधिकारियों ने भाड़े के हत्यारों का रूप धरा. सकारिया और बिंजी के साथ हुई कई बैठकों में इन दो अधिकारियों को छह उदारवादी सिखों की हत्या करने और सेमटेक्स नामक विस्फोटक लाने का काम सौंपा गया. पुलिस वाले राजी हो गए तो दोनों कामों के लिए 1,00,000 पौंड (42,00,000 रु.) देना तय किया गया.

छद्म वेश धरे पुलिस अधिकारियों ने इन लोगों को बेअंत सिंह की हत्या के लिए तय समय से एक रात पहले एक किलोग्राम नकली विस्फोटक थमाया और गिरफ्तार कर लिया. न्यायाधीश ने कहा कि 43 वर्षीय श्रीमती सकारिया को पहले भी बेईमानी और आगजनी के लिए सजा दी जा चुकी है और अब वे सिर्फ इसलिए बेअंत सिंह की हत्या कर देना चाहती थीं क्योंकि वे उनके विचारों से सहमत नहीं थीं. न्यायाधीश राइट का कहना था, "यह अपराध तो बहुत जघन्य है." सकारिया को 15 साल की और बिंजी को 10 साल की सजा सुनाई गई.

परमजीत सिद्धू को विस्फोटक पास रखने का षड्यंत्र रचने के लिए 11 साल की सजा दी गई.

आतंकवाद निरोधक अधिकारियों का मानना है कि तीन सिखों को सजा दिलवाकर उन्होंने सिख आतंकवाद के खिलाफ बड़ी सफलता हासिल की है. बेअंत सिंह की हत्या की साजिश का मकसद उदारवादी सिखों को 'सबक सिखाना' ही था. न्यायमूर्ति राइट ने कहा कि वे पूरे भरोसे से कह सकते हैं कि सिद्धू एक पहुंचा हुआ आतंकवादी है और मुकदमे के दौरान बिंजी और सकारिया ने उसे बचाने की पूरी कोशिश की. आईएसवाईएफ के कई सदस्य ब्रिटेन में कई आतंकवादी हमलों के लिए जिम्मेदार हैं. 1987 से इसके चार सदस्य उदारवादी सिखों की हत्या की साजिश रचने के आरोप में जेल जा चुके हैं.

मुकदमे के बाद बेअंत सिंह ने अखबारवालों को बताया कि उनके मन में किसी तरह की कड़वाहट नहीं है. "प्रतिशोध लेना हमारा स्वभाव नहीं है. ये लोग गुमराह हो गए थे. असली अपराधी अब भी बाहर ही है." पुलिस का मानना है कि बेअंत को मारने की साजिश इसलिए रची गई क्योंकि पिछले वर्ष उन्होंने और उदारवादी सिखों ने गुरद्वारे को उग्रवादियों के कब्जे से निकालने की हाईकोर्ट की एक कार्रवाई में शिरकत की थी. भारत के बाहर इस सबसे बड़े गुरद्वारे पर कब्जे के साथ सत्ता और संपत्ति दोनों ही जुड़ी हैं. इसकी साप्ताहिक आय 8,000 पाउंड है, जबकि खर्च सिर्फ 2,000 पाउंड.

बेअंत सिंह ने बताया कि गुरद्वारे के झगड़ों की वजह से ही वे पहले भी कई प्राणघातक हमलों से बच निकले. उनका यह भी मानना है कि सकारिया, बिंजी और सिद्धू जैसे लोगों को सिख समुदाय का कोई समर्थन हासिल नहीं है क्योंकि सिख अलग राज्य भले ही चाहते हों लेकिन ज्यादातर लोग शांतिप्रिय तरीकों से ही इसे लेने के पक्षधर हैं. "ये लोग खालिस्तान के नाम का इस्तेमाल गुरद्वारे और इसके कोष पर कब्जा जमाने के लिए ही कर रहे हैं. यह तो लालच ही है, राजनीति नहीं."

—अमृत ढिल्लों, लंदन में

अधिकारियों का मानना है कि सिख आतंकवादियों के विरुद्ध उन्होंने बड़ी सफलता हासिल की है

बेअंत सिंह (बाएं) और सिद्धू: कब्जे का झगड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोएडा-गाजियाबाद

माफिया की दहशत तले

नेता बने सरगना पर पुलिस का धावा, लेकिन लोग भयभीत

पिछले पखवाड़े पुलिस ने जब मुलायम सिंह मंत्रिमंडल में ग्राम पंचायतमंत्री रहे लेकिन अब गिरफ्तारी से बचने के लिए फरार हो चुके धर्मपाल यादव के गाजियाबाद स्थित आलीशान बंगले को कुर्क किया तो खबर इस घटना के होने की नहीं बल्कि यह थी कि क्या ऐसा हो भी सकता है?

बुलंदशहर पुलिस को अपहरण के एक मामले में यादव की तलाश थी. यादव को समर्पण के लिए मजबूर करने अदालती आदेश से जब उनके सामान को कुर्क कर नौ ट्रकों में लादा गया तो गाजियाबाद के लोगों को इस घटना पर मानो यकीन नहीं हो रहा था. यादव के बेटे विकास को भी हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया. गाजियाबाद के नए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शैलजाकांत मिश्र कहते हैं, "जरा इंतजार करिए और देखिए कि सरगनाओं को भी नहीं बख्शा जाएगा."

यादव हालांकि अब सत्ता से बाहर हैं और नई सरकार उनके खून की प्यासी है. लेकिन उन्होंने जतला दिया है कि अब भी उनका दबदबा बरकरार है. अगले ही दिन उनके वकीलों ने न सिर्फ उनके बेटे को रिहा करवा लिया बल्कि कुर्की के अदालती आदेश रद्द करवाने में भी कामयाब रहे. लेकिन इस बार पुलिस ने अपील कर दी.

यादव का नाटक यहीं खत्म नहीं हुआ. गाजियाबाद की ठसाठस भरी अदालत में उनके वकील ने कई पत्रकारों की मौजूदगी में न्यायाधीश पर हमला बोल दिया. उन्होंने न्यायाधीश को मारने के लिए कुर्सी उठा ली और मामले से संबंधित फाइल उनके हाथ से छीनकर बाहर भाग गए.

यादव को गिरफ्तार करने का सरकार का इरादा तभी जाहिर हो गया था, जब इस जुलाई में मिश्र को गाजियाबाद भेजा गया. तेजतर्रार पुलिस अधिकारी मिश्र की यादव से चुनाव से थोड़ा पहले ही मुठभेड़ हुई थी. तब यादव मंत्री थे. यादव के निर्वाचन क्षेत्र बुलंदशहर के पुलिस प्रमुख मिश्र ने यादव को उपकृत करने से इनकार कर दिया था. नतीजतन, यादव के कहने पर मिश्र का तबादला तुरंत लखनऊ कर दिया गया. पुलिस रिकॉर्ड में शातिर अपराधी दर्ज यादव '80 के दशक में प्रभावशाली राजनैतिक नेता बन गए. हालांकि अब उन्हें एहसास हो गया है कि वे अपराजेय नहीं हैं.

टाइम्स ऑफ इंडिया/टी.एन. नायक

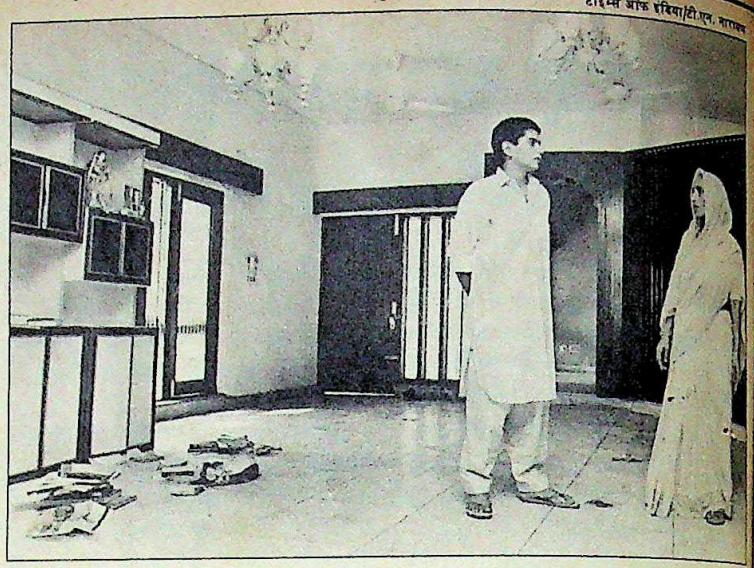

अपने आलीशान बंगले में यादव के परिवारजन

सभी फोटो: गरद सक्सेना

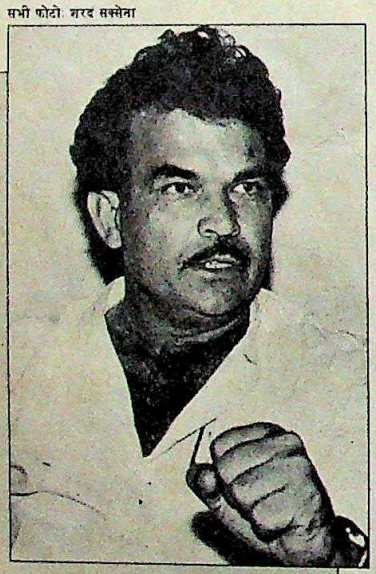

धर्मपाल यादव
पूर्व पंचायतराज मंत्री, उत्तर प्रदेश

पुलिस फाइलों में कुख्यात अपराधी के रूप में दर्ज, जो माफिया सरगना बन गया और कानून की पकड़ से दूर समझा जाता रहा. अब फरार. अपहरण के मामले में बुलंदशहर की पुलिस को इसकी तलाश है.

शैलजाकांत मिश्र
पुलिस अधीक्षक, गाजियाबाद

"बस देखते रहिए, माफिया सरगनाओं तक को नहीं बख्शा जाएगा"

एक कार्यक्षम पुलिस अधिकारी, जिनकी यादव के मंत्री रहते पहले भी भिड़ंत हो चुकी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

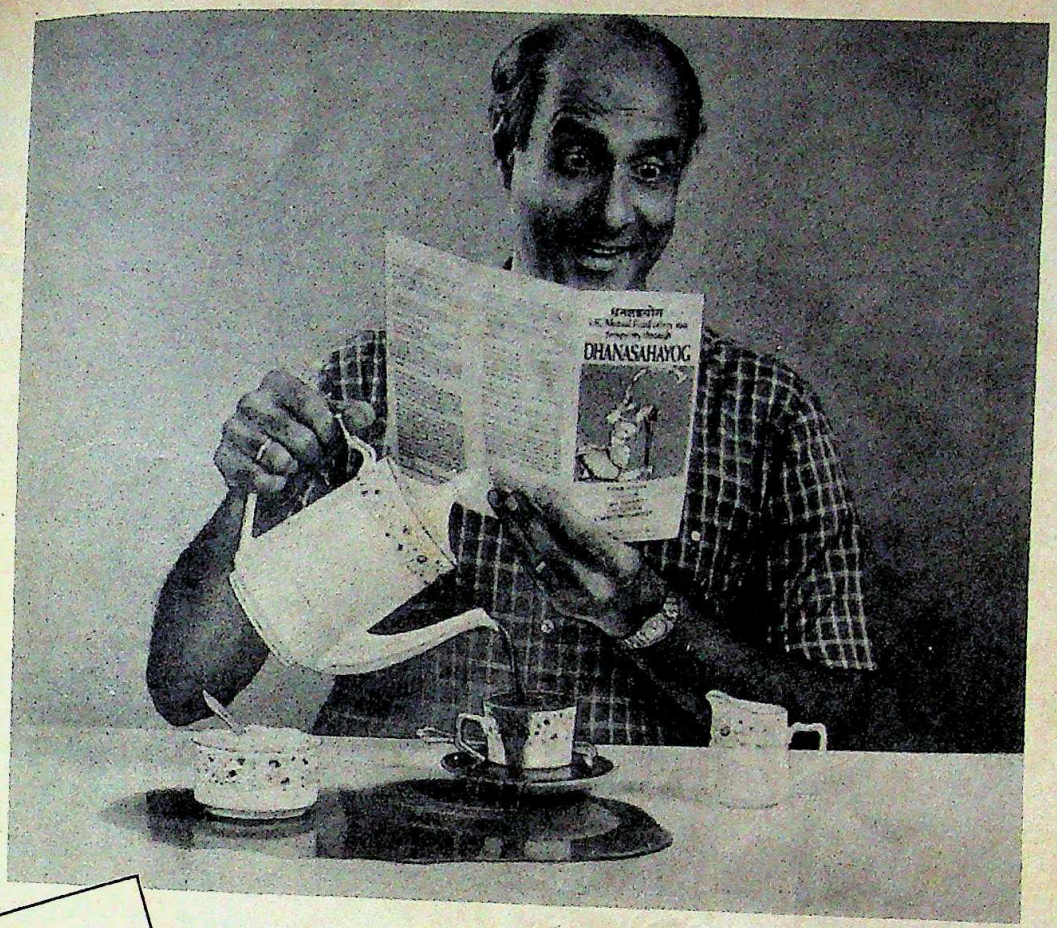

लाभों से लबालब

भुनाना आसान

अच्छे प्रतिलाभ
पूंजी मूल्यवृद्धि

आकर्षक कर लाभ

ऋण सुविधा
कम जोखिम

धनसहयोग यूनिट सममूल्य पर उपलब्ध!

(केवल रु. 10/- प्रति यूनिट)

धनसहयोग ख़ास आपके लिए फ़ायदों से लबालब योजना है. इसमें धन लगाइए और फ़ायदा उठाइए.

★ चयन के लिए तीन योजनाएं–डिविडेंड का वार्षिक भुगतान, डिविडेंड का पुनः निवेश तथा पूंजीमूल्य वृद्धि सहित वर्धन.

★ आसान किश्तें. 1 जनवरी 1992 के बाद यूनिट बेचने की सुविधा.

★ ट्रांसफ़र के लिए कोई प्रतीक्षा अवधि नहीं.

★ आयकर अधिनियम की धारा 80L तथा 48 (2) के अन्तर्गत करों में छूट के लाभ तथा संपत्तिकर अधिनियम की धारा 5(1) (XX IVa) के अन्तर्गत संपत्तिकर में छूट.

अधिक जानकारी के लिए जीवन बीमा निगम की शाखा या जीवन बीमा निगम सहयोग निधि के एजेन्ट से संपर्क करें.

जल्दी कीजिए.
रु. 10/- प्रति यूनिट के मूल्य सीमित अवधि के लिए उपलब्ध हैं

अभय सर्वदा

जीवन बीमा निगम सहयोग निधि

आपके उद्देश्य की पूर्ति–हमारा ध्येय

RADEUS/LMF/304-91A-HIN

...योजनाओं (म्यूचुअल फंडों) तथा प्रतिभूतियों पर बाजार के उतार-चढ़ाव का प्रभाव पड़ता है तथा उनके ट्रस्टी/प्रयोजक संस्थान प्रतिलाभ का कोई भरोसा या गारंटी नहीं दे सकते. ये प्रतिलाभ निधि की निवेश नीति के आधार पर तैयार किए ...लक्ष्य मात्र हैं. पिछले निष्पादन भविष्य के परिणामों के सूचक नहीं हैं तथा ये भी आवश्यक नहीं कि वे अन्य निवेशों में तुलना का आधार प्रदान कर सकें. निवेशकों से निवेदन है कि निधि में निवेश करने से पहले विवरण–पुस्तिका ...की शर्तों का सावधानी से अध्ययन करलें तथा विज्ञापनों/इश्यू की शर्तों के बारे में संदेह हो तो वे जीवन बीमा निगम सहयोग निधि से संपर्क कर सकते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले कुछ वर्षों से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के दो शहरों—गाजियाबाद और नोएडा में आपराधिक गिरोहों ने अपहरण और जबरन पैसा वसूली से आतंक मचाया हुआ है. इनका प्रमुख निशाना व्यापारी ही होते हैं.

अपराधियों के लिए फिरौती वसूल करने से आसान धंधा और कोई नहीं. और ये दो शहर इसके लिए बड़े माकूल हैं. '80 के दशक में नोएडा का तेजी से औद्योगिक विकास हुआ और गाजियाबाद में जमीन की कीमत में बेतहाशा वृद्धि हुई है. नतीजतन, लोगों के पास बेहिसाब पैसा आया और व्यापार, अपराध तथा राजनीति एक-दूसरे में बेतरह घुलमिल गए हैं. कई लोगों का मानना है कि यादव अपराध और राजनीति के गठजोड़ से उपजी इसी संस्कृति के प्रतीक हैं.

शुरू में व्यापारियों ने श्रम संगठनों पर काबू रखने के लिए स्थानीय गुंडों का सहारा लिया. नोएडा फेज-2 के औद्योगिक संघ के अध्यक्ष एस. मुकर्जी कहते हैं, "अब सभी को अपनी गलती की कीमत चुकानी पड़ रही है."

इस दौरान जगपाल सिंह जैसा माफिया सरगना सुर्खियों में आया, जो दिल्ली सीमा पर लोनी टाउन समिति का अध्यक्ष भी बना. पिछले साल गिरोहों की आपसी लड़ाई में जब वह मारा गया तो उसके सहयोगी (देखें बॉक्स) गाजियाबाद, बुलंदशहर और मुजफ्फरनगर जिलों में अपने गिरोह चलाने लगे. त्यागी गिरोह की छोटी-छोटी टुकड़ियां भी इन क्षेत्रों में सक्रिय थीं. उद्योगीकरण की वजह से अपने परंपरागत धंधों से महरूम हुए स्थानीय ग्रामीण युवाओं में से इन सरगनाओं को अपने गिरोह में भर्ती करने के लिए रंगरूट बड़ी आसानी से मिल जाते हैं.

इनमें से कइयों को कथित रूप से यादव का संरक्षण प्राप्त था. हालांकि वे इन गिरोहों के साथ किसी तरह के संबंध से इनकार करते हैं लेकिन पुलिस यह मानने को तैयार नहीं. गाजियाबाद के कविनगर पुलिस थाने में अधिकारियों के पास उनकी कारगुजारियों की लंबी फेहरिस्त है. इसमें हत्या समेत उनके खिलाफ 20 मामले दर्ज हैं. 1990-91 में पुलिस रिकॉर्ड में उनका पेशा दर्ज है—मंत्री पंचायतराज, उत्तर प्रदेश. जितने दिन यादव मंत्री रहे अपहरण की घटनाएं दोगुनी हो गईं. अधिकारियों का मानना है कि सिर्फ आधे मामले ही दर्ज करवाए गए हैं.

हरिओम गोयल

बुलंदशहर के ईंट-भट्ठा मालिक, जिन्हें अपहरण के चार दिन बाद, 24 जुलाई को पुलिस ने छुड़ा लिया. इस मुठभेड़ में दो अपराधी मारे गए जिनकी तलाश थी.

इन अपराधों से आम आदमी अब तक प्रभावित नहीं हुआ है. लेकिन बेशुमार पैसा हाथ आने के बाद इन गिरोहों ने पंजाब और कश्मीर से एके-47, एके-54 और एके-94 जैसे आधुनिक और परिष्कृत हथियार मंगवा लिए हैं. इससे उनकी आतंक कायम करने की क्षमता कई गुना बढ़ गई है. गिरोहों के बीच बंदूकबाजी आम बात है. पुलिस का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में आपसी लड़ाई या पुलिस के साथ हुई झड़पों में तकरीबन सौ लोग मारे जा चुके हैं. लेकिन कुल मिलाकर पुलिस इन अत्याधुनिक हथियारों से निबटने के काबिल नहीं है. संख्याबल में भी वे बीस पड़ते हैं.

जनता में भरोसा पैदा करने के लिए नई भाजपा सरकार ने कुछ ठोस कदम उठाए हैं. शुरू में ही मेरठ मुजफ्फरनगर, बुलंदशहर और गाजियाबाद के पुलिस अधीक्षकों के तबादले कर दिए गए. गिरोहों के अड्डों पर लगातार छापे पड़ने की वजह से उनका एक जगह टिक पाना अब मुश्किल हो रहा है.

पिछले पखवाड़े गाजियाबाद पुलिस ने ब्रह्मदत्त गौड़ की अगुआई वाले गिरोह का पर्दाफाश किया. ब्रह्मदत्त स्थानीय गुंडा है, जो दो बार दादरी विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से खड़ा हुआ था. उसी से पूछताछ के आधार पर अपहृत भट्ठा मालिक हरिओम गोयल को छुड़वाया गया. इस पर हुई झड़पों में दो कुख्यात अपराधी मेहर सिंह और महीपाल सिंह मारे गए. पुलिस का दावा है कि दो व्यापारियों गोयनका, गुप्ता के अपहरण में महीपाल भी शामिल था. इस बढ़ते दबाव के चलते ये गिरोह सीमा से दूर चले गए हैं. दिल्ली पुलिस को संदेह है कि दिल्ली के चावल निर्यातक जुगलकिशोर अरोड़ा के अपहरण में उत्तर प्रदेश और हरियाणा स्थित गिरोहों का हाथ था.

लेकिन यादव का मामला पुलिस की परीक्षा साबित होगा. उनके साथ झगड़ा मोल लेने का मतलब है दोनों पक्षों में शक्ति परीक्षण और अखाड़े में जमे रहने की क्षमता का प्रदर्शन. मिश्र कहते हैं, "मैं आपको आश्वासन दे सकता हूं कि किसी अपराधी को बख्शा नहीं जाएगा." लेकिन आशंकित जनता का भरोसा जीतने के लिए सिर्फ बहादुरी भरे दावे काफी नहीं होंगे.

—आलोक तिवारी

आतंक का साम्राज्य

गाजियाबाद जिले में फिरौती के लिए किए गए अपहरण:
1989: 10; 1990: 12; 1991: 11 (30 जून तक)

गाजियाबाद-नोएडा में सक्रिय गिरोह:

महेंद्र सिंह फौजी की अगुआई में: अपहरण के कई मामलों में इस गिरोह का हाथ रहा है और पूरे पश्चिमी उत्तर प्रदेश में यह सक्रिय है.

मदन भैया की अगुआई में: मदन ने मेरठ जिले के खेकड़ा से विधानसभा चुनाव भी लड़ा. लोनी पुलिस थाने में उसके खिलाफ कई मामले दर्ज.

सतबीर: एक और माफिया सरगना रशीद अली की पिछले वर्ष अगस्त में हुई हत्या का प्रमुख आरोपी. दिल्ली में भी सक्रिय अंतरराज्यीय गिरोह का मुखिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफेद दाग (कोड) निदान चिकित्सा

अपने भारतीय समाज में सफेद दाग को कोड माना जाता है तथा उस से पीडित व्यक्ति के प्रति घृणा की दृष्टी से देखा जाता है । इस रोग से पीडित व्यक्ति यदि कुमारी व महिला हो तो वह मानसिक यातना से घीरी रहती है और इसके साथ साथ समाजिक घृणा से मन, आत्मा को ज्यादा दुःख पहूंचता है । वास्तव में इस रोग को मिटाने के लिए कोई विचार नहीं करता और अंध विश्वास में कह देते है कि इसका कोई इलाज नहीं । परन्तु हमें याद रखना चाहिए कि होमियोंपथी निदान द्वारा सफेद दाग का ईलाज हो सकता है और सफेद दाग – कोड मिट सकता है ।

इलाज से पहले

इलाज के बाद

मनुष्य की त्वचा उपर से सदा घिसती जाती है और नयी त्वचा बनती रहती है । इस त्वचा मे रज कंकण होते है, उस को 'मेलेनीन पीगमेन्ट' कहा जाता है । वह त्वचा की उपरी सतह को रंग देता है । शरीर के किसी भाग में मेलेनो–साइट यदि मेलेनीन पीगमेन्ट बनाना बंद कर दे तो, वहाँ श्वेत दाग दिखाइ देता है जिसे 'विटीलीगो' कहा जाता है । चोट, घाव या जलन के परिणामस्वरूप भी श्वेत दाग हो उठता है, इस प्रकार की बाह्य परिस्थितिमे त्वचा का धवल भाग अन्य जगहों पर प्रसरता नही । तन बदन के आंतरिक भागों की अव्यवस्था के फल स्वरूप उत्पन्न श्वेत दाग मे पीगमेन्ट रंग तत्व की कमी का कारण अभी तक खोजनेमे सफलता पायी गई नही है । फिर भी इस रोग के अस्सी (८०) प्रतिशत पीडितों के उदर में छोटे जंतु या पुरानी डीसेन्ट्री के चिन्ह अवश्य मालूम होते है, संभव है, यह सत्य कारण हो । यह रोग चेपी नही, जिस का चेप लगे इस बीमारी का उपद्रव भी नही कि चेप लगने पर यह फैल जाय, यह रोग का आरंभ अेक छोटे दाग से होता है और धीरे धीरे शरीर के अलग अलग भागों मे फैलता है ।

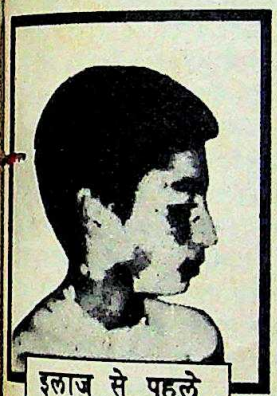

इलाज से पहले

इलाज के बाद

इस रोग में मेलेनोसाइट कों अपदस्थ करने की दवा दी जाती है, जिस से मेलेनीन नामक पीगमेन्ट बनता है और त्वचा का असली मूल रंग देखने कों मिले । छः वर्ष से पचास साल की उम्रवाले व्यक्तियों पर उपचार सफल और योग्य है । ऐसे रोगीयों को दवा मुखसे दि जाती है । इस दवा के साथ सूर्य की धूप बहुत योगदान देती है । सवेरे की हलकी धूप नही, लेकीन दिन के ११ से २ के बीच सूर्य तेज किरणे श्वेत दाग पर स्पर्श करे, इसी प्रकार ५ मिनट बैठे रहना चाहिये । इसी प्रकार तीन या चार सप्ताह के दौरान श्वेत दाग पर त्वचा के मूल रंग जैसा बहूत फुटकल पीगमेन्ट दिखाइ देते है । ६ माह मे सफेद दाग की त्वचा असली रंग पकड लेती है । बरसाती मोसम मे, धूप के अभाव से कृत्रिम अल्ट्रावायोंलेट किरणों की गर्मी फायदाकारक होती है । मुख के जरिये दवा लेने पर कोई विपरीत असर नही, बल्की असली सौंदर्य वापस आने लगता है, और निखर उठता है ।

इलाज से पहले

इलाज के बाद

डॉ. विजय एल. जोबनपुत्रा एल. सी. ई. एच. (मुंबई) कन्सल्टिंग होमिओपाथ

शांतीनाथ शॉपिंग सेंटर, फर्स्ट फ्लोर, अेस. वी. रोड, ओरा टॉकिझ के बाजुमें, मलाड (पश्चिम), मुंबई–४०० ०६४.

समय : सुबह १० से १ शाम ४ से ७ शुक्र–शनि–रवि बंद रहेगा

फोन : ६८२ ६७ २०, ६८२ ७८ २९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतोष दीक्षित

बूढ़ा आदमी और बूढ़ा कुत्ता

खुद्दारी दिखाने और पराश्रयी रहने में बड़ा विरोधाभास है. मानवीय संबंधों में ऐसी स्थितियां बना ही करती हैं. लेकिन मामला आदमी और जानवर का हो तो? कथाकार और व्यंग्यकार डॉ. संतोष दीक्षित ने इस कहानी में इसी नुक्ते पर नजर डाली है. दो संग्रह भी छप चुके हैं.

वह जो लंबी-सी पतली गली है न, जिसके अंदर एक पुरानी मस्जिद है, उसी मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे जो छोटी-सी तिकोनी जगह थी, उसी में लगाने लगा है बूढ़ा अपनी दुकान. अब तो महीना भर होने को आया है. जब बेटे-बहुओं से रोज ही रोटी-पानी के लिए किच-किच होने लगी तो बुढ़िया ने अपनी चांदी की हंसुली बेचकर थोड़ी पूंजी जुटाई. मौलवी साहब ने तरस खाकर दस रुपए महीने में जगह किराए पर दे दी. बूढ़ा खैनी, बीड़ी, सिगरेट, बिस्किट, साबुन आदि बेचने लगा.

बूढ़ा एकदम झुरझुरा चुका है. जवानी में बहुत देह खटाई थी उसने. एक नंबर का वेल्डिंग कारीगर था. तीन-तीन बेटों को भी वेल्डर बना दिया उसने. दो बेटियों की शादी भी कर चुका था. सोचा था...बुढ़ापा बेटों के आसरे कट जाएगा, मगर...

दुकान पर जो भी ग्राहक आता, बूढ़े को उसकी सुस्ती के लिए अवश्य फटकारता. दमे से बुरी तरह आक्रांत बूढ़े का पूरा शरीर रह-रहकर देर तक धीमे-धीमे हिलता रहता है और उसकी सांसें अजीब-सी घर्र... घर्र... सों... सों... की आवाज के साथ निकलती हैं.

दुकान की बगल में, मस्जिद के प्रवेश द्वार से थोड़ी दायीं ओर हटकर एक बूढ़ा कुत्ता भी पसरा रहता है. वह भी अक्सर अपनी नाक से घुर्र...घुर्र... की आवाजें निकालता है. थोड़ी दूर खड़ा कोई व्यक्ति यह भेद नहीं कर सकता कि उसके कानों में पड़ने वाली घर्र... घर्र... सों... सों... की आवाज कुत्ते ने निकाली है या बूढ़े ने. बूढ़े को जब भी फुर्सत मिलती है, वह मीठी नजरों से कुत्ते की ओर देख लेता है. नित्य ही पच्चीस पैसे वाले दस-पांच बिस्किट महज इस कुत्ते की वजह से ही बिक जाते हैं. बूढ़े की सुस्ती पर दुरदुराने व उस पर हंसने वाले लोग ही उस बूढ़े कुत्ते पर पूरी दया दिखलाते हैं और किसी-किसी दिन उसकी तरफ एक-आध बिस्किट फेंक देते हैं. रात में सोने के वक्त बूढ़ा जब अपने स्तर से आदमियों के इस व्यवहार का विश्लेषण करने लगता है तो उसे कुत्ते से ईर्ष्या भी होने लगती है.

पिछले जुम्मे की ही बात है. उजियार भाई खुर्शीद के अब्बा से कह रहे थे, "आपको याद है भाईजान, उस रहमनवा की...? अरे वही...जो मस्जिद में झाड़ू-बुहारू, दिया-बत्ती का काम करता था. वह भी फुर्सत पाते ही मस्जिद के दरवाजे पर पसर जाता था. लगता है उसी की रूह समा गई है इस कुत्ते में."

और फिर उजियार भाई बीड़ी का एक बंडल और कुत्ते के लिए एक बिस्किट खरीदते हुए उस पर बड़बड़ाने लगे कि "कुछ लोगों के पैर कब्र में लटके होते हैं पर कमाने-खाने की हवस नहीं मिटती. यही तो वक्त है, चैन की रूखी-सूखी जो मिले खाकर अल्ला का नाम लेने का. लेकिन अब इन बुजुर्ग को कौन समझाए...पता नहीं सुनाई भी देता है या नहीं...?"

उस दिन बूढ़ा बड़ा ही बेचैन रहा था. उसकी सांसों की तकलीफ भी काफी बढ़ गई थी. रह-रहकर वह कुत्ते पर ही बड़बड़ाता रहा, "यह स्साला हरामी यहां न पसरा होता तो लोग शायद मुझसे ही हंसकर दो बातें करते. न करते हंसकर बातें...कम-से-कम इतना कोसते तो नहीं. एक मेरी किस्मत भी बनाई है अल्ला ने...इस उम्र में भी हाथ-पांव हिलाए बिना दो रोटी नसीब नहीं. एक यह है हरामी का

एक मैं हूं... इतना खुद्दार... कि आज भी हाथ-पैर चलाकर खा रहा हूं... और यह है... काहिल... दुम हिलाने वाला

सभी रेखाचित्र: सुदेश

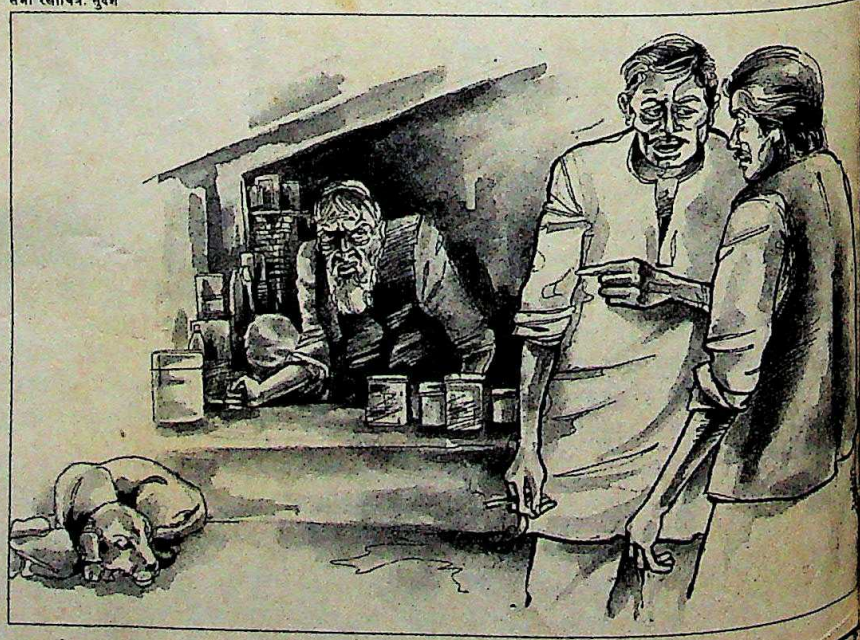

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

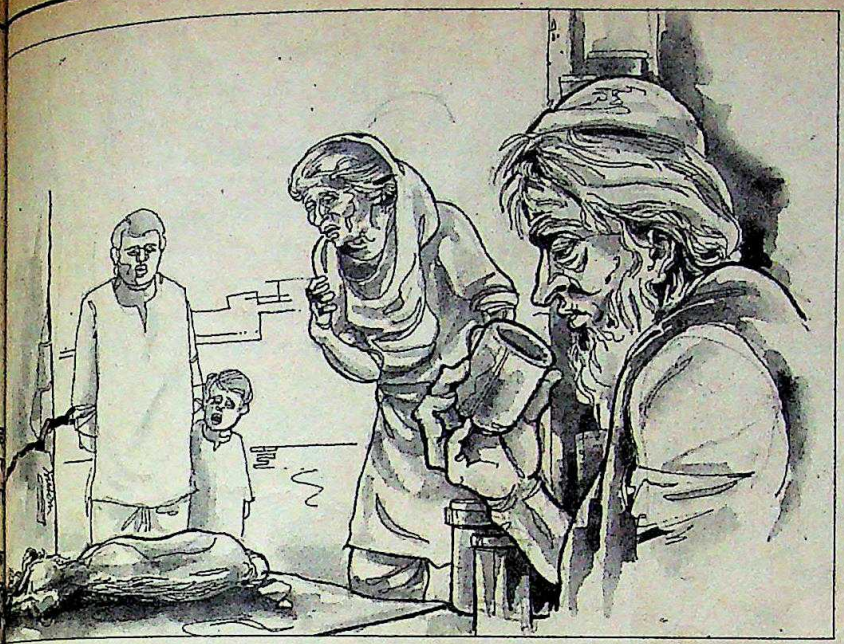

कोई प्रेम से बिस्किट भी फेंकता है आगे, तो इस कदर सुस्ती से देह हुआ उठता है, मानो देने वाले का उस पर कोई एहसान करने जा है." बूढ़े की हँफनी बढ़ गई और वह घर्र...घर्र...सों...सों...करने लगा.

बेचैन रहा था. वह भी काफी बाद पहर जब बुढ़िया थोक बाजार से कुत्ते पर ही के लिए सौदा लेकर लौटी तो बूढ़े की हरामी यहां रही देखी. सामान पटककर झट चाय याद मुझसे ही ने आई और चाय के साथ दो करते हंसकर बूढ़े को निगलवाई.

सारी बातें जानकर उसने बूढ़े को देते हुए कहा, "दुकान जमानी है लोगों की सहनी ही पड़ेगी. अपनी का खाने लगे हो...चार पैसे भी लगे हो...और फिर अपनों की दिन-उलटी-सीधी सुनने से तो अच्छा है पराये की दो बातें बर्दाश्त कर की बात ज्यादा घात करती है, तो यूं हवा में उड़ जाती है...."

की बातों ने बहुत असर किया. बीड़ी की जगह दुकान से लेकर एक मुलगा ली.

की दुकान अब काफी जम चुकी है. गजब की मेहनती है. इस उमर में बाजार से लेकर चौका-चूल्हा सब है. बूढ़ा तो बस दिन भर बैठा-बैठा है किसी तरह. उसका खाना-सोना में ही होता है. प्रतिदिन रात में दुकान समेटकर उसी में बूढ़े का लगाती है. सुबह बूढ़े को चाय देकर से दुकान सजाती है और तब तक को निबटाती है जब तक बूढ़ा से लौट नहीं आता.

बूढ़े की दुकान अब काफी जम गई है. फिर भी बूढ़ा खुश नहीं रहता है. रह-रहकर कुत्ते के प्रति उसकी घृणा बढ़ती ही जा रही है. वह अक्सर अकेले में बड़बड़ाता है, "एक मैं हूं...इतना खुद्दार...कि आज भी हाथ-पैर चलाकर खा रहा हूं... और यह है...काहिल... दुम हिलाने वाला...! आज मैं भी बेटों-बहुओं के आगे दुम हिला सकता तो क्या मुझे भी दो रोटी नसीब नहीं होती?"

और उस दिन तो बूढ़े को बहुत ही बुरा लगा. हफीज मियां ने उसी की दुकान से सिगरेट मांगा और सुलगाकर सामने आ रहे सुलेमान को रोककर कहा, "यार, हमारे लौंडे डांव-डांव मारे चल रहे हैं और यह बुड्ढा आराम से बैठकर पुलाव-कीमा उड़ा रहा है.... स्साला मरता भी नहीं कि इसकी जगह मैं अपने बेटे को दुकान खुलवा दूं..."

और जाने से पहले हफीज मियां ने कुत्ते के पास बैठकर उसे दुलारा और फिर बूढ़े को एक बिस्किट देने को कहा.

बूढ़े के चेहरे की नसें फूलने लगी थीं. वह मन ही मन सोचने लगा—इंसानों की भी अजीब फितरत है. दुम हिलाने वाले कुत्ते से लाड़ करेंगे मगर उस जैसे कमाने-खाने वाले बूढ़े से ढंग से बात भी नहीं कर सकते. और ऊपर से ईर्ष्या...और घृणा...! यदि कल को किसी चौराहे पर बैठकर वह खैरात मांगने लगे तभी शायद यह हफीज मियां उसकी ओर दस-बीस पैसा उछालकर अपनी दरियादिली दिखा सकें...ऐसे कहां...?

तभी हफीज मियां ने चिल्लाकर कहा, "सुनते नहीं हो बुढ़ऊ, एक पच्चीस पैसे वाला बिस्किट देना."

बूढ़े ने धीमी लेकिन सख्त आवाज में कहा, "बिस्किट नहीं है."

"वो क्या रखा है उस मर्तबान में," हफीज मियां झुंझला उठे.

"पचास पैसे वाला है, दे दूं?" बूढ़े ने व्यंग्य कसा.

"अब दे भी दो...आज बरखुरदार की किस्मत तेज लगती है." हफीज मियां कुत्ते के पास से उठते हुए दुकान की ओर लपके और बिस्किट लेकर कुत्ते की ओर मुड़ गए.

इंसानों की भी अजीब फितरत है. दुम हिलाने वाले कुत्ते से लाड़ करेंगे मगर कमाने-खाने वाले बूढ़े से घृणा..!

बिस्किट देने और पैसे सहेज लेने के बाद बूढ़ा बड़बड़ाने लगा, "किस्मत उसकी तेज नहीं...तुम लोगों की नजर में खोट है. वैसे कल तो पता ही चल जाएगा कि किसकी किस्मत ज्यादा तेज है...?"

अगले दिन सबसे पहले बुढ़िया की ही नजर पड़ी थी मरे हुए कुत्ते पर. बुढ़िया ने बूढ़े को चाय का गिलास थमाते हुए पूछा, "कुत्ता कैसे मर गया?"

बूढ़ा खामोश रहा.

बुढ़िया ने पूछा, "इधर जो चूहा मारने के वास्ते दो-तीन बार जहर मंगवाया था तुमने, वे सब पुड़िया कहां हैं?"

बूढ़ा खामोशी से चाय सुड़कता रहा.

कुत्ते के मरने की खबर पूरी गली में फैल गई. लोग आते, खैनी, बीड़ी, सिगरेट लेते और कुत्ते की मौत की बाबत पूछते.

बूढ़ा सिर झुकाए चुपचाप सामान दे देता.

जब लोग कुत्ते को उठाकर दफनाने ले जाने लगे, तो बूढ़े ने मुंह फेर लिया.

लोगों में फुसफुसाहट फैल गयी—"बूढ़े को कुत्ते से बेइंतहा मुहब्बत थी. उसकी मौत के बाद से कैसा चुप हो गया है."

रात में खाना लेकर जब बुढ़िया आई तो दुकान समेटते हुए बड़बड़ाने लगी, "हत्यारे को जरा भी दया नहीं आई. एक कुत्ते को भी चैन से खाते नहीं देख सकते...और खुद को इंसान कहेंगे."

बूढ़ा खामोशी से खाता रहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्मरण

चलताऊ ब्यौरा

बड़े नेताओं की भरमार

आधुनिक भारत के प्रमुख राजनेताओं में से एक डॉ. राममनोहर लोहिया के बारे में बहुत किताबें आई हों, ऐसा नहीं है लेकिन हरीशचंद्र की किताब 'डॉ. लोहिया की कहानी, उनके साथियों की जुबानी' उनके जीवन को नई तरह से सामने लाने का प्रयास करती है. पूरी तरह नई राजनैतिक प्रणाली विकसित करने की अपनी लड़ाई में, जो उनके मरने के बाद एकदम छितरा गई है, डॉ. लोहिया ने जिन लोगों को साथी बनाया या जो लोग उनके साथी बने, उनमें से 38 लोगों के संस्मरणों के आधार पर यह किताब उनके व्यक्तित्व और जीवन के कई पहलुओं को सामने लाती है.

लेकिन डॉ. लोहिया के कई घनिष्ठ लोगों में से 38 को चुनकर और उनकी बातचीत को पुस्तक में डालने पर थोड़ी आपत्ति हो सकती है. इस समीक्षक को भी इनमें से करीब 10 ऐसे नाम लग रहे हैं जिनका स्थान औरों को मिलना चाहिए था. कुछ नाम शायद धौंस जमाने के लिए भी हैं. अब चौधरी देवीलाल की लोहिया के बारे में कुछ कहने की क्या योग्यता है? वे न तो उनके काम के साथी थे, न अटलबिहारी वाजपेयी, तारकेश्वरी सिन्हा या बलराज मधोक की तरह के विरोधी (और साथ ही प्रशंसक भी).

पर बलराज मधोक को पांच व्यक्तियों के छोटे परिचय में ही 'लोहियावादी विचारक' कहना किसी के भी गले नहीं उतरेगा. डॉ. पुष्पेश पंत कई विषयों के विशेषज्ञ हैं पर इस पुस्तक में दिए अपने परिचय को देखकर वे भी शरमा जाएंगे. उन्हें 'महान शिक्षा शास्त्री व साहित्यकार' बताया गया है. इस तरह कार्टूनिस्ट और व्यंग्यकार राजेंद्र पुरी को 'महान समाजवादी तथा साहित्यकार' कहने की क्या जरूरत थी.

लेकिन कई लोगों की बातें महत्वपूर्ण हैं. छात्र जीवन में तेजस्वी रहे किशन पटनायक अपने 40 वर्षों के राजनैतिक जीवन के बारे में कहते हैं, "लोहिया को देखकर हमें लगा कि राजनीति में बगैर सफल हुए भी रहा जा सकता है." और यही प्रेरणा उनके 'असफल' रहकर भी निरंतर सक्रिय रहने का कारण बनी है. लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि जिन लोगों की बात इस किताब में आई है उनमें से ऐसी प्रेरणा पाकर काम करने वाले पटनायक अकेले आदमी हैं.

डॉ. लोहिया की कहानी
संस्मरण
सं. हरीशचंद्र
नोएडा-न्यूज
प्रा.लि., दिल्ली-6
कीमत: 50
कुल पृष्ठ: 288

पर कई लोगों से पूछे गए सवालों का स्तर काफी हल्का है या उचित आदमी से उचित सवाल नहीं पूछे गए हैं. प्राणनाथ लेखी, रघुवीर सहाय, राजेंद्र पुरी जैसे लोगों से उनके काम के क्षेत्र पर पड़े लोहिया के असर या लोहिया के ज्ञान के बारे में पूछा जाना चाहिए था. फिर भी यह किताब लोहिया के अनेक अनजाने पहलुओं को सामने लाने में सफल रही है. जेपी के बारे गई मधु लिमये की एकाध टिप्पणियों को छोड़ दें तो 15 पृष्ठों की उनकी भूमिका भी अच्छी है.

—**अरविंद मोहन**

भाषण संकलन

मील के पत्थर

भावनात्मक लेखों का संग्रह

स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में सक्रिय पीढ़ी के राजनेता अब देश में गिने-चुने ही रह गए हैं. उन गिने-चुने राजनेताओं में से उपराष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा एक हैं. 'हमारे पथ-प्रदर्शक' में डॉ. शर्मा के विगत तीन वर्षों के दौरान देश के महान स्वतंत्रता सेनानियों, विभूतियों एवं राजनेताओं के बारे में समय-समय पर दिए गए भाषण संकलित हैं. इसे अगर डॉ. शर्मा के भावनात्मक लेखों का संग्रह कहा जाए तो गलत नहीं होगा क्योंकि इसमें जिन 32 महापुरुषों के बारे में उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए हैं, उनमें से अधिकांश से वे देश सेवा, राजनीति, साहित्य आदि विभिन्न क्षेत्रों में किसी-न-किसी रूप में प्रभावित रहे हैं.

हमारे पथ-प्रदर्शक
भाषण संकलन
डॉ. शंकरदयाल शर्मा
नटराज प्रकाशन,
दिल्ली-52
कीमत: 90 रु.
कुल पृष्ठ: 136

इन भाषणों के माध्यम से डॉ. शर्मा के एक नए रूप को पहचाना जा सकता है जो उनके गहन अध्ययन, उन व्यक्तियों से संबंधित तिथियों एवं घटनाओं के ऐतिहासिक विवेचन की उनकी दृष्टि और उनके भीतर छिपे साहित्यकार से साक्षात्कार कराता है.

किसी महापुरुष के बारे में कुछ कह पाना उतना आसान नहीं है जब तक कि उसे समझा न जाए. डॉ. शर्मा ने अपने-अपने क्षेत्र के महान व्यक्तियों के बारे में गहराई से अध्ययन और चिंतन के बाद अपने विचारों को प्रतिपादित किया है जिससे उन व्यक्तियों के कार्यों एवं विचारों पर प्रकाश पड़ता है.

डॉ. शर्मा जिन महान व्यक्तियों से बहुत अधिक प्रभावित रहे हैं, उनमें से एक नेहरू एक हैं. उनके बारे में वे कहते हैं, "पं. नेहरू के विचारों की महत्वपूर्ण विशेषता मुझे यह मालूम पड़ती है कि उनके चिंतन के पीछे गहरा इतिहास-बोध झांकता दिखाई पड़ता है, और यह एक बहुत बड़ा कारण था कि वे अपने देश को गहराई से समझ सके..."

आचार्य नरेंद्र देव के भी संपर्क में वे रहे और उनके बारे में वे कहते हैं, "उन्होंने हमारी आजादी की लड़ाई को एक बौद्धिक आधार दिया तथा उसके संगठन को व्यापक बनाया. हमारे संविधान में जिस समाजवादी समाज की स्थापना की बात है, उसका बहुत श्रेय नरेंद्र देव जी के समाजवाद संबंधी चिंतन को है..."

पुस्तक में दिए गए लेख ऊबाने वाले भाषण नहीं बल्कि ऐसे विद्वतापूर्ण एवं भावनात्मक लेख हैं, जिन्हें पढ़कर आनंद आता है. इसमें कई चित्र भी हैं जिनमें डॉ. राजेंद्र प्रसाद, पं. नेहरू, जगजीवन राम, माखनलाल चतुर्वेदी, के.एम. मुंशी, रफी अहमद किदवई, लालबहादुर शास्त्री, गोविंदवल्लभ पंत और श्रीप्रकाश जी के साथ विभिन्न अवसरों पर डॉ. शर्मा शामिल हैं.

'हमारे पथ-प्रदर्शक' पुस्तक न केवल महान व्यक्तियों को डॉ. शर्मा की दृष्टि से जानने का अवसर प्रदान करती है बल्कि स्वयं उन्हें भी जानने का अवसर देती है. इसकी भाषा में प्रवाह है और बिलकुल बातचीत शैली में है.

—**देवेंद्र उपाध्याय**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GULF FAST TRAC
2-STROKE ENGINE OIL

Petrosil introduces Gulf Fast Trac. The first new generation synthetic based 2-Stroke engine oil. Gulf Fast Trac is specially formulated to give an extra surge of raw power and speed to your motorcycle. **The Gulf Fast Trac advantage.** What makes it far superior to conventional 2-T oils is its state-of-the-art technology. Gulf Fast Trac is blended with an advanced synthetic base and hi-tech ashless additives to ensure complete combustion and a dramatic reduction in friction. And virtually no smoke emission. For you it means power-packed acceleration. And for your bike, longer engine life. **Approved by Bajaj Auto Ltd.** Bajaj Auto Ltd., India's largest manufacturer of two-wheelers have tested Fast Trac under the toughest conditions-and have fully endorsed its benefits. Try it in your bike. And feel it turn into a clean, throbbing power machine!

Gulf

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Manufactured by: **Petrosil Oil Co. Ltd.**
Vijay House, 3 Dinsha Wachha Road, Bombay 400 020. Tel: 220818.

World's First Choice.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम न आई कमनीय काया

संदेश फोन पर आया था, "मैं डायरेक्शन के फील्ड में कदम रख रही हूं. महबूब स्टुडियो में मुहूर्त है, आप जरूर आएं."

ये थीं—**सुषमा शिरोमणि,** जो अब तक हिंदी, मराठी फिल्मों की प्रोड्यूसर थीं. मुहूर्त गाने की रिकॉर्डिंग से होना था. लता मंगेशकर के इंतजार में सभी सूख रहे थे लेकिन इस बोरियत में सबको राहत पहुंचाती फिर रही थीं **नीला.** कम कपड़ों से झांकती उनकी कमनीय काया ने कितनी ही निगाहों को बेईमान कर दिया. सब यही समझ बैठे थे कि शायद नीला ही हीरोइन हैं. लेकिन मुहूर्त होने के पहले नीला दत्त, अचानक कहीं गायब हो गई. हुआ यह कि सुषमा से किसी ने पूछ ही लिया, "आपने नीला को हीरोइन लिया है क्या?" "नहीं, मुझे तो टीनएज गर्ल चाहिए थी..." नीला क्या इसीलिए चली गई कि कम उम्र न होने का भेद खुल जाएगा?

नीलाः जवाब से खफा

सेकंडों में निबटाया महाभारत

मुंबई की तेज बरसात ने दो फ्लाइट्स एक साथ लेट कर दी थी. एक वह जिससे **जयाप्रदा** को मद्रास जाना था, दूसरी वह जिससे कुछ फिल्म पत्रकार दिल्ली जा रहे थे. अब इसे

जयाप्रदाः पत्रकारों को मुंह की

सुखद संयोग ही कहना चाहिए कि सवालों के जाल से जल्दी निकल भागने वाली जयाप्रदा शब्दजाल बांधने वालों के पास खुद ही चली आई.

महाभारत का युद्ध 18 दिन चला, यहां 18 सेकंड के अंदर जयाप्रदा ने मामला निबटा दिया, "यह कहना सरासर गलत है कि मुझे धरम जी से प्यार है या हम दोनों शादी करना चाहते हैं. मुझे अपने पति से प्यार है और धरम जी से मेरी दोस्ती का उन्हें पता है."

नई है या पुरानी मेहंदी

जिस समय इस फिल्म का मुहूर्त हुआ, हीरोइन का नाम सस्पेंस की खातिर खाली छोड़ दिया गया था. पर आज एक मशहूर होटल के डिस्कोथे में शूटिंग करते हुए निर्माता ने जो कुछ बताया, उससे वहां जुटे पत्रकारों समेत इंडस्ट्री वाले भी चक्कर में पड़ गए—उनकी सोची हीरोइन को नई कहेंगे या पुरानी?

पाकिस्तानी बालाओं का इधर जोर है. हर कोई हिना तलाशता पाकिस्तान पहुंच रहा है. उन्हें इंग्लैंड में हिना की जबरदस्त टक्कर मिल गई—**मेहंदी.**

ये मेहंदी तो वही लगती हैं जो पहले मॉडलिंग कर चुकी हैं, सौंदर्य प्रतियोगिता में हिस्सा ले चुकी हैं और विदेश में बनी 'प्रिंसेज फॉम काठमांडू' में रच-बस भी चुकी हैं तो क्या अब वही नवीदा, जिनका पूरा नाम नवीदा मेहंदी था, अब पाकिस्तानी सुंदरी मेहंदी बन हिंदी फिल्मों में पैर फैलाने की कोशिश कर रही हैं? या फिर उनसे मिलती-जुलती कोई पाकिस्तानी लड़की मेहंदी बन उनकी पब्लिसिटी का फायदा उठाने की कोशिश में है?

मेहंदीः नया नाम, पुरानी काया?

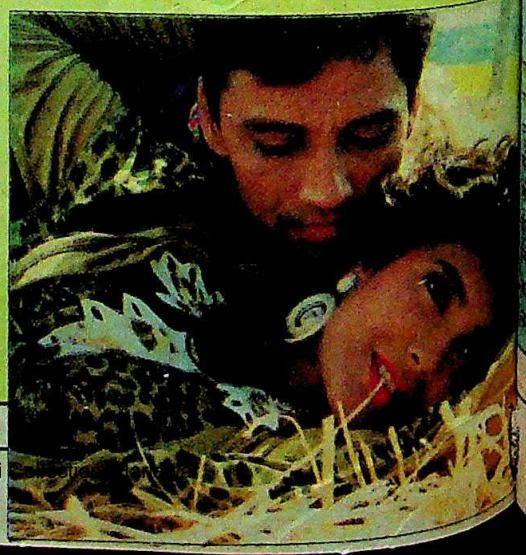

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ओर इनकार और दूसरी ओर...

अनुभव कहता है कि जिस खबर का जितना ज्यादा हल्ला होता है, सितारे उसके बारे में उतने ही ज्यादा अनभिज्ञ मिलते हैं. जैसे संजय दत्त को नहीं मालूम था कि माधुरी दीक्षित के साथ उनका रोमांस शादी की हद छूने लगा बताया जा रहा है. पूछने पर संजय का सुविचारित जवाब था, "शादी का सवाल ही कहां उठता है? आई एम ए मैरिड मैन!"

चलिए साहब, **माधुरी** के पास चले चलते हैं. माधुरी ने बात सुनी, फिर शरमाईं, फिर कुछ कहने में सकुचाईं, फिर धीरे से बुदबुदाईं, "वी आर वेरी गुड फ्रेंड्स. हमारी दोस्ती खूब पटती है."

मगर यह तो शादी की संभावना वाले सवाल का सीधा जवाब नहीं हुआ. फिर पूछने पर वे पहले लजाईं, फिर थोड़ा मुस्कराईं और कुछ कहतीं, इसके पहले कमबख्त फोन की घंटी बज उठी. उन्होंने 'जान बची...' के अंदाज में चोंगा उठाया, 'संजय का फोन है', इतना बताया और चमकता चेहरा लिए आंखें झपकाती फोन उठाए अंदर भाग गईं.

अब इस उत्तर का जो मतलब लगा सकें, लगा लें.

माधुरी और संजयः ना ना करके...

जागते-जागते रह गए सोए शेर

अमजदः हीरो बने

जब से **अमजद खां** ने राज्यसभा के सदस्य रत्नाकर पांडेय को करारी चिट्ठी लिखी है तब से वे अचानक हीरो हो गए हैं. पंजाब का नाम बदलकर खालिस्तान कर देने के सुनील दत्त के प्रस्ताव की पांडेय ने जमकर खिल्ली उड़ाई थी. इसी की प्रतिक्रिया में अमजद ने जिन जोरदार शब्दों में सोए शेरों को न जगाने की धमकी दी है उसने अक्सर दुत्कारे जाने वाले एक्टरों का मनोबल इतना ऊंचा किया कि अमजद के सम्मान की तैयारी की जाने लगी. यह और बात है कि रिकॉर्डतोड़ बारिश के कारण इंडस्ट्री का यह उत्साह भी धुल गया.

हीरो का मर्दाना जवाब

जुहू के शानदार बंगले में संपन्न फिल्म के उस मुहूर्त शॉट में हालांकि चार कलाकार जौहर दिखा रहे थे लेकिन आकर्षण का केंद्र बने हुए थे 'आशिकी' फेम **राहुल रॉय**.

असर उनके फेयर सेक्स फैंस का था या सवाल ही राहुल को चुभ गया, यह 'लवर ब्वॉय' अचानक एंग्री यंगमैन हो उठा. पूछा उनसे यह गया था कि 'आशिकी' सुपरहिट होने के बावजूद 'दिल है कि मानता नहीं' में महेश भट्ट ने उन्हें फिर क्यों नहीं लिया?

पहले तो शांत राहुल ने शांत ही जवाब दिया कि महेश की हर फिल्म में उनका होना जरूरी क्यों हो? पर यह सुनते ही कि महेश उनके गॉडफादर हैं, राहुल बिफर गए, 'यहां कोई किसी का गॉडफादर नहीं. मैं महेश के साथ काम कर जरूर रहा हूं, पर इसलिए नहीं कि मुझे महेश की जरूरत है, बल्कि इसलिए कि महेश को मेरी, राहुल रॉय की जरूरत है. आपको पता होना चाहिए, 35 फिल्मों का हीरो हूं मैं आज.'

सच है, फिल्म जगत में सफलता के बाद हर तरह की सीख स्वयं ही आ जाती है. और मुंह से बड़े-बड़े दावे निकलने लगते हैं.

राहुलः अपने मुंह मियां मिट्ठू

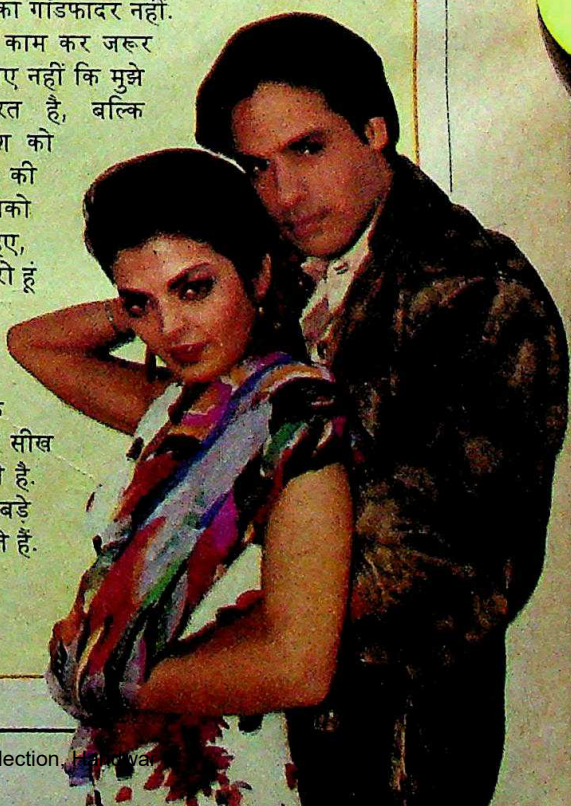

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीना: नई द्रौपदी

एक और चिर वसना

◆ द्रौपदी की अशेष साड़ी की तरह उसकी भूमिका में उतरने वालों की संख्या भी दिन-पर-दिन बढ़ती जा रही है. इसमें सबसे नया नाम अभिनेत्री **नीना गुप्ता** का जुड़ गया है. नीना ने फिल्मों से अधिक पहली मशहूर अविवाहित मां बनकर ख्याति अर्जित की. उन्हें जी.वी. अय्यर की संस्कृत फिल्म 'भगवद्गीता' में द्रौपदी की भूमिका के लिए चुना गया है. अय्यर संस्कृत भाषा में ही फिल्में बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं. नीना को क्या संस्कृत के संवाद बोलने में असुविधा नहीं होगी? नहीं. बकौल उनके, "मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. फिल. की उपाधि ली हुई है." लेकिन महज इससे वे मूल पात्र के साथ न्याय कैसे करेंगी. उनका उत्तर है, "द्रौपदी के पांच पति थे. मेरी तो एक बार भी शादी नहीं हुई." क्या यह कथन उनकी पीड़ा दर्शाता है?

लौह पुरुष

◆ वे ऑरनड श्वार्ज़ेनेगर को भी कुंठाग्रस्त कर सकते हैं. उनकी देहयष्टि ही ऐसी है. कसी हुई मांसपेशियों वाले **प्रेमचंद डोगरा** ने सिंगापुर में आयोजित एशियाई एबीसी प्रो-एम क्लासिक बॉडी बिल्डिंग चैंपियनशिप में लगातार दूसरी बार शानदार विजय हासिल की है. शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता जीतना जैसे उनके जीवन का अंग ही बन चुका है. उन्होंने ब्रिस्बेन में 1988 में 'मिस्टर यूनिवर्स' का खिताब जीता था. उससे पहले वे 'मिस्टर इंडिया' और 'मिस्टर एशिया' की उपाधि भी सात बार जीतकर शरीर सौष्ठव के क्षेत्र में रिकॉर्ड बना चुके हैं. डोगरा होशियारपुर की वातानुकूलित व्यायामशाला में नियमित कसरत करते हैं जहां विश्व स्तर के साधन लगे हैं. उन्होंने अपने लिए वैज्ञानिक तरीके से भोजन की मात्रा और प्रकार नियत कर रखा है. उनके शब्दों में, "दिन में 8 से 10 बार खाता हूं."

डोगरा: देहयष्टि के धनी

दोनों हाथों में लड्डू

◆ सब्र का फल मीठा हुआ. पहले तो पिता प्रधानमंत्री बने, फिर 48 वर्षीय कुंवारे पुत्र पी.वी. रंगाराव ने आंध्र प्रदेश के शिक्षामंत्री पद की शपथ ली. अब वे विवाह के लिए तैयार हैं. उन्होंने अपनी मां से यही वादा किया था. यह पूछे जाने पर कि प्रधानमंत्री का पुत्र और स्वयं मंत्री कहलाने में से कौन-सा बेहतर है, उनका जवाब था— "दोनों. यह तो गुलाब जामुन और लड्डू में से एक चुनने जैसा है."

नन्हीं जान, बड़ा नाम

◆ वह अभी अपनी उंगलियों पर भी मुश्किल से गिनती गिन पाती है. लेकिन 4 वर्षीया कलाकार **शामिली** का नाम आयकर खातों में कमाऊ करदाता के रूप में शामिल हो गया है. इसी वर्ष सर्वोत्तम बाल कलाकार का पुरस्कार जीतने वाली शामिली ने फिल्म 'अंजलि' में बेहद संवेदनशील और परिपक्व अभिनय का परिचय दिया था. संभवत. वह सबसे कम उम्र की करदाता है. और तो और, वह पिछले दो वर्षों से आयकर देती आ रही है! नन्हीं शामिली हर फिल्म के लिए 2.5 लाख रु. ले रही है. इसके अलावा, वह वर्ष भर के लिए फिल्में साइन कर चुकी है. उसकी सफलता का रहस्य? उसके प्यारे पापा के शब्दों में, "उसकी हृदयंगम करने की क्षमता" है. वैसे भी पापा सिर्फ उपदेश नहीं देते. वे तत्परता से सिखाते भी हैं. अपनी सुंदर बच्ची के लिए वे हर दृश्य का अभिनय खुद कर के बताते हैं.

शामिली: जन्मते ही कमाई

लौट आए प्रभु

◆ ग्रीस को उनकी प्राचीनतम विरासत वापस मिले या नहीं पर भारत की इंतजार की घड़ियां खत्म हो गई हैं. 12वीं शताब्दी के पाषाण **नटराज** की प्रतिमा पिछले पखवाड़े तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता के सुपुर्द कर दी गई. 66 करोड़ रु. की इस प्रतिमा को हासिल करने के लिए नौ वर्षों की कानूनी लड़ाई लड़ी गई और अब जाकर भगवान नटराज तंजावुर के मंदिर में पुनर्स्थापित हो सके हैं. हां, प्राण-प्रतिष्ठा के पहले उन्हें नृत्य-संगीत का आनंद जरूर उठाना पड़ा. इस प्रतिमा को लंदन की एक निजी कंपनी ने खरीदा था और अंत में यह कनाडा के पर्यटन डेवलपमेंट कार्पोरेशन के अधीन थी. मंदिर को इसके लिए कई वैज्ञानिक तरीके अपनाने पड़े.

नटराज: बहुतेंहि नचायो!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ी अनोखी मेल अनोखा

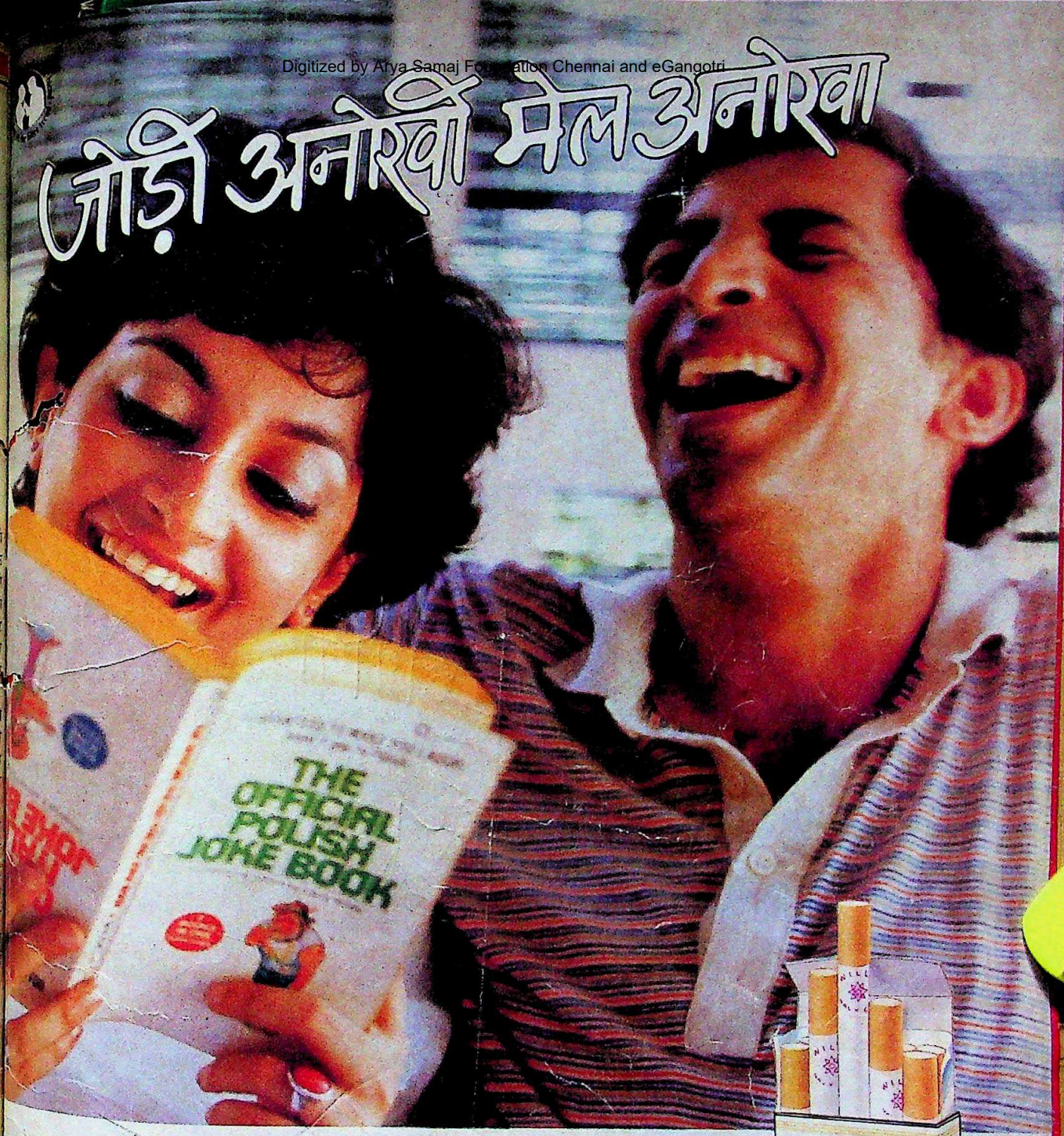

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन। आज भी है यह सबसे बढ़िया। स्वाद में। तसल्ली में। हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर। लाखों सिगरेट प्रेमियों ने इसे आज़माया...फिर हमेशा के लिए अपनाया।

HTA 3987

WILLS
FILTER

फ़िल्टर और तम्बाकू का अनोखा मेल

आई टी सी लिमिटेड
अपना एक ब्राण्ड
भारत में निर्मित

सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

D—(C) 14/88

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AVAILABLE IN SELECTED CITIES

Rothmans

KING SIZE

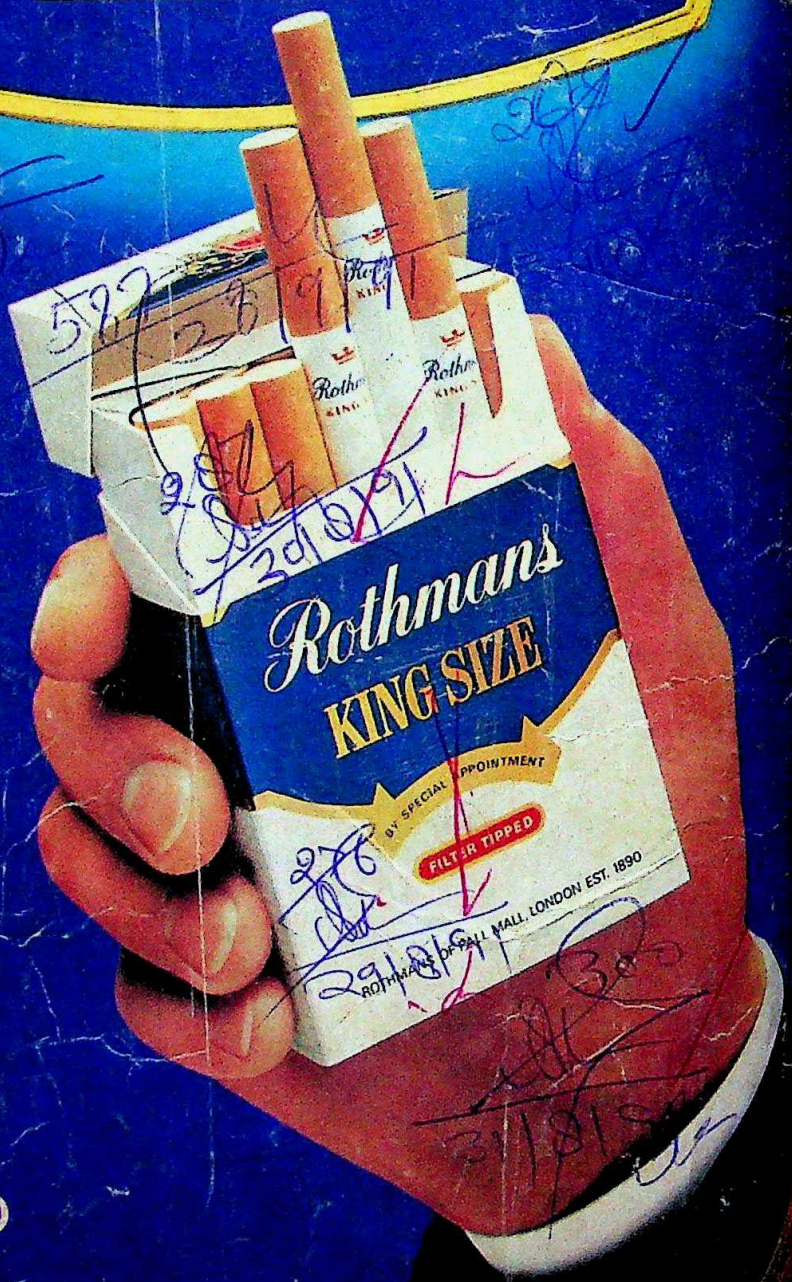

WORLD LEADER

THE BEST TOBACCO MONEY CAN BUY

Made in India under licence by Godfrey Phillips (India) Ltd.

Statutory Warning:
Cigarette smoking is injurious to health

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

15 अगस्त 1991 9 रुपए

इंडिया टुडे

संपूर्ण समाचार पत्रिका

नरसिंह राव
अपना हाथ, सबका साथ

बिहार: लक्ष्मी के सच्चे पुजारी

राजीव हत्याकांड: जांच पर आंच

नई आर्थिक नीति

लाइसेंस राज के खात्मे की शुरुआत

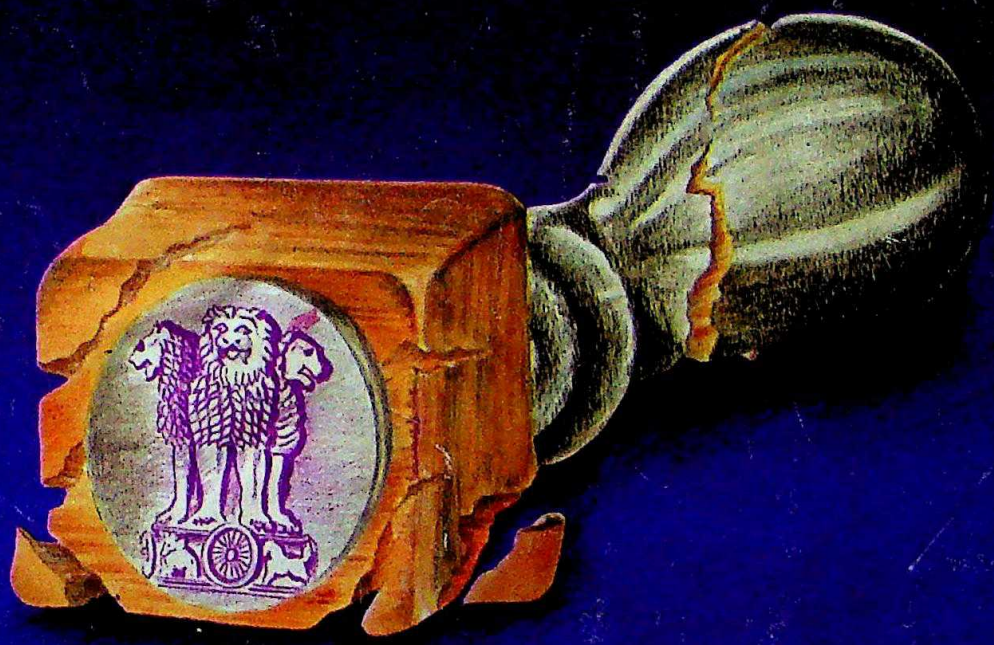

बजट: चालाकीभरा लेन-देन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांव में जमे, शान से सजे

जादू बिखेरिये. कुछ ऐसा समां बनाइये कि लोग आपको दोबारा देखने पर मजबूर हो जायें. एक्शन के जूते पहनिये और फैशन की रूमानी दुनिया में कदम रखिये. एक्शन के जूते आज युवा पीढ़ी में बेहद लोकप्रिय हैं. वजह बहुत सीधी-सादी है. अपनी खास बनावट और शैली के कारण ये जूते सबसे अनूठे हैं. इनकी बनावट ऐसी है कि आपके पांवों को पूरा आराम पहुंचे. सुंदर, सजीले ये जूते विविध रंगों में उपलब्ध हैं. इनका कोई जवाब ढूंढ़े नहीं मिलेगा.

action®

आपकी शान में चार चांद लगाने वाले जूते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइसेंस राज के खात्मे की शुरुआत

वित्तमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने नई उद्योग नीति में व्यापक उदारीकरण का समावेश कर एक नए युग की ओर कदम बढ़ाया पर उन्होंने एक अप्रभावी बजट पेश कर कदम पीछे भी खींच लिया. बजट में वित्तीय घाटे से जूझने की कोशिश तो है पर यह अर्थव्यवस्था के भविष्य के बारे में अस्पष्ट है.

आवरण कथा 14

फिर उभरने लगीं दरारें

जनता दल में फिर कलह उभर आई है. इस बार विश्वनाथ प्रताप सिंह को अजित सिंह की चिट्ठी ने सारा मामला सतह पर ला दिया. उधर, वामपंथी दल भी उलझन में दिखते हैं. माकपा के वरिष्ठ नेता अपने इंका-विरोधी सार्वजनिक रुख और निजी पसंद के बीच झूल रहे हैं.

खास रपट 23

हर रंग की अपनी तरंग

दसवीं लोकसभा को नवागंतुकों, फिल्मी सितारों और साधु-संतों की उपस्थिति से अलग ही रंग मिल गया है. पहले सत्र में चंद्रशेखर और अटलबिहारी वाजपेयी ने अपनी वाकपटुता से मंत्रमुग्ध किए रखा तो भाजपा की 10 महिला सांसद रंग-बिरंगी साड़ियों में दमक रहीं थीं.

खास रपट 44

टूटे वादों की दर्दीली दास्तां

'इंडिया टुडे' की तर्क-वितर्क श्रृंखला की चौथी किस्त में प्रेम भाटिया, सतपाल डांग, गोविंदाचार्य, हरिंदर सिंह खालसा, कुलदीप नैयर, सुबोधकांत सहाय, वसंत साठे, अमरिंदर सिंह, दिलबीर सिंह और सुखजिंदर सिंह वगैरह ने पंजाब समस्या पर बहस के दौरान सनसनीखेज रहस्योद्घाटन किए.

तर्क-वितर्क 49

संदेहास्पद मृत्यु

राजीव हत्याकांड की जांच कर रहे विशेष दल की जांच मुख्य गवाह षणमुगम की संदिग्ध स्थितियों में मौत से संदेह के घेरे में आ गई है. खोजबीन से पता चलता है कि उसकी आत्महत्या की पुलिसिया कहानी में कई छिद्र हैं और शायद षणमुगम को रास्ते से हटा दिया गया है.

खास रपट 67

लक्ष्मी के सच्चे पुजारी

कभी 'भ्रष्टाचार' पर छापे मारने के लिए प्रसिद्ध बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव पर अब उनके मंत्रियों ने ही विधायकों-मंत्रियों के दोहरे वेतन लेने के मामले को प्रश्रय देने का आरोप लगाया है. बतौर शिक्षक-प्राध्यापक भी वेतन लेने वाले विधायकों-मंत्रियों की सूची लंबी है.

खास रपट 70

अगले पन्नों पर

कसौटी 7
तेवर 8
राजरंग 10
हिंदोस्तां हमारा 12
आवरण कथा
अर्थव्यवस्था:
लाइसेंस राज के खात्मे की शुरुआत ... 14
खास रपट
जनता दल: फिर उभरने लगीं दरारें .. 23
आजकल
पीलीभीत: भारी मुठभेड़ का स्वांग 30
अयोध्या: उत्साह या उन्माद 33
असम: महंगी माफी 35
आंध्र प्रदेश: बागी तेवर 37
तमिलनाडु: चीतों पर चोट 39
खास रपट
दसवीं लोकसभा:
हर रंग की अपनी तरंग 44
तर्क-वितर्क
पंजाब:
टूटे वादों की दर्दीली दास्तां 49
खास रपट
पी.वी. नरसिंह राव:
अपना हाथ, सबका साथ 60
व्यापार चक्र 62
शेयर बाजार: 63
मेहमान का पन्ना:
सुकून चाहिए? सोना बेचिए 64
वर्ग पहेली 66
खास रपट
राजीव हत्याकांड: संदेहास्पद मृत्यु 67
अंतरंग 69
खास रपट
बिहार: लक्ष्मी के सच्चे पुजारी 70
कला
विक्टोरिया मेमोरियल:
अतीत का पुनरुद्धार 77
कहानी 80
किताबें 84
परदे के उस पार 86
चर्चित चेहरे 88

आवरण सज्जा: पियली दत्तगुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Adfactors/POCL/7791

For further information contact: Petrosil Oil Co. Ltd. *Head Office:* Apeejay House, 3 Dinsha Wachha Road, Bombay-400 020 Tel: 220818

- ***Regional & Area Offices:*** **Chetan Sharma**, Hindustan Times House, 18-20 Kasturba Gandhi Marg, New Delhi-110 001 Tel: 3315051/3318306
- **R. Varadarajan,** 117, General Patters Road, Madras-600 002 Tel: 840242

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

a passion for power

GULF FAST TRAC 2-STROKE ENGINE OIL

Petrosil introduces Gulf Fast Trac. The first new generation synthetic based 2-Stroke engine oil.

Gulf Fast Trac is specially formulated to give an extra surge of raw power and speed to your motorcycle.

The Gulf Fast Trac advantage

What makes it far superior to conventional 2-T oils is its state-of-the-art technology. Gulf Fast Trac is blended with an advanced synthetic base and hi-tech ashless additives to ensure complete combustion and a dramatic reduction in friction. And virtually no smoke emission.

For you it means power-packed acceleration. And for your bike, longer engine life.

Approved by Bajaj Auto Ltd.

Bajaj Auto Ltd., India's largest manufacturer of two-wheelers have tested Fast Trac under the toughest conditions – and have fully endorsed its benefits.

Try it in your bike. And feel it turn into a clean, throbbing power machine!

Gulf

World's First Choice.

Chatterjee International Centre, 10th Floor, Flat No. 11, 33A Jawaharlal Nehru Road, Chowringhee, Calcutta 700 071 Tel: 291067/296253
Block No. 1, 'Motee' Heera Motee Complex, Wakdewadi, Bombay-Pune Road, Pune 411 003 Tel: 55366 ■ **B.R. Patel,** Relief Road, Above Kwality Restaurant,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ESCORTS LIMITED
THE POWER OF PERFORMANCE

ESCORTS
YAMAHA RX100

RIDE THE INTERNATIONAL FAVOURITE

विडि

आव
पढ़कर
उठाने
बदली
बातें गु
विचित्र
नई दिल्ली

आव
(15 जुल
सरकार
समय वि
और गर
बिठाने
की अल्प
फैसले ले
इंदौर (म.

■ यद्यपि
ने हथ में
अब उन
सांप्रदायि
राष्ट्रीय
आज उन्हें
तो बाद
जयपुर (रा

■ यह न
महंगाई,
जन्मभूमि
समस्याओं
राव कसौ
समय ही
दिल्ली (म

■ नरसिं
प्रधानमंत्री
कि उसमें
गया है कि
कोई विकल
मुजफ्फरपुर

■ देश ने
मंडालोलुप
इसलिए यह
राव जनाद
मंडालोलुप
विद्वता, स
राजनीतिक
बढ़ता है
बनाया (बि

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसा लोकतंत्र?

आवरण कथा 'कड़वी दवा' (31 जुलाई) पढ़कर पता चला कि कठोर आर्थिक कदम उठाने में सरकार ने किस कदर गोपनीयता बरती. विडंबना है कि लोकतंत्र में जनता से बातें गुप्त रखना एक फैशन हो गया है. कैसा विचित्र लोकतंत्र है यह!

नई दिल्ली — **रामपाल शर्मा**

कमजोर प्रधानमंत्री

आवरण कथा 'तख्त पर बैठे तजुर्बेकार' (15 जुलाई) से साफ पता चलता है कि इंका सरकार के कमजोर प्रधानमंत्री का अधिकांश समय विरोधियों से सामंजस्य स्थापित करने और शरद पवार और मंडली के बीच संतुलन बिठाने में ही बीतेगा. जाहिर है, नरसिंह राव की अल्पमत सरकार महत्वपूर्ण और जरूरी फैसले लेने में स्वतंत्र नहीं है.

इंदौर (म.प्र.) — **राजेश रावेरकर**

■ यद्यपि नरसिंह राव एक तजुर्बेकार व्यक्ति के रूप में प्रधानमंत्री के तख्त पर बैठे हैं लेकिन अब उनका सीधा मुकाबला आर्थिक संकट, सांप्रदायिकता और जातिवाद जैसी अनेक राष्ट्रीय समस्याओं से है. उनका अनुभव और ज्ञान उन्हें और देश को कहां ले जाता है, यह तो बाद में ही पता चलेगा.

जयपुर (राज.) — **अजय अग्रवाल**

■ यह नई सरकार की परीक्षा का समय है. महंगाई, बेरोजगारी, अलगाववाद, राम जन्मभूमि विवाद, खस्ताहाल अर्थव्यवस्था जैसी समस्याओं को हल करने में 70 वर्षीय नरसिंह राव कसौटी पर कितने खरे उतरते हैं, यह समय ही बताएगा.

घिनोदा (म.प्र.) — **हरिशंकर एन. उपाध्याय**

■ नरसिंह राव को कांग्रेस अध्यक्ष तथा प्रधानमंत्री बनाकर कांग्रेस ने यह दिखा दिया कि उसमें कितनी एकता है. अब यह स्पष्ट हो गया है कि अखिल भारतीय स्तर पर कांग्रेस का कोई विकल्प नहीं है.

मुजफ्फरपुर (बिहार) — **विश्वनाथ मिश्र**

■ देश ने अब तक महत्वाकांक्षी, स्वार्थी और सत्तालोलुप प्रधानमंत्रियों को ही देखा है, इसलिए यह उम्मीद प्रबल होती है कि निस्वार्थ राव जनादेश के अनुसार सत्ता चलाएंगे, न कि सत्तालोलुपता के वशीभूत होकर. उनकी विद्वता, स्पष्टवादिता, शालीनता तथा बेदाग राजनैतिक जीवन एक विशेष आकर्षण पैदा करता है.

बगहिया (बिहार) — **अजिताभ सिन्हा**

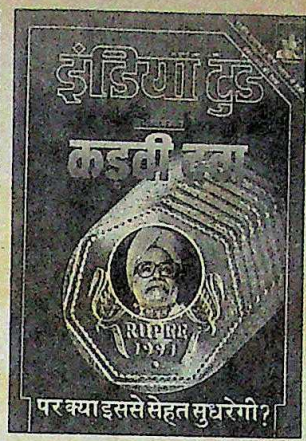

राव सरकार अर्थव्यवस्था में सुधार को लेकर जब तक आम राय नहीं बनाती, डॉक्टर मनमोहन सिंह की कड़वी दवा के कामयाब होने की उम्मीदें बहुत कम हैं. इसके लिए उन्हें सबसे पहले अपनी पार्टी के भीतर ही एक राय बनानी होगी.

नई दिल्ली — **शिवा त्रिपाठी**

वर्ष: 5, अंक 19,
1-15 अगस्त 1991

● **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 3315801-4. टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ● **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कॅपिटेट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8. टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ● **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, मुंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435. टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, मुंबई. ● **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001. फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273. टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188. टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास. ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089. टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर. ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016. फोन: 225398, 221922. टेलेक्स: 21-7138 INTO IN. तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कॅपिटेट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

■ देश की वर्तमान परिस्थितियों से जूझने में वयोवृद्ध प्रधानमंत्री को अत्यधिक श्रम करना पड़ेगा. अनुभव और ज्ञान के अलावा शारीरिक क्षमता भी एक महत्वपूर्ण पहलू है. विडंबना ही है कि पूर्ण रूप से स्वस्थ सरकारी अधिकारी को 58 वर्ष बाद कार्य के अयोग्य समझा जाता है, भले ही देश का प्रधानमंत्री 71वें वर्ष में प्रवेश कर चुका हो.

ग्वालियर (म. प्र.) — **आनंद निगुडकर**

मध्ययुगीन शैली

'जाने पहचाने चेहरे' (15 जुलाई) पढ़कर ऐसा लगा जैसे मध्यकालीन भारत के दस्तावेज हाथ आ गए हों, जिनमें सिपाहियों का वर्णन इसी अंदाज में किया गया है जैसे नाम, जाति आदि. आप जैसी पत्रिका से पाठक उम्मीद करता है कि वह जाति-संप्रदाय की इकाइयों से ऊपर उठकर मंत्रियों की उपलब्धियों, योग्यताओं पर प्रकाश डालेगी, न कि उनका ब्यौरा देने में सिख, जाट, मुसलमान आदि का प्रयोग करेगी.

दिल्ली — **सुनीता जैदी**

मिसाल मिलना मुश्किल

'अपनों ने भी रखा ठोकर पर' (15 जुलाई) पढ़ा. पूर्व उप-प्रधानमंत्री की वर्तमान नियति तो पूर्वापेक्षित थी और इसकी घोषणा प्रेस जगत उनके 'स्वर्णिम काल' में ही कर चुका था. पुत्रमोह में स्वयं के उज्ज्वल कैरियर को दांव पर लगाने का ऐसा उदाहरण कहीं और मिलना मुश्किल है.

गढ़ा (म.प्र.) — **नरेंद्र सिंह जाट**

■ किंगमेकर ताऊ की राजनैतिक दुर्दशा की इतनी अधिक उम्मीद नहीं थी लेकिन यह सब परिवारवाद के पक्षधर एवं पुत्रमोह में अंधे ताऊ की अजीबोगरीब राजनैतिक हरकतों के कारण हुआ है.

बुरहानपुर (म.प्र.) — **सुनील बरोले**

■ पुत्रमोह में अंधे होकर देवीलाल शायद भूल गए थे कि उन्हें पुन: जनता से रू-ब-रू होना है. प्रजातंत्र की यही हकीकत है कि वह जिसे सिर-आंखों पर चढ़ाती है, उसे घर-वापसी का रास्ता भी दिखा देती है.

बामनवाड़ा (राज.) — **नरेंद्र कुमार पंड्या**

■ इतिहास गवाह है कि जब-जब किसी नेता ने लोकतंत्र के मूल्यों को ताक पर रख, उचित-अनुचित तरीके से परिवारवाद को बढ़ावा दिया, वह औंधे मुंह गिरा. पूर्व उप-प्रधानमंत्री द्वारा विधायक तक की सीट गंवा देना दर्शाता है कि भारत का मतदाता मात्र लोकलुभावन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारों से विचलित नहीं होता.
कैथल (हरियाणा) **अंकुर मेहता**

■ ताऊ को बड़ी आसानी से कलयुगी धृतराष्ट्र कहा जा सकता है. धृतराष्ट्र ने राष्ट्र खोया था. ताऊ ने भी राज्य खोया और इसकी वजह एक ही है 'अति महत्वाकांक्षी मूर्ख पुत्र.'
जबलपुर (म.प्र.) **संजीव चौधरी**

उम्मीदें बहुतेरी

'मर्ज कहीं लाइलाज न हो जाए' (15 जुलाई) में अर्थव्यवस्था की खस्ता हालत का विवरण चिंता बढ़ाने वाला है पर सौभाग्य से पहली बार देश को ऐसा योग्य वित्तमंत्री मिला है, जो कथनी और करनी में फर्क नहीं करेगा. उनके शुरुआती कदमों को देखकर लगता है कि वे अर्थव्यवस्था के लाइलाज मर्ज को सुधारकर ही दम लेंगे.
बरेली (उ.प्र.) **राहुल शर्मा**

तथ्यपूर्ण खोज

'घिनौनी साजिश का ओर-छोर' (15 जुलाई) में आपने राजीव हत्याकांड का जो विस्तृत विवरण छापा, उससे पूरे हत्याकांड की साजिश को क्रमवार जानने का मौका मिला. इस तरह की तथ्यपूर्ण जानकारी देने के पीछे 'इंडिया टुडे' की खोजी प्रवृत्ति ही है.
बिसाऊ (राज.) **देवेंद्र सिंह चौहान**

अपूरणीय क्षति

'कर्ज ने मारा' (15 जुलाई) पढ़कर बहुत दुख, आश्चर्य और निराशा हुई. न्याय और सामाजिक अधिकारों के लिए लड़ने वाला 123 वर्ष पुराना 'अमृत बाजार पत्रिका' काफी रोचक, विवरणात्मक और पठनीय हुआ करता था. इसके बंद होने से पत्रकारिता जगत को अपूरणीय क्षति हो रही है.
छपरा (बिहार) **माधवेंद्र तिवारी**

डंके की चोट पर

'खुला खेल फरक्काबादी' (15 जुलाई) पढ़ा. हार की कुंठा से बौखलाए हुए अन्य दल लालू यादव पर धांधली का दोषारोपण कर रहे हैं. सच तो यह है उन्होंने डंके की चोट पर विजय हासिल की और विरोधी दलों को मटियामेट कर दिया.
पानीतोला (असम) **रमेश कुमार साहू**

माफिया बने

'हाथ से बाहर जाते हालात' (15 जुलाई) में श्रीलंका में जारी हिंसा और प्रतिहिंसा का सही विवेचन किया गया है. दरअसल एलटीटीई ऐसे मुकाम पर पहुंच गई है जहां से उसका लौटना मुश्किल है. 'ईलम' की मांग भी पीछे छूट गई है. और एलटीटीई एक माफिया बनकर रह गई है.
इलाहाबाद (उ.प्र.) **बिंदु पेस्ट्रीवाला**

'रॉ' जैसी विदेशी खुफियागीरी करने वाली संस्था एक बार फिर गहरी नींद में सोती ही रह गई. आपके लेख से लगता है अब पत्रकारों को 'रॉ' का दफ्तर संभालना होगा.
मंडी (हि.प्र.) **नरेश पंडित**

अगर राजीव गांधी की निर्मम हत्या के उपरांत होने वाली सरकार की यह विशेष जांच पहले हो जाती तो भारत को इक्कीसवीं सदी की ओर ले जाने वाले इस 'भारत रत्न' को विघटनकारी ताकतों की घिनौनी साजिश से बचाया जा सकता था.
बालाघाट (म.प्र.) **रजनीश नायडू**

राजीव हत्याकांड में शामिल लोगों को गिरफ्तार करके सीबीआई ने उनके मुंह पर ताले लगा दिए जो अपराधियों के बारे में सुराग न मिल पाने की बातें कर रहे थे.
हनुमानगढ़ (राज.) **अजय यादव**

गलत जानकारी

'भगवा लहर का असर' (30 जून) में भाजपा नेता कल्याण सिंह के बारे में लिखा है कि वे पिछड़ी जाति (कुर्मी) के हैं. यह गलत जानकारी के आधार पर लिखा गया है. कल्याण सिंह कुर्मी जाति के न होकर लोदा राजपूत हैं.
मेहगांव (म.प्र.) **हरीसिंह नरवरिया** (विधायक)

आलोचना सही नहीं

'खतरनाक परंपरा के सूत्रधार' (30 जून) में शेषन की आलोचना सही नहीं लगी. उन्होंने तो 1991 के चुनावों को पूरी निष्पक्षता से कराने की कोशिश की और चुनाव आयोग के अधिकारों का ही उपयोग किया.
पटना (बिहार) **हरेंद्र नारायण**

प्रेरणादायक कदम

'हक के लिए हिम्मत' (30 जून) एक सराहनीय कदम है. जैसी हिम्मत मुनिरा गांधी ने दिखाई उसी तरह अपने हक के लिए सभी को आगे आना चाहिए. महिलाओं को तो इस मामले में और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए.
वाराणसी (उ.प्र.) **उदय शंकर श्रीवास्तव**

उन्मुक्तता का प्रतीक

'राहें वही हमराही बदल गए' (30 जून) महिलाओं व पुरुषों में बढ़ती उन्मुक्तता का ही प्रतीक है. लेकिन यह भी सच है कि परिवर्तन के इस दौर में प्रताड़ित महिलाओं व तनावग्रस्त दंपतियों को मुक्त होने का अवसर मिला है और यह महिलाओं की आत्मनिर्भरता से ही संभव हुआ है.
सागर (म.प्र.) **सुबोध कुमार जैन**

■ लेख पढ़ने के बाद मैं सोचने लगा कि क्या दूसरी शादी पहली पत्नी के रहते अधिक महत्वपूर्ण एवं सुखदायी है? निष्कर्ष यही निकला कि पहली पत्नी के रहते दूसरी शादी नहीं करनी चाहिए. हालांकि दूसरी शादी को मान्यता मिलने लगी है पर मैं इसे मानवता विरोधी मानता हूं.
बलरामपुर गोंडा (उ.प्र.) **सोहन लाल गुप्ता**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधार तो करने ही होंगे

पी.वी. नरसिंह राव की अल्पमत वाली सरकार ने दो संकटों का बहुत आसानी से सामना कर लिया. लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव और सरकार को विश्वास मत दिलाने में वे सफल रहे. लेकिन इससे उन्हें निश्चित नहीं हो जाना चाहिए क्योंकि आजाद भारत के इतिहास में बेहद मौलिक आर्थिक सुधारों को लागू करने वाली इस सरकार के लिए और भी बड़े संकट भविष्य में आ सकते हैं.

रेखांकन: अजीत नैनन

दुनिया भर में अर्थव्यवस्था के बदलते माहौल के साथ देश को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोग इस बात पर सहमत हैं कि राव की सरकार को इन सुधारों के लिए शाबाशी तो देनी ही चाहिए, यह भी कोशिश करनी चाहिए कि वह इस दिशा में कदम बढ़ाकर रफ्तार धीमी न करे या कदम वापस न खींचे. ऐसे बदलाव एक दशक पहले ही शुरू किए जाने चाहिए थे. बहरहाल, अब जो कोशिश हो रही है वह देश के आर्थिक विकास की सुस्त रफ्तार को तेज करेगी और विश्व बाजार में उसे प्रतिस्पर्धा की स्थिति में लाएगी. अगर यह बीच में रोक दी गई तो इससे आर्थिक और सामाजिक स्थितियां और बदतर होंगी.

लेकिन नई सरकार को अभी कई बड़े फैसले करने हैं. परिवर्तन विरोधी नौकरशाही और निहित स्वार्थ वाली शक्तियों पर उसे काबू करना होगा. सुधारों की रफ्तार जब थमेगी तब चुनौतियां और भी बड़ी हो जाएंगी जिनका मुकाबला कमजोर इच्छाशक्ति वाली सरकार नहीं कर सकती.

एक बात तो स्पष्ट है कि कांग्रेस पार्टी और उसके नेता कोई समर्पित सुधारक नहीं हैं. सुधारों की यह पहल ऊपर से हुई है और मंत्रियों या पार्टी नेताओं ने इन्हें किसी प्रतिबद्धता के तहत नहीं बल्कि मजबूरी में स्वीकार किया है. फिलहाल नरसिंह राव के सामने सबसे बड़ी जरूरत यह है कि विपक्ष, अपनी पार्टी और देश को भरोसे में लें. पिछला चुनाव आर्थिक सुधारों के मुद्दे पर नहीं लड़ा गया था. इन सुधारों से जब किसानों, मजदूरों, मध्यम वर्ग के लोगों और उद्योगपतियों को असुविधा होने लगेगी तो कांग्रेसियों पर उनके वोट बैंक की ओर से दबाव बढ़ने लगेगा. और तब उन सुधारों के प्रति विरोध भी बढ़ेगा. इसलिए जरूरी है कि सरकार इन निर्णायक बदलावों के बारे में लोगों को अवगत कराने के लिए व्यापक जनशिक्षण अभियान चलाए. समय बहुत कम है और दांव पर बहुत कुछ लगा है.

समर्पण करके कैसे चलेगा

आज देश के विभिन्न हिस्सों में आतंकवादियों के हौसले बढ़े हुए हैं. अपने आदमियों की रिहाई के लिए वे बेकसूर लोगों का अपहरण करने पर खास तौर से जोर देने लगे हैं. यह प्रवृत्ति वी.पी. सिंह सरकार की देन है. रूबइया सईद की रिहाई के लिए उनकी सरकार ने जेकेएलएफ के उग्रवादियों के सामने घुटने टेककर बहुत बड़ी भूल की थी. इसके तीन दीर्घकालिक नतीजे हुए. पहला तो यह कि कट्टर उग्रवादियों को यह लग गया कि उनका मुकाबला एक ऐसी सरकार से है जिसे आसानी से ब्लैकमेल किया जा सकता है. दूसरी बात यह हुई कि भविष्य में ऐसे मामलों के प्रति कोई निश्चित नीति लागू करने की सरकार की क्षमता कमजोर पड़ी. और इससे तीसरा संकेत यह मिला कि सरकार वीआईपी और सामान्य लोगों के मामलों में दोहरी नीति अपनाती है.

अकेले कश्मीर घाटी में ही अपहरण के 40 मामले हुए हैं जिनमें उग्रवादी गुटों ने अपने ऐसे सदस्यों की रिहाई की शर्त रखी जिन पर हत्या तक के आरोप थे. दरअसल इख्वान उल मुसलमीन ने भारतीय तेल निगम के कार्यकारी निदेशक के. दुरैस्वामी का अपहरण किया है तो इसलिए कि सरकार के साथ इससे पहले हुई टक्कर में उसने उसे कमजोर पाया. इसीने नेशनल कांफ्रेंस के सांसद सैफुद्दीन सोज की बेटी नाहिदा इम्तियाज का अपहरण किया और सरकार झुक गई.

यह बीमारी अब उत्तर-पूर्वी इलाकों में भी फैल गई है जहां उल्फा भी लोगों को बंधक बनाकर अपनी मांगें मनवा रही है. असम की नई सरकार ने 242 उल्फा बंदियों की रिहाई की घोषणा करके आत्मसमर्पण का अभूतपूर्व नमूना पेश किया है. हमारी सरकारों ने दुनिया भर में आतंकवाद से निबटने की नीतियों और कार्रवाइयों से कोई सबक नहीं लिया. ब्रिटेन, अमेरिका, इज्राएल, तुर्की आतंकवाद की मार झेलते रहे हैं लेकिन कहीं भी इस तरह की सौदेबाजी नहीं की जाती.

लेकिन भारत में नरम रुख अपनाकर एक खतरनाक परंपरा की बीज बोए जा रहे हैं. इसके नतीजे भयावह ही होंगे. मान लीजिए कल को एलटीटीई के लोग कई लोगों का अपहरण कर लेते हैं और यह मांग रखते हैं कि बंधकों को तभी छोड़ा जाएगा जब राजीव गांधी के हत्यारों को रिहा किया जाएगा. ऐसी नौबत आने से पहले सरकार को यह साबित करना चाहिए कि वह सख्ती से निबटना जानती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म्यूज़िक टुडे

को चाहिएं

डिस्ट्रीब्यूटर्स

म्यूज़िक टुडे, लिविंग मीडिया इंडिया लि. का एक डिविज़न, जो **इंडिया टुडे** प्रकाशित करते हैं और श्रेष्ठ क्वालिटी के प्री-रिकॉर्डेड ऑडियो कैसेट के निर्माता हैं, को डिस्ट्रीब्यूटर्स चाहिएं।

इच्छुक पार्टियां, जिनका स्थापित नेटवर्क है, समुचित व्यापार संबंध हैं और मजबूत वित्तीय स्थिति है, वे कृपया अपना विवरण इस पते पर भेजें :

म्यूज़िक टुडे
पो. ऑ. बॉक्स 29
नई दिल्ली- 110 001.

क्या आप मकान या पता बदल रहे हैं?

केवल मकान बदलने या नए पते पर जाने के कारण *'इंडिया टुडे'* की डाक से आने वाली अपनी प्रतियों से वंचित न हों। आप तक पत्रिका की प्रतियां नियमित रूप से पहुंचती रहें इस काम में हमारी मदद करें — अपना मकान या पता बदलने से छः सप्ताह पूर्व ही हमें कृपया यह कूपन भर कर भेज दें।

इस पते पर भेजें :

लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. ऑ. बॉक्स नं. 706
फरीदाबाद- 121 007
हरियाणा

नॉन-स्टॉप
डिलीवरी कूपन

मेरा नाम : .....
.....
(स्पष्ट अक्षरों में)
मेरा सब्सक्रिप्शन नं.: .....
मेरा वर्तमान पता : .....
.....
.....
पिन कोड : .....
मेरा नया पता : .....
.....
.....
पिन कोड : .....

आर.के. लक्ष्मण, टाइम्स ऑफ इंडिया

● भारत के प्रधानमंत्री को कोई खरीद नहीं सकता. वह खुद बिक जाए तो अलग बात है. ■ **अटल बिहारी वाजपेयी** (लोकसभा में), *पंजाब केसरी*

● 100 दिन में मंहगाई कम करेंगे यह वादा पक्का है. 99वें दिन पूछ लेना. ■ **राजेश पायलट**, *संडे ऑबजर्वर*

● अगर गलत प्रथा मैंने शुरू की है तो आप बदल दो. आपकी सरकार को कोई खतरा तो है नहीं. हमारी भी वह हैसियत नहीं है कि आपकी सरकार को गिरा सके. ■ **बंसीलाल** (भजनलाल से), *दैनिक ट्रिब्यून*

● नौकरशाही उसी को पहचानती है जो उस पर सवारी कर सके. अगर आप सवारी करना जानते हैं तो वह आपका आदर करेगी. अगर नहीं जानते तो वह आप पर सवारी गांठकर तफरीह करेगी. ■ **पी. आर. कुमारमंगलम** (केंद्रीय कानून राज्यमंत्री), *इंडियन एक्सप्रेस*

● विकास में अगर हमारे जिले का हिस्सा नहीं मिला तो मैं संघर्ष तो करूंगा ही, साथ ही मुख्यमंत्री का हाथ मरोड़ दूंगा. ■ **जागेश्वर** (उ.प्र. के विधायक), *दैनिक जागरण*

● बिहार में सरकार नाम की चीज न तब थी और न अब है. लालू यादव सौभाग्यशाली रहे जो बरखास्त नहीं किए गए. इसलिए अपने आपको शेर समझ रहे हैं. ■ **सुबोधकांत सहाय**, *नवभारत टाइम्स*

● अगर मुख्यमंत्री ही चुनाव के पहले कहे कि जगन्नाथ मिश्र की हार तय है, तब निष्पक्ष चुनाव की संभावना कहां रह जाती है. मुख्यमंत्री ज्योतिष विद्या तो नहीं जानते. हां, चुनाव में बूथ लुटवा जरूर सकते हैं. ■ **जगन्नाथ मिश्र**, *साप्ताहिक हिंदुस्तान*

● पटवा सरकार तो कुछ कर नहीं सकती. बातें बहुत अच्छी करते हैं ये लोग. लेकिन जहां तक काम करने का सवाल है, इनसे कोई उम्मीद नहीं की जा सकती. ■ **श्यामाचरण शुक्ल**, *पांचजन्य*

● वी.पी. सिंह देश के सबसे बड़े दुश्मन हैं. ■ **जयंती नटराजन** (इंका सांसद, *राज्यसभा में*), *जनसत्ता*

● सिख अगर खालिस्तान से ही खुश होते हों तो पंजाब का नाम बदलकर खालिस्तान कर देने में क्या हर्ज है. ■ **सुनील दत्त**, *इंडियन एक्सप्रेस*

● मैं कर्मवादी हूं, भाग्यवादी नहीं. ■ **कुमार गौरव**, *जनसत्ता*

● मैं जैसा पहले था वैसा ही आज भी हूं. यह सच है कि मेरे मुकाबले में और कोई सुपरस्टार अब तक न हुआ है और न ही होगा. ■ **राजेश खन्ना**, *दैनिक ट्रिब्यून*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे सारे डाई एक तरफ,

गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई दूसरी तरफ...

फिर भी,

गोदरेज हेयर डाई इस्तेमाल करने वाले ज़्यादा ही होंगे!

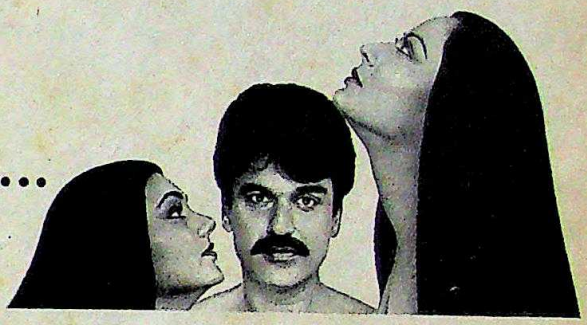

इन ३ ख़ास कारणों से:

१ गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई बालों को कुदरती रंग और छवि देता है. इसमें कंडीशनर भी है जो बालों को नर्म-मुलायम बनाए रखता है. **बाल इतने स्वाभाविक काले हो जाते हैं कि कोई जान ही न सके, जब तक आप खुद न बताएँ.**

२ गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई इस्तेमाल में आसान और सुविधाजनक है जबकि अन्य हेयर डाई में यह विशेषता नहीं.

जी हां, आसान इतना बालों में शैम्पू करने जितना.

३ आप गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई की क्वालिटी पर भरोसा कर सकते हैं. क्योंकि यह खास तौर से आपके बालों के लिए बनाया गया है. **क्वॉलिटी जिसपर आप भरोसा करें.**

यही गोदरेज का वादा है.

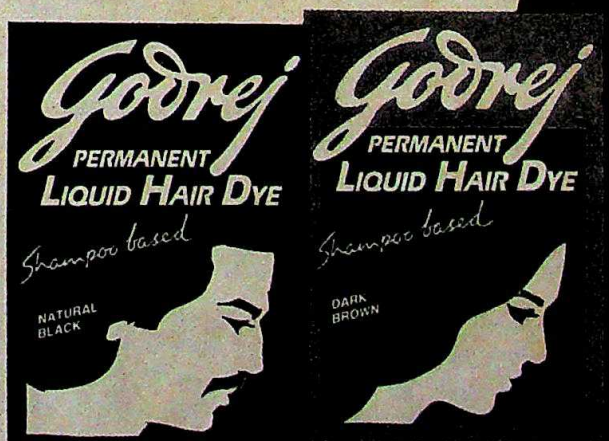

Godrej शैम्पू-आधारित हेयर डाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैमाने जुदा-जुदा

● राजधानी में आतंकवाद से निबटने के लिए गृह मंत्रालय अजीबोगरीब तौर-तरीके अपना रहा है. दिल्ली में सिख उग्रवादियों की घुसपैठ रोक पाने में असफल

रहे इस मंत्रालय ने पंजाब के विशेष शस्त्र पुलिस अधिकारियों के दिल्ली प्रवेश पर रोक लगा दी है. ये अधिकारी नागरिकों में से नियुक्त किए जाते हैं.

पंजाब सरकार को भेजे एक संदेश में केंद्रीय गृह मंत्रालय ने लिखा है, "ये अधिकारी उतने प्रशिक्षित नहीं हैं. और इनमें से कई के पिछले जीवन के बारे में निश्चित तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता."

यानी अब पंजाब पुलिस के उन्हीं कर्मचारियों को दिल्ली आने की इजाजत दी जाएगी जिनके पिछले रिकॉर्ड की जांच कर ली गई हो. लेकिन ऐसे कर्मचारी उस स्थान से इधर-उधर नहीं जा सकेंगे जहां उनके वीआईपी टिके हों. वीआईपी की सुरक्षा की जिम्मेदारी दिल्ली पुलिस संभालेगी, हालांकि इसके ऊपर बहुत भरोसा नहीं किया जाता.

राज्य सरकार के एक अधिकारी का कहना है कि दिल्ली पुलिस अगर राज्य के वीआईपी लोगों को वापस राज्य में पहुंचाने की व्यवस्था नहीं करती तो विशेष अधिकारियों को दिल्ली की सीमा पर तैनात रखने की व्यवस्था करनी होगी. वरना पंजाब और दिल्ली के लिए अलग-अलग पैमाने रखने होंगे.

फिलहाल जो स्थिति है उसमें तो इसी की संभावना ज्यादा है.

अपनों पर ही कहर

● टायर तो टायर ही रहेंगे. गाहे-ब-गाहे फटते भी रहेंगे. इंका के हल्ला ब्रिगेड के रत्नाकर पांडे और एस.एस. अहलूवालिया फिर अपने पुराने रंग में आ गए हैं. और अब अपनी पार्टी की सरकार को परेशान कर रहे हैं.

ये लोग इसलिए नाराज हैं कि सरकार सोनिया गांधी की सुरक्षा के प्रति उदासीन है. इन लोगों का मानना है कि गांधी परिवार का नामोनिशान मिटा देने की साजिश चल रही है. इसलिए सोनिया की सुरक्षा के ठोस प्रबंध हों.

लेकिन इंका के भीतरी सूत्रों का कहना है कि सोनिया के लिए ये लोग इतना हो-हल्ला दरअसल इसलिए मचा रहे हैं क्योंकि ये प्रधानमंत्री से नाराज हैं. प्रधानमंत्री ने इन लोगों को केंद्रीय

सभी कार्टून: अजीत पैनन

मंत्रिमंडल में शामिल जो नहीं किया !

वायु गति से फैसला

● चंद्रशेखर की सरकार ने अपने आखिरी दिनों में कई विवादास्पद फैसले किए. इनमें एक फैसला वायुसेना अध्यक्ष पद पर एयर मार्शल एन.सी. सूरी की

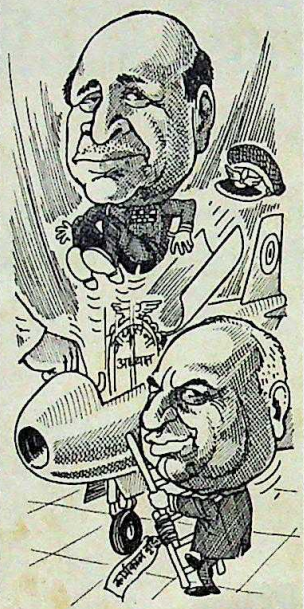

नियुक्ति का भी था. निवर्तमान वायुसेना अध्यक्ष एयर चीफ मार्शल मेहरा और पद क्रम में उनसे ठीक नीचे सूरी 31 जुलाई की मध्यरात्रि में सेवानिवृत्त होने वाले थे. सूरी का कार्यकाल मार्च में बढ़ाया गया था. वे वायुसेना अध्यक्ष का पद भार ग्रहण कर सकें इसके लिए उनका कार्यकाल फिर बढ़ाया जा सकता था लेकिन इससे बेवजह विवाद पैदा होता.

योजना बनी कि मेहरा 31 जुलाई को सेवानिवृत्त होने से चंद घंटे पहले यानी पद भार सौंपेंगे. और सूरी सेवानिवृत्त होने से चंद घंटे पहले दोपहर बाद पद भार ग्रहण कर लेंगे.

कई लोगों का मानना है कि नई सरकार के गठन का इंतजार करना चाहिए था. वैसे, बताया जाता है कि यह अफरातफरी रक्षा मंत्रालय के एक अधिकारी की वजह से की गई ताकि उसकी पसंद का व्यक्ति अंततः इस पद पर आसीन हो सके.

लंबुओं का इलाका

● देखने वाले यह देखकर हैरान हैं कि पर्यावरण और वन मंत्रालय में संयुक्त सचिव से ऊपर के दर्जे के प्रायः सभी अधिकारी बेहद लंबे-लंबे हैं. ऐसे अधिकारियों के दल के अगुआ हैं सचिव आर. राजमणि जो खुद भी काफी लंबे यानी 6 फुट 4 इंच लंबे हैं. लिफ्ट में सीधा खड़ा रह पाना उनके लिए काफी मुश्किल होता है.

उनके अलावा वन महानिरीक्षक सहित कुछ संयुक्त सचिव समेत आठ अधिकारी 6 फुट से ऊपर के हैं. मार्के की बात यह है कि उनसे नाटे कद के एकमात्र वरिष्ठ अधिकारी के. एम. चड्ढा का हाल में ही गंगा परियोजना में तबादला कर दिया गया.

लेकिन भारी मुश्किल में हैं

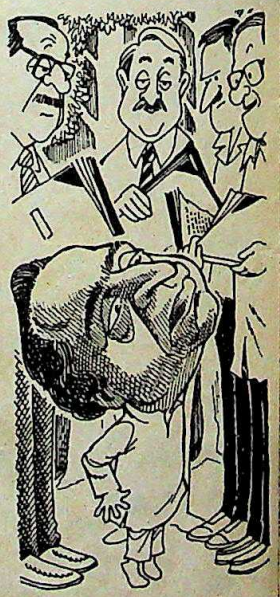

महज 5 फुट 7 इंच वाले नए पर्यावरण मंत्री कमलनाथ. लंबे-लंबे कद के वरिष्ठ नौकरशाहों के साथ चलते हुए खुद को वे जरूर छोटा महसूस करते होंगे.

कभी मेनका गांधी के अधीन रहे इस मंत्रालय के मुख्यालय पर्यावरण भवन के बारे में पत्रकारों और अधिकारियों के बीच एक मजेदार चुटकुला चल पड़ा है. वह यह कि इसे लंबे पेड़ों का इलाका कहा जाना चाहिए.

...और एक चुटकी

(सुनी-सुनाई)

चौकड़ी के लोग बिना किसी राजनैतिक आधार के मंत्रिमंडल में जगह पा गए. इससे कई लोग नाराज हैं. एक समझदार कांग्रेसी ने बड़ी बेचारगी से कहा, "हमारे पास कार मले हो, पेट्रोल तो चौकड़ी के कब्जे में ही है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसोई में आपका साथी

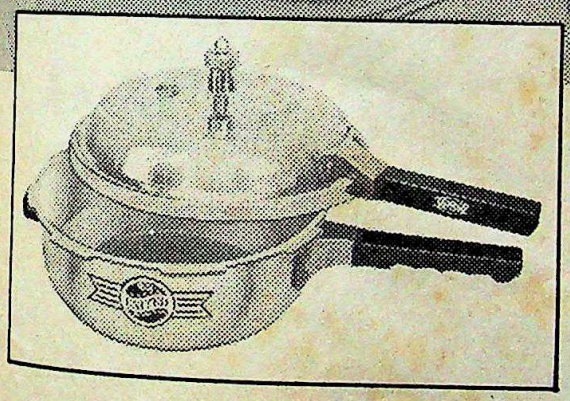

यूनाइटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

अधिकृत विक्रेता

मध्यप्रदेश

☐ बिलासपुर: मै० रूप जनरल स्टोरज़, गोल बाज़ार, • मै० राम एण्ड श्याम मैटल स्टोरज़, गोल बाज़ार, • मै० [illegible] स्टोरज़, गोल बाज़ार. ☐ भोपाल: मै० रामचन्द [illegible] स्टोरज़ पी.ओ. बैरगढ़, • मै० लक्की सेन्टर, लालूवानी [illegible], ☐ छिंदवाड़ा: मै० प्रभात जनरल स्टोरज़ बुधवारी [illegible], ☐ छतरपुर: मै० हज़ारी लाल नारायण दास, चौक [illegible] मेटलज़, जवाहर चौक, • मै० [illegible] मेटलज़, जवाहर चौक, • मैं० जैन एलुमिनियम, [illegible], • मै० मारुति ब्रादर्ज़, इन्दिरा मार्केट, ☐ [illegible]पुर: मै० पाहू राम पेश राम, टोपी बाज़ार, • मै० स्टील [illegible], जमुना लाल मार्केट, सराफ़ा बाज़ार, • मै० श्रीकृष्ण प्रभु [illegible] अग्रवाल, सराफ़ा बाज़ार, लश्कर, • मै० कुकर सेल्ज़ [illegible]राम, फालका की गोद, लश्कर, ☐ इंदौर: मै० बम्बे [illegible] हाउस, 6/5, खातीपुरा, एम.जी. रोड, • मै० कुमार [illegible]टल स्टोरज़, एम.जी. रोड, (कृष्णपुरा), • मै० रामचन्द [illegible] राम, 2, कसेरा बाज़ार, • मै० छोइत राम एण्ड सन्ज़, [illegible] श्री महावीर मार्ग, • मै० रामचंद एण्ड सन्ज़, कसेरा [illegible], • घनश्याम ब्रादर्ज़, 31, श्री महावीर मार्ग, ☐ [illegible]पुर: मै० सिटीज़न सेन्टर, 24-25 आशीर्वाद मार्केट, [illegible] चौक, • मै० नेशनल स्टोरज़, जवाहरगंज, • मै० [illegible]शीर्वाद स्टील एम्पोरियम, 18 आशीर्वाद मार्केट, लार्डगंज, • [illegible] ट्रेडर्ज़, कोतवाली बाज़ार, • मै० नारायण ब्रादर्ज़, 631, खटीक मोहल्ला, सराफ़ा बाज़ार, ☐ कोरबा: मै० श्री रामगोपाल राधेश्याम अग्रवाल, मेन रोड, ☐ कटनी: मै० भारत स्टीलज़, शालीमार मार्केट, • मै० राधास्वामी बर्तन भण्डार, माधव नगर, • मै० गुरु नानक क्रोकरी स्टोर, गोल बाज़ार, ☐ रायपुर: मै० बम्बे टॉयज़ सेन्टर, बनजारी रोड, • मै० मनमोहन चंद जैन, सदर बाज़ार, • मै० सुराना ब्रादर्ज़, पो.बॉक्स नं. 27/59, मालविया रोड, • मै० अभिनव ट्रेडर्ज़, 19, अशोक मार्केट, नया पाड़ा, • मै० जे.एम. डग्गा मेटल मार्ट, बुद्धापुरा, • मै० इंडियन गिफ्ट हाउस, 4/5, शादानी मार्केट, बनजारी रोड, • मै० सुरेश ब्रादर्ज़, पो. बॉक्स नं. 53, मालविया रोड., ☐ रीवा: मै० विजय क्रॉकरी स्टोरज़, वेंकट रोड, • मै० राज इलैक्ट्रीकल, 8, वेंकट मार्केट, ☐ रतलाम: मै० नंबन एजेंसीज़, 10/A, डालू मोदी बाज़ार, • मै० हकीमुद्दीन एण्ड सन्ज़, मानक चौक, ☐ सतना: मै० गिफ्टो स्टील सेन्टर, पन्नीलाल चौक, • मै० बुद्धू लाल गोविन्द प्रसाद, चाँदनी टाकीज़ के पीछे, ☐ सागर: मै० जैना स्टील, कटरा बाज़ार, • मै० शोभा राम सुरेश चंद, चक्र घाट, ☐ उज्जैन: मै० अली मोहम्मद, गुलाम हुसैन, गोपाल मंदिर मार्ग, चौक बाज़ार, • मै० महालक्ष्मी पात्र भण्डार, 125, पाटनी बाज़ार

बिहार

☐ पटना: मै० अजन्ता कमर्शियल कं० एक्ज़िबिशन रोड.

हिमाचल प्रदेश

☐ कुल्लू: मै० कक्कर एण्ड लाम्बा जनरल स्टोर्स, अखेरा बाजार, ☐ मंडी: मै० हिमाचल जनरल स्टोर्स, गांधी चौक, ☐ मनाली: मै० थामस स्टोर्स, दी माल, • मै० हिम जनरल स्टोर्स, दी माल, ☐ पारवानू: मै० हिमाचल होलसेल सिंडिकेट, S.C.F-27, सेक्टर-1, ☐ रामपुर बुशहर: मै० राम किशन जीवा राम, मैन बाजार, • मै० श्याम सिंह एण्ड ब्रदर्स, मेन बाज़ार, • मै० राजेश ब्रदर्स, मेन बाजार, ☐ शिमला: मै० संत लाल इंदर सेन अग्रवाल, 31 लोवर बाजार, • मै० जानेश्वर लाल राजेश्वर लाल, लोवर बाजार, • मै० बंगाल क्रोकरी हाउस, एग मार्किट, ☐ तापड़ी: मै० ज्ञान चन्द यश पाल, वी एवं पी ओ :

पश्चिमी बंगाल

☐ बर्द्धवान: मै० वेस्ट बंगाल स्टोर, 185 बी०बी० घोष रोड, तेनतुलतला, ☐ सिलीगुड़ी: मै० सरिया टी कं०, चौधरी कटरा, महाबीरस्थान।

मनिपुर

☐ इम्फाल: मै० देबबृत इन्टरप्राईजिज़, थंगल बाज़ार, पो.ओ.

असम

☐ गुवहाटी: मै० प्रिया नाथ कार, देवन पेटी रोड, फैंसी बाज़ार.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मामला गिनीज बुक का

■ दांतों में रस्सी दबाकर हवाई जहाज को रनवे पर पैदल खींच लेने जैसे किस्से गिनीज बुक में भरे रहते हैं. लेकिन इधर रांची के सरकारी कर्मचारियों ने जिस तरह के कमाल पेश किए हैं वे गिनीज बुक वालों को भी देखने को नहीं मिले होंगे.

रांची में पिछले दिनों पशुपालन विभाग के खातों की जांच करने वाले अधिकारियों को ऐसे कुछ बिलों पर शक हुआ, जिनके आधार पर जानवरों की ढुलाई के लाखों रुपए वसूल किए गए थे. जांच से पता चला कि बिलों पर जिन गाड़ियों के नंबर लिखे गए थे वे असल में ट्रक नहीं

सभी कार्टून: अयतो

बल्कि दुपहिया स्कूटर, कार और पेट्रोल ढोने वाले टैंकर थे. उम्मीद है कि अगर कर्मचारियों के बिल सच्चे पाए गए तो उनके नाम थाने के बजाए गिनीज बुक में प्रकाशन के लिए भेजे जाएंगे.

बिहारी छक्का

■ क्रिकेट के मैदान में विरोधी टीम के छक्के छुड़ाकर अपने प्रशंसकों के दिल जीतने वाला खिलाड़ी अगर जिंदगी की असली दौड़ में अचानक रन-आउट हो जाए तो...? तय है कि उसके चाहने वालों के दिल टूट जाएंगे. पिछले दिनों उस समय कई दिल चटख गए जब सचिन तेंडुलकर के प्रशंसकों को पता चला कि वह खेल में व्यस्तता की वजह से हायर सेकेंडरी परीक्षा में फेल हो गया है.

सचिन के चाहने वालों में से कुछ तो अफसोस में ठंडी आह भरकर रह गए. कुछ ने यह दुआ करते हुए शांति पा ली कि वह अगले साल पास हो जाए. लेकिन बिहार के क्रिकेट प्रेमी सिर्फ मन्नतें मांगकर या आरजू भर करके चुप नहीं बैठते. वे जमीनी जिंदगी से जुड़े लालू यादव के प्रदेश के रहने वाले लोग जो हैं. वे हर बार ठोस करके दिखा देना चाहते हैं. जैसा इस चुनाव में लालू ने किया. सो, सहरसा के कुछ सचिन प्रेमियों को भला आरजू भर से कहां तसल्ली मिलती? उन्होंने सचिन की मदद करने के सभी संभव तरीकों पर विचार किया और आखिर रास्ता निकाल ही लिया. पिछले दिनों उन्होंने चिट्ठी लिखकर सचिन के सामने प्रस्ताव रख दिया कि अगली बार जब भी पास होने का मूड बने वह बिहार के किसी स्कूल में प्रवेश ले ले और परीक्षा के दिनों में सहरसा आ जाए. बिहार के स्कूल-कॉलेजों में नकल की 'सुविधा' का बखान करते हुए सचिन प्रेमियों ने उसे आश्वासन दिया है कि सिर्फ हायर सेकेंडरी ही क्यों अगर वह चाहे तो वे उसे एमए में भी पास करवा सकते हैं. कैसा रहा बिहारी छक्का?

बेचारी सीबीआई

■ दिल्ली में रहने वाले कुछ सीबीआई अधिकारियों को पिछले दिनों चूना लगा दिया गया. लेकिन किस्मत का फेर देखिए कि दिल्ली पुलिस ने उनकी एफआईआर पर कार्रवाई करने से ही मना कर दिया. सीबीआई अधिकारियों की एक हाउसिंग सोसायटी की शिकायत थी कि भवन निर्माता ने उसे एक करोड़ रुपए का चूना लगा दिया है. इस बारे में उन्होंने दिल्ली पुलिस के यहां एफआईआर दर्ज कराई लेकिन कुछ दिन बाद पुलिस ने इस रपट को यह कहकर रद्द कर दिया कि सोसायटी और निर्माता के बीच हुए

करारनामे के अनुसार यह एक दीवानी मामला है जिसे पंचाट के पास जाना चाहिए इसलिए इसकी शिकायत पुलिस में दर्ज नहीं की जा सकती. दूसरों की जांच करने वाले भी फंस ही जाते हैं.

रांग नंबर

■ किस्सा एक ऐसे सज्जन का है जो गए तो थे चौबे बनने लेकिन लौटे दूबे बनकर, और वह भी हवालात में. पटना के कस्टम विभाग के कलेक्टर को एक दिन दूरसंचार विभाग का एक खास

पत्र मिला जिसमें उनसे आग्रह किया गया था कि उन्होंने जो 160 आयातित टेलीफोन सेट अपने यहां रोके हुए हैं, उन्हें रॉ के एक विशेष अधिकारी को सौंप दिया जाए.

पता चला कि यह पत्र लेकर उक्त अधिकारी खुद आए हुए हैं. कलेक्टर महोदय ने उन्हें अपने कमरे में बुला भेजा. लेकिन थोड़ी-सी बातचीत के बाद ही उन्हें दाल में कुछ काला दिख गया. उन्होंने चुपचाप स्थानीय गुप्तचर ब्यूरो को खबर भेज दी. थोड़ी ही देर में रॉ के 'जासूस' महोदय को धर लिया गया. पूछताछ में पता चला कि ये साहब रॉ की साख का फायदा उठाकर इन इंपोर्टेड टेलीफोन उपकरणों पर हाथ साफ करने की फिराक में थे.

घूंघट की करामात

■ नई-नवेली दुलहन का लंबा घूंघट उसकी रौनक में भले ही चार चांद जोड़ता हो पर कभी-कभी उसे दिन में भी तारे दिखाने का काम कर सकता है.

किस्सा वाराणसी-आसनसोल सवारी रेलगाड़ी का है जिसमें संयोग से एक ही डिब्बे में दो बारातें सवार थीं. दोनों ही बारातें दुलहन के साथ लौट रही थीं. इनमें से एक बारात को टनकुपा उतरना था और दूसरी बारात को कोडरमा स्टेशन पर. संयोग से टनकुपा स्टेशन आने पर कुछ ऐसी अफरातफरी मची कि कोडरमा वाली दुलहन इस बारात के साथ उतर गई. रेलगाड़ी के रवाना होने के बाद अचानक दूल्हे को समझ आया कि क्या गड़बड़ हुई है. आखिर किसी तरह एक जीप का इंतजाम हुआ और बारात के कुछ लोग कोडरमा जा पहुंचे. उधर भी यही हाल था. अपनी दुलहन के गायब होने पर दूसरी बारात में कुछ इसी तरह की हायतौबा मची थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

TEMPO TRAX

THE ROUGHROAD MASTER!

- OM616* Diesel engine for extra power, smoothness and reliability.
- Rugged chassis, independent front suspension for greater riding comfort.
- Full synchromesh gear box, full floating rear axle, smoother and more dependable.
- Maximum fuel economy, minimum maintenance cost.
- Unmatched warranty and service.
- Available in two wheel bases and soft top/FRP top versions.

* Engine made under licence from Mercedes Benz AG, Germany.

BAJAJ Tempo LTD.
Akurdi, Pune-411 035.

Mailer 8252

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई आर्थिक नीति

लाइसेंस राज के खात्मे की शुरुआत

—सुदीप चक्रवर्ती
और आर. जगन्नाथन

रेखाचित्र: अजीत नैनन, अनिल शर्मा

अब वह सब कुछ सामने है जिस पर राजीव गांधी प्रधानमंत्री रहते अमल करना भूल गए थे. उन्होंने 21वीं सदी की बातें तो बहुत कीं पर वे मौजूदा सदी और भविष्य के प्रति इसके विरोध की बात भूल गए. पी.वी. नरसिंह राव और उनके वित्तमंत्री मनमोहन सिंह ने इसका सही अंदाज लगा लिया है. एक ओर तो वे नेहरूवादी समाजवाद की धुनें गुनगुना रहे हैं और दूसरी ओर उन्होंने देश की एक तरह से गर्दन ही पकड़कर कहा कि चलो या मरो. उनकी उद्योग नीति और बजट का यथार्थ यही है.

उद्योग नीति के प्रस्ताव हंगामेदार थे. वजह: मुख्य रूप से उनका मकसद लाइसेंस राज का खात्मा है. इस नीति में सरकारी नियंत्रण को पूरी तरह खत्म करने और हर क्षेत्र में उद्योगों से लाइसेंस हटाने की हद तक उन्मुक्तता तो नहीं दर्शायी गई है लेकिन इसमें भारत के सबसे युगांतकारी नीति दस्तावेज बनने के पर्याप्त प्रस्ताव हैं. इसमें एकाधिकार और प्रतिबंधित व्यापार की संपत्ति सीमा पूरी तरह खत्म करने के प्रस्ताव हैं. 18 उद्योगों की छोटी-सी सूची के अलावा सभी परियोजनाओं के लिए औद्योगिक लाइसेंस खत्म कर दिया जाएगा. किसी भी परियोजना में विदेशी पूंजी निवेश को 51 फीसदी तक बढ़ाने का प्रस्ताव है.

संसद 24 जुलाई को नई उद्योग नीति के असर से मुक्त भी नहीं हो पाई थी कि बजट आ गया, जिसमें राजनैतिक निपुणता स्पष्ट दिखती है. पेट्रोल की कीमतों, हवाई यात्रा पर शुल्क बढ़ाकर और ऐसे तमाम सामानों पर कर थोपकर जो भारत में उपभोक्ता क्रांति का मार्गसूचक बने थे, मनमोहन सिंह ने धनियों पर गाज ही गिरा दी. दूसरी ओर उन्होंने किरासन तेल की कीमतें कम कर दीं और उर्वरक अनुदान में कमी को अनाज का समर्थन मूल्य बढ़ाने का वादा करके बराबर कर दिया. इससे वोट बैंक की चिंता करने वाले कुछ न बोल सके. इसी के साथ संपत्ति और निजी आयकर में वृद्धि न करके उन्होंने मध्यमवर्ग के गुस्से को थामने की कोशिश की. कंपनी कर में 5 फीसदी वृद्धि और बैंक ऋण को और मंहगा कर दिया गया लेकिन कई तरह की सुविधाएं देने का वादा करने से उद्योग जगत खामोश रहा. इसे एकदम सटीक बजट तो नहीं कहा जा सकता पर यह चतुराई भरा जरूर है.

नरसिंह राव की उपलब्धि यही है कि उन्होंने पार्टी के भीतर और बाहर अपने विरोधियों की प्रतिक्रिया का अंदाज लगाकर उन्हें शांत कर दिया. पार्टी में चौकड़ी के विरोध को बेदम करने के लिए नरसिंह राव ने उद्योग नीति को मंत्रियों की एक अनौपचारिक समिति में रख दिया. इस समिति ने कुछ हल्के फेरबदल के साथ नीति को मंजूरी दे दी. इसके तुरंत बाद मंत्रिपरिषद और सर्वशक्तिमान इंका कार्यकारिणी से इस नीति को मंजूरी मिल गई. इस जोड़-तोड़ भरी बाजीगरी का सबसे बढ़िया नमूना तो यह रहा कि एक ओर राजीव युग के वीसीआर व मारुति के रंग में रंगे लोगों पर कर बढ़ा दिए गए, वहीं राजीव गांधी स्मारक न्यास को 100 करोड़ का अनुदान देकर श्रद्धांजलि भी अर्जित की गई.

मनमोहन सिंह ने वामपंथियों से लगातार संपर्क रखकर उनको नरम कर दिया. इसके अलावा विभिन्न शुल्कों की बाधा को बहुत हद तक कम करने और सार्वजनिक क्षेत्र या बैंक व्यवस्था का रुख निजीकरण की ओर न मोड़ने से इस नीति पर अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की चेरी बनने का आरोप भी अपने आप मंदा पड़ गया. साथ ही वित्तमंत्री ने यह भी जता दिया कि उनकी उद्योग नीति वी.पी. सिंह अपनी सरकार गिरने के पहले जो उद्योग नीति बनाने जा रहे थे, उसी का विस्तार भर है. भाजपा से तो कोई समस्या ही नहीं थी क्योंकि पार्टी की मुक्त बाजार की नीतियां इंका की नीतियों जैसी ही हैं.

लाइसेंस राज को भले ही बाहर का दरवाजा दिखा दिया गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही पर वह अभी भी चारदीवारी के भीतर ही है. उद्योग नीति पर अभी अमल नहीं शुरू हुआ है. और सरकार उलटी दिशाओं में चलने की कोशिश कर रही है. वह बैंक ऋण पर ब्याज बढ़ाकर अपस्फीति की नीति पर चल रही है जिससे उद्योग जगत सीधा प्रभावित होगा. दूसरी ओर लाइसेंस मुक्त व्यवस्था करके दरवाजे खोल रही है, इस उम्मीद में कि इससे उद्योग जगत प्रगति करेगा और पूंजी लेने के बढ़े हुए खर्च की भरपाई शेयर बाजार से रकम उठाकर या अपने खर्चे घटाकर कर लेगा. यह नुकसानदेह होगा पर नरसिंह राव और मनमोहन सिंह को उम्मीद है कि उद्योग जगत इसे झेल जाएगा.

कीमतें

अभी तो दंश लगेगा ही

लेकिन सुधारों से भविष्य में अंकुश लग सकता है

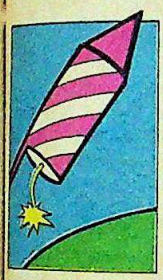

मनमोहन सिंह की मंशा कीमतों को नीचे रखने की भले ही रही हो पर यह बजट पहला काम तो इन्हें बढ़ाने का ही करेगा. बजट प्रस्तावों के असर से तो लगभग हर चीज—रसोई गैस से लेकर चीनी, टीवी सेट से लेकर सिगरेट, और होटल-रेस्तरां में भोजन से लेकर हवाई यात्रा तक महंगी हो जाएगी (देखें चार्ट). मनमोहन सिंह ने कहा, "हवाई यात्रा तो सिर्फ धनी लोग ही करते हैं, उनकी मुझे चिंता नहीं. मैं गृहिणियों से जरूर क्षमाप्रार्थी हूं पर मैं कुछ कर भी नहीं सकता था." संदेश स्पष्ट है: महंगाई की मार सहने का अभ्यस्त होइए, आप इससे बच नहीं सकते. जाहिर है अवमूल्यन (रुपए का) ने अपने दांत गड़ा दिए हैं. मुख्य विदेशी मुद्राओं के मुकाबले रुपए की कीमत औसतन 20 फीसदी कम हो जाने से आयातित पेट्रोलियम पदार्थों सहित कच्चे माल की कीमत में बढ़ जाएगी. सरकार खुद ही नहीं मानती कि 1991-92 में मुद्रास्फीति दो अंकों से कम होगी. दरअसल, सरकार की सभी बजट गणनाएं और प्रस्ताव प्रतिवर्ष 10 फीसदी मुद्रास्फीति मानकर

कीमतें: भारी उछाल

बजट के बाद कीमतों में संभावित वृद्धि

कीमतें रु. में	बजट से पहले	बजट के बाद
पेट्रोल (दिल्ली में रु. प्रति लीटर)	12.23	14.62
रसोई गैस (रु. प्रति सिलिंडर)	57.50	69.00
चीनी (रु. प्रति किलो: राशन दुकान)	5.25	6.10
मारुति 800 सीसी (फैक्टरी मूल्य)	1,20,660	1,50,823
एंबेसेडर (पेट्रोल चालित कार)	1,64,121	1,78,621
रंगीन टीवी (लोकप्रिय ब्रांड: 51 सेंमी)	16,000	16,750-17,000
रेफ्रिजरेटर (165 लीटर)	7,640	8,050
एअर कंडीशनर (1.5 टन)	29,900	32,000
वीसीआर (लोकप्रिय ब्रांड) (रिसीव्हर सहित)	18,700-19,000	19,100-19,500
उर्वरक (यूरिया 46: प्रति टन)	2,350	3,300

चार्ट: बी.के. शर्मा

घाटे में कमी

मनमोहक जादू

वित्तमंत्री शायद कोई जादूगर हैं. हालांकि वे कई बार कह चुके हैं कि उनके पास जादू की छड़ी नहीं है जिसे घुमाकर वे भारत की सारी आर्थिक समस्याएं छू मंतर कर दें. लेकिन जिस सूझबूझ से उन्होंने बजट बनाया है, उससे यही लगता है. 1991-92 के केंद्रीय बजट में कुल खर्च 6,700 करोड़ रु. बढ़ गया लेकिन वे राजस्व घाटे को पिछले वर्ष के स्तर से 5,600 करोड़ रु. कम करने में कामयाब रहे. इससे भी बड़ा करिश्मा यह हुआ कि सिर्फ 2,005 करोड़ रु. के अतिरिक्त कर जुटाकर उन्होंने यह संभव कर दिखाया. दूसरे शब्दों में, उन्होंने 12,300 करोड़ रु. का मामला, जो खर्च में वृद्धि और घाटे में कटौती का कुल योग है, उसके छठे हिस्से के बराबर रकम जुटाकर ही पूरा कर दिखाया.

और इसका कुछ श्रेय रुपए के अवमूल्यन को है, भले ही

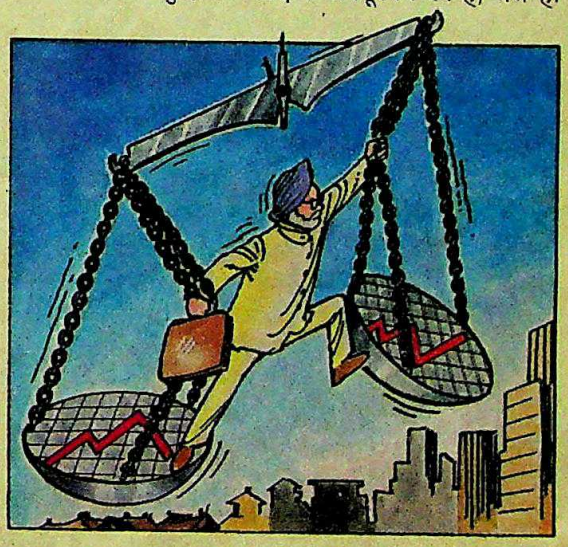

उसकी तीखी आलोचना की गई हो. रुपए का जब 20 फीसदी अवमूल्यन किया गया तो सीमा शुल्क से मिलने वाले राजस्व में भी बढ़ोतरी हो गई क्योंकि आयातित माल की कीमत बढ़ने से सीमा शुल्क भी बढ़ा. इसलिए बजट में 500 करोड़ रु. की आयात शुल्क राहत देने के बावजूद वर्ष 1991-92 में सीमा शुल्क 5,100 करोड़ रु. बढ़ गया. इसमें राज्यों का हिस्सा भी शामिल है. हालांकि इसका कुछ श्रेय पूर्व वित्तमंत्री यशवंत सिन्हा को भी है जिन्होंने मध्य दिसंबर में सीमा शुल्क बढ़ा दिया था. इस पूरे किस्से का संदेश यह कि रुपए के अवमूल्यन से अप्रत्यक्ष तौर पर सीमा शुल्क बढ़ता है.

बाकी अंतर को आसानी से पूरा कर लिया गया. 2,500 करोड़ रु. सार्वजनिक क्षेत्र के 20 फीसदी शेयर बेचकर जुटाए गए तो 1,900 करोड़ रु. निर्यात, उर्वरकों पर सब्सिडी और अन्य छोटी-मोटी कटौतियों के जरिए. न फालतू की लफ्फाजी, न तथ्यों पर लीपापोती, न निरर्थक कैफियत, बस इसी कुशलता से बजट तैयार किया गया. शायद संतुलन साधने के लिए बाजीगर ही होना जरूरी नहीं है. मनमोहन सिंह भी यह काम कर सकते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही तय किए गए हैं. मुद्रास्फीति की दर के बारे में गैर-सरकारी अनुमान प्रति वर्ष करीब 16 फीसदी का है.

मजेदार बात यह है कि महंगाई की मार उन्हीं वस्तुओं पर पड़ेगी जो राजीव गांधी के उपभोक्तावाद के नए युग का प्रतीक बनी थीं. मसलन— कार, रंगीन टीवी, वीसीआर, फ्रिज, वाशिंग मशीन, माइक्रोवेव ओवन वगैरह. यह बुरी खबर है.

सुखद खबर यह है कि बजट को नई उद्योग नीति के साथ मिलाकर देखने से मुद्रास्फीति कम करने के दो संकेत मिलते हैं पहला यह कि सरकार घाटे की अर्थव्यवस्था में कमी करने पर दृढ़ है. अर्थशास्त्री तथा योजना आयोग के पूर्व सदस्य हनुमंत राव कहते हैं, "मुद्रास्फीति की मुख्य वजह घाटे की अर्थव्यवस्था है. अगर वे बजट में प्रस्तावित घाटे के स्तर को कायम रख पाए तो मुद्रास्फीति की दर नीचे आ जाएगी." यानी मूल बात 'अगर' ही है.

लंबी अवधि में महंगाई पर अंकुश क्यों लग सकता है इसकी साधारण-सी वजह है: अगर सरकार उदार उद्योग नीति पर शब्दशः चलती रही तो उद्योग के बड़े हिस्से से लाइसेंस और उत्पादन क्षमता पर प्रतिबंध हट जाने से उत्पादन में वृद्धि होगी और सप्लाई बढ़ जाएगी जैसा कि दुपहिया वाहन उद्योग के मामले में हुआ. लेकिन यहां भी वही 'अगर' मूल मंत्र है. वैसे, उत्पाद बढ़ जाने की बात तो भविष्य की है जो अभी दूर है. फिलहाल इसका दंश तो सहना ही पड़ेगा.

करारोपण

मार तो सब पर पड़ी है

कुछ उद्योगों की राह और कठिन होगी

उत्पाद शुल्क प्राप्ति के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए मनमोहन सिंह ने क्रांतिकारी कदम उठाए हैं. सिगरेट पर फिर से गाज गिरी है और उससे 229 करोड़ रु. का राजस्व मिलेगा. बीड़ी को 1986 से हाथ नहीं लगाया गया था. इस बार वह भी चपेट में है. जाहिर है कि तंबाकू उद्योग की सबसे बड़ी कंपनी आईटीसी लिमिटेड ने संजय डालमिया की जीटीसी लिमिटेड से बाजी मार ली है क्योंकि सिगरेट पर लंबाई के हिसाब से लगने वाली कर व्यवस्था अभी रहने दी गई है. जीटीसी के अधिकतर ब्रांड अधिक कर वाली श्रेणी में आ जाएंगे.

वाहन उद्योग भी करों की मार से बच नहीं पाया है. इस क्षेत्र में मूल और विशेष दोनों तरह के उत्पाद शुल्क एकमुश्त 50 से 60 फीसदी तक बढ़ा दिए गए हैं. मूल्यों में 20 फीसदी वृद्धि वाले क्षेत्रों की सूची में यह उद्योग सबसे ऊपर है. लिहाजा, गाड़ियों की मांग में काफी कमी हो सकती है. पेट्रोल की कम खपत करने वाली मारुति कार पर तो बहुत असर नहीं पड़ेगा पर हिंदुस्तान मोटर्स (एचएम) की एंबेसेडर और प्रीमियर ऑटोमोबाइल्स लिमिटेड की 118 एनई मॉडलों को काफी नुकसान उठाना पड़ सकता है.

जिन चीजों पर कर बढ़ाया गया है, उनमें से अधिकतर की कुछ बातें एक सी हैं, उत्पाद शुल्क की ऊंची दर संभवतः प्रतियोगिता से सरकारी सुरक्षा की कीमत है. सिगरेट, मोटरकार, मनोरंजन के इलेक्ट्रॉनिक साधन, चीनी आदि सभी चीजें नवघोषित उद्योग नीति के तहत उस श्रेणी में हैं जिसमें औद्योगिक लाइसेंस का होना अनिवार्य है. दूसरी तरफ सरकार आजादी के एवज में प्रत्यक्ष कर

काला धन

निकासी के नए उपाय

अघोषित आय को बाहर निकालने के लिए वर्षों से तरह-तरह की योजनाएं बनाई जाती रही हैं. अनुमान है 1983-84 में यह राशि 31,000, से 37,000 करोड़ रु. के आसपास थी. यानी सकल राष्ट्रीय उत्पाद का 18 से 21 प्रतिशत. अगर इसे 21 प्रतिशत माना जाए तो यह राशि 80,000 करोड़ से 1,00,000 करोड़ तो होगी ही.

इतनी भारी रकम को बाहर लाने के लिए सरकार ने बजट में कुछ नई योजनाओं की घोषणा की है. हालांकि ऐसी तरकीब पहले भी आजमाई जा चुकी है (देखें चार्ट). लेकिन सरकार को उम्मीद है कि इस बार इसके जोरदार परिणाम निकलेंगे. आलोचकों का मानना है कि सरकार 500 करोड़ रु. से ज्यादा रकम नहीं निकलवा सकेगी.

▸ पहली योजना के तहत लोग राष्ट्रीय आवास बैंक में चाहे जितनी रकम जमा कर सकते हैं और 30 नवंबर तक उनसे इस बारे में कुछ नहीं पूछा जाएगा. जमा रकम का 40 प्रतिशत बैंक द्वारा संचालित कोष को चला जाएगा और यह रकम कर से मुक्त होगी. बाकी रकम जमाकर्ता निकाल सकता है, पर उस पर कर लगेगा.

▸ लोग अपनी गुप्त आय घोषित कर सकेंगे. उस पर कोई दंड नहीं होगा. और जिन्होंने अपनी ऐसी आय घोषित कर दी है उन्हें सहूलियत देने के लिए आयकर अधिनियम की धारा 273 ए में संशोधन का प्रस्ताव है.

▸ 30 नवंबर तक विदेशी मुद्रा में भेजी रकम भारत में जमा कराई जा सकती है.

▸ स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, डेवलपमेंट बांड्स नाम के बांड जारी करेगा जो अमेरिकी डॉलर में होंगे. इनकी परिपक्वता अवधि पांच वर्ष की होगी. इन्हें आप्रवासी भारतीय और उनकी विदेशी कंपनियां 30 नवंबर से पहले खरीद सकेंगी. पूंजी निवेश की कोई सीमा नहीं होगी.

शुरुआती कोशिशें

काले धन को पकड़ने की सरकार की कोशिशें ज्यादा सफल नहीं रहीं

वर्ष	योजना	प्रतिक्रिया
1946	विमुद्रीकरण	125 करोड़ रु. के नोटों को बदला गया. खत्म होने वाले काले धन का अनुमान नहीं
1951	स्वैच्छिक घोषणा योजना	70 करोड़ रु. की घोषणा हुई. कर संग्रह: 11 करोड़ रु.
1965	स्वैच्छिक घोषणा योजना	203.18 करोड़ रु. की घोषणा. कर संग्रह: 49.53 करोड़ रु.
1975	स्वैच्छिक घोषणा योजना	1,578 करोड़ रु. की घोषणा कर संग्रह: 2487 करोड़ रु.
1978	विमुद्रीकरण	124 करोड़ रु. जमा. 29 करोड़ रु. के काले धन के खात्मे का अनुमान
1981	विशेष धारक बांड	963.93 करोड़ रु. की बिक्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाकर अपने हिस्से की आय में भी इज़ाफा कर रही है. कंपनियों पर लगने वाला कर भी 40 से 45 फीसदी तक बढ़ा दिया गया है. बजट ने कंपनी क्षेत्र में ब्याज कर की व्यवस्था फिर से लागू करके कंपनियों पर एक और प्रहार किया है. इस व्यवस्था से कंपनियों का लाभ कम होगा और कर्ज लेने की लागत बढ़ जाएगी. मूल्य ह्रास की दर को भी 33.33 फीसदी से घटाकर 25 फीसदी कर दिया गया है. टाटा स्टील में वित्त विभाग के कार्यकारी निदेशक इशात हुसैन कहते हैं, "ज्यादा पूंजी की खपत वाले उद्योगों पर दबाव काफी बढ़ जाएगा." कंपनियों के दिग्गज अर्थविशेषज्ञ जब तक नियमों की गहराई में पहुंचेंगे, तब तक इतना तो तय है कि बजाज ऑटो, टाटा चाय, कोलगेट, ग्रेसिम और कैडबरीज़ वगैरह का भारी-भरकम लाभांश अतीत की बात बन जाएगा. यही हाल बोनस लाभांशों का भी हो सकता है. लेकिन शेयर बाजार इस बात से सहमत नहीं हैं. वैसे, उसकी भी अलग कहानी है.

ब्याज दरें

अतिरिक्त बोझ ग्राहक पर

बैंकों के कर्ज पर ब्याज की दरें और बढ़ीं

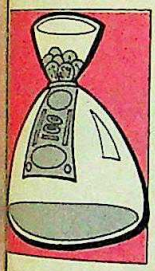

अगले कुछ महीनों में ब्याज की दरें बढ़ जाएंगी. वित्तमंत्री मनमोहन सिंह ने ब्याज से होने वाली बैंकों की आमदनी पर तीन फीसदी कर लगाकर यह प्रावधान कर दिया है. पंजाब नेशनल बैंक के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक रशीद जिलानी के शब्दों में, "जाहिर है यह अतिरिक्त बोझ ग्राहकों को ही उठाना पड़ेगा. पर देखना है कि हम यह अतिरिक्त कर भार प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को दिए कर्ज पर लागू कर सकेंगे या नहीं." मुद्दा यह है कि अगर प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को कम ब्याज दरों पर दिए गए कर्ज पर भी यह भार उठाना पड़ा तो फिर सामान्य स्तर पर ब्याज दर को 0.6 फीसदी तक कायम रखा जा सकेगा. वर्तमान में सरकारी क्षेत्र के सभी बैंकों ने 40 फीसदी तक कर्ज प्राथमिकता वाले क्षेत्र को दे रखे हैं. इसलिए अगर ये क्षेत्र बढ़ी दर का बोझ नहीं उठाते, तो फिर सामान्य ग्राहकों को एक फीसदी अतिरिक्त ब्याज देना पड़ेगा.

इसका अर्थ है कि किसी भी कंपनी के लिए धन जुटाना आसान नहीं होगा क्योंकि सरकार कर्ज को प्रोत्साहन नहीं देगी. भारतीय रिजर्व बैंक इस वर्ष के शुरू में ही यह नीति अपना चुका है कि बैंकों के आपसी लेन-देन पर ब्याज का बंधन नहीं होगा. इसलिए यह कर एक और बड़ा बोझ साबित होगा. दीर्घावधि के लेन-देन पर ब्याज की दरें ज्यादा बढ़ सकती हैं. भारतीय औद्योगिक ऋण एवं निवेश निगम लि. के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक एन वाघुल कहते हैं, "मेरे हिसाब से दीर्घावधि वाले ऋण पर ब्याज की दर 18-19 फीसदी के बीच होगी." पर बैंक व्यवसायियों का अंदाजा है कि यह दर 24 फीसदी सालाना तक भी जा सकती है.

सरकार बैंकों की 60 फीसदी जमा रकम को एहतियातन खर्च करने नहीं देती. इसलिए बैंकों के हाथ में लाभ कमाने के लिए बहुत थोड़ा धन बचा रहता है और नतीजतन ब्याज दरें बढ़ जाती हैं. सरकार के नजरिए से ब्याज की ऊंची दरें फायदेमंद होंगी क्योंकि इनसे अतिरिक्त धन बाहर निकल सकेगा. इससे तीन लाभ होंगे हैं. एक, मुद्रास्फीति कम हो सकती है. दो, कंपनियों को जब ब्याज की उगाही मंहगी लगेगी तो वे अपनी फिजूलखर्ची कम करने के

परियोजना स्वीकृति

इंतजार और अभी...

सरकार की नई उद्योग नीति का एक हिस्सा परियोजनाओं की मंजूरी की बाधाओं को दूर करने के लिए है, खास तौर पर विदेशी गठजोड़ वाली परियोजनाओं को. 'इंडिया टुडे,' ने ऐसी ही अटकी पड़ी एक परियोजना का जायजा लिया. यह इस बात का सबसे बेहतर नमूना है कि किस तरह नौकरशाही बाधाएं योजना को रोकती हैं और सरकारें बदलने पर प्रस्ताव ठंडे बस्ते में डाल दिए जाते हैं.

प्रमोद पुष्करणा

ललित थापर

थापर डु पांट परियोजना

गोवा आर्थिक विकास निगम ने उच्चस्तरीय टायर बनाने में इस्तेमाल होने वाले नॉयलॉन 6.6 का उत्पादन शुरू करने के लिए 1983 में इजाजत मांगी. चार साल बाद एल.एम. थापर समूह की कंपनी बल्लारपुर इंडस्ट्रीज लि. और अमेरिका की ईआई डु पांट द नेमौर्स ने ईडीसीजी के साथ मिलकर थापर डु पांट लि. बनाई. 1988 में इसने पूंजीगत वस्तुओं के आयात के लिए अर्जी दी जो अटकी पड़ी है.

फरवरी 1989 में कंपनी मामलों के विभाग ने थापर डु पांट की अर्जी इस आधार पर खारिज कर दी कि साझेदारों में हिस्सेदारी का तरीका स्वीकार योग्य नहीं है. उसी साल सितंबर में एकाधिकार और प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार आयोग ने कंपनी को नया आवेदन देने के लिए कहा. आवेदन देते ही सरकार बदल गई.

सितंबर 1990 में परियोजना स्वीकृति बोर्ड ने आवेदन को मंजूरी दे दी. तत्कालीन उद्योगमंत्री अजित सिंह ने इसे एक शर्त के साथ स्वीकृत कर दिया कि इसे आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति से अंतिम स्वीकृति मिलनी चाहिए. मगर फिर सरकार बदल गई. अप्रैल 1991 में थापर समूह के अध्यक्ष ललित मोहन थापर से खुद चंद्रशेखर ने मंजूरी देने का वादा किया कि तभी चुनाव करवाने पड़ गए.

इस साल जून में फिर बोर्ड ने परियोजना को हरी झंडी दिखा दी. पर पिछले महीने पी.वी. नरसिंह राव की सरकार ने घोषणा की कि वह पिछली सरकार द्वारा स्वीकृत सभी परियोजनाओं की समीक्षा करेगी. थापर कहते हैं, "इजाजत पाने के लिए मैंने पांच साल बरबाद कर दिए."

पर थापर-डु पांट अभी भी इंतजार कर रही है. इसने पांच सरकारें देखीं, चार बार आशय पत्र को विस्तार दिया गया और शेयर हिस्सेदारी का स्वरूप भी चार बार बदला गया. टीडीएल को आवश्यक जमीन गोवा में मिल गई है. और वहां सिर्फ एक गेट बना है और कांटेदार तारों घिरा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए बाध्य होंगी और तीसरे, चूंकि बैंकों से धन जुटाना कठिन होगा इसलिए कंपनियां पूंजी बाजार की ओर उन्मुख होंगी. क्रेडिट रेटिंग ऐंड इंफॉर्मेशन सर्विस ऑफ इंडिया लिमिटेड के प्रबंध निदेशक प्रदीप पी. शाह कहते हैं, "कंपनियों को अपनी पूंजी और शेयर बाजार से मिलने वाले धन पर ही निर्भर रहना पड़ेगा."

इसका दूसरा दुखद पहलू यह है कि ऊंची ब्याज दर किसी भी समाज पर बोझ की तरह होती है. भारत में ब्याज की दरें तभी कम होंगी, जब वित्तीय संस्थाओं पर से नियंत्रण हटा लिया जाए और सरकार बैंकों के लिए लेन-देन की शर्तें बंद कर दे. बदलाव के लिए वित्तमंत्री को नए प्रस्तावों से आगे भी सोचना होगा.

शेयर बाजार

तेजी फिर भी नहीं थमी

बाजार औद्योगिक प्रगति का पैमाना बनने लगे

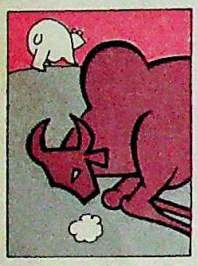

अगर शेयर बाजारों को देश की अर्थव्यवस्था की सेहत का पैमाना माना जाए तो मनमोहन सिंह को खुश होना चाहिए. कम-से-कम यह बाजार सभी अस्वास्थ्यकर बातों से ध्यान हटा देता है. शेयर बाजारों में पिछले एक महीने से भारी उत्साह रहा है—जो बजट-पूर्व होता ही है—और बजट की घोषणा के बाद इसके ठंडा पड़ने की उम्मीद थी जो बजट बाद की प्रतिक्रिया होती है. लेकिन ऐसा नहीं हुआ. इसके विपरीत बाजार के सूचकांक लगभग शिखर पर पहुंच गए. मुंबई शेयर बाजार का 30 शेयरों वाला संवेदनशील सूचकांक 26 जुलाई को 1630.27 अंक पर जा पहुंचा जो पिछले साल अक्तूबर के उसके सबसे ऊंचे रिकार्ड से 27.63 अंक ऊपर है. मुंबई स्थित शेयर सलाहकार संस्था ग्रोमोर रिसर्च ऐंड एसेट मैनेजमेंट कंपनी के अध्यक्ष हर्षद मेहता कहते हैं, "अधिकांश लोगों के मन से बजट का डर निकल गया. बजट में तीखा कुछ भी नहीं है."

यह बात तो बहस का मुद्दा बन सकती है लेकिन यह तथ्य निर्विवाद है कि 1985 की तेजी के बाद पहली दफा शेयर बाजार औद्योगिक प्रगति का पैमाना बनने लगे हैं क्योंकि कंपनियां रकम के लिए अगर बैंकों के पास जाती हैं तो उन्हें भारी ब्याज देना पड़ेगा. इसलिए रकम उगाहने के लिए शेयर बाजारों की ओर ही ध्यान जाएगा.

अगर उद्योग नीति देसी निवेश को प्रोत्साहित करती है तो शेयर बाजारों के प्राथमिक—या नए शेयर निर्गम—क्षेत्र में तेजी आने की उम्मीद है. और इसी के साथ दूसरे शेयरों में भी तेजी आएगी जो कारोबारी दुनिया के कई क्षेत्रों में मिली नई आजादी को दर्शाएंगे. मसलन, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के शेयरों के खासकर अच्छा धंधा करने की उम्मीद है. नए वातावरण में महानिर्गम की भी वापसी हो सकती है जो बहुराष्ट्रीय कंपनियों का पसंदीदा मामला है.

शेयर बाजारों के लिए एक और अच्छी खबर है. अगर सरकार सुधारों को अमल में लाती है तो बहुत उम्मीद है वह शेयर बाजार में लंबे समय से जरूरी लग रहे फेरबदल की पहल करेगी. खासकर भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड के माध्यम से जिसकी स्थापना अमेरिकी प्रतिभूति विनिमय आयोग की तर्ज पर निगरानी रखने के लिए की गई थी. अब तक देश के शेयर बाजारों के काम को तय करने के लिए बोर्ड के सभी प्रस्तावों की अनदेखी की गई है.

बजट

घाटे के रूप अनेक

वित्तमंत्री मनमोहन सिंह के बजट में घाटा ही घाटा है. 1991-92 के वित्तीय वर्ष में इससे तितरफा घाटे का अनुमान है. वित्तीय घाटा 37,727 करोड़ रु.; राजस्व घाटा 13,854 करोड़ रु. और बजट घाटा इनके मुकाबले कम यानी सिर्फ 7,719 करोड़ रु. होने का अनुमान लगाया गया है.

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष का मानना है कि इनमें वित्तीय घाटा सबसे खतरनाक है. यह घाटा सरकार के प्रस्तावित खर्चों—जिनमें ऋण अदायगी भी शामिल है और सरकार, कर और गैर-कर राजस्व से कितना पैसा जुटाएगी इसके अंतर को दर्शाता है. गैर-कर मदों में सार्वजनिक क्षेत्रों का लाभांश, विदेशी अनुदान और सरकार के दिए ऋण पर ब्याज शामिल हैं. आय और व्यय का यह अंतर जितना ज्यादा होगा, सरकार को काम चलाने के लिए उतना ही ज्यादा पैसा या तो उधार लेना पड़ेगा या ज्यादा मुद्रा छापनी पड़ेगी या फिर दोनों का ही सहारा लेना पड़ेगा.

कर्ज लेते रहने का सीधा मतलब है, कर्ज के जाल में फंस जाना और अंधाधुंध मुद्रा छापते जाने का मतलब है मुद्रास्फीति को न्यौतना.

खतरे की रेखा

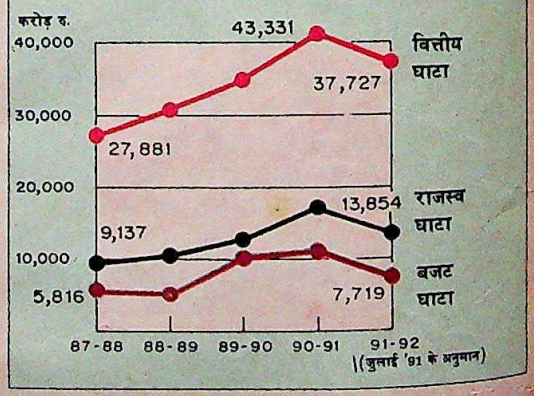

लेकिन असल में बजट घाटा, भले यह कितना ही कम हो, अर्थव्यवस्था के लिए सबसे ज्यादा नुकसानदेह है. सरकारी तौर पर यह रिजर्व बैंक द्वारा केंद्र सरकार को दिया कुल ऋण ही है लेकिन असल में यह सरकार के अतिरिक्त खर्च को पूरा करने के लिए नोट छापने जैसा ही है. बजट घाटे के साथ सबसे बड़ी समस्या यह है कि जब तक मानसून ठीक रहता है, आपूर्ति में कोई बड़ी अड़चन नहीं आती और कीमतें नियंत्रण में रहती हैं. वित्तमंत्री बड़ी सरलता से दावा कर सकते हैं कि घाटा महंगाई बढ़ाने वाला नहीं है. लेकिन यह कागजी मुद्रा अर्थव्यवस्था में उत्पात मचाती रहती है और संकट आने पर, जैसा कि इस जनवरी में खाड़ी युद्ध के दौरान हुआ, मुद्रास्फीति बेकाबू हो जाती है. ऐसे में अर्थव्यवस्था में काफी पैसा मौजूद रहता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घपलन, गुपचुप व्यापार पर रोक, निवेशक क्षतिपूर्ति सेवा की गैरमौजूदगी वगैरह. अगर इस संस्था को अधिकार दे दिए जाते हैं, जिसकी पूरी संभावना है तो भारतीय शेयर बाजारों का कायाकल्प हो सकता है. इनके प्रति और निवेशक आकर्षित होंगे और बदले में उद्योग जगत की हालत सुधरेगी.

उद्योग

कुछ राहत तो कुछ आशंकाएं

औद्योगिक विकास दर बढ़ने से पहले घटेगी

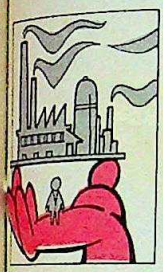

काफी लंबे समय बाद उद्योग जगत को उत्साहित होने लायक कुछ मिला है. लाइसेंस के मामले में घोषित नरमी का व्यापक स्वागत हुआ है. ग्लैक्सो इंडिया के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक हुमायूं धनराजगीर कहते हैं, "पहले भी घोषणा के बाद अप्रत्याशित बाधाएं आती रही हैं." लेकिन उन्हें उम्मीद है कि इस बार कोई ऐसी बाधा नहीं आएगी.

कई दिनों की टालमटोल के बाद जब उद्योग नीति घोषित हुई तो इसने बजट की सारी चमक ही फीकी कर दी. सिएट लि. के प्रबंध निदेशक हर्ष गोयनका कहते हैं, "काश यह नीति एक दशक पहले घोषित हुई होती."

लेकिन हर आदमी इससे खुश नहीं है. रौनक इंटरनेशनल लि. के अध्यक्ष रौनक सिंह को लगता है कि अगर नई परियोजना लगानी हो तो पूंजीगत वस्तुओं के आयात पर लगाई गई 2 करोड़ रु. की सीमा जान निकाल देगी. वे कहते हैं, "इससे हम वापस कंट्रोल वाले युग में पहुंच जाते हैं." कुछ उद्योगपतियों को लगता है कि जिस दौर में भारत विश्व के मुकाबले में आने की कोशिश कर रहा है, उसमें मूल्य ह्रास की दर में कमी और बैंक से मिलने वाले सूद पर कर लगाने से उद्योग जगत पर अतिरिक्त दबाव पड़ेगा.

इन कुछेक आपत्तियों को छोड़ दें तो हर तरफ अपना जाल फैला चुके लाइसेंस-परमिट राज के जाने की संभावना से राहत महसूस की जा रही है. लेकिन अब तक के विकास की प्रक्रिया और इसका फल पाने में लगने वाले समय को देखते हुए यही लगता है कि औद्योगिक विकास दर पिछले साल के 8.4 फीसदी से उपर नहीं

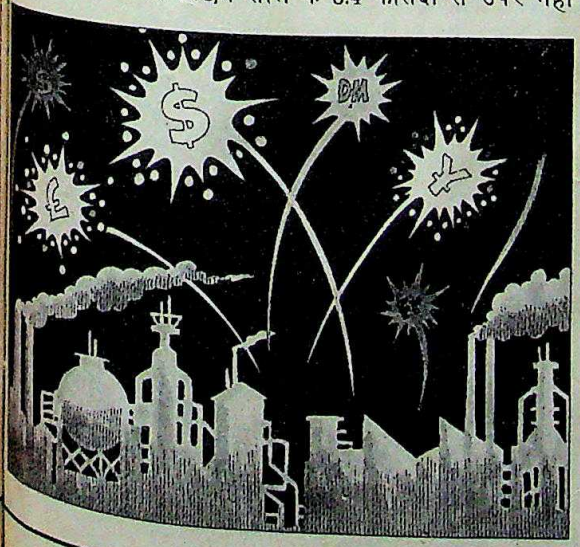

बजट भाषण

खट्टी मीठी बातें

देश के इस बजट की निश्चय ही सबसे बेचैनी से प्रतीक्षा हो रही थी. इससे मुश्किलें बढ़ने और नए रास्ते खुलने की संभावना बराबर-बराबर थी. और इसे पेश करने वाले वित्तमंत्री मनमोहन सिंह पर सबकी नजरें लगी थीं. कुल मिलाकर उन्होंने उम्मीदों के अनुरूप ही काम किया. मुश्किल घोषणाएं देश और राजनेताओं को ज्यादा कड़वी न लगें, इसके लिए ऑक्सफोर्ड से पढ़े इस वित्त-मंत्री ने सवा दो घंटे के बजट भाषण के दौरान जगह-जगह कुछ हल्की-फुल्की बातें अपनी ओर से जोड़ीं. उसके कुछ अंश:

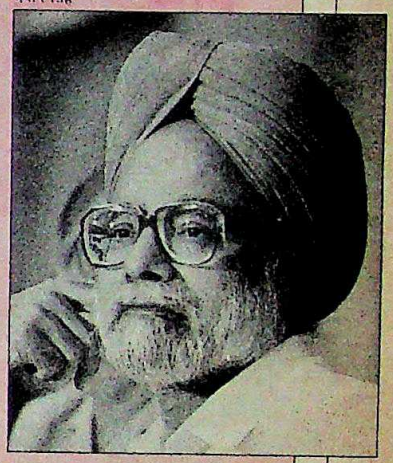
भवान सिंह

मैं लगातार सूखे की चपेट में रहने वाले एक गांव के गरीब परिवार में जन्मा. यह गांव अब पाकिस्तान में है. विश्वविद्यालय की छात्रवृत्तियां और अनुदान मिलने से मैं भारत और इग्लैंड के कॉलेजों में पढ़ाई पूरी कर सका.

■ किसी भी वित्तमंत्री को कठोर होना पड़ता है. जब देश के हितों की रक्षा की बात हो तो मुझे दृढ़ता बरतनी होगी. लेकिन मैं वादा करता हूं कि भारतवासियों के प्रति मैं उदार ही रहूंगा."

■ हर वित्तमंत्री को स्वास्थ्य के लिए हानिकर धूम्रपान पर कुछ प्रतिबंध लगाना होता है. मुझे भी यह मानकर सिगरेट पर कर बढ़ाना ही पड़ेगा.

■ जुए की प्रवृत्ति वाले लोग वर्षों से घुड़दौड़ पर पैसा लगाते आए हैं. मुझे यकीन है कि ऐसे लोगों को अपनी कमाई अब सरकार के साथ बांटने में भी सुख मिलेगा.

■ वित्तमंत्री नियुक्त होने के बाद से ही मुझे दफ्तर में ज्यादा समय गुजारना पड़ा है. स्वाभाविक है इससे मेरी बीवी बहुत नाराज हुई हैं. यह सदन इस बात से सहमत होगा कि देश के वित्तमंत्री का उसके घर की वित्तमंत्री से तनाव रहे, यह हमारी अर्थव्यवस्था के स्वास्थ्य के लिए जरा भी ठीक नहीं है.

■ शायद ही कोई इस बात से असहमत होगा कि हाल के वित्तमंत्रियों में सबसे ज्यादा टांग खिचाई मेरी ही हुई है. अपनी भारी जिम्मेदारी पूरी करने के लिए मुझे प्रेम से समर्थन की जरूरत है.

विक्टर ह्यूगो ने एक बार कहा था, "जिस विचार का समय आ गया हो उसे दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती." इस गरिमामय सदन से कहना चाहूंगा कि भारत दुनिया में एक प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में उभरेगा, यह भी एक ऐसा ही विचार है. पूरी दुनिया यह बात स्पष्ट शब्दों में सुन ले. भारत अब जग गया है. हम विजयी होंगे. हम कामयाब होंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाएगी. ऊपर बढ़ने के पहले यह कुछ नीचे भी गिर सकती है क्योंकि बदलाव का असर कुछ महीनों, संभवतः साल भर बाद ही महसूस किया जा सकेगा. वैसे तात्कालिक लाभ दिख रहा है.

उम्मीद है कि नई नीति भारत में वास्तविक प्रतिद्वंद्विता की शुरुआत दोहरे तरीके से करेगी. एक तो देसी उद्यमियों के बीच और दूसरे नई नीतियों के बाद आने वाली विदेशी कंपनियों से. यह दूसरी प्रतिद्वंद्विता अधिक कठोर होगी क्योंकि बाहर से आने वाली कंपनियां दुनिया के मुक्त बाजार की असलियत का अनुभव लेकर आएंगी. वैसे, उद्योगपति भले ही कहें कि वे प्रतिद्वंद्विता से नहीं डरते मगर फिक्की के अध्यक्ष सुदर्शन बिड़ला जैसे कुछेक लोगों ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आने का रास्ता सुगम हो जाने के बाद देसी कंपनियों को संरक्षण देने की बात उठानी शुरू भी कर दी है. अगर उद्योग नीति ने अपनी संभावनाओं के अनुरूप काम किया तो इसको लेकर संदेह करने वाले खुद ही दरकिनार हो जाएंगे.

विदेशी निवेश

बड़े व्याकुल नहीं हैं वे

घोषित नीतियों पर ईमानदारी से अमल जरूरी

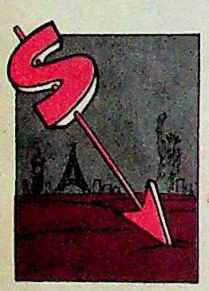

विदेशी निवेश के रास्ते अब करीब-करीब खुल ही गए हैं. एक ही झटके में 31 मुख्य क्षेत्रों में 51 फीसदी तक विदेशी निवेश को बिलकुल सरल बना दिया गया है. इसमें बिजली के उपकरणों से लेकर भारी मशीनें और ट्रैक्टरों से लेकर पर्यटन तक शामिल हैं. विदेशी मुद्रा नियमन कानून (फेरा) में भी धीरे-धीरे ढील दी जाने वाली है. नई उद्योग नीति को देखने से यह बात जाहिर होती है कि वे बहुराष्ट्रीय कंपनियां—जिन्हें खून चूसने वाला और सीआईए के इशारे पर चलने वाला समझा जाता रहा है अब एकाएक भारत के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से मिलने वाले कर्ज की तरह महत्वपूर्ण हो गई हैं. हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड के अध्यक्ष एस.एम. दत्त कहते हैं, "आज इस बात को बड़ा महत्व मिल रहा है कि कोई बहुराष्ट्रीय कंपनी अर्थव्यवस्था को क्या कुछ दे सकती है."

अभी तक तो निवेश के लिए माहौल बिल्कुल ही विपरीत रहा है. भारत में 1989 में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 42.5 करोड़ डॉलर तक सीमित रहा. चीन, मलेशिया या फिर इंडोनेशिया (देखें चार्ट)

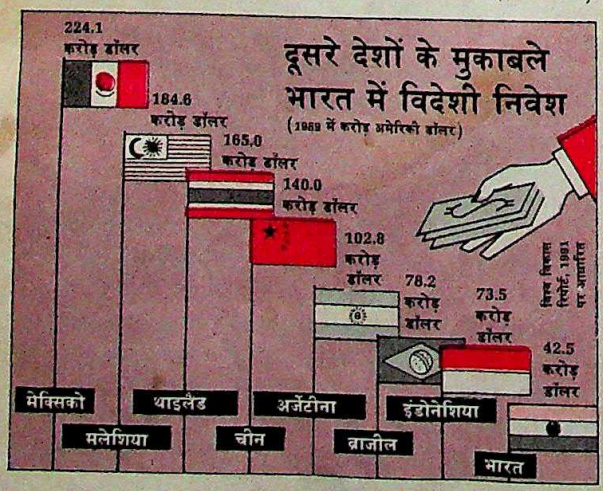

राहुल बजाज

तब और अब

बजाज ऑटो लि. के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक राहुल बजाज प्रमुख संवाददाता गॉडफ्रे परेरा को बताते हैं कि लाइसेंस राज में कैसे काम होता था और नई उद्योग नीति से व्यवसाय जगत का रंग-ढंग कैसे बदलेगा.

लाइसेंस प्रणाली के मेरे अपने अनुभव दुःस्वप्न जैसे रहे हैं. दरअसल 1968 से ही हमें भारी कठिनाइयां झेलनी पड़ीं. हमने जितने का लाइसेंस मांगा, हमेशा उसका 30 फीसदी ही पाते रहे.

राजीव गांधी 1984 में आए और अपने साथ उदारीकरण की फिजां भी ले आए. तब भी मैं अपना विस्तार कार्यक्रम तीन वर्ष बाद ही शुरू कर पाया. सरकार ने तरह-तरह की शर्तें जोड़ीं. कैसे निर्यात करेंगे? क्यों निर्यात करेंगे? हमारे औरंगाबाद कारखाने की क्षमता 3 लाख से बढ़ाकर 10 लाख करने में तीन वर्ष लग गए. अपनी योजना के अनुसार विस्तार न कर पाने के कारण नुकसान भी हुआ. तब सरकार ने यही नहीं सोचा कि दुनिया आपके लिए ठहरी नहीं रहेगी. तीन लंबे वर्ष, जरा सोचिए इतने समय में क्या कुछ किया जा सकता था.

राहुल बजाज

अब उन्होंने एकाधिकार कानून से एकाधिकार हटा दिया है. इससे लाभ होना चाहिए. अब हम अंतरराष्ट्रीय प्रतिद्वंद्विता में अधिक मजबूती से उतरने जा रहे हैं, विदेशी गठबंधन करने जा रहे हैं, जो है उसमें वृद्धि करने जा रहे हैं. हम दुनिया भर से तकनीकी विशेषज्ञ लाएंगे और फिर प्रतिद्वंद्विता करेंगे. इसी एकमात्र तरीके से हम टिके रह सकते हैं. भारत में सर्वोत्तम तकनीक को आने दीजिए.

सरकार कर्मचारी छंटनी नीति के बारे में क्या सोच रही है? उसे ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिनमें इन अतिरिक्त कर्मचारियों को प्रशिक्षण देकर नए काम में लगाया जा सके.

अभी तो मैं सिर्फ तकनीक स्थानांतरण पर ध्यान दे रहा हूं. विदेशी तकनीशियन ले आना अच्छा है. खुला परमिट पाना भी ठीक है लेकिन पैसे के हिसाब से यह कितना बैठेगा? अगर कोष पर्याप्त न हो तब क्या होगा? क्या मैं पैसा रिजर्व बैंक के माध्यम से दूंगा या 'रेप' खरीदूंगा?

मेरे खुश होने की अपनी वजहें हैं क्योंकि मैं जानता हूं कि दिल्ली में लाइसेंस के लिए किसी के पीछे दौड़ना कितना मुश्किल और महंगा है. और तभी मालूम होता है कि किसी मूर्ख ने अपने लिए कुछ बना लेने के चक्कर में या इस-उस बहाने पूरी परियोजना को ही टाल दिया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तुलना में भारत में विदेशी हित कम मात्रा में रहे हैं.

अभी भी ऐसा ही जारी है. अभी भी कई ऐसी रुकावटें हैं, जिन्हें दूर किया जाना जरूरी है. हालांकि मनमोहन सिंह स्पष्ट कर चुके हैं कि विदेशी कंपनियां वर्तमान साझेदार कंपनियों में अपनी शेयर पूंजी 51 फीसदी तक बढ़ा सकती हैं लेकिन कई भारतीय कंपनियां शायद नहीं चाहेंगी कि उनके विदेशी भागीदार यहां अपना हिस्सा बढ़ाएं. कंप्यूटर कंपनी एचसीएल लिमिटेड के अध्यक्ष शिव नाडार के अनुसार, "अमेरिकी कंपनी ह्यूलेट पैकर्ड के साथ हमारे समझौते के अनुसार वह (कंपनी) अपने हिस्से को 26 फीसदी से ज्यादा नहीं बढ़ा सकती."

इसके अलावा यदि पूंजीगत सामान के आयात के लिए जरूरी विदेशी मुद्रा का प्रबंध विदेशी शेयर पूंजी से नहीं होता तो संबद्ध परियोजना को पूर्वानुमति लेनी ही पड़ेगी. यह बात सरकार की इस जाहिरा इच्छा के विपरीत है कि भारत को विपणन कुशलता वाली कंपनियों से कहीं ज्यादा उच्च तकनीक की आवश्यकता है. देश में विदेशी मुद्रा के आने के रास्ते में एक और रुकावट अन्य विदेशी बाजारों की सहज उपलब्धता हो सकती है. पूर्वी यूरोप अब निवेश के लिए एक अत्यंत आकर्षक जगह है. क्योंकि अमेरिकी कंपनियों के पास नकदी की कमी है और यूरोपीय कंपनियां 'कॉमन मार्केट' में खड़ी होने के लिए अपनी शक्ति संभालकर रखना चाहती हैं. मनमोहन सिंह इस बात से आशवस्त हो सकते हैं कि वे जापान से 2 अरब डॉलर ला सकते हैं पर जापानी अधिकारी इस पर कोई बहुत अनुकूल प्रतिक्रिया नहीं दिखाते. लेकिन विदेशी कंपनियां भारत की तरफ कुछ अधिक रुचि के साथ देखेंगी जरूर. यह जानने के लिए कि भारत अपने दरवाजे खोलने के गंभीर है या नहीं. लेकिन वे बदलावों की बिलकुल अनदेखी भी कर सकते हैं, खासकर तब यदि सरकार अपनी नई नीतियों को अंजाम देने में सफल नहीं हो पाती. फिर तो ऋण और मृत्यु में बहुत कम अंतर रह जाएगा.

कर्ज

दिनोदिन बढ़ता बोझ

कई बड़ी योजनाएं शिकार हो सकती हैं

इस साल भारत सरकार कर या कर-भिन्न राजस्व के रूप में जितने रुपए जुटाएगी उसका आधा हिस्सा तो देसी और विदेशी कर्ज पर सूद की देनदारियों में ही निकल जाएगा. यह राशि 27,000 करोड़ से ज्यादा की होगी. अगले वित्त वर्ष के शुरू होने तक सूद का बोझ और बढ़ सकता है. अगर इससे कुछ संकेत मिलता है तो यही कि कर्ज में डूबा भारत रोज और गहरे डूबता जा रहा है. अब जरा इन तथ्यों पर गौर करें:

► अभी हाल ही में दो बार कुल रुपए का लगभग 20 फीसदी अवमूल्यन होने के पहले तक देश पर विदेशों का, जिनमें आप्रवासी भारतीय भी शामिल हैं, 1,20,000 करोड़ रु. का कर्ज था. इनमें 3-5 अरब डॉलर के अल्पावधि ऋण को भी जोड़ लीजिए, जो अधिकृत आंकड़ों में नहीं जुड़ा है, तो कुल विदेशी कर्ज 1,50,000 से 1,60,000 करोड़ रु. तक बैठेगा. विश्व बैंक का अनुमान इससे भी अधिक का है. दिल्ली के आर्थिक विकास संस्थान के प्रोफेसर बी.बी. भट्टाचार्य का अनुमान है कि भारत पर अपनी कुल राष्ट्रीय आय के एक-

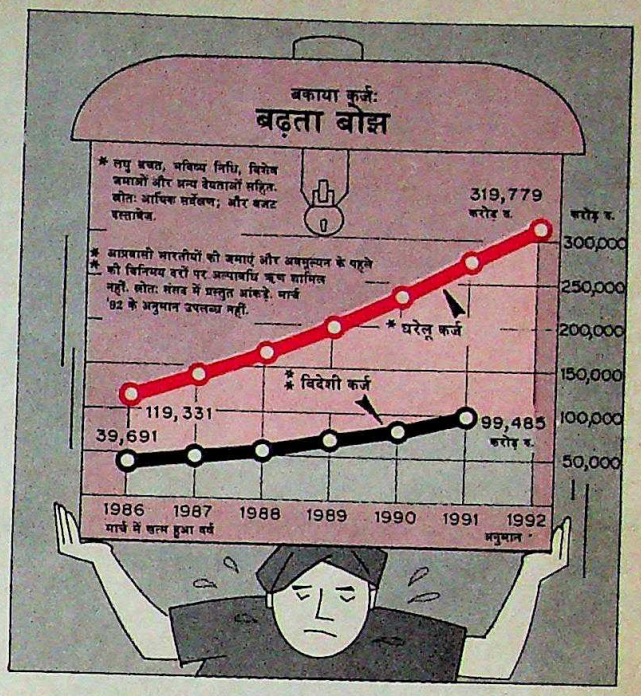

चौथाई के बराबर विदेशी कर्ज है.

► आंतरिक ऋण के मामले में स्थिति और भी बुरी है. यहां पहले लिए गए ऋण और इस साल लिए जाने वाले ऋण पर देनदारियों की कुल मात्रा 3,20,000 करोड़ रु. होती है. अपनी आय से अधिक खर्च करने के चक्कर में सरकार ने अस्सी के दशक के शुरू की तुलना में घरेलू ऋण में साढ़े छह गुना और 1985-86 की तुलना में ढाई गुना वृद्धि कर ली है. इस दौरान कर्ज लिया गया धन सरकार ने कर्ज माफी या ग्रामीण क्षेत्रों में चली अनाप-शनाप रोजगार योजनाओं पर खर्च किया. और अब लगता है कि देश को इस फिजूलखर्ची के लिए पछताना होगा और इसकी कीमत चुकानी होगी.

कुल मिलाकर, कर्ज के फंदे वाला यह परिदृश्य बहुत ही डरावना है, खास तौर से इस बात के मद्देनजर कि विदेशी मुद्रा का संकट अभी सरकार से मुद्रा कोष, जापान या कहीं और भी कटोरा फैलवाएगा. यह चर्चा थी कि भारतीय स्टेट बैंक कुछ विदेशी बैंकों के समूह से 4 अरब डॉलर का सात वर्ष की अवधि वाला कर्ज पाने की बात चला रहा है.

कर्ज वाली बात को थोड़ा दूसरे हिसाब से देखें कि अगर सारे कर्जदार एक ही दिन अपना पैसा मांगने आ गए तो सरकार को अपनी सकल राष्ट्रीय आय के बराबर राशि देनी होगी. यानी भारत के हर स्त्री-पुरुष-बच्चे को अपनी एक साल की औसत आय को राष्ट्रीय कर्ज चुकाने में ही होम कर देना होगा.

सौभाग्य से यह स्थिति आएगी नहीं. और अनेक वर्षों में पहली बार मनमोहन सिंह ने केंद्र के कर्ज लेने के 'अभियान' पर अंकुश लगाने की कोशिश करते हुए इसमें 2,551 करोड़ रु. की कमी का प्रावधान किया है. यह कटौती वैसे तो कुछ भी नहीं है. बजट के आंकड़ों में यह भले ही एक खूबसूरत आंकड़ा लगे पर असलियत यह है कि अगर भारत अपने कर्ज के बोझ में भारी कमी नहीं लाता तो उदारीकरण, लाइसेंस की समाप्ति और लालफीताशाही से देश को मुक्त कराने की कोशिशें मिट्टी में मिल जाएंगी. औद्योगिक नीति ने बजट की चमक को फीका कर दिया है. लेकिन बजट इसकी तेजी को अभी भी निगल सकता है.

—राजऋषि सिंघल, नीरज कौशल और संदीप खन्ना की रिपोर्टों पर आधारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर सहारा

'रक्षा-बंधन' भाई-बहन के अनोखे बंधन का प्रतीक है. इस मौके पर, बहन भाई के लिए मंगलकामनाएँ करती है और बदले में भाई, उसे हर तरह का सहारा देने और उसकी रक्षा करने के वचन के रूप में सुंदर सा उपहार देता है. तो इस बार, अपनी प्यारी बहन को रुपया-पैसा, साड़ी या मामूली गहनों की बजाय, क्यों न कोई बहुत ही खास उपहार दिया जाये? यदि आपकी बहन भी कुछ खास, सुरुचि-संपन्न महिलाओं की तरह कढ़ाई-बुनाई में विशेष रुचि रखती हो, तो उसे वह खास उपहार दीजिए जिससे उसकी छिपी प्रतिभा उभरे, निखरे और फूले-फले!

यही मौका है कि आप उसे मदुरा कोट्स के 'ऐंकर नीड्लक्राफ्ट क्लब' की एक साल की सदस्यता उपहार में दें. मदुरा कोट्स, कढ़ाई-बुनाई की लगभग सभी सामग्रियाँ बनाते हैं, जो आपकी बहन की प्रतिभा को उभारने में सहायक होंगी.

देश भर में, हमारे इस क्लब के कुल 20,000 से भी अधिक सदस्य हैं. क्लब की सदस्या होने के नाते आपकी बहन भी हमारी पेशकश का पूरा फायदा उठा सकती है :

*** साल भर में, २० पन्नोंवाली, कढ़ाई-बुनाई की विशेष, तिमाही पत्रिका 'नीड्ल-एन्-थ्रेड' के कुल चार अंक:** देश भर में यही एकमात्र ऐसी पत्रिका है जिसमें कढ़ाई-बुनाई की विविध शैलियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाती है. आपके इस उपहार से उसे कढ़ाई-बुनाई की महंगी किताबों पर खर्च नहीं करना पड़ेगा. यह पत्रिका आपकी बहन में नये-नये डिज़ाइन बनाने की नई प्रेरणा जगायेगी, जिससे वह अपने व अपने परिवार तथा घर-भर के लिए सजावटी चीज़ें बड़ी आसानी से बना लेगी. इस तरह उसका आत्म-विश्वास बढ़ेगा और उसकी प्रतिभा फूलने-फलने लगेगी.

बच्चों के लिए नटखट चूहों की तसवीर

*** 'नीड्ल-एन्-थ्रेड' के विशेष प्रस्ताव:** हमारे इन प्रस्तावों में पेश की जानेवाली निराली सामग्रियाँ बाज़ार में ढूंढने पर भी आपको नहीं मिलेंगी. क्योंकि हम इन्हें अपने सदस्यों के लिए खास बनवाते हैं.

*** कढ़ाई-बुनाई की विविध शैलियों को सीखने का सुनहरा मौका:** हम समय-समय पर कढ़ाई-बुनाई के कोर्स का आयोजन करते हैं, जिसमें भर्ती होकर आपकी बहन क्रोशिया, टैटिंग, कसूती, कढ़ाई-बुनाई इत्यादि सब सीख सकती है. साथ ही, हमारे कल्ब द्वारा आयोजित **'ऐंकर वुमन ऑफ दि इयर'** जैसी विविध स्पर्धाओं में भी भाग ले सकती है. हो सकता है वही भाग्यशाली विजेता घोषित की जाये! इसके अलावा, वह हमारे प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भी भाग ले सकती है.

"भैया मेरे, राखी के बंधन को निभाना ..."

इस बार रक्षा-बंधन के अवसर पर अपनी प्यारी बहन को ऐसा प्यार भरा उपहार दीजिए जो भाई-बहन के अनोखे बंधन जैसा अनोखा हो!

घर की बैठक — सजी-संवरी, निखरी-निखरी

***** इतना ही नहीं, 'नीड्ल-एन्-थ्रेड' के हर अंक के साथ होगी — **१२ पन्नों की पूरक-पुस्तिका** (supplement) जिसमें सिलाई या कढ़ाई-बुनाई संबंधी जानकारी दी जायेगी

ऐंकर नीड्लक्राफ्ट क्लब के बारे में लोगों की राय है:-

रोहित मिश्रा (उम्र २७ वर्ष)

"पिछली दीवाली पर जब मैंने अपनी बहन को ऐंकर नीड्लक्राफ्ट क्लब की सदस्यता का अनोखा उपहार दिया, तो वह बहुत ही खुश हुई. फिर तो उसकी सहेलियाँ भी सदस्या बनने लगीं."

रोहिणी शर्मा (उम्र १४ वर्ष)

"मां की देखादेखी. मैंने भी 'नीड्ल-एन्-थ्रेड' में दी सुंदर-सुंदर डिज़ाइनें बड़ी आसानी से बना लीं. मेरी टीचर तथा सहेलियों ने मेरे काम की खूब प्रशंसा की."

शरारती 'टेडी' से सजा लैम्पशेड

श्रीमती वर्मा (उम्र ५५ वर्ष)

"ऐंकर नीड्लक्राफ्ट क्लब की सदस्या बनने के बाद मेरी बेटी की कढ़ाई-बुनाई की प्रतिभा ऐसी निखरी कि उसके काम ने उसके ससुराल वालों का दिल जीत लिया."

ऐंकर नीड्लक्राफ्ट क्लब की सदस्यता के अनोखे उपहार का आकर्षक रूप: उपहार अनोखा है तो उसे भेंट करने का अंदाज भी अनोखा ही होना चाहिये. इसलिए हमने खास डिज़ाइन की है — "प्रेरणा" — जो हैण्ड-मेड पेपर से बनाया गया है. इस खास पैकिंग में 'नीड्ल-एन्-थ्रेड' के नये अंक के साथ सुई, धागों की लच्छियाँ, कैनवस और डिज़ाइन शीट दिया जायेगा. इसे पाकर आपकी बहन को सचमुच नई प्रेरणा मिलेगी. यह खास उपहार आपका प्यार जतायेगा, यादगार बन जायेगा! नीचे दिये कूपन को भरकर, १५० रु. के डिमांड ड्राफ्ट के साथ १५ अगस्त १९९१ से पहले ऐंकर नीड्लक्राफ्ट क्लब के पते पर भेजिये.

फूल जो कभी नहीं मुरझायेंगे

Madura Coats Ltd.

"मैं राखी के बंधन को निभाऊंगा..."

'प्रेरणा' — इस अनोखे उपहार के साथ होगा ... आपका प्यार जतानेवाला खास ग्रीटिंग कार्ड!

(खाली जगह में साफ-सुथरे अक्षरों में लिखिये. यदि आप अपनी अनेक बहनों को यह उपहार देना चाहें, तो इस कूपन की ज़ेरॉक्स कॉपियाँ बनवाकर, लिख भेजिए.)

* मैं जान गया हूं कि हर सदस्यता-शुल्क केवल १०० रु. है. बाकी ५० रु. 'प्रेरणा' की खास पैकिंग व कोरियर सर्विस के लिए है. इस कूपन के साथ मैं १५० रु. का डिमांड ड्राफ्ट नं. _____ मदुरा कोट्स लि. के नाम भेज रहा हूं.

मेरी बहन का नाम _____

पता _____

शहर _____ राज्य _____ पिन कोड _____

फोन नं. _____

मेरा नाम _____

पता _____

शहर _____ राज्य _____ पिन कोड _____

फोन नं. _____

मेरी बहन को इस भाषा में 'नीड्ल-एन्-थ्रेड' का अंक भेजिए.

☐ हिन्दी ☐ अंग्रेजी

आपकी बहन को रक्षा-बंधन पर आपका खास उपहार अवश्य मिले. इसलिए इस कूपन को भरकर १५ अगस्त १९९१ से पहले हमें इस पते पर भेज दीजिए:

ऐंकर नीड्लक्राफ्ट क्लब, मदुरा कोट्स लि., हफ़ीज़ा चेम्बर्स, १११/७४, के.एच. रोड, बैंगलूर-५६० ०२७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता दल

फिर पड़ने लगी दरारें

वी.पी. सिंह पार्टी पर अपना एकछत्र राज बनाए रखने में सफल, अजित सिंह असंतोष की आग सुलगाने के बावजूद फिलहाल बड़े घाटे में

—ज़फर आगा

आम चुनाव के सिर्फ आठ हफ्ते बाद ही जनता दल के टूटने की आशंका फिर उभर आई है. नौ महीने के भीतर ही दल के साथ घटित हो रहा यह दूसरा हादसा है. पार्टी अभी अपनी चुनावी हार के सदमे से उबर भी नहीं पाई थी कि अजित सिंह ने इसके सामने एक और संकट खड़ा कर दिया. चौधरी चरण सिंह की राजनैतिक विरासत के इस इकलौते वारिस की चिट्ठी ने पार्टी में उथल-पुथल मचा दी.

सचमुच यह एक अप्रत्याशित चिट्ठी थी जिसमें पार्टी के सर्वेसर्वा विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व को चुनौती दी गई और कई राज्यों में पार्टी की दुर्गति के लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराया गया. अजित सिंह ने लिखा, "आप (वी.पी. सिंह) यह स्वीकार नहीं करना चाहते कि पिछले दो साल से सरकार और पार्टी पर आपके नेतृत्व का इस पराजय से कोई लेना-देना है."

पर यह चिट्ठी तो पूरे झगड़े का एक छोटा-सा हिस्सा भर है. इसकी तह में तो दरअसल लंबे समय से पनपते एक-दूसरे को काटने वाले तनावों का एहसास छिपा है. चुनावों के बाद पार्टीजनों को अजित सिंह की बेचैनी साफ दिखाई पड़ने लगी थी. तभी यह अनुमान लगाया जाने लगा था कि वी.पी. सिंह के खिलाफ उनका आस्तीनें चढ़ा लेना अब सिर्फ कुछ वक्त की ही बात है. अफवाहें, जिनका कभी विश्वसनीय तरीके से खंडन नहीं किया गया—ये भी थीं कि अजित सिंह अपने समर्थकों समेत दलबदल करके इंका में जाने वाले हैं.

यह बवाल उठने की तात्कालिक वजह थी: पार्टी के उच्च पदों के लिए चल रही रस्साकशी. नवंबर में चंद्रशेखर और देवीलाल गुट के अलग हो जाने के बाद से ही ये पद खाली पड़े थे. पिछले पखवाड़े अजित सिंह को खुले मैदान में आकर लड़ने को मजबूर करने के लिए वी.पी. सिंह और उनके सहयोगियों ने अपना आखिरी दांव भी चल दिया. उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि पार्टी अध्यक्ष एस. आर. बोम्मई द्वारा भरे जाने वाले इन पदों पर अजित सिंह के लोग नहीं बैठाए जाएंगे.

चार्ट: बी.के. शर्मा

वी.पी. सिंह की गहरी पैठ

पार्टी संगठन

एस.आर. बोम्मई
अध्यक्ष

राजनैतिक मामलों की समिति

वी.पी. समर्थक	वी.पी. विरोधी खेमा
एस.आर. बोम्मई	अजित सिंह
लालू प्रसाद यादव	जार्ज फर्नांडिस
शरद यादव	बीजू पटनायक
रामविलास पासवान	रामकृष्ण हेगड़े
इंद्र कुमार गुजराल	उमेंद्र नाथ वर्मा
मुफ्ती मुहम्मद सईद	
मधु दंडवते	

उपाध्यक्ष — रामविलास पासवान, वी.पी. सिंह के उम्मीदवार

प्रधान महासचिव — वी.पी. सिंह के मुरीद शरद यादव ने अजित सिंह का पत्ता काटा

संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष — मुफ्ती मुहम्मद सईद

जनता दल संसदीय पार्टी

लोकसभा

वी.पी. सिंह
नेता

रामविलास पासवान — उपनेता
श्रीकांत जेना — मुख्य सचेतक
मोहन सिंह — उपसचेतक

कार्यकारिणी के सदस्य — सरोज दुबे, हरिकिशोर सिंह, नवल किशोर शाही और सुखदेव पासवान

कोषाध्यक्ष — सोमपाल, लोकसभा और राज्यसभा दोनों के लिए

राज्यसभा

जयपाल रेड्डी — नेता
एस.डी. सिंह — उपनेता
राजमोहन गांधी — महासचिव

कार्यकारिणी के सदस्य — कमला सिन्हा, मीरा दास और जे.पी. जावली

वी.पी. सिंह सर्वसम्मति से जनता दल संसदीय पार्टी के नेता घोषित हुए और सभी घटकों ने उन्हें अन्य सदस्यों को नामजद करने का अधिकार दिया

संसदीय दल और संगठन में हर पद पर वस्तुतः वी.पी. सिंह के आदमियों का कब्जा है तथा महासचिव पद शरद यादव को मिलना अजित सिंह के लिए बड़ा अपमानजनक साबित हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजित सिंह महासचिव का पद चाहते थे पर उनके कट्टर प्रतिद्वंद्वी शरद यादव ने इसका विरोध किया. वी.पी. सिंह ने भी चुपचाप अजित का विरोध किया. वी.पी. सिंह ने ठान रखा है कि अजित पार्टी के भीतर अपना आधार न बढ़ा पाएं. अजित भी खुद को वी.पी. सिंह के नेतृत्व के प्रति चुनौती मानते हैं. दरअसल, विवादास्पद चिट्ठी भेजने से एक हफ्ता पहले अजित ने उत्तर प्रदेश में एक बड़ी लड़ाई जीत ली. राज्य विधायक दल के नेता पद पर नामांकन के लिए उनके समर्थक कैलाशनाथ यादव को वी.पी. सिंह के आदमी रेवती रमण सिंह पर तरजीह दी गई. उन्होंने उत्तर प्रदेश जनता दल अध्यक्ष पद के लिए अपने खासमखास अनवर अहमद के नाम की सिफारिश भी कर दी.

अजित की रणनीति थी कि उत्तर प्रदेश में अपनी पकड़ बनाए रखी जाए क्योंकि उनका दावा है कि प्रदेश में जनता दल के 89 विधायकों में '50 उनके साथ' हैं. और उनका यह दावा गलत भी नहीं.

पहले दौर की लड़ाई जीतने के बाद अजित को लगा कि वे वी.पी. सिंह को दिल्ली में भी पटखनी दे सकते हैं. पर उन्हें यह एहसास नहीं था कि संसदीय दल में वी.पी. सिंह की पकड़ (देखें चार्ट) काफी मजबूत है. और फिर, पिछले चुनाव में अजित सिंह के गढ़ पश्चिमी उत्तर प्रदेश में उनके ज्यादातर उम्मीदवार चुनाव हार गए थे. और अगर 56 सांसदों वाले जनता दल को तोड़ना है तो दलबदल कानून से बचने के लिए कम-से-कम 19 सांसद होने चाहिए. पर अजित सिंह के पास महज आधा दर्जन सांसद ही हैं.

हालांकि, रशीद मसूद, सतपाल सिंह यादव, हरपाल पंवार और अजय सिंह जैसे नेता अजित सिंह के साथ जमे रहे लेकिन बहुत से दूसरों ने खुलकर उनका पक्ष नहीं लिया. मसलन, जॉर्ज फर्नांडीस और बीजू पटनायक, जिनके बारे में बताया जाता है कि उन्होंने अजित सिंह को चिट्ठी लिखने के लिए भड़काया. राजनैतिक मामलों की समिति (पीएसी) की बैठक वाले दिन वे दिल्ली से ही गायब हो लिए. इसी कमजोरी को भांपकर वी.पी. सिंह खेमे ने अपने आदमियों को पार्टी पदों पर बिठा दिया.

इसके अलावा, अजित सिंह खेमे ने एक

भवान सिंह

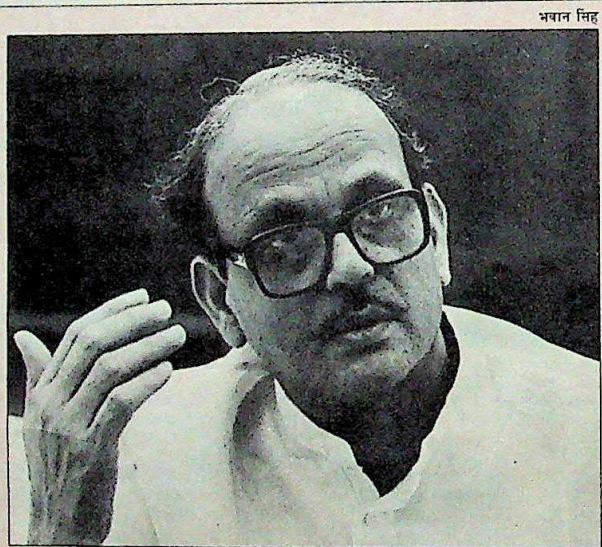

वी.पी. सिंह

'राव तरीका बदलें'

पार्टी को लगे चुनावी सदमे और अजित सिंह की बगावत के बावजूद जनता दल नेता विश्वनाथ प्रताप सिंह ने पिछले पखवाड़े तीनमूर्ति रोड के अपने निवास पर प्रमुख संवाददाता ***जफर आगा*** *से बातचीत की तो वे आत्मविश्वास से भरे दिखे. कुछ अंश:*

● चुनाव के बाद कुछ समय तक लगा कि आपने मंडल का मुद्दा छोड़ दिया है. क्या आपकी पार्टी में इस सिलसिले में कोई पुनर्विचार हुआ है?

मुझे मालूम नहीं...पर मंडल की हमारी घोषणा के एक साल के भीतर ही हर पार्टी नौकरियों में पिछड़ों को आरक्षण देने की बात करने लगी है.

● तो आपकी पार्टी के लिए सामाजिक न्याय और मंडल मुख्य मुद्दे रहेंगे?

समाज के शोषित तबकों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता चुनावी हेरफेर से नहीं बदल सकती.

● चुनाव से पहले आपने 'इंडिया टुडे' को बताया था कि पार्टी टूट जाएगी.

जब हम कोई खास सामाजिक मुद्दा उठाते हैं तो ऐसे लोग भी हो सकते हैं जो हमसे सहमत न हों और अलग हो जाएं.

● अजित सिंह के बारे में क्या कहेंगे?

यह पार्टी को तय करना है. दूसरी पार्टियों में भी मतभेद हैं पर हमारी बातें ही उछाली जाती हैं.

● अजित गुट का कहना है कि इंका से बातचीत इसलिए टूट गई कि उसने लोकसभा उपाध्यक्ष पद के लिए रशीद मसूद का नाम सुझाया था.

बातचीत इसलिए टूटी क्योंकि हम अपनी पहचान बनाए रखना चाहते थे.

● प्रमुख राष्ट्रीय मुद्दों पर सर्वसम्मति के प्रधानमंत्री के आह्वान पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

हम सब राष्ट्रीय सर्वसम्मति चाहते हैं पर उसका आधार होता है सलाह-मशविरा. सरकार एकतरफा फैसले लेती है. मसलन आर्थिक मोर्चे पर प्रधानमंत्री की नीयत साफ है पर उन्हें अपना तरीका बदलना चाहिए.

● क्या आप आर्थिक नजरिया फिर से तय करने की जरूरत से सहमत हैं?

1986 में बतौर वित्तमंत्री मैंने खर्च, घाटा दशनि वाले कागजात तैयार किए थे. मैंने यह भविष्यवाणी की थी कि 1991 तक हमारा दिवाला पिट जाएगा. मैंने अपने आर्थिक उपायों को मंजूर भी करा लिया था लेकिन जनवरी 1987 में मुझे रक्षा मंत्रालय भेज दिया गया...

● क्या आपका तबादला निहित स्वार्थों की वजह से हुआ?

उनकी भूमिका तो थी. यह सोचा-समझा प्रयास था.

● बतौर वित्तमंत्री आपने जो नीतियां अपनाई थीं, सरकार अब उन्हीं को लागू करने की कोशिश कर रही है. क्या आप इससे सहमत हैं?

हमें आधुनिकीकरण की जरूरत है. इससे रोजगार के अवसर पैदा होंगे. पर तत्काल आधुनिकीकरण के प्रति हमें सतर्क रहना होगा. हमें भारत की अपनी मिली-जुली पद्धति अपनानी होगी.

● यह पद्धति क्या है?

सरकार, मजदूर और उद्योगपति एक साथ बैठकर बात करें.

● आप नियंत्रण हटाने के हिमायती हैं?

घरेलू स्पर्धा होनी चाहिए. तभी उत्पाद और कीमतों में सुधार होगा. तभी इजारेदारों के इतने भारी मुनाफों को तोड़ा जा सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और गलती की. जब वी.पी. सिंह ने अजित के आदमियों को पार्टी मामलों पर बातचीत के लिए बुलाया तो उन्होंने राजा से मिलने में टालमटोल की. जब उनके समर्थक उपेंद्र वर्मा ने उन्हें बताया कि सूची को अंतिम रूप दिया जा चुका है और उनका तथा उनके समर्थकों का नाम उसमें नहीं है तो अजित सिंह हरकत में आए.

पहले से ही बचाव कर लेने की मुद्रा में अजित सिंह ने चिट्ठी लिख डाली. पर उनका वार खाली गया और वी.पी. सिंह हमले पर उतारू हो गए. अजित सिंह को लग रहा था कि वी.पी. सिंह दबाव में आ जाएंगे पर वी.पी. सिंह ने तत्काल पीएसी की बैठक बुलाई जिसने उनके नामांकित सभी लोगों को मंजूरी दे दी. पर सबसे बड़ा हमला अजित सिंह के कट्टर विरोधी रामपूजन पटेल को उत्तर प्रदेश जनता दल का अध्यक्ष बनाकर बोला गया.

अजित की प्रतिक्रिया थी, "यह गुटबाजी की राजनीति है. वी.पी. सिंह और बोम्मई ने पार्टी को अपने आदमियों से भर दिया है." अजित सिंह की यह आलोचना गलत नहीं थी. वी.पी. सिंह की यही इच्छा रही है कि पार्टी उन्हें निर्विवाद नेता स्वीकार करे. कुछ अरसे से अजित सिंह, जॉर्ज, हेगड़े और बीजू जैसे नेता मंडल मुद्दे पर असंतोष के संकेत देने लगे थे.

वी.पी. सिंह जानते हैं कि मंडल रणनीति को इन्हीं नेताओं से विरोध का सामना हो सकता है. तीन धड़ों में सबसे मजबूत अजित सिंह को किनारे करके वी.पी. सिंह ने उनके संयुक्त विरोध की हवा निकाल दी है. राजा को मालूम है कि अगर वे अजित सिंह को पार्टी से निकालते हैं तो पार्टी टूट जाएगी और उत्तर प्रदेश में विधायक भी बंट जाएंगे. इसलिए अजित सिंह से अंततः उनके समझौते की गुंजाइश है.

अजित और उनके समर्थकों का मानना है कि अगला चुनाव इंका और भाजपा के बीच लड़ा जाएगा और जनता दल उसमें ज्यादा दरकिनार हो जाएगा. इसलिए वे अभी इंका से नाता जोड़ना बेहतर मानते हैं. पर वी.पी. सिंह जनता दल की विपक्षी छवि बनाए रखना चाहते हैं. वे एक बार फिर मंडल मंत्र जपने की तैयारी में हैं, पर इसके दीर्घकालीन नतीजे ये होंगे कि पार्टी का आधार और सिकुड़ जाएगा. जिससे वह राष्ट्रीय स्तर पर विकल्प बनने की प्रक्रिया में और पिछड़ जाएगी.

प्रमोद पुष्करणा

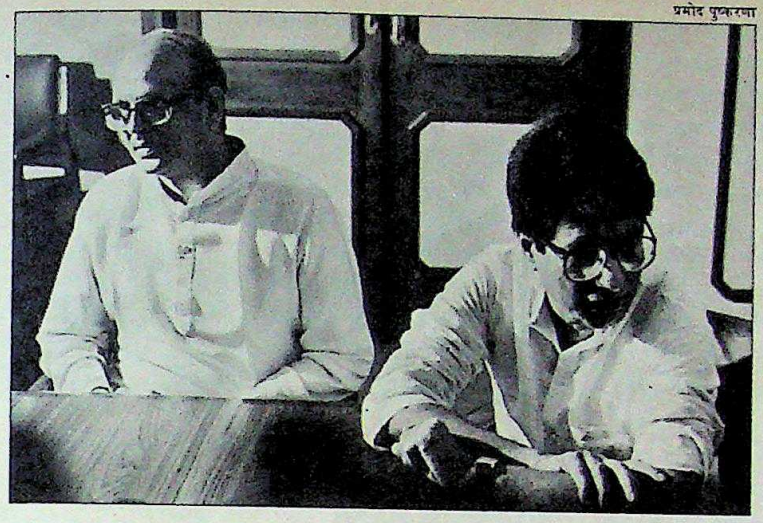

वी.पी. सिंह और अजित सिंहः रास्ते जुदा-जुदा

माकपा

सियासत का पोशीदा खेल

ज्योति बसु और उनकी पार्टी की एक तरफ तो राष्ट्रीय मोर्चे से दिलजमाई लेकिन दूसरी ओर कांग्रेस (इ) से परदे के पीछे दोस्ताना ताल्लुकात

–अरुण चाको, रुबेन बनर्जी के साथ

आज वामपंथियों की हालत प्रेम का गुपचुप खेल खेल रहे किसी व्यक्ति सरीखी है. और इस मामले में उनके सबसे बड़े घटक माकपा का तो कोई जवाब ही नहीं. खुले तौर पर तो यह पार्टी राष्ट्रीय मोर्चा-वाम मोर्चा गठबंधन के साथ साझेदारी करके इंका सरकार के खिलाफ बड़ा रुख अख्तियार किए हुए है. पर साझेदारी की अपनी कसमों के बावजूद माकपा और सत्ताधारी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के बीच गुपचुप रिश्तों के प्रमाण सामने आते जा रहे हैं.

इंका के प्रति माकपा का दोहरा रवैया उस समूची रणनीति का अंग है जिसके तहत वह केंद्र में अपनी स्थिति मजबूत करते हुए अपने गढ़ों, खासकर पश्चिम बंगाल में अपना प्रभाव बनाए रखना चाहती है.

> **केंद्र की दखलंदाजी से बचने और पश्चिम बंगाल में अपनी स्थिति मजबूत बनाने के लिए माकपा के पास केंद्र के साथ मिलकर चलने के सिवा कोई रास्ता नहीं है**

दूसरी तरफ सभी राजनैतिक पार्टियों की तरह एक और चुनाव की आशंका से त्रस्त माकपा भी केंद्र में वर्तमान इंका सरकार को जिंदा रखना चाहती है. लेकिन इंका का खुला समर्थन माकपा को अपने गढ़ों में महंगा पड़ेगा क्योंकि इन जगहों पर उसके कार्यकर्ता इंका विरोध के बूते ही पले-बढ़े हैं. और फिर, पार्टी का नेतृत्व पश्चिम बंगाल में अपनी पांतों की विमुखता का भी जोखिम मोल नहीं ले सकता. इसी राज्य से पार्टी के तीन-चौथाई सांसद चुने गए हैं.

केंद्र सरकार की दखलंदाजी से बचने और अपनी इकलौती प्रांतीय सरकार की सफलता पक्की करने के लिए भी माकपा के पास केंद्र के साथ मिलकर चलने के सिवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई चारा नहीं है. एक वरिष्ठ वामपंथी नेता ने माना कि इंका सरकार को समर्थन देने के मामले में माकपा राष्ट्रीय मोर्चा और शेष वामपंथी पार्टियों के गठबंधन की तुलना में ज्यादा उत्सुक है. उनके शब्दों में, "माकपा की बहुत इच्छा थी कि इंका को लोकसभाध्यक्ष पद हासिल हो जाए. वह आमना-सामना नहीं चाहती. वरना केंद्र प. बंगाल में समस्याएं खड़ी कर सकता है."

इसके मद्देनजर पार्टी के दिग्गज ई.एम.एस. नंबूदिरिपाद की ओर से इंका अध्यक्ष पी.वी. नरसिंहराव के नाम खुली चिट्ठी को लेकर पार्टी के भीतर मचा बवाल दरअसल कुछ हद तक ढकोसला लगता है. इस चिट्ठी में इंका सरकार को समर्थन देने की बात उठाई गई थी. ज्योति बसु सहित माकपा के कई वरिष्ठ नेताओं ने इसकी आलोचना की थी. पर असल में इनमें से कोई भी नंबूदिरिपाद की चिट्ठी पर गंभीर आपत्ति प्रकट नहीं कर सकता था.

इंका के प्रति चालाकी से नरमी बरतने की इस नीति के पीछे बसु की अहम भूमिका रही है. 1977 में सत्ता पर काबिज होने के बाद से ही बसु की राजनैतिक छवि बंगाल के साथ-साथ राष्ट्रीय परिदृश्य पर भी निरंतर बेहतर होती गई है. जल्दी ही नंबूदिरिपाद के रिटायर होने और अगले वर्ष जनवरी में पार्टी का नया महासचिव चुने जाने के मद्देनजर जानकार लोग बसु का कद बढ़ने की संभावनाएं मानने लगे हैं. जब तक वे पश्चिम बंगाल में अपनी साख बनाए रखेंगे, उनकी राय का वजन रहेगा.

राष्ट्रीय स्तर पर इंका के प्रति माकपा की नरमी ने अभी वाम मोर्चा की जड़ें नहीं खोदी हैं और न ही राष्ट्रीय मोर्चा के साथ उसके संबंध बिगड़े हैं. निकट भविष्य में

ज्योति बसु

'हमें लोगों की चिंता है, न कि सरकार की'

ज्योति बसु 78 वर्ष की उम्र से कम-से-कम दस वर्ष कम लगते हैं. काया तनी हुई, झुर्रियों का नामोनिशान नहीं, चुस्त-दुरुस्त कार्यशैली, कसी हुई भाषा. पूंजीवादियों के साथ अच्छे संबंध रखने वाले वामपंथी नेता की छवि के बावजूद स्पष्ट है कि पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री पूरी तरह से साम्यवादी विचारधारा में ही रचे-घुले हैं. पार्टी के सिद्धांतों के प्रति समर्पित, वे हमेशा सही बात कहने की कोशिश करते हैं. संपादक ***अरुण पुरी*** *ने माकपा के इस दिग्गज से कलकत्ता में राइटर्स बिल्डिंग में बातचीत की. उसी के अंश:*

● आर्थिक संकट से उबरने की कोशिशों के बारे में आप क्या सोचते हैं?

इस अल्पमत सरकार की नीतियों के बारे में हमें कुछ नहीं पता. हमारा रुख, और उम्मीद है कि राष्ट्रीय मोर्चा भी हमसे सहमत होगा, यही है कि हममें से कोई भी अभी चुनाव नहीं चाहता. इसलिए विभिन्न मुद्दों पर विपक्ष का समर्थन हासिल करने की जिम्मेदारी अल्पमत सरकार की है. हम इसे एक मौका देना चाहते हैं. हम देखना चाहते हैं कि ये क्या करते हैं. लिहाजा इस बात पर विचार करना और भी जरूरी है कि यह सरकार हमारी अंदरूनी और बाहरी दोनों समस्याओं को सुलझाने के प्रति क्या नजरिया रखती है. मसलन, जब अल्पमत सरकार आर्थिक मोर्चे पर टुकड़ा-टुकड़ा करके नीतियों की घोषणा करने लगी, तो इस तथ्य के मद्देनजर कि हमारी हालत अच्छी नहीं है, हमने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की शर्तों को साफ तौर पर जानना चाहा. शर्तें जानना हमारे लिए निहायत जरूरी है—किस हद तक ये फायदेमंद हैं और कौन सी भारत के लोगों के लिए नुकसानदेह हैं. लेकिन दुर्भाग्यवश सब कुछ गुप्त रखा गया है.

तीबल दास

● क्या इसका मतलब यह है कि आपसे राय नहीं ली गई?

वित्तमंत्री ने मुझसे बात की थी. पर विचार-विमर्श जैसा कुछ नहीं हुआ.

● क्या इंका यह जानते हुए कि आप सरकार नहीं गिरा सकते, स्थिति का अनुचित लाभ उठा रही है?

मैं ऐसा नहीं कहूंगा. लेकिन हमने स्पष्ट रूप से कह दिया है कि वे हमें सेंतमेंत में नहीं ले सकते. अगर वे हमें अंधेरे में रखे रहेंगे तो हमें अपने रुख पर फिर से विचार करना होगा.

● क्या आपको लगता है कि हालात के मुताबिक रुपए का अवमूल्यन करना लाजिमी था?

ऐसे कदम अनिवार्य थे या नहीं, हमें नहीं मालूम. पर ऐसा दो बार क्यों किया गया? आर्थिक मुद्दों पर हमने सरकार को कई सुझाव दिए—कि आप्रवासी भारतीयों को आकर्षित किया जाना चाहिए. उनके पास भारत में लगाने के लिए करोड़ों रुपए हैं. हमने रकम जुटाने के लिए घरेलू संसाधन खंगालने का भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद पुष्करणा

माकपा की बैठक: मुश्किल की घड़ी

इसकी कोई उम्मीद भी नहीं दिखती. भाकपा भी इंका की परखी हुई सहयोगी रही है और वर्तमान सरकार को गिराने में उसकी बड़ी दिलचस्पी नहीं है. राष्ट्रीय मोर्चे की भी इस बारे में यही स्थिति है.

वैसे, इंका के प्रति नरमी बरतने का वामपंथियों का जाहिरा तर्क कुछ और है. उनके अनुसार देश अभी-अभी एक त्रासद चुनावी दौर से गुजरा है और वह दूसरे आम चुनाव का जोखिम नहीं उठा सकता,

सुझाव दिया. लेकिन सरकार इन पर जरा भी गौर नहीं कर रही. उसकी नजर केवल तात्कालिक उपायों पर है.

● ***विदेशी निवेश आप्रवासी भारतीयों से मिले या विदेशी कंपनियों से इससे क्या फर्क पड़ता है?***

पहली बात तो यह कि हमें स्रोत तलाशने होंगे. कुछ सीमाएं जरूर हैं पर विदेशी निवेश पर कोई एक नहीं है. पर हमें पता होना चाहिए कि आयात-निर्यात की नीतियां क्या हैं और क्या हम कुछ संसाधन बचाए रख सकते हैं.

● ***सार्वजनिक उपक्रमों के निजीकरण के बारे में आपका क्या खयाल है?***

मैं अभी उस नीति की प्रतीक्षा कर रहा हूं. लेकिन सिर्फ उस एक नीति से समस्या का समाधान नहीं हो सकता. ज्यादातर

> **"बाजार व्यवस्था यहां कारगर नहीं होगी. सबसे पहले लोगों के हितों की रक्षा जरूरी है. लेकिन इस समय अनुदान आश्रित अर्थव्यवस्था को त्याग देने पर लोग भूखों मर जाएंगे"**

प्रमुख उद्योग निजी क्षेत्र में ही हैं. इसलिए जब भी निजीकरण का सवाल उठता है, मैं नहीं समझ पाता कि ऐसे किसी कदम से हमें किस तरह सहायता मिल पाएगी. निजी क्षेत्र की 2.5 लाख से भी अधिक इकाइयां खस्ताहाल हैं. कुछ बंद हो गई हैं और कुछ बंद होने की कगार पर हैं लेकिन कई ऐसी भी हैं जो बढ़िया ढंग से चल रही हैं. इसलिए यह तो कई तरह की बातों पर निर्भर करता है.

● ***क्या निजी क्षेत्र की किसी खस्ताहाल इकाई को बंद करने की इजाजत दी जानी चाहिए? वैसे प्रक्रिया तो यह है कि अगर किसी निजी इकाई की हालत खराब हो जाती है तो सरकार उसे अपने हाथ में ले लेती है.***

नहीं. सरकार ने बहुत कम को अपने हाथ में लिया है. लेकिन मुझे यकीन नहीं कि ये सभी 2.5 लाख बीमार इकाइयां फिर से पटरी पर लाकर उनसे लाभ कमाया जा सकता है. अगर उन्हें बंद करना ही पड़े तो मजदूरों को उनका बकाया मिलना ही चाहिए. इन इकाइयों को फिर से चालू करने की कोशिश भी की जानी चाहिए.

● ***आर्थिक व्यवस्था अगर बाजार आधारित हो तो क्या किसी उद्योग को जरूरत पड़ने पर बंद करने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए?***

लेकिन यह किसका कसूर है? प्रबंधकों ने बैंकों से पैसा लिया पर अपनी इकाई चला न सके. इसमें प्रबंधकों का नुकसान नहीं होता. वे अपनी पूंजी निकालकर चलते बनते हैं और मजदूरों को अपनी कमाई भी नहीं मिलती.

● ***फिर आप आर्थिक ढांचे को कैसे पुनर्गठित करेंगे?***

कुछ उद्योगों की बदहाली ही एकमात्र समस्या नहीं है. सबसे अहम सवाल यह है कि बाजार ही नदारद है. उद्योगों की खराब स्थिति तो सिक्के का एक पहलू है. भूमि सुधारों पर कोई काम क्यों नहीं किया गया? इससे हमारी अर्थव्यवस्था को ठोस आधार मिलता.

● ***लेकिन उदारीकरण, कंपनियों को कामगार छंटनी की इजाजत देने की नीति तो आपको सख्त नापसंद है?***

उदारीकरण किसलिए? सरकार को पहले अपनी प्रक्रियाओं को उदार बनाना चाहिए. एक लाइसेंस देने में दो वर्ष क्यों लग जाते हैं? सबसे पहले नौकरशाही की प्रक्रियाएं आसान करनी होंगी. वे इस दिशा में पहल क्यों नहीं करते?

● ***क्या आपको लगता है कि सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप में हो रहे बदलाव का हम पर कोई असर पड़ेगा?***

नहीं, नहीं, मुझे नहीं पता वहां क्या हुआ है. इसलिए मुझसे मत पूछिए.

● ***क्या आपको नहीं लगता कि सरकार अर्थव्यवस्था में जरूरत से कुछ ज्यादा ही दखल दे रही है?***

लाइसेंस आदि के बारे में तो ऐसा ही है. प्रक्रिया को और अधिक उदार बनाया जाना चाहिए. मुख्य मुद्दा यह है कि किस सीमा तक विदेशी निवेश की अनुमति दी जाएगी. और फिर उस आत्मनिर्भरता का क्या होगा, जिसका राग हम अलापते रहे हैं? क्या हम बाहरी दुनिया पर ही आश्रित होते जाएंगे?

● ***हम पीछे छूट सकते हैं.***

हां, हम पिछड़ सकते हैं. देखिए, कुछ लोग केवल उद्योगों को लेकर चिंतित हैं. पर खेती का क्या हो रहा है? ग्रामीणों का क्या होगा? अब चीजों के दाम तो बढ़ेंगे ही. इस व्यवस्था में इसे रोका नहीं जा सकता. इसकी कोई दवा नहीं है. इसीलिए हम कहते हैं कि बाजार व्यवस्था यहां कारगर नहीं होगी. सबसे पहले लोगों के हितों की रक्षा जरूरी है. लेकिन इस समय अगर अनुदान आश्रित अर्थव्यवस्था को तिलांजलि दे दी जाए तो लोग भूखों मर जाएंगे. उनके पास खरीदने की सामर्थ्य नहीं है. ऐसे में वे क्या करेंगे? कुछ सब्सिडी तो जरूरी है पर पात्र का चयन सोच-विचारकर करना चाहिए.

● ***लगता है कि आप बड़ी असुविधाजनक स्थिति में हैं और वह सब कर रहे हैं, जो करना नहीं चाहते.***

हां. सवाल मेरी पसंद या नापसंद का नहीं है. पर मैं हालात से मुकरना भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खासकर ऐसे समय जब आम आदमी को स्थायित्व के साथ-साथ तीव्र आर्थिक समस्याओं के समाधान की तलाश है. वामपंथियों का कहना है कि गठबंधन विपक्ष में बैठने के जनादेश का आदर करेगा. इसी बीच, वे कश्मीर और पंजाब जैसी राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने की दिशा में उठने वाले हर सकारात्मक सरकारी कदम का समर्थन करेंगे.

लेकिन यह सुखकर रिश्ता नई आर्थिक, औद्योगिक और श्रमिक नीति की बलिवेदी पर भी चढ़ सकता है. एक पार्टी प्रवक्ता के शब्दों में, "माकपा के लिए तो आर्थिक नीति वह महत्वपूर्ण मुद्दा है जो सरकार के प्रति पार्टी के रुख को तय करेगा. इस मसले पर इंका के साथ आइंदा उसकी कड़ी भिड़ंत हो सकती है."

इस बीच, ट्रेड यूनियनों और दूसरे वामपंथी संगठनों को उन नीतियों का विरोध करने के लिए कहा गया है जो आर्थिक कठिनाई पैदा कर सकती हों. लेकिन इस बात में संदेह है कि ऐसे विरोध प्रदर्शनों से वामपंथियों और इंका के बीच कोई बड़ा टकराव हो सकेगा.

मैबल दास

चाहता. मैं नहीं चाहता कि अमेरिका के वित्तमंत्री हमारी देखभाल करें. हमें पहले खुद ही हर कोशिश करनी चाहिए और तब भी अगर सहायता लेनी आवश्यक हो, तो बाहर से लेनी चाहिए. पश्चिम बंगाल में कई बड़ी अंतरराष्ट्रीय कंपनियां काम कर रही हैं. हमें कोई दिक्कत नहीं होती.

● ***फिर आप सीमा रेखा कहां रखेंगे? अगर इंका कुछ करना चाहे, मसलन कंपनियों को कामगार छंटनी की इजाजत देना, जो आपको स्वीकार नहीं?***

हम उसका समर्थन नहीं करते. अगर नीतियों का अंजाम बंद और बेरोजगारी हों, तो हम अपने सभी कार्यकर्ताओं को प्रधानमंत्री के पास भेज देंगे.

● ***फिर तो सरकार गिर जाएगी***

हां हमें लोगों की चिंता है, न कि इंका सरकार की. अगर हम सरकार से असहमत हुए, तो जनता के सामने जाएंगे. भले पांच चुनाव हों. लोग अनुभवों से सीखेंगे.

● ***क्या इंका ने आपसे लंबित परियोजनाओं को पूरा करने का कोई वादा किया है?***

नहीं, हमने इस मसले पर कोई बात नहीं की. जो परियोजनाएं स्वीकृत हो चुकी थीं, उन पर काम बढ़ेगा ही.

● ***लगता है कि आपकी पार्टी और राष्ट्रीय मोर्चा के बीच मतभेद होने लगे हैं? आपका इस बारे में क्या खयाल है?***

हमने उनसे कह दिया है कि आप अपनी पार्टी खड़ी नहीं कर सके.

● ***माना जाता है कि वामपंथी पार्टियां राष्ट्रीय मोर्चा के बजाए इंका को समर्थन देने की ज्यादा इच्छुक हैं.***

"हमने स्पष्ट रूप से कह दिया कि यदि इंका ने हमें आर्थिक स्थिति के मामले में अंधेरे में रखने की कोशिश की तो हम अपने रुख पर फिर से विचार कर सकते हैं"

मुझे नहीं मालूम कि यह किसकी समझ है. कम से कम हम ऐसा नहीं समझते. हम इंका और भाजपा दोनों से लड़ते आए हैं. फर्क केवल इतना है कि चूंकि कोई भी चुनाव नहीं चाहता, इसलिए हम चुप हैं.

● ***इंका के प्रति रुख के सवाल पर क्या आपमें और ई.एम.एस. नंबूदिरिपाद में मतभेद हैं?***

मतभेद कतई नहीं है. हमारी लोकतांत्रिक पार्टी है. लेकिन एक बार फैसला हो जाने के बाद वह हरेक को मान्य होता है.

● ***लेकिन जब ईएमएस ने नरसिंह राव को पत्र लिखा कि भाजपा को निष्प्रभावी करने के लिए इंका को वामपंथी दलों के प्रति अपना नजरिया बदलना चाहिए तो आपने उनके पत्र को बेवक्त का बताया?***

ईएमएस हमारे प्रति इंका का दृष्टिकोण जानना चाहते थे. वह मौका चुनाव का था. मैंने बाद में ईएमएस से बात की. दरअसल (पत्र लिखते वक्त) उनके दिमाग में केरल की स्थिति थी जहां इंका ने भाजपा से एक किस्म का चुनावी तालमेल किया था.

● ***एक ओर तो आप संयुक्त सांप्रदायिकता विरोधी मोर्चा चाहते हैं और दूसरी ओर आर्थिक नीतियों से सहमत नहीं हैं. इन दोनों के बीच तालमेल कैसे स्थापित करेंगे?***

मेरे खयाल से दोनों ही जरूरी हैं. हमारा तो कहना है कि अगर सरकार बहुमत में हो, तब भी धर्मनिरपेक्ष विपक्ष की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए.

● ***माकपा यहां बहुत सफल रही है पर पार्टी पश्चिम बंगाल और केरल से बाहर क्यों नहीं निकल पाई?***

यह लंबी कहानी है. लेकिन यह सच है कि हम कुछ क्षेत्रों तक सीमित हैं.

● ***यह सरकार कब तक चलेगी?***

मैंने बातचीत के शुरू में ही आपसे कह दिया था कि टिके रहने की जिम्मेदारी पूरी तरह से इस सरकार की होगी. उन्हें यह भी याद रखना होगा कि जहां तक धर्मनिरपेक्ष शक्तियों का सवाल है, बड़ी ताकतें भी मायने रखती हैं. और वह पार्टी अगले चुनाव की प्रतीक्षा में हैं. पर वह भारत का दुर्भाग्य ही होगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

700 पन्नों में समाई एक पूरी दुनिया

'मनोरमा इयर बुक 1991' नवीनतम व रोचक जानकारी का संक्षिप्त कोश है. ज्ञान के विभिन्न पहलुओं को इस हिन्दी कोश के लगभग 700 पन्नों में पिरोया गया है. और इसे आप तक लाए हैं लोकप्रिय मलयाला मनोरमा के प्रकाशक.

ज्ञान-विज्ञान, कला-तकनीक, शिक्षा-प्रशिक्षा, भूगोल-इतिहास, खेलकूद, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र व राजनीति की हर महत्वपूर्ण, जानकारी 'मनोरमा इयर बुक 1991' में मौजूद है. साथ ही भारत और विश्व संबंधी नई-से-नई लाभदायी सूचना.

'मनोरमा इयर बुक 1991' विद्यार्थियों और प्रश्नोत्तरी के प्रतिस्पर्धियों के लिए अमूल्य ज्ञान – कोश का काम करेगा.

मूल्य सिर्फ 30/-रु. डाक से मंगवाने पर 5/- रु. डाक खर्च अलग भेजें.

अपने नजदीकी बुक-स्टाल से आज ही अपनी प्रति प्राप्त करें. या इस पते पर लिखें.

Estd. 1888

दि सर्क्यूलेशन डिविज़न मैनेजर
(प्रसार व्यवस्थापक)
मनोरमा इयर बुक 1991 पो.बॉ.नं. 26,
कोट्टयम - ६८६ ००१, केरल.

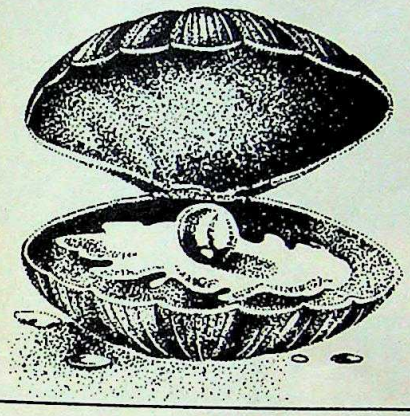

मनोरमा इयर बुक 1991

आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का अमूल्य कोश.

Tramcoir

डोर मैट्स

ट्रैमकॉयर उपयोग कीजिये. मिट्टी-धूल पोंछ डालिये. रबर के सहारे वाले, ज्यादा लचीले डोरमैट्स. 60 से भी ज्यादा आकर्षक डिज़ाइनों और रंगों में उपलब्ध. आपकी हर सजावट के अनुरूप इनके रंग-रूप.

साथ ही * मैटिंग रोल्स. * कार मैट्स.
कर्ल-ऑन के सारे डीलरों के यहाँ उपलब्ध.

Karnataka Consumer Products Ltd.

Offices & Showrooms: NEW DELHI: No. 3/3, Desh Bandhu Gupta Road, Pahar Ganj, Ph: 772019; 1764, Partap Street, Chuna Mandi, Pahar Ganj, Ph: 732133; **KANPUR:** 109/375, R.K. Nagar, G.T. Road, Ph: 24721I; **FARIDABAD:** Sector 16-A, No. 375; **BHOPAL:** 26, Mangal Sadan, Anekant Nagar, Jahangirabad, Ph: 67874; **RAIPUR:** 88, New Textile Market, Panderi, Ph: 26939; **PATNA:** Road No. 6-A, Dayal Mansion, Rajendra Nagar, Near Rajendra Nagar Hospital, Ph: 57911, **CHANDIGARH:** (C&F) M/s. Garg Enterprises, SCO, 3028, Sector 22-D, Ph: 29203/44424 (P. P.).

प्रतिनिधि रहित क्षेत्रों के लिये डीलरशिप की पूछताछ का स्वागत है।

MASS/TD/91

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा

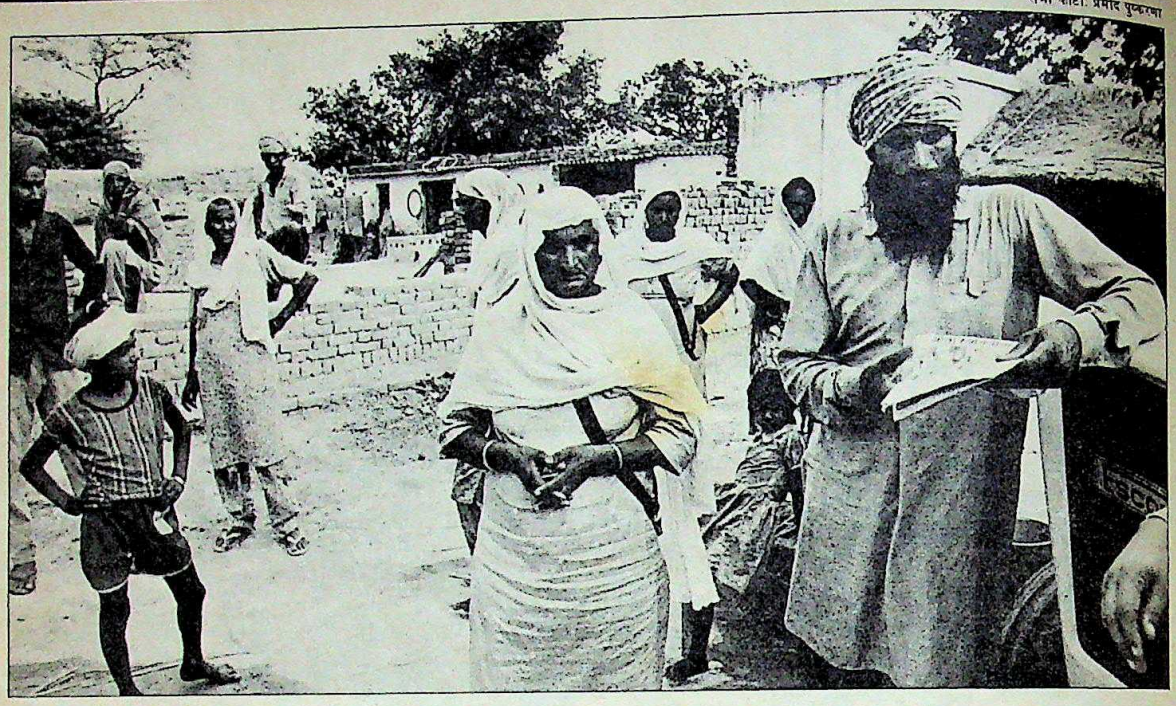

उत्तर प्रदेश

भारी मुठभेड़ का स्वांग

पुलिस द्वारा मारे गए लोगों में उग्रवादी तो थे पर मुठभेड़ फर्जी

पिछले पखवाड़े पीलीभीत पुलिस के हाथों 10 सिखों की हत्या से उत्तर प्रदेश में आतंकवाद के साथ पहली बड़ी 'मुठभेड़' महज स्वांग बनकर रह गई. मारे गए अधिकांश लोगों की पहचान बाद में हालांकि उग्रवादी के रूप में कर ली गई मगर जिस अपराधपूर्ण ढंग से उन्हें भूना गया, उससे राज्य में गंभीर नतीजे ही निकलने की आशंका है. इसके अशुभ संकेत पीलीभीत हत्याकांड के 24 घंटों के अंदर मिल भी गए जब उग्रवादियों ने पड़ोस के ही शाहजहांपुर जिले के बांदा कस्बे में चार पुलिसकर्मियों को मौत के घाट उतार दिया.

लेकिन पुलिस कार्रवाई का सार्वजनिक विरोध होने से मुख्यमंत्री कल्याण सिंह पर घटना की न्यायिक जांच कराने और पीलीभीत के पुलिस अधीक्षक आर.डी. त्रिपाठी का तबादला करने का दबाव बढ़ा. राज्य के अखबारों में इस घटना का विवरण छपने पर लोगों को दाल में काला दिखाई देने लगा. जाति और समुदाय से ऊपर उठकर स्थानीय लोगों ने इस कार्रवाई की निंदा की. यहां तक कि पीलीभीत गुरद्वारे में आयोजित विरोध सभा में भारी संख्या में लोग मौजूद थे. उधर, संसद में हंगामा होने के साथ-साथ दिल्ली में विरोध प्रदर्शन भी हुए. मुठभेड़ों को फर्जी बताने और घटना की जांच की मांग करने वालों में पीलीभीत से भाजपा विधायक वी.के. गुप्ता भी शामिल हो गए. राज्य की भाजपा सरकार के लिए यह उलझन की बात थी. जांच का आदेश देने और त्रिपाठी का तबादला करने के सिवा उसके पास कोई चारा नहीं था. अपनी अग्निपरीक्षा के बारे में त्रिपाठी ने कहा, "मेरी स्थिति मंझधार में थक चुके तैराक जैसी है. एक साथ ही मुझे आतंकवादियों के हमलों और जन विरोध का सामना करना पड़ रहा है." पर स्थानीय पुलिस में इस तबादले को लेकर विद्रोह की स्थिति पैदा हो गई जिसे किसी तरह समझा-बुझाकर शांत किया गया.

तीन अलग-अलग 'मुठभेड़ों' में मारे गए 10 लोगों में से दो—खालिस्तान लिबरेशन आर्मी का 'लेफ्टिनेंट जनरल' बलजीत सिंह और खालिस्तान कमांडो फोर्स का दिग्गज जसवंत सिंह 'फौजी'—हालांकि घोषित उग्रवादी हैं पर दूसरे लोगों की पहचान अभी अनिश्चित है. स्थानीय पुलिस का दावा है कि इनमें छह लोग पंजाब के गुरदासपुर जिले के रहने वाले उग्रवादी थे जिनमें तीन एक ही गांव रोहेलखेड़ा के निवासी थे. गुरदासपुर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एस.के. गोयल के मुताबिक मारे गए आठ लोग उनके इलाके में हुए अपराध के मामलों में फरार हैं. ये लोग

चार्ट: बी.के. शर्मा

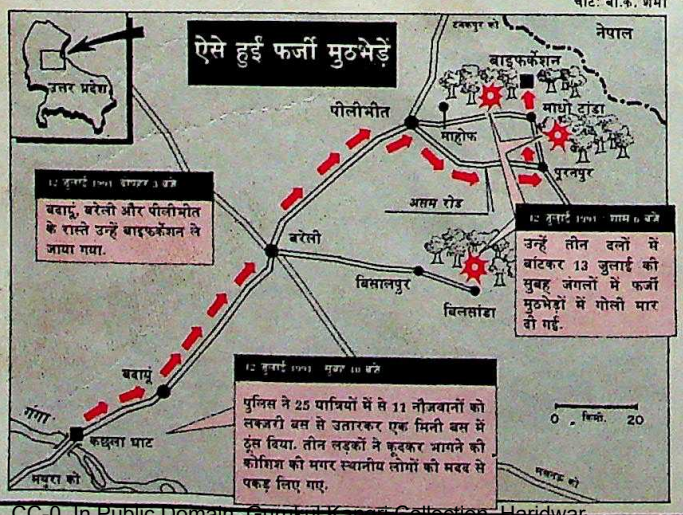

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

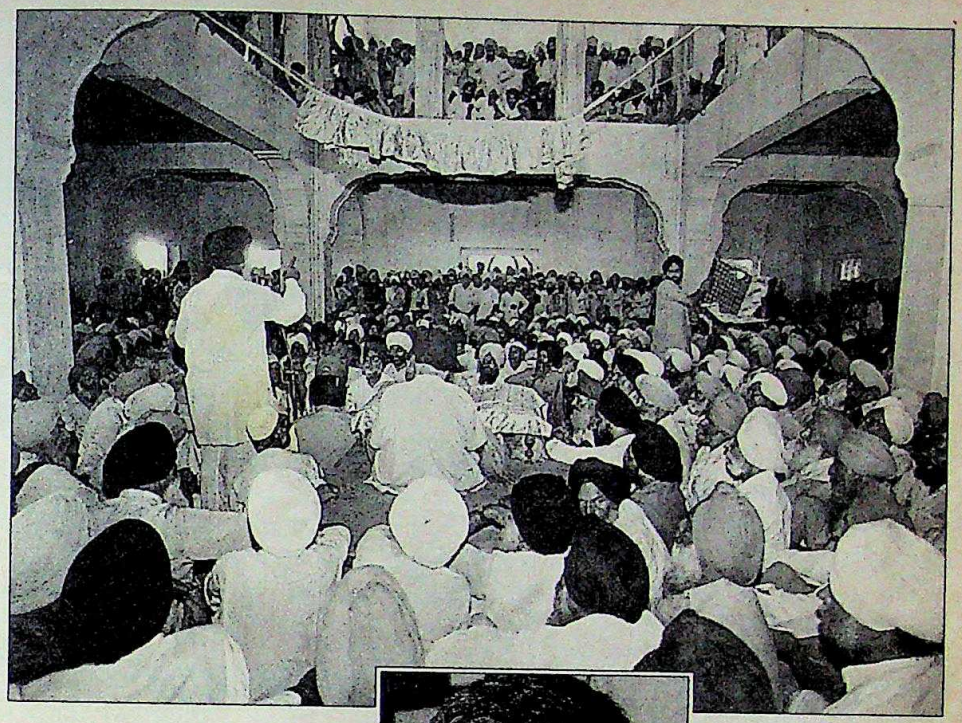

(बाएं) मृतक नरिंदर सिंह की मां (बीच में); पीलीभीत गुरद्वारे में सभा; और (इनसेट) त्रिपाठी: दोतरफा हमला

पिछले साल दिसंबर में पंजाब के सीमावर्ती इलाकों में सेना की टुकड़ियां बुलाए जाने के बाद उत्तर प्रदेश भाग गए थे. पंजाब के कुछ उग्रवादी संगठनों ने ज्यादातर मृतकों को अपना सदस्य बताया भी है.

लेकिन पीलीभीत के दो लड़कों की हत्या की कोई वजह नहीं दिखती. वे घोषित आतंकवादी नहीं थे. स्थानीय लोग भी उनके बेकसूर होने की जमानत देते हैं. खासकर जागट गांव के 17 वर्षीय लखविंदर सिंह का मामला तो और भी उलझा हुआ है. पुलिस के अनुसार उसके खिलाफ पांच मामले दर्ज हैं. पर यह दावा इस तथ्य से मेल नहीं खाता कि तीर्थयात्रा पर जाने से पहले उसने अपना अधिकांश समय पीलीभीत के करीब अमरिया में पारिवारिक मिल्कियत वाले अपने मेडिकल स्टोर में गुजारा. मृतक के भाई बलकार सिंह पूछते हैं, "अगर उसकी तलाश थी तो पुलिस ने उसे दुकान से ही गिरफ्तार क्यों नहीं कर लिया?" दरअसल, पुलिस ने पहले उसे पंजाब का तरसेम सिंह बताया था.

उपलब्ध सबूत बताते हैं कि मृतक 29 जून को तराई से महाराष्ट्र के नांदेड़ में गुरद्वारा हजूर साहब की तीर्थयात्रा पर गए एक दल में शामिल थे. यात्रा के लिए तीन लोगों ने हिंदुस्तान ट्रेवल्स के मालिक अमित कुमार से एक लक्जरी कोच (यूपी-26-0245) तीस हजार रु. किराए पर लिया था. महिलाओं और बच्चों समेत कुछ स्थानीय लोगों ने पीलीभीत के निकट प्रसिद्ध गुरद्वारा नानकमता में जब मुफ्त तीर्थयात्रा की बात सुनी तो वे भी जाने के लिए तैयार हो गए. इस दल को 12 जुलाई को लौट आना था. इस बीच, सामान्य कामकाज के दौरान पुलिस को यह सूचना मिली कि कुछ उग्रवादी भी बस में गए हैं. पुलिस हरकत में आ गई. 11 जुलाई को एक स्थानीय दैनिक में छपी इस खबर के बाद भी पुलिस नांदेड़ से उग्रवादियों के लौटने का इंतजार कर रही है, वह अपने मंसूबों से पीछे नहीं हटी.

यात्रियों के मुताबिक, 12 जुलाई को दो अतिरिक्त पुलिस अधीक्षकों की अगुआई में पीलीभीत से गए एक पुलिस दल ने इस बस को बदायूं जिले के कछला घाट में रोक लिया. तत्काल 25 यात्रियों में से 11 को नीचे उतारकर निकट खड़ी मिनी बस में ठूंस दिया गया. कुछ पुलिसवाले लक्जरी बस में चढ़ गए और आधा दर्जन गाड़ियों का यह काफिला आगे चल पड़ा. कुछ देर बाद तीन लड़के मिनी बस से कूदकर खेतों में भाग गए. पुलिस ने उन्हें रोकने के लिए हवा में गोलियां चलाईं. एक ग्राम प्रधान गौरीशंकर समेत सिरनगर और जुनैया गांवों के लोगों ने इन तीनों को पकड़ने में पुलिस की सहायता की. इसमें एक पुलिसवाला घायल भी हुआ.

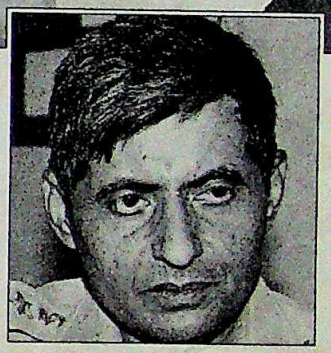

चार घंटे की यात्रा के बाद यह काफिला पीलीभीत पहुंचा, जहां से 'असम' रोड होते हुए वह जंगल की ओर बढ़ गया. शाम को करीब छह बजे ये लोग 'बाइफर्केशन' नामक जगह पर पहुंचे. यहां से दो बुजुर्ग, नौ महिलाओं और तीन बच्चों से भरी लक्जरी बस पीलीभीत गुरद्वारे में वापस ले जाई गई जबकि नौजवानों वाली गाड़ियां घने जंगल की ओर बढ़ गईं. इस ब्यौरे की पुष्टि बस में मौजूद लाहौरगंज गांव के पाल सिंह और जोगिंदर कौर ने की. जोगिंदर कौर का बेटा नरिंदर सिंह भी 10 मृत 'उग्रवादियों' में था. रात इन लोगों ने गुरद्वारे में काटी. हिंदुस्तान ट्रेवल्स के अमित कुमार के मुताबिक बस ड्राइवर मुशर्रफ खां ने 13 जुलाई को आकर यह घटना बताई और तत्काल छुट्टी पर चला गया.

बताया जाता है कि घने जंगल में जाकर पुलिस ने इन नौजवानों को तीन अलग-अलग दलों में बांट दिया और अगली सुबह उन्हें गोली मार दी. पर पुलिस का दावा है कि उसने उग्रवादियों के तीन गिरोहों को माहोफ, पतभोजी और फागुनी के जंगलों में मुठभेड़ों के दौरान मार गिराया. हालांकि त्रिपाठी ने एक दिन पहले एक स्थानीय पत्रकार को हत्याओं की खबर दी थी पर वे कछला घाट में यात्रियों को बस से उतारने से इनकार करते हैं. बस से उतारे गए यात्री ही मारे गए कथित आतंकवादी हैं, यह पूछे जाने पर उन्होंने कहा, "यह आतंकवादियों और उन्हें शह देने वालों का दुष्प्रचार है."

लेकिन पीलीभीत से करीब 30 किलोमीटर दूर माधवापुर गांव के स्वर्ण सिंह का कहना है कि घटना के दिन सुबह पांच बजे उन्होंने कुछ पुलिसवालों को एक गाड़ी से उतरकर फागुनी के घने जंगल की ओर जाते देखा था. कुछ ही देर बाद उन्होंने और उनके परिवार ने 'बचाओ-बचाओ' की पुकार के बाद गोलियां चलने की आवाज सुनी. फर्जी मुठभेड़ की गवाही कुछ स्थानीय गैर-सिख भी देते हैं. डेरा मंदरियान गांव के राम कुमार का कहना है कि 13 जुलाई की अलस्सुबह उन्होंने माहोफ जंगल में राइफल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से गोलियां चलने की आवाज सुनी. बाद में उन्हें और तीन दूसरे लोगों को कुछ डाकुओं को पहचानने के लिए नियोरिया पुलिस थाने में बुलाया गया. राम कुमार कहते हैं, "हमें कुछ कागजात पर दस्तखत करने को कहा गया जो हमें पढ़कर नहीं सुनाए गए. हमें उस मुठभेड़ का गवाह बनाया गया हो सकता है, जो हमने नहीं देखी."

इसके अलावा फर्जी मुठभेड़ एक और तथ्य से भी साबित होती है. कथित मुठभेड़ के दौरान बरामद किए गए हथियारों में से एक हथियार ऐसा है जिसे कुछ दिन पहले पुलिस एक स्थानीय गांववासी से ले गई थी. और फिर, अपनी शुरुआती विज्ञप्ति में पुलिस ने मारे गए 10 नौजवानों को पंजाब का रहने वाला बताया था, हालांकि उसे पता था कि इनमें दो पीलीभीत के निवासी हैं. उनके परिवार 40 साल पहले उत्तर प्रदेश में आ बसे थे. पुलिस ने उनके शव परिवारवालों को नहीं सौंपे. नरिंदर सिंह की मां कहती हैं, "एक पुलिस अफसर ने हालांकि मुझे और मेरे बेटे को कछला घाट में ही पहचान लिया था लेकिन उसका शव हमारे हवाले नहीं किया गया." दरअसल, सारे शव 13 जुलाई की रात को पीलीभीत अस्पताल में पोस्टमार्टम के बाद जिला मजिस्ट्रेट की विशेष अनुमति से गुपचुप तरीके से रातोरात जलवा दिए गए थे.

इस घटना से संबंधित एक गुत्थी और भी है. नवादिया बांकी गांव के तलविंदर सिंह बिल्लू को हालांकि तीर्थयात्रा से लौटी बस से उतारा गया था मगर उसका नाम मृतकों की सूची में नहीं है. उसका आपराधिक इतिहास भी नहीं है. इससे संदेह होता है कि वह अभी पुलिस हिरासत में है. मगर त्रिपाठी कहते हैं, "बरेली जेल में हमने 53 आरोपियों को बंद किया हुआ है पर पुलिस हिरासत में एक भी व्यक्ति नहीं है."

भाजपा और इंका के जांच दलों की ओर से इस घटना को फर्जी मुठभेड़ बताए जाने तथा राज्य सरकार के न्यायिक जांच के फैसले से तराई क्षेत्र में उग्रवादियों के खिलाफ चल रहे अभियान को निश्चित ही धक्का पहुंचेगा. लेकिन ऐसी घटनाओं से स्थानीय सिखों की हमदर्दी उग्रवादियों की तरफ मुड़ जाने से स्थिति बिगड़ सकती है. इसलिए राज्य पुलिस के नए प्रमुख प्रकाश सिंह, जो बीएसएफ में सेवा के दौरान पंजाब में रह चुके हैं, अगर उग्रवाद से निबटने में पुलिस की कमर कसते हैं तो उन्हें पहले अपने बल की साख बहाल करने के बारे में सोचना होगा.

—कंवर संधू, पीलीभीत में

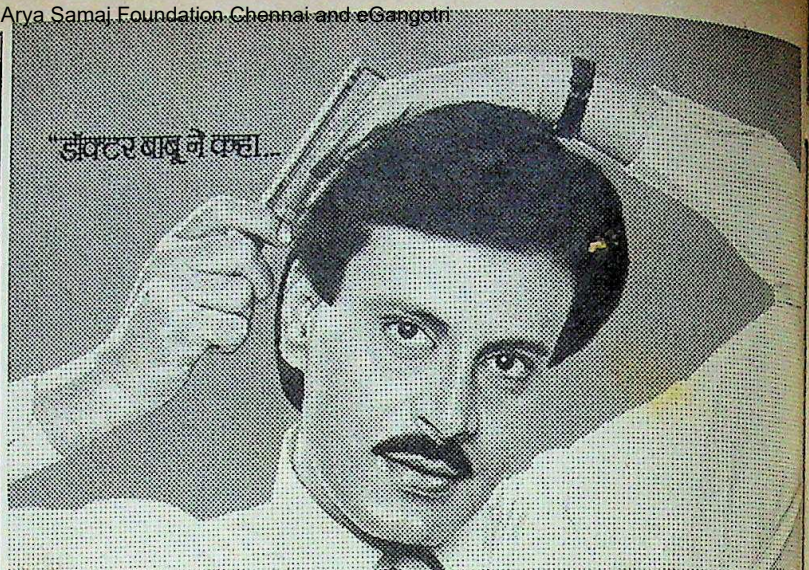

बालों का झड़ना रोकने और रूसी को खत्म करने के लिए और कुछ इस्तेमाल न कर केवल केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र इस्तेमाल कीजिए।

इस्तेमाल करके देखा है, सचमुच उपकारी है।"

केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र रोज सुबह स्नान से एक घंटा आगे और रात में सोने से पहले पूरे माथे पर अंगुली से अच्छी तरह लगाइये। बाल सुन्दर और स्वस्थ रहेंगे।

केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र में है— ● केराटिन : बालों का मूल उपादान (१) ●बायोटिन : बालों का झड़ना रोकता है (२) ● पेन्थेनॉल : बालों के नष्ट टिसू में प्राण संचार करता है। (३) ● निकोटिनिक एसिड : औषधि को सोखने में मदद करता है (४) ● रेसॉर्सिनॉल : रूसी को खत्म करता है (५) ● हाइपेलकिल : रूसी के संक्रमण को रोकता है (५)

रेफरेन्स : (१) विन्डहॉल्ज़ एम मेर्क़ इन्डेक्स १० वां संस्करण पृ. ७६०, १९८३, (२) सेंटेल, ई ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक इण्डस्ट्री १२१, ३४, १९७७, (३) ड्रिस्कॉल, डब्लू. आर. ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक इण्डस्ट्री, ११६, ४२, १९७५, (४) क्रॉज़, जे.सी.एवं अन्यान्य, फार्म प्रिन्सिपल्स ऑफ मेडिकल प्रैक्टिस पृ० ९५६,१९६५, (५) वेड . ए मार्टिनडेल एक्सट्रा फर्माको पृ . ५०२,३२,१९८२

बालों का झड़ना रोकने और रूसी को खत्म करने के लिए एक प्रमाणित वैज्ञानिक तरीका।

Dey's®

दे'ज मेडिकल की संभाल, आपका भरोसा

* यह शृंगार सामग्री नहीं है।

TS McGann/DAMN/390/HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयोध्या

उत्साह या उन्माद

मंदिर निर्माण के लिए विश्व हिंदू परिषद का सरकार पर बढ़ता दबाव

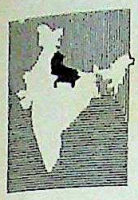

लगता है, अयोध्या का मसला उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार के गले की फांस बन जाएगा. राम जन्मभूमि के मुद्दे पर मुख्यमंत्री कल्याण सिंह की सरकार का रवैया दिनोदिन न सिर्फ कट्टर होता जा रहा है बल्कि वह विश्व हिंदू परिषद के आंचल से भी बंधती नजर आ रही है.

मंत्रिमंडल की पहली औपचारिक बैठक से पहले ही भाजपा सांसदों और विधायकों के राम जन्मभूमि मंदिर में पूजा करने से तो लोगों की भौंहे तनी ही लेकिन 20 जुलाई को विहिप के 'आशीर्वचन कार्यक्रम' में कल्याण सिंह के दलबल सहित शामिल होने से स्पष्ट हो गया कि भाजपा-विहिप को अपने प्रगाढ़ संबंधों के सार्वजनिक प्रकटीकरण से कोई उज्र नहीं.

विहिप के दो दिन के कार्यक्रम में यह तथ्य उभरा कि भाजपा राम जन्मभूमि का राग चुनाव अभियान के समय से भी ज्यादा ऊंचे सुर में अलापेगी. कार्यक्रम के अंत में विहिप ने सरकार से अनुरोध किया कि वह मंदिर निर्माण के मार्ग में खड़ी सभी बाधाओं को दूर कर दे ताकि निर्माण का काम शुरू हो सके. मुख्यमंत्री ने धार्मिक नेताओं को आश्वासन दिया कि उनकी सरकार विवादास्पद स्थल पर मंदिर निर्माण के लिए कटिबद्ध है.

कल्याण सिंह ने घोषणा की, "लोगों ने आखिरकार हमें इसी उद्देश्य के लिए तो जनादेश दिया है. हम उनके साथ विश्वासघात कैसे कर सकते हैं." विहिप के नेता अशोक सिंघल, भाजपा नेता विजयाराजे सिंधिया के अलावा साधु-संतों रामचंद्र परमहंस, नृत्यगोपाल दास और जगद्गुरु शंकराचार्य वासुदेवानंद ने 'आशीर्वचन' कार्यक्रम में भाग लिया. कार्यक्रम के बाद कार सेवा समिति की दो दिन की बैठक हुई जिसमें विचार-परामर्श कर नवंबर में किसी वक्त मंदिर निर्माण कार्य शुरू करने का फैसला लिया गया.

यह कार्यक्रम हिंदू कट्टरवाद और सरकार के बढ़ते गठजोड़ की दिलचस्प प्रस्तुति था. जब मुख्यमंत्री कल्याण सिंह और उनके मंत्रिमंडलीय सहयोगी आशीर्वाद लेने पहुंचे तो महंत रामचंद्र परमहंस सभा को संबोधित कर रहे थे. भाजपा नेताओं को ही लक्ष्य करते हुए उन्होंने कहा, "इसे आप भाजपा की विजय न समझे. यदि ऐसा होता तो पार्टी मध्य प्रदेश और राजस्थान में भी जीतती, जहां इसकी सरकारें हैं. यह तो बस राम जन्मभूमि की ही जीत है. इसके अलावा कुछ नहीं" और मंत्रीगण इस पर सिर हिलाते देखे गए.

मुख्यमंत्री ने मंदिर निर्माण की राह के सब रोड़े हटाने का वादा किया

दूसरी ओर राम कार सेवा समिति की बैठक में मुलायम सिंह सरकार के 'भ्रष्ट अधिकारियों' के खिलाफ कोई कार्रवाई न करने के लिए कल्याण सिंह की तीखी आलोचना की गई. महंत रामप्रकाश दास का कहना था, "वे सभी आज भी महत्वपूर्ण पदों पर जमे हुए हैं. कल्याण सिंह को उन्हें तुरंत निकाल बाहर करना चाहिए."

अयोध्या में हुई बैठक में कल्याण सिंह को दबाव पड़ने की संभावना जरूर नजर आई होगी क्योंकि इस कार्यक्रम से सिर्फ एक दिन पहले 19 जुलाई को अपने मंत्रिमंडल का विस्तार कर उन्हें फैजाबाद के अनिल तिवारी को इसमें शामिल करना पड़ा. मंत्रिमंडल विस्तार से एक ही दिन पहले राज्य सरकार ने 67 अधिकारियों के तबादले की घोषणा की. इनमें गृह सचिव ए.के. रस्तोगी समेत 18 सचिव थे. दूसरे अधिकारियों में पुलिस महानिदेशक वी.के. जैन और फैजाबाद के पूर्व आयुक्त मधुकर गुप्ता प्रमुख थे जो पिछले वर्ष अयोध्या में कार सेवकों की हत्या के बाद विहिप की हिटलिस्ट में थे. इन तबादलों पर परमहंस की प्रतिक्रिया थी, "अभी भी ऐसे कुछ लोग रह गए हैं जिन्हें न सिर्फ हटाया जाना चाहिए, बल्कि सजा भी दी जानी चाहिए."

सरकार इस तरह के दबावों के आगे हिम्मत हारती जा रही है. यह एक ऐसी सचाई है जिसे भाजपा नेता कभी मानने को तैयार नहीं होंगे. लेकिन तबादलों का समय अयोध्या और विवादास्पद स्थल पर उनकी सरकार के बार-बार के दौरों के औचित्य से उठे सवालों को ही दरकिनार कर देता है. कल्याण सिंह कहते हैं, "राम जन्मभूमि के दर्शनार्थ जाना तो व्यक्ति की निजी आस्था का प्रश्न है और हमारी आस्था को कोई कैसे चुनौती दे सकता है." लेकिन विहिप के यही तेवर रहे तो सरकार के इरादों पर उंगलियां तो उठेंगी ही.

— दिलीप अवस्थी

आर.के. गुप्ता

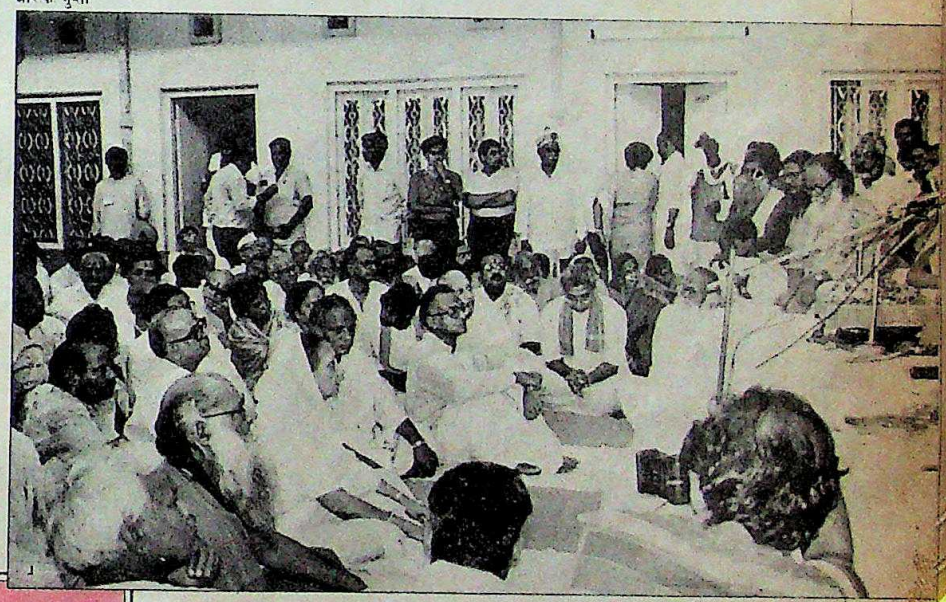

आशीर्वचन कार्यक्रम में कल्याण सिंह और मंत्री (नीचे बैठे हुए): विनयवत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल की धधकती आग की लपटों से भस्म हो रहे भू-क्षेत्रों में आज नयनाभिराम हरियाली

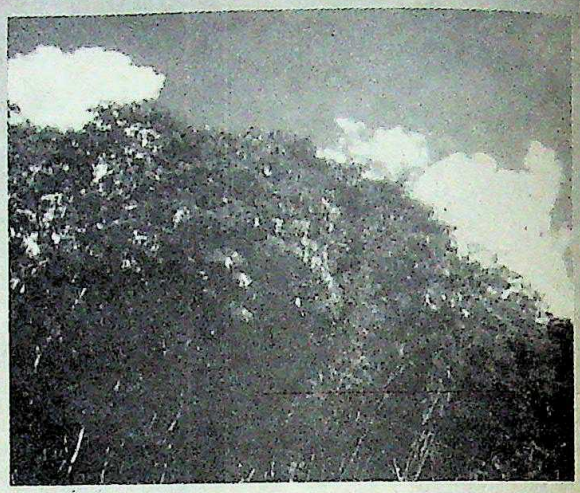

अग्नि के विरुद्ध युद्ध विजय का शंखनाद

जिस दिन 1971-72 में कोयला उद्यम के राष्ट्रीयकरण का प्रथम चरण क्रियान्वित हो रहा था, भारतीय कोयला क्षेत्र में प्राय: 80 स्थानों पर खदानों में लगी आग की लपटें इस अमूल्य राष्ट्रीय संपदा को निगलने का प्रयास कर रही थीं। सारे प्रयासों के बावजूद पूर्ववर्ती व्यवस्था इससे हार मान चुकी थी। प्राय: 70 मिलियन टन प्राइम कोकिंग कोल की रक्षा का विराट प्रश्न राष्ट्र के सामने चुनौती बन कर खड़ा था।

जलती आग से तपती हवा, पर्यावरण का विनाश, वैज्ञानिक खनन कार्य में बाधा तथा झरिया और रानीगंज जैसी अमूल्य भूमि के धधकने से स्थानीय लोगों का जीवन अंधकारमय हो सकता था।

कोल इण्डिया की समन्वित अग्नि परियोजनाओं को व्यापक स्तर पर क्रियान्वित किए जाने से भारतीय कोयला विशेषज्ञों का आत्मविश्वास बढ़ा। सम्पूर्ण विश्व ने देखा कि किस कुशलता से कोयला क्षेत्र की आग पर काबू पाया जाता है।

वहां अब करोड़ों की संख्या में हरे-भरे वृक्ष लहरा रहे हैं और मोहक सुगंध फैला रहे हैं। सब कुछ बदल रहा है और कल केवल सुनहरा नहीं होगा, बल्कि सफलता के मोतियों से जगमगाता हुआ होगा।

पर्यावरण और कोयले का अन्योन्याश्रित बैरभाव अब मिट रहा है। धुएं से रहित घरेलू ईंधन की क्रांति, जल प्रदूषण की रोकथाम, यंत्रों के शोर और बारूद के विस्फोट से होने वाले भूकंपन प्रदूषण को भी रोका जा रहा है। कोयले में मिले पत्थरों को अलग करने के लिए कोल हैंडलिंग यंत्र सक्रिय हैं। कोयले के गुण में वृद्धि हासिल करने के लिए परिष्करण संयंत्र लगाए जा रहे हैं।

भूमि का धसना रोकना ही पर्याप्त नहीं है, बालू का संभरण ही लक्ष्य नहीं है, बल्कि खनन कार्यों का असली लक्ष्य धरती का प्राकृतिक श्रृंगार लौटाना है। आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित पर्यावरण एवं प्राकृतिक श्रृंगारों से सुशोभित धरा का वरदान..... कोयला उद्यम का एक लक्ष्य.....

कोल इण्डिया लिमिटेड
(भारत सरकार का एक उपक्रम)

धरती को लौटाना वो, उससे लिया है जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपाल मिश्र

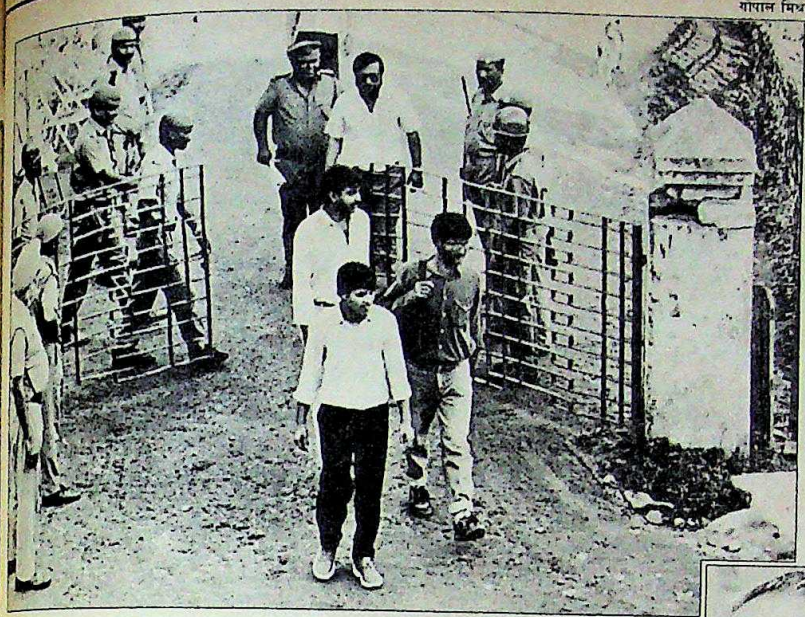

उल्फा उग्रवादियों की रिहाई (बाएं); और सैकिया: उलटा पड़ा दांव

असम

महंगी माफी

उल्फा झुकने को तैयार नहीं

मुख्यमंत्री हितेश्वर सैकिया ने जब सभी उल्फा बंदियों को आम माफी की घोषणा की तो उनका ख्याल था कि तुरुप का पत्ता उनके हाथ लग गया है. लेकिन जल्द ही वे यह बाजी हारते नजर आए क्योंकि गैरकानूनी घोषित उल्फा ने अपनी शर्तों पर खेल जारी रखा. सरकार ने भले ही अपनी तरफ से उल्फा के 404 बंदियों को सीधा रिहा कर 111 अन्य की रिहाई का रास्ता खोल दिया लेकिन इस गिरोह ने बंधक बनाए सभी 14 व्यापारियों को रिहा करने की कोई मंशा नहीं दिखाई. 1 जुलाई को अपहृत 14 सरकारी तथा तेल और प्राकृतिक गैस आयोग (ओएनजीसी) के अधिकारियों में से आठ को वे अपने पास बंधक बनाए रहे.

इससे सैकिया मुश्किल में पड़ गए. दुराग्रही और हठी उल्फा ने जब धमकी दी कि यदि सरकार 26 जुलाई तक सभी बंदियों को रिहा नहीं करती तो दो बंधकों टी एस. राजू और ओएनजीसी के किशन लाल की हत्या कर दी जाएगी तो मुख्यमंत्री को फिर कठोर रुख अपनाना पड़ा. प्रशासन को निर्देश दिए गए कि जब तक उल्फा सभी बंधकों को रिहा नहीं करता, उसके किसी और बंदी को रिहा न किया जाए. जाहिर है सरकार इस उग्रवादी गुट के झुकने तक 184 कट्टर आतंकवादियों को अपनी हिरासत में रखना चाहती है.

लेकिन मुख्यमंत्री के इस कठोर रवैए से उल्फा झुका नहीं बल्कि और आक्रामक हो उठा. अपहरण और जबरन पैसा वसूली की घटनाएं फिर बढ़ गईं. दो इंका कार्यकर्ता नकुल दास और युसुफ अली को नलबाड़ी से अगवा कर लिया गया. जोरहट के एक होटल मालिक के बेटे को भी अपहृत कर लिया गया. इस अलगाववादी गुट का दृढ़निश्चय इसी से जाहिर होता है कि उल्फा 'कमांडर-इन-चीफ' परेश बरुआ ने संकल्प दोहराया कि 'प्रभुसत्तासंपन्न' असम के लिए उनका संघर्ष जारी रहेगा."

इसके साथ-साथ उल्फा बंधक बनाए सोवियत इंजीनियर सर्गेई ग्रिश्चेंको की हत्या से खराब हुई अपनी छवि को भी सुधारने की कोशिश कर रहा है.

कड़े कदम उठाने के क्रम में सैकिया पुलिस में महत्वपूर्ण पदों पर बैठे उल्फा से सहानुभूति रखने वाले सभी अधिकारियों को भी हटा रहे हैं. ब्रह्मपुत्र घाटी के तकरीबन सभी पुलिस अधीक्षकों के तबादले कर दिए गए हैं. गुवाहाटी के भी सभी थानेदारों के तबादले किए जा चुके हैं.

मुख्यमंत्री बस इतना ही कर सकते हैं. वे उल्फा के सफाए के लिए एक बार फिर सेना को नहीं लगा सकते क्योंकि इससे जनता की सहानुभूति उसके साथ हो जाएगी. खासकर इसलिए भी कि पिछले महीने पूरा हुए सेना के ऑपरेशन बजरंग से स्थानीय जनता का मोहभंग हो चुका है. फिर ऐसे मौके पर सेना को बुलाने से जो थोड़ी बहुत साख उन्होंने अर्जित की है वह भी जाती रहेगी.

इस असहाय हालत में सैकिया कानून और व्यवस्था की बदतर होती स्थिति से निबटने के लिए दूसरी योजना बना रहे हैं. असम सरकार ने एक आपात योजना बनाई है. इसका ब्यौरा हालांकि अब तक गोपनीय ही है लेकिन इतना संकेत जरूर मिला है कि कुछ हिस्सों में फिर सेना तैनात की जाएगी. नई योजना के तहत जिला मजिस्ट्रेट को नागरिक प्रशासन में सेना की मदद लेने का अधिकार दिया जाएगा.

ऐसा नहीं कि उल्फा आत्मसमर्पण को तैयार हो रहा है. अलगाववाद के मुद्दे जो कि इस गिरोह का पहला ध्येय है—पर सैकिया के कड़े रुख को देखते उल्फा एक इंच भी पीछे हटने को तैयार नहीं है. इसके अलावा आम माफी देकर सैकिया ने उल्फा के कट्टर समर्थकों और असम की जनता के बड़े हिस्से की हमदर्दी बटोर ली है. इन परिस्थितियों में सैकिया की शर्तें मान लेने से उल्फा की साख और अधिक गिरेगी.

हालांकि सैकिया से असंतुष्ट लोगों की भी कमी नहीं है जिनका मानना है कि माफी के मामले पर मुख्यमंत्री ने जल्दबाजी में कार्रवाई की है. पिछले हफ्ते पद से इस्तीफा देने वाले पुलिस महानिदेशक प्रकाश सिंह इनमें से एक हैं. उनका कहना है, "इस तरह माफी देना तो बहुत अपमानजनक है." और भी बहुत लोग हैं जिनका मानना है कि सरकार का एकतरफा समर्थन उल्फा को बढ़ावा ही देगा.

लेकिन सैकिया हताश नहीं हैं. खासकर तब जब उन्हें केंद्र सरकार का समर्थन मिल रहा है. एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी कहते हैं, "यदि असम में कोई ऐसा राजनीतिक है जो उल्फा के आतंक से जूझ सकता है तो वे सैकिया ही हैं." लेकिन उनके लिए भी शायद यह संभव नहीं हो सकेगा क्योंकि उल्फा के साथ-साथ जातीय मुक्ति वाहिनी नाम का एक और क्रांतिकारी गुट उभर आया है. उल्फा के आतंकवाद के जवाब में इसने धमकी दी है कि यदि उल्फा ने अपहरणों का सिलसिला जारी रखा तो वे उल्फा के लोगों के संबंधियों का अपहरण कर लेंगे.

इस तरह, असम में निकट भविष्य में तो उम्मीद की कोई किरण नजर नहीं आती.

—रुबेन बनर्जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंध्र प्रदेश

बागी तेवर

रेड्डी का भविष्य अधर में

सत्ता में आने के महज सात महीने बाद ही मुख्यमंत्री एन. जर्नादन रेड्डी मुश्किल में फंस गए हैं. पूर्व मुख्यमंत्रियों मरि चेन्ना रेड्डी और नंदेला भास्कर राव ने जहां भोज बैठकों के जरिए उनके खिलाफ अप्रत्यक्ष मुहिम छेड़ रखी है, वहीं रायलसीमा से इंका दिग्गज डॉ. वाई. एस. राजशेखर रेड्डी उनके मुखर विरोधी बनकर मुख्यमंत्री पद पर दावा जताने लगे हैं.

असंतुष्टों का समर्थन बढ़ रहा है और वे पार्टी अध्यक्ष तथा प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव पर रेड्डी को हटाने के लिए दबाव डाल रहे हैं. मगर नरसिंह राव यह दबाव मानने को तैयार नहीं क्योंकि मुख्यमंत्रियों के ऐसे जल्दी-जल्दी फेरबदल के चलते ही 1983 में नंदमूरि तारक रामराव सत्ता पर काबिज हो गए थे.

असंतोष इसलिए भड़क उठा दिखता है क्योंकि जर्नादन रेड्डी कैबिनेट का समय पर विस्तार न करके लाभ के पद बांटने में असफल रहे. पिछले साल दिसंबर में जब वे सत्ता में आए थे तो उन्होंने छोटा मंत्रिमंडल गठित किया था और बाद में इसमें विस्तार करने का वादा किया था. इससे बहुत-से विधायकों की महत्वाकांक्षाएं जाग उठीं. लेकिन रेड्डी इस मामले को टालते रहे. वे उन पार्टीजनों को नाराज नहीं करना चाहते थे जिन्हें विस्तार में छोड़ना पड़ता. इस तरह, पिछले पखवाड़े जब उन्होंने विस्तार किया तो ऐसे सभी लोगों को नाराज करके उन्होंने आफत मोल ले ली.

रेड्डी की बड़ी रणनीतिक गलती यह रही कि वे अपना वफादार खेमा नहीं बना पाए. उनके अधिकांश साथी उन्हें मामूली कद का नेता मानते हैं. डॉ. राजशेखर रेड्डी कहते हैं, "वे मुख्य सचिव की तरह काम करते हैं, ऐसे नेता की तरह नहीं जो सत्तारूढ़ पार्टी की साख बढ़ाने के लिए नीति निर्धारित करता है."

रेड्डी ने देर से सही मंत्रिमंडल विस्तार करके और नरसिंह राव का समर्थन पाकर अस्थायी मोहलत पा ली है. लेकिन उनका भविष्य कच्चे राजनैतिक धागों पर लटक रहा है.

—अमरनाथ के. मेनन

अंतर्कथा
इंद्रजीत बधवार

उंगलियां तो उठेंगी ही

फिलहाल खुफिया हलकों में संदेह की हल्की-सी सुगबुगाहट भर है. लेकिन जैसे-जैसे राजीव गांधी की सुरक्षा में हुई खामियों के बारे में जांच आयोग का काम आगे बढ़ेगा, वैसे-वैसे यह संदेह भारी विवाद का रूप अख्तियार कर सकता है. सुरक्षा में उस सुराग को ढूंढ़ निकालने का काम सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश एस. जे. वर्मा को सौंपा गया है जिससे होकर हत्यारिन राजीव के पास तक पहुंच पाई.

हालांकि राजीव को प्रधानमंत्री की सुरक्षा के दस्ते (एसपीजी) की सुरक्षा मुहैया नहीं थी फिर भी उन्हें विशिष्ट लोगों की सुरक्षा की जिम्मेदारी वहन करने वाली खुफिया ब्यूरो की विशेष शाखा ने सबसे खतरे वाली कोटि 'जेड' में रखा था. 'जेड' कोटि के विशिष्ट लोगों की सुरक्षा व्यवस्था गुप्त सूचनाओं को संग्रह करके और खतरे की कई आशंकाओं का अंदाज लगाकर की जाती है.

इस प्रक्रिया से खुफिया ब्यूरो के निदेशक, 'रॉ' के सचिव, संयुक्त खुफिया समिति के प्रमुख, सुरक्षा सचिव और प्रधानमंत्री के सुरक्षा सलाहकार जुड़े होते हैं. ये लोग ही विशिष्ट लोगों की सुरक्षा में हुई किसी खामी की जांच के दायरे में, खासकर राजीव हत्याकांड के मामले में आएंगे जिसके समुचित कारण भी हैं.

मसलन, खुफिया ब्यूरो के मुखिया एम.के. नारायणन राजीव के चहेते खुफिया अधिकारी थे जो एलटीटीई के मामलों की देखरेख करते रहे. विश्वनाथ प्रताप सिंह के सत्ता संभालने के बाद उनका तबादला संयुक्त खुफिया समिति के प्रमुख पद पर कर दिया गया. इस पद पर रहने के दौरान भी उनकी एलटीटीई के मामलों पर 'रॉ' और खुफिया ब्यूरो की रिपोर्टों तक वैसी ही पहुंच बरकरार रही थी. चंद्रशेखर के प्रधानमंत्री बनने पर राजीव के विशेष आग्रह पर उन्हें दिसंबर 1990 में फिर खुफिया ब्यूरो का निदेशक बना दिया गया.

रेखाचित्र: अजीत नैनन

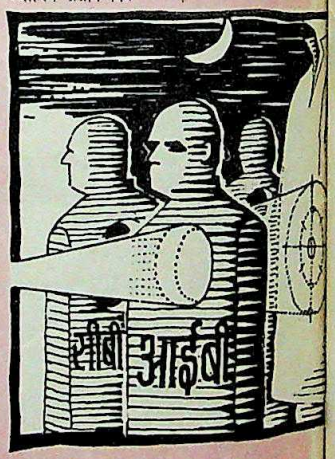

राजीव को खतरे की बात से खुफिया ब्यूरो के निदेशक रह चुके सुरक्षा सलाहकार एस.एन. माथुर, सुरक्षा सचिव ओ.पी. टंडन और संयुक्त खुफिया समिति के प्रमुख महेश शंकर भी सहमत रहे होंगे. फिलहाल इन लोगों की अपने पेशे के प्रति ईमानदारी पर किसी ने उंगली नहीं उठाई है.

लेकिन खुफिया हलकों में ऐसी फुसफुसाहट होने लगी है कि वर्मा आयोग के काम शुरू करने पर ये उच्चपदस्थ अधिकारी ही उसकी सूचना का स्रोत बनेंगे. अब कम-से-कम यह तो कहा ही जा सकता है कि स्वार्थ जरूर टकराएंगे. निश्चित रूप से ऐसी सूचनाएं मुहैया कराने की जिम्मेदारी उन्हीं पर नहीं डाली जा सकती जिनसे उनके कामकाज की परख होने की संभावना हो.

इंदिरा गांधी की हत्याकांड में ठक्कर आयोग के जांच शुरू करते ही डीआईजी (सुरक्षा) हरि पिल्लै, उपायुक्त डी.आर. गुप्ता, सहायक आयुक्त आर.एन. शर्मा और निजी सुरक्षा अधिकारी एन. के. भट्ट समेत 17 उच्च खुफिया अधिकारियों को मुअत्तल कर दिया गया था.

लेकिन इस मामले में विशिष्ट लोगों की सुरक्षा के जिम्मेदार दिल्ली में बैठे उच्चाधिकारियों पर रत्ती भर आंच नहीं आई. इससे कनिष्ठ अधिकारियों और दूसरे पुलिस अफसरों में भारी निराशा है. उनका कहना है कि उच्चाधिकारियों को मुअत्तल किया जाना चाहिए या कम-से-कम उन्हें आयोग की मदद करने के काम से दूर रखना चाहिए. अगले कुछ हफ्तों में ये हल्की आवाजें और तेज होकर उभरेंगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

THE COLTS MAN

अपनी मर्दानी चाहत को पहने वह शान से.

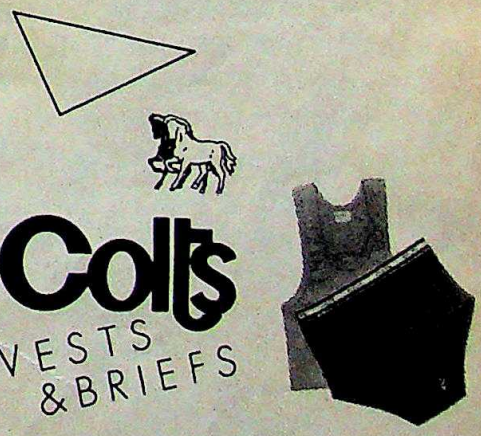

Colts
VESTS
&BRIEFS

अंतरंग साथी

SASI/VKM4/91

A Quality product from :
VIJAYAKUMAR MILLS LTD
Kalayamputhur Post, Palani, Tamil Nadu - 624 615.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ASHOK
WEEKEND
PACKAGE

इस सप्ताहांत, नज़ारा बदलें ज़िन्दगी की रफ्तार बदलें !

दैनिक कार्य सूची - 91						
सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	रवि
		बॉस से मिलना है				
	डेन्टिस्ट 9.00 बजे			कॉफी/शेयर मीटिंग 10.00 बजे		
लंच ऑन मीटिंग 12.30						
			डिनर/मीटिंग			
		ए.ओ. का बुलावा है				

अशोक वीकएन्ड पैकेज पर जाना है !

27 मनरोचक स्थानों में से बहुत ही कम मात्र 365 रुपये पर प्रति दम्पति प्रति रात्रि

अपनी साधारण दिनचर्या से अलग हट कर कुछ असाधारण करें। एक जादू सा जगाएं। तन-मन में नई स्फूर्ति लाएं। कोवलम और मामल्लपुरम में सागर, तट और लहरों का आनन्द उठाएं। आगरा, जयपुर, उदयपुर, खजुराहो और पटना के ऐतिहासिक स्मारकों की भव्यता से प्रभावित हों। या वाराणसी, भुवनेश्वर, पुरी और बोधगया की आध्यात्मिकता का लाभ उठाएं। या फिर नई दिल्ली और कलकत्ता महानगरों की चकाचौंध में खो जाएं !

जी हाँ ! अपने दैनिक काम-काज की भागादौड़ी से कुछ समय के लिए मुक्ति पाएं। अशोक समूह के 'वीकएन्ड पैकेज़' का लुत्फ उठाएं। यह सुविधा शुक्रवार, शनिवार और रविवार को उपलब्ध है। प्रति दम्पति प्रति रात्रि (न्यूनतम दो रात्रि रुकना होगा) मात्र 365 रु. (एक कमरे में दो व्यक्तियों के आधार पर)।

12 वर्ष से कम उम्र के 2 बच्चों को निःशुल्क रखने की अनुमति (बिना अतिरिक्त बिस्तर के)। 'ए ला कार्ते' भोजन पर 10% की छूट।

यह सुविधा 15 अक्तूबर 1991 तक।

यह पैकेज़ निम्नलिखित में उपलब्ध है:

*आगरा अशोक; औरंगाबाद अशोक; *अशोक रैडिसन होटल, बंगलौर; *बोधगया अशोक; हासन अशोक; *जयपुर अशोक; कलिंग अशोक, भुवनेश्वर; होटल रणजीत, नई दिल्ली; *वाराणसी अशोक; *अशोक रैडिसन ललिता पैलेस होटल, मैसूर; जाफ्फू अशोक, कोहिमा; नीलांचल अशोक, पुरी; *होटल भास्कर पैलेस अशोक, हैदराबाद; *लक्ष्मी विलास पैलेस होटल, उदयपुर; जम्मू अशोक; *भरतपुर फोरेस्ट लॉज; मदुरै अशोक; टैम्पल बे अशोक बीच रिसॉर्ट, मामल्लपुरम; *खजुराहो अशोक; *लोधी होटल, नई दिल्ली; *पाटलीपुत्र अशोक, पटना; *एयरपोर्ट अशोक, कलकत्ता; ब्रह्मपुत्र अशोक, गुवाहाटी; *होटल कर्णवती, अहमदाबाद; होटल मधुबन, देहरादून; रांची अशोक; पौंडूचेरी अशोक।

* 20% व्यय-कर लागू होगा। जहां कहीं लागू हो वहां स्थानीय कर और सेवा शुल्क अलग से देय होगा।

आपकी रुचि और आर्थिक स्थिति के अनुरूप और भी अनेक आकर्षक पैकेज़।

आरक्षण तथा पूर्ण विवरण के लिए अशोक समूह के किसी भी होटल से या निम्नलिखित स्थानों पर अशोक नेटवर्क से संपर्क करें :
नई दिल्ली (फ़ोन : 603030),
बंबई (फोन : 2022575, 2023343),
कलकत्ता (फोन : 435264, 435208),
मद्रास (फोन : 473078, 472186),
बंगलौर (फोन : 269482, 269462)

या

महाप्रबंधक (होटल बिक्री), अशोक होटल समूह, होटल सम्राट, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली। फोन : 603030, तार : CENTRES टेलैक्स : 031-72122 SMRT IN, 031-72333 ARS IN.

The Ashok Group

भारत पर्यटन विकास निगम लि.

भारत पर्यटन वर्ष 1991

AKSHARA/ITDC-711-H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमिलनाडु

चीतों पर चोट

जयललिता कड़ाई करने के मूड में

जब जयललिता किसी काम के बारे में मन बना लेती हैं तो उन्हें कोई नहीं रोक सकता. मुख्यमंत्री बनने पर उन्होंने सबसे पहले राज्य से एलटीटीई के खतरे से निबटने की ठानी. सरकार ने श्रीलंकाई तमिलों से खुद को निकटतम थाने में पंजीकृत कराने के लिए कहा है. इसकी अवज्ञा करने पर निर्वासित किए जाने की सजा रखी गई.

जयललिता एलटीटीई से निबटने की अपनी योजनाओं पर भरपूर अमल कर रही हैं. उग्रवादियों की आवाजाही को रोकने के लिए उनकी सरकार ने तमाम तरह की नौकाओं के पंजीकरण कराने

हिंदू

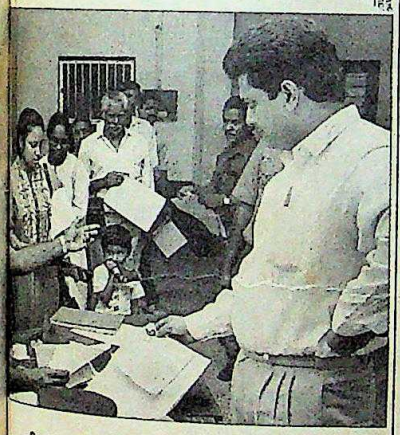

श्रीलंकाई तमिल पंजीकरण कराते हुए

और सभी मछुआरों से फोटो पहचान-पत्र पाने के लिए भी कहा है.

यही नहीं, जयललिता पुलिस विभाग को मुस्तैद करने जा रही हैं. उन्होंने पुलिस विभाग का कामकाज सुधारने के लिए केंद्र से 20 करोड़ रु. मांगे हैं. योजना यह है कि उग्रवादियों से निबटने के लिए एक उड़नदस्ता बनाया जाए. इसके अलावा, तस्करों और उग्रवादियों की गतिविधियों पर काबू पाने के लिए विशेष समुद्री पुलिस बड़ी की जाए.

जाहिर है, जब जयललिता ने घोषणा की थी कि 'हम काम करेंगे, बातें ज्यादा नहीं करेंगे' तो यह महज घोषणा नहीं थी. यह बात दीगर है कि वे इसमें कामयाब होंगी या नहीं.

—कविता शेट्टी

AKSHARA/ITDC-711-H

Maharishi Ayurved

छोटी शीशी के बड़े कमाल,

आम तकलीफों में दे आराम.

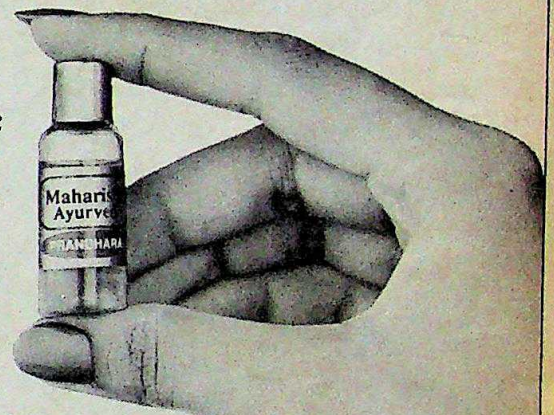

प्राणधारा की यह छोटी सी शीशी तीन तरह से कमाल दिखाती है. प्राणधारा सांस के साथ खींचने पर बंद नाक को तुरन्त खोलती है. प्राणधारा दर्द या मोच वाले हिस्से पर मलने से तुरन्त राहत देती है. प्राणधारा केवल दो बूंदें, दो चम्मच पानी में लेने से पेटदर्द, दस्त, पेचिश अथवा जी मिचलाने पर तुरन्त आराम देती है.

प्राणधारा—कई आम तकलीफ़ों के लिए एक प्राकृतिक, सुरक्षित व असरदार प्राथमिक उपचार.

प्राणधारा—हमेशा अपने पास रखिए.

ULKA-O-MA-130-HIN-A

महर्षि आयुर्वेद

प्राणधारा

सुगन्धित तेलों का मिश्रण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटाक्ष: अजीत नैनन

सनद रहे

घोषणा: मूर्तिकार **अमरनाथ सहगल** ने दिल्ली के विज्ञान भवन में कभी लगे अपने भित्ति चित्र के लिए भारत सरकार पर 50 लाख रु. का दावा ठोंकने का फैसला किया है उन्होंने टूटे-फूटे पड़े 140 फुट लंबे और 40 फुट चौड़े भित्ति चित्र के लिए 11 साल की दौड़धूप के बाद यह फैसला किया

दावा: माकपा के मुखपत्र **गणशक्ति** का दावा है कि ज्योति बसु को अमेरिकी संसद के एक विशेष सत्र को संबोधित करने बुलाया जाएगा पर खुद अमेरिकी सरकार को इसकी जानकारी नहीं है

निधन: त्रावणकोर के पूर्व महाराजा, 79 वर्षीय **श्री चित्र तिरुमल बलराम वर्मा** का निधन हो गया वे 1936 में हरिजनों को मंदिर प्रवेश कराने के लिए चर्चित हुए थे.

सम्मानित: वैज्ञानिक **जी.पी. तलवार** को फ्रांस के उच्चतम नागरिक सम्मान से अलंकृत किया गया. राष्ट्रीय प्रतिरक्षण संस्थान के संस्थापक-निदेशक तलवार यह सम्मान पाने वाले सत्यजित राय के बाद दूसरे भारतीय हैं. उल्लेखनीय है कि उन्हें जन्म नियंत्रण टीके का इजाद करने के लिए ख्याति प्राप्त हुई थी.

पुरस्कार: कर्नाटक के नाटककार **के.वी. सुब्बण्णा** को पत्रकारिता, साहित्य और सृजनात्मक संप्रेषण कलाओं के लिए मैगसेसे पुरस्कार मिला. कर्नाटक नीनासम थियेटर इंस्टीट्यूट के 59 वर्षीय संस्थापक सुब्बण्णा को इस पुरस्कार में एक स्वर्ण पदक और 30,000 डॉलर नकद मिले.

उद्घाटन: **राजीव गांधी विचारधारा शोध एवं कार्यान्वयन केंद्र** खोला गया है जो पूर्व प्रधानमंत्री की याद में 'राजीव गांधी पौर मित्र' नामक पुरस्कार सर्वोत्तम सांसद, विधायक, अफसर और विमानचालक को देगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन कहता है कि मर्द रोमैन्टिक नहीं होते?"

"सरोज पता है संदीप ने मुझे क्या भेजा है.
लिफ़ाफ़े में ख़त नहीं बस एक अमूल चॉकलेट.
पहले तो मेरी समझ में कुछ नहीं आया.

फिर मुझे याद आया...अमूल चॉकलेट
प्यार की मीठी भेंट.

और मैं खुशी से झूम उठी."

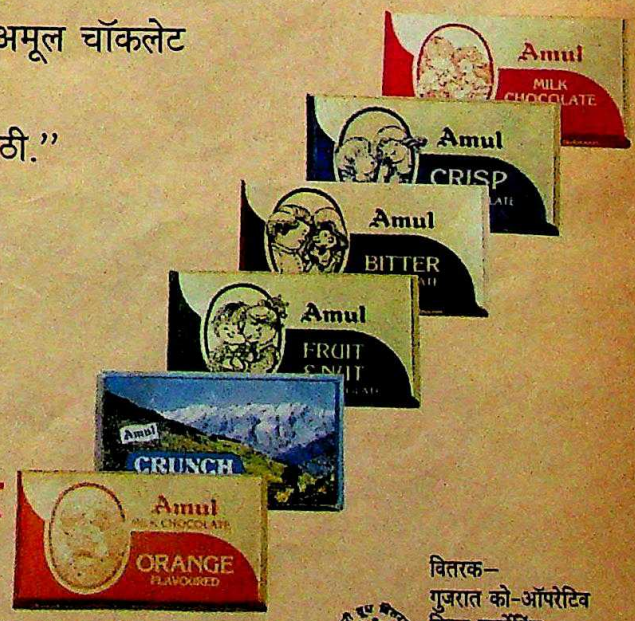

अमूल चॉकलेट

प्यार की मीठी भेंट

६ स्वादिष्ट चॉकलेट

अमूल मिल्क चॉकलेट, अमूल क्रिस्प, अमूल बिटर, अमूल फ्रूट एण्ड नट, अमूल क्रंच, अमूल ऑरेंज.

वितरक–
गुजरात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
फेडरेशन लिमिटेड,
आणंद ३८८ ००१.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

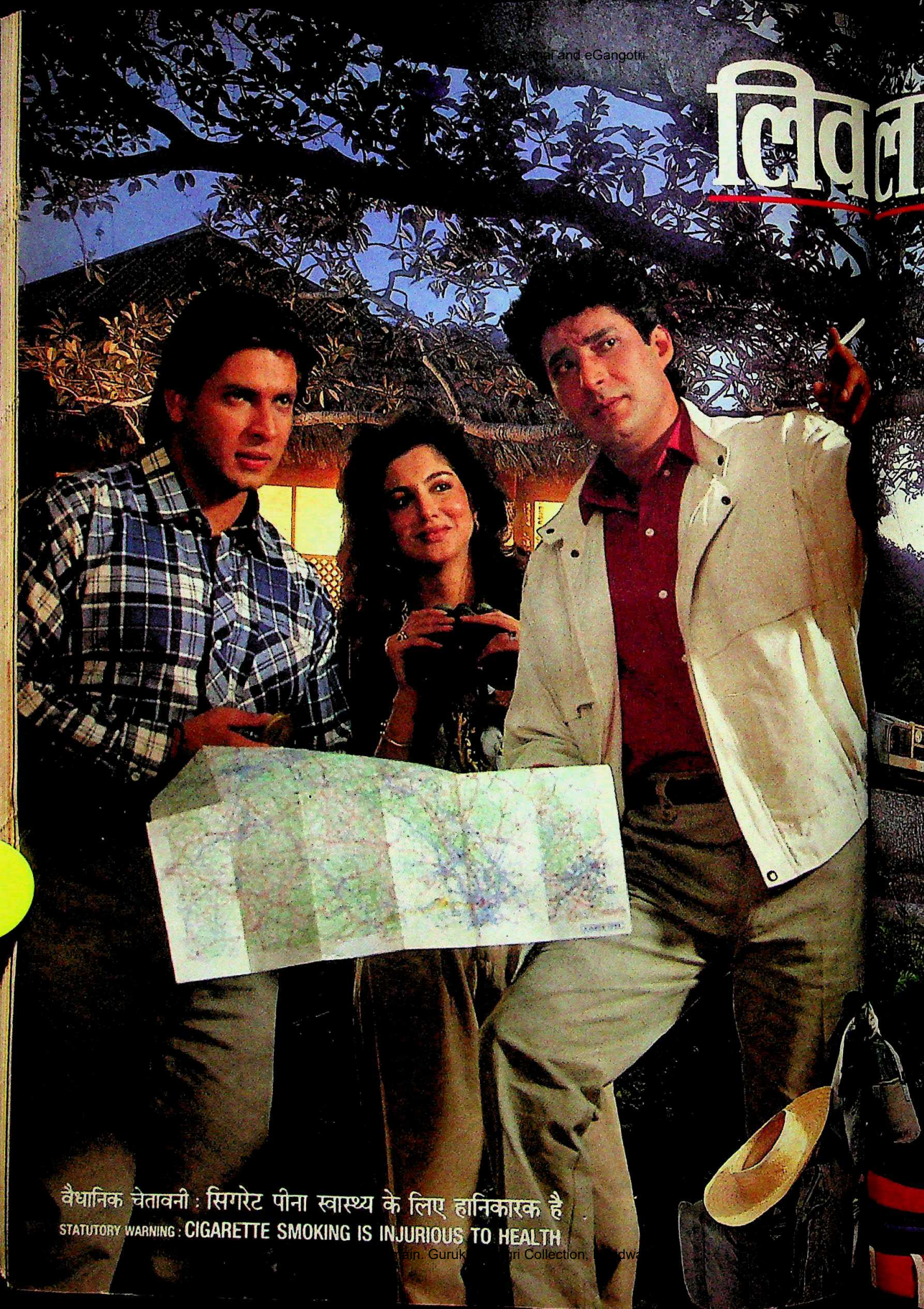

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

लाइफ़ किंगसाइज़
FOUR SQUARE
KINGS
FOUR SQUARE
KINGS
आख़िरी कश तक वही भरपूर स्वाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दसवीं लोकसभा

हर रंग की अपनी तरंग

पहली बार जीत कर आए चौंधियाए लोगों, जगमगाती फिल्मी हस्तियों और भगवाधारी स्वामियों के कारण इस बार लोकसभा में अलग ही नजारा था. पर माहौल निराशाजनक और फीका ही रहा

—वाहेगुरु पाल सिंह सिद्धू

उमंग भरा, रंगारंग, कभी चुटकी लेने वाला तो कभी गंभीर, तनाव भरा, बहुत ही सूझबूझ वाला और कई बार एकदम भविष्यवाणी से परे की घटना वाला—इन सारे तत्वों को समेटने वाला दसवीं लोकसभा का पहला अधिवेशन त्रिकोणात्मक प्रेम वाली किसी फिल्म से कम नहीं था. एकदम ही अलग-अलग पहचान वाले तीन समूहों वाली इस लोकसभा ने पखवाड़े भर में धीरे-धीरे अपना रंग पकड़ा. बाहरी समर्थन पर टिकी 'दिहाड़ी पर काम करने वाली सरकार' भी मौजूदगी की एक अलग रंग भरती रही.

और रंग भरने के इस क्रम में कई बुजुर्ग सांसदों (जिनमें कुछ लगातार छठी बार लोकसभा में आए हैं), सवाल पूछने में धाकड़, पहली बार जीतकर आए चौंधियाए लोगों, चमक-दमक भरी फिल्मी हस्तियों, पूर्व राजा-महाराजाओं और 'जय श्री राम' का उद्घोष करने वाले भगवाधारी स्वामियों ने अपनी-अपनी भूमिका निभाई. पुराने अनेक धांसू सांसदों के नए सदन में न पहुंच पाने के बावजूद लोकसभा का शुरुआती सत्र विडंबनाओं, उपहास और रंगों की चकाचौंध का मिश्रण था.

मसलन, जनता दल के रामविलास पासवान जब पी.वी. नरसिंह राव की सरकार के प्रति अविश्वास प्रकट करने उठे और उन्होंने राम जन्मभूमि मुद्दे पर भाजपा को आड़े हाथों लिया तो उन्हें मोटी आवाज वाले भाजपा सांसद मदनलाल खुराना का कोपभाजन बनना पड़ा. कांग्रेसी मजे ले-लेकर यह लड़ाई देखते रहे. लेकिन कुछ मिनट बाद ही जब मतदान वाली पर्ची बंटी और भगवाधारी पार्टी ने लाल पर्ची में निशान लगाकर खिलाफ वोट दिया तथा वाम और राष्ट्रीय मोर्चे ने मतदान में भाग न लेने का संकेत देते हुए पीली पर्चियां उपयोग कीं तो पासवान ने खुराना से चुटकी ली, "आपने अपना रंग पीले से बदलकर लाल कर लिया है."

और जब मुंबई से जीते पूर्व अभिनेता सुनील दत्त ने सुझाव दिया कि पंजाब (पांच नदियों वाला प्रदेश) नाम अब प्रासंगिक नहीं रहा और उसका नाम खालिस्तान रख दिया जाए, तो सरकारी बैंचों में एकदम खामोशी छा गई. या फिर वित्तमंत्री मनमोहन सिंह के कथन के जवाब में बूटा सिंह की टिप्पणी से भी सत्ता पक्ष को परेशानी हुई. बूटा सिंह ने कहा, "वित्तमंत्री हमें माननीय भद्रजन कह रहे हैं. हम माननीय सदस्य हैं, माननीय भद्रजन नहीं."

और इंका जहां कुल मिलाकर एकजुटता वाला व्यवहार नहीं कर पाई, वहीं संसदीय कामकाज की चतुराई में भी वह हार गई. इसका उदाहरण पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर और संचार राज्यमंत्री राजेश पायलट के बीच हुई यह बातचीत है:

पायलट: "मैं, नेहरू को उद्धृत करूंगा."

चंद्रशेखर: "नहीं कृपया यह न करें."

पायलट: "लेकिन आप भी नेहरू के दर्शन में विश्वास करते हैं."

चंद्रशेखर: "जरूर. इसीलिए तो आपका काम देखकर मैं कह रहा हूं कि आपको नेहरू को उद्धृत नहीं करना चाहिए."

जाहिर है, चंद्रशेखर इस सदन के धांसू सांसदों में से एक बनकर उभरे हैं. अपनी तीखी टिप्पणियों और चुटीले वाक्यों से उन्होंने अधिकांश विरोधियों के छक्के छुड़ा दिए.

इसके विपरीत वी.पी. सिंह ने हालांकि मंडल और सोने की बिक्री जैसे मुद्दों पर तीखे ढंग से अपनी बात रखी और यह सब कहते हुए उनकी नजर प्रेस दीर्घा पर भी लगी रही लेकिन वे इतने सफल नहीं रहे. उधर, प्रधानमंत्री का दर्शन से भरा भाषण अधिकांश सांसद पचा नहीं पाए. वाम मोर्चा के जिन सदस्यों के पल्ले यह भाषण पड़ा, उन्होंने राव पर ताबड़तोड़ प्रहार किए. अंततः उनके बचाव के लिए ममता बनर्जी को मोर्चा संभालना पड़ा.

लेकिन अटल बिहारी वाजपेयी को ऐसी कोई समस्या नहीं पेश आई. तीखी चुटकियों से भरे हिंदी में उनके पहले भाषण ने सांसदों को मंत्रमुग्ध कर दिया. पूरे हावभाव से भरे वाजपेयी के भाषण पर कम ही टोकाटोकी हुई, जिसके चलते वे सदन में बेहद प्रभावशाली

कार्टून: अजीत नैनन और मनोजीत दत्त

स्वामी मंडली: भगवा उभार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए चेहरे: किस्म-किस्म के लोग

वक्ताओं में से एक बनकर उभरे.

दूसरी ओर नई लोकसभा में निश्चित रूप से अप्रभावी वक्ता हैं इसके सबसे बुजुर्ग, 82 वर्षीय मनोनीत सांसद फ्रैंक एंथनी. राष्ट्रपति के अभिभाषण पर प्रधानमंत्री के जवाब के दौरान जब वे बोलने उठे तो पूरा सदन उनकी टांग खिचाई में लग गया. एंथनी सदन में 'सूट पहनने वाले' तीन लोगों में से हैं. गर्मी वाली खाकी जैकेट और पैंट में वे राज के दिनों वाले निचले सदन की याद कराते हैं. लेकिन पोशाक के मामले में सबको पीछे छोड़ा दक्षिण बंगलूर से जीते 68 वर्षीय भाजपा सांसद प्रोफेसर के. वेंकटगिरि गौड़ा ने. 40 साल पुराना 'मेड इन इंग्लैंड' थ्री-पीस सूट पहने हुए उन्होंने 40 डिग्री से भी ऊपर तापमान में बड़े ठंडे भाव से कहा, "मैं थ्री-पीस में बहुत आराम अनुभव कर रहा हूं."

ऐसा ही चैन महसूस कर रहे थे मध्य प्रदेश के महासमुंद से जीते दाढ़ी-बाल वाले पवन दीवान, जिन्हें स्वामी अमृतानंद सरस्वती नाम से भी जाना जाता है. सिर्फ घुटने तक आने वाली लुंगी और रुद्राक्ष माला पहने खुले बदन वाले पवन दीवान कम पोशाक के मामले में स्पष्ट विजेता थे. वे लोकसभा में पहुंचे आठ भगवाधारी स्वामियों में से हैं. बाकी भगवाधारी स्वामी भाजपा के हैं और वे भी सफेद खद्दरधारियों के बीच अलग ही दिखते हैं. जटाओं या लहराते बालों के ऊपर ईयरफोन लगाए हुए वे जेट-युग के संन्यासी दिखते हैं.

फिर, इस बार संसद में कुछ ऐसे नए सांसदों की टोली भी पहुंची है जिन पर 'संसद की धौंस' नहीं पड़ी है. ये लोग प्रायः विधायक से सांसद बने हैं. झारखंड मुक्ति मोर्चा के सांसद सूरज मंडल कहते हैं, "मैं राज्य विधानसभा में 10 वर्षों से रहा हूं. यह सदन उससे कुछ बड़ा भर ही है." मंडल उन कुछ ऐसे नए सांसदों में हैं जो दूसरों के आगे झुके नहीं हैं. जब किसी ने भी टोकाटोकी की तो उन्होंने करारा जवाब दिया, "कृपया हस्तक्षेप न करें, यह मेरा पहला भाषण है."

लेकिन नए आए 183 सांसदों में से अधिकांश के लिए तो बहस में दखल देना ही सपने की बात है. पहला भाषण देना भी अभी तक उनकी कल्पना से बाहर की बात है. इनमें ज्यादातर तो नई लोकसभा में आकर ही अभिभूत हैं, धनबाद में बैंक लुटेरों के हाथों मारे गए एस.पी. की पत्नी और इसी माफिया प्रभाव वाले क्षेत्र से जीतीं भाजपा सांसद रीता वर्मा को लोकसभा का अनुभव 'डरावना' लगा. सदन में सबसे कम उम्र की सदस्य इंका की शैलजा ने, जो अभी भी कालेज की छात्रा जैसी दिखती हैं, कहा, "पहले कुछ दिनों तक तो मैं नोट भी करती रही. मुझे नहीं मालूम था कि हमें सदन की पूरी कार्यवाही का ब्यौरा ही मिला करेगा."

डरावनी मूंछें और मुकुट के न रहने पर टीवी के रावण दिखाई ही न देने वाले भाजपा सांसद अरविंद त्रिवेदी को तो शिवराज पाटील को अध्यक्ष नियुक्त करने का आयोजन भी भव्य लगा. और उधर, कभी भारत की सलामी बल्लेबाजी में जमने वाले चेतन चौहान के पांव संसद की फिसलन भरी पिच पर उखड़ ही गए. वे कहते हैं, "सलामी बल्लेबाज के रूप में जमने में मैंने हमेशा कुछ समय लिया है. यहां ताबड़तोड़ रन बनाकर विकेट गंवा देने से महत्वपूर्ण है जमना."

यहां तक कि सही अर्थों में निचले सदन की एकमात्र अभिनेत्री दीपिका चिखलिया भी लोकसभा से 'आतंकित' हैं. खूबसूरत आंखों वाली दीपिका निस्संकोच स्वीकार करती हैं, "जब मैं हॉल में घुसी तो मैंने खुद से कहा कि यही वह जगह है जहां भारत का भविष्य तय होता है. मेरे लिए यह बड़ा, विशाल और जबरदस्त मंच है." दीपिका भाजपा की दस महिला सांसदों की उस टोली में हैं जिसे अब 'सीता बिग्रेड' कहा जाने लगा है. इनमें से नौ विपक्षी बैंचों की चौथी कतार में एक साथ बैठा करती हैं. एक छोर पर उमा भारती बैठती हैं तो दूसरे पर दीपिका के साथ वसुंधरा राजे और बीच में दो पूर्व महारानियां—भरतपुर की कृष्णेंद्र कौर उर्फ दीपा और अलवर राजमहल की महेंद्र कुमारी होती हैं.

इसके ठीक उलट वामपंथी सांसद प्रायः हर मुद्दे पर बोलते सुने गए. उनकी टोली में इंका पर नेहरूवादी समाजवाद को

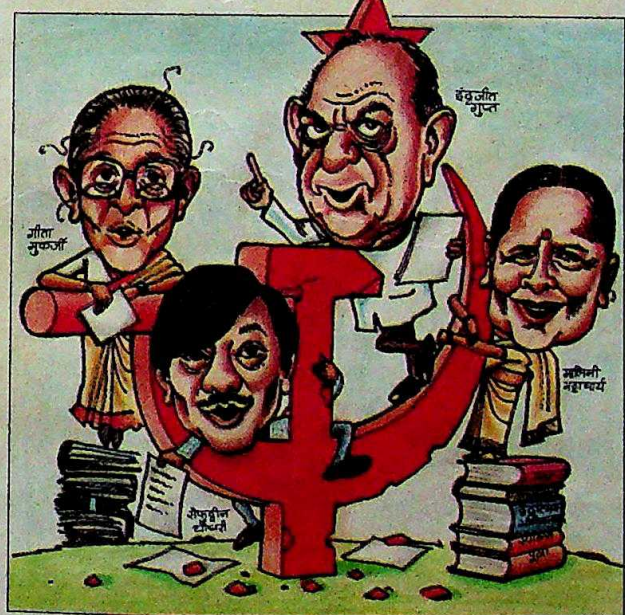

वामपंथी: बहस में माहिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Look no further

GRAVIERA GR
SUITING
(A Unit of Grasim Industries Ltd.)

AKSHARA/GR-511

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ने का आरोप लगाने वाले भाकपा के इंद्रजीत गुप्त से लेकर सबसे ज्यादा हंगामा करने वाले मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के सोमनाथ चटर्जी तक हैं. कम्युनिस्ट सांसद इतने प्रभावी हैं कि दूसरी पार्टियों के लोग भी संसदीय बहस के उनके कौशल की तारीफ करते हैं. शैलजा कहती हैं, "वे खूब पढ़े लिखे लोग हैं, जो काफी तैयारी करके भी आते हैं."

उधमी: अपने पूरे रंग में

वाजपेयी के बहस वाले कौशल, मदनलाल खुराना की चीखने की क्षमता, आडवाणी की नफासत और जसवंत सिंह की साफ-सुथरी संसदीय शैली से लैस भाजपा सदन में एक मजबूत ताकत के रूप में उभरी है. सबसे ज्यादा नुकसान में जनता दल रहा है जिसके धाकड़ सांसद मधु दंडवते इस बार लोकसभा में पहुंच भी नहीं पाए हैं. इंका और भाजपा, दोनों ही के टांग खींचने वाले जिस तरह से आंख मूंदकर विश्वनाथ प्रताप सिंह और रामविलास पासवान के पीछे पड़े हुए हैं उससे तो यही लग रहा है कि पार्टी को अकेले जॉर्ज फर्नांडिस की सेवाओं पर निर्भर रहना होगा.

संसद की कार्यवाही के स्तर ने जहां नए सांसदों को निराश किया, जो मानते हैं कि बुजुर्ग सांसदों का व्यवहार उनकी अपेक्षा के मुताबिक शालीन नहीं था, तो पुराने लोग इससे संतुष्ट थे. जसवंत सिंह बताते हैं, "सदन का माहौल मुख्यतः अनिश्चितता वाला है. स्थिति बहुत गंभीर है इसी कारण सदन खामोश है क्योंकि शोर समस्याओं का जवाब नहीं हो सकता." पूर्व लोकसभा अध्यक्ष रवि राय कहते हैं, "सरकार को पक्का समर्थन हासिल नहीं है और मध्यावधि चुनाव का अंदेशा बहुत बड़ा है."

लेकिन इससे सदन का जीवन लंबा होगा या नहीं, यह अभी निश्चित नहीं है, हां एक बात स्पष्ट है कि इसका काम-काज खत्म होने के पहले यहां बहुत उतार-चढ़ाव आएंगे.

नई लोकसभा

नौसिखुए ज्यादा

दसवीं लोकसभा में ज्यादातर सांसद भले ही प्रौढ़ वय के हों पर संसदीय अनुभव के मामले में वे नौसिखुए ही हैं. 'इंडिया टुडे' के संवाददाताओं के सर्वेक्षण से यह तथ्य उभरा है कि जिन 320 सदस्यों के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध है, उनमें एक-तिहाई से ज्यादा ने पहली बार संसद में प्रवेश किया है. उत्तर प्रदेश में भाजपा की भारी विजय को भी इसका श्रेय है. पिछली लोकसभा चूंकि 15 महीने बाद ही भंग हो गई थी इसलिए अब दोबारा चुनकर आए अधिकतर सांसद भी सदन में पांच साल का कार्यकाल पूरा नहीं कर पाए थे.

देवीलाल शायद यह जानकर खुश होंगे कि इन सांसदों में से 40 फीसदी मूलतः किसान हैं. जनता दल नेता रामविलास पासवान कहते हैं, "अब संसद में गांवों की धड़कन सुनी जा सकती है." इसके विपरीत, कानून के पेशे से आए सांसद 35 फीसदी से घटकर 7 फीसदी रह गए हैं.

मंडल बवंडर के बावजूद अगड़ी जातियों का दबदबा बरकरार है. पर हैरानी की बात है कि एक तिहाई से ज्यादा सांसद अनुसूचित जातियों और जनजातियों से हैं. इनमें ज्यादातर मध्य प्रदेश और बिहार से आए हैं. और दसवीं लोकसभा तो इतनी पुरुष प्रधान हो गई है कि महिलाएं सिर्फ 28 हैं, यानी पिछली लोकसभा के मुकाबले सिर्फ एक ज्यादा. इस बार मुसलमान सांसदों की संख्या भी सिर्फ 27 है. इनमें भी छह पश्चिम बंगाल से हैं.

यह सर्वाधिक शिक्षित सांसदों वाली लोकसभा भी है. पहली लोकसभा में तकरीबन 23 फीसदी से ज्यादा सांसद मैट्रिक पास भी नहीं थे. लेकिन पिछली लोकसभा में 74 फीसदी सदस्य स्नातक और स्नातकोत्तर थे. मौजूदा सदन में दो-तिहाई से ज्यादा सांसद या तो स्नातक हैं या उससे भी अधिक शिक्षित.

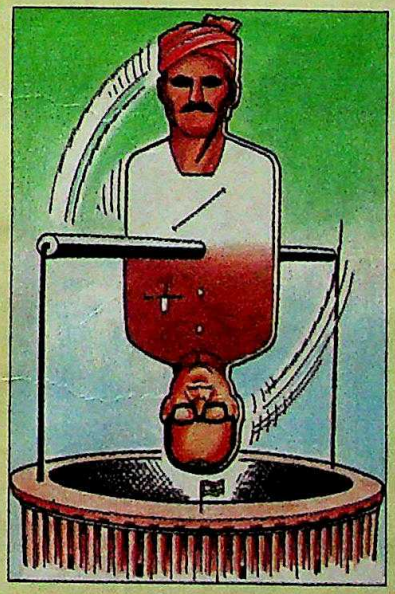

नौवीं लोकसभा में तकरीबन 40 फीसदी सदस्य ग्रामीण पृष्ठभूमि से आए थे. प्राप्त जानकारी के अनुसार दसवीं लोकसभा में यह प्रतिशत बढ़कर 50 हो गया है. लोकसभा के स्वरूप के बदलते रहने की भविष्यवाणी करते हुए झारखंड मुक्ति मोर्चा के सांसद सूरज मंडल ने पिछले पखवाड़े लोकसभा में कहा, "यह देश हमेशा भारत और इंडिया में विभाजित रहा है. अब तक इंडिया ही भारत पर हावी रहा है." अब शायद भारत का जमाना आ गया है.

—कावेरी बामजई और भास्कर रॉय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तकनीक में उत्तम - बनावट में सर्वोत्तम

उच्च तकनीक से
इलास्टिक तैयार,
बनावट को रखे बरकरार

अधिक मुलायम
मर्सिराइज्ड कॉटन

हर मौसम के लिये उपयुक्त,
फूल सी कोमल

मनमोहक रंगों में, केवल आपके लिये

डोरा®
ट्रैन्ड

आराम • गुणवत्ता • विशिष्टता... एक साथ

एच.पी. टेक्सटाईल मिल्स कलकत्ता • नई दिल्ली • अहमदाबाद • कानपुर • बम्बई

Ankur/HPT/489-HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब

टूटे वादों की दर्दीली दास्तां

पंजाब समस्या पर बहस में राज्य से जुड़े प्रमुख नेता और बुद्धिजीवी शामिल हुए जिसकी अध्यक्षता फीचर संपादक शेखर गुप्ता ने की. संपादन काजल बसु ने और उनकी सहायता नयना बोस ने की. भाग ले रहे थे: प्रेम भाटिया, सतपाल डांग, गोविंदाचार्य, हरिंदर सिंह खालसा, कुलदीप नैयर, सुबोधकांत सहाय, वसंत साठे, अमरिंदर सिंह, दिलबीर सिंह और सुखजिंदर सिंह.

आखिर जिम्मेदार कौन?

प्रेम भाटिया: श्रीमती गांधी ने एक बार मुझे बुलाकर पंजाब के बारे में पूछा. तब आनंदपुर साहिब प्रस्ताव की चर्चा तो थी पर खालिस्तान का मसला उतना महत्वपूर्ण नहीं था. मैंने श्रीमती गांधी से कहा, "सिख समुदाय की शिकायतें अभी एक छोटी पोटली की तरह हैं. मेरी राय में आप इस पोटली को खोल दें. मेरा सुझाव है कि एक आयोग बिठा दें. शिकायतें बहुत मामूली नहीं हैं. अगर संभव हो तो उन्हें निबटा दें. इस समय तो यह पोटली बंधी हुई है और अगर आप इसे नहीं खोलतीं तो यह बड़ी होती जाएगी." विश्वास करें, ऐसा ही हुआ है. खुले मन से कोशिशें कभी हुई ही नहीं. अब कुछ देर हो चुकी है. बल्कि श्रीमती गांधी ने तो मुझसे यह कहा था कि "क्या आपको लगता है कि मैं पंजाब को किसी ऐसे समुदाय के हाथों में दे सकती हूं, जिसकी सीमाएं पाकिस्तान के साथ लगी हुई हैं?" वैसे हिंदुओं का दोष भी कुछ कम नहीं. एक बार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के एक वरिष्ठ नेता मुझसे मिलने आए. मैंने उनसे निवेदन किया कि कृपया यह बात कहना बंद करें कि सिख हिंदू हैं. सिख इसका बुरा मानते हैं. वे राजी हो गए. लेकिन अगले ही दिन उन्होंने ठीक उलटी बात कही. बहुत अंदरूनी कारण चाहे जो हों, पर मेरे हिसाब से हाल के इतिहास में तीन निर्णायक बिंदु रहे हैं— श्रीमती गांधी द्वारा वाजिब ढंग से निर्वाचित बादल सरकार को 1980 में बरखास्त करना, ऑपरेशन ब्लूस्टार और फिर बरनाला सरकार की बरखास्तगी.

पंजाब समस्या की कई पेंचीदा वजहें हैं जिनमें राजनीति में धर्म का घालमेल, केंद्र के दांवपेंच, वोट बैंक की राजनीति और आर्थिक जरूरतें शामिल हैं

स्वर्ण मंदिर में उग्रवादियों की चौकसी: कंकरीली राह

प्रशांत पजियार

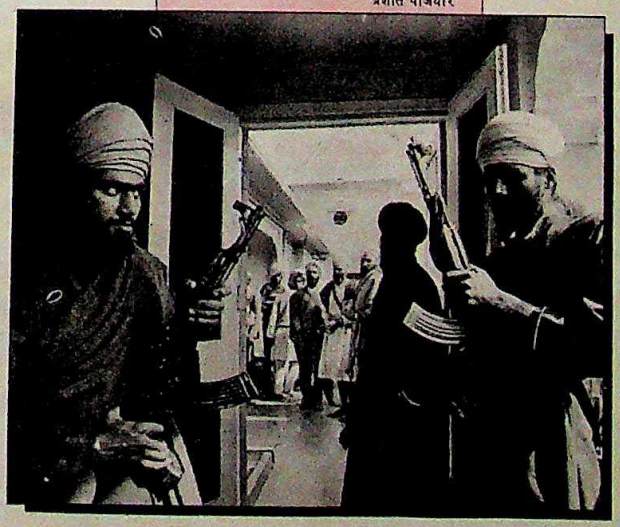

गोविंदाचार्य: मेरे विचार से समस्या जटिल और पुरानी हो चली है. और इसके पीछे महज राजनैतिक कारण नहीं हैं. इसमें सामाजिक मानसिक पृष्ठभूमि की भी भूमिका रही है. शहरी-ग्रामीण, और संभवतः किसान-व्यापारी संबंध भी मानसिक स्तर पर जिम्मेदार रहे हैं. कुल मिलाकर कारण कई हैं. अल्पसंख्यक होने का बोध भी समूचे दृष्टिकोण को संकीर्ण बना देता है. और फिर भाषा, जाति और कुछ मायनों में धर्म पर आधारित पहचान को बल मिलने के कारण भी समस्या गंभीर होती गई है. फिर जब ये तमाम लोग सामाजिक उन्नति के लिए राजनैतिक शक्ति हासिल करना चाहते हैं तो प्रांतीय भावनाएं उन्हें घेरकर उनके नजरिए को धुंधला देती हैं. यह बड़े सौभाग्य की बात है कि विरासत की डोर ने अभी भी देश या फिर कम-से-कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके अलग अलग भागों को एक सूत्र में बांध रखा है.

मैं समझता हूं कि सिखों को हिंदू समुदाय का अंग मानना बुद्धिमानी है क्योंकि उनसे मिलकर ही राष्ट्र बनता है.

भाटिया: लेकिन सिख तो कह रहे हैं कि वे अलग राष्ट्र हैं.

गोविंदाचार्य: अगर भारत को एक राष्ट्र के रूप में बने रहना है तो फिर जहां तक धार्मिक आस्था का सवाल है, महज सहनशीलता के बजाए आपसी आदर भाव पर आधारित समन्वय होना चाहिए.

अमरिंदर सिंह: सवाल सिख मानसिकता को समझने का है. निश्चय ही सिख अपनी अलग पहचान रखने में यकीन करने लगे हैं. और यही मूल समस्या है. दुर्भाग्यवश 1980 से 1984 तक सरकार का कुछ न करने का सख्त रवैया नरमपंथियों को पूरी तरह हतोत्साहित कर गया. 1978 में आनंदपुर साहिब प्रस्ताव को राष्ट्र विरोधी कहकर ठुकरा दिया गया. कुल मिलाकर उठाए गए मुद्दे आर्थिक ही थे. लेकिन केंद्र को लगा कि अगर वह पंजाब को पानी देगा तो हिंदीभाषी क्षेत्र उसके हाथ से निकल जाएगा. अगर उसने गंगा-यमुना का पानी हरियाणा को दे दिया तो उत्तर प्रदेश की 85 सीटों को बचाए रख पाना मुश्किल होगा. इसीलिए जिस किसी को भी हिंदीभाषी क्षेत्र पर निर्भर रहना था—उसे सिखों के खिलाफ सोचना ही था.

मांगें मूलतः कृषि से संबंधित हैं. 10 एकड़ वाले पांच फीसदी से ज्यादा खेत न होंगे. बाकी सभी छोटे किसान हैं और वे सब के सब सिख नहीं हैं. इन सभी को एक समान रूप से सहना पड़ा है. मसलन, ट्रैक्टर के दाम पिछले 10 वर्षों में 50,000 रु. से बढ़कर 2.5 लाख रु. हो गए हैं.

और फिर सिख अपने को कुंठित क्यों न महसूस करें ? 1980 में बातचीत क्यों विफल हो गई? मेरे बताने पर आपको बिलकुल अजीब-सा लगेगा. सरकार ने फ्रंटियर मेल का नाम बदलकर दरबार साहिब एक्सप्रेस रखने से इनकार कर दिया था. बातचीत बस एक ट्रेन के नाम को लेकर ठप हो गई!

अब हताशा के कारण आर्थिक मुद्दे धार्मिक पुनरुत्थानवाद में बदल गए हैं. लेकिन इस मुकाम पर भी पेंच सुलझाया जा सकता है क्योंकि उग्रवादी आज पंजाब में जो कुछ कर रहे हैं उसके विरुद्ध प्रतिक्रिया होने लगी है.

सतपाल डांग: सिखों को हिंदुओं की श्रेणी में रखने से अलगाववादियों को दलील मिल जाती है कि खालिस्तान नहीं लिया तो हिंदुत्व सिख पंथ को निगल लेगा. पिछले 13 वर्षों से पंजाब में मौजूद उथल-पुथल भी बाहरी कारणों से ही है. धार्मिक पुनरुत्थानवाद के संकेत भी एक डर को उजागर करते हैं. हर

सभी फोटो: भगवान सिंह

अमरिंदर सिंह
अकाली दल (पंथक); बरनाला सरकार में कृषिमंत्री

"यह बात बेतुकी लग सकती है पर 1980 में बातचीत इसी पर टूट गई कि केंद्र को फ्रंटियर मेल का नामकरण दरबार साहिब एक्सप्रेस करना मंजूर नहीं था"

"चंद्रशेखर ने मुझसे पूछा, "पाकिस्तानी हाथ होने की बात आप किस आधार पर कहते हैं? क्या सिंध में हमारा हाथ नहीं रहा?" मैं अपना संयम खो बैठा, "क्या आप समझते हैं कि एके-47 राइफलें मंडी गोविंदगढ़ में बनाई जाती हैं?"

कोई खुलकर इसकी बात नहीं उठाता. इसी तरह गुरद्वारों का भी निर्माण (कम-से-कम अमृतसर में, जहां से मैं वाकिफ हूं) एक खास अंदाज में किया गया ताकि वक्त आने पर अलगाववादी उनका इस्तेमाल कर सकें. फिर हरित क्रांति ने सशक्त जमींदारों के एक वर्ग को जन्म दिया और इनमें से अधिकतर सिख थे. पर थोक व्यापारी और उच्च पदों पर बैठे लोग हिंदू थे. दोनों ही वर्गों ने अपने-अपने फायदे के लिए धर्म का इस्तेमाल किया. अगर आप आनंदपुर साहिब प्रस्ताव को लाने वालों के राजनैतिक स्वार्थ पर गौर करें तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि प्रस्ताव का मूल भाव सिख जमींदारों के नए वर्ग की उच्चाकांक्षाओं को दर्शाता है.

नदियों का पानी, भाषा और पंजाब का हर एक मसला अंततः सांप्रदायिक बना दिया जाता है. फिर वोट बैंक की राजनीति भी गुल खिलाती है. इंका ने भिंडरांवाले को राजनीति में उतारा और अकालियों ने उन्हें अकाल तखत दे दिया. दोनों ही पक्ष भिंडरांवालें का इस्तेमाल एक-दूसरे के खिलाफ करना चाहते थे. पर लाभ उग्रवादियों ने ही उठाया.

पर खालिस्तान के लिए दलील देने वाले लोगों को यह बात समझनी होगी कि अगर पंजाब एक सिख बहुल राज्य बना दिया जाए तो फिर हिंदू हिंदू बहुल राष्ट्र की मांग करने से क्यों पीछे रहेंगे? और फिर ईसाई केरल राज्य या नगालैंड क्यों नहीं चाहेंगे?

गोविंदाचार्य: हमने कभी भी धर्म-राज्य की वकालत नहीं की. हमारे विचार से राष्ट्र और राष्ट्रीयता दो अलग अवधारणाएं हैं. हिंदुत्व और धर्मतंत्र को नहीं मिलाया जा सकता.

डांग: खालिस्तान अपने राजनैतिक लक्ष्य को 'खालसा का बोल बाला' के रूप में परिभाषित करता है, जिसका मतलब है सिख धर्म-राज्य.

सुखजिंदर सिंह: समस्या का मूल कारण जानने के लिए आपको विभाजन पूर्व के दिनों में जाना होगा. 40 के दशक में जब पाकिस्तान बना तो सिख दुविधा में थे.

जवाहरलाल नेहरू ने तो यहां तक कहा था, "पंजाब के बहादुर सिख विशेष सम्मान के हकदार हैं." इस बात पर गौर कीजिए: उन्होंने 'बहादुर सिख' कहा, न कि पंजाबी. हिंदू और मुसलमान दोनों ही सिखों को अपनी तरफ मिलाना चाहते थे, इसलिए नेहरू ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिखों की पीठ थपथपा दी. नेहरू नहीं चाहते थे कि भारत की सीमाएं दिल्ली के बहुत करीब हों. सिख भारत आ गए और अपने ही राज्य में अल्पसंख्यक बन गए.

सो, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यह पंजाब समस्या नहीं है. यह सिख समस्या है. जब तक हम इस पर सहमत नहीं होते, इसे हल नहीं कर सकते.

भाटिया: अखिल भारतीय सेवाओं में उनका प्रतिशत क्या है?

सुखजिंदर सिंह: यह बेमतलब है.

भाटिया: मतलब है. आखिरकार आप अपना हिसाब-किताब प्रतिनिधित्व के प्रतिशत के आधार पर ही तो करते हैं...

सुखजिंदर सिंह: मेरा कहना है कि आप मुझे सत्ता दीजिए, और मैं सभी हिंदुओं को शांत कर दूंगा.

सुबोधकांत सहाय: श्रीमती गांधी ने पंजाब का इस्तेमाल नया वोट बैंक बनाने के लिए किया. एक प्रमुख राजनैतिक पार्टी के रूप में अकाली दल धार्मिक मुद्दों पर आश्रित था. लेकिन उनके लिए भी भिंडरांवाले सरीखे कट्टर धार्मिक नेता से लड़ना मुश्किल था.

पाकिस्तानी दखलंदाजी का स्तर अकल्पनीय है. हम न तो इसके लिए तैयार हैं और न ही राजनैतिक माध्यमों से इसका मुकाबला कर सकते हैं. इसके पहले अंग्रेज सिखों के मामले में हस्तक्षेप करते थे और अब पाकिस्तान कर रहा है.

अल्पसंख्यक वोटों को प्रभावित करना हमारी चुनावी रणनीतियों का हिस्सा रहा है. मेरा मानना है कि सिख जो सवाल उठा रहे हैं, वे जम्मू कश्मीर की मौजूदा स्थितियों जैसे हैं. वहां मुसलमानों पर पाकिस्तानी होने का ठप्पा लगाया जा रहा है. उनका कहना है कि उन्होंने 48 की लड़ाई लड़ी, उन्होंने मुहम्मद अली जिन्ना को नामंजूर कर दिया, उन्होंने, 65 और 71 की लड़ाइयां लड़ीं और उस समय उन्हें पाकिस्तानी नहीं कहा गया. सो, आज उन्हें कैसे पाकिस्तानी कहा जा सकता है? इसी तरह, भारत के लिए अपने प्राणों की आहुति देने में सिख सबसे आगे रहे. लेकिन आज उनकी विश्वसनीयता संदिग्ध हो गई है.

सुखजिंदर सिंह: तो फिर सैन्य अधिकारियों को ऑपरेशन ब्लूस्टार के लिए, इस कमरे जितनी जगह पर कब्जे के लिए पुरस्कार क्यों मिलना चाहिए. यदि आपको इतनी छोटी जगह पर कब्जा करने के लिए

सुखजिंदर सिंह
वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अकाली दल (बादल); तीन अकाली सरकारों में वरिष्ठ मंत्री

"यह पंजाब समस्या नहीं, सिख समस्या है. यदि हम इस पर सहमत नहीं होते, हल नहीं ढूंढ़ सकते. आंदोलन पंजाबी नहीं, सिख कर रहे हैं"

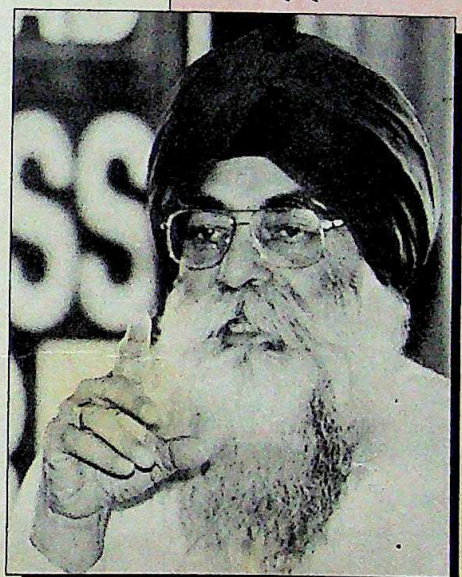

"दिल्ली के पास सुरक्षा बलों के अलावा कोई हल नहीं है. सहाय की सरकार हमें 10 रु. नहीं दे पाई पर उसने रातोरात सुरक्षा बलों की 10 कंपनियां जरूर भेज दी"

"मुझे सत्ता सौंप दीजिए, मैं हिंदुओं को शांत कर दूंगा"

टैंकों, तोपों और हेलीकॉप्टरों वाली सेना की जरूरत पड़ती है तो क्या आप मानते हैं कि उन अधिकारियों को बहादुर कहा जा सकता है? यह शर्मनाक है.

सहाय: अधिकारियों के बारे में बात करना अनुचित है क्योंकि वे आदेशों के तहत काम करते हैं. जिम्मेदार तो राजनैतिक नेता हैं.

सुखजिंदर सिंह: क्या सरकार ने ज्यादती करने वालों को दंडित किया? उलटे आप उन्हें अशोक कक्ष में पदकों से विभूषित कर रहे हैं. दोनों पलड़े बराबर रखने की कार्रवाई से हमारा कोई भला नहीं होने वाला है. मसलन, लोंगोवाल समझौते को ही लें. तत्कालीन प्रधानमंत्री जो कुछ कह रहे थे, पंजाब के इंका नेता उससे उलट कह रहे थे.

सहाय: पंजाब की राजनीति में सबसे बड़ी बाधा यह है कि अकाली जब भी केंद्र से बातचीत करने की कोशिश करते हैं, वे निश्चित रुख नहीं अपनाते क्योंकि उन्हें सरकारी करार दिए जाने का भय रहता है.

हमारी लड़ाई अकेले आतंकवादियों से नहीं है बल्कि उन सफेदपोश नौकरशाहों से भी है जो पंजाब के संघर्ष को दिल्ली में भुनाने की कोशिश कर रहे हैं. यदि हम उन आतंकवादियों से, जिन्हें कुछ विदेशी ताकतों ने रास्ते से भटका दिया है, सीधे और ईमानदारी से बात करें तो मुझे पक्का भरोसा है कि वे सही रास्ते पर आ जाएंगे.

अब, इस चुनाव प्रक्रिया से, जो हमने शुरू की, यही साबित होता है कि लोकतांत्रिक संघर्ष में विश्वास करने वालों की संख्या उन लोगों से हजार गुना ज्यादा है जो उसमें विश्वास नहीं करते.

इन लोगों में वे भी हैं जो खालिस्तान की बात करते हैं. दुर्भाग्य से समूची प्रक्रिया फिर से 1984 की स्थिति में पहुंचा दी गई है. क्यों तर्क दिया जा रहा है कि यदि कुछ सिख चुनाव जीतकर विधानसभा में आ गए तो वे खालिस्तान की घोषणा करेंगे? जो भी ऐसा सोच रहा है वह सिखों को राष्ट्रीय मुख्यधारा से काटने की साजिश में शामिल हो रहा है. यदि राज्य के हर घर में सेना भी तैनात कर दी जाए तो भय नहीं खत्म होगा.

दिलबीर सिंह: मैं अमृतसर में रहता हूं और मै जानता हूं कि आनंदपुर साहिब प्रस्ताव अब मुद्दा नहीं रह गया है. यह 1980-81 में मुद्दा था और मैं उन लोगों में था जिन्होंने कहा था कि आनंदपुर साहिब प्रस्ताव राजनैतिक प्रतिज्ञा पत्र है न कि धार्मिक कर्मकांड. मुद्दा यह था कि वे 'सिखों का बोल बाला' कहते रहे हैं. ये ऐसे मुद्दे हैं जिन्हें बातचीत से निबटाया जा सकता था.

ऑपरेशन ब्लूस्टार के दौरान, मैं उन लोगों में से था जिन्होंने जनरल के.एस. बराड़ से कहा कि आपकी सेना कुछ बहुत ही घृणित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराधों में शामिल है. यह सुनकर जनरल बराड़ ने कहा, "उपायुक्त से बात कीजिए." उन लोगों ने वही किया जो आम तौर पर किसी पराए देश में किया जाता है. खैर, हम सिख ऑपरेशन ब्लूस्टार की घटनाओं और स्वर्ण मंदिर में सेना के घुसने की बात भूल सकते हैं लेकिन दिल्ली में हमारे साथ जो घटा उसे हम कभी नहीं भूल सकते. हमसे कहा जाता है कि अलगाववादी आंदोलन 1947 के बाद एक सिख ने शुरू किया. लेकिन हकीकत यह है कि यह आंदोलन आर्य समाज ने 1873 में लाहौर की चूना मंडी में शुद्धि आंदोलन के जरिए शुरू किया. उन्होंने मान लिया कि सिख हिंदू नहीं हैं. इसके जवाब में सिंह सभा आंदोलन, चीफ खालसा दीवान आंदोलन चलाया गया. आज पंजाब के शहरी इलाके पूरी तरह से द्विभाषी बना दिए गए हैं.

सुखजिंदर सिंह: यही नहीं, हमें अलग-थलग करने के लिए हिंदुओं ने बड़ी धूर्तता से अपनी मातृभाषा पंजाबी को त्याग दिया. संसद में जब वोट देने का समय आया तो सिखों ने हिंदी के पक्ष में वोट दिया, अंग्रेजी के नहीं. लेकिन पंजाब के हिंदुओं ने सोचा कि पंजाबी गली-कूचों की उजड्ड भाषा है.

पंजाब बनने के बाद 25-26 वर्षों में अकाली दल को कभी भी अपना कार्यकाल पूरा करने का मौका नहीं दिया गया. केंद्र अपने राज्यपाल नियुक्त करता था और पिछली सरकार की नीतियों को उलट देता था. पिछले 40 वर्षों में जनादेश को कार्यान्वित नहीं होने दिया गया. चंडीगढ़ को पंजाब से छीन लिया गया. यदि इसे सौंप दिया जाता तो क्या देश की एकता भंग हो जाती?

नैयर: इसमें कोई शक नहीं कि पंजाब समस्या सिख समस्या है. लेकिन सुखजिंदर सिंह की यह बात गलत है कि सिखों ने जानबूझकर, सोच-समझकर और अभिप्रेरित होकर भारत के साथ अपनी नियति को जोड़ दिया. 'द इंडियन ट्रांसफर ऑफ पॉपुलेशन' नामक किताब में कहा गया है कि मास्टर तारा सिंह, ज्ञानी प्रताप सिंह और सरदार बलदेव सिंह वायसराय से यह कहने के लिए गए कि वे अलग राज्य चाहते हैं. लेकिन उनसे कहा गया कि वे जो कर सकते हैं करें. सो, उनका मानना था कि भारत के साथ ही रहना ठीक है. यदि मेरी याददाश्त ठीक है तो एक सिख नेता लिपि तक पर समझौते के लिए तैयार थे, बशर्ते हिंदू पंजाबी को मंजूर कर लेते. आर्य समाजियों ने इसे मंजूर नहीं किया. और न ही उनका प्रतिनिधित्व करने वाले हिंदुओं ने. लेकिन मेरा कहना है कि सिख उस सीमा तक जाने को तैयार थे. दूसरी बड़ी घटना अकाली आंदोलन था जिसमें भिंडरांवाले ने 1980 से भाग लिया.

मेरा मानना है कि अकाली भी उतने ही दोषी हैं. वे नहीं चाहते थे कि गैर-सिख पंजाबी उस आंदोलन में भाग लें. उन्होंने अमृतसर गुरद्वारे के बाहर आंदोलन शुरू किया ताकि उन्हें धार्मिक समर्थन मिले. हम दो बार समाधान के करीब पहुंच गए थे. एक बार उस समय जब सरदार स्वर्ण सिंह ने लगभग सारा मामला सुलझा दिया था. लेकिन श्रीमती गांधी ने आखिरी क्षण में अपना इरादा बदल दिया, कारण चाहे कुछ भी रहा हो. तीसरी महत्वपूर्ण घटना 1984 में ऑपरेशन ब्लूस्टार के 10 दिन पहले हुई. यहां एक पंजाब समूह है जो बहुत सक्रिय है. पी.वी. नरसिंह राव ने, जो अब प्रधानमंत्री हैं, अपने घर पर हमें बुलाया और कहा, "कोई फार्मूला निकालो." हमने व्यापक सलाह-मशविरे के बाद एक फार्मूला तैयार किया. बादल, लोंगोवाल, हर कोई वहां मौजूद था और वे चंडीगढ़ के बंटवारे तक पर सहमत हो गए थे. लेकिन ऐसा नहीं हुआ. सो, किसने अपने को अपमानित महसूस किया? सिर्फ सिखों ने ही नहीं, बल्कि हर पंजाबी ने.

बाद में मैंने जनरल बराड़ से बातचीत की और पाया कि जब हमसे समझौते की रूपरेखा तैयार करने को कहा गया, उसके एक पखवाड़े पहले ही सैनिकों को अमृतसर में प्रवेश करने का आदेश दिया जा चुका था. यह चालबाजी थी. और फिर 1984 के दंगे शुरू हुए....

आर.के. धवन ने ऑपरेशन ब्लूस्टार के दो-तीन दिन बाद मुझे फोन किया, "मुझे श्रीमती गांधी ने आपसे यह पूछने के लिए कहा है कि अब क्या किया जाना चाहिए." मैंने कहा, "कृपया उनसे यह कहिए कि जिस दिन सेना ने स्वर्ण मंदिर में प्रवेश किया, उसी दिन खालिस्तान की नींव पड़ गई."

हरिंदर सिंह खालसा: मेरी समझ से संत भिंडरांवाले ने ऐसा कहा था.

सुखजिंदर सिंह: भिंडरांवाले ने यह बात सार्वजनिक रूप से कही जबकि उन्होंने (नैयर ने) व्यक्तिगत बातचीत में.

नैयर: इसलिए सरकार या व्यवस्था जो करती है और देश जो चाहता है, कृपया उसके अंतर को समझने की कोशिश कीजिए. मैंने अमृतसर में इन लड़कों से बातचीत की थी. उन्होंने यह तो कहा कि उनका विश्वास उठ गया है पर उन लोगों ने माना कि वे आठ आना हिंदू ही हैं.

वसंत साठे
इंका नेता,
पूर्व केंद्रीय मंत्री

"जहां सिख बहुसंख्या में हैं, वहां वे राज करें, पर भारतीय ढांचे के अंदर ही"

"जब मैं सूचना और प्रसारणमंत्री था तो मैंने इंदिरा जी से कहा कि भिंडरांवाले के समर्थकों को दूरदर्शन पर अपनी बात कहने दी जाए. तब अन्य साथियों ने कहा, "साठे जी, वह हमारा बंदा है. हम उसे अकालियों को तोड़ने के लिए ही लाए हैं. जिस दिन हम चाहेंगे, उसे चुप करा देंगे"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलग-थलग पड़ने का कारण

हरिंदर खालसा: मैं उस सुनियोजित सैनिक हमले को ऑपरेशन ब्लूस्टार कहकर कम करने के पक्ष में नहीं हूं. अगर हम समस्या की जड़ में जाना चाहते हैं तो हमें शब्दों के चयन में सावधानी बरतनी होगी.

उस समय मैं नार्वे में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहा था जब मंदिर पर आक्रमण हुआ तो मुझ पर 'नजर' रखने के लिए पड़ोस के देश में तैनात भारतीय राजदूत वहां आ गए. मैं समझता हूं कि उन्हें सरकार ने कहा कि चूंकि मैं सिख हूं इसलिए देशद्रोह का फितूर मेरे दिमाग में आ सकता है. उस समय मेरे साढ़े छह साल के बेटे ने इंदिरा गांधी के लिए अपशब्द निकाला और कहा कि वे हमारे मंदिर को जालियांवाला बाग बनाने की कोशिश कर रही हैं. भारतीय विदेश सेवा का वह अधिकारी पंजाबी था और उसने बच्चे से कहा, "चिंता न कीजिए, सिर्फ मंदिर के शिखर पर ही सोने की पतरी है. सरदार जी, हम आपको चार-पांच किलो सोना दे देंगे और सब कुछ दुरुस्त हो जाएगा." तब मैंने कहा, "आप यह 'हम' क्यों कह रहे हैं." उनके पास कोई जवाब नहीं था और वे चले गए.

बाद में तत्कालीन पर्यावरण राज्यमंत्री दिग्विजय सिंह वहां 15 करोड़ क्रोनर (45 करोड़ रु.) की सहायता मांगने के लिए भिक्षा पात्र लेकर पहुंचे. यह राशि गंगा सफाई योजना के लिए थी. उन्होंने नार्वे की पर्यावरण मंत्री को बड़े श्रद्धा भाव से बताया कि इस राशि का उपयोग हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं को तुष्ट करने के लिए किया जाएगा. तब नार्वे की मंत्री ने पूछा, "सिखों की धार्मिक भावनाओं के बारे में क्या हो रहा है?" इस पर दिग्विजय सिंह निरुत्तर हो गए. इसके बाद मैं उन्हें उस होटल में ले गया जहां वे ठहरे थे और उनसे कहा, "मंत्री जी, अपनी सुरक्षा के प्रति सावधान रहिएगा." इस पर उन्होंने जो कहा उसे ज्यों का त्यों बता रहा हूं—"ये (अपशब्द) इधर भी हैं. हमने उनको ऐसा सबक सिखाया है, इतना मारा है...." मैंने पूछा, "आखिर आप किसकी बात कर रहे हैं?" उनका जवाब था, "ये सिख!" इस सबके बावजूद मुझे खुशी है कि आम हिंदू और सिख इस स्तर तक कभी नहीं उतरे. कभी नहीं. इस मंत्री से मेरी बात 16 या 17 जून 1984 को हुई और पड़ोसी देश के वे राजदूत उनसे मेरी बात 5 या 6 जून को हुई थी.

भाटिया: क्या वे अब भी राजदूत हैं?

खालसा: हां, वे अब भी हैं.

वसंत साठे: मैं यहां इंका की ओर से नहीं बोल रहा हूं. 1980 में जब मैं सूचना तथा प्रसारणमंत्री था, भिंडरांवाले साहब अभी चर्चा में आए ही थे, या यूं कहा जाए कि उन्हें जानबूझकर चर्चा में लाया जा रहा था. मैं इंदिरा जी के पास गया और कहा कि इसकी राह निकाली जा सकती है. मैं इन भाई साहबों को दूरदर्शन पर आमंत्रित करता हूं और उन्हें पूरे देश के सामने अपनी बात रखने दीजिए. इंदिरा जी ने कहा, "आपकी बात में कुछ दम लगता है. लेकिन बेहतर होगा कि आप अपने अन्य साथियों से भी बात कर लें." यही उनकी शैली थी. जब मैंने उन लोगों से बात की तो उन्होंने कहा, "साठे जी, आप आदर्शवादी हैं. इस शख्स को इतना महत्व न दीजिए. वह हमारा अपना ही आदमी है. जिस दिन हम चाहेंगे, उसे ठीक कर देंगे. हमने उसे अकालियों को तोड़ने के लिए ही उभारा है. आप महाराष्ट्र के हैं. आप नहीं समझेंगे. पंजाब समस्या को हमारे जिम्मे छोड़ दीजिए." और जब यह नासूर बन गया तो हम सिर धुनने लगे. हम लोगों ने अंग्रेजों से एक बात सीखी है कि अगर किसी समस्या का हल न निकाल सको तो उसे चलते रहने दो. देश की सभी समस्याओं के प्रति हमारा दृष्टिकोण यही रहा.

जब आप असंतुष्ट हों और आपको लगे कि छोटे मुद्दे उठाने से ही आपका हित आसानी से सधता है तो आप ऐसा करने के पचासों कारण ढूंढ़ सकते हैं. प्रदेशों का विभाजन भाषागत आधार पर हुआ है. अब हम आंध्र, महाराष्ट्र, असम, नगालैंड और मिजोरम हर जगह समस्याएं पाते हैं. हमारा मानना है कि अगर हम भारत को एक रखना चाहते हैं तो हमें बड़ी संख्या में छोटे छोटे राज्यों का महासंघ बनाना होगा. छोटे राज्य ज्यादा तेजी से प्रगति करते हैं. पंजाब बांट दिया गया और इसके सभी तीनों राज्य पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश बड़ी तेजी से विकसित हुए. इसके विपरीत, जिस इलाके से मैं हूं, उस विदर्भ को महाराष्ट्र में शामिल कर दिया गया

"मैंने इंदिरा गांधी से कहा था, "सिखों की मांगें छोटी पोटली जैसी हैं. इसे खोल डालिए वरना यह बढ़ती ही जाएगी"

"संघीय ढांचे को तुरंत लागू करना चाहिए वरना आज पंजाब है तो कल कोई और राज्य उठ खड़ा होगा"

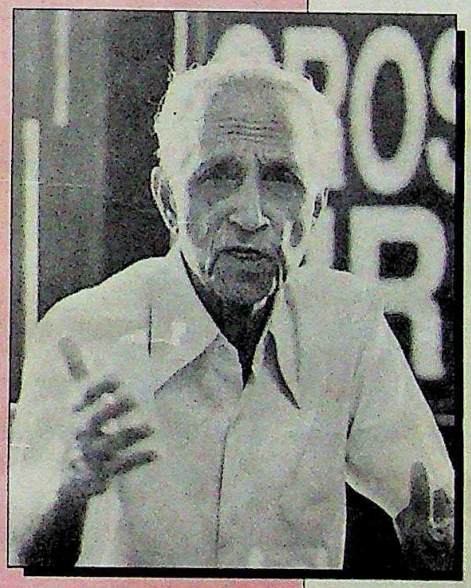

"मैंने आरएसएस के एक नेता से कहा कि सिखों को हिंदू न कहें. वे सहमत हो गए पर अगले ही दिन उलटी बात की"

प्रेम भाटिया
पंजाब के प्रमुख अंग्रेजी अखबार 'ट्रिब्यून' के पूर्व मुख्य संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वह पीछे घिसट रहा है. अगर कल वहां कोई आंदोलन खड़ा होता है तो उसका क्या आधार होगा? हमारी कोई विशिष्ट पहचान नहीं है, विदर्भ के बारे में कोई विशेष बात नहीं है. लेकिन हम वजह तो ढूंढ़ सकते हैं. हम कह सकते हैं कि हम शोषित हैं.

पंजाब की समस्या है क्या? पंजाबी पाकिस्तान में उर्दू लिपि में लिखी जाती है और भारत में गुरमुखी में. अगर हम चाहें तो इसे देवनागरी में भी लिख सकते हैं. हर हाल में वह पंजाबी ही रहेगी. मैं महाराष्ट्र का हूं. गुरु नामदेव जी की वाणी मराठी की मोढ़ी लिपि में लिपि गई है जबकि आज मराठी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है. मोढ़ी लिपि गुरमुखी के बहुत करीब है. और गुरु नामदेव जी की वाणी गुरग्रंथ साहिब में भी शामिल की गई है.

इसी तरह सिख पहचान का मुद्दा भी उठाया गया है. मैंने इतिहास पढ़ा तो पाया कि प्रारंभ में सिख धर्म ऐसा नहीं था जिस रूप में आज है. गुरु गोविंद सिंह ने समर्पित योद्धाओं की सेना खड़ी की जिसका मूल उद्देश्य बेकसूरों की रक्षा करना और अन्याय से लड़ना था. गुरु जी ने सैनिकों को एक वेश और अलग पहचान दी. लेकिन मेरा मानना है कि इस अलग पहचान से किसी तरह का असमंजस नहीं पैदा होना चाहिए. आज जब आप सिख कहते हैं तो क्या इससे सिर्फ दाढ़ी रखने वाले और पगड़ी धारण करने वालों का ही बोध होना चाहिए? फिर, उन मोने लोगों को क्या कहेंगे जिनकी गुरग्रंथ साहिब में गहरी आस्था है और गुरवाणी और इसके दर्शन के प्रति वे श्रद्धालु हैं? क्या ये लोग सिख नहीं हैं? आजकल सिख समुदाय की विशेष वेशभूषा के लिए कुछ कट्टर नियम बनाने की कोशिश हो रही है. मेरा कहना है कि इस विराट राष्ट्र में कई तरह की अस्मिताएं निकल सकती हैं अगर हम टूटना ही चाहते हैं तो कोई हमें रोक नहीं सकता. अब सवाल है क्या यह राष्ट्र हमारे फायदे के लिए है?

मेरा तो कहना है कि सिख जहां भी बहुसंख्यक हों, शासन करें. इस तरह के राज्य को मंजूर कर लीजिए. एक व्यापक संदर्भ में संघीय ढांचा बनाइए और राज्यों को बृहत्तर स्वायत्तता दीजिए.

सुनिए, मैं यह बात संसद में पहले ही कह चुका हूं. चाहे कोई तमिलनाडु का हो या बोडोलैंड का, यदि वह यह कहता है कि वह इस देश का नागरिक नहीं है, या वे इस देश से अलग होना चाहते हैं तो इस तरह के लोगों को मेरा सीधा-सादा जवाब यह है कि यदि आप कहते हैं कि आप इस देश के नागरिक नहीं हैं तो इस देश में आपके लिए कोई जगह नहीं है. इस देश से निकल जाओ, पाकिस्तान से हाथ मिला लो, सेना खड़ी करो, गृह युद्ध शुरू करो, लड़ो और देश का जो भी हिस्सा जीत सको, ले लो. दूसरा कोई रास्ता नहीं है. यदि आप हिंदुस्तान में रहना चाहते हैं और यदि आप यहां की नागरिकता मंजूर करते हैं तो आप जो भी चाहते हैं, मिलेगा. इसे हासिल करने के लिए बंदूक की जरूरत नहीं है, सिर्फ 'बैलट' (मतपत्र) ही काफी है. सिख राज्य का नाम बताइए और मैं उस पर विचार करने के लिए तैयार हूं. मुझे सिर्फ यह कहना है कि तर्कसंगत बात को मानिए, तभी यह देश बचेगा.

सुखजिंदर सिंह: नहीं,नहीं, मैंने तो नाम बदलने की बात की....

साठे: वे सिर्फ नाम बदलकर ही खुश नहीं हैं. वे तो भारत से अलग होना चाहते हैं.

डांग: मैं बताना चाहता हूं कि वे (सुखजिंदर सिंह) कांग्रेस का हस्तक्षेप नहीं चाहते और इससे मैं सहमत हूं. लेकिन वे यह भी चाहते हैं कि गुरद्वारों का दुरुपयोग करने यानी धर्म और राजनीति का घालमेल करने पर अकालियों का एकाधिकार हो. यही अकाली करते आए हैं. मगर जब कांग्रेस यही कुछ करती है तो वे उसे गलत कहते हैं.

खालसा: क्या आप चाहते हैं कि सरकार गुरद्वारों के निर्माण पर पाबंदी लगा दे?

डांग: न, एकदम नहीं. मेरा कहना है कि राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक किसी तरह का भेदभाव नहीं हुआ. सुखजिंदर जी ने नेहरू का उद्धरण दिया है. क्या कोई मानेगा कि नेहरू धर्म-राज्य का पक्ष लेते? जब तारा सिंह ने सिख राज्य की मांग की तो उन्हें सिखों का समर्थन नहीं मिला था. मुस्लिम लीग तो मुसलमानों को अपने पक्ष में कर पाई पर तारा सिंह ऐसा नहीं कर पाए.

पंजाब की हालत कश्मीर जैसी नहीं है, यहां बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक समुदायों के बीच फर्क मामूली ही है. दरअसल, आजादी के बाद अकालियों ने सिर्फ पंजाबी सूबे की मांग नहीं की बल्कि उनकी मांग सिख राज्य की थी. मेरे अनुसार यह बहुत खतरनाक मांग है. अगर आप सिख राज्य की मांग मान लेते हैं तो क्या कश्मीर, नगालैंड, मिजोरम में धर्म-राज्य की मांग ठुकरा सकते हैं? यही नहीं, हम आरएसएस और भाजपा के फंदे में भी पड़ जाएंगे जिनकी मांग होगी कि भारत में चूंकि 85 फीसदी हिंदू हैं इसलिए देश हिंदू धर्म-राज्य ही होना चाहिए. उस हालत में सभी

"ब्लूस्टार के दस दिन पहले पी.वी. नरसिंह राव ने कहा, 'कोई फार्मूला दीजिए'. हमने फार्मूला बनाया. उस बैठक में बादल, लोंगोवाल सब लोग थे. बाद में मुझे पता चला कि हमसे राह ढूंढ़ने की बात कहने के 15 दिन पहले ही सैनिकों को अमृतसर पहुंचने का आदेश दे दिया गया था"

"ब्लूस्टार के चंद दिन बाद धवन ने मुझे फोन किया. मैंने उनसे कहा, इंदिरा गांधी से कहिए कि जिस दिन सेना स्वर्णमंदिर में घुसी, उसी दिन खालिस्तान की नींव पड़ गई"

कुलदीप नैयर
पत्रकार और लंदन में पूर्व उच्चायुक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्पसंख्यक सिख, मुस्लिम, ईसाई, पारसी, यहां तक अनुसूचित जाति के हिंदू भी दोयम दर्जे के नागरिक बन जाएंगे. तब भारत टूट जाएगा या कट्टरवादी हिंदू राज्य बन जाएगा.

सरकार निष्पक्ष और स्वतंत्र चुनाव कराने का जोखिम नहीं ले पाती क्योंकि नतीजे नकारात्मक ही होंगे. मैं तो चाहता था कि चुनाव ऐन मौके पर रद्द नहीं किए जाने चाहिए थे. जब रेलयात्रियों की हत्या हुई या जब तेजपुर में बादल गुट के उम्मीदवार की हत्या हुई तभी रद्द कर दिए जाने थे. पर चुनाव होते तो जो लोग आज मानते हैं कि यह कदम ठीक है, वे निराश ही होते. यह 1983 में असम के चुनावों सरीखा ही होता जिसमें 300 या 1000 वोट पाने वाले उम्मीदवार भी जीत गए थे.

ब्लैक थंडर ऑपरेशन के बाद जरूर ऐसी स्थिति बनी थी जिसमें स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव हो सकते थे. उस समय आतंकवादी छुप रहे थे. फिर वैसी स्थिति क्यों नहीं पैदा की जा सकती?

सुखजिंदर सिंह: यह तो समय की बरबादी है. उनका (सतपाल डांग का) राजनैतिक दर्शन अब काम नहीं आएगा. आनंदपुर साहिब प्रस्तावों में ऐसे केंद्र की बात है जो राज्यों के पास भिक्षापात्र लेकर जाया करे.

नैयर: भारत में किसी को भी भिक्षा पात्र लेकर नहीं जाना चाहिए...

सहाय: मेरे अनुसार यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि पंजाब के बारे में आपके जो भी सिद्धांत हों, इससे समस्या सुलझाने में देश को मदद नहीं मिल रही है. यह कहना गलत है कि पंजाब में चुनाव कराने में चंद्रशेखर का कोई निहित स्वार्थ है. मैं पूरे भरोसे के साथ कह सकता हूं कि हमने किसी उग्रवादी से व्यक्तिगत रूप से बातचीत नहीं की बल्कि उनके समर्थकों से ही बात की. मैं इसे दर्ज कराना चाहता हूं.

डांग: कुछ उग्रवादियों को बातचीत के लिए पाकिस्तान से भी लाया गया.

सहाय: यह आपकी सूचना है.

डांग: किसी ने इसका खंडन नहीं किया है. पंजाब के सभी अखबारों ने....

सहाय: ओह आपकी पंजाब की प्रेस! हम लोगों पर कई आरोप लगाए गए. यह भी कि मैं भी आतंकवादियों से मिला हुआ था. तो फिर मेरी कार क्यों उड़ाई गई?

डांग: अखबारों ने पाकिस्तान से लाए गए आतंकवादी नेताओं के नाम भी छापे.

नैयर: जब मैं लंदन में उच्चायुक्त था तो मैंने कुछ लोगों को सचमुच देश के प्रति अनुरक्त पाया. वे अपने गांवों की याद करते पर लंबे समय से वे वहां गए नहीं थे. मुझे दूसरा एहसास यह हुआ कि 1984 के दंगों से

दिलबीर सिंह
अमृतसर के प्रमुख उद्योगपति, चीफ खालसा दीवान से संबंधित

"सिख अगर खुद को राष्ट्र कहते हैं तो यह कोई खतरनाक बात नहीं है. हम उन्हें साथ लेकर चल सकते हैं"

"हम सिख ऑपरेशन ब्लूस्टार को तो भूल सकते हैं पर दिल्ली में जो कुछ हुआ उसे कभी भी नहीं भूल सकते"

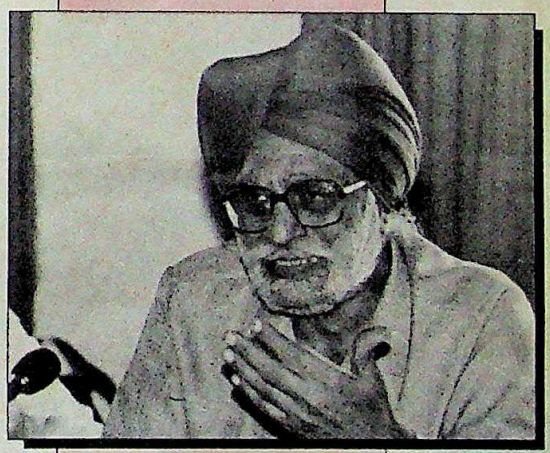

"आज शहरी पंजाब में दो अलग-अलग भाषाएं चलती हैं. सिख इसे कैसे सहन कर सकते हैं? डीएवी कॉलेजों में छात्र हिंदी में बोलते-पढ़ते हैं, पंजाबी में नहीं"

लगभग हर कोई ग्रस्त है. सात साल बीत गए और एक भी कसूरवार को फांसी नहीं लगी. आखिरकार 3,000 लोगों की इस शहर में मौत हुई. मैंने उनसे कहा, "अगर मैं दिसंबर के अंत तक आपको न्याय नहीं दिला पाया तो मैं इस्तीफा दे दूंगा." संयोग से मैं नवंबर में ही वापस आ गया. मैंने उनसे संघीय ढांचे के बारे में बात की और पूछा कि क्या इतना पर्याप्त होगा. उन लोगों ने कहा नहीं. वे चाहते थे कि देश उनकी संस्कृति, परंपरा, पहचान की सुरक्षा की गारंटी दे. मैंने उनसे कहा कि मैं भाजपा का समर्थन भी जुटा लूंगा. और अगर आप लोग संसद के दोनों सदनों से एकमत प्रस्ताव चाहते हों तो मैं उसकी भी व्यवस्था कर लूंगा. क्या इससे बात बन जाएगी? फिर भी उन्होंने न ही कहा. वे चाहते थे कि किसी तरह की संवैधानिक गारंटी मिले. मुझे दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि मेरे लौट आने से यह बात बीच में ही टूट गई.

1984 के दंगे के दोषियों को सजा जरूर मिलनी चाहिए. दूसरे, राजीव-लोंगोवाल संधि पर फौरन एकतरफा अमल होना चाहिए. तीसरे, चुनाव तुरंत करवाने चाहिए और लोगों को अपनी पसंद के नुमाइंदे चुनने का मौका मिलना चाहिए.

डांग: चुनाव के सिलसिले में मेरा मानना है कि मुकाबले में दो मुख्य पार्टियां हैं—अकाली दल और कांग्रेस (इ). भाजपा और कम्युनिस्ट किसी गिनती में नहीं हैं. इंका भी निष्पक्ष आधार पर चुनाव में भाग ले सके, यह पक्का बनाने के लिए चुनाव स्थगित करने के बजाए रद्द ही कर दिया जाना चाहिए. और स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव के हालात बनाने के लिए नए सिरे से प्रक्रिया शुरू की जानी चाहिए. अगर मुमकिन हो तो बेहतर है इसे 10 नवंबर से पहले ही शुरू किया जाए.

इसके अलावा, मैं 1984 के दंगों के दोषियों को अधिकतम सजा दिए जाने का हामी हूं पर अभी तक कुछ साधारण व्यक्तियों को ही सजा हुई है. बड़े लोगों का क्या हुआ? हमें इस बाबत संसद में प्रस्ताव पास करना चाहिए.

सुखजिंदर सिंह: उग्रवादियों में भी आपस में काफी बदसूलूकी होती है. लेकिन सिखों के दिलों में हीनभावना घर कर गई है. मैं कहता हूं कि अगर जनमत संग्रह करवाया जाए तो उग्रवादियों को 95 फीसदी वोट मिलेंगे.

डांग: मेरे खयाल से इनकी बात में दम है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

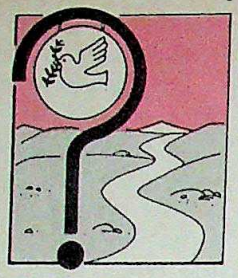

क्या कोई रास्ता भी है?

अमरिंदर सिंह: मैं सुखजिंदर सिंह के नजरिए से पूरी तरह असहमत हूं. अलगाववाद तो इस संघर्ष में शामिल कुछ लोगों के दिमागों में ही है. गांवों का आम आदमी तो अपनी जिंदगी जीने में दिलचस्पी रखता है. मेरी पार्टी ने इस पूरे अभियान को सिर्फ आर्थिक, गैर-राजनैतिक मंच पर लड़ा है. हमें भारी जनसमर्थन मिला और यह सिर्फ पटियाला तक ही सीमित नहीं है.

पर मेरे खयाल में मूल रूप से होना चाहिए कि हमें कुछ वित्तीय अधिकार दिए जाएं. राष्ट्रीय तौर पर और खास तौर पर पंजाब में हमारे लिए आर्थिक मुद्दे एकदम अलग हैं. अगर हमें वित्तीय अधिकार मिल जाएं तो उग्रवाद की यह समस्या काफी कुछ खत्म हो जाने की संभावना है. क्योंकि इस आंदोलन की रीढ़ पढ़े-लिखे बेरोजगार हैं. हर साल 2,40,000 बच्चे 18-20 साल की उम्र पार कर जाते हैं और हम उन्हें रोजगार नहीं दे सकते. दूसरे, अस्थिरता के इस पूरे मामले में हम पाकिस्तान की भूमिका को कम करके आंक रहे हैं. वह पंजाब में देशद्रोह को हवा दे रहा है. चंद्रशेखर के प्रधानमंत्री बनने के बाद मैं उनसे मिलने गया था. वे उस समय पाक प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से मिलकर आए ही थे. मैंने उनसे कहा, "कुछ कीजिए." वे उत्तेजित हो उठे और बोले, "क्यों? क्यों, आप यह कहते रहते हैं कि पाकिस्तान का इसमें हाथ है? आपको कैसे मालूम कि इसमें उसका हाथ है?" मैंने कहा मैं जानता हूं क्योंकि 1985 से मैं सरकार में रहा हूं." वे बोले, "तो क्या? हमारा भी सिंध के मामले में हाथ है." मैंने कहा, "ठीक है, पर इसका यह मतलब नहीं है कि वे यहां जो कर रहे हैं आप उसे नजरंदाज कर दें." मैं मानता हूं, मैं आपे से बाहर हो गया. मैंने कह दिया, "क्या आपको लगता है ये सारी एके-47 राइफलें मंडी गोविंदगढ़ में बन रही हैं." उन्होंने कहा, "आप जाइए. आपके चिंतित होने की कोई बात नहीं. आपकी पूरी हिफाजत की जाएगी." मैं बोला, "मैं अपने बारे में चिंतित नहीं हूं, और आप मेरी हिफाजत करें इसकी भी कोई जरूरत नहीं है. यह तो मेरा ही राज्य है." मुझे नहीं लगता कि कोई कूटनीति अब चल पाएगी. कदाचित हम अमेरिका से अपने रिश्तों का इस्तेमाल कर सकते हैं, अगर कुछ नहीं होता तो हमें ताकत का इस्तेमाल करना होगा, धमकी देनी होगी. और कोई चारा नहीं.

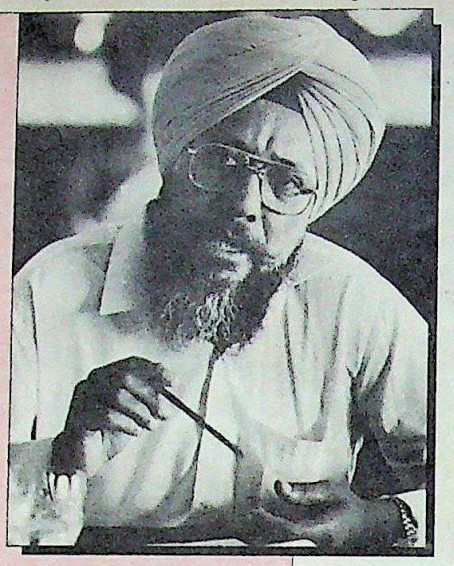

हरिंदर सिंह खालसा
नार्वे में पूर्व राजनयिक, ब्लूस्टार के बाद इस्तीफा; मानवाधिकार कार्यकर्ता और चुनाव में उम्मीदवार

"अकालियों ने संसद पर फौज भेजी या सरकार ने स्वर्ण मंदिर में सेना भेजी?"

"आज पंजाबियों को इसकी परवाह नहीं कि वे खालिस्तान में हैं या हिंदुस्तान में या किसी और 'स्तान' में. उन्हें तो सिर्फ शांति चाहिए"

"पाकिस्तान पर दोष क्यों? पाकिस्तान ने मंदिर पर हमला नहीं किया या न ही उसने भिंडरांवाले को पैदा किया"

हम सिख लोग बंदूकों से प्यार करते हैं. यह हमारी परंपरा, हमारी विरासत का हिस्सा है. सिख लड़के से आप जमीन ले लीजिए, फिर देखिए वह बंदूक से सत्ता हथिया लेगा. उसके पास रोजगार नहीं है इसलिए बैंक या किसी व्यक्ति को लूटना या किसी को बंधक बनाकर उसके बदले फिरौती वसूलना आसान है. किलेबंदी करना या लोगों को मारना तो कोई विकल्प नहीं है. याद कीजिए जब रिबेरो यहां थे, उन्होंने 'ए' श्रेणी के 137 आतंकवादियों की सूची तैयार की थी. ऐसे हजारों लोग हैं. हर बार आप एक आदमी को मारते हैं, समस्या उलझती जाती है.

और खालिस्तान का हौवा इसी बेचैनी का लक्षण है. सरदार सुखजिंदर सिंह भी इससे नहीं बच सकते. अकाली दल कार्यसमिति की एक बैठक में वे उन लोगों में से थे जिन्होंने कहा था कि खालिस्तान ही समस्या का एकमात्र समाधान है. व्यास नदी के दो पुल उड़ा दीजिए या कुछ वैसा ही कीजिए, खालिस्तान बन जाएगा.

सुखजिंदर सिंह: यह झूठा आरोप है, एकदम झूठा. मैंने यह कभी नहीं कहा था. आप तो उस बैठक में थे ही नहीं.

अमरिंदर सिंह: मैं वहां नहीं था लेकिन जो लोग थे, उन्होंने मुझे बताया.

सुखजिंदर सिंह: आप अलगाववाद की अपीलों को इतनी गंभीरता से नहीं ले सकते. खालिस्तान सत्ता पाने का हमारा औजार है.

अमरिंदर सिंह: असल में यह हमारे दोहरे मापदंड हैं जिन्होंने इन नौजवानों को भड़काया है. आखिर यह पीढ़ी उन लोगों की बातें सुनकर ही बड़ी हुई है जो आज अकाली दल में हैं. सिमरनजीत सिंह मान आज खालिस्तान के लिए जनमत संग्रह की बात करते हैं. इसकी मांग उन्होंने बैसाखी के दिन 13 अप्रैल को की थी. और एक महीने बाद ही उनके सभी उम्मीदवारों ने वाहेगुरु के नाम पर संविधान के दायरे में भारत की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने की कसम खाई थी. उनका नारा है: प्रभुसत्तासंपन्न राज्यों का संघ, जो उन्होंने जालंधर की एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेस कांफ्रेंस के दौरान दिया था और जिस पर उनकी पार्टी ने मुहर लगाई थी. यह महज एक राजनैतिक दांव था और एक महीने बाद इसे वापस भी ले लिया गया. इसका मतलब यह हुआ कि सुखजिंदर जी आप दोहरा मानदंड अपना रहे हैं जो हमारी जनता और हमारे जवानों की जिंदगी तबाह कर रहा है. इन लोगों को जब लगता है कि सिमरनजीत सिंह मान का सूरज चढ़ रहा है तो वे उनके साथ हो लेते हैं और जब लगता है उनके सितारे गर्दिश में हैं तो वे उनका साथ छोड़ देते हैं.

इस स्थिति में तो चुनाव नहीं हो सकते.

सुखजिंदर सिंहः आप अपनी बात कीजिए. आपने तो कई पार्टियां बदली हैं. आप तो कांग्रेसी थे.

अमरिंदर सिंहः ऑपरेशन ब्लूस्टार का मामला छोड़ दीजिए तो मैं अभी तक कांग्रेसी ही हूं.

डांगः अकालियों पर कौन भरोसा कर सकता है? एक दिन वे काली पगड़ी पहनते हैं, अगले दिन सफेद, फिर पीली और कभी नीली.

अमरिंदर सिंहः अब दूसरी बातों की तरफ भी रुख करें. मसलन, समझौता बातचीत को लें. आप किसी से भी बातचीत नहीं कर सकते. तथ्य यह है कि पंजाब में चार अकाली दल हैं, तीन स्टुडेंट्स फेडरेशनें, तीन पंथक कमेटियां और ढेर सारे उग्रवादी संगठन. हवा में बातचीत की कोशिशें की जाती हैं. सतीश शर्मा पंजाब के बारे में कुछ नहीं जानते. उन्हें राज्य के मामलों का प्रभारी बना दिया गया और उन्होंने रोडे नाम का पत्ता चला. वी.पी. सिंह सरकार ने अतिंदरपाल सिंह पर दांव लगाया, जो कभी पंजाब में नहीं रहे. वे कानपुर या भोपाल में ही रहे हैं. अगर वे मनजीत सिंह धड़े से समझौता कर भी लें तो उसकी कौन सुनने जा रहा है? किसे चिंता है? कोई नहीं सुनेगा, मैं भी नहीं सुनूंगा.

सिर्फ घोषणा कर दीजिए कि चंडीगढ़ हमारी राजधानी है. यह पंजाब के लिए ही बनी थी. हरियाणा को अपनी राजधानी बनाने दीजिए. हमारे साथ उसकी हिस्सेदारी क्यों? और राजधानी के बदले जमीन लेना तो तर्कसंगत नहीं है. अगर सरकार पैसा देना चाहती है तो दे. या हमें पंजाबी भाषी इलाका दे दीजिए. चाहे तो आयोग बना दीजिए. पर यह आयोग की तरह काम करे, सरकारी विभाग की तरह नहीं.

"इंका भिंडरांवाले को राजनीति में ले आई और अकालियों ने उन्हें अकाल तखत पर बिठाया लेकिन फायदा तो सिर्फ उग्रवादियों को हुआ"

■

"खालिस्तान ने हिंदू राज की धारणा को बल दिया और रामराज्य खालिस्तान की मांग को सही ठहराता है"

■

"ब्लैक थंडर ऑपरेशन के बाद निष्पक्ष चुनाव कराए जा सकते थे. फिर वैसी स्थिति बनाई जाए"

सतपाल डांग
पंजाब के प्रमुख माकपा नेता, उग्रवाद विरोधी कार्यकर्ता

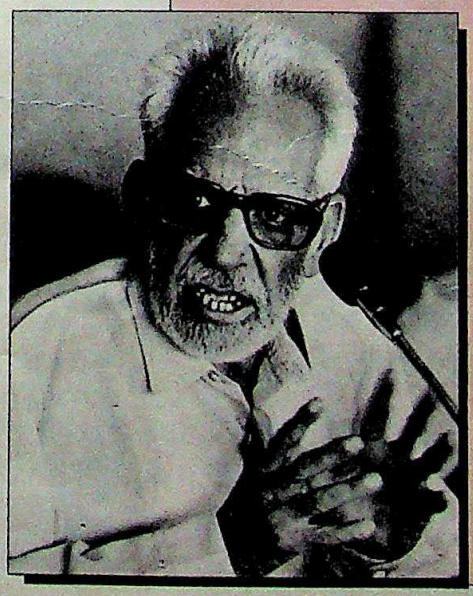

दिल्ली दरबार के नजरिए और पंजाब की जमीनी सचाइयों के बीच यही फर्क है. सरकार को सूचना देने वाली एजेंसियां और खुफिया ब्यूरो इन सचाइयों से पूरी तरह कटे हुए हैं. सरकार भी इन सिखों पर निर्भर है, जो पंजाब के बाहर के हैं और जिनका दावा है कि वे इस राज्य के भीतर होने वाली हर बात की जानकारी रखते हैं. मेरा आशय जनरल अरोड़ा और जस्टिस नरूला जैसे लोगों से है, जो अचानक ही चुनाव की मांग करने लगे हैं. सरकार उनकी बातों को अलौकिक सचाई की तरह स्वीकार करती है. अगर हम अकालियों पर विश्वास नहीं है तो हमारे यहां एक ऐसा राज्यपाल भेजिए जो आपको हालात की सही जानकारी दे सके. पर पार्टियों ने तो चुनाव बाद के गणित के लिहाज से सोचा. यह सोचा कि त्रिशंकु संसद की स्थिति में कौन उनका समर्थन करेगा, आदि-आदि. हम भी चुनाव के लिए बेताब थे, इतने बेताब कि 24 उम्मीदवारों की हत्या हो गई और हम मुंह देखते रहे. और फिर भी सरकार ने पर्याप्त सुरक्षा मुहैया नहीं की. यह ठीक है कि अमृतसर, संगरूर और रोपड़ के कुछ इलाकों में 20 फीसदी लोग ही वोट डालने आते. वहां बहुत दहशत है. हर गुरद्वारे से उग्रवादी आकर कहते कि अगर उनकी उंगली पर मतदान का निशान होगा तो उंगलियां काट डाली जाएंगी. पर बठिंडा और पटियाला में 60 फीसदी लोग वोट डालने आते.

गोविंदाचार्यः मेरे विचार से इस बात को कम करके आंकना कि उग्रवाद बगावत की हद तक बढ़ चुका है, घातक होगा. साझा सांस्कृतिक विरासत हमारी बहुत बड़ी संपत्ति है इसलिए हमें सरकारी, गैर-सरकारी, राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक तौर पर मिलाजुला दृष्टिकोण अपनाना होगा. सरकार का एकीकृत स्वरूप पांच स्तरीय शासन का होता है. अधिकारों के हस्तांतरण का सिर्फ यह मतलब नहीं कि अधिकारों को केंद्र या राज्य तक सीमित रखा जाए. ये पंचायत स्तर तक पहुंचने चाहिए, गरीब से गरीब सिख तक, जहां स्थानीय उम्मीदवार उसका अपना ही भाई होता है. छोटे राज्यों के विचार की भाजपा इसी रूप में हिमायत करती है. धार्मिक पहचान को बनाए रखना और उसे बढ़ावा देना तो ठीक है. पर इसे राजनैतिक पहचान और आत्मनिर्णय के अधिकार का राक्षस बनने से रोकना होगा.

कोई भी सभ्य नागरिक इस बात से इनकार नहीं करेगा कि 1984 के दंगों की निंदा की जानी चाहिए और दोषियों को सजा दी जानी चाहिए. जरूरत इस बात की है कि हालात के बारे में निष्पक्ष रवैया अपनाया जाए और अगर जरूरत हो तो सत्ता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तामझाम से ऊपर उठकर राजनीति, सामाजिक असमानताओं और आर्थिक उन्नति के बारे में एकतरफा कार्रवाई की जाए. हम और पार्टियों से शायद बेहतर हों लेकिन प्रतिस्पर्धी राजनीति की वजह से कई बाधाएं हैं.

डांग: मैं इस बात से सहमत हूं कि संसद हालात को सुधारने के नजरिए से संविधान में संशोधन के वास्ते एक समिति नियुक्त करे. फिर, पाकिस्तान का हाथ होने की बात आती है. एके-47 या एके-75 भारत में नहीं बनती. मेरा मानना है कि सरकार को एक अध्यादेश जारी करके घोषणा कर देनी चाहिए कि वे सारे हथियार जो इस देश में नहीं बने हैं, दो हफ्ते के अंदर सरकार को सौंप दिए जाएं. इसका उल्लंघन करने वालों को ऐसी कड़ी सजा दी जानी चाहिए कि दूसरे सबक ले सकें.

सुखजिंदर सिंह: क्या किसी को कभी सजा मिलती है?

डांग: निवारक दंड की व्यवस्था कर दीजिए, कर्फ्यू लगा दीजिए और तलाशी लेकर हथियार ढूंढ़िए. भिंडरांवाले का हौवा खड़ा करने में जिन पार्टियों का योगदान रहा है, वे जिम्मेदारी को स्वीकार करें. जिम्मेदारी केंद्र की भी है जिसने भिंडरांवाले को ताकतवर बनाया और अकाली नेतृत्व की भी जिसने उसे अकाल तख्त में पहुंचाकर दरबार साहिब को हथियारबंद किला बना दिया.

खालसा: माफ कीजिएगा, क्या अकालियों ने संसद में सेना भेजी, या सरकार ने स्वर्ण मंदिर में सेना भेजी?

डांग: दरबार साहिब और अकाल तख्त की अवमानना किसने की? सरकार और अकाली नेतृत्व दोनों ने. बाकी बातों में मैं अमरिंदर सिंह से सहमत हूं, हालांकि वे महाराजा हैं और मैं कम्युनिस्ट हूं.

खालसा: मैं दोनों में कुछ भी नहीं हूं. मैं एक आम सिख हूं, राजनीतिक नहीं. पंजाब के लोगों को आज इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे खालिस्तान में रह रहे हैं, हिंदुस्तान में या किसी और 'स्तान' में. उन्होंने सोचा था कि उनके पास इस देश में शांति से जीने का अधिकार है. अब यह अधिकार छीना जा रहा है. जब उग्रवादी किसी को मार देते हैं तो सुर्खियों में छा जाते हैं. और जब सरकारी सेनाएं किसी को मारती हैं तो इसे आसानी से नकार दिया जाता है. दो महीने पहले पुलिस ने नूरपूर बेदी थाने के अंतर्गत मेरे परिवार के पांच सदस्यों—मेरा भतीजा, उसकी बीवी, तीन साल की बेटी, डेढ़ साल का बेटा और मेरी भाभी—को मार दिया. इस बारे में कुछ नहीं हुआ.

ऑपरेशन ब्लूस्टार जैसी कार्रवाइयों से उग्रवाद बढ़ता ही है. पुलिस गैर-सिखों को नहीं मारती. यह उसका सोचा-समझा तरीका है. पाकिस्तान को दोषी ठहराने का कोई मतलब नहीं. उसने स्वर्ण मंदिर पर हमला नहीं किया न ही उसने भिंडरांवाले को पैदा किया. इसलिए पहले हम अपने घर को संभालें. उग्र राष्ट्रवाद से हम अलगाववाद के सिवा कहीं नहीं पहुंचेंगे.

मेरा सुझाव है कि मंजीत दल या रोडे दल या ऐसे किसी और दल का हौवा खड़ा करने के बजाए सरकार को एकता और अखंडता की अपनी तथाकथित प्रतिबद्धता पर अडिग होना चाहिए. तुरत-फुरत कोई समझौता करने, ऐसे आयोग नियुक्त करने जो पहले से ही तय नतीजों पर पहुंच जाते हैं और बदनाम राजीव-लोंगोवाल समझौते पर जोर देने से कुछ नहीं होगा. इसके बजाए सरकार पंजाब को खालिस्तान छोड़कर उसके सारे अधिकार दे. मानव जीवन से पवित्र कुछ नहीं होता, कुछ भी नहीं.

पंजाब की जनता के लिए संविधान का कोई मतलब नहीं है. उन्हें इसकी अभिव्यक्ति कहीं नहीं दिखती. या फिर, सरकार को यह घोषणा कर देनी चाहिए कि पंजाब भारत का हिस्सा नहीं है इसलिए संविधान के तहत वह राहत पाने का हकदार नहीं है. पहला कदम पुलिस के दमनकारी ढांचे को खत्म करना होना चाहिए, जिसकी लुटेरों और आतंकवादियों से सांठगांठ है, उग्रवादियों से नहीं. मैं इन दोनों में फर्क करने की कोशिश कर रहा हूं. आतंकवादी मारक दस्तों को संरक्षण देने वाले वे लोग हैं जिन्होंने उग्रवादियों का भेष धर रखा है. ऐसे ही लोगों ने बडीवाल और रायपुर में 76 हिंदुओं को मारा था.

चुनाव न हों, यह पुलिस के हित में था. राज्य के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी खुले तौर पर कहते हैं कि वे राज्य में चुनाव नहीं चाहते. सरकार एक चालाक व्यापारी वाली सौदेबाजी ही करती आई है. यहां तक कि इंका के ही कमजोर संस्करण चंद्रशेखर सरकार की कोशिश भी इसी श्रेणी में आती है. चंडीगढ़ पंजाब के लिए बना था. किसी भी हालत में यह पाकिस्तान में शामिल नहीं होगा, यह यहीं रहेगा. सरकार को हरियाणा के तुष्टिकरण से बाज आना चाहिए क्योंकि उन्मादी हिंदू लॉबी, कुछ कट्टरपंथी अपने संकीर्ण हितों के लिए इस दरार का इसका इस्तेमाल करना चाहते हैं. अगर ऐसा नहीं हुआ तो मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि एक दिन पूरा का पूरा देश बिखर जाएगा.

"जब-जब राजनैतिक शून्य होता है, अराजकता जन्म लेती है जैसा कि पंजाब में लगातार हो रहा है"

"सिख भिखमंगे नहीं हैं. आज उनकी विश्वसनीयता संदिग्ध हो गई है. हमें उनमें भरोसा बहाल करना होगा"

"राज्यपाल से तड़के 3 बजे चुनाव स्थगित करने को कहा गया. न मुझे और न ही चंद्रशेखर को इसकी जानकारी थी"

सुबोधकांत सहाय
सजपा सरकार में गृह राज्यमंत्री और लुधियाना से संसदीय उम्मीदवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाटियाः इस गुत्थी को सुलझाने के लिए दो समांतर प्रक्रियाएं हैं. पहली यह कि सरकार पर इसे सर्वोच्च प्राथमिकता वाला विषय बनाने के लिए दबाव डाला जाना चाहिए; और दूसरे, सरकार को सारे राजनैतिक दलों को अपने साथ लेना चाहिए.

संविधान अब पुराना पड़ गया है. इस बहस में भी यही जाहिर हुआ कि देश को एकात्म ढंग से नहीं चलाया जा सकता. संघवाद को लागू करना ही होगा, वरना आज अगर पंजाब है तो कल कोई दूसरा राज्य होगा.

दिलबीर सिंहः आप किसे दोषी ठहराते हैं? मुझे तो कोई भी पूरी तरह निर्दोष नहीं दिखता—न कांग्रेस, न अकाली नेतृत्व. आज सात अकाली दल हैं और आठ सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन. जब प्रकाश सिंह बादल जेल से बाहर आए तो वे सिखों को उनकी उम्मीदों वाला नेतृत्व नहीं दे सके. मैंने उद्योगों में भी देखा है कि जब दो यूनियनें होती हैं तो चार मांगें भी आ जाती हैं. एक यूनियन होती है तो मांग भी एक ही रहती है. इसलिए एक यूनियन से बात करना हमेशा बेहतर होता है.

पर एक ऐसा मुद्दा है जिसे सरकार बिना किसी ज्यादा ब्यौरे में गए खुद-ब-खुद लागू कर सकती है और वह है राज्य के लिए एकमुश्त आर्थिक योजना. राजीव गांधी और दूसरे लोगों द्वारा घोषित योजनाओं से कुछ नहीं हुआ. क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि 1980 में पंजाब में केंद्र का निवेश दो फीसदी था जो अब घटकर 0.8 फीसदी रह गया है? आर्थिक योजनाएं बनती रही हैं पर उद्योग में राष्ट्रीय निवेश घट रहा है. पंजाब से बैंकों ने करीब 10,000 करोड़ रु. उधार लिए हैं पर निवेश सिर्फ 4,325 करोड़ रु. का किया है. करीब 6,000 करोड़ रु. राज्य से निकाल लिए गए. इसके विपरीत महाराष्ट्र में 110 फीसदी निवेश हुआ है. हमें हमारा पैसा दे दीजिए और मैं यकीन दिलाता हूं कि हमारे हिंदू दोस्त नए उद्योग लगाएंगे. पंजाब में कपास की 25 लाख गांठें पैदा होती हैं और खपत सिर्फ 6 लाख की है. हम कोयंबतूर को कपास भेजते हैं और वहां से सूत मंगवाते हैं. औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों के 30,000 से ज्यादा डिप्लोमाधारी बेरोजगार हैं. उन्हें रोजगार दीजिए या वे बंदूक उठा लेंगे. हमें कपूरथला कोच फैक्ट्री मिली पर नौकरी के मामले में और सहायक इकाइयों के मामले में इससे कोई मदद नहीं मिली. इसके उलट हमें ढेर सारी बढ़िया कृषि योग्य जमीन से हाथ धोना पड़ गया है.

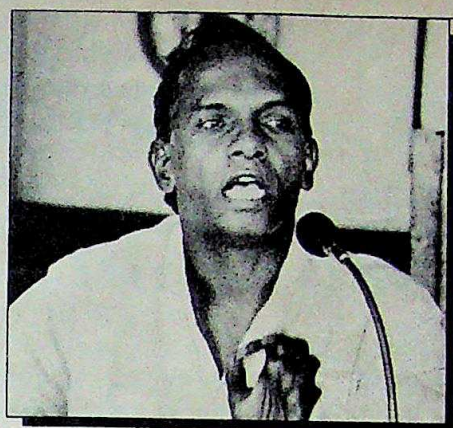

गोविंदाचार्य
भाजपा महासचिव, पार्टी के नीति-निर्धारकों में प्रमुख और विचारक

"भाजपा की एकता परस्पर आदर भाव पर आधारित धार्मिक सहिष्णुता पर निर्भर है, सिर्फ सहनशीलता पर ही नहीं."

"मैं समझता हूं कि सिखों को हिंदू कहने में ही बुद्धिमानी है क्योंकि ये दोनों मिलकर ही एक राष्ट्र बनते हैं"

"धार्मिक पहचान को सुरक्षित रखना और उसकी प्रगति एक बात है लेकिन इसे राजनैतिक पहचान या आत्मनिर्णय के अधिकार के दैत्य के रूप में नहीं उभारा जाना चाहिए"

सुखजिंदर सिंहः लेकिन जब वेतन देने के लिए पर्याप्त पैसे ही न हों तो सरकार क्या कर सकती है? उसे सोना बेचना होगा! यह त्रासदी देखिए. मिस्टर सहाय की कामचलाऊ सरकार हमें सख्त जरूरत पड़ने पर 10 रु. भी नहीं भेज सकती थी लेकिन विशेष उड़ानों से रातोरात उसने सैनिकों की 10 कंपनियां भेज दीं. सरकार हमें सिर्फ सैनिकों की कंपनियां दे सकती है. उसके पास केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल और सीमा सुरक्षा बल के अलावा कोई समाधान नहीं है. हम 'अनेकता में एकता' की आवाज भले ही बुलंद करते हैं लेकिन करते हैं ठीक इसका उलटा. हम एकता हासिल करने के लिए अनेकता को नष्ट कर रहे हैं.

दिलबीर सिंहः देखिए, किस तरह आम किसान तकलीफ उठा रहा है. उग्रवादी कहते हैं, "गन्ना उगाओ" ताकि वे गन्ने के खेतों में छिप सकें, जबकि पुलिस कहती है कि "गन्ना मत उगाओ." सो, इस बार हमारे यहां ज्यादा गन्ना नहीं हुआ. गन्ने की पेराई 15 जनवरी को बंद हो गई जबकि उसे 30 मार्च तक चलना चाहिए था.

सहायः मूल समस्या यह है कि विश्वास में किसे लिया जाए. 1983 के असम चुनाव को मिसाल के तौर पर पेश किया जा रहा है. असम के ताजा चुनावों पर क्यों नहीं गौर किया जाता. उल्फा लोगों की हत्याएं करता रहा था. फिर उन्होंने समझौता किया कि चुनाव शांतिपूर्वक होंगे और मार्च से हत्याएं नहीं हुईं. हम पंजाब के लोगों को भी क्यों नहीं इस तरह के विश्वास में ले सकते?

यदि आप चुनाव को रोकना चाहते हैं तो आपको राष्ट्रपति शासन को तर्कसंगत साबित करना चाहिए. यह भ्रष्टाचार का तथ्य है कि कुछ सचिव 10 निगमों के अध्यक्ष बन गए हैं और चुनाव का विरोध करने में उनका निहित स्वार्थ है. नागरिक प्रशासन ढह गया है.

हमारा कोई राजनैतिक प्रयोजन नहीं था. सजपा राज्य में अपनी सरकार बैठाने नहीं जा रही थी. निर्धारित समय से ठीक 24 घंटे पहले चुनाव स्थगित करने का चुनाव आयोग का फैसला दुर्भाग्यपूर्ण था. इस फैसले ने हमारी लोकतांत्रिक प्रक्रिया के सबसे बड़े संस्थान को नष्ट कर दिया. राज्यपाल को रात में 3 बजे फोन किया गया. मैं उस समय गृहमंत्री था. लेकिन मुझे इस बारे में खबर नहीं थी. यहां तक कि प्रधानमंत्री को भी इस बारे में नहीं मालूम था. यदि चुनाव आयुक्त सरकार के नाम पर, जो वस्तुतः है ही नहीं, फैसला करते हैं तो मैं पूछना चाहूंगा कि आप पंजाब के लोगों को क्या संकेत भेजना चाहते हैं? अब, सामान्यीकरण की, भाईचारे की प्रक्रिया तुरंत शुरू होनी चाहिए. यह उपयुक्त संकेत होगा. यही एकमात्र रास्ता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पी.वी. नरसिंह राव

अपना हाथ, सबका साथ

प्रधानमंत्री के कार्यालय में चौकड़ी का पुराना असर खत्म हो गया है और सारे काम सहजता और विकेंद्रित तरीके से होने लगे हैं

—जफर आगा और भास्कर रॉय

"राजीव को अपनी बात मनवाने की आदत थी. पी.वी. उदासीन हैं." "पी.वी. का आदर है. आतंक नहीं. वे किसी मुद्दे को समझा सकते हैं, प्रेरणा नहीं दे सकते." "राजीव के अधीन हम एकजुट टीम थे और सभी मंत्री उनसे डरते थे. अब लगता है कि केंद्रीय कमान खत्म हो गई है और सभी मंत्री स्वायत्तता का आनंद लेने लगे हैं." "राजीव अधीर-से थे. अकसर कुछ अक्खड़ भी. लेकिन अपने अनुयायियों को प्रेरित कर सकते थे. ये तो 11 बजे रात को ही सोने चले जाते हैं."

प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव द्वारा अपने कार्यकाल का दूसरा महीना शुरू करते ही इस तरह की तुलनाएं बढ़ गई हैं. ये तुलनाएं उनके ऐसे सहयोगी और सहायक निजी बातचीत में किया करते हैं जो पहले राजीव गांधी के साथ भी काम कर चुके हैं.

दोनों की काम करने की शैली में अंतर बहुत स्पष्ट है. काम की तेज रफ्तार, अधिक समय तक काम करते रहना और मंत्रियों के साथ मध्य रात्रि में होने वाली महत्वपूर्ण बैठकें, जो राजीव युग की विशेषताएं थीं, अब बीते दिनों की बातें हो गई हैं. नरसिंह राव देश को नए रास्ते पर भले ही ले जा रहे हों पर इस बदलाव के लिए काम की जैसी रफ्तार होनी चाहिए, वह नहीं दिखाई देती. हर मंत्री खुदमुख्तारी का लुत्फ उठा रहा है. अब कड़ी नजर रखने वाला कोई नहीं है. पहले प्रधानमंत्री कार्यालय में तैनात नौकरशाह और परदे के पीछे से सूत्र हिलाने वाले स्वयंभू सलाहकार हर मंत्रालय को नथकर रखते थे लेकिन नरसिंह राव ने आते ही गिरफ्त का जंजाल तोड़ दिया. वरिष्ठ सहयोगी अर्जुन सिंह उनकी शैली को "परामर्श के साथ काम" की शैली कहते हैं.

उन्होंने कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण कामों का भार अपने विश्वस्त साथियों को सौंपा हुआ है. जैसे, पुराने मित्र शंकरराव चह्वाण को पंजाब, जम्मू-कश्मीर और असम जैसे प्रदेशों की समस्या सुलझाने का कठिन काम दिया गया है. एक बार काम सौंप दिए जाने पर प्रायः पूरी जिम्मेवारी उस साथी के कंधों पर ही आ जाती है. वैसे तो फैसले सावधानी से लिए जाते हैं पर जल्दी होते हैं. जैसा कि अर्जुन सिंह बताते हैं, "एक बार मन बना लेने के बाद वे हिचकते नहीं हैं." मार्गरेट अल्वा कहती हैं, "अपनी उम्र के अधिकांश लोगों के स्वभाव के विपरीत वे नए सोच और विचारों के विरोधी नहीं है. वे बदली स्थितियों में खुद को बदलने की कोशिश करते हैं."

लेकिन इसके बावजूद वे पुरानी शैली के राजनेता हैं. वरिष्ठ अधिकारियों से टिप्पणियां या नीतिगत प्रपत्र लेना बहुधा उन्हें नहीं भाता. इसकी जगह वे राजनेताओं पर भरोसा करना पसंद करते हैं. मनमोहन सिंह, पी. चिदंबरम, अर्जुन सिंह और चह्वाण उनके मित्र सलाहकार साथी हैं और नई औद्योगिक नीति बनाने में इन सबसे काफी विचार-विमर्श किया गया. लेकिन राव ने अपनी कोई दरबार-मंडली नहीं बनाई है.

बाकी लोगों को भी उनके मनपसंद काम दिए गए हैं. सीताराम केसरी, गुलाम नबी आजाद और माखनलाल फोतेदार जैसे लोग अभी भी संकटमोचक की भूमिका निभा रहे हैं. जैसे जनता दल के असंतुष्ट नेता अजित सिंह के वी.पी. सिंह को कड़ी चिट्ठी लिखने से

नरसिंह राव का सत्ता तंत्र

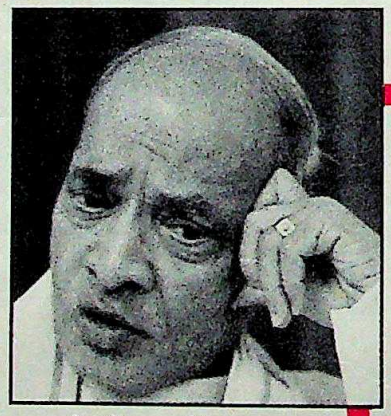

पी.वी. नरसिंह राव
प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री कार्यालय

अमरनाथ वर्मा
जयराम रमेश
आलोक प्रसाद

विचारक मंडली

मनमोहन सिंह

चिदंबरम

अर्जुन सिंह

शंकरराव चह्वाण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले फोतेदार उनके (अजित सिंह के) संपर्क में थे. आजाद और केसरी संसद में पार्टी के हितों की रक्षा के लिए भागदौड़ करते रहते हैं. शिवराज पाटिल को लोकसभा अध्यक्ष बनवाने के लिए भाजपा का समर्थन जुटाने का काम इन्होंने ही किया. प्रधानमंत्री के सखा कानून मंत्री विजय भास्कर रेड्डी और आंध्र के वरिष्ठ सांसद बागा रेड्डी उनके आंख-कान बने हुए हैं. भास्कर रेड्डी पर प्रधानमंत्री के लिए एक सुरक्षित संसदीय सीट ढूंढ़ने का अतिरिक्त काम भी है पर ये दोनों ही प्रधानमंत्री और सांसदों के बीच माध्यम हैं. इस बार अधिकांश सांसद दक्षिण से ही हैं. तेलुगु देशम समेत दूसरी पार्टियों के सांसदों से भी ये खास तौर पर संबंध रखे हुए हैं.

लेकिन भूलभुलैया जैसी उलझनभरी देश की राजनीति भी कई कामों में बाधक है. नरसिंह राव खुद तो परिवर्तनों की अहमियत समझ सकते हैं लेकिन वे पार्टी कार्यकर्ताओं को इसकी जरूरत नहीं समझा सकते. फिर पार्टीजनों में भारी आर्थिक बदलावों का समर्थन करने लायक प्रतिबद्धता अभी नहीं आई है. वे स्वयं इसके लिए तैयार भी नहीं हैं. अधिकांश को कोई भी संभावित असंतुष्ट नेता यह कहकर अपनी ओर मोड़ सकता है कि नई नीतियां नेहरू के आदर्शों से दूर जा रही हैं. और फिर आम कांग्रेसी कार्यकर्ता और बौद्धिक रुझान वाले प्रधानमंत्री के बीच का फासला और बढ़ सकता है. इसके अलावा नेहरू-गांधी परिवार के लोगों जैसी चमक-दमक, उन जैसे खूबसूरत बच्चों और आकर्षक पत्नी से कार्यकर्ताओं को चमत्कृत करने की स्थिति में न रहने के कारण भारी भरकम संगठन इंका को साथ ले चलना भी कठिन होगा.

लेकिन उन्हें सिर्फ निचले स्तर से आने वाली परेशानियों से ही नहीं निपटना है. श्रम राज्यमंत्री पी. राममूर्ति और फोतेदार ने भी औद्योगिक नीति का भारी विरोध किया. लेकिन नरसिंह राव ने उनसे निपटने में चालाकी दिखाई. बहुत मामूली बदलाव करके सबसे पहले उन्होंने इस पर पूरी मंत्रिपरिषद की मंजूरी ली और फिर कांग्रेस कार्यसमिति से समर्थन हासिल कर लिया. जैसा कि एक वरिष्ठ इंका नेता ने कहा, यह एक 'शानदार दांव' था. अब अगर नेता विरोध पर अड़े रहे तो उन्हें कार्यसमिति के अनुमोदित किए प्रस्ताव को उलटने के लिए अ.भा. कांग्रेस (इ) समिति का द्वार खटखटाना होगा.

पार्टी संगठन को चुस्त-दुरुस्त करने का काम नरसिंह राव की कार्यसूची में ऊपर होना चाहिए था. खास तौर से उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों के संगठन को, जहां इंका को भारी पराजय का सामना करना पड़ा है. लेकिन उनके अध्यक्ष पद छोड़ने या सांगठनिक चुनाव कराए जाने की कोई चर्चा नहीं सुनाई देती. अगर अभी पार्टी के चुनाव हुए तो पार्टी पदाधिकारियों की सत्ता सभी सांसद और विधायक मानें इसके लिए बड़े प्रयत्न करने होंगे. दलीय अनुशासन व्यवस्था भी सख्ती से लागू करनी होगी. राजस्थान के एक वरिष्ठ सांसद कहते हैं, "पार्टी पदों पर चुने गए लोगों को जनता के चुने गए प्रतिनिधियों से ज्यादा महत्व देने का प्रस्ताव मानना शायद बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं होगा."

राजीव अधीर-से थे लेकिन अपने अनुयायियों को प्रेरित कर सकते थे. दूसरी तरफ राव का आदर है, आतंक नहीं. लेकिन वे प्रेरणा नहीं दे सकते

पार्टी के भीतर ऐसे सौहार्दरहित वातावरण में राव यदि अपनी विश्वस्त टीम बनाने में जुटे हैं तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं. प्रधानमंत्री कार्यालय से जाने वाले निर्देशों की संख्या में जरूर कमी आई है, और यह मंत्रालयों के बीच सेतु नहीं बनने जा रहा. फिर भी नरसिंह राव ने इसमें सावधानी से छांटे गए लोग भरती किए हैं.

अमरनाथ वर्मा, जो बड़ी तेजी से नरसिंह राव के पी.सी. एलेक्जेंडर होने की ख्याति पाते जा रहे हैं, प्रधानमंत्री के प्रमुख सचिव हैं और कहा जाता है कि उनका चुनाव राव ने ही किया है. वे उन पर 'आश्रित' हैं. उनके निजी सचिव हैं विदेश सेवा के नौजवान अधिकारी आलोक प्रसाद, जो विदेश मंत्रालय में उनके अधीन काम कर चुके हैं. वे नरसिंह राव के दफ्तर के दूसरे प्रभावशाली सदस्य हैं. पर उनकी जगह शायद रामू दामोदरन लेंगे जो अभी राष्ट्रसंघ में सितंबर तक तैनात हैं. रामू भी नरसिंह राव के प्रिय अधिकारी हैं. चुनाव अभियान के दौरान नरसिंह राव के सबसे प्रमुख सहयोगी रहे जयराम रमेश को विशेष कार्य अधिकारी बनाया गया है. रमेश प्रधानमंत्री के भाषण तैयार करते और मीडिया से संबंधित मसलों पर ध्यान देते हैं.

लेकिन कुल मिलाकर उन्होंने अपने बड़े नौकरशाहों की स्थिति में कोई भारी फेरबदल नहीं किया है. एक सचिव कहते हैं, "प्रधानमंत्री नौकरशाही को खौफजदा नहीं करना चाहते थे." राजीव के जमाने की चौकड़ी के एक सदस्य ने वर्तमान वित्त सचिव को हटाकर बंबई के एक औद्योगिक घराने के प्रिय अधिकारी को लाना चाहा लेकिन वे नाकाम रहे. इसी प्रकार रोमेश भंडारी और हरकिशन लाल भगत जैसे नेताओं के दबाव के बावजूद दिल्ली के उप-राज्यपाल मार्कंडेय सिंह अभी भी अपने पद पर बने हुए हैं.

भले ही नरसिंह राव को इंका के सूत्रधारों का समर्थन प्राप्त नहीं हो लेकिन वे नए-पुराने लोगों के परस्पर आश्रित खेमे के आधार पर टिके रहने की कोशिश रहे हैं.

चार्ट: बी.के. शर्मा

संकटमोचक

सीताराम केसरी

गुलाम नबी आजाद

माखनलाल फोतेदार

आंख और कान

विजय भास्कर रेड्डी

बागा रेड्डी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइसेंस की बजाए नोट

आयातित वस्तुओं के शौकीन लोगों के लिए अगले महीने एक नई मुद्रा जारी की जाएगी. एक्जिम स्क्रिप कही जाने वाली इस मुद्रा का अस्पष्ट-सा ब्यौरा वाणिज्य राज्यमंत्री पी. चिदंबरम ने औद्योगिक सुधारों की घोषणा करते हुए दिया था. यह मुद्रा पुराने प्रतिपूर्ति लाइसेंस जिसे आरईपी (रेप) के नाम से ज्यादा जाना जाता है, की जगह लेगी. 'रेप' लाइसेंस जहां एक सरकारी दस्तावेज नजर आता था, एक्जिम स्क्रिप नोट की तरह लगेगी. हालांकि यह आकार में उससे बड़ी होगी और नासिक सिक्योरिटी प्रेस में ही छपेगी. 'रेप' के विपरीत नई मुद्रा की मूल्य श्रेणी इस तरह रखी जाएगी कि इसका लेनदेन और विनिमय सरलता से हो सके. सबसे कम मूल्य की मुद्रा एक लाख रु. की रखने की योजना है. जरूरत पड़ने पर कम मूल्य की मुद्रा भी जारी की जा सकती है. स्क्रिप की कीमत डॉलर की बजाए रुपयों में रखी जाएगी.

अंतरराष्ट्रीय अगुआ का विस्तार

भारत के पैकेजिंग उद्योग पर नजर रखने के दिन आ गए हैं. पैकेजिंग के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी स्विट्जरलैंड स्थित टेट्रा पैक यहां लंबी छलांग लगाने जा रहा है. यूरोपीय आयोग ने हाल ही में स्वीडन की खाद्य संसाधित करने वाली कंपनी अल्फा लावल को खरीदने के लिए इसके तीन अरब डॉलर के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है. इन दो बड़ी कंपनियों के एक होने का अंततः भारत पर ही असर पड़ेगा क्योंकि दोनों का बाजार यहां पहले से ही है. भारत में इस कंपनी के कामकाज को पुनर्संयोजित करने की रूपरेखा अभी तय नहीं हो पाई है. लेकिन इस क्षेत्र के उद्यमियों ने जान लिया है कि यदि आप खाद्य संसाधित करने के या पैकेजिंग उद्योग में हैं तो अपने काम की गाड़ी पटरी पर रखिए वरना जल्द ही बाहर कर दिए जाएंगे.

सिलाई से ही संतोष नहीं

सिंगर सिलाई मशीन तैयार करने वाली 'सुइंग मशीन कंपनी लिमिटेड' अब दूसरे क्षेत्रों में भी उतरने जा रही है. फूड प्रोसेसर बेचने में खासी सफलता हासिल करने के बाद अब यह बिजली की स्टीम प्रेस, कुकर, टोस्टर और ऐसे ही कुछ और उपकरण बनाएगी. इसकी योजना खुदरा बिक्री के जरिए धंधा करने की भी है. कारोबारी दुनिया का यह नरम रुख अब दिखने लगा है कि अपने स्रोतों को हर तरह से उपयोग किया जाए. देश भर में सुइंग कंपनी के 100 बिक्री केंद्र हैं, जहां से यह दूसरी कंपनियों के तैयार किए फ्रिज, वाशिंग मशीन और टेलीविजन सिंगर ब्रांड लगाकर बेचेगी.

अपनों की नियुक्ति की भागदौड़

केंद्रीय उत्पाद और सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीईसी) में तीन सदस्यों की खाली पड़ी जगहें भरने के लिए हाथ-पैर मारे जाने लगे हैं. अटकलें तो ये भी हैं कि प्रत्यक्ष कर केंद्रीय बोर्ड का भी नया अध्यक्ष नियुक्त किया जाएगा. सीबीईसी में जो स्थान खाली हैं वे सीमा शुल्क, तस्करी और मादक द्रव्य संभालने वाले विभागों के हैं. और हर व्यापारी चाहेगा कि इन पर उसके उम्मीदवार ही नियुक्त हों. लिहाजा—मुंबई, कलकत्ता और दिल्ली से उद्योगपति साऊथ ब्लॉक के लगातार चक्कर लगा रहे हैं. यह भी संयोग है कि इन विभागों के वे सभी वरिष्ठ नौकरशाह, जिन्हें वी.पी. सिंह सरकार ने निकाल दिया था, अब इन उद्योगपतियों की मदद से वापसी की कोशिश में लगे हैं.

छोटों ने भी पीछे छोड़ा

विश्व बैंक की विश्व विकास रिपोर्ट में निर्यात वृद्धि दरों की रोचक तुलना की गई है. रोचक इस मायने में कि रिपोर्ट यह बताती है कि विश्व बाजार में बढ़ती प्रतियोगिता का मुकाबला करने लिए भारत कैसी निर्यात नीतियां अपनाए. मसलन, 1980-89 में भारत का निर्यात प्रतिवर्ष औसतन 5.8 की

चार्ट: बी.के. शर्मा

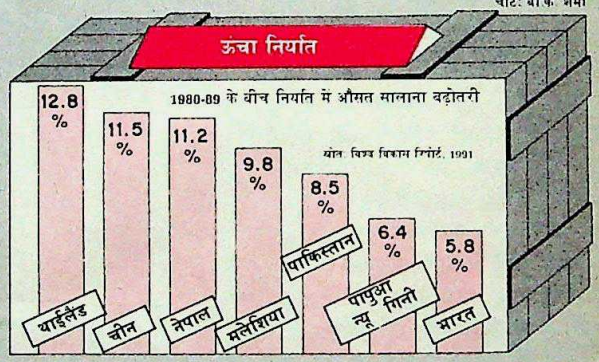

दर से बढ़ा. दूसरी ओर थाईलैंड की निर्यात विकास दर 12.8 फीसदी, चीन की 11.5 फीसदी. मलेशिया की 9.8 फीसदी और पाकिस्तान की 8.5 फीसदी रही. लेकिन भारत के लिए चौकन्ना होने की बात यह है कि अपेक्षाकृत कमजोर खिलाड़ियों ने भी उससे बेहतर वृद्धि दर दर्ज की. नेपाल जैसे देश की वृद्धि दर 11.2 फीसदी रही और पापुआ न्यू गुयाना ने भी भारत से ज्यादा—6.5 फीसदी वृद्धि दर दर्ज की.

सिर्फ जूते ही काफी नहीं

विस्तार की नई रणनीति के तहत नामी कपनी बाटा इंडिया निर्माण से हटकर विपणन पर बड़ा जोर दे रही है. हाल ही में इसने फन स्कूल टॉयज और बीएसए साइकिल के साथ विपणन समझौता किया है. अपनी खुदरा दुकानों वाली विपणन व्यवस्था को मजबूत करने के लिए इसने एक अलग कंपनी बनाई है. जो इसकी दुकानों और अचल संपत्ति की देखभाल करेगी. जाहिर है यह सब अन्य क्षेत्रों में विस्तार के लिए किया गया है. इसकी योजना कम मुनाफा देने वाले सस्ते जूतों की बजाए भारी मुनाफा देने वाले एडीडास स्पोर्ट्स शू पर ज्यादा जोर देने की है. स्टेंसिल, लुईम फिलिप और पार्क एवेन्यू से बढ़ती प्रतियोगिता के कारण यह अपनी तैयार वस्त्रों की रेंज एंबेसेडर को भी दुरुस्त कर रही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

मंदी नहीं आई

बाजार का मनोबल बरकरार

कायदे से तो 19 जुलाई को समाप्त हुए पखवाड़े में शेयर बाजार में तूफान मचा होना चाहिए था. कंपनियों के 1990-91 के कारोबार के जो परिणाम आ रहे हैं, वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि पिछला साल बहुत ही अच्छा था और मुनाफा सबसे अधिक हुआ. फिर, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से कर्ज मिलने की पक्की संभावना मनोबल बढ़ाने वाली है कि भारत अभी भुगतान संतुलन की अराजकता से पार पा सकता है. उधर, अगर भारत नीतियों में उदारता लाता है तो भारतीय उद्योग चमत्कार कर सकते हैं. साथ ही शेयर बाजार भी चमकेगा क्योंकि उद्योग बैंकों से नहीं, लोगों से ही पैसा उठाएंगे.

लेकिन मुद्दा यह है कि इन बातों का भी अर्थव्यवस्था के भूत और भविष्य काल से गहरा रिश्ता है जो संदेह भरा ही दिखता है. जैसे-जैसे पखवाड़ा खत्म होने

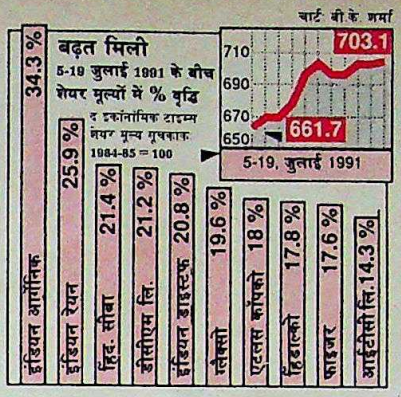

को आया, बहुचर्चित नई उद्योग नीति की घोषणा के कोई आसार नजर नहीं आए जबकि सरकार ने इसे 15 जुलाई तक घोषित करने का वादा किया था. इस बीच रेल बजट ने माल भाड़ा बढ़ा दिया है. आम तौर पर रेल मंत्रालय के ऐसे सुझावों पर बाजार में मंदी आ जाया करती थी पर इस बार ऐसा कुछ नहीं हुआ. बाजार ऊपर ही बढ़ता गया और इकॉनॉमिक टाइम्स शेयर मूल्य सूचकांक पिछले पखवाड़े से 14.4 अंक ऊपर चढ़कर 703.1 पर बंद हुआ.

बाजार पर इस अंदेशे का कोई असर नहीं जान पड़ता कि अगर निर्यातकों ने तुरंत अपना कारोबार बहुत नहीं बढ़ाया तो अवमूल्यन नुकसानदेह ही रह जाएगा. आयात का खर्च कम नहीं हुआ है और रुपए के अवमूल्यन का अर्थ सरकार और उद्योग द्वारा भारत का निर्यात बिल बढ़ाना था. सरकार का दावा है कि मुद्रास्फीति 10 फीसदी से कुछ ही ज्यादा होगी पर वास्तविक मुद्रास्फीति का अनुमान 16 फीसदी है.

लेकिन बुरी खबरों से आंख मूंदे शेयरों के दाम दनादन बढ़ते ही गए (देखें चार्ट और प्रमुख शेयरों के कारोबार की सूची). लेकिन यह जो उफान दिख रहा है वह असल में मंदड़ियों द्वारा तेजड़ियों का भेस धरने से आया है. वे शेयर उठाते जा रहे थे और मुनाफे पर कुछ शेयर निकाल भी रहे थे लेकिन इस ताक में बैठे थे कि केंद्रीय बजट के बाद अगर कीमतें गिरीं तो वे कुछ सस्ती खरीद करें. और फिर कीमत चढ़ाकर बिक्री वाला चक्र चलाएं.

यही भारतीय शेयर बाजार के काम का ढंग है. लेकिन अगर यह चढ़ाव अर्थव्यवस्था के भविष्य और सरकारी उदारीकरण में निवेशक का भरोसा बताता है तो यह कुछ जल्दबाजी लगती है. रुपए के अवमूल्यन और व्यापार कानून में बदलाव शुरुआती कदम हैं. उसके बाद के कदम अभी उठते नहीं लगते.

जमा स्टॉक

	1991 ऊंचा	1991 नीचा	1991 बंद 19.7.91	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	162.50	109.00	162.00	16.00+
एसो.सीमेंट	2780.00	1300.00	2580.00	190.00+
एशियन पेंट्स	267.50	215.00	240.00	6.25+
एटलस कोप्को	89.00	42.00	85.00	13.00+
बजाज ऑटो	680.00	500.00	590.00	15.00+
बड़ौदा रेयॉन	630.00	400.00	565.00	120.00+
बाटा इंडिया	93.00	72.00	83.50	3.50+
बल्लारपुर	309.00	228.00	284.00	2.00+
बिरला जूट	297.00	168.00	291.00	4.00−
ब्लो प्लास्ट	155.00	40.00	122.50	15.00−
बांबे डाइंग	245.00	150.00	207.50	10.00+
बिटा.इंडिया	160.00	112.00	156.00	16.00+
बुक बांड	172.00	116.00	138.00	8.00−
कैडबरी इंडिया	187.50	132.50	163.75	11.25+
कैस्ट्रोल इंडिया	370.00	162.50	362.50	13.75+
सेंचुरी टेक्सटाइल्स	6525.00	3625.00	6340.00	15.00+
कोलगेट पामो.	347.50	250.00	332.50	7.50+
सायनामिड	155.00	76.25	145.00	17.50+
डीसीएम	300.00	123.00	217.00	38.00+
डनलप	65.25	46.50	56.00	1.00+
ईआई होटल्स	55.00	35.00	55.00	10.00+
एस्कार्ट्स	172.00	127.00	149.50	3.90+
फिनो. केबल्स	260.00	140.00	197.50	12.50+
गरवारे नाइलोन	43.75	27.00	37.00	7.00+
जी.ई. शिपिंग	81.00	25.00	78.25	0.25−
गुज.स्टेट फर्ट.	221.25	150.00	217.50	21.25+
गासिम इंडिया	261.00	167.50	251.00	12.00+
गुज.अंबुजा	186.25	90.00	185.50	15.50+
हिंदु.एल्यू.	307.50	200.00	306.25	46.25+
हिंदु.सीबा	1750.00	650.00	1700.00	300.00+
हिंदुस्तान लीवर	195.00	135.00	140.00	31.25−
हिंदुस्तान मोटर्स	25.75	18.80	23.00	3.00+
हेक्स्ट	3650.00	2400.00	3250.00	150.00+
आईसीआई	59.00	30.00	57.00	5.00+
इंडियन आर्गेनिक	47.50	30.00	45.00	11.50+
इंडियन रेयॉन	146.50	104.50	146.00	30.00+
इंगरसॉल-रैंड	385.00	240.00	355.00	40.00+
आईटीसी	202.00	99.00	200.00	25.00+
जे.के.सिंथेटिक्स	42.00	27.00	35.50	7.00+
काइनेटिक इंजी.	190.00	145.00	160.00	−
किर्लो. क्युमिंस	156.25	95.00	143.75	5.00+
केएसबी पंप्स	225.00	160.00	210.00	10.00+
लार्सन ऐंड टुब्रो	140.00	90.00	110.00	2.50+
लिप्टन	147.50	57.50	145.00	12.50+
लोहिया-मशीन्स	37.50	21.00	22.50	0.50−
महिंद्रा-महिंद्रा	82.50	57.50	66.25	6.25+
मास्टरशेयर्स	38.00	20.00	35.65	0.90−
मोटर इंडस्ट्रीज	1500.00	675.00	1370.00	120.00+
मुकुंद लिमि.	215.00	117.50	145.00	17.50+
नेशनल आर्गे.	1550.00	925.00	1510.00	135.00+
नेस्ले इंडिया	165.00	111.25	161.50	17.50+
निरलॉन	26.00	16.00	22.50	1.50+
ओरके सिल्क मि.	34.25	17.50	26.00	1.25+
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	98.50	53.00	88.50	2.50−
प्रीमियर ऑटो	57.00	30.00	47.50	7.50+
रेमंड	180.00	110.00	158.75	6.25+
रेकिट-कोलमैन	295.00	205.00	291.00	28.00+
रिलायंस इंडस्ट्रीज	163.75	91.25	130.00	6.00+
सीमेंस इंडिया	157.50	112.50	155.00	5.00+
शॉ वैलेस	137.00	77.00	134.00	10.00+
श्रीराम फाइबर्स	47.50	33.00	46.00	5.50+
एसकेएफ बेय.	2825.00	1650.00	2700.00	275.00+
स्पिक	65.00	33.00	57.00	6.00+
टाटा स्टील	222.50	170.00	214.50	10.50+
टेल्को	257.50	142.50	245.00	12.50+
टाइटन वाचेस	93.75	58.00	75.00	−
वाम ऑर्गेनिक	195.00	102.50	187.50	5.00+
वीडियोकॉन	285.00	133.75	180.00	20.00+
वोल्टास	125.00	92.50	120.00	5.00−
विप्रको	38.00	16.00	36.00	7.50+

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	20.1276	19.9149
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	209.1700	206.6491
बहरीन	दीनार	1	69.2598	67.3363
बांग्लादेश	टका	100	73.2536	72.1393
कनाडा	डालर	1	22.5313	22.3037
डेनमार्क	क्रोना	1	3.8064	3.7669
मिस्र	पौंड	1	8.1127	7.9845
फ्रांस	फ्रैंक	1	4.4053	4.2918
जर्मनी	मार्क	1	14.9254	14.5560
हांगकांग	डालर	1	3.3548	3.3219
इंडोनेशिया	रुपिया	100	1.3375	1.3165
ईरान	रियाल	100	–	–
इटली	लीरा	100	1.9758	1.9523
जापान	येन	100	19.2678	18.7970
केन्या	शिलिंग	1	0.9055	0.8964
कुवैत	दीनार	1	–	–
मलेशिया	डालर	1	9.3601	9.2662
मारीशस	रुपया	1	1.5631	1.5388
नेपाल	रुपया	1	0.6070	0.6056
हालैंड	गिल्डर	1	13.0306	12.8981
पाकिस्तान	रुपया	1	1.0629	1.0420
सिंगापुर	डालर	1	14.8827	14.7303
स्पेन	पेसो	1	0.2351	0.2326
श्रीलंका	रुपया	1	0.6344	0.6267
स्वीडन	क्रोना	1	4.0658	4.0234
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	16.9653	16.7902
तंजानिया	शिलिंग	1	0.1189	0.1162
थाईलैंड	बहत्त	100	102.3248	99.3627
ब्रिटेन	पौंड	1	43.3276	43.0108
अमेरिका	डालर	1	26.0417	25.7898
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	7.0939	7.0195
सोवियत संघ	रूबल	1	29.9379	29.9356

स्रोत: बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 19.7.91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुकून चाहिए? सोना बेचिए

मेरे दादा जगजीवन उजमशी '30 के दशक की भयंकर मंदी में काफी संपत्ति गंवा चुके थे. अपने बगीचे में आम के पेड़ के नीचे बैठे अक्सर वे यादों में खो जाते. उनकी बातें मुझे अब भी याद हैं. वे बड़े अभिमान से सुनाते कि उन्होंने सारी देनदारियां कैसे चुकता कीं. परिवार की लगभग सारी संपत्ति— पत्नी के गहने और सोना वगैरह बेचकर उन्होंने कर्ज समय पर चुकता किया. उनके लिए यह फख्र की बात थी. उन्होंने मुझसे कहा कि आदमी की साख संसार के सारे सोने से कीमती है. बाद में उन्होंने फिर संपत्ति खड़ी कर ली. इसलिए उनके वे शब्द ज्यादा व्यावहारिक लगते हैं.

मेरे खयाल से देश के सम्मान पर अंतरराष्ट्रीय देनदारियों को न चुका पाने से बड़ा दाग नहीं हो सकता. वित्तमंत्री ने इस स्थिति से निपटने के लिए जो कुछ किया, मैं उन सबका समर्थन करूंगा. अगर यही विकल्प था तो अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के ऋण से जुड़ी शर्तें कोई मायने नहीं रखतीं, हां, हमें ऋण के बिना भी उन शर्तों को मानना तो पड़ता ही. लेकिन क्या हमें और कर्ज लेना चाहिए?

वित्तमंत्री को मुद्रा कोष से कर्ज लेकर कोई खुशी नहीं हो सकती है. आखिरकार उन्होंने ही हमें पुराने कर्जों को चुकाने के लिए कर्ज लेने के खतरों से आगाह किया है. उन्होंने हमें चक्रवृद्धि ब्याज के खतरे के प्रति चेताया है. इससे हम कर्ज के जाल में और अधिक फंस जाएंगे मुद्रा कोष का कर्ज भी निश्चित रूप से अपवाद नहीं है. हम अपने अल्पकालिक कर्ज में ही इजाफा करेंगे वित्तमंत्री दावा करेंगे कि उनके पास एक और विकल्प तो जरूर है. वह यह कि सोना बेचा जाए.

हालांकि हर भारतीय के लिए सोना बेचने का विचार अकल्पनीय है. शायद इससे मंगलसूत्र और स्त्री धन के बाजार में जाने की डरावनी कल्पना साकार हो उठती है. मुझ पर हिंदू भावनाओं से खिलवाड़ करने के आरोप लगाए जाएंगे. लेकिन मुझे उम्मीद है कि मैं अपना कर्त्तव्य निभाने की महान हिंदू परंपरा के चलते क्षमा कर दिया जाऊं. वजह यह है कि हर भारतीय अर्थशास्त्री की यह बताने की जिम्मेदारी बनती है कि उनके विषय के पंडितों ने स्वर्ण को डरावनी वस्तु माना है. एडम स्मिथ ने हमें सिखाया है कि बहुमूल्य धातुएं राष्ट्रीय धन का गलत संकेत देती हैं. केन्स ने इनके प्रति भारतीय मानस के लगाव को यहां की गरीबी का मुख्य कारण बताया.

सोना बेचने की दलील की वजह यह है कि यह किसी काम नहीं आता. यह बेमतलब की वस्तु है जो किन्हीं वजहों से लोगों के मानस में गहरे बैठी हुई है. कुछ हल्के-फुल्के अंदाज में केन्स ने कहा कि सोने की इतनी प्रबल कामना के मूल में "इसके जादुई गुण हैं जो प्राचीन काल में मिस्र के पुरोहितों ने इस पीली धातु पर आरोपित किए थे." लेकिन सोने के और चाहे जो गुण हों, उसमें चक्रवृद्धि ब्याज जैसी खूबी नहीं है. पिछले दशक में रिजर्व बैंक को इस बेशकीमती धातु को बचाए रखने के लिए काफी कुछ गंवाना पड़ा है. कई साल से हमारा सरकारी भंडार 331 टन पर कायम है. 1980 में जब सोने की कीमत 800 डॉलर प्रति आउंस से कुछ अधिक थी तब इसका मूल्य 8 अरब डॉलर से कुछ अधिक था. अगर हमने इस भंडार को डॉलर में बदल लिया होता और उस राशि को 7 फीसदी के न्यूनतम ब्याज दर पर उठा दिया होता तो वह राशि आज 16 अरब डॉलर हो जाती. इसके विपरीत सोना भंडार में रखने

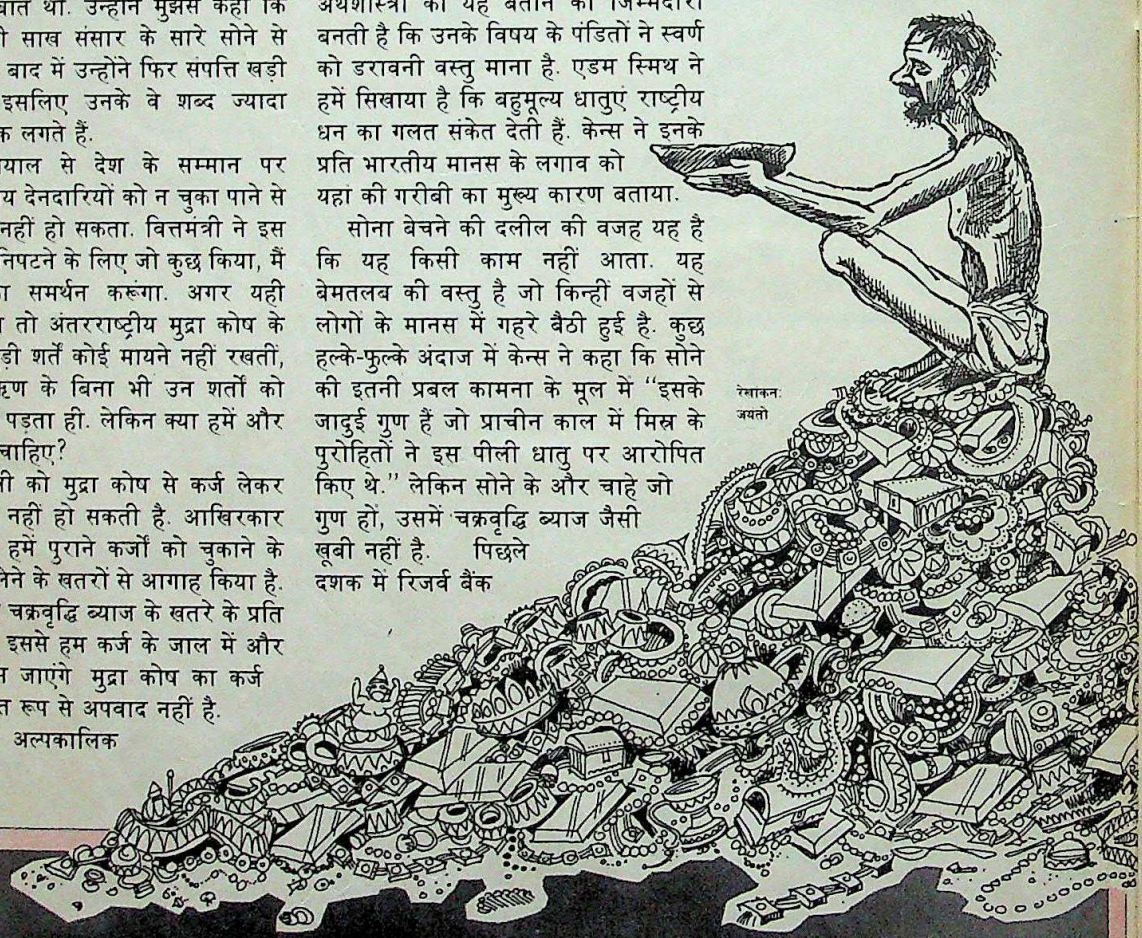

रेखांकन: जयंतो

हमारे यहां लोगों के निजी कब्जे में कम-से-कम 7,000 टन से अधिक सोना है. सोने का अंतरराष्ट्रीय मूल्य प्रति टन 1.2 करोड़ डॉलर है. अतः लोगों के पास का सोना 8.4 अरब डॉलर मूल्य का है जो हमारे कुल विदेशी कर्ज से ज्यादा है. इस विशाल भंडार का उपयोग हमें अपनी देनदारियां चुकाने के लिए करना चाहिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण आधी कीमत खो चुका है और अब 4 अरब डॉलर से कुछ अधिक का ही रह गया है. इसके अलावा हम 10 साल का ब्याज भी गंवा चुके हैं.

मैं स्वीकार करता हूं कि मैंने यह हिसाब हाल के वर्षों में सोने की सबसे अधिक कीमत पर बिक्री करने के आधार पर लगाया है. वैसे, इसे नितांत बेतुका भी नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि हम अपने देश के सार्वजनिक मामलों की देखरेख करने वालों से यह उम्मीद तो कर ही सकते हैं कि वे कब खरीदा-बेचा जाए इसकी जानकारी रखें. अगर हम सोने को ऊंची दर पर नहीं भी बेच पाते तब भी 4 अरब डॉलर अतिरिक्त आय तो ब्याज से ही हो जाती. 4 अरब डॉलर की यही अतिरिक्त राशि हम अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से कर्ज लेने की सोच रहे हैं.

लेकिन यह तो अतीत की बात है. क्या अब हम कुछ कर सकते हैं? जवाब वही है जिसे मैं कहते डरता हूं कि हमें सोना जरूर बेच देना चाहिए. हम जितने आउंस बेचेंगे उतना ही और कर्ज लेने की जरूरत पर अंकुश लगेगा. लेकिन सोने का सरकारी भंडार तो देश में लोगों के घरों में पड़े सोने का 5 फीसदी ही है. सो, सबसे ज्यादा फायदा तभी होगा जब हम देश के लोगों को सोना बेचने के लिए तैयार करेंगे.

देश में सोने के भंडार का अनुमान लगाकर इस बात को आगे बढ़ाया जाए. मुंबई के स्वर्ण दलालों के संघ का अनुमान है कि 1830 से 1980 के बीच भारत में 5,400 टन सोना जमा हो चुका है. इसके अलावा गोल्ड फील्ड मिनरल सर्विसेज लिमिटेड (कंसालिडेटेड गोल्ड की शोध शाखा) की 1991 के रिपोर्ट के मुताबिक 1,031 टन सोना तस्करी से भारत लाया गया.

इन आंकड़ों में सोने के भंडार की वह मात्रा भी जोड़ ली जाए जो संभवतः 1830 से पहले भारत में थी. इसे मिलाकर, निजी कब्जे में सोने की कुल मात्रा कुछ नहीं तो 7,000 टन से ज्यादा हो जाती है. सोने की अंतरराष्ट्रीय दर प्रति टन 1.2 करोड़ डॉलर है, इसलिए कुल व्यक्तिगत भंडार की कीमत ही करीब 8.4 अरब डॉलर के करीब बैठेगी जो हमारे कुल विदेशी कर्ज से अधिक है. इस विशाल भंडार का उपयोग हमें अपनी देनदारियां चुकाने में करना चाहिए.

एडम स्मिथ ने हमें बताया है कि सोना और चांदी दूसरी वस्तुओं की तरह ही हैं. इसलिए इन बेशकीमती धातुओं को हमें मामूली वस्तु की तरह निर्यात योग्य ही समझना चाहिए. हमें इनके निर्यात से प्रतिबंध हटा देना चाहिए और दूसरी वस्तुओं की तरह इनके निर्यात को भी प्रोत्साहित करना चाहिए. खासकर सोने के निर्यातकों को एक्जिम स्क्रीप, रेप लाइसेंस और नई नीति के तहत दी जाने वाली करों की हर तरह की छूट दे देनी चाहिए. लेकिन बावजूद इसके क्या निर्यात होगा?

चार्ट: बी.के. शर्मा

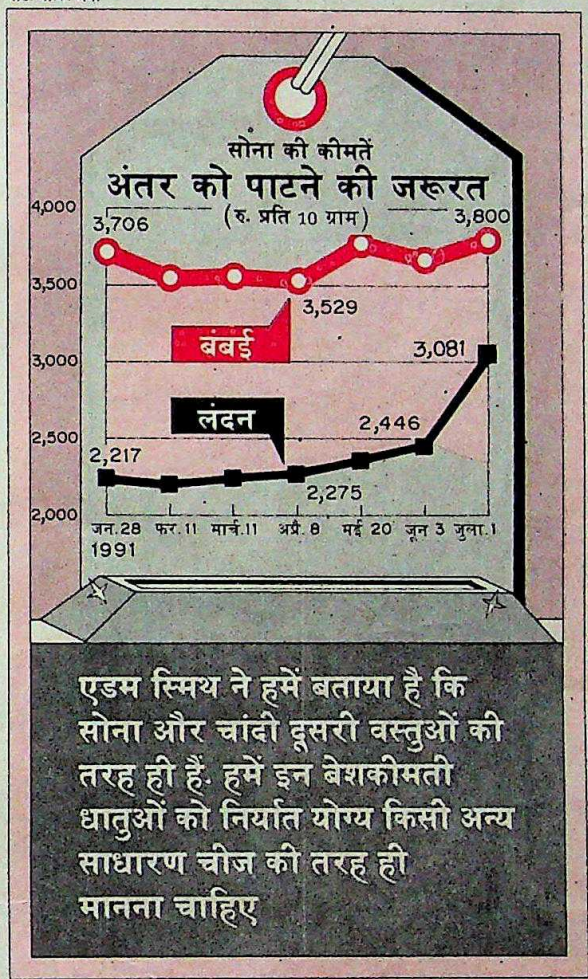

एडम स्मिथ ने हमें बताया है कि सोना और चांदी दूसरी वस्तुओं की तरह ही हैं. हमें इन बेशकीमती धातुओं को निर्यात योग्य किसी अन्य साधारण चीज की तरह ही मानना चाहिए

सोने की अंतरराष्ट्रीय दर प्रति ट्रॉय आउंस 370 डॉलर है जबकि देसी बाजार दर 12,440 रु. है (प्रति 10 ग्राम 4,000 रु. के आधार पर). डॉलर की मौजूदा विनिमय दर 25.90 रु. है इसलिए देसी दर करीब 30 फीसदी अधिक बैठती है. फिलहाल इसके अवैध आयात के धंधे में यह फायदा डॉलर के काला बाजार बिक्रेता (हवाला दर) और सोने के आयातक में बराबर-बराबर बंट जाता है.

सरकार की नई नीतियों से इस अवैध विनिमय पर रोक लगाई जा सकती है. इसके लिए उपाय है 'रेप' दर (फिलहाल सामान्य रूप से 30 फीसदी) और 'रेप' दर पर पड़ता जो इस समय 40 फीसदी है. इस हिसाब से 'रेप' लाभांश का कुल मूल्य सोने की अंतरराष्ट्रीय और देसी दर के बीच अंतर से कम होता है. इसलिए हमारे सोने का निर्यात नहीं होगा.

हालांकि दूसरी संभावनाएं भी हैं. निर्यात पर अतिरिक्त पड़ता 'रेप' दर और आयात-निर्यात वाली कंपनियों के शेयर पर बाजार पड़ता से निकलता है. 'रेप' दर को सरकार ही निर्धारित करती है. अगर वह इसे कम करती है तो यह सोने के निर्यात का दरवाजा खोलने के लिए पर्याप्त होगा.

लेकिन सरकार सोने के लिए यह विशेष व्यवस्था क्यों करे? ऐसा न करने की कई वजहें हैं लेकिन सोने के निर्यात के लिए ऊंची 'रेप' दर देने के पक्ष में एक बेहतरीन दलील है. आप्रवासी भारतीयों से भेजे गए रुपयों की तरह सोना भी मूल्य में सौ फीसदी इजाफा करता है. इन दोनों में ऊर्जा और कच्चे माल की खपत भी नहीं हैं.

आप्रवासी भारतीयों का अपने देश में रकम भेजना भी सोने की तस्करी से जुड़ा है. इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि इन दोनों बाजारों में सरकार 'रेप' दर के दुष्प्रभाव पर भी गौर करें. आदर्श स्थिति तो यह होती कि बहुमूल्य धातुओं और आप्रवासी भारतीयों की रकम के आगमन दोनों को विशेष छूट होती. अगर इसकी देखरेख ठीक से की गई तो इससे सोने के अवैध आयात पर आर्थिक अंकुश लग जाएगा और हमारी स्वर्ण वासना कम हुई तो निर्यात बढ़ेगा.

हालांकि मेरी मंशा वह दर बताने की नहीं है जिस पर सोने का निर्यात होगा. यह तो बाजार का काम है. मेरी समझ से तो सोने को निर्यात की प्रमुख संभावना माना जाना चाहिए.

हर हाल में, सोने को अन्य वस्तुओं की तरह ही मान लेने से भारतीय मानस पर भी बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ेगा. शायद हमारे लोगों को यह एहसास हो जाएगा कि कोई फायदा न देने वाली वस्तु का भंडारण पागलपन है, कि कारखाने खोलने और शेयरों में निवेश करना ज्यादा फायदेमंद है.

(सुधीर मुलजी दिल्ली स्थित अर्थशास्त्री और उद्योगपति है.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-37

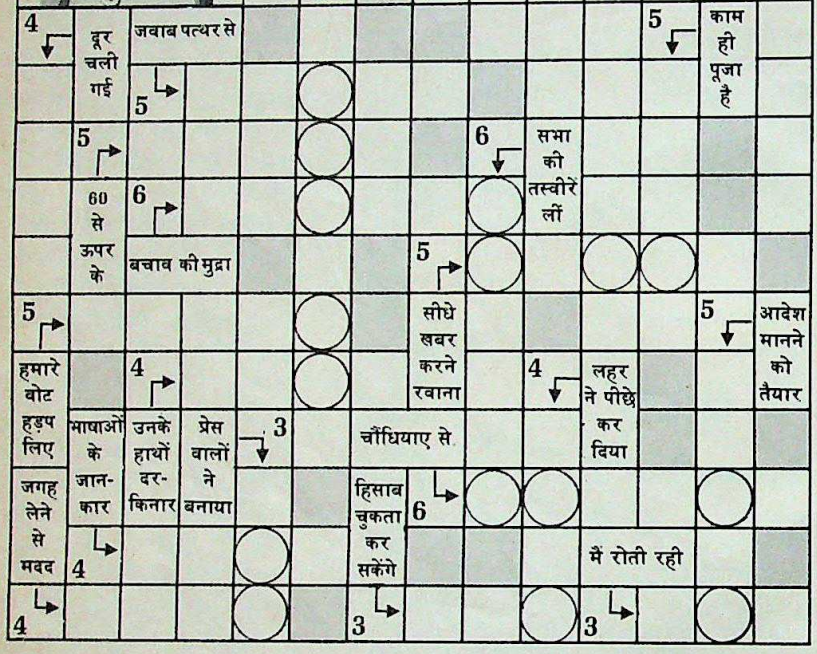

नाम _____

पता _____

पिन _____

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-37, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि:
20 अगस्त 1991
उत्तर के लिए देखें:
1-15 सितंबर 1991 का अंक

► यह पहेली शब्दश: इंडिया टुडे के 15 जुलाई 1991 के अंक पर आधारित है.

► वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.

► तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.

► तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.

► वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुन: होगा.

► मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.

► सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500** रु. दिए जाएंगे.

► लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

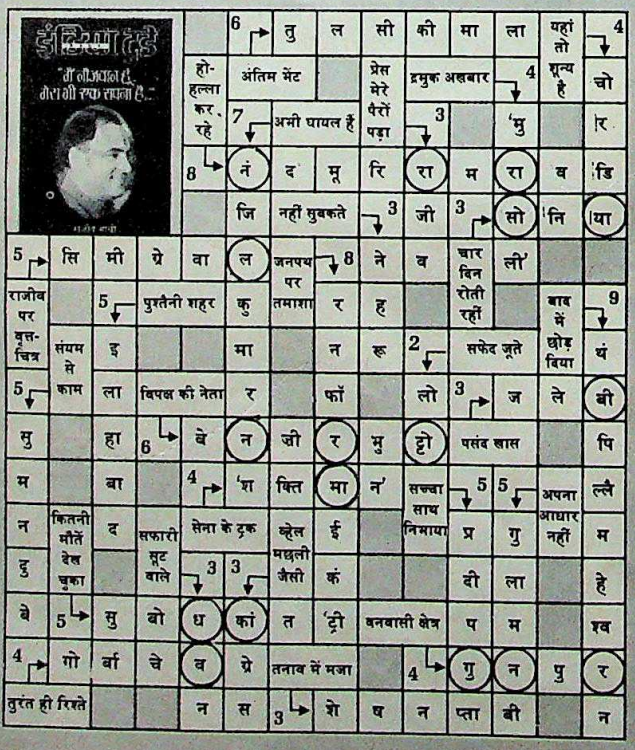

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-35 का हल

पुरस्कार विजेता

शामलाल भाटिया
म. नं. 109, भटिया नगर
यमुना नगर
(हरियाणा)-135001

राजीव कुमार अवस्थी
द्वारा विनोदी लाल शुक्ल
विनय नगर, सेक्टर-1
सेंट्रल जेल के पास
ग्वालियर (म.प्र.)

नम्रता माहेश्वरी
द्वारा राजेंद्र माहेश्वरी
18 सी, महाराज श्रीउम्मेद
मिल्स प्रांगण, पाली
मारवाड़ (राज.)-306401

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं.
विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव हत्या जांच

संदेहास्पद मृत्यु

प्रमुख अभियुक्त की अचानक मौत से विशेष जांच दल की साख पर ग्रहण लगने के स्पष्ट संकेत

—अनिरुद्ध मित्र, मद्रास में

राजीव हत्याकांड की जांच कर रहे विशेष दल ने चर्चा का केंद्रबिंदु खुद ही बनने में पिछले पखवाड़े लाजवाब महारत दिखाई. इस मामले की गुत्थी को सुलझाने में बहुत मददगार माना जाने वाला षणमुगम विशेष दल की हिरासत से फरार हो गया और अगली सुबह उसे पेड़ से लटका हुआ ही पाया जा सका. सुरक्षा के लिहाज से यह अक्षम्य चूक थी. लेकिन बदतर तो यह है कि एलटीटीई के इस प्रमुख संपर्क सूत्र की मौत के पारिस्थितिक सबूत विशेष दल की इस धारणा की कि वह फरार हो गया था और शव परीक्षण के इस नतीजे की कि उसने आत्महत्या कर ली, हवा निकाल देते हैं.

सूत्रों के मुताबिक सुरक्षा एजेंसी की भारी भूल और भी गंभीर परिणामों की ओर संकेत करती है. वह यह कि षणमुगम की मौत दम घुटने से हुई और शायद उसकी हत्या की गई. वजह यह कि षणमुगम-विशेष दल की पूछताछ से टूटने लगा था और कई स्थानीय राजनीतिकों और अधिकारियों को भी लपेटने लगा था. पुलिस सूत्रों के अनुसार किसी ने इस डर से कि कहीं और राज न खुल जाएं, हो सकता है, उसकी हत्या का आदेश दे दिया हो. शायद एलटीटीई ने ही ऐसा करवाया हो. उसने पिछले पखवाड़े विशेष जांच दल की हिरासत से अपने सदस्यों को 'छुड़वाने' की धमकी भी दी थी.

एलटीटीई वाले कतई नहीं चाहते रहे होंगे कि षणमुगम शिवरासन के बारे में और जानकारी उगले. षणमुगम ने ही काने उस्ताद और दो मानव बमों—धनु और शुभा को पनाह दी थी. तंजावुर जिले के समुद्र तटीय कस्बे वेदारण्यम के धनी जमींदार तथा तस्कर षणमुगम के पास एलटीटीई के बारे में सूचनाओं का अकूत भंडार था. 17 जुलाई को गिरफ्तारी के बाद षणमुगम की सूचना पर भारी मात्रा में विस्फोटक और संचार उपकरण बरामद हुए थे.

उसकी मौत के बारे में विशेष जांच दल का ब्यौरा इस तरह है. षणमुगम ने 19 जुलाई की रात 9 बजे वेदारण्यम के 'ट्रैवेलर्स बंगलो' में अपने चाचा सीतारमण का लाया गया भोजन किया. फिर हाथ धोने के बहाने वह एक सिपाही के साथ डाक बंगले के पिछवाड़े गया. वहां अंधेरे में वह अपनी खादी की धोती और सफेद कमीज उतारकर चारदीवारी फांदकर गायब हो गया.

सभी रेखांकन: अजीत नैनन

पुलिसिया कहानी

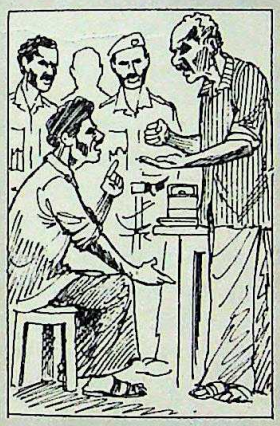

करीब नौ बजे रात को षणमुगम डाक बंगले में अपने चाचा सीतारमण का लाया भोजन करता है.

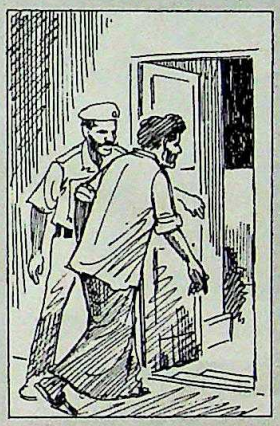

एकमात्र निहत्थे सिपाही के साथ वह हाथ धोने पिछवाड़े जाता है.

सिपाही को झांसा देकर षणमुगम दीवार फांदकर गायब हो जाता है.

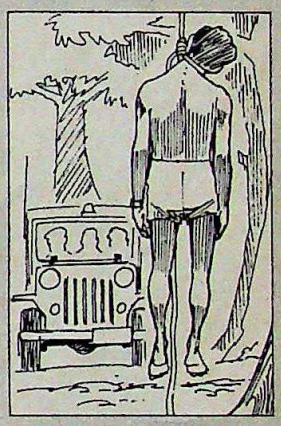

अगली सुबह पुलिस को बंगले से मात्र 50 गज दूर उसका शव एक पेड़ से झूलता मिलता है.

खतरनाक खामियां

- मृत षणमुगम की गर्दन पर रस्सी का निशान या खरोंच नहीं थी.
- जीभ बाहर नहीं निकली थी, न ही आंखें बाहर आई थीं.
- आधी रात को निर्जन स्थान पर उसे 14 फुट लंबी रस्सी कहां से मिली?
- कैसे वह एक डीआईजी, दो एसपी और 20 पुलिसवालों को चकमा दे गया?
- अगर तुरंत चौकसी शुरू हो गई तो कैसे वह मात्र 50 गज दूर ही अपने को फांसी लगा पाया?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगली सुबह पास के पार्क में उसका शव पेड़ से लटकता पाया गया. नीले रंग की एक लुंगी उस स्थान पर पड़ी मिली.

उसी दिन वेदारण्यम से 40 किमी दूर नागपट्टनम में शव परीक्षा हुई. रिपोर्ट में लार, वीर्य तथा मल के स्राव के मद्देनजर इसे आत्महत्या का मामला घोषित कर दिया गया. लेकिन विशेष जांच दल के ब्यौरे और शव परीक्षा की रिपोर्ट में कई खामियां हैं:

▸ उसकी गर्दन पर रस्सी का कोई निशान या खरोंच नहीं मिली. अगर फांसी लगाते वक्त वह जिंदा होता तो निशान जरूर पड़ते.

▸ जीभ बाहर नहीं निकली थी.

▸ चेहरे पर खून के थक्के नहीं जम आए थे. और फांसी लगने पर जैसे आंखें बाहर निकल आती हैं, वैसी नहीं निकली थीं.

▸ लार, मल और वीर्य का स्राव तो उस स्थिति में भी होता, यदि उसका गला घोंटा गया होता.

▸ जांघों पर खरोंच के निशान नहीं हैं जो शायद फांसी पर झूल जाने के स्पष्ट संकेत होते हैं. अगर हाथ बंधे न हों तो आखिरी क्षणों में घुटन से परेशान होकर हाथ तुरंत अपने आप जांघों को खरोंचने लगते हैं. नाखूनों में त्वचा के बारीक टुकड़े भी नहीं पाए गए.

▸ उसके पैर जमीन के काफी नजदीक थे. गले में रस्सी बांधकर ऊपर से कूदने की हालत में गर्दन की हड्डियां टूट जातीं या नसें फट जातीं लेकिन ऐसा नहीं हुआ.

▸ जिस रस्सी से वह झूला वह 14 फुट लंबी थी. आधी रात को उसे इतनी लंबी रस्सी कहां से मिली?

इन तथ्यों से स्पष्ट संकेत मिलता है कि षणमुगम की मौत फांसी पर झूलने से नहीं हुई. उसकी मौत सिर्फ हिरासत में ही हो सकती है. क्योंकि उसके फरार होने की कहानी संदिग्ध लगती है. पहली बात तो यह कि सीतारमण और उसके ड्राइवर दास को उससे मुलाकात की ही नहीं बल्कि उन्हें उसके लिए भोजन लाने और उसके साथ बैठने की भी इजाजत क्यों दी गई जबकि इसके पहले षणमुगम के वकील को पूछताछ के दौरान इस बिना पर उपस्थित नहीं होने दिया गया था कि षणमुगम आतंकवाद निरोधक कानून (टाडा) के तहत गिरफ्तार है. इसके अलावा अगर वह फरार हुआ भी तो वह एक डीआईजी, दो एसपी और 20 सशस्त्र पुलिसवालों को झांसा देकर ही ऐसा कर सका. हैरतनाक बात यह भी है कि षणमुगम के साथ गए पुलिसवाले ने शोर क्यों नहीं मचाया?

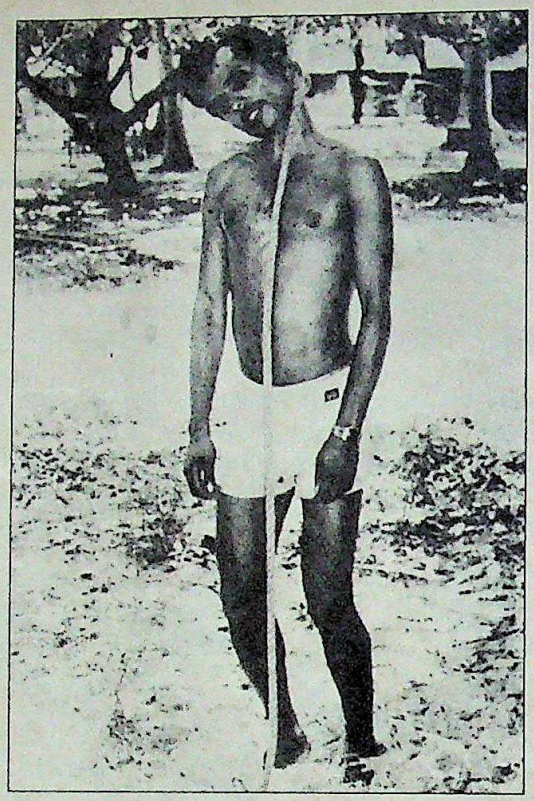

संभावना यही है की षणमुगम को एलटीटीई ने या स्थानीय नेताओं ने ठिकाने लगा दिया जिन्हें डर था कि उसके रहस्योद्घाटनों से वे फंस सकते हैं

उस पूछताछ की रात डाक बंगले में मौजूद एक सूत्र के अनुसार यह हिरासत में मौत की ही निराली घटना है. वह उस रात की घटनाओं को कुछ इस तरह याद करता है: षणमुगम का चाचा, स्थानीय जमींदार तथा साहूकार सीतारमण उसके लिए भोजन ले आया. सीतारमण का टैक्सी चालक दास भी उसके साथ था. षणमुगम की खाना खाने के पहले रात 9 बजे अपने चाचा से कहासुनी होती है. सीतारमण आरोप लगाता है कि वह इलाके में अपने विरोधियों के एलटीटीई की गतिविधियों या हत्या के षड्यंत्र में शामिल होने की झूठी बातें कहकर उनसे अपना बदला भंजा रहा है.

यह झड़प साढ़े दस बजे तक चलती रही. डीआईजी और एसएसपी सोने चले गए. एक वक्त तो षणमुगम, उसका चाचा, उसका ड्राइवर दास और दो निहत्थे सिपाही ही वहां रह गए थे. अचानक सिपाहियों ने, शायद सीतारमण के इशारे पर, षणमुगम को दनादन पीटना शुरू कर दिया.

सूत्र आगे बताता है, "हम यही जानते हैं कि वह अचेत होकर जमीन पर गिर पड़ा. हमें आशंका है कि यह दम घोंटकर मार डालने का मामला है. वरिष्ठ अधिकारियों को तभी बताया गया जब वह मर चुका था. खोजी दल षणमुगम की चारों ओर 'तलाश' कर रहा था जबकि उसका शव हमारे पास ही पड़ा था. उसे फांसी पर लटकाने से पहले उसके कपड़े उतार लिए गए. लेकिन जल्दबाजी में हम लोग उसकी घड़ी निकालना भूल गए. जो लुंगी मौके पर मिली, वह दास की थी. तड़के 3 बजे के आसपास शव को पेड़ से लटका दिया गया." संयोग से आत्महत्या की कहानी को कोई चुनौती नहीं दे सका.

जाहिर है, विशेष जांच दल कुछ छुपाने की कोशिश कर रहा है. इसीलिए कोई पुलिसिया मुअत्तल नहीं किया गया. न ही दास और सीतारमण को गिरफ्तार किया गया. वजह: तब विशेष दल को षणमुगम की फरारी या संभावित हत्या में उनकी भूमिका स्पष्ट करनी पड़ती.

केंद्रीय गृहमंत्री शंकरराव चव्हाण ने कहा है कि सरकार इस घटना की जड़ में पहुंचने को दृढ़संकल्प है. इस उद्देश्य से सीबीआई के अतिरिक्त निदेशक जांच भी कर रहे थे. लेकिन षणमुगम की संदिग्ध मौत और उससे जुड़े बड़े षड्यंत्र के सूत्रों ने पूरी जांच प्रक्रिया की विश्वसनीयता को संदेह के दायरे में ला खड़ा किया है. फिलहाल विशेष जांच दल जितने सवाल पूछ रहा है, उससे ज्यादा जवाब उसे देने की जरूरत है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

◆ दूरदर्शन में अवांछित लोगों की सूची बनाने का वक्त फिर आ पहुंचा है. अबकि बारी 'वामपंथी' अर्थशास्त्रियों को परदे से दूर रखने की है. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष सरकार के लिए दुखती रग साबित हो रहा है. लिहाजा कर्ज और देश पर उसके प्रभाव से संबंधित किसी भी चर्चा की इजाजत नहीं दी जाएगी. लेकिन इस बार सरकार चालाकी से कदम उठा रही है. अवांछित विशेषज्ञों की सूची के बजाए 'अनुमोदित' अर्थशास्त्रियों की मौखिक सूची इन दिनों परदे पर आ रही है. अधिकतर नाम सरकारी झुकाव वाले विशेषज्ञों के हैं. कुछ अपवादों में कौशिक बसु, पत्रकार टी.एन. नैनन, स्वामीनाथन अय्यर और जय दुबाशी हैं. हाउस को विशेषज्ञों की किस्म पर नियंत्रण की दरकार पिछले पखवाड़े प्रसारित एक चर्चा के कारण पड़ी. इसमें अर्थशास्त्री प्रभात पटनायक ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से लिए जाने वाले कर्ज की जमकर बखिया उधेड़ी, कहते हैं कि वित्तमंत्री मनमोहन सिंह ने, जो उस बातचीत में मौजूद थे, बाद में सूचना तथा प्रसारण विभाग के सचिव महेश प्रसाद से कहा कि सरकार की इस तरह आलोचना ठीक नहीं है.

◆ आखिर वे सात छुपे रुस्तम कौन हैं? सूचना और प्रसारण राज्यमंत्री अजित पांजा ने गद्दी संभालते ही यह कहना शुरू कर दिया कि जल्द ही प्रतियोगी चैनल की शुरुआत की जाएगी. कुछ दिनों बाद उन्होंने रहस्योद्घाटन किया कि तीन संगठन इस काम के लिए आगे आए हैं. फिर पिछले महीने एकाएक ही यह संख्या बढ़कर सात तक पहुंच गई. सूचना और प्रसारण विभाग के अधिकारियों को भी उनकी कोई खबर नहीं है. लेकिन उन्होंने यह जरूर कहा कि पीटीआई-टीवी भी स्वतंत्र चैनल का आरंभिक दावेदार था.

▲ 'उड़ान' में कविता चौधरी: फिर वर्दी में

► अजित पांजा: अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के लिए

▲ 'प्रोफेसर वासन' का दृश्य: ठीक-ठाक

पर इस काम में लगे लोगों को सच्चे अर्थों वाले वैकल्पिक चैनल को लेकर संदेह है. ऐसे में सूचना और प्रसारण राज्यमंत्री वैकल्पिक चैनल की और दूरदर्शन को 'आजादी' देने की बात क्यों कर रहे हैं? एक कारण प्रसार भारती विधेयक को नेपथ्य में डालना हो सकता है. दूसरा कारण, जो ज्यादा जरूरी लगता है, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष को लुभाने के लिए उठाया गया कदम हो सकता है. यानी भारत सूचना माध्यमों पर से नियंत्रण उठाने की दिशा में गंभीरतापूर्वक काम कर रहा है.

◆ दूरदर्शन अतीत-प्रेम में आसक्त हो गया लगता है. साबुन का विज्ञापन और सीरियल निर्माण एक साथ करने वालीं मशहूर ललिता जी बहुत जल्द 'उड़ान' लेकर वापस आ रही हैं. नया नाम उड़ान-2 है. अभिनेत्री कविता चौधरी एक बार फिर पुलिस की वर्दी में कानून की सेवा करती नजर आएंगी. इस बार जोर आफिस से बाहर की उनकी जिंदगी पर है. साथ ही 'कथा सागर' की वापसी भी हो रही है. इसमें कोई बदलाव नहीं, एक तरह से पुनरावृत्ति ही है. यह लोकप्रिय धारावाहिक अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त लेखकों, जैसे चेखव, ताल्सतॉय और स्ट्रिंगबर्ग की लघु कथाओं पर आधारित है.

◆ टीवी के परदे पर महिला जासूसों ने अपनी छाप कभी नहीं छोड़ी. 'जानकी जासूस' पिटा धारावाहिक साबित हुआ. इसकी तुलना में मोहेना सिंह का 'प्रोफेसर वासन' ठीक-ठाक धारावाहिक साबित हो रहा है. लेकिन इसका सस्पेंस बांधने वाला नहीं है. इस धारावाहिक की अजीब बात यह है कि इसका निर्माण बंगलूर में बंगलूरवासियों ने बंगलूर के कलाकारों के साथ किया है. अपवाद हैं अग्रणी भूमिका निभा रहीं सुहैला लिमये और कैमरामैन टोनी सिंह.

—मधु जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

लक्ष्मी के सच्चे पुजारी

राज्य के शिक्षक-विधायक विधानमंडलों और विश्वविद्यालयों से दोहरा वेतन लेते आ रहे हैं. शाही ने इस पद्धति के खिलाफ मुहिम चलाई तो उन्हें मंत्री पद से हाथ धोना पड़ा.

—फरजंद अहमद

बात कुछ अजीब सी लगती है. बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव जो 'भ्रष्टाचार' शब्द सुनते ही छापा मारना शुरू कर देते थे, अचानक इतने बदल गए कि कुछ विधायकों और उनकी कैबिनेट के चार मंत्रियों पर 'दोहरा वेतन' देने का पर्दाफाश जब खुद एक मंत्री ही ने किया तो पहले वे खामोश रहे और फिर इस व्यवस्था को जायज ठहरा दिया. मंत्री ने मुख्यमंत्री पर 'आर्थिक अपराधियों' को संरक्षण देने का आरोप लगाते हुए इस्तीफा दे दिया, जो मंजूर भी हो गया.

इसके साथ ही पिछले पखवाड़े शिक्षक-विधायकों के 'दोहरा वेतन' लेने की पद्धति और उनकी गोलबंदी के आगे सरकार की बेबसी का भी पर्दाफाश हुआ. पर्दाफाश करने वाले उच्च शिक्षा राज्यमंत्री नवल किशोर शाही ने कहा, "मंत्री पद से हटने के बाद अब एक विधायक की हैसियत से इस भ्रष्ट पद्धति के खिलाफ अपनी जंग और तेज करूंगा." दरअसल ये जंग शाही ने ही शुरू की थी, शायद इस उम्मीद के साथ कि भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ फेंकने का बीड़ा उठाने वाले मुख्यमंत्री से उन्हें शाबाशी मिलेगी. मगर ऐसा न हो सका. इसलिए कि उन्होंने जो जाल बुना था उसमें चार शक्तिशाली मंत्री—मानव संसाधन विकासमंत्री दिवाकर प्रसाद सिंह, प्राथमिक शिक्षामंत्री रामचंद्र पूर्वे, भवन निर्माणमंत्री नलिनी रंजन सिंह और परिवहन राज्यमंत्री सीताराम सिंह, विपक्ष के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र, विधान परिषद सभापति उमेश्वर प्रसाद वर्मा, पूर्व विधान परिषद सभापति अरुण कुमार, विधानसभा में जनता दल के मुख्य सचेतक रामप्रकाश महतो और लालू यादव के दोस्त रंजन यादव, सदस्य राज्यसभा फंसने वाले थे.

शाही ने जो सूची बनाई थी उसके अनुसार 60 से अधिक शिक्षक-विधायक पिछले एक दशक से विधानमंडल और विभिन्न विश्वविद्यालयों और कॉलेजों से दोहरा वेतन और भत्ता लेते आ रहे हैं. मंत्री ने अंदाजा लगाया कि अब तक वे लोग विश्वविद्यालयों से करीब 5 करोड़ रु. और विधानमंडल से वेतन भत्ता और पेंशन के रूप में लगभग 15 करोड़ रु. ले चुके हैं.

जब शाही ने 'दोहरे वेतन' का मामला बार-बार उठाया और धमकी दी कि गैर-कानूनी ढंग से लिए गए पैसे वसूल लिए जाएंगे तो विधान परिषद सदस्यों को लगा कि उनकी मानहानि हो रही है. सभापति वर्मा ने मंत्री को सदन में सफाई पेश करने को कहा और जब शाही ने अनसुनी कर दी तो उनके खिलाफ विशेषाधिकार प्रस्ताव मंजूर करते हुए उसे विशेषाधिकार समिति को सौंप दिया.

बिहार एक अजीब प्रदेश है जहां हर तरह के गोरखधंधे जायज हो जाते हैं और अब दोहरा वेतन पद्धति भी इसी की कड़ी मानी जा रही है. इसके पीछे एक विचित्र इतिहास भी है. प्रोफेसर पद्मदेव नारायण शर्मा ने, जो 1966 से विधान परिषद के सदस्य हैं और हाल में पटना विश्वविद्यालय के एक कॉलेज के प्राचार्य भी थे, बताया कि जब वे पहली दफा सदस्य बने तो उन्होंने दोहरा वेतन लेने से इनकार कर दिया था. मगर अधिकारियों ने उन्हें 'बिहार विधानमंडल (सदस्य वेतन, भत्ता और पेंशन) अधिनियम 1960 की धारा 10 दिखाई जिसमें लिखा था कि विधानमंडल से मिलने वाले वेतन, भत्ते और पेंशन के चलते दूसरी जगह से मिलने वाले वेतन आदि पर रोक नहीं लग सकती. शर्मा ने कहा कि इस

सभी फोटो: प्रभाकर

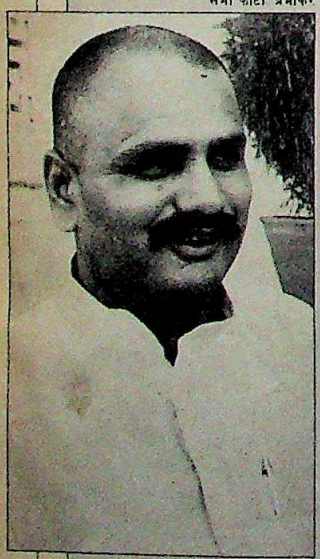

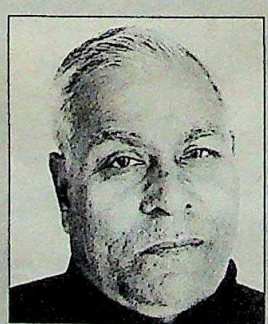

(बाएं से) सीताराम सिंह, नलिनी रंजन सिंह, दिवाकर प्रसाद सिंह और रामचंद्र पूर्वे: दोनों हाथों में लड्डू

दोहरा वेतन ले रहे 60 से अधिक शिक्षक-विधायकों की सूची में इन चार मंत्रियों के नाम भी हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रावधान के पीछे विचार यह था कि एक सदस्य का काम अंशकालिक होता है इसलिए वह आमदनी का दूसरा स्रोत भी रख सकता है.

मगर शिक्षक धीरे-धीरे इस तरह के मूल भाव से दूर होते गए और अधिक से अधिक संख्या में विश्वविद्यालयों को छोड़ राजनीति में प्रवेश करते गए. नतीजा यह हुआ कि राजनीति का स्तर तो ऊपर नहीं उठ सका मगर विश्वविद्यालयों की हालत खराब होती चली गई. जब स्थिति ज्यादा खराब हुई तो जगन्नाथ मिश्र ने जो खुद भी एक शिक्षक हैं, 1982 में अपने मुख्यमंत्री काल में एक अध्यादेश जारी कराकर सारे शिक्षक-विधायकों को विधानमंडल सत्रकाल में छुट्टी भेज दिया. जब इससे भी काम नहीं चला तो दोबारा मुख्यमंत्री बनने पर 'पटना विश्वविद्यालय अधिनियम 1976' और 'बिहार राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम 1976' में सदन द्वारा ही संशोधन कर उन्हें शिक्षकों कर्मचारियों की आचारसंहिता में जुड़वा दिया.

आचारसंहिता के अनुसार यदि शिक्षक और विश्वविद्यालय कर्मचारी राज्य और केंद्रीय विधानमंडल सदस्य हो जाएं तो "उक्त पदों पर शपथ लेने की तिथि से राज्य और केंद्रीय विधानमंडल की सदस्यता की पूरी अवधि के लिए बिना वेतन के विशेष छुट्टी पर समझे जाएंगे." इस कानून से बचने का रास्ता भी शिक्षक-विधायकों ने ढूंढ़ ही लिया.

प्रोफेसर पद्मदेव नारायण शर्मा और भाजपा नेता शैलेंद्र नाथ श्रीवास्तव ने अलग-अलग तौर पर अदालत का दरवाजा खटखटाया और जब पटना उच्च न्यायालय ने उनकी अर्जी नामंजूर कर दी तो वे सर्वोच्च न्यायालय चले गए, जिसने यथास्थिति बनाए रखने का आदेश दिया. दरअसल, सर्वोच्च न्यायालय ने पटना विश्वविद्यालय अधिनियम की धारा 65 पर ही रोक लगाई थी. क्योंकि शर्मा और श्रीवास्तव दोनों इसी विश्वविद्यालय के शिक्षक थे. मगर दूसरे सात विश्वविद्यालयों के शिक्षक-विधायकों ने चुपचाप इसका लाभ लेना शुरू कर दिया.

फिर राजनीति ने अपना रंग दिखाया. अधिकतर शिक्षक-विधायक इंका के थे और हैं और उनमें से ज्यादातर जगन्नाथ मिश्र के समर्थक थे. इसी बीच 1985 में जब तत्कालीन मुख्यमंत्री बिंदेश्वरी दुबे का मिश्र से राजनैतिक मतभेद बढ़ा तो शिक्षक-विधायकों को अपनी तरफ फोड़ने के लिए दुबे ने सारे विश्वविद्यालयों को आदेश दिया कि शिक्षक-विधायकों को उनकी कार्यावधि के पैसे का भुगतान कर दिया जाए. सरकारी सूत्रों का मानना है कि जब विश्वविद्यालय अधिनियम के तहत सारे शिक्षक-विधायक 'बिना वेतन की छुट्टी' पर चले गए तो उन्हें कौन-सी कार्यावधि का पैसा मिला.

सारे प्रदेश में घूम-घूमकर शाही ने बयान देना शुरू कर दिया और शिक्षक-विधायकों को 'आर्थिक अपराधी' कहा, जिस पर उनकी 'इज्जत खतरे में पड़ गई' और विशेषाधिकार का मामला बन गया.

उधर, मुख्यमंत्री के अंदर बेचैनी होने लगी. और उन्होंने भी कुछ करने की सोच ली. पिछले अक्तूबर में उन्होंने वित्त सचिव, शिक्षक सचिव और संसदीय कार्य विभाग के अधिकारियों को मिल-बैठकर कोई रास्ता निकालने को कहा. मगर सारी बात भुला दी गई क्योंकि शिक्षक-विधायकों के खिलाफ सोचता कौन.

लालू द्वारा सख्त कदम नहीं लिए जाने के भी कई कारण बताए जाते हैं. अगर वे शाही की बात मानते तो चार मंत्रियों, जिनमें तीन उच्च जाति के हैं, के खिलाफ कार्रवाई करनी पड़ती. बड़े-बड़े दिग्गज नेता इसमें आते. और जबकि उनका

ये भी हैं दोहरा वेतन पाने वाले

तालिका: अशोक गुप्ता

नाम	कब से	कितने रु.
ललित नारायण महिला विश्वविद्यालय, दरभंगा		
अशफाक अंसारी	मार्च 1985	2,86,694
कलीम अहमद	मार्च 1985	2,86,691
चंद्रभानु देवी	जनवरी 1985	2,42,514
परमानंद सिंह मदान	मई 1984	1,47,687
आर.के. यादव रवि	मार्च 1985	3,15,911
प्रमोद कुमार शर्मा	मई 1980	2,20,747
महावीर प्रसाद यादव	दिसंबर 1984	3,38,340
भागलपुर विश्वविद्यालय		
नीलमोहन सिंह	अप्रैल 1980	2,72,508
स्टेंनसिला हेमब्रम	मार्च 1982	3,04,726
स्टीफन मरांडी	जुलाई 1984	2,67 291
दिवाकर प्रसाद सिंह (मंत्री)	—	5,55,000
बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर		
रामचंद्र पूर्वे (मंत्री)	जून 1986	2,50,880
नलिनी रंजन सिंह (मंत्री)	मार्च 1985	3,22,076
सीताराम सिंह (मंत्री)	मई 1985	1,51,000
योगेश्वर झा	जून 1980	3,95,165
रघुवंश प्रसाद सिंह	मई 1989	3,22,897
रांची विश्वविद्यालय		
सुशीला करकेटा		5,55,000
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया		
अरुण कुमार		5,55,000

"मंत्री पद से हटने के बाद अब विधायक की हैसियत से दोहरे वेतन वाली भ्रष्ट पद्धति के खिलाफ अपनी जंग और तेज करूंगा"

नवल किशोर शाही, पूर्व मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतर्विरोधी अधिनियम

बिहार के शिक्षक-विधायक के संबंध में कानून क्या कहता है और हो क्या रहा है, उसका एक नमूना:

बिहार विधानमंडल (सदस्यों का वेतन, भत्ता और पेंशन) अधिनियम, 1960:

"यह अधिनियम किसी सदस्य के वैसे वेतन अथवा भत्ता अथवा पेंशन के भुगतान में बाधक नहीं होगा जिसका वह सदस्य के रूप में मिलने वाले वेतन अथवा भत्ते के अतिरिक्त हकदार है".

बिहार राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम 1976 (धारा 68) और पटना विश्वविद्यालय अधिनियम 1976 (धारा 65) में शिक्षक/कर्मचारियों के लिए अंकित आचार संहिता के मुख्य अंश (जिसे 1982 में विधानमंडल द्वारा पारित कर जोड़ा गया था):

"परंतु विश्वविद्यालय/महाविद्यालय/ संस्थान के शिक्षक/ कर्मचारी यदि राज्य अथवा केंद्रीय विधानमंडल के सदस्य हो जाएं तो दायित्व एवं प्रतिनिधित्व और जन जीवन में उनकी प्रतिष्ठा को देखते हुए वे उक्त पदों पर शपथ लेने की तिथि से राज्य और केंद्रीय विधानमंडल की सदस्यता की पूरी अवधि के लिए बिना वेतन के विशेष छुट्टी पर समझे जाएंगे. विशेष छुट्टी परिनियम द्वारा शासित होंगे. विशेष अवकाश पर गए शिक्षकों और कर्मचारियों के सेवा हितों को पूरी सुरक्षा दी जाएगी जिससे वे वेतन वृद्धि/ प्रोन्नति, सेवा में वरीयता आदि अर्जित करते रहेंगे. विधानमंडल की सदस्यता की अवधि की समाप्ति पर वे यथास्थिति विश्वविद्यालय/महाविद्यालय/ संस्थान में पुन: पदभार ग्रहण कर सकेंगे."

शिक्षक-विधायकों के वेतन भुगतान के संबंध में 18 जुलाई 1985 को राज्य शिक्षा सचिव का अधिशासी आदेश:

"निदेशानुसार उपरोक्त विषय के प्रसंग में कहना है कि राज्य सरकार ने निर्णय लिया है कि शिक्षक-विधायक को उनकी कार्यविधि का वेतन भुगतान नियमित रूप से किया जाए."

मंत्रिमंडल में उच्च जाति के लोग कम हैं, तीन को निकालने का मतलब ही कुछ और होता. चौथे मंत्री रामचंद्र पूर्वे बनिया जाति के हैं और उनके कट्टर समर्थक. फिर, ऐसे समय में जब कांग्रेसियों ने लालू के खिलाफ मुहिम छेड़ रखी है, कांग्रेस (इ) शिक्षक-विधायकों को, जो सदन में अच्छी खासी भूमिका निभाते हैं, छेड़ना ठीक नहीं था. इसलिए यह समझा गया कि शाही को ही चुप करा दिया जाए.

अभी खींचातानी चल ही रही थी कि एक समाजसेवक रामपुकार सिंह ने उच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर कर अनुरोध किया कि विश्वविद्यालयों को आदेश दिया जाए कि वे ऐसे सभी विधायकों को वेतन देना बंद कर दें और जितना वेतन मिल चुका है उसे वापस कराएं. याचिका में कुछ मूल प्रश्न उठाए गए: क्या कोई व्यक्ति एक ही समय शिक्षक-विधायक दोनों का वेतन ले सकता है? और क्या उस तरह के वेतन को सार्वजनिक उगाही अधिनियम के तहत वापस कराया जा सकता है?

इस बीच लालू ने विधानसभा में एक लिखित बयान में सर्वोच्च न्यायालय के विचाराधीन याचिका का हवाला देते हुए कहा, "ये सरकार प्रयास करेगी कि शीघ्र ही माननीय उच्चतम न्यायालय के समक्ष विचाराधीन सिविल अपील में अंतिम सुनवाई हो जाए और इस विशेष अनुमति याचिका के मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय का आदेश प्राप्त हो जाने पर उस आलोक में सरकार पूरे मामले पर समुचित कार्रवाई करेगी."

बात साफ हो गई. जब तक फैसला नहीं होता. दोहरा वेतन चलता रहेगा. वैसे, शाही का इस्तीफा मंजूर होने के पीछे एक राज है. भूमिहार जाति के शाही मुख्यमंत्री के लिए सिरदर्द बनते जा रहे थे और जब आरक्षण विरोधी आंदोलन उत्तर बिहार के मुजफ्फरपुर स्थित बिहार विश्वविद्यालय से शुरू हुआ (मुजफ्फरपुर भूमिहार बहुल क्षेत्र है और शाही वहीं से हैं) तो लालू ने विश्वविद्यालय का नाम बदलकर आंबेडकर विश्वविद्यालय रख दिया, जिसका विरोध शाही ने जमकर किया. इसलिए शाही को कुर्बान करना आसान था.

राज्य विधान परिषद के सभापति उमेश्वर प्रसाद वर्मा ने शाही के खिलाफ विशेषाधिकार प्रस्ताव मंजूर कर लिया

शिक्षकों और विश्वविद्यालयों की दुनिया भी अजीब है. हालत दिन-ब-दिन गिरती जा रही है. सरकार ने कई साल से विश्वविद्यालयों को अपने हाथ में रखकर एक-एक पैसे का उन्हें मोहताज कर दिया. इसके बावजूद ऐसे शिक्षक जो कक्षा नहीं लेते, लगातार वेतन लेते हैं.

दूसरी तरफ जो शिक्षक-विधायक नहीं बन सके हैं, उन्होंने भी कुछ करने की ठान ली. चूंकि विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में पढ़ाई नहीं होती, 'प्राइवेट कोचिंग सेंटर' कुकुरमुत्ते की तरह उपज गए हैं, जहां हर तरह की पढ़ाई भारी फीसों के सहारे होती रहती है. वहां पढ़ाने वाले अधिकतर वही शिक्षक हैं जिन्हें कॉलेजों में पढ़ाना चाहिए था.

जब शिक्षक-विधायकों के मामले ने जोर पकड़ा तो सरकार का ध्यान उधर भी गया. विधानसभा में उच्च शिक्षा के गिरते स्तर पर विशेष बहस का जवाब देते हुए मानव संसाधनमंत्री ने आश्वासन दिया कि इसी सत्र में सरकार कानून बनाकर शिक्षकों द्वारा 'प्राइवेट ट्यूशन' और 'कोचिंग संस्थान' खोले जाने पर प्रतिबंध लगा देगी.

मगर सभी जानते हैं कि बिहार में कानून और प्रतिबंध का क्या होता है. और इस अव्यवस्था के खिलाफ जंग जाहिर रखते हुए शाही ने सोचा है कि वे कुलाधिपति (राज्यपाल) से मिलकर अनुरोध करेंगे कि विश्वविद्यालय अधिनियमों को सख्ती से लागू कराएं और 'भ्रष्ट' पद्धति पर रोक लगाएं. शायद उनको अभी भी उम्मीद है कि कुछ हो सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BPL

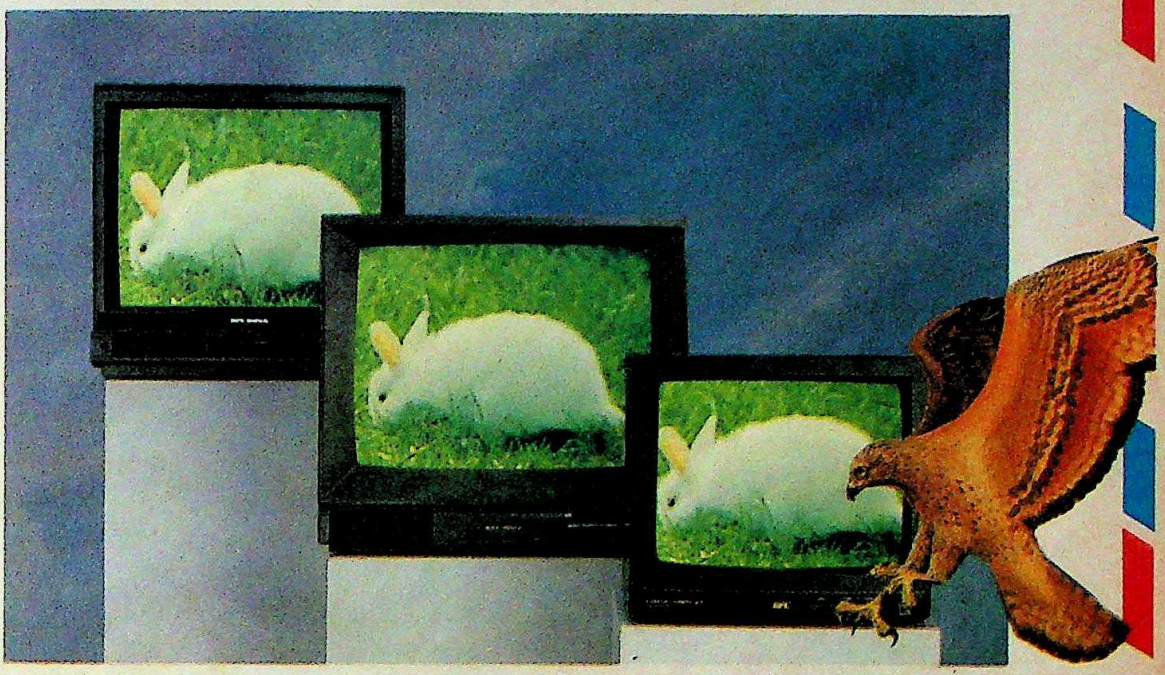

भारत का अभिमान. ब्रिटेन में सम्मान.

बी पी एल कलर टेलीविज़न. लाखों भारतीय घरों का जगमगाता सितारा. अब बन गया है अंग्रेजों की आंखों का तारा. ब्रिटेन में इसका निर्यात होने के साथ-साथ इसे ब्रिटेन की जानी-मानी 'व्हाट वीडियो' मैगज़ीन की ओर से प्रतिष्ठित सर्वोत्तम टी वी एवॉर्ड मिलने का गौरव भी हासिल हुआ है. यही नहीं, इसे ब्रिटिश टेस्टहाउस द्वारा ब्रिटिश स्तर के अनुरूप होने की मान्यता भी प्रदान की गई है. बी पी एल ही एकमात्र भारतीय कंपनी है जिसने कुछ ही महीनों में ब्रिटेन को 25,000 से भी अधिक सैट निर्यात किए हैं. आज बी पी एल अपनी इस निर्यात बिक्री को दुगुनी यानी 5,000 से 10,000 प्रतिमाह तक बढ़ाने के लिए पूरी तरह तैयार है.

तो अब, आप भी अपनाइए भारत में अंतर्राष्ट्रीय स्तर की यही बी पी एल क्वालिटी जो गौरव है हर भारतीय का... और जिसकी उत्कृष्टता को अंग्रेज़ों ने भी सर-आंखों पर बिठाया!

अपनाइए उसी कलर टीवी को, निर्यात करते हैं हम जिसको.

BPL-TV

Always the best!

KAMERAD-NEWS-BPL-95-91 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

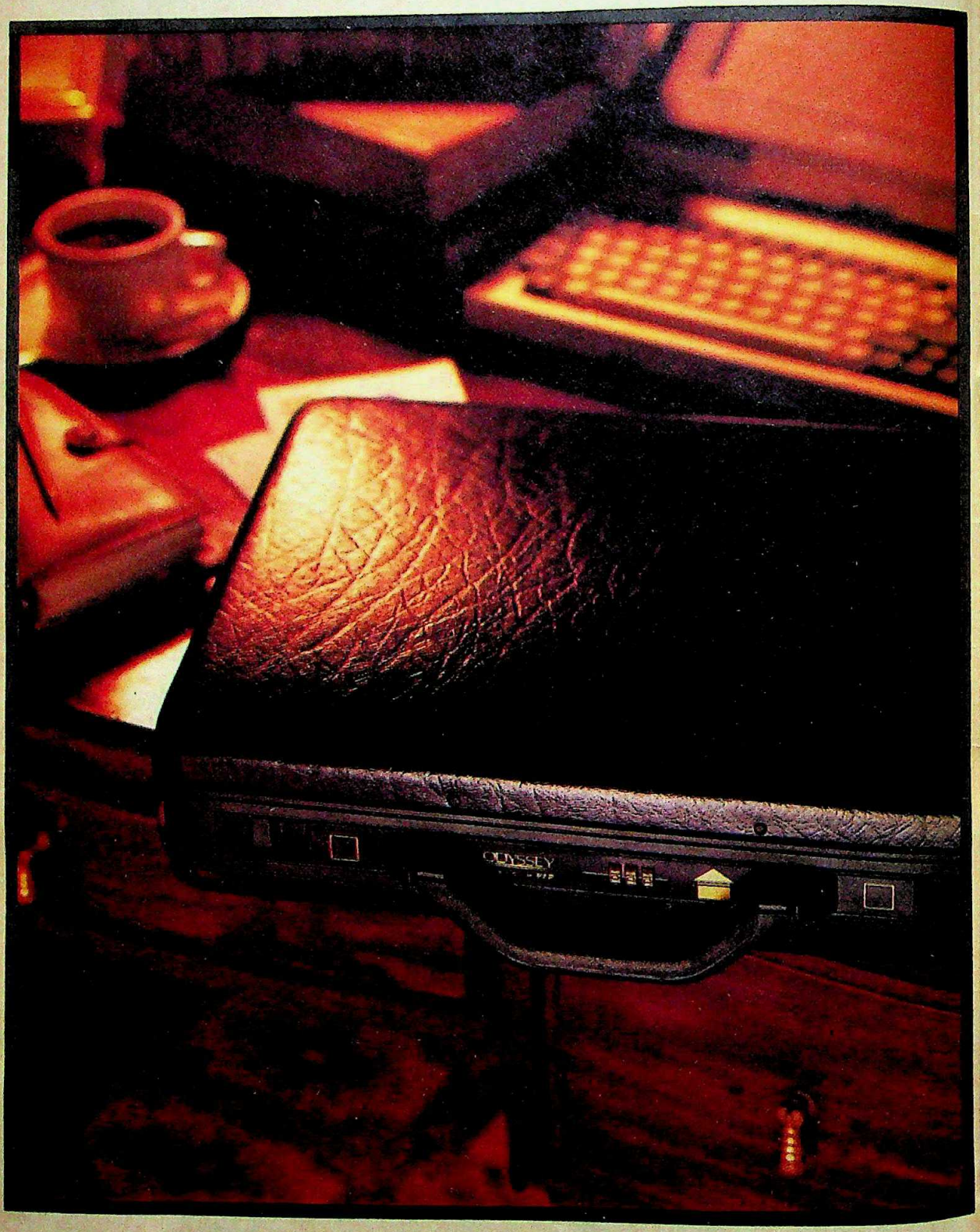

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुशल सहायक

सुबह का वक़्त. ८.५५. अगले बारह घंटों में आपको न जाने कहाँ कहाँ रहना पड़े. ऑफ़िस, मुलाकातें, बिज़नेस लंच, मीटिंगों का सिलसिला सेल्स रिव्यू वगैरह और फिर वक़्त मिला तो 'जिम' में भी कुछ समय. और हर जगह आपके साथ जाता है आपका ब्रीफ़केस, जिसमें है आपके व्यक्तित्व का दर्पण और हर समय काम आने वाले व्यवस्थित कागज़ात. अपने लिए ब्रीफ़केस पसंद करते समय आपको इन सभी बातों का ख्याल रखना होता है. इसलिए वी.आइ.पी. के नए ऑडिसी ब्रीफ़केस को ध्यान से ज़रूर देख लीजिएगा. मज़बूत ए बी एस बॉडी. दिखने में चमड़े जैसा. सुंदर काली पाउडर कोटेड फ्रेम – दो ख़ास खूबियों के साथ – शानदार कॉम्बिनेशन लॉक और आकर्षक नर्म हैंडल. अंदर की ओर मुलायम सौम्य सुएड और उसी से मेल खाता फ़ोलियो जहाँ आपके ज़रूरी कागज़ात, न्यूज़पेपर, पत्रिकाएं रखी जा सकें. अब आप ही कहिए ये एक साधारण बैग है या आपका अपना कुशल सहायक?

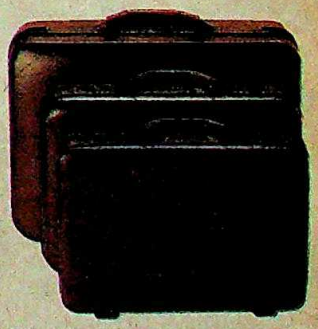

WORLD CLASS
ODYSSEY

वी.आइ.पी. की पेशकश

तरक़्क़ी, शान के साथ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

HTA 1875R

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की सर्वाधिक सफल और विकासशील कंपनियों में से एक सेन्चुरी यह मानती है कि उनकी सभी गतिविधियों से लोगों की बुनियादी ज़रूरतें पूरी होनी चाहिएं

"सेन्चुरी के बारे में हम स्वयं स्वीकार करते हैं कि हमारी उत्पादन इकाइयां उन उद्योगों में नहीं आतीं जिन्हें आम तौर पर ग्लैमर उद्योग कहा जाता है. इसके विपरीत, हम तो उन बुनियादी उद्योगों के क्षेत्र में हैं जिन्हें राष्ट्र के आर्थिक विकास का आधार कहा जा सकता है.

देश की आर्थिक प्राथमिकताओं के प्रति अपनी समर्पित भावनाओं के फलस्वरूप ही हम आज देश के सबसे बड़े उत्पादक-निर्यातक बन सके हैं. इस वर्ष ही हम १४० करोड़ रुपयों के मूल्य की विदेशी मुद्रा अर्जित करेंगे. इसके अलावा सीमेंट के अपने उत्पादन को हम लगातार बढ़ाते जा रहे हैं ताकि मांग और पूर्ति के बीच की दूरी को खत्म करने में मदद मिले.

हम मानते हैं कि कर्मचारियों के हितों, शेयरहोल्डरों के हितों और राष्ट्र के हितों के बीच पूरा सामंजस्य होना चाहिए. हमारे कर्मचारी यह कहने में गर्व का अनुभव करते हैं कि वे सेन्चुरी में काम करते हैं. कई परिवार तो तीन-तीन पीढ़ियों से हमारी कंपनी में काम करते रहे हैं. हमारे शेयरहोल्डर भी सदा संतुष्ट रहे हैं. क्यों न हों, बोनस और राइट शेयर्स इश्यू देखें तो पिछले ४० वर्षों से सेन्चुरी के शेयरों का मूल्य ३४० गुने से भी ज़्यादा जो बढ़ आया है. पिछले एक दशक में ही सरकारी कोष में सेन्चुरी का योगदान ६६० करोड़ रुपयों से भी अधिक का रहा है.

और अब, देश को आवश्यक उत्पादक परिसंपत्तियां उपलब्ध कराने के लिए हमने विद्युत और पेट्रोकेमिकल्स जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपने प्रयास प्रारंभ कर दिये हैं."

बी.के. बिरला
अध्यक्ष

सेन्चुरी

राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य... अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य

सेन्चुरी टेक्सटाइल्स एंड इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड • सेन्चुरी टेक्सटाइल्स • सेन्चुरी रेयॉन • सेन्चुरी केमिकल्स • सेन्चुरी सीमेंट • मैहर सीमेंट • मानिकगढ़ सीमेंट • सेन्चुरी पल्प एंड पेपर • सेन्चुरी शिपिंग • सेन्चुरी बिल्डर्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्टोरिया मेमोरियल

अतीत का पुनरुद्धार

दुर्लभ कलाकृतियों को मौलिकता प्रदान करने की कोशिश

कलकत्ता का प्रसिद्ध विक्टोरिया मेमोरियल आजकल कलात्मक गतिविधियों का केंद्र बना हुआ है. कुछ हफ्तों से कला विशेषज्ञों का एक दल इस स्मारक के करीब 450 दुर्लभ चित्रों को बचाने में जुटा हुआ है जो समय के साथ-साथ बेरंग और धुंधले होने लगे थे.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तत्वावधान में चल रहा यह कठिन यज्ञ 1995 तक चलेगा. इसमें दूसरे देशों का सहयोग भी मिल रहा है. इस दिशा में पहला कदम बार्कले बैंक के निदेशक एलन ट्रिटॉन ने कलकत्ता त्रिशताब्दी ट्रस्ट की स्थापना करके उठाया. राजकुमारी अलेक्जेंड्रा और पश्चिम बंगाल के राज्यपाल नुरूल हसन इस ट्रस्ट के संरक्षक हैं.

कलाकृतियों के पुनरुद्धार की इस मुहिम से कलकत्ता की अनमोल विरासत को संजोने में मदद मिलेगी

तैल चित्रों की रक्षा के लिए यह ट्रस्ट एक लाख पाउंड (4.2 करोड़ रु.) जुटाने की योजना बना रहा है.

लेकिन ट्रस्ट का काम यहीं खत्म नहीं होता. वह इस काम में माहिर विश्व के दो प्रमुख विशेषज्ञों—पैट्रिक लिंडसे और जेन मैक ऑस्लैंड के आने-जाने का खर्च भी उठा रहा है. ट्रस्ट अब तक 11,000 पाउंड मूल्य के यंत्र और अन्य सामग्री का बंदोबस्त कर चुका है. इस तरह की ठोस मदद से चित्रों के पुनरुद्धार का काम पूरे जोर-शोर से चल रहा है. मगर आलोचकों का आरोप है कि हाथ के बने चित्रों की सफाई के क्रम में उसकी मौलिकता काफी हद तक समाप्त हो जाती है.

लेकिन मैनाक शंकर राय और विशेषज्ञों का उनका दल पूरी तरह आशान्वित है. वैसे भी यह काम बहुत बारीकी वाला है, जिसमें सधे हुए हाथ और आधुनिकतम साधनों की जरूरत होती है. प्रत्येक चित्र की करीबी जांच के बाद ही उसके लिए सही उपाय का फैसला हो पाता है. फिर, गंदगी साफ करने वाले हल्के से हल्के रसायन का प्रयोग कर धूल की परत को धीरे-धीरे हटाया जाता है.

काम में जुटे विशेषज्ञः सधे हाथों का कमाल

मैबल दास

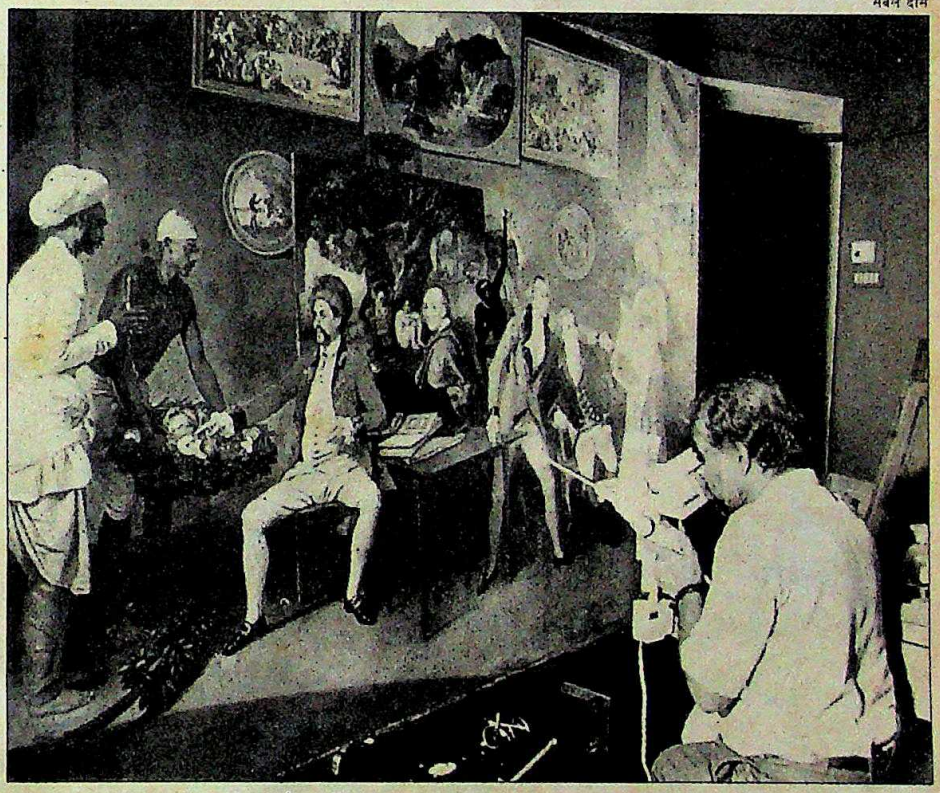

विशेषज्ञ दल द्वारा जिन चित्रों का उद्धार किया जा रहा है, उनमें जोफ्फानी की 200 वर्ष पुरानी तैल कृति 'क्लॉड मार्टिन ऐंड हिज़ फ्रेंड्स' भी शामिल है. एक और बेशकीमती चित्र जॉर्ज चिनेरी का 'न्यूज ऑफ कलकत्ता' है, जो 1745 में बनाया गया था. इसमें शहीद मीनार के चारों ओर कलकत्ता मैदान का दृश्य उभारा गया है. विक्टोरिया मेमोरियल के संग्रहाध्यक्ष हीरेन चक्रवर्ती कहते हैं, "कई तैल चित्रों और जल रंगों के चित्रों को तेजी से खराब होते जाने से हम बहुत चिंतित हैं."

इस महत् कार्य पर होने वाले खर्च का इंतजाम हो जाने के बाद भारत सरकार को ब्रिटेन से हवाई जहाज द्वारा आवश्यक यंत्र आदि मंगाने की अनुमति देनी पड़ी. इस कार्य में एक और बड़ी बाधा स्मारक का भीतरी विरोध रहा. एक वरिष्ठ विशेषज्ञ ने तुरंत ही केंद्रीय मंत्रालय को लिख भेजा कि पुनरुद्धार के बहाने कई बेशकीमती चीजों को देश से बाहर ले जाया जा सकता है.

इस तरह की आशंकाओं को दूर करने के लिए ही विक्टोरिया मेमोरियल और त्रिशताब्दी ट्रस्ट के बीच हुए समझौते में यह उल्लेख है कि पुनरुद्धार का काम कलकत्ता शहर में ही चलाया जाएगा.

फिलहाल तो अंतरराष्ट्रीय स्तर के दोनों ही विशेषज्ञों ने 14 चित्रों की एक ऐसी सूची तैयार की है जिन्हें 'कॉस्मेटिक सर्जरी'—यानी अधिक देखभाल की जरूरत है.

बहरहाल, एक शुरुआत हुई है. चित्रों के पुनरुद्धार की यह मुहिम निश्चय ही शहर की उस अनमोल विरासत को संजोने की दिशा में एक सकारात्मक पहल है, जिसके लुप्त हो जाने का खतरा निरंतर बढ़ने लगा था.

—रूबेन बनर्जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पावर

पौष्टिक पावर जो ताज़े दूध, 8 ज़रूरी विटामिनों माल्ट और प्रोटीन से मिलता है

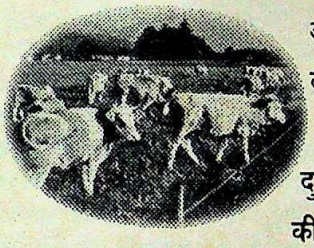

आज की समूची नई पीढ़ी के सपने अलग हैं, आशाएं और उमंगें अलग हैं, दुनिया में कुछ कर दिखाने की तमन्ना अलग है। आज के बच्चों को सोचने-समझने, आगे बढ़ने, खेलने-कूदने और काम में कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।

शुक्र है कि आज ऐसा हैल्थ ड्रिंक मौजूद है, जो अपने ख़ास फार्मूले की वजह से बिल्कुल आपके बच्चे की तरह काम करता है....कड़ी मेहनत से।

नया वीवा।

ताज़े दूध से पावर

वीवा में आपको वो सभी गुण मिलते हैं जो दूध में होते हैं। ताज़े दूध से भरपूर वीवा में है कैल्सियम और दुग्ध प्रोटीन, जो आपके बच्चे के दांतों और हड्डियों को मज़बूत करते हैं और उसे देते हैं भरपूर पोषण।

8 ज़रूरी विटामिनों से पावर

वीवा है, विटामिन ए, बी$_1$, बी$_2$, बी$_{12}$, सी, डी, फॉलिक एसिड और नियासिन से भरपूर जिससे आपके बच्चे के शरीर को बीमारियों और थकान से लड़ने की शक्ति मिलती है। वह हमेशा तन्दुरुस्त रहता है।

माल्ट और प्रोटीन से पावर

वीवा में है स्वास्थ्यवर्धक, बारले, गेहूँ, माल्ट और प्रोटीन। इसीलिए तो स्वादिष्ट वीवा से आज के बच्चों को मिलती ज़्यादा चुस्ती, बेहतर तन्दुरुस्ती।

अपने बच्चे का भविष्य शक्तिशाली बनाइए। उसे वीवा दीजिए। आज ही से।

नया **ViVA**®

everest/dg1/II/89 Hin

नई पीढ़ी के लिए नया पावर.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ. पुष्पा सक्सेना

एक मामूली घटना

डॉ. पुष्पा सक्सेना की कहानियों का आज के सच से गहन रिश्ता है. सीधे-सादे शब्दों में कही गई उनकी कहानियां भारत की प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं और कहानी-संग्रह प्रकाशनाधीन है. उनकी कहानी 'महुआ रोए सारी रात' पर टेलीफिल्म भी बन चुकी है.

कार के बायीं ओर मुड़ते ही संध्या को लगा था, सामने वाले कोने में मोटरसाइकिल के साथ खडे लड़कों ने जैसे आपस में कोई इशारा किया था. एक लड़के ने 'सब ठीक' का संकेत देते हुए शायद अंगूठे से ओके कहा था. कार के पीछे आती मोटरसाइकिल देख न जाने क्यों संध्या का हृदय धड़क उठा था. थोड़ी देर में स्थिति स्पष्ट हो गई थी. युवक निश्चय ही उनकी कार का पीछा कर रहे थे. धीमे से संध्या ने पति से कहा था—"सुनो, लगता है यह मोटरसाइकिल हमारा पीछा कर रही है."

"तुम्हें यूं ही व्यर्थ का शक हो रहा है, यह रास्ता किसी और का भी तो हो सकता है." रवींद्र ने बात टालने की कोशिश की पर सामने लगे शीशे में मोटरसाइकिल की छाया ने मानो उन्हें भी सचेत कर दिया था.

"संध्या, तुम ऑर्नामेंट्स उतारकर पर्स में रख लो. पूजा बेटी, तुम पीछे सीट पर लेट जाओ, तुम्हारा सिर न दिखाई दे."

पति का निर्देश सुनते ही संध्या का हृदय जोरों से धड़कने लगा था. कांपते हाथों से चेन और सोने की चूड़ियां उतार पर्स में डाल ली थीं. "हे भगवन् रक्षा कर." संध्या ने भयभीत दृष्टि पीछे की सीट पर बैठी पुत्री पूजा पर डाली थी.

प्रायः शाम होते ही उस छोटे शहर की बिजली कई घंटों को कट जाया करती थी. रात का अंधकार पहले ही आतंकित किए था. उस पर पीछा करने वाले युवकों का मकसद भी अज्ञात था. रवींद्र ने कार की गति तीव्र कर दी थी, साथ ही पीछे आती मोटरसाइकिल की गति भी तेज हो गई थी. अपने घर वाली लेन में प्रवेश करते ही संध्या मानो जी गई थी. मोटरसाइकिल दूसरी ओर मुड़ गई थी. रवींद्र ने भी आश्वस्ति की श्वास ली थी.

उन फ्लैटों के लिए सड़क पार थोड़ी दूर पर कार के गैरेज बनाए गए थे. पूजा हमेशा पापा के लिए गैरेज का द्वार खोलकर कार पार्क कराया करती थी. आज भी वह कार में रुक गई थी. रवींद्र ने कहा भी था— "तू चली जा पूजा, मैं कार गैरेज में रखकर अभी आया." "नहीं पापा, अब तो घर आ ही गए हैं. चलिए गैरेज मैं ही खोलती हूं. मम्मी तुम घर चलो, मैं पापा के साथ अभी आई." कार से उतर संध्या घर की सीढ़ियां भागती हुई चढ़ गई थी. काल-बेल बजाते ही छोटी पुत्री ने द्वार खोल पूछा था— "बड़ी देर कर दी मां, क्या चाचाजी बनारस से वापस आ गए हैं?" पुत्री की

सभी रेखांकन: सुदेश

रवींद्र की कनपटी पर पिस्तौल रखे वे युवक उन्हें कार के अंदर ठेल रहे थे. संध्या का चीत्कार रुदन में बदलता जा रहा था. पड़ोसियों के पत्थर और ढेले भी अपहरणकर्ताओं का कुछ नहीं बिगाड़ सके थे. और पूजा का आर्तनाद क्षीण होता गया था

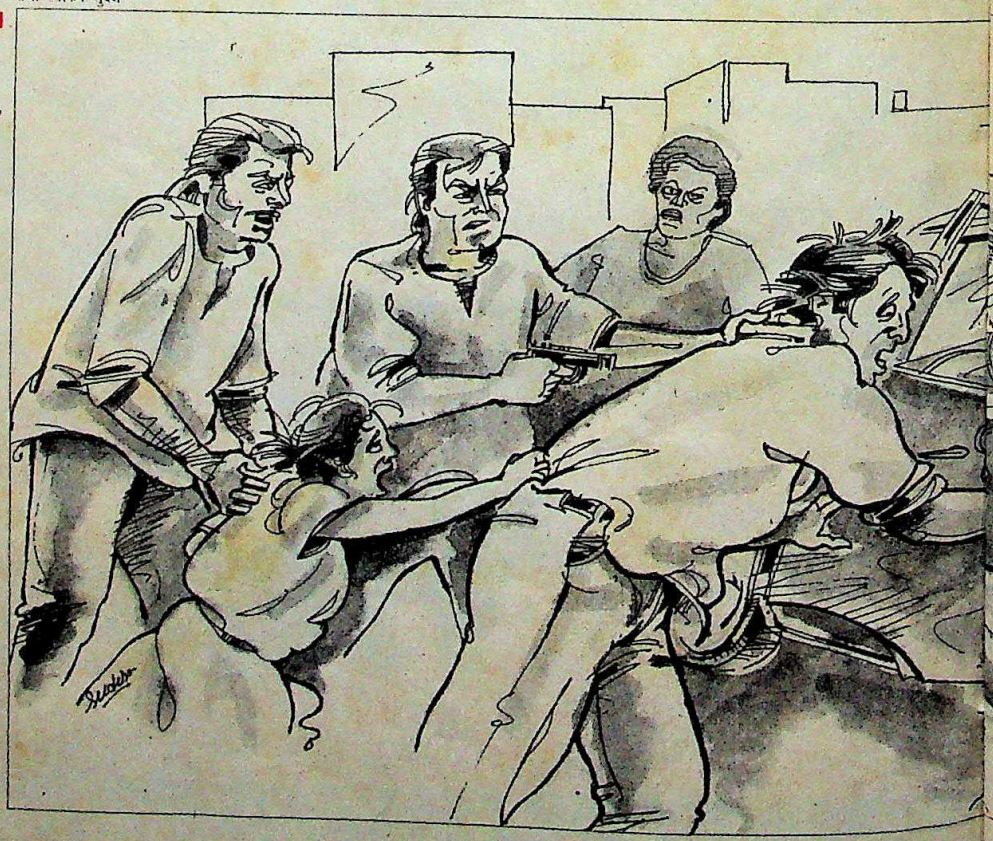

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरे आज की छापामारी में तो डीएसपी साहब, मजिस्ट्रेट साहब सबै बुलू फिलम पकड़ने गए हैं. कहां खोजेंगे उन्हें, वे तो कहीं नाश्ता-पानी कर रहे होंगे." कहता कांस्टेबल मुस्करा दिया

त अनसुनी करती संध्या दौड़कर लकनी में पहुंच गई थी. विस्मित बेटी, के साथ बालकनी में आ गई थी.

बालकनी में खड़ी संध्या चीत्कार कर ठी थी. रवींद्र की कनपटी पर पिस्तौल वे युवक उन्हें कार के अंदर ठेल रहे थे. परी लेन से पहुंच, वे युवक गैरेज के पास नकी प्रतीक्षा कर रहे थे. "बचाओ.. चाओ.." आवाज पर कुछेक पड़ोसी बाहर आए थे, पर तत्परता के साथ रवींद्र को कार के अंदर ठेल एक युवक ड्राइविंग सीट पर जा बैठा था, दूसरे ने पूजा को जबरन पीछे की सीट पर धकेलकर द्वार बंद कर लिया था. संध्या का चीत्कार रुदन में बदलता जा रहा था. पड़ोसियों के पत्थर और ढेले भी अपहरणकर्ताओं का कुछ न कर सके थे. पूजा का 'मम्मी-मम्मी' का आर्तनाद क्षीण होता गया था.

कुछ पड़ोसी दौड़कर पुलिस थाने फोन करने गए थे. फोन की घंटी पर भी उत्तर नदारद था. कई बार की कोशिशों के बाद अंततः मि. तलवार ने सलाह दी—

"चलो थाने चलकर रिपोर्ट दर्ज करा आएं." अंधकार के उस माहौल में चंद मिनट पहले अपहरण के साक्षी पड़ोसी, कार बाहर निकालने का साहस नहीं जुटा पा रहे थे. अंततः रवींद्र के घनिष्ठ मित्र अरविंद ने साहस दिखाया था.

"रिपोर्ट तो करानी ही है, कौन मेरे साथ आ रहा है?" दो-तीन लोगों के सामने आते ही अरविंद ने गैरेज से कार बाहर निकाल ली थी.

थाने में एक ऊंघते कांस्टेबल को देख अरविंद ने जोरों से कहा था—"इंस्पेक्टर साहब कहां हैं?"

सजग होते कांस्टेबल ने उत्तर के स्थान पर प्रश्न किया था—"कहां से आए हैं, क्या काम है?"

"हमें रिपोर्ट लिखानी है, इंस्पेक्टर साहब को बुलाओ, अर्जेंट रिपोर्ट है." माधवानी साहब ने ऊंची आवाज में कहा था.

"इंस्पेक्टर साहब 'रेड' पर निकले हैं, आज रात भर नहीं मिलेंगे." कांस्टेबल ने जम्हाई ले कहा था.

"दो जिंदगियों का सवाल है, इंस्पेक्टर नहीं हैं तो उनकी जगह दूसरा कौन उनका काम देखता है, उसे बुलाओ," अरविंद ने डपटकर कहा था.

"ए साहब, ज्यादा जोर न दिखाएं, कह दिया न वो 'रेड' पर गए हैं. अर्जेंट काम से निकले हैं, फालतू आराम करने नहीं गए हैं." कांस्टेबल के स्वर में गर्व छलक आया.

परेशान पड़ोसियों ने एक-दूसरे को असहाय दृष्टि से देखा था. माधवानी साहब ने फिर कोशिश की थी, "देखो भइया, हमें वह जगह बता दो जहां इंस्पेक्टर साहब मिलेंगे. हम आपको इनाम देंगे."

इनाम की बात सुनते ही कांस्टेबल की आंखों में चमक आ गई थी. "साहब ने तो बताने को मना किया था पर आपका भी अर्जेंट काम है. इंस्पेक्टर साहब मार्केट की कैसेट की दुकानों में छापा मारने गए हैं. आजकल ई कैसेट लाइब्रेरी वाले बहुतै धांधली करे हैं. दुनिया भर की बुलू फिल्में लाके पैसा कमा रहे हैं."

"अच्छा भई, हमें यहां से एक फोन करने देंगे, हम एसपी साहब से बात करेंगे." "अरे ये साला तो पिछले चार दिनों से मरा पड़ा है." कहकर कांस्टेबल हंस दिया था. कुछ रुककर फिर वह बोला था—"अरे आज की छापामारी में तो डीएसपी साहब, मजिस्ट्रेट साहब सबै गए हैं. कहां खोजेंगे उन्हें, वे तो कहीं नाश्ता-पानी कर रहे होंगे." कहता कांस्टेबल रहस्यात्मक ढंग से मुस्करा दिया.

सबकी चिंता और आक्रोश बढ़ता जा रहा था. "टु हेल विद दिस कंट्री ऐंड इट्स सिस्टम..." टेबल पर घूंसा मारता अरविंद क्रोधित हो उठा था.

"आदमी के जीवन से अधिक महत्वपूर्ण क्या ये छापामारी है?" नीरजनाथ ने मानो अपने आप से प्रश्न किया था.

"जरूर है, आदमी की मौत उनके लिए आम घटना है. अगर खूनी पकड़ लिया तो उनकी पौ-बारह, उससे पैसे वसूलकर उनकी जेबें भरती हैं, आखिर जाने वाला तो चला ही गया, अब उसके नाम पर रोने से क्या फायदा. जो जी रहा है उससे लाभ उठाओ." माधवानी ने अंग्रेजी में कहा था.

"भला ये भी कोई बात हुई, सारी की सारी पुलिस फोर्स कैसेट छापामारी में लगा दी गई और यहां हम कितने असुरक्षित हैं. इसके लिए किसी को चिंता ही नहीं? कॉलोनी में दिन-दहाड़े लूट, कत्ल हो रहे हैं, उनसे क्या?" नीरज ने फिर कहा था.

"लाइए कोई रिपोर्ट दर्ज करने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल के लड़कन को बस मोटरकार का शौक लग गया है. ई लोग छोकरियन पर रौब जमाए खातिर दिन-दहाड़े कार लूटते हैं. फिकिर की कौनू बात नहीं है. वे छोड़ देंगे. हम ऐसे बहुत केसवा देख चुके हैं."

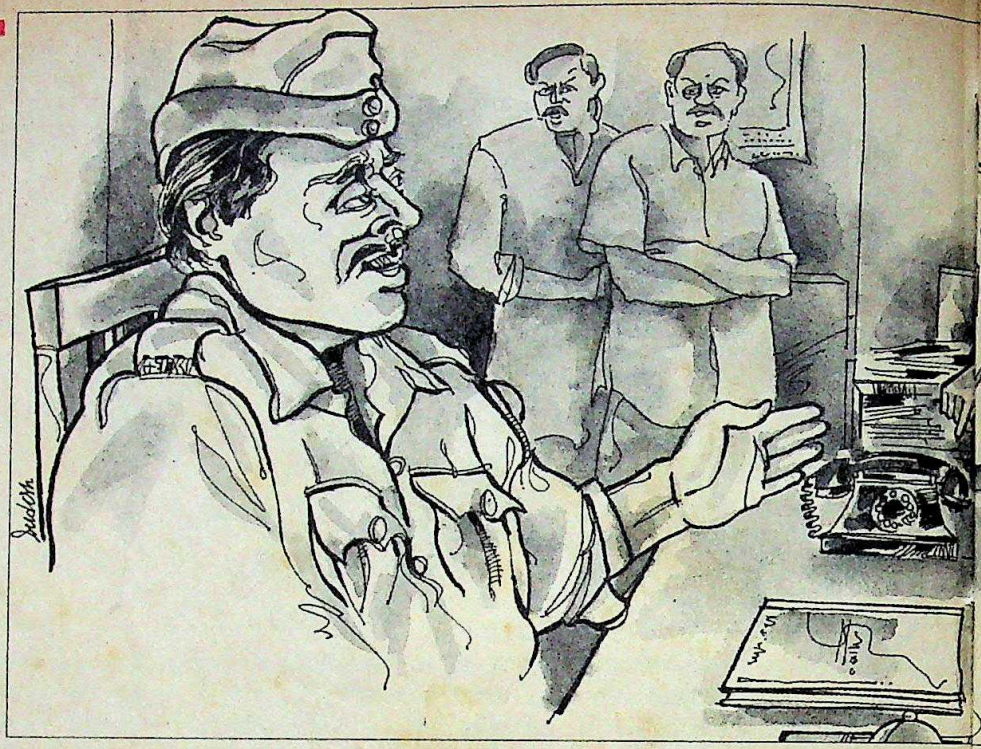

रजिस्टर तो होगा, हम रजिस्टर में अपनी रिपोर्ट दर्ज कर दें." अरविंद द्वारा रिपोर्ट लिखने के लिए रजिस्टर की मांग पर कांस्टेबल एकदम चैतन्य हो उठा था.

"ये कैसे हो सकता है, रिपोर्ट तो पुलिस लिखेगी. आप इंतजार करें, थोड़ी देर में इंस्पेक्टर साहब आते ही होंगे."

"आप समझते क्यों नहीं, मुहल्ले से एक आदमी और उसकी बेटी को दो लड़के कार में ले गए. उनकी जान खतरे में है."

"अरे नहीं, आजकल के लड़कन को बस मोटरकार का शौक लग गया है. हम कहे हैं ई लोग छोकरियन पर रौब जमाए खातिर दिन-दहाड़े कार लूटते हैं. फिकिर की कौनू बात नहीं है. अरे बस जरा मौज-मस्ती के बाद वे उन लोगन को छोड़ देंगे. हम ऐसे बहुत केसवा देख चुके हैं, साहब." उस गंभीर वातावरण में कांस्टेबल का वह कुत्सित इशारा नश्तर-सा चुभ गया था. अरविंद का आक्रोश चरम सीमा पर था. "वाह हमारी पुलिस की क्या प्राथमिकताएं हैं, इधर दो जानें खतरे में हैं, उधर कैसेट की छापामारी कर एक रात में देश से भ्रष्टाचार को दूर कर देंगे."

"हद हो गई, हम यहां एक घंटे से व्यर्थ ही सिर मार रहे हैं." नीरजनाथ विक्षुब्ध थे.

"चलो किसी कमिश्नर के घर चलते हैं." थककर अरविंद ने कहा था.

"पर उनके घर जाकर भी हम क्या कर सकेंगे, यहां तो कोई निर्देश सुनने वाला है नहीं. दूसरे थाने के लोग हमारी रिपोर्ट दर्ज नहीं करेंगे क्योंकि यह क्षेत्र उनके क्षेत्र में नहीं आता. इतनी रात में यूं दौड़ना क्या ठीक है?" माधवानी ने शंका व्यक्त की थी.

माधवानी की शंका निरर्थक नहीं थी. कुछेक माह पूर्व माधवानी के मित्र का परिवार छुट्टी के दिन उनके घर आया हुआ था. उनका बेटा सामने वाले मैदान में गेंद खेलने गया था. काफी देर बाद तक जब वह वापस नहीं आया था तो उसके खो जाने की रिपोर्ट लिखाने जब वे इसी थाने में आए थे, तो थानेदार ने साफ मना कर दिया था, "ये केस लालगंज थाने का है, हम इसकी रिपोर्ट दर्ज नहीं कर सकते."

लाख मिन्नतों के बावजूद थानेदार नहीं पिघला था.... "आप सब नहीं जानते साहिब, हम सरकारी लोग कानून खिलाफी नहीं कर सकते. आप जाइए लालगंज थाने में रिपोर्ट दर्ज कराइए."

"पर तब तक तो वह लड़का न जाने कहां पहुंच जाएगा थानेदार जी." लड़के के पिता ने मनुहार की थी.

"अब तक ही कहां पहुंचा होगा, भगवान जाने. अब फालतू टाइम वेस्ट न करें, जाइए रपट लिखाइए." थानेदार ने अंतिम निर्णय दे दिया था.

अंततः चार दिन बाद उस नन्हे बालक का शव ही हाथ लग सका था. कहीं आज भी... माधवानी सिहर उठे थे. रवींद्र के साथ उनकी बेटी पूजा के चेहरे नयनों के समक्ष कौंध उठे थे.

अरविंद ने निर्णय लिया था, "चलो यहां समय गंवाने से कोई फायदा होने वाला नहीं, हम-दो, डिप्टी कमिश्नर के पास जाते हैं और माधवानी और नाथ, तुम दोनों हरीसिंह को एप्रोच करो. शायद वही हमारी मदद कर सके."

"हरीसिंह? वो तो नंबरी गुंडा है, आप उसके पास जाएंगे?" कांस्टेबल के कान खड़े हो गए थे.

अब तो कई बातों से यह सिद्ध हो गया है कि पुलिस की अपेक्षा हम गुंडों के संरक्षण में ज्यादा सुरक्षित हैं, सिपाही जी." माधवानी जी ने कांस्टेबल पर करारा व्यंग्य किया था.

"ठीक है, फिर जाइए, वही आपकी रक्षा करेगा. आगे से यहां कभी मत आइएगा, समझे." कांस्टेबल ने कंधे झाड़, जेब से सुर्ती निकाल हथेली पर जोर से रखी थी.

माधवानी और नाथ स्कूटर से रवाना हो गए थे, अरविंद एक कागज पर रिपोर्ट लिखने के लिए रुक गया था कि तभी थाने के अहाते में जीप रुकने की आवाज आई थी. जीप रुकते ही कांस्टेबल सतर्क हो उठा था. सुर्ती मुंह में डाल तेजी से बाहर निकल गया था. जीप से उतरे लोगों के ठहाके थाने में बैठे अरविंद तक पहुंच रहे थे.

"यार, आज की छापामारी में तो मजा आ गया. साल्ला देसी ही दिखा रहा था, अंदर व्हिस्की की बोतलें छिपा रखी थीं."

"तुमने पूरी व्हिस्की जब्त की है न?"

"अरे दो दिन बाद इसके बेटे का बर्थ-डे है. तभी खोलेगा, क्यों ठीक कहा न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागेंद्र?"

"और उसी दिन वो जब्तशुदा कैसेट भी चलाएंगे. बड़ा गर्म माल रखते हैं साले."

हंसते हुए वे पुलिसकर्मी जैसे ही थाने में प्रविष्ट हुए, अरविंद की आग्नेय दृष्टि से चौंक गए थे.

"कहिए अर्जेंट काम पूरा कर आए?" व्यंग्य से अरविंद ने पूछा था.

"जी.. हां... आपकी तारीफ?" थाना इंस्पेक्टर ने हड़बड़ाकर पूछा था.

"सर, ये लोग रिपोर्ट लिखाने आए हैं, इनकी कॉलोनी से कोई कार लेकर भाग गया है." पीछे आते कांस्टेबल ने चुस्ती से आगे बढ़कर उत्तर दिया था.

"आजकल कार चोरी बहुत बढ़ गई है... क्या नई कार थी?" घटना मामूली

न इंस्पेक्टर ने शांति की सांस ली थी.

"बात सिर्फ कार की नहीं है इंस्पेक्टर, के साथ दो जीवन जुड़े हैं. पता नहीं वे जीवित मिलेंगे भी या नहीं. आप लोग र्जेंट काम के लिए निकले थे, ये घटना तो मूली-सी है. मात्र दो जिंदगियों का ही तो न है." आक्रोश से अरविंद का स्वर थरथरा उठा था.

कुर्सी पर बैठते इंस्पेक्टर ने अरविंद को बैठने का संकेत दिया था. आदेशात्मक स्वर में कांस्टेबल को डांट पिलाई थी..."साहब की खबर हमें क्यों नहीं की गई?"

"वो साहब आप अर्जेंट काम पर गए थे सो, बता दिया था." कांस्टेबल हकला रहा था.

"इडियट, फोन नहीं कर सकता था?" इंस्पेक्टर ने फिर डांटा था.

"आपका फोन तो पिछले कई दिनों से खराब है." अरविंद ने बीच में रोका था.

"ओह देखता हूं, यहां अक्सर तार ढीले हो जाते हैं... ये देखिए जंक्शन बॉक्स का. ये स्क्रू ढीला हो गया था इसीलिए फोन काम नहीं कर रहा था. ऐ रामदीन, जरा स्क्रू-ड्राइवर से इस पेंच को कस तो दे. थोड़ा देखना चाहिए कि फोन काम काहे नहीं कर रहा है." इंस्पेक्टर ने तार कांस्टेबल को पकड़ा दिया था.

"हां तो बताइए घटना क्या है? वारदात कब, कैसे, किस समय हुई?" वारदात के पूरे डेढ़ घंटे बाद इंस्पेक्टर ने रिपोर्ट दर्ज करने की प्रक्रिया शुरू की थी.

अरविंद के मुंह खोलने के पहले ही फोन घनघना उठा था, तत्परता से इंस्पेक्टर ने फोन कान से लगाया था. उधर से आती सूचना निश्चय ही गंभीर थी, इंस्पेक्टर के मुख का रंग बदलता जा रहा था.

"ओके हम अभी पहुंच रहे हैं. आप कौन हैं, कहां से बोल रहे हैं, हलो...हलो..." पर उधर वाले ने फोन काट दिया था.

माथे पर चुहचुहा आई पसीने की बूंदों को रूमाल से पोंछता इंस्पेक्टर लगभग खड़ा हो गया था. "क्या हुआ इंस्पेक्टर, कोई खास खबर?" दिल अरविंद का भी तेजी से धड़क रहा था.

"किसी ने सूचना दी है पुराने नाले के पास दो शव फेंके गए हैं, शायद एक लड़की भी है. मुझे फौरन जाना है, सॉरी."

"अब क्यों जाना है, कहां जाना है इंस्पेक्टर? मुर्दे बोल नहीं सकते, उनकी तो बस शिनाख्त की जाती है और मैं यहां से ही उनकी शिनाख्त कर रहा हूं—एक शव है मिस्टर रवींद्र वर्मा का और दूसरा उनकी पुत्री पूजा वर्मा का."

"पर ये भी तो हो सकता है ये शव किसी और के हों, जब तक देख न लिया जाए.."

"इतनी देर से यहां, इस थाने में जो देख-सुन रहा हूं उससे तो मुझे यही आश्चर्य है—कैसे हम आज तक सुरक्षित रह सके हैं. मुझे पूरा विश्वास है अब इस शहर में आपका जीवन और अधिक शांतिपूर्ण हो जाएगा, क्योंकि भविष्य में हम आपसे नहीं, हरीसिंह से सहायता लेंगे. थैंक्यू, थैंक्यू वेरी मच इंस्पेक्टर..."

इंस्पेक्टर के अवाक् मुख पर तेजी से थाने का द्वार बंद कर जलती आंखों के साथ अरविंद बाहर आ गया था.

078635

आदमी की
ात उनके लिए
क मामूली
टना है. अगर
नी पकड़
या तो उनकी
-बारह. उससे
वसूल कर
नकी जेबें
रती हैं. मरने
ला तो मर
या. जो जी रहा है
सी से लाभ
ठाओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा संग्रह

यथार्थ चित्रण

अपने परिवेश की कहानियां

मलयालम के ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता, कथाकार तकषी शिवशंकर पिल्लै की तीस कहानियों का संकलन 'मंगल सूत्र' केरल प्रांत के बहाने गरीब भारत के जमीन-जुड़े उस यथार्थ को रेखांकित करता है जो आधुनिकता के दौर में चालू देसी-विदेशी फैशनी फार्मूलों पर आधारित यथार्थ से भिन्न निजी अनुभव के दायरे का यथार्थ है.

मंगल सूत्र
कथा संग्रह
तकषी शिवशंकर पिल्लै
भारतीय ज्ञानपीठ
नई दिल्ली
कुल पृष्ठ: 114
कीमत: 75 रु.

गांव-अंचल और कृषि संस्कृति के यथार्थ की पीड़ा को भीतर दबाए एक ईमानदार किसान कलमकार के रूप में तकषी ने वर्तमान समाज, राजनीति, पीढ़ियों, संबंधों और बहुआयामी विसंगतियों को अपनी निजी पारदर्शी दृष्टि से देख-परखकर अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है. उसमें 'आम के पेड़ के तले' वाली सनातन ग्राम माधुरी का रागबोध है तो दूसरी तरफ एक 'फौजी' के बहाने आधुनिक ऊब, उदासी और अकेलेपन की आकुलता है. 'एक मामूली फांसी' के संदर्भ में वह पात्र के साथ-साथ जैसे स्वयं मृत्यु से साक्षात्कार कर रहा है और जीने के लिए संघर्षरत है.

'बाढ़' में चकितकारी बात यह है कि नायक एक कुत्ता है. परिवेश में सघन संत्रास मूलक भयानक, वीभत्स और रौद्र की पराकाष्ठा है, जिसके बीच संघर्षरत नायक कुत्ते में प्रेम और करुणा की पराकाष्ठा है. यह प्रेम और करुणा वास्तव में कथाकार की दोनों आंखें हैं. ऐसी आंखों से 'मंगल सूत्र' और 'चुकौती' जैसी कहानियों के भद्दगी भरे विद्रूप और मानवता के नरक को देखना भी एक गजब का रोमांचक अनुभव है. इस अनुभव में कड़वी-कठिन बातों को सहज ढंग से कह देने का साहस है. ऐसा लगता है कि अपने चारों ओर के शर्मनाक शोषण-उत्पीड़न के संसार में लेखक अपनी कहानी 'ताड़ी खाना' के शरीफ कथानायक की भांति बराबर होश में रहते हुए प्रवेश करता है. लेखक को यह अंदेशा होता है कि बेहोश होने पर 'लंबा सफर' तमाशा हो जाएगा. लेखक कहीं भी जीवन को तमाशे के रूप में प्रस्तुत नहीं करता है. वह जीवन में जीवन की खोज का पक्षधर है.

तकषी की कहानियों में जीवन की संपूर्ण पकड़ मिलती है. नारी जीवन और नर के साथ उसके संबंध को उन्होंने बहुत कटु, भयानक, लोम हर्ष के रूप में और कहीं-कहीं अश्लीलता की सीमा छूते असह्य रूप में उपस्थित किया है. ऐसा लगता है कि आरोपित शील और चेष्टित सदाचार पर वह बराबर प्रहार करता है. 'साठ वर्ष की उम्र में' वह रोमांस की पड़ताल भी करता है तो एक वैज्ञानिक के रूप में उसे प्रेम से जुड़ी वस्तुओं और रसगंधों की जगह कुछ और ही चीजें दिखाई पड़ती हैं. यथार्थ का यह आग्रह तकषी की कहानियों को सहज जीवंतता प्रदान करता है. अनुवादक मंडल की अनुवाद-सफलता से इस जीवंतता में सहजता का संयोग कृति के स्वाद को बढ़ा देता है.

—विवेकी राय

राजनीति

द्वंद्व के बीच

नक्सलियों की अधूरी कहानी

जन संघर्ष और सशस्त्र संग्राम की 'द्वंद्वात्मक' बहस में फंसकर चौबीस साल के हो चुके नक्सलवाद के दर्जनों टुकड़े हो चुके हैं. पर अनेक नौजवान अभी भी इसकी 'अधूरी कहानी' के प्रति आकर्षणभाव रखते हैं. इस अधूरी कहानी के कथानकों और मुख्य पात्रों की जानकारी पाने के लिए अभय कुमार दुबे की किताब 'क्रांति का आत्मसंघर्ष' उपयोगी हो सकती है.

क्रांति का आत्मसंघर्ष
राजनीति
अभय कुमार दुबे
विनय प्रकाशन
दिल्ली-55
कुल पृष्ठ: 24 + 272
कीमत: 100 रु.

पर नक्सलवाद के जिस 'नए चेहरे' की बात लेखक ने की है, वह किस मायने में नया है? नक्सलवाद के तो आज अनेक चेहरे हैं. भारतीय समाज का स्वरूप, समाज परिवर्तन में सशस्त्र संघर्ष की भूमिका, संसदीय संघर्ष, पार्टी और जन संगठनों में संबंध—ये सवाल पहले भी कम्युनिस्टों में तीखे रूप में सामने आ चुके हैं. यह कहना कि 'नक्सलवाद के उग्र आवेग ने इन मुद्दों को बेहद प्रखरता के साथ सामने रखा है', तथ्यों से परे हैं. हां, प्रखरता यही है कि नक्सलवाद अभी इनके 'अंतिम और सर्वमान्य' (होते हों तो) जवाब तलाश नहीं पाया है.

और वह तलाश कर भी कैसे पाता? अंतरविरोध के माओवादी सिद्धांत से उत्पन्न गुटीय संघर्ष ने उसे लेखा-जोखा करने की फुर्सत ही कब दी है. बकौल लेखक, ये सभी गुट क्रांति के 'तीन जादुई अस्त्रों' की खोज में लगे रहे हैं. लेकिन व्यवहार ने इन्हें कहां पहुंचा दिया? 'सशस्त्र संघर्ष' बिहार के भोजपुर क्षेत्र और आंध्र प्रदेश के जंगलों तक ही सिमटकर रह गया है. वे 'एक पार्टी' में पुनर्गठित नहीं हो पाए हैं. और 'संयुक्त मोर्चे' का भी वैसा वजूद नहीं दिखता.

1989 के चुनाव मैदान में उतरकर नक्सलियों के एक कथित संयुक्त मोर्चे—आईपीएफ ने बिहार में जरूर एक संसदीय सीट पाकर 'संसदवाद को चुनौती' दी. पर 'संसद में कोई छोटा-मोटा वामपंथी ब्लॉक बनाने' की उसकी इच्छाओं पर 1991 के चुनावों ने पानी फेर दिया है.

बकौल लेखक, "अगर नक्सलियों के इस (विकासमान) हिस्से को एक संपूर्ण... विकल्प के... रूप में उभरना है तो उन्हें कम्युनिज्म के नाम पर वाम और जनवादी राज्य सरकारों के माकपाई विकल्प से होड़ करनी होगी... इसी लड़ाई में जीत-हार के परिणामों के आधार पर नक्सली वामपंथी कतारों में खुद को बेहतरीन कम्युनिस्ट साबित कर पाएंगे." यानी, पहले नक्सली गुटों में 'सशस्त्र संघर्ष' छेड़ने की होड़ थी, अब और अधिक कम्युनिस्ट गुटों में संसदीय विकल्प विकसित करके खुद को बेहतरीन साबित करने की होड़ लगेगी.

बहरहाल, कुछ अहम घटनाओं को उचित स्थान न दिए जाने के कारण भी यह किताब नक्सलवाद की उत्पत्ति और बिखराव की अधूरी कहानी ही है. अनेक देशों में सर्वहारा क्रांति की विफलता के मद्देनजर नक्सलियों का 'आत्मसंघर्ष' इस अधूरी कहानी को पूरा कर पाएगा, यह वक्त ही बताएगा.

—ओम प्रकाश सराफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Kingfisher presents the makings of a champion.

From Kingfisher, a video tape on the men behind the scenes of the most thrilling moments on turf. The men who make champions. The men who ride champions. And the champions themselves.

Kingfisher presents
'Horsepower'.

The story of the Indian thoroughbred . A tape every horse racing enthusiast or sports fan would consider a collector's item.

Ogilvy & Mather 3266

KINGFISHER
PRESENTS
HORSEPOWER
A STORY OF THE INDIAN THOROUGHBRED
TASTE THE EXCITEMENT

O R D E R F O R M

Yes, I would like to order Kingfisher's cassette 'Horsepower', for Rs.175/- (taxes, packing and forwarding included).

I herewith enclose a DD/MO payable in Bangalore (only Bangalore cheques accepted)
to: Kingfisher 'Horsepower', C/o *ONE-TO-ONE Communications Pvt. Ltd., No. 3, President Chambers, 8, Richmond Road, Bangalore- 560 025. Ph: 217788.

Name..... Add.....

.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

..... Pin..... Tel.....

Note: •The cassette will be hand-delivered in Bangalore & couriered elsewhere • Please allow lead-time of 2-4 weeks for delivery • Offer/price valid in India only • Sorry, [illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहं है कि मानता नहीं

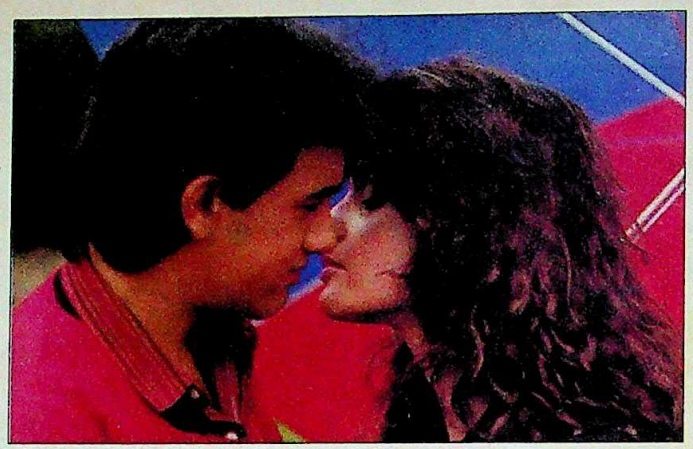

आमिर, पूजा: नजदीकियां दूरियां बनीं

कोई बता सकता है, कौन-सा टूथपेस्ट न लगाने से नजदीकियां दूरियों में और किसे लगाकर दूरियां नजदीकियों में बदल जाती हैं. और लोग भले ही जानते हों पर यह बात शायद **आमिर खां** और **पूजा भट्ट** दोनों में से किसी को भी पता नहीं. वरना क्या ऐसा हो सकता था कि 'दिल है कि मानता नहीं' को मिल रही सफलता के बाद भी फिल्म की शूटिंग के दौरान दुर्गंध जैसी बनकर सांसों में समा गई ईगो यानी अहं भावना खत्म न होती?

शूटिंग के दौरान आमिर का आरोप था कि निर्देशक (महेश भट्ट) की बेटी होने के कारण सेट पर जो 'ट्रीटमेंट' पूजा को मिलता है उन्हें जानबूझकर नहीं दिया जाता ताकि उनका परफार्मेंस पूजा के मुकाबले उन्नीस ही रहे, इक्कीस न होने पाए. अब, जब फिल्म चल निकली है और पूजा तथा आमिर दोनों को सफलता का श्रेय दिया जा रहा है, दोनों ही एक बात कह रहे हैं, "मेरा परफार्मेंस और भी बढ़िया होता अगर हीरो/हीरोइन ने थोड़ा भी कोऑपरेट किया होता. मगर उसका तो सेट पर मारे घमंड के मिजाज ही नहीं मिलता था..."

इस बयानबाजी की वजह से दोनों में से किसी को ऊंचा माना जाने लगा हो, ऐसा तो हुआ नहीं. हां, इतना जरूर हुआ कि वे सब निर्माता फिलहाल हाथ खींचकर बैठ गए हैं जो फिल्म की रिपोर्ट गरम सुनने के साथ ही पैसों की पोटली संभाल दोनों को एक साथ साइन कर लेने निकल पड़े थे.

त्रिशंकु कॉमेडी

एक तो बेचारे का कैरियर वैसे ही कोई शेप नहीं ले रहा, ऊपर से ये ताने? **जावेद जाफरी** करें तो क्या करें? कोरियर सर्विस के लिए मॉडलिंग उन्होंने कुछ पैसा बनाने की खातिर कर ली थी. पर उस विज्ञापन फिल्म में उन्हें हवा में लटका देख 'दोस्तों' ने नाम दे दिया है, त्रिशंकु. बिस्कुट के प्रचार के लिए बनी उनकी दूसरी विज्ञापन फिल्म में उन्हें कॉमेडी करते दिखाया गया है पर फिल्मों में कॉमेडी से उन्हें परहेज है क्योंकि उनके अभिनेता पिता सारी जिंदगी कॉमेडी ही करते रहे.

जावेद जाफरी को जिस वजह से आजकल ताने सुनने पड़ रहे हैं वह है उनके पिता का वह काम जिसे इंडस्ट्री में सब उनकी 'ग्रेस्टेट कॉमेडी' बता रहे हैं. दरअसल, बुजुर्ग जगदीप ने उस नवयौवना सुंदरी से शादी कर ली है जो जावेद जाफरी के चक्कर में उनके घर के चक्कर लगाया करती थी.

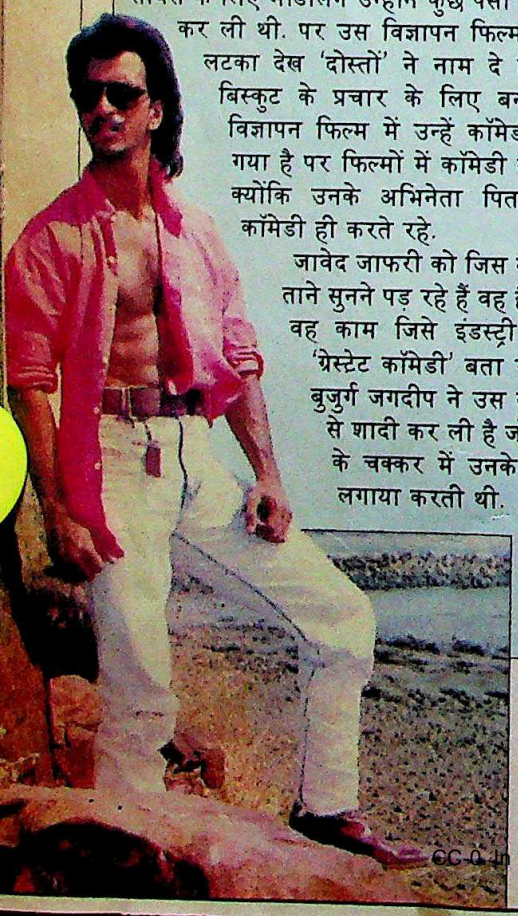

जावेद: कैसी-कैसी आफत!

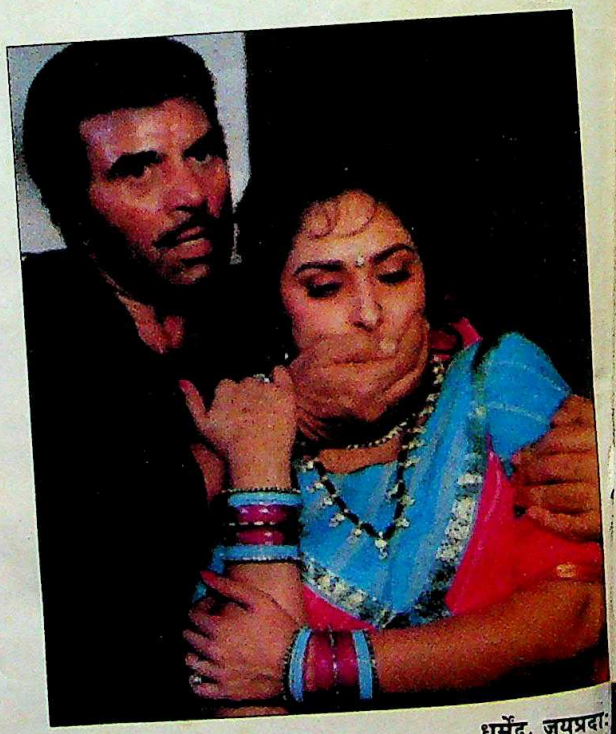

धर्मेंद्र, जयप्रदा: कोई सुन न ले!

अपनी रहे न दूजी पावे

हेमामालिनी ने अपनी फिल्म 'दिल आशना है' का मुहूर्त जिस शान के साथ किया, उसने जाहिर कर दिया कि किसी मर्द के सहारे की मोहताज नहीं हैं मोहतरमा हेमा.

अरे, मुहूर्त के बीच यह मर्द वाली बात कहां से आ गई? हेमा के साथ **धर्मेंद्र** का जिक्र तो होना ही था और मुहूर्त में आया कोई भी व्यक्ति धर्मेंद्र तथा **जयप्रदा** के संबंधों को लेकर चल रही चर्चाओं से बरी नहीं था. आजकल जयप्रदा धर्मेंद्र से इमोशनल सहारा मिलने की बात खुलेआम स्वीकार करके उनकी तारीफ करने लगी हैं तो धर्मेंद्र की हर कोशिश उनकी मुंह बंद रखने की होती है. दरअसल, धर्मेंद्र की चिंता का विषय यह है कि 'अपनी छोड़ दूजी पर धावे, अपनी रहे न दूजी पावे' जैसी कहावतें उन पर चरितार्थ होने लगी हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीलमः नया राज, नया सपना

नए गुल खिलेंगे

पार्टी **नीलम** और सलमान खां को लेकर नई फिल्म 'पतंगा' शुरू की जाने के उपलक्ष्य में दी गई थी. ऐसी पार्टियां आए दिन हुआ करती हैं पर इस पार्टी में प्रोड्यूसरों की असामान्य मौजूदगी ही अंदरूनी कहानी उजागर करने की वजह बन गई.

कहा यह जा रहा है कि 'पतंगा' के लिए नीलम का नाम नायक सलमान ने सुझाया था और उन्हीं के फोन पर नीलम लंबी छुट्टी करके तुरंत उड़ी चली आई. इन दोनों को लेकर एक फिल्म 'एक लड़का एक लड़की' पहले से बन रही है. अब अनेक निर्माता यह टोह लेने यहां आए थे कि संगीता बिजलानी से बंधे सलमान और बॉबी देवल की गिरफ्त में बताई जाने वाली नीलम की प्रेम कहानी क्या सचमुच कुछ नए गुल खिलाने वाली है?

रपटीली जमीन में खूंटे की तलाश

'हिना' सुपरहिट भले ही नहीं हुई पर मराठी फिल्मों से आई उसकी सहनायिका **अश्विनी भावे** ने हिंदी फिल्म जगत में अपनी मजबूत जगह बना ली है. फिल्मों को सबसे 'रपटीली जमीन' कहने वाली अश्विनी ने दो किनारों पर दो मजबूत खूंटे बांध, दोहरी सुरक्षा का इंतजाम कर लिया है.

वे अविनाश वधावन जैसे बड़े नामी प्रोड्यूसर के लाडले हीरो की लाडली बनी रहने का मौका नहीं छोड़तीं. लेकिन मजबूत तो है वह खूंटा जो उन्होंने हीरो से विलन हुए रजनीश बहल से बांधा है. यहां अश्विनी की तैयारी कमांडर बहल की बहू बनकर दिवंगत नूतन की संपत्ति संभालने की है.

अश्विनीः एक तीर से दो निशाने

अर्चनाः संगत को तैयार

संगत का असर

अर्चना पूरण सिंह को कहीं भूल तो नहीं गए आप? अगर भूल गए तो जरा संभल के पूछिएगा. एक फिल्म के ट्रायल से वे बाहर आ रही थीं, जबकि ट्रायल अभी शुरू भी नहीं हुआ था. फिल्म देखने भीतर जाते हुए पत्रकार ने, जिसकी मुलाकात उनसे कई दिन बाद हुई थी, यही निरीह-सा सवाल पूछ लिया. "अंदर जाकर देखो मैं कहां हूं," अर्चना पूरण सिंह ने जवाब दिया, "मेरा परफार्मेंस देखना और फिर उस..." इसके बाद अर्चना ने फिल्म की हीरोइन के अंग-प्रत्यंग का जो वर्णन किया और फिल्में पाने के लिए उसकी कोशिशों का कच्चा चिट्ठा जिन शब्दों में सुनाना शुरू किया, उसे सुनने सिर्फ कैंटीन के कुछ मनचले ही खड़े रह सके, बाकी सब फूट लिए.

बढ़ती उम्र की फिक्र

फिल्मालय स्टुडियो के मिनी थिएटर में **श्रीदेवी** अपनी किसी फिल्म के रशेज देखने आई थीं. वहां मौजूद प्रोड्यूसर के एक खास चमचे ने उनसे कहा, "सलमान खां के साथ फिल्म 'परी' साइन करके आप गच्चा खा गई न !"

श्रीदेवी को जो कुछ समझाया गया, उसका सार यह था कि फिल्म में श्रीदेवी सलमान से निश्चय ही बड़ी उम्र की नजर आएंगी. तब दर्शकों को उनकी बढ़ती उम्र का एहसास हो जाएगा.

तब से श्रीदेवी उलझन में हैं. आजकल उनका सवाल यही होता हैं, "क्या मैं सलमान से बड़ी लगती हूं?" कहना न होगा, इसका ईमानदार जवाब देने वालों की कमी है.

श्रीदेवीः कहीं सचाई न खुल जाए!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेमंत पिटवा

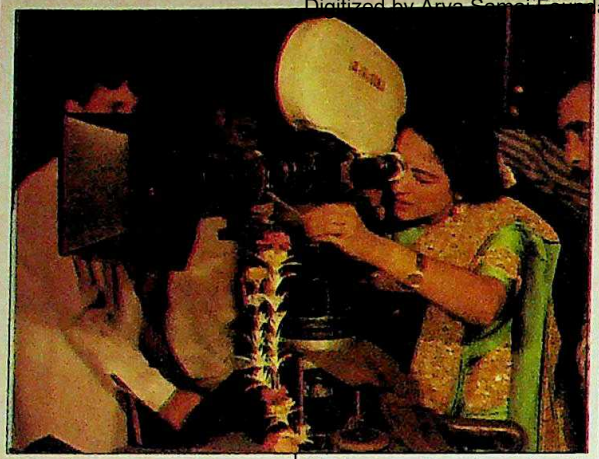

हेमा: नए-नए शौक

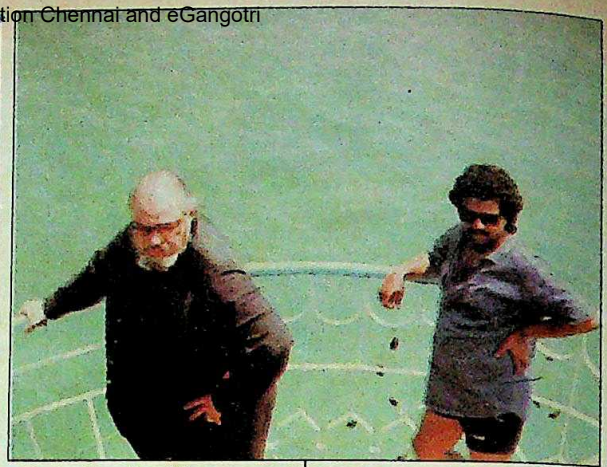

शम्मी: तमिल में तूफान

परदे के पीछे

◆ रजतपट की स्वप्नसुंदरी एक बार फिर सक्रिय हो गई है लेकिन इस बार कैमरे के पीछे. प्रेम कहानी पर आधारित फिल्म 'दिल आशना है' के जरिए नृत्यांगना-अभिनेत्री **हेमा मालिनी** निर्देशन के क्षेत्र में कदम रख रही हैं. अभिनय करते करते निर्देशन की भला क्यों सूझी? तो उनका जवाब है, "मैं तो बस दूसरी विधा पर अपना हाथ आजमा रही हूं. मुझे किसी को कुछ साबित करके तो दिखाना नहीं है." निर्देशक की कुर्सी संभालने में तो उन्हें कोई दिक्कत नहीं आई. अलबत्ता निर्माता बनना खासा परेशानी भरा रहा. नए क्षेत्र में उतरने की प्रेरणा उन्हें कहां से मिली तो उनका जवाब है "धरम जी से." मजे की बात यह कि धरम हेमा के नए शौक को लेकर शुरू में जरा भी गरम नहीं थे.

विंध्य के उस पार

◆ हमारे 'जंगली' हीरो ने अब विंध्याचल के उस पार कूच किया है. फिल्म 'अमारन' के जरिए तमिल सिनेमा में प्रवेश करने वाले **शम्मी कपूर** एक बार फिर जोश और उमंग से भर गए हैं. यह पूछने पर कि क्या तमिल डायलॉग बोलते वक्त वे घबराए, तो शम्मी ने बताया, "मुझे और घबराहट! इल्ले इल्ले." इसकी वजह भी उन्होंने बताई "मुझे लंबे डायलॉग नहीं दिए गए थे." फिल्म से संतुष्ट होकर ही उन्होंने दक्षिण की तरफ रुख किया है.

छोटे उस्ताद के छोटे मियां

◆ **'लिटिल मास्टर' सुनील गावसकर को अब अपना बल्ला ताक पर ही रख देना चाहिए क्योंकि उनके साहबजादे रोहन गावसकर अब क्रिकेट के जौहर दिखाने को तैयार हैं. 13 वर्षीय रोहन उन 15 लड़कों में से हैं जिन्हें क्रिकेट क्लब ऑफ इंडिया की तरफ से खेलने के लिए चुना गया है. मुंबई के स्कॉटिश स्कूल के छात्र रोहन पहले फुटबाल ही खेलते थे लेकिन पिता की देखरेख में भारतीय क्रिकेट के होनहार सितारे बनने की तैयारी में हैं.**

कार्टून: जयंतो

देव की जलपरी

◆ इस बार कोपेनहेगन से एक जलपरी मुंबई के समुद्रतट पर आई है. देसी और विदेशी कन्याओं में प्रतिभा पहचान कर उन्हें परदे पर चमकाने वाले देव आनंद की नई खोज **माजा रीज** डेनमार्क की 17 वर्षीया स्कूली छात्रा हैं, जिन्हें वे अपनी नई फिल्म 'प्यार का तराना' में परदे पर उतारेंगे. देव ने एक कैफे में उन्हें खोजा. वे बताते हैं "मैंने उसे देखा, पसंद किया और तुरंत भांप लिया कि उसमें अंतरराष्ट्रीय स्टार बनने की प्रतिभा है." माजा फिलहाल तो कैमरे के सामने 'नमस्ते' कहना ही सीख रही हैं. किसी को उनका 'नमस्ते' सुनाई दिया क्या?

माजा: देव की नई खोज

कबाड़ में जाता रुपया

◆ रुपए की तेजी से घटती कीमत ने इसे सचमुच ही खूंटी पर टांगने लायक बना दिया है. रुपए के अवमूल्यन पर तैयार **पी. बालु** के म्यूरल (भित्ति चित्र) में पिछले वर्षों में रुपए की कीमत में आई भारी गिरावट को दर्शाया गया है. कबाड़ खाने से उठाए गए पुराने हवाई जहाज के पुर्जों से तैयार किए गए इस म्यूरल की असली जगह नार्थ ब्लॉक की दीवारों पर ही है.

इस म्यूरल के प्रदर्शन का इससे ज्यादा उपयुक्त समय कोई और नहीं हो सकता था. बगलूर के कोलाज कलाकार और अफसर बालु का मानना है कि उनका विषय कभी पुराना नहीं पड़ेगा. वे कहते हैं, "यह आज तक बहुत प्रासंगिक हो गया है और जिस तरह रुपए की कीमत घट रही है, उसे देखते यह प्रासंगिकता अरसे तक बनी रहेगी."

अब कौन कहेगा कि कबाड़ का कोई भाव नहीं होता?

बालु: रुपए का चित्रण

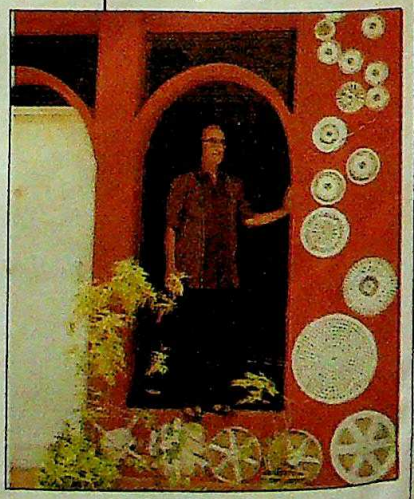

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ी अनोखी मेल अनोखा

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन। आज भी है यह सबसे बढ़िया। स्वाद में। तसल्ली में। हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर। लाखों सिगरेट प्रेमियों ने इसे आज़माया...फिर हमेशा के लिए अपनाया।

HTA 3987

WILLS
FILTER

फ़िल्टर और तम्बाकू का अनोखा मेल

आई टी सी लिमिटेड
का अपना एक ब्राण्ड
भारत में निर्मित

वैधानिक चेतावनी:
सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTRATION NO. R.N. 48823/86
REGISTERED No. L/MW/FBO/46/87
D—(C) 14/86

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह मा रा ब जा ज

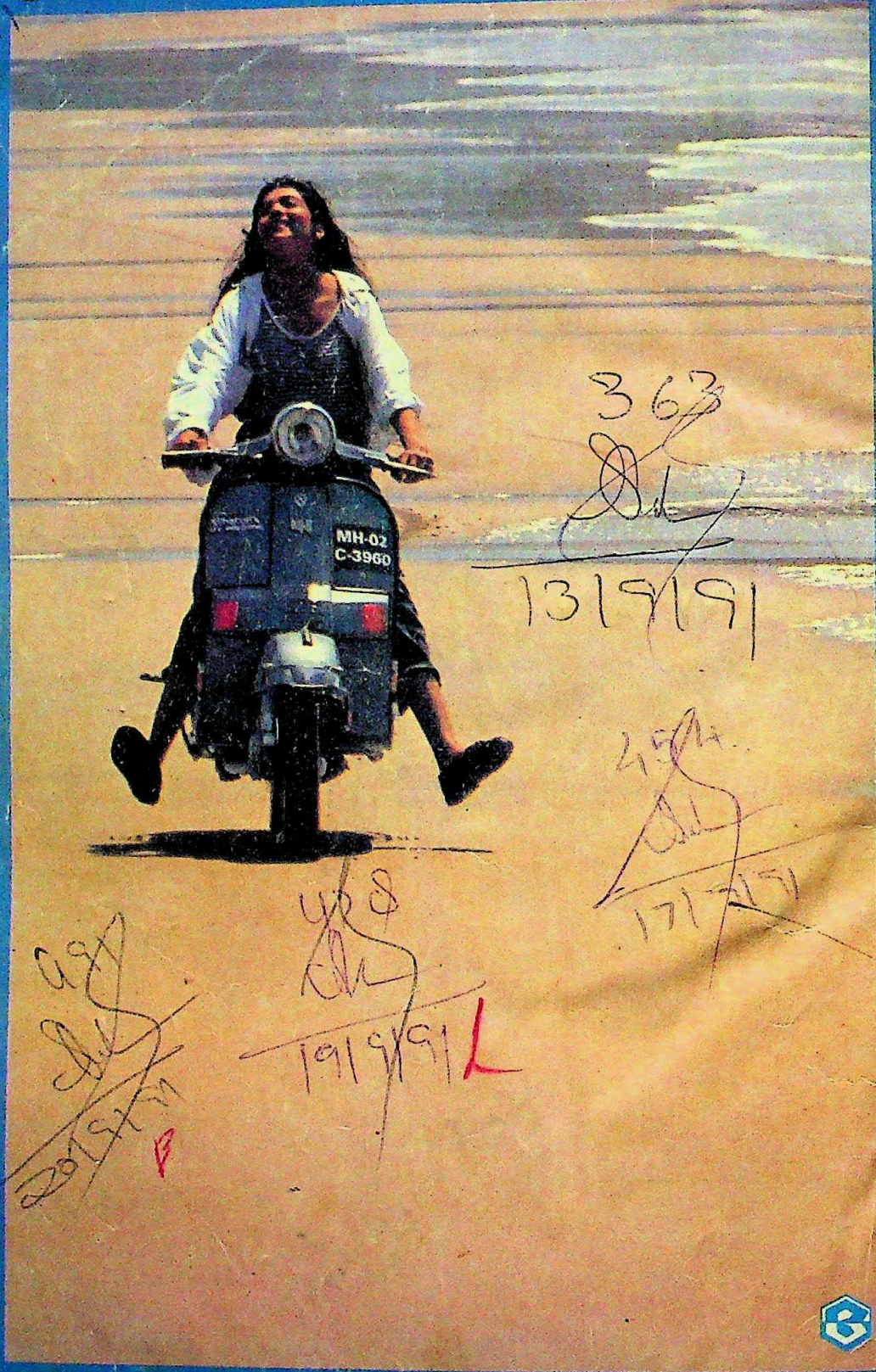

फ़ा
की
ब र स
सा

bajaj
आकुर्डी, पु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LINTAS BAJ SCT 232 2720 HI

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri